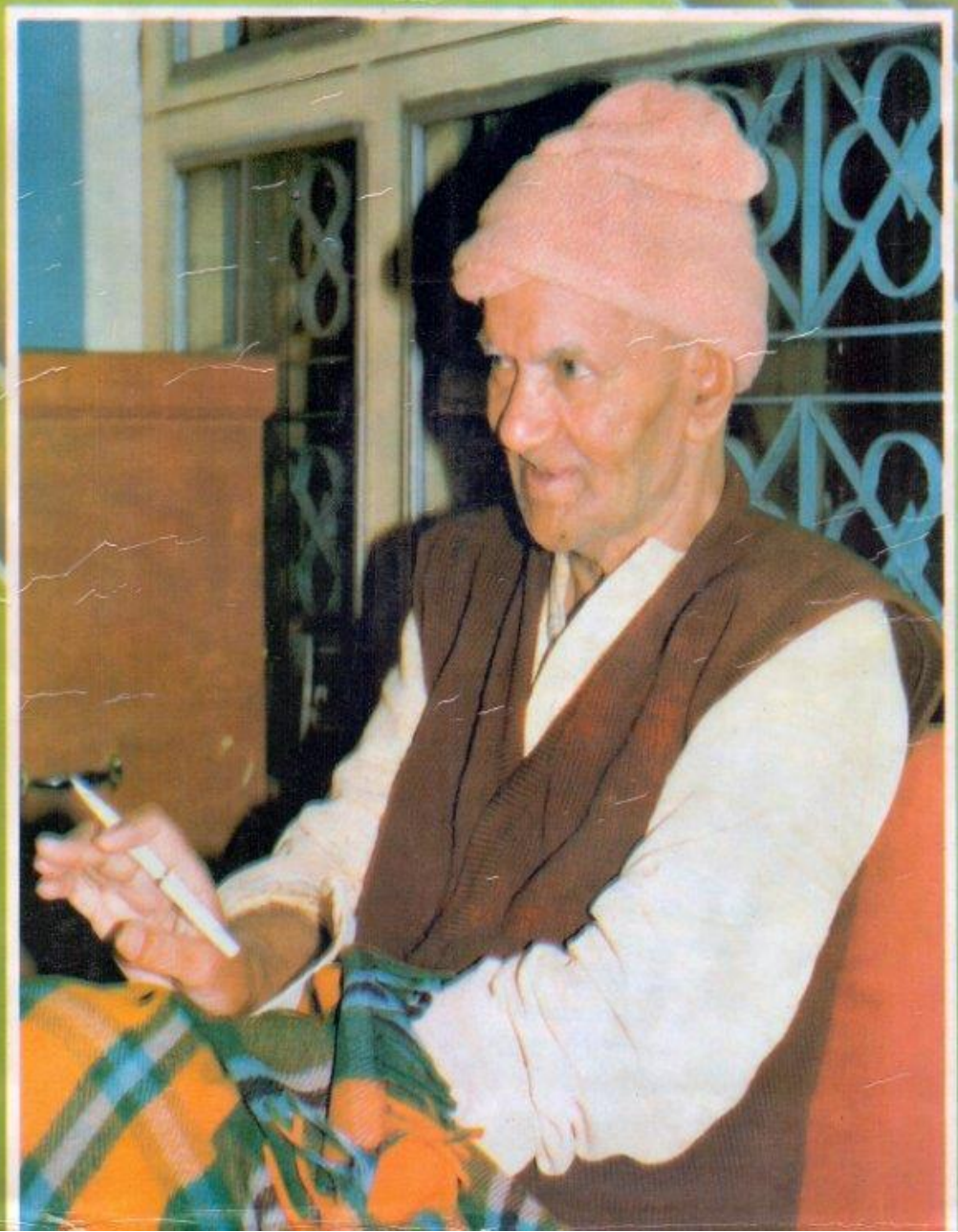
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण



www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म-चक्र-प्रवर्तन एवं लोक मानस का शिक्षण

सम्पादक
ब्रह्मवर्चस



प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान
मथुरा - २८१००३

© सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण १९९८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



मूल्य १२५)

मुद्रक
जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ मातरं भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ॥

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकायुगले वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ॥

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ॥

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ॥

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है । परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्ज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है । परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी मां शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है । उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया । आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानी गणों के, वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है ।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगे किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देख सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये । इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबा कर लिखा गया हो । हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता मन को, विचारों को बदलता चला जाता है । लाखों करोड़ों के मनों के अंत:स्थल को छू कर उसने उनका कायाकल्प कर दिया । रूसो के प्रजातंत्र की, कार्ल मार्क्स के साम्यवाद की क्रांति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है । उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्‌बोधन से एक विराट गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े रहते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाय, कैसे छन्दबद्ध, लिपिबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को ।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता । वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता-श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आसपास के दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्‌भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंत:करण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था । साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा । जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे । छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे । किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुत: अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी । जाति-पाँति का कोई भेद नहीं । जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवाकर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा ।

उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ। नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की, उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किन्तु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय, अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाय, यह सिखाया।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजा स्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में। उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में संपन्न क्रिया कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषि सत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं। चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष के चौबीस महा- पुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था। २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रांति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया। पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि "प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ। दो बातें गुरु सत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गई, संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो विशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी। वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया। सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा।"

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने तोड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख सुन कर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था। १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद पैदल लम्बा रास्ता पारकर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल

भी गये । छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई । जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अंग्रेजी सीखकर लौटे । आसन- सोल जेल में वे श्री जवाहर लाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से-मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना । यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश ।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जन आक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रांतिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था । नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं । बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये । जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्य चकित रह गये । उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्त जी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधी जी के समक्ष पेश किये गये । बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए । कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुज में सम्मानित किया । उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधान मंत्री राहत फण्ड, हरिजन फण्ड के नाम समर्पित कर दीं । वैरागी जीवन का, सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है ?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरु हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये । सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रह कर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया । प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अतः पुनः सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमशः उनके अध्यवसाय घर-घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदय स्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है ।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ, स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे । पुस्तकों का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंतः स्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही । साथ देने आ गयीं

परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी । उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुखी था-पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं । यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रांति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी ।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ । गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परम वंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी । धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपोभूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है । १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है । १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५८ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया । कार्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देश भर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं । संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था । तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की अपनी रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं । हिमालय से लौटते ही उनमें महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूल थाती को पुनर्जीवन दिया । परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञान सम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं ।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ । तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तपःपूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था । तपोभूमि में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों, यज्ञायोजनों के द्वारा विचार क्रांति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए । स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों में विशेष कार्य भार सौंप, परम वंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़ कर स्वयं हिमालय चले गये । एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया पद्धति बतायी । ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्त्तन संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये ।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे । इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट् परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक । इसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी बूटी, यज्ञविज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञान सम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युग शिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- सुसंस्कारिता, आस्तिकता संवर्धन एवं जन जागृति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञा संस्थान - शक्तिपीठ-प्रज्ञामण्डल-स्वाध्याय मंडल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तप साधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी को दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नव निर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरु सत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युगसंधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेघ महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नव निर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति के निमित्त सौर ऊर्जा के दोहन द्वारा विशिष्ट प्रयोगों के माध्यम से विशिष्ट मंत्राहुतियों द्वारा सम्पन्न किये गये इन अश्वमेधों ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेध यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेध यज्ञ शिकागो (यू. एस. ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु संपन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी जा रही है। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो सत्तर खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हो रहा है। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जायेंगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़ चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेंगे' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

धर्मतन्त्र में प्रचण्ड शक्ति-सामर्थ्य छिपी पड़ी है । धर्म का प्रादुर्भाव ही प्रजा की, समाज की रक्षा के लिए हुआ है । धर्म का अर्थ है आस्तिकता-संवेदना का जागरण । तत्त्वज्ञान (मेटाफिजीक्स), नीतिमत्ता (एथीक्स) एवं अध्यात्म (स्प्रिचुएलिटी) की धुरी पर टिका धर्म जन-जन के मनों का निर्माण करता है । धर्मतंत्र यदि परिष्कृत है-मूढ़ मान्यताओं से मुक्त है सड़ी-गली विवेक की कसौटी पर कसने पर न केवल अप्रासंगिक अपितु हास्यास्पद प्रचलनों से बंधा नहीं है तो उसकी शक्ति इतनी है कि वह सारे समाज का-राष्ट्र मानव-निर्माण ही नहीं, उसका सशक्त मार्गदर्शन कर सकता है । समय की इसी आवश्यकता को देखते हुए परमपूज्य गुरुदेव ने धर्मतंत्र से लोकशिक्षण की प्रक्रिया को जो ऋषियुग-में वेद कालीन समाज में प्रचलित थी, पुनर्जीवित किया । प्रस्तुत खण्ड इसी धर्मतंत्र के विभिन्न पक्षों का विवेचन कर हमारी संस्कृति के मूल स्तम्भ पर्व-त्योहारों, विराट जन सम्मेलन-कुंभ मेलों आदि के माहात्म्य पक्ष तथा इनके द्वारा जनसमुदाय का प्रगतिशील मार्गदर्शन पूज्यवर ने प्रस्तुत किया है ।

यही नहीं पूर्वकाल की साधु ब्राह्मण परम्परा जिसमें धर्मचक्र प्रवर्त्तन हेतु परिव्राजकों, समाज के निर्माण हेतु सतत परिभ्रमण करते रहते थे, की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उनने इसे नव संन्यास की प्रक्रिया कहा है । आज के युग की इस आवश्यकता परम पूज्यवर ने अत्यधिक जोर देते हुए प्रबुद्ध वर्ग से धर्मतंत्र का मार्गदर्शन सँभालने का आह्वान किया है । अपने बच्चों-नाती-पोतों के मोह में डूबे-आयुष्य की परिपक्वावस्था में पहुँचे लोगों से उनने पुत्रेषणा का परित्याग कर वानप्रस्थ अपनाने का आह्वान भी किया है । उनकी इसी मार्मिक पुकार ने लाखों युग पुरोहित विनिर्मित कर दिए । आज कर्मकाण्ड परिष्कृत रूप में यदि जिन्दा है तो उसका श्रेय पूज्यवर को जाता है जिनने एकाकी पुरुषार्थ कर १९४० से १९९० तक गायत्री-यज्ञ की प्रक्रिया के माध्यम से पौरोहित्य में प्रवीण-निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले जाति-वर्ग-सम्प्रदाय के भेद से परे लाखों व्यक्ति समाज को दे दिये जो आज युग शिल्पी-परिव्राजक-कार्यकर्त्ता के रूप में सक्रिय हैं ।

लोकशिक्षण जिसके माध्यम से जन-जन को जीवन जीने की कला, स्वयं के व्यक्तित्व के निर्माण से लेकर परिवार को व्यवस्थित बनाने एवं समाज के नवनिर्माण के निमित्त समय देने की प्रक्रिया को हृदयंगम कराया जाता है, मात्र धर्मतंत्र के माध्यम से ही सिखाया जा सकता है । धर्म मनुष्य के अंतरंग को स्पर्श कर उनके अन्दर की छिपी महानता को जगाता है । यह कार्य बहिरंग अनुशासन, सरकारी कानून या प्रचलित शिक्षा पद्धति से सम्भव नहीं है । पूज्यवर लिखते हैं कि "प्राचीनकाल में गृहस्थ, ब्राह्मणों और विरक्त परिव्राजकों का एक बहुत बड़ा समुदाय लोकशिक्षण की महती जिम्मेदारी को वहन करता था । वह अपने निजी स्वार्थ, निजी पराक्रम को इसी लक्ष्य से पूरी तरह नियोजित किये रहता था कि जन स्तर के किसी भी पक्ष में गिरावट न आने पाये । किसी भी क्षेत्र का, किन्हीं भी परिस्थितियों में रहने वाला व्यक्ति भौतिक या आत्मिक दृष्टि से गई गुजरी परिस्थितियों में न रहने पाए । इसके लिए वे लोगों को अपने यहाँ बुलाने-जमा करने की आशा नहीं करते थे वरन् बादलों की तरह जाकर हर खेत पर बरसते थे और तालाबों को पानी से लबालब भरे रखते थे । यही थी एक मात्र वह रहस्य भरी परम्परा जिसने इस देश के नागरिकों को तैंतीस कोटि देवता स्तर का बनाया था और इस भारतभूमि को "**स्वर्गादपि गरीयसी**" होने का सम्मान संसार भर की जनता से दिलाया था ।" आज इसी परम्परा को जगाये जाने की आवश्यकता पूज्यवर ने अनुभव की एवं घर-घर तक गायत्री साधना, यज्ञीय कर्मकाण्ड, संध्या उपासना आदि को पहुँचा दिया ।

अस्सी लाख से अधिक बाबाजियों की फौज एवं राष्ट्र अभी भी सांस्कृतिक दृष्टि से पराधीन परावलम्बी एवं पिछड़ी, अभावग्रस्त स्थिति में है, यह वेदना सतत पूज्यवर के मन में रही है । इसीलिए उनने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अपने रोजमर्रा के प्रमुख पर्व-त्यौहारों, नवसंत्वसर , नवरात्रि, रामनवमी, गायत्री जयंती, गुरु पूर्णिमा, कृष्ण जन्माष्टमी, दशहरा, दीपावली, गीता जयंती, वसंत पंचमी, शिवरात्रि, होली आदि के माध्यम से प्रगतिशील प्रशिक्षण की जन सामान्य में से चुने गए व्यक्तियों के माध्यम से व्यवस्था बनायी । हमारे कुंभ मेले, ज्ञान यज्ञ के लिए परस्पर चर्चा-परामर्श द्वारा राष्ट्र के नवनिर्माण की योजनाओं को कार्यान्वित कराते थे । अब वे मात्र स्नानार्थियों का जमाबड़ा बनकर रह गए हैं । इन्हें प्रगतिशील मोड़ देकर समाज की विभिन्न रचनात्मक योजनाओं में इनकी क्या भूमिका हो, यह दिग्दर्शन इस खण्ड में है ।

परिव्राजक व वानप्रस्थों का आह्वान करने के साथ-साथ परमपूज्य गुरुदेव ने जनोपयोगी योजनाओं को चलाने के लिए विवेक सम्मत दान की पुण्य प्रक्रिया को पुनर्जीवित करने की अपेक्षा भी की है । दान यदि कुपात्रों को दिया जाता है तो पाने वाला व देने वाले दोनों ही अपयश के भागी बनते हैं । दान तब ही सही है जब उसमें दाता की भावना गिरों को उठाने की, पीड़ितों का दर्द बँटाने की एवं सत्प्रवृत्तियों को सुविकसित करने की रही होगी । यदि ऐसा न हो तो उसे प्रवञ्चना या विडम्बना ही कहा जाएगा ।

निश्चित ही देवसंस्कृति के आधार स्तम्भ इन सभी पक्षों को-धर्मतंत्र की भूमिका-गरिमा-क्षमता को जान समझकर सभी को श्रेष्ठता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलेगी ।

-ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

१. धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण

धर्मतन्त्र के माध्यम से लोक शिक्षण १.१
संस्कार आयोजन द्वारा परिवार शिक्षण १.५
पर्वों की प्रेरणाप्रद पद्धति १.६
आदर्शवादिता का अभिनन्दन हो १.१३
मेले सुव्यवस्थित और सुनियोजित हों १.१६
रामायण कथा और भागवत कथा के सप्ताह आयोजन १.२०
लोकरंजन के साथ लोक मंगल का समन्वय १.२२
सहगान कीर्तनों की आवश्यकता १.२४
अभिनय की प्रभावशाली प्रक्रिया १.२५
ब्राह्ममुहूर्त में उच्च भावनाओं का बीजारोपण १.२७
चित्र प्रदर्शनियों से प्रेरणाप्रद स्मृतियाँ जगायें १.२८
प्रकाश चित्र यंत्र-एक प्रभावशाली प्रचार उपकरण १.३०
पूँजी का जन-जागरण उद्योगों के लिये आह्वान १.३२
धर्मतन्त्र की अनुपम शक्ति सामर्थ्य १.३४
उत्कृष्टता की स्थापना हेतु ऋषि परम्परा का पुनर्जीवन १.३७
जनमानस का परिष्कार धर्मतन्त्र के मंच से १.४१
धर्मतन्त्र को प्रगतिशील बनने दिया जाय १.४४
धर्मानुष्ठानों के क्रियाकृत्य उद्देश्यपूर्ण रहें १.४६
छोटे-बड़े धार्मिक आयोजन की व्यापक व्यवस्था चल पड़े १.४६
धर्मतन्त्र की क्षमता निरर्थक न बहे १.५२
प्रबुद्ध वर्ग धर्मतन्त्र को सँभालें १.६२
भौतिक प्रगति पर्याप्त नहीं १.६३
दिशा बदले तो युग बदले १.६३
अपराधों में लगे हुए व्यक्ति १.६४
बढ़ी-चढ़ी भूल १.६४
परिवर्तन सम्भव है १.६४
नर-पशु धरती के भार १.६४
नर-पिशाचों से क्या आशा ? १.६५
संसार की आशा का केन्द्र १.६५
इतिहास के उज्ज्वल नक्षत्र १.६६
प्रबुद्ध वर्ग का महत्व १.६७
सर्वोपयोगी साहस १.६७
युग का आह्वान एवं आमन्त्रण १.६७
समृद्ध बनने की लिप्सा छोड़ें १.६८
लगन क्या नहीं कर सकती ? १.६९
भावनाओं पर प्रभाव १.६९
राजतन्त्र बनाम प्रजातन्त्र १.६९
निकृष्टता को उत्कृष्टता में बदलें १.७०
निरर्थक झिझक दूर करें १.७०
प्रचण्ड जन-शक्ति का उपयोग १.७१
लोक शिक्षण के लिए धार्मिकता का सहारा लिया जाये १.७१
रामायण कथा का सात दिन का सप्ताह १.७४
आवरणों की उपयोगिता १.७५
उद्देश्य प्रधान रहे १.७६
भावी नेतृत्व की भावना १.७७
पारमार्थिक महत्त्वाकांक्षा जागे १.७७
धर्मचेतना और जनजागरण धर्म धारण का संवर्धन १.७८
धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण प्रयोग और उपलब्धियाँ १.८८
चिरकालीन का चिर नवीन शैली से परीक्षण १.८८
आरम्भ और विस्तार १.९१
परिवार में कुछ नियमिततायें और मर्यादा १.९१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिशन और राजनीति १.६३
गायत्री तपोभूमि और युग निर्माण अभियान १.६४
धर्म का यथार्थ स्वरूप और आर्ष साहित्य १.६६
व्यावहारिक अध्यात्म का सत्साहित्य १.६७
कथा प्रवचनों की त्रिवेणी १.६७
मिशन की आठ पत्रिकाएँ १.६८
छोटे-से परिवार की बड़ी उपलब्धियाँ १.६८
शान्तिकुंज की स्थापना और गतिविधि १.१००
महिला जागरण अभियान १.१०३
तीर्थयात्रा धर्म परम्परा का पुनर्जीवन १.१०६
प्रशिक्षण व्यवस्था १.१०७
त्रैमासिक-पाठ्यक्रम १.१०७
कर्मकाण्ड सम्बन्धी पाठ्यक्रम १.१०८
पर्व १.१०६
विशेष आयोजन १.१०६
गायत्री यज्ञ १.१०६
सामूहिक विवाह १.११०
श्रीराम कथा १.११०
श्रीकृष्ण कथा १.१११
सत्यनारायण कथा १.१११
उपासना प्रार्थना १.१११
बैद्धिक प्रशिक्षण १.११२
क्रमिक विकास १.११२
धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण की प्रक्रिया १.११३
कार्य-पद्धति की रूपरेखा १.११४
दो अनुपम प्रयोग परीक्षण १.११८

२. धर्मतन्त्र की गरिमा और क्षमता

युग शक्ति का उद्भव और युग निर्माण २.१
परिवार की पाठशाला में सुसंस्कारी प्रशिक्षण २.३
पर्व त्यौहारों द्वारा लोकशिक्षण २.७
आत्म-विकास के आधार स्तम्भ २.१३
नव रात्रि पर्व पर तपश्चर्या और ज्ञानसाधना का समन्वय २.१७
शाखा संगठनों के वार्षिकोत्सव २.२३
लोकशिक्षण के लिए मेलों का उपयोग २.२६
आस्थाओं का परिशोधन धर्मतन्त्र के माध्यम से २.३०
धार्मिक कृत्यों के साथ देव-दक्षिणा आवश्यक २.३१
जन-जागरण के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं २.३५
पर्व एवं त्यौहार देव संसकृति की अनमोल धरोहर २.४५
पर्व और त्यौहारों से प्रेरणा ग्रहण करें २.४८
पर्व और त्यौहारों का उद्देश्य २.५०
इन उत्सवों को कैसे मनावें ? २.५०
लकीर पीटने से क्या लाभ ? २.५१
सही ढंग से सही काम २.५१
अधिक लोगों को अधिक लाभ २.५२
आयोजन की व्यवस्था २.५२
शोभा सुसज्जा २.५३
अनेक का प्रशिक्षण करें २.५३
विधि-विधान के साथ विवेचन भी २.५४
सामूहिक एवं वैयक्तिक २.५५
दस प्रमुख पर्व २.५५
(१) गुरु पूर्णिमा २.५६
(२) श्रावणी २.५६
(३) पितृ-अमावस्या २.५७
(४) विजयादशमी २.५७
(५) दीपावली २.५७
(६) गाती-जयन्ती २.५७
(७) बसंत-पंचमी २.५७
(८) शिवरात्रि २.५८
(९) होली २.५८
(१०) गायत्री जयन्ती २.५८
समाज-निर्माण की रचनात्मक पृष्ठभूमि २.५८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

३. हमारी संस्कृति के स्तंभ

त्यौहार और व्रत ३.१
आत्मविकास के लिए व्रत पालन की आवश्यकता ३.२
व्रत रखने की त्रिविध लाभ ३.४
हमारे त्यौहार और पर्व ३.६
पर्व और त्यौहारों की उपयोगिता ३.१०
पर्व-आयोजनों द्वारा सामाजिक सुसंस्कारिता ३.१३
प्रेरक प्रसंगों का प्रवाह उभारा जाय ३.१४
सामूहिकता की आवश्यकता ३.१७
वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का उदय ३.१८
पर्व त्यौहारों की उद्देश्यपूर्ण परम्परा ३.१६
पर्व आयोजनों का उद्देश्य और स्वरूप – ३.२१
पर्वों को प्रेरणाप्रद पद्धति से मनाया जाय ३.२४
पर्व और त्यौहार इस प्रकार मनायें ३.२८
सभी पर्वों के मनाने का विधान एक है ३.३०
पर्व आयोजन क्यों ? कैसे ? ३.३२
वर्ष के दस विशेष पर्व ३.३३
संकल्प के जागरण से उल्लासवर्धन तक ३.३५

४. पर्व और त्यौहार-प्रकरण

उपयुक्त पर्वों का चुनाव ४.१
अनेक पर्वों का एक प्रारूप ४.२
पर्व व्यवस्था सूत्र—संकेत ४.३
पर्व देवता का षोडशोपचार पूजन ४.४
पुरुष सूत्र द्वारा देव पूजन ४.४
श्री सूक्त द्वारा देवपूजन ४.५
सामान्य पर्व-त्यौहार पूजन प्रकरण ४.६
नवीन संवत्सर ४.१२
नवीन वर्ष की प्रेरणा ४.१३
नवरात्रि पर्व ४.१६
नवरात्रि पर्व की महत्ता और कार्यक्रम ४.१७
रामनवमी ४.२०
उद्देश्य और शिक्षा ४.२३
शीतला अष्टमी ४.२७
अक्षय तृतीया ४.२८
गायत्री जयन्ती—गंगा जयन्ती ४.२९
हमारा आराधना पर्व गायत्री जयन्ती ४.३६
गंगा और गायत्री की जन्म जयन्ती उपेक्षित न रहे ४.३८
अवतरण पर्व—सार्थक बनाया जाय ४.४०
गायत्री जयन्ती पर्व—अखण्ड पारायण के रूप में मनाया जाय ४.४४
गायत्री जयन्ती की तैयारियाँ सृजनात्मक हों ४.४८
निर्जला एकादशी ४.५१
गुरु पूर्णिमा—गुरुजनों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का पर्व-गुरु पूर्णिमा ४.५२
गुरु पूर्णिमा का पुनीत पर्व ४.५४
पर्व पूजन क्रम ४.५८
गुरु पूर्णिमा और श्रावणी पर्व परस्पर पूरक बनें ४.६०
वृक्षारोपण की पुनीत परम्परा—हरियाली अमावस्या ४.६४
हरियाली तीज ४.६६
श्रावणी और रक्षाबन्धन ४.६७
सत्संकल्पों का त्यौहार—श्रावणी ४.६६
श्रावणी पर्व का सन्देश ४.७१
ज्ञान और कर्म का समन्वय पर्व श्रावणी ४.७५
रक्षा बन्धन ४.८०
श्री कृष्ण जन्माष्टमी और गीता जयन्ती ४.८१
जन्माष्टमी का उत्सव आदर्शमय हो ४.८३
गीता जयन्ती ४.८५
गणेश चतुर्थी ४.६०
ऋषि पंचमी ४.६२
अनन्त चतुर्दशी ४.६३

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्व पितृ अमावस्या ४.६४
सर्व पितृ अमावस्या का महत्व ४.६५
पितृ अमावस्या—पर्व पूजन ४.६७
पितृ आवाहन मंत्र ४.६६
विजयादशमी ४.१०२
वीरता और स्वास्थ्य का त्यौहार विजयादशमी ४.१०४
विजयादशमी—विजय पर्व ४.१०५
विजयादशमी इस तरह मनाएँ ४.१०८
विजया दशमी—पर्व पूजन ४.१०६
दुर्गा-आवाहन पूजन ४.११०
शस्त्र पूजा ४.११०
दीपावली ४.१११
आर्थिक समस्या पर विचार करने का त्यौहार दीपावली ४.११२
कार्तिकी अमावस्या का ज्योति पर्व ४.११५
दीपावली पर प्रेरणाओं के दीप जलें ४.११५
दीपावली की पृष्ठभूमि ४.११७
दीवाली का सन्देश ४.११६
शुभ ज्योति 'जग' 'मग' 'जगमग' कर दें ४.१२०
दीपावली पर्व की प्रेरणा और शिक्षण ४.१२२
दिव्य निर्मल कमल-लक्ष्मी का आसन ४.१२४
नव प्रकाश से नव प्रयास जुड़ें ४.१२५
दीपावली—उद्देश्य और शिक्षा ४.१२७
दीपावली पर्व विधान ४.१२८
गोवर्द्धन और अन्नकूट ४.१२६
भैया दूज अथवा यम द्वितीया ४.१३०
गोपाष्टमी ४.१३१
देवोत्थान एकादशी ४.१३२
भीष्म पंचक ४.१३३
मकर संक्रान्ति ४.१३४
वसंत पंचमी ४.१३४
विद्या और ज्ञान का त्यौहार वसन्त पंचमी ४.१३५
वसन्त का उल्लास और अभिनंदन ४.१३७
वसन्त पर्व—माहात्म्य बोध ४.१३६
उद्देश्य और शिक्षा ४.१४२
वसन्त पर्व क्षणिक उफान बनकर न रह जाय ४.१४३
हमारे प्रयासों में भी निखार आये ४.१४७
वसन्त पर्व का विधि-विधान निर्धारित करें ४.१४६
पूजन विशेषोपचार ४.१५०
मिशन का जन्मोत्सव प्रसंग ४.१५१
ज्ञान यज्ञ पात्र पूजन ४.१५१
व्रत धारण संकल्प ४.१५१
क्रम व्यवस्था ४.१५२
ध्यान देने योग्य बातें ४.१५३
रिहर्सल कर लें ४.१५३
पर्व पूजन क्रम ४.१५४
सरस्वती आवाहन ४.१५४
महाशिव रात्रि पर्व ४.१५५
महाशिव रात्रि की प्रेरणा ४.१५७
शिवरात्रि का व्रत और उसकी कल्याणकारी शिक्षाएँ ४.१५६
शिवरात्रि—उद्देश्य और शिक्षा ४.१६१
महाशिव रात्रि पर्व—माहात्म्य बोध ४.१६२
विशेष आवाहन पूजनम् ४.१६२
शिव परिवार आवाहन ४.१६२
गण आवाहन ४.१६३
अशिव त्याग संकल्प ४.१६३
होली ४.१६४
होली की पौराणिक पृष्ठ भूमि ४.१६६
होली का वास्तविक स्वरूप ४.१६८
होली का सन्देश ४.१७०
होली—उद्देश्य और शिक्षा ४.१७१
होली का त्यौहार कैसे मनाया जाय ४.१७१
सामूहिक यज्ञ ४.१७३
रात्रि में प्रवचन ४.१७४
भैया दूज ४.१७४
होलिका पर्व—माहात्म्य बोध ४.१७५
नृसिंह पूजन ४.१७६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मातृभूमि पूजन ४.१७६
त्रिधा समता देवी पूजन ४.१७६
क्षमावाणी ४.१७७
रज-धारणम् ४.१७७
नवान्न यज्ञ ४.१७७
परिशिष्ट—अन्य व्रत और त्यौहार ४.१७८
प्राचीन काल के कुछ विशेष व्रत ४.१८१
नाराह पुराण के व्रत ४.१८१
मत्स्य पुराण के व्रत ४.१८१
नारद पुराण के व्रत ४.१८१
पर्व अनेक—विधान एक ४.१८४
गुरु पूर्णिमा ४.१८६
पर्व आयोजनों का स्वरूप विकृत न होने दें ४.१८७
वार्षिकोत्सव एक नियमित प्रेरणा पर्व ४.१८८
धर्म समारोहों द्वारा व्यक्ति और समाज का प्रशिक्षण ४.१८९

५. लोक जागरण के लिए जन-सम्मेलन

सामूहिक शक्ति का विकास सम्मेलनों से ५.१
शोभा यात्राएँ ५.३
आयोजनों की पृष्ठभूमि और तैयारी ५.५
प्रचुर साधन इस प्रकार जुटेंगे ५.६
लोक रंजन और लोक मंगल का समन्वय ५.१४
प्रचार सम्मेलनों के लिए अर्थ-संग्रह ५.२०
सार्वजनिक धन का दुरुपयोग न हो ५.२४
ब्रह्मभोज और प्रसाद वितरण ५.२६
तीर्थ-यात्रा और धार्मिक मेलों का उद्देश्य ५.३१
मेले-ठेले और उनका वर्तमान स्वरूप ५.३४
मेलों को सुधरे स्तर का बनाया जाय ५.३६
पर्व-उत्सवों व तीर्थों को धर्म-प्रचार के साधन बनाइये ५.३८
अद्भुत, विलक्षण हिमालय की यह पद यात्रा ५.४०
तीर्थ परम्परा के साथ धर्म सम्मेलनों का सुयोग ५.४१

६. धर्मचक्र - प्रवर्तन - परिव्रज्या का पुनर्जागरण

धर्मचक्र-प्रवर्तन की क्रान्तिकारी प्रक्रिया ६.१
बुद्ध का लोकसेवी परिव्राजकों को सन्देश ६.४
नारद की परिव्रज्या ६.५
एक वर्ष की प्रज्ञा प्रव्रज्या का विशेष आमन्त्रण ६.६
वानप्रस्थ नवयुग का प्रमुख आधार ६.१०
यह कदम हम नहीं तो और कौन उठायेगा ? ६.१२
कनिष्ठ वानप्रस्थों की स्वल्पकालीन शिक्षा-दीक्षा ६.१५
महान् प्रयोजन के लिए महान् साहस भी चाहिये ६.१८
हमें कहाँ, कैसे, कब और क्या करना होगा ? ६.२१
वानप्रस्थ परम्परा का सर्वथा लोप न होने दें ६.२४
हमारी सबसे प्रमुख और सबसे प्रधान आवश्यकता ६.२६
यह विडम्बना न सुधरेगी न बदलेगी ६.२६
इस आपत्तिकाल में हम थोड़ा साहस तो करें ही ! ६.३२
मानवीय अवगुण, प्रस्तुत विकृतियाँ और उनके निराकरण का एकमात्र आधार ६.३८
जीवन का उत्तरार्ध परमार्थ में नियोजित हो ६.३८
देव जीवन का अवसर और आयुष्य ६.४२
उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ स्तर का वानप्रस्थ ६.४६
परमार्थ जीवन की समग्र शिक्षा साधना ६.४६
वानप्रस्थ सेवा साधना का स्वरूप और दर्शन ६.५३
त्रिविधि साधना पद्धति का अधिक स्पष्टीकरण ६.५७
धर्मचक्र-प्रवर्तन के लिए आंशिक समयदान ६.६०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सद्भावनाओं का सत्प्रवृत्तियों में नियोजन ६.६३
वानप्रस्थों का तात्कालिक कार्यक्रम—शिविर संचालन ६.६६
वानप्रस्थ से तेजस्वी जीवन ६.६६
वानप्रस्थ की परम तेजस्वी साधना ६.७१
वयोवृद्धों के लिये एक अनुपम अवसर—जो इससे चूकेंगे, वे सदा पछताते रहेंगे ६.७३
भविष्य निर्माण की तैयारी ६.७३
गृह-निवृत व्यक्ति यों सार्चे, यों करें ६.७४
सच्ची तीर्थ-यात्रा का पुण्य-फल ६.७४
इस अभाव की पूर्ति की जाये ६.७५
एकवर्षीय तपश्चर्या ६.७५
साथ में ब्रह्म-विद्या की शिक्षा भी ६.७५
विधि व्यवस्था एवं रूपरेखा ६.७६
ब्रह्मवर्चस और वानप्रस्थ ६.७७
हमारे भावी कार्यक्रम जिन्हें सृजन सेना के सैनिक ही पूरा करेंगे ६.८०
स्वार्थ और परमार्थ की समन्वित साधना ६.८४
इतना तो व्यस्त और विवश होते हुये भी कर सकते हैं ६.८८
आह्वान/आमन्त्रण और अनुरोध ६.८६
नारी उत्कर्ष के लिये महिला वानप्रस्थों की आवश्यकता ६.६०
देव संस्कृति के पुरातन स्वरूप का नवीनीकरण ६.६४
जन जागृति का अभिनव अभियान ६.६७
एक लाख गायत्री यज्ञ ६.६८
एक लाख की संजीवनी—विद्या का प्रशिक्षण ६.६६
एक लाख अशोक वृक्षों का आरोपण ६.६६
हर गाँव एक युग तीर्थ ६.१००
एक लाख वर्ष का समयदान ६.१०१
बड़े अनुदान बड़े वरदान ६.१०३

७. देव संस्कृति का मेरुदण्ड वानप्रस्थ

जीवन सम्पदा का दुरुपयोग ७.१
शिक्षा ही नहीं विद्या भी ७.३
संद्ज्ञान सम्पदा का अभाव ७.६
अतीत की गरिमा में धर्मतन्त्र का योगदान ७.६
प्रतिभा परिष्कार की महती आवश्यकता ७.१२
पृथ्वी के देवता—भूसुर-पुरोहित ७.१५
सरल किन्तु अति प्रभावी कार्य पद्धति ७.१८
अनुकरणीय आदर्श हमें ही प्रस्तुत करना है ७.२१
वानप्रस्थ परम्परा का पुनर्जागरण
भारत का महान अतीत और उसके आधार ७.२३
पतन के कारण और उत्कर्ष की दशा ७.२८
आर्ष परम्परा का पुनर्जागरण आवश्यक ७.३२
वानप्रस्थ की युगानुकूल रूपरेखा ७.३६
योजना और कार्यप्रणाली ७.४४
महत् कार्य का विहंगावलोकन ७.४६
संघ शक्ति जागे समाज को सुसंकृत बनाए ७.५३

८. विवेक सम्मत दान : एक पुण्य प्रक्रिया

दान की सार्थकता और श्रेष्ठता किसमें ८.१
दान के लिये उपयोगिता की कसौटी जरूरी ८.३
दान का दुरुपयोग न हो ८.६
आवश्यक संचय कभी टिकता नहीं ८.८
साधनों का सदुपयोग कैसे बन पड़े ८.११
दान में उपयोगिता का समावेश हो ८.१५
निर्धन भी दानवीर हो सकते हैं ८.१७
दान की परम्परा चलती रहे ८.२०
उदारशीलता विवेक सम्मत हो ८.२२
दानशीलता में गरीबी बाधक नहीं ८.२५
दान में विवेक की आवश्यकता ८.३०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मतन्त्र के माध्यम से लोक शिक्षण

उचित और आवश्यक होते हुये भी व्यवहारिक रूप से यह सम्भव नहीं कि एक-एक व्यक्ति के पास प्रचारक जायें। इस प्रकार काम थोड़ा होता है। एक व्यक्ति दिन भर में दस-बीस व्यक्तियों से ही सम्पर्क बना सकता है, बता, समझा सकता है, जबकि सामूहिक, आयोजनों के माध्यम से एक ही दिन में हजारों लाखों तक नव जागृति का सन्देश पहुँचाया, जाना सम्भव है। अस्तु, दोनों ही प्रयास जारी रखने चाहिये। झोला पुस्तकालयों, चल पुस्तकालयों, पाठशालाओं, टोली अभियानों, पदयात्राओं द्वारा व्यक्तिगत जन-सम्पर्क चलता रहे, साथ ही सामूहिक आयोजनों के क्रिया-कलाप भी उत्साहपूर्वक चलते रहें। अधिक लोगों का अधिक शिक्षण और अपना बड़ा पक्ष देखकर साहस एवं उत्साह की वृद्धि का प्रयोजन इन सामूहिक कार्यक्रमों द्वारा ही सम्पन्न होगा। अस्तु, अपनी कार्य पद्धति में दोनों ही प्रयासों के लिये समुचित स्थान रहना चाहिये।

सामूहिक आयोजनों का छोटा पारिवारिक रूप वह है, जिसकी चर्चा संस्कारों के प्रकरण में की गई है। जन्म-दिन उत्सव, विवाह-दिन उत्सव, गर्भवती का पुंसवन संस्कार, नवजात शिशु का नामकरण-मुण्डन (शिखा स्थापन) यज्ञोपवीत, विवाह, वानप्रस्थ, मरणोत्तर संस्कार इन्हें पारिवारिक कह सकते हैं। इनके माध्यम से एक घर परिवार, पड़ोस, परिचित तथा समीपवर्ती लोगों को बुलाकर परिवार गोष्ठी स्तर का लोक शिक्षण किया जा सकता है। यों इनमें व्यक्ति और परिवार के बीच की चर्चा अधिक है, फिर भी उसमें सामाजिक विशाल क्षेत्र में कर्त्तव्य-पालन कैसे किया जाये, इस विषय को भी प्रवचनों में जोड़े रहा जा सकता है। वस्तुतः व्यक्ति और परिवार को कर्त्तव्यपरायणता की दिशा में प्रशिक्षित करना भी सामाजिक उत्कर्ष का ही अविछिन्न अंग है।

कई विवाहों और कई वानप्रस्थ संस्कारों को यदि इकट्ठा कर दिया जाये तो उनका एक स्वतन्त्र सार्वजनिक समारोह जैसा बहुत ही आकर्षक स्वरूप बन सकता है और आज की इन दोनों महती आवश्यकताओं के लिये जन उत्साह उत्पन्न हो सकता है। सामूहिक विवाहों में छुट-पुट अलन-चलन, नेग-जोग और समय तथा पैसा नष्ट करने वाली निरर्थक टुन-मुन का अन्त हो जाता है। जेवर और दहेज की आवश्यकता नहीं रहती, साथ ही उस अवसर को आनन्दमय, उत्साहपूर्ण बनाने का प्रयोजन घरेलू विवाहों की तुलना में अनेक गुना अधिक बढ़ जाता है। जनता द्वारा पुष्प वर्षा, बरात के रूप में हजारों व्यक्तियों का जुलूस, हजारों व्यक्तियों की दृष्टि में विवेकशीलता और साहसिकता के अग्रदूत की तरह सराहना, जनता का आकर्षण केन्द्र और चर्चा का विषय बनना जैसे लाभ सामूहिक विवाह आयोजनों में ही सम्भव होते हैं।

यही बात सामूहिक वानप्रस्थ ग्रहण में है। कई व्यक्ति एक साथ वानप्रस्थ लें तो उन आयोजनों में उपस्थित लोगों को यह अनुभव होता है कि यह किसी एक की सनक नहीं वरन् परम्परा का पुनर्जागरण है। आज (१) विवाह विकृतियों का निराकरण (२) सार्वजनिक लोक सेवा के लिये व्रत धारण, इन दोनों ही प्रचलनों की भारी आवश्यकता है। पहला कदम कुरीतियों के उन्मूलन के लिये और दूसरा लोक-निर्माण के लिये प्रभावी कार्यकर्त्ताओं की बड़ी संख्या में उपलब्धि के लिये आवश्यक है। इन दोनों प्रवृत्तियों को सामूहिक आयोजनों के रूप में सम्पन्न किया जाता रहे तो निश्चय ही इस दिशा में दूसरे लोगों को भी वैसे ही कदम उठाने की प्रेरणा मिलेगी।

यों यज्ञोपवीत और मुण्डन संस्कारों को भी ऐसा ही रूप दिया जा सकता है। पर्व आयोजनों के साथ उन्हें जोड़ा जा सकता है। केवल पुंसवन और नामकरण संस्कार ही ऐसे हैं जिनके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिये अलग-अलग घरेलू व्यवस्था ही उपयुक्त रह सकती है। जहाँ ऐसी परिस्थिति हो उपर्युक्त संस्कारों को घरेलू विचार गोष्ठी या सामूहिक समारोह के रूप में सम्पन्न करने के लिये हमें निरन्तर सचेष्ट रहना चाहिये और इसके लिये प्रयत्नशील रहना चाहिये। युग निर्माण शाखायें इस आन्दोलन को व्यवस्थित रूप से चलायें। एक टोली मन्त्रोच्चारण, मण्डप सज्जा, तथा कर्मकाण्ड कराने की विधि व्यवस्था की अभ्यस्त रहे। विधान की पुस्तकें कुछ अधिक संख्या में रखी जायें ताकि हर शिक्षित व्यक्ति को हर आयोजन के समय उनके सहारे परिचय, प्रशिक्षण पाने तथा अभ्यास करने का अवसर मिल सके।

यही बात पर्व आयोजनों के सम्बन्ध में है। उन सामूहिक आयोजनों को यदि आरम्भिक कुछ वर्षों तक अधिक उत्साह के साथ क्रमबद्ध रूप से चला लिया गया तो वे एक परम्परा परिपाटी का रूप धारण कर लेंगे और जनता उनकी व्यवस्था स्वयं सम्भालने लगेगी। तब लोक शिक्षण का एक उपयोगी मंच खुल जायेगा और बिना प्रयास एवं बिना खर्च के जल्दी-जल्दी आयोजन होते रहेंगे। अगले दिनों व्यापक परिवर्तन व्यवहार में लाने पड़ेंगे उनके लिये सामूहिक आयोजनों के सहारे ही लोक-शिक्षण सम्भव होगा। यह आवश्यकता पर्व उत्सवों द्वारा बड़ी सुविधापूर्वक सम्पन्न होती रह सकती है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये हर क्षेत्र में वक्ता और गायक उत्पन्न करने वाले नव-निर्माण के प्रवक्ताओं की आज भारी कमी है। इस आवश्यकता की पूर्ति इन पर्व आयोजनों द्वारा ही पूरी होगी। हर क्षेत्र में सुयोग्य व्यक्ति होते हैं पर उन्हें अवसर न मिलने से अपनी प्रतिभा से दूसरों को लाभान्वित नहीं कर पाते अवसर मिलने से उनका भी शिक्षण हो जाता है।

अपनी वर्तमान चार हजार शाखाओं में हर वर्ष छः आयोजन होते रहें और हर आयोजन में औसतन ६ वक्ता गायकों को अवसर मिलता रहे तो २४ हजार प्रवक्ताओं की एक बड़ी सेना हम खड़ी कर सकते हैं। उलट-पुलट कर अवसर मिलता रहे तो यह सेना एक दो वर्ष में ही ५० हजार हो सकती है। यह अपने शाखा संगठनों की आज की स्थिति के अनुरूप बात है, आगे तो इसका विस्तार स्वरूप कितने ही गुना बढ़ने वाला है। तदनुसार विचार क्रान्ति की आवश्यकता पूरी कर सकने वाले प्रवक्ता भी इसी प्रकार उत्पन्न हो सकते हैं और बिना किसी प्रकार का अतिरिक्त प्रयास या खर्च किये एक बहुत बड़ा प्रयोजन पूरा होता रह सकता है।

संस्कारों की तरह का घरेलू आयोजन 'सत्य नारायण व्रत कथा' का है। अभी भी सारे देश में उसका प्रचलन है। उसे थोड़ा सुधार दिया जाये तो मजा आ जाय। आज तो कथा कहने सुनने का लाभ और उसकी उपेक्षा करने की हानि का महात्म्य भर बताकर पंडित जी एक लकीर मात्र पीट देते हैं। वस्तुतः वह सत्यमय जीवनोद्देश्य को अपनाने का व्रत धारण करने की शिक्षा है। सत्य का मतलब सच बोलना भर नहीं वरन् विवेक कर्त्तव्य, सदाचरण, परमार्थ जैसी सत्प्रवृत्तियों और सद्भावनाओं से भरा हुआ जीवन जीना है। यही लोक शिक्षण सत्य को नारायण मानकर उसका व्रत धारण करने, व्यवहारिक जीवन में उतारने की स्फूर्ति पैदा करता है। इसे परिष्कृत ढंग से कैसे कहा जाना चाहिये एक इसकी विधि व्यवस्था युग निर्माण आन्दोलन में सम्मिलित है।

प्रचलित सत्य नारायण व्रत कथा में जहाँ-तहाँ आवश्यक श्लोक और जोड़ दिये गये हैं ताकि उनकी व्यवस्था करते हुये वक्ता को मूल प्रयोजन समझना अधिक सरल हो जाये। राधेश्याम तर्ज पर हिन्दी कविता में भी यह कथा बना दी गई है, ताकि यदि संगीत की भी व्यवस्था बन सके तो उस आधार पर और भी अधिक आकर्षक ढंग से धार्मिक वातावरण में चरित्र गठन की महत्त्वपूर्ण शिक्षा दी जा सकनी सम्भव हो। छोटा आयोजन दो-तीन घंटे में ही पूरा हो जाता है, पर रहता बड़ा आकर्षक और प्रभावशाली है। परिस्थिति के अनुसार उसे घरेलू अथवा सामूहिक रूप में करते रहने का प्रचलन करना चाहिये। मंदिरों में तो यह हर सप्ताह होती रहा करे तो और भी अच्छा हो।

सहगान कीर्तन की प्रक्रिया भी ऐसी ही है। रात्रि को अवकाश के समय लोगों को एकत्रित करके सहगान कीर्तन प्रक्रिया के अनुसार भावोद्वेलित उभार के साथ लोक शिक्षण किया जा सकता है। महाराष्ट्र में अभी भी इस स्तर का प्रचलन है। हिन्दी भाषी प्रान्तों में तो इन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिनों रामधुन को ही कीर्तन कहा जाता है। इसमें रामरट की धुन दुहराई जाती रहती है। अपनी कीर्तन पद्धति विशिष्ट प्रकार की है। उसमें एक पदान्त टेक ओर मूलटेक यह दो पंक्तियाँ ही जन सहयोग से सहगान के रूप में गाई जाती हैं। कीर्तन के चार चरण केवल मूलवक्ता गाकर सुनाता है और उसकी व्याख्या करता है। इस प्रकार लोक शिक्षण का महत्त्वपूर्ण प्रयोजन भी होता रहता है और सहगान का आनन्द भी आता रहता है। यह भी बिना अतिरिक्त साधनों या अतिरिक्त प्रयास का उत्तम जन-जागरण माध्यम है।

साप्ताहिक समारोह इस सन्दर्भ में और भी अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। लगातार सात दिन तक इस विचारधारा को सुनने समझने से जनता की मनोभूमि में बात और भी गहराई से बैठ जाती है और उतने दिन तक सम्पर्क बनते रहने से लोगों में कुछ करने का उत्साह और साहस उत्पन्न किया जा सकता है।

रामायण कथा और कृष्णायन कथा दोनों ही इस प्रयोजन को पूरा करती हैं। पंडिताऊ क्षेत्र में भागवत कथा सप्ताह के रूप में कहे जाने कां प्रचलन है। अन्तिम दिन समापन समारोह होता है। उसी से मिलते-जुलते अपने रामायण कथा एवं कृष्णायन प्रसंग है। भगवान राम और कृष्ण अपनी संस्कृति के सूर्यचन्द्र हैं। उनके क्रिया-कलाप और उपदेश ऐसे हैं मानो उन्हें युग निर्माण योजना को व्यापक बनाने के लिये ही किया या कहा गया हो। लोग उन्हें समझ या समझा नहीं पाते, उलटे-पुलटे ढंग से कहकर गुड़ गोबर करते रहते हैं, अन्यथा परिष्कृत दृष्टि से उन्हें समझा और समझाया जा सके तो उनमें व्यक्ति और समाज की समस्त समस्याओं का समाधान कर सकने वाले आधार सिद्धान्त और तथ्य मौजूद हैं। युग निर्माण परिवार इसी आधार पर इन आयोजनों को सम्पन्न करता है।

रामायण या कृष्णायन किसी को भी साप्ताहिक आयोजन के रूप में लिया जा सकता है। तुलसी कृत रामायण के घटनापरक वर्णनों को संक्षिप्त कर दिया गया है और शिक्षणात्मक प्रसंग यथावत् रखे गये हैं। इस सुधार से सात दिन में उसका सामूहिक पाठ और व्याख्याक्रम बिलकुल सही और व्यवस्थित बैठ जाता है। पूरी रामायण का सात दिन में पूरा पाठ किया जाये और उतनी व्याख्या की जाय तो यह सम्भव ही नहीं होगा। समय और सुविधा का ध्यान रखते हुये यह करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग भी नहीं। महर्षि वाल्मीकि की संस्कृत रामायण को गोस्वामी तुलसी दास जी ने लोक भाषा में पद्यानुवाद करके जनता की भारी सेवा की है। वह लोकप्रिय इसी आधार पर हो सकी अन्यथा संस्कृत तक सीमित रहती तो उसका इतना व्यापक प्रचलन न हो पाता और जनता को जो प्रकाश मिला वह न मिल सका होता।

कृष्णायन के माध्यम से इसी प्रकार कृष्ण चरित्र तथा उनके प्रतिपादन को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया गया है। वाल्मीकि रामायण और भागवत पुराण के संस्कृत ग्रन्थों को भी हिन्दी माध्यम से जनता को हृदयंगम कराया जा रहा है। पंडित लोग पाठ करते रहते थें, उसके स्थान पर उपस्थित लोगों को सहगान सहपाठ के रूप में पारायण करने की व्यवस्था बता दी गई है। इस प्रयास को संस्कृत के माध्यम से पंडितों द्वारा सम्पन्न होने वाले साप्ताहिक धर्मानुष्ठानों का लोक भाषा संस्करण कहा जा सकता है। शेष परिपाटी वही है।

कहना न होगा कि युग निर्माण योजना के सामने एक मिशन एवं लक्ष्य है। उसमें कथा के लिये कथा कहना नहीं लोक शिक्षण के लिये ही कथा का उपयोग करने की पद्धति अपनाई गई है। राम-चरित्र और कृष्ण-चरित्र को भारतीय संस्कृति के इन सूर्य-चन्द्रों के प्रकाश को जन मानस तक पहुँचाने के पीछे अपना विशिष्ट दृष्टिकोण है। यह कथायें मूल प्रसंगों के आधुनिक समाधानों के समन्वय के साथ प्रस्तुत की जाती हैं और उनसे भावनात्मक नव निर्माण का प्रयोजन भली प्रकार पूरा होता है।

जहाँ भी सम्भव होता है, इस प्रकार के साप्ताहिक आयोजन रखे जाते हैं। पहले से ही उसकी व्यवस्था बनाई जाती है। उपयुक्त स्थान का चुनाव, सम्मिलित होते रहने के लिये आग्रह, सामूहिक पाठ के लिये आवश्यक संख्या में पुस्तकें, सम्भव हो तो संगीत के उपकरण भी, आकर्षक व्याप्त गद्दी, बैठने के लिये बिछावन, आरम्भ में पूजा प्रार्थना, सामूहिक जप, हवन,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्त में आहुति, पंच गव्य पंचामृत प्रसाद आदि सारी व्यवस्थायें जमा ली जाती हैं। सात दिन तक भावभरे वातावरण में यह लोक शिक्षण चलता रहता है। शाखायें अपने विशेष समारोह प्रायः इसी रूप में मनाती हैं। कोई विशिष्ट व्यक्ति अपनी ओर से भी इसकी व्यवस्था कराते हैं। अन्तिम दिन समापन होता है, उसमें समूहिक गायत्री यज्ञ, कीर्तन, कन्या-भोज आदि का विशेष प्रबन्ध रहता है। लोग पूजन में भेंट दक्षिणा चढ़ाते हैं, वह किसी व्यक्ति विशेष को नहीं दी जाती वरन् स्थानीय रचनात्मक कार्यों के लिये रहती है। प्रवक्ता यदि बाहर के हैं तो उन्हें नियत मार्ग व्यय व पारिश्रमिक दिया जाता है, इसमें व्यक्तिगत आपाधापी नहीं बढ़ती। सार्वजनिक धन सार्वजनिक कार्यों के लिये, इस सिद्धान्त का अपने धर्ममंच के क्रिया-कलापों में सदा से ही कड़ाई के साथ पालन किया गया है।

प्रकाश चित्र यन्त्र (स्लाइड प्रोजेक्टर) सामूहिक आयोजनों की एक अच्छी आवश्यकता पूरी करता है। कुछ घंटे पूर्व की सूचना पर ही भारी जनसंख्या उपस्थित हो जाती है और पर्दे पर रंगीन चित्र प्रदर्शन के साथ-साथ लाउडस्पीकर पर उन चित्रों की व्याख्या होते चलने से उपस्थित लोग मनोरंजन और प्रशिक्षण का दुहरा लाभ लेते हैं। इस प्रयास में असाधारण सफलता मिली है।

कविता सम्मेलन और संगीत सम्मेलनों के आयोजन अपने ढंग की अलग ही सफलता प्राप्त कर रहे हैं। बहुत जगह ऐसा सुन्दर रंग जमता है कि बड़ी संख्या में उपस्थित जनता रात को २-३ बजे तक भी उठना तो दूर, हिलने का भी नाम नहीं लेती। अगले दिनों अभिनयों की गीत नाटकों की कई शैलियाँ अपनाकर कलामंच को आकर्षक बनाने और सुव्यवस्थित मंडलियाँ बनाने की जो योजना है, उस आधार पर आशा की जा सकती है कि लोकरंजन और लोकमंगल का अद्भुत सम्मिश्रण करके जन मानस को झकझोर डालने और उसकी दिशा बदलकर युग परिवर्तन की भूमिका बनाने के लिये इनको सरलतापूर्वक नियोजित किया जा सकेगा।

गायत्री यज्ञों के आयोजन इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि उनके आधार पर भारतीय धर्म श्रद्धा को सजीव कर सकने की बात बहुत ही अच्छी तरह बनती है। युग निर्माण परिवार का उतना विशालकाय संगठन इसी आधार पर खड़ा किया जा सका है और धर्म के प्रति आस्था रखने वाले प्रबुद्ध विचारशील एवं लोकसेवी वर्ग को इसी आधार पर ढूँढ़ना, संघबद्ध करना और कार्यक्षेत्र में उतार सकना सम्भव हुआ है। गायत्री भारतीय संस्कृति की जननी, वेदमाता, सद्बुद्धि की देवी मानी गई है। यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता, संयम एवं परमार्थ का प्रतीक माना गया है। यही दो आधार हैं, जिनके ईंट चूने से इस महान् संस्कृति का विशाल भवन खड़ा है। इन दो आदर्शों को ज्ञान और कर्म के रूप में जन-मानस में उतारने से महान मानवता के प्रत्येक आदर्श का प्रतिपादन होता है।

पिछले दिनों प्रतिगामी तत्व, यज्ञ के नाम पर जनता से धन अपहरण तथा बहुमूल्य खाद्य पदार्थों को बड़ी मात्रा में जलाने की विडम्बना रचते रहे हैं, इसलिये आमतौर से विचारशील लोगों द्वारा उस आयोजन कृत्य का विरोध किया जाता रहा है। पर जिन्होंने अपने गायत्री यज्ञ आयोजनों को पास से देखा है, उनकी भ्रान्ति तत्काल दूर हो गई है और उन्होंने उसे रचनात्मक प्रयोजन पूरा करने वाला महत्त्वपूर्ण माध्यम माना है। उसे न केवल सराहा है वरन् समर्थन भी दिया है। अपने गायत्री यज्ञ आयोजनों में अधिकांश वे ही लोग हैं जो उस आन्दोलन से अपरिचित होने के दिनों में उसके घोर विरोधी थे, पर तथ्य को समझने पर वे जितने कट्टर विरोधी थे, उतने ही कट्टर समर्थक बन गये।

अपने गायत्री यज्ञों में अन्न का एक दाना भी नहीं जलाया जाता, सुगन्धित और गुणकारी जड़ी-बूटियाँ हवन सामग्री में रहती हैं। घृत की आहुति केवल एक व्यक्ति देते हैं और बड़े यज्ञों में भी उसकी मात्रा न्यूनतम ही रहती है। खाद्यान्न जलाने का दोष अपने आयोजनों पर कोई भी नहीं लगा सकता। उसे विशुद्ध रूप से अग्नि-पूजा कह सकते हैं। पूजन का विधान कार्यकर्त्ता लोग मिल-जुल कर सहकारी भावना से ही सम्पन्न करते हैं। मंडप निर्माण आदि सभी कार्य श्रमदान से सम्पन्न होने के कारण उनमें खर्च भी बहुत ही कम पड़ता है, तथ्य को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जानने पर उनमें राष्ट्रीय अपव्यय वाली बात कहीं ढूँढ़े भी नहीं मिलती, वरन् इतना सस्ता और साथ ही इतना प्रभावशाली आयोजन आधार देखकर हर विचारशील को आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है।

सामूहिक गायत्री यज्ञों में गायत्री की व्याख्या करते हुये विवेकशीलता, दूरदर्शिता, सद्भावना अपनाने का और यज्ञ का विवेचन करते हुये सत्कार्यों को, सत्प्रवृत्तियों को अपनाने का मार्ग बताया जाता है। प्रकारान्तर से नव-निर्माण के सारे तथ्य इन गायत्री यज्ञों के साथ अविछिन्न रूप से जुड़े रहने वाले युग निर्माण सम्मेलनों में समझाये जाते हैं। असमानता तथा अन्य कुरीतियों के उन्मूलन की दिशा में इन आयोजनों ने एक क्रान्ति ही उपस्थित कर दी है।

गायत्री यज्ञों में हर याज्ञिक को अपनी दुष्प्रवृत्तियों में से कम से कम एक को छोड़ना और एक नई सत्प्रवृत्ति को अपनाने का संकल्प अनिवार्य रूप से लेना पड़ता है। इस संकल्प प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति और समाज के नव-निर्माण में जो महत्त्वपूर्ण योगदान मिल रहा है, उस आधार पर भी यह यज्ञायोजन सफल ही माने जायेंगे।

संस्कार आयोजन द्वारा परिवार शिक्षण

भावोद्वेलित वातावरण में लोक-शिक्षण ठीक ऐसा ही है, जैसे आग में पिघली हुई धातु को किसी साँचे में ढालना। ठण्डे लोहे का मोड़ना और छीलना उतना सरल नहीं जितना उसकी गर्म स्थिति में। धार्मिक कर्मकाण्ड का प्रयोजन ऐसा भावनात्मक वातावरण उत्पन्न करता है, जिसमें उपयोगी शिक्षायें ठीक तरह हृदयंगम कराई जा सकें। संस्कारों का विधान और पर्वों का आयोजन इसी दृष्टिकोण से दूरदर्शी तत्व-वेत्ताओं ने विनिर्मित किया है।

नर और नारी के बीच का एक समझौता है। वाणी से कह देना भी उसके लिये पर्याप्त हो सकता है, पर उतना करने भर से भावात्मक प्रयोजन पूरा नहीं होता। इसलिये अग्नि की साक्षी में—देवताओं के सान्निध्य में, वेदमन्त्रों के उच्चारण के साथ—पुरोहितों की उपस्थिति में—स्वजन सम्बन्धियों के सान्निध्य में धूमधाम के साथ वह कृत्य पूरा किया जाता है। इसकी उपयोगिता इसलिये है कि इस भावनात्मक वातावरण में की हुई प्रतिज्ञाओं की दोनों के मन पर एक गहरी मनोवैज्ञानिक छाप पड़े और वे यह आस्था जमा लें कि वे सचमुच ही एक-दूसरे के साथ जुड़-बँध गये। यह आस्था इतनी परिपक्व होती है कि आये दिन खटपट और मतभेद रहने पर भी कोई एक-दूसरे से अलग होने की बात नहीं सोचता। अग्नि की साक्षी में—सात भांवर पड़ने पर जो विवाह सम्पन्न हुआ है वह भला टूट कैसे सकता है, वह तो हर स्थिति में आजीवन चलेगा। यह मान्यता इतनी अटूट और अडिग होती है कि अनेक असन्तोषों के रहते हुये भी वह विवाह बन्धन अपने स्थान पर परिपक्व ही बना रहता है, टस से मस होने का नाम नहीं लेता।

यदि विवाह कृत्य भावनात्मक वातावरण में सम्पन्न न हुआ हो, कर्मकाण्ड रहित और सार्वजनिक घोषणा से विरत रहा हो तो उसकी यथार्थता दोनों पक्ष गहराई तक स्वीकार नहीं करते। टूटने की आशंका भी करते रहते और थोड़ी-सी गड़बड़ी होने पर वह टूट भी जाता है। यह भावनात्मक वातावरण में कोई कृत्य सम्पन्न करने न करने का अन्तर है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर कृत्यों का सृजन हुआ है। गायत्री यज्ञों के अवसर पर आहुतियों वाले याज्ञिक कुछ दुष्प्रवृत्तियाँ छोड़ने और कुछ सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने की प्रतिज्ञायें लेते हैं। देखा गया है कि वे प्रतिज्ञायें आस्था के मर्मस्थल तक प्रवेश कर जाती हैं और आजीवन निभती हैं, जबकि साधारणतया उन बुरी बातों को छोड़ने का वायदा करने पर भी वह सब बात फिर ज्यों की त्यों होती रहती हैं।

परिवार का व्यक्ति के प्रति क्या कर्त्तव्य है और व्यक्ति को परिवार के लिये क्या करना चाहिये ? इस समग्र शिक्षण को भावनात्मक वातावरण में सम्पन्न करने, उस शिक्षा को ठीक तरह निभाते रहने की बात संस्कारों के माध्यम से जैसी अच्छी तरह हृदयंगम की जाती है और निभाई जाती है, उसे यदि हम ठीक तरह देख समझ सकें तो नास्तिक और अनास्थावान व्यक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को भी—कर्त्तव्यशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञानशास्त्र की महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं को सम्पन्न करने वाले इस क्रिया-कृत्य का समर्थन करने और अपनाने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। कृत्य का स्वरूप छोटा हो सकता है पर उसके परिणाम असाधारण हैं। दियासलाई पच्चीस पैसे की हो सकती है, पर उसके चमत्कारों को देखते हुये उसे तुच्छ या उपेक्षित नहीं कहा जा सकता। संस्कारों का कर्मकाण्ड इस दृष्टि से तुच्छ प्रतीत होते हुये भी परिणामों की दृष्टि से इतना सारगर्भित है कि उस पर जितना अधिक विचार किया जाये उतना ही उनकी उपयोगिता अधिकाधिक स्पष्ट होती चली जाती है।

संस्कारों का आयोजन शिक्षित और अशिक्षित, देहाती और शहरी सभी लोगों के लिये उपयोगी है। उसे परिष्कृत रीति से सम्पन्न किये जाने की अपनी शैली ऐसी है, जिसमें न आवश्यक खर्च का भार पड़ता है न पंडित पुरोहितों की हांडी पकती है। युग निर्माण शाखा के सदस्य ही मिल-जुलकर उस प्रक्रिया को पूरा कर लेते हैं, कर्मकाण्डों का विधान सरलतम है। उसका मन्त्रोच्चारण ऐसा है, जिसे सब मिलकर सधे स्वर में उच्चारण करते हैं तो वातावरण वेद विद्यालयों से बढ़कर बन जाता है। मण्डप, कलश, पूजा, वेदी, मंगल दीप, चौक मण्डप, झंडियाँ, द्वार, तोरण आदि की कलात्मक और सुरुचिपूर्ण साज-सज्जा ऐसी कुशलता से सम्पन्न की जाती है कि वहाँ पहुँचते ही आगन्तुक का हृदय हुलसने लगे।

खर्च न्यूनतम। पूजन आदि का खर्च तो नहीं के बराबर। आगन्तुकों के आगमन पर सौंफ, विदाई में पंचामृत, बस इतना भर स्वागत व्यय, सभी मित्र, कुटुम्बियों, पड़ोसियों का आमन्त्रण, एक उल्लास भरा वातावरण, सह-उच्चारण से पूजा-कृत्य और मन्त्र-पाठ, किसी सुयोग्य व्यक्ति का उस संस्कार के मूल आधार की व्याख्या हेतु प्रवचन, जो न केवल संस्कार कराने वाले परिवार के लिये वरन् उपस्थित लोगों के लिये भी प्रेरक हो, यह है अपनी संस्कारों के माध्यम से भावनात्मक वातावरण में लोक शिक्षण की पद्धति। धर्म के नाम से चिढ़ने वाले इसे व्यर्थ बता सकते हैं, पर जो निकट से, बारीकी से उसे देखने समझने की चेष्टा करेंगे, उन्हें इस पद्धति की गरिमा में तनिक भी सन्देह करने की गुञ्जाइश प्रतीत नहीं होगी।

ऐसे आयोजनों में जन्म-दिन मनाये जाने की प्रक्रिया है। जिसका हो वह अपने मित्रों को घर पर आमन्त्रित करे अथवा शाखा कार्यालय पर वह समारोह सम्पन्न किया जाय। धर्मानुष्ठान का निर्धारित कार्यक्रम संक्षिप्त और लगभग सभी आयोजनों में एक जैसा है। सामूहिक जप, पूजन, गायत्री यज्ञ, प्रार्थना आरती, श्रद्धांजलि पंचामृत का प्रसाद। इस सबमें खर्च की दृष्टि से दो-चार रुपये से अधिक खर्च नहीं होता। आकर्षक मण्डप और साज-सज्जा सबका मन मोहती है और वातावरण प्रभावोत्पादक बन जाता है। जिसका जन्म-दिन है, उसे लोग पुष्प उपहार देते हैं, शुभकामना करते हैं। चरणस्पर्श, हृदय-मिलन, आशीर्वाद का क्रम चलता है।

इस अवसर पर मुख्य शिक्षा मनुष्य के जीवन के महत्व को समझने की है। सुर दुर्लभ मनुष्य शरीर किस काम के लिये मिला है, उसके साथ क्या-क्या कर्त्तव्य जुड़े हुये हैं ? जीवन में सफल असफल होने के कारण क्या हैं, शेष जीवन किस आधार पर बिताया जाना चाहिये। इन तथ्यों पर प्रकाश डालते हुये न केवल जन्म-दिन वाले व्यक्ति को वरन् उपस्थित सभी लोगों को पवित्र जीवन जीने और लोकमंगल के लिये महत्त्वपूर्ण अनुदान प्रस्तुत करने की प्रेरणा दी जाती है। जिसका जन्म-दिन है उसे अपने इस महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत पर्व पर कम से कम दुष्प्रवृत्ति छोड़ने और सत्प्रवृत्ति अपनाने का संकल्प लेना पड़ता है। दुष्प्रवृत्ति वह, जो अब तक अपने दुर्गुणों में सम्मिलित रही हो। सत्प्रवृत्ति वह, जिसकी कमी अब तक अनुभव की जाती रही हो। इस प्रकार व्यक्ति कुमार्ग से एक कदम पीछे हटता और सन्मार्ग पर एक कदम आगे रखता है। हर वर्ष इस प्रकार लाखों व्यक्तियों के जन्म-दिन मनाये जाने की परम्परा कितने लोगों को समुन्नत जीवन जीने की प्रेरणा देती है, इस प्रभाव का मूल्यांकन किया जाय तो प्रतीत होता है कि इस छोटे से कृत्य का परिणाम बूँद-बूँद इकट्ठा होने से सागर सरोवर बनने जैसा महत्त्वपूर्ण है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के अग्नि होत्र को वैदी जैसा रूप दे देते हैं तो उस मरण पर्व में भी कला का समन्वय हो जाता है।

मरणोत्तर संस्कार आमतौर से अन्त्येष्टि के बारहवें या तेरहवें दिन करने की प्रथा है। उस अवसर पर अग्निहोत्र, प्रार्थना, सामूहिक जप जैसे धर्म कृत्यों के अतिरिक्त प्रधान कर्म है—श्राद्ध तर्पण। तर्पण का अर्थ उन कार्यों से है, जिनसे मृतक की आत्मा को तृप्ति, शान्ति, सन्तोष मिले। आमतौर से दिवंगत व्यक्ति अपने पीछे कुछ पारिवारिक, आर्थिक या सामाजिक जिम्मेदारियाँ छोड़ जाते हैं। उन्हें पूरी किये बिना चले जाने के कारण मृतात्मा अपने अभाव को असामयिक मानकर अतृप्त रह सकता है। पीछे रहने वाले सगे-सम्बन्धियों की जिम्मेदारी है कि उन अधूरे उत्तरदायित्वों को पूरा करने का शक्ति भर प्रयास करें। छोटे बच्चे, पत्नी, माता आदि का न केवल भरण-पोषण वरन् उन्हें साहस, प्रोत्साहन और आशामय भविष्य का आश्वासन भी दिया जाना चाहिये। इसी प्रकार यदि उनका कोई सामाजिक उत्तरदायित्व अधूरा पड़ा है तो उसे भी पीछे वालों को पूरा करना चाहिये। यह दिवंगत आत्मा का तर्पण है।

यदि दिवंगत व्यक्ति अपने पीछे सम्पत्ति छोड़ी है और बच्चे अपने हाथ-पैरों से कमाने लायक हैं तो उस छोड़ी हुई सम्पत्ति को लोक-कल्याण के लिये समर्पित कर देना चाहिये ताकि उनका उपार्जन उन्हीं के लिये फलदायक बनकर परलोक में सुख दे सके। बच्चे छोटे हों और परिवार में असहाय बिना कमाऊ लोग हों तो जितना धन इनके लिये अनिवार्य रूप से आवश्यक समझा जाय बच्चों के स्वावलम्बी होने तक के लिये तथा कमाने में अयोग्य परिवार के व्यक्तियों के भरण-पोषण के लिये उतना धन रखकर शेष को दान किया जा सकता है। कमाऊ उत्तराधिकारी पूर्वजों की कमाई को हराम का माल समझकर स्वीकार करने से इनकार कर दें और उसे लोकमंगल के प्रयोजनों में लगा दें। इसी श्रद्धाभिव्यक्ति का नाम श्राद्ध है। यह क्रिया मरणोत्तर संस्कार के समय होनी चाहिये और इस श्राद्ध तर्पण की परम्परा की उपयोगिता समझाई जानी चाहिये।

पर्वों की प्रेरणाप्रद पद्धति

व्यक्ति और परिवार के बीच कर्त्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों की शृंखला को व्यवस्थित रखने की दृष्टि से संस्कार आयोजनों की परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ। ठीक उसी तरह व्यक्ति और समाज के बीच कर्त्तव्य-पालन का क्रम किस प्रकार चलता रहे इसकी शिक्षा पर्व त्यौहारों के धर्म-कृत्यों के साथ जुड़ी हुई है।

महामना मालवीय जी सांस्कृतिक आधार पर भारतीय राष्ट्र के पुनर्जागरण का स्वप्न देखते थे। उनका एक स्वनिर्मित सूत्र श्लोक है—

ग्राम्ये-ग्राम्ये सभा कार्या, ग्राम्ये ग्राम्ये कथा शुभा।
पाठशाला मल्लशाला, प्रति पर्व महोत्सवः।।

अर्थात् (१) हर ग्राम में सभा संगठन स्थापित किये जायें (२) हर ग्राम में प्राचीन इतिहास के आधार पर नया इतिहास रचने वाली कथायें कही जायें, पाठशालायें स्थापित हों, (४) व्यायामशालायें खुलें और (५) प्रत्येक पर्व त्यौहार को प्रेरणाप्रद प्रक्रिया के साथ मनाया जाय। यह पंच-सूत्री योजना भारत की परिस्थितियों के सर्वथा अनुरूप है। उसमें देश, धर्म, समाज और संस्कृति के पुनरुत्थान की समस्त सम्भावनायें सन्निहित हैं। युग-निर्माण योजना इन पाँचों को पूरे मनोयोग के साथ कार्यान्वित करने में संलग्न है। पर्व और त्यौहारों को प्रेरणाप्रद प्रक्रिया के साथ मनाने की कार्य-पद्धति इसी योजना का अंग है।

यों अपने यहाँ अनेकों पर्व त्यौहार हैं। हर एक में अपने ढंग की प्रेरणा और शिक्षा भरी हुई है। देश, काल, पात्र के अनुरूप आवश्यकता उन सभी की हो सकती है, पर एक सार्वदेशिक आन्दोलन के रूप में उन सभी को नहीं लिया जा सकता। सुविधा और आवश्यकता की दृष्टि से युग निर्माण योजना द्वारा छः प्रमुख पर्वों को विशेष आयोजन के रूप में मनाने का निश्चय किया है। इनमें से तीन को अनिवार्य मानकर प्राथमिकता दी गई है और तीन को द्वितीय आवश्यक वर्ग में रखकर उन्हें भी मनाने पर जोर दिया गया है। जहाँ हर दो महीने पर बड़े आयोजन किये जाने की व्यवस्था नहीं हो सकती वहाँ चार महीने पश्चात् एक बड़ा पर्व अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शान के साथ मनाया जा सकता है शेष तीन पर संगठन के सदस्यों तथा अन्य समीपवर्ती लोगों को इकट्ठा करके उन्हें छोटे रूप में भी मनाया जा सकता है।

अनिवार्य वर्ग के तीन पर्व हैं—(१) बसन्त पंचमी—माघ सुदी पंचमी, सरस्वती जयन्ती। (२) गंगा दशहरा—ज्येष्ठ सुदी दशमी—गायत्री और गंगा दोनों की जयन्ती (३) विजया दशमी—आश्विन सुदी दशमी—दुर्गा जयन्ती। इन तीनों के बीच लगभग चार-चार महीने का अन्तर है।

आवश्यक पर्वों में तीन पर्व आते हैं (१) श्रावणी—श्रावण सुदी पूर्णिमा शिखा सूत्र पर्व (२) गायत्री-जयन्ती—मार्गशीर्ष सुदी एकादशी—भगवान कृष्ण द्वारा गीता का उद्‌बोधन पर्व (३) रामनवमी—चैत्र सुदी नवमी—भगवान राम का जन्म-दिन।

यों महत्त्व की दृष्टि से यह सभी एक से एक बढ़कर हैं, गरिमा किसी की कम नहीं। पर जल्दी-जल्दी बड़े आयोजन सम्पन्न करने की कठिनाई को तथा ऋतु अनुकूलता को ध्यान में रखकर अवकाश और सुविधा को ध्यान में रखकर यह वर्गीकरण किया गया है। यों (१) जन्माष्टमी (२) दीपावलि (३) शिवरात्रि (४) होली (५) वैशाखी (६) गुरु पूर्णिमा पर्व भी कम महत्त्व के नहीं। पर इन पर जोर कुछ व्यावहारिक कारणों से नहीं दिया गया। होली और दीपावलि के त्योहारों पर घर-घर में अपने ढंग की व्यस्तता रहती है और प्रचलित परम्पराओं के निर्वाह का काम ही इतना बिखरा होता है कि उन्हें सामूहिक ढंग से मनाया जाना और लोगों को जमा कर सकना कठिन है। जन्माष्टमी घोर वर्षा के दिनों में होती है। उस समय एक स्थान पर इकट्ठे होने की सुविधा बनने में भारी अड़चन है। गुरु पूर्णिमा भी आषाढ़ सुदी पूर्णिमा को होती है और वह भी जन्माष्टमी की भाँति ही घोर वर्षा के दिन हैं। शिवरात्रि और वैशाखी, क्षेत्र विशेष और वर्ग विशेष में प्रचलित हैं। पर जहाँ इन्हें मनाने की सुविधा हो वहाँ इन्हें भी मनाया जा सकता है, शिक्षायें और प्रेरणायें उनमें भी कम नहीं हैं।

सुगठित और सुसंबद्ध रूप से हम थोड़े पर्वों को ठीक रीति से मनाने की एक क्रमबद्ध परिपाटी आरम्भ करें, यही अधिक उपयुक्त है। लोकमान्य तिलक ने महाराष्ट्र में गणेश पर्व मनाने के लिये असाधारण उत्साह पैदा किया था। यों देखने में वह एक देव पूजा जैसा क्रिया-कलाप लगता था पर उस आधार पर उत्पन्न किये गये उत्साह ने संगठन के, सहकारिता के, टूटे और मरे हुये मनों में आवेश उत्साह उत्पन्न करने के अनेक महत्त्वपूर्ण प्रयोजन पूरे किये जा सके। प्रकारान्तर से उन आयोजनों ने उस समाज में अभिनव चेतना उत्पन्न करने का प्रयोजन पूरा किया। उस चेतना ने स्वतन्त्रता संग्राम में अति उपयोगी भूमिका निबाही। हमारी पर्व योजना भी इसी स्तर की है, इसके माध्यम से जहाँ सांस्कृतिक नव-जागरण का प्रयोजन पूरा होता है, वहाँ नव युग निर्माण के बहुमुखी अभियान को गति मिलने की पूरी-पूरी सम्भावना है।

आयोजनों का स्वरूप यह है—प्रातःकाल प्रभात फेरी। इसके उपरान्त कर्म-काण्डात्मक अनुष्ठान, सामूहिक गायत्री जप, गायत्री यज्ञ, सामूहिक वेद पाठ (पुरुष सूक्त, स्त्री सूक्त), व्रत, प्रतिज्ञाएँ, भजन, कीर्तन, सायंकाल, पर्व के विशेष देवता का पूजन, जनता द्वारा पुष्पांजलि अर्पण। चन्दन धारण। पंचगव्य, पंचामृत प्रसाद। रात्रि को दीप दान तथा पर्व व्याख्या समझाने वाले संगीत प्रवचन सम्मेलन, कविता सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम।

संक्षेप में प्रत्येक की रूपरेखा यही है। इनमें कोई भी कार्य बेगार-भुगतने या चिन्ह पूजा की तरह नहीं किया जायेगा। लकीर नहीं पीटी जायेगी, वरन् जो भी किया जायेगा उसमें भावना, श्रद्धा, कला, सुरुचि, सुसज्जा, स्वच्छता एवं सुव्यवस्था का पूरा-पूरा ध्यान रखा जायेगा। यह सब सस्ते में भी हो सकता है। श्रम दान से ऐसी सुसज्जा बड़ी सरलता से जुटाई जा सकती है। उत्साह और सूझबूझ की कमी न हो तो कहीं भी, कभी भी इन आयोजनों को इतना सुन्दर और आकर्षक बनाया जा सकता है कि जन आकर्षण का प्रवाह स्वयंमेव उस ओर मुड़ने लगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोक रुचि उत्पन्न करने और अधिक लोगों के अधिक उत्साह के साथ भाग लेने में सफलता मिले, इसके लिये टोलियाँ बनाकर घर-घर जाना होगा और उस आयोजन का प्रयोजन, समय, स्थान बताते हुये उपस्थित होने का व्यक्तिगत आग्रह करना चाहिये। यह प्रचार दो बार होना चाहिये। एक पहला दस पाँच दिन पूर्व और दूसरा एक दिन पूर्व स्मरण दिलाने के लिये दो-दो की टोलियाँ बनाकर कई दिन निकला जाये तो यह व्यक्तिगत आमन्त्रण क्रम सहज ही उस क्षेत्र में भली प्रकार पूरा हो सकता है।

यों मुनादी, लाउडस्पीकर, इश्तहार, पोस्टर आदि भी प्रचार के तरीके हैं, पर वे अब पुराने हों चुके। जनता भाषण सम्मेलनों से ऊब गई है और आमतौर से उसमें उपेक्षा देखी जाती है, इसलिये प्रातःकाल के कर्मकाण्डात्मक आयोजन और सायंकाल के प्रवचनात्मक सम्मेलन की अधिक लोगों को जानकारी मिल सके और उपस्थिति हो सकें, इसके लिये टोली पद्धति से व्यक्तिगत निमन्त्रण पत्र—व्यक्तिगत नाम लिखकर व्यक्तियों के पास पहुँचाये जायें तो उनका भी साधारण प्रचार विज्ञापन की अपेक्षा अधिक प्रभाव पड़ता है और अच्छी संख्या में उपस्थिति करने के सन्दर्भ में सन्तोषजनक सफलता मिलती है।

स्थान और समय का निश्चय जनता की सुविधा को ध्यान में रखते हुये करना चाहिये। वक्ता और गायक अपने क्षेत्र से तैयार करने चाहिये। किस पर्व का प्रयोजन क्या है और उसके साथ क्या प्रेरणायें जोड़ी जा सकती हैं, इसकी जानकारी छपी हुई मौजद है। इसे अपने क्षेत्र में कुशल वक्ताओं को समय से पहले दे देना चाहिये। वे उस पर अच्छे भाषण तैयार कर सकते हैं। इसी प्रकार इस क्षेत्र में गायकों को अपनी कविताओं की ध्वनियाँ तैयार करने तथा अपने साज-बाज एवं मंडली के साथ पधारने के लिये अनुरोध करना चाहिये। ऐसा प्रयास समय रहते किया जाये तो इन आयोजनों के लिये अच्छे वक्ता और अच्छे गायक अपने क्षेत्र से ही मिल सकते हैं। हमें मिशन के अनुरूप बोल सकने वाले, गा सकने वाले इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में पैदा करने ही हैं। यह इसी प्रकार हो सकता है, कि उन्हें तैयारी के लिये समय तथा साहित्य दिया जाये।

किसी को यों ही संकोचवश स्टेज पर बिठा देना, जनता का समय और अपना उद्देश्य नष्ट करना है। इन उत्सवों के करने का उद्देश्य ही लोक शिक्षण है, उसके लिये ठोस प्रशिक्षण उपलब्ध हो सके इसके लिये पूर्व तैयारी और अभीष्ट प्रयास की आवश्यकता है। किसी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर या उसे सम्मानित करने के लिये बोलने या गाने के लिये खड़ा कर देना बहुत ही ना समझी का काम है। ऐसी गलती हममें से कोई करे नहीं, इसकी आगाही पहले से ही होनी चाहिये।

पर्वों की व्याख्या विशेष ढंग से की जानी चाहिये। यों हर पर्व का एक विशेष प्रयोजन विशेष उद्‌बोधन है। सामान्य समय में पर्व विशेष पर उसी विषय विशेष की चर्चा करना उपयुक्त होता है। पर यह संक्रान्ति काल है, हम अनेक समस्याओं में उलझे हैं। इसलिये हर पर्व पर सामयिक समस्याओं का तालमेल बिठाकर ऐसी व्याख्यायें करनी होंगी जिन्हें सुनकर जन-साधारण को प्रस्तुत समस्यायें सुलझाने में मदद मिले। ऐसी स्थिति में एक ही विषय न लेकर उसे बहु-उद्देशीय बनाना उपयुक्त होगा।

वैसे बसन्त पंचमी विद्या, बुद्धि तथा विद्या की स्वरूप विवेचना के लिये, शिवरात्रि शिव के समान उदार और निस्पृह होने के लिये, होली छोटे-बड़े का भेद-भाव मिटाने तथा सार्वजनिक स्वच्छता के लिये, रामनवमी भगवान राम जैसी मर्यादा पालन के लिये, गायत्री जयन्ती गंगा के समान निर्मल विवेकशीलता, ऋतम्भरा प्रज्ञा के लिये, गुरु पूर्णिमा—अनुशासन और शिष्टाचार के लिये श्रावणी—शिखा और सूत्रों में सन्निहित ज्ञान और कर्म को प्रखर बनाने के लिये, जन्माष्टमी कृष्ण जैसे कर्म-कौशल के लिये, विजयादशमी शारीरिक, सुरक्षात्मक और संगठनात्मक बल बन्धन के लिये, दीपावलि सम्पदाओं के अभिवर्धन एवं सदुपयोग के लिये, गीता जयन्ती मानसिक सन्तुलन युक्त प्रबल पुरुषार्थ की कर्म योग साधना के लिये विनिर्मित किये गये हैं। इन पर्वों के साथ ऐतिहासिक घटनाक्रम भी जुड़े हुये हैं। उन घटनाओं की चर्चा के साथ उसी प्रकार की सामयिक समस्याओं तथा उनके समाधानों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चित्रण ऐसे सुन्दर ढंग से किया जाये कि अपना लोक शिक्षण का उद्देश्य भी पूरा हो जाये तथा यह भी न लगे कि मूल विषय से हटकर कुछ कहा जा रहा है। युग निर्माण साहित्य के सहारे कुशल वक्ता इसे आसानी से कर सकते हैं।

युग निर्माण संगठन छः पर्वों को प्राथमिकता देता है। उनके माध्यम से बहुत कुछ सामयिक लोक शिक्षण हो सकता है। बसन्त पर्व पर भगवती सरस्वती का, शिक्षा का, कला का अभिनन्दन किया जाये और समझाया जाय कि आज की निरक्षरता से कैसे लड़ा जा सकता है। शिक्षा को लोकोपयोगी कैसे बनाया जा सकता है ? शिक्षितों के ऊपर युग की विशेष जिम्मेदारियाँ क्या हैं ? कला का दुरुपयोग कैसे रुके, कला—मंच से जन-मानस को स्पंदित करने के लिये क्या किया जाना चाहिये—मनुष्य वाटिका पुष्पों की तरह हर स्थिति में कैसे हँसता हँसाता जीवन जी सकता है। यह सब बातें भगवती सरस्वती के भावनात्मक स्वरूप का चित्रण करते हुये भली-भाँति कही जा सकती है। युग निर्माण योजना का, उनके संचालकों का तो वह जन्म दिन ही है। मिशन की उपलब्धियों, योजना और सम्भावनाओं पर प्रकाश डालने के लिये यह पर्व उचित अवसर है। मिशन की चर्चा करते हुये उसके अन्य कार्यक्रमों पर भी चर्चा की जा सकती है।

गायत्री जयन्ती, गंगा दशहरा भगवती गंगा की तरह निर्मल बनने, अपने पुण्य प्रयासों से दूसरों के काषाय, कल्मष धोने, अपना सुविधा-जनक निवास सुरम्य हिमालय छोड़कर प्यासी भूमि की तृष्णा बुझाने के लिये निकल पड़ने की चर्चा करते हुये जनसाधारण को वैसी ही रीति-नीति अपनाने के लिये कहा जा सकता है। परमार्थ-परायण निरन्तर अनुदान देने वाली गंगा को कुछ घाटा नहीं रहा। हिमालय से जितनी छोटी धारा निकली थी, उसकी तुलना में बंगाल में हजार धाराओं सहित बहने वाला उसका स्वरूप विस्तृत ही हुआ, इसी प्रकार उस रीति-नीति को अपनाने वाला घटता नहीं, बढ़ता ही है। गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों में २४ महत्त्वपूर्ण शिक्षायें भरी पड़ी हैं, जिनसे आज की हर समस्या का समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है। गायत्री स्मृति के २४ अक्षरों की व्याख्या है और गायत्री गीता में नौ शब्दों को लेकर प्रत्येक शब्द के साथ जुड़े हुये प्रकाश का दिग्दर्शन भरा पड़ा है। भारतीय संस्कृति की जननी, मानवता की, सद्भावना की, उपासना की, उत्कृष्ट चिन्तन की देवी, गायत्री की उपासना ही नहीं उसकी प्रेरणाओं को हृदयंगम करने की सजीव साधना भी सम्पन्न करनी चाहिये। यह सब कुछ गायत्री मन्त्र का स्वरूप और रहस्य बताते हुये कहा जा सकता है।

विजया-दशमी भगवती दुर्गा का जन्म-दिन है। दुर्गा को देवताओं की थोड़ी-थोड़ी शक्ति इकट्ठी करके ब्रह्माजी ने उत्पन्न किया था। दुर्दान्त असुरता को परास्त कर सकना देवताओं के लिये तभी सम्भव हुआ जब उन्होंने इस संघ शक्ति दुर्गा का अवलम्बन ग्रहण किया। आज संघ शक्ति के विकास का और उसे अवांछनीयता के विरुद्ध संघर्ष एवं सृजन प्रयोजनों में प्रयुक्त करने की पूर्व काल की तरह ही आवश्यकता है। विजया-दशमी को शस्त्र-पूजा, शारीरिक बल प्रदर्शन की प्रतियोगितायें होती हैं। उनके पीछे व्यायाम की उपयोगिता, बलिष्ठ शरीरों की आवश्यकता और शस्त्र सज्जा के लिये लाठी चलाने जैसे आरम्भिक प्रशिक्षण के जानकार होने की बात कही जा सकती है और इन प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाने के उपाय सुझाये जा सकते हैं।

यह तीनों प्रधान अनिवार्य पर्व हुये। गायत्री को आत्म-बल, सरस्वती को बुद्धि-बल और दुर्गा को शारीरिक एवं लौकिक-बल का प्रतीक माना जा सकता है। इन त्रिविधि प्रगति की सुव्यवस्थित रूपरेखा इन तीनों पर्वों की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक व्याख्या करते हुये समझाई जा सकती है। यह लोक शिक्षण इनका भावनात्मक और सर्वांग सुन्दर हो सकता है कि सामान्य प्रवचन उससे बहुत पीछे रह जाते हैं। रचनात्मक शिक्षा में नीरसता अनुभव की जाती है, हर पर्वों की सांस्कृतिक शृंखला के साथ उसे जोड़ दिया जाय तो ऐसा भावुकतापूर्ण प्रवाह चल पड़ता है कि सरसता बढ़ती ही जाती है। उस रचनात्मक लोक शिक्षण को भी जोशीले भाषणों की अपेक्षा कहीं अधिक पसन्द करते—महत्त्व देते और उनसे प्रकाश ग्रहण करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रावणी के अवसर पर वृक्षारोपण, शाक वाटिकायें—पुष्प, तुलसी आदि लगाने का कार्यक्रम चल सकता है। नया यज्ञोपवीत बदलने, उपनयन से सम्बन्धित तीनों बलों और नौ गुणों के अभिवर्धन की प्रतिज्ञा हर वर्ष दुहराई जाती है। शिखा सिंचन किया जाता है। इसका अर्थ है कि विचार पद्धति में जहाँ कहीं दोष आ गये हों उन्हें निरस्त किया जाये, एक वर्ष के किये गये पापों का प्रायश्चित भी उसी अवसर पर होता है। बहिन भाई के पवित्र सम्बन्धों की स्मृति के लिये राखी बाँधने का यही दिन है। राष्ट्र रक्षा की प्रतिज्ञा का उत्तरदायित्व यजमान की मजबूत कलाइयों में पुरोहित इसी दिन बाँधते हैं। यह संस्कृति का जन्म-दिन है। इसे ज्ञान-योग की साधना का स्वाध्याय-चिन्तन, मनन, आत्म-बोध का पर्व भी कह सकते हैं। इन विषयों की विवेचना करते हुये वक्ता और श्रोता उन प्रेरणाओं को उभार सकते हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति और समाज निर्माण सम्भव है।

गीता जयन्ती पर भगवान कृष्ण के गीता वाले अवतार प्रयोजन का जन्म-दिन है। सन्तुलित मस्तिष्क रखकर, हानि-लाभ की, सफलता-असफलता की चिन्ता किये बिना कर्त्तव्य कर्म का पालन किस प्रकार किया जा सकता है, इसका समग्र शिक्षण न केवल गीता के तत्वज्ञान में है वरन् कृष्ण के क्रिया-कलाप के साथ भी जुड़ा हुआ है। महाभारत में वर्णित कृष्ण चरित्र के प्रसंगों में आज की परिस्थितियों का हल प्रस्तुत करने वाले अनेक समाधान ढूँढ़े और जनता के सामने प्रस्तुत किये जा सकते हैं। इसे कर्मयोग का पर्व कह सकते हैं।

रामनवमी मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म-दिन है। रामायण के माध्यम से रामचरित और कृष्णायन के माध्यम से कृष्णचरित्र जनता के सामने रखा जा सकता है। रामायण के अगणित प्रसंग और संवाद मानव जीवन को उत्कृष्ट और समाज को आदर्श बनाने का पथ-प्रशस्त करते हैं। मर्यादाओं का पालन, आत्म-संयम, उदारता और प्रेम-भावना का व्यावहारिक स्वरूप भगवान राम के व्यक्तित्व और कर्त्तव्य के सहारे जन-साधारण को भली प्रकार समझाया जा सकता है और उस महान मार्ग पर चलने के लिये जन-मानस को उल्लसित किया जा सकता है। राम जयन्ती को भक्तियोग का पर्व कहना चाहिये।

तीन अनिवार्य और तीन आवश्यक छहों पर्वों में आदर्शवाद के अभिवर्धन और अवांछनीयताओं के उन्मूलन की समस्त क्रिया-प्रक्रिया समाई हुई है। सांस्कृतिक परम्पराओं का स्मरण कराते हुये यह पुण्य पर्व हमें आज की उलझी हुई परिस्थितियों को सुलझाने के लिये क्या करना चाहिये ? क्या नहीं करना चाहिये, इसका स्पष्ट निर्देश देता है। तात्विक विवेचन वैसे तो कठिन और नीरस लगता है, पर महापुरुषों ने विषय समय पर क्या कहा, क्या किया, के घटनाक्रम के सहारे ज़न साधारण उसे रुचिपूर्वक आसानी से समझ भी लेता है, और पालन करने का प्रयास भी करता है।

इन पर्वों को प्रेरणाप्रद पद्धति से हर साल मनाये जाने की परम्परा चल पड़े तो जन-जागरण की मशाल स्वयं चलित प्रक्रिया के साथ चिरकाल तक जलती रह सकती है। इन्हीं अवसरों पर सामूहिक विवाहों तथा अन्य संस्कारों के सामूहिक आयोजनों को जोड़कर इनका महत्त्व और भी अधिक बढ़ाया जा सकता है।

आदर्शवादिता का अभिनन्दन हो

सामूहिक आयोजनों के साथ-साथ सत्कार्य करने वाले आदर्शवादी सज्जनों का अभिनन्दन किया जाना चाहिये। बड़े लोग अपने धन, बल से सम्मान प्राप्त कर लेते हैं किन्तु जिनके पास धन नहीं है, उनकी आदर्श गतिविधियों को भी न तो सम्मान मिलता है और न प्रोत्साहन। अखबारों में केवल दुष्ट दुरात्माओं का, अपराधी तस्करों के क्रिया-कलाप, यश के गान मोटी हैडिंगों में छपते हैं। मानवी आदर्शों के प्रति अपने को गला घुला देने की चर्चा के लिये उनके कालम भी बन्द हैं। ऐसी दशा में यदि आदर्शवादिता की ओर से जन साधारण में अरुचि उपेक्षा उत्पन्न हो चले तो आश्चर्य ही क्या ?

सम्पन्न व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से धन कमायें और उससे मौज उड़ायें, बात यहीं तक समाप्त हो जानी चाहिये, इससे आगे जब वे यश और सम्मान लेने का भी प्रयत्न करते हैं, तो वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

डाका मारते हैं। इसी प्रकार यदि कोई सम्पन्नता की चकाचौंध से चकित होकर उन्हें किसी बहाने यश या सम्मान देने का प्रयत्न करता है तो वह भी देव ग्रास छीनकर कौए को प्रदान करने की विडम्बना रचता है। इन दोनों ही प्रयासों को निरुत्साहित किया जाना चाहिये। सम्मान का उपहार केवल उत्कृष्ट चरित्र और परमार्थपरक आदर्शवादी रीति-नीति अपनाने वालों के लिये सुरक्षित रहना चाहिये।

पिछले दिनों विजेता सामन्तों ने अपने यश काव्य लिखाये। भाट और चारणों को इसके लिये आजीविका दी। जिन्हें यश प्राप्त करने का कोई अधिकार नहीं था, उन्होंने उस पर भी डाका मारा है। उसके लिये प्रशंसकों को पैसे के बल पर खरीदा। आदर्श के लिये युद्ध करना और बात है, पर दूसरे पड़ौसी को दुर्बल पाकर उसकी सम्पदा तथा कन्या वधुएँ लूटने के लिये चढ़ दौड़ना, प्रजा को रौंद डालना उनमें से स्वस्थ नर-नारियों को पकड़ ले जाना और गुलाम बनाकर बेचना सर्वथा अनीति है। ऐसा विजेता सामन्त भी यदि लोक सम्मान और लोक श्रद्धा प्राप्त करने लगे तो फिर अपयश और घृणा को किसके पल्ले बाँधा जायेगा ? पिछले इतिहास के कतिपय कलुषित पृष्ठ ऐसे ही हैं, जिनमें प्रशंसा उनकी विजय के साथ जोड़ दी गई है। विजय किस पर प्राप्त की गई ? क्यों की गई ? उसकी हानि किसे उठानी पड़ी ? यह लाभ किसे हुआ ? इस प्रकार विचार करने से लगता है मूल्यांकन गलत किया गया या गलत कराया गया। मार-काट अपने आप में कोई प्रशंसा की बात नहीं। कसाई को शूरवीर नहीं कह सकते। प्रशंसनीय तो केवल वे हैं, जिन्होंने किन्हीं आदर्शों के लिये अपनी जान की बाजी लगाई। इस दृष्टि से सामन्तों के गुण-गान प्रशंसकों का लोभग्रस्त पक्षपात मात्र ही रह जाता है।

धनिकों के बारे में भी यही बात है। बात का आदि और अन्त समझना चाहिये। कोई व्यक्ति अमीर बना—सम्पत्ति कमाई, धनवान भाग्यवान कहलाया, उस सम्पदा से उसके अहंकार की पूर्ति हुई, विलास-वैभव के साधन मिले, इसमें यश की क्या बात, कोई उनकी प्रशंसा क्यों करें, उनसे कोई क्यों प्रभावित हो ?

धन नही, धन का सदुपयोग प्रशंसनीय है। बल नहीं, बल को कहाँ प्रयुक्त किया गया इसी में उसकी महिमा है। विद्वान एक से एक बड़े भरे पड़े हैं। अपने बुद्धि-वैभव के अनुरूप उन्हें उच्च पद और बढ़िया वेतन मिलता है, पुरुषार्थ का पूरा-पूरा प्रतिदान उन्हें मिल गया। यदि इस पर भी वे लोक श्रद्धा के लिये ललचाते हैं या उसे स्वीकार करते हैं तो यह उनकी धृष्टता ही कही जायेगी। जो गुर्गे उन्हें सम्मानित करने का प्रयास करते हैं वे अन्याय का सरंजाम जुटाने वाले ही कहे जायेंगे।

जिन्होंने अपनी भौतिक उन्नति की आकांक्षा से मुँह मोड़कर परमार्थ प्रयोजन में अपनी सामर्थ्य को जुटा दिया, अपनी सारी संभावनाओं और महत्त्वाकांक्षाओं को परमार्थ के लिये लुटा दिया, जिनका पुरुषार्थ अपने निज के लिये नहीं दूसरों के लिये काम आया, इन उदार और भावना के आदर्शों को जीवन रखने वालों को भौतिक दृष्टि से खाली हाथ रहना पड़ा तो मानवी कृतज्ञता का कर्त्तव्य है कि उन्हें कम से कम कुछ देकर तो अपना ऋण भार हल्का करें। उन्हें और कुछ नहीं तो अपनी सेवा और साधना की स्वीकृति का यह प्रमाण तो मिले कि जन-मानस में उत्कृष्टता के लिये कम से कम श्रद्धा दे सकने की वृत्ति तो जीवित है।

सम्मान एक प्रकार का प्रोत्साहन है। जन साधारण के मन में एक ललक छिपी रहती है कि उसे यश मिले, जनता उसे जाने और सराहे और सम्मान की आँख से देखे। यह लोक सम्मान यदि आदर्शवादी सज्जनता के लिये सुरक्षित रखा जाये तो उस मार्ग पर चलने की लोग इच्छा करेंगे। उस तथ्य को ध्यान में रखते हुय मनीषियों की निर्धारित परम्परा यह है कि अभिनन्दन और अभिवन्दन केवल साधु और ब्राह्मणों को किया जाये। साधु अर्थात् परमार्थी लोक सेवी। ब्राह्मण अर्थात् चरित्रवान मानवी आदर्श का प्रतीक प्रतिनिधि। इन दो के अतिरिक्त क्षत्रिय और वैश्य का सदा से अभिवन्दन निषिद्ध रहा है। शासक के पास सत्ता है, पद है, भय और लोभ से प्रभावित करने की सामर्थ्य है। बस उतना ही उसके लिये पर्याप्त है, लोक अभिनन्दन भी प्राप्त करने के लिये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसे सूत्र संचालन नहीं करना चाहिये। लखपति करोड़पति ऐश करें ठीक है किन्तु स्वल्प से आधार पर बड़ों जैसा सम्मान न लूटें।

आज धन की तरह सम्मान की भी लूट डकैती मची हुई है। इसका फल यह होता है कि अवांछनीय मार्ग पर चलते हुये भी धन के साथ यश मिलता है तो उस दुहरे लाभ को प्राप्त करने के लिये अपरिपक्व लोग टूट पड़ते हैं। सिनेमा में नट नटी बनने का चाव नई पीढ़ी में बेशुमार उमड़ रहा है। उनके सामने यही सबसे बड़ी साध बन रही है। जो उधर चल नहीं पाते वे भी खिंचते इसी दिशा में हैं। इसका कारण वे पत्र, पत्रिकायें हैं, जो नट-नटियों के रंग-बिरंगे चित्र और चरित्र छापकर उनके व्यक्तित्व को सर्वोपरि मान्यता प्रदान करते हैं। जिस लोक सेवी, त्यागी, तपस्वी ने अपना सारा जीवन तिल-तिल करके लोक मंगल में जला दिया उसकी चर्चा दो पंक्तियों में भी नहीं और नट नर्तकों के सम्बन्ध में रंग-बिरंगे चित्रों के साथ विस्तृत वर्णन छपे, सरकार उन्हें उच्च सम्मान प्रदान करे, धन की अटूट वर्षा हो, ऐसी दशा में यदि वही जीवन आदर्श अपनाने के लिये नई पीढ़ी लालायित हो तो आश्चर्य ही क्या है ?

यदि आदर्शवादिता को जीवित रखना है तो उसका उपहार लोकश्रद्धा के, जनसम्मान के, रूप में पूर्णतया सूरक्षित रखना चाहिये। इस देव हवि को कौए न खा जायें इसकी रखवाली करनी चाहिये। हमें किसी ऐसे सम्मान आयोजन में योगदान नहीं करना चाहिये, जिसमें आदर्शवादिता के अतिरिक्त और किसी वर्ग का अभिनन्दन, अभिवन्दन किया जा रहा हो। यह भावी पीढ़ी के मन में उस ओर से विरत करने की भूमिका बनाना है।

जिन्होंने लोक मंगल के लिये त्याग और बलिदान करने का साहस दिखाया, ऐसी विभूतियों को हमें ढूढ़-ढूँढ़कर तलाश करना चाहिये। यदि वे जीवित हों तो उन्हें अपने पर्व आयोजनों में दूसरे सम्मेलनों में सम्मानित करना चाहिये और ऐसे आन्तरिक आयोजन करने चाहिये जिसमें लोग उनके सत्कार्यों के लिये अपनी श्रद्धा अर्पण करने के लिये कम से कम पुष्पहार, गुलदस्ते तो उनके गले में, चरणों में प्रस्तुत करें। यह मान उस प्रक्रिया का है, जिसे अपनाने के लिये हमें अगणित लोगों को अगले दिनों प्रोत्सहित एवं अग्रसर करना है।

जो मर गये उनके चित्रों का अनावरण, जयन्ती उत्सव आदि मनाने का प्रयत्न करना चाहिये। उनकी यश गाथा पुस्तकों और पत्रिकाओं में छपानी चाहिये, युग निर्माण योजना मासिक निकलता ही इस प्रयोजन के लिये है कि वह प्रख्यात लोगों के ही नहीं अविज्ञात लोक सेवियों के, आदर्शवादियों के चरित्र छापे और उनके चरणों में लोक श्रद्धा नियोजित करे। ऐसे महामानवों की स्मृति में मोहल्लों के, सड़कों के, स्कूलों के, पुस्तकालयों के नाम रखे जा सकते हैं। उनके नाम पर वृक्ष लगाये जा सकते हैं। इन आयोजनों में जीवित या मृत त्यागियों के कार्यों की चर्चा इस प्रकार से करनी चाहिये कि दूसरे लोगों को भी उस मार्ग का अनुसरण करने का प्रोत्साहन मिले।

धन, सत्ता और वैभव को सराहा जाना बन्द किया जाना चाहिये। अन्यथा इनके पीछे लगी हुई अन्धी दौड़ और भी अधिक तीव्र हो जायेगी। धनी ने यदि त्याग किया है तो प्रशंसा उस तथ्य की होनी चाहिये, धनी व्यक्ति की नहीं। एक अनुदान भर से उसकी उस निष्ठुरता पर पर्दा नहीं पड़ सकता जिसने उसकी पिछड़े समाज की सहायता के लिये बहुत कुछ कर गुजरने की क्षमता को अवरुद्ध बना कर ही रखा। साधन सम्पन्न लोग यदि गहरे अन्तस्तल से उदार हों तो वे सिर का एक बाल उखाड़ कर उससे ही राजा कर्ण बनने की बात न सोचें वरन् अशोक, मान्धाता और भामाशाह का उदाहरण प्रस्तुत करके उन दिनों से भी अधिक आज के आपत्ति काल में विश्व मानव की कुछ कहने लायक सहायता करें।

हमें उनके ही चरणों पर भाव भरी लोक श्रद्धा प्रस्तुत करने का प्रयत्न करना चाहिये जिन्होंने अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को परमार्थ पर समर्पित कर दिया। कष्ट साध्य जीवन जीकर भी परमार्थ की दिशा में अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करते रहें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेले सुव्यवस्थित और सुनियोजित हों

भारतवर्ष में धार्मिक मेलों का प्रचलन संसार के अन्य देशों की तुलना में अधिक है। यह प्रक्रिया बहुत सोच-समझ कर बनाई गई थी और इसके पीछे जनता की बहुमुखी प्रगति को जोड़कर रखा गया था।

पर्यटन एक बहुत ही उपयोगी और सात्विक मनोरंजन है। मनुष्य अपनी ऊब उतारने के लिये, मानसिक थकान दूर करने के लिये, नया स्थान, नया वातावरण, नया मनोरंजन कुछ नयापन चाहता है। यह आवश्यकता उस पर्यटन से पूरी होती है जिसमें मनोरंजन के लिये भी कुछ हो। धार्मिक मेले इस उद्देश्य को पूरा करते थे। तीर्थयात्रा, देवदर्शन, संतसत्संग, पूजा-पाठ, सम्बन्धित कर्म कृत्य आदि आत्मिक उल्लास के अतिरिक्त परस्पर मिलने-जुलने का उद्देश्य भी उन्हीं से पूरा हो जाता था। धार्मिक पुण्य लाभ और मनोरंजन के इस अवसर पर लोग उन मेलों में पहुँचते थे और बहुत दिन के बिछुड़े हुये मित्र परिचितों का परस्पर मिलन हो जाता था। मित्रों, परिचितों का मिलन न केवल भावनात्मक वरन् सांसारिक व्यावहारिक क्षेत्र में भी लाभदायक रहता है। एक-दूसरे की परिस्थितियों को समझना, उसके लिये आत्मीयतापूर्ण परामर्श एवं सहयोग देना तो सहज ही हो जाता है और इस आधार पर बहुत बार कई उलझी हुई समस्यायें हल होती हैं तथा उत्साहवर्धक योजनायें बनती हैं।

शहर निवासी अपनी आवश्यकता की चीजें तलाश कर लेते हैं या नई-नई वस्तुयें सामने आती रहती हैं। पर देहातों को उस लाभ से वंचित रहना पड़ता है। नित-नई निकलती रहने वाली वस्तुओं की जानकारी से प्रायः उन्हें वंचित ही रहना पड़ता है और सुविधा रहते हुये भी उतने ही साधनों तक सीमित रहना पड़ता है जो उस क्षेत्र में उपलब्ध होते हैं। जनता जानकारी के अभाव में उनसे वंचित रहती है और उत्पादकों को प्रचलित मुट्ठीभर क्षेत्र तक सीमित रहना पड़ता है। ८० प्रतिशत जनता से भरा देहाती क्षेत्र उनकी पहुँच से बाहर ही रहता है। ऐसी दशा में उपयोगी उत्पादनों को भी बिक्री क्षेत्र न मिलने से विकास का अवसर नहीं मिलता। इस आवश्यकता की पूर्ति मेले करते हैं।

स्वभावतः मेले में आये हुये लोग कुछ पैसा जेब में रखकर चलते हैं और कई मनोरंजक एवं उपयोगी वस्तुयें खरीदना चाहते हैं। विक्रेताओं की तरह ग्राहक भी उत्सुक रहते हैं और दोनों की पटरी ठीक बैठ जाती है। वहाँ अच्छी खरीद फरोख्त होती है। खरीददार को उपयोगी चीजें तलाश नहीं करनी पड़तीं बल्कि वे मेले में एक जगह मिल जाती हैं। विक्रेताओं को ग्राहक ढूँढ़ने नहीं फिरना पड़ता मेले की थोड़ी-सी अवधि में ही इतनी बिक्री हो जाती है कि उससे इनका बहुत काम चलता है।

यह आर्थिक, सामाजिक और मानसिक पक्ष हैं, जिनके कारण मेलों की उपयोगिता समझी गई। चूँकि यह देश धर्म प्रधान है इसलिये धर्म भावनाओं के सहारे हर काम अधिक आसानी से किया जा सकता है। जिन्हें मेले का सामाजिक पक्ष उतना प्रभावित नहीं करता, वे उनके साथ पुण्य पर्व की उपयोगिता मानकर उसमें जा पहुँचते हैं। बच्चे मेला देखें बूढ़े क्यों देखें की दलील का भी इस आधार पर खण्डन हो जाता है और बूढ़े-बुढ़िया तक उस मनोरंजक अवसर पर जाने की आवश्यकता सिद्ध कर सकते हैं।

धर्म प्रचारकों को इस सम्मेलन में धर्म-शिक्षा, सत्संग आदि की व्यवस्था बनाकर अधिक लोगों को प्रभावित कर सकना सरल पड़ता है, जनता जहाँ सन्त विद्वानों के दर्शन प्रवचन से प्रसन्नता अनुभव करती है, वहाँ के लोग भी अपना प्रचार कार्य विस्तृत कर लेते हैं। अपना क्षेत्र बढ़ा लेते हैं और दान दक्षिणा आदि का लाभ प्राप्त कर लेते हैं। मेले के केन्द्र मन्दिर तीर्थ की अच्छी आमदनी हो जाती है। उसका जैसा भी उपयोग वे लोग करना चाहें कर सकते हैं।

प्रयाग, हरिद्वार, वृन्दावन, नासिक, उज्जैन के विशाल कुंभ मेले इसी दृष्टि से होते हैं। सोनापुर, बटेश्वर जैसे मेले भी अत्यन्त विशालकाय होते हैं और उनमें लाखों की संख्या में जनता पहुँचती है। करोड़ों का एक जेब से दूसरी जेब में परिवर्तन होता है। श्रमिकों, व्यापारियों, बहिनों को काम मिलता है। गंगा-स्नान जैसे कितने ही पर्व जहाँ-तहाँ होते हैं। छोटे-बड़े मेलों की संख्या को मिलाकर हजारों की संख्या में पहुँच जाते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकता इस बात की है कि इस प्रभावशाली पद्धति को नव निर्माण प्रक्रिया के अनुरूप और अनुकूल बनाया जाय। यदि थोड़ी तत्परता बरती जाय तो यह व्यवस्था बहुत आसानी से बन सकती है। पुराने मेलों में थोड़े हेर-फेर एवं सुधार करके उन्हें उपयोगी बनाया जा सकता है और नये मेले अपने प्रयोजन को प्रधानता देते हुये आरम्भ कराये जा सकते हैं।

मेलों की उपयोगिता असंदिग्ध है पर साथ ही यह भी आवश्यक है कि वे नियन्त्रित और-व्यवस्थित रीति से हों अन्यथा भीड़ के कारण अनेक विकृतियाँ भी होती हैं। उनके कारण लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़ सकती है। मनुष्य जहाँ भी इकट्ठे होंगे, वहाँ गन्दगी भी उत्पन्न होगी, उसे तत्काल साफ करने का प्रबन्ध न हो तो मेले में हैजा आदि बीमारियाँ फैलाने कां माध्यम बन सकती है। मल-मूत्र त्यागने के लिये भीड़ के अनुरूप व्यवस्था पहले से ही की जानी चाहिये। पीने के लिये सभी को स्वच्छ जल मिलता रहे यह भी आवश्यक है। छाया का उचित प्रबन्ध होना चाहिये। खाद्य पदार्थ बेचने वाले अस्वास्थ्यकर, सड़ी, गली, गंदी चीजें न बेचने पावें। जेबकटों, चोर, उठाईगीरों का दाँव इन मेलों में खूब लगता है। गुण्डे बहिन-बेटियों को छेड़ने से लेकर मार-पीट जैसे उपद्रव खड़े करके मेले बिगाड़ सकते हैं।

भीड़ में खोये हुये बच्चों को, महिलाओं को तथा खोये सामान को ढूँढ़ना एक काम है। सवारी वाले भीड़ को देखकर किराया मन माना मांगते हैं। मजूरों को मजूरी मुँहमाँगी देनी पड़ती है तथा दुकानदार भी अन्धाधुन्ध मुनाफा कमाने की कोशिश करते हैं। दुकानदार वे तरतीब दुकानें लगाकर मेले की व्यवस्था ही नष्ट कर देते हैं। इन सब बातों का पूर्ण नियन्त्रण होना चाहिये। यदि मेला सरकारी प्रबन्ध में चल रहा हो तो जन-स्तर पर स्वयं सेवकों द्वारा उपर्युक्त कार्यों में भाग लेना चाहिये और जनता की असुविधायें दूर करनी चाहिये। जहाँ सरकारी नियन्त्रण नहीं है, वहाँ जनता की मेला समितियाँ गठित करनी चाहिये और उपर्युक्त कठिनाइयों के निवारण तथा सुव्यवस्था बनाने में पहले से ही उत्तरदायित्व सँभालने चाहिये। इन व्यवस्थाओं के बिना अनियोजित भीड़ और घचापच मेलों का स्वरूप ही विकृत कर देगी और उसके कारण जन-साधारण को असुविधा ही बढ़ेगी।

सबसे अधिक महत्त्व की बात यह है कि प्रचलित मेलों को जन जागरण में तथा अवांछनीयता विरोधी अभियान में सहायक कैसे बनाया जाये ? इनमें प्रचार पण्डाल बनाये जाने चाहिये और उनमें संगीत, अभिनय, कीर्तन, प्रवचन आदि के माध्यम से उपस्थित लोगों तक नव युग का सन्देश पहुंचाने का प्रबन्ध करना चाहिये। चूँकि मेले में भीड़ का मूड घुमक्कड़ जैसा होता है, लोग देर तक किसी कार्यक्रम में नहीं बैठ सकते। इसलिए प्रयत्न ऐसा करना चाहिये कि प्रचार मण्डप में होने वाले प्रवचन, भजन आदि छोटे-छोटे ही रखने चाहिये ताकि थोड़ी देर के लिए सम्मिलित होने वाले लोग भी उसका लाभ लेकर जा सकें।

मेले की शोभा की दृष्टि से तथा प्रचार उद्देश्य से जगह-जगह गेट बनाने, गेटों के प्रेरणाप्रद नाम रखने, जहाँ अधिक लोगों की निगाह पड़े वहाँ बड़े अक्षरों वाले कपड़े के बोर्ड लगाने आदि का प्रबन्ध करना चाहिये। पर्चे बाँटने, साहित्य बिक्री करने के लिये दुकानदार तथा फेरीवाले खड़े करने जैसी उपयोगी व्यवस्था ऐसी बनानी चाहिये, जिससे मेले भीड़ मात्र न रहकर जन जागृति के माध्यम बन सकें।

कम समय में सम्पन्न हो सकने वाले सम्मेलन रखे जा सकते हैं और प्रबुद्ध वर्ग के लिये लोगों की पंचायतें, गोष्ठियाँ कुछ उपयोगी निश्चय करने के लिए बुलाई जा सकती हैं और प्रस्ताव पास करके उसकी सूचना मेले में आये लोगों द्वारा दूर-दूर तक पहुँचाई जा सकती है। कुरीति विरोधी प्रस्ताव पास करने के लिये जनता को उन आयोजनों में आमन्त्रित किया जा सकता है और उपस्थित लोगों को सम्मेलनों के निर्णय की जानकारी अपने क्षेत्र में प्रसारित करने का उत्तरदायित्व सौंपा जा सकता है।

यह प्रचलित पुराने मेलों की सुव्यवस्था बनाने और उनके ढर्रों में सुधारात्मक एवं प्रचारात्मक प्रक्रिया को किसी न किसी रूप में समावेश करने की बात हुई। ढर्रे को सर्वथा बदलना और उसे परिष्कृत ढंग से आदि से अन्त तक नई व्यवस्था बनाना कठिन है। इसके लिये अपने ढंग से अपनी योजना एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यवस्थानुसार नये मेले प्रचलित करने होंगे। इन पर एक बार शक्ति केन्द्रित कर दी जाये और एक दो वर्ष उन्हें सम्भाल दिया जाये तो इन परिष्कृत मेलों का ढर्रा भी सरलतापूर्वक अपनी लकीर पर चलने लगेगा और नव-निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार करने में योगदान देने लगेगा।

नये मेलों के लिये स्थान के चुनाव में एकत्रित भीड़ के लिये फैलाव के लिये उपयुक्त स्थान, छाया, पानी, यातायात साधन, बिजली जैसे सुविधा साधनों को प्रथम स्थान देना चाहिये, कुछ प्रेरक इतिहास उस स्थान के साथ जुड़ा हुआ हो तो और भी अच्छा, मेले का मूल प्रयोजन कई प्रकार के सम्मेलनों की तथा पंचायतों की व्यवस्था करना होना चाहिये। यह एक दिन का नहीं, कम से कम तीन और अधिक से अधिक एक सप्ताह का होना चाहिये। आगन्तुकों के लिये बाँस की, फूँस की, चटाइयों की झोंपड़ियाँ अथवा कपड़े की छोलदारियों का प्रबन्ध किया जाना चाहिये। पंडाल, जनता के बैठने की बिछावट, स्टेज, मंच, आदर्श वाक्य आदि सम्मेलनोपयोगी—निवास के लिये आवश्यक मल-मूत्र त्यागने की छाया व्यवस्था, प्याऊ के उपकरण, सस्ते भोजन की दुकानें जैसे सभी प्रबन्ध पहले से ही ध्यान में रखने चाहिये, युग निर्माण मेला योजना के अन्तर्गत यह सारे उपकरण एक बार इकट्ठे करने होंगे। वे ऐसे होने चाहिये जो दूसरे स्थानों में भी प्रयुक्त हो सकें। इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान को लाया ले जाया जाता रहे। एक स्थान के लिये खरीदी गई वस्तुयें कई मेलों में काम दे सकती हैं। एक क्षेत्र के मेलों की श्रृंखला ऐसी रहनी चाहिए कि न बहुत दूर न बहुत समीप प्रायः ४०-५० मील के अन्तर से इनकी श्रृंखला चलती रहे और उनका चक्र ऐसा हो, जिससे एक स्थान का उखड़ा हुआ मेला दूसरी जगह पहुँचने के और वहाँ जमने के लिये एक संप्ताह का अवकाश रहे। दिवाली से लेकर होली तक पाँच महीने यह मेले चल सकते हैं, और अधिक समय चाहिये तो आश्विन की पूर्णिमा से चैत्र की पूर्णिमा तक छः महीने भी यह चलाये जा सकते हैं। कड़ी धूप, लू और वर्षा की ऋतु में यह आयोजन नहीं हो सकते। इन महीनों में दस या बारह मेलों का एक चक्र बनाया जा सकता है और योजनाबद्ध रूप से एक-एक क्षेत्र के अन्तर्गत उतने स्थान नियत किये जा सकते हैं।

विचारशील लोगों को इसमें सम्मिलित होने के लिये पहले से ही व्यक्तिगत अनुरोध किया जाये। इसी प्रकार सामान्य जनता में भी उसमें सम्मिलित होने के लिये पहले से ही उत्साह भरा जाये। दुकानदारों, व्यापारियों को पहले से ही जानकारी/सूचना दी जाये। इसके अतिरिक्त जनता के मनोरजन केन्द्र, छोटे-छोटे खेल-तमाशे, सरकस वाले, झूले, चरखी वालों से सम्बन्ध बनाया और उन्हें बुलाया जाये। नई बात—नये स्थान में साधारणतया यह आशंका रहती है कि समुचित लाभ मिलेगा या नहीं। प्रथम वर्ष यदि भीड़ अच्छी इकट्ठी हो सकी तो अगले वर्ष वह ढर्रा अपने आप ही चल पड़ेगा और बुलाने का प्रयत्न करने के स्थान पर उन आने वालों को स्थान देना कठिन हो जायेगा। ऐसे मेलों में नाटक, संगीत सम्मेलन, अभिनय आदि बहुत सफल होते हैं। लोक-रञ्जन के साथ लोक-मंगल कार्यक्रम जहाँ जो उपलब्ध हो वहाँ उन्हें जुटाया जा सकता है। सरकारी प्रचार विभाग से सम्बन्ध मिलाया जाय तो उनके सिनेमा, प्रदर्शनी आदि भी मिल सकते हैं। अपनी प्रदर्शनियाँ तो इसमें लगाना ही चाहिये।

यह सामान्य प्रचारात्मक कार्यक्रम हुये। मेले का सारा वातावरण ऐसा रहना चाहिये कि वहाँ सीखने सिखाने को बहुत कुछ मिले। आदर्श वाक्यों और पोस्टरों की भरमार रहे, जहाँ निगाह पड़े वहीं से कुछ उद्बोधन मिले। साहित्य की चित्रों की, मूर्तियों की ऐसी दुकानें बहुत हों जिनमें प्रेरणा भरी पड़ी हो। व्यायाम के चार्ट, खेलकूद के उपकरण, भाप से भोजन बनाने के बर्तन जैसी वस्तुयें यहाँ मिलें। खाद के गड्ढे, पेशाब घर, सुधरे शौचालय, शाक-वाटिका, गृह-उद्योग, मधुमखी पालन जैसी प्रदर्शनियाँ लगाकर लोक-शिक्षण के लिये जहाँ जो आवश्यक एवं उपयोगी हो, उन्हें वहाँ जुटाया जाना चाहिये।

सम्मेलनों में उस क्षेत्र में प्रचलित सामाजिक नैतिक एवं बौद्धिक अवांछनीयता के उन्मूलन के लिए जनता को उद्बोधन किया जाय और ऐसे प्रस्ताव पास किये जाय जिनमें उस क्षेत्र की जनता द्वारा उस अवांछनीयता के निर्णय की घोषणा की गई हो। सम्मेलनों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संयोजक पहले से ही उन निर्णयों की आशा कर सकते हैं और पास हुये प्रस्ताव की प्रतियाँ पहले से भी छपा सकते हैं। उपस्थित लोग उन प्रस्तावों की प्रतिलिपियाँ अपने साथ लेकर जायें और अपने गाँवों के लोगों को इकट्ठा करके उन बड़े सम्मेलनों में—बड़ी पञ्चायत में—पास हुये निर्णयों को कार्यान्वित कराने का प्रयास करें।

बिहार में मैथिल ब्राह्मणों का एक जातीय सम्मेलन होता है, जिसमें उनके विवाह योग्य लड़की-लड़के भी आते हैं और मध्यस्थ लोगों द्वारा सुयोग्य जोड़े ढूँढ़ने का—तथा शादी सम्बन्ध निर्णय करने का बहुत बड़ा काम निपटा दिया जाता है। जगह-जगह मारे-मारे फिरने की अपेक्षा यह पद्धति बहुत ही उपयुक्त है। अभिभावक अपने योग्य लड़की लड़कों को लेकर आया करें और आवश्यक देखभाल—बातचीत—दोनों कुटुम्बों के बीच यहीं विस्तार से हो जाया करें। पूरे परिवार को देख लेने में दोनों पक्षों को समुचित सन्तोष भी हो जाता है। लड़की-लड़के भी आपस में बिना संकोच एक-दूसरे को देखभाल सकते हैं। यह सुविधा घरों में चलने वाली प्रचलित ढूँढ खोज पद्धति में नहीं चल सकती। कई लड़के लड़की देखने और उनमें से उपयुक्त चुनाव करने का क्रम भी आसानी से चल सकता है।

युग-निर्माण परिवार के उन लोगों को इस मेले में आने और ठहरने की प्राथमिकता दी जाये, जिन्होंने आदर्श विवाह योजना को स्वीकार किया हो। बिना दहेज, बिना जेवर, दिखावा, बिना बरात का अत्यन्त सादगी और मितव्ययितापूर्वक विवाह शादियाँ करने का हम लोग निर्णय कर चुके हैं। उस जातियों के बन्धन को तोड़कर एवं बड़ी जाति के किसी भी उपजाति में विवाह करने के लिये परिवार ने कदम उठाया हुआ है। उस प्रतिपादन के अनुसार, जिन्होंने सहमति प्रकट की हो इन्हें इन मेलों में आने के लिये विशेष रूप से आमन्त्रित किया जाना चाहिये।

तत्काल निश्चय और तत्काल विवाह का सुयोग तो नहीं बन सकता, पर पूर्व निर्णीत विवाह इन मेलों में सामूहिक रूप से हो सकते हैं। हर महीने की दोनों पंचमी विवाह के लिये उपयुक्त मुहूर्त हैं। एकादशी या पूर्णिमा भी सुविधानुसार रखी जा सकती हैं। यदि संयोग-वश कहीं बसन्त पंचमी, शरद पूर्णिमा, अक्षय तृतीया, राम नवमी जैसे पर्व मेलों के बीच में आ पड़ें तो सामूहिक विवाह के लिये वे तिथियाँ भी घोषित की जा सकती हैं। हर वर्ष एक क्षेत्र के सामूहिक विवाह एक ही बार एक ही सम्मेलन में हुआ करें तो विवाहोन्माद विराधी और आदर्श पद्धति अपनाने का आन्दोलन अत्यन्त तीव्रगति से आगे बढ़ सकता है और जो कार्य धीरे-धीरे मुद्दतों में होता वह कुछ ही वर्षों की इस क्रान्तिकारी योजना द्वारा सहज ही पूरा हो सकता है।

छः संस्कार अपने यहाँ आवश्यक घोषित किये गये हैं। (१) नामकरण, (२) शिखा संस्कार-मुण्डन, (३) यज्ञोपवीत व्रत-बन्ध, (४) विवाह, (५) वानप्रस्थ (६) अन्त्येष्टि। इसमें से अन्तिम को छोड़कर शेष पाँचों को पाँच दिन में सामूहिक रूप से कराया जा सकता है। पाँचों दिन प्रातः काल गायत्री यज्ञ के साथ-साथ एक-एक दिन में एक-एक संस्कार का सामूहिक आयोजन चलता रहे। इस प्रकार बिना खर्च के—बड़े प्रेरणाप्रद और उत्साह भरे वातावरण में ये संस्कार सम्पन्न होते रह सकते हैं। गायत्री यज्ञ के अन्त में लोगों से अपनी बुराइयों में से एक छोड़ने व एक अच्छाई का व्रत लेने का जो नियम है, उस आत्म सुधार प्रक्रिया में जो भाग ले रहे हों, उन्हें यज्ञों में विशेष रूप से आहुतियाँ देने के लिये यजमान होता के स्थान पर बिठाया जाय शेष लोग मात्र पूर्णाहुति की एक आहुति ही दें इससे यज्ञ में अनावश्यक समय भी न मिलेगा और व्रतधारी को यज्ञ भगवान की अधिक समीपता प्राप्त करने का श्रेय गौरव भी मिलेगा।

यह कुछ थोड़े से संकेत दिये गये हैं। इसी प्रकार की अन्य क्रान्तिकारी योजनाओं का समावेश इनमें किया जा सकता है और इन धार्मिक मेलों को आर्थिक, मानसिक, मनोरंजनात्मक, हर्षोल्लास के साथ-साथ नैतिक, बौद्धिक या सामाजिक क्रान्ति की विशद् भूमिका का आधार बनाया जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन मेलों में खर्च काफी पड़ेगा। इसे जुटाने के निम्न आधार हो सकते हैं—(१) दुकानदारों से टैक्स, (२) ठहरने का झोंपड़ी का किराया (३) संस्कारों की दक्षिणा, (४) सम्मेलनों के लिये स्वागत सीमित के सदस्यों का गठन तथा उनसे स्वागतकारिणी का सदस्यता शुल्क, (५) सार्वजनिक चन्दा। इन आधारों-स्रोतों में से स्थानीय स्थिति वातावरण तथा अपने प्रभाव के अनुसार जो उचित और उपयुक्त लगे ऐसे माध्यमों को चुना जा सकता है। अपनी सूझ-बूझ के अनुसार कोई अन्य उपयुक्त स्रोत भी ढूँढ़े जा सकते हैं। अपने आदर्श और स्वरूप को शोभा देने योग्य कोई भी आधार पकड़े जा सकते हैं।

आरम्भ में दुकानदारों को आकर्षित करने के लिये बिना टैक्स ही उन्हें स्थान दिया जाय पीछे उन दुकानदारों तथा फेरी वालों से कुछ लिया जा सकता है। फिर भी इसमें प्रारम्भ के कुछ दिनों घाटा रह सकता है। सम्मेलनों के उपकरण आरम्भ में जुटाने का बड़ा खर्च लग सकता है, उसे संगठन के प्रभावशाली लोगों को जुटाने के लिये रास्ता निकालना चाहिये। कार्य की सम्भावना और गरिमा को देखते हुये उसमें जो भी खर्च किया जायेगा सर्वथा सार्थक ही सिद्ध होगा।

रामायण कथा और भागवत कथा के सप्ताह आयोजन

पिछले दिनों भागवत सप्ताह कथा का धार्मिक क्षेत्र में बहुत प्रचलन रहा है। सुन्दर सुसज्जित मंच पर बैठकर भागवत कथा का प्रवचन, पण्डितों द्वारा पुराणों का पारायण प्रतिदिन पूजा आरती, अन्तिम कथा पूजन ब्रह्मभोज, कथा पुस्तक पर दक्षिणा अर्पण जैसी प्रथा इन आयोजनों की रूपरेखा रही है। लोग इस कथा श्रवण का बहुत पुण्य मानते हैं। जनता का उत्साह, धर्मरुचि का अभिवर्धन, पुण्य फल की प्राप्ति, कथा वाचक का निर्वाह जैसे कई प्रयोजन जुड़े रहने से ग्रह धर्मानुष्ठान अपने ढंग ढर्रे पर चलते रहे हैं। इसी आधार पर रामायण कथाओं का भी प्रचलन कितनी ही जगह चला है और उसका भी उसी उत्साह से स्वागत हुआ है।

युग निर्माण योजना के धर्म मंच से भगवान राम और भगवान कृष्ण के चरित्र का कथानक प्रेरणा प्रद पद्धति से प्रस्तुत करते रहने का साप्ताहिक धर्मानुष्ठान क्रम उसी आधार पर बनाया है, जिस पर कि पिछले दिनों भागवत् रामायण कथा क्रम चलता रहा है।

इसका स्वरूप यह है कि कहाँ, किस कथा का, कब से आरम्भ होगा इसकी जानकारी जनता को दी जाये और उसमें सम्मिलित रहा करने की प्रेरणा अनेकों को दी जाये। प्रातः काल सूर्य उदय होते ही उपस्थित लोगों द्वारा सामूहिक पारायण किया जाये। संगीत को साथ रखा जा सके तो उसकी व्यवस्था भी रखी जाये। पारायण के लिये पुस्तकें उपलब्ध हैं। तुलसी कृत रामचरित मानस का एक संक्षिप्त संस्करण इस प्रकार छापा गया है, जिसमें घटनाक्रम भी चलता रहा है उपदेशपरक सभी मार्मिक स्थल पूर्णतया सुरक्षित रखे गये हैं। इसे १२ विभागों में विभाजित कर दिया गया है। इस सप्ताह आयोजन में आरम्भ, भूमिका जैसा ही होता है, उसमें सामान्य कीर्तन काम में आते हैं। अन्तिम सातवें दिन दोपहर को एक ही सत्र होता है। दोपहर को ही पूर्णाहुति हो जाती है। बीच में सबेरे शाम के कुल मिलाकर सामूहिक गायन पारायण के लिये १२ मीटिंग होती हैं। संक्षिप्त रामायण के बारह ही पारायण विराम रखे गये हैं।

उपस्थित लोगों में से प्रायः सभी शिक्षितों को संक्षिप्त रामायण की पुस्तकें दे दी जाती हैं। सहगान के रूप में सभी एक साथ एक स्वर में एक प्रकरण का गायन-वाचन करते हैं। इसके बाद उसी प्रकरण के कथानक में आये हुये प्रसंगों की व्याख्या कथा वाचक इस प्रकार करते हैं, जिससे मिशन के आदर्शों के साथ उस प्रकरण की संगति बिठाई जा सके।

प्रवचन में तुलसीकृत रामचरित मानस के दोहा चौपाइयों की व्याख्या के अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण के श्लोक भी बीच-बीच में कहे बताये जाते रहते हैं। इससे उसका प्राचीन पण्डिताऊ ढर्रा भी बना रहता है और सुनने वाले धर्मप्रेमी लोग उसमें पुरातन कथा प्रसंगों जैसा आनन्द लेते रहते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कृष्ण चरित्र के बारे में भी यही किया गया है। यों भगवान कृष्ण की लीलाओं में कितने ही प्रसंग ऐसे भी हैं, जिनकी चर्चा एवं व्याख्या अनावश्यक है। युग निर्माण योजना को उस लीला सागर में से केवल प्रेरणाप्रद प्रसंग ही चुने गये हैं और उन्हें रामायण की तर्ज पर दोहों चौपाइयों में बना दिया गया है। इस संक्षिप्त भागवत का भी रामायण सहगान की तरह एक घण्टा ही सहगान पारायण होता है।

एक-डेढ़ घण्टा प्रवचन भी रामायण की तरह ही होता है और उसमें बीच-बीच में भागवत पुराण के श्लोक कहे बताये जाते रहते हैं। तुलसी कृत रामायण की दोहा चौपाई और वाल्मीकि रामायण के श्लोकों में जिस प्रकार रामायण कथा चलती थी, ठीक उसी प्रकार यह दोहा चौपाइयों की कृष्णायन कथा भागवत पुराण के श्लोकों के सन्दर्भ में उसी पुरातन शैली की बन जाती है पर उसके मूल आधार में जमीन आसमान जैसा अन्तर होता है। पुरातन कथानकों में मात्र लीलाओं का वर्णन ही पर्याप्त माना जाता था। इसमें प्रेरणायें, शिक्षायें, दिशायें, मुख्य हैं। नव निर्माण अपना लक्ष्य है उसकी प्रामाणिकता और महत्ता में रामायण और कृष्णायन में से जो योगदान मिला उसे ही प्रधानता दी गई है।

इन सात दिनों में प्रातः सायं एक-एक घण्टे का सद्ज्ञान डेढ़-डेढ़ घण्टे का दोनों समय प्रवचन इस प्रकार ढाई-ढाई घण्टे के दोनों समय कथा कार्यक्रम जनता को भी सुविधाजनक पड़ते हैं। दफ्तर दुकानों पर जाने वाले लोग प्रायः दस बजे जाते हैं तब तक कथा प्रसंग पूरा हो लेता है। इसी प्रकार सायंकाल काम से लौटने पर ७ से ६।। इसी में कुछ आगे-पीछे करके वह भी आसानी से बन जाता है, इसमें किसी का काम भी हर्ज नहीं होता और इस धर्मानुष्ठान में सम्मिलित रहने की बात भी बन जाती है। सात दिन लगातार क्रमबद्ध रूप से भगवान के लीला प्रसंग सुनने के साथ-साथ भावनात्मक नव निर्माण की क्रमबद्ध शिक्षा का चलते रहना एक सुयोग्य स्वार्थ ही कहा जा सकता है।

प्रातःकाल २।। घण्टे का कार्यक्रम समाप्त होने के बाद हर दिन एक संस्कार सामूहिक रूप से सम्पन्न किया जाय। उस संस्कार के कराने वाले जितने लोग हों वे सब इकट्ठे हो जायें और गायत्री यज्ञ के साथ-साथ वह कृत्य भी ठीक तरह सम्पन्न कर दिया जाये। संस्कारों में (१) पुंसवन (२) नामकरण (३) अन्न प्राशन्न (४) शिखा स्थापन, मुण्डन (५) यज्ञोपवीत (६) वानप्रस्थ, किये जाने चाहिये।

तीसरे प्रहर सहानुभूति रखने वाले सहायकों, सक्रिय सदस्यों, कर्मठ कार्यकर्त्ताओं में विचार गोष्ठी चलाई जाय और मिशन के कार्य को स्थानीय परिस्थितियों में किस प्रकार अग्रगामी बनाया जा सकता है इसका प्रशिक्षण दिया जाय। कार्य करने की शैली का, अड़चनों के सुलझाने की रीति-नीति का, विचार विश्लेषण किया जाये। इस तरह कथा अनुष्ठान के साथ चलने वाला यह 'सेमीनार' स्थानीय कार्यकर्त्ताओं में नवीन उत्साह का समावेश कर सकता है।

अन्तिम दिन पूर्णाहूति में गायत्री यज्ञ, कन्या भोजन, ग्रन्थ पूजा आदि की व्यवस्था कर ली जाये। अच्छा यह है कि सहगान प्रकरण में से उपयोगी व्याख्या करने वाले विद्वान प्रगतिशील कुशल वक्ता, स्थानीय क्षेत्र में से ही ढूँढ लिये जायें। न मिलें तो गायत्री तपोभूमि से भी बुलाये जा सकते हैं। यह साप्ताहिक आयोजन यदि हर वर्ष चलते रहें तो उन्हें शाखा का वार्षिकोत्सव भी समझा जा सकता है और नियत समय पर उसे हर वर्ष सम्पन्न करने का क्रम भी बनाया जा सकता है।

स्थानीय एवं क्षेत्रीय नव जागरण की दृष्टि से यह आयोजन हर दृष्टि से बहुत उपयोगी है। कथा की शैली, प्रवचन का क्रम, उनमें बीच-बीच जोड़े जाने वाले श्लोक तथा उपकथा, दृष्टान्त आदि का समावेश कैसे किया जाय वह इन थोड़ी पंक्तियों में तो नहीं बताया जा सकता पर तीन महीने के कार्यकर्त्ता शिक्षण शिविरों में मथुरा जाकर भली प्रकार सीखा जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोकरंजन के साथ लोक मंगल का समन्वय

संगीत सीधा हृदय को स्पर्श करता है। लेखनी, वाणी की उतनी सीधी पहुँच भाव केन्द्र तक नहीं जितनी संगीत की है। मस्तिष्क को प्रभावित करना हो तो तर्क और तथ्यों का सहारा लेना पड़ेगा, पर भावनाओं को आन्दोलित करना एक विशिष्ट प्रक्रिया है, जिसमें संगीत से अधिक और कोई प्रभावशाली माध्यम नहीं है। मीरा, सूर, तुलसी, कबीर, जैसे भक्त सन्तों ने जनता के अन्तःकरण को सीधा स्पर्श किया था और उन दिनों के सूखे, नीरस, हताश, जन-मानस में पुनः रस की धारा बहाकर नवजीवन का संचार किया था। आगे चलकर वह सरसता, आत्म-चिन्तन और आत्म निर्माण का कारण बनी। देश के पददलित गौरव को पुनः जीवित जाग्रत करने में इस भक्ति रस की प्लावित भूमिका ने अपने ढंग से एक महत्त्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध किया।

छुआछूत मिटाने में मानवी एकता का प्रतिपादन करने में चैतन्य महाप्रभु, निमाई-निताई-जगद्बन्धु जैसे सन्तों की कीर्तन प्रक्रिया बड़ी प्रभावशाली सिद्ध हुई। समर्थ गुरु रामदास के दास बोध में संकलित अभंगों ने सारे महाराष्ट्र में अभिनव संचार किया।

पिछले दिनों अन्धकार युग में प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण माध्यमों का दुरुपयोग हुआ है। धर्म और अध्यात्म की कैसी दुर्गति बनाई गई यह सामने है। शब्द और ब्रह्म को भी निकृष्ट स्तर पर लाकर पटक दिया गया। साधना शृंगारिकता की चेरी बनकर रह गई। जो गाया गया, गवाया गया, उसे केवल रूपसी, रमणी, कामिनी की मांसलता वर्णन करने, यौन लिप्सा के विविध हाव-भावों, क्रिया-कलापों से वर्णन करने के अतिरिक्त और कोई विषय न मिला, काव्य का दूसरा अर्थ ही शृंगार, विलास, काम कौतुक बन कर रह गया। ऐसे दुर्दिनों में यदि औरंगजेब ने अपने राज्य में से गायकों को देश निकाला दे दिया था और सारे वाद्य यन्त्रों को नष्ट करवा दिया था उसका आक्रोश निरर्थक नहीं कहा जा सकता।

पिछले दिनों जो अवांछनीय होता रहा है उसकी धारा उलटने का प्रयत्न युग निर्माण योजना कर रही है। इस सन्दर्भ में उसने स्वर साधना का संगीत का पुनरुद्धार, पुनरुत्थान करने का निश्चय किया है। उसे विलासिता के प्रतिपादन से हटाकर उच्च स्तरीय देव भावनाओं के जागरण में प्रयुक्त किया जायेगा।

भावनात्मक नव निर्माण में अन्तःकरणों को स्पर्श किया जायेगा, इसके लिये संगीत विद्या का उपयोग होना ही है। अन्तर केवल इतना करना है कि गायन का विषय अर्ध्वगामी हो। वात्सल्य, करुणा, ममता, आत्मीयता, स्नेह, सौजन्य, सौहार्द्र, सद्भावनाओं आदि को तरंगित करने वाले गीत बनाये जायें, गाये जायें और वाद्य-यन्त्र की ध्वनि तरंग उसी उद्बोधन में रस सहयोग प्रदान करें। अगले दिनों गीत वाद्य का एकमात्र प्रयोग-प्रयोजन यही होगा।

प्रेरणाप्रद उद्बोधक गीतों का आज लगभग अभाव है। गीतों के नाम पर काम-कौतुक से सम्बन्धित पद्य ही गायकों को याद हैं और गीत पुस्तकें भी लगभग इसी परिधि के इर्द-गिर्द घूमती हुई मिलेंगी। आवश्यकता ऐसे गायनों की है जो जन-मानस की आधुनिक पतनोन्मुख धारा को मोड़ सकें। ऐसे गीत लिखने या लिखाने पड़ेंगे। इस प्रकार के कुछ संकलन युग निर्माण योजना ने छापे भी हैं। प्रथम तो यह है कि निकृष्टता के प्रति आक्रोश और उत्कृष्टता के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने वाले गीतों की प्रचुर परिमाण में संरचना की जाये। उन्हें प्रान्तीय और क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवादित प्रकाशित किया जाये ताकि शिक्षित-अशिक्षित सभी को उनकी सरस प्रेरणा से लाभान्वित होने का अवसर मिल जाये।

गान विद्या से परिचित उस कला के अभ्यस्त लोगों को ऐसी कवितायें उपलब्ध कराई जायें। उनसे अनुराध किया जाये कि वे इन्हें याद करें, इनकी ध्वनियाँ निकालें और समय-समय पर उन्हें अलापते हुये सुनने वालों को प्रसन्नता ही नहीं प्रेरणा भी प्रदान करें। उन्हें इसमें आपत्ति ही क्या हो सकती है। उनने तो वही याद कर लिया है, जो सहज उपलब्ध था। प्रेरणाप्रद गीत कहीं थे ही नहीं। जो थोड़े थे वे प्रचलित नहीं थे। ऐसी दशा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में यदि गायक उन्हें प्रस्तुत कर सकने में असमर्थ रहें तो उनका दोष भी नहीं। अब जब कि उस तरह का गीत निर्माण और प्रकाशन आरम्भ हो गया है तो कोई कारण नहीं कि गायक बन्धु इस नव निर्माण प्रयोजन में अपना योगदान न करें। संगीतज्ञों को प्रेरक गीत गाने की प्रेरणा देने के साथ ही उन्हें ऐसे मंच उपलब्ध कराना, जिस पर वे अपने उत्साह और सहयोग प्रदर्शन कर सकें, भी हमारा कर्त्तव्य है।

समय-समय पर हमें ऐसे संगीत आयोजन निर्धारित करने चाहिये और उन सहयोगी कलाकारों को उनमें आमन्त्रित करके अपनी निर्माणकर्त्री कला के प्रदर्शन का अवसर देना चाहिये। ऐसे संगीत सम्मेलन स्वतन्त्र रूप से पूरे समय के लिये भी रखे जा सकते हैं, या किन्हीं अन्य सम्मेलनों के आदि व अन्त में थोड़े समय के लिये भी रखे जा सकते हैं।

कविता सम्मेलनों की बिलकुल स्वतन्त्र शैली है। यह जितनी सरल है उतनी ही प्रभावोत्पादक भी। कवि सम्मेलनों में कवि लोग अपनी-अपनी कवितायें ही सुनाते हैं, उनमें विषय का प्रतिबन्ध नहीं होता। कविता सम्मेलन इससे भिन्न स्तर का होगा, पर उसका बाहरी स्वरूप कवि सम्मेलनों जैसा ही रहा करेगा। जिनके स्वर मीठे और तीखे हैं वे किसी भी लिखी हुई कविता अपने स्वर में जमायेंगे और सम्मेलन में उसका पाठ करेंगे। वयस्क छात्र और छात्राओं को स्वभावतः इसमें अधिक रुचि होती है। बड़ी आयु वालों की अपेक्षा उनके स्वर भी अपेक्षाकृत अधिक कोमल, तीखे और मीठे होते हैं। इसलिये भविष्य के लिये उन्हें अधिक प्रोत्साहन देने की दृष्टि से आगे लाना चाहिये। अन्य बड़ी आयु के नर-नारी भी भाग ले सकते हैं। स्वर की मिठास और पढ़ने की शैली ही उनकी योग्यता होगी। कवितायें मिशन की निर्धारित मर्यादाओं के अन्तर्गत ही होनी चाहिये। इस प्रकार यह कविता पाठ सम्मेलन अपने ढंग का अति महत्त्वपूर्ण आयोजन होगा।

प्रचलित कवि सम्मेलनों की तुलना में उसका महत्त्व तीन दृष्टियों से बढ़ा-चढ़ा होगा। एक तो सभी गायक मधुर स्वर वाले होंगे, जबकि कवि सम्मेलनों में वैसा नहीं होता। दूसरे विषय केवल आदर्शवादिता और उत्कृष्टता की मर्यादाओं में सीमित रहने के कारण जन-मानस को एक दिशा देंगे, जबकि कवि सम्मेलन वैसा कोई प्रभाव उत्पन्न नहीं करते। तीसरे बाहर से आने वाले कवियों के लिये ढेरों पैसे देने पड़ते हैं जबकि कविता सम्मेलनों में समीपवर्तीय लोग ही एकत्रित होकर बिना किसी खर्च के उस प्रयोजन को पूरा कर देते हैं।

मिशन की आवश्यकता पूर्ति के लिये यह कविता सम्मेलन ही उपयुक्त रहेंगे। जिस कवि की कविता सुनाई जायेगी, जहाँ से वह ली गई हागी, उसकी चर्चा कर दी जायेगी। इस प्रकार कविता सम्मेलनों की हर जगह धूम मचाई जा सकती है।

हर वर्ष छः प्रधान पर्वों पर युग निर्माण शाखाओं द्वारा आयोजन होते ही हैं। इनमें कविता पाठ या संगीत सम्मेलनों का भी कुछ समय निर्धारित रहना चाहिये। यदि आयोजन कई दिन का है, तब तो एक दिन पूरा भी कविता सम्मेलन, संगीत सम्मेलन रह सकता है। इसके अतिरिक्त भी समय-समय पर समीपवर्ती क्षेत्रों में यह आयोजन सज-धज के साथ सम्पन्न किये जा सकते हैं। संगीतज्ञों और कविता पाठ कर्त्ताओं को मिशन के अनुरूप अपनी शैली विकसित करने को शिक्षण-शिविरों की व्यवस्था की जानी चाहिये। इसके लिये जहाँ सम्भव हो स्वतन्त्र संगीत विद्यालय भी स्थापित किये जाने चाहिये, जिसमें गीत और वाद्य दोनों की शिक्षा दी जाये। भले ही विद्यालय रात्रिकालीन दो तीन घण्टे चलने वाले ही क्यों न हों ? हर जगह संगीत विद्यालय खाले जायें जिनमें अवकाश के समय संगीत सीखने का अवसर उस विषय में रुचि रखने वालों को मिल सके। प्रेरक गीत हर क्षेत्रीय भाषा में लिखे जाने चाहिये और प्रयास यह किया जाना चाहिये कि गीत वाद्य की दिशा लोकमंगल का प्रयोजन पूरा करने में जुट सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहगान कीर्तनों की आवश्यकता

पिछले दिनों लोग रसानुभूति दो प्रयोजन में करते रहे हैं, (१) श्रृंगारिकता (२) भक्ति कल्पनाँ। इन दो ही धाराओं में काव्य सरिता प्रवाहित होती रही है। इसी सन्दर्भ में गाया और बजाया गया है। भावुकता और काल्पनिकता इन्हीं दोनों के इर्द-गिर्द उड़ती रही है। सबसे अधिक रसिकता इन्द्रिय लिप्सा के रूप में काम कौतुक में लगी है। नर-नारी संयोग को विविध रूप में देखने-सुनने और उसके नाम पर गान, नृत्य, अभिनय का सिलसिला चिरकाल से चलता रहा है।

काव्य धारा का कुछ थोड़े से कलाकारों तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं। जिनके स्वर मधुर हैं, जो गान शैली से परिचित हैं, जिन्हें वाद्य यन्त्र बजाना आता है, वे ही इस भाव गंगा में स्नान कर सकें और शेष लोग मुक दर्शक मात्र बने बैठे रहें यह उचित न होगा। प्रयत्न यह किया जाना चाहिये कि सर्व साधारण को भाव जागरण के इस क्रिया-कलाप में रसानुभूति के प्रवाह में व्यक्तिगत रूप से भी सक्रिय रूप से भी सम्मिलित होने का भाग लेने का अवसर मिले। इसका एक ही तरीका हो सकता है—"सहगान"। पिछले दिनों कीर्तनों की भी शैली यही रही है। हमें इसी शैली के कीर्तनों का प्रचलन करना चाहिये।

ऐसी सुन्दर कवितायें इस सहगान कीर्तन की लिखी जानी चाहिये, जिसमें ईश्वर विश्वास, धर्म, आत्मा, श्रद्धा, सद्भावना, सेवा, परमार्थ, विवेक, कर्त्तव्य पालन जैसे उच्च गुणों के उभारने की पर्याप्त सामग्री हो। सम्बोधन आत्मा को, परमात्मा को, विश्व मानव को, विश्वात्मा को किया जा सकता है। प्रार्थना और आत्मनिवेदन के तत्व भी उसमें रह सकते हैं। शैली यह हो कि चार चरण प्रमुख गायक द्वारा मधुर स्वर में साज-सज्जा के साथ गाये जायें और जहाँ जितनी व्याख्या की जरूरत हो वहाँ उसे भी करते रहा जाये। मुख्य प्रवक्ता को ही इतना तो करना चाहिये। इसके बाद एक चौपदी के साथ जुड़ी हुई पदीय टेक और एक स्थायी टेक इन दो को जनता मिल जुलकर गायें, दुहरायें। संगीत का क्रम इसमें भी चलता रहे। यही है अपने सहगान कीर्तनों की पद्धति।

इसमें एक बड़ा मनोवैज्ञानिक लाभ है कि जन साधारण द्वारा जो टेक गाई-दुहराई गई है, उसे वे अपने द्वारा समर्थित और प्रतिपादित अनुभव करते हैं और अनायास ही मनन स्तर से यह आस्था जमाते हैं कि उस तथ्य का समर्थन नहीं वरन् प्रतिपादन वे स्वयं कर रहे हैं। अस्तु इस पद्य में व्यक्त अभिव्यंजनाओं के साथ उनका निज का अहं जुड़ जाता है। वे प्रकारान्तर से ऐसा अनुभव करते हैं मानो उनने सहगान के साथ-साथ वैसा करने की प्रतिज्ञा की हो अथवा प्रवक्ता के स्थान पर बैठकर सर्व साधारण को खुद ही वैसा मानने करने की प्रेरणा दी हो। इस छाप के कारण जन साधारण को उस प्रवाह में अधिक आनन्दित होने का ही नहीं, प्रभावित होने का भी अवसर मिलता है। वातावरण कुछ ऐसा बन जाता है, मानों एक विशाल जन समूह ने इन मान्यताओं का भावनाओं का सामूहिक समर्थन किया हो। बिना मन पर किसी प्रकार का भार दबाव पड़े- आनन्द और उत्साह की तरंगों में बहते-झूमते गाते हुए अपनी मनोभूमि को एक दिशा विशेष में मोड़ने का और वातावरण में वैसा ही उभार उत्साह उत्पन्न करने का यह बहुत ही प्रभावशाली तरीका है। इसे अधिकाधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिये और इस प्रकार के आयोजनों के लिये उत्साह भरी तैयारी में हमें जुटना चाहिये।

इस प्रकार के पद्य लिखे जा रहे हैं, जिनमें नव निर्माण के सभी भाव तथ्यों को भली प्रकार व्यक्त किया गया हो। चार लाइनें तुकान्त चरण की। कवियों को यह छूट दी गई है कि चारों पदों की तुकें बढ़िया न बनती हों और इसमें भाव भरने में कठिनाई पड़ती हो तो दो-दो पंक्तियों की भी तुकें बिठा सकते हैं। एक प्रत्येक पद के साथ जुड़ी रहने वाली पदीय टेक और एक स्थायी टेक जो पदीय टेक के साथ दुहराई जाती रहे। इस प्रकार की कवितायें पाक्षिक युग निर्माण में जल्दी ही बड़ी सख्या में छप जायेंगी और उन्हें पुस्तकाकार भी प्रंकाशित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर दिया जायेगा। इससे प्राथमिक आवश्यकता पूरी होती है।

इसके बाद अभ्यास करने की आवश्यकता पड़ेगी। वाद्य यन्त्र साथ हों तो सोना और सुगन्ध, अन्यथा एक मधुर स्वर वाला प्रवक्ता चार चरण गाये और उपस्थित लोग दोनों टेकों को दुहरायें। यह कीर्तन क्रम हर जगह आरम्भ कर दिया जाये। सायंकाल भोजन आदि से निवृत्ति होकर लोग इस प्रकार के प्रयास में सुविधापूर्वक सम्मिलित हो सकते हैं। समीपवर्ती जनता को आमन्त्रण-बुलाये जाने की टोली, मधुर स्वर वाला प्रवक्ता, सुविधाजनक स्थान एवं वाद्य यन्त्रों का प्रबन्ध हो सके तो वह भी इतनी व्यवस्था जुटा लेने पर कहीं भी आरम्भिक अभ्यास प्रारम्भ किया जा सकता है। उसे दैनिक—साप्ताहिक, एक ही स्थान पर, स्थान बदलकर, जैसी भी जहाँ सुविधा हो, वहाँ वैसा प्रयत्न करना चाहिये। अभ्यास परिपक्व होने पर इनमें से अधिक अभ्यस्त लोगों की मण्डलियाँ समीपवर्ती स्थानों में कभी-कभी इस आन्दोलन की जानकारी तथा शिक्षा देने अथवा प्रचार उद्देश्य से जा सकती हैं। ऐसी कीर्तन मण्डलियों के सम्मेलन, प्रतियोगिता आयोजन तथा पद यात्रा कार्यक्रम भी बन सकते हैं।

प्रसुप्त भाव संस्थान का जागरण, सद्भाव सम्पन्न लोगों का परस्पर सम्मिलन, एक दिशा और एक लक्ष्य के लिये उन्मुख प्रवाह, रसानुभूति की दिशा जैसे कितने ही महत्त्वपूर्ण लाभ इस पद्धति के साथ जुड़े हुये हैं। इस दिशा में हमारे प्रयास अविलम्ब गतिशील होने चाहिये।

अभिनय की प्रभावशाली प्रक्रिया

लोकरंजन के साथ लोक मंगल की प्रक्रिया को जोड़ दिया जाना चाहिये। इसमें जन साधारण की लोक रंजनात्मक प्रवृत्ति का पोषण होने से बाल-वृद्ध, शिक्षित-अशिक्षित, सभी में उस आयोजन में सम्मिलित होने का उत्साह उत्पन्न होगा। बिना आमन्त्रण अतिरिक्त प्रयास के ही जनता पर्याप्त संख्या में उस जगह एकत्रित होती रहेगी। दूसरा लाभ यह होगा कि लोकरंजन के साथ जुड़े हुये घटना क्रम के आधार पर लोग किसी प्रभाव को ग्रहण करने और निष्कर्ष पर पहुँचने में सहज ही सफल होंगे।

घटना क्रम के आधार पर तथ्यों को उभारना जितना सरल पड़ता है, उतना ही समझाना भी सुगम होता है। पुस्तक प्रकाशन और विक्रय का क्षेत्र देखिये, उसमें कथा, कहानी और उपन्यास की घटना परक पुस्तक ही तीन चौथाई छपती और बिकती दिखाई देंगी। मासिक पत्रों में कथा साहित्य के पत्रों की ही प्रधानता संख्या और मांग अधिक है। बच्चे किस्से कहानी सुनने को आतुर रहते हैं और उसी तरह की पुस्तकें पढ़ते हैं। वेद चार ही बनकर रह गये किन्तु पुराण १८ बने और उनसे भी काम न चला तो १८ उपपुराण और बनाने पड़े। इसमें से कुछ पुराण तो इतने बड़े हैं कि चारों वेदों को सम्मिलित करने पर उसके पाँच गुने श्लोक एक ही पुराण में आ जाते हैं। ३६ पुराणों का विस्तार धर्म के मूल ग्रन्थ वेद की तुलना में इतना अधिक क्यों हो गया, इसका एक ही उत्तर है जनता की मनोभूमि में घटना परक विवरण को पढ़ने-सुनने की अभिरुचि। अखबार इसी भूख की पूर्ति करते हैं जिनमें विभिन्न स्तर के घटनाक्रम ही भरे रहते हैं। इतने पर भी आवश्यकता की पूर्ति नहीं उस माँग को पूरा करने वाला साहित्य छपता ही चला जाता है।

कथानकों को कहने सुनने का भी एक ढंग है। दूसरा तरीका जिसमें लोकरंजन का अधिक आकर्षण जुड़ा हुआ है अभिनय कहा जाता है। नाटक, एकांकी, प्रहसन इसी वर्ग के अन्तर्गत हैं। रामलीला, रासलीला आदि का धार्मिक स्तर पर अभी भी बहुत प्रचलन है। सिनेमा तो बिल्कुल यही है। अभिनय विद्या का यन्त्रीकरण ही सिनेमा है। सिनेमा कितना लोकप्रिय हो चला ? यह किसी से छिपा नहीं है जनता अपना रस लेती है, व्यवसायी अपना लाभ कमाते हैं और अभिनेता अपने ढंग से ख्याति और सम्पत्ति कमाते हैं।

नव निर्माण की दिशा में लोकरंजन को लोकमंगल के साथ जोड़कर एक अति प्रभावशाली ढंग बनाया जा सकता है। उसमें वह कार्य भी हल हो जाता है कि उच्च स्तर के व्यक्ति ही उच्च स्तरीय तथ्यों को प्रशिक्षण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिपादन करें। नाटक में मूल प्रवक्ता तो वह महामानव, चरित्र नायक रहता है, जिसका अभिनय किया जा रहा है। इसलिये उस पोस्टमैन से, अभिनयकर्त्ता से किसी की कोई शिकायत नहीं होती कि वह किस स्तर का है।

अब तक लोकरंजन प्रायः जनता की पशुप्रवृत्तियों को भड़काने अथवा परम्परागत मूढ़ मान्यताओं के परिपोषण भर के लिये किया जाता रहा है। लोकमंगल की दृष्टि से उस क्षेत्र पर कभी गम्भीर दृष्टिपात ही नहीं किया गया। यदि इस दिशा में कुछ सोचा, कुछ किया गया होता तो निस्सन्देह अब तक ऐसा तरीका निकल आया होता, जिससे भारत जैसे पिछड़े हुये देश का पिछड़ापन दूर करने के लिये बहुत कुछ हो सकता था। वह समय आ गया है कि उस विषय में कुछ कारगर कदम उठाये जायें।

ऐसे ऐतिहासिक घटना क्रम नाटक के अभिनय के रूप में तैयार किये जायें, जिनमें आज की समस्याओं के समाधान समुचित रूप से विद्यमान हों इस प्रकार के नाटक तैयार करने में सुलझे हुये दृष्टिकोणों का गहरा समावेश करना पड़ेगा, ताकि ऐतिहासिक तथ्य भी विकृत न होने पाये और उनमें परिवर्तन के लिये आवश्यक तथ्यों का समुचित समावेश भी हो जाये। इन्हें खेलने के लिये छोटी-बड़ी अभिनय मंडलियाँ हर जगह तैयार की जायें एवं उनका अभ्यास तथा ऐसा परिष्कृत प्रशिक्षण हों कि अपनी विशेषता के कारण उन्हें सर्वत्र समुचित सम्मान मिलने लगे।

यह कार्य छोटे रूप में स्थानीय मनोरंजन एवं कलात्मक अभिरुचि अभिवर्धन के लिये किया जा सकता है और बड़े रूप में व्यवसाय बनाकर। स्कूलों कॉलेजों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत कितने ही प्रकार की अभिनव पद्धतियों को अपनाया और काम में लाया जाता रहता है। इस तरह की व्यवस्था स्कूलों से बाहर भी अन्य लोग भी कर सकते हैं। इसके लिये अभिनय क्लब खुल सकते हैं, जिनमें अभिनय एवं नृत्यों की आजकल अपनाई जाने वाली सैकड़ों पद्धतियों में से जो उपयोगी लगे उन्हें काम में लाया जाय।

व्यवसाय रूप में भी आगे बढ़ाये जाने की अभी काफी गुंजाइश है यह नहीं सोच लेना चाहिये कि नाटकों का युग चला गया। सिनेमा का कब्जा हो गया। यह बात एक हद तक ही सही है और केवल शहरों में ही लागू होती है। देहात में सिनेमा कहाँ ? वहाँ बहुत खर्चीली बड़े स्तर की नाटक मण्डलियों की तो गुंजायश नहीं है पर छोटे स्तर के अभिनय मंच बड़ी सफलतापूर्वक चल सकते हैं। अभी वे चल रहे हैं। रामलीला और रासलीला का सर्वेक्षण किया जाये तो प्रतीत होगा कि अभी उनकी देशव्यापी मांग है और विशाल क्षेत्र खाली पड़ा है।

उनका ढर्रा पुराना है, घिसीपिटी बातों को, घिसीपिटी शैली में ही ये दुहराती रहती हैं। उसमें प्रगतिशीलता के समावेश की काफी गुंजायश है। नाटकों का प्रधान विषय देवता अथवा ऐतिहासिक महामानव रह सकते हैं पर उनके चरित्र-चित्रण और वार्तालाप में इतनी प्रेरणा भरी जा सकती है कि दर्शकों को केवल मनोरंजन का ही लाभ नहीं वरन् वे एक दिशा लेकर भी जायें।

इस प्रकार के गीतमय छः नाटक—(१) भगवान राम (२) भगवान श्रीकृष्ण (३) भगवान शिव शंकर (४) गंगावतरण (५) दहेज का दानव (६) राजा हरिश्चन्द्र, युग निर्माण योजना से छप भी चुके हैं। इन नाटकों को छात्रों की सहायता से मंच पर खेला भी जा सकता है और यदि वैसा न हो सके तो उन कथानकों को आल्ह खण्ड, ढोला, मारू, हीर रांझा, लैला मजनू जैसे ढंग से केवल साज संगीत के साथ गाया भी जा सकता है। छुट-पुट कितने ही गीत गाने की अपेक्षा एक पूरा कथानक बीच-बीच में व्याख्यायें करते हुये यदि कहा जा सके और उसमें जहाँ कहीं सम्भव हो थोड़ा अभिनय का पुट लगाया जा सके तो उसका आकर्षण और भी बढ़ सकता है। लोकरंजन को लोकमंगल के साथ जोड़कर भावनात्मक नव निर्माण की अनेकों शैलियाँ इस कला के अधिक जानकार सहज ही विकसित विनिर्मित कर सकते हैं। उन्हें वैसा करना भी चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्ममुहूर्त में उच्च भावनाओं का बीजारोपण

जन मानस में उच्च विचारधारा प्रवाहित करने, सुसंस्कारों की प्रतिष्ठापना के लिये भी प्रयुक्त करने से चूकना नहीं चाहिये। पिछले दिनों 'अलख निरंजन' की आवाज लगाने के लिये कनफटे बाबा लोग निकलते थे। गाँव गली में थोड़ी-थोड़ी दूर पर खड़े होकर अलखनिरंजन का घोष करते थे। इससे जनसाधारण को प्रातःकाल का समय सोने में न बिताने की, जाग पड़ने, उठ पड़ने की प्रेरणा मिलती थी। साथ ही प्रभु स्मरण भी हो जाता था। विस्मृति को स्मृति में बदल देना भी एक बड़ा कार्य है।

कई धार्मिक संस्थाओं ने प्रभात फेरियों का क्रम चलाया था। एक टोली गली मुहल्लों में भक्ति भाव से भरे गीत गाती हुई, निकलती थी और उस माध्यम से आत्म-बोध को एक झकझोर लगाती थी। कांग्रेस, आर्यसमाज जैसी सामाजिक संस्थाओं ने भी पीछे इस क्रम को अपनाया और समय-समय पर उन्होंने भी अपने कार्यक्रमों में प्रभात फेरी प्रक्रिया को सम्मिलित किया। युग निर्माण योजना के विभिन्न आयोजनों में भी प्रभात फेरी का कार्यक्रम उत्साहपूर्वक सम्मिलित रखा जाता है।

आवश्यकता इस बात की है कि इस पुण्य प्रक्रिया को नव-निर्माण अभियान का महत्त्वपूर्ण अंग बनाया जाय और इसे सर्वत्र नियमित रूप से चालू किया जाय। इसके लिये सरल उपाय यह है कि मधुर कण्ठ वाले कुछ लोग हर जगह इस कार्य के लिये समय दें। बालक, बालिकायें, पुरुष एवं नारियाँ सभी इसमें भाग ले सकते हैं और अपने-अपने वर्ग की टोली बना सकते हैं। सूर्योदय से पूर्व-ब्रह्ममुहूर्त में यह प्रभात फेरी टोली निकल सकती है। चलते-चलते गाते रहने से तो केवल लोगों को इतना पता चलता है कि कोई प्रचार मण्डली निकल रही है। उनके हाथ कुछ नहीं पड़ता। होना यह भी चाहिये कि रास्ता चुपचाप चल लिया जाये और एक स्थान पर खड़े होकर पूरा भजन या उसका कोई चरण टेक समेत गाया जाये और जब वह पूरा हो जाये तो थोड़ी दूर चलकर फिर पहले की तरह गाया जाये। यह अपनी इच्छा या स्थिति के ऊपर है कि उसी भजन को हर विराम स्थल पर खड़े होकर गाया जाये या उसे बदलते रहा जाये। ऐसा भी हो सकता है कि एक दिन एक भजन हर विराम स्थल पर गाया जाये और हर दिन एक नया भजन सुनाया जाता रहे। कुछ दिन बाद उसे फिर बदल दिया जाये। ऐसा भी हो सकता है कि हर विराम स्थल पर अलग-अलग गीत गाये जायें। इनका कोई एक नियम बनाने की आवश्यकता नहीं, जहाँ जैसा उपयुक्त लगे वहाँ उस तरह का क्रम चल सकता है।

(१) यदि मधुर स्वर वाले उत्साही लोग कम हों तो एक ही टोली निरन्तर यह प्रभात फेरी का क्रम हर दिन चलाती रह सकती है। (२) यदि संख्या अधिक हो तो उनकी ड्यूटियाँ अलग-अलग भी बँट सकती हैं। (३) अधिक लोगों की इकट्ठी मण्डली निकला करें यह भी हो सकता है। इन तीनों क्रमों में से जहाँ जो अनुकूलता प्रतीत हो वैसा किया जाना चाहिये। प्रयत्न होना चाहिये कि सेवा-भावी मधुरस्वर वाले नर-नारी इस पुण्य कार्य को करने के लिये निकल आवें। सूर्योदय के डेढ़ घण्टे पूर्व अपना कार्य आरम्भ करें और दिन निकलने से आधा घण्टा रहते अपना काम समाप्त कर लें। सबेरा हो जाने पर तो भगदड़ मच जाती है। लोक स्वतः अपने नित्य-कर्मों से निपटने के लिये इधर-उधर चलने-फिरने लगते हैं। शान्ति का समय, जिसमें आमतौर पर लोग उनींदे चारपाई पर पड़े रहते हैं वही समय है जिसे सूर्योदय से डेढ़ घण्टा पूर्व से लेकर आधा घण्टे पूर्व तक का ब्रह्ममूहुर्त कह सकते हैं। इस एक घण्टे को यदि जन-जागरण के लिये, भावनात्मक बीजारोपण के लिये लगाया जा सके तो यह बहुत ही उत्तम कार्य होगा। घर बैठे, हर किसी को प्रेरणा पहुँचाने का वह अनुदान देखने में छोटा भले ही लगे, उसका प्रभाव परिणाम निःसन्देह बड़ा है।

चूँकि वह समय अन्धेरे का होता है, शक्लें किसी की किसी को दिखती नहीं, सब लोग अपन बिस्तरों में होते हैं। गलियां सड़कें सूनी होती हैं। ऐसी दशा में घूँघट पर्दे वाली महिलायें भी यदि निकल पड़ें और अपने मधुर स्वर का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लाभ जनता को देने लगें तो उन्हें संकोच करने का भी कोई कारण नहीं रहेगा और सेवा कार्य भी बन पड़ेगा। कार्तिक स्नान, वैशाख स्नान आदि का व्रत लेने वाली महिलायें प्रातःकाल जल्दी जगकर अपनी स्नान प्रक्रिया तथा कथा वार्ता दिन निकलने से पहले ही पूरी कर लेती हैं। यदि उस प्रभात फेरी को उन व्रत उद्यापनों की श्रेणी में रखा जाये तो यह सर्वथा उपयुक्त ही है। इन व्रत नियमों में केवल अपनी ही शुद्धि होती है। किन्तु प्रभातफेरी की ज्ञान-गंगा घर-घर बहाने से अनेक लोगों को आत्मिक स्नान करने का अवसर मिलता है। अपना ही नहीं इसमें दूसरों का भी कल्याण सम्मिलित है। इसलिये इसे उन व्रत स्नानों से कम नहीं अधिक महत्त्व दिया जा सकता है। इसके लिये यदि आवश्यक प्रेरणा दी जाये तो कितने ही मधुर स्वर वाले नर-नारी मिल सकते हैं और यह क्रिया कलाप हर जगह चलता रह सकता है।

इसका एक दूसरा यान्त्रिक विकल्प भी हो सकता है। ग्रामोफोन के रिकार्डों को लाउडस्पीकर के द्वारा बजाया जाना। इसके लिये एक रिकार्ड प्लेयर ग्रामोफोन तथा लाउडस्पीकर खरीदना चाहिये। लाउडस्पीकर चोंगे को किसी अधिक ऊँचे स्थान पर बाँध देना चाहिये। कई चोंगे होंगे तो कई दिशाओं में आवाज और भी अधिक दूर तक जायेगी। चोंगे जितने ऊँचे बँधे होंगे आवाज उतनी ही दूर तक पहुँचेगी और साफ सुनाई देगी। नीचे स्थानों से उच्चारित आवाज दीवारों से टकराकर कटती है और उतनी साफ सुनाई नहीं देती।

युग निर्माण मिशन से सम्बन्धित भाव भरे-मधुर स्वर में गाये गये तथा उच्चकोटि के आरकेस्ट्रा समेत ग्रामोफोन रिकार्ड मथुरा में बने हैं। अभी इनकी संख्या आठ है उनमें दोनों ओर सोलह गाने भरे हैं। फिलहाल इतनों से काम चल सकता है। तब तक दूसरे नये रिकार्ड भी बनने लगेंगे। बाजार में कुछ रिकार्ड ऐसे भी मिल सकते हैं, जो मिशन की भावनाओं से तालमेल खाते हों। इन संयन्त्रों का उपयोग करके भी प्रभात फेरी का उद्देश्य किसी हद तक पूरा किया जा सकता है। नित्य नियत समय पर लोग लगातार उच्च भाव प्रवाह का रसास्वादन करते रह सकते हैं। इस कार्यक्रम की एक विशेषता यह है कि उससे पूरे एक घण्टे लोगों को भाव-विभोर रखा जा सकता है जबकि प्रभात फेरी वाली पद्धति से विराम स्थल के समीपवर्ती लोग कुछ मिनट ही उस आनन्द का लाभ ले सकेंगे।

इस रिकार्ड संयन्त्र को सम्मेलनों में, विचार गोष्ठियों में, पर्वों पर तथा जन संकुल अन्य स्थानों पर भी प्रयुक्त किया जाता रह सकता है। विवाह शादियों में तथा अन्य व्यक्तिगत उत्सवों में इसे किराये पर भी दिया जा सकता है। दुकानदार लोग अपना विज्ञापन करने की दृष्टि से यह सैट अपनी दुकानों पर फिट कर सकते हैं। उचित अवसरों पर इसे किराये पर देने की बात भी सोची जा सकती है और उसकी आमदनी में चालू बिजली खर्च तथा नये रिकार्ड खरीदते रहने का क्रम चलाया जा सकता है। जहाँ बन पड़े वहाँ रिकार्ड संयन्त्र को भी प्रभात फेरी योजना के अन्तर्गत ही मानकर उसकी व्यवस्था बनानी चाहिये।

चित्र प्रदर्शनियों से प्रेरणाप्रद स्मृतियाँ जगायें

सजीव घटनाओं को हृदय पटल पर अंकित करने के लिये चित्रों का बड़ा योगदान रहता है, इसलिये महत्त्वपूर्ण घटनाओं का प्रभाव मनोभूमि पर गहराई तक जमाने के लिये चित्रों का उपयोग किया जाता है। तथ्यों को वाणी या लेखनी के माध्यम से ग्रहण करने के लिये ग्रहण कर्त्ता की विकसित मनोभूमि चाहिये अन्यथा वह अप्रत्यक्ष घटनाओं का स्वरूप ठीक तरह समझ न सकेगा।

बालकों की मनोभूमि अविकसित होती है। उन्हें वर्णमाला, गिनती तथा छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोजन तारतम्य समझने में कठिनाई होती है, अस्तु उन्हें हर बात चित्र के माध्यम से समझानी पड़ती है। वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर ऐसे चित्र की सहायता से मस्तिष्क में जमाना पड़ता है, जिसका प्रथम अक्षर वर्णमाला का क्रम स्मरण दिला सके। शिल्प विज्ञान, शरीर शास्त्र, भूगर्भ शास्त्र, खगोल विद्या आदि नित्या सामने न आने वाली वस्तु स्थिति को समझने के लिये सचित्र पुस्तकें छापनी पड़ती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घरों व कमरों को चित्रों से सजाने की प्रथा निरर्थक नहीं। वे चित्र ऐतिहासिक या आध्यात्मिक, देव शक्ति, महा पुरुष अथवा घटनाक्रम का स्मरण दिलाते हैं, ताकि उस स्मृति के सहारे हम अपनी मनोभूमि को सन्तोष अथवा प्रकाश दे सकें। लोग अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप भी चित्र टांगते हैं। शिकार खेलने के, विलासिता के, मारधाड़ के चित्रों में मनुष्य अपनी अन्तःप्रवृत्ति को मूर्तिमान देखकर प्रसन्नता अनुभव करता है। यदि चित्र संयोगवश नहीं टाँगे गये हैं, तो उन्हें देखते ही व्यक्ति की मनोभूमि एवं अभिरुचि के स्तर का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

देवारधन में मूर्तियों तथा चित्रों के माध्यम से ही इष्ट देव को ध्यान धारणा में प्रतिष्ठापित किया जाता है। महामानवों के स्मारक उनके चित्रों अथवा प्रतिमाओं की स्थापना करके ही बनाये जाते हैं। उन्हें देखकर उन दिवंगत विभूतियों का व्यक्तित्व आँखों के सामने उभर आता है और विस्मृति बदलकर स्मृति के रूप में सामने आ खड़ी होती है। ऐतिहासिक महान घटनाओं के चित्र जहाँ-तहाँ भवनों में, महलों में, दीवारों पर चित्रित किये जाते हैं। कागजों पर हर साल करोड़ों रुपये के चित्र छपते-बिकते हैं और उन्हें उत्साहपूर्वक टाँगा सजाया जाता है। दीवाली पर तो चित्र कलैण्डरों की धूम ही मच जाती है। इस प्रचलन पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि तथ्यों को अधिक स्पष्टता पूर्वक स्मृति पटल पर आलोकित करने के लिये चित्रों की अपनी उपयोगिता एवं महत्ता है।

युग निर्माण मिशन की विचारधारा एवं क्रिया कलाप को ठीक तरह समझने के लिये चित्रों का उपयोग किया हो जाना चाहिए। चित्र देखने का सहज आकर्षण लोगों को अपनी ओर खींचेगा और साथ ही उन्हें प्रस्तुत समस्याओं के स्वरूप तथा उनके समाधान की जानकारी भी देगा।

चित्रों द्वारा लोक शिक्षण के कितने ही माध्यम हो सकते हैं। उनमें से एक है प्रदर्शनियों की पद्धति। देखा जाता है कि किन्हीं बड़े मेलों में सरकारी प्रदर्शनी का एक कक्ष होता है। उसमें सरकारी कार्यक्रमों की, योजनाओं की सफलताओं की जानकारी चित्रों के माध्यम से दी जाती है। बड़े साइज के सुन्दर चित्र दिये जाते हैं और उनके नीचे थोड़ा विवरण लिखा भी रहता है। साथ ही एक व्यक्ति उस कक्ष में आने वाले दर्शकों को चित्रों का परिचय देते हुये तथ्यों को बताता भी जाता है। कई बार कुछ सरकारी विभाग अपने कार्यों की जानकारी जन-साधारण को देने के लिये उपयोगी बातों से जनता को अवगत कराने के लिये स्वतन्त्र रूप से विभागीय प्रदर्शनी लगाते हैं। स्वास्थ्य विभाग की प्रदर्शिनियाँ तो सर्वसाधारण को और भी अधिक रुचिकर होती हैं। परिवार-नियोजन, छूत के रोग तथा दूसरे विषय भी इन प्रदर्शनियों के माध्यम से कम समय में ही इतने प्रभावपूर्ण ढंग से समझ में आ जाते हैं, जितने पुस्तक आदि से नहीं समझे जा सकते।

इस दिशा में प्रारम्भिक कदम के रूप में युग निर्माण चित्रावली पुस्तक दो भागों में छापी गई है। उसमें ४८ तिरंगे चित्र हैं। बगल के पृष्ठ पर इनका विवरण दिया गया है। यह एक छोटा प्रयोग है, जो हाथ में लेने वाले एक व्यक्ति द्वारा ही देखा समझा जा सकता है। इन चित्रों को बड़े रूप में हाथ से किन्हीं चित्रकारों द्वारा बड़ा कराया जा सकता है उनके नीचे थोड़ा विवरण लिखा जा सकता है, और दर्शकों को आमन्त्रित करके कोई व्यक्ति उनके आशय को समझा जा सकता है। इस प्रकार यह प्रदर्शनी एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाई और लगाई जा सकती है। इसके लिये छाया मंडप की जरूरत पड़ेगी। यदि उसकी व्यवस्था न हो सके तो किसी धर्मशाला आदि की उपयुक्त इमारत का प्रयोग किया जा सकता है।

जहाँ तहाँ से बड़े साइज के नक्शे जैसे कुछ प्रेरणाप्रद चित्र छपे हैं, इन्हें ढूँढा और इकट्ठा किया जा रहा है। यह मिशन के अति महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों और आदर्शों को तो प्रस्तुत नहीं करते पर उसके सहायक विषयों पर प्रकाश अवश्य डालते हैं। इन बड़े साइज के नक्शे तथा चित्रों को भी इकट्ठा करके प्रदर्शनी की आरम्भिक आवश्यकता पूरी की जा सकती है। जिन्हें इस तरह के चित्रों की प्राप्ति के सूत्र विदित हों वे मथुरा सूचित करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेले में पुराने ढर्रे का "वाइस्कोप" अभी भी स्टाल के रूप में लगाया जाता है, जिसमें बड़ा दिखाने वाले कितने ही शीशे लगे होते हैं, पीछे उनमें चित्र रहते हैं। चित्र घुमाये जाते रहते हैं और दर्शकों को वे छोटे साइज में बने हुये चित्र बड़े दीखते हैं। इस स्तर की चीजें अपने इन्हीं युग निर्माण चित्रावली वाले चित्रों को लेकर भी बनाई जा सकती हैं।

कुछ समय पूर्व गाँवों में एक टीन के बक्से में उपर्युक्त स्टाल का छोटा रूप देखने को मिलता था। मारवाड़ के किन्हीं प्रदेशों के लोग इन्हें सिर पर रखकर गाँव-गाँव घूमते थे। एक साथ पाँच व्यक्ति उन्हें देख सकते थे। उस तरह के बक्से अभी भी बन सकते हैं और वे देहाती क्षेत्र में मनोरंजन के अतिरिक्त विचार क्रान्ति की भूमिका भी बना सकते हैं। बच्चों के लिये बने फिल्म के टुकड़ों को बड़ा दिखाने वाले खिलौने भी काम दे सकते हैं यदि उनमें दिखाने के लिए मिशन के अनुरूप फिल्मों के टुकड़े बनाये जा सकें। इन्हें घर-घर जाकर महिलाओं को, बच्चों को तथा अन्य लोगों को दिखाया जा सकता है और उनके सहारे उन्हें वह सब कुछ बताया जा सकता है जो बताया जाना आवश्यक है। कुछ दिन पूर्व कपड़े पर प्रिंट किये हुये स्वर्ग नरक के चित्र दिखाने वाले गाँव-गाँव में घूमते थे। इन्हें दिखाकर रोटी कमाते थे। वे चीजें अब घटती और समाप्त होती जाती हैं क्योंकि अब इस मँहगाई के जमाने में उन माध्यमों में उतनी आजीविका नहीं होती। उनमें दिखाई जाने वाली तस्वीरें भी मनोरंजन मात्र ही करती थीं। पर अपने सामने प्रश्न दूसरा है। हमारे लिये अपने देहाती पिछड़े हुये अशिक्षित क्षेत्र में काम करने के लिये उपर्युक्त स्तर के माध्यम भी बहुत काम के सिद्ध हो सकते हैं। चूँकि इनके द्वारा आजीविका तो कमानी नहीं है, इसलिये सम्मान घटने का भी कोई प्रश्न नहीं। इन सस्ते उपकरणों को हर शाखा आसानी से उपलब्ध भी कर सकती है और कार्यकर्त्तागण अपने समय दान को लोक शिक्षण के लिए अधिक अनुकूलता और सफलता के साथ प्रयुक्त कर सकते हैं।

प्रकाश चित्र यंत्र—एक प्रभावशाली प्रचार उपकरण

प्रकाश चित्र यन्त्र (स्लाइड प्रोजेक्टर) देहाती क्षेत्र में लोकरंजन के साथ लोक मंगल की प्रक्रिया को साथ लेकर चलने का अभी भी महत्त्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हो रहा है। यों यह अनुमान लगाया जाता है कि अब सिनेमा का प्रचलन बहुत हो गया, इसलिए अब पुराने ढ़ग के पिछड़े हुए तरीकों में लोगों की रुचि नहीं रही और वे निरर्थक हो गये।

पर यह मान्यता आंशिक रूप में ही सही है। बड़े शहरों में जहाँ सिनेमा घर मौजूद हैं—जिन्हें पैसा देकर सिनेमा देखने की सुविधा है—जिन्हें केवल मनोरंजन का उद्देश्य पूरा करना और टिकट के पैसे की भरपाई करना है, उनके लिए निस्सन्देह स्लाइड प्रोजेक्टर जैसे माध्यम पुराने हो गये और अब उनमें आकर्षण नहीं रहा। पर जहाँ उपर्युक्त तीन बातों से आगे की बात है वहाँ न केवल स्लाइड प्रोजेक्टर वरन् अन्य पुराने माध्यम भी पिछले दिनों की तरह ही आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं।

देहात में सिनेमा नहीं है। फिर हर व्यक्ति को दूर शहर में इसी काम के लिए जाने का अवकाश नहीं है। अवकाश हो तो टिकिट खरीदने का पैसा भारी पड़ता है। साथ ही घर वाले इसे दुर्व्यसन की दृष्टि से देखते हैं और सिनेमाबाज की ओर टेढ़ी निगाह करते हैं। इसलिये बार-बार जल्दी-जल्दी उसे देखने की सुविधा भी नहीं मिलती। जिसने पैसा खर्च किया है वह नई तर्ज पुरानी तर्ज के मीनमेख निकालता है। अन्यथा बिना मूल्य मनोरंजन का जैसा भी लाभ मिले उसे नापसन्द नहीं किया जा। शहरों में बड़े-बड़े सरकस आते हैं, पर रीछ बन्दर का नाच, साँप का खेल, नट-बाजीगर का तमाशा अभी भी जीवित है। उसे लोग चाव से देखते हैं। जो लोग सरकस को पसन्द करते हैं वे भी उन पुरातन मनोरंजनों को हेय नहीं मानते। कठपुतली का खेल अभी भी लोकप्रिय है। पर उन कार्यों में जितना श्रम करना पड़ता है, उसकी तुलना में लाभ कम है। इस मँहगाई के जमाने में कम परिश्रम और अधिक लाभ की बात हर किसी के मन में है। इसलिए उपर्युक्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्तर के मनोरंजक माध्यम उन्हें दिखाने वालों की उदासीनता से ही घट रहे हैं उनके प्रति जन आकर्षण अभी भी कम नहीं हुआ है।

फिर अपने प्रयोगों में तो नई विशेषताएँ हैं। एक तो वे बिलकुल बिना मूल्य हैं जब कि रीछ बन्दर, साँप, कठपुतली, नट-बाजीगर आदि का तमाशा देखने वालों को कुछ देना पड़ता है। अपने प्रदेर्शनों में ऐसी कोई बात नहीं है। उन खेलों को खड़े-खड़े या जमीन पर बैठकर देखना पड़ता है। अपने प्रदर्शनों में सम्मान पूर्वक बैठने की सुविधा होगी। साथ-साथ अपने कार्यक्रमों में विचारोत्तेजक, प्रेरणाप्रद, उपयोगी प्रशिक्षण इतना अधिक भरा रहता है कि उसका लोक मंगल पक्ष ही अत्यधिक आकर्षक और हृदयग्राही बन जाता है। विचारशील उसे ध्यानपूर्वक सुनते हैं। फिर यदि थोड़ा मनोरंजन भी उसमें जुड़ा हुआ है तो और भी अधिक पसन्द किया जाना चाहिए। अपने अब तक के अनुभवों के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सलाइड प्रोजैक्टर का माध्यम अभी बिल्कुल भी अनाकर्षक नहीं हुआ है।

इस यन्त्र द्वारा दिखाये जाने वाले सभी चित्र रंगीन होते हैं। चलते फिरते नहीं तो बड़े साइज में स्पष्ट और भावपूर्ण तो दीखते हैं। सबसे बड़ी बात है, उन चित्रों के बहाने किये जाने वाला मार्मिक लोक शिक्षण। दिखाने वालों को इस कला में पहले से ही निष्णात कर दिया जाता है। वे धारा प्रवाह रूप से लाउडस्पीकर पर ऐसी अच्छी तरह आज की परिस्थितियों का विश्लेषण और समाधान करते हैं कि सुनने वालों को अपना ज्ञान बढ़ता अनुभव होता है।

सिनेमा से स्लाइड प्रोजैक्टर की कोई प्रतिद्वन्दिता नहीं। दोनों अपने-अपने स्थान पर खड़े रह सकते हैं। पैसा खर्च करके कलात्मक फिल्में देखने की रुचि में स्लाइड प्रोजैक्टर कुछ भी बाधा नहीं पहुँचाता। देहातों की तरह उसे शहरों में भी भरपूर पसन्द किया गया है। रात्रि का समय अवकाश का होता है, उसमें घर बैठे, बिना खर्च कुछ मनोरंजन का साधन मिलता है, साथ में वह समस्याओं के हल भी प्रस्तुत करता है, जहाँ तक सम्भव है कलात्मक भी उसे बनाया गया है, ऐसी दशा में हर कोई यह चाहेगा कि डेढ़ घण्टे के विनोद उल्लास देने वाले इस निशुल्क आयोजन में अवश्य सम्मिलित रहा जाय।

युग निर्माण योजना के कार्यकर्त्ता जहाँ कहीं भी इसे लेकर गये हैं, वहीं उन्होंने देहातों, कस्बों और शहरों में समान रूप से दर्शकों का बाहुल्य पाया है। लोगों को समुचित सूचना, समय पर न मिल सके, अथवा स्थान सुविधाजनक न हो यही करण दर्शकों की कमी के हो सकते हैं अन्यथा उनके माध्यम से इकट्ठी हुई जनसंख्या तथा उस पर पड़े हुए प्रभाव की दृष्टि से यह साधन असाधारण रूप से उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

प्रचारकों को इसमें भारी सुविधा है। एक व्यक्ति अकेला ही इस कार्यक्रम के लिये पर्याप्त है जबकि अन्य सभी आयोजनों के लिये कई व्यक्तियों की मण्डली आवश्यक होती है। प्रोजैक्टर, स्लाइडें, लाउडस्पीकर तथा यदि बिजली वाला स्थान न हो तो बैटरी, इन चारों चीजों का वजन लगभग २५ सेर बैठता है। इनका कलेवर भी ऐसा है कि एक साइकिल में पहले से ही इन्हें ले जाने के खाने बनाकर हर चीजें उसमें फिट की जा सकती हैं और कहीं भी ले जाई जा सकती हैं। साइकिल पर खुद बैठकर उतना सामान लेते हुये समीपवर्ती क्षेत्रों में जा पहुँचना किसी के लिये कठिन नहीं पड़ सकता। यदि कहीं दूर प्रदेश में ले जाना हो तो रेल, बस, ताँगा आदि से इसे ले जाने में कुछ भी कठिनाई नहीं होती। वजन कई हिस्सों में बँटा रहने से उसे उतारने चढ़ाने में भी कुछ कठिनाई नहीं होती।

पूर्व सूचना जनता को मिल चुकी है तो ठीक, अन्यथा सारा सामान उतारकर एक जगह रख दिया जाये और अपनी साइकिल पर कसे हुये लाउडस्पीकर से अथवा घण्टा घड़ियाल बजाकर गली-मुहल्ले का चक्कर लगाते हुए खुद भी ऐलान किया जा सकता है। जनता को इकट्ठा करने से लेकर स्थान का निर्धारण तथा प्रदर्शन आयोजन की व्यवस्था भी स्वयं ही बना सकता है। परिचित स्थानों में भी भ्रमण करता हुआ एक व्यक्ति अपने बलबूते पर हर दिन एक आयोजन करता रह सकता है। औसत चार सौ की भी उपस्थिति होती रहे तो महीने में १२ हजार साल में करीब एक डेढ़ लाख व्यक्तियों को नव निर्माण अभियान की रूपरेखा से परिचित किया जा सकता है। प्रचारक का खाने-पीने तथा बैटरी आदि का खर्च अत्यन्त सरलतापूर्वक हर जगह से निकलता रह सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन मशीनों को लेकर यदि एक हजार कार्यकर्त्ता निकल पड़ें और वर्ष में एक-एक लाख व्यक्तियों को भी नव जागरण का सन्देश सुनायें तो १० करोड़ व्यक्तियों तक अपनी आवाज पहुँचाई जा सकती है। सबसे बड़ी सुविधा इन यन्त्रों में यह है कि भाषा सम्बन्धी अड़चन उत्पन्न नहीं होती। फिल्मों में तो एक ही भाषा सीमित होती है। दूसरी भाषा वाले उससे लाभ नहीं उठा सकते हैं। पर इनमें तो जिस स्तर की जनता हो, उसी स्तर की व्याख्या कुशल प्रदर्शक आसानी से बदल सकते हैं।

चित्रों के साथ व्याख्या का ढाँचा हर कुशल व्यक्ति स्वयं ही बिठा सकता है और दर्शकों के स्तर के अनुसार उसे बदलता भी रह सकता है। जिन्हें इसमें कुछ कठिनाई हो वे मथुरा आकर तीन महीने के प्रशिक्षण में मशीनों की साज-सँभाल से लेकर भाषण देने तथा परिस्थितियों के अनुसार व्यवस्था जुटाने की व्यवहार कुशलता का ज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं।

उपयोगिता को देखते हुये इनका खर्चा भी कुछ अधिक नहीं है। मशीन, स्लाइडें, लाउडस्पीकर, बैटरी इन चारों उपकरणों का सम्मिलित सेट लेने में लगभग १२ सौ से १३ सौ रुपये लागत पड़ती है। नई साइकिल में यह सब फिट करना हो तो ढाई तीन सौ और भी खर्चा आ सकता है इस प्रकार प्रचार गाड़ी परिपूर्ण साधन सामग्री समेत लगभग डेढ़ हजार में तैयार हो सकती है।

जन जागरण की उपयोगिता समझने वालों को यह उपकरण जुटाना ही चाहिये और स्वयं जाकर अथवा किसी दूसरे को भेजकर इस माध्यम से अपने क्षेत्र में व्यक्ति और समाज के नव निर्माण की विद्या समझानी चाहिये। इस उपयोगी कार्य के लिये इतना सरल और प्रभावी उपकरण निस्सन्देह बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसकी व्यवस्था हर जगह हर शाखा को जुटानी ही चाहिये।

पूंजी का जन-जागरण उद्योगों के लिये आह्वान

धन जहाँ संग्रहीत है वहाँ कम से कम इतना तो किया ही जाना चाहिये कि मनुष्य जाति को पतन के गर्त में धकेलने वाले कार्यों में लगाने की अपेक्षा उसे उन व्यवसायों में लगाया जाये, जिनसे उनके स्वामी को उचित लाभ भी मिलता रहे और लोक-मंगल का पथ भी प्रशस्त होता रहे।

जिनके पास पूँजी है वे कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि ऐसे कार्यों का व्यवसाय हाथ में लें, जिनसे उन्हें भले ही अवांछनीय कार्यों की तुलना में कम लाभ मिले, पर जन मानस को ऊँचा उठाने में—सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन में सहायता मिले। यदि इतना सत्साहस किया जा सके तो वह दान तो नहीं पर पूँजी का विनियोग सत्प्रवृत्तियों के विस्तार में किये जाने के कारण प्रशंसनीय अवश्य कहा जायेगा।

मानवी अधःपतन में कुविचारों को सबसे बड़ा कारण माना जा सकता है। कामुकता भड़काने वाला, अन्य विश्वासों को परिपक्व करने वाला और चोरी हत्या जैसी दुष्प्रवृत्तियों का रोचक वर्णन करके उन कुकर्मों की प्रकारान्तर से शिक्षा देने वाले साहित्य से आज बाजार पटा पड़ा है, वहीं लिखा छापा, बेचा और पढ़ा जा रहा है। इसका प्रभाव बौद्धिक और नैतिक पतन के रूप में सामने आ रहा है। उपर्युक्त तीनों वर्ग के कुकर्म तेजी के साथ बढ़ते चले जा रहे हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि सद्भावनाओं का पोषण करने वाला, उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्शवादी कर्तृत्व की विवेक विचारणा की जड़ जमाने वाला साहित्य विनिर्मित हो और वह जनता तक पहुँचे। इस कार्य में यदि पूँजी लगाई जा सके तो उच्च कोटि का सर्वांग सुन्दर और सस्ता साहित्य प्रचुर मात्रा में तैयार हो सकता है। जिस प्रकार कुत्सित साहित्य ने जन मानस को दूषित किया है उसी प्रकार यह सत्साहित्य लोक मानस में मनुष्य में देवत्व का उदय, अवतरण और अभिवर्धन करने में आशातीत सफलता प्राप्त कर सकता है। भारत की १४ मान्य भाषायें हैं। ऐसे साहित्य की सभी भाषाओं में जरूरत है। हर भाषा में करोड़ों रुपये मूल्यों की पुस्तकें इस प्रयोजन की पूर्ति के लिये छपने और बिकने की गुंजायश है। पत्र-पत्रिकायें तो हर विषय की अपेक्षित हैं। दिशा देने वाले समाचार पत्र और विचार पत्र दोनों के लिये वह क्षेत्र एक प्रकार से सूना ही पड़ा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि उदार पूँजीपति-सीमित लाभ से सन्तुष्ट हो सकें तो इस व्यवसाय की देश में बड़े पैमाने पर आरम्भ किये जाने की गुंजायश है। ईसाई मिशन ३७ अरब रुपये का साहित्य हर वर्ष हर भाषा में छापकर विश्व के कोने-कोने में पहुँचाता है। उतना सस्ता और उतने बड़े परिमाण में न सही तो भी जितनी पूँजी मिले उतना यह व्यवसाय पनप सकता है और उससे मानव जाति के उत्थान में भारी योगदान मिल सकता है।

चित्रों का क्षेत्र भी ठीक इसी प्रकार है। हर घर में चित्र टँगे होते हैं। वे शोभा ही नहीं बढ़ाते प्रेरणा भी देते हैं। सत्प्रेरणायें दे सकने वाली घटनायें-लोकमंगल के लिये त्याग बलिदान करने वाली विभूतियाँ आज चित्र प्रकाशन क्षेत्र से बहिष्कृत हैं। कल्पित देवताओं के अन्धविश्वास बढ़ाने वाले तथा नारी की शालीनता को नंगी करके एक वेश्या के रूप में चित्रित करने वाली तस्वीरें ही आज हर चित्र विक्रेता की दुकान पर मिलेंगी। हमें इस उपेक्षित पक्ष को हाथ में लेना चाहिये और ऐसे चित्र प्रकाशित करने चाहिये, जिनके आधार पर दर्शक को आदर्शवाद का अनुकरण करने की प्रेरणा मिल सके। शिक्षाप्रद आदर्श वाक्यों का प्रकाशन अपने आप में एक बड़ा उपयोगी पहलू है। इस प्रकार के उद्बोधक वाक्य यदि सुन्दर चित्रों के रूप में छपें और टँगे हों तो उनसे पढ़ने वाले के मन में एक हिलोर-झककोर अवश्य उठेगी और प्रकारान्तर से यह चित्र प्रकाशन मानवी महत्ता के उन्नयन में ही सहायक होगा।

ग्रामोफोन रिकार्ड बनाने का कार्य भी ऐसा ही उपयोगी है। आज सिनेमा के फूहड़ रिकार्ड हो उत्सवों के अवसर पर लाउडस्पीकरों की सहायता से आकाश में गूँजते हैं। बच्चे उन्हें याद करते हैं और गुनगुनाते हैं। रेड़ियो भी समय-समय पर उन्हीं को बजाता दुहराता रहता है, इनका प्रभाव होता ही है। यदि प्रेरणाप्रद रिकार्ड बजने लगें तो उनसे सोचने को, गाने को और गुन गुनाने को एक नया विषय मिल सकता है। उत्पादक अपना लाभ भी लेते रह सकता है और जनता को प्रेरणाप्रद दिशा भी मिलती रह सकती है।

फिल्म उद्योग भी इसी प्रकार का है, जिसका प्रभाव जन मानस को दिशा देने में असंदिग्ध है। अपने देश में ७ हजार से अधिक सिनेमा गृह हैं। प्रायः ३० लाख व्यक्ति प्रतिदिन सिनेमा देखते हैं। हर फिल्म दर्शकों के मन पर गहरी छाप छोड़ती है और उन्हें निर्दिष्ट दिशा में सोचने के लिये विवश करती है। सिनेमा की प्रेरणा से तरह-तरह के अपराध किये जाने की घटनायें आये दिन अखबारों में छपती रहती हैं। कच्चे दिमाग व्यभिचार और अनाचार के विधि शिक्षण इन सिनेमा विद्यालयों में आये दिन प्राप्त करते हैं और अपने विषय के पारंगत बनकर ऐसी गतिविधियाँ अपनाते हैं, जिससे नारी की पत्रिता और दाम्पत्य जीवन की मर्यादाओं का अन्त होकर ही रहे।

फिल्म उद्योग में अरबों रुपयों की पूँजी लगी हुई है। निर्माताओं को विशेष लाभ प्राप्त होता है। अभिनव कर्त्ता और गायक तक उस क्षेत्र में इतना उपार्जन करते हैं, जितना कलेक्टरों, मिनिस्टरों को तो क्या बड़े-बड़े उद्योग पति और कारखानेदारों को नसीब नहीं होता।

इस क्षेत्र में जनता पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखते हुये यदि विचारशील सम्पत्तिवान इस उद्योग में अपनी पूँजी लगायें और सत्प्रवृत्तियों के बीजारोपण का लक्ष्य रखें तो निस्सन्देह इस फिल्म उत्पादन से लोक मानस को स्वस्थ दिशा देने में भारी योगदान मिल सकता है।

फिल्म उद्योग द्वारा छोटे रूप में १६ किलोमीटर की बिना बोलती फिल्में बनाकर सस्ते में ही इस कार्य को किया जा सकता है। लाउडस्पीकर पर कमेंट्री तथा टेपरिकार्ड द्वारा गीतों की संगति बिठाकर देश की ८० प्रतिशत ग्रामीण जनता को स्वस्थ और उपयोगी मनोरंजन उपलब्ध कराया जा सकता है।

इन क्षेत्रों में कुरुचि का समावेश करने में निरत, एकाधिकारी वर्ग द्वारा—सदा यही कहा जाता रहा है कि आदर्शवादी उत्पादन की खपत नहीं है। उसमें हाथ डालने से पैसा डूब जायेगा। यह प्रचार अपना एकाधिकार बनाये रखने के उद्देश्य से अनैतिक तत्व करते हैं। जिनने जाँच के लिये कुछ प्रयोग किये हैं, उन्हें सफलता ही मिली है। असफल तो अनुभवहीनता और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अपरिपक्वता होती है। कुछ चीजें इन कारणों से असफल हुईं और दोष आदर्शवादिता के मत्थे मढ़ा गया।

ऊपर वर्णित प्रचार साधन बहुत सफल और सरल सिद्ध हो चुके हैं। जन मानस पर एकमात्र कुरुचि ही हावी नहीं है। अब सुरुचि और शालीनता का भी विकास हुआ है। हमें सुरुचि की प्यास बुझाने के लिये आवश्यक उपकरण जुटाने ही चाहिये। जुटाने ही पड़ेंगे।

पूँजी वालों को विश्वास दिलाया जाना चाहिये कि इन कार्यों में व्यवसायिक स्तर पर भी पर्याप्त लाभ उठाया जा सकता है। खपत के लिये विशाल क्षेत्र खाली पड़ा है।

औद्योगिक प्रतिभाओं को आगे आना चाहिये। सहकारी समिति, प्राईवेट लिमिटेड, सार्वजनिक लिमिटेड, कम्पनी, ट्रस्ट आदि के जो विधान उपयोगी हैं, उनमें से किन्हीं को अपना कर ऐसे अर्थ संस्थान खड़े किये जायें जिनके द्वारा प्रस्तावित उपर्युक्त चारों उद्योगों को बड़े पैमाने पर चलाया जा सके।

समझदारी से चलाने पर यह कार्य आर्थिक लाभ तथा महत्त्वपूर्ण समाज सेवा दोनों उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं। ऐसे संस्थानों के शेयर विचारशील जनता खुशी-खुशी खरीद लेगी।

धर्मतन्त्र की अनुपम शक्ति सामर्थ्य

सन् ४७ में स्वतन्त्रता प्राप्ति के दिन प्रश्न नव निर्माण का सामने आया। परिवर्तन दो क्षेत्र में होना था। एक भौतिक परिस्थिति का दूसरा चेतना क्षेत्र में मनःस्थिति का, दोनों का ही समान महत्त्व है, दोनों परस्पर पूरक हैं। इन दोनों के लिये दो स्वतन्त्र तन्त्र काम करते रहे हैं और परस्पर मिलजुल कर समान प्रगति एवं स्थिर सुख शान्ति का उत्तरदायित्व वहन करते रहे हैं। इनमें एक है राजतन्त्र जो भौतिक क्षेत्र में सुरक्षा-व्यवस्था, सम्पदा, शिक्षा, चिकित्सा जैसी जिम्मेदारियाँ संभालता है। दूसरा है धर्मतन्त्र। जिसे लोकमानस में उत्कृष्ट आदर्शवादिता का अनुपात घटने न देने के लिये कार्यरत रहना पड़ता है। चिन्तन, चरित्र, व्यवहार, प्रचलन जैसे क्षेत्र उसी को संभालने होते हैं। परिष्कार परिशोधन दोनों ही क्षेत्रों का करने की आवश्यकता स्पष्ट थी।

राजतन्त्र अपना काम अपने ढंग से सम्भाले इसके लिये कितनी ही उत्साही और सुयोग्य प्रतिभायें उस क्षेत्र में विद्यमान भी हैं और नये प्रवेश के लिये उत्सुक भी। रिक्तता धर्मतन्त्र के क्षेत्र में रही, उत्तरदायित्व बड़ा और कार्यक्षेत्र छोटा, नेतृत्व घटिया। यह चिन्ता का विषय था। अन्धकार युग की उपज, मूढ़-मान्यताओं से भरे प्रचलन, निहित स्वार्थों का आधिपत्य तो धर्मक्षेत्र को जर्जर कर ही रहा था।

कोढ़ में खाज की तरह विज्ञान द्वारा प्रतिपादित नास्तिकता और प्रत्यक्षवाद द्वारा समर्थित उपयोगितावाद का नया दौर उठा और उसने आदर्शवादी तत्वदर्शन की जड़ें हिला दीं। जब विज्ञान ने ईश्वर, आत्मा, कर्मफल, परलोक आदि का अस्तित्व ही अस्वीकार कर दिया तो फिर आदर्श कहाँ टिके ? जब मत्स्य न्याय के आधार पर "जिसकी लाठी उसकी भैंस" का सिद्धान्त ही प्रत्यक्षवाद ने सही ठहराया तो फिर नीति, धर्म, सदाचार अपनाने का प्रश्न ही कहाँ रहा ?

इन परिस्थितियों में धर्मतन्त्र का अपने सही उद्देश्य को पूरा कर सकना अत्यधिक कठिन पड़ गया। असमंजस इस बात का है यदि नैतिक और सामाजिक आदर्शवादिता न रहे तो मनुष्य की पशु-प्रवृत्तियाँ कैसे रुकें ? उसकी सामर्थ्य का सृजन-प्रयोजनों में नियोजन कैसे हो ? बढ़ती हुई सम्पदा ही सब कुछ नहीं है। राजतन्त्र द्वारा समृद्धि कितनी ही क्यों न बढ़ा ली जाये यदि भ्रष्टता और दुष्टता पर नियन्त्रण न हुआ तो उपलब्धियों का दुरुपयोग ही होगा और समृद्धि का निकृष्टता के साथ संयोग बनने पर तो दुष्प्रवृत्तियाँ पनपने से उलटा विनाश विग्रह ही खड़ा होगा।

इन परिस्थितियों में धर्मतन्त्र को सही, समर्थ एवं सक्रिय बनाने और लोक-चेतना में उत्कृष्ट, आदर्शवादिता, धर्म-धारणा का स्तर बनाये रखने की जिम्मेदारी उठाने की आवश्यकता अनुभव हुई। यही वह संकल्प और चिन्तन है, जिससे युग निर्माण का, प्रज्ञा अभियान का प्रादुर्भाव हुआ। उसकी रूपरेखा बनी और विधि व्यवस्था कार्यान्वित हुई। सन् ४७ से लेकर सन्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

६० तक के ४३ वर्षों में उस संकल्प ने सक्रिय होकर जो कार्य किया, उसे उत्साहवर्धक एवं आश्चर्यजनक ही कहा जा सकता है।

युग निर्माण योजना का कार्यक्षेत्र प्रधानतया देहाती क्षेत्र एवं अशिक्षित समुदाय है। देश की तीन-चौथाई जनसंख्या देहात में रहती है और इतनी ही संख्या अशिक्षितों की है। यही है असली भारत। शहरों, नगरों में कितनी ही संस्थायें तथा पत्र-पत्रिकायें जनजागरण का काम करती हैं। वहाँ वक्ता, उपदेशक, नेता भी मौजूद हैं और रेडियो, टेलीविजन, सभा सम्मेलन आदि माध्यमों से भी कुछ न कुछ होता रहता है। किन्तु देहाती क्षेत्र तथा अशिक्षित समुदाय का बहुत बड़ा भाग ऐसा है, जिसमें जन जागरण के प्रयास प्रयत्न, नहीं जितने ही दृष्टिगोचर होते हैं। प्रज्ञा अभियान ने प्रधानतया इसी क्षेत्र में धर्म तन्त्र से लोक शिक्षण का उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर उठाया है और उसे इस अवधि में प्राण प्रण से सम्पन्न करने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत परिस्थिति में धर्मतन्त्र के माध्यम से परिशोधन, परिष्कार का प्रयत्न इसलिये भी आवश्यक हो गया है कि देश की परम्परा, प्रवृत्ति एवं परिस्थिति में, लोक मानस की पूर्ण भूमिका में धार्मिकता का ही कुछ न कुछ तारतम्य चला आता है। राजनीति, अर्थशास्त्र, समाज विज्ञान, तत्वदर्शन आदि की ऊँची पृष्ठ भूमि सुशिक्षितों की होती है। उस आधार पर प्रगतिशीलता का समझना-समझाना उन लोगों के लिये सम्भव नहीं जिनका उपर्युक्त सन्दर्भों के साथ सीधा वास्ता नहीं रहा है। अपने देश की बहुसंख्यक जनता को यदि युगधर्म समझाना हो और परिशोधन परिष्कार की प्रगतिशीलता को गतिशील बनाया जाना हो तो फिर धर्मतन्त्र की पुरातन पृष्ठभूमि के सहारे इस प्रकार का लोक शिक्षण, सरल भी रहता है और सफलता का मार्ग भी सीधा पड़ता है।

अपने देश की समस्यायें सामाजिक क्षेत्र की हैं। पिछड़ापन इसी क्षेत्र में घुसी हुई प्रतिगामिता की देन है। आर्थिक तथा दूसरी अनेकानेक समस्यायें इसी की देन है। सर्वविदित हैं कि कुरीतियों में अपनी कितनी बार्बादी होती है। औसत गृहस्थ की प्रायः एक तिहाई आमदनी विवाह शादी, मृतक भोज आदि से सम्बन्धित अपव्ययों में गंवानी पड़ती है। फलतः निर्वाह तथा प्रगति की आवश्यकताओं में बेतरह कटौती करनी पड़ती है और तंगीगरीबी बुरी तरह छाई रहती है। यह एक प्रत्यक्ष तथ्य है कि खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं। मृतक भोज से लेकर अन्यान्य कितने ही रीति-रिवाज ऐसे हैं जो धर्म-परम्परा बन गये हैं और उन खर्चों से जन साधारण भी कमर टूटती है। शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय, निर्वाह आदि सभी आवश्यकताओं में कटौती करनी पड़ती है ऐसी दिशा में प्रगतिशीलता के लिये बनाये गये निर्धारणों का क्रियान्वयन सम्भव है ?

वर्ग भेद के कारण देश की बहुत बड़ी जन संख्या अशक्त असमर्थ बनकर रह रही है। जनसंख्या में आधे नर और आधी नारी हैं। नारियों को पर्दा प्रथा के अन्तर्गत घरों में कैद रहना पड़ता है। जिन पर यह बन्धन नहीं है वे भी अशिक्षा अनुभवहीनता के कारण परिवार के उत्कर्ष में कोई कहने लायक हाथ बँटा नहीं पातीं।

यही बात जाति-पाँति एवं ऊँच-नीच की मान्यताओं से उपेक्षित स्थिति में पड़े हुये लोगों की है। वनवासी समुदाय के करोड़ों लोग, एक प्रकार से अलग-थलग पड़ गये हैं। मध्य स्तर के हरिजन तो अब सामान्य प्रवाह में खपते जा रहे हैं पर अन्त्यजों की स्थिति अभी दयनीय है। शहरों की अपेक्षा देहाती क्षेत्र में लिंग-भेद एवं जातिभेद के कारण विषमता कहीं अधिक है। पिछड़ी स्थिति में पड़े हुये यह दोनों ही समुदाय आर्थिक, बौद्धिक आदि सभी क्षेत्रों में दुर्बल पड़ते हैं। इस दुर्बलता से सारे देश समाज की प्रगतिशीलता का कार्य अवरुद्ध होता है, यह समस्या विशुद्ध रूप से सामाजिक है। इनका समापन न हुआ तो राजनैतिक, आर्थिक आधार पर किये गये प्रगति के पक्षधर प्रयासों को जन सहयोग के अभाव में सफलता मिल नहीं सकेगी।

मूढ़-मान्यताओं, कुरीतियों की भरमार भी कम नहीं है। साठ लाख समर्थ व्यक्ति धर्म का आवरण ओढ़कर भिक्षा-व्यवसाय को आजीविका साधन बनाये हुये हैं। अपनी महत्ता उपयोगिता बताने के लिये यह समुदाय कुछ ऐसे आडम्बर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खड़े करते रहते हैं, जिसमें जनता का धन, समय, श्रम का अपव्यय होता रहे। साठ लाख का ठाट-बाट वाला निर्वाह और साथ ही उनके द्वारा खड़े किये गये आडम्बरों की खर्चीली विडम्बना इन सबको मिलाकर देश की प्रगति पर बुरा असर डालती है। भाग्यवाद, पलायनवाद जैसी प्रतिगामिता भी इसी क्षेत्र की देन है।

इन कठिनाइयों का निराकरण कैसे हो ? जो अन्ध परम्परायें पीड़ा, पतन की कुण्डली मारकर बैठी हैं वे मिटें कैसे ? इस प्रश्न का उत्तर एक ही है कि धर्मतन्त्र के सहारे कुप्रचलनों का उन्मूलन किया जाये। साथ ही उस क्षेत्र की प्रमुख विशेषता भाव संवेदना, श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा को पिछड़ेपन से मोड़कर प्रगतिशीलता के साथ सम्बद्ध किया जाय। इस प्रयास से न केवल सामाजिक, कुरीतियाँ मूढ़-मान्यतायें, अन्धविश्वासों का निराकरण हो सकेगा वरन् प्रस्तुत प्रतिगामिता में होने वाली बर्बादियों को संलग्न शक्ति को सृजन प्रयोजनों में लगा सकना भी सम्भव हो जायेगा। इससे बचत और नियोजन का दुहरा उद्देश्य पूरा होता है।

उपर्युक्त विकृतियों के अतिरिक्त और भी कितने ही ऐसे कार्य हैं, जिनकी रोकथाम होनी चाहिये। नशेबाजी एवं गन्दगी दुष्प्रवृत्तियों से अधिक व्यापक हैं। आलस्य और प्रमाद एक प्रकार से सर्व-साधारण के स्वभाव में सम्मिलित हो रहा है। बाल विवाह अनमेल विवाह जैसी कुरीतियों की भरमार है। अपराधी प्रवृत्तियाँ भी बढ़ती ही जा रही हैं। सहकारिता, सज्जनता के तत्वों को अभी बहुत अधिक उभारने की आवश्यकता है।

स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में सुधार परिवर्तनों की जिम्मेदारी धर्मतन्त्र को उठानी चाहिये। राजतन्त्र व्यवस्था ही सम्भाल सकता है लोकमानस का आदर्शवादी परिवर्तन कर सकने जितनी गहरी पहुँच उसकी है नहीं। राजतन्त्र के कन्धों पर धर्मतन्त्र का बोझ न लादा जाय और उसे उठाने के लिये उन्हीं को आगे लाया जाय जो इस सन्दर्भ में रुचि रखते हैं तथा कुछ करने में समर्थ हैं।

संक्षेप में यही है धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण की प्रक्रिया जिसे प्रज्ञा अभियान के माध्यम से गत पैंतीस वर्षों में सुनियोजित विधि व्यवस्था अपनाकर सम्पन्न किया जाता रहा है और अगले दिनों उसे और भी अधिक गतिशील बनाने का विचार है।

इस दुर्दशाग्रस्त स्थिति में भी भारत का धर्मतन्त्र असाधारण रूप से जनमानस को प्रभावित किये हुये हैं और उस परिकर में भारी जनशक्ति विचार शक्ति और धनशक्ति लगी हुई है। साठ लाख व्यक्ति धर्म के नाम पर आजीविका कमाने वालों के रूप में जनसंख्या रजिस्टरों में दर्ज है। प्रायः इतने ही लोग और भी हैं, जो आजीविका तो नहीं कमाते पर अपना बहुत सारा समय धर्म-प्रयोजनों के लिये लगाते हैं। इस प्रकार कुल जनशक्ति एक-डेढ़ करोड़ से ऊपर जा पहुँचती है। धनशक्ति को लें तो प्रायः एक लाख मन्दिर मठों में खरबों की पूँजी लगी है और हर वर्ष अरबों की राशि पूजा अर्चा के निमित्त खर्च होती है। तीर्थ यात्रा के निमित्त ही हर वर्ष अरबों-खरबों खर्च होता है। छुटपुट कर्मकाण्डों के रूप में व्यय होने वाला धन इसके अतिरिक्त है।

राजतन्त्र और धर्मतन्त्र की सामर्थ्य को समान तो नहीं कहा जा सकता पर गम्भीरता-पूर्वक देखने पर दोनों को ही इस योग्य पाया जाता है कि वे चाहें तो अपने-अपने क्षेत्र में देश को सम्पदा की दृष्टि से आगे और चेतना की दृष्टि से ऊँचा उठाने में अपनी-अपनी भूमिकायें निभा सकने जैसी क्षमता से सम्पन्न हैं। धर्मतन्त्र लगता ही दुर्बल, उपेक्षित और विकृत है। सामर्थ्य उसकी भी कम नहीं। जितनी धनशक्ति और जनशक्ति अपने देश में धर्म के निमित्त लगती है, इससे कहीं कम नियोजन में ही ईसाई मिशन ने सारे ससार में अपनी विचारणा एवं संस्कृति की जड़ें जमा दी। ईसाई धर्म मात्र २००० वर्ष पुराना है। इस अवधि में संसार की दो तिहाई जनता उसमें सम्मिलित हो चुकी। उसके लिये जितनी जनशक्ति और धनशक्ति उनने नियोजित की है उसकी तुलना में अपने धर्म में प्रायः कई गुना जनशक्ति और धनशक्ति संलग्न है। उद्देश्यरहित अपव्यय ही इस बर्बादी का कारण है कि इतना कुछ होते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुये भी हम अपने देश की सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक स्थिति सुधार सकने तक में समर्थ न हो सके। हिन्दुओं की संख्या घटते-घटते समस्त संसार में प्रायः पैंतीस करोड़ जितनी नगण्य रह गई। वृद्धि का नहीं घटने का ही क्रम चल रहा है।

४३ वर्ष पूर्व यह आवश्यकता अनुभव हुई थी कि अन्धकार युग की विकृतियों का निराकरण और अभीष्ट प्रगति परिष्कार का क्रियान्वयन करने के लिय धर्मतन्त्र को नये सिरे से सुधारा, संजोया और सृजन प्रयोजनों में निरत किया जाय। यह उसी प्रयास की परिणति है कि युग निर्माण योजना की उपलब्धियाँ जन-जन के लिये आशा केन्द्र बनकर रह रही हैं। प्रयत्न यह भी किया गया था कि प्रस्तुत धर्मनेताओं, संत महन्तों को इस प्रयोजन के लिये कुछ बदलने करने के लिये सहमत किया जाये। पर जब अनेक बार मूर्धन्यों के दरवाजे खटखटाने पर भी राई-रत्ती उत्साह न दीखा तो यही एक मात्र मार्ग दिखा कि प्रगतिशील धर्मतन्त्र का एक नया आधार खड़ा किया जाये। वही हुआ है। छोटा-सा संकल्प निर्धारण एवं एकाकी प्रयास में किया जाने वाला कार्यान्वयन आज विशालकाय वट वृक्ष की तरह अपने सुदृढ़ अस्तित्व का परिचय दे रहा है।

शासन का उत्तरदायित्व भौतिक क्षेत्र की समृद्धि, सुरक्षा एवं व्यवस्था सम्भालना है। धर्म मनुष्य की भावना, आकांक्षा, मान्यता, विचारणा के क्षेत्र को प्रभावित करता है। चिन्तन में उत्कृष्टता और चरित्र में आदर्शवादिता का समुचित समावेश रखना धर्म धारणा का कार्यक्षेत्र है। नीति, धर्म, सदाचार, संयम, सद्व्यवहार, पुण्य परमार्थ जैसी सत्प्रवृत्तियों को अक्षुण्य एवं प्रखर बनाये रहना धर्म के प्रभाव क्षेत्र में आता है। इनके अभाव में व्यक्ति पतन और पराभव के गर्त में गिरता है। निकृष्टता के मार्ग पर चलता और अपना तथा समीपवर्तियों का सर्वनाश करता है। अस्तु दूरदर्शी सदा से यह कहते और मानते रहे हैं कि मानव गरिमा का स्तर बनाये रहने के लिये धर्म का अवलम्बन अपनाया जाना चाहिये उसके निर्धारण और अनुशासन को श्रद्धापूर्वक अपनाया जाना चाहिये।

आज की कठिनाई यह है कि धर्म का स्वरूप अस्त-व्यस्त हो चला। उसमें, भ्रान्तियाँ, विकृतियाँ, प्रतिगामितायें तथा निहित स्वार्थों की आपाधापी का बेतरह समावेश हो गया। यह भावना क्षेत्र की अराजकता है। इसे सुधारने संजोने का प्रयत्न न किया गया तो मनुष्य को असीम कठिनाई उठानी पड़ेगी। उठानी पड़ रही है।

आवश्यकता इस बात की है कि धर्म के वास्तविक स्वरूप को उसके सनातन स्वरूप में जन-जन के सम्मुख प्रस्तुत किया जाय और उसकी दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन की क्षमता का समुचित सदुपयोग किया जाये। धर्म के प्रति जो श्रद्धा जमी चली आ रही है उसे उन सृजन प्रयोजनों के लिये नियोजित किया जाये। उपयोगिता को श्रद्धा उत्पन्न करती है। धर्म की उपयोगिता और क्षमता सिद्ध करने के लिये प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत उसी भाव शक्ति को लोक शिक्षण में लोक निर्माण में नियोजित किया जा रहा है।

उत्कृष्टता की स्थापना हेतु ऋषि परम्परा का पुनर्जीवन

शरीर संरचना की दृष्टि से मानव प्राणी अन्य जीवधारियों में से कितनों से ही पिछड़ा हुआ है। कितनी ही ऐसी विशेषतायें क्षुद्र जीवों में पाई जाती हैं, जिनके सौभाग्य से आदमी को वंचित ही रहना पड़ता है। प्रकृति प्रकोपों को अन्य प्राणी जितना सह सकता है, उतना मनुष्य के लिये शक्य नहीं। उसे परिधान पहनने और आच्छादन ढूँढ़ने की अनिवार्य आवश्यकता पड़ती है, जबकि जीवधारियों में से असंख्यों को इसके बिना ही काम चलाते देखा जा सकता है। बुद्धिमत्ता की विशेषता ने ही उसे सुविधा-साधनों से भरा-पूरा प्रगतिशील और प्राणी जगत की मुकुटमणि बनाया है। बुद्धिमत्ता उसकी स्व-उपार्जित है। आदर्शवादी सद्भावनाओं का ईश्वर प्रदत्त अनुदान ही उसे सहकारी उदार जीवन जीने की प्रेरणा देता रहा है और उसी आधार पर उसने क्रमिक विकास के मार्ग पर अग्रसर होते हुये बुद्धिमत्ता पाई है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवी मौलिक विशिष्टता को अन्तरंग जीवन में उत्कृष्टता और बहिरंग क्षेत्र में शालीनता कहते हैं। इन्हीं दोनों को संस्कृति एवं सभ्यता के नामों से जाना जाता है। पुरातन भाषा में उत्कृष्ट चिन्तन का, संस्कृति को, अध्यात्म एवं उदार सहकारिता को, सद्व्यवहार का धर्म कहते हैं। वैसे इन दोनों को तत्वज्ञान, नीतिशास्त्र, ब्रह्म विद्या, धर्म धारणा आदि नाम भी दिये जाते रहे हैं। यदि इस सत्प्रवृत्ति का अभाव रहा होता तो मनुष्य प्राणी अपनी दुर्बल शारीरिक संरचना के कारण प्रकृति संघर्ष में कब का हार गया होता। जब महागज, महासरीसृप, महाव्याघ्र, जैसे विशालकाय प्राणी अपने अस्तित्व की रक्षा न कर सके और प्रागैतिहासिक काल की गाथा बनकर रह गये तो निश्चय ही मनुष्य की दुर्बल काया कब की इस धरती से तिरोहित हो गई होती। बुद्धिमत्ता ने ही उसे जीवित और प्रगतिशील रखा है। इस तथ्य को वन्य क्षेत्र में रहने वाले पशु परम्परा अपनाये हुये मनुष्य की पिछड़ी स्थिति का देखते हुये आज भी जाना जा सकता है। सदाशयता ही वह विशेषता है जिसने चिन्तन और चरित्र को ऊँचा उठाने और प्रगति के उच्च शिखर पर जा पहुँचने के वरदान उपलब्ध कराये हैं।

उत्कृष्टता का पक्षधर तत्वदर्शन और नीति निर्धारण ही अध्यात्म है। इसी को भौतिक व्यवस्था के सन्दर्भ में राजतन्त्र और आत्मिक निर्धारण के सम्बन्ध में धर्मतन्त्र कहा गया है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इनमें से एक भी ऐसा नहीं है, जिसे दुर्बल होने दिया जाये। राजतन्त्र लड़खड़ाने लगे तो अराजकता फैलेगी और व्यवस्था तथा प्रगति का ढांचा लड़खड़ा जायेगा। इसी प्रकार धर्मतन्त्र पर अस्त-व्यस्तता छाई तो संयम, अनुशासन एवं सद्व्यवहार की रीति-नीति को जीवन्त न रखा जायेगा। मत्स्य न्याय का प्रचलन मानव समाज में चल पड़ा तो बुद्धिवादी आक्रामकता अन्ततः जादवी कलह उत्पन्न करेगी और परस्पर लड़कर समाप्त हो जाने की स्थिति बनेगी। न सुरक्षा दृष्टिगोचर होगी न निश्चिन्तता। चिन्तित और शंकाशील—कातर आर आतंकित मनुष्य निर्वाह के साधन तक न जुटा सका तो बेमौत मारा जायेगा। राजतन्त्र और धर्मतन्त्र ही वे आधार हैं जो भौतिक एवं आत्मिक क्षेत्रों की सुव्यवस्था बनाये रहते हैं।

मध्यकालीन अन्धकार युग में भ्रान्तियों एवं विकृतियों ने सभी क्षेत्रों में प्रवेश किया, उससे राजतन्त्र और धर्मतन्त्र जैसी व्यवस्थायें भी बेतरह लड़खड़ाईं। राजतन्त्र के क्षेत्र में सामन्तवाद, पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, अधिनायकवाद जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ घुसीं और उस व्यवस्था को निहित स्वार्थों का—आपाधापी का—क्षेत्र बनाकर रख दिया। जनसाधारण ने उस कुचक्र में फंसकर सुरक्षा के स्थान पर त्रास ही पाया। धर्मतन्त्र की भी ऐसी ही दुर्गति हुई। उस क्षेत्र के अनुयायी मात्र भ्रम जंजालों में अपनी श्रद्धा एवं श्रम सम्पदा का अपव्यय करते रहते हैं। इसके विपरीत धर्मजीवी पुरोहितों को सम्मान एवं वैभव अर्जित करने का लाभ बिना किसी त्याग पुरुषार्थ के ही मिलता रहता है। प्रस्तुत परिस्थितियों को देखने से लगता है धर्म की आत्मा रुष्ट होकर कहीं अन्यत्र चली गई और अपना निष्प्राण कलेवर सड़न और दुर्गन्ध फैलाते रहने के लिये पड़ा छोड़ गई है।

नव जागरण की इस प्रभात बेला में आवश्यक परिवर्तन और उपयोगी निर्धारण हो रहा है। सभी क्षेत्र उससे प्रभावित हुये हैं। राजतन्त्र को अधिक शुद्ध और प्रखर बनाने के लिये उस क्षेत्र के शूरवीर अपने-अपने ढंग से प्रयास कर रहे हैं। जागरूकता और गतिशीलता—संघर्ष ओर कर्मठता जहाँ भी रहती है, वहाँ देर-सवेर में औचित्य तक पहुँचने का साधन बन जाता है। उस दृष्टि से राजतन्त्र का भविष्य आशाजनक है। असमंजस धर्मतन्त्र के सम्बन्ध में है, क्योंकि उस क्षेत्र में जागरूकता, कर्मनिष्ठा और प्रगतिशीलता की तीन आवश्यकताओं में से एक भी पूरी नहीं हो रही है। उस क्षेत्र की प्रतिभायें अपने निहित स्वार्थों से बेतरह चिपकी हुई हैं। न कहीं मार्टिन लूथर दिखते हैं न दयानन्द। गुरु गोविन्दसिंह और समर्थ रामदास जैसे सच्चे धर्म रक्षकों का अनुकरण भी कोई नहीं कर रहा है। ऋषि परम्परा की तो चर्चा ही क्या की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाये ? सन्त और सुधारकों की पीढ़ी भी धीरे-धीरे बबरशेरों की तरह घटती-बिलुप्त होती चली जा रही है। राजतन्त्र में पीड़ित प्रजाजनों ने स्थान-स्थान पर समय-समय पर विद्रोह किये और अन्धकार पाये, पर धर्मतन्त्र के समूचे क्षेत्र में कहीं वैसी हलचल भी दिखाई नहीं पड़ती। सर्वत्र श्मशान जैसी निस्तब्धता छाई हुई है। चमत्कार देखने और मनोकामना पूरी कराने की विडम्बना ही साधना सिद्धि का कलेवर ओढ़े जहाँ-तहाँ दिखाई पड़ती है। कर्मकाण्डों के खर्चीले ढकोसले भी धनीमानी लोगों को आगे करके जब तब खड़े किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त वैसा कुछ नहीं दीखता जिसमें धर्म को, आत्मा को जीवन्त स्थिति में देखा, जाना जा सके।

निकृष्टता अपनाने पर व्यक्तित्वों का स्तर गया-गुजरा हो जाता है। प्रतिभायें जब भ्रष्टता और दुष्टता अपनाने पर उतारू होती हैं तो प्रगति का प्रवाह रुकता है और सन्तुलन लड़खड़ाता है। संक्षेप में विश्व-व्यवस्था में अवरोध उत्पन्न होने का कारण धर्मतन्त्र का लड़खड़ाना ही प्रमुख है। राजतन्त्र के उत्थान-पतन पर भी उसी का प्रभाव पड़ता है। कोई समय था जब 'यथा राजा तथा प्रजा' की उक्ति सही थी। अब जनतन्त्र का प्रचलन होने पर 'यथा प्रजा तथा राजा' की नई स्थापना हुई है। अब वोटर ही शासन सत्ता किसे सौंपी जाये इसका निर्णय करते हैं। ऐसी दशा में मतदाता का जागरूक, दूरदर्शी और आदर्शों के प्रति निष्ठावान् होना आवश्यक है। यह कार्य विशुद्ध रूप से धर्मतन्त्र का है।

राजतन्त्र भौतिक क्षेत्र की व्यवस्थायें बना सकता है, पर उसकी प्रकृति कूटनीति प्रधान दमन नियन्त्रण पर निर्भर होने के कारण आस्थाओं का निर्माण करने जैसी जटिल प्रक्रिया को सम्भाल सकने में समर्थ नहीं रहती है। शिक्षा एवं प्रचार जैसे कार्य तो सरकार या संपन्न लोगों द्वारा हो सकते हैं, पर अन्तःकरण की गहराई तक पहुँचकर व्यक्ति को उदात्त एवं उदार बना सकना उसके बस की बात नहीं है। आस्था क्षेत्र को प्रभावित कर सकना धर्मतन्त्र की ही परिधि में आता है। अस्तु उसे सर्वोपरि महत्त्व मिलने की बात हर दृष्टि से उचित एवं उपयुक्त है।

प्रस्तुत परिस्थिति को बदलने के लिये आवश्यक हो गया है कि नीतिमत्ता के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने का काम नये सिरे आरम्भ किया जाये। इसे धर्मतन्त्र का पुनर्जीवन, कायाकल्प या नव निर्धारण भी कह सकते हैं। पुरातन का जीर्णोद्धार तो होना ही चाहिये। समय की आवश्यकता को देखते हुये उसमें नये तत्वों का समावेश भी अनिवार्य हो गया है। वैज्ञानिक, बौद्धिक और आर्थिक प्रगति की इन शताब्दियों में प्रगति की दिशा धारा अत्यन्त तीव्र हुई है। उसने नई आवश्यकतायें और समस्यायें उत्पन्न की हैं। भौतिक क्षेत्र में ही नहीं आत्मिक क्षेत्र में भी। अब बिजली और द्रुतगामी वाहनों के बिना काम चल सकना कठिन है। दो शताब्दी पूर्व इनके बिना काम चल जाता था, पर अब तो ये अन्न-वस्त्र की तरह आवश्यक हो चले हैं। उसी प्रकार चिन्तन और व्यवहार में भी भारी उथल-पुथल हुई है और उनने व्यक्ति तथा समाज को आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित किया है। इन नई उपलब्धियों को धर्मतन्त्र में भी जगह मिलनी चाहिये। गोदान, तीर्थ-स्थान, कथा प्रवचन एवं धर्मानुष्ठानों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। उसमें पीड़ा और पतन का निवारण कर सकने वाले अनेक तथ्यों का समावेश करना होगा। कुरीतियों का उन्मूलन भी अब परमार्थ में ही माना जायेगा। शिक्षा प्रसार और वृक्षारोपण जैसे कार्य भी अब धर्म क्षेत्र का ही आश्रय पाना चाहेंगे। ज्ञान-यज्ञ की जो परिधि पुरातन काल में थी, अब उसका दायरा कहीं अधिक विस्तृत करने की आवश्यकता पड़ेगी। धर्म क्षेत्र न केवलपरिशोधन चाहता है वरन् उसमें बहुत कुछ परिवर्तन भी चाहिये। समय की दौड़ कहाँ से कहाँ पहुँच गई आस्थाओं को प्रभावित करने वाली प्रक्रिया को भी समय को पहचानना और तदनुरूप तालमेल बिठाना पड़ेगा।

धर्मतन्त्र को जीवन्त एवं प्रखर बनाने वाले तीन आधार रहे हैं—(१) गतिविधियों का सूत्र संचालन करने के लिये भवन, देवालय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(२) निर्धारित प्रयोजनों को व्यापक बनाने के लिये जन सहयोग, सन्त ब्राह्मण, वानप्रस्थ आदि लोकसेवियों का समुदाय (३) कार्यकर्ताओं के निर्वाह तथा क्रियाकलापों को अग्रगामी बनाने के लिये 'अर्थ साधन। इन्हीं तीन आधारों पर कोई समर्थ तन्त्र खड़ा रह सकता है। शासन को भी अपने अगणित उत्तरदायित्वों की पूर्ति का सूत्र संचालन इमारतों के आश्रय में ही करना पड़ता है। बड़े कारखाने अथवा छोटे निवास गृह सर्वप्रथम स्थान माँगते हैं। धर्म को यदि देवालयों की आवश्यकता पड़ती है तो यह सर्वथा उचित ही है। जन-समुदाय के सहारे ही शासन व्यवस्था चलती है। कारखाने, छावनी, कला-कौशल, विद्यालय आदि में जनशक्ति का ही बोलबाला है। धर्म में यदि सन्त, ब्राह्मण, वानप्रस्थ जैसे पूरा समय देने वाले तथा धर्मप्रेमी, भक्तजनों के रूप में छुटपुट श्रम साधना प्रस्तुत करते रहने वालों का एक बड़ा वर्ग कार्य संलग्न रहता है ता उसे कर्म कौशल ही कहा जायेगा। सरकार टैक्स लगाती है। कारखाने मुनाफे लेते हैं। संस्थायें शेयर बेचतीं या चन्दा वसूल करती हैं। धर्म में दान दक्षिणा के माध्यम से श्रद्धाभक्ति, स्वेच्छा, सहयोग उपलब्ध करने का मार्ग निकाला है, तो उसे औचित्य के अन्तर्गत ही लिया जायेगा। तन्त्र चाहे शासकीय हो, आर्थिक हो, बौद्धिक, कलापरायण या धर्म धारणा से सम्बन्धित हो, हर हालत में इन तीनों साधनों को जुटाने की व्यवस्था अनिवार्य रूप से करनी ही पड़ेगी। इन दिनों धर्म को प्रगतिशील बनाने और नव सृजन में समुचित योगदान के लिये समर्थ बनाने में भी इन तीन साधनों का नये सिरे से सरंजाम जुटाना पड़ेगा।

अच्छा होता कि धर्म के सुविस्तृत ढाँचे को ही परिवर्तित कर दिया गया होता और उसके हाथ में जो प्रचुर साधन हैं, उनका उपयोग सामयिक आवश्यकता की पूर्ति में सम्भव हो सका होता। पर यह कार्य वर्तमान परिस्थितियों में लगभग असम्भव जैसा है। निहित स्वार्थों का शिकंजा इतना कसा हुआ है कि इसमें से साधनों को छुटकारा दिला सकना कठिन है। इसमें धर्म व्यवसायियों की समर्थता नहीं, वरन् सम्बन्धित जन-समुदाय की भावनात्मक दुर्बलता भी बहुत बड़ा निमित्त कारण है। जनतन्त्र की ढोलपोल में बड़े सुधारों के लिये कड़े कदम उठ सकने सम्भव नहीं। इसमें भौतिक अधिकारों की—जनमत की—बात आगे आती है और कितनी ही कुरीतियों को भी सहन करना पड़ता है। वर्तमान धर्म विडम्बना का अभीष्ट परिवर्तन इन परिस्थितियों में उतना नहीं हो सकता जितना तत्काल आवश्यक है। सुधार क्रम मन्थर गति से चलाया जाय तो इसमें सैकड़ों वर्षों का समय लगेगा। आर्य समाज जैसी सुधारक संस्थायें एक शताब्दी का लम्बा समय बीत जाने पर भी उतना कुछ कर नहीं सकी हैं जितनी कि अपेक्षा थी।

ऐसी दशा में एकमात्र उपाय यही रह जाता है कि युगधर्म का निर्वाह कर सकने के लिये उपयुक्त ढाँचे का धर्मतन्त्र खड़ा किया जाय। प्राचीनकाल में भी समय-समय पर इसी प्रकार सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति की गई है। भगवान बुद्ध, समर्थ गुरु रामदास, गुरु गोविन्दसिंह, सन्त कबीर, दयानन्द, महात्मा गाँधी आदि के प्रयासों को इसी श्रेणी में गिना जा सकता है। उनने अपने अपने ढंग से ऐसे तन्त्र खड़े किये थे जिनमें भवन, जनसहयोग एवं अर्थ साधनों की आवश्यकता जुटाई गई थी और भावनात्मक उत्कर्ष का कार्य आगे बढ़ाया गया था। पुरातन को सुधारने का लम्बा रास्ता उनमें से किसी को भी सफल होता नहीं दीखा। फलतः उनने अपने ढंग से अपना ढाँचा खड़ा करके कार्य आरम्भ कर दिया। इन प्रयत्नों की शानदार परम्परा और सराहनीय सामयिक उपलब्धि रही है। यह बात दूसरी है कि पीछे उन प्रयासों में विकृतियाँ घुस पड़ीं। यह भी नियति की विडम्बना है कि कालान्तर में हर वस्तु जराजीर्ण हो जाती है उसकी प्रखरता घटती और कुरूपता बढ़ती है। काया की भी ऐसी ही दुर्गति होती है। नवयौवन और जराजीर्ण कार्यों के बीच जमीन-आसमान जैसा अन्तर दीखता है और पतन पराभव पर निराशा होती है। इतने पर भी सृष्टा की यह व्यवस्था उत्साहवर्धक है कि अनुपयोगी होते ही दूसरी समर्थ शक्तियाँ उसे पदच्युत कराने में नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चूकतीं। जराजीर्ण काया को मौत आ दबोचती है और अनुपयुक्त संस्थानों की मरम्मत न बन पड़ने पर उसे तोड़कर नया ढांचा खड़ा करने के लिये जागरूकता सदा तत्पर रहती है।

समय की माँग है कि संव्याप्त विकृतियों से जूझने और उनके स्थान पर शालीनता की स्थापना का प्रबल प्रयत्न किया जाये। कहना न होगा कि इस आवश्यकता की पूर्ति चिन्तन और चरित्र को प्रभावित, परिष्कृत कर सकने में समर्थ प्राणवान धर्मतन्त्र के सहारे ही सम्भव हो सकती है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये युगधर्म का वह ढाँचा खड़ा करने की आवश्यकता है, जो शाश्वत सिद्धान्तों का परिपूर्ण पालन करते हुये—विकृतियों से जुझने और सत्प्रवृत्ति संवर्धन हेतु कटिबद्ध, समर्थ एवं सफल हो सके। समर्थ धर्मतन्त्र ही सशक्त और प्राणवान लोकमत का मूल आधार है। 'मानव में देवत्व का उदय' और 'धरती पर स्वर्ग का अवतरण' जैसी उपलब्धियाँ चिन्तन और चरित्र में उत्कृष्टता का समावेश किये बिना सम्भव नहीं। यह कार्य धर्मतन्त्र का तत्वदर्शन एवं प्रचलन प्रवाह ही सम्पन्न कर सकता है।

जनमानस का परिष्कार धर्मतन्त्र के मंच से

चौरासी लाख योनियों के बाद मनुष्य जन्म मिलने और उसका सदुपयोग करके जीवन-लक्ष्य प्राप्त करने का अवसर अतिशय सौभाग्य माना जाना चाहिये। इस सन्दर्भ में प्रमाद करने पर फिर चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है। इस शास्त्र प्रतिपादन को ध्यान में रखने पर भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि मानव जीवन एक अद्‌भुत उपलब्धि है और उसका उपयोग परमार्थ प्रयोजनों में ही होना चाहिये। पेट प्रजनन जसे पशुकर्मों में उनका न्यूनतम भाग ही लगाना चाहिये।

उपर्युक्त सभी दृष्टिकोणों से लोकमंगल के लिये बढ़-चढ़ कर अनुदान प्रस्तुत करना मनुष्य का परम पवित्र कर्त्तव्य ठहरता है। पूजा पत्री के कर्मकाण्डों की टन्ट-घन्ट में मन को इस प्रकार बहकाना उचित नहीं कि नाम रट से पार कट जायें और ईश्वर मिल जाये। यह सर्वथा निस्सार विडम्बना है। जीवन लक्ष्य की पूर्ति और ईश्वर प्राप्ति जैसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के लिये मनुष्य को विश्व मानव की सेवा साधना में उच्चतम भावनाओं और प्रबल पराक्रम भरी चेष्टाओं के साथ संलग्न होना पड़ता है। इस राजमार्ग को छोड़कर और किसी पगडण्डी से जीवनोद्देश्य की पूर्ति हो नहीं सकती।

वानप्रस्थ जीवन इसी परमार्थ प्रयोजन की पूर्ति के लिये नियत निर्धारित है। उत्तरार्ध आयु को लोकमंगल के लिये समर्पित करके उन महान उत्तरदायित्वों को पूरा किया जा सकता है जो सामाजिक ऋण से उऋण होने के लिये—ईश्वर प्रदत्त बहुमूल्य अनुदान का सही उपयोग करने के लिये और चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के उपरान्त मिले अलभ्य अवसर का सदुपयोग करने की दृष्टि से नितान्त आवश्यक है। यह प्रयोजन लोकमंगल में ही प्रवृत्त होने से सम्भव हो सकता है। विश्व मानव की सेवा साधना से बढ़कर ईश्वर की भक्ति पूजा और नर जन्म की सार्थकता का और कोई मार्ग है भी नहीं। सच पूछा जाये तो ज्ञान साधना और योग साधना की उपयोगिता भी इसी दृष्टि से है कि इन उपायों से परिष्कृत किये गये व्यक्तित्व द्वारा अधिक उच्चस्तरीय सेवा साधना सम्भव हो सके अधिक उच्चकोटि का आत्मिक आनन्द प्राप्त किया जा सके।

स्पष्ट है कि वानप्रस्थपरक परमार्थ जीवन में प्रवेश करने वालों को जहाँ ज्ञान साधना और योग साधना द्वारा आत्मबल सम्पादन करना है, वहाँ लोकमंगल के लिये अपनी विभूतियों को समर्पित करते हुये विश्व मानव को अधिकाधिक श्रेष्ठ समुन्नत बनाने में निरत निमग्न भी रहना है। जिन्हें सेवा धर्म पर आस्था न हो मात्र जप तप और निवृत्तिपरक एकान्त सेवन अथवा सुख चैन के बिना झंझट भरे दिन काटने हों, उन्हें इस क्षेत्र में प्रवेश नहीं करना चाहिये। वह स्थिति मरण काल के निकट आ जाने पर थके हारे और अशक्त असमर्थ लोगों के लिये ही उपयुक्त हो सकती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है। इसे वैराग्य निवृत्ति संन्यास आदि अन्य किसी नाम से भले ही पुकारा जाय—पर तेजस्वी वानप्रस्थ के साथ तो नहीं ही जोड़ा जा सकता।

मनुष्य को जहाँ समाज प्रदत्त अगणित सुख सुविधायें उपलब्ध हैं। वहाँ उसे इस उत्तरदायित्व से भी लाद दिया गया है कि वह सामाजिक उत्कर्ष के लिये बढ़-चढ़ कर अनुदान प्रस्तुत करें और लोकसेवा की दृष्टि से इतना कुछ कर दिखावें, जिससे उस पर चढ़ा हुआ भारी ऋण किसी न किसी प्रकार चुकता अथवा हलका हो सके। जो इस उत्तरदायित्व की उपेक्षा करता है वह समाज द्रोही कहा जा सकता है।

अध्यात्म के दार्शनिक दृष्टिकोण के आधार पर देखा जाये तो मनुष्य को जो कुछ विशेषतायें अन्य प्राणियों से अधिक दी हैं, वे विशुद्ध रूप से एक अमानत हैं। परमात्मा के सभी प्राणी समान रूप से पुत्र और प्रिय हैं। सब को समान अनुदान देना उसके लिये सामान्य न्याय था। पर मनुष्य को सबसे अधिक विभूतियाँ मिली हैं, उन्हें मौज मजा करने के लिये दिया गया पक्षपात पूर्ण उपहार नहीं माना जाना चाहिये वरन् ऐसी पवित्र अमानत माना जाना चाहिये जिसका उपयोग विश्व वसुधा को समुन्नत और सुविकसित बनाने में ही किया जाना चाहिये। ईश्वर ने मनुष्य को अपने वरिष्ठ सहकारी के रूप में इसीलिये सृजा है कि विश्व व्यवस्था में उसकी अति महत्त्वपूर्ण भूमिका एवं उपयोगिता सम्भव हो सके।

वानप्रस्थ को लोकसेवा के जिस क्षेत्र को हाथ में लेना पड़ता है वह जनमानस का भावनात्मक परिष्कार ही है। स्पष्ट है कि संसार की समस्त समस्यायें मानवीय चिन्तन की विकृतियों ने ही उत्पन्न की हैं। उनका समाधान आज या हजार वर्ष बाद जब भी होगा, लोकप्रवृत्तियों के अधोगामी प्रवाह को उलटकर ऊर्ध्वगामी बनाने से ही सम्भव होगा। भौतिक सम्पदायें एवं सुविधायें चाहे कितनी ही क्यों न बढ़ाली जायँ यदि दृष्टिकोण में विकृतियाँ भरी होंगी तो बढ़ी हुई सम्पदा-विनाश सर्वनाश के सरंजाम में ही बढ़ोत्तरी करेगी—सर्वनाश का दिन ही निकट लावेगी। इसलिये धन-वैभव की भौतिक सुख सुविधाओं की अभिवृद्धि का कार्य दूसरे लोगों पर छोड़कर वानप्रस्थ को एक ही अछूता काम हाथ में लेना चाहिये कि उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्तृत्त्व के लिये आवश्यक वातावरण एवं उत्साह किस प्रकार उत्पन्न किया जाये। ज्ञान, यज्ञ एवं विचार क्रान्ति इसी प्रक्रिया को कहा जा सकता है यह नींव यदि ठीक तरह भर ली जाये तो नव युग निर्माण का भवन खड़ा करने की आधी समस्या सुलझ जायेगी। तब अनायास ही अगणित रचनात्मक एवं संघर्षात्मक क्रियाकलाप उठ खड़े होंगे आर अधर्म के उन्मूलन एवं धर्म के संस्थापन का ईश्वरीय प्रयोजन सहज ही पूरा करेंगे।

लोकशक्ति की प्रचण्डता और प्रखरता का हमें अनुभव करना होगा और संघबल उत्पन्न करके उसे सृजनात्मक प्रयोजनों में संलग्न करना होगा। यह कार्य इतना महान् और इतना समर्थ है, जिसकी तुलना अपराजेय महादैत्य से ही की जा सकती है। जनशक्ति का देव दानव जिस मोर्चे पर भी डट जायेगा उसे जीतकर ही छोड़ेगा। उसके सामने बड़ी से बड़ी शक्ति को भी झख मारनी पड़ती है।

दुर्गा अवतरण की कथा प्रसिद्ध है। असुरों के मुकाबिले जब देव हारने लगे तब प्रजापति ने देवताओं को एकत्रित करके उनकी शक्ति का एक-एक अंश इकट्ठा किया उस संचय से दुर्गा विनिर्मित कर दी। दुर्गा ने अपने प्रचण्ड पराक्रम से देखते-देखते शुम्भ, निशुम्भ, महिषासुर, मधुकैटभ जैसे दुर्दान्त दैत्यों का उन्मूलन करके रख दिया। इस प्रकार देवताओं का संकट दूर हुआ। ठीक इसी प्रकार की त्रेता कालीन कथा वह है, जिसमें असुरों से संत्रस्त ऋषियों ने अपना रक्त एकत्रित-करके एक घड़े में बन्द किया और जमीन में गाड़ दिया। राजा जनक का हल उस घड़े से टकराया और उसमें से सीता नामक बालिका निकली। विख्यात है कि सीता के कारण ही लंका काण्ड प्रस्तुत हुआ और असुरों का समग्र निराकरण सम्भव हो गया। यह कथायें संघ शक्ति की प्रचण्डता का रहस्योद्घाटन करती हैं और बताती हैं कि बड़े से बड़े संकट-विग्रह संघशक्ति के सामने धराशायी होकर रहते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतिहास के पृष्ठ इस तथ्य के प्रतिपादन से रंगे पड़े हैं। रीछ वानरों द्वारा समुद्र का पुल बाँधना और प्रतापी दानवों का परास्त किया जाना वस्तुतः जन-शक्ति की ही विजय है। ग्वाल-बालों की लाठी का सहारा लेकर कृष्ण ने उँगली पर गोवर्धन पर्वत उठाया था। भगवान बुद्ध के ढाई लाख शिष्य समस्त विश्व में प्रव्रज्या के लिये निकले थे और व्यापक हिंसा पर विजय प्राप्त करके धरती के कौने-कौने में अहिंसा धर्म की प्रतिष्ठापना की थी। गान्धी की सत्याग्रही सेना ने प्रतापी अंग्रेजी सल्तनत की पाताल तक गहरी जमी हुई जड़ों को उखाड़ कर किस चमत्कारी ढंग से फेंका इसका विवरण विश्व विख्यात है। फ्रांस की—रूस की—चीन की—अमेरिका की आयरलैण्ड की—इटली की राज्य क्रान्तियों के इतिहास जिनने पढ़े हैं, उन्हें भली प्रकार विदित है कि साधन सम्पन्न सरकारें किस प्रकार जनशक्ति की टक्कर के सामने बालू के महल की तरह धराशायी हो गईं। तब से लेकर अब तक न जाने कितने ताज तख्तों को संगठित जनता ने गेंद की तरह उछालकर कूड़े-करकट के ढेर में फेंक दिया है। भारत के राजाधिराजों की कैसी दुर्गति हुई यह देखकर कोई भी यह अनुमान लगा सकता है कि भगवान के बाद दूसरी समर्थ सत्ता के रूप में जनशक्ति की ही गणना की जा सकती है। अन्य पार्टियों के मुकाबिले में कांग्रेस के हाथों शासन सोंपने का श्रेय जनमत को ही है। यदि वह चाहे तो उसे गद्दी उसे उतारकर किसी को भी बिठा सकता है।

यह तो राजनीति एवं शासन सत्ता के सन्दर्भ में जनशक्ति की चर्चा हुई। वानप्रस्थी परमार्थ जीवन की दिशा राजनीति नहीं समाज संरचना है। बौद्धिक एवं भावनात्मक उत्कर्ष है। सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन एवं सर्वतोमुखी विकृतियों का उन्मूलन अपना लक्ष्य है। इस प्रयोजन के लिये भी जन शक्ति को ही उभारने, सुधारने और दिशा देने की आवश्यकता पड़ेगी। युग निर्माण जैसे महान प्रयोजन की अगणित आवश्यकताओं की पूर्ति लोकशक्ति को साथ लिये बिना और किसी प्रकार हो ही नहीं सकती। इसलिये वानप्रस्थी सेवा साधना में जन सम्पर्क बढ़ाना—जीवन्त एवं भावनाशील व्यक्तित्वों को ढूँढ़ना—उन्हें दिशा देना, साथ लेना और नवनिर्माण में संलग्न कर देना यही है समय क्रिया पद्धति जिसमें लोक मंगल के समस्त आधारों को सन्निहित समझा जा सकता है।

धर्म के प्रति जन आस्था की जो थोड़ी सी संलग्नता है उसका चमत्कार आँखों के सामने है। कुछ समय पूर्व इस देश में ५६ लाख धर्म व्यवसायी थे। नई जनगणना के अनुसार वह संख्या ८० लाख हो गई। जनगणना में जिन्होंने धर्म को व्यवसाय काष्टक में नहीं लिखाया है, जिनकी आधी चौथाई आजीविका इसी क्षेत्र से चलती है, उनकी संख्या भी इससे कम नहीं हो सकती। इस प्रकार पूरे अधूरे धर्म व्यवसायी लोगों की संख्या डेढ़ करोड़ तक जा पहुँचती है। जनता किसी दबाव या जबरदस्ती से नहीं वरन् स्वेच्छा और प्रसन्नता पूर्वक इनका व्यय भार वहन करती है, जो सहज ही न्यूनतम पाँच करोड़ रुपया प्रतिदिन जा पहुँचता होगा। पाँच करोड़ प्रतिदिन अर्थात् वर्ष में १८०० करोड़—१८० अरब। कितनी बड़ी धनराशि है यह। यह तो धर्म क्षेत्र में संलग्न मनुष्यों का निर्वाह व्यय हुआ। इसके अतिरिक्त लगभग १ लाख मन्दिरों का खर्च, तीर्थ यात्राओं में होने वाली विपुल धन राशि भी कम से कम इतनी तो होगी ही। इस प्रकार वह राशि ३६० करोड़ अरब वार्षिक हो जाती है। सोमवती अमावस्या पर गंगा जमुना इन दो नदियों के स्नान को ही लें, उनके उद्गम से लेकर विलय स्थान तक कम से कम एक करोड़ व्यक्ति तो अवश्य ही उस पर्व पर स्नान करने जाते होंगे। एक व्यक्ति के ऊपर मार्ग व्यय काम का हर्ज, भोजन, दान पुण्य आदि का खर्च बीस रुपया भी जोड़ा जाये तो एक करोड़ व्यक्तियों पर बीस रुपये के हिसाब से २० करोड़ रुपया होता है। ऐसी-ऐसी चार पाँच सोमवती अमावास्यायें वर्ष में पड़ती हैं, उनका खर्च १ अरब तक जा पहुँचता है। इसके अतिरिक्त कथा, कीर्तन, यज्ञ, समारोह, भोज-भण्डारे आदि का हिसाब तैयार किया जाय तो वह राशि भी न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचेगी। इस प्रकार देखने पर उपेक्षित जैसा लगने वाला धर्म क्षेत्र ही इतनी धन सम्पत्ति खर्च करा लेता है श्रम और समय लगा लेता है, जितना कि तरह-तरह के दबाव डालने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाली सुसंगठित सरकार भी लगा नहीं पाती। सरकारी टैक्स लोग कुडकुड़ाते हुये देते हैं पर धर्म टैक्सों को स्वेच्छा से देते हैं और पास में न होने पर कर्जा उधार करके भी लगाते हैं।

यहाँ धर्म के नाम पर लगने वाले धन और श्रम का समर्थन खण्डन नहीं किया जा रहा है सिर्फ यह बताया जा रहा है कि लोक रुचि की एक लहर कितने प्रचुर साधन बात की बात में प्रस्तुत कर सकती है। तमाखू, चाय और सिनेमा जैसे व्यसनों में जितना पैसा और श्रम लगता है, उसकी नापतौल भी धर्म एवं शासन पर पड़ने वाले खर्च के ही समतुल्य आँकी जा सकती है। यह लोक रुचि की प्रतिक्रिया का परिचय मात्र है। यदि इसी लोक रुचि को अभिनव सृजन की दिशा में मोड़ा जा सके तो जो कार्य असम्भव दीखते हैं—साधनों के अभाव में जिन कार्यों का हो सकना कठिन लगता है, वे चुटकी बजाते प्रस्तुत हो सकते हैं और अनहोनी-होनी बनकर सामने आ सकती है।

ऊपर की पंक्तियों में जन शक्ति के महादैत्य की क्षमता का थोड़ा-सा आभास कराया गया है। उसे जगाया, संगठित किया जाना और सृजन के महान् लक्ष्य में नियोजित किया जाना, कठिन दीखता अवश्य है पर वैसा है नहीं। पचास करोड़ की आबादी वाले देश में एक लाख सुयोग्य और भावनाशील वानप्रस्थी का मिल जाना न तो कठिन है और न असम्भव। ८० लाख धर्म व्यवसायी जिस देश में उद्भिज घास-पात की तरह उग पड़ें, वहाँ युग उद्बोधन पर एक लाख वानप्रस्थ न निकलें यह नहीं हो सकता। बुद्ध को ढाई लाख तपस्वी शिष्य मिले थे और गाँधी को भी सत्याग्रह आन्दोलन में लगभग इतने ही कर्म वीर मिल गये। देश-धर्म और समाज संस्कृति के पुनरुत्थान की बात यदि विचारशील वर्ग के गले उतारी जा सके तो एक लाख वानप्रस्थों के लिये की गई युग पुकार उपेक्षित न रहेगी। सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिये यदि समुचित उत्साह पैदा किया जा सके तो सृजन सेना का नेतृत्व करने के लिये इतने वानप्रस्थ सहज ही अग्रिम पंक्ति में खड़े दिखाई देंगे।

इन वानप्रस्थों का एक ही काम होगा जन जागरण, लोक शक्ति का गठन, जन मानस का परिष्कार, भावनाशील लोगों का चयन और उन्हें लोकमंगल के लिये प्रवृत्त होने का प्रोत्साहन-मार्गदर्शन। यह एक काम ही इतना बड़ा है जिससे सम्बन्धित विविध क्रिया-कलापों में वानप्रस्थ वर्ग को निरन्तर लगा रहना पड़ेगा। यह कार्य जिस सीमा तक पूरा होने लगेगा, उसी अनुपात में अगणित रचनात्मक और संघात्मक क्रिया कलाप पनपते दिखाई देंगे और समाज की विभिन्न समस्याओं को स्थानीय उपाय उपचारों के आधार पर हल करने में निरत होंगे।

कहना न होगा कि यह समस्त क्रिया-कलाप धर्म धारणा पर ही आधारित होना चाहिये। भावना स्तर का स्पर्श कर सकना धर्म और अध्यात्म दर्शन के लिये ही सम्भव है। राजनीति समाज संगठन, अर्थनीति आदि आधार भी पुनरुत्थान के हो सकते हैं पर भारत जैसे अस्सी प्रतिशत अशिक्षितों और घोर देहातों में रहने वाले लोगों के लिये वे आधार उतने हृदयग्राही न हो सकेंगे जितना धर्म का आधार। भारत की वर्तमान परिस्थितियों में नवनिर्माण के समग्र अभियान की सफलता धर्म आस्था का अवलम्बन लेकर ही प्राप्त की जा सकती है यों मानव तत्व में उत्कृष्टता की स्थापना का प्रयोजन अन्ततः परिष्कृत धर्म धारणा के आधार पर ही सम्भव हो सकता है।

धर्म तन्त्र को प्रगतिशील बनने दिया जाय

अपने देश में राजनीति से भी बड़ा महत्त्व धर्म का है। इस देश की ८० फीसदी जनता अशिक्षित है और गाँवों में रहती है। उसके विचार स्तर में यदि कोई तथ्य अवस्थित है तो वह है धर्म की तथाकथित अभिरुचि। समाज, विज्ञान, नागरिकता, देश भक्ति, अन्तर्राष्ट्रीयता, कूटनीति, सहकारिता, नीतिशास्त्र, कानून तर्क आदि की तो उन्हें जानकारी नहीं। मस्तिष्क की पहुँच दैनिक जीवन की अनिवार्य समस्याओं से आगे बढ़कर केवल धर्म तक है। जब कभी महत्त्वपूर्ण चर्चा चलती है, विचार-विनिमय शंका-समाधान तथा ऊहापोह होता है तो उसका विषय धर्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घर से बाहर कभी भ्रमण को जाना हो तो तीर्थ-यात्रा। धन का सदुपयोग करना हो तो ब्राह्मण, साधुओं, देव-मन्दिरों में दान-पुण्य। समय को शुभ कार्य में लगाना हो तो कथा-कीर्तन। मनोरंजक आयोजनों में रामलीला, कृष्णलीला धार्मिक मेलों, सोमवती दर्शन, झाँकी आदि की गणना होती है। तात्पर्य यह है कि रोजी-रोटी के अतिरिक्त इस ८० फीसदी जनता की उत्कट आकांक्षायें यदि कभी उठें तो वे धर्म तक ही सीमित रहेंगी।

राजनीति को समझ सकना उन शिक्षित लोगों का कार्य है, जो रोज अखबार पढ़ते हैं अथवा उसके सम्पर्क में रहते हैं। सामान्य जनता उतनी ही परिचित हो पाती है जितना कि टैक्स-कन्ट्रोल आदि का सीधा प्रभाव उस पर पड़ता है। अन्य पहलुओं से वह प्रायः अपरिचित ही रहती है पर धर्म के बारे में यह बात नहीं है। उसकी कथायें प्रथायें तथ बारीकियाँ स्त्री-बच्चों तक को मालूम रहती हैं। यही कारण है कि अपना धर्म कलेवर बहुत भारी और मंहगा होते हुये भी जनता द्वारा खुशी-खुशी वहन किया जा रहा है।

कहना यह है कि इस देश की जनता में कोई उत्कृष्टता, महत्ता, हलचलें एवं परिवर्तन करना हो तो उसके लिये धर्म मंच ही सबसे प्रभावशाली माध्यम हो सकता है। जो समझाना हो धर्म के साथ-साथ उसका सम्बन्ध जोड़ते हुये समझाया जा सके तो उसमें आशाजनक सफलता मिल सकती है। गाँधीजी इस देश की नब्ज देखने और जनता की मनःस्थिति को समझने में बहुत ही कुशल थे। उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम को धार्मिक आन्दोलन के रूप में चलाया। स्वयं मिस्टर गाँधी न रहकर महात्मा गाँधी के रूप में सामने आये, वैसा ही वेश कलेवर उनने धारण किया। सत्य-अहिंसा के प्राथमिक धर्म सिद्धान्त को आधार बनाया। सामाजिक धर्म-राज्य के लिये धर्म युद्ध छेड़ा। गौ-माता के उद्धार का आश्वासन दिया। 'रघुपति राघव राजाराम' की कीर्तन ध्वनि लेकर चले और भारत माता की जय बोली। यह प्रक्रिया भारतीय धार्मिकता से जुड़ती है। अतएव उनका सत्याग्रह आन्दोलन शिक्षित अशिक्षित सभी में लोकप्रिय बना और अन्ततः उन्हें सफलता मिलकर ही रही। उन दिनों अन्य प्रमुख राजनेता भी उसी प्रक्रिया को न्यूनाधिक रूप से अपने-अपने ढंग से अपनाते थे। अपने स्वतन्त्रता संग्राम की सफलता का यह एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य तथा आधार न अपनाया गया होता तो मार्ग काफी लम्बा पड़ता और बहुत कीमत चुकाने पर थोड़ी सफलता की आशा बँधती।

स्थिति अभी भी वही है। राजनैतिक स्वतन्त्रता के बाद अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य करने हैं। सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन, नैतिक आचार व्यवहार का समाधान, शिक्षा में अभिरुचि, सहयोग भावना, शुभ का सम्मान, स्वतन्त्र चिन्तन, सदाचार, आहार-व्यवहार की शुद्धि, संघबद्धता अनुशासन आदि कितनी ही अभिनव प्रवृत्तियों को जन्म देना है। हजार वर्ष की गुलामी के बाद हमारा मानसिक धरातल इतना विपन्न हो गया है कि उसके हर पहलू में भारी परिवर्तन की आवश्यकता है। राष्ट्र का नये सिरे से निर्माण करना होगा यदि जन-मानस में उत्कृष्टता और आदर्शवादिता के तत्वों का समावेश न हुआ तो आजीविका, शिक्षा, चिकित्सा आदि की सुविधायें बढ़ते चलने पर भी केवल विपत्तियों, विग्रह एवं अपराधों की ही वृद्धि होगी।

इस नव-निर्माण का आधार भारत की वर्तमान स्थिति धर्म ही हो सकता है। उसीसे जोड़कर हम आवश्यक विचार परिवर्तन एवं सत्प्रवृत्तियाँ का अभिवर्धन कर सकते हैं। शहरी और सुशिक्षित जनता में भी धर्म को यदि विवेकपूर्ण और बुद्धिसंगत ढंग से प्रस्तुत किया जा सके तो वहाँ भी उसे अभीष्ट सम्मान और उचित स्थान मिल सकता है। अस्तु, राष्ट्र की अभिनव रचना में विश्वास रखने वाले हर विचारशील के कर्त्तव्य हैं कि राजनीति में जहाँ पहले से ही बहुत घुसपैठ और धक्का-मुक्की है वहाँ प्रवेश करने की अपेक्षा धर्मतन्त्र का अवलम्बन लेकर व्यक्ति के उत्कर्ष एवं समाज के लिये आगे आयें। यह मार्ग यदि प्रबुद्ध प्रतिभाशाली व्यक्ति अपना सकें तो सुधार कार्यों में आशाजनक सफलता मिल सकती है और राष्ट्र के सर्वांगीण नव-निर्माण का प्रयोजन आश्चर्यजनक गति से सम्पन्न हो सकता है।

भारतीय जनता की धर्म-श्रद्धा का आज इतना शोषण और दुरुपयोग हो रहा है किसी भी विचारशील को भारी दुःख हुये बिना नहीं रह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकता। जन-गणना के अनुसार देश के ५६ लाख व्यक्ति साधु-महात्मा और धर्मजीवी का कलेवर ओढ़कर भिक्षावृत्ति करते हैं और तरह-तरह के भ्रम, अन्धविश्वास फैलाते हैं। गरीब जनता इनके निर्वाह का भारी व्यय वहन करती है। यदि यह ५६ लाख जनशक्ति लोक-मंगल में लगाई जा सके तो जिन १ लाख पादरियों ने थोड़े ही दिनों में विश्व की एक तिहाई—एक अरब जनता को ईसाई बना लिया, उनकी तुलना में हम ५६ गुना काम अधिक कर सकते हैं। भारत के ७ लाख गाँवों में वह ५६ लाख सेवारत हो जायें तो हर गाँव के पीछे ८ लोकसेवी होंगे। इससे वहाँ की शिक्षा-सदाचार, स्वास्थ्य, स्वच्छता, मूढ़ता, कुप्रथा आदि समस्याओं को देखते-देखते हल किया जा सकता है।

कराड़ों व्यक्ति धर्म के नाम पर ढेरों पैसा, समय और ढेरों श्रम खर्च करते हैं। यदि उनका विवेक सम्मत और योजनाबद्ध उपयोग होने लगे तो उनसे सरकारी विकास योजनाओं की अपेक्षा सौ गुना अधिक कार्य स्वेच्छापूर्वक हो सकता है। हर सोमवती अमावस्या पर गंगा स्नान करने प्रायः ५० लाख व्यक्ति के समय तथा खर्च करने का औसत लगाया जाये तो १० करोड़ रुपया होता है। ऐसी प्रायः ४-५ सोमवती हर साल पड़ती हैं। उनमें प्रायः ५० करोड़ रुपया गया। यदि यह पैसा गंगा में पड़ने वाले गन्दे नाले, कृषि कार्य के लिये मोड़ देने में लगाया जा सके तो एक साल में ही गंगा माता की स्वच्छता और सिंचाई से करोड़ों की आमदनी बढ़ सकती है। ऐसा निर्माणात्मक नेतृत्व यदि धर्मतन्त्र का विवेक वालों ने किया होता तो देश की स्थिति न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गई होती।

मन्दिर मठों में प्रायः ८०० अरब की चल सम्पत्ति लगी है। हर साल उनकी आय प्रायः ३० अरब रुपया है। जनता जितना सरकारी टैक्स देती है, उससे कहीं अधिक यह स्वेच्छा अनुदान है। यदि यह पैसा रचनात्मक प्रवृत्तियों की ओर मोड़ा जा सके तो उससे काया-कल्प जैसा परिवर्तन प्रस्तुत हो सकता है। कथा सत्संगों के नाम पर जा कूड़ा-करकट, जनता के दिमाग में भरा जाता है उसके स्थान पर यदि सच्चे धर्म तत्व, अध्यात्म, नीति सदाचार कर्त्तव्यपरायणता और सामाजिकता का प्रशिक्षण बन पड़े तो सोया हुआ भारतवर्ष एकाकी जग सकता है और आत्मनिर्माण ही नहीं विश्वभर का नेतृत्व करने में समर्थ हो सकता है।

आज धर्मतन्त्र प्रायः प्रतिक्रियावादी, प्रतिगामी और जनमानस को भ्रम-जंजाल में घसीटने वाले पाखण्डियों के हाथ में है। वे धर्म के नाम पर जनता का बुरी तरह शोषण करते हैं और बदले में उन्हें मूढ़ता के जाल-जंजाल में फँसाते रहते हैं। इस परिस्थिति को बदला जाना चाहिये। इसके लिये आलोचना करने या कुड़कुड़ाते रहने से काम नहीं चलेगा। हमें आगे बढ़कर इस अति महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में प्रवेश करना होगा और जनता को उचित नेतृत्व देकर उस प्रचण्ड जन-शक्ति, श्रद्धा एवं सम्पदा को उपयोगिता की दिशा में प्रस्तुत करना होगा। राजनीति में सुधार के प्रयत्न किये जा रहे हैं सो ठीक है। पर इससे अधिक ध्यान दिये जाने योग्य 'धर्म-नीति' है। विवेक का, दूरदर्शिता का यही तकाजा है कि प्रबुद्ध व्यक्ति धर्मतन्त्र स्वयं सम्भालें और प्रतिगामिता को दानशीलता में बदल दें।

धर्मानुष्ठानों के क्रियाकृत्य उद्देश्य पूर्ण रहें

क्रियापरक शिक्षण तो स्कूल ढंग से भी चल सकता है किन्तु आस्थाओं के परिवर्तन एवं प्रतिष्ठापन के सन्दर्भ में जो शिक्षण किया जाना है उसमें भावना, वातावरण, कृत्य, मन्त्र, अनुबन्ध, साक्षी आदि कितने ही तथ्यों का समावेश करना पड़ता है। विवाह में पाणिग्रहण मुख्य है। गाड़ी में चढ़ते समय भी कोई लड़का किसी लड़की का हाथ पकड़कर सहारा दे सकता है। पर इतने भर से विवाह कहाँ हो जाता है। रास्ते चलते विवाह शादी की बात आपस में कर लेने भर से वह अनुबन्ध कहाँ बँधता है, जिसके बलबूते दोनों एक-दूसरे के साथ जीवन भर बँधे रहने की बात को पत्थर की लकीर मानें और हर परिस्थिति में उसे निबाहें। यह विवाह के समय होने वाले क्रिया-कृत्य का ही परिणाम है, जिसमें दो जीवन एक-दूसरे के साथ गुँथते देखे जाते हैं। इस स्तर का प्रशिक्षण अनुबन्ध निर्धारित कर्मकाण्ड के बिना हो नहीं सकता। इसमें दैवी शक्तियों की साक्षी का विश्वास भी जुड़ा रहता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्मकाण्डों की—धर्मानुष्ठानों की—चिर परम्परा का प्राचीन काल में जितना महत्त्व था, अब भी वैसा ही है। आस्थाओं का परिष्कार परिवर्तन लोक-मानस में आदर्शवादी प्रतिष्ठापनाओं की इन दिनों अत्यधिक आवश्यकता है। इसके लिये वाणी-लेखनी के दृश्य-श्रव्य स्तर के—स्वाध्याय-सत्संग के—जहाँ अनेक प्रयोग अपनाये जाने चाहिये, वहाँ धर्मानुष्ठानों को भी कम महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिये। विचार से अगली भूमिका विश्वास की है। अन्तरात्मा के परिवर्तन में विश्वासों की ही प्रधान-भूमिका रहती ह। अस्तु, धर्मतन्त्र से लोक-शिक्षण का आधार अपनाया गया है। साथ ही उस प्रयोजन के लिये कर्मकाण्डों धर्मानुष्ठानों को भी साथ में जुड़ा रखा गया है। अन्तराल में उच्चस्तरीय उभार लाने के लिये भावना, वातावरण, कृत्य मन्त्र, अनुबन्ध, साक्षी आदि से समन्वित कर्मकाण्डों के माध्यम से अचेतन को उच्चस्तरीय प्रयोजन के लिये ढालना एक सुनिश्चित, चिरपरिचित एवं सफल प्रयोग है।

व्यक्तिनिर्माण के लिये जप-तप व्रत, ध्यान-धारणा जैसी तपश्चर्या योग-साधना आवश्यक है। परिवार निर्माण के लिये षोडश संस्कारों का प्रचलन अत्यधिक प्रभावोत्पादक है। जन्म-दिवसोत्सव और विवाह दिवसोत्सव भी अब इसी शृंखला में जोड़े गये हैं। समाज निर्माण के लिय पर्वत्यौहारों का सामूहिक रूप से मनाये जाने की प्रक्रियां में असाधारण प्रभावोत्पादक शक्ति है। लोक मानस के परिष्कार की नव सृजन प्रक्रिया में उपर्युक्त तीनों प्रयाजनों के लिये तीनों प्रकार के धर्मानुष्ठानों को नये सिरे से गतिमान किया गया है। आत्मोकर्ष के लिये प्रज्ञायोग के अन्तर्गत घरेलू पूजा-पाठ एवं कल्प-साधना जैसे उपक्रम अपनाये जा रहे हैं। षोडश संस्कार प्रज्ञा-परिजनों के घरों में उत्साहपूर्वक चल रहे हैं और परिवार निर्माण का लक्ष्य पूरा करने में बहुत ही सफल-सार्थक सिद्ध हो रहे हैं। पर्वों में बसन्त-पंचमी गायत्री जयन्ती, गुरु पूर्णिमा, श्रावणी दोनों नव-रात्रियों को प्रमुखता देते हुये धर्मतन्त्र से लोक-शिक्षण की जिस परिपाटी को नये सिरे से उभारा गया है, उससे समाज-निर्माण की प्रक्रिया को अग्रगामी बनाने में भावनास्तर का भारी योगदान मिल रहा है।

इन सभी कर्मकाण्डों का उद्देश्य एवं प्रयोग हम सभी का जानना चाहिये। उनके पूर्व तैयारी सज्जा, वस्तुओं का एकत्रीकरण, योजकों की पवित्रता, परिधान, वातावरण, मन्त्रोच्चार विधि-विधान न केवल जानकारी की दृष्टि से वरन् उपयोग की दृष्टि से अभ्यस्त होना चाहिये। यह लोक शिक्षण का अति महत्त्वपूर्ण अंग है। इसे अन्धविश्वास न कहा जाये। अन्तराल को अचेतन को उत्कृष्टता की दिशा में प्रशिक्षित करने का यह प्रयोग लेखनी-वाणी के माध्यम से किये जाने वाले प्रयत्नों की तुलना में कम नहीं अधिक ही सफल सार्थक सिद्ध होता है।

कर्मकाण्डों का मेरुदण्ड गायत्री-यज्ञ है। उसके बिना छोटे-बड़े क्रिया-कृत्यों में से एक भी सम्पन्न नहीं हो सकता। अधिक विधि-विधान मालूम न हो, तो इस अकेले कृत्य से काम चल सकता है। इसलिये यज्ञ विधि को हम सभी ठीक प्रकार जानें। न केवल जानें वरन् उस कराने की प्रक्रिया से भी भली प्रकार अभ्यस्त हों। इसके लिए गायत्री यज्ञ विधि पुस्तिका का सहारा लेना अनिवार्य रूप से आवश्यक है। उसमें सभी विधि-विधान क्रम-बद्ध रूप से लिखे हुये हैं। हर अजनवी को कृत्य साँगोपांग विधि से समझ सकना न किसी पुस्तक से सम्भव है और न किसी पत्रक द्वारा ही समझाया जा सकता है। इसके लिये पुस्तक हाथ में लेकर जहाँ यज्ञ हो रहा हो, वहाँ बैठना चाहिये और पुस्तक तथा प्रत्यक्ष कृत्य की संगति किस प्रकार बैठ रही है इसे देखते चलना चाहिये। दूसरों के साथ-साथ मन्त्रोच्चार भी करना चाहिये यज्ञ में कई पारी होती हैं, उनमें से एक में स्वयं भी आहुति देने के लिये सम्मिलित होना चाहिये। इस प्रकार कई दिन उसे देखा और किया जाता रहे तो विधान सम्बन्धी जानकारी मिल जाती है। करने या कराने से ही अभ्यास होता है। इसलिये वैसा अवसर उपलब्ध करने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभी को संस्कृत नहीं आती, इसलिये मन्त्रों के उच्चारण में अशुद्धियाँ रह सकती हैं। इसका उपाय एक ही है कि किसी संस्कृतज्ञ के सामने बैठकर पुस्तक में पढ़कर अपना उच्चारण सुनाना चाहिये और जहाँ अशुद्धि होती है, उसे विशेष रूप से नोट करके बारम्बार दुहरा कर सही कर लेना चाहिये। यों यह कार्य पुस्तक का एक-एक अक्षर देखते हुये उच्चस्वर से लय बद्ध उच्चारण करते हुये स्वयं भी ठीक किया जा सकता है। अक्षरों पर सावधानी के साथ ध्यान न रखकर उतावली में कुछ भी बोलने लगने से जीभ पर अशुद्ध उच्चारण चढ़ जाता है। अपनी गलती आप सुधारना सम्भव न हो तो दूसरे जानकारों से सहायता लेनी ही चाहिये। अशुद्ध उच्चारण से निन्दा—उपहास का भाजन बनना पड़ता है।

हवन कृत्य में पूजा-उपचार की अनेक छोटी-छोटी वस्तुयें प्रयुक्त होती हैं। कई उपकरण काम में आते हैं। इन सब की सूची यज्ञ विधान पुस्तक में छपी है। एक दिन चलते हवन पर सब ओर दृष्टि दौड़ाकर यह सूची स्वयं भी तैयार की जा सकती है। कार्य आरम्भ होने से पूर्व सभी उपकरण एवं पदार्थ एकत्रित कर लेने चाहिये ताकि उसके अभाव में बीच-बीच में पुकार न मचती रहे और काम न रुकता रहे। समिधा, सामग्री की, जल आदि सभी को आरम्भ में ही भली प्रकार देख लेना चाहिये। उनमें कृमि-कीटक, बीट आदि की अशुद्धि कहीं भी नहीं रहनी चाहिये। समिधायें सूखी तथा इस साइज की चिरी हुई हों कि न कुण्ड से बाहर निकलें और न बहुत छोटी होने के कारण किसी कोने में छिपी रहें। यज्ञस्थल भली प्रकार स्वच्छ हो। धुलाई, लिपाई, पुताई आदि से उसकी पवित्रता, शोभा बनाकर रखी जाये। कुण्ड के आस-पास चौक पूरने का आच्छादन, पल्लव, तोरण, झण्डियाँ लगाने का प्रचलन इसीलिये है कि दृश्य शोभायमान, आकर्षक एवं श्रद्धा उत्पन्न करने वाला हो। लापरवाही से जहाँ-तहाँ अस्वच्छता अव्यवस्था बना दी जाये तो उससे कुरुचि उत्पन्न होगी और व्यवस्थापकों की सतर्कता पर उँगली उठेगी जिस केन्द्र पर अनेकों श्रद्धालुओं की श्रद्धा-भावना केन्द्रित है उसे जितना सुन्दर, सुसज्जित बनाया जा सकना सम्भव हो सके, उपलब्ध साधनों के अनुसार उसमें कमी न रहने देनी चाहिये। कलश, गायत्री माता का चित्र आदि। पूजा वेदी पर सबका ध्यान जाता है, अस्तु उसकी शोभा सज्जा का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिये।

अग्निहोत्र में प्रायः सभी उपचार अग्नि के माध्यम से सम्पन्न होते हैं। अग्नि का स्वभाव है कि यदि उसे ईंधन मिले तो कहीं भी फैल सकती है और कुछ भी जला सकती है। इसलिये श्रद्धा ही नहीं सतर्कता भी पूरी तरह अपनाई जाय। कुण्ड या वेदी पर समिधायें गीली हों, मोटी हों, छोटी या बड़ी हों तो अग्नि धुआँ देने लगेगी—बुझ जायेगी या लौ इतनी ऊँची उठने लगेगी कि समीपवर्ती लोगों के कपड़े, मण्डप का आच्छादन आदि जलने लगे। यज्ञशाला में लाइलोन (पोलिस्टर) के कपड़े पहनकर किसी को भी प्रवेश नहीं करने देना चाहिये। उनमें एक चिनगारी किसी प्रकार जा पड़े तो पेट्रोल भड़क उठने जैसी विभीषिका दृष्टिगोचर होगी। न केवल कुण्ड की सतर्कता आवश्यक है वरन् आरती तथा पूजा दीपक, अगरबत्ती आदि पर भी पूरा ध्यान रखने की आवश्यकता है पूजा की चौकी पर दीपक रखते समय उसके नीचे तश्तरी लगा दी जाये, अन्यथा बिछा हुआ कपड़ा चिकनाई से बर्बाद हो जायेगा। आरती करने या लोगों को देने में जल्दीबाजी, असावधानी, धकापेल हो तो उतने से भी अग्निकाण्ड हो सकता है। यहाँ तक कि अगरबत्ती टूटन यदि गरम हो ता चौकी पर रखी ज्वलनशील वस्तुयें आग पकड़ सकती हैं और उपस्थित लोगों के मनों में असमंजस उत्पन्न कर सकती है। अग्निहोत्र में भावभरा यजन करने के साथ-साथ उपर्युक्त प्रकार की सतर्कता बरतने स्वच्छता सुसज्जा के लिये भी कम से कम एक व्यक्ति की नियुक्ति जिम्मेदारी रहनी चाहिये। मात्र आहुतियों की संख्या ही सब कुछ नहीं उसके साथ-साथ सुरुचि एवं सुसज्जा की कलाकारिता भी जुड़ी रहती है।

यज्ञ में सम्मिलित होने वाले भारतीय पोशाक पहनें, सभी शरीर वस्त्र से स्वच्छ हों, पैर धोकर यज्ञाशाला में प्रवेश करें। बच्चे गोदी में न हों। अविकसित, अनगढ़, अशिक्षित यज्ञ में न बैठें। जो न सही मन्त्र बोल पाते और न यज्ञीय अनुशासन समझने पालने में समर्थ होते हैं। इसलिये यजन में जाति-भेद तो न बरता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाये पर इतनी सतर्कता तो रहे ही कि अनगढ़ लोगों की घुसपैठ से श्रद्धा एवं व्यवस्था अस्तव्यस्त न होने लगे। बैठने वाले पंक्तिबद्ध बैठें, साथ-साथ मन्त्र बोलें, साथ-साथ आहुति डालें। यह क्रम पहले से ही समझा दिया जाये ताकि समस्वरता, एकरूपता, सतर्कता ठीक प्रकार बनी रहे। पहले से ही पूरी बात न बताई जाये, तो अनजान याज्ञक सहज ही चित्र-विचित्र भूलें करते दिखाई पड़ेंगे, फलतः सुव्यवस्था जन्य श्रद्धा नष्ट-भ्रष्ट होने लगेगी। श्रद्धा-संवर्धन के मूल प्रयोजन को असावधानी उपेक्षा के कारण आघात न पहुँचे इसकी सतर्कता आदि से अन्त तक रहनी चाहिये। यज्ञों की बहुमुखी विधि व्यवस्था में कहीं भी व्यतिरेक उत्पन्न न होने पाये, इसी के निमित्त एक सतर्कता अधिकारी अध्वर्यु—की ड्यूटी आदि से अन्त तक लगी रहने की पुरातन परम्परा है। इसका निर्वाह अभी भी होना चाहिये। सामूहिक यज्ञ कृत्यों का विधि-विधान क्रिया-कृत्य—तो मिल-जुल कर किया जा सकता है, किन्तु सुव्यवस्था का उत्तरदायित्व सम्भाले रहने के लिये सतर्कता, पुरोहित को अपनी ड्यूटी सम्भालनी ही चाहिये।

संस्कारों और पर्वों में सामान्य यज्ञ विधान के अतिरिक्त छोटे-छोटे थोड़े-थोड़े अतिरिक्त विधि-विधान हैं। उन्हें आहुतियाँ समाप्त होने और पूर्णाहुति कृत्य सम्पन्न होने के मध्यान्तर में पूरा कर लेना चाहिये इन परिशिष्टों को भी सीखने समझने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। पुस्तक की सहायता से—जहाँ वे हो रहे हैं वहाँ देखकर अथवा प्रशिक्षण के लिये पूर्वाभ्यास करके भी उनमें प्रवीणता प्राप्त की जा सकती है। कठिनाई उन्हें आती है, जिनका पूर्वाभ्यास है नहीं और न करने-कराने में बैठ पाते हैं। जब हर कार्य में पूर्व प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है तो यज्ञ एवं पर्व संस्कार जैसे धर्मानुष्ठानों के सम्बन्ध में भी पूर्वाभ्यास क्यों आवश्यक न होगा। उसे रुचिपूर्वक सीखा और सिखाया जाना चाहिये। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि उपस्थित सभी लोगों को यज्ञ पर बिठाने का आग्रह न किया जाये। इसमें सारा समय खप जाने से उस माध्यम से जो लोकशिक्षण चलना चाहिये उसके लिये अवसर ही नहीं रह जाता। कर्मकाण्ड जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही आवश्यक ज्ञान यज्ञ भी है। कृत्य होता रहे और उसके उद्देश्य से उपस्थित लोगों को अवगत न कराया जा सके तो समझना चाहिये कि प्राण-रहित कलेवर जैसी विडम्बना ही बन पड़ी। जितने समय में सारा कृत्य सम्पन्न करना हो उसका आधा क्रिया में और आधा शिक्षा में लगे, इसका पूर्व में ही निर्धारण कर लेना चाहिये। इसके लिये आवश्यक है कि आहुति देने वालों की पारी एक एक ही बिठाई जाय। खींच-तान चले तो कुमारिकाओं का बिठाने से भी काम चल सकता है। आरम्भिक पूजा-विधान तथा अन्त की पूर्णाहुति प्रक्रिया में सभी उपस्थित जन भाग लें। यही उचित-उपयुक्त है। काम को फुर्ती से निपटाने पर ही वह नियत समय पर सम्पन्न होता है, अन्यथा, ढील-पोल बरतने से तो ऐसे ही ढेरों समय बर्बाद होता है और जो सीमित समय क्रिया और शिक्षा में समानरूप से लगना चाहिये वह मात्र कर्मकाण्ड में ही बीत जाने पर अभीष्ट उद्देश्य अधूरा ही रह जाता है।

छोटे-बड़े धार्मिक आयोजनों की व्यापक व्यवस्था चल पड़े

सामान्य यज्ञों का उद्देश्य—सम्मिलित होने वालों को यज्ञीय जीवन जीने—यज्ञीय वातावरण बनाने—की भाव गरिमा को उभारता है। स्वार्थ के लिये प्रयुक्त हो सकने वाले समय एवं साधन का वातावरण को परिष्कृत करने के लिये नियोजित करना यज्ञ-प्रक्रिया का मूलभूत उद्देश्य है। यज्ञ और परमार्थ एक ही तथ्य के दो नाम हैं। परमार्थ में रुझान और प्रयास की बढ़ोत्तरी ही यज्ञ प्रक्रिया की प्रेरणा है। अग्नि को पुराहित माना गया है। वह निरन्तर परमार्थरत रहता है और उस प्रयोजन के लिये अपनी सत्ता खपाता है। अग्नि का शिर सदा ऊँचा रहता है। समीप आने वाले को आत्मसात कर लेता है। जो भी मिले उसे वायुभूत बनाकर व्यापक क्षेत्र में बिखेर देता है। इन सत्प्रवृत्तियों की प्रतीक-प्रतिमा होने के कारण अग्नि की ऊर्जा तथा तेजस्विता का नमन-वन्दन और यजन किया जाता है। यज्ञ में रुचि रखने वाले इस तथ्य को भी आत्मसात करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पवित्रता और प्रखरता के प्रतीक अग्नि को देवता मानकर उसका यजन-अर्चन करने वाले चन्दन के निकट उगने वाले सामान्य पौधों की स्थिति में रहते हुये भी सान्निध्य का लाभ लें। यज्ञ भगवान की निकटता पाकर, उससे दिव्य शक्ति की प्रेरणायें ग्रहण करें। तदनुरूप उद्देश्यपूर्ण यज्ञीय जीवन जियें। सम्पर्क क्षेत्र भी—समाज को वातावरण को—यज्ञीय परम्पराओं से युक्त बनाने के लिये प्रयत्नरत रहें। अग्निहोत्र करने वाले उसकी प्राण, प्रेरणाओं को भी हृदयंगम करें और जीवन-व्यवहार में उसका अधिकाधिक समावेश करें।

पारिवारिक ज्ञान-गोष्ठियों के रूप में संस्कार आयोजन किये जाने चाहिये। पुंसवन संस्कार में गर्भिणी और गर्भस्थ बालक के प्रति समूचे परिवार का क्या रवैया हो—यह समझाया जाता है। नामकरण में यह निर्धारण किया जाता है कि इस व्यक्तित्व को किन विशेषताओं से सम्पन्न—किस दिशा में अग्रसर किया जाता है। अन्नप्राशन में न केवल बालक के आधार में बरती जाने वाली सतर्कताओं का ज्ञान कराया जाता है, वरन् पूरे परिवार को यह सुझाया जाता है कि शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य को सुरक्षित-समुन्नत बनाने के लिये आहार का स्तर और उपयोग किस प्रकार होना चाहिये। मुण्डन में जन्म के साथ चले आ रहे संचित कुसंस्कारों के उन्मूलन और दूरदर्शी विवेकशीलता ऋतम्भरा की शिखा ध्वजा प्रतिष्ठापित करने का क्या महत्त्व और क्या उत्तरदायित्व है इसकी जानकारी दी जाती है। विद्यारम्भ संस्कार में न केवल विद्या की उपयोगिता वरन् उसका स्वरूप और लक्ष्य भी उस परिवार को बताया जाता है ताकि बालक समेत समस्त परिवार की सद्ज्ञान संवर्धन में निरन्तर तत्परता बनी रहे। उपनयन द्विजत्व का दूसरे जन्म का—व्रतबन्ध—व्रतशील रहने का प्रतीक है। जन्म से सभी प्रकृति-प्रेरणाओं के वासना—तृष्णा—अहंता जैसी पशु-प्रवृत्तियों के अनुचर होते हैं। प्रयत्नपूर्वक मानवी गरिमा एवं सुसंस्कारिता का अभ्यास पुरुषार्थ करना पड़ता है। इसी संकल्प धारण को यज्ञोपवीत कहते हैं। यह गायत्री का प्रतीक भी है। विवाह में दो भिन्न प्रकृतियों का परस्पर सामंजस्य करने वाली सहिष्णुता अपनानी होती है। आत्मविस्तार की दिशा में एक कदम उठाना पड़ता है। परिवार संस्था के सुसंचालन और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का अभ्यास आरम्भ करना होता है। घर को तपोवन—एक समुन्नत परिवार की संरचना के लिये गाड़ी के दो पहियों की भूमिका निभानी होती है। जन्म से लेकर विवाह तक के समस्त संस्कारों में व्यक्ति और परिवार के समन्वित विकास से सम्बन्धित अनेकानेक प्रसंगों प्रयोगों को समझने-समझाने से लेकर व्यवहार में उतारने तक की प्रेरणाओं को क्रियान्वित करने तक के रहस्यों का स्मरण करना होता है।

विवाह के उपरान्त वानप्रस्थ-वानप्रस्थ अर्थात् गृहस्थ की जिम्मेदारियाँ हल्की करके समाज कल्याण के—सत्प्रवृत्ति संवर्धन के—प्रयत्नों में अपनी क्षमता का अधिकांश भाग नियोजित करना। इसी का परिव्राजक स्वरूप संन्यास है। अन्त्येष्टि का तात्पर्य है जीवन का अन्त यज्ञ-इष्टि के रूप में करना। परिवार को स्वावलम्बी बनाने के उपरान्त जो साधन बच रहे, उन्हें सत्प्रयोजनों के लिये विसर्जित कर देना। इसमें कुछ अधूरापन रह गया हो, तो उसे उत्तराधिकारियों द्वारा स्वर्गीय आत्मा के लिये उत्सर्जित करते हुये अपनी श्रद्धा का परिचय देना, श्राद्ध-तर्पण करना। यही है सोलह संस्कारों की परम्परा। इसमें व्यक्ति और परिवार के समग्र अभ्युदय के लिये आवश्यक समस्त तथ्यों का समावेश है। जो कर्मकाण्ड इनके निमित्त कराये जाते हैं, उनके मन्त्रों विधि-विधानों में इन्हीं उद्देश्यों को प्रकट करने वाले संकेतों का समावेश है।

पर्व सामूहिक आयोजन है। यों आजकल वे घरों पर व्यक्तिगत रूप से मनाये जाते हैं। पर प्राचीन परम्परा उन्हें मिलजुल कर मनाने की है। जिन देवताओं, अवतारों, प्रवृत्तियों की उसमें पूजा-अर्चा की जाती है, वस्तुतः उन्हें समाज को समुन्नत बनाने की रीति-नीति एवं दिशाधारा ही समझी जा सकती है। दीवाली में अर्थ व्यवस्था, गोवर्धन में गोसम्पदा का अभिवर्धन। गीता जयन्ती में कर्मयोग। बसन्तपंचमी में शिक्षा-विस्तार। शिवरात्रि में श्रेय सम्पादन। होली में स्वच्छता। श्रमदान, गंगा दशहरा, गायत्री जयन्ती में पवित्रता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रखरता की अधिष्ठात्री ज्ञानगंगा का अवगाहन। गुरुपूर्णिमा में शिष्टाचार, अनुशासन। श्रावणी पर वर्ष भर के दुष्कृत्यों का प्रायश्चित्य। विजयादशमी में पराक्रम। इन्हें सार्वजनिक जीवन में किस प्रकार बढ़ाया जाय इसका प्रशिक्षण है। दोनों नवरात्रियाँ साधना पर्व है। राम, कृष्ण, हनुमान, परशुराम आदि की जयन्तियों में उन हस्तियों की लीलाओं का स्मरण करते हुये बहुत कुछ सीखा और सिखाया जा सकता है। इसी प्रकार अन्यान्य पर्व-त्यौहार हैं, जो अपने-अपने क्षेत्रों में विशेष महत्त्व के माने और अधिक उत्साह से मनाये जाते हैं। मकर संक्रान्ति बैसाखी-संक्रान्ति, गणेश-चतुर्थी, दुर्गाष्टमी आदि के कितने ही पर्व प्रान्तों, जातियों सम्प्रदायों के अनुसार मनाये जाते हैं। जहाँ जिनका प्रचलन हो, वहाँ उसे सामूहिक रूप से मनाया जाय। गायत्री यज्ञ के साथ पर्व के प्रतिनिधि देवता का विशेष पूजन किया जाये, साथ ही उसी परम्परा के पीछे जिन शिक्षाओं प्रेरणाओं का समावेश है उन्हें उपस्थित जन समुदाय के सम्मुख अपनाने की सामयिक प्रक्रिया का परिचय, विवरण, स्वरूप, कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाये। पर्व किस प्रकार मनायें जायें और उसके साथ जुड़े हुये उद्देश्यों के किन तथ्यों को उजागर करते हुये प्रस्तुत किया जाये, इसका विधि-विधान इस प्रयोजन के लिये छपी पुस्तकों में मौजूद है। समझने ओर अभ्यास करने से उसमें प्रवीणता प्राप्त की जा सकती है।

विशेष पर्वों में वाजपेय-राजसूय आते हैं। कुम्भ का मेला जिस प्रकार देश के चार स्थानों पर होता है, उसी प्रकार सोनपुर, बटेश्वर, गढ़मुक्तेश्वर, सोरों आदि पर सोमवती अमावस्या एवं विशेष पर्वों पर विशेष धार्मिक मेले होते हैं। इन्हें क्षेत्रीय-प्रान्तीय या सार्वदेशिक-धर्मसम्मेलन कहा जा सकता है। राजसूय पर्वों में कांग्रेस, जनता पार्टी, समाजवादी पार्टी आदि के अधिवेशनों को माना जा सकता है। आज उनकी भी संस्कार-पर्वों के नाम पर चल रही विडम्बना की भाँति ही दुर्दशा हो रही है। हमें युग परिवर्तन के सन्दर्भ में इन सभी छोटे-बड़े समारोह-प्रचलनों को नया रूप देना चाहिये और उनसे लोक-मानस के परिष्कार को, सत्प्रवृत्ति संवर्धन की प्रक्रिया को, नये सिरे से, नये रूप में अग्रगामी बनाना चाहिये। छोटे-बड़े मेलों को यदि प्रेरणाप्रद बनाया जा सके तो सम्मिलित होने वाले जन-समुदाय को युगान्तरीय चेतना से अवगत एवं अनुप्राणित बनाने का काम बहुत सरल हो सकता है। इन दिनों किसी भी प्रयोजन के लिये जन-समुदाय को एकत्रित करना बहुत कठिन भी हो गया है और मँहगा भी, किन्तु यदि छोटे-बड़े धार्मिक आयोजन की पुरातन परम्परा को सामयिक मोड़ दिया जा सके, उनकी व्यवस्था का प्रगतिशील निर्धारण हो सके, तो विचारक्रान्ति अभियान को व्यापक उद्देश्य पूरा करने में भारी योगदान मिल सकता है।

इस सन्दर्भ में क्रिया-कृत्यों की पण्डिताऊ विधि व्यवस्था सीख लेने मात्र से काम नहीं चलेगा। हमारी सामयिक सूझ-बूझ यह होनी चाहिये कि उन्हें आकर्षक कैसे बनाया जाये ? अधिकाधिक लोगों की उपस्थिति के प्रचार, सम्पर्क, निमन्त्रण जैसे उपायों को उत्साहपूर्वक अपनाया जाये। साथ ही निर्धारित कर्मकाण्ड को छोटा किन्तु अधिक प्रेरणाप्रद बनाने के साथ साथ-साथ संगीत-प्रवचन का भी ऐसा प्रबन्ध किया जाय, जिससे लोकरंजन और लोकमंगल के दोनों ही उद्देश्य सध सकें। प्रस्तुत लोक रुचि उच्चस्तरीय उद्देश्यों के प्रति उतनी आस्था नहीं जितना कि दृश्य और श्रव्य उपचारों के सहारे मनोरंजन की। इसके बिना उपयोगी योजनायें भी उपेक्षा की पात्र बनी रहती हैं और उपस्थिति के अभाव में किये गये प्रयास की अभीष्ट परिणति उपलब्ध नहीं होती। इस सामयिक कठिनाई को ध्यान में रखते हुये हमारी सूझ-बूझ, कला-कारिता एवं व्यवहार कुशलता का ऐसा समन्वय होना चाहिये कि अनेकों उत्साही साथी सहयोगी मिल सकें। साधन जुट सकें और लोक-शिक्षण का ऐसा सरंजाम जुट सके, जिसके लिये लोक रुचि की आदर्शवादियों की दिशा में मुड़ने के लिये बाध्य किया जा सके।

उपेक्षा, आलस्य, चिन्ह-पूजा, बेगार भुगतने, लकीर पीटने की प्रवृत्ति जहाँ भी होगी वहाँ कुरूपता दृष्टिगोचर होगी, घाटियापन छलकेगा और उस कुरुचिपूर्ण आमन्त्रण को कोई भला आदमी स्वीकार न करेगा। अस्तु, हमें छोटे बड़े धार्मिक समारोहों की उपयोगिता समझने और उनके द्वारा नव निर्माण का वातावरण बनाने की आवश्यकता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुभव करने के साथ-साथ इस तथ्य को भी विस्मृत नहीं करना चाहिये—जो भी किया जाये, निर्जीव न हो, उसमें अनगढ़पन, अनुभवहीनता, उत्साह का अभाव परिलक्षित न हो। लगे कि आयोजन छोटा है या बड़ा, तत्परता, तन्मयता, आस्था, लगन एवं सामर्थ्यभर कुशलता का भरपूर उपयोग करते हुये किया गया है। जन्म दिन, विवाह दिन, षोडश संस्कार, पर्व आयोजन यह सभी परम्परागत हैं। थोड़े प्रयत्न से नियत स्थान नियत, समय पर सम्बन्धित लोगों की अच्छी उपस्थिति हो सकती है। परम्परा के निर्वाह और युगधर्म के निर्वाह का समन्वय इन आयोजनों द्वारा भली प्रकार हो सकता है। अपने ७० प्रतिशत अशिक्षा वाले देश में दूसरे शिक्षित देशों की तरह साहित्य उतना सफल नहीं हो सकता जितना कि दृश्य और श्रव्य साधनों के आधार पर जन-समुदाय को एकत्रित करने और उन्हें युग धर्म अपनाने के लिये प्रेरित करने वाला सिलसिला। आयोजन सम्मेलन इसी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। उन्हें नये सिरे से नियोजित करने की अपेक्षा यह कहीं अच्छा है कि प्रचलित परम्पराओं का आश्रय लेकर मार्ग को सरल बनाया जाय।

संस्कारों के माध्यम से परिवार गोष्ठियाँ और पर्वों के माध्यम से ग्राम गोष्ठियाँ किस प्रकार नियोजित और सफल बनाई जाये इसकी एक निर्धारित एवं विचारणीय प्रक्रिया है, जिसे किसी युगशिल्पी सत्र में शान्तिकुंज आकर सीखा जा सकता है। इस निर्धारण में आधा भाग कर्मकाण्ड के विधि विधान का है और उस व्यवहार कुशलता का, जिसमें आयोजन की साजसज्जा, प्रचार-प्रक्रिया को अधिक आकर्षक बनाकर अधिक लोगों की उपस्थिति सम्भव बना दी जा सकती है। उपस्थिति के लिये दिये गये आमन्त्रण को तभी सफल माना जा सकता है। जब उन्हें कुछ उपयोगी जानकारी एवं प्रेरणा साथ लेकर वापस लौटने का अवसर मिले।

पूर्व आयोजनों का नया कदम क्षेत्रीय सम्मेलन समारोहों के रूप में होना चाहिये। उन्हें प्रचार सभा न रहने दिया जाये वरन् धार्मिक मेले का स्वरूप दिया जाये। प्रज्ञापीठ हजारों की संख्या में बन चुकीं। उसके वार्षिक अधिवेशन गायत्री यज्ञ युग निर्माण सम्मेलन के प्रचलित स्वरूप तक ही सीमित न रहे, वरन् 'मेले' के रूप में विकसित हो और हरस्तर के नर-नारी, बाल-वृद्ध को उपस्थित होने के लिये परोक्ष आमन्त्रण भेजें। थोड़े से प्रयत्न, प्रबन्ध एवं सम्पर्क में कितने ही छोटे-बड़े, दुकानदार, तमाशे वाले आ सकते हैं। इसके साथ ही नाटक, अभिनय, संगीत सम्मेलन आयोजित करना अपना काम है। सरकारी, गैर-सरकारी कितनी ही प्रदर्शनियाँ लग सकती हैं। सरकारी प्रचार गाड़ियाँ सिनेमा दिखाने आ सकती हैं। उद्देश्यपूर्ण कठपुतलियों के तमाशे, दंगल जैसी कुछ व्यवस्थायें स्थानीय सुविधाओं को देखते हुये बनाई जा सकती हैं। यह आकर्षण और एक भी करण के उपाय-उपचार हैं। इनके पीछे मूल उद्देश्य एक ही रहना चाहिये कि धार्मिक मेलों की योजना के पीछे वे साधन पर्याप्त मात्रा में विद्यमान रहें, जो प्रस्तुत दुष्प्रवृत्तियों को उखाड़ने वाला आक्रोश उत्पन्न करने के साथ ऐसी उमंगे उभार सके, जो नव-सृजन का वातावरण बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत कर सके बिना खर्च के आदर्श-विवाह आयोजन भी क्षेत्रीय आयोजनों में विशेष आकर्षण हो सकते हैं। इस दिशा में हमें बहुत कुछ सोचना चाहिये और अपने क्षेत्र में कुछ न कुछ ऐसा प्रयास करना चाहिये जिससे युग परिवर्तन की प्रक्रिया में कारगर सहयोग मिल सके।

धर्मतन्त्र की क्षमता निरर्थक न बहे

संसार में दो शक्तियाँ ही प्रधान रही हैं—एक शासन और दूसरा धर्म। इन दोनों के सुनियोजित तन्त्र रहे हैं। यों धन, ज्ञान और कौशल भी अपने रास्ते की क्षमतायें रखते हैं पर वे सभी बिखरे हुये हैं। उनका कोई सुनियोजित तन्त्र नहीं है। जिसके पास जितनी मात्रा में साधन होते हैं उसे उतनी सुविधा पहुँचाते हैं। पर शासन और धर्म ऐसे हैं जिनकी पकड़ से कोई छोटा बड़ा बचता नहीं।

कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जो किसी देश का नागरिक नहीं। जिसके ऊपर कोई शासन व्यवस्था लागू न होती हो। भौतिक जीवन पर उसका नियम न हो। टैक्स हर किसी को चुकाने पड़ते हैं। अपराध करने पर दण्ड भुगतने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ते हैं। श्रेष्ठ शासन अपनी प्रजा की सुविधायें भी बढ़ाता है। सुरक्षा, शिक्षा, सड़क, परिवहन, व्यवसाय आदि के द्वार खोलता है। भौतिक जीवन के साथ शासन का अविच्छिन्न सम्बन्ध जुड़ता है। कोई यह नहीं कह सकता है कि शासन से हमारा क्या लेना-देना ? उपयोगी सभी वस्तुओं पर उसका प्रत्यक्ष या परोक्ष अनुशासन लगा रहता है।

इसी प्रकार धर्मतन्त्र की बात है, वह हर किसी की चेतना को प्रभावित करता है। चिन्तन समुदाय पर धर्म धारणा की गहरी छाप रहती है। मान्यतायें उसी आधार पर बनती हैं। साथ ही प्रथा परम्परा का प्रचलन भी उसी के निर्धारणों से प्रभावित होकर चलता है। ईश्वर की मान्यता धर्म दर्शन ने दी है। ईश्वर ने किसी को धर्म दर्शन नहीं सिखाया है। वह अदृश्य है। अध्यात्म और आस्तिकवाद का तत्वदर्शन भी धर्म धारणा के अन्तर्गत ही आता है। यहाँ तक कि ईश्वर को अमान्य ठहराने वाले नास्तिकवादियों के भी अपने-अपने विचार समुदाय हैं और उन्हें भी प्रकारान्तर से धर्म ही कह सकते हैं। पशु बलि चढ़ाने वाले भी उसे देवाराधना कहते हैं और कृत्य को धर्म का एक अंग मानते हैं।

शरीर भौतिक और चेतना आत्मिक है। शरीर कहे शासन व्यवस्था को इच्छा या अनिच्छापूर्वक मानना पड़ता है और धर्म धारणाओं की छाप मनुष्य मात्र पर किसी न किसी रूप में रहती है। भले ही वह अबुद्धिमत्तापूर्ण या अनुपयुक्त ही क्यों न हो ?

हमें शासन और धर्म की महत्ता समान रूप से स्वीकार करनी पड़ती है क्योंकि जीवन का शरीर पक्ष भौतिक और चेतना आत्मिक है। दोनों को प्रभावित करने की क्षमता इन दोनों में ही होती है। यदि चेतना, भावना, मान्यता, परम्परा आदि को अधिक प्रभावित करने वाला और दिशा देने वाला माना जाये तो धर्म को प्रमुखता देनी पड़ेगी। शरीर स्वेच्छा से काम नहीं करता वह जड़ है। चेतना ही उसे चलाती, घुमाती और नचाती रहती है। चेतना का आधिपत्य वहाँ भी रहता है, जहाँ गोपनीय एकान्त है। जबकि शासन के लिये कुछ कर सकना प्रत्यक्ष जानकारियों के आधार पर सम्भव है अनैतिक, कुकर्मी और अपराधी भी किसी न किसी मान्यता से प्रभावित होते हैं। चाहे वे व्यक्ति और समाज के लिये अनुपयुक्त, अवांछनीय ही क्यों न हों। इस प्रकार धर्म की शक्ति सामर्थ्य हर दृष्टि से वरिष्ठ और विशिष्ट सिद्ध होती है।

धर्म को राज सत्ता की तुलना में इसलिये भी अधिक महत्ता देनी पड़ती है कि उसके सही और प्रखर होने पर शासन का काम भी सरल हो जाता है। फिर अपराधों और अपराधियों से निपटने में उसकी जो अत्यधिक शक्ति खर्च होती है, वह धर्म मान्यताओं के सहारे अनायास ही कम हो जाती है। कामचोरी, मुनाफाखोरी जैसे आर्थिक अपराध यदि अन्तःप्रेरणा से ही रुक जाते हैं तो फिर समझना चाहिये कि शासन को दौड़-धूप और व्यय व्यवस्था में भारी सुविधा होगी।

शासन के केन्द्र एक स्थान पर रहते हैं, भव्य भवनों में बने होते हैं। कार्य सम्बन्धियों की भीड़-भाड़ भी अधिक रहती है। शस्त्रधारी और एक विशेष ड्रेस के कर्मचारी जहाँ-तहाँ खड़े दिखाई देते हैं। उनका व्यवहार और अनुशासन भी कड़ाई लिये हुये होता है। उस सब आतंक के कारण सत्ता का स्वरूप बढ़ा-चढ़ा दीखता है। किन्तु यदि सूक्ष्म निरीक्षण के आधार पर देखा जाये तो धर्म का कलेवर और प्रभाव ही कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ा प्रतीत होता है।

भारत में कदाचित ही कोई गाँव ऐसा हो जिसमें छोटा-मोटा मठ, मन्दिर, देवालय न हो। धार्मिक प्रकृति के शहरों में तो उनकी संख्या अन्धाधुन्ध होती है। वृन्दावन में पाँच हजार मन्दिर बताये जाते हैं और काशी में दस हजार। इसके अतिरिक्त प्रत्येक तीर्थ में सैकड़ों की संख्या में मन्दिर होते हैं। बिना मन्दिरों के कदाचित कोई शहर हो। इस देश के साठ लाख गाँवों में यदि एक के पीछे एक मन्दिर का औसत भी माना जाये तो उनकी संख्या सात लाख होती है। इनके रख-रखाव पर, पूजा पाठ पर, हर महीने पचास रुपये भी खर्च माना जाये तो ३५० लाख रुपया इन्हीं पर खर्च हो जाता है। इनमें से अधिकांश के पीछे इतनी जमीन घिरी होती है, जिसका उपयोग कर लेने पर एक छोटा-बड़ा शिक्षा संस्थान बड़ी अच्छी तरह चल सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देश की जनगणना के हिसाब से ६० लाख के करीब ऐसे हैं, जो धर्म के नाम पर अपनी आजीविका चलाते हैं। इन्हें तो धर्म तन्त्र के स्थायी कर्मचारी कहना चाहिये। कुछ आधे-अधूरे समय के हों जिनके आजीविका स्रोत अन्यान्य भी हैं उनकी गणना इन ६० लाख में नहीं होती। सत्संग, भजन, पूजनों कथा कीर्तनों में जिनका आधा अधूरा समय लगता है। उनके समय का लेखा-जोखा लिया जाये तो वह भी छूट-पुट मिलाकर ४० लाख से कम पूरा समय देने वालों से कम न बैठेंगे। इस प्रकार धर्म प्रयोजनों के लिये अपने देश में प्रायः २ करोड़ का समय लगता है। यह संख्या सरकार के समस्त कर्मचारियों की तुलना में कम नहीं अधिक ही बैठेगी।

धन का ब्यौरा लिया जाये तो ६० लाख धर्म व्यवसायियों के निर्वाह, सैर सपाटे, कर्मकाण्ड एवं भण्डारों का खर्च एक व्यक्ति के पीछे यदि न्यूनतम सौ रुपया भी लगाया जाये तो सारी राशि ३०० करोड़ की होती है। इसके अतिरिक्त तीर्थ यात्राओं का खर्च भी इससे कम नहीं है। सोमवती अमावास्यायें वर्ष में चार-पाँच होती हैं। उत्तरकाशी से लेकर गंगासागर तक के गंगा घाटों में समूची भीड़ को एक करोड़ भी माना जाये और उनके समय की कीमत १० रुपया तथा मार्गव्यय, भोजन व्यय, दानदक्षिणा भी न्यूनतम १० रुपया ठहराया जाये तो एक सोमवती अमावस्या पर एक करोड़ आदमी २० करोड़ रुपये खर्च करते हैं। ऐसी पाँच सोमवती अमावस्याओं पर १०० करोड़ सहज ही खर्च हो जाता है। इसके अतिरिक्त कथा कीर्तन, भण्डारे, सम्मेलन, समारोह, प्रीतिभोज आदि का श्राद्ध-तर्पण पर्व संस्कार आदि का खर्च जोड़ा जाये तो यह सारी रकम मिलकर प्रायः उतनी ही पहुँच सकती है जितना की विभिन्न प्रयोजनों के लिये सरकार व्यय करती है।

इस प्रकार जनशक्ति, श्रम शक्ति के हिसाब से निरन्तर चलती रहने वाली तीर्थ यात्राओं का बस, रेल आदि का, खान-पान, दान दक्षिणा का हिसाब जोड़ा जायेगा तो विदित होगा कि धर्मतन्त्र शासन तन्त्र से किसी भी प्रकार कम भारी भरकम खर्चीला नहीं है।

सरकार अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये कुछ न कुछ करती ही रहती है और उसके सहारे जन समाज को कई प्रकार के लाभ मिलते ही रहते हैं। पर देखना यह है कि समानान्तर कलेवर वाला उतनी ही धन शक्ति और जनशक्ति खर्च करा लेने वाला धर्म तन्त्र अपने मूल उद्देश्यों की दृष्टि से कुछ कर पाता है या नहीं ? निरीक्षण परीक्षण करने पर निराशा ही हाथ लगती है।

देश में ७ लाख गाँव है ६० लाख सन्त। हर गाँव के पीछे उनका औसत साढ़े आठ का आता है। यदि भजनानन्दी धर्म प्रेमी लोगों की भी गणना की जाये तो उन समेत यह संख्या एक करोड़ होती है और ७ लाख गाँवों के पीछे वे १४-१५ के करीब आते हैं। प्रकारान्तर से जनता को इनके निर्वाह और क्रिया-कलापों का खर्च वहन करन पड़ता ही है। यदि यह समुदाय जनकल्याण के कार्यों में लगे तो इनके द्वारा इतना अधिक काम हो सकता है, जिसके द्वारा समाज का काया-कल्प होने में देर न लगे। शिक्षा संवर्धन, स्वास्थ्य संरक्षण, नशा निषेध, कुरीति निवारण, वृक्षारोपण जैसा न्यूनतम थोड़े से काम भी यह वर्ग हाथ में ले ले तो समझना चाहिये कि समाज के पिछड़ेपन को हटाने और प्रगतिशीलता का सुरम्य वातावरण बनाने में तनिक भी देर न लगे।

कठिनाई यह है कि धर्मतन्त्र के विशालकाय कलेवर का जीर्णोद्धार करने और उसे प्रतिगामिता से विरक्त करके प्रगतिशीलता के साथ जोड़ने का कोई सुनिश्चित प्रबन्ध नहीं चल सका। इतनी बड़ी शक्ति के अपव्यय से होने वाली हानि के सम्बन्ध में न किसी ने विचार किया और न सुधार की योजना बनाई। यदि कुछ योजनाबद्ध रूप से सोचा या किया गया होता तो वह अपने समाज की बहुत बड़ी सेवा साधना बन पड़ती।

जन साधारण को कुछ मोटी बातें ही समझाने की जरूरत है। इतने भर से वह उन सन्त-महन्तों से उपयुक्त अपेक्षा करने लगेगी और उसे कराने के लिये दबाव देने लगेगी। समय की माँग को कोई ठुकरा नहीं सकता। धर्मतन्त्र से भी यह नहीं बन पड़ेगा कि वह जन मानस की आकांक्षाओं के साथ खिलवाड़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करे। मनमर्जी चलावे और सहयोगियों से हाथ धो बैठे। उनकी उपेक्षा और भर्त्सना को सहन कर सके। उन्हें जो उपयुक्त एवं उचित है मानना ही पड़ेगा।

नित्य नियम से ईश्वर उपासना का महत्त्व इसलिये है कि हम उस सर्वव्यापी, न्यायकारी अदृश्य सत्ता की उपस्थिति का अनुभव करें और यह सोचें कि उसकी दृष्टि में कर्मों की उत्कृष्टता और निकृष्टता ही प्रसन्नता, अप्रसन्नता का अनुकूलता प्रतिकूलता का एक मात्र कारण है। उसे किसी की मनुहार या उपहार की कोई आवश्यकता नहीं है। न वह चारणों की तरह प्रसन्नता के पुल बाँधने वाले से प्रसन्न होकर सामन्तों की तरह फूलकर कुप्पा होता है, न बदले में वेश कीमती दुशाले उढ़ाता है। न उसकी प्रकृति बालकों जैसी है। जिसे टॉफी, लेमनचूस, गुब्बारे, झुन्झुने की तरह छुट-पुट उपहार देकर फुसलाया जा सके और बदले में उसके आभूषण उतार लेने में सफलता पाई जा सके। पुरुषार्थ और कौशल ही मनुष्य की मनोकामनाओं की पूर्ति करता है। कोई देवी-देवता ऐसे नहीं हैं, जो योग्यता, पात्रता, पुरुषार्थ, सूझ-बूझ जैसे गुणों के अभाव में किसी के ऊपर हीरे मोतियों की वर्षा कर दें। मनोकामनाओं की आनन-फानन में पूर्ति कर दे। इसलिये देवताओं की खर्चीली और समय साध्य, श्रम साध्य मनसार करने और उनके मध्यवर्ती ऐजेन्ट के बहकावे में आकर अपनी जेब कटाई जाय।

दूसरी बात जन-जन को यह समझाई जाय कि पापों का प्रायश्चित किसी नदी सरोवर में स्नान करने, प्रतिमाओं की झाँकी, परिक्रमा करने में नहीं होता। उसके लिये प्रायश्चित करना पड़ता है। समाज को जितनी क्षति पहुँचाई है, उसकी क्षति पूर्ति करनी पड़ती है। खोदी हुई खाई पाटनी पड़ती है। एक हाथ से पाप करते रहो और दूसरे हाथ से देवता पर फूल चढ़ाते या पंचामृत पीते रहो तो उतने भर से किये हुये पापों से दण्डों का बचाव हो जायेगा, यह मान्यता उखाड़ी जानी चाहिये अन्यथा पाप कर्मों के दण्ड से बचने का सस्ता उपाय उपचार मिलने पर लोग अनीति बरतने के लिये निश्चिन्त निर्भय हो जायेंगे और लोग अनाचार अपनाते हुय तनिक भी भय संकोच न करेंगे।

तीसरी समझी और समझाई जाने योग्य बात यह है कि स्वर्ग मुक्ति या सिद्धि के लिये भजन या अनुष्ठान करने वालों को अपने पुरुषार्थ से आजीविका कमानी चाहिये। भिक्षा के धन पर निर्भर नहीं रहना चाहिये। प्राचीन काल के साधु ब्राह्मण निरन्तर लोक सेवा में संलग्न रहते थे। भजन आत्मशोधन के लिये और अध्ययन ज्ञानार्जन के लिये करते थे। पर यह आत्मशोधन और ज्ञानार्जन लोकमंगल में निरत रहने के लिये ही होता था। जनता भी उन्हें दान दक्षिणा इसी निमित्त देती थी कि वे समाज के लिये उपयोगी कार्यों की व्यवस्था बनाने में निरन्तर निरत रहते थे। इस आदान-प्रदान में ही दान-दक्षिणा देने लेने में अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति होती थी। अपनी स्वर्ग मुक्ति का निजी लाभ कमाने के लिये जनता पर अपना निर्वाह भार डालने का कोई औचित्य नहीं हो सकता। देवताओं के ऐजेन्ट बनकर उनसे उचित-अनुचित काम करा लेने का दावा करने वाले ऐसा भ्रम फैलाते हैं जिसे अनैतिक भी कहा जा सकता है।

चौथी मान्यता सर्व साधारण के ध्यान में यह रहनी चाहिये कि दान के वास्तविक अधिकारी दो हैं एक पीड़ित, पददलित, पिछड़े, अपंग, असहाय। दूसरे सत्प्रवृत्तियों के सम्वर्धन और दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन में संलग्न उदारमना परोपकारी। शास्त्रकार ने "विशद् वारणाय" और "यज्ञार्थाय" इन दो प्रयोजनों के लिये दान देने की मर्यादा निर्धारित की है। कुपात्र प्रपंचकों और पाखण्डियों को अनुपयुक्त बताकर, उसे समर्थ करने या सहयोग देने की मनाही की है। वंश और वेश का कोई महत्त्व नहीं। ऐसा तो नाटकों में अभिनय करने वाले नट और विदूषक बहुरूपियों की स्वाँग करते रहते हैं ओर अपनी असली स्थिति छिपाकर आवरणों की आड़ में कुछ से कुछ बनते, दिखाते दीखते रहते हैं। दानदाता को भावावेश में नहीं आना चाहिये। कार्य और चरित्र को परखे बिना, दिये धन का उपयोग और परिणाम बिना जाने किसी को भी अपनी गाढ़े पसीने की कमाई को जहाँ-तहाँ नहीं बिखेरने चाहिये।

इन उपर्युक्त चार विडम्बनाओं से बचा जा सके तो धर्म के नाम पर प्रचलित विडम्बनाओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से बचा जा सकेगा और अपना समय, श्रम, धन उन कार्मों में लगाया जा सकेगा, जिनमें लगाने की नितान्त आवश्यकता है और जिनसे पुण्य परमार्थ भी सधता है।

धर्म की सत्ता और महत्ता का जितना यशगान किया जा सके उतना ही कम है। पर वह होना चाहिये वास्तविक धर्म। धर्म की आड़ में चल रहा प्रपंच तो पोषण पाकर ऐसे दुष्परिणाम रचता है, जिससे अनर्थ ही होता है और उसका पाप उसे लगता है, जिसने आँखें बन्द करके बिना पात्रता और परिणाम सोचे ऐसे कार्मों में सहयोग दे डाला जो परिणाम में निठल्लापन और अनर्थ ही उत्पन्न कर सकते हैं करते हैं।

व्यक्तिगत निर्वाह के लिये उन्हीं को मांगने का अधिकार है, जो सर्वथा, अपंग-असमर्थ है, किसी आकस्मिक विपत्ति में फंस गये हैं अथवा सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन के लिये सार्वजनिक सहयोग में कोई उपयोग कार्य खड़ा करना चाहते हैं, इसके कितने ही उदाहरण हैं। गान्धी का स्वतन्त्रता संग्राम, विनोवा का सर्वोदय, वनस्थली का बालिका विद्यालय, महाराष्ट्र का बाबा आम्टे वाले अपंगों का स्वावलम्बन, मदर टेरेसा की असमर्थ सेवा आदि-आदि। कईयों ने सार्वजनिक आन्दोलन, कुरीति उन्मूलन आन्दोलन चलाये। महर्षि कर्पे का महिला उद्धार, ठक्कर बापा का अछूतोद्धार, स्वामी दयानन्द का पाखण्ड खण्डन आदि कार्यों के सत्परिणामों को ध्यान में रखते हुये जिनने सहायता की, उन्हें सराहा ही जायेगा। राणाप्रताप के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भामाशाह का किया हुआ उत्सर्ग भुलाया नहीं जा सकता है। उसी श्रेणी में राजा महेन्द्र प्रताप का प्रेम महाविद्यालय के लिये किया गया सर्वस्व दान, नालन्दा विश्व विद्यालय एवं बौद्ध विहारों के लिये किया गया सर्व समर्पण, तक्षशिला विश्वविद्यालय संचालन के लिये किया गया हर्षवर्धन का सर्वमेध इसी स्तर के थे। इनमें धर्म विमूढ़ होकर बिना परिणाम सोचे अनावश्यक पैसा नहीं लुटाया गया ऐसी भूलें तो वे लोग करते हैं, जिनसे धर्मशालायें बनती हैं। उनमें धर्म कार्य तो एक भी नहीं होता, धर्म संस्थानों जैसी गतिविधियाँ भी नहीं चलती। मात्र वे सैलानी मुफ्त में ठहरते हैं, जो व्यवसाय, ब्याह शादी या सैर-सपाटे में तो हजारों खर्च करते हैं, पर ठहरते मुफ्त में हैं। इससे मुफ्तखोरों का चस्का लगता है स्मरण रखने वाली बात यह है कि जिस प्रकार रिश्वत देना और लेना दोनों ही अवांछनीय हैं, वैसे ही मुफ्त खोरी में राम को अनावश्यक सुविधायें देना, लेना भी अनुपयुक्त है, यह तो असमर्थों का धर्म-प्रयोजनों का ही अधिकार है, जो दूसरों की सेवा सहयता मुफ्त में ग्रहण करें। आज अनेकों सदाव्रत ऐसे चलते हैं, जिनमें निठल्ले लोग निर्वाह करते और बचे हुये समय के दुर्व्यसनों, भ्रमजंजाल फैलाने, आडम्बर रचने में लगाते रहते हैं। इस प्रकार खर्च किया गया पैसा अविवेकियों को भले ही दयाधर्म प्रतीत हो, विचारशील कहेंगे कि समर्थों को निठल्लापन अपनाने के लिये पैसा लुटाया और अनुपयुक्त प्रचलन बढ़ाया गया है।

आवश्यकता इस बात की है कि धर्मतन्त्र का सही स्वरूप खड़ा किया जाय और बताया जाना चाहिये कि इस प्रकार के प्रचलन चलाने वालों के उद्देश्य क्या थे और जो धर्म सेवा में प्रवृत्त होते थे उनके क्रिया कलाप क्या थे ? मात्र अवांछनीयता को कोसना पर्याप्त नहीं। इससे तो शून्यता पैदा होती है। हमें वास्तविकता का सही स्वरूप भी प्रस्तुत करना चाहिये ताकि जनता को सही और गलत के दोनों उदाहरण सामने होने पर एक को चुनने का अवसर मिले।

सत्प्रवृत्तियों में समय देने वाले उदारमनाओं की कमी नहीं। स्वयं सेवी समुदाय कितने ही ऐसे हैं, जो जन सेवा के कितने ही काम मिल जुलकर पूर्ण करते हैं। एक समर्थ तन्त्र ऐसा भी खड़ा होना चाहिये, जो शासन तन्त्र की समता करने वाला ही नहीं, वरन् उससे भी अधिक उपयोगी एवं समर्थ धर्म तन्त्र को पुनर्जीवित करने के लिये कदम बढ़ाये और एक प्रचण्ड शक्ति को उसी काम में नियोजित करने का प्रयत्न करें, जिसके लिये बना गढ़ा और खड़ा किया गया था।

करने योग्य अनेकों कार्य हैं, पर उनमें सर्वप्रथम शिक्षा को महत्त्व दिया जाना चाहिये। सन्त नामधारी तो अगणित हैं, पर जो वस्तुतः कर्म से सन्त हैं, उनमें से प्रत्येक को यह समझाया जाना चाहिये कि ७० प्रतिशत अशिक्षितों के अपने देश को यदि वस्तुतः समृद्ध बनाना है तो समृद्धि की जड़ शिक्षा को सींचा जाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चाहिये। पूरे समय के विद्यालय चलना भी कठिन नहीं है, पर सुविधा के समय वाली बाल-संस्कार शाला और नर नारियों की प्रौढ़ पाठशालायें तो सरलतापूर्वक चल सकती हैं। इन तीनों को एक स्थान में एक ही व्यक्ति चला सकता है। नारियों के लिये मध्यान्होत्तर का, पुरुषों के लिये रात्रि का और बच्चों के लिये गर्मियों में सवेरे-शाम का और जाड़ों में सबेरे का समय उपयुक्त हो सकता है। एक रिटायर व्यक्ति भिन्न-भिन्न समय में चलने वाली इन पाठशालाओं को सम्भाल सकता है। दो या तीन सेवाभावी मिल सकें, तो एक गाँव का नये सिरे से जीर्णोद्धार हो सकता है।

विचारशील लोग यह कहने लगे हैं कि नाम के लोभी लोग अपने नाम का ढिंढोरा पिटवाने के लिये यदि नये मन्दिर न बनायें, जो टूट-फूट कर खण्डहर होने जा रहे हैं, उन्हीं का जीर्णोद्धार करा दें तो अपने धर्म पर अपयश लदने वाला कलंक धुल सकता है, भले ही धर्मात्मा कहलाने की ध्वजा न फहरायें। ठीक इसी प्रकार जो मन्दिर शिक्षा संस्थानों में बदले जाने योग्य हैं, उनमें थोड़ा फेर बदल करके शिक्षा संस्था बना दी जाये तो उसका परिणाम बहुत ही श्रेयस्कर हो सकता है। कितनी ही पाठशालायें नाम मात्र के मरम्मत खर्च में बन सकती हैं। राजस्थान और मध्य प्रदेश की रियासतें चली जाने से ढेरों संख्या में टूटे-फूटे किले और मरण की सांस लेते हुये मन्दिर बने हुये हैं, उनकी देखभाल का खर्च सरकार के जिम्मे पड़ता है। सरकार जनता के कर से चलती है। इन इमारतों का शिक्षा सम्वर्धन, स्वास्थ्य संरक्षण आदि अविज्ञात प्रयोग अन्यत्र भी हुये होंगे।

अच्छा हो फूट जाने से पहले जिनने मन्दिर, धर्मशालाऐं बनवाई थीं, वे अब उन्हें शिक्षा प्रचार के लिए दे दें और अब तक जो पुण्य न कमा सके उसे अब चलते-चलते उपार्जित कर लें।

समाज में अनेकों समुदाय अनेक प्रकार के उपयोगी कार्यों में लगे हैं। अब आवश्यकता एक ऐसा समुदाय उभारने, बनाने चलाने की है, जो देश का पिछड़ापन दूर करके उसे सच्चे अर्थों में प्रगतिशील बनाये और अशिक्षित गाँव के अधिकांश बच्चे पढ़ने जाने लगें। यही क्रम शेखावटी क्षेत्र में हर वर्गों में चलाया गया। सभी गाँवों में प्राथमिक स्कूल, चल पड़े। आगे बढ़ते हुये वे मिडिल स्कूल और हाईस्कूल बने। एक कदम और उठा तो उसी आन्दोलन के अन्तर्गत संगरिया नामक गांव कई विषयों में कई कॉलेज खुल गये। ऐसे ही प्रयोग आगरा में बाबा दूधाधारी और बाँदा जिले में स्वामी प्रेमानन्द जी कर चुके हैं। उनकी भाग-दौड़ के बलबूते शानदार कॉलेज खड़े हो गये। देश में अन्यत्र भी ऐसे ही प्रयास वृक्षारोपण, नशानिवारण, कुरीति उन्मूलन, गृह उद्योग जैसे आन्दोलनों के निमित्त होने लगें तो उन निर्माणों की कुछ उपयोगिता बन पड़ने की एक नई शुरूआत हो सकती है।

यहाँ शेखावटी के स्वामी केशवानन्द का स्मरण अनायास ही हो आता है। वे गाँव के एक घर से एक मुट्ठी अन्न संग्रह करने के लिये धर्म-घट रखवाते थे। महिलाओं की सहज उदारता से वे सभी धर्म-घट चलने लगे। उसकी बिक्री के पैसे से एक अध्यापक रखा गया, जो ग्रामीण बच्चों का अध्यापन कर, उन्हें सुयोग्य बनाने का कार्य करता था।

प्रतिभावान लोग अग्रिम पंक्ति में खड़े होंगे तो पीछे चलने वालों की भी कमी न रहेगी। सन्त बाबाओं के अच्छे खासे मठ मन्दिर बन गये। उनमें जमीन जायदादें लग गईं। चढ़ावे चढने लगे। ऐसी दशा में कोई कारण नहीं कि युग शिल्पियों का एक समुदाय आगे न आये। अपनी जैसी प्रकृति के अन्य लोगों को सहचर बनायें तो कहने लायक काम कर सकने वाली सृजन सेना खड़ी न हो जाये।

एक घटना इसी सम्बन्ध में समर्थ गुरु रामदास की आती है। पहले उन्होंने प्रस्ताव समर्थ सम्पन्नों के सामने रखा, पर उनने जब कोई समुचित उत्तर न दिया तो उन्होंने ग्रामीण गरीबों से एक-एक मुट्ठी अनाज संग्रह करने की योजना बनाई। गाँव-गाँव कच्ची मिट्टी और ग्रामीण संगतरासों से उल्टी-सीधी हनुमान जी की मूर्तियाँ गढ़ाईं। उनके वस्त्र आभूषण कहाँ से आवें ? सिन्दूर पोत कर प्रतिमा की स्थायी पोशाक बना दी। निर्माण सघन छाया वाले पेड़ों के नीचे कराये, जहाँ दिन में व्यायामशाला और रात को कथा वार्ता का, शिक्षा का अध्यापन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रवचन जैसा क्रम चलता। इस प्रकार प्रायः सात सौ आश्रम चल पड़े। देखने में एक बड़ा पेड़, नीचे हनुमान जी की कच्ची मठिया, उसमें सिन्दूर से पुती प्रतिमा, आस-पास पाठशाला, सत्संग, प्रवचन और व्यायामशाला के सुनिश्चित स्थल। निर्माण कार्य में लगे श्रम की बचत इस प्रकार हो गई कि स्वामी जी तसला फावड़ा लेकर आगे चलते। गाँव वालों को पता चलता तो दूसरे लोग भी सहायता के लिये दौड़ पड़ते और उस निर्माण में पूरा उत्साह से श्रमदान करते। छुट-पुट साधन की जरूरत पड़ती तो उसे भी जहाँ-तहाँ से लाकर पूरा कर देते। इस प्रकार एक दो वर्षों में ही निर्माण कार्य पूरा हो गया। साल में एक दिन स्वामी जी पहुँचते और जनता में प्राण फूँकते। शेष दिनों उसी गाँव के प्रतिभाशाली व्यक्ति उस कार्यक्रम को क्रमबद्ध रूप से चलाते रहते।

इन्हीं महावीर मन्दिरों के माध्यम से शिवाजी को स्वतन्त्रता संग्राम के लिये पर्याप्त मात्रा में सैनिक, शस्त्र तथा राशन मिलता रहा और समर्थ ने पहली पंक्ति में रहकर शिवाजी के माध्यम से स्वतन्त्रता संग्राम चलाया।

भारत के धर्म तन्त्र में असंख्य गुण हैं। उसका तत्वदर्शन विश्व भर में सबसे श्रेष्ठ और बुद्धिसंगत है। उस क्षेत्र में काम करने वालों की संख्या भी इतनी है जिसकी तुलना टिड्डी दल से की जा सकती है। किन्तु खराबी एक ही है कि प्रतिगामी, आलसी और दुर्व्यसनी लोगों की भरमार हो गई है। फलतः साधु ब्राह्मण वर्ग को भी जो सम्मान मिलता था, वह अब तिरोहित हो गया।

कोई जमाना था जब साधु ब्राह्मण को एक समग्र संस्था माना जाता था। उनका भरपूर सम्मान होता था और दान दक्षिणा के नाम पर उनके हाथों में पैसा देकर निश्चिन्त हो जाते थे कि इसका श्रेष्ठतम उपयोग सार्वजनिक कार्यों के लिये होगा। वे करते भी यही थे। औसत भारतीय से भी घटिया अपना निर्वाह व्यय रखते थे और जो कुछ दान दक्षिणा में मिलता था उसे सार्वजनिक सेवा में लगा देते थे। उन दिनों सार्वजनिक सेवा के नाम पर अन्य प्रवृत्तियाँ चलती थीं। पर सर्वोपरि प्रमुखता शिक्षा को दी जाती थी। प्रत्येक ऋषि के स्थाई आश्रम में गुरुकुल आरण्यक चलते थे और जिन्हें आश्रम नहीं बनाने होते थे, वे अपने छात्रों को लेकर भ्रमण के लिये निकल जाते थे। धर्मशालाये इसी निमित्त बनी होती थीं। उनमें निर्वाह के साधन अन्न वस्त्र भी रहते थे। साथ. चलने वाले विद्यार्थी भी पढ़ते थे और स्थायी ग्रामवासियों के बीच रहकर ऐसी व्यवस्था बनाते थे कि पाठशाला, व्यायामशाला आदि की—कथा कीर्तन की नियमित व्यवस्था बन पड़े। जब वहाँ रचनात्मक कामों की जड़ जम जाती थी, तब वे अगले प्रवास के लिये भ्रमण करते थे।

तीर्थ स्थानों में गुरुकुल आरण्यक रहते थे और मध्यवर्ती साधु ब्राह्मण अपने समुदाय को लेकर प्रवास कार्यक्रम पर शिष्यों समेत निकल जाते थे। विद्यार्थी पढ़ते भी थे। विभिन्न स्थानों की प्रथा, परिपाटी स्थिति समस्या समझते थे। उन्हें सम्भालते सुधारते थे। साथ ही स्थानीय लोगों में ऐसी प्रवृत्तियाँ उभारते थे, जो वहाँ के लोगों के लिये आवश्यक होती थीं। यही कारण था कि जहाँ भी सन्त ब्राह्मणों के पड़ाव पड़ते थे वहाँ की जनता अपने को सौभाग्यवान मानती थी और उन अतिथियों का सामर्थ्य भर सत्कार करती थी। चल प्रवासों की परम्परा के कारण ही उन ऋषि ब्राह्मणों के निवास आश्रम नहीं मिलते। तीर्थ स्थानों में जहाँ विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था थी, वहाँ आश्रमों के पर्ण कुटियों जैसे ध्वंसावशेष पाये जाते हैं। प्रचारकों के लिये विश्व विद्यालयों की व्यवस्था नालन्दा, तक्षशिला जैसे थोड़े ही स्थानों में थीं। राजा महाराजा धनिकों ने जब मुख मोड़ा तो मध्यवर्ती संघाराम बिहार विद्यालय बनने और चलने लगे।

पुरातन काल में शिक्षा ऊँची कक्षाओं की तो नहीं होती थी। साक्षरता से कुछ ही अधिक ज्ञान सर्व साधारण को प्राप्त होता था पर उसी प्रशिक्षण के साथ जीवनचर्या में आदर्शवादिता सुव्यवस्था के सभी तत्व जुड़े रहते थे। जिनके कारण शिक्षार्थी साधारण पढ़े-लिखे नहीं वरन् व्यक्तित्व की दृष्टि से उत्कृष्ट स्तर के होते थे और उनकी प्रतिभा देखते ही बनती थी।

राज्याश्रय के विद्यालय तो जहाँ-तहाँ ही थे पर साधु और ब्राह्मण वर्ग ने यह उत्तरदायित्व अपने कन्धे पर उठाया था। वे घोषणा करते थे कि 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः' हम पुरोहित राष्ट्र को जागृत और जीवन्त बनाये रखेंगे। वस्तुतः उनने उस वचन को निभाया और कर भी दिखाया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज हम शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ गये हैं। स्कूल कॉलेज की भरमार है, उनकी मात्रा बढ़ती भी जाती है। किन्तु उनकी बढ़ोत्तरी उस अभाव की पूर्ति नहीं कर पा रही है, जिसमें उत्कृष्ट स्तर के नागरिक निकलें। अपनी निज की स्वार्थ साधना की उपेक्षा करते हुये सामुहिक उत्कर्ष के लिये प्राण-पण से प्रयत्न करें। कहते हैं कि "घोड़ी की पूँछ लम्बी होती है तो अपनी मक्खियाँ मारती हैं।" दूसरों के किसी काम उसकी पूंछ नहीं आती। आज के उच्च शिक्षित अपने ही आमोद-प्रमोद, ठाट-बाट बढ़ाते हैं। यह भूल ही जाते हैं कि देश के कितने व्यापक क्षेत्र में बुरे स्तर का पिछड़ापन छाया हुआ है। उसे दूर करने के लिये अपनी प्रतिभा और सम्पदा का उपयोग करें। ऐसे लोगों का विद्वान होना सम्पन्न या प्रतिभावान होना समुदाय की दृष्टि से किसी काम नहीं आता। वे अपना ही घर भरते हैं और अपनी ही शौक मौज तक सीमित रहते हैं। यह आधुनिक शिक्षा का माहौल है, जिसमें व्यक्तिवाद ही पनपा है। सामूहिकता का भाव नहीं जगा। समाज को ऊँचा उठाने के लिये इतने शिक्षितों के होते हुये भी कोई कहने लायक काम नहीं बन पड़ रहा है। उनकी योग्यता का लाभ अधिक से अधिक उनका परिवार उठाता है। समाज को विशेषतया पिछड़े समाज को उनकी वरिष्ठता का लाभ कदाचित ही मिल पाता हो, जबकि पुरातन काल में थोड़े से साधु और ब्राह्मण ही निजी स्वार्थों की तिलांजलि देकर निरन्तर समाज की ही चिन्ता में निरत रहते थे और विभिन्न उपचारों द्वारा लोगों में व्यक्तिगत रूप से धर्म परायणता और सामूहिक रूप से सेवा साधना का भाव भरा संचार करते थे। इसी का सत्परिणाम था कि देश हर दृष्टि से ऊँचा उठा और समस्त विश्व को ऊँचा उठाने में सहायता कर सका। इसे कहते हैं शिक्षा के साथ विद्या का समन्वय।

शिक्षा मनुष्य को बहु, बहुश्रुत और बहुपठित बनाती है। इससे उसका मस्तिष्क बलिष्ठ होता है। तर्क करने और अपने पक्ष का प्रतिपादन करने की क्षमता विकसित होती है। भले ही वह सर्वथा गलत ही क्यों न हो। शिक्षा मनुष्य को चतुर बना सकती है। धूर्त भी। किन्तु विद्या की प्रकृति निराली है, वह सिद्धान्त, आदर्श और औचित्य का समर्थन करती है। भले ही उससे अपना या अपनों को प्रत्यक्षतः नुकसान ही क्यों न होता हो ? सत्य जीतना चाहिये व्यक्ति हारे तो भले ही हारे।

सतयुग की वापिसी का हमें स्वप्न देखना चाहिये और उसे सार्थक करके दिखाना चाहिये। इसका मात्र एक ही उपाय है कि साधु ब्राह्मण परम्परा को पुनर्जीवित किया जाय और उसका पुरातन उत्तरदायित्व शिक्षा और विद्या के सम्मिश्रण से उन्नति को उस शिखर तक पहुँचाना चाहिये, जिस पर कि वह पुरातन काल में रहता रहा है।

वंश के हिसाब से ब्राह्मण जाति की संख्या अन्यान्यों से कम नहीं है। देश में साधु भी इतने हैं, जितने कि सृष्टि का आदि काल से लेकर अब तक कभी नहीं रहे। पर उनका वंश और वेश ही शेष रह गया है। आदर्श और उद्देश्यों का समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य निर्वाह का स्मरण तक नहीं रह गया है। जिन्हें साधु या ब्राह्मण सच्चे अर्थों में कहा जा सके, उन्हें चिराग लेकर ढूँढ़ना पड़ेगा और वे उंगलियों पर गिनने लायक संख्या में खोज-बीन के उपरान्त जहाँ-तहाँ मिल सकेंगे। वर्तमान समय की ऐसे चरित्र और ज्ञान की कसौटियों पर खरे उतरने वाले लोक सेवियों की आवश्यकता है, जो लोगों को देवी देवताओं में न उलझाकर शिक्षा और विद्या के उत्कर्ष में अपने आपको खपा सकें। उनकी कार्य पद्धति तो सरल है। शिक्षा और विद्या का महत्त्व इतना अधिक है कि उससे अगणित तर्कों, तथ्यों, उदाहरणों को प्रतिभाओं के जनमानस में बिठाया जा सकता है। किसी अनाड़ी से भी पूछा जा सकता है कि बिना शिक्षा प्राप्त किये क्या आज तक कोई किसी महत्त्वपूर्ण दिशा में अग्रसर हो सकने में समर्थ हुआ है ? ऐसे उदाहरण ढूँढें न मिलेंगे किसी कूप मण्डूक ने बिना ज्ञान और अनुभव का सहारा लिये, मानवी गुण गरिमा का अभ्यास किये बिना प्रतिष्ठा और प्रशंसा का पात्र बना है। प्रगति के पथ पर आगे बढ़ा हो। किसी कथा पुराण के कहने की आवश्यकता नहीं। आज के अपने समीपवर्ती क्षेत्र में ही ऐसे अगणित उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं- कि मनुष्य का महत्त्व समझने वाले के लिये रोटी से कम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। ऐसी दिव्य सम्पदा यदि किसी को घर बैठे बिना खर्च के प्राप्त होती है तो उसे ठुकराने वाला कोई अभागा ही हो सकता है। इस दुर्भाग्य से बचने, अवसर को न ठुकराने के लिये थोड़े से कथनीय कथन से ही किसी को समझाया या सहमत किया जा सकता है।

कार्य कहाँ से आरम्भ किया जाय ? इसकी एक हलकी-सी झलक यहाँ भी मिलती है। तथाकथित सन्तों, धर्म जीवियों को धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाने और अपनाने के लिये सहमत किया जाये। इसके लिये यह सरल है क्योंकि पारिवारिक उत्तरदायित्वों से वे पहले ही मुक्ति पा चुके हैं। एकाकी व्यक्ति के लिये ब्राह्मणोचित निर्वाह की न कभी कम पड़ी है और न कभी पड़ेगी। घरेलू चिन्तायें न होने से वे अधिक समय तक लगातार काम भी कर सकते हैं और अपने सन्तपन को प्रशंसनीय आदरणीय एवं अनुकरणीय बना सकते हैं जब कि इन दिनों का निठल्लापन प्रत्यक्ष न सही परोक्ष रूप से उन्हें अवश्य अखरता होगा।

यदि उस समुदाय को बदलना और उसमें से थोड़े भी निकाल सकना सम्भव न हो तो गृहस्थों और पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त लोगों से सम्पर्क साधा जा सकता है। अनेक लोग ऐसे भी हैं, जिनकी पारिवारिक, आर्थिक स्थिति ऐसी है कि उनके बिना कमाये भी घर का काम चल सकता है। जिन गृहस्थों के पीछे बहुत बड़े उत्तरदायित्व नहीं हैं, वे अपने स्त्री, बच्चों को शान्तिकुंज में पढ़ाने के लिये रहने के लिये छोड़ सकते हैं। शक्ति पीठें भी २४०० हैं। उनमें भी कर्मठ और लगनशील कार्यकर्त्ताओं की ही माँग है। अनख उनसे लगता है जो निठल्ले रहना चाहते हैं और परिश्रम करने के नाम पर बहानेबाजी बनाना चाहते हैं।

अपना देश बहुत बड़ा है। उसमें धार्मिक संस्कारों की परम्परा भी है। इसमें साधु ब्राह्मणों का सम्मान भी चला आता है। ऐसी दशा में वेष और वंश से आगे बढ़कर अपनी चरित्र निष्ठा, सेवा भावना और लगन के आधार पर उस खाली स्थान की पूर्ति कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र तलाश करने और तात्कालिक साधन जुटाने के लिये उन्हें उस तरह नहीं भटकना पड़ेगा जैसा कि दूसरे लोग यहाँ से वहाँ भागे-भागे फिरते हैं और तिरस्कृत होते हैं। उन्हें निश्चित, निर्धारित और रुचिकर काम मिल सकता है। पर शर्त एक ही है कि स्वयं सेवक की तरह नम्रता और काम को छोटा-बड़ा न समझकर अपनी तत्परता का परिचय दें। योग्यता कम, सेवा शून्य, अहंकार बादल जितना और सम्मान तथा सुविधाओं की बढ़ी-चढ़ी मांग ही उनके व्यक्तित्व को हेय बनाती है और कोई उपयोगी काम नहीं करने देती है।

अनेकों की निजी स्थिति ऐसी है, जो बहुत दौड़-धूप करने पर भी पेट भरने जितना ही कमा पाते हैं। आलसी, प्रमादी और लगन रहित भी नहीं हैं। जिनमें सीखने की एक सूझ-बूझ और प्रतिभा भी है पर साहस के अभाव में कोई मार्ग-दर्शक परामर्शदाता न मिलने के कारण इस दिशा में कदम नहीं बढ़ा पाते कि घर का मोह छोड़कर धर्म धारणा को नव जीवन प्रदान करने के लिये कदम आगे बढ़ा सकें। यदि इन दुष्प्रवृत्तियों ने पूरी तरह जकड़ न रखा हो तो अनेकों व्यक्ति ऐसे मिल सकते हैं, जो साधु ब्राह्मण परम्परा के रिक्त स्थान को भर सकें और ब्राह्मणोचित निर्वाह में सन्तोष करते हुये देश धर्म को अग्रगामी बनाने में लग सकें और अपने जीवन को हर दृष्टि से सफल सार्थक बना सकें। जिनने विवाह नहीं किये हैं, वे सदा के लिये भी इस महती आवश्यकता की पूर्ति में अपने को लगा सकें तो भी बूँद-बूँद जमा करने से घड़ा भर सकता है। परमार्थ के लिये पूरा समय दे सकने वाले देश भक्तों की अब बुरी तरह कमी पड़ती जाती है। लोग लोभ, मोह और संकीर्ण स्वार्थपरता की कीचड़ से उबरना नहीं चाहते। साधु ब्राह्मण परम्परा अब एक प्रकार से नष्ट हो चली है। उसे पुनर्जीवित करने के लिये प्रज्ञा अभियान ने प्राणपण से प्रयत्न किया है पर समय और वातावरण का प्रभाव ही कहिये कि लोग संकीर्ण स्वार्थपरता से एक कदम आगे नहीं बढ़ना चाहते। घर परिवार के बीच रहकर गया गुजरा जीवन जीते रहेंगे, किन्तु परमार्थ के लिये इस शर्त पर तैयार न होंगे कि सेवा साधना में संलग्न रहकर अपना और अपने साथ असंख्यों का कल्याण करें। मँहगाई, परिवार का अति विस्तार, हृदय की विशालता का सिकुड़ जाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जैसे और ऐसे अनेक कारण हैं जिनसे आदमी की हिम्मत टूटती है।

जो हो युग की माँग ऐसी जिसकी शर्त के लिये साधारण स्तर के भावनाशीलों को ही अपनी सुविधाओं और आवश्यकताओं में कटौती करके रुके हुये कार्य को धक्का लगाना पड़ेगा। भारी बोझ को किसी प्रकार मिल जुलकर उठाना ही होगा। जब सूर्य तारे चमकना बन्द कर देते हैं, तब मिट्टी के दीपक ही अपने को जलाकर अन्धेरी अमावस्या को दीपावली में बदलते हैं। अब इसी उदाहरण को चरितार्थ करने का अवसर है।

अच्छा होता जो लोग राजनैतिक नेतृत्व के लिये आर्थिक बड़प्पन के लिये अथवा धर्म ध्वजी बनने के लिये अपनी प्रतिभा और सामर्थ्य साधनों को जी खोलकर खर्च करते हैं, वे गम्भीरतापूर्वक सोचते और जन जागृति की आवश्यकता पर ध्यान देकर उस ओर मुड़ते। पर चूँकि उसमें प्रत्यक्ष दृश्यमान लाभ या यश नहीं है इसलिये बड़ों के बड़प्पन के साथ जुड़ी हुई क्षुद्रता उन्हें कुछ करने नहीं देती। किन्तु इससे क्या ? हम सब भी तो आखिर मनुष्य हैं और सम्पन्नता न सही भाव गरिमा, उदार सेवा साधना को किसी मात्रा में ईश्वरीय अनुग्रह के रूप में साथ लेकर आये हैं। अपनी छोटी सामर्थ्य का सीमित क्षेत्र में नियोजन कर सकते हैं। थोड़ा-थोड़ा समय देकर नस बड़े काम को बहुत बड़ी सीमा तक सम्पन्न कर सकते हैं। जिसे छोटे जल कण भी मिलकर बड़ा सरोवर बनने की तरह सम्पन्न कर सकते हैं।

हम में से प्रत्येक को किसी प्रकार अपनी दैनिक व्यस्तता में से दो-चार घण्टे की कटौती करके इस कार्य के लिये नियोजित करनी चाहिये। यों देखा जाय तो समय किसी के पास भी इतना कम नहीं है कि वह सारे का सारा ही पेट और स्वार्थ के गर्त में समा जाय और युगधर्म को पूरा करने के लिये उसे सर्वथा न करना पड़े।

आठ घण्टा रोटी कमाने के लिये, सात घण्टा सोने के लिये, पाँच घण्टा घरेलू कामों के लिये नियोजित कर लेने के उपरान्त भी हर किसी के पास चार घण्टे का समय बचता है। इसमें से एक घण्टा उपासना के लिये लगा देने के उपरान्त कम से कम तीन घण्टे बचते हैं। उन्हें कोई भी भावनाशील व्यक्ति परमार्थ प्रयोजन के लिये खर्च कर सकता है। शिक्षा योजना को एक स्थान में एक व्यक्ति अपने बलबूते इतने ही समय में चला सकता है। फिर यदि दो सहयोगी और मिल जायें तब तो सोने में सुगन्ध की कहावत चरितार्थ होती है।

समुद्र मन्थन के साथ एक कछुए ने उतने बड़े आयोजन का भार अपनी पीठ पर उठाया था। एक शेष जी पृथ्वी का भार अपने शिर पर लिये फिरते हैं। एक अगस्त्य ने समुद्र सोख लिया था। एक परशुराम ने धरती को अत्याचारियों से विहीन कर दिया था। अकेले बुद्ध, अकेले गान्धी अपने-अपने समय में युग परिवर्तन की प्रक्रिया सम्पन्न करने में सफल हुये थे। फिर कोई कारण नहीं कि उसी से मिलती-जुलती काया और प्रतिभा के बीज सूत्र अपने अन्तराल में भरे रहने पर हम इतना भी न कर सकें कि समय की माँग में अपने हिस्से का थोड़ा बहुत भार वहन कर सकें।

इन दिनों अनास्था संकट अपनी चरम सीमा पर है। कर्त्तव्य धर्म को एक प्रकार से भुला ही दिया गया है। मानवी गरिमा को सार्थक बनाने वाले परमार्थ प्रयोजनों की ओर से लोगों ने मुँह मोड़ लिया है। ऐसी दशा में हम छोटे-छोटे रीछ वानर भी समुद्र पर पुल बाँधने जैसा दुस्साहस कर सकते हैं और दैवी अनुग्रह का अनुदान पाकर उसे सफल भी बना सकते हैं।

क्या करना चाहिये ? इस असमंजस में हमें अनेकों उपाय ढूँढ़ने और अनेक पगडण्डियों में भटकने की आवश्यकता नहीं है। शिक्षा के साथ विद्या का सम्मिश्रण जोड़ने वाले क्रिया कलाप ही अपने युग की असंख्य समस्याओं का हल कर सकते हैं। वस्तुतः अपने समय का एक ही संकट है। "आस्था संकट-दिशा विभ्रम" इसका समाधान कुबेर जितने साधन और इन्द्र जितने वैभव का संचय कर लेने पर भी नहीं निकल सकता। दुर्बुद्धि उन उपलब्धियों का दुरुपयोग ही करेंगी और अपने तथा दूसरों के लिये संकट ही खड़े करेगी। इसके उदाहरण हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। सर्व समर्थ देश अपने साधनों को विश्व युद्ध की तैयारी में और दुर्बल देशों पर आधिपत्य जमाने में झोंक रहे हैं। यदि उनने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सद्बुद्धि अपनाई होती और उपलब्ध साधनों को सुविधा सम्वर्धन में लगाया होता तो यह दुनिया इस स्थिति में न रहती जिसमें कि आज है। पर किया क्या जाये ? संकीर्ण स्वार्थपरता और आदर्शों के प्रति अनास्था मनुष्य को इस कदर जकड़ लिया है कि वह विनाश के कुचक्र रचने के अतिरिक्त और कुछ सोच ही नहीं पाता।

समस्या विश्वव्यापी है। इसे सुलझाने के लिये बड़े और व्यापक प्रयत्न करने होंगे। पर इसके लिये तथाकथित बड़े-बड़ों को आगे आने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये। हम अकेले ही आगे चलें और देखें कि पाप की तरह पुण्य में भी अपने स्तर का चुम्बकत्व होता है या नहीं। एक व्यक्ति सच्चे मन से किसी काम को आदर्शों की छत्र छाया में कार्यान्वित करने के लिये आगे बढ़ता है तो उसी प्रकृति के अन्य सहयोगी भी साथ हो लेते हैं।

ईसाई मिशन का उदाहरण सामने है। उस समुदाय में पूजा पाठ का अब इतना प्रचलन नहीं रहा। सप्ताह में एक दिन गिरजाघरों में थोड़ी बहुत उपस्थित होती है, पर उस समुदाय की आस्था है कि ईसाई धर्म के सिद्धान्तों की छत्रछाया में अधिकाधिक लोगों को लाने में भलाई है। इसका परिणाम यह हुआ कि दो सहस्राब्दियों से भी कम समय में दुनिया का एक तिहाई भाग उस धर्म-अन्तर्गत आ गया। इस प्रयास में मात्र एक लाख पादरी संसार भर में कार्यरत हैं और उनने पिछड़े समुदायों को आगे बढ़ाने का एक कार्य हाथ में लिया है। फलतः सफलता का अनुपात देखते हुये आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। दूसरी और हम हैं जो साठ लाख की संख्या में होते हुये भी अपने देश की परिधि में शिक्षा और सदाशयता का विस्तार न कर सके उलटे लोगों को भ्रम जंजाल में फँसाकर उनका दोहन करते रहे। परिस्थितियाँ बताती हैं कि हमें जो करना चाहिये था, उसमें हम कितने पिछड़ गये ?

राजनैतिक स्वतन्त्रता से हमें सुरक्षा और आर्थिक भौतिक प्रगति की आशा बँधी है। किन्तु नैतिक-बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति का दायित्व अभी उसी वर्ग के कंधे पर है, जो अपने को लोक सेवी वर्ग का कहते हैं। इस वर्ग को पिछडी स्थिति में नहीं रहना चाहिये। अपने दायित्वों से कतराना नहीं चाहिये। अन्यथा देश की वास्तविक प्रगति हो नहीं सकेगी और भारत से सद्ज्ञान का सूर्य उदय न हुआ तो संसार में अन्यन्त्र अन्धकार ही बना रहेगा। धर्मतन्त्र को प्राणवान और जीवन्त बनाने की जिम्मेदारी लोगों की ही है भले ही वे साधनों की दृष्टि से पिछड़े ही क्यों न हों।

प्रबुद्ध वर्ग धर्मतन्त्र को सँभाले

वैयक्तिक एवं सामाजिक प्रगति की सारी सम्भावना इस बात पर टिकी हुई है कि उनकी विचारणा एवं कार्य-पद्धति सही हो। किसी दीन-दुःखी की तात्कालिक सहायता तो कुछ सामयिक सहारा देकर की जा सकती है, पर किसी की कोई भी समस्या दूसरों के सहयोग से स्थायी रूप से हल नहीं हो सकती, रोगी का रोग दवा से नहीं संयम से दूर हो सकता है। डाक्टर कितनी ही अच्छी औषधि दे पथ्य, परहेज न रखने वाले मरीज की बीमारी लौट लौटकर फिर आती रहेगी। अन्न-वस्त्र देकर गरीबी का कोई हल नहीं हो सकता है। किसी को भोजन देकर उसकी तात्कालिक क्षुधा मिटाई जा सकती है, पर ऐसे भूखे-नंगे को सदा कौन भोजन देगा ? उनकी गरीबी तो तभी दूर होगी जब वे उद्योग और परिश्रम द्वारा कुछ कमाने लग जायें। यही बात अन्य सब समस्याओं के सम्बन्ध में है। मनोविकार ही समस्त आपत्तियों और अभावों की जड़ है, उनका समाधान करना है तो लोगों की विचार पद्धति को ही सुधारना होगा। किसी के विचार सुधार देने, उसकी विचारणा सही कर देने से बढ़कर और कोई पुण्य परोपकार हो नहीं सकता। इससे बड़ा कर्म और कोई नहीं। ज्ञान-दान से, ब्रह्म-दान से बढ़कर और कोई बड़ा पुण्य इस धरती पर है नहीं, इसे जो ब्राह्मण आजीवन करते रहने का व्रत लेते थे, वे धरती के देवता भूसुर माने जाते थे। आज इस वर्ग का अभाव हो गया है इस अभाव की पूर्ति के लिये प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति को अपने आपको समर्पित करना चाहिये। आज ऐसे ही भावनाशील व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो ब्रह्म कर्म में—जनजागरण में संलग्न होकर अपना और समस्त विश्व का कल्याण कर सकने में समर्थ हो सकें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनेक आपत्तियों एक कारण—इन दिनों हर एक आपत्तियों और उलझनों में ग्रसित है। व्यक्तिगत जीवन में हर मनुष्य बीमारियों, चिन्ताओं में, आर्थिक तंगी में, शत्रुता में घिरा पड़ा है, पारिवारिक जीवन में अविश्वास सन्देह, आशंका, उच्छृंखलता, दुराव, अवज्ञा, कृतघ्नता और असहयोग का दौर-दौरा पूरे वेग पर है। सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार, चोर बाजारी, रिश्वतखोरी, ठगी, बेईमानी, गुण्डागर्दी, विलासिता, नशेबाजी, कामुकता, स्वार्थपरता जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ जोरों से बढ़ रही हैं। राजनीति में गुटबन्दी, आपाधापी, भाई-भतीजावाद बढ़ रहा है और भाषा, प्रान्त आदि के बहाने ग्रह-युद्ध जैसा छिड़ा हुआ है। धार्मिक क्षेत्र में त्याग-तप, बलिदान, संयम, सदाचार का तो पता भी नहीं चलता, सिद्धि चमत्कार तथा ढोंग पाखण्डों का पर्वत बना खड़ा है। महन्त और मठाधीशों की, पण्डा और पुरोहितों की पाचों उंगली घी में हैं। जो जन-कल्याण के लिये अपना पसीना बहाये ऐसा धर्मात्मा कहीं ढूँढ़े नहीं दिखता। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में एक देश दूसरों के शोषण, दमन के लिये कूटनीतिक षडयन्त्र रचने और जाल बिछाने में लगा हुआ है। हर क्षेत्र में जबकि दुर्बुद्धि का साम्राज्य छाया हुआ हो, अन्याय, अपराध, आलस्य, असंयम, आवेश जैसे दोष दुर्गुण बढ़ रहे हों, तब संसार में अशान्ति और विग्रह के बढ़ने की ही आशा की जा सकती है। प्रत्येक क्षेत्र में जड़ जमाये बैठी हुई और दिन-दिन बढ़ रही दुष्प्रवृत्तियाँ संसार को नरक बनाये हुये हैं। यदि यही स्थिति बनी रही तो वह दिन दूर नहीं जब हम अणु-आयुधों द्वारा सामूहिक आत्म-हत्या करें और चिर संचित मानव सभ्यता को समाप्त कर दें। ऐसी विषय परिस्थितियों के युग में जन्मे प्रत्येक विचारशील व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह इस विभीषिका का हल करने के लिये यदि कुछ कर सकता हो तो उसे जरूर कर दे।

भौतिक प्रगति पर्याप्त नहीं—निस्सन्देह भौतिक प्रगति की दृष्टि से यह अभूतपूर्व युग है। पर दुर्भाग्य इसी बात का है कि इसने वैयक्तिक एवं सामाजिक सुख-शान्ति को बढ़ाया नहीं घटाया है। बाह्य जीवन के साथ-साथ आन्तरिक जीवन के विकसित न होने का यही परिणाम है। जीवन दो पहिये की गाड़ी है। एक को भौतिक दूसरे को आध्यात्मिक कहते हैं, प्रचुर पदार्थों से ही सुख नहीं मिलता, उत्कृष्ट भावनाओं की भी उसके लिये आवश्यकता पड़ती है। इन दिनों यही भूल हुई है। सारा ध्यान भौतिक प्रगति पर दिया गया और उत्पन्न सुविधाओं का उपयोग शारीरिक, सांसारिक सुख बढ़ाने में किया गया। फलस्वरूप लोभ बढ़ा, विलास बढ़ा, अहंकार बढ़ा, प्रपंचना बढ़ी और साथ ही संकीर्णता भी सुरसा की तरह विस्तृत हो गई।

कमजोर गधा, हाथी की अम्बारी का भार वहन नहीं कर सकता। भौतिक सुविधाओं का शरीर सुख के लिये अनियमित उपयोग किया जाता रहे तो कुछ ही समय में शरीर टूट जायेगा। इसी प्रकार शिक्षा एवं विचारणा का लाभ यदि अपने अहं का पोषण करने में लगा दिया जाय तो मनःस्तर भी चकनाचूर हो जायेगा। विज्ञान ने हमें भौतिक प्रगति दी, पर ज्ञान पिछड़ गया। यदि सुख साधनों के साथ-साथ मनुष्य का भावनास्तर भी ऊपर उठा होता तो आज चारों ओर जो नारकीय क्लेश, कलह, द्वेष-दुर्भाव रोग शोक दिखाई पड़ रहे हैं न उपजे होते। उपलब्ध साधनों का यदि स्वस्थ रीति से—स्वस्थ प्रगति के लिये उपयोग हुआ होता तो हम इस धरती पर स्वर्ग का अवतरण कर सकने में समर्थ हो गये होते।

दिशा बदले तो युग बदले—जितना धन जितना श्रम, जितने साधन जितनी बुद्धि अवांछनीय कार्यों, विचारों एवं परिस्थितियों के सृजन में आज लगी हुई है, उसकी दिशा बदल जाय और उसका उपयोग सृजनात्मक दिशा में हो जाये तो इस संसार का कायाकल्प ही हुआ दिखाई देगा। संसार में लगभग ४० करोड़ लोग सैन्य प्रयोजनों में लगे हुये हैं। लड़ने वाले सैनिक अस्त्र-शस्त्र तथा सैन्य-सामग्री बनाने वाली, यह इतनी बड़ी जनसंख्या और उस पर हर वर्ष खर्च होने वाली ७०००००००००० धन राशि यदि गरीबी, बेकारी, अशिक्षा, बीमारी, गन्दगी एवम् अव्यवस्था दूर करने में लग जाय तो उसका परिणाम चमत्कार जैसा हो सकता है।

सिनेमा, नाटक, अभिनय, नृत्य साहित्य व रेडियो आदि विचार निर्माण साधनों का उपयोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि कामुकता जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ाने में न लगे, वरन् सदाचार, कर्त्तव्य पालन, आदर्शवाद परस्पर स्नेह, सहयोग करने जैसी धर्म भावनाओं के प्रसारण में लग जाये तो जन भावना में कुछ ही वर्षों के भीतर देवत्व परिलक्षित होने लगेगा। जितना पैसा तम्बाकू, शराब जैसे अभक्ष्य में खर्च किया जाता है यदि वह खाद उत्पादन में लग जाये तो संसार में भूखमरों का नाम भी सुनने को न मिले।

अपराधों में लगे हुये व्यक्ति—चोर डाकू, ठग, हत्यारे, व्यभिचारी स्त्री-पुरुष यदि अपनी प्रतिभा का लोक मंगल की दिशा में मोड़ दें तो हर दुष्ट पुरुष वाल्मीकि, हर दुराचारिणी स्त्री आम्रपाली बनकर संसार में आनन्द एवं उल्लास की परिस्थिति पैदा कर सकते हैं। सारे अखबार, सारे प्रेस यदि विश्व बन्धुत्व, सदाचार एवं आदर्शवाद के अभिवर्धन में अपनी शक्ति लगा दें तो समस्त संसार में रहने वाले तीन अरब लोगों के मस्तिष्क उत्कृष्ट सोचने और शरीर उत्कृष्ट करने लग जायें । शासन तन्त्र यदि ईमानदारी से लोक सेवा को ही अपना लक्ष्य बना लें तो इतने नेताओं और कार्यकर्त्ताओं को पाकर जनता का भाग्य जाग पड़े। धर्म-तन्त्र का इतना विशाल कलेवर, जिसमें भारत जैसे गरीब देश में ही ५६ लाख धर्मजीवी व्यक्तियों का निर्वाह होता है—यदि जन भावनाओं के मानवीय कर्त्तव्यों एवं आदर्शों के प्रशिक्षण में लग जायें तो सर्वत्र धर्म की ध्वजा फहराती दिखाई पड़ें।

बढ़ी-चढ़ी भूल—भौतिक दृष्टि से आशाजनक प्रगति होते हुये भी उसका परिणाम निराशाजनक देखकर सहसा यही बात सामने आती है कि कहीं कोई बहुत बड़ी भूल हो रही है और यदि वह भूल न सुधारी तो भौतिक प्रगति के साथ-साथ विपत्तियाँ भी बढ़ती चली जायेंगी। अणु अस्त्रों के बाहुल्य ने आज चिरसंचित मानवीय सभ्यता के जड़ मूल से विनाश का खतरा उत्पन्न कर दिया है। अपराधों की अभिवृद्धि तूफानी तेजी के साथ हो रही है। एक-दूसरे का सहयोग देने के स्थान पर लोग परस्पर खून के प्यासे बन रहे हैं। 'मुख में राम राम बगल में छुरी' का जैसा व्यापक छल प्रपंच बढ़ चला है, उसने आत्मीयता के सारे सम्बन्धों की जड़ें खोखली कर दी हैं, अब परिवार के सदस्य भी एक-दूसरे को आशंका और अविश्वास की दृष्टि से देखने लगे हैं। श्रद्धा और विश्वास उदारता और आत्मीयता के सह सम्बन्ध अब एक काल्पनिक तथ्य बनते चले जा रहे हैं। धार्मिकता और आस्तिकता का कलेवर कागज के बने विशालकाय रामलीला के रावण जेसे बने खड़े हैं, पर उनके भीतर भी पोल और खोखलपन के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

इन विषम परिस्थितियों से मनुष्य जाति का भविष्य दिन-दिन अन्धकारमय बनता चला जा रहा है। वैज्ञानिक और आर्थिक प्रगति के द्वारा जो सुख शान्ति बढ़नी चाहिये थी वह तो दूर, उलटे स्वास्थ्य, सन्तुलन और सद्भाव का दिन-दिन अभाव होता चला जा रहा है। यह स्थिति ऐसी ही बनी रही, इसी ढर्रे पर चलती रही, तो इससे अगले दिनों और भी अधिक भयानक दुर्दिन देखने पड़ सकते हैं।

परिवर्तन सम्भव है—प्रश्न यह है कि क्या यह ढर्रा बदला जा सकता है ? क्या पतनोन्मुख प्रवृत्तियों को रचनात्मक दिशा में मोड़ा जा सकता है ? क्या सम्भावित अशुभ भविष्य का स्वर्ग विहान में परिणित किया जा सकता है ? क्या नरक की परिणतत स्वर्ग में हो सकती है ?

उत्तर विश्वासपूर्वक 'हाँ' में दिया जा सकता है, शर्त केवल इतनी भर है कि समाज का प्रबुद्ध वर्ग, समय और परिस्थितियों को बदलने की अपनी जिम्मेदारी समझे और उसके लिये कटिबद्ध हो।

नर-पशु धरती के भार—किसी समाज का प्राण उसका प्रबुद्ध-वर्ग होता है। जिनकी विचारणा और भावना आदर्शवाद से प्रभावित है ऐसे लोग निस्सन्देह संस्था में बहुत थोड़े होते हैं, पर जो होते हैं, वे इतने सशक्त रहते हैं कि यदि वे कुछ करने के लिये सचमुच उठ खड़े हों तो चमत्कार उपस्थित कर दें।

जन समूह में ऐसे लोगों का बाहुल्य रहता है, जो रोटी कमाने और प्रजनन के फलस्वरूप कन्धों पर आने वाली जिम्मेदारियों को वहन करने में अपनी छोटी-सी सामर्थ्य का सारा ढाँचा खपा देते हैं। एक तो वैसे ही मँहगाई का जमाना फिर आवश्यकताओं की नित नई बढ़ोत्तरी इस पर भी स्वल्प योग्यता, स्वल्प साधन, बेचारों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का कचूमर इसी मै निकल जाता है। बच्चों की संख्या बढ़ती चलती है और वजन रुई से लदे गद्दों के वर्षा में भीगने की तरह बढ़ता चलता है। एक तो इतना भार काफी होता है, दूसरे योग्यता कम रहने से उसे उठाने के साधन नहीं जुटा पाते, तीसरे मन में कोई आदर्शवादी लक्ष्य न होने से उनके लिये देश समाज की बात सोच सकना कठिन होता है। मस्तिष्क की छोटी परिधि घूमती है तो केवल शरीर मात्र इन्द्रिय तृप्ति या परिवार-पोषण के दायरे में चक्कर लगाकर समाप्त हो जाती है। बाहुल्य ऐसे ही लोगों का रहता है। इन्हें जीवित मानव प्राणी मात्र कहा जा सकता है। अन्य प्राणियों के शरीर और मन उसी परिधि में हैं, इन्हीं प्रयोजनों को पूरा करने में वे भी अपने जिन्दगी के दिन पूरे करते हैं। उनकी इच्छा आकांक्षायें भी इतने ही दायरे में सीमित रहती हैं।

वह वर्ग जनसंख्या की गणना तो बढ़ाता है पर उसका देश व समाज की दृष्टि में कोई उत्साह वर्धक योग नहीं मिलता। सच तो यह है कि यह वर्ग अनेक प्रकार की समस्यायें बढ़ाता रहा है। गरीबी, बेकारी, बीमारी, कुरीतियाँ दुष्प्रवृत्तियाँ इसी वर्ग में पैदा होती हैं और पनपती हैं। उसको तो यथास्थान बनाये रहने में भी समाज एवं शासन को बड़ा श्रम करना पड़ता है, ऐसे लोगों से यह आशा नहीं की जा सकती कि वे समय की दिशा बदलने में कोई योगदान कर सकेंगे।

नर पिशाचों से क्या आशा—जनता का दूसरा वर्ग वह है जो बुद्धि एवम् शक्ति की दृष्टि से समर्थ है, पर उसकी आकांक्षायें अवांछनीय दिशा में चल पड़ी हैं। अधिक भोगने, अधिक जोड़ने, अधिक दर्प दिखाने की आतुरता से उन्हें सुख मिलता है। इसलिये अपनी क्षमता का लाभ तो अपने लिये सुरक्षित रखते ही हैं दूसरों के अधिकारों पर भी आक्रमण करते हैं और छल प्रपंच, शोषण अपहरण की नीति अपनाकर किसी को भी सताकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। इसी वर्ग के कुछ लोग हिम्मत की कमी के बजह से खुँख्वार तो नहीं हो पाते पर कृपण और निष्ठुर परले सिरे के होते हैं। जो कमाया जाये अपने या अपने बेटे, पोतों के लिये जमा रहे, जो शौक-मौज हो सकते हैं उसे स्वयं उठायें या अपने बेटे पोतों के लिये उपस्थित करें। समाज नामक कोई तत्व उसके सामने नहीं होता दुनियाँ कल मरती है तो आज मर जाये, उन्हें तब तक किसी की कुछ चिन्ता नहीं होती जब तक कि कोई सीधा प्रभाव उन पर न पड़ता हो। पत्थर जैसे कठोर हृदय के कृपण और दुष्टता के आदी, क्रूर, कुकर्मी यद्यपि देखने में अलग-अलग किस्म के हैं पर उनका आन्तरिक स्तर एक ही है। सीमित स्वार्थ ही उनके लिये सब कुछ है, खुदगर्जी ही उनकी उपास्य है। ईश्वर के सामने भी जायेंगे तो वहाँ से भी कुछ मतलब गाँठने की ही तरकीब निकालेंगे। अपनी शक्ति और सामर्थ्य का कोई अंश किसी उत्कर्ष के लिये लगा सकने की न तो उन्हें इच्छा होती है और न वैसा साहस ही कर पाते हैं। इस वर्ग की संख्या तौ बहुत नहीं होती है, पर जितनी भी होती है, हर किसी के लिये समस्या एवं सिर दर्द बनी रहती है।

उपर्युक्त दो वर्गों में से पहले को नर-पशु और दूसरे को नर-पिशाच कहा जा सकता है। इनके द्वारा समाज का भार बढ़ता और पतन होता है। इसलिये जहाँ तक किसी सुधारात्मक प्रक्रिया का सम्बन्ध है, उनसे कोई आशा नहीं की जा सकती। समस्यायें तो इन्हीं वर्गों के द्वारा उत्पन्न होती हैं, उलझनें तो वे ही पैदा करते हैं, अवांछनीयता पनपती और बढ़ती इन्हीं वर्गों में से है। पहले वर्ग को यदि थोड़ा अधिक विचारशील बनाया जा सके और दूसरे वर्ग को उदंडता न करने के नियन्त्रण में रखा जा सके तो बहुत हुआ समझना चाहिये।

संसार की आशा का केन्द्र—तीसरा छोटा वर्ग वह है, जिसे प्रबुद्ध कहना चाहिये। जिसकी विचारणा पाशविक आकांक्षाओं और सीमाओं से आगे बढ़कर देश, धर्म, समाज एवम् संस्कृति के बड़े दायरे में काम करती है। जिसके मन में अपने समाज, अपने समय की कठिनाईयों को समझने और उनके हल करने के लिये हलचल उठती है उन्हें प्रबुद्ध कहना चाहिये। ऐसे लोग ही ईश्वर, धर्म, पुण्य और परमार्थ की बात सोचते हैं और उन्हीं के मन में देश, धर्म की बातें आती हैं। इन्हें उदारचेता, दूरदर्शी, विवेकशील या विशाल हृदय भी कहते हैं। जीवनयापन की समस्यायें उनके सामने भी होती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं पर वे इन्हें गौण समझते हैं। जितने से शरीर यात्रा का निर्वाह हो जाय, उतने में सन्तोष कर लेते हैं। जितने कम समय में गुजर का प्रबन्ध हो सके उतना उसमें लगाकर शेष सब कुछ लोक मंगल के लिये लगाते रहते हैं। भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं का परित्याग कर वे एक सामान्य स्तर का नागरिक बना रहना पर्याप्त समझते हैं। गरीबी उन्हें अखरती नहीं, वरन् सन्तोष देती है कि वे देश के करोड़ों नागरिकों की तरह ही रह रहे हैं। उनकी महत्त्वाकांक्षा तो अपना उज्ज्वल चरित्र दीपक की तरह प्रकाशमान बनाने की रहती है, जिससे दूसरों को आवश्यक प्रकाश मिल सके।

यह प्रबुद्ध वर्ग मानव जाति का प्राण है। प्राण सो गया तो शरीर निष्क्रिय हो गया। प्राण रोगी हो गया तो शरीर के रुग्ण होने में कोई सन्देह नहीं, प्राण निकल गया तो शरीर की मृत्यु निश्चित है। प्रबुद्ध वर्ग जिस समाज का सतेज, समर्थ और सक्रिय है, उसे उन्नति के उच्च शिखर पहुँचते देर नहीं लगती। जिस समाज का प्रबुद्ध वर्ग सोचता तो बहुत है पर करता कुछ नहीं, वहीं निष्क्रियता का मरघट जैसा सन्नाटा छाया रहता है। जहाँ प्रबुद्ध लोग धर्म का ढोंग बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। वहाँ की जनता मूढ़, दिग्भ्रान्त एवम् अनास्थावान बन जाती है। जहाँ प्रबुद्ध लोगों की संख्या नहीं रहती, वहाँ पाप और पतन का भयानक अन्धकार छा जाता है और सार्वजनिक विनाश की काली घटायें मंडराने लगती हैं। अतएव सदा से किसी राष्ट्र या समाज की वास्तविक शक्ति एवं सम्पन्नता वहाँ के प्रबुद्ध लोगों से ही आँकी जाती रही है।

इतिहास के उज्ज्वल नक्षत्र—भारत का प्राचीन इतिहास गौरवपूर्ण है। इस गौरव का एक मात्र आधार यहाँ के महा मानव, परोपकारी एवं भक्त धर्म सेवक एवम् दूरदर्शी लोग ही रहे हैं। यदि अपन इतिहास में से हम वशिष्ठ, भारद्वाज, अत्रि, याज्ञवल्क्य, जमदग्नि, नारद, विश्वामित्र आदि ऋषियों को, हरिश्चन्द्र, शिवि, कर्ण, दधिचि, मोरध्वज, युधिष्ठिर जैसे धर्मनिष्ठों को, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, रामकृष्ण, विवेकानन्द, रामदास, नानक, कबीर, गोविन्दसिंह जैसे सन्तों को, गाँधी दयानन्द, राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र जैसे सुधारकों को, गोखले तिलक, लाजपतराय, मालवीय, दास, सुभाष, नेहरू, पटेल जैसे स्वतन्त्र सेनापतियों को, आजाद, बिस्मिल, भगतसिंह, सावरकर, अरविन्द, जैसे क्रान्तिकारियों को लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, सरोजनी, गान्धारी, सीता, अनुसूया जैसी महिलाओं को निकाल दें, तो फिर भारत का न कुछ इतिहास रहेगा और न गौरव। कोई देश दौलत, शिक्षा, कला-कौशल आदि के आधार पर समृद्ध नहीं होते, समृद्धि का स्रोत तो प्रबुद्ध लोगों का व्यक्तित्व, होते हैं। जहाँ वे हैं, वहाँ सब कुछ है—जहाँ वे नहीं वहाँ कुछ नहीं, यही समझना चाहिये।

आज की विषम परिस्थितियों का सुधार एवं परिवर्तन तभी सम्भव है, जब प्रबुद्ध वर्ग का जो अभाव दीख रहा है उसकी पूर्ति हो सके। यदि किसी के दिल में वस्तुतः देश, धर्म, समाज संस्कृति की दुर्दशा पर दुःख होता हो और यदि वस्तुतः उसकी आकांक्षा इस विषमता को बदल देने की हो तो उसे अपनी सारी शक्ति लगाकर देश में प्रबुद्ध वर्ग उत्पन्न करने की—जो है उसे संगठित एवं सक्रिय बनाने की चेष्टा करनी चाहिये। यदि ऐसा हो सका तो समझना चाहिये कि अनेक क्षेत्रों में बिखरी हुई एक-से-एक बढ़कर विपन्नताओं में से प्रत्येक का हल ढूँढ़ लेना सम्भव हो गया।

संसार में सदा से ही यह क्रम चला आ रहा है कि प्रबुद्ध व्यक्ति जिस दिशा में पिल पड़े उधर ही जादू जैसा चमत्कार उत्पन्न हो गया। बुद्ध अपने शिष्यों के साथ अपने समय के वातावरण को बदलने के लिये उठ खड़े हुये तो उस समय का तान्त्रिकी भ्रष्टाचार देखते-देखते तिरोहित हो गया। स्वार्थ और विलास में आकण्ठ मग्न जनता में हजारों लाखों भिक्षु-भिक्षुणी निकल पड़े। विलासिता पर लात मारकर उन्होंने संन्यास की प्रव्रज्या ली और भारत ही नहीं सारे एशिया को बौद्ध धर्म में दीक्षित कर दिया। ईसा के प्रबुद्ध शिष्यों ने दो हजार वर्ष के भीतर संसार की एक तिहाई जनता को ईसाई धर्म में दीक्षित कर दिखाया। गाँधी ने हजार वर्ष की गुलामी से दीन-हीन बने भारत में अपने सौ-दो-सौ विश्वस्त साथियों के द्वारा ऐसी प्रचण्ड हलचल उत्पन्न कर दी कि समर्थ अंग्रेजों को पलायन करते ही बना। मार्क्स के अनुयायियों ने संसार के एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तिहाई भाग पर अपने विचारों का शासन स्थापित कर लिया और बाकी के मस्तिष्क पर वह विचारधारा छाई चली जा रही है।

प्रबुद्ध वर्ग का महत्त्व—संसार में जितनी भी राज-क्रान्तियाँ, समाज-क्रान्तियाँ, धर्म-क्रान्तियाँ, अर्थ-क्रान्तियाँ, हुई हैं, उनमें थोड़े से प्रबुद्ध लोगों के ही व्यक्तित्व काम करते रहे हैं। वैज्ञानिक अन्वेषणों में इसी वर्ग का सारा श्रेय है। स्वार्थी और संकीर्ण व्यक्ति अपने शोक, मौज की उच्छृंखलता में लगा रहेगा, उसे एकाग्रता और तन्मयतापूर्वक किसी खोज में अपने को खपा देने की भावना ही कब उठेगी ? सैनिकों में जब भय और लोभ का परित्याग कर देश भक्ति की भावना प्रबल होती है, तभी वे किसी युद्ध में विजयी हो पाते हैं। अन्यथा अच्छे शस्त्र, साधन होते हुये भी कायर सेना के पाँव उखड़ने में देर नहीं लगती। जिस क्षेत्र में भी देखिये प्रबुद्ध व्यक्तित्व ही चमत्कार उत्पन्न कर रहे दिखाई पड़ते हैं।

मनुष्य में भी शक्ति भरी पड़ी है। उसका खर्च आमतौर से इन्द्रिय तृप्ति और संकीर्ण स्वार्थपरता के सीमित दायरे में होता रहता है। मनुष्यों के मस्तिष्क तृष्णा और वासना के गोरख-धन्धे में उलझे रहते हैं। कौन कितना भोग या जोड़ सका यह दूसरी बात है, अधिकांश तो इनमें से असफल ही रहते हैं, जो भोगने और जोड़ने में थोड़े सफल भी हो जाते हैं अन्ततः उनके हाथ भी कुछ रहता नहीं, वे उपलब्धियाँ इधर-उधर ही बिखर जाती हैं। यदि कोई विवेकवान् व्यक्ति जीवन दर्शन को समझ ले और यह सोचे कि उसे शरीर यात्रा की नगण्य आवश्यकताओं की ही पूर्ति करनी है, यह थोड़े से समय और श्रम से हो सकती है, फिर बची हुई शक्तियों को संकीर्णता की मूर्खता में बर्बाद करने की अपेक्षा उन्हें महत्तर उद्देश्य के लिये नियोजित क्यों न कर दिया जाये, तो निश्चित ही उसे यही उचित मालूम पड़ेगा। जिसने इस औचित्य की ओर कदम बढ़ाया उनकी यात्रा सफल ही हुई है।

सर्वोपयोगी साहस—पिछले स्वाधीनता संग्राम में जिन लोगों ने अपने छोटे-से छोटे स्वार्थों का परित्याग कर जेल यात्रा तथा दूसरे त्याग एवं साहस भरे काम किये थे, उनमें से कितने ही राष्ट्र के मूर्धन्य नेता बने और वह श्रेय प्राप्त कर सके, जो संकीर्णता की परिधि में पड़े रहने पर वे कदापि प्राप्त न कर सके होते। गाँधी, पटेल नेहरु, दास, मालवीय आदि मामूली वकील ही तो थे। उसी पेशे को छाती से चिपकाये बैठे रहते तो अन्त तक एकाध कोठी कमरा बना लेने और दस बीस हजार रुपये बच्चों के लिए छोड़ जाने में ही सफल होते। कबीर, रैदास, दादू, तुलसी आदि अपने पैतृक पेशे को छोड़ने में हिचकिचाते तो वे निर्धन वर्ग के नगण्य व्यक्ति ही बने रहते। प्रबुद्ध व्यक्ति प्रारम्भ में त्याग तो अवश्य करते हैं पर किसी भी दृष्टि से वे कुछ खोते नहीं। जो खोते हैं उससे मिलता अधिक है।

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता प्रबुद्धता के उत्पादन एवं अभिवर्धन की है। जिनमें इस प्रकार की उदारता एवं विशालता का बीज मौजूद हो उस सींचना आवश्यक है। नर-रत्नों का उत्पादन एटम कारखाने बनाने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। यदि देश में आदर्शवादी लोक सेवकों की एक सेना खड़ी की जा सके तो देखते-देखते वातावरण बदल जायेगा, वे जमाने को पलटने के लिये खड़े होंगे तो जन मानस से भरी हुई युक्तियाँ, कुरीतियाँ, संकीर्णताओं एवं स्वार्थपरताओं को देखते-देखते तोड़-मरोड़ कर रख देंगे। जन मानस में जब सद्भावनायें और आदर्शवादिता की लहरें उठेंगी, तो जिन परिस्थितियों को आज विभीषिका समझा जा रहा है जो सम्भाले नहीं सम्भल रही हैं, देखते-देखते हल हो जायेंगी।

युग का आह्वान एवं आमन्त्रण—यह पंक्तियाँ इस उद्देश्य से लिखी जा रही हैं कि यदि इन्हें पढ़ने वाले के भीतर आदर्शवादिता व धार्मिकता, आध्यात्मिकता का कोई अंश विद्यमान हो तो वह उसे अधिक सुविकसित करने का प्रयत्न करे। जीवन की सार्थकता कहाँ है यह सोचे और यदि यह समझ में आ जाये कि अपने लिये महापुरुषों की दिशा अपनाना उचित है तो फिर उसे थोड़े साहस से काम लेना चाहिये। पारमार्थिक कार्यों के किये बिना किसी की महानता जाग्रत नहीं हो सकती। जो सोचते बहुत हैं पर करते कुछ नहीं, वे एक प्रकार के पागल हैं। श्रेष्ठता पर यदि आस्था है तो आस्था को परिपक्व करने के लिये उस मार्ग पर चलना भी चाहिये। आज मानव जाति अपने भाग्य का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निपटारा करने के केन्द्र बिन्दु पर खड़ी है, उसे विकास या विनाश में से एक मार्ग चुनने का अविलम्ब फैसला करना है। अब प्रतीक्षा का अवसर नहीं रहा। स्थिति वहाँ आ पहुँची है, जिसमें इधर होना है या उधर। ऐसी विषम बेला में हमारी प्रबुद्धता यदि जाग्रत हो सके तो उसे आवश्यक प्रतीक्षा किये बिना आज ही चरितार्थ करना चाहिये। कुछ करने के लिये आज ही कटिबद्ध होना चाहिये।

इस दिशा में पहला कदम यही हो सकता है कि हम अपनी तृष्णा पर काबू प्राप्त करें और आलस्य को, भीरुता को कुचल दें। गुजारा जितने में हो सकता हो, उतनी ही कमाई पर्याप्त मानी जाये। आठ घण्टा सोने में, आठ घण्टा कमाने में, चार घण्टा इधर-उधर में और चार घण्टा लोक-मंगल के कार्यों में लगाने की व्यवस्था बना लेनी चाहिये और उस पर दृढ़तापूर्वक चलते रहना चाहिये। इतना हर स्थिति का व्यस्त और अभावग्रस्त मनुष्य भी कर सकता है। पूरा समय पेट के लिये खर्च कर डालने पर हम नर-पशु की संज्ञा में ही गिने जा सकते हैं। हर विचारशील को इस कलंक से बचना चाहिये और अपने दैविक क्रम में लोक मंगल के लिये समय लगाते रहने की निश्चित व्यवस्था कर लेनी चाहिये।

जिनके पास गुजारे के लिये पैतृक सम्पत्ति मौजूद है, उनके लिये तो और अधिक कमाई करने की बात सोचना अनुचित है। ईश्वर ने उन्हें यह सुविधा दी ही इसलिये है कि गुजारे के बारे में निश्चिन्त रहकर शेष परमार्थ कार्य में लगा दें। यदि वे ऐसा नहीं करते तो ईश्वर के सम्मुख अपराधी ही सिद्ध होंगे। जिनके बच्चे कमाने खाने लगे, जिन्हें पेन्शन मिलती है उन्हें भी अपना सारा समय अपनी प्रबुद्धता को सार्थक बनाने में लगा देना चाहिये। जिनके विवाह नहीं हुये हैं, जिनकी कम सन्तानें हैं, उन्हें घरेलू झंझट अधिक बढ़ाने से पूर्व सौ बार सोचना चाहिये और विचारना चाहिये कि क्या वे निरर्थक नहीं हैं, जंजाल बढ़ाने की अपेक्षा जीवन का सदुपयोग किसी उत्कृष्ट मार्ग में चलकर ही कर सकते हैं ? विवेक उनको यही सलाह देगा कि मानवता की, विराट् ब्रह्म की सेवा की जिन घड़ियों में अनिवार्य आवश्यकता पड़ रही है, उन घड़ियों में उनका स्थान कहाँ है और उन्हें क्या करना चाहिये ?

समृद्ध बनने की लिप्सा छोड़ें—जिनके पास जितना समय शक्ति, सामर्थ्य, प्रतिभा, ज्ञान तथा वैभव हो उन्हें उसे विश्व-मानव की अमानत समझकर उसी के लिये समर्पण करने का संकल्प करना चाहिये। जिस समाज में हम रह रह हैं, जिसमें हमारे बच्चों को रहना है उसे उत्कृष्ट एवं सुव्यवस्थित बनाना हमारे अपने अपने बच्चों के हित में हैं। दुष्ट और दूषित वातावरण में रहकर हम समृद्ध एवं सुसंस्कृत होते हुये भी सुखी नहीं रह सकते। उसके विपरीत यदि आस-पास का वातावरण सज्जनता एवं सद्भावना पूर्ण रहे तो अपेक्षाकृत अभावग्रस्त परिस्थितियों में रहकर भी आनन्द एवं उल्लास भरा जीवन जिया जा सकता है। वस्तुतः दूरवर्ती स्वार्थों की दृष्टि से भी यह उचित ही होगा कि हम अपनी शक्तियों का एक भाग लोकमंगल का—नव निर्माण का प्रयोजन पूर्ण करने में लगावें।

युग-परिवर्तन का श्रीगणेश इस प्रकार होगा कि जिनकी अन्तरात्मा में भगवान ने देशधर्म की बात सोचने समझने की दूर दृष्टि दी हो, वे अपना जीवन लक्ष्य भोग से बदलकर त्याग कर लें। समृद्ध बनने की महत्त्वाकांक्षा को पैरों तले कुचल दें और प्रबुद्ध बनने में गर्व-गौरव अनुभव करने लगें। इच्छा हो तो अवसर सहज ही मिल जाता है। जो बात महत्त्वपूर्ण प्रतीत होती है, उसे करने के लिये न फुरसत का अभाव रहता है और न सुविधा का। आज मूढ़ जनता की ही नहीं प्रबुद्ध लोगों की स्थिति भी यह है कि वे लम्बी-चौड़ी योजनायें बनाने, वाद-विवाद एवं आलोचना करने में तो बहुत शिर खपाते हैं, पर रचनात्मक कार्य करने के लिये जब समय आता है तो बगलें झाँकते हैं, दाँत निपोरते हैं और तरह-तरह के बहाने बनाते हैं। इस स्थिति को बदला जाना चाहिये। भावनाशील लोगों को आदर्शवाद की चर्चा करते रहने की परिधि तोड़कर अब कुछ करने के लिये आगे आना चाहिये। यदि यह किया जा सका तो समय को तेजी से पलटता हुआ हम अपनी आँखों के सामने ही देखेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लगन क्या नहीं कर सकती ?—एक लगनशील व्यक्ति अपने अनेक साथी सहचर पैदा कर सकता है। जुआरी, शराबी, व्यभिचारी जब अपने कई साथी पैदा कर सकते हैं, तो प्रबुद्ध व्यक्ति वैसा क्यों नहीं कर सकते ? डाकुओं के छोटे-छोटे गिरोह जब एक बड़े क्षेत्र को आतंकित कर सकते हैं, तो सही लोगों का संगठन क्या कुछ नहीं कर सकता ? लगन की आग बड़ी प्रबल है, यह जिधर भी लगती है दावानल का रूप धारण करती है। युग निर्माता महापुरुष अकेले ही चले हैं, लोगों ने उनका विरोध प्रतिराध भी खूब किया फिर भी वे अपनी लगन के आधार पर अद्‌भुत सफलता प्राप्त कर सके। यही मार्ग हर लगनशील के लिये खुला पड़ा है। जमाना खराब है, लोग बुरे हैं, कोई हमारी सुनता नहीं आदि शब्दों के पीछे कार्यकर्त्ता की निराशा, उदासीनता और लगन की कमी की ही झाँकी मिलती है। करने वालों ने पत्थर पर पेड़ उगाकर दिखाये हैं। बालू से तेल निकाला और ऊसर में खेती की है। लगनशील व्यक्ति क्या नहीं कर सकता ? हर स्थिति है हर काम कर सकता है ?

जिनमें लगन हो उन्हें जन जागरण के लिये अपनी सामर्थ्य और जो कुछ कर सकना सम्भव हो वह करने की ठान ठाननी चाहिये। बातों का युग बहुत पीछे रह गया, अब कार्य से ही किसी व्यक्ति के झूँठे या सच्चे होने की परख की जायेगी। हमें कार्य क्षेत्र में उतरना चाहिये और अपनी सेवा श्रृंखला का धर्म तन्त्र को माध्यम बनाकर आगे बढ़ाना चाहिये।

भावनाओं पर प्रभाव—जन मानस को प्रभावित करने के दो ही मार्ग हैं—एक राजनीति दूसरा धर्म तन्त्र। दोनों ही की अपनी-अपनी सीमा और उपयोगिता है। शासन व्यवस्था, अर्थनीति, अपराधों का दमन, शिक्षा, कानून यातायात, वैज्ञानिक शोध बड़े निर्माण आदि भौतिक जीवन को प्रभावित करने वाले कार्य राजनीति की सीमा में आते हैं। राजनेता इन प्रयत्नों में जुटे रहते हैं, उनका क्षेत्र भी यही है। धर्मतन्त्र भावनाओं का स्पर्श करता है, आस्थायें स्थापित करता है और उन पर चलने की प्रेरणा करता है। ब्रह्मचर्य पालन, उपवास, उपासना आदि का निर्देश राजकीय कानूनों द्वारा नहीं दिया जा सकता, यह भावनाएँ तो धर्म तन्त्र के द्वारा ही पैदा की जा सकती हैं। चोर को पकड़ने और जेल पहुँचाने में राजतन्त्र सफल हो सकता है पर उसे धर्मात्मा सन्त के रूप में वाल्मीकि और अंगुलिमाल की तरह बदल देने की क्षमता धर्मतन्त्र में ही हो सकती है।

राजतन्त्र बनाम प्रजातन्त्र—राजनेताओं को आमतौर से कुटिलता, निष्ठुरता, मिथ्या प्रचार, दुराव आदि अनुपयुक्त आदर्शों का सहारा लेना पड़ता है। इसलिये जनता उसकी प्रतिभा का लोहा भले ही मानें पर भावना क्षेत्र में पथ-प्रदर्शक स्वीकार नहीं कर सकती। यह कमी धर्म नेताओं को पूरी करनी पड़ती है। मनुष्य में आदर्शवादिता के प्रति निष्ठा सद्‌गुणों के अभिवर्धन की साधना और सेवा सहयोग की सद्‌भावना का उभार धर्मतन्त्र के हीं माध्यम से हो सकता है। उसका विशालकाय ढाँचा बनाया ही इस प्रयोजन के लिये गया है।

राजनीति क्षेत्र में भौतिक आकर्षण अधिक होने से इस क्षेत्र कार्यकर्ताओं की कमी नहीं रहती। कमी-कमी तो आवश्यकता से अधिक भी हो जाती है। आज उस क्षेत्र में इतनी भीड़ है कि भरी हुई रेलगाड़ी की तरह नई सवारियों के लिये उसमें घुस सकने तक की गुंजाइश नहीं है। धर्मतन्त्र का मंच खाली पड़ा है। आवश्यकता भी इसी के सदुपयोग की है। प्रबुद्ध व्यक्तियों को इसी माध्यम को अपनाना चाहिये और युग की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करने के लिये इस क्षेत्र में साहसपूर्वक प्रवेश करना चाहिये।

धर्म-तन्त्र का दर्शन एवं आवरण इतना व्यवस्थित एवं सांगोपांग है कि उसके आधार पर मानवीय अन्तःकरण को आदर्शवादिता की पृष्ठभूमि में सफलतापूर्वक विकसित किया जा सकता है। इस धर्म दर्शन को सही रूप में अपनाने पर जनसाधारण की मनोभावनायें उत्कृष्टता की रीति-नीति अपनाने के लिये तत्पर की जा सकती हैं। आज की मूल-भूत समस्या मानवीय आस्थाओं से भौतिकता की—पाशविकता की निकृष्टतायें विलग कर आध्यात्मिकता को उत्कृष्टता से संलग्न करने की है। इसके लिये धर्म तन्त्र के अतिरिक्त और कोई दर्शन, आदर्श, माध्यम, वाद समर्थ हो ही नहीं सकता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

निकृष्टता को उत्कृष्टता में बदलें—यह ठीक है कि आज धार्मिक क्षेत्र में गुण्डागर्दी का बोलबाला है। ढोंग पाखण्ड का विशालकाय आवरण बना खड़ा है। धूर्तों ने अपना वर्चस्व कायम कर धर्म को एक सस्ते व्यवसाय के रूप में परिणित कर लिया है। भोली जनता की श्रद्धा भावना की बुरी तरह शोषण हो रहा है और भ्रान्तियों के दल-दल में फँस जाने के अतिरिक्त और कुछ भी उसे मिलता नहीं है। इसी स्थिति को देखकर विचारशील लोग उस क्षेत्र में प्रवेश करने से कतराते हैं और दूर से ही नमस्कार करना उचित समझते हैं। पर विचारपूर्वक देखा जाये तो प्रतीत होगा कि इस प्रकार की उपेक्षा से काम चलने वाला नहीं है। विवेकशील लोगों को आगे बढ़कर सफाई करनी चाहिये। धूर्तों का वर्चस्व इसलिये है कि सच्चे और तेजस्वी लोग उस क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर रहे हैं। उत्कृष्टता के सामने धूर्तता ठहर नहीं सकती। चरित्रवान और मनस्वी लोग जब क्षेत्र में उतरेंगे तो उनकी तुलना में धूर्तता की कलई सहज ही खुल जायेगी और उनका पलायन एवं बहिष्कार होते देर न लगेगी। यदि सच्चे लोग उस क्षेत्र में प्रवेश ही न करें तो फिर मैदान उन्हीं शृंखलाओं के लिये खुला पड़ा रहेगा, जो गन्दगी और दुर्गन्ध से इस पवित्र मंच को घृणित बनाने में कुछ कमी नहीं रहने दे रहे हैं।

किसी वस्तु को बुरी-बुरी कहते रहने से कुछ काम नहीं बनता। उसकी स्थान पूर्ति के लिये अच्छी चीज उपस्थित करनी पड़ती है। शून्यता की स्थिति नहीं रह सकती। अच्छी न मिली तो लोग बुरी को अपनावेंगे। बुराई से विरक्ति उत्पन्न करनी हो ता अच्छाई सामने उपस्थित करनी चाहिये। धर्मक्षेत्र में चल रहे अनाचार से कुड़कुड़ाते तो बहुत लोग हैं पर उसका विकल्प प्रस्तुत नहीं करते, हमें विकल्प उपस्थित करना चाहिये। धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है, धर्मजीवी धर्मोपदेश अपना कार्यक्रम किस प्रकार निर्धारित करें और चलावें, उसका नमूना यदि लोगों के सामने रखा जाये तो भले-बुरे का, खरे-खोटे का अन्तर तुरन्त सामने आ जायेगा और लोग यह सहज ही निर्णय कर सकेंगे कि किसे अपनाया और किसे छोड़ा जाय ? आज जब कोई विकल्प है ही नहीं तो जो भेड़िया-धसान चल रही है, उसी से लोगों को काम चलाने और सन्तोष करने के लिये विवश करना पड़ता है।

निरर्थक झिझक दूर करें—सुशिक्षित और प्रबुद्ध व्यक्ति धर्म-क्षेत्र में उतरते हुये दो कारणों से कतराते हैं। एक तो यह है कि उन्हें जनता की निगाह में निठल्ले ढोंगियों की श्रेणी में हेय गिना जाने लगेगा। दूसरे उन्हें कर्मकाण्डों की टंट-घंट में बहुत-सा निरर्थक समय गँवाना पड़ेगा। यह दोनों आशंकायें थोड़ी गहराई में विचार करने पर निरर्थक सिद्ध हो जाती हैं।

कुछ समय पहले चरखा चलाना हेय माना जाता था, क्योंकि गरीब विधवायें, जुलाहे मजदूरनियाँ उसे कातती थीं। जो चर्खा कातता या वह उसी स्तर का गिना जाता था। पर जब गांधीजी ने चर्खा अपनाया और नेहरू, पटेल सरीखे बड़े आदमी उसे कातने लगे तो चर्खा गर्व-गौरव राष्ट्रीयता और देश भक्ति का प्रतीक बन गया। धर्म क्षेत्र में जब बुद्ध, शंकराचार्य, गांधी, सरीखे लोग आते हैं, मीरा, सुर, तुलसी, विवेकानन्द, रामतीर्थ जैसे ऊँचे व्यक्तित्व प्रवेश करते हैं तो कोटि-कोटि अन्तःकरण धार्मिक श्रेष्ठता से ओत-प्रोत हो जाते हैं और उस मार्ग का अनुसरण करते हुये अपन को कृतकृत्य मानते हैं। बुद्ध के शिष्यों में अशोक, आम्रपाली, अंगुलिमाल जैसे प्रभावशाली लोग भी थे। साधारणतया वे लोग धर्म परम्परा से प्रतिकूल जीवन जी रहे थे, उन्हें धर्म में कोई श्रद्धा न थी, पर उत्कृष्ट व्यक्तित्वों ने अपनी प्रबल छाप छोड़ी और प्रतिभाशाली लोगों को भी अपने साथ ले लिया। नेहरू न तो अहिंसावादी थे और न आस्तिक फिर भी वे गाँधी के व्यक्तित्व के आगे झुक गये और उनका दाहिना हाथ बनकर काम करने लगे।

धर्म क्षेत्र को आज हेय इसलिये समझा जाता है कि उसमें ओछे और अवांछनीय व्यक्तित्व भरे पड़े हैं। उन्होंने धर्म को बदनाम किया है। इतनी उपयोगी एवं उत्कृष्ट आस्था के प्रति लोगों को नाक-भौं सिकोड़ने पड़ रहे हैं। इस स्थिति को बदलने का एक ही उपाय है, कि बढ़िया लोग उस क्षेत्र में प्रवेश करें। इससे धर्म के प्रति फैली हुई अनास्था भी दूर होगी और उसे ढोंग न समझकर आस्थाओं का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रशिक्षण समझा जाने लगेगा। अवांछनीय व्यक्तित्वों का निराकरण भी तभी होगा, जब सही व्यक्तित्व अपना उचित स्थान ग्रहण कर उनकी निरुपयोगिता सिद्ध कर देंगे। यदि ऐसा न किया गया तो सट्टा बताने वाले गंजेड़ी बाबा और दक्षिणा बटोरकर स्वर्ग का पासपोर्ट देने वाले पुरोहित इसी प्रकार जनता को पथभ्रष्ट करते हुये उसका शोषण करते रहेंगे। सच्चे सन्त, सच्चे ब्राह्मण, सच्चे धर्मोपदेशक यदि पैदा न किये जा सके तो झूँठों और धूर्तों को उनके आसन से हटाया गिराया न जा सकेगा।

प्रचण्ड जन शक्ति का उपयोग—जनता की प्रचुर शक्ति धर्म प्रयोजनों में खर्च होती है। मन्दिर, मठों के नाम पर अरबों रुपया हर साल खर्च होता है, धार्मिक मेलों पर करोड़ों रुपयों की धन राशि खर्च होती है। ५६ लाख व्यक्तियों का निर्वाह इसी क्षेत्र में होता है। विशाल भवन और साधन विद्यमान हैं, इन सबका यदि रचनात्मक उपयोग हो सके तो धर्म की ध्वजा सारे संसार में फहराने लगे और उससे जनता का इतना बड़ा हित हो कि हर व्यक्ति धर्मानुयायी बनने में अपना गौरव अनुभव करने लगे। सार्वजनिक सेवा कार्यों के लिये एक-एक पैसा जुटाना मुश्किल पड़ता है, पर यदि हम धर्म का आधार लेकर आगे चलें तो भारत की धार्मिक जनता इन भावनात्मक नव-निर्माण रचनात्मक कार्यों में किसी प्रकार का आर्थिक अभाव न रहने दे।

गाँधीजी ने स्वराज्य की लड़ाई 'महात्मा' बनकर लड़ी थी। रामराज्य की स्थापना और गो-रक्षा की घोषणा उन्होंने की थी। कीर्तन और भजन को अपने आन्दोलन में सम्मिलित किया था। इस देश की नब्ज वे जानते थे, इसलिये उचित रीति-नीति अपनाकर वे स्वाधीनता संग्राम के विजेता बने। दूसरे नेता इस तथ्य का समझ न सके थे, इसलिये पत्तों पर डोलते रहे, गाँधी जी ने जड़ को पकड़ा और जादू की तरह निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ गये। राष्ट्र का भावनात्मक नव-निर्माण करने के लिये, बौद्धिक एवम् सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता पूर्ण करने के लिये हम धर्म तन्त्र के माध्यम से जितनी अच्छी तरह, जितनी सुविधा के साथ और जितने शीघ्र सफल हो सकते हैं, उतने और किसी प्रकार नहीं।

लोक शिक्षण के लिये धार्मिकता का सहारा लिया जाये

धर्म प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति निर्माण और परिवार तथा समाज निर्माण का कार्य जितनी अच्छी तरह सम्पन्न किया जा सकता है, उतनी अच्छी तरह अन्य किसी प्रकार नहीं। बुद्धि को प्रभावित करने वाले अनेक आधार मौजूद हैं—समाज शास्त्र, राजनीति, अर्थ शास्त्र आदि का सहारा लेकर व्यक्ति को कुछ भी समझाया जा सकता है पर अन्तःकरण की गहराई तक कुछ उतारना हो तो इसके लिये एक मात्र आधार अध्यात्म ही रह जाता है। वस्तुतः अन्तरंग को स्पर्श करने वाली सुधारने और ढलने की विद्या का नाम ही अध्यात्म है। इसके अतिरिक्त न तो आस्थायें बदली जा सकती हैं और न निष्ठायें प्रतिष्ठापित की जा सकती हैं। सो हमें इस आधार की महत्ता को हृदयंगम करना ही चाहिये और भावनात्मक नव निर्माण के लिये प्रधान रूप से उसी माध्यम को अपनाना चाहिये।

अर्थशास्त्र की दृष्टि से बूढ़े गाय बैल आदि जानवरों को जीवित रखना प्रत्यक्ष अर्थ हानि है। उन्हें कसाई द्वारा काटे जाने पर मांस की प्राप्ति और चारे तथा स्थान की बचत की जानी चाहिये। जहाँ धन मुख्य है, वहाँ उस पशु की अब तक की सेवा का कोई मूल्य नहीं, कृतज्ञता बरतने से हानि होती है तो हानि नहीं सहनी चाहिये भले ही कृतघ्न बन जाये। अर्थ शास्त्र यही प्रतिपादन करेगा। उसके अनुसार बूढ़े बेकार जानवर का काटना दया धर्म के कारण रोका नहीं जाना चाहिये। भौतिकवादी अर्थशास्त्र यही प्रतिपादित करता है। अर्थ विशेषज्ञों की यही सलाह रहती है। इस मान्यता के अनुसार ठीक वही व्यवहार माता-पिता के वयोवृद्ध हो जाने पर किया जाना चाहिये। हिटलर के जर्मनी और माओ के चीन में बहुत कुछ ऐसा हुआ भी है। अभी यह लुक छिपकर है। पीछे जब भौतिकवादी अर्थवादी आधार ही प्रबल हो जायेगा तो बूढ़ों के वध का भी वैसा ही प्रतिपादन होने लगेगा जैसे इन दिनों गाय, बैल आदि को काटने की बात का समर्थन किया जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मवादी मान्यतायें भौतिक आधार पर एक सीमा तक ही प्रतिपादित की जा सकती हैं। व्यक्ति का भौतिक स्वार्थ-रसास्वादन तो संयम, सदाचार सेवा से घटता ही है। भौतिकवादी मान्यताऐं जिसमें समाज शास्त्र, अर्थ शास्त्र राजनीति शास्त्र आते हैं। इन बातों का उथला समर्थन ही कर सकते हैं। त्याग बलिदान की बात बहुत जोर देकर नहीं कही जा सकती। जब भौतिकवादी मान्यतायें आत्मा का अस्तित्व ही नहीं मानती। ईश्वर, पर लोक, पुनर्जन्म, कर्मफल जैस प्रतिपादनों को अवैज्ञानिक कहती है और इस शरीर के साथ ही जीवन का अन्त मानती हैं फिर सुखोपभोग के लिये कुछ भी अनर्थ कर गुजरने से किसी को कैसे रोका जा सकेगा ? कानून की पकड़ से बचते हुये आदमी अपने शरीर सुख के लिये कुछ भी करने से क्यों चूकेगा ? उसे लोक कल्याण, सेवा धर्म, आत्म-सन्तोष, पुण्य परमार्थ, त्याग बलिदान के आदर्शों से सहमत कैसे किया जा सकेगा ? भौतिकवादी शास्त्र देश हित समाज व्यवस्था की बात का प्रतिपादन तो करते हैं पर यह समझ नहीं पाते कि व्यक्ति को देश भक्ति के लिये कष्ट सहने में अपना निज का क्या लाभ या क्या सुख है ? मनुष्य मूलतः व्यक्तिवादी है। सो उसे अपना लाभ पहले सूझता है। समाज का पीछे।

आत्मा का अस्तित्व न मानने वाला भौतिकवादी अन्तःप्रेरणा को विकसित कर स्वेच्छापूर्वक आदर्शवादी उत्कृष्टता की ओर किसी को उत्साहित नहीं कर सकता। उसके पास तो शासन सत्ता के वज्र नियन्त्रण द्वारा जनता से देशहित के लिये बलात् कुछ करा लने का ही एक शस्त्र रह जाता है। आदमी को गधे की तरह शासन के परवश बनाकर, उससे जबरदस्ती कुछ त्याग कराने की मजबूरी उपस्थित की जा सकती है। इसमें वह प्रकाश और उल्लास कहाँ जो स्वेच्छापूर्वक आदर्शों को अपनाने वाले के लिये सम्भव है।

इस तत्वदर्शन पर हमें हजार बार विचार करना चाहिये और इस निष्कर्ष पर सुनश्चित रूप में पहुँच जाना चाहिये कि व्यक्ति को ऊँचा उठा सकना और समाज में आदर्शवादी वातावरण उत्पन्न करना केवल धर्म और अध्यात्म के तत्व दर्शन द्वारा ही सम्भव है। सो हमारी समस्त गतिविधियाँ, समस्त शिक्षायें, समस्त योजनायें मूलतः धर्म की आधार भूमि पर प्रतिष्ठापित होनी चाहिये और जो कुछ प्रतिपादन करना है—जो प्रचलन करना हो उसकी पृष्ठभूमि धर्म और अध्यात्म ही होनी चाहिये। विश्व निर्माण के लिये, युग परिवर्तन के लिये प्रथम आवश्यकता भावनात्मक नव निर्माण की है। ज्ञान यज्ञ आन्दोलन इसी प्रयोजन के लिये चल रहा है। बौद्धिक क्रान्ति की प्रथम प्रक्रिया इसी उद्देश्य को लेकर अग्रगामी हो रही है जो हमें भूल नहीं जाना चाहिये। इस समस्त चिन्तन और क्रियाकलाप का ढाँचा धर्म और अध्यात्म को नींव पर ही खड़ा किया जाता है।

इस आधार को खोकर यदि भौतिक दृष्टि लेकर चल पड़ें तो सरकारी समाज कल्याण के ढकोसले की तरह हम भी विज्ञापन बाजी तथा कागजी कार्यवाही तक सीमित रह जायेंगे। योजनायें कितनी ही आकर्षक क्यों न हों उनको आगे धकेलने वाले लोग जब आदर्शहीन, स्वार्थी और संकीर्ण दृष्टिकोण के हों तो उनकी दृष्टि उस योजना से अधिकाधिक अपना लाभ लेने को होगी। इस विचित्रता में कोई योजना सफल नहीं हो सकती। कोई भी महान् कार्य, सदा आदर्शवादी आस्था लेकर चलने वाले लोग ही पूरा करते हैं। यदि इसी विशेषता का अभाव रहा तो फिर योग्यता, शिक्षा तथा कौशल कितना ही बढ़ा चढ़ा हो, वह व्यक्तिगत लाभ की ओर ही झुकेगा और वह समाज को हानि पहुँचाकर ही सम्भव हो सकता है। यह सब हम आँखों से देख रहे हैं। उसी आधार पर अपने मिशन का भी प्रतिपादन किया जाने लगा तो एक अलग लेबिल भले ही लगा लें अपनी गाड़ी भी उसी पटरी पर लुढ़कने लगेगी।

हजार बार कहा जा चुका है और अभी लाख बार और कहना पड़ सकता है कि व्यक्ति निर्माण और समाज निर्माण के लिये, आदर्शों की प्रतिष्ठापना के लिये हमें आध्यात्मिक आधार अपनाने के अतिरिक्त और इधर-उधर नहीं झांकना चाहिये। भौतिकवादी मान्यतायें तो कुछ दिन बाद बूढ़े गाय-बैलों की तरह बूढ़े मां-बाप को जहर देकर खाद के गड्ढे में दबा देने की योजना सामने रखने वाली हैं। वे जलाने या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गाड़ने से भी इन्कार करेंगी। जलाने में लकड़ी खर्च होती है और गाड़ने में जमीन रूकती है। दोनों ही तरीके आर्थिक दृष्टि से हानिकारक हैं। मरने वाले को गोबर के गड्ढे में सड़ने के लिये दाब देना ही ठीक है ताकि अच्छी खाद बन सके। हमें उन आधारों को भौतिक क्रिया कलाप तक ही सीमित रहने देना चाहिये, जहाँ आस्थाओं के—आदर्शों के—प्रतिपादन का प्रश्न हो वहाँ विशुद्ध रूप से आत्म विद्या का ही सहारा लेना चाहिये।

ज्ञान-यज्ञ का विस्तार भावनात्मक नव-निर्माण का प्रथम चरण है। इस आधार पर प्रभावित लोगों को ही रचनात्मक और संघर्षात्मक प्रयोजनों में संलग्न किया जा सकना सम्भव होगा। जो कुछ हम सिखायें, समझायें उसमें श्रद्धा और आस्था का समन्वय करें। ऋषियों के तत्व चिन्तन की सहायता लें और आध्यात्मिक मान्यताओं का सहारा लें। इससे भावनाशील जनता को अपेक्षाकृत अधिक जल्दी और अधिक अच्छी तरह प्रभावित एवं प्रेरित किया जा सकेगा भावना का प्रतिपादन बुद्धि द्वारा किया जाये हर्ज नहीं पर यदि बुद्धिवाद में ही सब कुछ मान लिया गया तो फिर आदर्शों का प्रतिपादन गम्भीरतापूर्वक न किया जा सकेगा और न किसी में इतना भावावेश उत्पन्न किया जा सकेगा कि वह आत्म संयम अपनाकर परमार्थ के लिये कुछ कहने लायक साहस भरा कदम उठा सके।

यह सोचना ठीक नहीं कि धर्म और अध्यात्म की मान्यतायें प्रतिगामी हैं, उनमें अन्ध विश्वास और रुढ़िवाद भरा पड़ा है। यह बात इसी अंश में ठीक है कि घुसपैठ भी उसमें हुई है और जहाँ-तहाँ प्रतिगामिता भी विद्यमान है। पर उसमें प्रगतिशील विचारधारा उससे कहीं अधिक है। हमारी दृष्टि 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' की न हो। हंस वृत्ति रखें। जो उपयोगी है, प्रगतिशील है उसी का सहारा लें। इस दृष्टि को रखकर किसी भी प्रतिगामी कहे जाने वाले ग्रन्थ या सम्प्रदाय में ऐसे तत्व प्रचुर मात्रा में मिल सकते हैं, जो युग निर्माण की प्रखर विचारधारा का समर्थन कर सके हमें उतने ही उपयोगी अंश को प्राचीनता में से उभारने चाहिये और जहाँ प्रतिगामिता दिखाई पड़े, वहाँ उसे अनावश्यक समझकर उपेक्षा में डाल देना चाहिये। गड़बड़ी तब पड़ती है, जब जो कुछ लिखा अथवा कहा गया है, उसका एक-एक अक्षर पत्थर की लकीर मानने के लिये, अपनी विवेकशीलता सूक्ष्म दृष्टि और समय की आवश्यकता की उपेक्षा कर दें। जोखिम अन्धानुकरण में है। उपयोगी तत्व ढूँढ़ निकालने की पद्धति अपनाकर, हमें क्रान्तिकारी परिवर्तनों के समर्थन में प्राचीन प्रतिपादनों से पर्याप्त समर्थन सहायता मिल सकती है। सो अपनी नीति बिल्कुल यही होनी चाहिये, गायत्री माता का वाहन हंस है। हंस को नीर-क्षीर विवेक आता है। हम इसी दृष्टि को लेकर चलें तो हमें सभी धर्म ग्रन्थ, सभी सम्प्रदाय अपने प्रतिपादन का मुक्त कण्ठ से समर्थन करते दिखाई देंगे।

भावनात्मक वातावरण बनाने के लिये कर्मकाण्डों की प्रक्रिया का अपना महत्त्व है। उसके साथ समन्वित शिक्षायें गरम लोहे पर चोट लगाकर उसे ढालने मोड़ने की तरह स्थिर प्रभाव डालने वाली सिद्ध होती हैं। हमें इस प्रयोजन को पूरा कर सकने में समर्थ सुयोग्य व्यक्ति तैयार करने चाहिये, जो सुसज्जा और आकर्षण का वातावरण बनाने में निपुण हों और जिस स्तर का जन समूह एकत्रित हो उसी मनोभूमि के अनुरूप प्रवचन करने की सूझ-बूझ रखते हों। शाखाओं को इस प्रकार के व्यक्ति जुटाने चाहिये। इस प्रयोजन की पूर्ति के लिये आवश्यक कर्मकाण्ड एवं प्रवचन की पुस्तकें युग निर्माण योजना द्वारा पहले से ही प्रकाशित हैं इनके आधार पर उन व्यवस्थाओं को सम्पन्न करने की योग्यता थोड़े अध्यायवसाय अभ्यास के सहारे सहज ही विकसित की जा सकती है।

जन्म दिन, विवाह दिन बालकों के संस्कार विवाह वानप्रस्थ आदि के विधिवधि और व्यक्तिगत जीवन के उतार-चढ़ावों का विश्लेषण यदि ठीक तरह किया जा सके तो लोक शिक्षण की एक महती आवश्यकता इससे पूरी हो सकती है। व्यक्ति और परिवार उस परामर्श के आधार पर अपनी प्रगति का पथ प्रशस्त कर सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

त्यौहारों के अवसर पर आमतौर से काम-धन्धे से अवकाश रहता है। पूरे दिन की छुट्टी न भी हो तो प्रातःकाल दफ्तर दुकान आदि का काम आरम्भ होने से पूर्व का अथवा रात्रि का समय सभी के लिये अवकाश का हो सकता है जहाँ जैसी सुविधा हो वहाँ वैसी समय तथा स्थान की व्यवस्था बनानी चाहिये। यदि वर्ष में आने वाले सभी पर्वों में कोई नियमित रूप से सम्मिलित होता रहे और सबसे सम्बन्धित समस्याओं के समाधान जो पर्व की विवेचना के रूप में प्रस्तुत होते हैं—सुनता रहे तो उसे अपने समाज की स्थिति, समस्यायें, उलझनें, कठिनाइयाँ, विकृतियाँ समझाने का और उनका हल जानने का अवसर मिल सकता है। यह बहुत ही उत्तम शिक्षा पद्धति है। इससे जन साधारण को समाज गत अव्यवस्थाओं से उत्पन्न हानियों को रोकने की प्रेरणा मिल सकती है। इसी प्रकार परिवार के जिन कर्त्तव्य और उत्तरदायित्वों से साधारण लोग अपरिचित ही रहते हैं, उन्हें जानने एवं सम्भालने के लिये संस्कार वाले अवसर बहुत ही उपयोगी हो सकते हैं। हर मुहल्ले गाँव में किसी के घर कोई न कोई संस्कार होता ही रहेगा। उनमें सम्मिलित होकर आदि से अन्त तक पारिवारिक जीवन का स्वरूप और आदर्श भली प्रकार समझा जा सकता है। व्यक्तिगत जीवन में हलचल उत्पन्न करने के लिये जन्म दिन मनाने का अपना महत्त्व है। दाम्पत्य सम्बन्धों में सद्भावना का पुट लगाकर आनन्द उल्लास की गंगा यमुना मिला देना 'विवाह दिन' उत्सव मना-कर सम्भव किया जाता है।

इनके अतिरिक्त भावनात्मक वातावरण में जन जीवन को ऊँचा उठाने की अन्य प्रक्रियाएँ भी निर्धारित हैं। सत्यनारायण कथा का हिन्दू समाज में बहुत प्रचार है। पण्डित लोग केवल उस कथा का महात्म्य सुनाते हैं। लीलावती कलावती तुंगध्वज राजा ने क्या किया, कौन-सी कथा सुनी उसका पता ही नहीं चलता। युग निर्माण योजना ने उस कथा को इस तरह परिष्कृत किया है कि सत्य को नारायण मानकर लोग सत्य आचरण, सत्य व्यवहार की रीति-नीति अपनायें और सत्य आदर्शों के पालन का व्रत धारण करें। यह शिक्षा सत्यनारायण व्रत कथा में मौजूद है। हम में से कोई सशक्त वक्ता उसे उतने हृदयग्राही ढंग से कह सकता है कि सुनने वाले एक नया प्रकाश ग्रहण कर सके।

रामायण कथा का सात दिन का सप्ताह—जिसमें उपयोगी भाग का मिलजुलकर पारायण और उस ग्रन्थ से भगवान राम की जीवन गाथा से जो शिक्षा मिलती है, उनकी चर्चा नित्य प्रातः सायं प्रवचन किये जाते रहे तो वह रामायण सप्ताह का धर्मानुष्ठान उपस्थित लोगों की जीवन धारा बदलने के लिये घसीटता हुआ दिखाई पड़ेगा।

इसी प्रकार गीता कथा सप्ताह की भी योजना है। संस्कृत श्लोक ठीक ढंग से पाठ करना और उसका अर्थ समझना हर किसी का काम नहीं है। गीता पद्यानुवाद इसी सामूहिक पाठ योजना के लिये बना और छपा है। सात दिन में प्रतिदिन प्रातः सायं एक-एक श्लोक की व्यवस्था होती रहे तो चौदह प्रवचन हो जाते हैं। समुद्र-मन्थन से चौदह रत्न निकले थे। गीता के सर्वोत्तम चौदह श्लोकों की सात दिन में व्याख्या कर देने से गीता का ही नहीं जीवन विद्या का सार भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होने लगता है। इसके लिये गीता कथा पुस्तक पहले से ही विनिर्मित है।

अपने समाज में गीता-रामायण अद्भुत ग्रन्थ हैं। इनमें अपनी संस्कृति का सार तत्व बड़ी खूबी के साथ भर दिया गया है। सात-सात दिन के सप्ताह धर्मानुष्ठान की परम्परा यदि चल पड़े तो उससे नैतिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की अभिनव हलचल उत्पन्न होती दिखाई देगी। सभी सम्मेलनों में लम्बे-चौड़े धुँआधार भीषण भाषणों की अपेक्षा इस धर्म वातावरण में दिया गया शिक्षण कहीं अधिक हृदयग्राही और स्थिर प्रभाव डालने वाला सिद्ध हो सकता है। सत्यनारायण कथा सुनने किसी भी परिवार मुहल्ले के लोग रुचिपूर्वक आ सकते हैं जबकि सामाजिक, राजनैतिक विचार गोष्ठी की बात सुनकर लोग उतना उत्साह नहीं भी दिखा सकते। प्रतिगामी पण्डित पुरोहित अपनी दान दक्षिणा में कमी आने की आशंका से कई बार अड़ंगे अटकाते देखे गये हैं। उन्हें समझा दिया जाने चाहिये कि हमारी प्रयोजन आपकी दान दक्षिण लेना, छीनना नहीं वरन् धार्मिकता का वातावरण बनाना है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारतीय जनता को ८० फीसदी भाग अशिक्षित है और लगभग ८० प्रतिशत ग्राम देहातों में ही रहते हैं। शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े वर्ग को मात्र धार्मिक कथा गाथाओं की पृष्ठभूमि ही विदित है। राजनीति, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि का प्राथमिक ज्ञान भी जिनके पास नहीं है उनके लिये विवेचनात्मक भाषण बेकार है। उन्हें तो उनकी पूर्व जानकारी धर्म परम्परा के साथ मिलाकर ही वह शिक्षण दिया जा सकता है, जो अन्तरंग में भी उतर सके। अपने देश की बहुसंख्या का बौद्धिक स्तर जिस प्रकार का है, उसे ध्यान में रखते हुये यदि धार्मिक शैली अपनाकर आज की स्थिति समझाई जाय और ऊँचे उठने का परामर्श दिया जाये तो यह तरीका बहुत ही कारगर सिद्ध होगा। गाँधी जी इस देश की मनोभूमि को समझते थे, उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम के राजनैतिक आन्दोलन में सन्तों जैसी प्रवृत्तियाँ जोड़ीं और जन मानस को आकर्षित कर लिया। दूसरे नेता कम कुशल नहीं थे पर गाँधी जी का जनता के हृदय में अनुपम स्थान होने के कारण उनकी धार्मिकता को ही माना जा सकता है।

महामना मालवीय, लोकमान्य तिलक के प्रति भारतीय जनता असाधारण श्रद्धा रखती थी, इसका कारण उनके राजनैतिक क्रिया-कलापों के साथ जुड़ा हुआ धर्माचरण ही कहा जायेगा। यदि सिद्धान्त रूप से जन जागरण के लिये धार्मिकता के उपयोग की आवश्यकता नहीं भी समझें तो उस भारतीय जनता की मनोभूमि को ध्यान में रखते हुये एक कुशल नीति प्रक्रिया मानना ही चाहिये। श्री जवाहर लाल नेहरू अहिंसा से सिद्धान्तः सहमत नहीं थे पर गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित सत्याग्रह पद्धति की स्थिति को देखते हुये उपयुक्त नीति मानते थे और उसी आधार पर वे उसे स्वीकार करते थे। जिन्हें सिद्धान्ततः धर्म माध्यम से जन जागरण की बात रुचती न हो उन्हें भी यह तो मानना चाहिये कि विशाल भारत के पिछड़े हुये बहुमत द्वारा अपनाये जाने योग्य लोक शिक्षण धार्मिकता का पुट दिये बिना सम्भव नहीं हो सकता।

राष्ट्र के समग्र पुनरुत्थान के लिये अभीष्ट प्रशिक्षण धार्मिकता युक्त ही होना चाहिये।

आवरणों की उपयोगिता—धार्मिक आवरणों को, कर्मकाण्डों को स्थिर रखने के लिये थोड़ा समय एवं धन खर्च करना पड़े तो उसमें, असमंजस करने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। जिस प्रकार कृषि करने के लिये व्यापार करने के लिये, आरम्भ में आवश्यक पूँजी खर्च कर देनी पड़ती है, तब लाभ उठाने का अवसर आता है, उसी प्रकार विचार निर्माण का कार्य भी किसी से कुछ कह देने मात्र से पूरा नहीं हो जाता, वरन् उसके लिये, एक रचनात्मक मनोवैज्ञानिक भूमिका बनानी पड़ती है। आन्दोलनकारियों द्वारा बहुधा लम्बे जुलूस निकाले जाते हैं, उनसे पूछा जाये कि इतने मनुष्यों का इतना श्रम, समय और नोटिस पोस्टर आदि का भारी खर्च क्यों उठाया जा रहा है ? तो वे बतायेंगे कि इस प्रदर्शन से जनता की भावनायें उत्तेजित करने का अवसर मिलता है। स्वतन्त्रता आन्दोलन में सत्याग्रह निषेधात्मक कानून तोड़ना आदि कितने ही काम ऐसे-ऐसे किये जाते थे जिन्हें निरुपयोगी कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति न होगी। खारी मिट्टी को पानी में घोलकर उसे उबालने में जितने की लकड़ी जल जाती थी, उससे चौथाई कीमत का नमक नहीं बनता था। यह सब कानून तोड़ने की जन भावनायें उत्तेजित करने के लिये थे, नमक का व्यापार नहीं।

काँग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में प्रायः ५० लाख खर्च होता रहा है। धार्मिक मेले भी काफी खर्चीले होते हैं, प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं तो उसमें ढेरों धन तथा साधन खर्च होता है, गाँवों में सिनेमा दिखाकर सरकार प्रचार कार्य करती है। ऐसे प्रदर्शन कम मँहगे नहीं होते। दंगल, प्रतियोगितायें, सम्मेलनों में होने वाले खर्चों का हिसाब लगाया जाय और उनसे तत्काल क्या व्यापारिक लाभ हुआ, इसका लेखा-जोखा तैयार किया जाये तो इसमें समय और धन की बर्बादी सोची जा सकती है, पर वास्तविकता कुछ भिन्न ही है। सद्विचार निर्माण के लिये यदि संसार का सारा धन खर्च हो जाये या सारा समय लग जाये तो भी उसे कुछ घाटे की बात नहीं माननी चाहिये। यज्ञ-हवनों में थोड़ा पैसा खर्च होता है, उसके वैज्ञानिक लाभ हैं, पर यदि उन्हें न भी मानें और धर्म प्रयोजन के लिये एक जन-सम्मेलन ही मान लें तो भी उसमें खर्च

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया जाने वाला खर्च ऐसे ही अन्य सभी माध्यमों से कम ही बैठेगा। जनता का पैसा नशेबाजी, मिथ्या प्रदर्शन और व्यर्थ आडम्बरों में कम बर्बाद नहीं होता, लोग उन बातों पर इतना ध्यान नहीं देते। धार्मिक प्रयोजनों में होने वाला थोड़ा भी खर्च अखरता है। कारण एक ही है उनकी उपयोगिता समझी-समझाई नहीं जा सकी। यदि उन धर्म प्रयोजनों के माध्यम से जन जागरण के नव-निर्माण के प्रयोजन को सिद्ध किया जा सके, तो कोई भी विचारशील उस खर्च का स्वागत ही करेगा। बर्बादी कहने का तो कभी प्रश्न न उठेगा।

उद्देश्य प्रधान रहे—विचार-निर्माण धर्म प्रयोजन का उद्देश्य है। कर्मकाण्ड उसका कलेवर है। उसे इसी रूप में प्रयुक्त किया जाये तो फिर इस दिशा में किये जाने वाले सारे प्रयत्न सार्थक माने जायेंगे। आज तो निष्फल कलेवर निरुद्देश्य कर्मकाण्डों की ही धूम है, उसी से उनके सम्बन्ध में उँगली उठती है। जब जन-मानस की दिशा मोड़ने के लिये—भावनात्मक उत्कर्ष के लिये—नैतिकता, सदाचार, देश-भक्ति, कर्त्तव्य-परायणता, विवेकशीलता जैसी सद्भावनाओं को विकसित करने के लिये, धार्मिक कर्मकाण्डों का प्रयोग किया जाने लगेगा, तब उनका हर क्षेत्र में पूरा-पूरा स्वागत एवं समर्थन भी होने लगेगा।

आज कितने ही प्रकार के धर्मानुष्ठान होते रहते हैं। रामायण सम्मेलन, गीता समारोह, भागवत कथा, सत्यनारायण कथा, यज्ञानुष्ठान, व्रत उद्यापन, पर्व त्यौहार, षोडश संस्कार, तीर्थ स्थान समारोह, धार्मिक मेले, पदयात्रा, रामलीला, रासलीला आदि कितने ही प्रकार के धर्मोत्सव समय-समय पर नियोजित किये जाते रहते हैं, यदि इनकी हर क्रिया के साथ व्याख्या विवेचना एवं प्रेरणा भर दी जाये, तो नव-निर्माण की प्रेरणा जनमानस में उत्पन्न करने का प्रयोजन सहज ही पूरा हो सकता है। जिस प्रकार का लोक शिक्षण आज अभीष्ट है, उसे धर्म प्रयोजन में बड़ी आसानी से 'फिट' किया जा सकता है। सच तो यह है कि दूरदर्शी ऋषियों ने मानव-जीवन की समग्र शिक्षा को—धर्म-ग्रन्थों में लिखकर ही अपना, कर्त्तव्य पूरा नहीं किया, वरन् उन्हें सर्व साधारण की मनोभूमि में नाटकीय ढंग से प्रविष्ट कराने के लिये इस प्रकार के कर्मकाण्डों एवं समारोहों की भी परम्परा प्रचलित की थी।

इन माध्यमों में एकत्रित किये गये लोगों की विचारगोष्ठी बहुत ही लाभकारी सिद्ध होती है। धार्मिक वातावरण में एकत्रित लोगों की मनोभूमि अपेक्षाकृत अधिक लचीली हो जाती है और उनमें आदर्शवादी आस्थाओं को सुनने, हृदयंगम करने तथा अपनाने का सन्तुलित 'मूड' रहता है। भावनात्मक नव-निर्माण के लिये इस प्रकार की जन उपस्थिति असाधारण रूप से सफल रहती है।

टूटे-फूटे, लंगड़े-लूले, काने-कुबड़े ढंग से आज हमारे धर्मानुष्ठान नियोजित किये जाते हैं। उनका वातावरण अश्रद्धापूर्ण एवं उपहासास्पद रहता है। कारण यह है कि अन्धश्रद्धालु तथा फूहड़ लोगों के अविकसित मस्तिष्क उनका ताना-बाना बुनते हैं। यदि उनकी व्यवस्था एवं योजना सुलझे हुये व सुधरे हुये, मस्तिष्क सोचें, कलात्मक एवं सुसंस्कृत ढंग से व्यवस्था बनायें तो निस्सन्देह हमारा छोटे-से-छोटा धर्मोत्सव असाधारण रूप से आकर्षक, मनोहर उल्लासपूर्ण, प्रेरणाप्रद बन जाये। अनुभव साक्षी है कि युग निर्माण योजना की शाखायें जहाँ जन्म दिवसोत्सव, विवाह दिवसोत्सव थोड़े ढंग ढांचे के साथ मनाने लगी हैं, वहीं धार्मिक श्रद्धा एवं संगठन का आशाजनक वातावरण बना है। अन्याय आयोजन भी इसी प्रकार मनाये जाने लगें तो उनके फलस्वरूप लोक मानस में एक नवीन चेतना एवं स्फुरणा ही दौड़ जाये। विचारक्रान्ति की पृष्ठभूमि बनाने में इन आयोजनों का कितना अधिक उपयोग है, यह कहने से नहीं करके देखने से ही सम्बन्ध रखता है। हम अपने विगत ४० वर्ष के जीवन अनुभवों के आधार पर यह विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि राष्ट्र का भावनात्मक नव निर्माण करने के लिये जितनी सफल यह प्रयोग प्रक्रिया हो सकती है, उतनी और कोई नहीं। लाखों मनुष्य की जीवन दिशायें बदल देने और उन्हें कुछ से कुछ बना देने के जो व्यक्तिगत अनुभव हुये हैं, उसके आधार पर हम पूरे साहस और पूरे विश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि यदि देश के प्रबुद्ध लोग इस क्षेत्र में उतर पड़ें, धर्मतन्त्र के माध्यम से जन-जागरण की सुसंगठित योजना बनायें तो वह चमत्कार उत्पन्न हो सकता है, जिसकी आज कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावी नेतृत्व की भावना—अब जन-नेतृत्व का उत्तरदायित्व राजनेता के हाथ से हटकर उन धर्मनीति के प्रबुद्ध कार्यकर्त्ताओं, युग निर्माताओं के हाथ में जाने वाला है, जो धर्मोपदेश ही नहीं करेंगे अपने जीवन क्रम में भी आदर्शवादिता का, धार्मिकता का समन्वय करेंगे। वह समय निकट है जब धर्म का राजनीति पर नियन्त्रण होगा। धर्मनेता जब जन-मानस तक पहुँच सकने में समर्थ होंगे तो राजनीति से दूर रहकर भी उसे कठपुतली की तरह नचा सकते हैं।

धार्मिक दृष्टि से त्याग इसी का नाम है कि रोटी के अनिवार्य गुजारे की व्यवस्था करने के अतिरिक्त जन-जागरण की महानतम सेवा साधना में लगा जाये। जो इस क्षेत्र में पूरा समय देकर उतरना चाहते हैं, उन्हें पूर्ण विश्वास एवम् पूर्ण निश्चिन्त हो जाना चाहिये कि उनको रोटी की समस्या बाधक नहीं मिलेगी। जा भारतीय समाज ६० लाख निठल्ले धर्मध्वजियों का गुलछर्रे उड़ाने के लिये प्रचुर धन दे सकता है, वह अपने सच्चे सेवकों को भूखा नंगा नहीं रहने दे सकता। जो पूरा समय नहीं लगा सकते वे अधूरा समय लगावें। आठ घण्टा सोने के, आठ घण्टा कमाने के चार घण्टा इधर-उधर की मटरगश्ती में खर्च करने के बाद भी चार घण्टे बचते हैं। उन्हें यदि धर्मतन्त्र के माध्यम से जन-जागरण के लिये खर्च करने की ठान ली जाये तो ऐसे कुछ ही व्यक्ति अपने क्षेत्र में चमत्कार उत्पन्न कर सकते हैं। अपने जैसे अनेक दूसरे बना सकते हैं और अनेक रचनात्मक कार्यों का शुभारम्भ करके स्थानीय समाज में महत्त्वपूर्ण रचनात्मक हलचलों को जन्म दे सकते हैं।

पीड़ित मानवता ऐसे ही प्रबुद्ध लोगों की, युग निर्माताओं की, नर-रत्नों की आज गुहार मचाये हुये है, जो जन-नेतृत्व की आवश्यकता पूर्ण करें, युग निर्माता की महत्त्वपूर्ण भूमिका पूरी करें। ऐसे व्यक्तियों में से सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति आप ही हैं। आप इन पंक्तियों को पढ़ें और ऐसा ही कुछ करने के लिये साहसपूर्ण कदम उठावें। आवश्यक मार्ग-दर्शन के लिये आप युग निर्माण योजना मथुरा से आज ही सम्पर्क बना सकते हैं।

पारमार्थिक महत्त्वाकांक्षा जागे—व्यक्ति स्वभावतः महत्त्वाकांक्षी है। जीव की इच्छा ऊँचे उठते-उठते सर्वोच्च पद पर पहुँचने की है। इसकी पूर्ति के लिये वह विविध प्रकार की गति-विधियाँ अपनाता है। धन उपार्जन से लेकर इन्द्रिय भोगों के तृप्त करने, सम्पन्नता का अहंकार दिखाने से लेकर सस्ती नामवरी लूटने तक के अनेक प्रयोग वह करता है। इन प्रयोगों में सबसे श्रेष्ठ प्रयोग यह है कि व्यक्ति समाज कल्याण के कार्यों में निरत रहकर अपनी ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा को जनता जनार्दन के उत्कर्ष के लिये समर्पित कर दे। ईश्वर को आत्मसमर्पण करने का एक मात्र तरीका यही है कि उनकी प्रजा—उसकी दुनियाँ को अधिक सुखी और समुन्नत बनाने में अपना बढ़-चढ़कर योगदान प्रस्तुत करें। इस त्याग भावना और सेवा बुद्धि से ही ईश्वर अपने भक्त की सच्चाई और झुठाई परखता है। झूँठे भक्त वे हैं जो माला तो बहुत भारी फेरते हैं पर विश्व-मानव की सेवा का अवसर सामने प्रस्तुत रहने पर भी पत्थर की तरह निष्ठुर और कठोर बने बैठे रहते हैं। ऐसे लोगों की यह आशा दुराशा मात्र ही सिद्ध होगी कि ईश्वर किसी के नाम रटने या स्तुति खुशामद करने में प्रसन्न हो जाता है। भगवान भावना की उत्कृष्टता को ही प्यार करता है और सर्वोत्तम सद्भावना का एक मात्र प्रमाण जन-कल्याण के कार्यों में बढ़-चढ़कर योगदान करना ही है। धर्म की सेवा नीति और सदाचार की अभिवृद्धि में तत्परता एक ऐसी तपश्चर्या है जिससे प्रभावित हुये बिना ईश्वर रह ही नहीं सकता।

किसी व्यक्ति का सम्मान इससे बढ़कर और कुछ हो ही नहीं सकता कि उसने अपना जीवन निःस्वार्थ भाव से लोक-कल्याण के लिये समर्पित कर दिया। ऐसे दिव्य जीवन स्वयं धन्य बनते हैं और दूसरे असंख्यकों को प्रेरणा भरा प्रकाश प्रदान करते हैं। धन कमाने, इन्द्रिय भोगों में निमग्न रहने और वयस्क हो जाने पर भी परिवार के मोह में लुटते पिसते रहने की मूर्खता में अधिकांश सुयोग्य व्यक्तियों के जीवन बर्बाद होते रहते हैं। क्या ही अच्छा होता कि उनने इन बाल-क्रीड़ाओं में अपने को लुटाया-खपाया न होता और वह काम करते जिससे उनका मानव-जीवन सार्थक बनता। कितन ही व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके पास पर्याप्त समय, सुविधा एवम् साधन हैं, फिर भी उन अभागों को उदारता और महानता मिली नहीं होती—अतः स्वार्थपरता के संकीर्ण दायरे में ही जिन्दगी के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बहुमूल्य क्षण समाप्त कर देते हैं। उनके कोई पदचिन्ह, कोई कर्तृत्व ऐसे नहीं रहते, जिससे उनका सम्मानपूर्वक स्मरण किया जा सके।

प्रार्थना और चेष्टा हर प्रबुद्ध व्यक्ति को यही करनी चाहिये कि उसे संकीर्ण स्वार्थपरता से मुक्ति मिले। यही मुक्ति जीवन-मुक्ति का साक्षात् स्वरूप है। इस स्थिति को प्राप्त कर लेना ईश्वर को प्राप्त कर लेने के ही समान है। समान और धन का उपयोग जिसने ठीक प्रकार करना जान लिया, वस्तुतः वही सच्चा बुद्धिमान है। हमें मूर्खता छोड़कर बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिये और जितनी भी सामर्थ्य पारिवारिक गुजर करने के उपरान्त बचती हो उसे परमार्थ कार्यों में लगाने की चेष्टा करनी चाहिये। कहना न होगा कि तीर्थ-यात्रा, ब्रह्मभोज, स्नान दर्शन जैसे कर्मकाण्डों को परमार्थ नहीं कहा जा सकता। आज की परिस्थितियों में परमार्थ का सर्वोत्तम स्वरूप एक ही है कि भावना और विवेक की दृष्टि से दरिद्र बने हुये मानव-समाज की आन्तरिक चेतना को जगाने के लिये प्रयत्न किया जाये। जगा हुआ मनुष्य प्रत्यक्ष देवता है। इस संसार में नर-पशुओं को इन्सान बनाने-भगवान बनाने के लिये यदि कुछ किया जा सकता हो तो उसे ही सच्चे अर्थों में परमार्थ कहा जायेगा।

धर्म मंच के माध्यम से जन जागरण के लिये आज इतनी अधिक आवश्यकता है कि उसकी पूर्ति के लिये हजारों लाखों जीवनों का उत्सर्ग होने की तात्कालिक आवश्यकता है। इसकी पूर्ति के लिये हमें आगे बढ़ना ही चाहिये, जीवन को सच्चे अर्थों में सार्थक बनाने वाली इस श्रेय साधना की ओर अविलम्ब कदम बढ़ाना ही चाहिये।

धर्म चेतना और जनजागरण

धर्म धारण का संवर्धन

मनुष्य का अस्तित्व स्थूल भौतिक-पदार्थ एवं सूक्ष्म चेतना के संयोग से बना है। इनमें चेतना संचालक तत्व है और पदार्थ संचालित। इस दृष्टि से मानवी सन्तुलन के लिये चेतना पक्ष को स्थूल की अपेक्षा अधिक नहीं तो कम महत्त्व तो नहीं ही दिया जाना चाहिये। स्थूल आँख से दिखता है इसलिये उसे प्रधानता मिल जाती है। सूक्ष्म चेतना की उपेक्षा होने लगती है तो सन्तुलन बिगड़ जाता है और भौतिक समृद्धि बढ़ते हुये भी तरह-तरह की विकृतियाँ, कष्ट, कठिनाइयाँ पैदा होने लगती हैं। आज हर क्षेत्र में ऐंसा ही हो रहा है। भौतिक प्रगति पिछले दिनों खूब हुई है। किन्तु उनके साथ सुख सन्तोष की मात्रा नहीं बढ़ सकी। बल्कि कई बार यह सोचना पड़ जाता है कि कहीं प्रगति के नाम पर उल्टी दुर्गति तो नहीं हो रही है ?

वहाँ दोष भौतिक उन्नति को नहीं दिया जा रहा है और न उसे अनावश्यक सिद्ध किया जा रहा है। कहा यह जा रहा है कि उपार्जन एवं उपभोग का निर्धारण करने वाली अन्तःचेतना को विकसित परिष्कृत करने का भी उतना ही ध्यान रखा जाय जितना भौतिक साधनों के अभिवर्धन पर ध्यान दिया जाता है। इस दिशा में उपेक्षा बरती जायेगी ता उससे सन्तुलन बिगड़ेगा और तथाकथित उन्नति परिणाम में अवनति का आधार बनेगी जैसा आज बनती दीख भी रही है।

यह भली प्रकार समझा जाना चाहिये कि सर्वतोमुखी समग्र-प्रगति का लाभ तभी उठाया जा सकेगा, जब वह भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से चले। मोटर अच्छी होनी चाहिये और उसकी टंकी तेल से भरी रहनी चाहिये। किन्तु काम इतने से भी नहीं बनेगा, ड्राइवर की कुशलता और भी अधिक आवश्यक है। हाथी सफेद होना ही पर्याप्त नहीं, सधा हुआ महावत भी चाहिये। कोई कारखाना कितना ही साधन सम्पन्न क्यों न हो अनुभवी संचालक के अभाव में उसकी बर्बादी ही निश्चित है। आये दिन देखने को मिलता है कि पूर्वजों की छोड़ी हुई विपुल सम्पदा को अयोग्य उत्तराधिकारी कुछ ही दिनों में स्वाहा कर देते हैं। सुन्दर स्वास्थ्य और प्रखर मस्तिष्क का दुरुपयोग करने वाले, अनपढ़ लोगों से भी अधिक दुर्गति सहते और संकट उत्पन्न करते हैं। अन्तःचेतना के परिष्कार को, आत्मिक प्रगति को, भौतिक विकास और विस्तार से भी अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिये और उसके लिये कम नहीं वरन् अधिक ही प्रयत्न किया जाना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्मरण रखा जाये मनुष्य शरीर मात्र नहीं है, उसका वास्तविक मूल्य चेतना स्तर पर निर्भर है। इसलिये शरीर की आवश्यकता पूरी कर सकने वाली साधन सम्पत्ति की व्यवस्था बना लेने मात्र से तो अधूरापन ही बना रहेगा। पूर्णता तब आयेगी, सन्तुलन तब बनेगा जब योग्य साधनों की तरह उपभोक्ता की स्थिति भी सुविकसित स्तर की बन सके। एक पहिये की गाड़ी से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। एक पैर का लंगड़ा, एक हाथ का लूला, एक आंख का काना आदमी कुरूप ही लगेगा और अक्षम भी रहेगा। भौतिक उन्नति होती रहे किन्तु आन्तरिक उत्कृष्टता न बढ़े तो बढ़ी हुई सम्पत्ति के दुरुपयोग से संकट ही बढ़ेगा और दुष्परिणाम अभावग्रस्त स्थिति से भी मँहगा पड़ेगा।

विचारशील वर्ग का ध्यान इस तथ्य की ओर जाना चाहिये कि दरिद्रता, रुग्णता, अशिक्षा, असुविधा जैसे भौतिक पिछड़ेपन से जूझने की तरह चिन्तन की प्रतिगामिता से भी पीछा छुड़ाया जाना चाहिये। इस दिशा में भी उतने ही प्रयत्न होने चाहिये, जितने कि भौतिक उन्नति के लिये हो रहे हैं।

भौतिक उन्नति का उत्तरदायित्व कभी विभिन्न क्षेत्रों में बिखरा हुआ था, अब वह सिमटकर शासन सत्ता में केन्द्रित हो गया है। शासन ही अपने क्षेत्र की आर्थिक प्रगति का सूत्र संचालन करता है। यों होता तो जनसाधारण की धर्मनिष्ठा से ही है फिर भी उसका पथ प्रशस्त करना सरकार के कन्धों पर चला गया है। युद्ध, प्रकृति-प्रकोप जैसी कोई दुर्घटनायें घटित न हों तो किसी देश की आर्थिक उन्नति का श्रेय वहाँ की सरकार को दिया जाता है और अवनति की स्थिति बनी रहे तो दोष भी उसी को दिया जाता है।

आत्मिक प्रगति का उत्तरदायित्व दूसरे क्षेत्र का है, जिसे धर्म अथवा अध्यात्म कहते हैं। यह सब आस्थाओं पर आधारित है। सरकार आस्थायें उत्पन्न नहीं कर सकती। आर्थिक उन्नति, सुरक्षा व्यवस्था, शिक्षा प्रबन्ध जैसे कार्य कर सकना ही उसके साधनों की सीमा में आते हैं। इतना ठीक प्रकार बन पड़े तो वह भी कम नहीं। आत्मिक प्रगति चिन्तन की उत्कृष्टता, आस्थाओं में आदर्शवादिता जुड़ी होने पर ही होती है। यह कार्य बाहरी दबाव से नहीं हो सकता। शासन की प्रमुख शक्ति दबाव है। शिक्षण के सूत्र भी उसके हाथ में हैं पर वे भौतिक जानकारियों एवं कर्त्तव्य को दिशा भर दे सकते हैं। आस्थायें उत्पन्न करना तत्वदर्शन का काम है। श्रद्धा उसी से उत्पन्न होती है। कहना न होगा कि दृष्टिकोण का निर्धारण आस्थाओं पर अवलम्बित है और उन्हें श्रद्धा के आधार पर ही विनिर्मित किया जा सकता है। सरकारें जिस विद्या को अपनाकर चलती हैं, उसे कूटनीति कहते हैं। उसमें उद्देश्य भले ही ऊँचा रहे पर व्यवहार में साम, दाम, दण्ड, भेद जैसे उन साधनों को अपनाये जाने की छूट रहती है ,जो सामान्य नैतिक आदर्शों से पूरी तरह तालमेल नहीं खाते।

आस्थाओं का क्षेत्र राजनीति की पकड़ में पूरी तरह कभी आया भी नहीं है और कभी आ भी नहीं सकेगा। इसलिये धर्म नीति और राजनीति को सदा एक-दूसरे से पृथक् रखा गया है। वे एक-दूसरे की पूरक रहें तो काम चल सकता है। जीवन दर्शन के प्रशिक्षण में एक भारी कठिनाई यह है कि उसे पुस्तकीय ढंग से पढ़ाया तो जा सकता है किन्तु हृदयंगम तब तक नहीं कराया जा सकता, जब तक कि शिक्षक का अपना चरित्र ठीक उसी ढाँचे में ढला हुआ न हो। आदर्शवादी शिक्षण में छात्रों को सबसे बड़ा असमंजस तब पैदा होता है, जब शिक्षक स्वयं ही अपने प्रतिपादनों के विरुद्ध आचरण करते हैं। शिक्षार्थी यह सोचता है कि आदर्शवाद कहने-सुनने भर की वस्तु है, व्यवहार की नहीं। यदि वह व्यवहार की रही होती तो शिक्षक स्वयं क्यों नहीं उसे अपनी जीवनचर्या में सम्मिलित करता ?

जन साधारण का आत्मिक स्तर ऊँचा उठाये रहना उस तत्वदर्शन का काम है, जो श्रद्धा पर अवलम्बित है। उसे धर्म एवं अध्यात्म के नाम से जाना जाता है। इस सन्दर्भ की जानकारी धर्मशास्त्र में मिल जाती है, पर उसे पढ़ने, सुनने भर से प्रयोजन पूरा नहीं होता। उसे हृदयंगम कराने के लिये ऐसे शिक्षक चाहिये जो प्रतिपादन को अपने व्यवहारिक जीवन में उतारकर यह सिद्ध कर सकें कि जो कहा जा रहा है, वह अपनाये जाने योग्य भी है। संक्षेप में उत्कृष्ट आस्थाओं की स्थापना करने के लिये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मशास्त्रों के साथ-साथ उसके लिये कलेवरधारी नहीं, भीतर और बाहर से पूरी तरह खरे सिद्ध होने वाले प्रशिक्षणकर्ताओं की आवश्यकता होती है। शासन तन्त्र में भी तो वही होता है। साधनों के अतिरिक्त कुशल प्रशासक भी अपेक्षित रहते हैं। धर्म तन्त्र में धार्मिक क्रिया कलाप ही नहीं ऐसे प्रशिक्षकों की भी आवश्यकता पड़ती है, जो अपनी निजी जीवनचर्या से अनुकरणीय प्रेरणायें दे सकें।

राजतन्त्र और धर्मतन्त्र दोनों मिलकर ही मनुष्य की समग्र आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। भौतिक और आत्मिक तत्वों से मिलकर ही मानवी सत्ता बनती है। अस्तु उसे भौतिक सम्पदा भी चाहिये और आत्मिक विभूति भी। एकाकी प्रगति तो आत्मिक क्षेत्र की भी अपर्याप्त है। योगी और तपस्वी को भी शरीर निर्वाह के साधन चाहिये। इसी प्रकार सम्पन्न और समर्थ होते हुये भी यदि कोई मानसिक एवं आत्मिक दृष्टि से पिछड़ा रहेगा तो प्रचुर सम्पदा होते हुये भी उसका लाभ प्राप्त न कर सकेगा। समन्वय तो चाहिये ही। बात कार्यक्षेत्र की है। वैज्ञानिक एवं प्रशासकों के कार्यक्षेत्र अलग-अलग होते हैं। धर्मतन्त्र और राजतन्त्र के क्षेत्र भी इसी प्रकार पृथक् रहकर ही एक-दूसरे के पूरक रह सकते हैं।

राजतन्त्र का उत्तरदायित्व वहन करने वाले व्यक्तित्व दृष्टिकोण एवं साधन एक तरह के होते हैं और धर्मतन्त्र की आवश्यकता पूरी करने के लिये भिन्न प्रकार की स्थिति चाहिये। राजतन्त्र अपने उत्तरदायित्व सम्भाले और धर्मतन्त्र अपने। दोनों की सम्मिलित कार्यपद्धति मानवी आवश्यकताओं की सर्वतोमुखी पूर्ति कर सकती है। दोनों को ही अपने-अपने क्षेत्रों में प्रखरता भरी भूमिका सम्पादित करनी चाहिये। तभी समग्र प्रगति का पथ प्रशस्त हो सकेगा।

खेद इस बात का है कि राजतन्त्र की भौतिक क्षमता सर्वसाधारण के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है। सुधार और प्रगति के विभिन्न प्रयोजन पूरे करने के लिये इसी क्षेत्र से अपेक्षा की जाती है। इसलिये प्रतिभाशाली व्यक्ति उस क्षेत्र में प्रवेश करने के लिये आतुर दीखते हैं और आगे बढ़ने के लिये आपस में धक्का-मुक्की करते हैं। धर्म तन्त्र की शक्ति समझी नहीं गई और उसकी आवश्यकता उपयोगिता पर ध्यान नहीं दिया गया। उपेक्षित क्षेत्र में गन्दगी और कुरुपता का जमा होना स्वाभाविक है आज हर किसी का धर्म क्षेत्र में प्रतिगामिता, आडम्बर और अवांछनीयता घुस पड़ने की शिकायत है। आमतौर से विचारशील लोग इसी कारण उसकी उपेक्षा करते और नाक भौं सिकोड़ते पाये जाते हैं। यह उपेक्षा अनुचित है। सामर्थ्य और सम्भावनाओं की दृष्टि से धर्मतन्त्र की क्षमता राजतन्त्र से किसी भी प्रकार कम नहीं है। न उनकी उपयोगिता को ही झुठलाया जा सकता है। भौतिक प्रगति की सार्थकता आत्मिक प्रगति के बिना सम्भव नहीं। इसी प्रकार कोई राष्ट्र मात्र समर्थ सरकार के बल पर ही सच्चे अर्थों में सुविकसित नहीं हो सकता। इनके लिये उसके नागरिकों की चरित्र निष्ठा अपेक्षित है और महामानवों का बाहुल्य भी होना चाहिये। राजतन्त्र अपने साधनों से भौतिक उन्नति के आधार खड़े करे साथ ही धर्मतन्त्र जनमानस में आदर्शवादी आस्थायें उत्पन्न करके नर-रत्नों का उत्पादन करे और सद्भाव सहकार का वातावरण बनाये तभी उस उभयपक्षीय प्रगति से उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना मूर्तिमान हो सकेगी और प्रगति के लिये किये गये प्रयत्नों का सच्चा लाभ मिल सकेगा।

राजतन्त्र को प्रखर बनाने और उसमें प्रवेश करने का उत्साह प्रबुद्ध वर्ग में पाया जाता है। यह उचित भी है और आवश्यक भी। किन्तु धर्मतन्त्र प्रतिभाविहीन लोगों द्वारा उपेक्षित बना रहे और उस पर प्रतिगामी तत्वों का कब्जा बना रहे यह स्थिति भी कष्टकर है। इससे व्यक्ति और समाज को अपार हानि उठानी पड़ रही है। प्रबुद्ध प्रतिभाओं से भरा-पूरा धर्मतन्त्र जनमानस का स्तर कितना ऊँचा उठा सकता है ? आदर्शवादी आस्थाओं की प्रतिष्ठापना से मनुष्य में देवत्व का उदय हो सकता है और उत्कृष्ट व्यक्तियों वाला समाज सतयुगी वातावरण से भरा-पूरा रह सकता है। तब स्वल्प साधनों में भी स्वर्गीय आनन्द की परिस्थितियाँ बनी रह सकती हैं। अधिक साधन होने पर तो आनन्द का समुद्र ही लहलहाता दीख पड़ सकता है।

उपेक्षा के गर्त में पड़े रहने पर तो उपयोगी से उपयोगी वस्तु भी सड़ने-गलने लगती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। धर्मतन्त्र की ओर प्रबुद्ध वर्ग की उपेक्षा रहने से ही उसमें प्रतिगामिता और अवांछनीयता की घुसपैठ करने का अवसर मिला है। यदि सतर्कता और प्रखरता की दृष्टि उस ओर लौट पड़े तो सारा वातावरण ही बदल जायेगा और प्रतीत होगा कि मानवी प्रगति का एक नितान्त उपयोगी और अतीव महत्त्वपूर्ण आधार हाथ लग गया।

आज धर्मतन्त्र में प्रतिगामी तत्वों की ही अधिकता हो गई है। फलतः उसमें विकृतियों की भरमार होती चली जा रही है। धर्माध्यक्षों का रूप बनाकर अपने स्वार्थों को पूरा करने की तिकड़म जहाँ-जहाँ चल पड़ती है। इसके कारण समाज के श्रम, धन और सम्मान का शोषण हो रहा है। बदले में जन साधारण को वह मिलता है जिसमें हानि ही हानि भरी पड़ी है। कल्पना लोक की निरर्थक उड़ानें, मूढ़ मान्यतायें अन्धविश्वास जैसी हानिकारक उपलब्धियाँ ही धर्मप्रेमी लोग प्राप्त कर पाते हैं। भाग्यवाद, देववाद, पलायनवाद, उपेक्षावाद, जैसी हानिकारक मान्यतायें ही उस क्षेत्र में जनसाधारण को मिलती हैं। जिस आदर्शवादी दृष्टिकोण का परिष्कार धर्मतन्त्र की स्थापना का उद्देश्य था, उसका सर्वथा विपरीत प्रशिक्षण देने में आज का विकृत धर्मतन्त्र कटिबद्ध हो रहा है। नदी स्नान, देव दर्शन जैसे छुटपुट कर्मकाण्डों से पाप दण्ड भुगताने से छुटकारा मिल जाता है और अमुक पूजा विधान से स्वर्ग मुक्ति की, देव अनुग्रह से मनोवांछा पूरी होने की सिद्धि मिल सकती है। इस मान्यता ने अनैतिकता एवं अकर्मण्यता को बढ़ावा दिया है। जब पाप दण्ड से सहज ही छुटकारा मिल सकता तो फिर दुष्कर्म से भरपूर लाभ क्यों न उठाया जाये ? जब छुटपुट कर्मकाण्ड ही स्वर्ग मुक्ति आदि का लाभ दे सकते हैं तो आत्मोकर्ष के लिये चरित्रनिष्ठा एवं परमार्थपरायणता की कष्टसाध्य प्रक्रिया क्यों अपनाई जाये ? आज धर्मक्षेत्र से धर्मानुष्ठानों की महिमा आकाश पाताल जितनी बताई जा रही है और धर्मतत्व की जड़ पर करारा कुठाराघात किया जा रहा है। कितने दुःख की बात है कि जन साधारण से असीम लोकश्रद्धा और प्रचुर सम्पदा प्राप्त करने के उपरान्त भी धर्म तन्त्र बदले में वे भ्रान्तियाँ दे रहा है जो आत्मोकर्ष का प्रयोजन पूरा करने में सहायता करना तो दूर उलटे अवरोध खड़े करती हैं।

यह स्थिति नहीं बनी रहने दी जा सकती। धर्मतन्त्र की दुर्गति चलती ही नहीं रहनी चाहिये। उसकी सामर्थ्य उपयोगिता और सम्भावना पर विचार किया जाना चाहिये। राजतन्त्र के सुधार में जितना उत्साह दृष्टिगोचर होता है, कम से कम उतनी अभिरुचि तो प्रबुद्ध वर्ग की धर्मतन्त्र में होनी ही चाहिये। अवांछनीयता का निरस्त करने के लिये उपेक्षा पर्याप्त नहीं उसके स्थान पर उपयोगी विकल्प प्रस्तुत किये जाने चाहिये। धर्मतन्त्र में आदर्शवादी प्रतिभाओं को प्रवेश करना चाहिये। जन साधारण का ध्यान इस दिशा में मोड़ा जाना चाहिये कि राजतन्त्र ही नहीं धर्मतन्त्र भी सर्वतोमुखी प्रगति के लिये अति महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकने में समर्थ है। भौतिक उन्नति के साधनों की अपनी उपयोगिता है पर आत्मिक प्रगति भी उपेक्षणीय नहीं है।

भौतिक प्रयासों के फलस्वरूप जो मिला है, जो मिल रहा है और मिलेगा उसकी भरपूर प्रशंसा की जानी चाहिये और भविष्य में अधिक अच्छी सम्भावनाओं की आशा लगाई जानी चाहिये। पर साथ ही यह भी ध्यान रखा जाना चाहिये कि आत्मिक प्रगति के लिये यदि इसी उत्साह से प्रयासों को जुटाया जा सके तो वर्तमान साधनों से ही अपनी आज की परिस्थितियों में ही, इसी धरती पर स्वर्ग का अवतरण सम्भव हो सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि धर्मतन्त्र को वैसा ही पवित्र, प्रखर और सशक्त बनाया जाये जैसा कि उसके निर्माणकर्त्ताओं का लक्ष्य था। ऐसा हो सके तो नर-रत्नों का वह महान् उत्पादन सम्भव हो सकता है जिसकी तुलना में कुबेर जितनी सम्पत्ति भी तुच्छ प्रतीत होगी।

अपने देश में यह प्रयोग चिरकाल से होता रहा है कि जनमानस में धर्मनिष्ठा जमाई जाये और उसके फलस्वरूप देवमानवों का भव्य उत्पादन करके सुख-शान्ति भरा व्यापक वातावरण बनाया जाये। प्राचीन भारत में धर्मतन्त्र प्रखर भी था और समर्थ भी। फलतः हर घर-परिवार नर रत्नों की खदान बना हुआ था। इस देश के ३३ करोड़ निवासी संसारभर की आँखों में तैतीस कोटि देवता थे। भारत जगद्गुरु, चक्रवर्ती शासक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और स्वर्ण सम्पदाओं का स्वामी जाना-माना जाता था, उस पर समस्त विश्व की असीम श्रद्धा बरसती थी। समूची मानव जाति उससे तरह-तरह की अपेक्षायें करती थीं। इतिहास साक्षी है कि अपने देश के निवासी देव मानव अपने उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्त्तव्य से परस्पर स्नेह सद्भाव और सहकार के आधार पर सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों का सतयुगी वातावरण बनाये रहे और विश्व भर को अपना कार्यक्षेत्र मानकर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के सदुद्देश्य में लगे रहे। वे संसार के कोने-कोने में बिखरे और जहाँ गये, वहाँ शिक्षा, सामाजिकता, नीति, न्याय, शासन, शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, पशुपालन, व्यवसाय आदि की शिक्षा व्यवस्था जमाते हुये प्रगति का पथ प्रशस्त करते रहे। भारतीय संस्कृति को देव सभ्यता माना जाता रहा और उसे विश्व मानव का भावभरा असीम अभिनन्दन प्राप्त होता रहा। न केवल भारत में वरन् समूचे विश्व में सम्मुन्नत परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकना एकमात्र धर्मतन्त्र की प्रखरता का ही प्रभाव था। निश्चित रूप से आस्थाओं की उत्कृष्टता से बढ़कर मानवी सौभाग्य का और कोई आधार हो नहीं सकता। धर्मसत्ता से बढ़कर और किसी शक्ति का अस्तित्व इस संसार में है नहीं।

तथ्य को यदि समझा जा सके तो भौतिक उन्नति के उत्साह में एक पक्ष यह भी जोड़ना होगा कि उतनी ही तत्परता आत्मिक प्रगति की दिशा में भी नियोजित की जाय। राजतन्त्र समर्थ बने सो ठीक पर उसमें एक कड़ी वह भी जुड़नी चाहिये कि धर्मतन्त्र को भी दुर्बल न रहने दिया जाये। प्रतिभायें राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करें पर प्रबुद्ध वर्ग की धर्मक्षेत्र में अरुचि और उपेक्षा ही न बनी रहे। प्रगतिशीलता का जब हर क्षेत्र में प्रवेश हो रहा है तो धर्मक्षेत्र को प्रतिगामिता का अड्डा बने रहने के लिये ऐसे ही अनाथ असहाय स्थिति में रोते कराहते न पड़ा रहने दिया जाय।

अपने देश की, आज की स्थिति पर यदि गम्भीरता से विचार किया जाय तो आर्थिक दरिद्रता की तरह मानसिक पिछड़ेपन की कठिनाई भी सामने खड़ी दिखाई देगी और उसे दूर करना भी आवश्यक समझा जायेगा। गरीबी को अधिक भयंकर माना जाये या मानसिक पिछड़ेपन को ? इस प्रश्न की समीक्षा में यह भी प्रबल पक्ष है कि मानसिक पिछड़ेपन के रहते दरिद्रता दूर करने के लिये जिन प्रयासों को बढ़ाया जाना आवश्यक है, उनके लिये अभीष्ट उत्साह उत्पन्न न हो सकेगा। यदि सम्पन्नता बढ़ भी गई तो पिछड़ेपन के रहते उसका दुरुपयोग ही होगा। यह तर्क दरिद्रता दूर करने से किसी को रोकते नहीं वरन् यह कहते हैं कि चिन्तन की प्रखरता को नगण्य न माना जाय और उस ओर उपेक्षा न बरती जाये।

दरिद्रता के कारण मनुष्य की स्थिरता और प्रगति में भारी बाधा पड़ती है। यह तथ्य सर्वमान्य है पर यह भी भुला नहीं देना चाहिये कि हाथ-पैर मस्तिष्क रहते हुये भी यदि मनुष्य दरिद्र रहता है तो इसमें सबसे बडा कारण उसका मानसिक पिछड़ापन ही हो सकता है। अपनी सामाजिक कुरीतियों ने जितनी हानि पहुँचाई है उतनी अशान्ति विदेशी दासता ने भी नहीं पहुँचाई होगी। बात को यों भी कह सकते हैं कि लम्बी राजनैतिक पराधीनता का बहुत बड़ा कारण अपने सामाजिक ढांचे और चिन्तन स्तर में खोखलेपन का घुल जाना ही रहा है। अन्यथा इतनी बड़ी जनसंख्या का, इतनी सामर्थ्य और परम्परा का धनी देश इतने समय तक इस प्रकार के उत्पीड़न और अपमान का शिकार न बना रहता।

जाति उपजातियों के आधार पर प्रचलित ऊँच-नीच और अपने-विराने की मान्यता ने एक समाज से अनेक समाजों में विभक्त करके रख दिया है। मत-मतान्तरों और सम्प्रदायों ने एक ही धर्म के टुकड़े-टुकड़े करके फैंक दिये हैं और एक ही संस्कृति के अनुयायियों के बीच गहरी खाइयाँ खोदकर खड़ी कर दी हैं। आधी जनसंख्या-नारी वर्ग को प्रतिबन्धित और पददलित स्थिति में पटक दिये जाने के कारण समाज अर्धांग पक्षाघात से पीड़ित की तरह अपंग बन गया है और उसका बोझ ढोने में समर्थ पक्ष का कचूमर निकला जा रहा है। आधी जनसंख्या दुर्दशाग्रस्त स्थिति में रहे तो उसकी आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियाँ दयनीय रहेंगी ही। पिछड़ी नारी प्रतिभा सम्पन्न पीढ़ियों का निर्माण कैसे कर सकेगी और कैसे उस पिछड़ेपन के रहते परिवारों के वातावरण में हर्षोल्लास की अनुभूतियाँ जीवित रह सकेंगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विवाह शादियों में जितना खर्च होता है, उसके रहते आर्थिक स्थिरता बने रहना असम्भव है। जो कमाया जाता है वह शादियों में स्वाहा हो जाता है। वह पैसा बच सका होता और पूँजी बनकर प्रगति के आधार खड़े करता तो आज अपने देश के हर परिवार में खुशहाली दृष्टिगोचर होती और हम किसी प्रगतिशील देश से पीछे न रहते। पर इस दुर्भाग्य को क्या कहा जाये शादियों में होने वाले अपव्यय के रूप में हमारे उपार्जन का अधिकांश भाग होली की तरह जलता रहता है। मृतक भोज, अलन-चलन, देवी देवता, भिक्षुकों की सेना द्वारा खड़े किये जाने वाले नित नये आडम्बर—सब मिल कर जनसमाज पर आर्थिक दबाव डालते हैं कि उत्पादन प्रयत्नों की उपलब्धि जलते तवे पर पानी की कुछ बूँदों की तरह भाप बनकर उड़ जाती हैं।

आर्थिक उन्नति के प्रयासों की तुलना दुधारी गाय से की जाये तो सामाजिक कुरीतियों को टूटे पैंदे का दोहन पात्र कहा जायेगा। गाय जो दूध देगी वह फूटे पैंदे से होकर नीचे निकल जायेगा फिर गौ पालन से जो आशायें लगाई गई थीं, वे साकार कैसे हो सकेंगी ? गरीबी दूर करने के लिये उपार्जन बढ़ाने की जितनी आवश्यकता है, उतनी ही यह भी आवश्यक है कि उन कुरीतियों का उन्मूलन किया जाये जो हमारी आर्थिक बर्बादी के लिये उतरदायी हैं। यदि ये कुरीतियाँ यथावत् चलती रहीं तो आर्थिक प्रगति की योजनाओं का समुचित लाभ किस प्रकार मिल सकेगा ?

जाति, उपजाति, छूत, अछूत, वर्ग सम्प्रदायों के खाई खन्दक हमें एक जाति, एकराष्ट्र की तरह सुगठित, सशक्त न बनने देंगे और भीतर की दुर्बलतायें बाहर उभर-उभर कर आती रहेंगी। अस्तु सशक्तता बढ़ाने के लिये पौष्टिक भोजन जुटाने की तरह यह भी आवश्यक है कि भीतर ही भीतर खोखलापन उत्पन्न कर रही बीमारियों का उपचार किया जाये। अन्यथा बलिष्ठता उत्पन्न करने की विशालकाय तैयारी रक्त में घुसी बीमारी से उत्पन्न हाने वाले दुष्परिणाम की तरह उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाओं को कभी भी मूर्तिमान न होने देगी।

दरिद्रता की तरह शिक्षा की कमी भी अपने पिछड़ेपन का एक बड़ा कारण है पर स्मरण रखा जाये कि सरकारी स्कूलों की योजना से ही ७०% लोगों की शिक्षा दूर न हो सकेगी। इसके लिये भी भावनात्मक वातावरण बनाना पड़ेगा और जिस तरह लोग अपने पुरुषार्थ से अपनी रोटी कमाते हैं, सरकार से मांगने नहीं जाते। उसी प्रकार अपनी, अपने परिवार की शिक्षा व्यवस्था जुटाने के लिये जब अनिवार्य आवश्यकता समझी जायेगी तो अन्य दैनिक साधन जुटाने की तरह शिक्षा का प्रबन्ध भी स्वतः ही किया जायेगा। चोहे दरिद्रता हो चाहे अशिक्षा सभी दुर्बलतायें मनुष्य के पिछड़े हुये चिन्तन एवं दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया हैं। यदि इस वस्तुस्थिति को समझ लिया जाये तो पत्ते सींचने के साथ-साथ जड़ सींचने की आवश्यकता भी अनुभव की जायेगी और ठोस आधार हस्तगत हो जायेगा जिससे व्यापक दुःख दैत्य से स्थायी मुक्ति मिल सके।

जन मानस में विवेकशीलता एवं प्रगतिशीलता की भावनायें उतारना अपने युग का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। यदि सोचने की सही दिशा और कार्य करने की सही शैली उपलब्ध हो सके तो हर मनुष्य अपने साधनों में ही समुचित उपार्जन कर सकता है, आगे बढ़ने का रास्ता निकाल सकता है और अपनी तथा समाज की समस्याओं के समाधान में समुचित योगदान दे सकता है। ऐसी स्थिति में दरिद्रता जैसी समस्याओं को अपने बलबूते ही हल किया जा सकता है। हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर जा सके तो प्रतीत होगा कि आर्थिक उन्नति की तरह सोचने की परिष्कृत एवं प्रगतिशील पद्धति से जन साधारण का परिचित एवं अभ्यस्त कराया जाना भी उतना ही अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसके लिये अविलम्ब व्यवस्था जुटाई जानी चाहिये।

विचारणीय यह कि भारत के लोकमानस में मानवतावादी सद्भावना एवं सत्प्रवृत्तियों की स्थापना किस पृष्ठभूमि पर हो सकती है और उन्हें उपयोगी गतिविधियाँ अपनाने के लिये किस आधार पर सहमत किया जा सकता है ? यहाँ यह ध्यान रखने योग्य है कि अपने देश की प्रायः तीन चौथाई जनता अशिक्षित हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आबादी की दृष्टि से प्रायः तीन चैथाई जनता ही छोटे देहातों में रहती है। आज की अपनी जनसंख्या ६० करोड़ है। इनमें से ४५ करोड़ अशिक्षित और प्रायः इतने ही देहात के निवासी हैं। असली भारत यही है। शिक्षितों और शहरी लोगों को उपयोगी जानकारियाँ देने के लिये पुस्तकें, पत्रिकायें, सभायें, संस्थायें अपने-अपने ढंग से काम करती रहती हैं पर अशिक्षित और देहातियों को प्रगतिशीलता का मार्गदर्शन करने के उपयुक्त माध्यमों का खटकने वाला अभाव सामने खड़ा है। शिक्षितों को राजनीति, अर्थशास्त्र, समाज विज्ञान आदि कितने ही आधारों पर समझाया जा सकता है क्योंकि उनकी मानसिक पृष्ठभूमि का इतना विकास पढ़ने-सुनने से हो चुका है जिससे इन आधारों के सहारे आज की सामयिक समस्याओं का स्वरूप और हल समझाया जा सके। किन्तु अशिक्षित और देहाती भारत की कठिनाई यह है कि उनकी पूर्व जानकारी प्रधानतया धार्मिक जानकारियों तक सीमित है। अस्तु बात का सिलसिला उसी से जोड़कर वैसे ही उदाहरण प्रस्तुत करते हुये वे तथ्य हृदयंगम कराये जा सकते हैं जिन्हें आज की स्थिति में अपनाया और समझाया जाना आवश्यक है। धर्म भारतीय जनता का प्रिय विषय है। पिछड़ी भारतीय जनता को तो इसी को अन्धे की लाठी बनाकर आगे बढ़ चलने के लिये कहा जा सकता है। वैसे अशिक्षितों और शहरी लोगों के लिये भी धर्म-कर्म रुचिकर एवं कम प्रेरणाप्रद नहीं है। उस क्षेत्र में भी विवेकसम्मत धर्म विवेचनाओं को रुचिपूर्वक अपनाया जाता है।

उपयुक्त यही है कि धर्मतन्त्र का आश्रय लेकर उसकी कथा गाथाओं की संगति मिलाते हुये व्यक्ति, परिवार और समाज की प्रस्तुत समस्याओं का हल हृदयंगम कराया जाये और उन्हें प्रगतिशील गतिविधियाँ अपनाने के लिये प्रोत्साहित किया जाये। रामायण कथा, गीता कथा, भागवत कथा, जैसे माध्यम यदि लोकशिक्षण की सामयिक आवश्यकता पूरी करने में लगाये जायें तो उससे अति महत्त्वपूर्ण प्रयोजन सिद्ध हो सकता है। सस्ते धार्मिक आयाजनों में जो भावनात्मक वातावरण बनता है, उसमें गरम लोहे से उपकरण ढालने जैसी बात और भी आसानी से बन सकती है। यह प्रयोग अति प्राचीन काल में सफलतापूर्वक प्रयुक्त होता रहा है। 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः' की प्रतिज्ञा लेकर राष्ट्रोत्कर्ष में संलग्न पुरोहित धर्मचर्चा और धर्म प्रेरणा के सहारे ही जनमानस को प्रबुद्ध एवं प्रशिक्षित बनाने में सफलता प्राप्त करते रहे हैं। इन दिनों युग निर्माण योजना द्वारा धर्ममंच से लोक शिक्षण की इसी परम्परा को पुनः अपनाया गया है और अनुभव ने उसका चमत्कारी प्रतिफल प्रस्तुत किया है। यदि इसी प्रक्रिया को व्यापक रूप से प्रबुद्ध वर्ग द्वारा अपनाया जा सके तो समय की उस सर्वोपरि मांग को पूरा किया जा सकता है, जिसमें लोक-चेतना को प्रगतिशीलता की दिशा में धकेल देने की अनिवार्य आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

इन दिनों धर्मपक्ष की ओर से लोकश्रद्धा घट रही है। कोई भी आधार अपनी उपयोगिता सिद्ध करके ही जन सम्मान और सहयोग प्राप्त कर सकता है। धर्म के आदर्श कितने ही ऊँचे क्यों न हों पर व्यवहार में यदि कोई प्रत्यक्ष उपयोग न दिखाई पड़ेगा तो लोगों में उस दिशा में स्वभावतः अरुचि एवं उपेक्षा बढ़ेगी। पिछले दिनों यही हुआ है। धर्माध्यक्षों ने यह विचार नहीं किया कि जनता से धन एवं सम्मान मिलता है उसका परिणाम वापिस लौटाया जाना चाहिये यदि ऐसा होता तो सहज ही लोगों की धर्मबुद्धि बढ़ती और उसे अधिकाधिक सम्मान सहयोग मिलता चला जाता वैसा किया भी नहीं गया और सोचा भी नहीं गया। फलतः धर्म श्रद्धा में निरन्तर घटोतरी होता जाना स्वाभाविक ही है।

इतने पर भी देखा जा सकता है कि जनता का कितना धन, समय और सहयोग धर्मतन्त्र को मिल रहा है। ६० लाख के लगभग व्यक्ति भिक्षा वृत्ति अपनाकर धर्माश्रय के सहारे ही अपना गुजारा करते हैं। यह सरकारी कर्मचारियों की जितनी ही बड़ी सेना है। इनका निर्वाह व्यय जनता उठाती है। यदि प्रति व्यक्ति पर भोजन, वस्त्र तथा अन्यान्य खर्चों की न्यूनतम राशि ६० रुपये मासिक मान ली जाये तो ६० लाख × ६० = ३६ करोड़ रुपया प्रति माह होता है। वर्ष में यह राशि १२ × ३६ = ४३२ करोड़ हो जाती है। यह हिसाब मात्र धर्मजीवी भिक्षुकों का हुआ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोमवती अमावस्या का स्नान करने के लिये उत्तर काशी से लेकर कलकत्ता में गंगासागर तक न्यूनतम ५० लाख व्यक्ति स्नान करने दूर-दूर से जाते हैं। इनका काम छोड़ने और आने-जाने का खर्च २० रुपये प्रति व्यक्ति माना जाये तो १० करोड़ होता है। ऐसी सोमवती अमावास्यायें कम से कम ४ होती हैं। इनका खर्च ४० करोड़ हुआ। यह अकेली गंगा की बात है। यमुना, सरयू, नर्मदा, क्षिप्रा, काबेरी, गोदावरी आदि भी ऐसी दर्जनों पवित्र नदियाँ हैं, जिनका स्नान भी स्थानीय जनता लगभग उतना ही पुण्य फलदायक मानती है, इन सबके स्नान की राशि ६० करोड़ मान ली जाये तो वह १०० करोड़ हो जाती है। तीर्थयात्रा, देवदर्शन, धर्मानुष्ठान, कथा, कीर्तन आदि के खर्चे जोड़े जायें तो वे इतने हो जाते हैं, जितना भारत सरकार का वार्षिक बजट।

६० लाख पेशेवर धर्मजीवी हुये। इनके अतिरिक्त सरकारी जनगणना से बाहर सहायक धन्धे के रूप में धर्म जीविका उपार्जित करते हैं अथवा जो अपने निज के समय में से पूजा उपासना में, कथा, कीर्तन में समय लगाते हैं उस समय के घण्टे जोड़े जायें तो वे भी ३० लाख से कम मनुष्यों का श्रम नहीं बैठेगा। इस प्रकार एक करोड़ से ऊपर की जनशक्ति पूरे समय धर्म प्रयोजनों में लगी दिखाई पड़ती है।

इमारतों की दृष्टि से देवस्थानों की—धर्मस्थानों की इमारतें, जो गाँव शहर और जंगल खण्डहरों के रूप में सर्वत्र बिखरी पड़ी हैं। उनका हिसाब लगाया जाय तो सरकारी इमारतों जितना ही धन और स्थान उनमें घिरा पाया जा सकता है। सरकारी दफ्तरों, अदालत और कारखानों में जितने लोग आते जाते हैं उससे कथा, कीर्तन, दर्शन, सत्संगों और पर्व मेलों पर धार्मिक जनता की उपस्थिति कम नहीं होती।

देश की श्रम, धन, समय एवं मनोयोग की कितनी बड़ी शक्ति धर्म प्रयोजनों में संलग्न है इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करके इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि यदि राजतन्त्र की सामर्थ्य से लोक जीवन की प्रगति और समृद्धि को बढ़ाया जा सकता है तो धर्मतन्त्र में लगी हुई लगभग उतनी ही बड़ी सामर्थ्य का सहयोग करने की बात क्यों न सोची जाये। प्रतिगामी हाथों के निहित स्वार्थों से देश की इस धर्मशक्ति को छुटकारा मिल सके और उसे विचारशील मनीषियों द्वारा रचनात्मक प्रयोजनों में प्रयुक्त किया जा सके तो उसका उतना बड़ा सत्परिणाम उत्पन्न होगा जितना खाई खोदने में लगे साधनों को बाँध बनाने और इमारतें चुनने में लगाने पर सम्भव हो सकता है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में महात्मा गांधी की धार्मिकता कितनी अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुई यह सर्वविदित है। उनके महात्मा वेष, नित्य प्रार्थना कीर्तन, रामराज्य लाने के संकल्प, गौरक्षा का आश्वासन जैसी विशेषताओं ने जनमानस में उनकी ऋषि कल्प स्थापना की थी। फलतः भाव भरी सहज श्रद्धा से प्रेरित होकर जनता ने उनके आदेश आह्वान को शिरोधार्य किया और सत्याग्रह आन्दोलन अपनी प्रखरता के कारण सफल होकर रहा। स्वतन्त्रता की मांग अपने आप में महत्त्वपूर्ण थी पर महात्मा गांधी का ऋषि व्यक्तित्व उसमें सम्मिलित होकर सोना सुगन्ध का सुयोग्य बन गया। भारतीय जन नेतृत्व यदि धार्मिकता से जोड़ दिया जाये, सर्वतोमुखी प्रगति के लिये धर्मतन्त्र का प्रयोग किया जाय तो उससे आशातीत सत्परिणामों की सहज ही आशा अपेक्षा की जा सकती है।

जिन्हें राजनीति में अधिक दिलचस्पी है और वे उसी के माध्यम से समस्त समस्याओं के हल सोचते हैं, उन्हें भी इतना तो जानना चाहिये कि राजतन्त्र की असली चाबी अब जनता के हाथ में आई है। राजतन्त्र और अधिनायकवाद तक अब जन-सामर्थ्य की अपेक्षा करते हैं। प्रजातन्त्र का तो पूरा ढाँचा ही प्रजाजनों के स्तर पर निर्भर रहता है। यदि मतदाता अनाड़ी, अनुत्तरदायी है तो वे जाति बिरादरी के नाम पर, व्यक्तिगत स्वार्थसिद्धि को प्रधानता देकर, छोटे-छोटे प्रलोभनों में ललचाकर अथवा बहकावे में आकर किसी भी अनुपयुक्त व्यक्ति के पक्ष में अपना मतपत्र डाल सकते हैं। जहाँ ऐसा होगा, वहाँ प्रखरता, सम्पन्न, निर्लोभ प्रतिनिधियों का चुना जाना सम्भव नहीं। यदि अनपढ़ वोटरों को फुसलाकर मत पाने की सम्भावना बन जाये तो फिर शासनतन्त्र को उच्चस्तरीय आदर्शों के साथ चला सकने वाले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तियों को किस प्रकार सूत्र संचालन का अवसर मिलेगा ? प्रजातन्त्र की सफलता के लिये प्रधान आधार मतदाता की अपनी स्थिति इतनी सही होनी चाहिये कि उसे वह वोट को समूचे राष्ट्र की पवित्रतम धरोहर समझकर, पूर्णतया परखे हुये व्यक्ति के पक्ष में ही सील लगाये। जनसाधारण की नैतिक सहृदयता के बिना रिश्वतखोरी, लालफीताशाही, मनमानी आदि नौकरशाही की खराबियाँ सुधारी नहीं जा सकतीं। जागरूक प्रयोजनों को सताते रहना कठिन है। चरित्रवान लोग जब रिश्वत देंगे ही नहीं तो उनसे ले कौन लेगा ? अनीति के विरुद्ध संगठित हो जाने और तनकर खड़े होने का साहस जहाँ होगा वहाँ शासन तन्त्र को सीधे रास्ते पर चलने के लिये विवश होना पड़ेगा। स्वच्छ शासन के लिये प्रजातन्त्र में प्रजाजनों की प्रखरता ही उत्तरदायी होती है। इस क्षेत्र में दुर्बलता छाई रही तो जड़ें सड़ जाने पर पेड़ की ऊपर से टीमटाम करते रहना कठिन पड़ेगा। शासन सुधार के लिये मतदाता को इस स्तर का होना चाहिये कि वह स्वयं शासन तन्त्र सम्हाल सकने की प्रतिभा से सम्पन्न हो अथवा किसी पूर्ण सुयोग्य व्यक्ति के पक्ष में अपने पवित्र वोट का सर्वश्रेष्ठ उपयोग कर सके।

यह कार्य चुनाव प्रचार के दिनों में नहीं हो सकता। प्रजाजनों का बहुमत सर्वतोन्मुखी उत्कृष्टता से सुसम्पन्न हो तो वे मतदान की जिम्मेदारी निभाने से लेकर अन्य वैयक्तिक और सामाजिक कर्त्तव्यों का सही ढंग स पालन कर सकते हैं। यही वह स्थिति है, जिसमें व्यक्ति तथा समाज को समुन्नत स्थिति तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण अति कठिन और सुविस्तृत कार्य है इसे धर्म मंच के आधार पर ही किया जा सकता है। गोली से भूनने पर कम दण्ड न रखा जाये तो शायद अपराधों और अवांछनीयता की गतिविधियाँ रुक सकें। अन्यथा जहाँ तक हृदय परिवर्तन के आधार, स्वेच्छा, सद्भावना का सम्बन्ध है, उस प्रयोजन के धर्मनिष्ठा का जन मानस में प्रवेश कराने के उपरान्त ही सम्भव होने की बात सोची जा सकती है।

प्रजातन्त्र में राजसत्ता की कुंजी प्रजाजनों के हाथ है। उनका स्तर उठाने से ही रामराज्य की कल्पना साकार हो सकती है। अस्तु हम लोग भले ही राजनीति में प्रवेश न करें, भले ही चुनाव न लड़ें, पर काम वही कर रहे हैं, जिससे जागरूक मतदाता समय-समय पर अपने मताधिकार का सही प्रयाग करके स्वच्छ शासन की स्थापना में सदा समर्थ रह सकें। इस प्रकार अपना मिशन प्रत्यक्ष में राजनीति से पृथक् रहते हुये अप्रत्यक्ष रूप से स्वच्छ शासन की सम्भावना को मूर्तिमान करने में प्राणपण से संलग्न समझा जा सकता है।

शरीर की आवश्यकता है—भूख और आत्मा की आवश्यकता है—धर्म। शरीर आहार पाकर जीवित रहता है और अन्तःकरण को धर्म धारणा के सहारे चैन मिलता और सन्तोष होता है। यदि जीवित रहना हो तो आहार के साधन जुटाने ही चाहिये और यदि आन्तरिक तुष्टि अभीष्ट हो तो धर्म के प्रति आस्था और तत्परता की मनःस्थिति बनी रहनी चाहिये। व्यक्तित्व की स्थिरता और प्रगति के लिये इस स्तर के प्रयत्न चलने ही चाहिये, जिसमें शारीरिक ही नहीं आत्मिक आवश्यकता भी पूरी होती चले। अपूर्णता पूर्णता की ओर बढ़ चलने का जीवन लक्ष्य धर्म-धारणा के सहारे ही सम्भव हो सकता है। ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ने के लिये हाथ में लाठी का सहारा लेना पड़ता है ओर आत्मा को परमात्मा की महानता तक पहुँचाने के लिये धर्म का अवलम्बन ग्रहण करना पड़ता है। अस्तु इस महान् आधार को मानवता का मेरुदण्ड माना जाये और हर कीमत पर जीवन्त रखा जाये।

धर्म व्यक्ति की आवश्यकता और समाज की मांग है। समाज की सुव्यवस्था और सुरक्षा के लिये धर्म आस्था का उत्कर्ष और धर्म मर्यादाओं का पालन नितान्त आवश्यक है। आदर्श जीवन की, लोक मंगल के लिये बढ़े-चढ़े अनुदान प्रस्तुत करने की आन्तरिक उमंग मात्र धर्म प्रेरणा से ही उत्पन्न होती है। सांसारिक दृष्टि से तो इन दोनों उमंगों में प्रत्यक्ष ही हानि दिखाई पड़ती है। यदि समाज में आदर्शवादी परम्पराओं का प्रचलन अभीष्ट हो, यदि देश नररत्नों, महामानवों और चरित्रनिष्ठ व्यक्तित्वों की आवश्यकता अनुभव करता हो तो उनके लिये वातावरण को धार्मिक ऊर्जा से गरम बनाये रहना नितान्त आवश्यक है। संकीर्ण स्वार्थपरता ही व्यक्ति को निकृष्ट बनाती है और उसी के पनपने से भ्रष्टता बढ़ती और अपराधी प्रवृत्तियाँ सिर उठाती हैं। अनाचार की बाढ़ सामाजिक स्थिरता, शान्ति और प्रगति को बुरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तरह बहा ले जाती है और फिर जो कुछ शेष बचता है उसमें खेद एवं पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ बचता नहीं। अस्तु व्यक्ति और समाज की स्थिरता के लिये धर्म को आधारभूत मानकर चलना होगा। उसकी रक्षा के लिये उतनी ही गम्भीरता से सोचना होगा जितना कि नागरिक सुरक्षा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये सोचा और किया जाता है। सद्भावनायें और सत्प्रवृत्तियाँ ही प्रगति का आधार हैं और इन दोनों को धर्म धारणा के दो अविच्छिन्न चरण माना जाना चाहिये।

इन दिनों धार्मिक क्षेत्र की स्थिति दयनीय और दुर्दशाग्रस्त है। उसे देखकर प्रबुद्ध वर्ग नाक-भौं सिकोड़ना और उपेक्षा, उपहास एवं व्यंग की प्रतिक्रिया व्यक्त करके शान्त हो जाता है। इससे काम नहीं चलेगा। आज का दुर्दशाग्रस्त धर्म भी किसी कदर जनमानस को पूर्ण भ्रष्ट बनने से बहुत हद तक रोकता है। धर्मप्रेमी और धर्मभीरु मनुष्य अपेक्षाकृत कम उद्दण्ड और कम अनैतिक होते हैं। इतना भी कम नहीं। यदि उस ओर विचारशील वर्ग की उपेक्षा चलती रही और अवांछनीय तत्वों का ऐसा ही आधिपत्य बना रहा तो धर्म धारणा का क्रमशः ह्रास ही होता चला जायेगा और उसके स्थान पर निहित स्वार्थों की पूर्ति करने वाले सड़े-गले आडम्बर ही शेष रह जायेंगे। तब धर्म नास्तिकवादी प्रचार के कारण नहीं अपने आन्तरिक खोखलेपन के कारण आप ही बेमौत मरेगा। इससे बढ़कर अपने संसार का दुर्भाग्य और कोई हो नहीं सकता। नीति-मर्यादा, संयम, उदारता जैसे तत्व यदि निकल जायें तो मनुष्य से बढ़कर सर्वभक्षी, आक्रमणकारी, धूर्त और आततायी कोई दूसरा प्राणी हो ही नहीं सकता। श्रम के अभाव में ऐसे प्राणी शेष रहेंगे और वे एक-दूसरे का कतर व्योंत करते हुये मानवी अस्तित्व को ही इस धरती पर से समाप्त कर देंगे।

हमें समय रहते चेतना चाहिये और खोखले खड़े धर्म कलेवर में नये सिरे से प्राण संचार करने चाहिये। इसके लिये धर्म के प्रति गहरी निष्ठा रखने वाले व्यक्तियों को स्वतः आगे बढ़ना चाहिये और धर्म के जिस स्वरूप को जन मानस में उतारना है, उसका रूप निर्धारण करना चाहिये। यह लोकोपयोगी होना चाहिये। उसमें लगने वाला प्रत्येक क्षण प्रत्येक श्रमविन्दु और प्रत्येक पैसा व्यक्ति और समाज के उत्कर्ष में बीज की भूमि का प्रस्तुत कर सकने वाला होना चाहिये ताकि उसके अंकुरित होने पर सद्भावना और सत्प्रवृत्तियों का फसल लहलहाती हुई हर दिशा में दृष्टिगोचर होने लगे।

धर्मत्व की पुनः प्राण प्रतिष्ठापना के लिये आवश्यक है कि उसे भ्रान्तियों, मूढ़ मान्यताओं से मुक्त किया जाये। धर्म-शोषकों को अपनी पकड़ ढीली करने के लिये कहा जाये और उन्हें पीछे हटने के लिये कहा जाये। इसमें निहित स्वार्थों का कोपभाजन बनना पड़ सकता है। मुफ्त का सम्मान और धन जब हाथ से छिनेगा तो उनका रुष्ट और क्रुद्ध होना स्वाभाविक है पर यह विवशता है। समाजवादी व्यवस्था लाने के लिये राजा, सामन्त, जागीरदार अमीरों को रुष्ट किया जा सकता है तो धर्मक्षेत्र की महानता पर ग्रहण की तरह चिपके हुये राहुकेतुओं को हटाने की आवश्यकता भी पड़ेगी ही और उन्हें रुष्ट करने का खतरा भी उठाना ही पड़ेगा।

आवश्यकता इस बात की है कि विचारशील वर्ग धर्म की उपयोगिता को समझे, उसके यथार्थ स्वरूप की पुनः प्राण प्रतिष्ठा करे और उसे जनमानस में उतारने के लिये प्रबल प्रयत्नों के साथ जुट जाय। इसके लिये प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक प्रक्रिया के अन्तर्गत आने वाले लेखनी, वाणी जैसे सभी सम्भव साधनों का प्रयोग करना आवश्यक होगा। सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की होगी कि धर्म सेवा में निरत व्यक्ति अपने आप को भीतर और बाहर से इतना प्रामाणिक बनाने का साहस जुटायें, जिन्हें जीवन्त धर्म-प्रतिमा के रूप में देखा-परखा जा सके। प्रचारतन्त्र के सबसे प्रचण्ड आधार ऐसे व्यक्तित्व ही हो सकते हैं, जिन्हें प्राचीनकाल के साधु ब्राह्मणों के वेश कलेवर में नहीं वरन् आस्था की गहराई को समूचे व्यक्तित्व पर छाया हुआ देखा जा सके। साधु-ब्राह्मणों का वर्ग धर्म की छाया में अब तक जीवित रहा है, अब ऐसे लोगों को समय ने पुकारा है, जो साधु ब्राह्मण की भूमिका सच्चे अर्थों में निभा सकें और अपनी छाया में मृतप्राय धर्मतत्व को पुनः नवजीवन प्रदान कर सकें। यदि ऐसा होगा तो धर्मयुग वापिस लाने की सतयुग की कल्पना साकार करने की सम्भावना सुनिश्चित है। तब धर्मराज्य की—रामराज्य की आवश्यकता भी सहज पूरी हो चलेगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण प्रयोग और उपलब्धियाँ

भारत धर्म प्राण देश है। धर्म तत्व विकृत हो जाने से सभी क्षेत्रों में विकृतियों की बाढ़ आ जानी स्वाभाविक है। उनका शमन भी धर्मधारणा के शोधन से ही किया जा सकता है।

धर्म वह तत्व है जिसके धारण करने से लौकिक अभ्युदय तथा आन्तरिक निःश्रेयस की उपलब्धि हो सकती है। यह लाभ एकांगी धर्म नहीं दे सकता, उसके लिये उसके सिद्धान्त और क्रिया पद्धति दोनों का समुचित समन्वय आवश्यक है। धार्मिक क्रिया कर्मों के साथ जुड़े हुये उनके सैद्धान्तिक पक्ष को भी जन-मानस में गहराई से स्थापित कराना धर्म मंच से लोकशिक्षण की प्रक्रिया का आधार है। ठीक प्रकार इसका प्रयोग करके उसके अद्‌भुत प्रभाव और अनुपम उपयोगिता का लाभ कभी भी—कहीं भी उठाया जा सकता है।

व्यक्ति और समाज की सुख समृद्धि के लिये अनेक प्रकार के प्रयास विभिन्न पक्षों और शैलियों से चलाये जाते रहते हैं। उसके लिये साधन सम्पत्ति बढ़ाने, व्यापार और उपार्जन को अधिक व्यापक बनाने के लिये अनेक विधि व्यवस्थायें बनायी और चलायी जाती रही हैं। किन्तु उनकी सफलता जिस एक आधार पर टिकी रहती है, वह है उन्हें चलाने वाले व्यक्तियों का व्यक्तित्व। निकृष्ट व्यक्तित्व अच्छी से अच्छी योजना तथा श्रेष्ठ से श्रेष्ठ साधनों को मटियामेट कर देते हैं, जबकि श्रेष्ठ व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति सामान्य साधनों से भी चमत्कारी परिणाम उत्पन्न कर दिखाते हैं। इसलिये विकास के अनेक साधनों, उपकरणों एवं विधि-व्यवस्थाओं का महत्त्व स्वीकार करने के साथ-साथ उसके लिये उत्कृष्ट व्यक्तित्वों की अनिवार्य आवश्यकता को झुठलाया नहीं जा सकता।

संसार के उज्ज्वल भविष्य की समस्याओं का आधार उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व सम्पन्न प्रखर व्यक्तित्वों को ही माना जा सकता है। थोड़ा विचार करने से ही तथ्य स्पष्ट हो जायेगा कि समृद्धि का उपार्जन और उसका सदुपयोग कर सकना प्रखरता सम्पन व्यक्तित्वों के लिये ही सम्भव है। गये गुजरे स्तर के लोग न तो सम्पत्ति कमा सकते हैं और न उसका सदुपयोग कर सकते हैं। अस्तु सम्पत्ति वृद्धि के प्रयत्नों को एकांगी रहने देने से काम नहीं चलेगा। उसके साथ-साथ आदर्शवादी चरित्रनिष्ठ व्यक्तित्वों को उभारना भी नितान्त आवश्यक है। यह कार्य धर्मतन्त्र के माध्यम से जितनी अच्छी तरह, जितनी सरलतापूर्वक और जितनी गहाराई के साथ किया जा सकता है, उतना किसी प्रकार नहीं।

विकृत धर्माडम्बरों की भर्त्सना तो बहुत होती रही है और इसी आधार पर समूचे धर्मक्षेत्र को ही अनावश्यक ठहराया जाने लगा है पर यह प्रयोग करने का प्रयत्न नहीं हुआ कि धर्म का उसके शुद्ध स्वरूप में रखने, प्रतिगामी निहित स्वार्थों के हाथों से उसे मुक्ति दिलाने और जन मानस के परिष्कार के लिये उसे काम में लाने का प्रयोग किया जा सकता है या नहीं ? यह प्रयोग युग निर्माण योजना के अन्तर्गत हुआ है।

चिर प्राचीन का चिर नवीन शैली से परीक्षण—प्रयोगशालाओं में परीक्षण छोटे रूप में होते हैं पर यदि वे उपयोगी सिद्ध हों तो फिर उनका प्रचलन बड़े रूप में चल पड़ता है। 'धर्ममंच से लोक शिक्षण' का प्रयोग ऐसे ही परीक्षण की तरह समझा जाय और देखा जाये कि बड़े परिमाण में क्या प्रक्रिया अपनाये जाने योग्य है ? राजतन्त्र भौतिक क्षेत्र में अपनी क्षमता निर्विवाद रूप में सिद्ध कर रहा है। यदि धर्मतन्त्र को उसके सही रूप में कार्यान्वित होने का अवसर मिल सके तो निस्सन्देह उसका योगदान भी मानवी प्रगति में एक अति महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है। युग निर्माण योजना द्वारा यह प्रयोग और परीक्षण प्रायः चौथाई शताब्दी से चल रहा है। उसके स्वरूप और परिणाम को यदि गम्भीरतापूर्वक देखा जा सके तो उसके प्रतिफल को सन्तोषजनक पाया जा सकता है और यह आशा बँध सकती है कि यदि समर्थ हाथों में इस दिशा में अधिक प्रयास हो सके तो उससे युग की एक महती आवश्यकता पूरी की जा सकती है।

धर्मतन्त्र की क्षमता और उपयोगिता आज की स्थिति का अध्ययन करके भी जानी जा सकती है। तथ्य स्पष्ट है धर्मजीवी लोगों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संख्या पिछली जनगणना के हिसाब से ६० लाख के लगभग है। इसी प्रकार तीर्थयात्राओं, स्नान, पर्वों, कुम्भ आदि मेलों, देवालयों, धर्मानुष्ठानों, कर्मकाण्डों में जो धन खर्च होता है, वह सरकारी राजस्व जितना ही जा पहुँचता है। ६० लाख धर्मजीवी और न्यूनाधिक उतने ही स्वेच्छा संलग्न व्यक्तियों के श्रम समय का यदि मूल्यांकन किया जाय तो वह भी सरकारी कर्मचारियों जितना ही जा पहुँचता है। यह शक्ति कितनी बड़ी है इसका अनुमान लगाया जाये तो राजतन्त्र में संलग्न साधनों के बाद दूसरे नम्बर पर धर्मतन्त्र ही आता है, जिसके लिये इतनी प्रचुर शक्ति का उपयोग होता है।

खीज में धर्मनिष्ठा को अवांछनीय घोषित करके कम्युनिष्ट देशों की तरह उसे समाप्त किया जा सकता है। इससे अपव्यय तो रुक जायेगा, पर साथ वह अमृत स्रोत भी सूख जायेगा जो श्रद्धापूर्वक स्वेच्छा सहयोग से परमार्थ प्रयोजनों के लिये अन्तःप्रेरणा के साथ हुलसता रहता है। फिर परमार्थ कार्य सरकार के हाथ में रहेंगे। व्यक्ति उस दिशा में न कुछ सोच सकेगा और न कुछ कर सकेगा। यह इतनी बड़ी क्षति होगी, जिसकी पूर्ति कदाचित ही अन्य किसी उपाय से सम्भव हो सके। अस्तु रोग को मारा जाये और रोगी को बचाया जाय की नीति ही उपयुक्त सिद्ध होगी। धर्मतन्त्र में घुसी हुई विकृतियाँ उखाड़ी जायें, निहित स्वार्थों को उसके शोषण से विलग किया जाये, किन्तु धर्म की आत्मा और आस्था को जीवन्त बनाये रखा जाय। श्रद्धा की अपनी शक्ति है। व्यक्ति की आन्तरिक महानता उसी पर अवलम्बित है। धर्म का समग्र उच्छेद हो गया तो आदर्शवादी आस्थाओं की भी इतिश्री हो जायेगी।

लोकशिक्षण के अनेकों आधार हो सकते हैं। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथ्यों को प्रधानता देते हुये भी लोकमानस को उपयोगी दिशा में ढाला जा सकता है पर भारत की अपनी विशेष परम्परा है। उसके अनुरूप आधार चुनना अधिक सफल एवं श्रेयस्कर सिद्ध होगा। अपने देश की प्रायः एक चौथाई जनता छोटे देहातों में रहती है। अशिक्षा भी लगभग इतनी ही है। अपने देश का तीन चौथाई भाग छोटे देहातों में रहता है और अशिक्षित है, संक्षेप में यही है अपनी वास्तविक तस्वीर। यहाँ एक बात और जोड़नी होगी कि उसकी चिन्तन परम्परा में धर्म दर्शन के लियें स्थान रहा है अन्य आधार समझ सकने में उसे अभी काफी समय लगेगा। आज की स्थिति में अशिक्षित और देहाती भारत को युग पुकार सुनाने के लिये धर्म-मंच ही सबसे उपयोगी आधार हो सकता है। गान्धीजी इस तथ्य को समझते थे। उनने महात्मा गान्धी के रूप में जो कार्य किया शायद उतना वे मिस्टर गान्धी होकर न कर पाते। कांग्रेस कार्यक्रमों से सत्य, अहिंसा, रामराज्य, प्रार्थना, आत्म-संयम, गौ-रक्षा, मद्य-निषेध, जैसे तत्वों को मिला देने से उसे जनमानस में गहराई तक प्रवेश करने का कितना अवसर मिला ? इसका यदि दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक पर्यवेक्षण किया जाये तो प्रतीत होगा कि स्वतन्त्रता में कांग्रेस को श्रेय मिलने में, भारतीय जन शक्ति का सघन सहयोग मिलने में इस भावनात्मक प्रक्रिया का महत्त्व कम नहीं था।

राष्ट्र का भौतिक निर्माण जितना आवश्यक है उतनी ही भावनात्मक प्रगतिशीलता भी आवश्यक है। हमारा बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक स्तर जितना ऊँचा होगा उतना ही सर्वतोन्मुखी विकास की संभावनायें साकार हो सकेंगी। धर्मतन्त्र को आधार मानकर यदि चला जाये तो न केवल पिछड़े हुये वरन् शिक्षित एवं शहरी जनमानस को भी अभीष्ट उत्कर्ष की प्रेरणा दी जा सकती है। इस प्रयास में दुहरा लाभ है। मानवी अन्तःकरण में चिरघोषित धर्म धारणा के लिये जो यत्किंचित स्थान है, उसका उपयोग नवयुग की आवश्यकता पूरी करने के लिये उतनी ही सफलतापूर्वक किया जा सकता है जितना कि पिछली पीढ़ी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये कर चुकी है।

धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण की प्रक्रिया अपनाकर चलने में दुहरा लाभ सोचा गया। एक तो धर्म का वास्तविक स्वरूप समझने और उनकी उपयोगिता समझकर उस निष्ठा को अपनाये रहने का अवसर मिलेगा जो वस्तुतः मानवी उत्कृष्टता बनाये रहने का सुदृढ़ आधार है। इसके अतिरक्त धर्म प्रक्रिया को युग की आवश्यकता पूरी कर सकने के लिये नियोजित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने से उसका चमत्कारी परिणाम सामने आ सकता है।

यहाँ एक बात और जानने योग्य है कि धर्ममंच से लोकशिक्षण का प्रारम्भ हिन्दू धर्म से किया गया है पर वह इतने तक सीमित नहीं है। चूँकि उसके सूत्र संचालक हिन्दू धर्म में पले हैं, उसी के जानकार हैं और उनके सम्बन्ध इसी क्षेत्र में अधिक हैं। इसलिये सुविधा की दृष्टि से कार्य आरम्भ इसी क्षेत्र से उपयुक्त समझा गया। निकट भविष्य में यही पद्धति अन्य धर्मों के लिए भी अपनायी जायेगी। विभिन्न धर्मों के शास्त्रों के सम्पादन और प्रकाशन इस स्तर पर होंगे ताकि वे मानवी आदर्शों के अनुरूप एकता, समता, शुचिता और समता के समर्थन में जुटे हुय विश्व परिवार के एक विवेकशील घटक की भूमिका निबाहते हुये दिखाई पड़ें।

जिस प्रकार इन दिनों युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत चल रहे धर्म मंच से लोकशिक्षण प्रयोग में हिन्दू धर्मानुयायी मार्गदर्शक उस मान्यता की जनता को प्राचीन परम्पराओं के माध्यम से युग की आवश्यकतापूर्ण कर सकने वाला प्रशिक्षण दे रहे हैं। ठीक उसी प्रकार अन्य धर्मों के अनुयायी भी अपने धर्म-ग्रन्थों और परम्पराओं को इसी प्रकार प्रयुक्त करते दिखाई पड़ेंगे। ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, पारसी, यहूदी आदि धर्मों को भी इसी प्रकार हाथ में लिया जायेगा और उन धर्मों के प्रचारक अपनी प्राचीन मान्यताओं की व्याख्या आज की आवश्यकता के अनुरूप करते हुये दिखाई देंगे।

जिस प्रकार कई भाषाओं के माध्यम से एक ही आदर्श का प्रतिपादन होते रहने में कोई कठिनाई नहीं पड़ती, उसी प्रकार भिन्न-भिन्न धर्मों को यदि विद्वेष और विलगाव उत्पन्न करने से रोककर सार्वभौम सद्भाव उत्पन्न करने और सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ाने में लगाया जा सके तो इससे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रयोजन पूरा हो सकता है।

अपेक्षा की जानी चाहिये कि युग निर्माण योजना अगले दिनों वही प्रयास अन्य धर्मों के क्षेत्र में भी आरम्भ करेगी, जिसका हिन्दू धर्म से शुभारम्भ किया गया है। यों हिन्दू धर्म को विश्व धर्म के, मानवीय धर्म के रूप में स्वीकार करने में भी किसी विचारशील को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये। उसमें वे सारी विशेषतायें मौजूद हैं जो विश्व के बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा सार्वभौम धर्म की आवश्यकता पूरा कर सकने योग्य स्वीकार की जा सके।

धर्म का दार्शनिक पक्ष अध्यात्म है, जिसकी ब्रह्मविद्या एवं तत्व दर्शन के अन्तर्गत विशद् व्याख्या की गई है। धर्म का दूसरा पक्ष कर्मकाण्डपरक है, जिसमें योगाभ्यास, तपश्चर्या, उपासना एवं विभिन्न धर्मानुष्ठान कर्मकाण्ड सम्मिलित हैं। दोनों ही पक्ष एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों के समन्वय से धर्म का सम्पूर्ण कलेवर बनता है। दार्शनिक पक्ष को स्वाध्याय, सत्संग, चिन्तन, मनन एवं कथा प्रवचनों के माध्यम से हृदयंगम किया जाता है। कर्मकाण्डों की शोभा, सज्जा, हलचल एवं जन उपस्थिति से भावभरा उत्साह उत्पन्न होता है। प्रत्येक क्रियाकलाप के दृश्य और श्रव्य के प्रभाव से मनोवैज्ञानिक वातावरण उत्पन्न होता है। अस्तु उनके अधिक प्रभावशाली परिणाम सामने आते हैं।

दार्शनिक पक्ष समझने समझाने के लिये सुविकसित मनोभूमि चाहिये, वैसी मनःस्थिति जन साधारण की होती नहीं अस्तु धर्मानुष्ठानों, कर्मकाण्डों, आयोजनों के आधार पर परम्परागत प्रक्रिया अपनाकर धर्म धारणा को हृदयंगम करा सकना सरल पड़ता है। उनके उत्सवों जैसी स्थिति बनती है और अधिक प्रभावी सिद्ध होती हैं। यही कारण है कि सभी धर्मों में कर्मकाण्डों की परम्परा है और उसे अपनाये रहने के लिये फलश्रुति के साथ में महात्म्यों का विस्तार है। यही कारण है कि जनसाधारण ने धर्म का मोटा अर्थ परम्परागत विधि विधान को ही मान लिया है। उन्हें अपनाने वाले धर्मात्मा या धर्मप्रेमी कहलाते हैं।

इन आस्थाओं, मान्यताओं और परम्पराओं को रचनात्मक दिशा में मोड़ा जा सकता है और उनसे व्यक्ति और समाज में सद्भावनायें एवं सत्प्रवृत्तियाँ विकसित करने का कार्य लिया जा सकता है। यह सब कैसे सम्भव हो, इसके लिये जो विनम्र प्रयत्न पिछले दिनों एक प्रयोगशाला में होते रहे हैं, अब उन पर विचारशील वर्ग का ध्यान आकर्षित किया जा सके, उसका समय आ गया। यह विवरण पुस्तिका 'धर्म मंच से लोकशिक्षण' दिशा में किये गये प्रयत्नों की अति संक्षिप्त जानकारी है। प्रकाशन इसलिये किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गया है कि विज्ञजन इस प्रयास के गुण-अवगुणों पर अधिक गम्भीरतापूर्वक विचार करें और यदि वे उपयोगी प्रतीत हों तो सोचें कि क्या यह प्रयत्न अधिक व्यापक रूप में किया जाना उचित होगा ?

आरम्भ और विस्तार—जन मानस के परिष्कार के अभियान का आरम्भ तो अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन के साथ-साथ सन् १९४० से आरम्भ हुआ, पर तब वह पत्रिका के माध्यम से पाठकों तक लेखबद्ध विचार पहुँचाने और उनमें से जो प्रभावित दिखाई पड़ते उनके साथ व्यक्तिगत पत्र व्यवहार आरम्भ कर देने की प्रक्रिया तक सीमित था। लेख से प्रभावित और पत्र व्यवहार से उत्साहित व्यक्ति तब मथुरा आते, अखण्ड ज्योति कार्यालय में ठहरते थे। घनिष्टता बढ़ती, पारिवारिक आत्मीयता उत्पन्न होती और मिल जुल कर कुछ काम करने की बात आगे चलती थी। साहित्य सृजन और पाठकों के साथ पारिवारिकता का अभिवर्धन यही है युग निर्माण योजना की आरम्भिक संगठनात्मक प्रक्रिया का स्वरूप।

परिवार में कुछ नियमिततायें और मर्यादा—बन्धन बाँधने की बात सामने आई और जो कई सौ व्यक्ति परिजन बन गये थे, उनसे एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य लोकमंगल के लिये लगाते रहने का अनुरोध किया गया जो अधिकांश ने स्वीकार कर लिया। दस पैसे नित्य से ३ रुपये मासिक के करीब होते हैं। इस राशि को अखण्ड ज्योति पत्रिका तथा उसी संस्थान से प्रकाशित अत्यन्त सस्ता विचार क्रान्ति साहित्य खरीदा जाता था और एक घण्टा समय 'झोला पुस्तकालय' चलाते हुये जन सम्पर्क स्थापित करने और नव निर्माण की विचारधारा को पढ़ाने सुनाने में लगाया जाता था। आरम्भिक दिनों में कई वर्ष तक यही स्वरूप और कार्यक्रम युग निर्माण योजना का बना रहा।

यह कदम और आगे बढ़ा। जहाँ इस प्रकार के दस परिजन हो गये, वहाँ उनका एक शाखा संगठन बना दिया गया। उनका एक व्यवस्थापक कार्यवाहक बनने लगा। साप्ताहिक सत्संगों का क्रम बना और धकेलगाड़ी पर 'चल पुस्तकालय' लेकर साहित्य को पढ़ाने, वापिस लाने एवं बेचने की प्रक्रिया कार्य रूप में परिणित हुई। सदस्यों के जन्मदिन मनाने की एक विशेष प्रथा का प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार विचार गोष्ठियाँ होने लगीं और उनमें धार्मिकता का समावेश रखने के लिये सामूहिक गायत्री जप एवं छोटे गायत्री यज्ञ का कर्मकाण्ड भी जुड़ गया। यह युग निर्माण परिवार का दूसरा चरण था। कार्य पद्धति सरल थी और आकर्षक एवं उपयोगी लगी अस्तु उसमें प्रभावित होकर शाखा संगठन में अन्य लोग भी सम्मिलित होने लगे।

संगठन के तीसरे चरण में बीस पैसा नित्य जमा करने के लिये 'ज्ञान घट' बनाये गये और वे प्रभावित लोगों के यहाँ रखे गये। इस एकत्रित राशि से हर जगह रचनात्मक कार्य चल पड़े। प्रौढ़ शिक्षा को सर्वप्रथम हाथ में लिया गया। निरक्षरता मिटाने के लिये पुरुषों की रात्रि पाठशालायें और महिलाओं की अपरान्ह शालायें आरम्भ हुईं अदल-बदल कर साप्ताहिक सत्संगों के रूप में मुहल्ले-मुहल्ले अच्छी उपस्थिति की प्रभावशाली गोष्ठियाँ चल पड़ीं। परिवार निर्माण के लिये बच्चों के संस्कार कराने के अति सरल, बिना खर्च की, किन्तु अत्यन्त प्रभावशाली प्रक्रिया चल पड़ी, इन माध्यम से परिवारों को किस प्रकार आदर्श बनाया जाता है। इसके विभिन्न पक्ष समझाये जाने लगे। इस शिक्षण का जा तत्काल प्रभाव देखा गया, उसने इन संस्कारों की माँग इतनी बढ़ा दी कि साप्ताहिक सत्संगों के स्थान पर प्रायः नित्य ही किसी न किसी के घर जन्मदिन मनाने और बच्चों के संस्कार कराने के माध्यम से परिवारों की सर्वतोन्मुखी प्रगति के लिये आयोजित अति महत्त्वपूर्ण गोष्ठियाँ होने लगीं। इस सामान्य सी कार्य पद्धति ने युग निर्माण परिवारों को अपने-अपने स्थानों पर अतीव सम्मान प्रदान किया और उन्हें उत्साह- वर्धक जन समर्थन एवं सहयोग मिलने लगा। यह तीसरा चरण था।

चौथे चरण में प्रवेश करते-करते युग निर्माण परिवार अपने ढंग का अनोखा संगठन बन गया। उसने ज्ञान-यज्ञ को, जन-मानस परिष्कार प्रक्रिया को और भी आगे बढ़ाया। वर्ष में छः बड़े पर्वों को सामूहिक रूप से मनाने का निश्चय किया गया। (१) बसन्त पंचमी, (२) होली, (३) गंगा दशहरा, (४) श्रावणी, (५) विजयादशमी, (६) दिवाली। यह छः अनिवार्य पर्व माने गये और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(१) कृष्ण जन्माष्टमी एवं (२) रामनवमी आवश्यक। जहाँ छः सम्भव थे वहाँ छः और जहाँ आठ हो सकते थे वहाँ आठ पर्व सामूहिक रूप से मनाये जाने लगे। सामूहिक गायत्री हवन और मनाये जाने वाले पर्व से सम्बन्धित प्रेरणा पर इस प्रकार प्रवचन जिनमें वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन की सामयिक समस्याओं के समाधान सुझाये जाते हैं। यह पर्व आयोजन हर जगह उत्साहपूर्वक मनाये जाने लगे। मनाने की शैली में धार्मिक परम्परा का पुट तो अवश्य रहा पर वस्तुतः उसे राष्ट्रीय प्रगति के लिये आवश्यक सभी महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर जन साधारण को प्रखर मार्गदर्शन कहा जाये तो उसमें तनिक भी अत्युक्ति न होगी।

वर्ष में एक बार युग-निर्माण सम्मेलन सहित गायत्री यज्ञ की परम्परा भी इन शाखाओं में चल पड़ी। विचारशील लोगों ने इस प्रचलन में युग परिवर्तन की जड़ें जमती देखीं और सर्व साधारण ने इन्हें सस्ते धार्मिक मनोरंजन के रूप में समझा और इस दृष्टि से भी उसमें भरपूर योगदान दिया। इन सम्मेलनों में स्थानीय जनता की उपस्थिति इतनी होती रही, जिसे अनुपात की दृष्टि से आशातीत कहा जा सके।

इन समस्त आयोजनों में गायत्री मन्त्र और यज्ञीय कर्मकाण्ड को प्रमुखता दी गई। यह दोनों ही भारतीय धर्म में आरम्भ से ही उच्चस्तरीय श्रद्धा केन्द्र रहे हैं। गायत्री मन्त्र को भारतीय संस्कृति की जननी और यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता माना जाता रहा है। गायत्री गुरुमन्त्र है। उसकी प्रतिमा सिर पर शिखा और कन्धे पर यज्ञोपवीत के रूप में हर हिन्दू स्थापित करता है। यज्ञ के बिना कोई संस्कार, पर्व, त्यौहार एवं शुभ कर्म सम्पन्न नहीं होता। होली यज्ञ पर्व है। विवाह और अन्त्येष्टि जैसे संस्कारों में यज्ञकर्म ही प्रधान है। हिन्दूओं का मुर्दा जिस चिता में जलता है, वह यज्ञ कर्म का ही ध्वंसावशेष है। गायत्री मन्त्र के प्रति बिना सम्प्रदाय भेद के सबकी आस्था है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुये युग निर्माण योजना ने गायत्री और यज्ञ को सांस्कृतिक पुनरुत्थान प्रक्रिया में प्रतीक रूप से आगे रखा और दोनों की अतीव प्रेरणाप्रद व्याख्या की। गायत्री सद्बुद्धि की देवी विवेकशीलता और सद्भावना की प्रतीक। यज्ञ-पुण्य परमार्थ का, संयम सेवा का प्रतीक। आदर्शवादी क्रियाकलापों में यज्ञीय प्रेरणा का प्रकाश है जीवन को यज्ञमय बनाने को दीक्षा अग्निहोत्र के प्रतीक माध्यम से मिलती है। संक्षेप में गायत्री की उत्कृष्ट चिन्तन और यज्ञ की आदर्श कर्तृत्व का प्ररणा केन्द्र कहा गया और गायत्री यज्ञ के धर्मानुष्ठान की व्याख्या रूप सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों के स्वरूप समझाते हुये वह सब कुछ कहा गया जो व्यक्ति, परिवार और समाज के अभिनव निर्माण के लिये हृदयंगम कराया जाना चाहिये।

युग निर्माण योजना के अन्तर्गत सम्पन्न होने वाले गायत्री यज्ञ आयोजनों की अपनी तीन मौलिक विशेषतायें हैं—(१) उपयोगी खाद्यान्न का एक दाना भी नष्ट न किया जाना (२) आयोजन की तैयारी तथा व्यवस्था कार्य अधिकतर श्रमदान से ही सम्पन्न किया जाना। (३) आयोजन में सम्मिलित होने वाले प्रत्येक व्यक्ति की भावनायें उभारकर उस अवसर पर कम से कम एक दुष्प्रवृत्ति छोड़ने और एक सत्प्रवृत्ति अपनाने के लिये व्रत लेने के लिये तत्पर किया जाना। इसके समावेश से अपने समस्त यज्ञायोजन नव निर्माण की एक अतीव प्रेरक प्रक्रिया बन गये और उनसे मिशन को जन सहयोग मिलने एवं कार्य क्षेत्र बढ़ने का अति महत्त्वपूर्ण आधार मिल गया।

ज्ञातव्य यह है कि जड़ी-बूटियाँ सुगन्धित वनस्पतियाँ श्रमदान से एकत्रित करके उन्हीं से अपनी हवन सामग्री बनती है। तिल जौ, चावल आदि अन्नों का उसमें समावेश नहीं होता। घी को न्यूनतम मात्रा प्रतीक रूप में ही ली जाती है। यज्ञशाला निर्माण, जलकलशों की महिलाओं द्वारा पदयात्रा, अन्य व्यवस्थायें प्रायः उस कार्य में उत्साह रखने वाले लोगों के श्रमदान से ही सम्पन्न होती है। आगन्तुकों के लिये दाल चावल जैसा "कच्चा" भोजन ही परसा जाता है। भोजन बनाने परोसने से लेकर आहुति देने तक के कार्यों में जाति-पाँति का कोई बन्धन नहीं रहता। पुरातन पन्थी मात्र ब्राह्मणों से ही हवन कराते थे और स्त्रियों को उसमें सम्मिलित नहीं होने देते थे, अपने आयोजनों में इन प्रतिबन्धों को हटा दिया है। सब लोग मिलजुल कर मन्त्रोच्चार करते और समान रूप से हर व्यवस्था में भाग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लेते हैं। इस सुधारवादी प्रक्रिया ने पण्डितवाद के आधिपत्य को उखाड़कर धर्मक्षेत्र में अभिनव सहकारितावाद को प्रवेश कराया है। पिछड़े क्षेत्रों की दृष्टि से यह भी एक बहुत बड़ी क्रान्ति थी और इसके लिये पिछले २० वर्षों से पुरातन पन्थियों का भारी विरोध सहना पड़ा है। किन्तु अब गायत्री यज्ञ प्रक्रिया इतनी सस्ती और इतनी प्रभावोत्पादक है कि उसे निर्धन आदिवासी भी उतने ही उत्साह से कार्यान्वित करते हैं, जितने से कि यज्ञशाला सजाने में पत्र-पल्लवों का उपयोग करने की पद्धति से मात्र श्रमदान के सहारे सब कुछ अति सुन्दर बनाने का द्वार खोल दिया है। प्रत्येक क्रिया और प्रत्येक मन्त्र का अर्थ तथा प्रयोजन समझाते चलने की शैली ने उसे आदि से अन्त तक लोकशिक्षण का माध्यम बना दिया है। प्रायः ढाई-तीन घण्टे में एक समय का यज्ञानुष्ठान सम्पन्न होता है, उतने थोड़े समय में अधिक कुण्ड बने होने के कारण सैकड़ों व्यक्ति आहुति देते और धर्मोत्साह का अभिवर्धन करते हैं।

आहुति देने वालों के लिये यह आवश्यक होता है कि वे देव दक्षिणा में अपनी नैतिक या सामाजिक दुष्प्रवृत्तियों में से कम से कम एक का संकल्पपूर्वक परित्याग करें और एक सत्प्रवृत्ति को अपनाने के लिये अग्नि सान्निध्य में प्रतिज्ञा करें। एक छोड़ने के नाम पर दूसरी ग्रहण करने के नाम पर, इस प्रकार दो सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने के रूप में ही अपने गायत्री यज्ञों में सम्मिलित होने का साहस किया जा सकता है।

याज्ञिक लोगों से जिन दुष्प्रवृत्तियों के परित्याग के संकल्प कराये जाते हैं, उनमें कुछ ये हैं। (१) नशेबाजी, (२) बेईमानी, (३) दहेज का लेन-देन, (४) मृतक भोज, (५) भिक्षा व्यवसाय में सहयोग, (६) पशुबलि, (७) जाति-पाति के नाम पर ऊँच-नीच की मान्यता, (८) पर्दाप्रथा, नर नारी की असमानता, (९) दो से अधिक सन्तानोत्पादन, (१०) जेवर, फैशन, व्यसन एवं अपव्यय का परित्याग।

जिन सत्प्रवृत्तियों को अपनाने के लिये कहा जाता है, उनमें से कुछ ये हैं—(१) शिष्टाचार पालन, मधुर भाषण, गाली-गलौच की आदत का सर्वथा त्याग, (२) स्वच्छता और सुव्यवस्था का घर और बाहर अधिकाधिक विस्तार (३) मितव्ययता अपनाने और बचत पूँजी बैंकों में रखने की आदत, (४) हरियाली उगाने की अभिरुचि, घर में शाक-वाटिका, पुष्प-वाटिका और खाली जगह में वृक्षारोपण, (५) समय और धन का अधिकाधिक अंशदान लोकमंगल प्रयोजन के लिये, (६) श्रम के प्रति उत्साह, आलस्य-प्रमाद का त्याग, (७) सामूहिकता और सहकारिता के बढ़ाने वाले प्रयत्नों में आगे रहना, (८) सप्ताह में एक समय शाकाहारी उपवास, अन्न बचत, जूठन न छोड़ना, (९) अपने क्षेत्र में प्रौढ़-पाठशाला, पुस्तकालय, कुटीर-उद्योग जैसी सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन, (१०) प्रतिदिन न्यूनतम पन्द्रह मिनट की ईश्वर उपासना।

दस त्याग और दस ग्रहण की बीस सूत्री प्रगति प्रक्रिया अपने गायत्री यज्ञों के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है। जब भी, जहाँ भी, गायत्री यज्ञ होते हैं, उनमें यह त्याग और ग्रहण के लिये अधिकाधिक उत्साह उभारा जाता है, फलतः प्रत्येक आयोजन में उपस्थित लोगों में से प्रायः एक चौथाई के संकल्प देवदक्षिणा के रूप में मिलते हैं। उसस बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक प्रगति के वे सभी उद्देश्य पूरे होते हैं, जिनके लिये युग निर्माण योजना का जन्म हुआ है।

मिशन और राजनीति—हर क्षेत्र की तरह राजनीति के सम्बन्ध में भी मिशन का दृष्टिकोण एकदम स्पष्ट है। मिशन का प्रत्यक्ष कार्यक्षेत्र धर्मतन्त्र है, राजतन्त्र नहीं। व्यक्तिगत उत्कर्ष तथा सामाजिक प्रगति की सम्भावनायें साकार करने के लिये दोनों ही तन्त्र सदा से सक्रिय रहे हैं। राजतन्त्र उत्पादन, व्यापार, अर्थ नियन्त्रण, न्याय व्यवस्था आदि के माध्यम से तथा धर्मतन्त्र मनुष्य में विचारणाओं, मान्यताओं एवं आस्थाओं के परिष्कार तथा आचरण की पवित्रता उत्पन्न करके, उसी लक्ष्य की पूर्ति में लगे रहते हैं।

वर्तमान समय में राजतन्त्र के शोधन के लिये अगणित प्रतिभायें सक्रिय हैं, उनके प्रयासों से आज नहीं तो कल शासन व्यवस्था में सन्तुलन आ ही जायेगा। किन्तु उसमें स्थायित्व तभी आयेगा, जब जन आस्थाओं के परिष्कार का क्रम भी तत्परतापूर्वक चलाया जाता रहे। यह कार्य धर्म तन्त्र द्वारा ही सम्भव है। इसीलिये मिशन ने अपना कार्य क्षेत्र यही बनाया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिशन अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्यों के प्रति पूर्ण जागरूक है। मिशन के संस्थापक एवं सूत्र संचालक पूरे पन्द्रह वर्ष तक स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक रहे हैं, उसके अन्तर्गत तीन बार जेल भी गये। वे सच्चे अर्थों में गान्धीवादी रहे हैं।

जनतन्त्र की सफलता के लिये जनता का स्तर ऊँचा उठाया जाना आवश्यक है। मतदाता ही जनतन्त्र में सच्चा शासक है। उसका स्तर जितना ऊँचा होगा उतने ही अंशों में राजतन्त्र रामराज्य की भूमिका सम्पादित कर सकेगा। इसीलिये जन-साधारण का विचारणात्मक नैतिक एवं चारित्रिक स्तर उठाने के लिये मिशन धैर्यपूर्वक, बिना किसी प्रकार के यश या अधिकार की कामना के लम्बे समय से सक्रिय हैं। मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण के लक्ष्य को पूरा करने के लिये वही गतिविधियाँ अपनायी जाती रही हैं जिससे जन जीवन में चरित्रनिष्ठा तथा सामाजिकता की सत्प्रवृत्तियाँ अधिक गहराई से स्थापित की जा सकें। अपने कार्य की उपयोगिता और गौरव को भली प्रकार समझते हुये यह मिशन अविचलित भाव से अपनी भूमिका पूरी करने में लगा रहा है और लगा रहेगा।

गायत्री तपोभूमि और युग निर्माण अभियान

अखण्ड-ज्योति पत्रिका को आरम्भ हुये प्रायः ५५ वर्ष हुये। उस समय से लेकर ५५ वर्ष व्यक्तिगत सम्पर्क से स्थान-स्थान पर बिना किसी नामकरण के यह धर्मतन्त्र के माध्यम से लोकशिक्षण की प्रक्रिया चलती रही। उसकी प्रेरणा स्रोत अखण्ड-ज्योति कार्यालय ही था। पत्र व्यवहार, साहित्य एवं व्यक्तिगत सम्पर्क से आदान-प्रदान की प्रक्रिया इस बीच चलती रही और स्थान-स्थान पर वह योग चलते और बढ़ते रहे। भारत की भूमि में धर्मप्रेम की जो उर्वरता है उसने इन प्रवासों को सहज पोषण दिया और प्रतीत होने लगा कि अरण्य प्रदेश में अनायास उगने वाले देवदार वृक्षों की तरह यह वन सम्पदा ही बढ़ रही है तो उसे सुव्यवस्थित क्यों न किया जाये ?

यह विचार सन् ५१ में इस युग निर्माण योजना के सूत्र संचालक के मस्तिष्क में पहली बार आया और वह सन् ५२ में 'गायत्री तपोभूमि' नामक आश्रम मथुरा में बनाने के रूप में कार्यान्वित हुआ आखिर व्यापक सूत्र संचालन के लिये कोई स्थान तो होना ही चाहिये। पैसे का प्रश्न सामने आया। परिजनों का अंशदान न्यूनतम दस पैसा प्रतिदिन और अधिकतम एकदिन की आजीविका के रूप में निकलने लगा था। वह राशि स्थानीय सद्विचार प्रचार के लिये खर्च होती रहती थी। अनुरोध किया गया कि उसका एक अंश गायत्री तपोभूमि निर्माण के लिये दिया जाये। सर्वत्र उसे स्वीकार किया गया और थोड़ी-थोड़ी राशि के मनीआर्डर आने लगे। क्रमशः निर्धारण कार्य भी उसी अनुपात से आरम्भ हो गया और काम चलाऊ इमारत दो वर्षों में खड़ी हो गई।

अगला विचार यह आया कि सम्पर्क सूत्र में बन्धे हुये परिजनों का एक सम्मेलन बुलाकर क्रमबद्ध स्नेह शृंखला में क्यों न बाँधा जाये और उनसे विधिवत् व्यवस्थित कार्य करने के लिय क्यों न कहा जाये। तदनुसार प्रथम बार शतकुण्डी गायत्री महायज्ञ के और दूसरी बार सहस्र कुण्डी गायत्री महायज्ञ मथुरा में सम्पन्न किया गया। दूसरे आयोजन में एक लाख धर्मप्रेमी प्रायः देश के कोने-कोने से आये थे। आयोजन बहुत बड़ा था उसके लिये बाहर से चन्दा करने की बात नहीं सोची गई। स्वेच्छा सहयोग से ही परस्पर मिल जुल कर उतने बड़े आयोजन की अर्थ व्यवस्था जुटा ली गई और आगन्तुकों ने श्रमदान से ही रसोई, सफाई, तम्बू, पण्डाल, सुरक्षा आदि की सारी व्यवस्था पूरी कर ली। सम्भवतः ऐसा प्रयोग वह अपने ढंग का अनोखा था जिससे इतना बड़ा आयोजन बिना किसी अर्थ संग्रह प्रयास के आगन्तुकों के स्वेच्छा सहयोग एवं श्रम से ही अत्यन्त सुव्यवस्थित और सराहनीय सफलता के साथ सम्पन्न हुआ है। खुली आँखों से प्रथम बार यह चमत्कार देखा गया कि एक व्यक्ति, एक स्थान पर बैठकर एकाकी प्रयत्नों और साधनों के सर्वथा अभाव की स्थिति रहने पर भी इतनी बड़ी जन चेतना को केन्द्रित और प्रभावित कर सकता है।

"उस आयोजन में धर्म मंच से लोक शिक्षण" की व्यापक रूपरेखा बनी और निश्चय किया गया कि इसका क्रमबद्ध शिक्षण करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तथा आवश्यक साहित्य विनिर्मित करने के लिये गायत्री तपोभूमि आश्रम से पूरी तत्परता के साथ प्रयत्न आरम्भ कर दिये गये। क्रमबद्ध प्रयत्न शृंखला का नाम 'युग निर्माण योजना' उसी अवसर पर रखा गया। गायत्री मन्दिर बना, अखण्ड अग्नि की यज्ञशाला स्थापित हुई और विधिवत् ट्रस्ट बनाकर सारी व्यवस्था सुचारु रूप से संघबद्ध होकर चलने लगी। आश्रम में अपना प्रेस लगाया गया। विचार-विस्तार के लिये पत्रिकायें, पुस्तकें, पुस्तिकायें प्रचार पत्रक, पोस्टर आदि छपने लगे। अभियान की गतिविधियों की जानकारी तथा मार्गदर्शन की प्रेरणा परिजनों को मिलती रहे इसके लिये पाक्षिक युग निर्माण योजना समाचार पत्र के रूप में छपी और अन्य पत्रिकायें विचार पत्र के रूप में छपी और चल निकली।

दूसरा काम गायत्री तपोभूमि में कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण का था। अपने सामान्य कार्य करते हुये जो लोग सेवा भाव से कुछ अधिक समय दे सकने की स्थिति में थे, वे 'प्रचारक' की शिक्षा लेने के लिये समय-समय पर आयोजित होते रहने वाले शिविरों में आते रहे और धर्म मंच से लोकशिक्षण की इस क्रमबद्ध शिखा का उपयोग विस्तार हर क्षेत्र में अधिक सुचारु रूप से होने लगा। जो लोग पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त हो चुके थे, उन्हें इस पुण्य प्रयोजन में अधिक समय देने के लिये कहा गया और उनकी जीवन रूपरेखा 'वानप्रस्थ' स्तर की चल पड़े ऐसा प्रयत्न किया गया। मिशन की यह विशेष सफलता है कि ऐसे वानप्रस्थ हर वर्ष बढ़ते ही जा रहे हैं वे निर्वाह अपने घरों से लेते हैं और अधिकांश समय निर्धारित कार्यक्रमों के लिए प्रयुक्त करते हैं। उनकी गतिविधियाँ कार्यक्रमों तक सीमित नहीं रहती वरन् समीपवर्ती क्षेत्रों में जाकर अन्य लोगों को प्रेरणा देते और गतिविधियों का विस्तार करते हैं।

गायत्री तपोभूमि के पास प्रचारकों की एक टीम भी है। जिसके सदस्य स्थान-स्थान पर जाकर शिविर लगाते और धर्मतन्त्र की लोकोपयोगी बनाने की रीति-नीति से उत्साहित लोगों को परिचित कराते हैं। आयोजित युगनिर्माण सम्मेलनों में उन्हें प्रेरणाप्रद प्रवचन भी करने होते हैं और रामायण कथा, गीता कथा आदि के साप्ताहिक आयोजनों को सम्पन्न करन के लिये उन्हें भेजा जाता है। यों आमतौर से यह सब कार्य अपने अपने, क्षेत्र में स्थानीय कार्यकर्त्ता ही मिल जुलकर पूरे करते रहते हैं। बाहर से विशिष्ट व्यक्ति बुलाने का आकर्षण इसी प्रकार पूरा कर लिया जाता है कि एक शाखा के कार्यकर्त्ता दूसरी में, दूसरी के तीसरी में पहुँचें। इस पारस्परिक सहयोग से नेता उपदेशक बुलाने का कार्य बिना किसी खर्च के अति सरलतापूर्वक सम्पन्न होता रहता है।

गायत्री तपोभूमि में प्रेस, प्रकाशन, शिक्षण शिविरों का क्रम, प्रचारक मण्डली, स्थान-स्थान पर चलने वाली गतिविधियों का मार्गदर्शन होता है तथा नवयुवकों को कुटीर उद्योगों द्वारा स्वावलम्बी जीवन यापन करते हुये लोकमंगल में निरत रहने की शिक्षा पद्धति से लाभान्वित करने वाला विद्यालय भी वहाँ चलता है। एक वर्ष का पाठ्यक्रम है। ५० छात्रों के लिये छात्रावास व्यवस्था है। उतने ही छात्र वहाँ रहते हैं।

गायत्री तपोभूमि केन्द्र से युग निर्माण योजना की गतिविधियों से जिस क्रम से विस्तार हुआ है, उसी अनुपात से उसकी इमारत भी बढ़ी है। मथुरा वृन्दावन रोड पर इस क्षेत्र का सुविस्तृत एवं प्राणवान आश्रम है। कार्य विस्तार देखते हुये यहाँ सरकारी डाकखाना एवं तारघर खुल गया है। नित्य गायत्री जप एवं यज्ञ व्यवस्था के कारण बना हुआ धार्मिक वातावरण वहाँ की अपनी विशेषता है। वहाँ जो भी पहुँचता है यही सोचता है कि यदि धर्म संस्थानों ने इसी पुण्य प्रक्रिया को अपनाया होता तो आज भारत उसी महान अतीत का उत्तराधिकारी बना रहता, जिसमें सारा विश्व यहाँ के ३३ करोड़ नागरिकों को ३३ कोटि देवता मानते थे। किसी समय यह भारत भूमि स्वर्गादपि गरीयसी समझी जाती थी और इस देश को जगद्गुरु कर सम्बोधित किया जाता था। वह महानता यहाँ की धर्मनिष्ठा की पृष्ठभूमि पर ही विकसित हुई थी। गायत्री तपोभूमि का छोटा-सा आश्रम उसी महान परम्परा के पुनर्निर्माण में अपने स्वल्प साधनों से किन्तु प्रचण्ड साहस के साथ एक निष्ठ भाव से संलग्न है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म का यथार्थ स्वरूप और आर्ष साहित्य

धर्म-मंच से लोकशिक्षण प्रक्रिया आरम्भ करते हुये यह आवश्यक समझा गया कि जन साधारण को धर्म एवं अध्यात्म के वास्तविक स्वरूप को समझने का अवसर दिया जाये। पिछले दिनों सम्प्रदायवादी खींचतान में भारतीय तत्वदर्शन को इतना अनिश्चित बना दिया है कि तथ्यों का पता ही नहीं चलता और परस्पर विरोधी मान्यताओं में उलझकर सामान्य बुद्धि का व्यक्ति थकित एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़ की स्थिति में जा पहुँचता है। इस स्थिति का अन्त करना आवश्यक समझा गया।

भारतीय धर्म विश्व धर्म है। उसमें साम्प्रदायिकता की विकृतियाँ पीछे से निहित स्वार्थियों द्वारा ठूँसी गई हैं। उसका मूल स्वरूप मनुष्य की आस्थायें, विचारणायें एवं प्रवृत्तियाँ, मानवी आदर्शों के अनुरूप ढालती हैं यह तथ्य यदि समझा जा सके तो धर्म के वास्तविक लाभ से सर्व साधारण को लाभान्वित होने का अवसर मिल सकता है। भारतीय धर्म को, मानव धर्म के विश्व-धर्म के रूप में चिरकाल से मान्यता मिलती रही है और सर्वत्र उसका समान रूप से आदर होता रहा है। उसका वही मूल स्वरूप सर्वसाधारण की दृष्टि में रहे, उससे उपयोगी दिशा और प्रेरणा मिलती रहे। इसके लिये आवश्यक समझा गया कि भारतीय धर्म के आर्ष ग्रन्थों को सरल सुबोध और सस्ते रूप में प्रस्तुत किया गया। उनके आधार पर प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को यह समझने दिया जाये कि धर्म मान्यताओं के पीछे जो तत्वदर्शन जुड़ा हुआ है, उसे अपनाने पर विश्व शान्ति में कितना योगदान मिल सकता है। अनास्था को आस्था में बदलने के लिये, आस्था को सृजनात्मक प्रकाश प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक समझा गया कि धर्मशास्त्र आखिर है क्या ? वे मनुष्य को क्या सोचने, क्या करने की प्रेरणा देते हैं ? धर्म के नाम पर प्रचलित विकृतियों का वास्तविक धर्मतत्व के साथ कितना सम्बन्ध है ? यदि धर्म आस्था अपनाई जाय तो उनसे मानवी अन्तःकरण को देवत्व के स्तर तक विकसित होने का कितना और कैसे अवसर मिल सकता है ? यह विचार करने के लिये अपनी निजी दृष्टि से तभी अवसर मिलेगा जब भारतीय धर्म ग्रन्थों को एक दृष्टि में देखने की सरल और सस्ती सुविधा मिल सके।

इस चिन्तन ने युग निर्माण योजना के सूत्र संचालकों को इसके लिये प्रेरित किया कि वे भारतीय धर्मशास्त्रों को, आर्ष वाङ्मय को, सरल हिन्दी भाषा में अनुवादित, प्रकाशित और प्रचारित करें। यह कार्य अत्यधिक कठिन, लगभग असम्भव स्तर का उन स्थिति में समझा जा सकता है, जबकि वह साधनहीन व्यक्ति को एकाकी श्रम के आधार पर वहन करना पड़े। निष्ठा और चेष्टा का समन्वय भूतकाल में भी चमत्कार उत्पन्न करता रहा है। वर्तमान में उसकी एक झलक इस रूप में देखी जा सकती है कि पिछले तीस वर्षों में प्रयत्नशीलता ने लगभग सारे का सारा ही आर्ष साहित्य अनुवादित, प्रकाशित और प्रचारित करने का ऐसा सुयोग बैठा दिया जिसके लिये यदि 'अद्भुत' शब्द का उपयोग किया जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी।

अभीष्ट प्रयोजन के लिये अब तक प्रस्तुत ग्रन्थों की सूची इस प्रकार है—

(१) चारों वेद, (२) १०८ उपनिषद्, (३) ब्राह्मण और आरण्यक, (४) कल्पसूत्र (आन्हिक-श्रोत एवं धर्म सूत्रों का संग्रह), (५) छहों दर्शन, (६) २० स्मृतियाँ, (७) २४ गीतायें, (८) अठारह पुराण, (९) योग वाशिष्ठ।

इन ग्रन्थों की लोकप्रियता इसी से सिद्ध है कि इनमें से कितनों के ही दस-दस संस्करण बिक गये। देश में प्रमुख पुस्तकालयों में से वे प्रत्येक की बहुमूल्य निधि बनकर भारतीय धर्म के स्वरूप को समझने में बुद्धिजीवी वर्ग को जो सहायता मिली है, उससे वे अपनी पूर्व मान्यताओं को बदलने में विवश हुये हैं और इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि पूर्वजों को इस बहुमूल्य थाती का आज की स्थिति में भी उतना ही अच्छा उपयोग हो सकता है जैसा कि प्राचीनकाल में होता रहा है।

अध्यात्म दर्शन के उपरान्त धर्म परम्पराओं, प्रथाओं एवं कर्मकाण्डों का स्वरूप एवं उपयोग समझने का प्रसंग सामने आता है। दर्शन को व्यवहार में उतारने का प्रयोजन कर्मकाण्डों से ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूरा होता है। सर्वसाधारण की ज़ानकारी में यह क्रियाकृत्य ही 'धर्म' समझे जाते हैं। इनके पीछे जो प्रेरणायें छिपी रहती हैं, उन्हें धर्मचर्चा द्वारा अपनी व्याख्याओं में उभारा जाता है। पर पिछले दिनों देवताओं को प्रसन्न करके उनसे वरदान प्राप्त करने के लिये कर्मकाण्डों का विधिविधान पूरा कर लेना ही पर्याप्त माना जाता रहा है। व्याख्या पद्धति एक प्रकार से लुप्त हो गई। ऐसी दशा में उनका 'अन्ध परम्परा' मात्र रह जाना स्वाभविक ही था।

इस तथ्य पर अति गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया और धर्मानुष्ठानों के समस्त क्रियाकलापों को नये ढंग की किन्तु प्राचीन आदर्शों के अनुकूल व्याख्याओं के रूप में समन्वित किया गया। यह प्रयास देखने में सामान्य भले ही लगे पर वस्तुतः यह आर्ष ग्रन्थों के सम्पादन प्रकाशन जितना ही कठिन और उतना ही मूल्यवान समझा गया। अस्तु इसी क्षेत्र में एक कार्य यह किया गया कि भारतीय धर्म में प्रचलित प्रायः सभी धर्म मान्यताओं और सभी क्रिया-कृत्यों को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया, जिससे युग की समस्याओं को सुलझाने में समुचित योगदान मिल सके।

व्यावहारिक अध्यात्म का सत्साहित्य

व्यवहारिक जीवन में अध्यात्म सिद्धान्तों का समावेश कैसे किया जा सकता है ? इस सन्दर्भ में अनेकों छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखी और छापी गई हैं। यह मूलतः हिन्दी में लिखी गई हैं पर उनका अनुवाद तथा प्रकाशन अंग्रेजी सहित भारत की अन्य भाषाओं में भी हुआ है। इस साहित्य का, देश के विचारशील वर्ग में अतीव आदर हुआ है। सुरुचिपूर्ण इतना सस्ता और सुन्दर साहित्य अन्यत्र कदाचित ही कहीं उपलब्ध होता हो। हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकों एवं पुस्तिकाओं की संख्या तीन हजार से ऊपर है।

कथा प्रवचनों की त्रिवेणी

धर्म की व्यवहार प्रक्रिया को समझाने के लिये दो प्रयोग चलते हैं—(१) कथा प्रवचनों द्वारा धार्मिक तत्वज्ञान को लोक मानस में प्रवेश कराना, (२) धर्मनुष्ठानों, कर्मकाण्डों द्वारा भावनात्मक वातावरण बनाना और उस अवसर पर कुछ उपयोगी तथ्यों के प्रति निष्ठायें उत्पन्न करना। यह दोनों ही पत्रिकायें युग निर्माण योजना द्वारा अपनाई गई हैं, और उनका प्रयोग इस प्रकार किया गया है, जिसमें प्राचीन परम्पराओं का निर्वाह व्यक्ति परिवार और समाज को प्रगतिशील एवं परिष्कृत बनाने के लिये किया जा सके।

कथायें एक दिन की, एक सप्ताह की तथा जैसा अवसर हो इस प्रकार का कार्यक्रम बनाकर कही जाती हैं। घटनाक्रमों के साथ-साथ व्यक्ति और समाज की आधुनिक समस्यायें और उनके समाधान जोड़ते चलना अपनी विशेष शैली है।

युग निर्माण योजना द्वारा कथा-पक्ष में तीन आधार अपनाये गये हैं—(१) रामचरित्र, (२) कृष्णचरित्र, (३) सत्यनारायण। इन तीनों के सहारे घर-घर गाँव-गाँव आदर्शवादी आस्थाओं की पुण्य प्रतिष्ठापना का कार्य हाथ में लिया गया है।

उपर्युक्त तीनों कथाओं को भली प्रकार सुनियोजित बना देने के लिये जो ग्रन्थ लिखे और प्रकाशित प्रचारित किये गये हैं वे यह हैं—

(१) श्रीराम कथा, (२) रामचरित मानस की प्रगतिशील प्रेरणा, (३) वाल्मीकि रामायण से प्रगतिशील प्रेरणा, (४) रामचरित मानस के प्रेरक तत्व, (५) रामायण में नारी शक्ति, (६) श्रीकृष्ण कथा, (७) भागवत एवं महाभारत की प्रगतिशील प्रेरणा, (८) सत्य नारायण कथा, (९) प्रेरणाप्रद दृष्टान्त।

इन ग्रन्थों के आधार पर कथावाचक तैयार करने के लिये समय-समय पर प्रशिक्षण शिविर लगाये जाते हैं और उनमें कथा-शैली का अभ्यास करके कथावाचक निकलते हैं। वे स्वयं सेवी अवैतनिक सेवाधर्म अपनाकर अपने बचे हुये समय में कथायें कहते हैं और यदि आरती चढ़ावे में कुछ पैसा मिले तो उसे स्थानीय रचनात्मक प्रवृत्तियों के संचालन हेतु स्थानीय लोगों को ही सुपुर्द कर देते हैं। अपने कथावाचकों को व्यक्तिगत दक्षिणा न लेने और विशुद्ध परमार्थ भाव से धर्मसेवा करते रहने का व्रत दिलाया जाता है। स्थायी कथवाचकों का निर्वाह व्यय मिशन की ओर से उठाया जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दक्षिणा और कथावाचक का निर्वाह दोनों को एक-दूसरे से पृथक् रखा गया है।

मिशन की आठ प्रक्रियाए

धर्म को मात्र श्रद्धा पर आधारित माना जाता रहा है। अस्तु आज के बुद्धिवादी युग में उसे अप्रामाणिक काल्पनिक एवं अविश्वस्त ठहराकर उपेक्षित किया जाने लगा था। इस अभाव को पूरा करने के लिये धर्म और अध्यात्म के सिद्धान्तों को तर्क, तथ्य, प्रमाण एवं विज्ञान जैसे प्रत्यक्ष आधारों के सहारे प्रतिपादन करने का प्रयत्न 'अखण्ड ज्योति' हिन्दी मासिक पत्रिका प्रकाशन के सहारे किया गया। इस पत्रिका ने बुद्धिजीवी वर्ग को नई दिशा दी है और ऋषि प्रणीत अध्यात्म सिद्धान्तों को नये दृष्टिकोण से समझने का अवसर दिया है। यही कारण है कि पत्रिका विचारशील वर्ग में अत्यधिक लोकप्रिय हुई है। उसकी ग्राहक संख्या अपने विषयों की पत्रिकाओं में सर्वोपरि है।

(१) **हिन्दी अखण्ड**-ज्योति' पिछले ५५ साल से अनवरत प्रकाशित हो रही है। हर वर्ष अधिक लोकप्रिय होते जाना और ग्राहक संख्या बढ़ते जाना उसकी अपनी विशेषता है।

(२) अखण्ड-ज्योति लेख प्रधान है। इन्हीं आदर्शों को, घटनाओं, जीवन-चरित्रों, सस्मरणों को प्रसंगों के माध्यम से सर्वसाधारण के लिए रुचिकर बनाने के लिये एक दूसरी हिन्दी मासिक पत्रिका **युग निर्माण योजना** निकलती है। नई पीढ़ी ने इसे बहुत पसन्द किया गया है।

अखण्ड-ज्योति और युग निर्माण योजना के अधिक उपयोगी लेखों को देश की अन्य भाषाओं में अनुवादित करके प्रकाशित करने का सिलसिला भी पिछले बीस वर्ष से चल रहा है। इनके माध्यम से लाखों पाठक नियमित रूप से नव जीवन और नव निर्माण की प्रेरणा प्राप्त करते और अपने जीवन क्रम को उत्कृष्टता के ढाँचे में ढालते हैं। ये निम्न है—

(३) पासिक प्रज्ञा अभियान

(४) गुजराती युग शक्ति

(५) मराठा प्रज्ञा अभियान

(६) उड़िया प्रज्ञा अभियान

(७) बंगला प्रज्ञा अभियान

(८) तेलगू प्रज्ञा अभियान

छोटे से परिवार की बड़ी उपलब्धियाँ

चालीस वर्ष के परोक्ष और २५ वर्ष से प्रत्यक्ष जन सम्पर्क में धर्मतन्त्र द्वारा लोकशिक्षण प्रक्रिया की कुछ सर्वविदित उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं—

(१) एक लाख व्यक्तियों का एक जन समूह ऐसी धुरी के साथ सघन आत्मीयता के सूत्र में बँध गया है, जहाँ से उत्कृष्ट चिंतन एवं आदर्श कर्तृत्व की मानवतावादी प्रेरणा मिलती और कार्यान्वित होने तक विकसित होती है। इस जन समूह ने अपने व्यक्तित्वों को प्रखर बनाने और उस प्रकाश से समीपवर्ती क्षेत्र की आलोकित करने में उत्साहवर्धक सफलता पाई है।

(२) ये एक लाख व्यक्ति न्यूनतम एक घण्टा समय और दस पैसे नित्य अपने समीपवर्ती क्षेत्रों में रचनात्मक लोकमंगल में लगाते रहते हैं। इस प्रकार राष्ट्र को एक लाख घण्टों का श्रमदान नित्य मिलता है। सात घण्टे श्रम के घण्टे होते हैं इस प्रकार लगभग १५ हजार व्यक्ति पूरे दिन लगाने पर जितना कार्य कर सकते हैं, उतना भावभरा श्रमदान इन एक लाख व्यक्तियों से प्राप्त होता है। इसी प्रकार दस पैसा प्रतिदिन की राशि दस हजार रुपये प्रतिदिन जितनी होती है। यह अनुदान वर्ष में लगभग छत्तीस लाख रुपये होता है। इतनी जनशक्ति और धनशक्ति राष्ट्र के रचनात्मक प्रयोजनों में स्वेच्छापूर्वक निरत रहना एक बहुत बड़ी उपलब्धि हैं।

(३) परिजन मिलजुल कर इस श्रम या धन शक्ति को स्थानीय रचनात्मक कार्य में खर्च करते हैं। इसमें से प्रायः आधे साधन धर्ममंच से लोकशिक्षण के आयोजनपरक कार्यक्रमों और आधे रचनात्मक कार्मो में लगाते हैं। प्रौढ़ शिक्षा, व्यायामशालाओं, पुस्तकालय, कुटीर उद्योग इन रचनात्मक कार्यों में प्रमुख हैं।

(४) सप्ताह में एक समय का उपवास, बड़ी दावतों का असहयोग, जूठन न छोड़ने तथा घर-घर में शाक-वाटिका लगाने जैसे कार्यों में, अन्न बचत में उत्साहवर्धक योगदान मिला है। यह चारों प्रयत्न युग निर्माण परिवार से सम्बन्धित हर घर में चलते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(५) बाल विवाह, अनमेल विवाह तथा विवाह कृत्यों में लेन-देन एवं अपव्यय से इन एक लाख व्यक्तियों के परिवार तथा उनके प्रभावक्षेत्र पूरी तरह मुक्त हैं। उनमें बिना दहेज की शादियाँ होती हैं। छूतछात और पर्दाप्रथा की मूढ़ मान्यताओं में भी उन परिवारों ने छुटकारा पा लिया है।

(६) सामूहिक विवाहों का प्रचलन आगे बढ़कर युग निर्माण परिवार से ही आरम्भ किया है। इस प्रकार के आयोजन उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और बिहार में विशेष रूप से हुये हैं। इनके लिये जातिगत समितियाँ गठित की गईं और श्रेय उन्हीं को ही दिया गया है। पर इन समस्त आयोजनों के पीछे युग निर्माण परिवार के लोगों के मस्तिष्क एवं प्रयास ही काम करते रहे हैं। विगत पाँच वर्षों में इस प्रकार के प्रायः दस हजार विवाह कराने में सफलता मिली है।

(७) नशेबाजी के विरुद्ध सशक्त प्रचार किया जाता रहा है। गत वर्षों में प्रतिज्ञाबद्ध रूप से दस लाख से अधिक ही व्यक्तियों ने नशा छोड़ा होगा।

(८) सन्तान न बढ़ाने की बात सदा से लिखी और कही जाती रही है। व्यक्तिगत परामर्श देकर हजारों नर-नारियों को नसबन्दी कराने के लिये सहमत करने में आश्चर्यजनक सफलता पाने वाली धर्म संस्थाओं में एकमात्र युग निर्माण योजना ही है। उसके लिये उसे पुरातन पन्थियों के कटु लांछन आये दिन सहने पड़ते रहे हैं।

(९) सामूहिक श्रमदान का प्रचलन अपने प्रभाव क्षेत्र में उत्साहपूर्वक किया गया है। फलतः गाँव मुहल्लों की सफाई, मलमूत्र का सदुपयोग, लकड़ी तथा फल देने वाले पेड़ लगाना और उनके पोषण का प्रबन्ध करना, गुण्डागर्दी रोकने के लिये सुरक्षा दल के रूप में प्रतिरोध खड़ा करना, कुँए, तालाब, रास्ते आदि की सफाई करना, मन्दिरों का जीर्णोद्धार जैसे कार्यों में स्वयंसेवी श्रम शक्ति का संगठित उपयोग किया जाता रहा है। इससे आँकड़ों गाँवों की जनता प्रभावित और लाभान्वित हुई है।

(१०) जमाखोरी, मुनाफाखोरी, कर चोरी रिश्वत, मिलावट, कम नाप-तौल जैसे आर्थिक अपराधों के विरुद्ध हर जगह वातावरण बनाया गया है। कुरीतियों मूढ़ मान्यताओं, अन्धविश्वासों को अस्वीकार करने का साहस जगाया गया है। इस प्रतिरोध में युग निर्माण योजना के सदस्य आये दिन गाली खाते और प्रहार सहते रहते हैं। इन्हें सहने को परिजन तप तितिक्षा मानें और अपने प्रयत्नों में साहसपूर्वक डटे रहें यह पाठ परिजनों ने आरम्भ से ही पढ़ लिया होता है।

(११) सहकारी संगठन बनाकर उपभोक्ता भण्डार खोलने और कुटीर उद्योग चलाने में युग निर्माण परिवार सदा उत्साहपूर्ण भूमिका निबाहते हैं। मिशन के सदस्यों को सिखाया गया है कि वे हर लोकोपयोगी कार्य में अग्रिम पंक्ति में खड़े दिखाई दें किन्तु कार्यों पर अपना लेबिल लगाने का प्रयत्न न करें। श्रेय जान-बूझकर अन्य लोगों को अथवा अन्य संगठनों को दिलाने की उदारता बरतें। सरकारी, गैर-सरकारी रचनात्मक प्रयत्नों से युग निर्माण योजना के सदस्य भरपूर सहयोग करते हैं। नाम छपाने और अधिकार लेने में सदस्यगण सर्वत्र इन्कार करते हैं, इससे उनका सन्तोष और सम्मान दोनों ही बढ़ते हैं।

(१२) पारिवारिक उत्तरदायित्वों से जो जितना निवृत्त होता चले, वह लोकमंगल के प्रयासों में अपनी बची शक्ति को उसी अनुपात में अधिक नियोजित करने लगे। यह परम्परा युग निर्माण परिवार ने ढाली है। वानप्रस्थ आश्रम को पुनर्जीवित करके उस माध्यम से सहस्त्रों लोग रचनात्मक सेवा साधना में संलग्न होने के लिये तैयार किये हैं।

(१३) 'एक से दस' की नीति हर परिजन अपनाता है। प्रत्येक सदस्य को अपने प्रभाव एवं परिचय क्षेत्र में इस विचारधारा को सुविस्तृत करना पड़ता है और न्यूनतम दस व्यक्तियों को प्रभावित करने, योग्य बनाने का लक्ष्य रहता है। इसके लिये उसे झोला पुस्तकालय के माध्यम से सत्साहित्य, देने वापिस लेने के अतिरिक्त व्यक्तिगत सम्पर्क बनाना पड़ता है। जो बिना पढ़े हैं, उन्हें सुनाना पड़ता है। साथी ही उत्कृष्ट परम्परायें अपनाने के लिये चर्चा भी चलाती रहनी होती है। इसी क्रम से अपना परिवार बढ़ा है और उससे एक लाख के करीब कर्मठ व्यक्ति जुड़ गये हैं। यह प्रक्रिया आगे चलेगी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और नव निर्माण के प्रयासों से अत्यन्त व्यापक क्षेत्र को आलोकित करेगी यह निश्चित है।

(१४) भावनाशील लोगों को लोकमंगल की सेवा साधना में निरत होने के अतिरिक्त उन्हें आध्यात्मिक दृष्टिकोण का बनाने, धार्मिकता को जीवन में उतारने तथा उपासना को आवश्यक नित्य कर्म मानने के लिये इतना प्रशिक्षित किया गया है कि वे साधु परम्परा में स्वयम् ढलें और वातावरण में स्नेह सौजन्ययुक्त पराक्रम पुरुषार्थ उत्पन्न करने में सफल हो सकें। प्रगाढ़ ईश्वर विश्वास के साथ-साथ आदर्श जीवन का कितना अविच्छिन्न सम्बन्ध है यह तथ्य जितनी अच्छी तरह युग निर्माण योजना के सदस्यों ने समझा और अपनाया है, उसे इस परिवार की विशेष उपलब्धि कहा जा सकता है।

(१५) महिला जागरण की दिशा में मिशन ने जो कार्य इन थोड़े दिनों में किया है, वह सामान्यतया चिर प्रयत्नों से भी सम्भव नहीं था। शान्तिकुंज से निकलने वाली प्रचारिकाओं एवं संगठनकर्ती प्रशिक्षित देवियों ने देश भर में नव जागरण की लहर ही जगा दी है। युग निर्माण योजना के साथ-साथ महिला संगठन भी चल पड़े हैं और उनके द्वारा नारी समाज को शिक्षित, स्वावलम्बी, सुयोग्य एवं प्रगतिशील बनाने के लिये भारी प्रयत्न किये जा रहे हैं। इन प्रयत्नों के फलस्वरूप व्यापक रूप से नारी समाज में जो उत्साह उभरा और रचनात्मक दिशा में लगा है, उसे अपने समय की एक अनौखी हलचल कहा जा सकता है।

(१६) हिन्दू समाज के विभिन्न धर्म सम्प्रदायों के बीच पारस्परिक सहयोग सम्भव बनाने के लिये भरपूर प्रयत्न किया गया है। उन्हें चरित्रनिष्ठा और सामाजिक न्याय के लिये संयुक्त प्रयास करते रहने पर सहमत किया गया है। जहाँ भी युग निर्माण के कार्यकर्त्ता हैं वहाँ न्यूनतम कार्यक्रमों में संस्थागत सहयोग का वातावरण बना है। उसके आगे जहाँ सम्भव हुआ है, वहाँ मुस्लिम, ईसाई, पारसी आदि अन्य धर्मावलम्बियों को भी मानवतावादी आदर्शों को अग्रगामी बनाने में परस्पर सहयोगी बनाने के लिये सहमत किया गया है।

(१७) लोकसेवी संस्थायें अर्थ व्यवस्था के लिये प्रायः सम्पन्न लोगों के दरवाजे खटखटाती हैं और उनका अनुग्रह प्राप्त करने के लिये तरह-तरह के मनुहार रचती हैं। दूसरा साधन सरकारी अनुदान प्राप्त करने का रहता है। यह प्रयोग अभी तक नहीं किया गया कि यदि लोक शक्ति के महादैत्य की साधना की जा सके तो बड़े से बड़े कार्य भी सहज सुगम हो सकते हैं। गायत्री तपोभूमि एवं शान्तिकुंज की विशालकाय इमारतें, उनके द्वारा चलती रहने वाली अनेक खर्चीली गतिविधियाँ इस दस-दस पैसे अनुदान का जब तक एक छोटा अंश प्राप्त कर लेने भर से पूरी होती रहती हैं, अपना परिवार ही हँसी-खुशी इस भार का सरलतापूर्वक उठा लेता है। जनशक्ति से तादात्म्य बिठाया जा सके और लोकसाधना की जा सके तो बड़े से बड़े साधन उपलब्ध किये जा सकते हैं। आखिर राजतन्त्र और धर्मतन्त्र का इतना बड़ा ढाँचा लोकशक्ति के नगण्य से सहयोग के बल पर ही खड़ा हुआ है।

इन कार्यों का क्रमबद्ध लेखा-जोखा रखने की आवश्यकता इसलिये नहीं समझी गई कि किसी को प्रभावित करने या श्रेय पाने का कभी विचार ही नहीं उठा। रिपोर्टें छापने के लिये विवरणों की आवश्यकता पड़ती है, पर जब श्रेय और विज्ञापन से बचना ही चाहा है तो उस विवरण का संग्रह करते रहने का उपयोग भी क्या रह जाता है। इतने पर भी जिन्हें मिशन की गतिविधियों से निकट का सम्पर्क स्थापित करने का अवसर मिला है वे जानते हैं कि इस छोटे से परिवार ने राष्ट्रीय प्रगति के सृजनात्मक प्रयोजनों में जो योगदान दिया है वह न तो स्वल्प है और न उपेक्षणीय।

शान्तिकुञ्ज की स्थापना और गतिविधि

'धर्ममंच से लोक शिक्षण' अभियान को जन्म देने वाले और उसके लिये पुरुष वर्ग के लिये युग निर्माण परिवार तथा महिला वर्ग के लिय महिला जागरण परिवार खड़े करने वाले, सज्जन का नाम है—श्रीराम शर्मा आचार्य। सादगी और सरलता की मूर्ति इन सद्गृहस्थ को देखने से अति सामान्य व्यक्ति ही कहा जा सकता है पर वे आजीवन जिस साधना में लगे रहे हैं उसे देखते हुये उन्हें सच्चे अर्थों में ब्राह्मण या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधु कहने में किसी को आपत्ति नहीं होती। गुरुडम तो उन्हें छू भी नहीं गया है, पर जिस प्रकार रवीन्द्र नाथ टैगोर को 'गुरुदेव' कहा जाता था, साने गुरुजी को गुरुजी के नाम से सम्बोधित किया जाता था, उसी प्रकार गुरुदेव नाम ही उनके साथ भी न जाने कहाँ से और न जाने क्यों जुड़ गया है, जो हो उनकी ज्ञान साधना और प्रखर प्रेरणा ने उन्हें गुरुदेव की पदवी प्रदान कर दी है, उन्हें लोग इसी नाम से जानते हैं और दर्शन की इच्छा से आने वाले व्यक्ति इन बालक जैसे सौम्य सरल व्यक्तित्व को देखकर चकित रह जाते हैं। सामान्य और असामान्य का ऐसा अद्‌भुत संयोग लोगों में कहीं देखा भी तो नहीं है।

गायत्री तपोभूमि मथुरा के माध्यम से अपनी गतिविधियाँ पच्चीस वर्ष तक चलाते रहने के उपरान्त विचार उठा कि इसे स्वावलम्बी बना दिया जाय और उत्तरदायित्व दूसरे सुयोग्य कन्धों पर सौंप दिया जाय। अन्यथा बाबाजी मरने के साथ ही आश्रम मर जाने के जो दृश्य आये दिन देखने को मिलते रहते हैं वैसी ही दुर्गति इस आश्रम की भी हो सकती है। देवालय के साथ क्या गतिविधियाँ जुड़ी रहनी चाहिये। इस आदर्श को प्रत्यक्ष दिखाने के लिये गायत्री मन्दिर सहित यह आश्रम बना था अपेक्षा की गई थी कि उसका अनुकरण चल रहे देवालयों द्वारा किया जायेगा और भविष्य में किसी को कोई देवालय बनाने की इच्छा होगी तो उसे गायत्री तपोभूमि का देखकर दिशा मिलेगी। इस प्रयोजन में यह आश्रम कसौटी पर खरा उतरा पर उसकी संचालन व्यवस्था हस्तान्तरित होती रहनी भी आवश्यक है। यह कार्य प्रत्येक आश्रम संस्थापक को अपने जीवन काल में ही सम्पन्न कर लेना चाहिये। यह भी एक आदर्श रखा जाता था। अस्तु उसे दूसरे सुयोग्य हाथ में सौंपकर गुरुदेव मथुरा छोड़कर चल दिये और २० जून ७१ से शान्तिकुञ्ज हरिद्वार में रहने लगे। यह आश्रम उन्हीं दिनों बनना आरम्भ हो गया था।

हिमालय की गोदी में गंगा तट पर, सप्त ऋषियों की तपस्थली की भूमि पसन्द की गई और वहीं शान्तिकुंज की नींव रखी गई। इस स्थापना के तीन प्रयोजन थे (१) आजीवन चलती रही गायत्री महामन्त्र की तपश्चर्या को जीवन के अन्तिम समय में अधिकतम प्रखर बना देना, (२) परिवार के विशिष्ट कार्यकर्ताओं को थोड़ी-थोड़ी संख्या में बुलाकर उन्हें आत्मोत्कर्ष की उपासना पद्धति, जीवन साधना तथा लोकमंगल की उच्च स्तरीय शिक्षा देना, (३) महिला जागृति अभियान का सूत्रपात करना। यह तीनों ही प्रयोजन इस छोटे-से आश्रम में शान्ति और सुव्यवस्थापूर्वक चल रहे हैं।

गुरुदेव ने किशोरावस्था में प्रवेश करते ही गायत्री उपासना की विशेष साधना पद्धति अपनाई। मात्र जौ की रोटी और छाछ पर मुद्दतों निर्वाह किया तथा तपश्चर्या के अन्यान्य कठोर नियमों का पालन करते हुये छः छः घण्टे प्रतिदिन का साधना क्रम चलाया। स्वतन्त्रता सैनिक के कर्त्तव्य निभाने में इसमें व्यतिरेक भी पड़ते रहे, पर जब जितना सम्भव हुआ साधना में अगाध निष्ठा के साथ संलग्न रहा गया। गुरुदेव की मूल प्रकृति तपस्वी साधक की है व्यक्तिशः वे इसी में सबसे अधिक रस लेते और इसी को सर्वोपरि महत्त्व देते हैं। जिस आत्मबल के द्वारा वे सामान्य व्यक्तित्व और नगण्य साधनों की कठिनाई सहते हुये भी इतना अधिक काम कर सके, इसे वे अपनी उपासना की उपलब्धि ही मानते हैं और मरण पर्यन्त उसके अमृत का अधिकाधिक पान करते रहने की इच्छा व्यक्त करते हैं। अभी भी उनकी दिनचर्या में प्रायः २ बजे से ६ बजे तक चार घण्टे की यह साधना संलग्न है, जिसे कदाचित ही कभी कम करते होंगे। गायत्री मन्त्र सम्बन्धी शोध और उपासना के सन्दर्भ में उनका लिखा तीन खण्डों वाला गायत्री महाविज्ञान ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है।

शान्तिकुञ्ज में सबसे ऊपरी मंजिल के एक एकान्त कक्ष में वे अपनी तप साधना, अध्ययन एवं लोकमंगल को अनेकानक कार्यों को एकाकी निपटते रहे हैं। आगन्तुकों को मिलने का सीमित समय रहता है और आश्रमवासियों के प्रशिक्षण देने के लिये कुछ घण्टे ही नियत हैं। एकान्त में अधिक इच्छा और अधिक मात्रा में काम हो सकने का उनका प्रयोग शान्तिकुञ्ज में सचमुच ही अधिक अच्छी तरह हो रहा है। ६७ वर्ष की वृद्धावस्था में इस क्रम की अपने में उनकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्यक्षमता कई युवकों को सम्मिलित क्षमता से ही अधिक बढ़ गई है। साधना में अधिक समय मिलन से उन्हें अधिक संतोष है। अपने आप को प्रयोगशाला बनाकर वे ऐसी उपलब्धियाँ प्राप्त कराने के लिये प्रयत्नशील हैं जो अनेकों के काम आ सकें और युग को बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। यही था शान्तिकुंज स्थापना और वहाँ रहने का प्रथम प्रयोजन जो ठीक प्रकार चल रहा है।

लोकसेवी की मूल क्षमता उसकी आत्मिक उत्कृष्टता ही हो सकती है। चतुरता, प्रतिभा एवं भौतिक साधनों की लोकसेवा में आवश्यकता तो है पर उतने से ही जन मानस के परिष्कार जैसा महान् उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता है। धर्म मंच से लोक शिक्षण की प्रक्रिया मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का लक्ष्य लेकर आरम्भ की गई है। इसके लिये सबसे बड़ी शक्ति लोकसेवा की आन्तरिक पवित्रता आत्मबल की शक्ति ही हो सकती है। इसके बिना व्यक्ति और समाज को समुन्नत बनाने का महान कार्य सम्भव नहीं हो सकता अस्तु प्रत्येक परमार्थ पक्ष के पथिक को आत्मिक परिष्कार में समुचित ध्यान देना और प्रयास करना चाहिये। यह प्रयत्न हर व्यक्ति की विशिष्ट स्थिति के अनुरूप भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है इसके लिये व्यावहारिक मार्गदर्शन की अपेक्षा रहती है। शान्तिकुंज में शिक्षण शिविर उसी समाधान के लिये लगाये जाते रहते हैं।

यों रामायण कथा, गीता भागवत कथा, धार्मिक व्यक्तियों की स्थिति समझकर तदनुरूप परामर्श देन का कार्यक्रम बना है। सन् ७६ में जीवन साधना सत्र को परामर्श सत्रों का नाम दिया और दस-दस की अपेक्षा पाँच-पाँच दिन के कर दिये गये। शिक्षार्थियों की संख्या १०० से बढ़ाकर ३०० कर दी गई। इतने साधकों के निवास के लिये स्थान भी तब बन गया था।

तीसरा कार्य महिला जागरण अभियान का है, जिसकी प्रगति माता भगवती देवी के संरक्षकत्व में उत्साहवर्धक रीति से हो रहा है।

आश्रम के आधे भाग में जीवन साधना के साधकों का शिक्षण यह उभयपक्षीय कार्य पद्धति शान्तिकुंज में चल रही है। पत्र व्यवहार द्वारा परामर्श और मार्गदर्शन का जो कार्यक्रम मिशन के आरम्भ से चला है, वह कभी नहीं रुका वरन् बढ़ता ही रहा है। धर्ममंच से लोकशिक्षण की अनेकानेक गतिविधियों के साथ-साथ व्यक्ति-परामर्श के सन्दर्भ में भी सैकड़ों पत्र शान्तिकुंज आते हैं। गुरुदेव स्वयं उन्हें खोलते और अपने ही निर्देश से उत्तर लिखवाते हैं। इस विभाग को सुनियोजित रखने में प्रत्यक्ष उत्तर-दायित्व माता भगवती देवी का रहता है।

भविष्य में शान्तिकुंज की गतिविधियों को अधिक स्थायी और अधिक व्यवस्थित बनाने के लिये साधनों का अधिक विस्तार करने की बात सोची जाती रहती है पर यह सब परिस्थितियों पर निर्भर है। जन सहयोग और कर्मकाण्ड, प्रवचन, गायन, कीर्तन जैसे धर्ममंच से लोकशिक्षण का व्यवहारिक अभ्यास कराने वाले वानप्रस्थ सत्र भी समय-समय पर शान्तिकुंज में चलते हैं और कार्यकर्त्ताओं की सामान्य शिक्षा की सामयिक व्यवस्था भी बनती रहती है पर शिविरों का मूल विषय जीवन साधना है। जीवन साधना के तीन पक्ष हैं—(१) उपासना, (२) जीवनचर्या, (३) लोकमंगल के परमार्थ कृत्य। इन तीनों क्षेत्रों में किसे किस प्रकार, किस सन्तुलन के साथ अपना क्रम निर्धारित करना चाहिये, यह सब परामर्श से सम्बन्धित है। साधना शिविरों में इसी स्तर का प्रशिक्षण और परामर्श क्रम चलता रहता है। शान्तिकुंज की इस साधना शिक्षा की समन्वित पद्धति ने परिजनों को अधिक प्रखरता प्रदान की है और वे अपने व्यक्तित्व को अधिकाधिक पवित्र एवं परिष्कृत अनुभव करते हुये अपेक्षाकृत उच्चस्तरीय गतिविधियाँ अपनाने में सफल हुये हैं।

सन् ७६ गुरुदेव की साधना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष था, एकनिष्ठ भाव से ५० वर्ष गायत्री उपासना में निरत रहने का एक अध्याय वे पूरा कर चुकने के पश्चात् ५१वें वर्ष में अपने साथ परिजनों को सम्मिलित करके ४५ मिनट प्रतिदिन की एक सामूहिक उपासना करते रहे। इसका उद्देश्य सूक्ष्म जगत में अधिक पवित्र और अधिक प्रखरता उत्पन्न करना है। इसके साथ हर परिजन को भावी जीवनक्रम में अध्यात्म तत्वों का अधिक समावेश करने के लिये ईश्वरीय अनुग्रह से जिस प्रकार अति जटिल परिस्थितियों में इतना कुछ बन पड़ा तो भविष्य में भी इसी के सहारे महत्त्वपूर्ण कार्य बन पड़े तो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं माना जायेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महिला जागरण अभियान

गुरुदेव की पत्नी माता भगवती देवी आरम्भ से ही उनका दाहिना हाथ बनकर रही हैं और समान तत्परता के साथ कार्य पद्धति का व्यवस्था पक्ष सम्भालती रही हैं। हर कोई जानता है कि बौद्धिक प्रयास गुरुदेव के होते हैं और उन्हें कार्यान्वित होने की व्यवस्था माता जी बनाती हैं। इतने बड़े परिवार के गठन में गुरुदेव का बौद्धिक स्तर और माताजी का भावनात्मक अनुदान समान रूप में काम करता रहा। गुरुदेव की प्रखरता और माता जी की वात्सल्य भरी ममता ने इस परिवार को बनाने और बढ़ाने में रथ के दो पहियों की तरह समान रूप से कार्य किया है।

यों माताजी गुरुदेव के साथ सदा से छाया बनकर रही हैं और अपनी समान शक्ति उनके प्रयासों को सफल बनाने में नियोजित किये रही हैं। पर उनकी स्वतन्त्र अभिरुचि महिला जागरण की दिशा में उभरती रही है और आरम्भ से ही इस सन्दर्भ में जितना कुछ बन पड़ा है, करती रही हैं। सम्पर्क में आये एक लाख व्यक्तियों वाले परिवार में अधिकतर पुरुष ही हैं। उन्हें अपने घरों में नारियों की स्थिति ऊँची उठाने के लिये उपयोगी सुझाव देते रहना और वे कार्यान्वित हुये या नहीं यह पूछते रहना माताजी की सहज प्रकृति रही है। इस प्रकार वह प्रयास व्यक्तिगत रूप से तो आरम्भ से ही चलता रहा है पर अब शान्तिकुंज की स्थापना के समय से तो यह कार्य एक प्रकार से स्वतन्त्र आन्दोलन के रूप में ही उठा लिया गया है और उसके लिये पूरी शक्ति से प्रयत्न आरम्भ किया गया है।

शान्तिकुंज में इन दिनों दो प्रवृत्तियाँ चलती हैं। गुरुदेव परिजनों को सौ-सौ की संख्या में बुलाकर उन्हें उपासनात्मक आस्था जगाने और आत्मबल बढ़ाने का प्रशिक्षण देते हैं। माताजी महिला जागरण की प्रवृत्तियाँ चलाती हैं। यह एक आश्चर्य ही है कि नर और नारी के पृथकता का प्रतिपादन जहाँ सदा से बहुत जोर-शोर से होता रहा है, वहाँ बहिनों और भाइयों का पवित्रतम सान्निध्य कितनी अच्छी तरह चल सकता है। इस असम्भव समझे जाने वाले तथ्य को सम्भव करके दिखाया गया है। नर-नारी का पवित्र सहजीवन मात्र घर-परिवार में ही नहीं सार्वजनिक क्षेत्र में भी उतना ही आदर्शमय रह सकता है इसका उदाहरण किसी को देखना हो तो वह शान्तिकुंज में आकर अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देख सकता है। सम्भवतः शान्तिकुंज की स्थापना में इसी अभिनव प्रयोग का परीक्षण चलने की बात भी सम्मिलित रही है।

महिला जागरण अभियान शान्तिकुंज की विशेष प्रवृत्ति है। जिसे अपने ढंग का मौलिक प्रयास कह सकते हैं। इसकी कार्य पद्धति इस प्रकार है—

(१) युग निर्माण परिवार के प्रत्येक सदस्य को व्यक्तिगत रूप से यह कहा गया है कि वे अपने-अपने घरों की महिलाओं को आगे खड़ी करके, उनके माध्यम से महिला संगठन करें। उनके साप्ताहिक सत्संग चलाने की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित बनाये रहने के लिये परोक्ष रूप से पूरा-पूरा योगदान दें। इस आदेश को सर्वत्र शिरोधार्य किया गया है और देश भर में जितने युग निर्माण परिवार संगठन हैं उतने ही महिला शाखा संगठन भी खड़े हो गये हैं।

(२) महिला जागरण अभियान की सदस्याओं को भी दस पैसा रोज और एक घण्टा समय देने की शर्त पालन करनी पड़ती है। समय को वे अपने सत्संगों और संस्कार आयोजनों के साथ चलने वाली परिवार गोष्ठियों में एक-दूसरे के घर आने-जाने में लगाती हैं। टोली बनाकर घर-घर जाने और नव जागृति का सन्देश सुनाने में भी यह समय लगता है। पैसे का उपयोग शाखा के आयोजनों में तथा अन्य रचनात्मक कार्यों में लगता है। समय और पैसे का प्रयोग कहाँ किस प्रकार किया जाना है इसका निर्णय सदस्यायें मिलजुलकर करती रहती हैं।

(३) प्रत्येक संगठन के जिम्मे आरम्भ में आठ काम सौंपे गये हैं—(१) साप्ताहिक तथा पारिवारिक गोष्ठियों का चलाना (२) जगह-जगह पर तीसरे प्रहर चलने वाली प्रौढ़ पाठशालायें खड़ी करना, जिनमें गृह उद्योग, संगीत एवं परिवार निर्माण के विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण है। (३) परिवारों की सर्वतोन्मुखी सुव्यवस्था तथा शालीनता, सज्जनता का समावेश करने वाले तथ्यों को समझना और उन्हें कार्यान्वित करना। (४) कुरीतियों, मूढ़ मान्यताओं, अनैतिकताओं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवांछनीयताओं को परिवारों में प्रवेश न होने देने की जागरूकता उत्पन्न करना (५) महिला पुस्तकालयों का प्रबन्ध करवाकर पुस्तकें भेजने और वापिस लाने का क्रम (६) संस्कारों और पर्वों के माध्यम से, तथा कथा-प्रसंगों की शैली अपनाकर महिलाओं को एकत्रित करना और उनमें प्रगतिशील तत्वों का भरना, (७) वार्षिक महिला सम्मेलन बड़े रूप में मनाने की साल भर तक तैयारी करना। (८) अपनी शाखा से तीन महीने के प्रशिक्षण के लिये प्रतिभाशाली महिलाओं को शान्तिकुंज भेजना ताकि वे स्थानीय शाखा का कार्य सुचारु रूप से चला सकें।

जहाँ भी महिला संगठन स्थापित हुये हैं, वहाँ इन आठों कामों के लिये शक्ति भर प्रयत्न हो रहे हैं और आशाजनक सफलता मिल रही है।

(४) शान्तिकुंज से महिला जागृति अभियान के संगठन सूत्र का संचालन होता है और इस प्रयोजन के लिये आवश्यक साहित्य का लेखन प्रकाशन चलता है। 'महिला जागृति अभियान' हिन्दी मासिक पत्रिका इसी वर्ष निकली है और उसकी ग्राहक संख्या भारत की सभी नारी पत्रिकाओं से कहीं आगे चली गई है। अभियान का अपना प्रेस है। उसमें पत्रिका के अतिरिक्त मिशन की आवश्यकता पूरी करने वाला साहित्य छपता है। इस प्रयोजन के लिये अभी सस्ती पुस्तिकायें छापी गई हैं और वे प्रथम वर्ष में ही कई लाख बिक गई हैं। आगे महिला आवश्यकता की पूरी कर सकने योग्य ऐसी ही सस्ती प्रचार पुस्तिकायें छापने का विशेष प्रयोजन है।

(५) शान्तिकुंज में कन्याओं के लिये एक वर्ष के लिये और विवाहित महिलाओं के लिये तीन महीने के सत्र लगातार चलते हैं। इस प्रशिक्षण का प्रथम उद्देश्य प्रत्येक छात्रा को सच्चे अर्थों में गृहलक्ष्मी बन सकने योग्य गुण कर्म, स्वभाव का विकास करना है। इसके लिये उन्हें बौद्धिक और व्यावहारिक ज्ञान को निरन्तर हृदयंगम कराने का प्रशिक्षण चलता है। द्वितीय उद्देश्य है कि छात्रा अपने क्षेत्र में महिला जागृति के अभियान की सफल कार्यकर्त्ता सिद्ध हो सके। इसके लिये उसे प्रभावशाली सुगम संगीत और भाषण कला का अच्छा अभ्यास कराया जाता है। अपने क्षेत्र में वे प्रौढ़ महिला पाठशाला तथा संगठन कार्य किस तरह कर सकेगी इसकी कार्यशैली समझाई जाती है। महिला स्वावलम्बन की दृष्टि से हर जगह कुटीर उद्योगों की स्थापना करना अभियान का लक्ष्य है। अस्तु वह शिक्षा भी अतीव उपयोगी ढंग से दी जाती है। छात्रायें कई प्रकार के व्यायाम, खेल-कूद, लाठी चलाना तथा कवायद करना भी भली प्रकार सीखकर जाती हैं। स्वास्थ्य रक्षा के अन्य नियमों से लेकर नारी जीवन की समस्त आवश्यकताओं और समस्याओं के समाधान तक इस शिक्षण प्रक्रिया में जुड़े हुये हैं।

अब तक जितनी कन्या एवं महिला छात्रायें इन सत्रों से शिक्षण प्राप्त करके गई हैं, उनके क्रिया कलाप में आये उत्साहजनक परिवर्तनों के प्रति सर्वत्र भरपूर प्रशंसा और प्रसन्नता व्यक्त की गई है। प्रायः १०० कन्याओं और ४० महिलाओं के प्रशिक्षण एवं छात्रावास के योग्य स्थान शान्तिकुंज में हैं। अस्तु उतने को ही प्रवेश मिलता है। इसमें से प्रायः युग निर्माण परिवार के सदस्यों की ही कन्यायें और महिलायें अपने क्षेत्र में महिला जागरण की शिक्षा प्राप्त करने का प्रधान उद्देश्य लेकर आती रहती हैं। निजी व्यक्तित्व के विकास और परिवार निर्माण की पद्धति जानने का ज्ञान लाभ तो उन्हें अनायास ही मिल जाता है। वस्तुतः इस विद्यालय को लोकसेवी महिला प्रशिक्षण केन्द्र कहा जाता तो अधिक अच्छा रहता इसका प्रधान लक्ष्य अभियान को अग्रगामी बन सकने वाली कार्यकर्त्रियाँ तैयार करना है।

(६) महिला जागृति अभियान के साथ सर्वत्र कुटीर उद्योगों की स्थापना करके आर्थिक स्वावलम्बन की दिशा में कुछ महत्त्वपूर्ण कदम उठाना भी एक लक्ष्य है। शान्तिकुंज की महिला शिक्षण व्यवस्था में संगीत शिक्षा द्वारा युग गायिकायें तथा जीवन्त प्रवचनों से प्राण फूँकने वाली लोकसेविकायें बनाने पर जितना ध्यान दिया गया है, उतना ही कुटीर उद्योग विस्तार पर भी ध्यान केन्द्रित है। अस्तु प्रायः एक दर्जन से अधिक गृह उद्योग सिखाने की व्यवस्था है। सूत कातने, कपड़ा बुनने, सिलाई, धुलाई, रंगने तक के समूचे वस्त्र उद्योग का इसी शिक्षण में सम्मिलित रखा गया है। मोजा, स्वेटर, डोरी, निवाड़, दरी आदि बुनने की मशीनें भी लगाई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गई हैं। डबलरोटी, बिस्कुट, टाफी, लेमनचूस बनाना भी यहाँ सिखाया जाता है। साबुन, सुगन्धित तेल, स्याहियाँ, मोमबत्तियाँ, प्लास्टिक से कई प्रकार की वस्तुयें बनती हैं। तरह-तरह के खिलौने बनाना भी शिक्षण का अंग है। प्रेस उद्योग की सांगोपांग शिक्षा यहाँ का ऐसा विशेष उद्योग है जो इस ढंग से शायद ही अन्यत्र कहीं सिखाया जाता हो।

(७) महिला जागरण केन्द्रों को स्वावलम्बी बनाने की दृष्टि से जगह-जगह प्रेस लगाने और उनमें बाजारों की छपाई तथा स्थानीय समस्याओं पर निजी प्रकाशन करने की बात सोची गई है। इस प्रकार हर शाखा केन्द्र अपना एक छोटी प्रेस लगाकर कम से कम पाँच लोकसेवी महिलाओं को आजीविका की दृष्टि से स्वावलम्बी बना सकेगा। वे आधे समय प्रेस चलाकर अपनी राटी कमाया करेंगी, शेष आधे समय में महिला जागृति का कार्य किया करेंगी। अस्तु मिशन के केन्द्रों की कार्यकत्रिओं तथा आर्थिक स्वालम्बन की दृष्टि से प्रेस उद्योग का महिला शिक्षण विद्यालय में विशेष महत्त्व दिया गया है। प्रायः ८-१० हजार को पूँजी से कस्बे की सभी शाखायें स्वावलम्बी बन जायेंगी।

व्यक्तिगत रूप से भी कोई महिला प्रेस चलाकर अपन पूरे परिवार को श्रमजीवी स्वावलम्बी बना सकती है। दहेज देने के स्थान पर अभिभावक अपनी लड़कियों को एक प्रेस देकर स्वावलम्बी बना सकें तो उन्हें सुयोग्य साथी मिलने में कोई कठिनाई न पड़ेगी।

आगे चलकर चार पृष्ठ के साप्ताहिक पत्र भी उन्हीं प्रेसों से निकलने लगें। प्रशिक्षित महिलायें उसका सम्पादन, प्रकाशन करें और अपने क्षेत्र के लिये जन जागृति की अग्रदूत बनें। यह मात्र कल्पना ही नहीं वरन् सुदृढ़ योजना भी शान्तिकुंज के प्रेस शिक्षण में सन्निहित है। सम्पादन एवं लेखन सम्बन्धी शिक्षण भी प्रेस विभाग की अधिक कुशाग्र कन्यायें प्राप्त कर सकें ऐसी व्यवस्था है।

(८) महिला जागरण शाखाओं को हर साल अपना वार्षिकोत्सव उत्साहवर्धक महिला सम्मेलन के रूप में करने के लिये कहा गया है। यह प्रथा चल पड़ी है। उन सम्मेलनों में संगीत तथा प्रवचनों से दिशा देने के लिये शान्तिकुंज से सुयोग्य प्रचारिकायें देवकन्याएँ भेजने का प्रबन्ध किया गया है। इसके लिये पाँच-पाँच प्रचारिकाओं के जत्थे भेजे जाते हैं। उनके लिये स्टेशन बैगन, मोटरों की व्यवस्था की गई है। इस वर्ष तीन मोटरें, तीन जत्थे लेकर महिला सम्मेलनों पर गई हैं और नौ महीने में प्रायः २०० सम्मेलनों का प्रचार मंच उन्होंने सम्भाला है। आगे यह जत्थे और भी अधिक निकाले जा सकें तो महिला सम्मेलनों को प्रचारिका भेजने की माँग आंशिक रूप से पूरा हो सकेगी। इस वर्ष इन प्रचारिकाओं के संगीत एवं प्रवचनों ने जनता को हिलाकर रख दिया है और यह सोचने के लिये विवश किया है कि सड़े-गले प्रचारकों की तुलना में शान्तिकुंज की देव कन्यायें अपने ओजस्वी उद्‌बोधन से जन-मानस को झकझोर कर रख देने में हजार गुनी अधिक सफल रही हैं। इसे प्रशिक्षण प्रक्रिया का चमत्कार माना गया है।

(९) सुरक्षित कुमारिकायें अपना जीवन महिला जागरण के लिये अर्पित करें इस आह्वान पर अपने अभिभावकों की स्वीकृति लेकर अब तक १८ कन्यायें शान्तिकुंज की विद्यालय प्रेस, बाहरी प्रचार, संगठन पत्राचार आदि कामों को सम्भालने के लिये आ गई हैं। वे ही अध्यापिका, व्यवस्थापिका तथा प्रचारिका के उत्तरदायित्व सम्भाल रही हैं। इन्हें कोई वेतन नहीं देना पड़ता। मात्र भोजन, वस्त्र जैसी निर्वाह की अनिवार्य वस्तुयें भर वे स्वीकार करती हैं। इन जीवनदानी कन्याओं की संख्या ३० हो जाने से वर्तमान आवश्यकता पूरी होने लगेगी। इनके निर्वाह के लिये स्व. गोखले द्वारा स्थापित सर्वेन्ट ऑफ इण्डिया सोसाइटी के स्तर की एक 'स्थायी निधि' स्थापित की गई है जिससे महिला जागरण का शान्तिकुंज केन्द्र भविष्य में भी अपना कार्य उत्साहपूर्वक जारी रख सके।

(१०) स्लाइड प्रोजेक्टरों पर, महिला समस्याओं पर घर-घर प्रशिक्षण करने की एक विशेष योजना महिला जागरण अभियान की है। इसके लिये सस्ते स्लाइड प्रोजेक्टरों का प्रबन्ध किया गया है और आरम्भ में १०० रंगीन स्लाइडें बनाई गई हैं। इन पर प्रवचन करने की शिक्षा दी जाती है। इस उपकरण के सहारे लोकरंजन और लोकमंगल का समन्वय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भली प्रकार से हो जाता है। एकाकी प्रचारिका इस उपकरण से प्रतिदिन एक-एक मुहल्ले में महिला समस्याओं पर प्रकाश डालती हैं और सौ दो सौ महिलायें हर दिन उससे लाभ उठा लेती हैं। इस प्रयोग के अन्तर्गत परिवार समस्या के प्रायः सभी पक्षों पर स्लाइडें बनती चली जायेंगी और उनके सहारे प्रचार का एक अत्यन्त उपयोगी और सस्ता आधार खड़ा हो जायेगा।

ऊपर की पंक्तियों में वह कार्य विवरण है, जो अब तक बन पड़ा और इन दिनों चल रहा है। इन्हें युग निर्माण परिवार के परिजनों द्वारा संचालित, प्रायः उसी क्षेत्र तक सीमित शान्तिकुंज के एकाकी प्रयत्नों की संज्ञा दी जा सकती है। आगे इस प्रयत्न को व्यापक, बनाया जायेगा। समर्थ लोगों से ऐसे संस्थान खड़े करने के लिये कहा जायेगा, जिनमें नारी शिक्षा एवं स्वावलम्बन के बड़े आधार खड़े हो सकें। अनुकूल वातावरण बनाने के लिये प्रेस, प्रकाशन, चित्रकला, फिल्म आदि प्रचार माध्यमों को इस क्षेत्र में आगे बढ़ाना होगा। असहाय एवं उत्पीड़ित महिलाओं के स्वावलम्बन गृह खड़े करने होंगे। महिला सेवा में निरत होने की इच्छुक देवियों के प्रशिक्षण एवं निर्वाह का प्रबन्ध करना होगा। धातृविद्या, शिशुपालन और गृहविज्ञान की स्कूली शिक्षा के अतिरिक्त शिविर पद्धति से उनका प्रशिक्षण गाँव-गाँव होना चाहिये। सुयोग्य महिलाओं को सार्वजनिक एवं राजकीय संस्थाओं में प्रवेश दिलाने का प्रयत्न होना चाहिये।

इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर जहाँ भी चल रही होंगी, उन्हें पूरा-पूरा सहयोग देने की अपनी नीति है। जहाँ आरम्भ किये जाने हैं वे किसी भी संगठन के अन्तर्गत किसी भी नाम से हा सकते हैं। युग निर्माण योजना की तरह महिला जागरण अभियान को भी लोक मंगल के कार्यों में अपना लेबिल लगाने और अपने लिये श्रेय पाने की स्वप्न में भी इच्छा नहीं है। अस्तु यह निश्चित है कि आधी जनसंख्या को न्यायोचित स्थान दिलाने में महिला जागरण अभियान की भूमिका अत्यन्त प्रखर होती हुई देखी जा सकेगी।

तीर्थयात्रा धर्म परम्परा का पुनर्जीवन

धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण प्रक्रिया का नवीन प्रयोग जो पिछले दिनों मन्द गति से चलता रहा है और उस वर्ष उसे अधिक तत्परतापूर्वक कार्यान्वित किया जाता है वह है तीर्थयात्रा की धर्म परम्परा का पुनर्जीवन।

प्राचीनकाल में धर्म प्रचार के लिये पदयात्रा पर विज्ञजनों की मण्डलियाँ निकलती थीं। वे ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवं प्रेरणाप्रद केन्द्रों से प्रकाश प्राप्त करती थीं। उन्हें मील के पत्थर मानकर यात्रा-क्रम बनाती थीं। पर उनका मूल प्रयोजन जन सम्पर्क स्थांपित करना और उपयोगी प्रेरणा को बादलों की तरह जगह-जगह बरसाते चलना ही होता था। इन पद यात्राओं से टोलियों को स्वास्थ्य सुधार, अनुभव लाभ, परिचय विस्तार एवं धर्म-प्रचार के पुण्यफल प्राप्त होते थे और जन साधारण को घर बैठे विज्ञजनों के सत्परामर्शों का लाभ मिलता था।

प्राचीनकाल में प्रायः सभी सन्त अपनी मंडलियाँ सहित तीर्थयात्रा, पदयात्रा पर निकलते थे और लोक मानस में आदर्शवादिता की उमंगें भरे रहने के लिये अथक प्रयत्न करते थे। कितने ही आचार्य अपनी चल पाठशालायें प्रकृति का निरीक्षण और जन सम्पर्क साधते हुये चलाया करते थे। इससे शिष्यों को दुहरा लाभ होता था। भगवान बुद्ध के शिष्य देश देशान्तरों में इसी पुण्य प्रयोजन के लिये गये थे। महात्मा गाँधी की डांडी यात्रा और नोआखाली यात्रा के सत्परिणाम सर्वविदित हैं। सन्त बिनोबा की भूदान यात्रा ने जो कार्य किया, उससे कौन अपरिचित है ?

तीर्थयात्रा का आज तो द्रुतगामी वाहनों में प्रयोग होने लगा है पर पूर्वकाल में वह विशुद्ध पदयात्रा के रूप में ही सम्पन्न होती थी। उस परम्परा की चिन्ह-पूजा अभी भी नदी, पर्वतों, देवालयों, पीपल, आँवला, तुलसी आदि की परिक्रमा के रूप में होती है। सोचा गया है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि नवयुग का, नव जीवन का संदेश सुनते और तदनुरूप कर्त्तव्य पालन के लिये जन मानस में उत्साह उत्पन्न करने के लिये तीर्थयात्रा की पुण्य प्रक्रिया को पुनर्जीवित किया गया।

योजना यह है कि पाँच पीत वस्त्र धारी वानप्रस्थों की टोलियाँ एक निर्धारित कार्यक्रम बनाकर न्यूनतम पन्द्रह दिन के लिये निकलें। प्रायः पाँच मील हर दिन चले। रास्ते के गाँवों में प्रेरक गीतों सहित परिक्रमा करें। दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखें। लोगों का इकट्ठा करके पन्द्रह मिनट में तीर्थयात्रा का उद्देश्य समझायें। इस प्रकार जो भी गाँव रास्ते में मिलें उनमें यह प्रचार कार्य करते हुये रात्रि को निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार किसी गाँव में ठहरें। वहाँ सहगान, कीर्तन, भजन और रामायण कथा के माध्यम से उपस्थित जनता को धर्म के स्वरूप और व्यवहार की जानकारी करावें। इसमें व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के सभी उपयोगी सूत्रों का समावेश रहे।

प्रातःकाल उठकर अपना नित्यकर्म गायत्रीयज्ञ सहित पूरा करें। इसमें सम्मिलित रहने के लिये उस गाँव के लोगों से अनुरोध करें। जो उपस्थित हों उन्हें यज्ञीय जीवन और विवेकयुक्त दृष्टिकोण के रूप में गायत्री यज्ञ की व्याख्या करें तथा जो सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने और दुष्प्रवृत्तियाँ छोड़ने को सहमत किये जा सकें, उनसे वैसे संकल्प करायें। इसके उपरान्त फिर दूसरे दिन का यात्राक्रम आरम्भ कर दें।

यह टोलियाँ अपना दैनिक उपयोग का आवश्यक सामान साइकिलों पर लादकर चलें। उन्हीं पर भोजन बनाने के, हवन के साधन लदे रहें। छोटा लाउडस्पीकर भी साथ चले। तीर्थयात्री यात्रा व्यय स्वयं उठायें। कहीं आग्रहपूर्वक भोजन का अनुरोध हो तो ही उसे स्वीकार करें अन्यथा स्वयं बनाते खाते आगे बढ़ते रहें।

टोलियों को प्रवचन, कीर्तन, वाक्य लेखन, हवन एवं यात्रा प्रसंग में लोक व्यवहार तथा निजी मर्यादा पालन की आचार संहिता, विवरण प्रक्रिया एवं शिक्षण पद्धति बताई गई है उसे जो भली प्रकार हृदयंगम कर लेवें, उन्हें ही इस तीर्थयात्रा, धर्म परम्परा, पुनर्जीवन अभियान की प्रचार मंडलियों में पदयात्रा के लिये भेजा जायेगा।

सोचा जा रहा है कि प्रचार का यह प्रयोग सफल हो सके तो इसका विस्तार देश के गाँव-गाँव में, घर-घर तक नवयुग का सन्देश पहुँचाने और तदनुरूप कर्त्तव्य निबाहने में तत्पर होने के उद्‌बोधन रूप में पहुँचाया जा सकता है। यह प्रक्रिया सफल हो सकी तो अब तक के धर्म मंच से लोक शिक्षण प्रयोग में एक अति महत्त्वपूर्ण कड़ी और जुड़ जायेगी।

प्रशिक्षण व्यवस्था

धर्ममंच से लोकशिक्षण का प्रयोग लम्बे समय से गायत्री तपोभूमि मथुरा से युग निर्माण योजना के अन्तर्गत चल रहा है। अब उसे अधिक सुव्यवस्थित बना लिया गया है। उसकी शिक्षण व्यवस्था शान्तिकुंज हरिद्वार में चल रही है। प्रशिक्षण व्यवस्था की रूपरेखा इस प्रकार है—

त्रैमासिक-पाठ्यक्रम

धर्ममंच से लोकशिक्षण पाठ्यक्रम तीन महीने का है। सन् ७६ में स्वर्ण जयन्ती वर्ष के विशेष कार्यक्रम के कारण जुलाई, अगस्त, सितम्बर का एक ही सत्र सम्भव हो सकेगा। भविष्य में यह प्रक्रिया नियमित विद्यालय के रूप में चलती रहेगी। वर्ष में चार सत्र हुआ करेंगे—(१) जनवरी, फरवरी मार्च (२) अप्रैल मई, जून (३) जुलाई, अगस्त सितम्बर (४) अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर। अब तक समय-समय पर सुविधानुसार छोटे-बड़े सत्र इस प्रयोजन के लिये होते रहे हैं। अब उनकी एक सुव्यवस्था बना दी गई है और सुनिश्चित पाठ्यक्रम निर्धारित कर दिया गया है।

चूँकि छात्र बड़ी आयु, समुचित ज्ञान और परिष्कृत प्रतिभा के होते हैं इसलिये उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण तीन महीने में ही दे सकना सम्भव हो जाता है। व्यस्त व्यक्तियों के लिये अधिक समय इस प्रकार के अध्ययन में दे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकना कठिन पड़ता है। जिनके पास अधिक समय है और जो प्रशिक्षण को अधिक परिपक्व करना चाहते हैं, वे एक से अधिक शिविरों में अधिक ज्ञानवृद्धि करते रहने के लिये स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार पूरे एक वर्ष भी रुका जा सकता है।

प्रथम मास में यज्ञ, संस्कार पर्व आदि के कर्मकाण्ड, दूसरे में रामकथा एवं सत्यनारायण कथा और तीसरे में कृष्ण कथा का पाठ्यक्रम निर्धारित है। बौद्धिक शिक्षण का क्रम पूरे तीन माह सतत् चलता रहता है।

जिनके कंठ मधुर हैं तथा स्वरताल की पकड़कर सकने वाली मस्तिष्कीय क्षमता है उन्हें इन तीन महीने में काम चलाऊ संगीत का ज्ञान भी करा दिया जाता है, कीर्तन एवं रामायण कथा के लिये आवश्यक संगीत इन शिक्षार्थियों को आ सके इस शिक्षण का समुचित प्रबन्ध है पर कठिनाई एक ही है कि उसे हर इच्छुक को नहीं पढ़ाया जा सकता है। प्रवेश होते ही छात्रों की परख होती है और जो इस परीक्षण में ठीक जमते हैं, उन्हें पूरे तीन महीने संगीत शिक्षा भी दी जाती रहती है।

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पाठ्यक्रम

धार्मिक कर्मकाण्डों, मन्त्रादि के साथ जुड़े भावनात्मक तथा विज्ञान सम्मत पक्षों के अतिरिक्त उनके साथ प्रखर प्रेरणाओं का समन्वय भी किया जाता है। उसकी संक्षिप्त रूपरेखा इस प्रकार है —

संस्कार—

(१) **जन्मदिन संस्कार**—व्यक्ति निर्माण के आधारों पर प्रकाश, मनुष्य जीवन की गरिमा और उसके सदुपयोग की प्रेरणा।

(२) **विवाह दिन संस्कार**—दम्पत्ति जीवन का सुखद निर्वाह और विवाह को सार्थक बनाने वाली आचार संहिता का सुविस्तृत विवेचन।

(३) **पुंसवन संस्कार**—गर्भिणी को स्वयं किस प्रकार रहना चाहिये तथा पति एवं परिवार के लोगों को उसके प्रति किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये इसकी शिक्षा ।

(४) **नामकरण संस्कार**—बच्चों का जीवन लक्ष्य निर्धारित करने, तद्नुरूप नाम रखने और विकास की तद्नुरूप व्यवस्था का प्रारूप।

(५) **अन्न प्राशन संस्कार**—बालकों के आहार पर विशेष रूप से और पूरे परिवार के आहार पर सामान्य रूप से विस्तृत विचार। खाद्यपदार्थों के गुण, दोष तथा खाने की विधि, मर्यादा का ज्ञान।

(६) **मुण्डन संस्कार**—बालक के बहुमूल्य मस्तक में से पशु-संस्कार हटाने और देव संस्कार जमाने के उस उत्सव के साथ विचार सम्पत्ति की गरिमा एवं उसके सदुपयोग का प्रशिक्षण। मस्तक पर ज्ञान ध्वजा शिखा की स्थापना, विवेकशीलता को सर्वोपरि स्थान देने की मान्यता रूप में।

(७) **विद्यारंभ संस्कार**—विद्याध्ययन को आहार स्तर की अनिर्वायता स्वीकार करना। ज्ञान सम्पदा का व्यक्तिगत जीवन में अधिकाधिक संचय और समाज में उसके विस्तार की आवश्यकता अनुभव करना।

(८) **यज्ञोपवीत संस्कार**—जीवन को यज्ञ की तरह पवित्र बनाने का व्रत धारण, यही है यज्ञोपवीत व्रत बन्धन का उद्देश्य। मानवी आदर्शों के अनुरूप जीवन ढालने का उत्तरदायित्व कन्धे पर धारण करना और उस मर्यादा को कन्धे पर रखकर हृदय, कलेजा, पीठ आदि पर घुमाते हुये उससे सारा व्यक्तित्व लपेट लेना।

(९) **विवाह संस्कार**—विवाह का उद्देश्य, स्वरूप और उसे महान् उत्तरदायित्व को निभाने के लिये जिस प्रकार घनिष्ठ मैत्री निर्वाह, उदार सहयोग की आवश्यकता पड़ती है, उसकी समुचित जानकारी।

(१०) **वानप्रस्थ संस्कार**—ढलती आयु में पारिवारिक उत्तरदायित्व को घटाते हुये अपना अधिकाधिक समय दान लोकमंगल के लिये करते रहने की प्रतिज्ञा।

(११) **अन्त्येष्टि संस्कार**—जन्म की तरह मरण का भी जीवन का महत्त्वपूर्ण परिवर्तन मानने की दृष्टि का विकास, मृतक के बचे हुये उत्तरदायित्वों को पूरा करने की रूपरेखा का निर्धारण और मृतात्मा का आश्वासनपूर्वक विसर्जन।

(१२) अन्तिम श्राद्ध समावेश, उपार्जन में असमर्थ परिवार के सीमित भरण-पोषण योग्य सम्पत्ति छोड़कर शेष का मृतात्मा की शान्ति, सद्गति के लिये परमार्थ प्रयोजन के लिये दान। आज के मृतक भोज इसी परम्परा के ध्वंसावशेष है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्व

(१) **होलिकोत्सव**—स्वच्छता का पर्व, नवान्न को यज्ञ में अर्पित करके तब खाने की पुण्य प्रक्रिया का उभार, लोकमंगल के लिये अंशदान को संस्कृति का अंग मानकर चलने का स्मरण।

(२) **रामनवमी**—मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के अवतरण का उद्देश्य समझने तथा उनके द्वारा स्थापित मर्यादाओं को अपनाकर सच्ची रामभक्ति का परिचय देने की प्रेरणा।

(३) **गायत्री जयन्ती (गंगा दशहरा)**—विवेक की देवी गायत्री और पवित्रता की प्रत्यक्ष प्रतिभा गंगा की अनेक प्रेरणाओं को जीवन परम्पराओं में सम्मिलित करने की शिक्षा।

(४) **गुरु पूर्णिमा**—व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उपयोगी मर्यादाओं का पालन। सर्वतोन्मुखी अनुशासन के रूप में गुरुपर्व की प्रतिष्ठा।

(५) **श्रावणी**—हरियाली पर्व, हरित् क्रान्ति के लिये सक्रिय प्रयास। यज्ञोपवीत का नवीनीकरण, मनुष्यता के कर्त्तव्यों का वार्षिक स्मरण।

(६) **कृष्ण जन्माष्टमी**—पूर्ण पुरुष भगवान कृष्ण के अवतरण के साथ जुड़ी हुई अनेकानेक प्रेरणाओं का सामयिक परिस्थितियों के समाधान में उपयोग।

(७) **विजया दशमी**—स्वास्थ्य संवर्धन, सुरक्षा के प्रति जागरूकता, संघ शक्ति के अभिवर्धन की प्रेरणा का त्रिविध समन्वय पर्व। असुरता पर देवत्व की विजय प्राप्त करने की सामयिक उमंग एवं योजना।

(८) **दिवाली**—अर्थ सन्तुलन, न्यायोपार्जन, श्रमनिष्ठा, मितव्ययिता, उपार्जन का श्रेष्ठतम सदुपयोग, गोसम्वर्द्धन, भाई-बहिन की पवित्र दृष्टि का विस्तार, प्रकाश का अन्दर और बाहर व्यापक विस्तार जैसे अनेकों श्री समृद्धि देने वाली विधि व्यवस्थाओं को अपनाने की प्रेरणा देने वाला पर्व।

(९) **गीता जयन्ती**—कर्मयोग के तत्वज्ञान को व्यवहारिक जीवन में उतारने के लिये आज की स्थिति में किसे क्या करना चाहिये उसकी सुविस्तृत रूपरेखा।

(१०) **वसंत पंचमी**—साहित्य और कला को देवी सरस्वती का वरदान मानकर उनकी पवित्रता एवं प्रतिष्ठा का अभिवर्धन। उमंग, उत्साह का नस-नस में भरे रहने की प्रेरणा। शोभा, सौन्दर्य, सुषमा, सरसता का जीवन के हर क्षेत्र में विकास।

ऊपर दस पर्व ऐसे हैं जो सर्वत्र प्रचलित है। इसके अतिरिक्त विशेष क्षेत्रों एवं वर्ग सम्प्रदायों में अन्य पर्वों की अधिक मान्यता है। शिवरात्रि, गणेश चतुर्थी, मकर संक्रान्ति, वैशाखी संक्रान्ति आदि की क्षेत्र विशेष में प्रधानता पाई जाती है। जहाँ जो पर्व मनाया जाता हो उसके लिये भी उसी स्तर की प्रेरणायें जोड़ दी जाती हैं।

पर्वों का सामूहिक रूप से मनाया जाये। उनके साथ जुड़ी हुई परम्पराओं का सामूहिक कर्मकाण्ड के साथ विधि विधान बनाकर किस प्रकार सम्पन्न किया जाना चाहिये उस अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में एकत्रित होने के लिये लोगों में उत्साह किस प्रकार धरना चाहिये, पर्वों के साथ जुड़ी हुई प्रेरणाओं को किस-किस प्रयोजन के लिये किस प्रकार व्यवहार में लाना चाहिये, यह सब उपस्थित व्यक्तियों की मनःस्थिति और परिस्थिति के अनुरूप बताया जाना चाहिये। इसी कौशल का प्रशिक्षण का प्रधान विषय समझा जाना चाहिये।

विशेष आयोजन

(१) **गायत्री यज्ञ**—लोक शिक्षण के लिये इसका प्रयोग अनेक रूपों में किया जाता है छोटे से छोटे रूप में मात्र घी का दीपक, अगरबत्ती एवं २४ बार सामूहिक गायत्री मन्त्रोच्चार से यज्ञ प्रक्रिया की प्रतीक पूजा सम्पन्न हो जाती है। बड़े रूप में, अधिक कुण्डों के हवन इस दृष्टि से किये जाते हैं कि अधिक लोगों को कम समय में इस धर्मानुष्ठान में भाग लेने का अवसर मिल जाये। वनवासी भीलों, हरिजनों में बिना खर्च के मात्र श्रमदान से विशालकाय यज्ञ कैसे हो सकते हैं ? और उनमें प्रचण्ड धर्मोत्साह कैसे भरा जा सकता है ? अधिक से अधिक आकर्षण और कम से कम खर्च अपनी पद्धति की विशेषता है—साथ ही इस प्रक्रिया को कहीं भी करा सकने की सामर्थ्य अधिक लोगों में पैदा करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का प्रशिक्षण—उद्देश्य भी इन आयोजनों में किस प्रकार होना चाहिए, यह सब इन आयोजनों में किस प्रकार सेम्पन्न किया जाता है, कर्मकाण्ड प्रशिक्षण में यह तथ्य भले प्रकार हृदयंगम कराये जाते हैं।

विधि विधान की कार्यपद्धति, शुद्धमन्त्रोच्चार, याज्ञिकों में सतर्क जागरूकता, आयोजन में प्रखर अनुशासन, मन्त्रों के अर्थ, उनकी स्थिति के अनुरूप व्याख्या, विधि विधानों में जो संकेत हैं, उनका विवेचन यही सब अपनी विशेषता है, जिनके कारण अपनी यज्ञ-प्रक्रिया अतीव लोकप्रिय हुई है। देव दक्षिणा के रूप में, दुष्प्रवृत्तियाँ त्यागना और सत्प्रवृत्तियाँ ग्रहण करना आयोजनों को सफलता की कसौटी माना गया है। उसके लिये उपस्थित लोगों को किस प्रकार उत्साहित किया जाये और उमंगों की, व्रत धारण करने एवं आजीवन निबाहने की मनः स्थिति उत्पन्न करने के लिये कहाँ, क्या कहा जाना चाहिये, यह इस प्रशिक्षण का प्रधान अंग है।

सत्रों के शिक्षार्थी यज्ञ प्रक्रिया में स्वयं निष्णात् बनें और अपने जैसे अन्य धर्मसेवी बनाने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहें। इसके लिये आवश्यक उपाय यज्ञ प्रक्रिया के प्रशिक्षण में जोड़कर रखे गये हैं।

सामूहिक विवाह

सामूहिक विवाह आन्दोलन, धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण मंच का अति महत्त्वपूर्ण प्रयास है। घरेलू विवाहों में दहेज, दिखावा, दावत एवं अन्य समय और पैसे की बर्बादी करने वाले 'धमाल' चलते हैं। इन्हें मिटाने का सबसे सरल और व्यवहारिक उपाय यह है कि यज्ञ आयोजनों के साथ ही सामूहिक विवाहों के लिये लोगों को तैयार किया जाय। अधिकाधिक जनता एकत्रित की जाय और ऐसा उत्साह उत्पन्न किया जाये जिसके आधार पर वैसे ही अनुकरण की परम्परा चल पड़े।

सामूहिक विवाहों की संख्या के अनुरूप मंच बनाने की प्रत्येक विवाह वेदी पर एक कार्यवाहक नियुक्त करने की, हर जगह उपचार सामग्री प्रस्तुत रखने की, एक माइक से सब वेदियों पर कार्य चल सके ऐसी निर्देश प्रक्रिया की, इस अवसर पर विशेष आवश्यकता पड़ती है। यह सब किस प्रकार होना चाहिये ? इसमें सामान्य घरेलू विवाहों से भिन्न प्रकार का क्रियाकलाप अपनाना पड़ता है। यह सब शिक्षार्थियों को पढ़ाया जाता है। प्रवचन भी सामूहिक विवाहों में भिन्न करने पड़ते हैं तथा व्याख्यायें भी कुछ भिन्न स्तर की रखनी पड़ती हैं। वातावरण बनाने से लेकर, जोड़े तैयार करने तक, आयोजन व्यवस्था बनाने से लेकर प्रवचनों तक की ऐसी प्रक्रिया शिक्षार्थी सीखकर जाते हैं जिससे उनके प्रयासों से सामूहिक विवाहों की प्रथा एक सर्वव्यापी परम्परा बन सके।

श्रीराम कथा

भगवान के अवतारों का उद्देश्य सामयिक विकृतियों का निराकरण और उत्कृष्ट आदर्शों का पुनः प्रतिष्ठापन होता है। उद्देश्य के लिये होते हैं। हिन्दू धर्म के २४ अवतारों में राम और कृष्ण का महत्त्व सबसे अधिक है। उनके द्वारा प्रतिष्ठापित आदर्शों के सहारे जन-साधारण को सामयिक समस्याओं के समाधान में भारी योगदान मिल सकता है। शर्त एक ही है कि उनकी प्रतिष्ठापनाओं की सही लोगों द्वारा सही व्याख्या की जा सके। अन्यथा प्रतिगामी व्याख्याकार तो अवतारों की अप्रतिष्ठा कराने और अनुयायियों को गर्त में धकेलने वाली शिक्षायें देने के लिये प्रसिद्ध हैं ही।

धर्ममंच से लोकशिक्षण पाठ्यक्रम का दूसरा महीना राम कथा के लिये निर्धारित है। इसमें तुलसीकृत रामचरित मानस को प्रधान रूप से लिया गया है। सहायक रूप में वाल्मिकि रामायण, अध्यात्म रामायण एवं अन्यत्र वर्णित रामचरित्र को भी लिया गया है।

कथाशैली की व्याख्या अपनी नवीनता है। "घटनाक्रम पुराने, समाधान नये" इस विशेषता पर अपनी कथाशैली निर्धारित है। ऐसी प्रेरणायें रामचरित्र में पग-पग पर भरी पड़ी हैं, जिनसे व्यक्ति, परिवार एवं समाज को समुन्नत बनाने वाला प्रकाश एवं उत्साह मिल सके। इस ओर कथाकारों का ध्यान एक प्रकार से गया ही नहीं अन्यथा लोकमान्य तिलक की गीता, बाबा राघवदास की रामायण की तरह उनके क्रान्तिकारी परिणाम सामने आये होते।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी कथा प्रक्रिया को युगान्तर चेतना की आधारशिला बनाया गया है। उसमें घटनाक्रमों का प्रेरणाप्रद स्वरूप कर सकने की विशेष शैली का समावेश है।

घरों में प्रतिदिन चलने वाली कथा, अवकाश के दिनों जहाँ-तहाँ स्फुट कथा आयोजन; रामायण सप्ताह के विशेष कार्यक्रम, प्रवचनों पर आधारित रामायण सम्मेलन, किस प्रकार किये जाने चाहिये, उन्हें आरम्भ करने का उत्साह उभारना, व्यवस्था बिठाना एवं उसे सफलतापूर्वक सम्पन्न करना किस प्रकार हो सकता है, यह सभी इन कथाओं में पढ़ाया जाता है। कथा की प्रवचन शैली में प्रखरता का समावेश कर सकने की क्षमता तो विकसित की ही जाती है। इसे भाषण कला का निखार भी कह सकते हैं।

श्रीकृष्ण कथा

प्रशिक्षण के तीसरे महीने में कृष्ण चरित्र के आधार पर कथा कहने का अभ्यास सिखाया जाता है। इसके लिये भागवत पुराण विशेष रूप से प्रचलित हैं इसलिये प्रधानता उसी की रखी गई है। अपनी कृष्णकथायें 'भागवत कथा' के नाम से प्रचलित हैं। यों उसके साथ महाभारत, गीता एवं मान्य ग्रन्थों में वर्णित कृष्ण चरित्र का भी समुचित समावेश रहा है।

व्यक्ति और परिवार निर्माण के तथ्य रामचरित्र में विशेष रूप से उभरे हैं। कृष्ण चरित्र में समाज संरचना के अत्यन्त प्रेरक तत्व भरे पड़े हैं। सामान्य परिस्थितियों को सामान्य धर्म और विशेष परिस्थितियों में आपत्ति धर्म की आवश्यकता का अत्यन्त सुन्दर समन्वय कृष्ण चरित्र में हुआ है। उसमें समाज रचना के लिये समय-समय पर आते रहने वाले उतार-चढ़ावों का तथा उनके समाधानों का दूरदर्शी समन्वय है। राम को धर्म और कृष्ण को नीति कहा जाये तो अत्युक्ति न होगी। धर्म साधु प्रकृति का और नीति को, न्याय-निष्ठा का प्रतीक माना जा सकता है। दोनों ही अपने-अपने स्थान पर महत्त्वपूर्ण हैं। सामान्य व्यक्ति के लिये मध्यवर्ती परिस्थितियों में दोनों का समन्वय करने की "धर्मनीति" का आदर्श अपनाना पड़ता है। राम चरित्र और कृष्णचरित्र के समन्वय से धर्म नीति का स्वरूप भली प्रकार निखरकर सामने आता है।

कृष्णचरित्र के लिये हिन्दी में भाषा का कोई परम्परागत श्रद्धा संग्रह कर सकने वाला ग्रन्थ नहीं मिला। इसलिये इसमें संस्कृत ग्रन्थों का ही आश्रय लेना पड़ा। कृष्ण कथा पाठ्यक्रम में संस्कृत की सामान्य शिक्षा का होना आवश्यक है। इसके बिना श्लोकों का शुद्ध उच्चारण न हो सकेगी और उस अभाव में कृष्ण कथा की प्रक्रिया ठीक प्रकार से न बन पड़ेगी।

भागवत कथा की कार्यपद्धति भी रामायण कथा जैसी ही है। उससे भी घरेलू नित्य कथा के रूप में, सफल आयोजनों के रूप में तथा सप्ताह कार्यक्रमों के रूप में सम्पन्न किया जा सकता है। व्यवस्था, शैली, योजना आदि अन्य बातें राम कथा के सदृश ही हैं।

सत्यनारायण कथा

सत्यनारायण कथा अपने देश के कोने-कोने में प्रचलित है। उसके कथानक को सुना-सुनाया तो जाता रहा है पर उन प्रेरणाओं से परिचित नहीं कराया गया, जिनके अनुसार सत्य को, आदर्शवाद को, प्रत्यक्ष नारायण के रूप में मान्यता देने और हृदयंगम करने की शिक्षा है। अपनी कथाशैली में कथानक को नैतिक क्रान्ति की आवश्यकता पूरी कर सकने योग्य बना दिया गया है। इसका उपयोग घरेलू छोटे आयोजनों में किया जाता है। आवश्यकतानुसार इसे एक दिन या पाँच दिन के कथा आयोजन का रूप भी दिया जा सकता है। इसका प्रशिक्षण भी कथाओं के प्रशिक्षण के साथ दिये जाने की व्यवस्था है।

उपासना प्रार्थना

प्रत्येक व्यक्ति की आस्तिकता सुदृढ़ रखने के लिये इसे उपासना को किसी न किसी रूप में अपनाये रहने का वातावरण बनाया जाना है। भले ही वह पाँच मिनट का आँखें बन्द करे ध्यान और मुँह बन्द करके जप करने जितना स्वल्प ही क्यों न हो ? हर घर में छोटा उपासना कक्ष रहे और पारिवारिक पूजा प्रक्रिया उसमें सम्पन्न होती रहे। भले ही वह भगवान के चित्र स्थापित रहने और परिवार के हर सदस्य को वहाँ प्रणाम करने, दैनिक कृत्यों में लगने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जैसे एक मिनट के उपचार जितना ही क्यों न हो। आस्तिकता की स्थिरता में एवं परिपक्वता में दैनिक उपासना का विशेष महत्त्व है, इसका अधिकाधिक प्रसार विस्तार करना अपनी कार्य पद्धति का महत्त्वपूर्ण अंग है।

गायत्री उपासना का अपना महत्त्व है, वह भारतीय संस्कृति की गंगोत्री और वेदजननी मानी गई है। उपासना में एकरूपता लाने के लिये गायत्री उपासना के प्रति आकर्षण उत्पन्न किया जाये। व्यक्ति विशेष की स्थिति के अनुरूप उसके छोटे-बड़े उपचार लोगों का समझाये जायें और उनमें उत्साह उत्पन्न किया जाय।

घरों में प्रातः सायं सामूहिक प्रार्थना आरती का उपक्रम चल पड़े तो इससे परिवारों के वातावरण को परिष्कृत बनाने में बड़ी सहायता मिल सकती है।

संस्कार और पर्व घरों में निजी रूप से मनाये जा सकते हैं। विशेष अवसरों पर सामूहिक प्रार्थना की परम्परा चल सकती है।

घरों में रात को कथा कहानियाँ कहने का प्रचलन चल पड़े ऐसा प्रयत्न किया जाना चाहिये। धर्म प्रथाओं के साथ जो अवांछनीयतायें जुड़ गयी हैं, उनसे लोगों को विरत किया जाना चाहिये।

स्थानीय देवालयों के स्थान, धन एवं प्रबन्ध में किस प्रकार से क्या परिवर्तन किया जाय जिससे वे धर्म चेतना के केन्द्र बन सकें? इस प्रकार की अनकों विधि व्यवस्थाओं का प्रशिक्षण इन सत्रों में होता है। किस स्थिति में क्या किया जाना चाहिये ? इस अन्तर को समझने से आस्तिकता की प्राण प्रतिष्ठा में भारी सफलता मिल सकती है। इसकी समुचित जानकारी एवं कार्य पद्धति शिक्षार्थी इन सत्रों में प्राप्त करके जाते हैं।

बौद्धिक प्रशिक्षण

इस वर्ग की एक कक्षा नित्य चलेगी। जिसमें—(१) धर्म मंच से लोक शिक्षण करने के इच्छुकों का दृष्टिकोण, चरित्र एवं गुण, कर्म स्वभाव का स्तर ऊँचा रखने वाले आचार व्यवहार (२) इस मार्ग में चलने वाले के सामने आने वाली कठिनाइयों का परिचय और निराकरण (३) समाज की वर्तमान परिस्थितियों और प्रस्तुत अनेकानेक समस्याओं के स्वरूप एवं कारणों की जानकारी (४) परिस्थितियों के अनुरूप क्रियाकलापों, विधिविधानों एवं व्याख्या प्रवचनों में अन्तर करने की आवश्यकता (५) धर्म प्रचारकों के साथ-साथ रचनात्मक और सुधारात्मक प्रवृत्तियों के आरम्भ तथा अभिवर्धन करने की सूझ-बूझ का विकास (६) विरोधियों से निपटने का कौशल (७) अवांछनीयताओं के उन्मूलन में उभरने वाले संघर्ष में विजयी होने के सिद्धान्त (८) लोकसेवा में बाधक अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियों के क्रमिक समाधान के उपाय (९) जन सम्पर्क एवं प्रभाव क्षेत्र विस्तृत करने की रीतिनीति (१०) अन्य लोकसेवी संस्थान का सहयोग करने और उनका सहयोग लेने में उदारता एवं सतर्कता का समन्वय।

क्रमिक विकास

योजना के संचालक भारतीय संस्कृति के अनुयायी होने के कारण इसका आरम्भ अपने परिचित क्षेत्र से कर रहे हैं। निकट भविष्य में यही प्रक्रिया अन्य धर्मों के सम्बन्ध में भी अपनाई जायेगी। उसी धर्म के अनुयायी लोकसेवक प्रशिक्षित किये जायेंगे। जिस धर्म के क्षेत्र में काम करना है, उसी के शास्त्रों एवं प्रथा प्रचलनों को उसी उद्देश्य में संलग्न किया जायेगा, जिसमें कि इन दिनों हिन्दू धर्मानुयायियों को किया गया है। इस प्रकार सभी धर्म अपनी-अपनी विशिष्ट शैलियों को अपनाये रहकर भी मूल धर्म प्रयोजनों को पूरा कर सकने में सहयोगी बन कर काम कर सकेंगे। विभिन्न नदियाँ एक ही समुद्र का भण्डार भरती हैं। अनेक मार्ग एक लक्ष्य तक पहुँचते हैं तो कोई कारण नहीं कि अनेक धर्म मिलकर मानवतावादी आदर्शों को लोकप्रिय बनाने में एक-दूसरे के सहायक सिद्ध न हो सके। धर्मवृक्ष की आत्मा एक है, उसकी डालियाँ और शाखा-पल्लव सम्प्रदायों के रूप में बने रहकर भी सहयोगी भूमिका निभा सकते हैं और वृक्ष की शोभा समर्थता बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण की प्रक्रिया

सर्वविदित है कि सर्वजनीन व्यवस्था को सम्भालने में राजसत्ता के साधन ही काम देते हैं। सुरक्षा, अर्थ सन्तुलन, शिक्षा, परिवहन, उद्योग आदि को उसी की रीति-नीति पर आश्रित रहना पड़ता है। किन्तु मानवी सुसंस्कारिता का दूसरा पक्ष भी है, जिसे उच्चस्तरीय रखे बिना जन समुदाय का चिन्तन, चरित्र, प्रवाह, नियमन एवं संगठन लड़खड़ाने लगता है। चरित्र ही व्यक्ति और समाज की वास्तविक प्रगति का कर्णधार है। दुर्गुणों, दुर्व्यसनों, मूढ़ मान्यताओं, अन्धविश्वासों और संकीर्ण स्वार्थान्धताओं जैसी दुष्प्रवृत्तियों से घिर जाने पर कोई समाज दिन-दिन दुर्बल होता जाता है। भौतिक क्षेत्र की तरह मानव जीवन का आत्मिक पक्ष भी है। शासन भौतिक प्रगति का उत्तरदायित्व सम्भालता है तो प्रायः उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी धर्मक्षेत्र के कन्धों पर आती है और उसे सर्वजनीन चिन्तन तथा चरित्र का स्तर ऊँचा रखना होता है। इसीलिये राजतन्त्र और धर्मतन्त्र को समान रूप से उपयोगी, समर्थ और अपने-अपने क्षेत्रों की सुव्यवस्था का उत्तरदायी माना जाता है।

आज धर्म की विशेष रूप से दुर्गति हुई है। निहित स्वार्थों ने उसमें संकीर्णतायें, भ्राँतियाँ और विकृतियाँ इस कदर भर दी हैं कि वह उपयोगी न रहकर अनुपयोगी बन गया है। प्रगतिशीलता छोड़कर प्रतिगामिता अपनाये बैठा है। फलतः उसके साथ जुड़ी हुई असीम जन शक्ति और धन शक्ति का उपयोग अवांछनीय दिशा में हो रहा है। इसमें भारी सुधार परिवर्तन की आवश्यकता है। ६० लाख जितने साधु-सन्त यदि ७ लाख गाँवों में सृजन और सुधार प्रक्रिया अपनाने में जुट पड़ें तो वे हर गाँव पीछे ८।। आते हैं। इतने लोगों के प्रयास से समूचे देश का कायाकल्प हो सकता है। मठ-मन्दिरों के माध्यम से अरबों-खरबों की सम्पदा हर वर्ष व्यय होती है। इसी प्रकार तीर्थ यात्रा जैसे प्रयोजनों में विपुल धन राशि, खर्च होती है। इस धन शक्ति और भावनाशक्ति को यदि रचनात्मक प्रयोजनों के लिये नियोजित किया जा सके तो उससे अपने समाज को भी लाभ मिल सकता है जैसा कि ईसाई मिशनों न अपने समुदायों को पहुँचाया है। कोसने की अपेक्षा सुधारना श्रेयस्कर है। वास्तविकता और अवास्तविकता को समझने-समझाने के लिये अनुपयुक्तता की तुलना में सुधरा हुआ पक्ष भी रखा जाना चाहिये, जिससे दोनों का मध्यवर्ती अन्तर सर्व साधारण की समझ में आ सके। यही है वह विचारधारा जिससे प्रेरित होकर, हमने धर्म क्षेत्र में प्रगतिशीलता का समावेश करने, उसे उपयोगिता की हर कसौटी पर खरा सिद्ध करने का निश्चय किया। वे धर्म मंच को आदर्शवादी प्रगतिशील लोक शिक्षण के लिये अतीव शक्तिशाली माध्यम मानते हैं और उसके परिशोधन, परिष्कार में अपनी सारी शक्ति लगाना चाहते हैं। यही कारण है कि स्वतन्त्रता सैनिक का संघर्षात्मक पूर्वार्द्ध कर्त्तव्य पूरा होते ही राष्ट्रीय सृजन प्रक्रिया के उत्तरार्द्ध में प्रवेश किया और इसके लिये धर्मतन्त्र से लोकनिर्माण की सुनियोजित एवं ऐसी व्यापक योजना बनाई, जिसका प्रारम्भ तो अभ्यस्त हिन्दू धर्म से होता है पर क्रमशः उसमें अन्य धर्मों को भी उसी दिशा में साथ-साथ ले जाने का निश्चय है। भारतीय धर्म शास्त्रों का प्रेरणा प्रद अनुवाद प्रकाशन इसी प्रयोग का प्रथम चरण है।

गायत्री उपासना और यज्ञ प्रक्रिया को प्रतीक माध्यम मानकर प्रज्ञा और प्रखरता का समन्वयय किया गया। विचारक्रान्ति को गायत्री से और सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन का यज्ञ प्रक्रिया के साथ जोड़ा। ज्ञान और कर्म के क्षेत्र में उत्कृष्टता, आदर्शवादिता के समावेश का यह महत्त्वपूर्ण आधार माना गया। न्यूनतम खर्च वाले ऐसे गायत्री यज्ञों का गुरुदेव ने प्रचलन किया, जिसमें सम्मिलित होने वालों में से प्रत्येक को अपनी वैयक्तिक या सामाजिक अवांछनीयताओं में से एक का परित्याग करना और एक सत्प्रवृत्ति को अपनाने का संकल्प लेना पड़ता है। इस माध्यम से उन्होंने लोगों से नशेबाजी, बेईमानी, दहेज, मृतक भोज, फैशन, जेवर, भिक्षा व्यवसाय, जाति-पाँति के आधार पर चलने वाली ऊँच-नीच, पर्दा-प्रथा जैसी अवांछनीयता का परित्याग कराया और वृक्षारोपण स्वच्छता अभियान, शिक्षा सम्बर्धन, स्वास्थ्य सुधार, सहकारिता आदि के लिये प्रयत्न करने का संकल्प कराया। यह संकल्प यज्ञाग्नि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की साक्षी में हुये तो उसी प्रकार निभे भी जैसे विवाह के समय धर्मकृत्य के साथ किये गये गठबन्धन का वर-वधू श्रद्धापूर्वक आजीवन निबाहते हैं। इस प्रकार सत्संकल्पों को सामूहिक रूप से उभारने और परिष्कार परिशोधन का वातावरण बनाने में गुरुदेव द्वारा प्रचलित न्यूनतम खर्च वाले आयोजनों ने सुधार प्रयोजनों के निमित्त अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गायत्री मन्त्र को उन्होंने दूरदर्शी विवेकशीलता अपनाने का आन्दोलन खड़ा करने के निमित्त प्रयुक्त किया। इस महामन्त्र के तीन चरणों में नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक क्रान्ति के बीजांकुर इतनी उत्तमता से गुंथे हुये हैं कि उसे जनसाधारण को अवगत कराने में किस प्रकार प्रचलित मूढ़ मान्यताओं से उबरने और प्रचलनों को औचित्य की कसौटी पर कसने के उपरान्त ही ग्रहण किया जाना चाहिये। अपनी आकांक्षायें, विचारणायें एवं गतिविधियाँ आदर्शों के साथ बन्धी रहें, इस निमित्त गायत्री मन्त्र की विवेचना एवं उपासना को हर दृष्टि से उपयोगी पाया गया और उसे भारतीय एकता एवं सांस्कृतिक गरिमा का बीज सूत्र मानते हुये जनसाधारण तक पहुँचाया गया। धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण प्रक्रिया के गायत्री और यज्ञ दो प्रतीक माध्यम हैं। पिछले दिनों वे दोनों मात्र ब्राह्मण समुदाय की बपौती भर माने जाते थे। अन्य वर्णों तथा महिलाओं को उससे दूर रखा जाता रहा। उन्हें मनुष्य मात्र के लिये रूढ़िवादियों का भारी विरोध सहते हुये भी आगे बढ़ाया गया। युग निर्माण आयोजन प्रायः गायत्री यज्ञों के साथ ही होते रहे हैं। उनमें अमृताशन, खिचड़ी, दलिया-दाल, चावल आदि उबले पदार्थों के सहभोज होते रहे हैं। इससे जातिगत छूत-छात की भावना को तोड़ने में भारी योगदान मिलता है। गायत्री यज्ञों के अवसर पर बिना दहेज के आदर्श विवाहों की व्यवस्था भी होती रही है। इस प्रकार अब तक हजारों बिना खर्च वाले विवाह सम्पन्न हो चुके हैं। रूढ़िवादिता पर इन आयोजनों के माध्यम से असाधारण कुठाराघात हुआ है। इन छोटे धार्मिक समारोहों ने प्रगतिशीलता के हर पक्ष का कितना पोषण किया है, वे सहज श्रद्धा के सहारे किस प्रकार व्यापक बने हैं, इसका पर्यवेक्षण करने वाले आश्चर्यचकित रह जाते हैं कि प्रतिगामिता को प्रगतिशीलता में बदल देने का यह कायाकल्प उपक्रम किस प्रकार सूझा और किस सूझ-बूझ के साथ उसे आशातीत प्रतिफल प्रस्तुत कर सकने वाला बनाया गया।

धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण के कुछ और भी महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं जिसे युग परिवर्तन योजना के प्रमुख कार्यक्रमों में समझा जा सकता है। इनमें से एक है—प्रज्ञा संस्थानों के रूप में युगान्तरीय चेतना को व्यापक बनाने वाले जन जागृति केन्द्रों की बड़ी संख्या में देश के कोने-कोने में स्थापना। दूसरा है—तीर्थ परम्परा का प्रचलन। तीसरा है—वानप्रस्थ आश्रम को नये सिरे से प्रोत्साहन। चौथा है—युग साहित्य का सृजन एवं प्रकाशन। पाँचवा है—स्वाध्याय और सत्संग प्रक्रिया को माध्यम मानकर विचार क्रान्ति के छोटे घटकों की स्वाध्याय मण्डली के रूप में स्थापना। छटा है—भावनाशीलों में नव सृजन प्रयोजन की आस्था तथा कर्म क्षमता उभारने वाले शिक्षण सत्रों का आयोजन। सातवाँ—प्रवासी भारतीयों में धर्म निष्ठा सजोय, सम्भाले रहने का उपक्रम। इन सातों कार्यक्रमों को धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण प्रक्रिया के अन्तर्गत लिया गया है। जितने साधन उपलब्ध होते हैं, उससे दूना, चौगुना उत्तरदायित्व ओढ़ा और उसे पूरा कर दिखाया जाता है। आशा यह की गई है कि जैसे-जैसे मिशन की प्रामाणिकता, व्यापकता एवं उपयोगिता बढ़ती चलेगी, उसी अनुपात से अधिक भारी प्रयास चल पड़ेंगे और उसकी प्रगति प्रतिक्रिया स्तर तक पहुँचगी, जिसके सहारे लोकमानस के परिष्कार का अत्यधिक आवश्यक किन्तु साथ ही अत्यन्त कठिन कार्य सरलता और सफलतापूर्वक सम्पन्न होने लगे।

कार्य-पद्धति की रूप रेखा

उपर्युक्त सातों कार्यक्रमों की खुलाशा जानकारी इस प्रकार है—(१) सर्वप्रथम एक केन्द्रीय धर्म संस्थान गायत्री तपोभूमि, मथुरा के रूप में बना। उसे गायत्री तथा यज्ञ के प्रतीकों की स्थापना के रूप में स्वरूप तो देवालय का दिया गया पर साथ ही उन सभी गतिविधियों का समावेश किया गया जिनके सहारे व्यक्ति, परिवार तथा समाज को समुन्नत बनाने के लिये लोकमान्यता के परिष्कार का लक्ष्य पूरा करने के लिये बहुमुखी आवश्यकता रहती है। इस दर्शनीय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थान में चलने वाली प्रवृत्तियों को युग निर्माण योजना नाम दिया गया। अब तक उसके द्वारा कितना काम हो चुका और निकट भविष्य में उसके माध्यम से क्या होने जा रहा है इसकी विस्तृत जानकारी वहाँ पहुँचने पर ही चल सकती है। दूसरा धर्म संस्थान हरिद्वार में शान्तिकुञ्ज के नाम से बना। अब उसे गायत्री तीर्थ के रूप में विकसित किया गया है। ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान, शान्तिकुञ्ज और गायत्री नगर के त्रिविध निर्माण युग प्रवर्त्तन की पृष्ठभूमि किस प्रकार बना रहे हैं और निकट भविष्य में क्या करने जा रहे हैं, इस सन्दर्भ में वहाँ पहुँचना, पूछना और देखना अपरिहार्य है। इतना बड़ा काम यह पंक्तियाँ कर नहीं सकतीं।

उपर्युक्त दो प्रधान केन्द्रों के उपरान्त समझा गया कि हर क्षेत्र में ऐसे ही युगान्तरीय चेतना का आलोक वितरण करने वाले छोटे-बड़े धर्म संस्थान देश के कोने-कोने में बनायें जायें। तदनुसार प्रथम चरण में २४०० स्थानों पर इस उद्देश्य को पूरा करने वाले छोटे-बड़े देवालय बनकर खड़े हो गये हैं। प्रथम चरण की पूर्ति के उपरान्त दूसरा चरण आरम्भ होगा, जिनमें सस्ते देवालयों को बड़ी संख्या में स्थापित करने की योजना है। उस द्वितीय चरण में पाँच हजार के निर्माण का लक्ष्य है।

उपर्युक्त युग देवालयों में से प्रत्येक में न्यूनतम दो युगशिल्पी कार्यकर्त्ता रहने का प्रबन्ध है। इनमें से एक देवालय की गतिविधियों का संचालन करता है, दूसरा समीपवर्ती क्षेत्र के न्यूनतम सात गाँवों को कार्य क्षेत्र बनाकर एक दिन गाँव सम्भालने की प्रक्रिया अपनाकर सात दिन में सात गाँवों में सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन का कार्य करता है और वह उपक्रम सदा चलता रहता है।

प्रज्ञा पीठों की स्थानीय गतिविधियों में प्रातः सामूहिक प्रार्थना। रात्रि में प्रज्ञा पुराण की कथा का निर्धारण तो दैनिक धर्मकृत्यों में सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त उनमें दिन भर बालकों की, प्रौढ़ों की, महिलाओं की दो-दो घण्टे वाली पाठशालायें चलती हैं। आसन, प्रणायाम, व्यायाम, जड़ी-बूटी उपचार, खेल-कूद, प्रशिक्षण आदि उपायों के सहारे स्वास्थ्य सम्वर्धन की कार्यविधि चलती रहती है। हर प्रज्ञा संस्थान के साथ-साथ एक पुस्तकालय जुड़ा हुआ है। साप्ताहिक सत्संग भी नियमित रूप से होते हैं। जिनमें सामयिक समस्याओं के अदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किये जाते हैं। इन ज्ञान गोष्ठियों को प्रचलित सत्संगों के नाम पर चलने वाली बकवास से सर्वथा भिन्न समझा जाना चाहिये। इस विचार-विनिमय में प्रगतिशीलता कूट-कूट कर भरी रहती है।

प्रज्ञा संस्थानों के साथ जुड़े हुये निकटवर्ती सात गाँवों में पंचसूत्री कार्य पद्धति हाथ में ली गई है। जिससे उद्देश्यपूर्ण जन सम्पर्क सधे, जन-समर्थन बढ़े, और इतना जन-सहयोग मिले, जिसके सहारे नवं सृजन को प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक बहुमुखी प्रवृत्तियों के अग्रगामी बनाया जा सकना सम्भव हो सके। ये पंच सूत्री प्रमुख कार्यक्रम हैं—(१) हर शिक्षित तक घर बैठे, बिना मूल्य, नियमित रूप से युग साहित्य पहुँचाने तथा वापिस लेने की प्रक्रिया। इसी में बिन पढ़ों को यह साहित्य सुनाने की कार्य विधि भी सम्मिलित है। (२) स्लाइड-प्रोजेक्टर के माध्यम से हर गली-मुहल्ले में प्रकाश चित्र दिखाते हुये उनकी व्याख्या द्वारा सत्संग की सुविधा सर्वत्र प्रस्तुत करना। (३) विचारशीलों के जन्मोत्सव मनाते हुये परिवारों में विचार गोष्ठियाँ चलाना। इस माध्यम से उपस्थित जन समुदाय को युग चेतना से अवगत कराना। (४) दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन। घरों पर आदर्श वाक्यों के चित्र टाँगना। उपकरणों वाहनों पर आदर्श वाक्यों के स्टीकर चिपकाना। (५) पुरुषों को ज्ञान घट रखकर दस पैसा अनुदान देते रहने तथा महिलाओं के जिम्मे एक मुट्ठी अनाज धर्म घट में डालने के लिये प्रोत्साहित करना। इसी आधार पर संग्रह किये अनुदानों से कार्यकर्ताओं का निर्वाह तथा मिशन की गतिविधियों के आवश्यक साधन जुटाना। यह पंच सूत्री योजना, प्रज्ञा संस्थानों को लोकप्रिय बनाने, जन समर्थन एवं जन सहयोग उपलब्ध करके भावी बड़े सृजन प्रयोजनों के लिये बड़े कदम उठा सकने की सामर्थ्य संचित करते हैं। इसलिये इन स्थापनाओं के लिये प्रथम चरण के रूप में उन्हें कार्यान्वित करने के लिये कहा गया है।

जिन प्रज्ञा संस्थानों, स्वाध्याय संगठनों में कुछ कहने लायक सामर्थ्य उभरती है, उन्हें अगले चरण में प्रवेश करने में लगा दिया जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। इसमें पाँच सृजनात्मक और पाँच सुधारात्मक कार्यक्रम हैं। सृजनात्मक—(१) शिक्षा प्रसार और शिक्षा पर विशेष जोर, (२) स्वास्थ्य सम्वर्धन—व्यायाम अभियान, (३) स्वच्छता, अभियान—सामूहिक श्रमदान, (४) हरीतिमा सम्वर्धन—वृक्षारोपण, (५) सहकारी गृह उद्योग का प्रचलन। सुधारात्मक—(१) नशा निवारण, (२) शादियों में दहेज या अवांछनीय खर्च न होने देना, (३) फैशन-जेवर आदि फिजूल खर्चियों को रोककर सादगी का प्रचलन, बचत को बैंकों में जमा करना, (४) प्रजनन का सीमा बन्धन, (५) कुरीतियों, अन्ध विश्वासों एवं अनैतिकताओं का उन्मूलन। इन कार्यक्रमों के सहारे ईमानदारी, समझादारी एवं जिम्मेदारी की भावनाओं को परिपक्व करने का सुयोग बनता है। आत्म निर्माण, परिवार निर्माण एवं समाज निर्माण के निर्धारित प्रयोजन को पूरा करने की दिशा में भी उपर्युक्त दूसरे चरण में निर्धारित कार्यक्रमों को हाथ में लेने से भूमिका बनती है। इतना बन पड़ने पर तीसरे चरण के लिये अन्य बड़े और व्यापक कार्यक्रम हाथ में लेने की नीति अपनायी गई है। धर्म तन्त्र की शक्ति को उसके अनुयायी सृजन प्रयोजनों में लगा सकें तो इसके दूरगामी परिणाम होंगे। क्रमिक कदम उठाते हुये मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण के चरम लक्ष्य तक पहुँचने की आशा संजोई गई है।

(२) तीर्थ परम्परा के पुनर्जीवन से तात्पर्य है—धर्म धारणा को जन मन में प्रवेश कराने, युगान्तरीय चेतना से जन-जन को अवगत कराने के लिये अलख जगाना। इसके लिये विज्ञजन अपने प्रचार जत्थे बनाकर लम्बी पदयात्रा पर निकलते हैं। दिन में राह चलते से सम्पर्क, विचार-विनिमय, दीवारों पर आदर्श-वाक्य लेखन का कार्यक्रम चलता है। रात्रि को जहाँ भी विराम होता है, तीर्थयात्री संगीत मण्डली के रूप में बदल जाते हैं और उपस्थित लोगों में प्रगतिशीलता अपनाने की प्राण प्रेरणा भरते हैं। यह मण्डलियाँ प्रायः अपने खर्च से ही भोजन तथा यात्रा व्यय चलाती हैं। आग्रहपूर्वक दिया गया भोजन ही स्वीकार करती हैं। ऐसी दस प्रचार मण्डलियों का आरम्भ शान्तिकुंज द्वारा किया गया है। पाँच-पाँच व्यक्तियों के दस जत्थे इनमें चल पड़े हैं। उनके साथ भावपूर्ण बहुमूल्य चित्र प्रदर्शनी है। संगीत उपकरण साथ रहते हैं। प्रचारकों का विस्तार, लाउडस्पीकर, टेपरिकार्डर आदि उपकरण साथ रहने के कारण एक-एक जीप गाड़ी इन सामान को लादकर अगले प्रोग्राम पर पहुँचती है और डेरा डालती है। तब एक प्रचारक मण्डली यहाँ पदयात्रा करती हुई पहुँच जाती है। इन मण्डलियों के लिये संगीत अभ्यास, सम्भाषण, प्रवचन कौशल की शिक्षा शान्तिकुञ्ज में चलती है। आशा की गई है कि यह दस मण्डलियाँ अगले दिनों एक सौ नई मण्डलियाँ गठित करने और उन्हें पिछड़े इलाकों में नैतक, बौद्धिक एवं सामाजिक क्रान्ति का वातावरण बनाने के लिये तत्पर कर सकेंगी। इस बीच जहाँ भी प्रेरणा प्रद स्थल मिलते हैं, वहाँ. बड़े वृक्षों के नीचे चबूतरे बनाकर, उन्हें स्थानीय तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है ताकि ग्रामतीर्थों की अधिकाधिक स्थापना हो, प्रेरणाप्रद घटनाओं एवं आदर्शवादियों के स्मारक बनें और वहाँ समय-समय पर छोटे-बड़े आयोजन करने तथा उत्कृष्टता समर्थक वातावरण बनाने के प्रसंग चलते रहें।

(३) वानप्रस्थ के लिये प्राचीनकाल जैसा उत्साह उत्पन्न करने का प्रयास धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण योजना के अन्तर्गत विशेष रूप से किया गया है। जीवन का पूर्वार्ध निजी प्रयोजनों के लिये और उत्तरार्ध समाज सेवा के लिये लगाने की पुरातन परम्परा से उन दिनों अगणित परिपक्व ज्ञान अनुभव वाले समाज सेवी निकलते थे और जन-जन की भावनाओं तथा प्रवृत्तियों को सत्प्रयोजनों में नियोजित किये रहने के लिये भागीरथी प्रयत्न करते थे। उन दिनों के सतयुगी वातावरण का सारा रहस्य और आधार इस वानप्रस्थ परम्परा पर ही निर्भर रहा है। अब नये सिरे से उसे पुनर्जीवित किया जा रहा है। पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्तों का पूरा समय और व्यस्त गृहस्थों को यथा सम्भव समय देने के लिये प्रोत्साहित किया गया है। इसी समय सम्पदा की पूँजी से अनेकानेक सत्प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाया जा रहा है। सहस्रों की संख्या में युग शिल्पी इसी आन्दोलन के फलस्वरूप निकलते हैं और वे सामूहिक श्रमदान-अंशदान की प्रवृत्ति जगाकर अनेकों सृजनात्मक प्रयासों का देश के कोने-कोने में बीजारोपण एवं अभिवर्धन करने में जुटे हैं। इस प्रयास से भविष्य में और भी अधिक संख्या में लोक सेवी मिलने और अधिक बड़े काम कर सकने की आशा फलवती होने के चिन्ह उभर रहे हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोकमानस के परिष्कार के लिए प्राचीन परम्परा के अनुरूप कथा प्रवचनों के माध्यम से श्रोताओं को अनुप्राणित करने वाला लोकशिक्षण किया जाता रहा है। अब तक रामायण, गीता भागवत् आदि के स्फुट-प्रसंगों को इस प्रयोजन के लिए व्यवहृत किया गया है, पर अब इसके लिए एक योजनाबद्ध नयी पुराण श्रृंखला ही रच दी गई है। इसको नाम 'प्रज्ञा पुराण' रखा गया है। संस्कृत श्लोक, टीका व्याख्या तथा प्रसंग से सम्बन्धित अनेकों कथा-गाथाएँ साथ-साथ जोड़ दिए गये हैं। यह महाग्रन्थ दस खण्डों में छपेगा। एक छप चुका है। तीन प्रेस में हैं। इनमें हिन्दू धर्मेतर, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम धर्मों की कथाएँ भी प्रचुर मात्रा में जोड़ी गई हैं। ताकि धर्म तत्व की गरिमा एवं एकता वाले मूलभूत उद्देश्यों को समझाकर सर्व धर्म समभाव के लिए जन-मानस बनाया जा सके।

(४) स्वाध्याय मण्डलों की स्थापना एक अभिनव प्रयोग है। एक स्वाध्याय प्रेमी चार अन्य साथियों की सहायता से इस मन्डली का गठन करता है। यह पाँच व्यक्ति अपने यहाँ बीस-बीस पैसे नित्य निकालने वाले ज्ञानघट स्थापित करते हैं ताकि नया युग साहित्य उस राशि द्वारा नियमित रूप से मँगाया जा सके और मन्डल का अपना पुस्तकालय चलता एवं बढ़ता रहे। यह पाँचों नैष्ठिक सदस्य अपने-अपने सम्पर्क के पाँच-पाँच व्यक्ति ऐसे बनाते हैं, जिन्हें वे युग साहित्य का नियमित स्वाध्याय कराने के लिए मन्डल से पुस्तक लेकर पहुँचते और वापिस लाकर जमा करते हैं। संक्षेप में इसे पाँच सदस्यों और पच्चीस पाठकों की सम्मिलित संख्या, तीस की एक ज्ञान मण्डली कहना चाहिए। यह लोग न केवल स्वाध्यायक्रम चलाते हैं वरन् उनका साप्ताहिक सत्संग भी होता है। उनके जन्मोत्सव उनके घरों पर मनाए जाते हैं। इस प्रकार वर्ष में तीस आयोजन परिवार गोष्ठियों के रूप में होते हैं। संगठन थोड़ा मजबूत होते ही स्लाइड प्रोजेक्टर के माध्यम से तीस स्थानों पर तीस प्रचार आयोजन भी हर महीने सम्पन्न होते रहते हैं। इसके लिए हर महीने ३६ स्लाइडों की एक नई सीरीज बनती रहती है। इसे मंगाते रहने से हर महीने एक नया प्रकाश चित्र वृत दिखाने का क्रम चलता रहता है। यह मिनी सिनेमा स्वाध्याय मण्डलों के माध्यम से चलता है और उससे प्रेरणात्मक सत्संग क्रम इन तीसों घरों में नियमित रूप से चलता रहता है। स्लाइड प्रोजेक्टर का क्रम जहाँ चल पड़ता है, वहाँ टेपरिकार्डर का प्रबन्ध किया जाता है। इस माध्यम से शान्तिकुञ्ज से भेजे विचारों को, प्रेरणाप्रद संगीतों को सुनने का क्रम चलता है। पड़ौसियों को इसे सुनने के लिए विशेष रूप से आमन्त्रित किया जाता है। इस प्रकार तीसों घरों में हर महीने एक बार स्लाइड प्रोजेक्टर, एक बार टेप प्रवचन संगीत सुनने के रूप में मुहल्ले की ज्ञान गोष्ठी होती रहती है।

यह स्वाध्याय मंडल वस्तुतः छोटे प्रज्ञा संस्थान हैं, जिन्हें अपनी इमारत होते हुए दायरे में बैठे वह सब कार्य करने का अवसर मिलता है। जिन्हें इमारतों वाले बड़े प्रज्ञा संस्थान बड़े रूप में बड़े संगठन के माध्यम से चलाते हैं।

(५) 'युग साहित्य का सृजन' यों तो अब तक युग निर्माण योजना के अन्तर्गत प्रायः एक हजार छोटी-बड़ी पुस्तकें आत्म निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण से सम्बन्धित अनेक प्रसंगों पर लाखों की संख्या में छपी हैं पर अब एक नयी तीस पैसा सीरीज हर दिन नये प्रकाशन और हर सदस्य को नई प्रेरणा देने के उद्देश्य से लिखी और छापी जा रही है। भविष्य में तर्क, तथ्य, प्रमाण और विज्ञान की साक्षी में विचार क्रान्ति साहित्य लिखने और उसमें अध्यात्म का गहरा पुट रखने की योजना है। अब तक के साहित्य ने जो भूमिका निभाई है, जो वातावरण बनाया है, उससे भी बड़ा, व्यापक और हर भाषा में प्रज्ञा साहित्य प्रकाशित करने की योजना है। ज्ञानरथ, चल पुस्तकालयों के द्वारा उसे गली मुहल्लों और हाट बाजारों में बिकवाने की सुनियोजित तैयारी चल रही है। उसे अब तक के शानदार प्रयास में एक आश्चर्यजनक नई कड़ी जुड़ने की बात समझा जा सकता है, जिसके दूरगामी परिणाम होंगे।

हमारी लेखनी का प्रसाद लाखों पाठक हर महीने नियमित रूप से प्राप्त करते हैं। 'अखण्ड ज्योति' और युग निर्माण योजना' दो पत्रिका हिन्दी में छपती हैं। अखण्ड ज्योति सन १९४० से नियमित रूप से छप रही है। इसमें कभी किसी का विज्ञापन नहीं छपा। इसके अनुवाद, गुजराती, मराठी, उड़िया, तमिल, तेलगू, अंग्रेजी, बंगला, पंजाबी आदि भाषाओं की मासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। इन सबके दस लाख के लगभग सदस्य हैं। हर सदस्य पाँच

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्यों को पढ़ाने का व्रत लेता और निभाता है। इस प्रकार इनके पाठकों की संख्या पचास लाख से ऊपर समझी जाती है।

(६) कार्यकर्ता प्रशिक्षण सत्र। यह शान्तिकुञ्ज में नियमित रूप में चलते हैं। यह दो स्तर के हैं। एक महीने के और दस दिन के। इनमें आत्म परिष्कार, जीवन शोधन और भविष्य निर्धारण की तीर्थ साधना की प्रमुखता तो है ही साथ ही बड़े सम्मेलनों में भाषण और छोटे समुदायों में विचार-विमर्श करने, सम्भाषण प्रक्रिया में कुशलता प्राप्त करने का अभ्यास कराया जाता है। स्ट्रीटसिंगर स्तर का सुगम संगीत भी सृजन शिल्पियों के लिए आवश्यक समझा गया है और उसकी उपयुक्त व्यवस्था रखी गई है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति और समाज के सम्मुख उपस्थित सामाजिक समस्याओं का स्वरूप समझने और उनके समाधान का स्वरूप समझाने का भी इस प्रशिक्षण क्रम में समुचित समावेश है। प्रायः दो सौ शिक्षार्थी इन दोनों शिविरों में निरन्तर बने रहते हैं। उनके निवास, भोजन, प्रशिक्षण एवं आवश्यक साधनों की समुचित व्यवस्था की गई है। उन्हीं को पंचसूत्री योजना का प्रथम चरण और दस सूत्री योजना का दूसरा चरण पूरा करने के लिए तत्परतापूर्वक काम करना है। इस प्रयोजन के लिए जिन्हें सुविधा है, वे एक महीने का पूर्ण और दस दिन का संक्षिप्त सत्र पूरा करते हैं।

सत्रों में सम्मिलित होने वाले साधकों की शारीरिक तथा मानसिक स्थिति का निष्णात चिकित्सकों द्वारा पर्यवेक्षण किया जाता है और तदनरूप साधना क्रम का निर्धारण होता है। आहार चिकित्सा, आसन चिकित्सा, प्राणायाम चिकित्सा; ध्यान, धारणा, उपासना, चिन्तन-मनन जैसी विशेषताओं से भरी पूरी प्रज्ञायोग साधना सभी साधक अपनी-अपनी स्थिति के अनुरूप भिन्न-भिन्न उपक्रम अपनाते हुए करते हैं। सौम्य औषधियों का कल्प भी सभी साधकों को कराया जाता है। इस अभिनव निर्धारण में विज्ञान और अध्यात्म का उच्चस्तरीय समावेश है। फलतः सभी साधक आशातीत लाभ लेकर लौटते हैं। यही कारण है कि उस विवरण के समाचार सुनकर साधकों की संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही है। प्रवेशार्थियों को निराश न करने की बात को ध्यान में रखते हुए अब पूर्व निर्धारित एक महीने के साधना क्रम को घटाकर दस दिवसीय किया गया है ताकि अधिक लोग प्रवेश पा सकें और अधिकों को अधिक लाभ मिल सके। यह दस दिवसीय सत्र हर महीने तारीख १ से १० ११ से २०, २१ से ३० में सम्पन्न होते हैं।

(७) भारत भूमि से बाहर प्रायः तीन करोड़ भारतीय निवास करते हैं। इन्हें प्रवासी कहा जाता है। इनका क्रमशः अपनी मूल संस्कृति के साथ रिश्ता टूटता जा रहा है और वे स्थानीय समुदायों के दर्शन और व्यवहार अपनाते जा रहे हैं। उन्हें देव संस्कृति से बिछुड़ने न देने के लिए वैसी ही योजना बनाई जा रही है जैसी कि ईसाई मिशनें विश्व प्रसार की योजना बना कर चलती हैं। उन देशों से बुलाकर धर्म प्रचारक प्रशिक्षित करने, यहाँ के धर्म प्रचारक वहाँ पादरियों की तरह डेरा डालकर रहने की व्यवस्था की गई है। उनकी स्थिति से तालमेल बिठाने वाला साहित्य भी सृजा जा रहा है, जो उन्हीं देशों में छपा करेगा। भारत से भेजने में तो डाक व्यय ही पुस्तक मूल्य के बराबर लग जाता है। इसलिए स्वाध्याय और सत्संग की दोनों ही कार्य पद्धति ७४ देशों में रह रहे भारतीयों के अनुरूप बनाने की तैयारी चल पड़ी है। इस प्रयोजन के लिए इन दिनों भी कई प्रचारक विश्व प्रवास पर निकले हुए हैं।

दो अनुपम प्रयोग-परीक्षण

शान्तिकुञ्ज को अध्यात्म क्षेत्र की एक प्रयोगशाला समझा जाना चाहिए, जिसके हर कक्ष और हर पक्ष में अनेकानेक अत्यन्त महत्वपूर्ण अनुसंधान होते हुए देखे जो सकते हैं। ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के माध्यम से आध्यात्म क्षेत्र की रहस्यमयी शक्तियों का सर्वजनीन प्रयोग उपयोग के लिए किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है, उसे प्रत्यक्ष करने के लिए गायत्री की शब्दशक्ति, अग्निहोत्र की प्रचण्ड ऊर्जा, साधना द्वारा प्राण विद्युत उपार्जन जैसे कितने ही प्रयोग चल रहे हैं और देखा जा रहा है कि भौतिकी तथा आत्मिकी के समन्वय से किस प्रकार 'मनुष्य में देवत्व के उदय' और 'धरती पर स्वर्ग के अवतरण' की संभावना को मूर्तिमान किया जा सकता है। उबले अन्नाहार का स्वास्थ्य पर प्रभाव, कल्प की साधना-प्रक्रिया, जड़ी-बूटियों की अद्भुत क्षमता का प्रत्यक्षीकरण, ज्योतिर्विज्ञान का परिशोधन तथा उपयोग जैसे कतिपय प्रयोजन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हाथ में लिए गये हैं और उस समुद्र-मन्थन के आधार पर विश्वमानव के हाथों पौराणिक गाथा के समतुल्य अनेक प्रकार के रत्न सौंपे जाने के अभिनव आधार बन रहे हैं। धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण की चेष्टा भी ऐसी है, जिसके सफल होने पर अफीम की गोली और कलह विलगाव का विष-वृक्ष कहा जाने वाला धर्म, फिर से मानवी चेतना की उत्कृष्टता एवं गरिमा बढ़ाने में राजतन्त्र के समतुल्य आधार सिद्ध हो सकता है।

उन्हीं अनुभव प्रयासों की श्रृंखला में दो और भी ऐसी ही कड़ियाँ जुड़ती हैं, जिनमें अध्यात्म दर्शन को व्यवहार में उतारने और उज्जवल परिणामों के प्रतिफल उपलब्ध होते देखे जा सकते हैं। इनमें एक है, इस आश्रम के कार्यकर्ताओं का जीवनचर्या सम्बन्धी दृष्टिकोण और क्रिया-कलाप। दूसरा है आगन्तुकों के अन्तराल में उदार श्रद्धा-संवेदना का उद्भव।

इस आश्रम में जितने भी कार्यकर्ता रहते हैं, उन्हें वेतन नाम की कोई वस्तु नहीं मिलती। आश्रम के भण्डार से वे पका हुआ भोजन अथवा अपने हाथ से पकाने के लिए कच्चा राशन प्राप्त करते हैं। निर्वाह व्यय की व्यवस्था उनकी अनिवार्यतः आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए देशवासियों के औसत स्तर के साथ तालमेल बिठाते हुए होती है। वस्त्र सभी आश्रम के भण्डार से लेते हैं। बच्चों की शिक्षा गुरुकुल स्तर का प्रबन्ध आश्रम में ही किया गया है। चिकित्सा आदि का प्रबन्ध भी उसी प्रकार होता है जैसा कि एक संयुक्त कुटुम्ब में होना चाहिए। किसी को व्यक्तिगत धन की न तो इच्छा होती है और न आवश्यकता पड़ती है। योग्यता के अनुरूप पारिश्रमिक मिलने जैसा सर्वत्र प्रचलित प्रचलन यहाँ तनिक भी नहीं है। अपनी पूर्व संचित निजी पूँजी से निर्वाह होने में जितनी कमी पड़ती है, उतने ही साधनों की व्यवस्था आश्रम की ओर से उपलब्ध करायी जाती है। 'लार्जर-फेमिली' स्तर की संयुक्त कुटुम्ब व्यवस्था किस प्रकार सुविधापूर्वक चलती और कितनी सफल होती है, इसका प्रयोग ब्रह्मवर्चस के कार्यकर्ता और कार्य-कर्त्रियाँ मिल जुलकर चला रहे हैं। छः दिन महिलाऐं पकाती हैं और एक दिन वह कार्य पूरी तरह पुरुषों को ही करना होता है। कपड़े धोने, बर्तन माँजने, सफाई करने आदि में नर और नारी का दर्जा एक समान रखा गया है। ऐसे-ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जिन्हें देखकर यह कहा जा सकता है कि जिस साम्यवाद का इन दिनों जोर-शोर है और जिस 'अध्यात्मवाद की पुरातन की धर्मचर्चा है, उसका दार्शनिक ही नहीं, प्रत्यक्ष प्रयोग हँसते-हँसते स्वेच्छापूर्वक भी हो सकता है। इसके अधिनायकवाद जैसे दबाबों के बिना भी सुखद और सरल प्रयोग भी हो सकता है।

दूसरा प्रयोग यह है कि वस्तुओं का मूल्य मनुष्य स्वेच्छापूर्वक चुकायें। इसके लिए न याचना की जाय, न दवाब डाला जाय, न मूल्य निर्धारित किया जाय। समाज में प्रचलन यह है कि निर्धारित मूल्य चुकाकर ही वस्तुयें उपलब्ध होती हैं। जिनके पास धन नहीं है अथवा कम है उन्हें अत्यन्त आवश्यक वस्तुओं से भी वंचित रहना पड़ता है। ऐसी दशा में आम अवस्था यही लोग अपनी स्थिति के अनुरूप लोकहित एवं व्यवस्था तन्त्र बनाये रहने के लिए मूल्य चुकायें। इस प्रकार निर्धनों द्वारा जो कम मूल्य प्राप्त हो उसकी पूर्ति साधन सम्पन्न अधिक उदारता अपनाकर करें। यह सब किसी प्रत्यक्ष या परोक्ष दबाव के आधार पर न हो वरन् व्यक्ति की विवेक बुद्धि, न्याय-निष्ठा, ईमानदारी लोकहित परमार्थ की श्रद्धा-संवेदना के आधार पर ही चलते रहे। इस निर्धारण में हर जरूरतमन्द को आवश्यक वस्तुएँ बिना कठिनाई के मिल जाती हैं, वहाँ जन-जन को ईमानदारी और उदार न्यायनिष्ठा अपनाने-बढ़ाने का भी अवसर मिलता है। कहते हैं कि सतयुग में राम-राज्य में ऐसी ही व्यवस्था थी और उन दिनों हर व्यक्ति भौतिक दृष्टि से समृद्ध और आध्यात्मिक दृष्टि से सुसंस्कृत स्तर का जीवन-यापन करते हुए देवोपम स्तर का व्यक्तित्व बनाता और इसी धरती पर स्वर्गीय सुख-शान्ति का आनन्द उल्लास का अनुभव करता था।

यह प्रयोग शान्तिकुंज में चलता है। यहाँ आने वालों को हर सुविधा मिलती है, पर उनमें से किसी का भी मूल्य निर्धारित नहीं होता। हर सुविधा मुफ्त में मिलती है, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि मुफ्तखोरी सिखाई जाती है। सर्वविदित है कि समर्थ होते हुए भी मुफ्त में खाना और खिलाना हर दृष्टि से अनुपयुक्त है। इसलिए पात्र-कुपात्र का विचार किए बिना धनी-निर्धन हर किसी पर उदारता बखेरने जैसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो कोई बात है नहीं। वह नीति यहाँ सर्वथा अवांछनीय समझी जाती है, जिसमें तथाकथित 'धनीमानी' सस्ती वाहवाही लूटने के लिए मुफ्त में हर किसी पर सुविधाएँ बखेरते हैं। इन दिनों धर्मशालाओं, दवाखानों में सदावर्त के नाम पर ऐसी ही अवांछनीयता पनप रही है, जिसमें समर्थ भी बिना लज्जा, शोक और ग्लानि के अनुभव किये उस माल को खसोटते और अपने सम्मान को कौड़ी मोल बेचते हैं। उन धनिकों को तो कहा ही जाय जिन्हें हर पात्र-कुपात्र के मुँह से अपनी प्रशंसा करानी है। शान्तिकुंज में उपर्युक्त दोनों दुष्प्रवृत्तियों के लिए कोई स्थान नहीं है। न तो किसी धनी से धन इसलिए लिया जाता है कि उसे हर असमर्थ-समर्थ के लिए मुफ्तखोरी के साधन बनाकर उनका जय-जयकार कराया जायेगा और न किसी के मन पर यह छाप पड़ने दी जाती है कि यहाँ तो "राम नाम की लूट है लूटी जाय तो लूट" की कहावत चरितार्थ करते हुए समर्थ होते हुए भी सब कुछ मुफ्त में झटक लेने की दुष्प्रवृत्ति को प्रश्रय दिया जाता है। हर सुविधा को मुफ्त का इनाम समझने वालों को यह अवश्य बता दिया जाता है कि समाज के अनेकानेक सदाशय व्यक्तियों ने जिनमें निम्न-मध्यमवर्ग की प्रधानता है, अपना अंशदान देकर स्वयं को धन्य बनाया है। इस पुण्य लाभ का उपभोग इस प्रकार करके वे आत्मिक प्रगति की दृष्टि से नीचे ही गिरेंगे-उठेंगे नहीं। हर समझदार इन बातों को समझता एवं बदले में कुछ अधिक ही करता है। मूढ़ों की तो बात ही क्या करना जो समझकर भी पाप भागी बनते व बोझ और बढ़ा लेते हैं।

शान्तिकुंज में प्रायः आत्मिक प्रगति का लक्ष्य लेकर ही आगन्तुक आते हैं। साधन, शिक्षार्थी, लोकसेवी, परिव्राजक एवं अतिथियों की भारी भीड़ रहती है। इनमें से अधिकांश अधिक समय ठहरते हैं। साधना एवं प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। साधना एवं प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए निर्धारित अवधि तक ठहरने का निर्धारण है। कुछ लोग विशेष प्रयोजन के लिए थोड़े समय आते और चले जाते हैं। इन सभी के लिए आश्रम में समान सुविधाएँ उपलब्ध हैं, बदले में कोई मूल्य चुकाने जैसी बात नहीं, यथा—भोजनालय में दोनों समय व्यक्ति विशेष की रुचि का भोजन होटल हलवाई जैसा नहीं, निर्धारित भोजन उपलब्ध रहता है। प्रातः और अपराह्न सभी के लिए प्रज्ञा पेय की चाय बनती है। निवास के लिए स्वच्छ कमरे बिजली, पानी, फर्नीचर एवं आवश्यक उपकरणों समेत उपलब्ध रहते हैं। पूजा उपचार में प्रयुक्त होने वाले सभी उपकरण उपलब्ध रहते हैं। जप अनुष्ठान की पूर्ति के लिए आवश्यक अग्निहोत्र की सभी सामग्री तैयार मिलती है। उपासना एवं दिनचर्या निर्धारित करने में हर साधक की शारीरिक-मानसिक स्थिति का पर्यवेक्षण निष्णात शरीरशास्त्रियों द्वारा बहुमूल्य उपकरणों के माध्यम से साँगोपाँग किया जाता है। साधना-काल में जड़ी-बूटी कल्प एवं जिन वन्य औषधियों की आवश्यकता पड़ती है, वे सभी प्रस्तुत रखी जाती हैं। जिनके सम्बन्ध में सूक्ष्म निरीक्षण आवश्यक होता है, उनके जन्मपात्र शुद्ध गणित के आधार पर बना दिये जाते हैं। जिन्हें अपने यहाँ औषधि उद्यान लगाने हैं, उनके लिए नर्सरी में जो पौध मौजूद है दे दिये जाते हैं।

इनमें से प्रत्येक पक्ष ऐसा है जिन पर खर्च आता है, फिर भी वे आगन्तुकों के लिए बिना निर्धारित मूल्य के उपलब्ध रहता है। इससे यह पता नहीं चलता कि कौन धनी, कौन निर्धन है, कौन कृपण और कौन उदार है सभी को समान सुविधा प्रदान करने में आश्रम का दृष्टिकोण भी स्पष्ट रहता है कि यहाँ पधारने वाले प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान होता है और समान महत्त्व मिलता है। धनी-निर्धन होने के कारण किसी को भी असमानताजन्य तिरस्कार या अहंकार अनुभव करने में विपन्नता नहीं मिलती। कई व्यक्ति बच्चों के संस्कार कराने आते हैं। नामकरण, अन्नप्राशन, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत आदि कृत्य आकर कराते हैं। कईयों को पितरों के लिए श्राद्ध-तर्पण कराने की अभिलाषा होती है। अनेक बिना दहेज विवाह इसी आश्रम में आकर कराते तथा प्रसन्न होते हैं। कई जन्मदिन विवाह दिन मनाने आते हैं। इन सभी के धर्म संस्कार शास्त्रोक्त विधि-विधान के साथ उसी प्रकार कराये जाते हैं जैसे विद्वान कर्मकाण्डी कहे जाने वाले पण्डित ढेरों खर्चीली सामग्री तथा जिस तिस बहाने विपुल दक्षिणा बटोरने में सफल रहते हैं। उपर्युक्त सभी कृत्यों को कराने की व्यवस्था

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शान्तिकुंज में है, पर इसके बदले किसी को सामग्री के नाम पर अथवा दक्षिणा देने के लिए कुछ भी माँगा नहीं जाता और न प्रत्यक्ष-परोक्ष संकेत दिया जाता है।

ऐसी अनेक सुविधायें शान्ति कुंज में आने वाले प्रत्येक साधक को बिना किसी भेद-भाव के समान रूप से उपलब्ध रहती हैं। भैंट—परामर्श के लिए आने वाले आगन्तुकों से भी, यदि चलते चौके में कुछ रहा होता है, तो भोजन करके जाने के लिए ही कहा जाता है। यह सभी मदें ...ऐसी हैं जिनकी पूर्ति में न केवल साधन खर्च होते हैं, वरन् उन्हें पूरा करने में कार्य कर्ताओं का बहुमूल्य श्रम भी लगता है। इतने पर भी यह सारी सुविधाएँ बिना मूल्य स्तर की प्राप्त होना, एक प्रकार का अद्वितीय प्रयोग-परीक्षण है। ऐसा संसार भर में कहीं कदाचित ही प्रयोग चलता हो। यहाँ यह बताना अप्रासांगिक नहीं होगा कि इस सारी व्यवस्था पर एक हजार रुपया नित्य से भी अधिक खर्च आता है।

सामान्यतया यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इन दिनों जबकि स्वेच्छापूर्वक अपनायी जाने वाली भलमनसाहत का युग समाप्त ही हुआ समझा जाता है, तब इतनी भारी व्यवस्था का अर्थ सन्तुलन कैसे बैठता होगा, जबकि हर जगह निर्धारण अथवा दवाब के आधार पर ही किसी से कुछ पाने की आशा की जा सकती है, तब विशुद्ध श्रद्धा संवेदना के आधार पर स्वेच्छापूर्वक इतने साधन जुटाते रहना एक प्रकार से असम्भव ही माना जा सकता है। इतने पर भी शान्तिकुंज में चल रहे इस दुस्साहस भरे प्रयोग परीक्षण को असफल हुआ नहीं कहा जा सकता। यद्यपि अश्रद्धा और स्वार्थान्धता के वर्तमान वातावरण में संतुलन बिठाने के लिए आये दिन सिर खपाना पड़ता है और जिस-तिस प्रकार परीक्षण के असफल न होने देने का प्रयत्न होता रहता है।

शान्तिकुंज की नीति यह है कि आश्रम की सुविधाएँ प्राप्त करने वाले हर व्यक्ति की अन्तरात्मा में न्याय और औचित्य की भाव-संवेदना को स्वेच्छापूर्वक सजग होने का अवसर देना चाहिए। यही सत्प्रवृत्ति अध्यात्म तत्वज्ञान की प्राणधारा है। वह अन्तः प्रेरणा के आधार पर स्वयं ही उमंगें तो समझना ही चाहिए कि आत्मिक प्रगति का आधार बना, न उमंगें तो समझना चाहिए कि स्वार्थान्धता और कृपणता के रहते यहाँ उस क्षेत्र की प्रगति होने जैसी आशा उग नहीं सकी। मात्र कर्मकाण्ड करते रहने से कहाँ किसी को आत्म लाभ मिला है। उस क्षेत्र की विभूतियाँ तो विशुद्ध रुप से मनुष्य के चिन्तन, चरित्र, दृष्टिकोण और व्यवहार पर निर्भर हैं।

शान्ति कुंज के वातावरण में निवास करने पर किसी न्याय-निष्ठा और परमार्थ-भावना जीवित रही और कौन मुफ्तखोरी का अवसर पाकर अपने ऊपर हुए खर्च से मुफ्त में उपलब्ध करके चला गया—इसका पता चलता रहता है। इस आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचने में सुविधा होती है कि आत्मिक प्रगति के सम्बन्ध में किसकी स्थिति उत्साहवर्द्धक और किसकी चिन्ताजनक है ?

उपर्युक्त दोनों ही ऐसे प्रयास हैं, जो देखने में साधारण होते हुए भी वर्तमान वातावरण में उनका निभना-चलना एक प्रकार से असम्भव जैसा लगता है। फिर भी शान्तिकुंज की प्रयोगशाला चल ही नहीं, पनप भी रही है। निवासी कार्यकर्ता अपने आपको अध्यात्मवादी समाजवाद के ढाँचे में ढालते जा रहे हैं और एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसके प्रचलित होने पर व्यक्ति और समाज का काया कल्प ही हो जायेगा। इस प्रकार समाज व्यवस्था का—सार्वजनिक सेवा क्षेत्र का—यह एक अनोखा प्रयोग है कि बिना मूल्य निर्धारित किए सुविधा साधन उपलब्ध हो, फिर वह व्यक्ति अपनी ईमानदारी और परमार्थ बुद्धि को अन्तःप्रेरणा से सजीव रखें और खाने की नहीं खिलाने की भावना रखें।

शान्तिकुंज में चल रहे उपर्युक्त दोनों प्रयोगों के वर्तमान स्वरूप और भावी प्रतिफल का अनुमान लगाने पर विज्ञजन अनुभव करेंगे कि लोक मानस के परिष्कार का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए इसी प्रयोगशाला में कितने महत्त्वपूर्ण अनुसन्धान किए जा रहे हैं और वे कितने उत्साहवर्द्धक रूप में सफल होते चले जा रहे हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मतन्त्र की गरिमा और क्षमता

युग शक्ति का उद्भव और युग-निर्माण

किसी कार्य को करने के लिए शक्ति एवं साधनों की आवश्यकता पड़ती है। युग-निर्माण के लिए जन-साधन जुटाने का कार्य ज्ञान-यज्ञ के माध्यम से चल रहा है। शक्ति का उत्पादन आत्म-साधना के सहारे किया जा रहा है। युग शक्ति का—युग चेतना का उद्भव इन्हीं दोनों शक्तियों द्वारा सम्भव हो सकेगा। इस सन्दर्भ में अधिक स्पष्ट और अधिक विस्तृत रूप से इस प्रकार समझा जा सकता है।

युग निर्माण अभियान का लक्ष्य है—मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। श्रेष्ठ व्यक्तित्त्व की ही देव संज्ञा है। देवता स्वर्ग में रहते हैं। स्वर्ग ऊपर है, ऊपर ऊँचाई की स्थिति ही स्वर्ग है। स्वर्ग से तात्पर्य है व्यक्तित्त्व। वह दृष्टिकोण—वह क्रिया-कलाप जो सर्वसाधारण की तुलना में ऊँचा—उच्चस्तरीय हो। ऐसा वातावरण जिसमें श्रेष्ठता—सज्जनता और शालीनता छाई रहती हो, स्वर्ग कहा जायेगा। जहाँ ऐसी मनःस्थिति होगी वहाँ सहज सुख-शान्ति की—समृद्धि और प्रगति की परिस्थितियाँ रहेंगी ही। मानवी कर्तृत्व का आधे से अधिक भाग आक्रमणों से रक्षा करने—आशंकाओं का समाधान ढूँढ़ने और आक्रोश आवेगों की प्रेरणा से ध्वंस करने वाले कृत्य करने में खर्च होता रहता है। यदि इसे बचाकर सृजन में लगाया जा सके तो निश्चित रूप से उनके द्वारा आन्तरिक प्रसन्नता और बाह्य सुविधा की अभिवृद्धि में भारी योगदान मिल सकता है। स्वर्ग के अवतरण का—धर्मराज्य के संस्थापन का स्वरूप यही है। यह सम्मिलित प्रक्रिया है। मनुष्यों का समूह ही समाज है। सामाजिक सत् प्रवृत्तियाँ ही स्वर्ग का निर्माण करती हैं। समाज निर्माण के लिए व्यक्ति का निर्माण करना होगा।

व्यक्ति के निर्माण का अर्थ उसकी काया संरचना—भोजन शयन की पद्धति या प्रकृति, आवश्यकतायें बदल देना नहीं है, वरन् मात्र दृष्टिकोण में उत्कृष्टता की मात्रा का अभिवर्धन करना है। इसी को जन-मानस का परिष्कार कहा जाता है। युग निर्माण योजना का उद्देश्य और कार्यक्रम यदि एक शब्द में समझाना हो तो उसे "जन-मानस का परिष्कार" कह सकते हैं। इसे उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व में समाविष्ट देखा समझा जा सकता है।

यह जन-मानस का परिष्कार ही दूसरे शब्दों में व्यक्ति का निर्माण है—सज्जनता को और शालीनता को सभ्यता कहा गया है। व्यक्तित्त्व की आधारशिला संस्कृति है। मनुष्य के सद्व्यवहार में सभ्यता का परिचय मिलता है। दोनों का समन्वित रूप ही देवत्व है। व्यक्तित्त्व की गरिमा और व्यवहार की शालीनता का सम्मिलन जहाँ भी हो रहा है वहाँ देवत्व का अवतरण या प्रकटीकरण माना जायेगा।

यह स्थिति उत्पन्न करने के लिए जिस शक्ति की आवश्यकता है, उसे 'आत्म-शक्ति' कहा जा सकता है। हर काम के लिए—हर यन्त्र संचालन के लिए शक्ति जुटानी पड़ती है। मशीनों को चलाने में कोयला, तेल, भाप, जैव शक्ति, अग्नि आदि के रूप में ऊर्जा अपेक्षित होती है। इसके बिना उनमें गतिशीलता उत्पन्न ही नहीं हो सकती। पृथ्वी पर चल रही पदार्थों की हलचलें सूर्य की गर्मी पर अवलम्बित हैं। प्राणियों को सक्रिय रखने में जठराग्नि और कामाग्नि ही धक्का मारती हैं। नहीं तो कोई जीवधारी सक्रियता अपनाने को तैयार ही नहीं हो सकेगा। जठराग्नि का अर्थ है शरीर की आवश्यकतायें जुटाने से और कामाग्नि का तात्पर्य है विनोद के साधन ढूँढ़ने की प्रबल प्रेरणा से। पैण्डुलम की खट-खट की तरह यह दो जैव प्रेरणायें जीवधारियों में दो विभिन्न प्रकार की विधेयात्मक ओर निषेधात्मक हलचलें सम्पन्न करती हैं। यह तो हुआ दैनिक जीवन का सामान्यक्रम साधन, जिसके आधार पर प्राणीमात्र के लिए सक्रियता अपनाने की इच्छा उत्पन्न होती है। उसकी पूर्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिए वह तरह-तरह से सोचता और तरह-तरह से करता है। अब इसमें आगे की बात उत्कृष्टता की दिशा में जन-मानस को उछाल देने की आती है। यह विशिष्टक्रम है, इसके लिए विशेष सामर्थ्य चाहिए। ऊपर उठाने के लिए शक्ति की आवश्यकता रोज ही पड़ती है। चाहे "भुज-बल" हो या "क्रेन-बल" हर हालत में ऊँचा उठाना विशेष सामर्थ्य के सहारे ही सम्भव होता है। गुब्बारा उड़ाने से लेकर ऊँची छलाँग लगाने जैसे हर काम में अतिरिक्त बल चाहिए। हवाई जहाजों से लेकर अन्तरिक्ष में उड़ने वाले राकेटों तक को अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। राकेटों में बहुमूल्य यन्त्र लगे रहते हैं। उन सबका जितना मूल्य होता है लगभग उतना ही धन और कौशल उसे ऊपर आकाश में फेंकने के लिए शक्ति जुटाने में आवश्यक होता है। व्यक्ति एवं समाज को उत्कृष्टता की दिशा में उछालने से ही उज्ज्वल भविष्य का निर्माण होगा और उसके लिए निश्चित रूप से शक्ति चाहिए। यह सामर्थ्य भौतिक ही नहीं वरन् आत्मिक ही होगी। भौतिक ऊर्जा से पदार्थों में हलचल पैदा की जा सकती है। आत्मिक प्रगति के लिए-अन्तःचेतना में उत्कृष्टता भर देने के लिये चेतना शक्ति की आवश्यकता है। चेतना को अन्तःकरण की चेतना-ऊर्जा ही प्रभावित कर सकती है। व्यक्तित्त्व साधनों के सहारे नहीं सद्ज्ञान के सहारे उभरते और निखरते हैं। अस्तु, नव निर्माण का अभीष्ट प्रयोजन पूरा करने के लिए अतिरिक्त आत्म-शक्ति की ही आवश्यकता होगी। इसी को जुटाने में लगे हुए प्रयत्नों को नव-निर्माण का आधार कहा जा सकता है।

चेतना दो भागों में विभक्त है—एक विचारणा दूसरा संवेदना। एक को मस्तिष्क और दूसरे को अन्तःकरण कहा गया है। शरीर जड़ है और वह चेतना का आज्ञानुवर्ती औजार—स्वामिभक्त सेवक भर है। लकड़ी की कठपुतली की तरह नाचता-कूदता तो वही दिखाई देता है, पर वस्तुतः उसकी सारी हलचलें, पतले धागे और बाजीगर की कलाकारिता पर निर्भर रहती हैं। मनुष्य की परख तो उसके सत्कर्मों से होती है, पर सूक्ष्मदर्शी जानते हैं कि कर्मों के लिए भला-बुरा श्रेय चेतना को ही दिया जा सकता है। मस्तिष्क की प्रेरणा से शरीर काम करते हैं और मस्तिष्क अपने विषय में सक्षम तो बहुत है, पर उसे अनुकरण अन्तःकरण की आकांक्षा का ही करना होता है। असल में यह अन्तःकरण ही व्यक्तित्त्व का मूलभूत स्वरूप है। अन्तःकरण में मान्यतायें और आस्थायें जमी होती हैं। इन्हें विश्वास कहा जाता है। विश्वासों के सहारे रुचियाँ उत्पन्न होती हैं। सामान्य जीवन क्रम में यह विश्वास परम्पराओं के रूप में अथवा वातावरण के प्रभाव से उत्पन्न होते हैं। इन्हें परिष्कृत करने के लिए स्वाध्याय, सत्संग, मनन और चिन्तन का सहारा लेना पड़ता है। विश्वास बदलने पर मस्तिष्क की विचारधारा अभीष्ट दिशा में सहज ही मोड़ी-मरोड़ी जा सकती है। मन की कल्पना और बुद्धि के निर्णय चित्त की धारा से प्रभावित होते हैं। विश्वास ही चित्त है। चित्त के सेवकों की तरह ही मन और बुद्धि को काम करना पड़ता है। इन बातों पर विचार करने से स्पष्ट है कि विचार शक्ति की उत्कृष्टता आदर्शवादी विचारों के पक्ष में तर्क और तथ्य प्रस्तुत करने से ही विनिर्मित होती है। ब्रह्मविद्या का, अध्यात्म का—सारा तत्त्वदर्शन उसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए संलग्न है। धर्म और अध्यात्म का विशालकाय ढाँचा खड़ा ही इसीलिए किया गया है।

युग निर्माण योजना का ज्ञान-यज्ञ अन्तःकरण के इस विश्वास पक्ष को प्रभावित परिष्कृत करने वाले आधार खड़े करने में संलग्न है। विचार क्रान्ति के अनेक क्रिया-कलाप मानवी विश्वासों में उच्चस्तरीय आस्थाओं की प्रतिष्ठापना करने के लिए चल रहे हैं। प्रचारात्मक, रचनात्मक एवं सुधारात्मक क्रिया-कलापों के लिए युग-निर्माण अभियान की शतसूत्री योजना चल रही है। इनमें अनैतिकताओं, अवांछनीयताओं और अन्ध परम्पराओं को निरस्त करने वाले तत्त्व हैं। नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति में मनुष्य की वर्तमान मान्यताओं का ही परिशोधन किया जाना है। मनुष्य के विश्वासों में घुसी हुई कुसंस्कारिता को निरस्त करना और उसके स्थान पर देव संस्कृति को प्रतिष्ठापित करना प्रस्तुत योजना का लक्ष्य है। ज्ञान-यज्ञ द्वारा इतना ही किया जा सकता है। उतनी ही उसकी सामर्थ्य है कि विश्वास का स्तर सुधरे, चिन्तन में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निष्क्रियता का परिशोधन करे और उन मान्यताओं को अपनाये जो मानवी गरिमा के अनुरूप हैं, तथा जिनके सहारे उज्ज्वल भविष्य की आशा की जा सकती है। यह ज्ञानपक्ष हुआ। ज्ञान-पक्ष की यही सीमा है। इससे अन्तःकरण के विश्वास पक्ष को परिष्कृत करके मस्तिष्क को सही चिन्तन का अभ्यास कराया जा सकता है। सही चिन्तन से सही कर्म—सही कर्म से सुखद परिस्थितियों का निर्माण-उज्ज्वल भविष्य का निर्माण। यह जन-मानस के परिष्कार की प्रत्यक्ष प्रक्रिया और सरल धारा है। इसके लिए चल रहे विचारक्रान्ति अभियान की—ज्ञान-यज्ञ की उपयोगिता सहज ही समझी जा सकती है।

यह अन्तःकरण के विचारणा पक्ष को सुनियोजित करने का क्रम हुआ। किन्तु आत्म-शक्ति के उद्भव के लिए उसके संवेदना पक्ष को भी छूना होगा। यह कार्य शुष्क ज्ञान से सम्भव नहीं। उसके लिए श्रद्धान्वित गतिविधियों की भी आवश्यकता होती है। लौकिक जीवन में स्नेह, सहानुभूति, सेवा सहयोग जैसे गुणों की साधना से इसका विकास होता है। इसी के विकास के लिए उपासना, भक्ति भावना आदि का भी विधान है। इनमें से किसी एक पक्ष की उपेक्षा करके अपेक्षित उपलब्धियाँ नहीं भी पायी जा सकतीं।

युग-निर्माण योजना ने इस उक्त तथ्य को गम्भीरता से अनुभव किया है, तदनुरूप अपनी कार्य-प्रणाली भी निर्धारित की है। जन स्तर पर विचारणाओं एवं संवेदनाओं के परिष्कार के लिए धर्म तन्त्र से लोक शिक्षण की प्रक्रिया अपनायी गई है। विचारणाओं के शोधन एवं निर्माण का सीधा सम्बन्ध शिक्षण से है तो आस्थाओं तक प्रभाव पहुँचाना धर्म चेतना के लिए ही सम्भव रहा है। इसीलिए भारतीय तत्त्ववेत्ताओं ने धर्मचिन्तन का, धार्मिक कर्मकाण्डों का कलेवर इन दोनों ही तत्त्वों के सामंजस्य से तैयार किया था। कालान्तर में उनका स्वरूप बिगड़ जाने से मानवीय अन्तःकरणों को समुचित संस्कार देने का तन्त्र ही त्रुटिपूर्ण हो गया है। उस तन्त्र को पुनः सजीव करने के लिए युग-निर्माण योजना अपने सीमित साधनों के साथ भी पूरी तत्परता से संलग्न है। जैसे-जैसे प्रबुद्ध वर्ग तक उसकी सही रूपरेखा पहुँच रही है वैसे-वैसे उसकी गति बढ़ती जा रही है।

धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण की प्रक्रिया की अनेक धारायें है जिन्हें स्थान, समय एवं व्यक्तियों की स्थिति के अनुरूप प्रयुक्त किया जाता है। सामूहिक साधना उपासना, चिन्तन स्वाध्याय, पारिवारिक संस्कार, सामूहिक पर्वायोजन, सम्मेलन, यज्ञ, मेले, वार्षिकोत्सव आदि कार्यक्रमों के माध्यमों से जन-मानस के परिष्कार का सफल उत्साहवर्धक क्रम चल रहा है। उसका सर्व-सुलभ स्वरूप अगले पृष्ठों पर समझाने का प्रयास किया गया है।

परिवार की पाठशाला में सुसंस्कारी प्रशिक्षण

मिल-जुलकर बैठने—परस्पर विचार विनिमय करने और सहयोग का वातावरण उत्पन्न करने की प्रवृत्ति ऐसी है, जिसके ऊपर विविध प्रकार की सफलताओं का आधार खड़ा होता है। इस प्रवृत्ति को मिलनसारी—सामाजिकता कहते हैं। यह बीजांकुर जहाँ भी होगा वहाँ प्रसन्नता विकसित होगी और सम्मिलित शक्ति के उदय होने से उसका उपयोग चमत्कारी परिणाम उत्पन्न करेगा। अस्तु, अपने और दूसरो के उज्ज्वल भविष्य की यदि वस्तुतः कामना हो तो मिलनसारी प्रवृत्ति का विकास करना ही चाहिए। वह ईमानदारी और धार्मिकता के ही समकक्ष है। ईमानदारी और धार्मिकता न होने पर उसके भी दुष्परिणाम भुगतने पड़ते हैं, पर वे देर में सामने आते हैं। मिलनसारी की कमी तो ऐसा दोष है जिसका दुष्परिणाम पग-पग पर भुगतना पड़ता है। संकोच छाया रहता है, डर लगता है, मुँह खोलकर किसी से अपनी बात कहते भी नहीं बन पड़ती। फलतः जी घुटता रहता और गलतफहमी पैदा होती रहती है। भीरुताजन्य संकोच को मनोवैज्ञानिक की भाषा में "आत्महीनता" कहते हैं। इसके कारण जीवन विकास में कितनी बाधायें पड़ती हैं और मानसिक विकृतियों की कितनी ही ग्रन्थियाँ बँधती हैं, इसका विस्तृत वर्णन विवेचन मनःशास्त्र में मिलता है। विज्ञानियों द्वारा उस कमी को शारीरिक बीमारियों से भी अधिक हानिकारक बताया गया है। जिस प्रकार हम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने तथा परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं, ठीक उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए आत्महीनता की ग्रन्थि से छुटकारा दिलाने का प्रयत्न भी करना चाहिए। प्रगति के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य को इस संकोच भीरुता से—मानसिक दुर्बलता से छुटकारा मिले।

सम्मेलन-योजना के अन्तर्गत हमारा प्रारम्भिक चरण गृह गोष्ठियों से आरम्भ होना चाहिए। भोजन से निवृत्त होकर रात्रि को पुरुषों तथा तीसरे पहर स्त्रियों को न्यूनतम कुछ फुरसत रहती है। इस समय में जहाँ जिस तरह सुविधा पड़े वहाँ एक-एक घण्टे की गृह गोष्ठी का प्रबन्ध करना चाहिए। दैनिक न बन पड़े तो साप्ताहिक अवकाश के दिन ऐसा समय ढूँढ़ा जा सकता है जिसमें घर के अधिकांश लोगों को फुरसत रहती हो। इस समय सब लोग मिलजुल कर एक साथ बैठें और परिवार में सम्मिलित सब सदस्यों की व्यक्तिगत समस्याओं तथा आवश्यकताओं के सम्बन्ध में विचार करें और उनके समाधान निकालें। अन्तरंग और बहिरंग सभी प्रश्नों पर खुले मन से विचार किया जा सकता है। जब एक-दूसरे के आमने-सामने बैठते हैं, खुले जी से विचार विनिमय करते हैं, तो उन गलतफहमियों का निराकरण हो जाता है जो अकारण मनोमालिन्य एवं विद्वेष उत्पन्न होने का प्रधान कारण होती हैं। मनःशास्त्री और समाजशास्त्री मानते हैं कि विद्वेष और कलह के मूल में प्रायः ८० प्रतिशत गलतफहमी होती है और २० प्रतिशत कोई ठोस कारण अथवा स्वार्थ संघर्ष होते हैं कि एक-दूसरे पर काल्पनिक दुर्भावनाओं का आरोप करते हैं और अपनी ही आशंकाओं एवं कल्पनाओं को एक सच्चाई मानकर विद्वेष की जड़ें गहरी कर लेते हैं। यदि मतभेदों, अवज्ञाओं अनियमितताओं, आवश्यकताओं एवं कठिनाइयों के सम्बन्ध में एक-दूसरे से परिचित रहें तो सहानुभूति पूर्ण वातावरण बना रहेगा। जो और जैसी भी स्थिति है उसमें तालमेल बिठाने का रास्ता निकालकर स्नेह सामंजस्य बना रह सकता है। इसमें पूरे परिवार का लाभ है। विशेषतया जो खिन्न असंतुष्ट रहते हैं, जिनसे दूसरों को या जिनको दूसरों से शिकायतें रहती हैं, वे इन गृह गोष्ठियों द्वारा अपना भार सहज ही हल्का कर सकते हैं। कई बार आवश्यकता से अधिक आशा-अपेक्षा करने पर जब उसकी पूर्ति नहीं हो पाती तो भी असन्तोष उत्पन्न होता है। गलतफहमी का निवारण ही नहीं, एक-दूसरे की स्थिति को समझते हुए तालमेल बिठाने का माध्यम मार्ग तलाश किया जा सकता है। संसार इस समझौते, समन्वय और तालमेल बिठाकर चलने की नीति के सहारे ही जीवित है। अपनी मर्जी पर ही दूसरों को चलाने की इच्छा जीवित प्राणियों में नहीं रखी जानी चाहिए। जड़ पदार्थों का इच्छित उपयोग हो सकता है। साथी या कुटुम्बी, पड़ौसी, नौकर हमारी मर्जी के अनुरूप ही चलें, उनके निजी व्यक्तित्व एवं स्वभाव संस्कार का अन्त हो जाय, ऐसा कठिन है। जो इस असम्भव को सम्भव करना चाहते हैं उनकी इच्छा तो पूरी नहीं होती, हाँ, असन्तोष, विद्वेष अवश्य बढ़ता है।

गृह गोष्ठियाँ तो नित्य लगें, पर पारिवारिक समस्याओं पर विचार विनिमय—निराकरण—समाधान का प्रयास सप्ताह में एक बार ही किया जाय। कोई आकस्मिक समस्या पैदा हो जाय तो बात दूसरी है। शेष छः दिन वाचन क्रम चले। रामायण कथा द्वारा परिवार निर्माण की असंख्य छोटी बड़ी समस्याओं पर प्रकाश डाला और समाधान सुझाया जा सकता है। महामानवों के जीवन-चरित्र को सुनना भी विशुद्ध रूप से कथा प्रसंग है। देवी-देवताओं की काल्पनिक कथा-गाथा कहते रहने की अपेक्षा यह कहीं अच्छा है कि संसार के महामानवों के जीवन वृत्तांत संस्मरण सुने और सुनाये जायें। जीवन को ऊँचा उठाने और उलझन को सुलझाने वाले विचारों से परिवार को अवगत कराया जाय। इसके लिए उपयोगी पुस्तिकाओं के अंश पत्र-पत्रिकाओं से और अन्य प्रेरणाप्रद उद्धरण सुनाये जा सकते हैं।

आरम्भ में भले ही इस प्रयत्न का मजाक बने, कोई उसमें आये, कोई न आये, पर यदि उसमें आकर्षण उत्पन्न करने की दूरदर्शिता अपनाई गई तो एक-एक करके सभी उसमें रस लेने लगेंगे। यह परिवार-गोष्ठी यदि ठीक तरह से चलती रहे तो घर के छोटे-बड़े हर सदस्य को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपयोगी प्रेरणा मिलती रहेगी। घर को नररत्नों का खदान बनाया जा सकता है, हमारे परिवार संस्कारों की पाठशाला बन सकते हैं। शर्त यही है कि वे धर्मशाला या भेड़ों के बाड़े की तरह मात्र निवास और भोजन-विश्राम के केन्द्र न रहें। उनमें प्रेरणाप्रद वातावरण बना रहे। यह कार्य इस प्रकार के शिक्षण से एवं सज्जनोचित रीति-नीति को व्यवहार में सम्मिलित रखने से ही सम्भव हो सकता है। परिवार-गोष्ठियाँ तुच्छ दीखने पर भी नव निर्माण की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका बना सकती हैं। "नानी की कहानी" कभी छोटे बालकों के लिए मनोरंजन का विषय रहती थी, अब परिवार-गोष्ठियों का यह सुधरा हुआ रूप छोटे-बड़े सभी के लिए प्रेरणा भरे आकर्षण का विषय होना चाहिए।

युग-निर्माण शाखाएँ तो अपने सक्रिय सदस्यों के ही जन्मदिन समारोह मनाती हैं, पर परिवार की निजी व्यवस्था में घर के सभी छोटे बड़ों के जन्मदिन मनाये जा सकते हैं। विवाहितों के विवाह-दिन भी मना सकते हैं। इससे घर के हर सदस्य को अपने जन्म की तथा विवाह की गरिमा का बोध होगा। अपना कर्त्तव्य और उत्तरदायित्त्व समझेंगे। लम्बे भाषण न सही, सामान्य वार्तालाप से भी इन अवसरों पर घर के बड़े लोग उपयोगी मार्गदर्शन कर सकते हैं। दीपदान, धूपबत्ती, सामूहिक भजन प्रार्थना, स्वस्तिवाचन; तिलक, कलावा, आरती, आशीर्वाद जैसे छोटे कर्मकाण्ड ऐसे अवसर पर घर के लोग ही मिल-जुलकर पूरा कर सकते हैं। इन छोटे आयोजनों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव ऐसा पड़ता है जिससे घर में शालीनता का वातावरण बनाने में उत्साहवर्धक योगदान मिलता है।

भारतीय संस्कृति में षोडश संस्कारों का प्रचलन परिवार प्रशिक्षण का उद्देश्य लेकर ही आरम्भ हुआ है। खर्चीले कर्मकाण्ड एवं आगन्तुकों के स्वागत-सत्कार का भार बढ़ जाने के कारण ही उनकी उपेक्षा होती चली आ रही है। यदि उनमें से समय और पैसे की बर्बादी को हटा दिया जाय और उनके विधि-विधान से घर के लोग परिचित हो सकें तो परिवार में जल्दी-जल्दी हर्षोत्सवों का उपयोगी वातावरण बना रह सकता है। ऐसे आयोजन द्वारा जो उत्साहवर्धक वातावरण बनता है उससे प्रेरणा, प्रशिक्षण के अधिक गहराई तक हृदयंगम करने की बात बनती है। जहाँ ऐसा वातावरण रहेगा वहाँ निराशा, मनोमालिन्य, खिन्नता, अव्यवस्था जैसी अनेक बुराईयाँ स्वयमेव घटती कटती चली जायेंगी। उत्साह भरे अवसरों पर मिले सृजनात्मक निर्देशों का सत्परिणाम निश्चित रूप से उत्पन्न होता है।

बड़े-बूढ़े प्राचीन रीतिरिवाजों के विधि-विधानों से भली प्रकार परिचित होते हैं। उन्हें पूरा करने में उनकी प्रवीणता देखते ही बनती है। संस्कारों के सम्बन्ध में यदि ध्यान दिया जाय तो उन सरल से कर्मकाण्डों को घर के लोग ही मिल-जुलकर सम्पन्न करते रह सकते हैं। इसमें पंडित को बुलाने या खर्चीला धूमधाम करने जैसी कोई बात नहीं है। घर पर पर्व-त्यौहार के अवसर पर कुछ न कुछ पूजा-पत्री होती रहती है। इसी परम्परा प्रचलन में संस्कारों और पर्वों को थोड़े सुधारे हुए और थोड़े सुव्यवस्थित रूप में मनाने की परिपाटी सहज ही प्रचलित की जा सकती है, उन अवसरों पर निर्माण के उपयुक्त सहज, स्वाभाविक किन्तु अति महत्त्वपूर्ण प्रवचन परामर्श की प्रक्रिया भली-भाँति बन सकती है।

षोडश संस्कार या उनमें से जितने मनाये जाते हों उतने परिवार के लोग मिल-जुलकर मना सकते हैं। सामान्य से इन घरेलू विधि-विधानों को भी लोग भूल गये। इस सांस्कृतिक विस्मरण के कारण ही पण्डित पुरोहितों को बुलाने की आवश्यकता पड़ने लगी। अन्यथा उनमें से प्रारम्भिक पाँच तो सर्वथा पारिवारिक हैं। उनको मनाने की सारी विधि व्यवस्था अपने परिवार के लोग ही भली प्रकार पूरी कर सकते हैं। पड़ोसियों और घनिष्ठों से बात-बात में पूछताछ, बातचीत, आवभगत, अभिवादन, नमस्कार, कुशलक्षेम का क्रम चलता रहता है। इसी को थोड़ा और व्यवस्थित कर संस्कारों के घरेलू आयोजन सम्पन्न होते रह सकते हैं।

गर्भवती के तीसरे महीने पुंसवन संस्कार का घरेलू उत्सव करके गर्भवती को स्वयं किस प्रकार रहना चाहिए और घर के लोगों को उसके लिए किस प्रकार क्या व्यवहार करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की आवश्यकता है, यह भली प्रकार समझाया जा सकता है। शिशु-जन्म हो जाने के प्रायः दसवें दिन नामकरण संस्कार की प्रथा है। उस दिन हवन आदि कर्मकाण्ड करके नवजात शिशु के सुनियोजित विकास के लिए क्या किया जाना चाहिए इस पर विस्तृत विचार विनिमय हो सकता है। छः महीने का बालक होने पर अन्नप्राशन कराया जाता है। उस घरेलू उत्सव में बालकों के, बड़ों के आहार-विहार सम्बन्धी अनेक समस्याओं के स्वरूप और समाधान से पूरे परिवार को परिचित कराया जा सकता है। मुण्डन संस्कार में मस्तिष्क परिष्कार का प्रसंग है। क्षुधा निवृत्ति की तरह ज्ञान-पिपासा भी जीवन की महती आवश्यकता है। बच्चों का मानसिक विकास करने में बड़ों की भूमिका क्या होनी चाहिए ? छोटे बालकों का शिक्षण अनुकरण के आधार पर ही होता है। घर के लोग अपने आचरण का उदाहरण प्रस्तुत करके ही बालकों के गुण-कर्म-स्वभाव एवं व्यक्तित्व में सुसंस्कारों का समावेश कर सकते हैं। जिस प्रकार आहार-विहार की गलत परिपाटी अपने अभ्यास में सम्मिलित होकर स्वास्थ्य रक्षा के लिए संकट उत्पन्न करती है, उसी प्रकार मानसिक विकास की विद्या से अपरिचित होने अथवा अनगढ़ तरीके अपनाने से केवल बालकों का स्वभाव ही नहीं बिगड़ता है, वरन् पूरे परिवार में विश्रृंखलता छाई रहती है। इसका निराकरण कैसे किया जाना चाहिए इस विषय पर मुण्डन संस्कार के कर्मकाण्ड के साथ अति उपयोगी विचार-विमर्श—प्रशिक्षण— परामर्श हो सकता है।

विद्यारम्भ संस्कार कहीं घर पर ही होता है। पट्टी-पूजन की विधि घर पर ही सम्पन्न करा दी जाती है। स्कूली शिक्षा के सम्बन्ध में मात्र अध्यापकों का ही नहीं परिवार वालों का भी कर्त्तव्य है। वह क्या है और कैसे निभ सकता है इसे जानने-जनाने के लिए मुण्डन संस्कार का अवसर बहुत ही उपयुक्त सिद्ध होता है। भावनात्मक वातावरण में गम्भीरतापूर्वक दी गई शिक्षा सम्बद्ध एवं उपस्थित लोगों पर अच्छा असर डालती है।

उसके बाद यज्ञोपवीत, विवाह, वानप्रस्थ आदि संस्कार होते हैं, जिनका स्वरूप बड़ा होता है। उनके लिए अधिक कर्मकाण्ड और प्रशिक्षित पुरोहित की जरूरत पड़ती है। स्वजन, सम्बन्धी, मित्र, पड़ौसी की जरूरत पड़ती है। किन्तु छोटे बालकों के पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन और विद्यारम्भ—पाँच संस्कार घरों में ही मनाये जा सकते हैं। बच्चों के जन्मदिन और बड़ों के विवाह-दिन भी घर के लोग ही मिल-जुलकर सम्पन्न कर सकते हैं। इन्हें मनाने की छोटी-सी क्रिया-प्रक्रिया की शिक्षण पद्धति की जानकारी थोड़े से प्रयत्न से प्राप्त की जा सकती है। युग निर्माण शाखाओं के कार्यकर्त्ता इसे भली प्रकार जानते हैं। इस क्रिया-कृत्य के लिए छोटी-छोटी पुस्तकें भी छपी हुई हैं।

संस्कार यों हैं तो पारिवारिक स्तर के आयोजन ही, किन्तु इसे विशाल पैमाने पर सामूहिक रूप भी दिया जा सकता है। ऐसा करने से उनसे सम्बन्धित प्रेरणा एवं प्रकाश अधिक व्यापक क्षेत्र में फैलाना सम्भव हो जाता है। सामूहिक संस्कारों में सम्मिलित होने वालों को नहीं के बराबर खर्च में भी बड़े पैमाने पर हर्षोल्लास के वातावरण का लाभ मिल जाता है। इसलिए यह पद्धति भी काफी लोकप्रिय होती जाती है।

सामूहिक रूप से संस्कारों का आयोजन करने की परिपाटी सबसे अधिक उपयुक्त है। यज्ञोपवीत एवं विवाह संस्कार तो मानव-जीवन की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। किन्तु मूढ़ मान्यताओं में फँसकर दोनों ही अपना स्वरूप तथा प्रभाव गँवा बैठे हैं। यज्ञोपवीत संस्कार तो अधिकांश लोगों ने कराना ही बन्द कर दिया है। विवाह संस्कार कराते तो हैं, पर एक ओर तो अत्यधिक खर्चीला होने के कारण उससे लोगों की कमर टूट जाती है, दूसरे उसमें संस्कार जैसी प्रक्रिया कहीं भी देखने को नहीं मिलती। सामूहिक रूप से यह संस्कार कराने की व्यवस्था में उक्त दोनों ही समस्याओं के समाधान निकल आते हैं। खर्च नहीं के बराबर और उत्साह भरा वातावरण तथा संस्कारों की प्रखर प्रेरणा का संचार उनकी ऐसी विशेषताएँ हैं, जिनकी हर व्यक्ति सराहना करता है और अपनाना चाहता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संस्कारों के माध्यम से लोक-शिक्षण बड़ी खूबी से किया जा सकता है। सीधा शिक्षण करने में व्यक्ति के दोष बताने पड़ते हैं और सुधार के लिए यह बताना पड़ता है कि वर्तमान रीति-नीति में क्या परिवर्तन करना चाहिए किन्तु कठिनाई यह है कि जिस किसी को भी ऐसे सुझाव दिये जायें वह बुरा मानता है, अपना अपमान समझता है और सुझाव को अमान्य करने पर उतारू होता है। इससे लाभ कम और हानि अधिक होती है। न कहने में कर्त्तव्य की उपेक्षा होती है और बुरा ढर्रा चलते रहने से भी भविष्य बिगड़ता है। कहने में बुरा मानने की कठिनाई है। इस धर्म-संकट का समाधान यह है कि उपर्युक्त घरेलू आयोजनों के अवसर पर कोई उपयुक्त संस्मरण सुनाते हुए घर के कुप्रचलनों के विरोध में तथा आवश्यक सुधारों के पक्ष में बहुत कुछ कहा जा सकता है। इससे किसी का सीधा नाम न लेने से बुरा मानने के झंझट से बचा जा सकता है और जो कहना है वह विस्तारपूर्वक धर्म-शिक्षा के रूप में कहा जा सकता है। यह परोक्ष शिक्षण अधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है। इस प्रयोजन की पूर्ति संस्कारों, पर्व, त्यौहारों, जयन्तियों, जन्मदिनों के अवसरों पर इस शिक्षण से बहुत ही अच्छी तरह तर्क, प्रमाण, उदाहरण प्रस्तुत करते हुए की जा सकती है। व्यक्तिगत परामर्श को लम्बा करने से तो लोग ऊबते हैं।

परिवार के पूर्वजों की जयन्तियाँ या श्राद्ध होते हैं। उस अवसर पर उनके सद्गुणों का स्मरण करने- कृतज्ञता व्यक्त करने- श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने की प्रथा है। यह उत्तम है, इसका निर्वाह होना चाहिए। आश्विन के पितृपक्ष में भी श्राद्ध-तर्पण करने की प्रथा है। उस समय या वर्ष के अन्य समय पर ऐसे आयोजन कब और कैसे किये जायें, यह अपनी सुविधा और कार्य पर निर्भर है। ऐसे अवसरों पर स्वर्गीय आत्माओं की शान्ति और सद्गति के लिए कुछ दान-पुण्य करने की बात भी अच्छी है। इससे श्रद्धा में सक्रियता और सार्थकता का तत्त्व जुड़ जाने से वह करने वाले के लिए भी श्रेयष्कर होता है। आत्माएँ भी शान्ति पाती हैं और उस अनुदान से लाभान्वित होने वाले भी कठिनाइयों में राहत प्राप्त करते हैं।

प्रातः-सायं को पूजा आरती सामूहिक प्रार्थना जप, संध्या आदि का प्रचलन चलने से वह भी प्रकारान्तर से एक विचार-गोष्ठी ही हो जाती है। प्रवचन तो प्रायः वही होता है, पर अन्तःस्फुरण के उच्चस्तरीय ऐसे आधार बनते हैं जो विचार-गोष्ठी एवं प्रवचन प्रक्रिया से किसी भी प्रकार कम उपयोगी सिद्ध नहीं होते। रामायण कथा आदि की दैनिक धर्म चर्चा से भी घर के वातावरण में सात्विकता एवं शालीनता की वृद्धि होती है। घर में आदर्श वाक्य एवं महामानवों के चित्र टाँगने से भी परिवार में अप्रत्यक्ष रूप से पुण्य-प्रेरणाओं का अभिवर्धन होता है। कथा-वार्ता की पुस्तकें सुनाने की ड्यूटी यदि बदलते रहा जाय तो घर के कई लोगों को भाषण कला का अभ्यास हो सकता है और उनको बोलते समय जो संकोच होता है उससे छुटकारा मिल सकता है।

पर्व त्योहारों द्वारा लोकशिक्षण

लोक शिक्षण के लिए जन-समूह को एकत्रित करके ही कम समय में अधिक लोगों में सुव्यवस्थित चेतना उत्पन्न की जा सकती है। पाठशालाओं में, व्यायामशालाओं में यही एकत्रीकरण की प्रक्रिया काम में लाई जाती है। धर्म-मंच से भी कथा-प्रवचनों द्वारा सर्वत्र सत्संगों के विविध-विधि आयोजन होते रहते हैं। लोक-चेतना को शालीनता की दिशा में अग्रसर रखने के लिए यह प्रशिक्षण सदैव जारी रखना होता है। सामयिक आन्दोलनों का उद्देश्य तो थोड़े समय तक सभा सम्मेलन करने से पूरा हो जाता है, किन्तु गन्दगी की उत्पत्ति और उसकी स्वच्छता का क्रम तो सनातन है, उसे अनवरत रूप से जारी रखना होता है। स्नान, कपड़े धोना, कमरा बुहारना, मलविसर्जन जैसे कार्य तो दैनिक हैं उन्हें कभी विराम नहीं मिल सकता। गन्दगी हर घड़ी उत्पन्न होती है, तो उसका परिमार्जन भी नित्य नियम रहेगा। शरीर में निरन्तर गन्दगी होती है, उसे दूर करने के लिए रक्त-संचार और श्वांस-प्रश्वांस की प्रक्रिया निरन्तर जारी रहती है। इसमें अवरोध उत्पन्न होगा तो फिर बढ़ी हुई विषाक्तता मरण ही उत्पन्न करेगी।

न केवल मलीनता का निराकरण एक महती आवश्यकता है, वरन् श्रेष्ठता का संस्थापन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और अभिवर्धन भी उतना ही अनिवार्य है। शरीर को ऑक्सीजन की आवश्यकता निरन्तर पड़ती है। साँस द्वारा उसकी हर घड़ी पूर्ति करनी पड़ती है। पेट को आहार देना पड़ता है। दीपक जलाना है तो तेल जुटाना ही होगा, मरणक्रम की भाँति प्रजनन भी चलना ही चाहिए, अन्यथा सृष्टि सन्तुलन कैसे रह सकेगा ? पाठशालाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं। वर्तमान पीढ़ी जब तक शिक्षित हो पाती है तब तक नये बच्चों के लिए फिर प्रशिक्षण की नई आवश्यकता आ खड़ी होती है। फसलें बार-बार बोनी पड़ती हैं। पहला अनाज समाप्त हो जाने पर नया तो चाहिये ही, इसके लिए कृषि कार्य निरन्तर जारी रहता है। पशुओं के दूध देने से लेकर कारखानों के उत्पादन तक का क्रम अनवरत है। लोक शिक्षण भी इसी स्तर की आवश्यकता है। प्रवाह नीचे की ओर बहता है। मन की प्रवृत्ति भी पतनोन्मुखी है। ऊँचा उठाने के लिए रस्सी, बाल्टी, पम्प, ढेंकी, मोटर टंकी आदि का प्रबन्ध करना ही पड़ता है। प्रवृत्तियों को ऊँचा रखने के लिए लोक शिक्षण चाहिए। यहाँ लोक शिक्षण से अभिप्राय साधनों का उपार्जन या व्यवहार कुशलता सिखाने वाली शिक्षा से नहीं वरन् उस ज्ञान चेतना से है, जो मानवी गरिमा को बनाये रहने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है। इसे धर्म चेतना के नाम से जाना जाता है। इसमें प्रत्यक्ष, तात्कालिक सुविधा संवर्धन जैसा लाभ नहीं है, यदि होता तो लोग उसे ऐसे ही सहज चातुर्य से अपना लेते। आदर्शों को अपनाने से आत्म-संतोष, लोक-सम्मान, ईश्वरीय अनुग्रह, लोक हित जैसे परोक्ष लाभ तो मिलते ही हैं, पर आदर्शवादी को अपने ऊपर कई तरह के अंकुश लगाकर सुविधाओं में कटौती भी करनी पड़ती है। इससे उत्पन्न असन्तोष को दूर करने के लिए आदर्शवादिता की गरिमा की—उसके दूरगामी परिणामों को समझने—समझाने का प्रबल प्रयत्न करना पड़ता है। यदि यह न किया जाय तो जनमानस में धर्म-चेतना बढ़ाना और बनाये रहना कठिन पड़ जायेगा। उस प्रकार की उदासी छा जाने पर कोई सत्कर्मों में प्रवृत्त होने का साहस ही नहीं करेगा। पशुओं में कौन आदर्शवादी और कौन परमार्थ-परायण होता है ? वे मात्र शरीर पोषण के लिए जीवित रहते हैं। मनुष्यों को भी यदि धर्म-चेतना न मिले तो वे भी वन-मानुषों की तरह जीवित रह सकेंगे। नर पशुओं से भिन्न प्रकार का आचरण उनसे बन ही न पड़ेगा। इस तथ्य को अभी उन घने जंगलों में जाकर देखा जा सकता है जहाँ के निवासी मनुष्यों तक सभ्यता का प्रकाश अभी तक नहीं पहुँचा है।

संस्कृति जमीन में से खोदकर नहीं निकाली गई है। न वह बादलों की तरह ऊपर से बरसी है। आदिम काल का नर-पशु दैवी चेतना के क्रमिक अनुदान प्राप्त करके ही अपनी अन्तरात्मा को विकसित कर सका है। सामान्य जन-समुदाय में से भी जो नर रत्न — महामानव — ऋषि — तत्वदर्शी — युगमनीषी — आदर्शवादी — आत्मदानी उत्पन्न होते हैं, वह उत्पादन उत्कृष्ट विचारधारा का ही होता है। यदि उस अमृतवर्षा का लाभ न मिले तो फिर सर्वत्र शुष्कता ही दृष्टिगोचर होती है। उसमें जो आदर्शवादी हलचलें दिखाई पड़ती हैं उन्हें आदर्शवादी विचारणा का ही अनुदान कहना चाहिए। धर्म-चेतना की सुरक्षा और अभिवृद्धि के लिए किये गये लोक-शिक्षण को इसी अमृतवर्षा का दिव्य प्रबन्ध कहना चाहिए। मोटी दृष्टि से तो उसका प्रत्यक्ष लाभ दिखाई नहीं पड़ता, पर बारीक निगाह से देखने पर पता चलता है कि यह अन्न, वस्त्र, शिक्षा, चिकित्सा, समाज, शासन जैसी आवश्यक व्यवस्थाओं से किसी प्रकार कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। अन्तरात्मा में उत्कृष्टता और आदर्शवादिता का उद्भव एवं अभिवर्धन कितना आवश्यक है, उसकी उपयोगिता तब समझी जा सकती है जब जन-समाज को धर्म रहित प्रशिक्षण में रखकर उसकी दुर्बुद्धि से उत्पन्न महाविग्रह की कल्पना की जा सके। कुत्ते और व्याघ्र बुद्धि विहीन होने से परस्पर लड़-झगड़ कर जो संकट उत्पन्न करते हैं, मनुष्य में बुद्धि न रहने से उसकी दुष्टता चरम सीमा पर पहुँच सकती है और जो कुछ सुन्दर है, सुखद है, उसका पूरी तरह समापन हो सकता है। धर्म-चेतना और मानवी गरिमा को पर्यायवाची कह सकते हैं। उसे बनाये रखने और बढ़ाने की कितनी अधिक आवश्यकता है इस पर विचार करने से प्रतीत होता है कि उसे क्षुधा निवृत्ति के लिए साधन जुटाने की तरह प्राथमिकता दी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जानी चाहिए। आदर्शवादिता—कर्त्तव्य परायणता, नीति निष्ठा, सच्चरित्रता, समाज-निष्ठा जैसी श्रेष्ठताएँ जितनी जीवन्त रहेंगी मनुष्य उतना सुसंस्कृत और समाज उतना ही समुन्नत बनेगा। इस लक्ष्य को यदि ध्यान में रखा जा सकेगा तो धर्म-धारण को प्रखर बनाये रहने वाला लोक शिक्षण मनुष्य की सर्वोपरि आवश्यकता गिनी जायेगी। उसके लिए प्रबन्ध और प्रयत्न करना उन सभी दूरदर्शियों का पवित्र कर्त्तव्य है जो इस संसार में सुख-शान्ति और प्रगति देखना चाहते हैं।

इस लोक-शिक्षण के लिए स्थायी व्यवस्था बनाये रखने के लिए दूरदर्शी पूर्वजों ने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परम्पराएँ स्थापित की हैं। पर्व त्यौहार इसी प्रयोजन के लिए बनाये गये हैं। उनके पीछे कथा-पुराणों का इतिहास जोड़ा गया है, साथ ही उनके मनाने का ढंग—ढाँचा ऐसा खड़ा किया है कि मानव-जीवन के लिए नितान्त आवश्यक अनेक दिशा-धाराओं के साथ उसे जुड़ा हुआ देखा जा सकता है। पर्व-त्यौहारों का वर्तमान प्रचलन उपेक्षा और अदूरदर्शिता से मर गया है। उनमें मिष्टान्न, पकवान बनाने, खाने और घिसी-पिटी चिह्न पूजाएँ कर लेने—छुट्टी मना लेने—कपड़े बदल लेने जैसी छुट-पुट नवीनताओं के अतिरिक्त ऐसा कुछ नहीं दीखता जिससे जीवन-क्रम में कोई प्रकाश या उभार आता बढ़ता देखा जा सके और उसके आधार पर उस पर्व का महत्त्व समझा जा सके। होली, दीपावली के दिन तो गिने जाते रहते हैं। पर जब वह दिन आता है तो सामान्य से विनोद, उत्साह के अतिरिक्त ऐसा कुछ दीखता नहीं जिससे उस विशेष पर्व की गरिमा स्वीकारी जा सके। इस स्थिति में उन्हें किसी महान् परम्परा की चिह्न पूजा अथवा किसी भव्य भवन का खण्डहर भाग ही कहा जा सकता है।

पर्वों की महान् परम्परा का प्रचलन करने वालों के सामने दूसरा ही दृष्टिकोण था। उनका वास्तविक स्वरूप स्थानीय धर्म-सम्मेलनों, धर्मानुष्ठानों जैसे सामूहिक समारोहों का सा था। सामाजिक सत्प्रवृत्तियों के विकास के लिए पर्वों को उसी रूप में मनाने की परिपाटी प्रारम्भ करना आवश्यक है। इन्हें सामूहिक रूप से मनाया जाना चाहिए। सारा नगर उन्हें मिल-जुल कर मनाये, इसी को ध्यान में रखकर इनका विधान बनाया गया था। पर जहाँ वैसा न हो सके वहाँ गली मुहल्ले के—अथवा एक मन विचार, स्तर के लोग मिलकर उन्हें मना सकते हैं और छोटे से आयोजन के रूप में पूजाकृत्य करके उनमें सन्निहित प्रेरणाओं का लाभ ले सकते हैं। इतना भी न हो सके तो घर के सब लोग मिल-जुल कर घरेलू उत्सव के रूप में—संस्कार आयोजनों की तरह पर्वों को भी मना सकते हैं। मूल उद्देश्य उनसे प्रेरणा ग्रहण करना है। बड़े रूप में न सही घर-परिवार के स्तर पर भी इस परम्परा का निर्वाह हो सकता है और घर के लोग यह समझ सकते हैं कि इनके पीछे क्या इतिहास और क्या उद्देश्य सन्निहित है। घर के बड़े लोग पर्व प्रक्रिया के आधार पर उनमें सन्निहित प्रकाश को इस तरह घर के सदस्यों को समझा सकते हैं कि वे उस रीति-नीति को अपनाकर अपने व्यक्तित्त्व और प्रस्तुत परिवार का गौरव बढ़ा सकते हैं।

आज मिष्ठान्न पकवान नये वस्त्र, अवकाश का दिन, छुट-पुट पूजा-पाठ जैसी चिह्न पूजाएँ ही त्यौहारों के दिन होती रहती हैं। कई त्यौहारों पर महिलाएँ व्रत, उपवास करती हैं। अमुक देवी देवता को अमुक विधि-विधान से पूजती हैं। इन रिवाजों में से जो अनैतिक, अवांछनीय, खर्चीले न हों, उन्हें पुराने लोगों के सन्तोष के लिए किया भी जाता रह सकता है। मूल बात उस प्रेरणा को ग्रहण करने की है जिनके लिए उनका निर्माण हुआ था। यह पारिवारिक स्तर पर किया जा सकता है।

किन्तु इतने मात्र से उस महान् उद्देश्य की पूर्ति नहीं की जा सकती है जिसके लिए तत्त्वदर्शियों ने पर्वों की परम्परा स्थापित की थी। अस्तु युग निर्माण योजना के धर्म तन्त्र से लोक शिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत पर्वों की सामूहिक रूप से प्रेरणा एवं उल्लास भरे वातावरण में मनाने की पुण्य परिपाटी चालू करने का व्यवस्थित प्रयास किया जा रहा है। हर विचारशील व्यक्ति का समर्थन और सहयोग उसमें स्वभावतः ही मिल जाता है। जहाँ जैसी स्थिति है उसी के अनुरूप छोटे-बड़े स्तरों पर पर्वायोजन मनाये जाते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस योजना के अन्तर्गत दो पर्व ऐसे भी हैं जो पारिवारिक स्तर पर संस्कारों की तरह मनाये जाते हैं। एक है जन्मदिवसोत्सव तथा दूसरा है विवाह दिवसोत्सव। जन्मदिन व्यक्तिगत चिन्तन एवं कर्तृत्त्व के परिष्कार एवं निर्माण के लिए है। इसको अकेले ही या परिजन मिलकर भी मना सकते हैं। विवाह-दिवसोत्सव दाम्पत्य के—गृहस्थाश्रम के आदर्शों को हृदयंगम करने के लिए है। इसे पति-पत्नी दोनों मिलकर एकान्त कक्ष में भी मना सकते हैं। अब तक की भूलों का विस्मरण और भविष्य में उच्चतम घनिष्ठता के निर्वाह का आश्वासन एक-दूसरे को देकर भी उसे पूरा किया जा सकता है। छुट-पुट उपहारों का पुष्प, नैवेद्य जैसा आदान-प्रदान भी हो सकता है। विवाह के वर्षों के प्रतीक जितने दीपक पति-पत्नी स्वयं भी जला सकते हैं। दूसरों को जानकारी दिये बिना भी यह विवाह दिवसोत्सव हर साल होता रह सकता है। जन्म-दिन एकाकी और विवाह दिन पति-पत्नी के सहयोग भर से मनाया जाता रह सकता है। अन्यों के सहयोग से यह दोनों उत्सव अधिक प्रभावशाली एवं उत्साहवर्धक होते हैं, इसमें सन्देह नहीं पर परिस्थितिवश एकाकी रूप में भी मना सकते हैं। इनसे सम्बन्धित परामर्श, उद्‌बोधन का प्रवचन कोई भी व्यक्ति कर सकता है। इसके लिए कुशल वक्ता होने की आवश्यकता नहीं है। परिवार प्रशिक्षण का यह कार्य एक परिवार वाले दूसरों का करें तो यह और भी आकर्षक एवं उत्साहवर्धक रह सकता है।

अन्य पर्वों के बारे में ऐसी बात नहीं है। वे विशुद्ध सामुदायिक हैं। उनकी संरचना ही इस प्रकार हुई है कि मिल-जुल कर सामूहिक धर्मा अनुष्ठान का स्नेह के रूप में ही उन्हें मनाया जा सकता है। बसंतोत्सव, होली, गंगादशहरा, गुरुपूर्णिमा, श्रावणी, विजयादशमी के समारोह हर जगह मनाये जाते हैं। इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जिसे कोई अकेला व्यक्ति मना सके। इसका विधि-विधान सम्पन्न करना और आनन्द उठाना मिल-जुल कर ही सम्भव हो सकता है। एकाकी मनाना हो तो उपवास भर करके काम चलाना पड़ता है। दीवाली यों इन दिनों पारिवारिक उत्सव भर रह गया है, पर प्राचीन स्वरूप उसका भी होली पूजन की तरह सामूहिक ही था। अभी भी धनतेरस, गोवर्धन, अन्नकूट, भाइदौज गोपाष्टमी, देवोत्थान एकादशी आदि कई पर्व दीवाली से मिले-जुले हैं और वे प्रायः सामूहिक रूप से ही मनाये जाते हैं। कुछ पर्व ऐसे भी हैं जो प्रान्तीय—क्षेत्रीय रूप में ही विशेषतया मनाये जाते हैं। हिमालय प्रदेश में मकरसंक्रान्ति की धूम रहती है। पंजाब में वैसाखी संक्रान्ति का बड़ा महत्त्व है। महाराष्ट्र में गणेशचतुर्थी की धूम देखते ही बनती है। ब्रज की होली का स्वरूप ही अनोखा है। इसी प्रकार विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार के पर्व त्यौहार होते हैं।

अवतारों, देवपुरुषों और महामानवों की जयन्तियाँ भी उनके अनुयायी समारोहपूर्वक मनाते हैं। रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, महावीर जयन्ती, नानक जयन्ती, गाँधी जयन्ती आदि के आयोजन भी पर्व-त्यौहारों में गिने जा सकते हैं। यह भी सामूहिक रूप में मनाते हैं। हिन्दू धर्म के अतिरिक्त अन्यान्य धर्मों में पर्वों की संख्या और दिशाधारा इतनी विस्तृत तो नहीं है पर उनमें भी कमी नहीं है। मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, यहूदी, पारसी आदि धर्मावलम्बी अपने-अपने ढंग से अपनी पौराणिक गाथाओं एवं धर्म संस्थापन के इतिहास से सम्बन्धित कितने ही पर्व मनाते हैं। इनमें इन धर्मों के अनुयायी अपने धर्म स्थानों पर एकत्रित होते और अपने ढंग से उत्सव मनाते हैं। कई जातियों-उपजातियों के अपने-अपने त्यौहार हैं। कुछ क्षेत्रों में सती, शूरमा, सन्त ऐसे हुए हैं जिनके जन्मोत्सव अथवा निर्वाणोत्सव मनाये जाते हैं। अग्रवाल वैश्य राजा अग्रसेन की जयन्ती धूमधाम से मनाते हैं और अन्य लोग भी उसमें उत्साहपूर्वक सम्मिलित होते हैं। इसी प्रकार के कई त्यौहार अन्य जातियों के भी हैं। कई जगहों में तो इन उत्सवों में मेले भी लगते हैं।

इन पर्व त्यौहारों का इन दिनों भीड़-भाड़ जमा होना—दर्शन—झाँकी करना जैसा रूप बन गया है। पर प्राचीन काल में वैसा न था। उन दिनों यह सभी जन-सम्मेलन थे, जिनमें नियत समय, नियत स्थान पर लोग बिना निमन्त्रण के अपने आप बड़ी संख्या में जा पहुँचते थे और उन्हें सुयोग्य मार्गदर्शकों द्वारा सामयिक एवं चिरस्थायी समस्याओं के समाधान का उद्‌बोधन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिया जाता था। आज तो छोटे-छोटे जन-समूह एकत्रित करने में भी प्रचार में—आमन्त्रणों में ढेरों शक्ति खर्च होती है, तब कहीं कुछ लोग जमा हो पाते हैं। प्राचीन काल में यह झंझट बिल्कुल भी नहीं करना पड़ता था। हर साल सभी लोग नियत स्थान पर जमा हो जाते थे। इस प्रकार सम्मेलन के लिए आमन्त्रण देने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। व्यवस्था क्रम भी अपने ढर्रे पर सहज ही बनता चला जाता था। आज तो सम्मेलन बुलाने और उसकी व्यवस्था करने में ही आयोजन में लगने वाली शक्ति का आधा भाग चुक जाता है।

लोक शिक्षण के लिए सर्वसुलभ, सस्ता और प्राणवान तरीका पर्वों को सामूहिक रूप से मनाना ही है। प्रथा परम्परा पहले से ही चली आती है। उनमें नया कुछ भी करना नहीं है। नया प्रयत्न तो इतना ही करना है कि अस्तव्यस्तता को सुव्यवस्था से जोड़ दिया जाय। उत्सवों के पीछे जुड़ी हुई प्रथा परम्पराओं को पूरा करने के लिए जो पूजा विधान आवश्यक हो उसे मिल-जुलकर पूरा किया जा सके ऐसी व्यवस्था जुटा दी जाय। साथ ही आगन्तुकों को एक स्थान पर—एक क्रम से बैठकर उस पर्व का इतिहास सुनने का अवसर मिल जाये ऐसा प्रबन्ध बना दिया जाय।

पूजा मंच आवश्यक है अन्यथा परम्परा का निर्वाह न होने से लोगों के धर्मोत्साह का समाधान न हो सकेगा। बसन्त पर्व पर सरस्वती की, शिवरात्रि पर शिव की आराधना का दिन है। उस दिन इन देवताओं का बड़ा चित्र एक बड़े मंच पर पर सुसज्जा के साथ रखा जाय, पूजा का समय नियत हो। ठीक उसी समय स्वस्तिवाचन आदि मंगल-उच्चारण हों—सब लोगों के हाथ में अक्षत, पुष्प आदि रहें। उन्हें पूजा मंच पर रखे चित्र के चरणों में श्रद्धाञ्जलि के रूप में प्रस्तुत किया जाय। सामूहिक आरती, स्तवन आदि हो। थोड़ी उपस्थित हो तो लोग खड़े होकर यह श्रद्धा-समर्पण स्वयं करें। भीड़ अधिक हो तो अक्षत पुष्प लोगों के हाथों तक पहुँचाने और वापस लेने का कार्य स्वयंसेवकों द्वारा कराया जा सकता है। एकत्रित करके पूजा निर्माल्य को वेदी पर सबकी ओर से अर्पित किया जा सकता है। आवश्यकतानुसार इसमें कुछ और भी हेराफेरी की जा सकती है।

प्रसाद देने की आवश्यकता प्रतीत हो तो (१) सामान्य जल (२) गंगा जल (३) तुलसी पत्र (४) चन्दन की सुगन्ध (५) शक्कर—इन पाँच वस्तुओं का पंचामृत एक-एक चम्मच सब को दिया जा सकता है। कई लोग वितरण के लिए कई जगह खड़े हो जायें तो यह प्रसाद वितरण बिना किसी कठिनाई के हो सकता है और उपस्थित लोगों की धर्मश्रद्धा का परिपोषण हो सकता है। भविष्य में प्रसाद वितरण की यही व्यवस्था सर्वत्र चलनी चाहिए। अन्यथ मिष्टान्न वितरण थोड़ा-थोड़ा होने पर भी समारोहों में बहुत पैसा खर्च हो जाता है। जन समारोहों में सस्तेपन का ध्यान न रखा जाय तो जहाँ सम्पन्नता होगी वहीं प्रसाद वितरण हो सकेगा। सामान्य लोग इतना साधन न जुटा सकने के कारण उस परम्परा के निर्वाह से मुँह मोड़ लेंगे।

सभी पर्व त्यौहारों की यह ही पद्धति होनी चाहिए ताकि लोग उसका अभ्यास रख सकें और हर समारोह में उपस्थित लोग मूकदर्शक की तरह नहीं वरन् सक्रिय भागीदार की तरह आदि से अन्त तक भाग ले सकें। भिन्नता इतनी रहे कि पर्व से सम्बन्धित देवता या महामानव का बड़ा चित्र बदला जाता रहे। जिससे सम्बन्धित पर्व हो उसकी प्रतिष्ठापना, पूजा मंच पर होती रहे। स्तवन गुणगान में भी अन्तर होगा। इन दो बातों के अतिरिक्त अन्य उपचार सभी पर्वों में एक जैसे रहेंगे।

धर्मकृत्य के अतिरिक्त मुख्य बात है उद्‌बोधन प्रवचन। उसके लिए सभामंच—पूजामंच के समीप ही पृथक से बनाया जाय। लाउडस्पीकर, बिछावन, आच्छादन, चित्र, वन्दनवार, झण्डियाँ, आदर्श वाक्य आदि से सभास्थल को सजाने, दर्शनीय, आकर्षक बनाने में आयोजन कर्त्ताओं की दिलचस्पी तथा कलाबुद्धि का परिचय मिलना चाहिए। मंच पर सभाध्यक्ष बैठें। वक्ताओं की नामावली, विषय और समय पहले से ही निश्चित रहे। मंच पर वक्ता और अध्यक्ष दो ही बैठें। अनेक लोग आत्मविज्ञापन के लिए ऐसे मंचों पर अपनी मर्जी से घुसपैठ करते हैं। किसी को पक्षपात वश बिठा दिया जाय तो दूसरे लोग जो नहीं बैठे हैं वे बुरा मानते हैं। अनावश्यक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोगों का अड्डा जमा लेने से मंच भी अनगढ़ों की सी अव्यवस्था का भौंडा प्रदर्शन बन जाता है। इसलिए मंच पर अध्यक्ष और वक्ता दो ही बैठा करें। कोई विशेष सम्मानित व्यक्ति बुलाये गये हों और वे वस्तुतः उपस्थित जनता की तुलना में अधिक श्रद्धास्पद हैं तो ही उन्हें मंच पर आग्रह पूर्वक बिठाया जाना चाहिए। बैठने वाले पंक्तिबद्ध बैठें। स्त्रियों की प्रथम पंक्ति हो। बच्चों को सबसे आगे नहीं वरन् पीछे या दायें-बायें बिठाया जाय ताकि उनकी गड़बड़ी से लोगों का ध्यान भंग होने और गड़बड़ी मचने की कठिनाई उत्पन्न न हो। विशेषकर छोटे बच्चों को गोदी में लेकर आने वाली महिलाओं का तो स्थान ही ऐसा रहना चाहिए जहाँ से यदि वे बीच में भी उठना चाहें तो आसानी से उठ सकें। जूते, चप्पल या तो लोग पहनकर बैठें, अथवा उनकी रखवाली का समुचित प्रबन्ध हो। अन्यथा उनके खोने की कठिनाई के कारण लोग ऐसे समारोहों में उपस्थित होने से ही कतराने लगते हैं। मन्दिरों में दर्शकों की उपस्थिति घटते जाने का एक बड़ा कारण यह भी है कि वहाँ से जूते चोरी चले जाते हैं और लगभग जेब कटने जैसा ही कष्ट उठाना पड़ता है।

हर पर्व का अपना इतिहास है और अपना विषय। उसकी प्राचीनता के साथ संगति मिलाते हुए लोकशिक्षण के लिए भाषण के विषय निर्धारित किये जाने चाहिए। विषयान्तर करने और संगति न बिठाने से ऐसे वातावरण में रहने वाली सहज जन-जिज्ञासा का समाधान न हो सकेगा। उस वक्तृता की सभी बातें उपयोगी रहने पर भी इस एक ही कमी के कारण उसका आनन्द चला जायेगा। यह धर्म चर्चा इतनी दकियानूसी भी नहीं होनी चाहिए कि प्राचीन कथा-गाथा ही उसमें भरी रहे और आज की वैयक्तिक एवं सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालने के लिए गुंजाइश ही न रहे। दोनों का समुचित समन्वय बनाये रहना ही इन अवसरों पर होने वाले प्रवचनों की विशेषता होनी चाहिए। वक्ता को जानना चाहिए कि इस पर्व के साथ प्राचीन काल की किन कथा-गाथाओं का इतिहास जुड़ा हुआ है और उन प्रसंगों में आज के लिए ग्रहण की जा सकने योग्य प्रेरणायें क्या-क्या हैं। हर पर्व का अपना विषय है। विभिन्नतायें मिलकर एकपूर्णता बनता है। व्यक्ति और समाज के सामने अगणित समस्याएँ हैं और उनके समन्वित समाधान ही एकत्रित होकर सुव्यवस्था और शान्ति का पथ प्रशस्त करते हैं। भिन्न-भिन्न पर्व अवसरों पर यदि पृथक्-पृथक् स्तर के प्रकाश प्रशिक्षण मिलते रहें तो उन्हें पुस्तक के पाठों—अध्यायों या कक्षाओं की तरह ही एक-दूसरे का पूरक समझा जा सकता है।

बसन्त पर्व शिक्षा और कला की देवी सरस्वती का जन्म-दिन है। होली में स्वतन्त्रता और सामूहिक श्रमदान की प्रेरणा है। गंगा दशहरा में गंगा जैसी पवित्रता धारण करने तथा कृषि और प्राणियों की आवश्यकता के लिए जल का प्रबन्ध करने का संकेत है। गुरु पूर्णिमा विशुद्ध रूप में अनुशासन का पर्व है। श्रावणी हरीतिमा के सम्वचन का—परस्पर स्नेह बन्धनों से बँधकर सर्वतोमुखी सुरक्षा व्यवस्था करने का—यज्ञोपवीत में सन्निहित नवगुणों के सम्वर्धन का—पापों के प्रायश्चित जैसे अति महत्त्वपूर्ण संकेत हैं। विजयादशमी समर्थता में सम्वर्धन का, संगठित शक्ति के विकास का—अनीति के विरुद्ध संघर्ष का उद्बोधन है। दीपावली के साथ सद्ज्ञान प्रसार के विस्तार का दीपकों के अनुकरण का—अर्थव्यवस्था के साथ दैवी प्रवृत्तियों के समावेश की शिक्षा है। इसी प्रकार अवतारों और महामानवों के संस्मरणों एवं उद्बोधनों में से भी अनेक ऐसे हैं, जो प्राचीन काल की तरह आज भी नितान्त सामयिक प्रेरणाप्रद एवं समाधानकारक हैं। इन तथ्यों पर ध्यान रखते हुए प्राचीन और अर्वाचीन का समन्वय कर सकना किसी विचारशील के लिए कुछ भी कठिन नहीं होना चाहिए।

पर्व आयोजन न तो बहुत विलम्ब से होने चाहिए और न बहुत देर से। दो या तीन महीनों के अन्तर से वे होते रहें तो जनता का आकर्षण बना रहेगा। बहुत जल्दी करने से लोग ऊबने और उपेक्षा करने लगते हैं। बहुत देर होने से वह प्रवृत्ति ही मुरझा जाती है। कहाँ किन पर्वों का अधिक महत्त्व एवं प्रचलन है इसका ध्यान रखते हुए स्थानीय योजनाएँ बनानी चाहिए। कम से कम चार और अधिक से अधिक छः पर्वों को मनाने की व्यवस्था बनाई जा सकती है। उसके लिए स्थान, वक्ता, गायक भिन्न भी रखे जा सकते हैं। इससे स्थानों का महत्त्व बढ़ता है और कई व्यक्तियों को विषय प्रतिपादन का अवसर मिलता है। जहाँ एक उपयुक्त स्थान हो वहाँ स्थिर व्यवस्था रखने में भी कोई हर्ज नहीं है। वक्ता एक गाँव से दूसरे-तीसरे में जाते रहें तो इसमें नवीनता भी रहेगी और सम्पर्क क्षेत्र अधिक व्यापक होता चला जायेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन आयोजनों में मात्र भाषण रखने से भी काम नहीं चलेगा। स्वल्प शिक्षित और अविकसित लोगों के लिए संगीत ही ऐसा विषय है जिसके सहारे मनोरंजन के साथ-साथ विषयों को हृदयंगम कराने की सुविधा रह सकती है। शिक्षितों और विकसित स्तर के लोगों के लिए भी संगीत की स्वर लहरी और भाव प्रेरणा कम आकर्षक नहीं होती। अस्तु, इन आयोजनों में सहगान—कीर्तन—भजन-गायन आदि की व्यवस्था भी भाषणों की तरह ही रखी जानी चाहिए।

विभिन्न धर्मों के पर्वोत्सव अलग-अलग हैं किन्तु प्रेरणा की दृष्टि से सभी में ऐसे तत्त्व मौजूद हैं जो एक ही लक्ष्य पर एकत्रित होते हैं। उन्हें ध्यान में रखा जाय और प्रधानता दी जाय तो एक धर्म दूसरे धर्मावलम्बियों के लिए भी समान रूप से प्रेरणाप्रद हो सकता है। दीपावली न्यायोचित रीति से धन कमाने और सदुद्देश्यों के लिए खर्च करने की प्रेरणा का दिन है। यह सिद्धान्त सभी धर्मों में समान रूप से मान्य किया गया है और उसके समर्थन में हर धर्म में अनेक कथा, संस्मरण तथा शास्त्र वचन मौजूद हैं। दीपावली यदि हिन्दू धर्मानुयायी मना रहे हैं, तो उस आयोजन में मुसलमान—ईसाई आदि अन्य धर्मावलम्बी भी अपने सम्प्रदाय के संस्मरण इस भाव पवित्रता के सम्बन्ध में प्रस्तुत करने वाली बातें कह सकते हैं। इस प्रकार वे पर्व सर्व धर्म समन्वय के मंच भी बनाये जा सकते हैं। एक धर्म में दी गई श्रेष्ठ प्रेरणाओं को दूसरे धर्म वाले अपनी परम्पराओं के अनुसार प्रतिपादन करें तो इससे मूल लक्ष्य की रक्षा तो होती ही है, साथ ही अनेक दिशाओं से समर्थन मिलने पर उसके प्रति उपस्थित लोगों की श्रद्धा भी बढ़ेगी। सबसे बड़ी बात है कि अभी सम्प्रदाय भेद के कारण एक-दूसरे के हर्षोत्सवों में भाग ले सकना सम्भव नहीं हो पाता। वह दीवारें टूटेंगी और कट्टरता के विषवृक्ष की जड़ें खोखली होती चली जायेंगी। धर्मों के मध्य एकरूपता न सही एक दिशा और सहिष्णुता, सद्भावना तो सहज ही पैदा की जा सकती है। उसके लिए अन्य धर्मावलम्बी भी परस्पर मिल-जुल कर आयोजन बनाने की पृष्ठभूमि बना सकते हैं। यदि अपने धर्म द्वारा प्रस्तुत मंच के समर्थन में कुछ कहा जा सकता हो तब तो और भी उत्तम है। एक धर्म वाले दूसरे धर्म वालों को भी आमन्त्रित करें और उनके धर्म में प्रस्तुत आयोजन की भावना के समर्थन में जो कहा गया है उसे कहने के लिए आग्रह करें तो यह परम्परा पर्वों को सर्वजनीन, सार्वभौम एवं मानवीय संस्कृति के समर्थक के रूप में उपयोगी हो सकती है।

लोक-शिक्षण के लिए पर्व-त्यौहारों की परम्परा के सहारे आज के लिए उपयोगी समाधान प्रस्तुत करना जितना सरल, सस्ता, आकर्षक और प्रभावोत्पादक है उतना कदाचित ही कोई अन्य माध्यम निकल सकता है। पर्व आयोजन के सम्बन्ध में प्रस्तुत अनगढ़पन को यदि सुव्यवस्थित बनाया जा सके तो उससे जागृति का—जन-मानस के परिष्कार का—लोक-शिक्षण का उद्देश्य भलीभाँति पूरा हो सकेगा।

आत्म-विकास के आधार स्तम्भ

युग निर्माण योजना मनुष्य में देवत्व के उदय का जो महान् लक्ष्य लेकर चल रही है, उसके लिए मानवीय अन्तःकरण का विशिष्ट उपचार करना आवश्यक हो जाता है। अन्तःकरण का एक पक्ष है—विश्वास। इसका निर्माण निर्धारण घटनाक्रमों, परिस्थितियों एवं चिन्तन की अनुकूलता के सहारे बन पड़ता है। ज्ञान-यज्ञ के चार चरण—स्वाध्याय, सत्संग, चिन्तन और मनन इसी प्रयोजन को पूरा करते हैं। अन्तःकरण का दूसरा पक्ष है—श्रद्धा। यह विश्वास से भी अधिक गहरी और अधिक शक्तिशाली होती है। दिव्य संवेदना इसी क्षेत्र में अवतरित होती है। प्रेम के तत्त्व इसी श्रद्धा की भूमि में उपजते हैं और दृढ़ होते हैं। श्रद्धा की परिभाषा है श्रेष्ठता से असीम प्यार। श्रेष्ठता का रूप समझना किसी के लिए कठिन नहीं है। उसकी उपयोगिता स्वीकार करने में भी किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती। चोर भी ईमानदारी के और दुराचारी भी सदाचार के सिद्धान्त का समर्थन करते हैं। चोर अपने यहाँ चोर नौकर रखने को तैयार न होगा। व्यभिचारी को अपनी पुत्री या पत्नी के किसी व्यभिचारी के साथ होने की स्थिति स्वीकार नहीं होगी। बेईमान आदमी भी अपना लेन-देन ईमानदार के साथ करना पसन्द करता है। झूठा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदमी भी यह चाहता है कि दूसरे झूठ न बोलें। इससे स्पष्ट है कि भ्रष्ट आचरण करने वाले भी उत्कृष्टता के प्रबल समर्थक होते हैं। अन्तर केवल इतना ही रहता है कि वे मात्र उससे अपनी ही छूट माँगते हैं और यह चाहते हैं कि उस एक के अतिरिक्त अन्य सभी लोग सदाचारण का व्यवहार करें। अपने लिए छूट चाहने के अपवाद के अतिरिक्त शेष ऐसे लोगों की प्रतिशत मान्यता हर व्यक्ति की सदाचरण समर्थक होती है। पर इतने से कुछ बनता नहीं। हर व्यक्ति जब अपने लिए छूट माँगने लगे और यही हर एक ही इच्छा रहेगी तो फिर सभी लोग इसी छूटने के पक्ष में हो जायेंगे और श्रेष्ठता को स्वयं अपनाने के लिए आनाकानी करेंगे, तो फिर उनकी अवधारणा बन ही कैसे पड़ेगी। इस समस्या का समाधान बुद्धि से भी, विश्वास से भी गहरी परत "श्रद्धा" के क्षेत्र में प्रवेश करने से ही सम्भव है।

श्रद्धा की धारणा श्रेष्ठता के असीम प्यार के रूप में होती है। जिससे प्यार होता है उसे अपनाने को जी करता है। प्रियजनों की समीपता एवं उनके साथ पक्षपात करने की प्रवृत्ति इसी लक्ष्य पर टिकी हुई है कि जिससे प्यार होता है उसका सान्निध्य एवं उत्कर्ष चाहने के लिए प्रबल उत्कण्ठा उठती है और प्रबल प्रयत्न किये जाते हैं। श्रेष्ठता के साथ यदि श्रद्धा का समन्वय बन पड़े—उसके लिए असीम प्यार उमड़ने लगे, तो सहज ही उसे अपनाने को—अपने मर्म स्थल में भर लेने के लिए आकांक्षा और अनुकूलता बनी रहेगी, जैसे कि घनिष्ट प्रेमी-प्रेमिकाओं के बीच पाई जाती है।

श्रद्धा संवर्धन का महत्त्व श्रेष्ठ विश्वासों की प्रतिष्ठापना से भी अधिक है। श्रद्धा आत्मा का निकटतम आवरण है। जीवन का मूल स्तर उसी गहराई में विनिर्मित होता है। गीताकार का कथन है—"श्रद्धामयो यं पुरुषयो यच्छ्रद्धः स एव स।" अर्थात् मनुष्य श्रद्धामय है, वह जैसी श्रद्धा करता है, वैसा ही बनता है। श्रद्धा का महत्त्व बताते हुए श्रुति कहती है—"श्रद्धया सत्य माप्यते" श्रद्धा से ही सत्य की प्राप्ति होती है। सत्य अर्थात् परब्रह्म—जीवन लक्ष्य—यथार्थ बोध, इसी स्थिति को जीवनमुक्ति एवं ब्रह्म प्राप्ति कहते हैं। इसे उपलब्ध करना श्रद्धा की मात्रा पर अवलम्बित है। श्रद्धा ही उच्च स्तरीय संवेदना उत्पन्न करती है। सद्भावनाओं की उमंगें इसी क्षेत्र में उत्पन्न होती हैं। उन्हीं के उभार से मनुष्य आदर्शों को अपनाने के लिए कटिबद्ध होता है। उनके लिए बड़े-बड़े त्याग बलिदान करने को तत्पर होता है। परमार्थ परायणता में भौतिक दृष्टि से प्रायः हानि ही होती है। इस तथ्य को जानते हुए भी महामानव उसे अपनाते हैं, तपस्वी जीवन जीते हैं और आदर्शों को अपनी गतिविधियों में जोड़े रहते हैं। जो कष्ट उठाने पड़ते हैं उन्हें खुशी-खुशी सहन करते हैं। इस रीति-नीति को तपश्चर्या कहा जाता है। सामान्य प्राणी जब सब सुख सुविधा ही चाहते हैं और उच्च आदर्शों का परित्याग करने में तनिक भी हिचक नहीं करते, तब श्रद्धावान व्यक्ति अपनी उच्चस्तरीय भाव संवेदनाओं से उल्लसित होकर आदर्श रक्षा को ही प्रधानता देता है और उसके लिए जो भी कष्ट सहने पड़ें उन्हें सौभाग्य की तरह प्रसन्नता पूर्वक शिरोधार्य करता है। यही है तपश्चर्या का विश्लेषण।

व्यक्तित्त्व की ऊपरी परत गुण, कर्म, स्वभाव के रूप में सामने आती है। मध्यवर्ती परत विश्वासों, मान्यताओं, आस्थाओं, निष्ठाओं के रूप में प्रस्तुत होती है। अन्तिम अति गहन परत श्रद्धा की है। इसे आत्मा का अति सघन स्तर कह सकते हैं। उसी ढाँचे में जीव की मूल प्रकृति ढलती है और उसका उत्कृष्ट या निकृष्ट स्तर विनिर्मित होता है। श्रेष्ठता अपनाने के लिए सुविधा का परित्याग करा सकने की सामर्थ्य-उमंगें श्रद्धा की गंगोत्री से ही उमंगती हैं। जन-मानस के परिष्कार का—व्यक्ति के स्तर का केन्द्रबिन्दु इसी को समझा जाना चाहिए। व्यक्तित्त्व के बहिरंग एवं अन्तरंग रथचक्रों को गति देने वाली धुरी यही है।

श्रद्धा का उत्पादन, अभिवर्धन ईश्वर उपासना के माध्यम से होता है। ईश्वर भक्ति के लिए किये गये भावनात्मक पुरुषार्थ को उपासना कहते हैं। उपासना को आत्मिक प्रगति का विशेष व्यायाम कह सकते हैं। इसके सहारे जन-सत्ता को ब्रह्म-सत्ता से जुड़ने और अभीष्ट आदान-प्रदान करने का पथ प्रशस्त होता है। अन्तःकरण के इसी मर्मस्थल की प्रगति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मशक्ति के रूप में प्रकट होती है। यही वह सामर्थ्य है जिसके सहारे व्यक्ति आत्मबल सम्पन्न बनता है और अपनी प्राण ऊर्जा से सम्पर्क क्षेत्र को तथा सुविस्तृत वातावरण को प्रभावित करता है।

उपासना का आरम्भ पूजा-पाठ से—जप, ध्यान से होता है। उसका विकसित स्वरूप योग और तप है। योग का अभिप्राय है चिन्तन का परम पर-ब्रह्म के साथ—परम श्रेष्ठता के साथ अति घनिष्ठतापूर्वक जोड़ना। ईश्वर को आत्मा सदृश्य मानकर उसे महान् आत्मा—परम आत्मा—उत्कृष्ट चेतना सत्ता के रूप में अपना प्रेमपात्र बनाया जाता है। उसके साथ अत्यन्तिक घनिष्टता स्थापित की जाती है। भगवद्भक्ति का यही स्वरूप है। योग जोड़ने को कहते हैं। आत्मा और परमात्मा का जुड़ जाना ही योग है। इसके लिए जीव को अपना जीव-भाव—परब्रह्म के परमात्मा भाव में समर्पित—समन्वित करना होता है। समर्पण, विसर्जन, विलय, शरणागति, एकत्व, अद्वैत जैसी भावनाएँ योगाभ्यास से विकसित की जाती हैं। महान् में तुच्छ को भुला देना—यही समर्पण है। भक्ति को समर्पण योग कहा गया है। इसका तात्पर्य होता है अहंता का—संकीर्णता का विराट में समापन। विश्व हित के लिए—परमार्थ के लिए—आदर्शों की प्रतिष्ठापना के लिए अपनी संकीर्ण स्वार्थपरता का—व्यक्तिवादी लालसाओं का समापन, भावना के पथ में कामना को—उत्कृष्टता के पथ में अहंता को विसर्जित कर देना ही योग है। ईश्वर को श्रेष्ठता का समुद्र माना जाता है और उसी में व्यक्तिवादी अहंता को बूँद की तरह घुला दिया जाता है। नाले का नदी में—नमक का जल में—ईंधन का आग में—पतंगे का दीपक में विलय हो जाने की उपमा योग-साधना से की जाती है। यह विशुद्ध भावनात्मक प्रयास है। इसे उपासना का अनिवार्य अंग माना गया है। भक्त को भगवान के साथ एकत्व अद्वैत स्थापित करने के लिए अपनी कामनाओं, महत्वाकांक्षाओं और सुविधाओं को मन से निकालना पड़ता है। उसके स्थान पर ईश्वरीय इच्छाओं को—संदेशों को सच्चे मन से स्वीकार करना और उस स्वीकृति में परम प्रसन्नता अनुभव करना, यही है योग साधना का उद्देश्य। आत्मिक-शान्ति प्राप्त करने के लिए पूजा-पाठ से आगे बढ़ते-बढ़ते साधक को प्रभु-समर्पित बनना पड़ता है। अपने चिन्तन और क्रिया-कलाप का सारा ढाँचा इसी आधार पर खड़ा करना पड़ता है। यही है प्रचण्ड आत्म-शक्ति का उद्गम स्रोत जिससे इस विराट ब्रह्माण्ड में संव्याप्त ब्राह्मी चेतना का अति महत्त्वपूर्ण अभिवर्षण साधक पर होता है और वह उस आत्म-शक्ति से सम्पन्न होता है जिसे इस जगत की सर्वोपरि सामर्थ्य कहा जाता है।

आत्म-शक्ति के अभिवर्षण का दूसरा क्षेत्र है—तप। तप का अर्थ है काय-कलेवर में से निकृष्टता का परिशोधन । खदान में से धातुएँ मृतिका मिश्रित निकलती हैं। कच्ची स्थिति में उनकी उपयोगिता नगण्य होती है। आग में तपाने पर निरर्थक मृतिका का भाग हट जाता है और शुद्ध धातु से अति महत्त्वपूर्ण उपकरण बनने लगते हैं। अनगढ़ व्यक्तित्व को तप की आग में तपाकर उसके कुसंस्कारों का परिशोधन किया जाता है। आलस्य, प्रमाद, व्यसन, अचिन्त्य-चिन्तन, आत्महीनता, पशु प्रवृत्तियाँ, भ्रष्टताएँ, दुष्टताएँ व्यक्तित्व के साथ आदिम कालीन विरासतों के रूप में प्राणी में लिपटी चली आती हैं। इनका परिशोधन तप की आग में होता है। काय-कलेवर ईश्वर प्रदत्त अत्यन्त सामर्थ्यवान यन्त्र है, उसमें अगणित शक्तियाँ प्रसुप्त रूप में पड़ी हैं, उन्हें तप की गर्मी देकर उभारा जा सकता है और आत्मशक्ति सम्पन्न बनाया जा सकता है।

गर्मी से मिलने वाले लाभों को आये दिन आँखों के सामने प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। कच्ची मिट्टी के बने मकान अल्पजीवी होते हैं, पर उसी मिट्टी को आग में पकाकर जब ईंटें पक्की कर ली जाती हैं तो उनसे बने मकान चिरस्थायी होते हैं। पानी को गरम करने से भाप बनती है और उससे प्रेसर कुकर से लेकर स्टीम इंजन चलने जैसे कितने ही आश्चर्यजनक कार्य होते हैं। बारूद की शक्ति आग की चिनगारी छूने पर ही प्रचण्ड बनती है। पृथ्वी पर जीवन सूर्य की गर्मी से ही जन्मा है। गर्मी से ही बादल बनते और धरती की प्यास बुझाते हैं। मादा अपनी गर्मी से भ्रूण एवं अण्डे को पकाती है। अग्नि संस्कार से सामान्य वस्तुएँ उपयोगी रसायनें, औषधियाँ बन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाती हैं। चूल्हा न जले तो भोजन पकने की बात ही न बने। शरीर में जब तक गर्मी है तब तक जीवन है। गर्मी से हर वस्तु फैलती और विकसित होती है। वनस्पतियों का उगना और फूलना-फलना उष्णता के अनुपात पर निर्भर रहता है। मशीनों का चलना ऊर्जा से ही सम्भव होता है। समस्त कल-कारखाने जलने वाला ईंधन मँगाते हैं। प्रकाश प्रकारान्तर से गर्मी ही है। यदि वह न हो तो अन्धकार और स्तब्धता ही इस संसार में शेष रह जायेगी। तब जीवन के चिह्न भी दृष्टिगोचर न होंगे। गर्मी का महत्त्व भौतिक जगत में कितना है, इसे समझ लेने के उपरान्त किसी को यह सन्देह नहीं रहना चाहिए कि चेतना के—आत्मा के विकास के लिए तपसाधना द्वारा आध्यात्मिक उष्णता का उत्पन्न करना कितना अधिक आवश्यक है।

इतिहास, पुराणों को देखने से पता चलता है कि प्राचीन काल के ऋषि मुनि तप-साधना द्वारा आत्म-शक्ति विकसित करते थे। उच्च उद्देश्यों के लिए जो त्याग बलिदान भरे तप किये जाते हैं इन्हीं के सहारे सामान्य मनुष्यों को ऐतिहासिक महामानव बनने का अवसर मिला है। जिनके चरणों पर संसार के श्रद्धा सुमन चढ़ते हैं उन्हें यह सौभाग्य-सम्पन्नता या प्रतिभा के आधार पर नहीं व्यक्तित्व को परिष्कृत करने वाले—आदर्शों के लिए—कष्ट सहने का साहसे देने वाली तपश्चर्या के सहारे ही उपलब्ध हुआ है। चेतना में उत्कृष्टता उभारने का व्यायाम योग कहलाता है और काय-कलेवर की आदतों को आदर्शवादी गतिविधियों में रस लेने में अभ्यस्त बना लेना तप है। योग और तप को बिजली के ठण्डे और गरम तारों की तरह समझा जा सकता है, जिनका समन्वय होते ही आत्म-शक्ति की प्रचण्ड धारा प्रवाहित होने लगती है।

इतना समझ लेने के उपरान्त इस निष्कर्ष पर पहुँचने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि लेखनी और वाणी के माध्यम से जिस भावनात्मक परिष्कार का प्रयास किया जा रहा है उसमें ज्ञानयज्ञ का कितना महत्त्व है और उससे भी एक कदम आगे बढ़कर आत्मशक्ति के सम्वर्धन की कितनी अधिक आवश्यकता है। यहाँ यह भी स्पष्ट हो जाता है कि आत्मशक्ति के विकास में उच्चस्तरीय साधना, जिसमें त्याग और तप के तत्त्व मिले हुए हों, कितनी अभीष्ट है। चेतना के परिष्कार का कार्य जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही कठिन भी है। इस कार्य में वस्तुओं का उपयोग स्वल्प मात्रा में ही हो सकता है। प्रयोजन दो ही साधनों से सिद्ध होगा—एक सद्ज्ञान संवर्धन दूसरा आत्म-साधन। इनमें से एक को भी वरिष्ठ या श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता है। दोनों की उपयोगिता गाड़ी के दो पहियों की तरह है, जिनके समन्वय से ही उस महान् प्रयोजन की सिद्धि हो सकती है, जिसके लिए युग-निर्माण का अभियान चल रहा है। मिशन के प्रस्तुत कार्यक्रमों में इन दोनों ही तथ्यों का समान रूप से समन्वय रखा गया है। ज्ञानयज्ञ के विस्तार का जितना प्रयत्न है उतना ही आत्मोत्कर्ष की योग-तप परक साधनाओं पर भी जोर दिया जा रहा है। "विचार क्रान्ति" द्वारा विचारणा में श्रेष्ठता का संवर्धन और तप साधना द्वारा भाव संवेदना में श्रद्धा, भक्ति का देवत्व अवतरण करने के लिए समान रूप से प्रयास चलते हैं।

व्यक्ति और समाज का नव निर्माण चेतनात्मक उत्कृष्टता के अभिवर्धन पर ही सम्भव है। इसके लिए ज्ञानयज्ञ और तप-साधना के दोनों पक्ष ऐसे ही हैं जैसे पक्षी के दो पंख—मनुष्य के दो हाथ—दो पैर। इन दोनों की ही समान उपयोगिता और समान आवश्यकता है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। आत्म-शक्ति का उद्भव इन दोनों के समन्वय से ही सम्भव हो सकता है। सद्भाव सम्पन्न वातावरण का निर्माण करने के लिए जिस सृजन क्षमता की—चेतनात्मक ऊर्जा की आवश्यकता पड़ेगी उस आत्मशक्ति का उद्भव युग परिवर्तन का प्रधान साधन है। इस उपार्जन को व्यक्तियों की प्रयोगशाला में किया जाता है। जलते हुए दीपक ही दूसरे दीपकों को जलाते हैं। दीपकों को तेल और बत्ती से सम्पन्न किया जाता है तब उनमें ज्योति जलती है। जलती ज्योति से प्रकाश फैलाता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और प्रकाश का अवलम्बन करके ही अन्धकार के भटकाव से छुटकारा मिल सकता है। प्रस्तुत अन्धकार युग से छुटकारा पाने के लिए ऐसे प्रकाश-स्तम्भों की जरूरत है जो स्वयं प्रकाशवान हों और दूसरों को प्रकाश दे सकें। प्रखर प्रतिभाओं का निर्माण अपने युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्हीं के पुण्य प्रयास से—प्रबल पुरुषार्थ से युग-परिवर्तन जैसा व्यापक कायाकल्प संभव हो सकता है।

युगशक्ति का उद्भव आत्मशक्ति के उदय के रूप में ही होगा। युग का परिवर्तन इसी क्षमता के उद्भव पर निर्भर है। इसके लिए युग निर्माण योजना द्वारा ये तीन प्रयास चल रहे हैं—(१) ब्रह्मवर्चस् आरण्यक एवं शान्तिकुञ्ज में योगाभ्यास—तप साधना में छोटे-बड़े प्रयोग। (२) लाखों साधकों को उनके निजी जीवन में उपासना एवं ज्ञान-साधना का मार्ग-दर्शन, प्रोत्साहन एवं सहयोग (३) नवरात्रि के पुनीत पर्व पर व्यापक अभियान के रूप में तपचर्श्या एवं ज्ञान साधना का सुव्यवस्थित सामूहिक प्रचलन। लोकशिक्षण की दृष्टि से नवरात्रि पर्व के सामूहिक अनुष्ठान अत्यन्त प्रेरणाप्रद भूमिका निभा रहे हैं। इनके माध्यम से नव निर्माण का वातावरण बनने की पूरी-पूरी सम्भावना बन रही है।

नवरात्रि पर्व पर तपश्चर्या और ज्ञान साधना का समन्वय

वर्ष में दो अवसर नवरात्रि के ऐसे हैं जिन्हें आध्यात्मिक पर्व कहा जाता है। जिनमें साधना, तपश्चर्या की प्रमुखता रहती है। किन्तु उन दोनों में लोक शिक्षण के लिए नौ दिवसीय साधना सत्र की बहुत ही अच्छी व्यवस्था हो सकती है। आश्विन और चैत्र के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से नवमी तक नौ-नौ दिन के यह पर्व आते हैं। इनमें यों कई लोग अपने व्यक्तिगत व्रत उपवास, जप अनुष्ठान, पूजा-पत्री भी करते हैं किन्तु प्रचलन उन्हें सामूहिक रूप में मनाने का ही है। इस अवसर पर सर्वत्र अपने-अपने ढंग के उत्सव आयोजन होते हैं। उस उपस्थित जन समुदाय की उपासना क्रम में थोड़ा अन्तर भले रहे पर उद्देश्य आत्मिक पवित्रता और प्रखरता के संवर्धन का ही रहता है। उन मान्यताओं के साथ तालमेल बैठाते हुए व्यक्ति को ऊँचा उठाने वाला और समाज को आगे बढ़ाने वाला लोक शिक्षण भली प्रकार सम्पन्न हो सकता है।

बंगाल में दुर्गा पूजा, राजस्थान में गनगौर, गुजरात में अम्बाजी गरवा, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में रामलीला, झाँकी आदि, आसाम, त्रिपुरा में रासलीला आदि धार्मिक समारोह इन दिनों होते हैं। पूजा का स्वरूप जो भी हो पर उसमें आस्तिकता के, आध्यात्मिकता के, धार्मिकता के परिपोषण करने वाले सभी तत्त्वों का समन्वय है। उन्हें उभारकर जन-मानस को आन्तरिक उत्कृष्टता और सामाजिक सुव्यवस्था के लिए प्रोत्साहित, प्रशिक्षित किया जा सकता है।

नवरात्रि का अपना महत्त्व है। यह ऋतु संध्या है। दिन और रात्रि के मिलन की सन्धि वेला में की गई साधन उपासना कहलाती है और उस समय ईश्वराराधन करने का अधिक महत्त्व माना जाता है, ठीक इसी प्रकार ऋतु संध्याओं का समय नवरात्रि कहलाता है। यों कहने को तो छः ऋतुएँ होती है पर उनमें मुख्य सर्दी और गर्मी दो ही हैं। इन दोनों का मिलन काल आश्विन और चैत्र में जिन दिनों आता है वह नौ-नौ दिन के समय नवरात्रि कहलाते हैं। उन दिनों शरीरों, मनों और प्रकृति के विभिन्न घटकों में विशेष रूप से उल्लास उभरा रहता है। वातावरण में भी विशेषता छाई रहती है। शरीर अपने भीतर दबे हुए रोगों को निकाल बाहर करने के लिए इन्हीं दिनों उभार प्रयास करता है। अस्तु कई तरह के छुट-पुट रोग इन दिनों बढ़ जाते हैं। कुशल चिकित्सक इस अवसर को शरीर शोधन के लिए विशेष उपयोगी मानते हैं और कल्प चिकित्सा के अनुरूप वमन, विरेचन, स्नेहन, स्वेदन, नस्य आदि उपचार करके रोगों की जड़ काटते हैं। दुग्ध कल्प, छाछ कल्प आदि इन दिनों अधिक सफल होते हैं। प्राचीन काल में वृद्धों का यौवन वापस लौटाने की कायाकल्प चिकित्सा प्रचलित थी उसके लिए भी उपयुक्त अवसर यही माना जाता था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रातःकाल हर किसी के मन में उत्साह रहता है। पक्षी उसको व्यक्त करने के लिए चहचहाते-फुदकते-उड़ते देखे जाते हैं। अन्य प्राणियों में उसी प्रकार की उत्साह भरी हलचलें उस समय देखी जा सकती हैं। आश्विन नवरात्रि में शरद ऋतु रहती है। शरद वर्णन में कवियों ने, कलाकारों ने बहुत कुछ कहा—लिखा है। प्रकृति की शोभा देखते ही बनती है। वसन्त की तरह ही अनेक स्थानों पर विशेषतया पहाड़ी प्रान्तों में शरदोत्सव भी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। शरद पूर्णिमा की शोभा अनौखी होती है। उससे अमृत झरता माना जाता है। रात्रि को खीर बनाकर शरद चन्द्र की चाँदनी में रखने और उसे प्रातः खाने की प्रथा उत्तर भारत में सर्वत्र प्रचलित है। उससे शरद पूर्णिमा के चन्द्रामृत को खीर में मिलाकर खाने की मान्यता है। चैत्र नवरात्रि में वसन्त होता है। आरम्भ तो वह माघ सुदी पंचमी से सरस्वती के जन्म दिन से होता है पर चलता चैत्र भर है। बसन्त में प्रकृति की शोभा देखते ही बनती है। वृक्ष वनस्पतियाँ उन्हीं दिनों नवीन पल्लव धारण करते और फूलते हैं। इसके उपरान्त में कुछ ही समय में फलों से लद जाते हैं। वसन्त ऋतु में उभरा हुआ प्रकृति का उल्लास अपना प्रभाव समूचे वातावरण पर डालता है। जीवधारियों के मन एक विशेष प्रकार की मादकता से भर जाते हैं। उनमें प्रणय उत्साह उत्पन्न होता है। अधिकांश प्राणियों के गर्भधारण का ऋतु काल चैत्र के वसन्त या आश्विन के शरद में होता है। माँसाहारी आश्विन में और शाकाहारी चैत्र में गर्भ धारण करते हैं। आश्विन में वैसाखी फसल बोई जाती है। गन्ना जैसी फसलों का चैत्र में आरोपण होता है। माली अपने उद्यानों में नये पौधे शरद या वसन्त में ही लगाते हैं। बसन्तोत्सव बहुत जगह समारोहों के रूप में मनाये जाते हैं। प्रकृति और प्राणी अपने ढंग से अनायास ही उस सामूहिक उल्लास में भागीदार बनते, प्रकृति की शोभा बढ़ाते और स्वयं मोद मनाते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से भी नवरात्रियों का विशेष महत्त्व है। धर्म ग्रन्थों में इन दिनों आत्मा के ऋतुमती होने का अलंकारिक संकेत किया है और कहा है उन दिनों वह अपने प्रियतम परमात्मा से मिलने के लिए विशेष रूप से आतुर होती है। उन दिनों किया गया ब्रह्म सम्बन्ध आत्मा को ब्रह्म बीज के रूप में उपलब्ध होता है। उस गर्भ धारा में उसे श्रेय सन्तान की प्राप्ति होती है। इस श्रेय का प्रसव होने पर उसे भौतिक जीवन से सिद्धि और आत्मिक जीवन में ऋद्धि की सम्पदाओं और विभूतियों का समग्र वैभव प्राप्त होता है। प्रायः सायं के समय दिन रात्रि के मिलन काल में जिस प्रकार दैनिक संध्या वन्दन किया जाता है उसी प्रकार वार्षिक संध्या भी दो बार आश्विन और चैत्र में की जाती है। उस समय में की गई तप साधना पूजा आराधना अन्य समयों की अपेक्षा अधिक अधिक फलवती होती है।

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए नवरात्रि को एक उपासना पर्व के रूप में किसी न किसी तरह हिन्दू धर्मानुयायी मनाते हैं। रोजे रमजान की तरह यह अवधि भी उपवास काल है। यह नौ दिन का व्रत उपवास सार्वजनिक प्राकृतिक चिकित्सा उपचार के समतुल्य माना जा सकता है। इसमें प्रायश्चित्य के मल निष्कासन और पवित्रता के अवधारण दोनों ही भाव सम्मिश्रित हैं। ईश्वर का अवतार अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना के लिए होता है। आश्विन नवरात्रि के साथ दुर्गा अवतरण का उनके द्वारा असुर संहार का इतिहास जुड़ा है। उन्हीं दिनों रावण वध भी हुआ था। इसी प्रकार के अन्य कई इतिहास असुरता निराकरण का परिचय देते हैं। चैत्र की नवरात्रि के माथ राम जन्म एवं रामराज्य की स्थापना का इतिहास है। विक्रमादित्य का शासन निकटवर्ती रामराज्य कहा जा सकता है। उसकी समृति में विक्रमी संवत्सर चला है। इस प्रकार के अन्य सृजनात्मक इतिहास, चैत्री नवरात्रि के साथ हैं। भगवान के अवतार के दो उद्देश्यों में से एक सृजन संस्थापन को चैत्र की नवरात्रि में और दूसरे ध्वंस परिवर्तन को आश्विन की नवरात्रि के साथ गुथा जुड़ा देखा जा सकता है। इन दो प्रवृत्तियों में युग की अवांछनीयताओं के निराकरण की और उज्ज्वल भविष्य के लिए अभीष्ट सत्प्रवृत्तियों के सम्वर्धन की किरणें उदय होती हुई दीखती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन दोनों नवरात्रियों के पुण्यकाल को नव युग के सृजन प्रयोजन में पूरी तरह उपयोगी किया जाना चाहिए। गायत्री उपासना के नौ दिवसीय अनुष्ठान विचारशील वर्ग में भली प्रकार प्रचलित हैं। मध्यकाल में जब बहु देववाद की प्रबलता थी तब नवरात्रियों की मूल उपासना पद्धति में अनेकानेक पूजा विधानों का समावेश हो गया। वस्तुतः वह गायत्री महामन्त्र के नौ दिवसीय चौबीस हजार पुरश्चरण का पुनीत पर्व है। प्राचीनकाल में उसका यही रूप था। अभी भी वह महान् परम्परा ध्वंसावशेष के रूप में किसी न किसी प्रकार प्रचलित ही है। इन दिनों कुछ विशेष—साधना करने वालों में से प्रायः आधे से कम लोग अन्य देवी-देवताओं की आराधना करते हैं। आधे से अधिक लोग अभी भी इस पर्व को गायत्री अनुष्ठान के रूप में ही मनाते हैं और यह उपयुक्त भी है। इससे एकरूपता, समस्वरता—बढ़ती है और इससे बिखराव से विरत होकर एकता की दिशा में चरण बढ़ते हैं। संसार के सभी धर्मों में उनके पर्वों का एक इतिहास, एक उद्देश्य और एक स्वरूप है। नवरात्रि पर्व को भारतीय संस्कृति का विशिष्ट आधार मानना हो तो उसके साथ गायत्री उपासना ही सर्वमान्य हो सकती है। यह महामन्त्र ही भारतीय तत्त्व ज्ञान का बीज है। गायत्री माँता को वेद माता विश्वमाता और भारतीय संस्कृति की जननी कहा जाता है। गुरुमन्त्र इसी का नाम है। शिखा सूत्र इसी के स्वरूप हैं। सन्ध्या का प्राण गायत्री जप है। इस प्रकार यदि जन-साधारण को वस्तुस्थिति समझाई जा सके तो प्राचीन काल की तरह अभी भी गायत्री को उसका सर्वोपरि स्थान पुनः प्राप्त हो सकता है। नवरात्रि पर्व को गायत्री अनुष्ठानों का पर्व माना जा सकता है। इसके लिए नये सिरे से कुछ करना नहीं है—वस्तुस्थिति सर्वसाधारण को समझानी भर है।

उपासना की प्रक्रिया अपने आप में मानसिक परिष्कार एवं अन्तःकरण की उत्कृष्टता उभारने के तत्त्वज्ञान एवं विज्ञान से भरपूर है। उसमें सदाचरण अपनाने, कुसंस्कार त्यागने एवं व्यक्तित्त्व की गरिमा विकसित करने की प्रबल प्रेरणाएँ भरी हुई हैं। मूढ़ मान्यताओं के कोल्हू में बैल की तरह चलना हो तो बात दूसरी है अन्यथा उपासना विज्ञान का तात्पर्य और लक्ष्य यदि ठीक तरह समझना और समझाया जाना सम्भव हो सके तो उसमें व्यक्ति और समाज की उत्कृष्टता बढ़ाने वाली समस्त सम्भावनाएँ कूट-कूट कर भरी हुई देखी जा सकती हैं। पूजा उपासना के व्रत उपवास के नियम प्रतिबन्धों का स्वरूप और उद्देश्य यदि लोग सही रीति से समझ सकें तो पाया जायेगा कि विज्ञान के अधार पर इस प्रक्रिया में अचेतन और उच्च चेतन मन की प्रसुप्त दिव्य क्षमताओं को जगाने वाली कितनी ही रहस्यमयी संभावनायें विद्यमान हैं।

गायत्री मन्त्र सद्बुद्धि का मन्त्र है। उसमें ईश्वर और विवेकशीलता को ही एक माना गया है। ऋतम्भरा प्रज्ञा की ही गायत्री मन्त्र में उपासना है। यह प्रज्ञा सद्विवेक के अर्थ में ही प्रयुक्त होती है जिसके तीन फलितार्थ माने गये हैं। (१) सद्भाव (२) सद्ज्ञान (३) सत्कर्म। इसी को त्रिपदा कहते हैं। मानवीय चेतना के तीन स्तर माने गये हैं जिन्हें अध्यात्म की भाषा में स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर कहते हैं। व्यवहार की भाषा में इन्हें संवेदना, विचारणा और सक्रियता कहा गया है। इन तीनों का स्तर उत्कृष्ट आदर्शवादिता से जुड़ा हुआ हो तो उसे सत्‌चित आनन्द से, सत्य, शिवं, सुन्दरम् से—त्रिपदा गायत्री से जुड़ा हुआ माना जायेगा। इस स्थिति को प्राप्त करना और व्यक्तित्त्व का सर्वतोमुखी परिष्कार एक ही बात है। गायत्री उपासना का लक्ष्य चेतना को उस स्तर पर पहुँचाना है जिसे देवत्व की स्थिति कहते हैं। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए गायत्री मन्त्र के अक्षरों के अनुरूप जीवन नीति को ढालना चाहिए। यह जीवन साधना है, इसकी प्रेरणा उन शिक्षाओं से मिलती है जो गायत्री के मन्त्रार्थ में सन्निहित हैं। इसे समझना और समझाना ज्ञान पक्ष है। इसके लिए नवरात्रि में सायंकाल कथा प्रवचनों का आयोजन होता है और प्रयत्न यह किया जाता है कि उपासना में संलग्न व्यक्ति गायत्री तत्व दर्शन के ब्रह्म विद्या के अनुरूप अपने दृष्टिकोण को ऊँचा उठाने एवं क्रिया-कलाप की श्रेष्ठता के साँचे में ढालने की प्रबल प्रेरणा ग्रहण करे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रातःकाल की उपासना को अभीष्ट प्रयोजन के लिए किया गया मनो-वैज्ञानिक व्यायाम या उपचार कह सकते हैं। साधना के सात चरण हैं। इन्हें सप्त लोक भी कहते हैं। इन सात सीढ़ियों पर चढ़कर स्वर्ग में पहुँचने की बात कही जाती है। इन्हें सात व्याहृतियाँ एवं सात ऋषि भी कहते हैं। (१) आत्म शोधन (२) देव पूजन (३) सोऽहम् प्राणायाम (४) जप (५) ध्यान (६) खेचरी मुद्रा (७) सूर्यार्घ्य दान। इन सात चरणों में समग्र गायत्री उपासना सम्पन्न होती है। उन्हें श्रद्धा और संकल्प पूर्वक क्रियान्वित किया जाय तो इस योगाभ्यास से संचित कुसंस्कारों के निराकरण और सुसंस्कारिता के अवधारण में असाधारण सफलता मिलती है।

चेतना की उच्चस्तरीय भाव संवेदनाओं को उभारना और परिष्कृत करना ही महामानव ऋषि, जीवन-मुक्त, देव बनने का राजमार्ग है। उसी पर चलते हुए आत्मा को परमात्मा बनाने का अवसर मिलता है। इस दिशा में प्रगति करने के लिए 'श्रद्धा' की शक्ति जगानी पड़ती है। श्रेष्ठता से असीम प्यार को श्रद्धा कहते हैं। उपासना की ध्यान धारणा का समूचा कलेवर श्रद्धा को बलवती करने के लिए सजाया गया है। उपासना के क्रिया कृत्यों के साथ ईश्वर का सान्निध्य विचित्र रूप से परिकल्पित-संकल्पित किया जाता है। संसारी वस्तुओं और प्राणियों के साथ रहते-रहते प्राणी उसी ढाँचे में ढल जाता है। उसमें भौतिकी पाशविकता हीं भरी रहती है। कभी-कभी वह भी निकृष्ट बनकर पैशाचिकता तक जा पहुँचती है। इस पतन प्रवाह से रोककर चेतना को ऊर्ध्वगामी बनाने के लिए ईश्वर का सान्निध्य ही एक मात्र अवलम्बन है। उपासना काल में आत्म चेतना को परमात्म चेतना के साथ लपेटने और दोनों के बीच समीपतम एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है। एकता का अर्थ है दोनों की अन्तःस्थिति का समान हो जाना। ईश्वरीय महानताओं से साधक का अन्तःकरण भरने लगे, यही उपासना का प्रयोजन है। जिस प्रकार ईश्वर सोचता है, जो ईश्वर चाहता है, जो ईश्वर करता है वही हम करने लगें। ईश्वर हमारा उदार दृष्टिकोण—विशाल हृदय और सर्वहितकारी क्रिया-कलाप हो, इस लक्ष्य की ओर जो जितना बढ़ पाता है वह ईश्वर का उतना ही बड़ा भक्त बन जाता है। उसी अनुपात से उसे ईश्वर की अनुकम्पायें—विभूतियाँ, ऋद्धि-सिद्धियाँ मिलती चली जाती हैं। गायत्री उपासना का विज्ञान ऐसा है जिसे अपनाने से साधक आत्मोत्कर्ष का परम जीवन लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में तेजी से बढ़ता है। अस्तु उसकी उपयोगिता को स्वास्थ्य-सम्वर्धन, आमोद-प्रमोद, यश-वैभव से भी बढ़कर माना गया है। गायत्री उपासना के फलस्वरूप मिलने वाले सत्परिणाम के प्राप्त होने में यही रहस्य है कि इस प्रक्रिया को अपनाने से जो आत्मबल बढ़ता है उससे आत्म-निर्माण का पुरुषार्थ बन पड़ता है और निखरा हुआ व्यक्तित्त्व स्वयं जीवन का सच्चा लाभ उठाता है—सन्तुष्ट—प्रसन्न रहता है। विकसित, पुलकित और सरस अन्तःस्थिति प्राप्त करना स्वर्गीय सुख का प्रत्यक्ष रसास्वादन है।

गायत्री को निराकार मानने में उसे श्रेष्ठता, मानवता, सद्भावना पवित्रता, प्रखरता, विवेकशीलता जैसी सत्प्रवृत्तियों का समन्वय माना जा सकता है। सद्बुद्धि की ऋतम्भरा प्रज्ञा की देवी तो वह है ही। मातृ शक्ति के रूप में, गायत्री के रूप में ईश्वर की प्रतिमा बनाई गई है। सविता—प्रातःकालीन सूर्य के रूप में भी गायत्री की उपासना की जाती है। सविता की दो विशेषताएँ हैं— (१) प्रकाश—ज्ञान—प्रज्ञा (२) अग्नि—ऊर्जा—शक्ति। इन दोनों का व्यक्तित्त्व में अधिकाधिक आते जाना यह सविता उपासना का प्रयोजन है। गायत्री उपासना में सविता को समन्वित रखा जाता है। निराकारवादी मात्र सविता को उपासना प्रतीक मानते हैं और उसके मध्य में ॐकार का दर्शन करते हैं। साकारवादी माता के रूप में गायत्री की आकृति बनाते हैं और उसके चेहरे पर अथवा चारों ओर सविता का तेज फैले होने का ध्यान करते हैं। साकार और निराकार दोनों ही उपासनाओं का उद्देश्य आत्म-चेतना को ब्रह्म-चेतना के साथ गुँथा देना और वरिष्ठ की विशेषताओं से कनिष्ठ को—ईश्वर की विभूतियों से जीव को—लाभान्वित कराना है।

गायत्री उपासना का साधना विधान और तत्त्व ज्ञान दोनों ही अमृत फल हैं। इनकी व्याख्या विवेचना करने—स्वरूप समझने और अभ्यास कराने का क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अवसर नवरात्रि में जैसा अच्छी तरह मिल सकता है वैसा अन्य किसी समय नहीं। गायत्री को भारतीय संस्कृति की जननी—बीजशक्ति माना गया है। उसे वेद माता—विश्व माता कहते हैं। इसकी यथार्थता समझने के लिए चिन्तन और अभ्यास के दोनों ही प्रयोजन नवरात्रि में पूरे होते हैं। अस्तु गायत्री उपासना के साथ नवरात्रि साधना के प्राचीन प्रचलन को सार्वजनिक उपयोग में लाने की परम्परा फिर से स्थापित की जानी चाहिए। इसमें देव संस्कृति की वास्तविक सेवा है। व्यक्तित्त्व के निखार और समाज के सुधार की सम्भावना तो इस प्रक्रिया के साथ प्रत्यक्ष ही जुड़ी हुई है।

नवरात्रि साधना सामूहिक गायत्री अनुष्ठान के रूप में मनाने के लिए प्रतिभाशाली धर्म प्रेमियों को आगे आना चाहिए और यह देखना चाहिए कि गायत्री उपासना के प्रति पहले से ही किन में अभिरुचि है। उनके पास टोली बनाकर जाया जाय और आयोजन की रूप-रेखा समझाते हुए उन्हें सम्मिलित रहने के लिए सहमत करना चाहिए। यह व्यक्तिगत सम्पर्क का प्रयत्न हुआ। यदि सम्भव हो तो उपयुक्त स्थानों में विचार गोष्ठियों का आयोजन करके नवरात्रि के पुनीत पर्व तथा उसमें की गई सामूहिक साधना का सर्व-साधारण को परिचय कराया जा सकता है। यदि ऐसा प्रचार पहले से ही करना आरम्भ कर दिया जाय तो अनेक नये व्यक्ति उस धर्मानुष्ठान में सम्मिलित होने के लिए सहज ही सहमत हो सकते हैं। पर्चे वितरण करके भी इसके लिए आकर्षण उत्पन्न किया जा सकता है और सम्मिलित होने वालों की सूची निरन्तर बढ़ती रह सकती है। जिनमें कभी उपासना का उत्साह था, पीछे शिथिल हो गया, उनके प्रसुप्त संस्कारों को तो और भी जल्दी जगाया जा सकता है। यदि यह सामूहिक साधना का आयोजन करने का सच्चे मन से निश्चय किया जाय तो पहले से तनिक भी वातावरण न रहने पर भी प्रतिभाशाली व्यक्ति उसके लिए अनुकूलता उत्पन्न कर सकते हैं। नवरात्रि और गायत्री मन्त्र दोनों की गरिमा सभी को विदित है, मात्र उत्साह उत्पन्न करना, रास्ता बताना और व्यवस्था करना ही वह प्रयास है जिसे यदि प्रतिभाशाली व्यक्ति आगे बढ़कर कर सकें तो भारतवर्ष में कोई भी स्थान ऐसा नहीं हो सकता जहाँ छोटे-बड़े रूप में यह पुनीत पर्व सामूहिक गायत्री साधना के रूप में न मनाया जा सके और अनेक साधक उत्साहपूर्वक उसमें भाग लेने के लिए तैयार न हो सकें।

नौ दिन के अनुष्ठान में २४ हजार गायत्री जप करना पड़ता है। माला १०८ दाने की होती है। इसमें आठ भूल-चूक के लिए छोड़ दिये जाते हैं। १०० की गणना होती है। २४ हजार जप नौ दिन में पूरा करने के लिए हर दिन २७ मालाएँ पूरी करनी पड़ती हैं। औसतन एक घण्टे में १०-११ मालाएँ हो जाती हैं। इस प्रकार ढाई-पौने तीन घण्टे का समय इस जप में लगता है। आरम्भ में षटकर्म, देव पूजन, सोऽहम् साधना में सात मिनट और अन्त में खेचरी मुद्रा अर्घ्यदान में सात मिनट, पन्द्रह मिनट सब मिला कर हुए। इस प्रकार कुल मिलाकर तीन घण्टे से कम में ही यह कृत्य पूरा हो जाता है। इतना एक बार में प्रातःकाल पूरा न किया जा सके तो प्रातः-सायं दो बार में पूरा कर सकते हैं। माला न होने पर घड़ी के सहारे भी इतने समय उपासना कृत्य पूरा करके उसकी पूर्णता मानी जा सकती है।

कई व्यक्ति इतना समय नहीं निकाल सकते पर इस पर्व पर साधना करना चाहते हैं। उनके लिए ऐसी साधनाएँ भी हैं जो एक घण्टा नित्य लगाने पर भी पूरी होती रह सकती हैं। यथा (१) पंचाक्षरी गायत्री (ॐ भूर्वः स्वः) का जप (२) गायत्री चालीसा के १२ पाठ नित्य (३) गायत्री-मन्त्र लेखन १०८ नित्य। जो लोग स्नान नहीं कर सकते वे हाथ पैर धोकर भीगे तौलिए से शरीर पोंछकर कपड़े बदलकर मौन मानसिक जप कर सकते हैं। जिनके पास पूरे नौ दिन का अवकाश नहीं है वे अन्तिम तीन दिन में जितनी बन पड़े उतनी नियमित उपासना करके इस आयोजन में भागीदार रह सकते हैं।

सामान्य गायत्री जप में कोई विशेष प्रतिबन्ध नहीं होते किन्तु अनुष्ठानों के साथ कुछ तपश्चर्याएँ जुड़ी होती हैं। गायत्री अनुष्ठानों में पाँच नियम पालन करने का विधान है—(१) उपवास (२) ब्रह्मचर्य (३) भूमि शयन (४) अपने शरीर की सेवा स्वयं करना (५) चमड़े से बनी वस्तुओं का त्याग। उनमें से प्रथम दो अनिवार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप से आवश्यक हैं। ब्रह्मचर्य पालन करना ही चाहिए। पूर्ण उपवास द्रव पदार्थों पर रहने को माना गया है। इसमें दूध, छाछ, फलों का रस, शाकों का रस जैसी वस्तुएँ ली जाती हैं। जो इतना नहीं कर सकते उनके लिए भी सरलता है। जैसे—(१) फलाहार, फल शाक पर निर्वाह (२) एक समय भोजन एक समय फलाहार (३) नमक शक्कर का त्याग अस्वाद व्रत (४) मात्र नमक का त्याग अलौना भोजन (५) उबाला हुआ भोजन, चावल, दाल, खिचड़ी, दलिया, शाक आदि पर रहना (६) एक वस्तु खाने की दूसरी लगाने की लेते रहना जैसे—दाल, चावल, दलिया, दूध रोटी शाक आदि। थाली में दो ही वस्तुएँ रहनी चाहिए। इनमें से जिससे जिस स्तर का उपवास सध सके साधना चाहिए। जमीन के स्थान पर तख्त पर भी सोया जा सकता है। पलंग चारपाई की ही रोकथाम है। अपने शरीर की सेवा स्वयं करने से तात्पर्य है,—हजामत, कपड़े धोना, बिस्तर उठाना जैसे अपने कामों को आप करना, न बन पड़े तो पति-पत्नी एक दूसरे के शारीरिक काम कर सकते हैं। भोजन बाजार का न लिया जाय। चमड़े के जूतों के स्थान पर इन दिनों रबड़, प्लास्टिक के जूते-चप्पल सहज ही मिल सकते हैं। न मिलने पर नंगे पैरों नौ दिन निर्वाह हो सकता है।

जितने व्यक्ति नवरात्रि साधना के लिए तैयार हों उनकी संख्या को ध्यान में रखते हुए सामूहिक आयोजन के लिए सुविधाजनक स्थान चुना जाय। बिछावन, रोशनी, सफाई स्थान सज्जा आदि का समुचित प्रबन्ध रखा जाय। कार्य नियत समय पर आरम्भ किया जाय। सूर्योदय से आधा घण्टा पूर्व तो उसे आरम्भ कर ही देना चाहिए। सब लोग पंक्तिबद्ध बैठें। महिलाओं, बच्चों एवं पुरुषों की पंक्तियाँ अलग रहें। पंचपात्र, चम्मच सभी के अपने रहें।

सुसज्जित पूजा मंच पर गायत्री माता का चित्र स्थापित किया जाय। दीपक, कलश, अगरबत्ती, गुलदस्ता, शंख आदि माँगलिक वस्तुएँ पूजा वेदी पर सुशोभित रहें। उपासना के लिये घृत दीप और अगरबत्ती जलते रहें। कलश का जल नित्य सूर्यार्घ्य में चढ़ा दिया जाय। नित्य नया भरा जाय।

सभी साधक पीले दुपट्टे कन्धे पर रखें। स्त्रियाँ पीली साड़ी पहनें। पाजामे का नहीं धोती का ही उपयोग हो। पवित्रीकरण, आचमन, शिखावन्दन, प्राणायाम, न्यास, पृथ्वी पूजन, षट शोधन करने के उपरान्त देव पूजन के सब कृत्य सामूहिक रूप में किये जायँ। देवपूजन, स्वस्ति वाचन् षोडशोपचार नमस्कार के मन्त्र सब लोग साथ-साथ बोलें। सभी के हाथों में अक्षत पुष्प, जल रखा जाय और पीछे उन्हें तश्तरी में संग्रह करके पूजा वेदी पर रख दिया जाय। मस्तक पर चन्दन नित्य लगाया जाय। यज्ञोपवीत धारण, कलावा बाँधना, संकल्प यह कृत्य पहले दिन ही होते हैं। सूर्यार्घ्य दान सबकी ओर से एक व्यक्ति ही करता है। जप के साथ-साथ गायत्री माता का सविता देवता का ध्यान चलते रहना चाहिए। अन्त एक साथ किया जाय। यह बैठक दो घण्टे की हो। जो शेष रह जाय उसे पीछे पूरा कर लिया जाय। समाप्ति शान्ति पाठ के साथ की जाय। बीच में पेशाब आदि के लिए जिन्हें उठना हो वे पैर धोकर वापस बैठें। पालथी बदलने में कोई हर्ज नहीं। जो लगातार दो घण्टे नहीं बैठ सकते वे खड़े होकर भी कर सकते हैं। पर उन्हें पंक्ति में नहीं पीछे एक पृथक पंक्ति में खड़ा होना चाहिए। जहाँ बड़े सामूहिक आयोजन न हो सकें वहाँ घर के लोग भी साथ मिलजुल कर वैसा कर सकते हैं। यों एकाकी करने में भी कोई रोक नहीं है पर यथा-सम्भव प्रयास सामूहिक रूप से ही इस पर्व को मनाने का होना चाहिए।

हवन अन्तिम दिन रखा जाय। तिथियों के घटने पर भी अनुष्ठान नौ दिन में ही सम्पन्न किया जाता है। जप संख्या पहले दिनों कुछ अधिक कर ली जाय तो अन्तिम दिन पूर्णाहुति का हवन जल्दी आरम्भ किया जा सकता है। २४-२४ आहुतियाँ सभी साधक बारी-बारी देते चलें। पूर्णाहुति साथ-साथ हो। यज्ञ के बाद विसर्जन शोभा-यात्रा निकाली जाय। पूजा उपचार में काम आई हुई वस्तुएँ, हवन में से नीचे गिरी हुई सामग्री आदि समेट कर एक कलश में कर ली जाय। उस घड़े को किसी पवित्र जलाशय में बहाया या भूमि में गाड़ा जाय। गायत्री माता की झाँकी भी शोभा यात्रा में सम्मिलित रहे। आदर्श वाक्यों के पोस्टर बैंड बाजा या शंख घड़ियाल, सहगान, साथ में लाउडस्पीकर होने से शोभायात्रा बहुत अच्छी बन पड़ती है। एक रास्ते से जाने, दूसरे से लौटने पर जुलूस की प्रेरणा अधिक क्षेत्र में फैलती है। जयघोष जो निर्धारित है, वही किये जायें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुष्ठान भी एक यज्ञ है। यज्ञ में आसुरी शक्तियाँ विघ्न करती हैं। उसके संरक्षण की आवश्यकता रहती है। विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करने राम लक्ष्मण गये थे। यज्ञ के पाँच काष्ठ पात्रों में एक—'स्फय' भी होता है। जिसकी शक्ल तलवार जैसी होती है। यह संरक्षण का संकेत है। नवरात्रि में अनुष्ठानकर्त्ता यदि चाहें तो अपने संकल्प की सूचना 'शान्ति कुंज हरिद्वार' के पते पर भेज सकते हैं। उनकी साधना का संरक्षण तथा त्रुटियों का दोष परिमार्जन वहाँ होता रहेगा। संरक्षण के लिए कुछ देना नहीं पड़ता, सूचना देना ही पर्याप्त है।

रात्रि से ही यज्ञ की व्यवस्था रहनी चाहिए। प्रायः ढाई घण्टे का प्रवचन आयोजन रहे। आरम्भ और अन्त में संगीत, बीच में प्रवचन। "गायत्री महाविज्ञान" के द्वितीय भाग में गायत्री गीता, गायत्री स्मृति, गायत्री मंजरी, गायत्री हृदय, गायत्री रामायण, गायत्री लहरी आदि छोटे-छोटे संकलन हैं। इनमें बौद्धिक-नैतिक एवं सामाजिक परिष्कार के सभी तत्त्व विद्यमान हैं। इनकी व्याख्या विवेचना से बहुत ही प्रेरक प्रवचन बन सकते हैं। पहले से तैयारी कर ली जाय तो गायत्री महामन्त्र की व्याख्या में वह सब कुछ कहा जा सकता है, जिसकी नव निर्माण के लिए—जन-मानस के भावात्मक परिष्कार के लिए आवश्यकता है।

शाखा संगठनों के वार्षिकोत्सव

उपार्जन, उपभोग व्यवस्था एवं कुशलता के लिए जिस जानकारी की आवश्यकता है उसे शिक्षा कहते हैं। शिक्षा की उपयोगिता और आवश्यकता सभी समझते हैं क्योंकि उसके प्रत्यक्ष लाभ हैं। शिक्षा पर सदा से ध्यान दिया जाता रहा है। अब उस दिशा में और भी अधिक प्रयत्न हो रहे हैं। स्कूलों की संख्या, स्थिति और स्तर बढ़ाने के लिए सरकारी और गैर सरकारी प्रयत्न चल रहे हैं। भविष्य में उस दिशा में और भी अधिक प्रयत्न होने जा रहे हैं यह सन्तोष की बात है। भोजन, वस्त्र, निवास आदि की तरह शिक्षा की भी मानवीय काया की सुविधा के लिए नितान्त आवश्यकता है। इसकी जितनी अधिक व्यवस्था बन पड़ेगी भौतिक प्रगति में उतनी ही सुविधा तथा सरलता होगी।

इतने पर भी आत्मिक ज्ञान-पिपासा को शान्त करने के लिए उस विद्या की आवश्यकता बनी ही रहती है जो अन्तःकरण में उत्कृष्टता भरती और व्यक्तित्त्व को सुसंस्कृत बनाती है। दृष्टिकोण को उदात्त और जीवन को महान् बनाने में शिक्षा का योगदान तो यत्किंचित ही रहता है, उसकी प्रमुख भूमिका विद्या को ही निभानी पड़ती है। उसी को आत्म-विज्ञान, ब्रह्म-विद्या, तत्त्व-दर्शन आदि नामों से पुकारते हैं। अध्यात्म और धर्म का विशालकाय कलेवर इस विद्या तत्त्व को हृदयंगम कराने का व्यवहार में उतारने का प्रशिक्षण देने के लिए खड़ा किया गया है।

स्पष्ट है कि यदि दृष्टिकोण परिष्कृत न हो सका—भावनायें उदात्त न हो सकीं—आत्मीयता की परिधि विस्तृत न हुई—तो मनुष्य पशु प्रवृत्तियों में ही जकड़ा रहेगा। सम्पन्नता व कुशलता, समर्थता कितनी ही बढ़ी-चढ़ी क्यों न हो उपलब्ध साधनों का दुरुपयोग ही होता रहेगा। दुरुपयोग करने में हर साधन का अपने और दूसरों के लिए कष्टकारक प्रतिफल ही उत्पन्न होता है। भ्रष्ट चिन्तन और भ्रष्ट आचरण के रहते कुबेर के समान सम्पन्नता और गणेश के समान बुद्धिमत्ता भी मात्र विपत्तियों का ही उत्पादन करती रहेगी। सज्जनता के रहते स्वल्प साधनों में भी सुखपूर्वक रहा और शान्तिपूर्वक रहने दिया जा सकता है। पारस्परिक सद्भाव से उत्पन्न सहयोग, सम्मान और स्नेह की सम्मिलित प्रतिक्रिया इतनी सुखद होती है कि उसे स्वर्ग के समतुल्य कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है। मनुष्य शरीर नहीं आत्मा है। शरीर को सुविधा प्रदान करने वाले साधन जितने आवश्यक हैं उससे भी अधिक उपयोगी वे आधार हैं जो आत्मा की उत्कृष्टता का रसास्वादन कराते हैं। इन्हें प्राप्त न कर सकने पर भौतिक दृष्टि से इन्द्र जितना समृद्ध मनुष्य भी आन्तरिक दृष्टि से निरीह, दयनीय, अपंग, पीड़ित स्थिति में पड़ा कराहता रहता है। विद्या की—ब्रह्म विद्या की—आन्तरिक उत्कृष्टता की—आवश्यकता इतनी अधिक है कि उसे अन्न, जल और वायु की तरह ही आत्मा की अनिवार्य आवश्यकता कहा जा सकता है। इसके अभाव में ही अगणित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समस्यायें उपजती हैं—गुत्थियाँ उलझती हैं और व्यक्ति तथा समाज में अगणित प्रकार के शोक सन्ताप—कष्ट-क्लेश सहन करने पड़ते हैं। व्यक्ति को सुसंस्कृत सन्तुष्ट एवं समाज को समृद्ध रहना हो तो आत्म परिष्कार की उस प्रशिक्षण व्यवस्था को जुटाया जाना चाहिए जिसे विद्या कहते हैं और अध्यात्म तथा धर्म जिसके उपकरण हैं।

मनुष्य की अन्तःस्थिति को उत्कृष्टतायुक्त बनाने की व्यवस्था सदा धर्म मंच से ही चलती रही है, क्योंकि वही एक आधार अन्तःकरण के मर्मस्थल का स्पर्श करता है। जानकारियाँ तो मस्तिष्क को ही विकसित कर पाती हैं। आस्था, निष्ठा एवं श्रद्धा का क्षेत्र गहरा है। उस तक धर्म की ही पहुँच है। बुद्धि से नहीं उसे भावना से छुआ जाता है। उसके लिए आवश्यक अनुदान विश्व चेतना से—परमात्म सत्ता से ही उपलब्ध होते हैं। इसलिए उसे पाने के लिए उपासना-साधना जैसे माध्यम अपनाने पड़ते हैं। इस आवश्यकता की पूर्ति किये बिना व्यक्ति तथा समाज को प्रस्तुत दुर्गति से उबारा न जा सकेगा। अगणित समस्याओं और विभीषिकाओं का समाधान तत्त्व-दृष्टि प्राप्त किये बिना और किसी प्रकार सम्भव न हो सकेगा। युग निर्माण योजना द्वारा 'धर्म मंच से लोक शिक्षण' की प्रक्रिया उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए की जा रही है। इसे लोक कल्याण का सर्वोपरि माध्यम माना जाता रहा है। आज की स्थिति में तो उसे जीवन-मरण की समस्या सुलझाने जितना महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

युग-निर्माण योजना का दर्शन, महत्त्व और स्वरूप जिन्होंने समझा है उनके लिए यह आवश्यक है कि जिन तक इनका प्रकाश पहुँच चुका है उन्हें संगठित करें और जिन्हें उसकी जानकारी नहीं है उन्हें परिचित कराये जाने का प्रयत्न करें। इस प्रकार मिशन का प्रकाश बढ़ेगा और उस आलोक में युग की आवश्यकता पूरी कर सकने वाली सृजनात्मक प्रवृत्तियों का आरम्भ एवं अभिवर्धन ठीक तरह बन पड़ेगा। इसके लिए यह आवश्यक है कि जहाँ कहीं भी नव निर्माण योजना की थोड़ी सी भी जड़ जमी हो वहाँ उसे सींचने के लिए एक अधिक प्रभावशाली संयुक्त प्रयत्न किया जाय। इसे शाखा संगठनों का वार्षिकोत्सव कहा जा सकता है। पिछले कार्यों पर दृष्टिपात, वर्तमान का सिंहावलोकन और भविष्य का क्रिया-निर्धारण यह तीनों उद्देश्य वार्षिकोत्सव में ही पूरे होते हैं। सरकारें वार्षिक बजट बनाती हैं—बही खाते हर साल बदले जाते हैं। संस्थाओं के वार्षिक अधिवेशन होते हैं। सरकारी टैक्स हर साल चुकाने पड़ते हैं। परीक्षायें वार्षिक होती हैं। तरह-तरह के लाइसेंस हर साल बदले जाते हैं। और भी बहुत कुछ वार्षिक क्रम में होता है। युग निर्माण शाखाओं को भी अपने लक्ष्य की ओर अधिक सुव्यवस्थित रूप से प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिए वार्षिकोत्सव की आवश्यकता समझनी चाहिए और उसे सम्पन्न करने के लिए तैयारी करनी चाहिए।

मिशन के शाखा संगठनों के वार्षिकोत्सव विशुद्ध कामकाजी हैं। उनका उद्देश्य वर्ष में एक बार अपने सभी क्रियाशीलों, सहयोगियों, समर्थकों, शुभचिन्तकों को एक स्थान पर एकत्रित करके—उनमें पारस्परिक कौटुम्बिकता की भावना परिपक्व करना है। इसके अतिरिक्त वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए अगले वर्ष की क्रिया पद्धति का निर्धारण करना भी है। चूँकि सभी संगठन केन्द्र से प्रकाश प्राप्त करते हैं इसलिए केन्द्र से शाखाओं का प्रत्यक्ष आदान-प्रदान, पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन भी आवश्यक है। केन्द्र के प्रतिनिधि केन्द्र से आकर शाखा सदस्यों से अधिक निकटतापूर्ण विचार विनिमय कर सकें यह सब कार्य वार्षिकोत्सव के अवसर पर ही हो सकेंगे। मिशन के सूत्र संचालकों का वार्षिक सन्देश हर वर्ष टेप रिकार्डरों के माध्यम से उन्हीं की वाणी में समस्त परिजनों को सुनने के लिए मिलता रहे—साथ-साथ बैठकर उपासना का आनन्द ले सकें इसके लिए ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि हरिद्वार से माताजी तथा आचार्यजी के उद्‌बोधन टेप रिकार्डर द्वारा हर वर्ष सभी स्वजनों तक पहुँचते रहें। जनता के लिए—सर्व साधारण के लिए भी उनके कुछ सन्देश हैं। शान्ति कुंज की देव कन्यायें हर वर्ष अपने भावभरे नवीन गायन समस्त परिवार को सुनाना चाहती हैं। वे भी वार्षिकोत्सवों पर केन्द्र का सन्देश शाखाओं से सम्बन्धित समस्त परिवार तक पहुँचाने के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ले जाया करेंगी। इस प्रकार वार्षिकोत्सव अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण माना गया है।

उसकी व्यवस्था नवरात्रि आयोजनों जैसे कार्यक्रम की रहती है। उसका समय सामान्य रूप से ढाई दिन का रखा जाता है। पहले और दूसरे दिन के कार्यक्रम समान हैं। प्रातः दो घण्टे सामूहिक साधना—मध्यान्ह को परिजनों की विचार गोष्ठी—रात्रि को सार्वजनिक प्रवचन उद्‌बोधन। तीसरे दिन प्रातःकाल ५ या ९ कुण्डों का गायत्री यज्ञ होगा। इसके उपरान्त विसर्जन जुलूस निकलेगा।

सदस्यगण सहभोज में सम्मिलित होंगे। इसमें खिचड़ी के अमृताशन की ही परम्परा है। इसमें सस्तापन, सात्विकता—बनाने में सुविधा और जाति-पाँति पर आधारित कच्चे पक्के भोजन की रूढ़िवादिता का निराकरण—यह चार उद्देश्य सम्मिलित हैं। भविष्य में बड़े आयोजनों के लिए यही सहभोज नीति सुविधाजनक रहेगी, इसलिए उसका प्रचलन भी करना है। कभी भी सदस्य गण अपने-अपने घरों से दाल, चावल, दलिया जैसी चीजें लाकर एक स्थान पर पकाने और खाने का प्रयोग करके सहभोज का आनन्द बिना किसी अतिरिक्त खर्च के लेते रह सकते हैं। यह परम्परा भी वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रचारित हो सकती है।

यह वार्षिकोत्सव खर्च की दृष्टि से भी सस्ते रहेंगे। दो, पाँच सौ के अन्तर्गत ही प्रायः सारा बजट बन जाता है। इतना संग्रह कहीं भी कठिन नहीं पड़ता। इसलिए प्रत्येक जीवन्त शाखा के लिए वार्षिकोत्सव अनिवार्य किया गया है। इससे उसकी क्रियाशीलता और जीवनी शक्ति का परिचय मिलता रहेगा। शिथिलता आई होगी तो वह इस माध्यम से दूर होती रहेगी। पिछले वर्ष का लेखा-जोखा लेने और अगले की नीति निर्धारित करने की दृष्टि से भी यह नितान्त आवश्यक है।

वार्षिकोत्सवों से दुहरा लाभ होता है। एक तो जन-साधारण को नवनिर्माण की पृष्ठभूमि का—उस विचारधारा के निकट आने का अवसर मिलता है, दूसरे शाखा परिजनों को पिछले सर्वेक्षण तथा भावी गतिविधियों के निर्धारण का अवसर मिलता है। जहाँ वार्षिकोत्सव होते हैं उस क्षेत्र में नवनिर्माण की गतिविधियाँ सतत तीव्रतर होती जाती हैं।

वार्षिकोत्सव छोटे से छोटे एवं बड़े से बड़े स्तर पर किये जा सकते हैं। इसका निर्धारण अपनी स्थिति देखकर करना चाहिए। जब तक अपने श्रम-सहयोग एवं अर्थ-सहयोग के सूत्र दुर्बल हैं तब तक छोटे-कम खर्च में सम्पन्न होने वाले आयोजन करने चाहिए। जब श्रम और धन की अधिक व्यवस्था जुटने लगे तो आयोजनों के स्वरूप का विस्तार किया जा सकता है। साधन स्वल्प होते हुए भी विशालकाय आयोजनों की योजना बना बैठना और उनके ठीक तरह पूरी न हो सकने पर अपने को तथा दूसरों को कोसना व्यर्थ है। हमारे कदम क्रमिक गति से बढ़ने चाहिए। आरम्भ अपने निजी योगदान—घनिष्ठों के सहयोग से करना चाहिए और पीछे परिस्थितियाँ जितनी अनुकूल होती जायँ उसी अनुपात में बड़े आयोजनों से बड़ा उत्साह होने की बात सोचनी चाहिए।

सब लोग मिलकर सर्व सम्मति से निर्णय करें और समान रूप से हाथ बटायें यह सोचना आदर्श की दृष्टि से सही है पर व्यवहार की दृष्टि से उसे गलत ही कहा जायेगा। वस्तुस्थिति यह है कि इन्जन आगे चलता है तो डिब्बे घिसटते हैं। बैल बढ़ते हैं तो गाड़ी के पहिये घूमते हैं। हर महान् उद्‌देश्य के पीछे बहुत थोड़े प्राणवान व्यक्ति ही काम करते हैं। उन्हीं के प्रबल प्रयासों से उमंग भरा वातावरण बनता है और अनुकूलता की परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। धुन का धनी एक व्यक्ति भी बहुत कुछ कर सकता है। जितने महान् आन्दोलन—महान् निर्णय एवं महान् परिवर्तन हुए हैं उनके मूल में प्राण स्पंदन एक दो का ही काम करता है। शरीर में अवयव अनेक हैं पर हृदय एक। उस एक ही की तत्परता से इस बड़ी मशीन के समस्त कल पुर्जे अपना-अपना काम करते हैं। सूर्य दिन में और चन्द्रमा रात्रि में प्रकाश देने का उत्तरदायित्व एकाकी ही सँभालते हैं, यों उनका अनुकरण करने में तारों से लेकर दीपकों तक की बड़ी सेना काम करती है। आयोजन का संकल्प थोड़े प्राणवान व्यक्ति करें। दो-दो की जोड़ी बनाकर स्वयं खड़े हो जायँ और कुछ कर गुजरने का संकल्प लेकर जुट पड़ें तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनेक सहयोगियों का सहयोग मिलने लगेगा और सम्मेलनों से लेकर बड़े से बड़े निर्माण का जो भी संकल्प किया जायेगा पूर्ण होकर रहेगा। आवश्यकता उच्च उद्देश्य, उत्कृष्ट लगन और पक्की प्रामाणिकता भर की है।

लोकशिक्षण के लिए मेलों का उपयोग

परम्परागत रूप से जिन आयोजनों के लिए समय निर्धारित है—विधि व्यवस्था बनी हुई है, उनसे लोकशिक्षण का महत्त्वपूर्ण क्रम अपने ढर्रे पर चलता और अपने ढंग से पूरा होता रहता है। उसके लिए नये सिरे से सूचना देने, प्रचार करने, आमन्त्रण भेजने, सरंजाम जुटाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसमें सरलता बहुत है, नियमितता भी है और अभ्यस्त क्रम नई समस्यायें भी नहीं खड़ी करता। ऐसे प्रचलन जितने अधिक हों, समाज को प्रशिक्षित करना उतना ही अधिक अच्छी तरह बन पड़ेगा। संस्कार, पर्व इसी दृष्टि से बने हैं। इसी में एक कड़ी धार्मिक मेलों की और जुड़ती है। इन्हें प्रचार प्रदर्शनी के रूप में समझाया जा सकता है। मनोरंजन और खरीद-बेच का व्यावसायिक उद्देश्य भी साथ-साथ पूरा होता रहता है। इस तरह इन मेलों से कई उद्देश्य एक साथ सधते हैं। दूर-दूर के व्यक्ति इन्हें देखने आते तो मनोरंजन की दृष्टि से ही हैं, पर उनमें दूर-दूर के मित्रों परिचितों से मिलने-जुलने का कुशल क्षेम पूछने और परामर्श करने का अवसर भी मिल जाता है।

छोटे देहातों में भी हाट लगती है। सप्ताह में एक या दो बार बेचने-खरीदने वाले उनमें पहुँचते हैं और विक्रेता तथा खरीददार दोनों ही नफे में रहते हैं। खरीददार को एक ही जगह कई तरह की कई दुकानें रहने से अपनी पसन्द का माल, कई जगह जाँच-पड़ताल करके, खरीदने का अवसर मिलता है। दुकानदारों को भी ग्राहकों की बड़ी संख्या मिल जाती है और वे थोड़े से समय में ढेरों माल बेचकर अपनी आजीविका कमा लेते हैं। हाट-व्यवस्था अपनी उपयोगिता के कारण देहातों में चिरकाल से चली आ रही है और लोकप्रिय बनी हुई है। मेले इन हाटों का ही बड़ा रूप हैं। उनके साथ कोई स्थानीय इतिहास जुड़ा होता है, कोई पर्व, तीर्थ, स्मृति आदि के निमित्त से यह मेले लगते हैं। उनका प्रबन्ध सरकार, स्थानीय चुँगी समिति, पंचायत आदि के द्वारा होता रहता है। दुकानदारों से थोड़ी-थोड़ी कर उगाही करके वहाँ की सफाई तथा दूसरी तरह की आवश्यकताएँ पूरी कर ली जाती हैं। कई मन्दिरों पर इस माध्यम से अच्छी चढ़ौती चढ़ जाती है, इसलिए मेले का व्यवस्था खर्च वे ही उठा लेते हैं। बड़े मेलों का प्रबन्ध सरकार को विशेष रूप से अपने हाथ में लेना पड़ता है।

इस प्रकार के मेले अपने देश में जहाँ-तहाँ होते रहते हैं। उनके स्थान और समय निश्चित होते हैं। दूकानदारों और दर्शकों को कोई सूचना आमन्त्रण नहीं देना पड़ता। वे अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुरूप स्वतः ही पहुँचते रहते हैं।

प्रचलित मेले अपने एक ढर्रे पर लुढ़कते आ रहे हैं। उनके पीछे व्यवस्था, बुद्धि और दूरगामी परिणामों की कोई योजना आरम्भिक दिनों में भले बनी हो, पर अब वैसा कुछ रह नहीं गया है। फलतः वे दूकानदारों के आर्थिक लाभ और फालतू लोगों के—विशेषतया स्त्री व बच्चों के लिए सामयिक मनोरंजन जैसे रह गये हैं। इन्हें पुनर्गठित करने पर ध्यान दिया जा सके—योजनाबद्ध और सुव्यवस्थित बनाया जा सके तो इनसे भौतिक और आत्मिक प्रगति के—समृद्धि संवर्धन और लोक शिक्षण के दोनों ही आधार खड़े हो सकते हैं। व्यवस्था की दृष्टि से इनमें (१) सफाई (२) पानी (३) खाद्य पदार्थ (४) निवास, आच्छादन (५) स्टालों के लिए स्थान एवं क्रम निर्धारण (६) प्रचार प्रशिक्षण के पृथक कक्ष (७) अव्यवस्था, चोरी, जेबकटी आदि रोकने वाले स्वयंसेवक (८) सम्पूर्ण व्यवस्था का संचालन केन्द्र, जैसे कितने ही कार्य हैं, जिनके लिए पहले से ही समुचित प्रबन्ध सोच लिया जाना चाहिए और मेला आरम्भ होने से पूर्व ही सारे साधन जुटा लेने चाहिए। मेले की अर्थव्यवस्था के लिए दूकानदारों से या अन्य लोगों से टैक्स लिया जा सकता है। मेला समिति की ओर से अपने कोई विक्रय केन्द्र रखे जा सकते हैं। इन मेलों से जिन मन्दिर आदि को विशेष लाभ होता है उनसे उस लाभ का एक अंश लिया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जा सकता है। वाहनों या कुलियों पर भी टैक्स रखे जा सकते हैं। सरकारी अनुदान, स्थानीय पंचायत का इस मद के लिए रखा गया बजट भी उपयोग में आ सकता है। मेलों की अर्थव्यवस्था जितनी अच्छी होगी उतना ही उन्हें उपयोगी माना जा सकेगा।

प्रचलित मेलों में भीड़ तो बहुत आती है पर मल-मूत्र विसर्जन के लिए सुविधाजनक स्थान तथा दर्शकों का मार्गदर्शन न होने से उस सारे क्षेत्र में गन्दगी फैलती है। पानी की आवश्यकता अधिक और कुएँ आदि की सुविधा कम होने से गन्दा पानी पल्ले पड़ता है। खाद्य पदार्थ बनाने वाले मिलावटी घटिया और हानिकारक चीजें बेचते हैं। तथा धूल, मक्खी आदि से बचाव न होने के कारण वे खरीदने खाने वालों के लिए संकट बन जाते हैं। मेले कई दिन चलते हैं। खेल तमाशे भी रात को ही होते हैं। स्वभावतः दूकानदार तथा दर्शक वहाँ रात्रि को ठहरना एवं दोपहर को कड़ी धूप में विश्राम करना चाहते हैं। इनके लिए छाया का प्रबन्ध होना चाहिए। ऐसे अवसरों पर चोर उठाईगीरे, जेबकट, मनचले लोग बदमाशियाँ करने के लिए दल-बल समेत आते हैं, उन पर निगरानी रखी जानी चाहिए। दूकानदारों में से जहाँ जिसकी मर्जी होती है वह वहीं अड्डा जमा लेता है और दर्शकों को एक तरह की चीजें एक जगह मिलने की असुविधा रहती है। भीड़ में चोट लगने, बीमार पड़ने, चोरी होने, बच्चे खोने जैसी अव्यवस्थायें हो सकती हैं। पीने का पानी न मिलने से लोग जहाँ-तहाँ भटकते हैं। इन सब बातों की सुव्यवस्था बनाने के लिए श्रम तथा साधन चाहिए। वे किस प्रकार जुटाये जायें और उपयुक्त व्यक्तियों से उपयुक्त कार्य कैसे कराया जाय, इस पर दूरदर्शितापूर्ण ढंग से पहले ही विचार कर लेना और आवश्यक साधन जुटा लेना मेला संयोजक समिति की बुद्धिमत्ता और व्यवहारकुशलता पर निर्भर है। ऐसे कार्यों में सरकारी सहयोग भी मिलता है। जहाँ जिस प्रकार की जितनी जैसी सुविधा मिल सके वहाँ उसके लिए अधिकारियों से सम्पर्क बना लेना चाहिए। किन्तु यह ध्यान में रखना चाहिए कि लोक शिक्षण के लिए छोटे-बड़े देहातों में सर्वत्र इन मेलों की श्रृंखला बननी है, जो बनी हुई है उसे व्यवस्थित करना है। यह कार्य जन सहयोग स्तर पर ही हो सकता है। सरकार न तो इतनी व्यापक व्यवस्था का सुसंचालन कर सकती है और न अफसरशाही के वर्तमान रवैये को देखते हुए उससे किसी बहुत उत्साहवर्धक परिणाम की आशा की जा सकती है। यह कार्य मूलतः स्वयंसेवी संगठनों का है और स्थानीय जन सहयोग के द्वारा ही उसमें रचनात्मक दृष्टिकोण का समावेश रह सकता है।

पुराने मेले पर्याप्त नहीं। नयों का योजनाबद्ध प्रचलन करना पड़ेगा। कहीं-कहीं स्थान और समय का अन्तर बहुत कम रहने से वे आकर्षक नहीं रहते। कोई पूरे इलाके ही सूने पड़े रहते हैं। होना यह चाहिए कि क्षेत्रों की सुविधा तथा समय के अन्तर को ध्यान में रखकर किसी क्षेत्र का सर्वेक्षण इस प्रकार करना चाहिए कि कहाँ, कब, किस तरह के मेले रखे जाने चाहिए। इस सर्वेक्षण का उद्देश्य सभी क्षेत्रों में जनता को इन मेलों से लाभान्वित होने का अवसर देना होना चाहिए। जहाँ चल रहे हैं, उनका समय और स्थान बदलने की आवश्यकता अनुभव हो तो उसमें संकोच न किया जाय। इतना तो निश्चित है कि इतने बड़े देश में जहाँ छोटे देहातों का पिछड़ापन ही व्यापक रूप में फैला हुआ है वहाँ यह मेले उत्साहवर्धक वातावरण उत्पन्न करने तथा कितनी ही आवश्यकताओं को पूरा करने की दृष्टि से नितान्त आवश्यक हैं। इसके लिए जितने मेले चल रहे हैं उसकी तुलना में कम से कम तीन चार गुने नये मेलों का नये सिरे से प्रचलन आरम्भ होना चाहिए। मेला से मात्र दूकानदारों, वाहनों, मजदूरों को ही लाभ नहीं होता। सर्व साधारण को अपनी आवश्यकता की वस्तुयें कई जगह देख-परख कर उचित मूल्य में खरीदने का अवसर मिलता है। मेले जहाँ भी होते हैं उस पूरे क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि के अनेक आधार बनते हैं। आस-पास के क्षेत्रों से ही मेले के लिए उपयोगी वस्तुयें खरीदी जाती हैं। मजदूरी मिलने का अवसर वहीं के निवासियों को मिलता है। मेले हो जाने के बाद की बची हुई वस्तुएँ सस्ते मोल में वे ही लोग खरीदते हैं। मनोरंजन, ज्ञानवर्धन जैसे लाभ तो प्रत्यक्ष ही हैं। कुएँ, सड़क आदि की सफाई इसी बहाने हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाती है और बेकार पड़ी रहने वाली वस्तुयें इस अवसर पर किसी न किसी प्रकार काम में आ जाती हैं और पैसा दे जाती हैं। बारीकी से देखने पर ऐसे कितने ही लाभ उस क्षेत्र के लोगों को तथा सामान्य लाभ दूर-दूर के लोगों को मिलते हैं। मेलों का प्रचलन बढ़ाकर आर्थिक, बौद्धिक और सामाजिक दृष्टि से प्रगति की ओर बढ़ा जा सकता है। प्रचार के ये तो माध्यम हैं। जिन क्षेत्रों में जिन लोगों तक किसी विचार का, जानकारी का, प्रचलन का विस्तार करना आवश्यक हो वहाँ वह कार्य मेलों से अधिक अच्छी तरह और किसी प्रकार नहीं हो सकता।

लोक शिक्षण के लिए मेलों की प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए और उनके लिए दूरगामी योजना बननी चाहिए। किस क्षेत्र में किन वस्तुओं की आवश्यकता रहती है वहाँ उस तरह के दूकानदारों को आमन्त्रित करने के लिए उन्हें वाहन आदि की सुविधा देने के लिए पहले से ही सम्पर्क मिलाया जाय तो उन सभी वस्तुओं की दूकानें पहुँच सकती हैं जो क्षेत्र के लिए आवश्यक हैं। अन्यथा चटपटे खाद्य पदार्थ और खिलौने, स्त्रियों की चूड़ियाँ आदि बेचने वालों के अतिरिक्त वहाँ आवश्यक वस्तुओं के क्रय विक्रय का साधन ही नहीं बनेगा और उस क्षेत्र की आवश्यकता पूरी करने जैसा कुछ आधार ही नहीं रहेगा। मरे गिरे निराश उदास मेलों को अधिक विस्तृत और अधिक आकर्षक बनाया जाना चाहिए। इस विस्तार के अनुपात से ही उनकी उपयोगिता बढ़ेगी इसमें न केवल दूकानदारों को वरन् मनोरंजन करने वालों को भी आमन्त्रित करने की आवश्यकता है। इतना ही नहीं जनता को भी दूर-दूर तक उस आकर्षण की जानकारी दी जानी चाहिए ताकि आगन्तुकों की भीड़-भाड़ बढ़ी-चढ़ी रहने से मेलों का उद्देश्य अधिक अच्छी तरह पूरा हो सके।

यह तो सामान्य व्यवस्था, लोकरंजन और आर्थिक लाभ की चर्चा हुई। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण लाभ है लोक शिक्षण का। उसके लिए दृश्य प्रधान साधन ही मेलों में उपयुक्त रहते हैं और कारगर सिद्ध होते हैं। दर्शक घूमने फिरने के 'मूड' में होते हैं, वे एक जगह टिकते नहीं, सभा सम्मेलन जैसी व्यवस्था सफल नहीं हो पाती। पूरा भाषण लोग सुनते नहीं। बीच-बीच में उठते-बैठते रहते हैं। सो उनके पल्ले कुछ पड़ता नहीं। इसलिए प्रवचनों और सभाओं की बात ऐसे अवसरों पर नहीं सोची जानी चाहिए। यदि उसके लिए विशेष योजना बनाई गयी हो तो वह मध्यान्ह से पूर्व ही समाप्त कर लेनी चाहिए। मेले का जोर तीसरे पहर से लेकर सूर्यास्त तक चलता है। उस अवसर पर कोई किसी सभा में देर तक बैठने के लिए तैयार नहीं हो सकता।

प्रचार का माध्यम मात्र भाषण ही नहीं है। अन्य दृश्य साधन भी असंख्य हैं, जो इन मेलों में पूरी तरह सफल हो सकते हैं। प्रदर्शनियों की सफलता मेलों में होती है। जनता को विविध विषयों की जानकारियाँ देने के लिए अनेक प्रकार की प्रदर्शनियाँ लगाई जा सकती हैं। इसके लिए थोड़ा सा प्रकाश और मार्गदर्शन सरकार की ओर से बड़े मेलों में लगने वाली प्रदर्शनियों को देखकर प्राप्त किया जा सकता है। सरकार जनता को अपनी सफलताओं और योजनाओं की जानकारी देने के लिए बड़े-बड़े पण्डाल लगाती है। उनमें तरह-तरह के चित्र, मॉडल, सूचना पटल आदि रखे होते हैं। समाज कल्याण विभाग, सूचना विभाग, स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग, पशुपालन विभाग आदि की ओर से कई तरह की जानकारियाँ देने के लिए प्रदर्शनी पंडाल होते हैं। व्यापारी अपने माल का विज्ञापन करने के लिए कई तरह के स्टॉल लगाते हैं। इस सब को दस-पाँच मेले प्रदर्शनियों में देखने के उपरान्त यह विचार किया जा सकता है कि उस क्षेत्र की स्थिति और अपने उद्देश्यों का ताल-मेल बिठाते हुए किस प्रकार किस स्तर की कैसी प्रदर्शनियाँ लगाई जा सकती हैं। उन प्रसंगों की गहराई में जाने और विभिन्न प्रसंगों पर चर्चा विस्तार का यह अवसर नहीं है। दूरदर्शी मस्तिष्क उसकी कल्पना उपज अपने ढंग से कर सकते हैं। यहाँ तो इतना ही ध्यान में रखना है कि नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति के लिए, परिवार और समाज का नव निर्माण करने के लिए, जन मानस का परिष्कार करने के लिए जिस प्रकार का लोक शिक्षण इनसे सम्भव हो सके उसका प्रबन्ध सूझ-बूझ के साथ पूरे उत्साहपूर्वक किया जाय। ऐसी स्थायी प्रदर्शनियाँ बन सकती हैं जो एक से दूसरे मेलों में पहुँचती रहें और लोगों की चेतना को प्रभावित करने तथा दिशा देने में समर्थ होती रहें। चित्र प्रदर्शनों का महत्त्व सर्वोपरि है। बड़े साइज के सुन्दर चित्र बनाये और लगाये जा सकते हैं। उनमें लोक शिक्षण की समस्त धाराएँ समाविष्ट रह सकती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनोरंजन के माध्यम से लोक शिक्षण के अनेक साधन खड़े किया जा सकते हैं। पुराने ढर्रे में नई सूझ-बूझ का समावेश हो सकता है। उदाहरण के लिए कठपुतली के तमाशे को ही लिया जाय। उसमें अनेक प्रकार के नाटक अभिनय सोचे और बनाये जा सकते हैं। पिछले दिनों नरक स्वर्ग के दृश्य दिखाने वाली कठ-पुतली वाले मेलों में पहुँचते थे। टिकट बेचते थे और दिखाते थे कि क्या-क्या भला-बुरा काम करने से परलोक में क्या-क्या मिलता है। इससे दर्शकों को मनोरंजन के साथ-साथ उपयोगी शिक्षा भी मिलती है। जादूगरों के खेलों में भी कौतूहल के साथ-साथ लोक शिक्षण का सहज समावेश हो सकता है। आँखों को काँच के पास ले जाकर भीतर के चित्रों को कई गुना दिखाने वाले पण्डाल आसानी से बन सकते हैं। उनमें पौराणिक या ऐतिहासिक चित्र माला बुद्धिमत्तापूर्वक सँजोई जा सकती है। कौतूहलवर्धक दृश्यों को दिखाने वाले पण्डालों में भीड़ लगी रहती है। लगाने वाले अच्छी आजीविका भी कमाते हैं। इन मेले ठेलों का एक बार पर्यवेक्षण कर लिया जाय। पहले जो आते थे वे अब बन्द हो गये, उनका पता लगा लिया जाय। अन्यत्र इस सम्बन्ध में कहाँ क्या सूझ-बूझ काम कर रही है, इसका पता लगा लिया जाय तो ऐसे-ऐसे अनेक उपाय सूझ पड़ेंगे जो इन मेलों में मनोरंजन एवं लोक-शिक्षण का उभयपक्षीय उद्देश्य पूरा कर सकें, साथ ही टिकट लगाने से वे आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी भी रह सकें।

संगीत और अभिनय की व्यवस्था इन मेलों में रहने से उसका अधिक प्रभावोत्पादक परिणाम हो सकता है। संगीत सम्मेलन भाषण प्रवचनों की अपेक्षा इस अवसर पर अधिक सफल रहते हैं। सर्व-साधारण पर उनका प्रभाव भी अधिक पड़ता है। शिक्षित-अशिक्षित, बाल, वृद्ध सभी उससे आकर्षित और प्रभावित होते हैं।

नाटक अभिनय के अब छोटे-बड़े अनेक तरीके निकल आये हैं। रासलीला, रामलीला, अभिनय असंख्य बार देखे जाने पर भी अपनी लोकप्रियता यथावत् बनाये हुए हैं। धार्मिक अभिनय देखने में लोक रुचि सहज ही पाई जाती है। उसे ध्यान में रखते हुए ऐसे ऐतिहासिक, पौराणिक छोटे बड़े नाटक अभिनय सोचे और बनाये जा सकते हैं जिनमें संस्कृति एवं प्रगतिशीलता का समुचित समाधान हो। उसमें आज के व्यक्ति तथा समाज के सम्मुख उपस्थित समस्याओं का परोक्ष रूप में हल समाधान सुझाया जाता हो इसकी व्यवस्था स्कूल के छात्रों, शौकिया अभिनय करने वालों अथवा आर्थिक उद्देश्य से नाटक करने वालों द्वारा बनायी जा सकती है। कोई कुशल संयोजक इस कार्य को हाथ में ले सके और आरम्भिक साधनों की संरचना तथा प्रशिक्षण का प्रबन्ध कर सके तो निश्चित रूप से इसका प्रभाव परिणाम बहुत ही श्रेयस्कर होगा।

इन मेलों में ले जाने के लिए चलते फिरते सिनेमाघर बहुत ही कारगर हो सकते है। टेन्ट सिनेमा चलते तो अभी भी हैं। जहाँ बिजली नहीं होती वहाँ वे अपने जेनरेटरों से उसे पैदा कर लेते हैं। छोटे कस्बों में तथा मेलों में उनका डेरा लगता-उखड़ता रहता है। इनमें मात्र लोक-शिक्षण की ही फिल्में दिखाई जायँ तो यह भी कम प्रभावशाली माध्यम सिद्ध नहीं होगा। कुछ बहुत प्रभावशाली फिल्में बहुत दिन पहले बनी थीं अब वे पुरानी हो जाने के कारण बड़े शहरों में चलती नहीं। किन्तु जिन देहातों में अभी सिनेमा पहुँचा ही नहीं वहाँ के लिये तो वे पुरानी फिल्म भी नयी के समान ही हैं। उनको सस्ते दाम में स्थायी रूप में खरीदा भी जा सकता है। ऐसी दस-पाँच फिल्में खरीद चलते-फिरते सिनेमा वाले आसानी से इन मेलों में अपना कार्य करते रह सकते हैं।

सोलह मिलीमीटर की मध्यवर्ती फिल्में सरकारी प्रचार विभाग द्वारा आमतौर से काम में लाई जाई जाती हैं और मशीनें भी बहुत दाम की नहीं होतीं। उनके लिए छोटा टैन्ट सिनेमा बन सकता है। हजार पाँच सौ व्यक्ति तो उससे भी भली प्रकार लाभ उठा सकते हैं। इसके लिए बोलती फिल्में—फिल्म लाइब्रेरी—सरकारी प्रचार विभाग से सम्पर्क बना लेने पर मिलती रह सकती हैं। अपनी निजी फिल्में भी इसी स्तर की बनाई जा सकती हैं। यह तो नितान्त सरल है कि बिना बोलती फिल्में बना ली जायें। उनका दृश्य परिचय टेपरिकार्डर से अथवा लाउडस्पीकर से बताया जाता रहे। ऐसे सिनेमाघर छोटे से छोटे देहातों में भी ले जाये जा सकते हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनका बीस पच्चीस पैसा टिकट रखकर आसानी से चालू खर्च पूरा किया जाता रह सकता है।

मेलों में साहित्य बिक्री के स्टाल पूरी तरह सफल हो सकते हैं। बड़े-बड़े आदमकद पोस्टर जँहाँ-तहाँ लगाये जा सकते हैं। पर्चे बाँटने और पोस्टर चिपकाने और दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखने का कार्य इस मेला क्षेत्र में बड़ी आसानी से पूरा हो सकता है।

विवाह-शादियों में वर-वधू ढूँढ़ने का कार्य भी इन मेलों में अच्छी तरह हो सकता है। बिहार में कई ऐसे मेले होते हैं जिनमें विवाह योग्य लड़की-लड़कों को उनके अभिभावक इन मेलों में लेकर आते हैं। अपने-अपने छोटे-छोटे डेरे लगा लेते हैं। मध्यवर्ती लोग वार्तालाप चलाते और बातचीत कराते हैं। ढूँढ़ खोज का बहुत सा श्रम बच जाता है। वहाँ आने वाले लडके लड़कियों में से अधिकांश की पटरी यहीं बैठ जाती है। जिनकी नहीं बैठती उन्हें आगे बात चलाने और देखभाल करने के लिए कितने ही पते ,परिचय तो मिल ही जाते हैं। इससे शादियों के लिए ढूँढ़ खोज में जो दौड़-धूप करनी पड़ती है, उसका बहुत कुछ भार इन मेलों में पहुँचने भर से हल्का हो जाता है। यह प्रथा अन्यत्र भी चल सकती है। अपनी मेला योजना के अन्तर्गत इस विवाह को भी प्रश्रय मिल सकता है। जहाँ सम्भव हो सामूहिक आदर्श विवाहों के आयोजन भी इसी अवसर पर हो सकते हैं। इससे उनके प्रचार प्रचलन का उद्देश्य बहुत अच्छी तरह पूरा हो सकता है।

लोक-शिक्षण की दृष्टि से मेला योजना को यदि विचारशील वर्ग हाथ में ले सके तो उससे जन-जागृति में भारी योगदान मिल सकता है। अन्य आर्थिक, सामाजिक लाभ तो उनके प्रत्यक्ष ही हैं।

आस्थाओं का परिशोधन धर्मतन्त्र के माध्यम से

धर्म की परिभाषा में अध्यात्म दर्शन, नीति शास्त्र, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान जैसे सभी तथ्य जुड़े हैं, जो व्यक्ति के चिन्तन एवं चरित्र को प्रभावित करते हैं। साहित्य और कला की सामर्थ्य को देखते हुए इन्हें भी इसी परिधि में लिया जा सकता है। यही वे माध्यम हैं, जिनके सहारे व्यक्ति और समाज का स्तर ऊपर उठाया जाना सम्भव हो सकता है। राजसत्ता का प्रमुख आधार है बाहरी दबाव। यह अवांछनीयताओं पर अंकुश तो लगा सकती है, पर सद्भावनाओं को उभारना, उच्चस्तरीय अध्यात्मवादी दृष्टिकोण विकसित करना उसके लिए बहुत छोटी सीमा तक ही सम्भव हो सकता है। यह कार्य तो प्रधानतया उनका है, जो आस्थाओं को प्रभावित करने, चिन्तन की धारा बदलने वाले प्रशिक्षण और आदर्श उपस्थित करने वाले आधार खड़े कर सकें। समय-समय पर भावनात्मक स्वर में ये महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करने वाले महामानवों ने धर्मतन्त्र का ही अवलम्बन लेकर अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की है।

प्राचीनकाल में अवतार, देवदूत, ऋषि, तपस्वी, संत, ब्राह्मण मानव जाति का मस्तक ऊँचा करते रहे। उन्होंने अपने चरित्र एवं प्रशिक्षण से जन समाज को भावनात्मक परिष्कार की दिशा में अग्रसर करके महत्त्वपूर्ण सफलताएँ पाई हैं। मस्तिष्क को भौतिक जानकारियों से सम्पन्न करने एवं सांसारिक प्रगति की दिशा देने में अन्य लोग अथवा संगठन भी सफल हो सकते हैं, पर जहाँ तक आस्थाओं और चिन्तन को आदर्शों की ओर मोड़ने का प्रश्न है, वहाँ तत्त्व दर्शन ही सफल हो सकता है। हृदय की गहराई तक प्रवेश कर सकना उसी का काम है।

रोष, आक्रोश, घृणा, आवेश उत्पन्न करके किसी से कुछ दुस्साहसपूर्ण कार्य कराया जा सकता है, पर जीवन को तिल-तिल जलाने की आत्मसंयम और परमार्थवादी नीति अपनाने की अन्तःप्रेरणा मात्र दार्शनिक आधार पर ही जगाई और परिपक्व की जा सकती है। लोभ, यश एवं आवेश के आधार पर उत्पन्न हुआ उत्साह कुछ ही समय में ठण्डा हो सकता है, पर धर्म वृत्ति द्वारा आत्मसंयम करके जिसने श्रेष्ठ पथ पर कदम बढ़ाया, वह देर तक, अन्त तक बिना कोई प्रत्यक्ष लाभ पाये भी अपने गन्तव्य लक्ष्य तक एकाकी एवं निरन्तर चलता रह सकता है। लोक मानस के निर्माण में निश्चित रूप से धर्म तन्त्र से बढ़कर और कोई आधार नहीं हो सकता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आस्थाओं का महत्त्व समझा जाना चाहिए। आज की दुर्गति ग्रस्त धर्म स्थिति में भी मन्दिरों, धर्मानुष्ठानों, तीर्थयात्राओं साधु-ब्राह्मणों, दान-पुण्यों में जो राशि स्वेच्छापूर्वक खर्च की जाती है, वह लगभग सरकारी राजस्व के समतुल्य ही जा पहुँचती है। इन कार्यों में जो समय, श्रम एवं मनोयोग लगता है, उसका मूल्यांकन किया जाय, तो श्रद्धा की शक्ति का अनुमान लगाया जा सकेगा। अन्धविश्वासों तक से प्रभावित लोग कितने कष्ट सहते, कितने अनर्थ सहते और कितने ठगे जाते हैं, इसे श्रद्धा का दोहन ही कह सकते हैं। जब अन्धश्रद्धा इतनी प्रबल हो सकती है, तो विवेकसम्मत, तथ्यसंगत धर्म-श्रद्धा के माध्यम से मनुष्य को आदर्शवादी बनाने में निश्चय ही असाधारण सफलता मिल सकती है।

दूसरों को प्रभावित करने के लिए पहले अपने को प्रभावित करना होता है। दूसरों के निर्माण से पहले आत्म-निर्माण की आवश्यकता पड़ती है। जहाँ तक जानकारियों के आदान-प्रदान का सम्बन्ध है, उसे कोई भी अपने से कम जानकारी वालों को दे सकता है, पर जहाँ व्यक्तित्त्व के निर्माण का प्रश्न प्रस्तुत होगा, वहाँ जलते दीपक से नया दीपक जलाने से कम में प्रयोजन किसी प्रकार पूरा नहीं होगा। चरित्र निर्माण का कार्य केवल चरित्रवान और परिष्कृत व्यक्तित्त्व के लोग ही कर सकते हैं। यह कार्य बकवादी लोगों की उछल-कूद से सम्पन्न नहीं हो सकता। प्रभावशाली व्यक्ति ही अपनी प्रखर आदर्शवादिता से दूसरों को अनुप्राणित करके अपना अनुयायी बनाते हैं। संसार के महामानवों की सफलता का यही रहस्य रहा है। दूसरों से जो कहना था—कराना था उसे उन्होंने पहले स्वयं किया। उसी कर्तृत्व का प्रभाव दूसरों पर पड़ा। एक वैश्या अपने जीवन में गुपचुप रहकर भी सैकड़ों अनुचार बना लेती है, पर धर्मोपदेशक एक भी धर्मपरायण अनुयायी नहीं बना पाते। इसका कारण एक ही है कि वैश्या अपने मन, वचन, कर्म से एकनिष्ठ होने के कारण दूसरों को प्रभावित करती है, जबकि मन, वचन और कर्म में अन्तर रहने के कारण तथाकथित सन्त निरन्तर प्रचार करते रहने पर भी दो चार धर्मनिष्ठ तक नहीं बना पाते। बुद्ध, गाँधी, ईसा आदि के असंख्य अनुयायी होने में उनकी आस्था और क्रिया में समस्वरता होना ही प्रधान कारण रहा है।

अपने युग की सबसे बड़ी आवश्यकता व्यक्तित्त्व का निर्माण है। इसके लिए आस्था, विचारणा और क्रिया को प्रभावित करने वाली नैतिक, बौद्धिक एवं सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता है। उसे धर्ममंच से ही सफलतापूर्वक सम्पन्न किया जा सकता है। इस युग परिवर्तन महायज्ञ के होता-प्रयोक्ता ऐसे धर्मनिष्ठ व्यक्ति होने चाहिए, जो लोक-शिक्षण की प्रक्रिया को सार्थक बनाने के लिए अपने प्रतिपादनों में यह तथ्य भी जोड़ सकें कि उन्होंने इन आदर्शों को पूरी तरह जीवन-क्रम में ढालकर यह सिद्ध कर दिया कि वैसा किया जा सकना सम्भव भी है और सरल भी। आदर्शों के प्रति निष्ठावान बनकर ही उन्हें जनमानस में प्रतिष्ठापित कर सकने का प्रयोजन पूरा हो सकता है।

स्मरण रहे, इन परिवर्तनों का सूत्र-सचालन धर्ममंच से चल सके, तो ही आदर्शवादी आस्थाओं को अंतःकरण के मर्मस्थल में प्रतिष्ठापित करने का प्रयोग पूर्ण हो सकेगा। साहित्य, कला तथा अन्य प्रचार साधनों को इस दिशा में योगदान देने की छूट है, पर इसका प्रधान उत्तरदायित्त्व आस्था को प्रभावित कर सकने में समर्थ धर्मतन्त्र को ही सँभालना चाहिए।

धार्मिक कृत्यों के साथ देव-दक्षिणा आवश्यक

धर्म अध्यात्म का तत्त्व दर्शन एवं समाज शासन का विधान एक ही प्रयोजन के लिए बना है कि मानवीय गरिमा की पक्षधर शालीनता को अधिकाधिक मात्रा में बढ़ाया जाय। साथ ही पिछड़ेपन के प्रतीक दुष्प्रवृत्तियों को निरस्त करने में भी कुछ उठा न रखा जाय। किसान और माली यही करते हैं। वे उपयोगी पौधे उगाते, सीचते रहते हैं। साथ में हानिकारक खरपतवार उखाड़ते हैं और उजाड़ने वालों को भगाने का पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं। खेत और उद्यान इसी उपक्रम से फलते और कोठे भरते हैं। शासन को भी यही करना पड़ता है। समाज व्यवस्था बनाने वालों ने भी परम्पराओं का निर्धारण इसी आधार पर किया है। धर्म और अध्यात्म का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुविस्तृत ताना-बाना भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सृजा गया है। भगवान के अवतार जिस अधर्म नाश और धर्म संस्थापन का उद्देश्य लेकर होते हैं वह भी यही है। सन्त सुधारक, शहीद मनीषी, मूर्धन्य इसी सन्तुलन को बिठाने में अपने-अपने ढंग से संलग्न रहे हैं। दुलार और सुधार की उभयपक्षीय रीति-नीति लोक व्यवहार के हर क्षेत्र में अपनाई जाती है। दण्ड-पुरस्कार के निर्धारण दीखते तो परस्पर प्रतिकूल हैं पर उन दोनों का समन्वय ही उस गतिचक्र का निर्माण करता है जिसके आधार पर स्थिरता और प्रगति अक्षुण्ण बनी रह सके।

समय-समय पर प्रकट होते रहने वाले अभियान आन्दोलन-प्रस्तुत समस्या के पीछे इन्हीं दो कारणों का समाधान खोजते और उपाय अपनाते रहे हैं। प्रज्ञा अभियान का परिस्थितियों के अनुरूप कार्यक्रम नया है, पर उसके पीछे भी वही दो प्रयोजन काम करते हैं जिन्हें संकटों के निराकरण और अभ्युदय के अभिवर्धन हेतु अनिवार्य माना गया है। लोक मानस के परिष्कार एवं दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन का निर्धारण ही प्रज्ञा मिशन का लक्ष्य है। उसी दिशा में सृजन और सुधार के दो चरण निरन्तर उठते चल रहे हैं।

धर्म तन्त्र से लोक शिक्षण की प्रक्रिया धर्मानुष्ठानों के साथ-साथ उनकी व्याख्या विवेचना करते हुये ठीक प्रकार चल सकी है। गायत्री यज्ञों के साथ युग निर्माण सम्मेलन जुड़े हुये हैं। यह कर्मकाण्ड और प्रेरणा प्रवाह का समन्वय है। जन्म दिवसोत्सवों से लेकर पर्व संस्कार आदि छोटे बड़े समारोह आयोजनों में यही होता है। भाव श्रद्धा उभारने वाली दृश्यमान प्रक्रिया अग्निहोत्र जैसे कृत्यों द्वारा बन पड़ती है। इसके साथ ही वे उपाय भी अपनाये जाते हैं जिससे उनमें भाग लेने वाले शोधन और परिष्कार की उभयपक्षीय प्रेरणायें प्राप्त करते चलें। सुधारना व्यक्ति को भी है और समाज को भी। दोनों को ही वितृष्णाओं और उद्दण्डता के कुचक्र से बलपूर्वक बाहर निकालना है। इस कार्य के लिए विभिन्न स्तर के आयोजन समारोह होते और कार्यक्रम बनते रहते हैं। यही है मिशन की गतिविधियों का सार संक्षेप।

प्रत्येक धर्म कृत्य के साथ एक अति महत्त्वपूर्ण परम्परा जुड़ी हुई है वह है—देव दक्षिणा। लोकाचार में किसी संभ्रान्त अतिथि के बुलाने पधारने पर समुचित सत्कार करना होता है। आरम्भ में स्वागत और विदाई के समय भेंट उपहार की प्रथा है। देवाराधन के आरम्भ में पाद्य, धूप, दीप, नैवेद्य आदि अर्चा उपचारों का प्रयोग होता है। समापन के अवसर पर आरती, पुष्पांजलि, पूर्णाहुति, वसनौधारा, प्रसाद वितरण, प्रीतिभोज आदि की व्यवस्था बनती है। उस उपचार के पीछे यह मान्यता काम करती है कि आयोजित, विराजमान देवता के सम्मान की रक्षा की जाय। अनुग्रह उपलब्ध करने के लिए न्यूनतम इस उपचार परम्परा का निर्वाह तो होना ही चाहिए अन्यथा अतिथि का अपमान होता है। बुलाकर किसी का पानी तक से सत्कार न किया जाय तो वह रुखाई खलेगी। जब सामान्य लोकाचार में यह प्रचलन है तो देव शक्तियों को प्रयोजन विशेष के लिए बुलाने पर तो उनका समुचित अभिनन्दन, आतिथ्य, स्वागत, सत्कार एवं विदाई उपहार का प्रबन्ध किया ही जाना चाहिए। अन्यथा उपेक्षा अवज्ञा बरते जाने पर हर किसी को बुरा लगेगा। बुलाने वाले पर तो स्पष्टतः ऐसा बर्ताव होने पर धृष्टता का दोष लगेगा। बुलाने में जितना श्रेय बनता है तिरस्कारपूर्वक दुत्कार देने पर उससे कहीं बड़ा लांछन लगता है। इस कारण सभी धर्म कृत्यों के साथ निर्धारित विधि-विधानों के साथ-साथ यह प्रावधान भी जुड़ा हुआ है कि देव दक्षिणा की बात भुलाई न जाय वरन् उसकी पहले से ही तैयारी रखी जाय।

देवता मनुष्य नहीं हैं। उन्हें प्रशंसा पूजा की आवश्यकता नहीं पड़ती। उपचारों उपहारों का दृश्यमान क्रिया कृत्य उन्हें सामान्य मनुष्यों की तरह प्रभावित नहीं करता। वे इतने महान् हैं कि इन प्रयासों के आधार पर किसी की श्रद्धा का आकलन नहीं करते। वे भाव तत्त्वों से बने होने के कारण मात्र आराधक की भावना परखते हैं और उसकी वास्तविकता की कसौटी पर लगाते हैं कि किसने देवत्व का कितना अनुगमन किया। कौन उनके साथ किस सीमा तक गुँथा। गुँथने का तात्पर्य तादात्म्य होना है। आग-ईंधन की तरह, नदी नाले की तरह, पेड़ बेल की तरह,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वादक बाँसुरी की तरह अपनाई गई एकात्मता ही देवता की सच्ची भक्ति है। वे पूजा आराधना इसी को मानते हैं। जो जिस सीमा तक आत्मसत्ता में, जीवनचर्या में देवत्व का समावेश कर सका, समझना चाहिए उसने उतने ही ऊँचे और सच्चे भक्ति भाव का अवगाहन किया है। शब्दोच्चारण के खिलवाड़ जैसे पूजा उपचार उन्हें प्रभावित कर सकेंगे और वरदान देने जैसा अनुग्रह कर सकेंगे इस विडम्बना की आशा कोई नासमझ ही कर सकते हैं। अगरबत्ती जलाने, लड्डू खिलाने, दीपक जलाने या नारियल चढ़ाने से देव अनुग्रह पाने की आशा करना आकाश कुसुम तोड़ने की तरह है।

देव दक्षिणा का वास्तविक स्वरूप उन प्रयोजनों के साथ जुड़ना चाहिए जिन्हें देवसत्ता महत्त्व देती, कसौटी मानती और मोद मनाती है। वह एकमात्र उपचार है देवत्व का उत्साहवर्धक मात्रा में अवलम्बन। यह अवलम्बन दो स्वरूप में दृष्टिगोचर होता है—एक, जीवनचर्या में घुसी हुई बुराइयों के परित्याग का न्यूनतम एक कदम उठाना। दूसरा, जिन सत्प्रवृत्तियों की न्यूनता है उन्हें प्रयत्नपूर्वक अधिकाधिक मात्रा में बढ़ाना। इसे दुष्प्रवृत्तियों का परित्याग और सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन भी कहा जा सकता है। देखा यह जाना चाहिए कि अपने गुण, कर्म स्वभाव में किन ऐसे दोष दुर्गुणों का समावेश है जो मानवी गरिमा के अनुरूप नहीं बैठते। सूक्ष्म दृष्टि से आत्म-निरीक्षण बन सके तो ऐसे दुर्गुण सहज में पकड़ में आ सकते हैं और यह पता चल सकता है कि वे अवसर मिलने पर किसी सीमा तक उभरकर उपद्रव मचाते रहते हैं। इस पकड़ को हल्की करने के लिए देव दक्षिणा के रूप में कुछ संकल्प लिया जा सकता है। भूल होने पर उसका प्रायश्चित करने का भी कोई दण्ड विधान जैसा नियम बनाया जा सकता है। यह देव दक्षिणा का एक निषेधात्मक पक्ष हुआ।

दूसरा पक्ष विधेयात्मक पक्ष है—सत्प्रवृत्ति संवर्धन। अभ्यास, चिन्तन, चरित्र और व्यवहार की मानवी गरिमा की कसौटी पर कसने से यह पता चल सकता है कि इसमें अभी क्या और अभिवृद्धि होनी चाहिए। अभ्यास करने पर यह आत्म-समीक्षा हर किसी के लिए सरल सम्भव हो सकती है। दाल में नमक, दूध में चीनी का पता चल जाता है। ठण्डक में कपड़ों की कमी का बोध होने में अड़चन नहीं पड़ती। महामानवों के साथ अपनी मान्यता, आकांक्षा, विचारणा, आदत, जीवनचर्या की तुलना करने पर सहज ही यह पता चल जाता है कि अपने व्यक्तित्त्व सुधार की, कितनी मात्रा में, क्या कुछ कमी है। इसकी पूर्ति करने का निश्चय करना और उस पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ रहना ऐसा कदम है जिससे सच्चे अर्थों में देव दक्षिणा के दूसरे भाग की पूर्ति होती है। यह ऐसी पूर्ति है जिसके बदले अदृश्य लोक में अवस्थित देवसत्ता का सुनिश्चित अनुग्रह और श्रेयस्कर वरदान मिलने की आशा की जा सके।

चिन्तन क्षेत्र के दोषों में लालच, विलास, संग्रह की उस इच्छा को हेय स्तर का माना जाना चाहिए जो स्तर भारतीय स्तर का निर्वाह करने से सन्तुष्ट नहीं होता और ठाट-बाट का विलासी अहंकारी स्तर का सरंजाम जुटाने के लिए ललकता है। चिन्तन क्षेत्र का एक बड़ा दोष यह भी है कि घर-परिवार में बसने वाले कुछेक व्यक्तियों को ही अपना माना जाय और उन्हीं के लिए उचित-अनुचित सुविधाएँ जुटाने में अपने आपको पूरी तरह खपा दिया जाय। निर्वाह के लिए औचित्य की सीमा में उपार्जन करते हुए अपव्यय और अहंकार के उद्धत प्रदर्शन का परित्याग करने पर कोई व्यक्ति कम आमदनी में भी ईमानदारी के साथ गुजर कर सकता है और हँसती-हँसाती जिन्दगी जी सकता है। परिवार छोटा रखने, उसे स्वावलम्बी और सुसंस्कारी बनाने की बात ध्यान में रखी जाय तो परिवार की छोटी सी फुलवारी हर किसी को आनन्द भरी लगेगी और कभी भी भार न बनेगी। चिन्तन में इतना परिवर्तन किया जा सके तो समझना चाहिए कि देव दक्षिणा का एक महत्त्वपूर्ण अंश पूरा किया जा रहा है।

अपने आपको शरीर न माना जाय, आत्मा समझा जाय। ईश्वर के इस अलभ्य अनुदान के साथ जुड़े हुए उपहारों के पीछे सन्निहित उत्तरदायित्त्व का अनुभव करते रहा जाय तो मनुष्य कोल्हू के बैल की तरह निरर्थक प्रलोभनों में खटते रहने से बच सकता है। तब उसे देश, धर्म, समाज, संस्कृति के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का ज्ञान भी रहेगा और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अहसास भी होगा। मरणोत्तर जीवन, कर्मफल, स्वर्ग-नरक की बात ध्यान रहने पर ही मनुष्य दूरदर्शी विवेकशीलता अपनाता है और उस बहुसंख्यक समुदाय से प्रभावित नहीं होता जो पेट-प्रजनन को ही सब कुछ समझता है और उसका अतिवाद अपनाकर अनर्थ और कुकृत्य करता रहता है।

चरित्र क्षेत्र की अवांछनीयताओं में असंयम की हानि अत्यधिक है। अन्य दुर्गुणों का नम्बर इसके बाद आता है। असंयम चार प्रकार के हैं इन्द्रिय असंयम में प्रमुख हैं चटोरपन और कामुकता। चटोरपन से पेट खराब होता है और कामुकता से प्रखरता चली जाती है। अर्थ असंयम अपनाने वाले अपव्ययी अनेक दुर्व्यवसनों के शिकार होते हैं और अविश्वस्तता बनते कुकर्म करते हैं। समय असंयम में आलस्य और प्रमाद की गणना होती है। ऐसे लोग दरिद्री रहते और भर्त्सना सहते हैं। विचार असंयम से ग्रस्त लोग चवैलचित्त, अव्यवस्थित और अदूरदर्शी देखे गये हैं। ऐसों को कोई बड़ी सफलता हाथ नहीं लगती। चरित्रवानों की समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को अपने स्वभाव, व्यवहार का अंग बनाना पड़ता है। चरित्रवानों की प्रामाणिकता ही उन्हें हर क्षेत्र में ऊँचा उठाती, आगे बढ़ाती है।

चिन्तन और चरित्र व्यक्तिगत है। उसका प्रभाव निजी जीवन तथा परिवार परिकर में विशेष रूप से पड़ता है। व्यक्ति की तीसरी गरिमा उसका व्यवहार है। व्यवहार का तात्पर्य है—अन्यान्य लोगों के साथ नीति-मर्यादाओं का पालन, शिष्टाचार, सदाचार, सत्कार। इसके अतिरिक्त वैयक्तिक और सामाजिक अनुपयुक्तताओं से बचने-बचाने के लिए बरती गई विवेकशीलता एवं संघर्षशीलता को भी सद्व्यवहार में सम्मिलित किया जाता है। मिल-बाँटकर खाना, अपना दुख बाँटना और दूसरों के दुःख बटाना कार्य-कौशल है। जो व्यवहार दूसरों से अपने प्रति किये जाने की अपेक्षा रहती है, वैसा ही दूसरों के साथ बरता जाने लगे, तो उसै सज्जनता कहा जायेगा। सज्जन सादगी पसन्द करते और विनम्र रहते हैं, सलाह लेते और सम्मान देते हैं। नागरिक कर्त्तव्यों का परिपालन और सामाजिक परम्पराओं का निर्वाह व्यवहार जगत शालीनता है।

देवताओं के साथ गुँथने और उन्हीं के समतुल्य बनने के लिए आत्म-परिष्कार और लोकमंगल के लिए प्रयत्नशील रहा जाय, साथ ही अपने और दूसरों के जीवन-क्रम में से दुष्प्रवृत्तियों का परिशोधन करते रहना आवश्यक है। इसे धार्मिक कर्मकाण्डों में बलिदान नाम से जाना जाता है। यज्ञकर्मों में बलिदानों का संकल्प आवश्यक माना गया है। देवता इसी उपहार से प्रसन्न होते हैं। धर्मकृत्यों में यज्ञ प्रमुख है। उसकी पूर्णाहुति बलिदान के रूप में होती है। स्वाहा के साथ कुछ जलाया भी जाता है। यह साकल्य सुगन्धित द्रव्यों का तो होता ही है, साथ ही जो अशुभ है, उसे जलाया भी जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि देव दक्षिणा के रूप में आयोजनों के अवसर पर याजकों और उपस्थित जनों को जो अनुपयुक्त है, उसमें से कुछ तो त्यागना ही चाहिए, जो शुभ है उसमें से कुछ तो और भी बढ़ाना चाहिए। ऐसा बन पड़े तो समझा जाना चाहिए देव-दक्षिणा सम्पन्न हुई और आयोजन का वह स्वरूप बना, जिससे देवता प्रसन्न होते और वरदान देते हैं।

त्यागने योग्य प्रचलित दुष्प्रवृत्तियों में कुछ ऐसी हैं, जो बहुप्रचलित होने के कारण छोटी होने पर भी धीरे-धीरे अत्यधिक हानि पहुँचाती और वातावरण विषाक्त करती हैं। ऐसी सामाजिक बुराईयों में से कुछ इस प्रकार हैं— १. नशेबाजी २. फैशन, अपव्यय ३. बहु प्रजनन ४. विवाहों में दहेज और धूम-धाम ५. मृतक भोज ६. पर्दा प्रथा ७. जातिगत ऊँच-नीच की मान्यता ८. भिक्षा व्यवसाय ९. आर्थिक अप्रामाणिकता—चोरी, बेईमानी आदि १०. अशिष्टता, उद्दण्डता।

इनमें से जो दुर्गुण जिनमें हों, वे उसे देव दक्षिणा के रूप में छोड़ें और सम्पर्क क्षेत्र में जो उनसे ग्रसित हों, उन्हें इससे छुड़ाने का प्रयत्न करें।

सत्प्रवृत्ति संवर्धन में कुछ इस प्रकार हैं— १- शिक्षा-विस्तार, पाठशाला, पुस्तकालय। २- स्वास्थ्य-संवर्धन, व्यायामशाला। ३- वृक्ष-वनस्पति बढ़ाना। ४- सत्प्रवृत्ति के लिए नियमित श्रमदान अंश दान। ५- दिनचर्या में साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा का समावेश।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जहाँ जिन भली-बुरी प्रवृत्तियों को बढ़ाने घटाने की आवश्यकता अनुभव की जाय, उन्हें ग्रहण और त्याग प्रयोजनों के लिए देव-दक्षिणा में सम्मिलित किया जाता है। जिन्हें कुछ ग्रहण करना या कराना हो, उन्हें उसके लाभों की विस्तारपूर्वक तर्क, तथ्य, प्रमाण, उदाहरणों समेत समझाया जाय। कई बार कई बातें अति महत्त्वपूर्ण होते हुए भी उनके लाभ गम्भीरतापूर्वक न समझे जाने के कारण उस ओर मन नहीं चलता। यही बात दुष्प्रवृत्तियों की हानियों के सम्बन्ध में भी है। वे स्वभाव-अभ्यास में सम्मिलित होकर आदत बन जाती हैं, तो फिर वे न अखरती हैं न खटकती हैं। आदत को बदलना भी कठिन पड़ता है, भले ही वे कितनी ही हानिकारक क्यों न हों। इसलिए आवश्यक है कि उपेक्षा को सजगता में बदलने के लिए जहाँ जिन अवांछनीयताओं ने जड़ जमायी है, उन्हें उखाड़ने के लिए तर्क, उदाहरणों समेत यह समझाया जाय कि उस छोटी दीखने वाली चिनगारी का धीरे-धीरे कितना बड़ा दुष्परिणाम हो सकता है। यह हानि-लाभ वाली प्रक्रिया जहाँ जितनी गम्भीरता और सुविस्तृत ढंग से समझायी जा सकेगी, वहाँ उतने ही अधिक लोग उतने ही उत्साह के साथ दुर्गुण छोड़ने और सद्गुण अपनाने के लिए तैयार होंगे। इसलिए जहाँ भी गायत्री यज्ञ, पर्व, संस्कार, नवरात्रि आयोजन, प्रज्ञा समारोह, कथा-कीर्तन आदि कोई भी छोटा बड़ा धार्मिक कर्मकाण्ड हो, यह प्रयत्न किया जाय कि प्रमुख याजक अथवा उपस्थित लोगों में से हर कोई उस आयोजन की उपयोगिता समझे, साथ ही यह भी अनुभव करे कि उन कृत्यों के साथ-साथ देव-दक्षिणा का उपक्रम नितान्त आवश्यक है। जिस आयोजन में जितनी, जिस स्तर की देव-दक्षिणा प्रस्तुत की जा सकेगी, उसे उतना ही सफल माना जायेगा। दैवी अनुदान का प्रतिफल उन आयोजनों द्वारा उतने ही बड़े परिमाण में उत्पन्न होगा।

जन-जागरण के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं

जन-जागरण एवं लोकमानस के परिष्कार हेतु वाणी का प्रयोग करना आवश्यक है। अपने देश में ७० प्रतिशत लोग अशिक्षित हैं। इन्हें साहित्य के माध्यम से समय की माँग और युग धर्म से परिचित नहीं कराया जा सकता। जिसे साक्षरता तक से परिचय नहीं है वह साहित्य के माध्यम से ऐसे विषयों को समझ सके, जिनका सामना पहले कभी नहीं करना पड़ा, कैसे सम्भव हो ? अधिक-से-अधिक यह हो सकता है कि उन्हें पढ़कर कोई सुना दे। इसके लिए भी किसी की वाणी का उपयोग करना ही होगा।

फिर अशिक्षित वर्ग के लिए एक कठिनाई यह भी है कि उनकी स्थानीय क्षेत्रीय भाषाएँ थोड़ी-थाड़ी दूर पर बदल जाती हैं। उनमें ही वे अपनी बात कह सकते हैं और दूसरों की समझ सकते हैं। शुद्ध हिन्दी का हिन्दी भाषी प्रान्तों में भी काम चलाऊ प्रचलन ही हुआ है। उसके माध्यम से अन्तराल तक पहुँच सकने वाली भावाभिव्यक्ति का आदान-प्रदान सम्भव नहीं। फिर ग्राम प्रधान अशिक्षित भारत में भी १४ प्रधान भाषाई क्षेत्र बँटे हुए हैं। उन सब में भी उच्चारण के निमित्त प्रयुक्त होने वाली क्षेत्रीय भाषाएँ अनेक हैं। युग चेतना से इस समूचे समुदाय को अवगत करने के लिए ऐसे कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता पड़ेगी जो न केवल अच्छी हिन्दी में लिखा गया युग साहित्य पढ़ सकें, वरन् क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान कर सकने में लोगों के साथ सम्पर्क साधने में इन क्षेत्रीय भाषाओं से भी अवगत हों। इस प्रयोजन के लिए भी हर प्रजापरिजन का मुखर होना आवश्यक है। वार्तालाप भी एक उच्चस्तरीय विज्ञान है। उसका कौशल अभ्यास में न उतरा हो तो लँगड़ी-लूली भाषा में आधी-अधूरी विचार अभिव्यक्ति ही बन पड़ती है। इतने भर में मोटा कामचलाऊ आदान-प्रदान भर ही हो सकता है। भावनाओं और संवेदनाओं की गहराई तक नहीं पहुँचा जा सकता। विशेषतया पुराने प्रतिगामी विचारों को हटाकर उनके स्थान पर प्रगतिशील प्रसंगों को तर्कों, तथ्यों, प्रमाणों के माध्यम से विस्तारपूर्वक समझा सकना तो और भी अधिक कठिन है।

विचार क्रान्ति के संदेशवाहकों को जितना कि शिक्षित होना आवश्यक है, उतना ही यह भी अभीष्ट है कि उसे वार्तालाप को प्रभावी बनाने की कला का ज्ञान हो। इन दोनों से अनभिज्ञ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को गूँगे, बहरे की भूमिका निभानी पड़ेगी, अन्यथा उस देहाती क्षेत्र में कुछ बौद्धिक सेवा न कर सकेगा जिसकी कि इन दिनों महती आवश्यकता है।

जिसे भगवान ने हाथ-पैर दिये हैं और सोचने की बौद्धिक क्षमता, वह अपना निर्वाह तो कर सकता है, किन्तु समय की समस्याओं का स्वरूप एवं समाधान जानने में समर्थ नहीं हो सकता। पिछले दिन चले गये। साथ ही उन दिनों की समस्याओं का, उनसे निपटने का ढंग भी बदल गया है। अब प्राचीन कथा-कहानियों तथा तर्क उदाहरणों के माध्यम से समय की विचित्र उलझनों को नहीं सुलझाया जा सकता। इसके लिए नये ढंग से सोचना और नये कदम उठाने की आवश्यकता पड़ेगी। इस अशिक्षित जनमानस के गले सत्प्रेरणाएँ उतारने के लिए युगसाहित्य से भी अधिक लोकसेवी समुदाय का मुखर होना आवश्यक है।

अलग-अलग लोगों से मिलने से व्यक्तिगत वार्तालाप की गोष्ठियों में कुछ अधिक लोगों को इकट्ठा करके सामूहिक वार्तालाप के लिए प्रवचन शैली की आवश्यकता पड़ती है। बड़े समारोह-सम्मेलनों में प्रभावी भाषण कला का अभ्यास होना चाहिए। इन तीनों ही प्रसंगों में यदि वक्ता का वाणी पर अधिकार न होगा, तो वह लोक चिन्तन को दिशा देने में सफल नहीं हो सकेगा।

इसलिए प्रामाणिकता, शिष्टता-सज्जनता के उपरान्त सबसे बड़ी आवश्यकता वक्तृत्व कला की ही पड़ेगी। यह विशेषता अनायास ही कदाचित् किसी को आती हो। इसका अभ्यास उसी तरह करना होता है, जैसा कि गायन, वादन, शिल्प, कला-कौशल आदि में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए अभ्यास किया जाता है।

दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए सर्वप्रथम अपना दर्शनीय स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जिससे शिष्टता, स्वच्छता, शिक्षा, सभ्यता एवं स्तर का आभास मिलता हो। फूहड़ व्यक्ति से कोई प्रसन्नतापूर्वक नहीं मिलना चाहता। यदि मिलना भी हो तो बेमन से, आधी-अधूरी बात सुनकर, बिना समाधानकारक उत्तर दिये ऐसे ही टालमटोल कर देता है। ऐसी दशा में जिस उद्देश्य के लिए मिला गया था उसकी पूर्ति हो सकने का वातावरण बनता ही नहीं। अस्तु इस कमी की पूर्ति का हर ऐसे व्यक्ति को कौशल अर्जित करना चाहिए जो वार्तालाप के माध्यम से अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहते हैं।

इसका प्रत्यक्ष परिचय सेल्समैनों, फेरी वालों, बीमा वालों, दलालों आदि से मिलकर उनका वार्ताक्रम ही नहीं, वेश-विन्यास, व्यवहार एवं शिष्टाचार को गम्भीरतापूर्वक देखकर प्राप्त किया जा सकता है। इन सबमें अग्रणी वे ठग होते हैं, जो वार्ता एवं व्यवहार से दूसरों को अपना बनाते और तत्पश्चात् अपना उल्लू सीधा करते हैं।

किसी से मिलने जाते समय हर व्यक्ति के कपड़े, जूते, छड़ी, छतरी, टोपी आदि साफ-सुथरे होने चाहिए। स्वच्छता, शिष्टाचार और कायदा करीना यह प्रकट करता है कि आगन्तुक का शिक्षण, रहन-सहन किस स्तर के लोगों के साथ हुआ है, वह सभ्य समाज का सदस्य रहा है या नहीं।

बिना बुलाये किसी के घर में घुस पड़ना असभ्यता है। अच्छा हो, दूसरों से मिलने के लिए उनकी सुविधा का समय पूछ लिया जाय। हो सकता है कि उसी समय व्यक्ति को किसी जरूरी काम से जाना हो या वह किसी निजी कठिनाई में व्यस्त हो। ऐसी दशा में आगन्तुक के प्रति सम्मान होते हुए भी उससे जल्दी-से-जल्दी निपटना चाहेगा और प्रसंग को जैसे-तैसे निपटाकर भागने का प्रयत्न करेगा। पर्याप्त वार्तालाप के लिए समय ही न हो तो कोई बेचारा क्या करे ? प्रवेश मिल जाने पर तनिक पीछे हटकर बैठना चाहिए, ताकि उसी समय यदि कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति आने वाला हो, तो उसका स्थान न घिरे। पीछे बैठने पर आग्रहपूर्वक आगे बैठने के लिए अनुरोध किया गया हो, तो अपनी शान है। पीछे बैठने में अपनी नम्रता का प्रदर्शन तो स्पष्ट ही है।

वार्त्तालाप कुशल क्षेम से शुरू करनी चाहिए। अपनी बात करने लगने की अपेक्षा संक्षेप में दूसरे की मनःस्थिति और परिस्थिति जाननी चाहिए। इससे अपनी आत्मीयता प्रकट होती है। बहुत गम्भीरता प्रकट करने की अपेक्षा हँसाते हुए हल्के मूड में बात करना हमेशा लाभदायक होता है। चर्चा के आरम्भ में दूसरों के सद्गुणों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और सत्कार्यों की, सुरुचि की प्रशंसा करनी चाहिए। वार्ता के शुभारम्भ का यह अच्छा तरीका है। इतना सब हो चुकने के उपरान्त ही अपना अभिप्राय प्रकट करना चाहिए। सो भी इस तरह कि यदि सहमति न मिले तो विरोध या कटुता उत्पन्न न हो। हो सकता है कि भविष्य में फिर अभी किसी काम से वहाँ जाना या मिलना पड़े, पिछली बार यदि नाराजगी का वातावरण बना लिया गया था तो वह अगली बार के काम में भी बाधक होगा।

संभाषण में मधुरता का समावेश करना और बीच-बीच में उसकी स्थिति के प्रति सहानुभूति या प्रशंसा व्यक्त करने रहना आवश्यक है। मूल विषय पर जितने समय वार्ता करनी है, उसका कम से कम आधा समय वातावरण अनुकूल बनाने में खर्च करना चाहिए, ताकि आप नितान्त स्वार्थी ही न मालूम पड़ें। रास्ता चलती बात तो मार्ग में या कान में कहकर भी काम चल सकता है; सैद्धान्तिक, प्रगतिशील एवं उपदेशात्मक वार्त्ता के लिए पहले सामने वाले का 'मूड' अनुकूल बना लेना चाहिए। वह न बन पा रहा हो, सामने वाला उपेक्षा की मनःस्थित में हो तो बात आगे फिर कभी के लिए रोकी जा सकती है।

अपनी नम्रता और दूसरे का सम्मान प्रकट करने का अवसर हाथ से न जाने देना चाहिए। नाम के साथ जी का लगाना या उसके पद उल्लेख करना हर किसी को प्रिय लगता है। अपनी शेखी बघारने में दूसरा अपने को हीन कहने जैसे तिरस्कार का अनुभव करता है। अपना भाषण कम झाड़ना चाहिए। उस प्रसंग की चर्चा इस प्रकार करनी चाहिए मानो उसे अनुभवी मानकर जिज्ञासा व्यक्त की जा रही है और कुछ प्रश्न पूछा जा रहा है। ऐसी ही थोड़ी सी बातें हैं जिसे चतुर विक्रेताओं के पास बैठकर उनकी रीति-नीति देखते हुए जाना जा सकता है। सामने वाले पर अपनी सज्जनता, नम्रता और हितैषी होने की छाप डाल देना अपना आधा काम बना लेने के समान है। प्रतिगामी विचारों को उलटकर प्रगतिशील विचारों की स्थापना के लिए तो यह व्यवहार कौशल और भी अधिक आवश्यक है।

दूसरे के द्वारा किये गये अभिवादन की अपेक्षा अपनी ओर से ही उसकी शुरूआत करना अच्छा है, चाहे दूसरा छोटा ही क्यों न हो। उसमें अपनी नम्रता का समावेश हो। बात न इतनी तेजी से करनी चाहिए कि दूसरों को समझने में कठिनाई पड़े और न इतनी धीमे करनी चाहिए कि अनावश्यक विलम्ब लगे। इसी प्रकार स्वर न बहुत ऊँचा हो और न नीचा। सामान्यतः चेहरे पर गम्भीरता लाने की अपेक्षा मुस्कराते रहना उत्तम है।

विचार गोष्ठी उसे कहते हैं जिसमें थोड़ा जन-समुदाय उपस्थित हो। चाहे वह अपनी ओर से बुलाई गई हो या अपने स्वागत में दूसरों द्वारा। ऐसे छोटे समारोहों में बात न व्यक्तिगत परामर्श के ढंग से करनी चाहिए और न बहुत बड़ी जनता के बीच दिये जाने वाले उच्च स्वर के भाषणों जैसी। वार्ता घरेलू ढंग से चलनी चाहिए, जैसे कि अपने निजी परिवार में बैठकर की जाती है। ध्यान दो बातों का रखना चाहिए कि प्रस्तुत प्रतिपादन को मानने में उनका लाभ और न मानने पर उनकी हानि को समझाने का प्रयत्न किया जाय। इन्हीं दो बातों के पक्ष में तर्क, तथ्य, प्रमाण और उदाहरण के रूप में प्रसंगों को प्रस्तुत करते रहा जाय। अपने प्रसंग के सन्दर्भ में आवश्यक तथ्यों को पहले से ही नोट रखना चाहिए या मस्तिष्क में जमा लेना चाहिए ताकि कथन की क्रमबद्धता बनी रहे। अप्रासंगिक विषय उस सन्दर्भ में न घुस पड़े। जो लोग पहले से ही अपने कथन की पृष्ठभूमि नहीं बना पाते, वे ही विषय से बाहर की बातें बोलते और अप्रासंगिकता के जंजाल में फँसकर विषय को लम्बा करते और अपनी असावधानी या अज्ञता का उपहास कराते हैं।

बड़ी सभाओं में भाषण करने में सबसे बड़ी कठिनाई एक ही है कि अधिक बड़े समुदाय को देखकर मनुष्य हड़बड़ा जाता है, सन्तुलन खो बैठता है। सोचता है उपस्थित समुदाय में कितने ही बड़ी आयु के विज्ञजन तथा ऊँची स्थिति के अफसर आदि भी बैठे हैं। इनके सम्मुख अपना ज्ञान एवं व्यक्तित्त्व ओछा है। तब किस प्रकार बात पार पड़ेगी। अपना बोलने का पिछला अभ्यास भी नहीं है। ऐसी दशा में अटपटापन रहा, अपनी अल्पज्ञता का मखौल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बना, तब कैसा होगा ? आदि-आदि हीनता के भाव मस्तिष्क में आते ही मनुष्य चौकड़ी भूल जाता है। जिन प्रसंगों को अनेक बार पढ़ा है, जिस पर चर्चा बहुत बार की या सुनी है उन्हें भी दुहरा देने का साहस नहीं बन पड़ता। जीभ लड़खड़ाती है, मस्तिष्क में से विचार-प्रवाह अस्त-व्यस्त हो जाता है और भाषण अधूरा छोड़कर उसे बीच में ही बन्द करना पड़ता है। इस असफलता पर लोगों को हँसते-मुस्कराते देखकर मन भविष्य के लिए भी कच्चा पड़ जाता है। ऐसी दशा में हिम्मत ही टूट जाती है और आगे कभी कुछ कहने का प्रसंग आता है, तो उससे बचने नकारने को मन करता है।

इस स्थिति का कारण और कुछ नहीं, केवल अभ्यास के अभाव में आत्महीनता का दौर चढ़ जाना ही वह कठिनाई है जिसे पार करने के वक्ता बनने के इच्छुक को कुछ दिनों तक निजी दायरे में अभ्यास करना चाहिए।

साइकिल चलाने की तरह जीभ चलाना भी सरल है। पर प्रारम्भिक अभ्यास तो दोनों का ही करना पड़ता है। यदि अभ्यास न हो और यकायक साइकिल पर चढ़ने का प्रयत्न किया जाय तों अपने गिरने और साइकिल को तोड़ लेने का खतरा रहता है। पर यदि गिरते-पड़ते धीरे-धीरे अभ्यास जारी रखा जाय तो उसे इच्छानुरूप चलाने, मोड़ने का अभ्यास हो जाता है। पीछे प्रतीत होता है कि बात बहुत ही सरल थी, पर अभ्यास के अभाव में कठिनाई प्रतीत होती थी। यही बात जीभ चलाने के सम्बन्ध में भी है। जो व्यक्ति घर में, दुकान पर, सौदा खरीदने में निःसंकोच वार्तालाप कर सकता है उसे जानीमानी, समझीबूझी बातों का भाषण के रूप में अधिक लोगों के सम्मुख कह देने में क्यों कठिनाई होनी चाहिए ? अभ्यास का अभाव और मनोबल का ओछा पड़ जाना ही वे कारण हैं जिनसे घबराकर मनुष्य अचकचा जाता है। उसके मन पर एक तरह का भय चढ़ जाता है। भयभीत व्यक्ति की जिस प्रकार घिग्घी बँध जाती है और कुछ की जगह कुछ कहने लगता है, ठीक यही बात भाषण में लड़खड़ा जाने के सम्बन्ध में घटित होती है।

अच्छा हो उसके लिए पहले से ही अभ्यास किया जाय। यह एकान्त में करना हो तो कमरे में पुस्तकें बिछाकर उन्हें जन समुदाय मान लेना चाहिए और उनके सामने निधड़क अपने विचार व्यक्त करने चाहिए। जंगल में जाना हो तो वहाँ पेड़-पौधों को जनता मानकर अपने विचार व्यक्त करने चाहिए। भेड़-बकरियों के झुण्डों, चीटियों, दीमकों, कीड़े-मकोड़ों को भी जनता मानकर अपना विचार प्रवाह जारी रखने का प्रयास करना चाहिए।

सभा में जब अधिक लोग बैठे हों, तब भी, ऐसी मान्यता बनानी चाहिए कि यह सब स्कूली छात्र हैं और इनमें आप सबके अध्यापक। अध्यापक बच्चों को अपने से कम ज्ञान वाला मानकर धड़ल्ले से उन्हें पढ़ाता रहता है। यही अपनी मनःस्थिति सभा के सन्दर्भ में बना लेने से झिझक दूर हो जाती है और गाड़ी पटरी पर लुढ़कने लगती है। घर में छोटे बच्चों को कहानियाँ सुनने का चाव होता है। उन्हें एक ही कहानी रोज सुनाने का क्रम भी बना लिया जाय तो भी जीभ खुल जाती है और बड़ों के सामने भी उस अभ्यास को कार्यान्वित करने लगती है। छोटी गोष्ठियों में अभ्यास विकसित कर लेने के बाद बड़ी सभाओं में बोलने का उपक्रम करना चाहिए। बहुत बड़ी जनसंख्या और उसमें उपस्थित अधिक आयु के या अधिक विज्ञजनों को देखकर मनुष्य लड़खड़ा जाता है और अपने को किसी विपत्ति में फँसा हुआ अनुभव करता है। इस स्थिति से यदि अपने को बचा लिया जाय तो किसी कम पढ़े वक्ता को भी विद्वानों की सभा में अपनी बात करते हुए कुछ संकोच न हो।

भाषणों की असफलता में एक और भी कारण होता है कि वक्ता अपने भाषण का समय और उसमें व्यक्त किये जाने वाले विचारों का क्रम एवं समय निर्धारित नहीं करता। यह एक कागज पर पहले से ही नोट कर लेना चाहिए और उस कागज को इस प्रकार सामने रखना चाहिए कि देखने वालों की सीधी नजर उस पर न पड़े। देखा गया है कि कालेजों के प्रोफेसर अपने भाषण के प्वाइण्ट घर से नोट करके लाते हैं, खड़े होकर बोलते हैं और सामने रखे स्टैण्ड पर उस कागज को रख लेते हैं। किस विषय के प्रतिपादन में कितना समय लगना चाहिए यह भी संकेत कर लेते हैं। इस आधार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर उनका भाषण नियत अवधि में परिपूर्ण सांगोपांग बन जाता है। यही रीति-नीति आरम्भिक वक्ताओं को अपनानी चाहिए। उन्हें छुट्टल बोलने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

विशेष महत्त्वपूर्ण गोष्ठियों में राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री तक अपना लिखा-छिपा भाषण ही पढ़कर सुनाते हैं। इससे वे नपे-तुले सारगर्भित शब्दों में वह सब कुछ कह लेते हैं, जो उन्हें निर्धारित योजना के अनुसार कहना चाहिए। यदि ये ऐसा न करें तो समय की सीमा में व्यतिरेक उत्पन्न हो या निर्धारित विषय में से कुछ आवश्यक छूटेगा और अनावश्यक बढ़ेगा।

इसमें किसी वक्ता को कोई बेइज्जती अनुभव नहीं करनी चाहिए कि उनने लिखित प्रसंगों के आधार पर बोला। मनमर्जी के ढंग से क्यों नहीं कहा। यह स्थिति भी आती है, पर बहुत अभ्यास के बाद, बहुत दिनों बाद, अन्यथा उन्मुक्त बोलने वाले प्रसंग से बाहर चले जाते हैं और मूल विषय की कितनी ही महत्त्वपूर्ण बातें भूल जाते हैं। इस अटपटेपन की अपेक्षा यह कहीं अच्छा है कि अपने समग्र भाषण के विषयों को निर्धारित समय के अन्तर्गत कहने की प्रक्रिया को ही आरम्भिक दिनों में दुहराया जाय।

कुछ भाषण ऐसे होते हैं, जो किसी आधार पर चलते हैं। रामायण कथा, भागवत कथा, प्रज्ञा पुराण कथा आदि की शैली ऐसी हैं कि उन पुस्तकों में कथा और उसका क्रम लिखा रहता है। उसी के साथ थोड़ी-थोड़ी व्याख्या-विवेचना जोड़ते-घटाते रहने का अभ्यास स्वयं कहने या दूसरों द्वारा कही कथा शैली सुनने भर से हो जाता है। यही बात गीता-उपनिषद् आदि की कथाओं के सम्बन्ध में भी है। उनमें पुस्तक के आधार पर सहारा मिलता रहता है और उसी में थोड़ा जोड़ने-घटाने भर से प्रसंग की क्रमबद्धता जमी रहती है। यही शैली सरल भी है और रोचक भी। व्याख्यानों में जहाँ विचारों की पूँजी कुछ ही दिन में निपट जाती है, वहाँ कथा वाचन का क्रम महीनों चलता रहता है। प्रज्ञा पुराण कथा लोगों ने जहाँ-कहीं भी कही है, वहाँ वह अपनी प्रगतिशीलता के कारण सर्वत्र बहुत ही लोकप्रिय हुई है। वाचकों ने पहले अपने घर-परिवार में अभ्यास किया है और बाद में वे सार्वजनिक कथा कहने बैठे हैं। अपनी सूझबूझ जहाँ-तहाँ मिलाते चलने से या क्षेत्रीय भाषणों में उन कथानकों को कहते चलने से शिक्षित अशिक्षित सबके लिए समान रूप से रोचक और प्रभावोत्पादक सिद्ध हुई है। कुछ दिन पूर्व मिशन की प्रकाशित सत्यनारायण व्रत कथा में भी उपयोगी संशोधन हो जाने से बहुत प्रचलन हुआ था। कथा प्रधान रहने से इनकी रोचकता यथावत् बनी रहती है। सुनने वाले पुनरावृत्ति का दोष लगाकर उससे ऊबते नहीं। इस प्रकार कुछ दिनों छोटे समुदायों में प्रवचन करने या कथा कहने की प्रक्रिया अपनाकर उस विषय में सहज ही प्रवीणता-पारंगता प्राप्त की जा सकती है।

यह समझना नितान्त आवश्यक है कि युगपरिवर्तन की पृष्ठभूमि में विचार क्रान्ति ही प्रमुख कार्यपद्धति है और इसके लिए साहित्य ही पर्याप्त नहीं, उसमें लिखे प्रतिपादनों से विशेषतया अशिक्षितों में और क्षेत्रीय भाषाओं में पहुँचने के लिए वाणी के अतिरिक्त और कोई माध्यम ही नहीं हो सकता।

निरर्थक वाचालता का एक दोष दुर्गुण गिना गया है, पर लोक शिक्षण के लिए यदि उसका प्रयोग किया जाता है, तो उसे अमृत वर्षा के समान ही समझा, कहा और माना जाना चाहिए।

स्कूलों में वाद-विवाद प्रतियोगिता का अभ्यास कराया जाता है। यह शैली उत्तम है। भले ही वे लड़के नेता या वक्ता न बनें, पर अपना विषय जनता के, परिजनों के, अफसरों के या जिस किसी के सम्मुख व्यक्त करने में झिझक तो छूट जाती है। यह झिझक न छूटे तो व्यक्ति भीतर घुटता रहता है। न अपनी बात वह दूसरों के सामने कह पाता है और न किसी गुत्थी के निराकरण में समर्थ हो पाता है। यह एक बड़ा दुर्भाग्य है। योग्यता होते हुए भी उसका सदुपयोग न कर पाना हर दृष्टि से खेदजनक ही कहा जा सकता है। मित्र मण्डली में जो बातें घण्टों तक बिना रुके कही जा सकती हैं, उन्हीं को अपरिचित जनसमुदाय के सम्मुख प्रकट करने में पत्थर उठाने जैसा बोझ पड़ता और असफल रहना पड़ता है। यह मानसिक दुर्बलता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इसे प्रयत्नपूर्वक आसानी से भगाया जा सकता है। मात्र भयभीत होकर सहम जाना ही इस सन्दर्भ में लदी हुई असफलता का एकमात्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण है। इस व्यथा से अपने आप को प्रत्येक प्रयत्नशील आसानी से थोड़ा अभ्यास नियमित रूप से करते रहने पर छुड़ा सकता है।

प्रज्ञा प्रशिक्षण विद्यालय के प्रस्तुत क्रम में प्रति सप्ताह एक पुस्तक ही तो पढ़ती है। २२ पृष्ठ एक घण्टे में पढ़े और समझे जा सकते हैं। शेष छः दिनों तक उन पर वाद-विवाद चलना चाहिए। स्कूलों जैसी वाद-विवाद प्रतियोगिता हर दिन चलनी चाहिए, ताकि इस प्रतिपादन के विपक्ष में जो लोग अड़ंगेबाजी लगाते रहते हैं, वह पक्ष भी उभर कर सामने आये और उसका उत्तर देते हुए वक्ता को यह अवसर भी मिले कि यदि कहीं विरोध-वितंडावाद खड़ा हो तो उसके उत्तर में पहले से ही तैयारी करके रखी जा सके। अपने पक्ष में तर्क और तथ्य तो इन छोटी पुस्तिकाओं में है, पर ऐतिहासिक प्रमाणों की कमी है। उन्हें प्रज्ञापुराण के सभी खण्ड पढ़कर जाना-समझा जा सकता है और जब कभी कहने का अधिकार-अवसर हो तो उन कथानकों का अपनी वार्ता से सम्बन्धित पक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार वाद-विवाद का क्रम एक वर्ष तक चलता रहे तो कोई कारण नहीं कि सामान्य विचारशील व्यक्ति भी अच्छा वक्ता न बन सके। इसके लिए बहुत अधिक शिक्षित होना अनिवार्य नहीं। अशिक्षित समुदाय में वहाँ की क्षेत्रीय भाषा में उस प्रतिपादन को अच्छी तरह समझाया जा सकता है। इसी प्रकार शिक्षार्थियों से यह भी कहा जा सकता है कि वे अपना पक्ष प्रतिपादन करने वाले कथानक प्रज्ञापुराण में से ढूँढ़कर रखें।

५२ पुस्तकें तो ५२ दिनों में एक-दो घण्टा समय लगाकर पढ़ी जा सकती हैं, पर उनके लिए एक वर्ष का समय इसीलिए रखा गया है कि प्रतिपादित प्रसंग मस्तिष्क में अच्छी तरह जड़ जमा ले और व्यक्तिगत परामर्श, छोटी विचार गोष्ठी या बड़ी सभा में उन प्रसंगों पर बोल सकना भली प्रकार अभ्यास में आ जावे और उन्हें कभी अध्यापक का काम करना पड़े, तो अपने छात्रों को कथनोपकथन की शैली का अभ्यास करा सकें, झिझक छुड़ा सकें।

वक्तृता के अतिरिक्त दूसरा प्रयास संगीत माध्यम का है। यह अपेक्षाकृत अधिक सरल पड़ता है। उसमें लोक सृजन और लोक मंगल का सम्मिश्रण हो जाने से प्रस्तुतीकरण अपेक्षाकृत अधिक सरल बन जाता है। उसे सभी शिक्षित-अशिक्षित मनोयोगपूर्वक सुनते हैं। वाद्य यन्त्रों की स्वर लहरी अकेली अपने आप में इतनी आकर्षक होती है कि उस माध्यम से दूर-दूर तक आवाज पहुँचती है और उस कौतूहल को देखने सुनने के लिए अनायास ही ढेरों लोग इकट्ठे हो जाते हैं। गीतों का कोई-कोई पद ऐसा होता है जो सुनने वालों के लिए हृदयग्राही बन जाता है और उसका कोई विशेष आकर्षक अंश वे अपने आप भी गुनगुनाते रहते हैं।

संगीत के और भी अनेक हृदयग्राही गुण हैं। उस आधार पर तथ्यों को कंठाग्र करना बहुत सरल पड़ता है। यही कारण है कि वेदों से लेकर पुराणों तक का अधिकांश साहित्य छन्द बद्ध लिखा गया है। गद्य में लिखी अनेक पुस्तकें विस्मृत हो गईं। पर ढोला मारू, आल्हा खण्ड, नौटंकी, रामायण आदि अभी तक जन-जन की जीभ पर चढ़ी हैं, क्योंकि उनकी रचना छन्द बद्ध हुई है। यदि उन्हीं को गद्य में लिख दिया जाय, तो समझना भर सरल पड़ेगा किन्तु उन्हें स्मृति में स्थायित्त्व दिलाने में सफलता न मिलेगी।

यही कारण है कि मध्यकाल के सभी सन्तों ने अपनी रचनाएँ छन्द बद्ध रूप में की हैं। सूर, तुलसी, कबीर, रैदास, चरनदास, दादू, मीरा आदि के भजन अभी भी जन-जन की जिह्वा पर चढ़े हुए हैं और उन्हें कई बार कई अवसरों पर सुन लेने से भी तृप्ति नहीं मिलती। यह पद्धति हमें भी अपनानी पड़ेगी। खड़ी बोली में अभी लिखने का विचारों को छन्द बद्ध करने का क्रम आरम्भ किया गया है किन्तु यह बन नहीं पड़ा कि क्षेत्रीय भाषाओं में भी उनका अनुवाद हो चले। इस प्रयास को जल्दी ही आरम्भ किया जा रहा है ताकि किसी भी भाषा-भाषी को यह शिकायत न करनी पड़े कि हम तक युगान्तरीय चेतना का आलोक नहीं पहुँचा और हम प्रकाश की ओर अग्रसर न हो सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रज्ञा प्रशिक्षण में संगीत माध्यम को इसीलिए अनिवार्य रूप में सम्मिलित किया गया है और पाठ्यक्रम एक वर्ष का रखा गया है कि सिद्धान्त समझना सरल होते हुए भी इनका अभ्यास करना और तर्क बिठाने में समय लगता है। यह कार्य जल्दी-जल्दी में तुर्त-फुर्त नहीं हो सकता। अभ्यास जितना पुराना होगा, उसमें निखार उतना ही अधिक आवेगा। इस तथ्य के सम्बन्ध में दो रायें नहीं हो सकतीं।

वाद्य यन्त्रों को दो भागों में बाँटा गया है। एक स्वर यन्त्र, दूसरे ताल यन्त्र। हारमोनियम, सितार, गिटार, बैंजो आदि स्वर यन्त्र हैं। ढपली, ढोलक, मजीरा, घुँघरू, खड़ताल, बंगाली मजीरा, इकतारा जैसे वाद्य यन्त्र ताल वाद्य हैं। इनका सीखना और अभ्यास करना सरल है। ताल एक साथ चले उनके बीच पृथकता न हो। बेतुकापन न आने पाये। कंठ और वाद्य यन्त्र एक साथ लें। इतने भर से काम चल जाता है। यही कारण है कि ताल वाद्यों का अभ्यास ताली बजाने की प्रक्रिया से आरम्भ किया जाता है। ताली एक साथ बजने लगे, स्वर विभिन्न होते हुए भी एक साथ निकले। यह भी है तो एक प्रकार की साधना ही पर यह स्वर साधना की तुलना में सरल है। इनका अभ्यास एक-दो महीने के प्रयास से ही हो जाता है। ताल पकड़ में आते ही प्रवीणता आ जाती है। फिर भी जिन लोगों के लिए भी स्वर यन्त्रों का अभ्यास और खरीद सम्भव हो, शिक्षण की स्वतन्त्र व्यवस्था कर सकें; वे उसे अपनाने के लिए भी प्रयत्न कर सकते हैं। अधिक आकर्षक यन्त्र सभी को अच्छे लगते हैं, पर वे हैं महँगे और सीखने में समयसाध्य। साथ ही यह भी एक कठिनाई है कि मस्तिष्कीय संरचना में स्वरों की पहचान और पकड़ होनी चाहिए, जो तीखे मस्तिष्कों के लिए भी सधे हुए शिक्षक के मार्गदर्शन में ही बन पडती है। किन्तु ताल वाद्यों में सम्बन्ध के ऐसी बात नहीं। मोटी बुद्धि वाले भी उन्हें लगनपूर्वक अपनाये रहने पर अपने विषय में काम चलाऊ हो जाते हैं। स्वर का साथ चलना तो नितान्त आवश्यक है। उसमें आगा-पीछा करने की गुंजायश नहीं है। पर स्वर हल्का भारी हो तो भी गाड़ी रुक जाती है।

पूर्व निर्धारित योजनानुसार एक वर्षीय शिक्षण हरिद्वार में सम्भव नहीं था। घर छोड़कर काम धन्धे और गृह व्यवस्था में व्यवधान करके इतना ही हो सकता है कि एक महीने जितने थोड़े समय के लिए युग शिल्पी सत्र में मौलिक सिद्धान्तों और आधार सूत्रों को समझा जा सके। किन्तु अभ्यास के लिए तो लम्बा समय चाहिए। इसलिए वक्तृता और संगीत का दुहरा अभ्यास निरन्तर चलाते रहने का कार्य अपने स्थान पर ही सुविधा का समय निकालते हुए हो सकता है। अथवा शान्ति कुञ्ज में त्रैमासिक सत्र में यह अभ्यास हो सकता है।

उद्देश्य हर गाँव में प्रचारकों की मण्डलियाँ खड़ी करना है ताकि संस्कारों के अवसर पर परिवार गोष्ठियाँ और पर्वों के अवसर पर ग्राम सभाओं का आयोजन हर महीने, हर सप्ताह और हर वर्ष होता रहे। यह कार्य वक्ताओं द्वारा उतनी अच्छी तरह सम्भव नहीं था। क्योंकि धारा प्रवाह भाषण विषय की सीमा में रहते हुए बोल सके, इस योग्य प्रतिभा हर किसी में होना या उसका निखरना सरल नहीं है। किन्तु गायक मण्डली का गठन अपेक्षाकृत सरल है। इसके लिए स्वर साधक हो तब तो कहना ही क्या ? अन्यथा कम योग्यता वाले स्त्री-पुरुष भी थोड़ा अभ्यास कर लेने पर इस सन्दर्भ में सफल हो सकते हैं। गाँवों में पुरातन प्रचलन भी संगीत अभ्यास का है। सावन में स्त्रियों के "मल्हार" और फाल्गुन में पुरुषों के 'फगुआ'' गाये जाते हैं और वे महीने ऐसे ही रस रंग से भरे गुजर जाते हैं। इस पुरानी परिपाटी को उद्देश्यपूर्ण बनाना मिशन का उद्देश्य है। इसलिए इस प्रज्ञा प्रशिक्षण को मात्र सैद्धान्तिक न रखकर उसे रागमय उत्साहवर्धक और सर्वसाधारण को समझने योग्य बनाया गया है। जो युगशिल्पी एक महीना हरिद्वार रहकर गये हैं उनके लिए यह सरल पड़ेगा कि अपने अभ्यास को थोड़ा और बढ़ाकर स्थानीय प्रशिक्षण को और आगे बढ़ा सकें और स्थानीय विद्यालय में अध्यापक की भूमिका निभा सकें।

तालवाद्यों में उन्हीं को प्रधानता दी गई है जो देश के अधिकांश भागों में प्रयुक्त होते हैं; पर ऐसा भी हो सकता है कि किसी क्षेत्र विशेष में अन्य ढाँचे के वे बनते हों और उनका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सीखना तथा खरीदना भी सरल हो। ऐसी दशा में हरिद्वार क्षेत्र में मिलने वाले तालवाद्यों का खरीदना आवश्यक नहीं। उनके स्थान पर अधिक सरलता से स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होने वाले वाद्य यन्त्रों का भी उपयोग हो सकता है।

इसी प्रकार क्षेत्र विशेष में विभिन्न ध्वनियों को उत्पन्न करने वाले यन्त्र भी प्रचलित हैं। उन्हें बजाने वाले भी उन्हीं क्षेत्रों में मिल जाते हैं। मिशन की दिशा एवं भावना को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रीय ध्वनियों एवं गीतों में इस विचारधारा का अनुवाद भी कराया जा सकता है। अच्छा तो यही होता कि समूचे देश की एक ही भाषा होती और उसी में परस्पर वार्तालाप करना तथा गायन सुनना सर्वसाधारण के लिए सरल होता है। यह बात बन तो रही है। खड़ी बोली हिन्दी भाषी क्षेत्रों में ही नहीं, अन्यान्य भाषाई क्षेत्रों में भी समझी जा रही है, भले ही वे उसे भली प्रकार बोल न पाते हों। इसलिए हिन्दी गीत को गाते हुए उनके कठिन अंशों को क्षेत्रीय भाषा में भी समझाया जा सकता है। यदि अधिक कठिनता हो और इससे काम चलता न दीखे तो ही भाषाई अनुवाद के झंझट में पड़ना चाहिए। कुछ वर्षों में तो हिन्दी स्वभावतः सारे राष्ट्र की एक ही मातृभाषा हो जायेगी। कठिनाई इन आरम्भिक दिनों की ही है।

समर्थ गुरु रामदास ने अपने प्रभाव क्षेत्र में पाठशालाओं, प्रवचन प्रयोगों के अतिरिक्त व्यायामशालाओं का भी समन्वय रखा था। उनके विनिर्मित ७०० महावीर मन्दिरों में से प्रत्येक के साथ एक व्यायामशाला अनिवार्य रूप से जुड़ी थी। इसका उद्देश्य शरीर बल और मनोबल बढ़ाना था। साथ ही आये दिन अन्यान्य देशों के आक्रमण का भी खतरा रहता था। उनसे लोहा लेने के लिए सैन्य शिक्षा की आवश्यकता पड़ती थी। उन दिनों वे उन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। अब हमें अपने प्रशिक्षण विद्यालय में ऐसे कार्यक्रम भी जोड़कर रखने चाहिए जो जन स्वास्थ्य को प्रभावित करें। अस्वस्थ शरीर में अस्वस्थ मन रहता है। अस्वस्थ शरीर से काम स्वस्थ हुए बिना नहीं किया जा सकता। इन तथ्यों से पूरी तरह ध्यान में रखते हुए ही प्रगति पथ पर आगे बढ़ चलना सम्भव हो सकता है। इस महती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हरिद्वार के युग शिल्पी सत्रों और शाखाओं के प्रज्ञा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इस नये विषय का भी समावेश किया गया है। 'फर्स्टएड' रोगी परिचर्या, स्काउटिंग, प्रज्ञा व्यायाम, खेलकूद, ड्रिल, आहार-विहार विज्ञान, जड़ी-बूटी चिकित्सा आदि विषय इसीलिए समाविष्ट किये गये हैं कि स्वास्थ्य से सम्बन्धित अनेकानेक अति आवश्यक विषयों का ज्ञान सर्वसाधारण को हो सके और हमारा देश हर दृष्टि से सबल और समर्थ बन सके।

जिस प्रकार हर गाँव के पीछे एक पाठशाला का होना आवश्यक है उसी प्रकार एक व्यायामशाला भी होनी चाहिए। एक गाँव के छोटे बच्चे, महिलाएँ तथा अशक्त व्यक्ति दूसरे गाँवों में पढ़ने नहीं जा सकते। दूरी पार करने में डरते कतराते हैं। उसी प्रकार महिलाओं के लिए पुरुषों के साथ समूह में व्यायाम करना, लाठी चलाना, दुष्ट गुण्डों का सामना करने योग्य कौशल एवं मनोबल प्राप्त करने के लिए यह कठिन है कि पुरातन प्रथा के रहते सामूहिक रूप से उसमें भाग लें। उनके लिए घिरी हुई जगह होनी चाहिए। सुरक्षित भी। तमाशबीनों की पहुँच से बाहर भी। उनकी शिक्षिका एक प्रशिक्षित महिला हो। ऐसा न बन पड़े तो दूसरा विकल्प यह हो सकता है कि घर के वयस्क पुरुष व्यायामशाला जाया करें और महिला उपयोगी शरीरचर्या घर आकर परिवार की महिलाओं को सिखाया करें। व्यायामशाला नाम पुराने समय में ही ठीक था क्योंकि तब उनका उद्देश्य गाँव के युवकों की आक्रमणकारियों से लोहा ले सकने वाला समूह बनाना अथवा सेना में भर्ती होना भर था। समर्थ की व्यायामशालाएँ इसी आधार पर स्थापित हुई थीं कि वे शिवाजी द्वारा संचालित स्वतन्त्रता संग्राम में भाग ले सकें। पर आज तो स्वास्थ्य से सम्बन्धित अनेक शाखाएँ प्रशाखाएँ हैं। आज तो आहार-विहार और रहन-सहन के हर प्रसंग में विकृतियों की भरमार हो गई है। इसलिए पुरातन काल में जिन प्रसंगों की चर्चा विस्तारपूर्वक करने की आवश्यकता नहीं थी, मात्र "आहार-विहार" का ध्यान रखने मात्र से काम चल जाता था, वहाँ अब इन दो सन्दर्भों के अनेकानेक विषयों का ज्ञान कराना आवश्यक हो गया है, जिसमें शरीर संरचना और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवयवों की कार्य पद्धति का समझना भी आवश्यक हो गया है। शिक्षा की तरह हम स्वास्थ्य की दृष्टि से भी पिछड़ गये हैं। गरीबी जिसे तीसरा नम्बर मिलना चाहिए था उसे आज विलासिता और आरामतलबी की अभिवृद्धि के कारण प्रथम नम्बर मिलने लगा है। पारिवारिक आचार संहिता की तो कहीं चर्चा ही नहीं होती, जिसके कारण कुटुम्ब कलह के घर बनते जाते हैं और योरोप की तरह मियाँ-बीबी के अलग घर बसते चले जा रहे हैं। खाने को स्वास्थ्यवर्धक हरीतिमा का अभाव हो, सो बात नहीं है। बथुआ, चौलाई जैसी वस्तुएँ तो खर-पतवार में गिनी जाती हैं और किसी भी खेत से चाहे जितनी मात्रा में उसे उखाड़कर प्रायः आधी मात्रा में रोटी के साथ मिलाकर अन्न की काफी बचत हो सकती है। पर वे साधारण सी उपयोगी बातें दुर्लभ जैसी बन गई हैं। कुपोषण का प्रसंग देहाती क्षेत्र में नहीं आना चाहिए, पर देखा ठीक उल्टा जाता है। उस कारण देहातों में बच्चे ही नहीं, बड़ी आयु के लोग भी बड़ी संख्या में मरते हैं। व्यायामशाला का क्षेत्र जिसे आज की स्थिति देखते हुए स्वास्थ्य संरक्षण कहना चाहिए, शिक्षा संवर्धन की तरह नितान्त आवश्यक हो गया है और रहन-सहन का क्रम इतना उलट गया है कि शिक्षा क्षेत्र में जिस प्रकार वर्णमाला पढ़ाने की आवश्यकता पड़ती है उसी प्रकार जन-साधारण को आहार, व्यायाम, स्वच्छता आदि के आधारभूत प्रशिक्षणों की आवश्यकता है। आसन प्राणायाम के सहारे, जड़ी बूटियों के सर्वसुलभ उपयोग से स्वास्थ्य संरक्षण हो सकता है। किन्तु तथाकथित उच्च शिक्षा प्राप्त लोग अभी भी इन जानकारियों से वंचित बने हुए हैं।

महिलाओं के लिए भी स्वास्थ्य सम्बन्धी यह दूसरा विषय भी जानना उतना ही आवश्यक है। यौनाचार में अति बरते जाने और उद्धत तरीके अपनाये जाने के कारण वे किशोरावस्था में अनेक यौन रोगों की शिकार हो जाती हैं। गर्भिणियों के रहन-सहन और आहार विहार में जिन सतर्कताओं की जानकारी नितान्त आवश्यक है उससे वे प्रायः नितान्त अनजान रहती हैं। प्रसवकाल का प्राणलेवा संकट अनेक प्रसूताओं की जान लेकर टलता है। शिशु जिन्हें भविष्य की आशा कहना चाहिए—जन्मकाल में अत्यन्त दुर्बल होते हैं। उन्हें ठीक तरह से पाल-पोस सकना एक प्रकार से उन्हें नया जीवन देने के समान है। इस विषय में युवतियाँ और बूढ़ियाँ दोनों ही एक-दूसरे से गई गुजरी स्थिति में होती हैं। पुरुषों को तो रोते बच्चे देखकर स्त्रियों को गालियाँ देने और दोषारोपण करने के अतिरिक्त और कुछ आता नहीं। वे बच्चों के रोग, दुबले या बीमार होने के कारणों में से एक के सम्बन्ध में उतनी जानकारी से भी अनभिज्ञ रहते हैं जितनी कि किसी को पिता बनने से पूर्व जाननी चाहिए। स्त्रियाँ तो भूत-पलीत का आक्रमण, टोना-टोटका या नजर लगने से आगे की और कोई बात जानती ही नहीं। इस स्थिति में बाल-मृत्यु की दर बढ़ी चढ़ी रहे, उनकी बीमारी पर भारी परेशानी उठानी पड़े और ढेरों पैसा खर्च हो तो आश्चर्य ही क्या है ? बीमारियों से निपटने में जो समय और पैसा खर्च होता है, उसे यदि जानकारी संग्रह करने और स्वच्छता का आहार का बुद्धिसंगत उपाय बरतने के लिए खर्च किया जा सके तो वह व्यथा न सहनी पड़े जो इन दिनों हर किसी को सहनी पड़ती है।

अशिक्षा, अस्वस्थता, दरिद्रता की जन्मदात्री है 'प्रतिगामिता'। लम्बे समय से अनुपयुक्त परिस्थितियों में समय गुजारते और कुरीतियों से ग्रसित रहने के कारण मानसिक धरातल ऐसा गया-गुजरा हो गया है कि समझदारी की बातें भीतर घुसती ही नहीं। किसी प्रकार हँसने-समझाने का प्रयत्न किया जाय तो वे ठहरती नहीं। गाड़ी लुढ़ककर पुरानी लीक पर ही आ जाती है। यही है हमारे पिछड़ेपन का मूलभूत कारण जिसने हमारे व्यक्तित्त्व को हेय और सामाजिक धरातल को गये-गुजरे स्तर का बना दिया है।

चिन्तन से चरित्र, चरित्र से व्यवहार, व्यवहार से परिस्थितियाँ बनती हैं। हम परिस्थितियों को सुधारना चाहते हैं और उसके प्रमुख आधार को एक प्रकार से भुला ही बैठे हैं। जड़ को सींचे बिना फल-फूलों से लदा वृक्ष देखने की आशा लगाये बैठे रहते हैं। यहाँ तक कि गणित का वर्णमाला का वह मोटा नियम भी भूल जाते हैं कि आरम्भ कहाँ से किया जाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चाहिए। बुराइयों की जड़ गरीबी को मानते हैं और सम्पन्न बनने के उपायों पर सारा ध्यान एकत्रित करते हैं। इतने पर भी कुछ बनता नहीं। किसी प्रकार सम्पन्नता बढ़ने भी लगे तो वह प्रतिगामिता के छलनी जैसे हजार छिद्रों में से रिसकर जमीन पर जा गिरती है। खर्चीली शादियाँ जैसी प्रथाओं के रहते कोई समाज किसी भी उपाय से सम्पन्न नहीं हो सकता। जो जमाया जायेगा वह फूटे घड़े की तरह कुरीतियों के छिद्रों से होकर टपक जायेगा।

हमें हपना समाज—जन-मानस प्रगतिशील बना चाहिए ताकि मसखरे लूट-लूटकर न खाते रहें। प्रथा प्रचलन के नाम पर धर्म की दुहाई देने वाले ऐसे व्यवधान न खड़े करते रहें जिनके कारण न शिक्षा प्राप्त कर सकना सम्भव हो, न स्वास्थ्य सुधारना। जब तक आवश्यक-अनावश्यक का बोध न हो तब तक अर्थ उपार्जन और उसका संरक्षण बन ही न पड़ेगा। स्वच्छता और रख-रखाव का ज्ञान न हो तो चूहे जैसे क्षुद्र प्राणी ही एक पूरे मनुष्य का आहार लूटते रहेंगे। गन्दगी में पलने वाले दिखाई न पड़ने वाले कीड़े तक अनेक बीमारियों को लेकर चढ़ दौड़ेंगे। भिक्षा व्यवसाय में लगे हुए ऐसी भ्रान्तियों का अनुयायी बनायेंगे जिससे पुरुषार्थ का सही दिशा में लगाना तो दूर, बेतुके कर्मकाण्डों और तथाकथित तीर्थों में पैसा लुटाने के उपरान्त कुछ बचे ही नहीं—प्रगति का कोई उपाय सूझे ही नहीं।

पारस्परिक स्नेह, सौजन्य और सहकार का महत्त्व समझा-समझाया जा सके तो तनिक-तनिक सी बात पर विग्रह खड़े होंगे और प्रतिशोध का एक कुचक्र चलेगा जो पीढ़ियों तक अपना कुचक्र चलाता रहे।

रचनात्मक स्वभाव न हो तो उस स्थिति में विग्रह और विनाश ही सूझेगा। आत्म-निरीक्षण की—दूरदर्शी विवेकशीलता की कमी हो तो सीधी बात उल्टी लगेगी, उल्टी सीधी। ऐसी दशा में सुख शान्ति से रहने और रहने देने का अवसर कैसे बने ?

अपनी, अपने समाज की दुर्गति पर जितना ही गम्भीरतापूर्वक विचार करते हैं उतना ही स्पष्ट रूप से यह तथ्य उजागर होते हैं कि हमारा चिन्तन तन्त्र लड़खड़ा गया है। चिन्तन अनुपयुक्त होने पर चरित्र गिरता है और व्यक्तित्त्व का स्तर पतन के गर्त में गिरता है। ऐसी स्थिति में परिस्थितियाँ अनुकूल हो ही कैसे सकती हैं ? सीधी बात यदि समझ में आने लगे तो हमें अपने विचार पद्धति का सुधार करना चाहिए, प्रतिगामिता से पीछा छुड़ाना चाहिए। इसी प्रयत्न का नाम है विचार क्रान्ति या प्रज्ञा अभियान। इसी कल्पवृक्ष को सींचने पर हम अभीष्ट सुविधाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

यह बीमारी एक-दो तक सीमित नहीं है। यह छूत का रोग व्यापक रूप से फैला है। लगता है विचारशीलता का पलायन ही हो गया है। कुएँ में भाँग पड़ जाने से उस पानी को पीने वाले सभी बावले हो जाते हैं। उदाहरण इसी प्रकार के दीख रहे हैं। गरीब भूखा मरने से बेईमानी करे या भीख माँगे यह बात समझ में आती है पर जिनके पास सम्पन्नता प्रचुर परिमाण में भरी पड़ी है वे चोरी और जाल साजी करने पर उतारू क्यों हों ?

जो अशिक्षित हैं, वे भटकें तो बात समझ में आती है। पर जिनने उच्चस्तरीय शिक्षा की डिग्री प्राप्त की है वे अपने स्वास्थ्य और मानसिक सन्तुलन की साज सँभाल भी न कर पायें इसका क्या कारण हो सकता है ?

जो आये दिन प्रगतिशीलता की दुहाई देते हैं, दूसरों को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश देते हैं वे ही निजी जीवन में भ्रष्टाचार पर उतारू हों और ऐसे काम करें जो उनकी कथनी से सर्वथा विपरीत हो, तो इसके लिए क्या कहा जाय ?

धर्म का उद्देश्य दूसरों को नीतिवान, सदाचारी, कर्त्तव्यपरायण और न्यायनिष्ठा बनाना है। फैली हुई भ्रान्तियों का उन्मूलन करना है। पर वे ही जब मछलियाँ पकड़ने, चिड़िया फँसाने के जाल बुनने लगें तो इनके लिए किसे दोष दिया जाय ?

शासन करने वालों को प्रजा का हित प्रधान मानना चाहिए पर जब वे स्थानीय स्वार्थों के लिए अन्य देशवासियों के शोषण पर उतारू हों तो उन्हें न्याय और कानून का संरक्षक कैसे माना जाय ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कला का उद्देश्य सद्भावनाओं और उच्च संवेदना को जागृत करना है। पर उसी क्षेत्र से प्यार के लबादे में कामुकता की आग बखेरी जाय, साहित्यकार जब पथभ्रष्ट करने के लिए उत्तेजना देने वाला साहित्य रचें और अपने को मार्गदर्शक होने का दावा करें तो इस विडम्बना का दोष किसे दिया जाय ?

आज सभी दिशाओं में ऐसा हो रहा है जो नहीं होना चाहिए था। इसके लिए दो ही उपाय हैं। एक वे जिनका शोषण हो रहा है, जिन्हें कुटिलता के कुचक्र में फँसाकर पथभ्रष्ट किया जा रहा है, उन्हें वस्तुस्थिति समझाकर अत्याचार से निपटने के लिए संघर्षरत किया जाय। दूसरा यह कि मानवी कल्याण को ध्यान में रखकर मूर्धन्यों को सही मार्ग अपनाने के लिए प्रचण्ड प्रचार द्वारा सहमत किया जाय। इन दोनों में से एक या दोनों ही उपाय अपनाने का ठीक यही समय है। इसी प्रक्रिया को "प्रज्ञा अभियान" नाम दिया गया है।

पर्व एवं त्यौहार देव-संस्कृति की अनमोल धरोहर

यह विश्व-प्रकृति, जिससे मानव तथा अन्य समस्त प्राणियों और भौतिक पदार्थों की उत्पत्ति हुई है, एक विशेष नियम से बँधी है। उस नियम के अनुसार ही मानव-प्रकृति का भी विकास हुआ है। इस व्यापक नियम के नियन्त्रण में ही हमको दिखलाई पड़ने वाले इस जड़-चेतन संसार के सब कार्य चल रहे हैं इन्हीं नियमों को, जिनके आधार पर यह विश्व-संसार टिका हुआ है, जान लेना और उनके अनुकूल व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन की व्यवस्था करना यही भारतीय संस्कृति और सभ्यता का सार है। यहाँ के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने समाज और व्यक्तियों के लिए जो आचरण और कर्त्तव्य नियत किये हैं, उन सबमें इसी गहन तत्त्व को दृष्टिगोचर रखा गया है। वे जानते थे कि मनुष्य का समस्त जीवन इन्हीं नियमों की एक श्रृंखला के रूप में है, इसलिए उसका कोई भी कार्य इनके विपरीत नहीं होना चाहिए अन्यथा प्रकृति उसे अवश्य दण्ड देगी। इसलिए उन्होंने हमारे छोटे-बड़े सभी कर्त्तव्यों और प्रातःकाल से लेकर शयनकाल तक दैनिक कृत्यों को धर्म का रूप दे दिया, जिन पर आचरण करके ही हम सुख और शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

जिस प्रकार हिन्दू शास्त्रों में हमारे व्यक्तिगत कृत्यों को धर्म का रूप दिया गया है उसी प्रकार सामाजिक कार्यों को भी धर्म का अंग बना दिया गया है, जिससे लोग उनके पालन में ढिलाई न करें और उनसे यथोचित प्रेरणा प्राप्त करते रहें। त्यौहार, धार्मिक और सामाजिक उत्सव तथा व्रत आदि का विधान वैसे संसार की सभी जातियों और देशों में पाया जाता है। सभी मजहबों के संस्थापकों और आचार्यों ने कुछ ऐसे विशेष दिन नियत कर दिये हैं, जिन पर वे अपने विशेष मनोभावों को प्रकट करने के लिए कुछ विशेष कृत्य करते देखे जाते हैं। दूसरा कारण यह भी है कि अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार मनुष्य सदा एक ही रस में रहना पसन्द नहीं करता। अगर वह वर्ष के ३६५ दिन नित्य प्रति के कार्यों और नियमित व्यवसाय या नौकरी आदि में ही लगा रहे तो उसके चित्त में अवश्य उद्विग्नता का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक समझा गया कि उसको बीच-बीच में कभी ऐसा अवसर मिलता रहे जिससे वह अपने जीवन में कुछ नवीनता तथा आमोद-प्रमोद का अनुभव कर सके और विश्राम भी पा सके।

अन्य समस्त जातियों के त्यौहारों की भाँति उपर्युक्त उद्देश्य हिन्दू-जाति के त्यौहारों में भी पाये जाते हैं। पर हमारे यहाँ इतनी विशेषता और है कि त्यौहारों को केवल छुट्टी का अथवा धर्माचार्यों की जयन्ती आदि का दिन ही न समझकर उससे मनुष्यों की आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक विकास का भी उद्देश्य सिद्ध किया है। सच पूछा जाय तो हिन्दू-जाति अपनी प्राचीन सभ्यता और आचार-विचार को इतनी शताब्दियों के परिवर्तन के बाद भी जो अभी तक कायम रख सकी है, इसका बहुत कुछ श्रेय इन त्यौहारों और उत्सवों को ही है। साधारण जनता धर्म के गम्भीर उपदेशों को नहीं समझ सकती और न आध्यात्मिक तत्त्वों पर अमल कर सकती है। उसको शिक्षा देने और सुमार्ग पर चलाने का एकमात्र मार्ग धार्मिक कथा-कहानी श्रवण कराना और मनोरंजन के साथ धार्मिक कृत्यों के करने की विधि बतलाना ही है। यह उद्देश्य त्यौहारों और व्रतोत्सव आदि से ही सुगमतापूर्वक सिद्ध हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

त्यौहारों की स्थापना मुख्यतः निम्नलिखित उद्देश्यों को लेकर की गई है—

(१) जनता में जागृति, सद्भावना, ऐक्य, संगठन की वृद्धि करना, लोगों को सुसंस्कृत, शिष्ट और सुयोग्य नागरिक बनाना, उनमें सच्ची सामाजिकता की भावना उत्पन्न करना।

(२) किसी विशेष अवसर पर बड़े यज्ञ के लिए। यद्यपि शास्त्रों के मतानुसार 'यज्ञ' शब्द का अर्थ परोपकार के कार्यों के लिए होता है तथापि वैदिक कालीन पर्वों और उत्सवों में यज्ञ का अर्थ बड़े हवन से ही लिया जाता है।

(३) किसी विशेष ऋतु के परिवर्तन या फसल के तैयार होने पर सामाजिक समारोह के रूप में।

(४) सर्वसाधारण के मनोरंजन और हृदयोल्लास के लिए।

(५) किसी युग-प्रवर्तक महापुरुष, अद्वितीय कर्मवीर, शूरवीर, प्रणवीर, दानवीर, महान् विद्वान्, आदर्श प्रतापी की अथवा किसी महान् राष्ट्रीय घटना की स्मृति मनाने के निमित्त।

हमारे तत्त्ववेत्ता, पूज्यपाद ऋषि-महर्षियों के ऊपर बतलाये पाँचों उद्देश्यों के अनुकूल अनेक त्यौहार और पर्व के दिवस नियत कर दिये हैं और उन सबमें लौकिक कार्यों के साथ ही धार्मिक तत्त्वों का ऐसा समावेश कर दिया है कि उनसे हमको अपने जीवन निर्माण में बड़ी सहायता मिलती है और समाज भी सुमार्ग पर अग्रसर हो सकता है। मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरणशील प्राणी है। दूसरों को कोई शुभ काम करता देखकर उसके मन में भी वैसा ही काम करने की इच्छा स्वतः उत्पन्न होती है। फिर यदि उस कार्य के करने वाले उसके कुटुम्बीजन अथवा पूर्वज हों तो उस कार्य में उसका अनुराग और भी बढ़ जाता है। यही कारण है कि प्राचीनकाल में जिनके कुलों में उत्तम कार्य और सत्कर्म होते चले आये थे, उनकी सन्तान भी प्रायः सन्मार्गगामी होती थी। इसके विरुद्ध जिनके पूर्व पुरुष बहुत समय से जघन्य आचार वाले अथवा निन्दनीय वृत्ति वाले रहे हों, उनकी सन्तान का सुधार बड़ी कठिनता से होता था, क्योंकि बालक अधिकांश में अपने बड़ों से ही आचरण सीखते हैं और उसी ढाँचे में ढलते हैं, जिसमें उनके पूर्व पुरुष ढले होते हैं।

जो बात एक व्यक्ति के सम्बन्ध में कही गई है, यही समाज के सम्बन्ध में भी सत्य है, क्योंकि समाज या जाति व्यक्तियों के समूह का ही नाम है। जिस समाज या जिस जाति में अधिक संख्या जैसे भले या बुरे, उन्नतिशील अथवा अवनतिशील लोगों की होगी, वैसी ही वह जाति बन जायेगी। इसीलिए सभ्य जातियाँ अपने महान् कार्य करने वाले पूर्व पुरुषों, महात्माओं, प्रतापवान् व्यक्तियों की स्मृति को सुरक्षित बनाये रखने के लिए प्राणपण से यत्न करती हैं, जिनसे आगामी पीढ़ियों को उनका आदर्श प्रेरणा देता रहे। इस स्मृति को स्थिर रखने और ताजा बनाये रखने के दो उपाय हैं—

एक ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना और उनका पठन-पाठन जिससे बालकों और युवकों के हृदयों में अपने प्रातः स्मरणीय पुरुषों के कीर्ति-कलाप और उच्च आदर्श स्थान बना लेते हैं। दूसरी विधि—उन खास तिथियों को, जब उन महापुरुषों के जीवन की कोई महान् घटना घटी हो अथवा जिस दिन उनका जन्म हुआ हो, उत्सव अथवा त्यौहार मनाना है। इससे साधारण मनुष्यों को भी उन महापुरुषों के नाम लेने और उनके सम्बन्ध में कुछ चर्चा करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे वे सत् शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं, अपने जीवन को किसी उच्च लक्ष्य की तरफ मोड़ सकते हैं। संसार की सभी सभ्य जातियों में इस प्रकार के स्मारक-दिवस बड़े उत्साह और समारोह के साथ मनाये जाते हैं और किसी जाति की सभ्यता और उच्चता का अनुमान पूर्व पुरुषों के प्रति उसके सम्मान और वीर-पूजा से लगाया जाता है।

जिस जाति के पास ऐसे कोई महापुरुष नहीं हैं, वह बड़ा अभागी है और उन्नति के मार्ग पर उसका अग्रसर होना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि जब उसके सामने कोई उच्च आदर्श ही नहीं तो किस प्रकार अवनति के गड्ढे से निकलकर उन्नति के शिखर की तरफ अग्रसर हो सकती है ? इसलिए समाजशास्त्र-वेत्ताओं ने यहाँ तक कह दिया है कि जिस जाति के पास दुर्भाग्य से उच्च आदर्श के लायक कोई महापुरुष न हो उसे किसी अन्य जाति के महापुरुषों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को अपना लेना चाहिए, क्योंकि बिना आदर्श के उत्कर्ष की सम्भावना बिना जड़मूल के पौधे के फलने-फूलने की आशा के समान हास्यास्पद है। कहा जाता है कि योरोप में फ्रांस देश इस विषय में अग्रगण्य है और पूर्व पुरुषों के जितने स्मारक तथा स्मृति-दिवस वहाँ पाये मनाये जाते हैं उतने और किसी देश में नहीं। जापान वाले तो अपना मुख्य धर्म ही पूर्वजों की पूजा करना मानते हैं और वहाँ जो ११ मुख्य त्यौहार प्रचलित हैं, उनमें से नौ पूर्व पुरुषों के स्मारक-दिवस ही हैं।

सौभाग्य से हमारा भारतवर्ष भी इस विषय में किसी अन्य जाति से पीछे नहीं है। एक प्रकार से तो हम कह सकते हैं कि हिन्दुओं के बराबर त्यौहार और पर्व दिवस संसार की किसी भी जाति में प्रचलित नहीं है। यदि यहाँ के सब त्यौहारों, पर्वों तथा व्रतोत्सव आदि की गणना की जाय तो उनकी संख्या इतनी अधिक है कि एक वर्ष के ३६५ दिनों में से एक भी दिन ऐसा नहीं मिल सकता, जो किसी न किसी दृष्टि से पवित्र पर्व और विशेष धार्मिक कृत्य से शून्य हो इसी से कहावत प्रचलित हो गई हैं कि—"आठ वार और नौ त्यौहार।"

वर्तमान काल में हिन्दू जाति में एक प्रकार की निर्जीवता आ गई है, वह ऋषि-मुनियों द्वारा निर्धारित जीवन प्रदायक प्रथाओं को भूलकर, सारहीन रूढ़ियों के जाल में ग्रसित हो गई है। तदनुरूप ही हमारे त्यौहारों और पर्वों का रूप भी विकृत हो गया है। अब लोग उनके मूल स्वरूप को तो बहुत कुछ भूल गये हैं और उनके स्थान में उद्देश्यहीन बेढ़ंगी रूढ़ियों को अपनाकर पुरानी लकीर पीटते जा रहे हैं। इतना ही नहीं, कितने ही त्यौहारों पर लाभदायक कृत्यों के बजाय लोग ऐसे काम करने लग गये हैं, जो स्पष्टतः हानिप्रद हैं। उदाहरण के लिए कुछ लोगों ने दिवाली को जुआ खेलने का ही त्यौहार बना डाला है और वे इस अवसर पर एक दिन नहीं, कई दिन तक भयंकर रूप से जुआ खेलते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि अनेक बार बड़ी दुर्घटनायें हो जाती हैं। इसी प्रकार होली पर जबर्दस्ती रंग और कीचड़ आदि फेंकने तथा गन्दी से गन्दी गाली बकने को ही त्यौहार का उद्देश्य समझ लिया जाता है। इसके कारण भी मार-पीट हो जाना और सिर फूटना साधारण बात हो गयी है।

यों तो समाज में आज ऐसे भी सज्जन मौजूद हैं जो पण्डित और ज्ञानी होने का दावा करते हुए तरह-तरह की दलीलें देकर इन सब कुरीतियों का समर्थन करते हैं, पर हम त्यौहारों के नाम पर या प्राचीन रूढ़ियों के बहाने किसी ऐसी बात को स्वीकार नहीं कर सकते जिनसे व्यक्तियों और समाज को हानि उठानी पड़े। अधिकांश मनुष्यों की प्रकृति प्रायः अधोगामिनी होती है और उसे जरा भी सहारा या बहाना मिल जाय तो फौरन दुर्व्यसनों की तरफ प्रेरित होती है। यही कारण है कि मनुष्यों को सदैव सन्मार्ग,—पुण्य कार्यों का ही उपदेश दिया जाता है। हानिकारक कार्यों, दुर्व्यसनों अथवा गन्दे आमोद-प्रमोद के लिए किसी को उपदेश देने की जरूरत नहीं होती, इनके सिखाने वाले 'गुरु लोग' तो सब जगह बिना कोशिश किये स्वयं ही मिल जाते हैं। इसलिए कोई त्यौहार किसी भी उद्देश्य की निद्धि के लिए क्यों न स्थापित किया गया हो, अगर उसमें कुछ हानिकारक बातों का समावेश हो गया है तो उनका त्याग अवश्य करना चाहिए। ये बातें व्यक्तिगत रूप से तो किसी प्रकार सहन करनी भी पड़ती हैं, पर इनको सामाजिक रूप दे देना महापाप समझना चाहिए, क्योंकि फिर तो उसका प्रभाव भले-बुरे सभी श्रेणियों के लोगों पर पड़ता है।

त्यौहार और धार्मिक उत्सव जाति के लिए नव-जीवन प्रदान करने वाले और स्फूर्ति प्रदायक होते हैं, इसलिए उनका प्रचार करना और उनको उत्साह से मनाना तो सभी समाज हितैषियों का परम कर्त्तव्य है, पर साथ ही यह ध्यान रखना भी परमावश्यक है कि हम उनके वास्तविक उद्देश्य और स्वरूप को न भूलें। समय के प्रभाव से व्यक्ति और वस्तुओं की तरह संस्थायें और प्रथायें भी जीर्ण पड़ जाती हैं और उनमें अनेक प्रकार की कमजोरियाँ, दूषण प्रवेश कर जाते हैं। समझदार समाज-नेताओं का कर्त्तव्य है कि इस तरफ ध्यान देते रहें और जिस प्रकार हम प्रतिवर्ष अपने गृहों, वस्तुओं की सफाई, मरम्मत आदि कराते रहते हैं, उसी प्रकार सामाजिक प्रथाओं में भी समयानुकूल संशोधन और परिवर्तन करते रहें। प्रत्येक सामाजिक प्रथा, त्यौहार या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्सव आदि को अटल-अचल समझ लेना मूर्खता का लक्षण है। हमें इस सम्बन्ध में सबसे पहले यह सूत्र याद कर लेना चाहिए कि "तमाम प्रथायें मनुष्यों के लिए बनाई गई हैं, न कि मनुष्य इन प्रथाओं के लिए" जो व्यक्ति ऐसा समझते हैं या कहते हैं कि ये तमाम त्यौहार और उनकी पद्धतियाँ सदा से ऐसी ही चली आई हैं और सदा ऐसी ही रहनी चाहिए, वे विचारशील कदापि नहीं हो सकते। यदि वे बुरा न मानें तो उनको 'कूप-मंडूक' भी कहा जा सकता है। त्यौहार और सामाजिक उत्सव सदैव कुछ न कुछ बदलते रहते हैं और उनके मनाने की विधियाँ तो आज भी हर प्रदेश में कुछ न कुछ भिन्न हैं। हजार-दो हजार वर्ष की बात तो छोड़ दीजिए, अब से पाँच-सात सौ वर्ष पहले के साहित्य और ऐतिहासिक ग्रन्थों की भी भली प्रकार खोज करें तो मालूम पड़ेगा कि उस समय मनाये जाने वाले अनेक त्यौहार आज समाप्त हो गये हैं और कितने ही नये प्रचलित हो गये हैं।

त्यौहारों और सार्वजनिक उत्सवों की विवेचना के माध्यम से लक्ष्य यही रहता है कि अपने पूर्व पुरुषों के अनुकरणीय और उज्ज्वल सत्कार्यों की स्मृति को कायम रखते हुए, हम उनको इस प्रकार मनावें जिससे वे हमारे लिए ही नहीं, मनुष्य मात्र के लिए कल्याणकारी सिद्ध हों। हमें सदैव उनसे कोई सत्-शिक्षा, सत्प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए। हमें भूलना नहीं चाहिए कि यह सत्परम्परा किसी कारण विशेष से सुसंस्कारिता सम्वर्धन हेतु, जन-जन की धर्मचेतना को अनुप्राणित करने के लिए आरम्भ की गई थी। इस सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत बनाये रखना हम सबका युगधर्म है।

पर्व और त्यौहारों से प्रेरणा ग्रहण करें !

भारतीय संस्कृति के दार्शनिक और व्यावहारिक दोनों ही पक्ष मानव-जाति के आत्यन्तिक कल्याण का ध्यान रखकर विनिर्मित किये गये हैं। तत्त्वदर्शी ऋषियों को विदित था कि मनुष्य, पशु-वर्ग से ही विकसित होकर मानव-योनि तक आया है, उसमें वे संस्कार कम नहीं हैं जो निम्न योनियों में रहते हुए उसके अभ्यास में आते रहे हैं, उन्हें सुधारना आवश्यक है। मनुष्य का देव-दुर्लभ योनि में रहते हुए भी यदि व्यवहार पाशविक ही रहे तो फिर इस सौभाग्य का प्रयोजन एवं आनन्द ही क्या रहा ? नर-तन की सार्थकता तभी है, जब उसमें नारायण का अवतरण दृष्टिगोचर हो, अन्यथा नर-पशु की तरह जिन्दगी के दिन पूरे कर लेना एक शोचनीय एवं अवांछनीय स्थिति ही कही जायेगी। इस स्थिति में पड़ने का अवसर हमारे सामने न आवे, इसके प्रतिरोध-स्वरूप एक विशाल-कार्य सांस्कृतिक दुर्ग हमारे दूरदर्शी मनीषी पूर्वजों ने खड़ा किया था। भारतीय धर्म एवं संस्कृति का सारा कलेवर इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिये है।

भारतीय संस्कृति का दार्शनिक पक्ष धर्म-ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। वेद, शास्त्र, दर्शन, उपनिषद्, ब्राह्मण आरण्यक, सूत्र, पुराण नीति, धर्म आदि अनेक धर्म-ग्रन्थ हमें उस विचारधारा का अनुयायी बनाते हैं, जो मानव-प्राणी को आदर्शवादी, निर्मल चरित्र, कर्त्तव्यपरायण, सहृदय एवम् संयमी बनाने में पूर्णतया समर्थ है इन धर्म-ग्रन्थों का पठन-पाठन, अध्ययन, अध्यापन, श्रवण, मनन, प्रवचन, प्रशिक्षण इसीलिए आवश्यक माना गया है कि लोग जितना ही अधिक उन्हें पढ़ेंगे-सुनेंगे, उतनी ही धर्म-भावनायें उनके अन्दर जागृत होंगी और उसी अनुपात से वे मानवीय आदर्शों के अनुभव, अपनी विचारधारा एवम् कार्य-पद्धति विनिर्मित करने में समर्थ होंगे। पुण्य का स्वरूप यही है। उत्कृष्टता का ही दूसरा नाम तो धार्मिकता, आध्यात्मिकता, पुण्य-परायणता है। इसी स्तर पर पहुँचे हुए व्यक्ति—ऋषि, देवदूत, अवतार, जीवन-मुक्त, सिद्ध-पुरुष आदि कहलाते हैं। धर्म-शास्त्र का श्रवण, प्रवचन हम इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिये करते हैं। विभिन्न कथायें इसी निमित्त कही और सुनी जाती हैं। धर्म-ग्रन्थों का पाठ इसी निमित्त होता है। पूजा की तरह ही 'पाठ' की भी महिमा गाई जाती है। यह पाठ इसीलिये इतना आवश्यक एवम् उपयोगी माना गया है कि इस आधार का अवलम्बन लेते हुए लोग अपने विचार संस्थान को, भावना-स्तर को अधिकाधिक निर्मल एवम् परिष्कृत करते चलें। हमारे धर्म में इस प्रकार का प्रचलने बहुत है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कथा, प्रवचन, सत्संग, स्वाध्याय, समारोह सम्मेलन ऐसी ही धर्म-चर्चा से भरे रहते हैं।

आज लोगों ने भ्रम-वश यह मान लिया है कि इन धर्म-चर्चाओं के सुनने-पढ़ने मात्र से आत्म-कल्याण का प्रयोजन पूरा हो जायेगा। यह मान्यता उपहासास्पद है। कोई औषधि कितनी ही उपयोगी, कीमती, गुणकारी क्यों न हो उसके गुण-वर्णन करने मात्र से रोग दूर नहीं हो सकता। औषधि की चर्चा-विवेचना का प्रयोजन यही है कि रोगी उसे भावना एवम् तत्परतापूर्वक सेवन करे। जब औषधि शरीर में प्रवेश करेगी, तभी तो उसका कुछ प्रभाव होगा। चर्चा करते रहने मात्र से तब तक कुछ लाभ न होगा, जब तक उसे सेवन न करें। धर्म-पुराणों में जिन शिक्षाओं, आदर्शों, कर्त्तव्यों पर चलना आवश्यक बताया गया है, सुनने और पढ़ने वालों को उन्हें हृदयंगम करना चाहिए और अपनी गतिविधियों को उसी ढाँचे में ढालना चाहिए। जो ऐसा कर पावेंगे, उन्हें गीता, रामायण भागवत् आदि पढ़ने-सुनने का परिपूर्ण लाभ मिलेगा। पर जो केवल तोता-रटन्त ही मचाये रहेंगे, उन्हें इतना ही लाभ मिलेगा कि जो समय निरर्थक कार्यों में नष्ट होता, वह उपयोगी विचारों के सम्पर्क में लग गया। इतना तनिक-सा लाभ तो है, पर वह महात्म्य और पुण्य, जो धर्म-शास्त्रों के अनुशीलन का लिखा कहा गया है, केवल तभी मिलता है, जब धर्म-शिक्षाएँ जीवन की नीति-रीति बनकर व्यवहार में आने लगें। प्राचीन काल में धर्म-शास्त्रों का पाठन श्रवण इसी प्रकार इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए होता था। फलतः लाभ भी परिपूर्ण मिलता है। आज लोग सुनने पढ़ने मात्र की कान और जीभ की हरकत मात्र से बड़े पुण्य की आशा रखते हैं, तो उन्हें निराश एवम् खाली हाथ ही रहना पड़ता है। भारतीय संस्कृति के दार्शनिक स्वरूप को धर्म चर्चा के माध्यम से यदि हम उचित आधार पर पढ़ते-सुनते रहें तो निस्सन्देह उससे मानवीय स्तर का उत्साहवर्धक विकास हो और पूर्वकाल की तरह हमारा समाज, सुख-शान्ति का आगार बनकर धरती पर स्वर्ग अवतरित करने की भूमिका प्रस्तुत करे।

आचार और व्यवहार—भारतीय संस्कृति का दूसरा व्यावहारिक पक्ष है जिसके अनुसार हमारे आचार-व्यवहार, रीति-रिवाज, विधि-निषेध, पूजा-अर्चना, प्रतीक-उपचार, विधान कर्मकाण्ड आदि बनते हैं। कब, किस समय, क्योंकर : क्या करना चाहिए ? इसका विस्तृत विवेचन धर्म-ग्रन्थों में हुआ है। इन्हीं के आधार पर भारतीय परम्पराओं का ढाँचा खड़ा किया गया है। इस व्यवहार के आधार पर हम किसी के भारतीय धर्मानुयायी होने, न होने का परिचय प्राप्त करते हैं। शिखासूत्र इसी परम्परा के प्रतीक माने जाते हैं। इस सारे कलेवर का प्रयोजन भी मनुष्य को नीतिवान्, धर्म-परायण, कर्त्तव्य-निष्ठ, सदाचारी एवं सद्गुणी बनाये रहना ही है। हमारी हर परम्परा इसी दिशा में प्रेरणा एवं प्रकाश प्रदान करती है। धर्माचरण की परम्पराओं को पालन करने वाला व्यक्ति उत्कृष्ट चरित्र एवं जन-मंगल में तत्पर रहने के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता। आज तो सब कुछ उल्टा हो रहा है। धर्म-चर्चा सुनने मात्र से जिस प्रकार स्वर्ग और मुक्ति की आशा लोग लगाये रहते हैं, उसी प्रकार संस्कृति के व्यवहार पक्ष के निमित्त प्रचलित अमुक परम्पराओं को भी चिह्न पूजा की तरह किसी प्रकार पूरा करते हुए ऐसा मान लिया जाता है कि धर्म-कर्त्तव्य पूरा हो गया और अब उसके सत्य परिणाम आने की सम्भावना बन गई। चौका-चूल्हा, स्नान-ध्यान, तिलक-छापा, कण्ठी-जनेऊ शिखा-सूत्र, तीर्थ-स्थान जैसे प्रतीकों को लोग अपनाते तो हैं, पर उनमें सन्निहित प्रेरणाओं को भुला ही देते हैं। लकीर पीटने से साँप नहीं मरता, लकीर से तो यह पता चल सकता है कि साँप किधर से गया है, उसे ढूँढ़ा, पकड़ा और मारा जायेगा, तभी साँप मारने का उद्देश्य सधेगा। इसी प्रकार इन कर्मकाण्डों, प्रतीकों और परम्पराओं के पीछे जो भावनाएँ, शिक्षाएँ एवं प्रेरणाएँ काम करती हैं, उन्हें खोजा, समझा और अपनाया जायेगा, तभी हम अपने व्यावहारिक जीवन की गतिविधियों को सुसंस्कृत बना सकेंगे। तभी हमारा सांस्कृतिक उद्देश्य पूर्ण होगा। उस सत्परिणाम को भी हम तभी प्राप्त कर सकेंगे, जिसके लिए यह सारा धर्म-कलेवर ऋषियों ने खड़ा किया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्व और त्यौहारों का उद्देश्य

हमारी सांस्कृति परम्पराओं में जन-मानस के निरन्तर परिशोधन एवं प्रोत्साहन परिवर्धन के लिए दो प्रधान आधार हैं— (१) संस्कार, (२) पर्व-त्यौहार। षोडश संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति एवं परिवार का निर्माण किस उत्तम रीति से हो सकता है ? इसकी चर्चा उसी प्रयोजन के लिए लिखे गये दूसरे ट्रैक्ट में कर चुके हैं। हर व्यक्ति को जीवन में सोलह बार वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार पर प्रखर प्रेरणाओं से सम्पुटित किया जाय तो उस पर आशाजनक प्रभाव पड़ता है और यदि सुव्यवस्थित रीति से वह प्रक्रिया पूरी की गई तो उससे प्रभावित हुआ कोई भी व्यक्ति सुसंस्कृत बनने की दशा से तेजी से गतिशील होता है। संस्कारों का अपना महत्त्व है और उसके आधार पर व्यक्ति-निर्माण एवं परिवार-निर्माण का कार्य बड़ी ही सरलता एवम् सुन्दरता से सम्पन्न होता है।

उतना ही महत्त्वपूर्ण पर्व-त्यौहारों की परम्परा का दूसरा माध्यम भी है। यह प्रक्रिया समाज को सामूहिक रूप से सुसंस्कृत करने की है। यदि इसे ठीक तरह व्यवहृत किया जा सके तो निश्चय ही प्राचीन काल की तरह उससे सुसंस्कृत समाज की अभिनव रचना में महत्त्वपूर्ण योगदान मिले।

यों छोटे-मोटे पर्व-त्यौहार, व्रत, उत्सव तो हमारे धर्म में इतने अधिक हैं कि आये दिन कोई न कोई उपस्थित ही रहता है, पर उन सबको व्यापक रूप से नहीं मनाया जा सकता। व्यक्तिगत एवं सामयिक परिस्थितियों के लिये जो पर्वोत्सव जहाँ अधिक प्रेरणाप्रद सिद्ध होता हो वहाँ उसकी व्यवस्था की जा सकती है। कुछ पर्व स्थानीय परम्पराओं के अनुरूप प्रचलित हैं। पंजाब में वैशाखी, हिमालय के पर्वतीय प्रदेश में मकर संक्रान्ति, महाराष्ट्र में गणेशोत्सव, बंगाल में दुर्गा-पूजा जैसे विशेष समारोहपूर्वक मनाये जाते हैं, उसी प्रकार देश के विभिन्न भागों में अपने-अपने स्थानीय महत्त्व के पर्व-त्यौहार भी हैं और उनकी अपनी शिक्षायें, विशेषताएँ एवं प्रेरणाएँ भी हैं। उन्हें स्थानीय परम्पराओं के अनुसार प्रेरणाप्रद ढंग से मनाया जाना चाहिये। यहाँ इन पंक्तियों में कुछ ऐसे पर्व-त्यौहारों का उल्लेख किया जा रहा है, जो प्रायः सारे भारत में, समस्त भारतीय समाज में समान रूप से प्रचलित हैं। ठीक तरह सीमित उत्सव आयोजन ही मनाये जा सकते हैं। यदि उनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ा दी जाय तो उनका मनाना उतने उत्साहपूर्वक न हो सकेगा और तब वह सारी व्यवस्था एक लकीर पीटने जैसी लँगड़ी-लूली बनकर रह जायेगी।

इन उत्सवों को कैसे मनावें ?

जो काम किया जाय, पूरे उत्साह और पूरे मनोयोगपूर्वक हो। अधूरे दस काम करने की अपेक्षा पूरा एक काम करना उत्तम है। उस दृष्टि से हम अनेक पर्व-त्यौहार मनाने की अपेक्षा यदि वर्ष में दस त्यौहार भी ठीक तरह मना लिया करें तो वह बहुत बड़ी बात होगी और उसका इतना अच्छा प्रभाव, परिणाम होगा कि सारा समाज सुसंस्कृत बनने की दिशा में आशाजनक प्रगति करता दिखाई देगा।

पर्व-त्यौहारों का उद्देश्य है विशेष अवसरों पर अधिकाधिक धर्म-प्रेमियों का एक स्थान पर एकत्रित होना, सामाजिक विकृतियों के परिमार्जन एवं सुव्यवस्थाओं के अभिवर्धन के लिये आवश्यक प्रेरणा एवम् प्रकाश ग्रहण करना। हर्षोत्सवों का एक उद्देश्य यह भी है कि मानव जीवन में निरन्तर उल्लास और उत्साह बना रहे। निराशा, चिन्ता, अवसाद, अन्यमनस्कता की मनोदशा केवल पतन का पथ प्रशस्त करती है। जो व्यक्ति गिरे, मरे, दबे, पिटे बैठे रहते हैं, उनका भविष्य अन्धकारमय ही रहेगा। खिन्नता, कुसंग एवं अकर्मण्यता का नाम ही दुर्भाग्य है। इस प्रकार की दुःखद मनोदशा जिस व्यक्ति या समाज को पकड़ लेती है वह दुःख-दारिद्र्य के गर्त में ही गिरता चला जाता है। कोई उसकी सहायता नहीं करता, यहाँ तक कि इन अभागों का साथ ईश्वर भी छोड़ देता है। प्रगतिशीलता का अर्थ ही उल्लास, उत्साह, प्रयत्न एवं पुरुषार्थ है। जो हँस और हँसा सकता है, वही प्रगतिशील है। रोते और रुलाते रहने वाले, कुढ़ते और कुढ़ाते रहने वाले अभागे, नरक के मूर्तिमान प्रतिनिधि हैं। वे जहाँ भी रहेंगे, केवल पतन, केवल दुर्भाग्य, केवल अन्धकार ही दृष्टिगोचर होगा। इसलिये मनीषियों ने भारतीय संस्कृति का स्वरूप ऐसा रखा है, जिसमें बार-बार, जल्दी-जल्दी हर्षोल्लास के अवसर आते रहें। षोडश संस्कारों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में भी यह प्रयोजन सन्निहित है। पर्व-त्यौहारों में तो यह तथ्य और भी गहराई तक भरा है। सब लोग मिल-जुलकर, सामूहिक रूप से ऐसे धर्मोत्सवों का आयोजन करें, जिनसे सामाजिक सुव्यवस्था में योगदान मिले। यह उद्देश्य तो है ही, साथ में एक बड़ा प्रयोजन यह भी है कि जन-साधारण को व्यक्तिगत एवं सामूहिक जीवन में बार-बार हर्षोल्लास का अवसर मिले। उल्लास के बसन्त ऋतु में ही सत्प्रवृत्तियों की वल्लरियाँ पल्लवित पुष्पित होती हैं। हर्ष एवम् आनन्द ही वह अनुभूति है, जो वर्षा में मेघों की तरह रोम-रोम में प्रगति की विद्युत् धारायें प्रवाहित कर देती हैं। मनुष्य आगे बढ़ते हैं, ऊँचे उठते हैं, तब-जब उनके भीतर एवं बाहर प्रफुल्लता का वातावरण बना रहता है। प्रगतिील समाज की महत्ता उसके उल्लास भरे वातावरण से ही जानी जा सकती है। हमारे पर्व-त्यौहार-संस्कार, आयोजन हर्षोत्सवों के रूप में आते हैं और मुरझाते हुए आत्मतत्त्वों का अभिसिंचन कर उन्हें आगे बढ़ चलने की प्रेरणा से भर जाते हैं। यदि हम अपने इन पर्व-उत्सवों को ठीक तरह मनाने लगें तो लोक मानस में ऐसी मंगलमयी प्रफुल्लता का सृजन कर सकते हैं, जिसके आधार पर समान सर्वोदय का पथ प्रशस्त हो चले।

लकीर पीटने से क्या लाभ ?

इन दिनों होली, दीवाली, श्रावणी, बसन्त-पंचमी आदि सभी पर्व व्यक्तिगत रूप से मनाये जाते हैं। घरों में लिपाई-पुताई, सफाई हो जाती है, चौके में पकवान, मिष्ठान्न बनते हैं, कपड़े धुले, नये पहन लिये जाते हैं, कोई छोटी-मोटी पूजा-पत्री हो जाती है, बस इतने मात्र से त्यौहार समाप्त हो जाता है। कहीं-कहीं कोई मेला-ठेला हो जाता है। इन पर्वों का कोई स्वरूप ऐसा नहीं है, जिससे किसी को कुछ प्रेरणा मिले। कई बार तो उनसे उल्टा हानिकारक प्रभाव ही पड़ता है। दीवाली के दिनों लोग हफ्तों जुआ खेलते हैं और कहते हैं, यह भाग्य परीक्षा—लक्ष्मीजी को प्रसन्न करने की विधि है। होली के दिनों गन्दे, अश्लील गायनों तथा स्वांगों की भरमार, मुँह काला करने, कपड़े बिगाड़ कर भारी आर्थिक क्षति पहुँचाने, गन्दी धूलि एक-दूसरे पर डालकर स्वास्थ्य विरोधी अशिष्टता बरतने जैसी अनेक बुराइयाँ फैलती हैं। विजय दशमी के अवसर पर दुर्गा पूजा के नाम पर हजारों लाखों निरीह पशु-पक्षियों की नृशंस हत्या कर डाली जाती है। पशु-बलि का जैसा घृणित प्रचलन है, उससे हिन्दू-धर्म की महान् परम्परायें कलंकित होती हैं। यदि इसी प्रकार अपने पर्व-त्यौहार मनाये जायँ तो यही कहना पड़ेगा कि इस मनाने से न मनाना अच्छा। कोई काम यदि गलत या उल्टे ढंग से किया जाय तो उसका परिणाम न करने से भी अधिक बुरा होता है। पर्वों के बारे में यही उचित है कि या तो उन्हें ठीक ढंग से मनाया जाय या फिर बिल्कुल ही न मनायें। अनेक ढंग से किसी प्रकार लकीर पीट देने से वह उद्देश्य कदापि पूर्ण नहीं हो सकता, जिनके लिये कि इनका प्रचलन किया गया है।

पर्व-त्यौहारों को केवल एक मनोरंजन-दिन जैसी स्थिति में रखे रहना पर्याप्त नहीं। उन्हें इस ढंग से मनायें कि जन-साधारण को उनका महत्त्व मालूम पड़े और कुछ ऐसी प्रेरणा मिले, जिससे हमारा समाज अधिक स्वस्थ, समर्थ, सांस्कृतिक एवं प्रगतिशील बन सके। प्राचीन काल में उन्हें इसी रीति-नीति के साथ मनाया जाता था। नव-जागरण की वेला में अब पुनः उन्हें उसी परिपाटी एवं पद्धति से मनाये जाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

सही ढंग से सही काम

छोटे गाँवों या कस्बों में एक जगह पर्व मनाने का आयोजन होना चाहिए। बहुत बड़े नगरों में मुहल्ले या क्षेत्रों के आधार पर सुविधानुसार कई हिस्सों में विभाजित कर सकते हैं। जहाँ यह आयोजन किये जायँ, वह सब लोगों के पहुँचने लायक, सुविधाजनक एवम् स्वच्छतापूर्ण वातावरण में होने चाहिए। नगर से बहुत दूर जहाँ बच्चों और महिलाओं को पहुँचने में असुविधा हो, स्वच्छता या छाया या बैठने आदि की असुविधा हो तो वहाँ इसलिए आयोजन न रखा जाय कि वह प्राचीन या देव स्थान हैं। देव स्थानों पर धर्मोत्सव मनाये जाने की प्रथा उत्तम है, पर साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिये कि वहाँ तक पहुँचना और देर-सबेर हो जाने पर लौटना जन-साधारण के लिये असुविधाजनक न हो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थान निश्चित कर लेने पर उसकी सफाई तथा सजावट का प्रबन्ध करना चाहिए। झण्डियाँ, वन्दनवार, पल्लव, मंच, कलश, यज्ञ-शाला, बैठने के लिये बिछावट, रोशनी, आदर्श-वाक्य एवम् चित्रों से स्थान की सुसज्जा आदि बातों पर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाय। उत्सव-स्थल को सुसज्जित रूप से रखने पर उसका आकर्षण बढ़ता है। आकर्षण से खिंचकर अधिक लोग आते हैं और आयोजनों की सुरुचि को सराहते हैं। मन्दिरों में शोभा-श्रृंगार, फूल-बँगले, झूले, हिंडोले आदि के जो श्रृंगार समय-समय पर होते रहते हैं, उसका उद्देश्य जन साधारण को आकर्षित करना ही होता है। निस्सन्देह जिस दिन ऐसी सजावट होती है, उस दिन जनता अधिक संख्या में भी पहुँचती है। अधिक लोग किसी धर्म-योजना में एकत्रित हों तो इससे उन्हें आत्मिक लाभ भी मिलेगा। इस प्रकार सुसज्जा में खर्च किया गया धन या श्रम निरर्थक नहीं जाता, वरन् अनेक गुना सत्परिणाम उत्पन्न करता है। यह कार्य प्रबन्धकों या कार्यकर्त्ताओं का है कि स्थानीय परिस्थिति के साथ अपनी कला-प्रियता का अधिकाधिक समन्वय करें, उसकी रूपरेखा निश्चित करें और उपलब्ध साधनों से उस स्थान को अधिकाधिक सुन्दर एवं आकर्षक बनायें, जहाँ कि पर्व मनाने का आयोजन किया जाना है। नियत समय तक यह सुसज्जा पूर्ण हो जानी चाहिए।

अधिक लोगों को अधिक लाभ

दूसरा प्रयत्न यह किया जाना चाहिये कि उस आयोजन में अधिकाधिक लोग सम्मिलित हों। इसके लिये मुनादी के ढंग से लाउडस्पीकर के माध्यम से या शंख, घड़ियाल आदि बजाकर जगह-जगह ऐलान करना उचित है। जहाँ सुविधा हो पर्चे आदि बाँटे जा सकते हैं और बड़े कागज या पोस्टर लिखा या छापकर चौराहे आदि जन-दृष्टि के स्थानों पर चिपकाये जा सकते हैं। ऐसी सूचनायें नगर के सभी सार्वजनिक स्थानों पर लगा दी जायें। स्कूलों में बच्चों से कहकर उनके अभिभावकों तक सन्देश पहुँचाया जाय। इन दिनों कोई सभा, सम्मेलन, गोष्ठी, मेला आदि हो रहा हो तो उसमें भी जनता को सूचना करा दी जाय, पर इतना करना भी पर्याप्त न होगा। एक प्रयत्न जो इन आयोजनों की सफलता के लिए किया ही जाना चाहिए, वह यह है कि हर घर जाकर जन-सम्पर्क स्थापित करने और उत्सव में सम्मिलित होने के लिये, व्यक्तिगत आमन्त्रण देने के लिये कार्यत्ताओं की टोलियाँ निकलें। जो भी मिले, उससे सम्मिलत होने के लिये व्यक्तिगत अनुरोध करें। सम्भव हो तो एक-दो दिन पहले सूचना देने जाने और उत्सव के दिन बुलाने जैसी पुनः सूचना देने के लिए टोलियाँ निकलें।

अब पुराना समय नहीं रहा, जबकि लोग श्रेष्ठ आयोजन में बिना बुलाये भी बड़ी प्रसन्नता और श्रद्धा से दौड़े-दौड़े आते थे और उन धर्मोत्सवों को सफल बनाने के लिये बड़ा उत्साह दिखाते थे। अब लोग बड़े रूखे, नीरस, आलसी और अश्रद्धालु हो चले हैं। सिनेमा, नाटक देखने पैसा खर्च करके भी चले जायेंगे, पर धार्मिक उत्सवों में मनोरंजन के नाम पर भी सम्मिलित न होंगे। समय की गति को देखते हुए, हमारे प्रयत्न भी अधिक तीव्र होने चाहिए, तभी अधिक लोगों को ऐसे समारोहों में एकत्रित कर सकना सम्भव होगा। इसके लिये हमें हर सम्भव उपाय करना चाहिये। समारोह की सार्थकता तभी है, जब उसमें अधिक लोग सम्मिलित होकर अधिक प्रेरणा प्राप्त करें। दस-पाँच आदमी मिल बैठकर यों किसी प्रकार उत्सव मना सकते हैं, पर इतने मात्र से नव-निर्माण और युग-परिवर्तन जैसे उद्देश्य पूरे नहीं हो सकते। आरम्भिक प्रचलन के रूप में थोड़े लोग भी बैठकर ऐसा आयोजन शुभारम्भ श्रीगणेश के रूप में कर सकते हैं, पर इस पहली बैठक में ही यह निश्चय कर लेना चाहिये कि अगला आयोजन अधिक बड़े और अधिक प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न करेंगे।

आयोजन की व्यवस्था

उत्सवों में खर्च पड़ना निश्चित है। इसके लिये धन भी सार्वजनिक रूप से ही जुटाया जाना चाहिए। आरम्भ में कोई भी धनीमानी व्यक्ति एकाध वर्ष का खर्च अकेले या कुछ लोग मिल-जुलकर उठा लें, यह बात दूसरी है, पर अन्ततः यह व्यय जनता को ही करना चाहिये। जिस कार्य में लोगों का पैसा लगता है, उसे वे अपना मानते हैं और उसमें अपनत्त्व की भावना रखकर रुचि भी लेते हैं। यह धन एक संगठित धन समिति चन्दा द्वारा एकत्रित करे, इसके लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामयिक-मासिक, वार्षिक, फसल पर अन्न के रूप में, धर्म-घटों में नित्य एक मुट्ठी अन्न या एक आना डालने के रूप में हो सकता है। उत्सव के अवसर पर चढ़ौती—भेंट, आरती में पैसा डालने के रूप में भी धन एकत्रित किया जा सकता है। व्यवसाय, कृषि या वेतन के लाभ में से शतांश या जैसा भी सम्भव हो, लोग इस कार्य के लिये देते ररहने का नियम बना सकते हैं। पहले कुछ लोग आरम्भ करें, पीछे इन दान दाताओं की संख्या बढ़ाई जाती रहे। "सब देंगे, तो देंगे" की असम्भव शर्त किसी को भी नहीं लगानी चाहिए। धर्म-प्रेमी लोग अधिक उदारता दिखावें और अधिक त्याग का परिचय दें। जिनमें रुचि जागृत नहीं हुई, उनसे अनुरोध उसी क्रम से तेज करते चलें, जिस क्रम से कि उनकी श्रद्धा बढ़े। स्थानीय परिस्थितियों में किस प्रकार इन आयोजनों के लिये धन संग्रह हो ? यह निर्णय करना स्थानीय लोगों का काम है। पर उसका प्रबन्ध होना अवश्य चाहिए। यह धन-समिति ही समस्त पर्वों की व्यवस्था करे और इसी फण्ड से वे वस्तुयें खरीद ली जायँ, जो संस्कार आदि धर्मानुष्ठान कराते समय बार-बार प्रयुक्त होती हैं। केवल पर्व मनाना ही नहीं, अन्य कथा-प्रवचन, सम्मेलन, अन्त्याक्षरी सम्मेलन धर्मानुष्ठान आदि जन-जागरण के विविध कार्यक्रम पूरे करती रहें। मन्दिरों से लगी हुई जायदाद एवम् सम्पत्तियों को उनके अधिकारी व्यक्ति इन कार्यों में प्रयुक्त कर सकते हैं। कोई दानी धर्मात्मा अपनी सम्पत्ति ऐसे आयोजनों की नियमित व्यवस्था चलते रहने के लिये दान दे सकते हैं। उसके ब्याज-भाड़े से बहुत कुछ काम होता रह सकता है।

शोभा सुसज्जा

पर्वोत्सव के लिये चौकी या तख्त पर ऐसी वेदी झाँकी बनाई जाय, जिस पर कि पर्व के अधिपति देवता का चित्र एक सुन्दर कलात्मक सजे हुए मण्डप के रूप में सजाया जाय। जैसे वसन्त पञ्चमी की अधिपति देवी सरस्वती है, तो उसका बड़े से बड़े साइज का सुन्दर से सुन्दर चित्र प्राप्त करके वेदी पर सजाया जाय। अच्छा हो कि जिन दस पर्व त्यौहारों का प्रचलन किया जाना है, उन सभी के चित्र या तो खरीद लिये जायँ या बनवा लिए जायँ। चित्रों के आस-पास गुलदस्ते, अगरबत्ती, दीपक, शंख, आरती, छोटे-छोटे कलश सुन्दर, सांस्कृतिक खिलौने आदि सजाकर इस प्रकार रखे जायँ कि वह वेदी नयनाभिराम बन जाय। यज्ञ हमारी संस्कृति का प्रेरक अधिपति है, इसलिये हर पर्व या हर संस्कार में यज्ञ तो होना ही है। यज्ञशाला ऐसे स्थान पर बनाई जाय, जो कुछ ऊँचा हो, दर्शकों को प्रतिनिधि देवता की झाँकी तथा यज्ञशाला की प्रक्रिया का दर्शन ठीक तरह होते रहना चाहिये। यह जनता के बैठने का स्थान और यह दोनों बेदियाँ वहाँ किस प्रकार रहें, इसकी ठीक विधि व्यवस्था पहले ही सोच-लेनी चाहिये। मण्डप यज्ञशाला का भी बनाया जाना है। इसलिये उसकी ऐसी स्थाई व्यवस्था रखनी चाहिये कि जब भी आवश्यकता पड़े, उपकरणों को—बाँस-बल्ली, छाया वस्त्र, झल्लर आदि को जोड़कर झट यज्ञशाला खड़ी कर दी जाय। यह साधन एक बार ही खरीदकर रख लेने चाहिए, जो बार-बार काम देते रहें।

उपस्थित जनता में से पाँच या सात श्रद्धालु धर्म प्रेमी पूजन एवं हवन के लिये बुला लिए जायँ। इनके वस्त्र धुले हुए हों। उत्तम तो यह है कि उनके धोती, कुर्ते, दुपट्टे तीनों ही पीले रंगे हों, अन्यथा पीला दुपट्टा तो सभी के कन्धों पर होना चाहिए। यह लोग जनता की ओर से उस पर्व देवता का पूजन तथा यज्ञ कार्य सम्पन्न करें। पर्वों में से प्रत्येक का क्रम लगभग एक सा ही है। गायत्री यज्ञ की विधि के साथ-साथ पर्व देवता की पूजा, स्तुति सभी में है। थोड़ा अतिरिक्त कर्मकाण्ड भी प्रत्येक पर्व का है। अन्त में पुष्पांजलि का विधान है। यदि भीड़ अधिक न हो तो जितने अधिक लोगों के द्वारा स्वस्तिवाचन, देव पूजन, मन्त्र पुष्पांजलि आदि का विधान कराया जाना सम्भव हो, करना चाहिये। हाथ में कलावा बाँधने तथा तिलक करने का प्रयोग जितने अधिक लोगों पर सम्भव हो, करना चाहिये। इससे लोग ऐसा अनुभव करते हैं कि हमें भी इस धर्मानुष्ठान में भागीदार बनने का अवसर मिला।

अनेक का प्रशिक्षण करें

मन्त्रोच्चारण का अवसर जितने अधिक लोगों को मिल सके, उतना उत्तम है। इसके लिये उस पर्व के विधान की पुस्तिकायें शाखा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समिति के पास अधिक संख्या में रहनी चाहिये, जो उपस्थित सुशिक्षित लोगों में बाँट दी जायँ और उनसे एक साथ, एक स्वर में मन्त्र बोलने का अनुरोध किया जाय। अनेक लोगों द्वारा एक साथ, एक स्वर में मन्त्रोच्चारण किया जाना, जहाँ वातावरण को धार्मिकता से ओत-प्रोत करता है, वहाँ देखने सुनने में भी बड़ा प्रभावशाली एवं आकर्षक बन जाता है। फिर जिन लोगों को मन्त्रोच्चारण तथा विधि-विधान कराने का अभ्यास हो गया है, वे आगे चलकर अन्यत्र भी वह आयोजन करा सकने में समर्थ हो सकते हैं। इन विधानों के जानकार लोग अधिक संख्या में प्रशिक्षित करने होंगे ताकि व्यापक रूप से यह प्रक्रिया प्रचलित की जा सके। यह प्रशिक्षण इस प्रकार सम्भव है कि हर पर्वोत्सव में सम्मिलित जितने भी शुद्ध उच्चारण कर सकने में समर्थ शिक्षित व्यक्ति उपस्थित हों उनके हाथ में विधान पुस्तिकायें दे दी जायँ। एक वर्ष तक दसों पर्व कराने में जो व्यक्ति सम्मिलित रहेंगे, मन्त्र बोलेंगे, विधि-विधान को देखेंगे, समझेंगे, वे अगले वर्ष स्वयं भी उस आयोजन को करा सकने में, उनकी विधि-व्यवस्था बना सकने में समर्थ हो सकते हैं। ऐसे लोगों की संख्या हमें तेजी से बढ़ानी होगी। अतएव आयोजनकर्त्ताओं को इस बात पर पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिये कि वे मन्त्रोच्चारण में अधिकाधिक लोगों को भाग ले सकने योग्य बनावें।

सारा विधि-विधान तो चुने हुये पाँच-सात व्यक्ति ही करें, ताकि समय और पूजा-सामग्री का खर्च कम हो, पर स्वस्तिवाचन, मन्त्र पुष्पांजलि, यज्ञ की पूर्णाहुति आदि में जितने अधिक लोगों को सम्मिलित कराया जाना सम्भव हो, करना चाहिये। साथ ही भीड़ के नियन्त्रण की दक्षता पहले ही प्राप्त कर लेनी चाहिये और नियम-नियन्त्रण सोच लेने चाहिये कि इन उपचारों के लिए उठी हुई भीड़ अव्यवस्था न फैला दे। ऐसा विधान सुनिश्चित किये बिना भीड़ को बार-बार हटाने, बैठाने की क्रिया इतनी जटिल हो जाती है कि उससे सारे आयोजन का आनन्द एवम् क्रम ही नष्ट हो जाता है। इसलिए अधिक लोगों को पूजा उपचार में सम्मिलित करने से पूर्व यह देख लेना चाहिए कि जनता किस स्तर की है, उससे व्यवस्थापूर्वक सब कार्य कराये जा सकते हैं या नहीं ? संचालकों को भीड़ के मनोविज्ञान का परिचय तथा नियन्त्रण का अभ्यास है या नहीं ? यदि हो, तो ही अधिक लोगों से कृत्य उपचार कराये जायँ, अन्यथा थोड़े लोगों से क्रिया-कृत्य करा लिये जायँ और शेष लोगों को उसे शान्त चित्त से ध्यानपूर्वक देखने के लिए कह दिया जाय।

विधि विधान के साथ विवेचन भी

पूजा के उपचार करते समय बीच-बीच में व्याख्यान विवेचन करते रहा जाय। हर पर्व के साथ उसके उद्देश्यों की शिक्षा देने वाले श्लोक दिये गये हैं। उनकी थोड़ी सी व्याख्या कर दी जाय तो उपस्थित लोग उस पर्व का महत्त्व समझ सकते हैं और जो शिक्षा उसमें सन्निहित है, उसे हृदयंगम कर सकते हैं। एक तरीका यह हो सकता है कि पूजा, हवन आदि का कृत्य पूर्ण हो जाने पर पर्व की विवेचना में श्लोकों पर व्याख्यान दिये जाएँ। इस प्रकार पूजा, हवन आदि का कृत्य पूर्ण हो जाने पर पर्व की विवेचना में श्लोकों पर व्याख्यान दिये जायें। इस प्रकार पूजा और व्याख्यान को दो भागों में विभक्त किया जा सकेगा। यह सरल है, पर अधिक अच्छा तरीका यह है कि पूजा कृत्यों के साथ-साथ ही छोटी-छोटी व्याख्यायें करते रहा जाय। किस श्लोक का प्रयोजन किस क्रिया कृत्य के साथ ठीक बैठता है इसकी विवेचना हम हर पर्व के लिये लिखी गई अलग-अलग पुस्तकों में करेंगे। कर्मकाण्ड और प्रवचनों का सम्मिश्रण अधिक आकर्षक एवम् प्रेरणाप्रद रहता है।

उत्सव के अन्त में गाय का दूध, दही, घी, गंगाजल तुलसी पत्र मिश्रित पञ्चामृत या भुना आटा और शक्कर मिली हुई "पँजीरी" का प्रसाद बाँटा जाना चाहिए। यही सस्ता रहता है। महँगे प्रसाद का वितरण बड़ी भीड़ में बहुत खर्चीला पड़ जाता है। उसी प्रकार यज्ञ में बहुत लोग आहुतियाँ देने के इच्छुक हों तो खर्च और सामान अधिक लगता है। इसलिये उसमें भी कम व्यक्ति आहुतियाँ देने के लिए बिठाए जाने चाहिये। थोड़े धन से बड़ा काम चलाना पड़े तो ऐसी ही बचत करने की बात सोचनी पड़ती है। युग निर्माण का सत्-संकल्प दुहराया जाना, प्रत्येक आयोजन के अन्त में अनिवार्य रूप से आवश्यक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। यदि जनता थोड़ी हो तो सबके हाथ में छपा संकल्प हो, यदि ज्यादा भीड़ हो और उतनी पुस्तिकाएँ न हों तो एक व्यक्ति थोड़े-थोड़े शब्द उच्च स्वर से, किन्तु रुक-रुक कर बोले और जनता उसे दुहराये। यह संकल्प का दुहराया जाना, युग-निर्माण योजना की विचारधारा को संक्षेप में पूरी तरह प्रकट कर देता है। इसलिये यदि भाषणों का क्रम ठीक प्रकार न बने पड़े तो इस संकल्प पाठ से भी उसकी पूर्ति आंशिक रूप से हो जाती है।

सामूहिक एवं वैयक्तिक

यह सामूहिक आयोजन एक अच्छा धर्म-मंच है। धर्म प्रचार का उद्देश्य बिना अधिक लोगों को एकत्रित किये, बिना सामूहिक चेतना उत्पन्न किये, बिना सार्वजनिक प्रयत्नों के सम्भव नहीं हो सकता। इसलिये यह जन-सम्मेलन केवल पर्वों की परम्परा को ही प्रचलित नहीं रखता, वरन् जन-साधारण को आज की परिस्थितियों के अनुरूप, अपने को सुधारने, बदलने, सँभालने एवम् बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण प्रकाश प्रदान करता है। भारत की धर्म-प्रेमी जनता को धर्म का सच्चा स्वरूप समझाने और धर्म राज्य की आवश्यक प्रेरणा उत्पन्न करने के लिये हमें इन प्रयत्नों को पूरी तत्परता, तन्मयता, निष्ठा और योजना के अनुसार सफल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

उत्तर प्रदेश में होली एक बार तो सार्वजनिक स्थानों पर जलाई जाती है, फिर उसकी अग्नि ला-लाकर लोग अपने-अपने आँगनों में छोटी होली जलाते हैं। यह प्रथा इसलिए है कि जो प्रेरणा सामूहिक रूप से बड़े सम्मेलन के रूप में प्राप्त की गई थी, वह पारिवारिक-जीवन में घर के हर सदस्य में भी प्रवेश करे। यह उत्तम रीति है। इस रीति का प्रयोग पर्व-आयोजनों में भी किया जाना चाहिये। जिस प्रकार सामूहिक पर्व सम्मिलित रूप से मनाया गया था, उसी प्रकार घरों में भी उसका एक छोटा रूप मनाया जाय। उसी तरह वेदी, उसी तरह हवन, उसी तरह पूजा, उसी तरह प्रवचन का संक्षिप्त क्रम आदि घरों में भी मनाया जा सके तो परिवार के सदस्य उस प्रेरणा को और भी अच्छी तरह हृदयंगम कर सकेंगे।

इन सामूहिक एवं पारिवारिक उत्सवों के लिये समय ऐसा रखा जाय जबकि अधिकांश लोगों को अवकाश रहे। बाजार या दफ्तरों की पूरी छुट्टी हो तो बात दूसरी है। अन्यथा प्रातःकाल से आरम्भ करके ६ बजे से पूर्व—दफ्तर या दुकान खुलने से पहले यह कार्यक्रम पूरे किये जा सकते हैं। सायंकाल को सूर्य अस्त के बाद से आरम्भ करके दो-तीन घण्टा रात गये तक उन्हें चलाया जा सकता है। बीच के समय में अक्सर काम-काजी लोग कम ही आ पाते हैं। महिलाओं को सबसे अधिक सुविधा का समय दोपहर का भोजन बना-खाकर निश्चिन्त होने के पश्चात् होता है। दो-तीन बजे से लेकर सूर्य अस्त होने से पूर्व ५-६ बजे तक इस प्रकार के आयोजनों में आसानी से भाग ले सकती हैं। कभी कोई आयोजन में से केवल महिलाओं के लिए ही बुलाना हो तो तीसरे पहर उन्हें सुविधा रहेगी। नर-नारी सभी के लिए सुविधा का समय प्रातः ६ बजे से पूर्व और सायं—दिन छिपे बाद का रहता है। आयोजनों का समय ऐसा ही रहना चाहिये, जिसमें कि अधिक लोग अधिक सुविधापूर्वक सम्मिलित हो सकें।

दस प्रमुख पर्व

पर्वों में प्रमुख दस गिने जाते हैं। (१) आषाढ़ सुदी १५ को गुरु पूर्णिमा, (२) श्रावण सुदी १५ को—श्रावणी, (३) आश्विन वदी अमावस्या को—पितृ-अमावस्या, (४) आश्विन सुदी १० को—विजय दशमी, (५) कार्तिक वदी अमावस्या को दीपावली, (६) मार्गशीर्ष सुदी ११ को—गीता जयन्ती, (७) माघ सुदी ५ को—वसन्त पंचमी (८) फाल्गुन वदी १४ को—शिवरात्रि, (९) फाल्गुन सुदी १५ को—होली (१०) ज्येष्ठ सुदी १०—गायत्री-जयन्ती अथवा गंगा दशमी।

इन दस पर्वों को यदि ठीक तरह मना लिया जाय तो उससे प्रति वर्ष हम अपनी वर्तमान सामाजिक स्थिति पर दृष्टिपात कर सकते हैं और उसमें जो त्रुटियाँ दृष्टिगोचर हों, उन्हें सुधारने तथा प्रगति के लिये आवश्यक प्रयत्न करने पर विचार कर सकते हैं। जिन कार्यों का लेखा-जोखा लिया जाता रहता है, वे बिगड़ने नहीं पाते। जहाँ उपेक्षा या लापरवाही बरती जाती है, वहीं विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं। किसी समय का हमारा विश्व शिरोमणि समाज आज की प्रगति-प्रतियोगिता में बुरी तरह पिछड़ गया है, इसका प्रधान कारण यह है कि हमने आत्म-निरीक्षण और परीक्षण करना ही छोड़ दिया है। जो कुछ है, सो ठीक है, कहकर लापरवाही बरतते रहे और घुन की तरह लगी हुई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विकृतियाँ भीतर ही भीतर खोखला करती रहीं। यदि समय-समय पर उसकी देख-भाल रखी जाती, गुण-दोषों का विवेचन, निरूपण होता रहता तो बिगड़ने को सुधारने और कमी को पूरा करने की चेष्टा होती। उपेक्षा में हर बात बिगड़ती है। हमें भी अपनी सामाजिक स्थिति के बिगड़ने का दण्ड आज भोगना पड़ रहा है।

व्यक्तियों से समाज बनता है, यह ठीक है, पर यह भी ठीक है कि सामाजिक वातावरण जैसा होता है, उसी के अनुरूप व्यक्ति प्रभावित होकर, बनते और ढलते चले जाते हैं। इस प्रगतिशीलता के युग में जिस आत्म-निरीक्षण एवम् आत्म-निर्माण की नितान्त आवश्यकता है, उसकी पूर्ति पर्व एवं त्यौहारों को ठीक तरह मनाने की प्रथा प्रचलित करके हम भली प्रकार कर सकते हैं। समाज सुधार एवम् समाज-निर्माण का महान् कार्य पर्वों की प्रेरणाप्रद-पद्धति को अपना कर जिस उत्तमता के साथ सम्पन्न किया जा सकता है, उतना और किसी प्रकार नहीं।

जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन में अनेक समस्यायें होती हैं और उसे उनके हल करने पर ही चैन मिलता है, उसी प्रकार हर समाज की भी अपनी कुछ कुछ समस्यायें होती हैं और उसे उनका हल निकालना होता है। यदि यह हल न निकल सके तो उलझनें बढ़ती हैं और वह समाज अनेक कठिनाइयों में फँस जाता है। इसलिये प्रगतिशील समाज को समय-समय पर अपनी समस्याओं के समाधान के लिये बहुत कुछ सोचना और बहुत कुछ करना होता है। पर्वों के मंगलमय दस दिन इस कार्य के लिये निर्धारित हैं कि हम सामाजिक जीवन की दस प्रमुख समस्याओं को एक-एक करके समझने समझने और हल करने का प्रयत्न करते रहें।

(१) गुरु पूर्णिमा

गुरु-पूर्णिमा का पर्व हमें अनुशासनशीलता की शिक्षा देने आता है। जो अनुशासन में रह सकता है, वही इस योग्य होता है कि दूसरों पर शासन कर सके। मर्यादाओं का पालन और निर्धारित क्रम-व्यवस्था में तत्परतापूर्वक संलग्न रहना व्यक्ति और समाज का महत्त्वपूर्ण गुण है। फौजी अनुशासन का जहाँ पालन होता है वहाँ न उच्छृंखलता के लिये कोई गुंजायश रहती है और न अव्यवस्था के लिये। प्रगतिशील समाजों में यह गुण अनिवार्य रूप से रहता है।

गुरु-पूर्णिमा के दिन गुरुजनों के पूजन का विधान है। उपयोगी ऋषि मर्यादाओं के पालन और अनुशीलन का व्रत लेकर ही गुरुजनों की पूजा सार्थक होती है। इस पर्व पर हम अपने गुरुजनों, अध्यापकों, अभिभावकों एवम् नेताओं का अभिवन्दन करते हैं और उनकी उचित शिक्षा, प्रेरणाओं को सच्चे मन से अपनाने का संकल्प करते हैं। बड़ों के प्रति शिष्टता, नम्रता और शालीनता का व्यवहार करने की भावना तो उसमें है ही। पर्व का पूजा-विधान करने में एक घण्टा और उपर्युक्त उद्देश्य को हृदयङ्गम कराने वाले प्रवचनों में एक घण्टा या अधिक समय लगाकर जन-साधारण में इस सामाजिक गुण को बढ़ाने का प्रयत्न करना कितना उपयोगी सिद्ध हो सकता है ? इसे समय ही बतावेगा। आज चारों ओर फैली हुई उच्छृंखलता, अशिष्टता एवम् अस्त-व्यस्तता के जमाने में तो इस प्रकार का लोक-शिक्षण अत्यधिक आवश्यक है।

(२) श्रावणी

श्रावणी पर्व के दिन यज्ञोपवीत बदला जाता है, वेद पूजन, ऋषि-पूजन किया जाता है, हेमाद्रि संकल्प द्वारा गतवर्ष हुई भूलों का प्रायश्चित करते हुए अगले वर्ष वैसा न करने का व्रत लिया जाता है। इन प्रक्रियाओं के द्वारा हम सदाचार एवं आत्म-निर्माण के पथ पर अग्रसर होते हैं। यज्ञोपवीत के नौ धागों में मनुष्य के नौ नैतिक गुणों का सन्देश है। जिस प्रकार बन्दूक या रेडियो का लाइसेन्स हर वर्ष "री न्यू" होता है, उसी प्रकार हमें अनेक कन्धों पर रखे हिन्दू धर्म के आवश्यक प्रतीक 'यज्ञोपवीत' को भी श्रावणी के दिन "री न्यू" करना पड़ता है। साथ ही स्वतन्त्रता दिवस को राजनैतिक प्रतिज्ञाओं की तरह मानवता के आदर्शों को कन्धे, हृदय, कलेजा और पीठ से चिपकाये रहने, जीवन में ओत-प्रोत किये रहने का अपना निश्चय बार-बार दुहराना पड़ता है। ऋषियों, वेद शास्त्रों ने पूरा बल सदाचार के आदर्शों को अपनाने पर ही दिया है। उनका पूजन करने का प्रयोजन उनके निर्देशों पर चलना ही तो है। भूलों का प्रायश्चित और आगे के लिये इस दिशा में पूरी-पूरी सावधानी बरतना यही हेमाद्रि संकल्प का प्रयोजन है। इन कर्मकाण्डों और उस अवसर पर होने वाले प्रवचनों से हम सामाजिक सदाचार का पाठ पढ़ते हैं। सदाचारी, मानवता के आदर्शों का अनुगामी समाज ही अपना गौरव एवं वर्चस्व कायम रख सकता है, इसकी प्रेरणा इस पर्व पर ग्रहण की जाती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(३) पितृ-अमावस्या

पितृ-अमावस्या—स्वर्गीय अथवा जीवित महापुरुषों का, पूर्वजों का श्राद्ध-तर्पण करने का पर्व है। श्राद्ध का अर्थ है—श्रद्धापूर्ण व्यवहार, तर्पण का अर्थ है—तृप्त करना। श्रद्धापूर्वक दिवंगत् अथवा जीवित पितरों को तृप्त करने की भावना—श्राद्ध-तर्पण कहलाती है। पितृ अमावस्या का सारा कर्मकाण्ड इसी प्रयोजन के लिये है, शिष्टाचार, सद्व्यवहार एवं उपकारियों के प्रति कृतज्ञता की भावना बढ़ाने के साथ-साथ पितृ-पर्व यह भी सिखाता है कि हम पितरों, महापुरुषों, नर-रत्नों, अपने महान् पूर्वजों के जीवनों, आदर्शों एवम् निर्देशों को अपनाकर वैसे ही महान् बनने का प्रयास करें। समाज में यह प्रवृत्ति पनपे तो हम अपनी महान् सांस्कृतिक परम्पराओं को सजीव रखने के लिये तत्पर रह सकते हैं।

(४) विजयादशमी

विजयादशमी—शारीरिक बल, शस्त्र बल, मनोबल, संगठन-बल जैसे माध्यमों से सर्वांगीण समर्थता का संदेश देने आती है। बलवान् ही आत्म-रक्षा कर पाते हैं और प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति, बलिष्ठता के आधार पर ही सम्भव है।

उपर्युक्त बातों को बढ़ाने के लिये वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में क्या किया जाय ? किस प्रकार किया जाय ? इसकी रूपरेखा एवम् व्यवस्था के सम्बन्ध में इस पर्व पर विस्तृत विचार विवेचन किया जाता है। शस्त्र-पूजन, व्यायाम प्रदर्शन आदि के उपचारों से हमें सर्वांगीण समर्थता पर ही विचार करना होता है। समाज किस प्रकार प्रत्येक दृष्टि में शक्ति सम्पन्न बने ? शक्ति-पूजा का उपचार हमारी विचारधारा को इस ओर मोड़ता है। यह भावना सारे समाज में व्याप्त हो, समग्र समर्थता की आवश्यकता पूर्ण करने में हमें जुट पड़ना चाहिए, उसी की प्रेरणा विजयादशमी देने हर वर्ष आया करती है।

(५) दीपावली

दीपावली—लक्ष्मी पूजन का पर्व है। अर्थ को व्यक्ति या समाज का मेरुदण्ड कहना चाहिये। उत्पादन, उद्योग, व्यापार सभी कुछ हमें बढ़ाना होगा, ताकि व्यापक दरिद्रता को हटाकर समृद्धि को बढ़ाया जा सके। साथ ही सत्यानाशी अपव्यय पर भी कुठाराघात करना होगा। दरिद्र होते हुये भी हम नवाबों की तरह शेखीखोरी में डूबे, मूढ़ता, बनावट एवं व्यसनों की फिजूल खर्ची में अपनी कमाई स्वाहा करते रहते हैं। जीवन को समुन्नत सुविकसित बनाने में कंजूसी बरतते हैं। इन दोष-दुर्गुणों से छुटकारा पाने और उपार्जन बढ़ाने के लिये वैयक्तिक और सामाजिक स्तर पर क्या किया जाना चाहिये ? श्रमशीलता, ईमानदारी एवं धन के सदुपयोग की आदत कैसे पनपाई जानी चाहिए ? इसका निरूपण दीपावली पर्व पर किया जाना चाहिए। पर्व के कर्मकाण्डों में सार रूप से बहुत कुछ मार्गदर्शन इस सम्बन्ध में है, जो कभी ही उसे भाषणों से पूरा किया जाय। आर्थिक क्रान्ति की चेतना दीवाली उत्पन्न करती है। इस प्रयोजन की पूर्ति के साथ-साथ ही अन्धेरे में दीपक जलेंगे।

(६) गीता-जयन्ती

गीता जयन्ती—कर्मनिष्ठा का पर्व है। गीता कर्म-योग का ग्रन्थ है। कर्त्तव्य-पालन को ईश्वर-पूजा मानने का उसमें सन्देश है। मानसिक सन्तुलन स्थिर रखने की हानि में विचलित न होने और लाभ में अहंकारी न बनने की जैसी मानव-जीवन को सार्थक बनाने वाली शिक्षा गीता में दी गई है, वैसी अन्यत्र कहीं नहीं है। श्रम का सम्मान, कर्म का गौरव बताने और बढ़ाने की इस देश में अत्यधिक आवश्यकता है। श्रमजीवियों को अछूत मानने और मेहनत से बचने में बड़प्पन अनुभव करने की दुर्बुद्धि ने हमारे देश को अकर्मण्य बना दिया। अध्यात्म के नाम पर लोग निठल्ले और पलायनवादी बने। गीता इन मूढ़ताओं का सर्वथा खण्डन करती है। आलस्य और प्रमाद में, मूढ़ता और व्यामोह में पड़े हुए भारत को—अर्जुन को प्रबुद्ध करने के लिये जिस प्रेरणा की आज अत्यधिक आवश्यकता है, वह गीता में हमें भली प्रकार मिल सकती है। गीता-जयन्ती हम इस प्रकार मनायें कि समाज में कर्मनिष्ठा की भावनायें हिलोरें लेने लगें।

(७) वसंत-पंचमी

वसंत पंचमी—भगवती सरस्वती का जन्मदिन है। सरस्वती का अर्थ है—शिक्षा। इस देश में ८० फीसदी लोग निरक्षर हैं। बौद्धिक दृष्टि से इतने गये गुजरे समाज को को भगवती सरस्वती का सन्देश सबसे पहले सुनना होगा। निरक्षरता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूर कर और जन-साधारण को सुशिक्षित बनाने के लिये प्राण-प्रण से प्रयत्न करना होगा। वसन्त-पंचमी के पर्व पर शिक्षा की उपयोगिता एवं आवश्यकता समझायें और अविद्या के अन्धकार को मिटाने के लिए जगह-जगह स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप कार्यक्रम उपस्थित करें तो उससे भारतीय समाज के मुख पर लगा हुआ अशिक्षा का कलंक दूर होगा।

(८) शिवरात्रि

शिवरात्रि—भगवान शिव के अवतरण का दिन है। शिव पिछड़े और पतितों को गले लगाने वाले देवता हैं। भूत पलीतों को साथ लेकर चलते हैं। साँपों को गले लगाते हैं और अपने परिवार के वाहनों में सिंह, वृषभ, साँप, मोर, चूहा आदि एक-दूसरे के प्राण-घातक शत्रुओं में मेल-जोल कराके रखते हैं। वे समन्वयवादी हैं। मस्तक पर गंगा जैसी शान्ति शीतलता और चन्द्रमा जैसा ज्ञान-प्रकाश धारण किये रहते हैं। हमारी वैयक्तिक एवम् सामाजिक रीति-नीति भी ऐसी ही शिवसंकल्पयुक्त होनी चाहिए।

शिवजी ने संसार के लिये सत्यानाशी समझकर कालकूट विष को गले में धारण कर लिया था। कालकूट आज नशेबाजी के रूप में पुनः फैल पड़ा है और मानव-जाति का सर्वनाश कर रहा है। शिवजी इस कालकूट की एक बूँद भी धरती पर या मनुष्य के पास नहीं रहने देना चाहते थे, उसी से उसे गले में धारण किया था, पिया नहीं था। उनका भी गला नीला पड़ गया था, इससे सिद्ध है कि जब नशा शिवजी के गले को नीला कर सकता है तो हमारे मुख को भी काला-नीला जरूर करेगा। उसका सर्वथा परित्याग करें। शिवरात्रि को 'नशाबन्दी-दिवस' के रूप में मनाया जाय। विष-विसर्जन के कर्मकाण्ड के साथ नशों की शव-यात्रा निकाली जाय और उन्हें भूमितल में गाढ़ दिया जाय। नशा-निवारण व्यसनों से छुटकारा स्वस्थ समाज के लिए अतीव आवश्यक है।

(९) होली

होली—मातृभूमि की धूल मस्तक पर लगाकर देश-भक्ति की प्रतिज्ञा लेने का दिन है। असमानता के अभिशाप को आग में जला देने का दिन है। आर्थिक एवम् सामाजिक असमानताएँ, आन्तरिक विद्रोह, रोष एवम् अवरोधों का सृजन करती हैं, इसलिये उन्हें मिटाकर समानता की व्यवस्था बनाई जाय। एक-दूसरे के गले मिलें और समानता की मान्यता को व्यवहार में लावें। स्वयं उपार्जित नया अन्न तब खावें, जब यज्ञ कार्य में प्रयुक्त करके इसे शुद्ध कर लें। अपनी कमाई में से पहले लोक-निर्माण का दान भाग निकालें, तब उसे खावें यह प्रेरणा होली देती है। सत्य, धर्म एवं विवेक के मार्ग पर दृढ़ रहने के लिये प्रहलाद ने अपने अभिभावकों तथा दूसरों का घोर विरोध एवं दमन सहते हुए भी दृढ़ता प्रकट की थी, हमारी स्थिति भी वैसी ही बने। सामूहिक सफाई का हम मिल-जुलकर प्रयत्न करें और कूड़ा-करकट जला दें। इस प्रकार की अनेक शिक्षाएँ होली में हैं। पर उसे प्रमुखतया असमानता निवारण का पर्व माना जाय। हमारे देश में जाति-भेद, लोक-भेद और आर्थिक असमानता का जो कुचक्र व्याप्त है, उसे तोड़ा जाय। होली का पर्व यही सन्देश लेकर आता है।

(१०) गायत्री जयन्ती

गायत्री जयन्ती— गायत्री महामन्त्र का अवतरण दिन है। यह ज्ञान-गंगा इसी दिन स्वर्ग से भू पर उतरी थी। विवेकशीलता, सद्बुद्धि सद्भावना एवं श्रेय साधक, सद्भावना की जीवन में प्रमुखता स्थापित करने का यह पुण्य-पर्व है। उदारता, दूरदर्शिता, संयम-शीलता एवं लोक-मंगल के लिये अधिकाधिक त्याग करने की प्रेरणा गायत्री महामन्त्र में है। इसी को विद्या कहते हैं। ज्ञान का स्वरूप सद्भावना और सत्कर्मों में ही देखा जा सकता है। हम सुशिक्षित ही नहीं, सच्चे अर्थों में ज्ञानवान् बनें। वसन्त पंचमी शिक्षा का सन्देश लेकर आती है और गायत्री-जयन्ती, आत्मिक एवं नैतिक सद्गुणों की 'विद्या' सिखाने आती है। समाज को विद्या की आवश्यकता अनुभव की जानी चाहिए और उसके अभिवर्द्धन की चेष्टा भी। गायत्री-जयन्ती पर जन-जन के मन में इसी आवश्यकता की पूर्ति का विचार उठे और इसके लिये ऐसे उपाय ढूँढ़ने में लगें तो पर्व की सार्थकता सम्भव है।

समाज-निर्माण की रचनात्मक पृष्ठभूमि

दस पर्वों की दस प्रेरणाएँ समाज-निर्माण की आधारशिला हैं। आधार ठीक होने पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आकार भी ठीक बन जाता है। गुरु-पूर्णिमा से अनुशासन, श्रावणी से सदाचार, पितृ अमावस्या से सांस्कृतिक परम्पराएँ, विजय-दशमी से व्यक्ति सम्वर्धन, दीपावली से अर्थव्यवस्था, गीता-जयन्ती से कर्मनिष्ठा, वसन्त पंचमी से शिक्षा-प्रसार, शिवरात्रि से नशा-निवारण, होली से समानता संवर्धन, गायत्री-जयन्ती से विद्या विवेक की सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ाने का आधार विकसित किया जा सकता है। इस प्रेरणाओं की परिधि इतनी व्यापक एवं विस्तृत है कि उसके अन्तर्गत प्रत्येक अव्यवस्था पर चोट की जा सकती है और हर आवश्यकता का प्रतिपादन हो सकता है।

सामाजिक क्रान्ति की पूरी पृष्ठभूमि पर्व और त्यौहार मनाने की विधि-व्यवस्था में मौजूद है। समाज-निर्माण के हर तत्त्व को इस पृष्ठ पर विकसित किया जा सकता है। यह रचनात्मक आधार है। ध्वंसात्मक आधार पर कोई प्रतिपादन उतना उपयुक्त नहीं रहता, जितना रचनात्मक आधार पर। खण्डनात्मक प्रक्रिया की अपेक्षा मण्डनात्मक प्रक्रिया प्रभावशाली है। खण्डन करने की एक प्रतिक्रिया यह होती है कि लोग अश्रद्धालु बन जाते हैं। खूनी राजनैतिक क्रान्तियों के बाद अपराधियों और अपराधों की संख्या बढ़ती है। जो संस्थाएँ तर्क-प्रधान अवलम्बन अपनाती हैं, अपने से भिन्न विचारों का तीव्र खण्डन करती हैं, उनके सदस्य धीरे-धीरे हर विषय में संशयी हो जाते हैं और उन्हें अपने प्रतिपादनों पर भी अश्रद्धा रहने लगती है। आर्य-समाज के सदस्य दूसरे सम्प्रदायों की खिल्ली उड़ाते हैं। यह प्रवृत्ति उन्हें संध्या हवन के अपने प्रतिपादन में भी अश्रद्धा उत्पन्न कर देती है, उनमें से कोई विरले ही संध्या हवन आदि करते हैं। यह बात हर क्षेत्र में होती है। समाज में आज अनेक कुरीतियाँ और दुष्प्रवृत्तियाँ परिलक्षित होती हैं, उनका भर्त्सनापूर्ण तीव्र खण्डन करने की अपेक्षा रचनात्मक सही मार्ग का अवलम्बन अधिक श्रेयस्कर है। सामाजिक क्रान्ति का, समाज के नये निर्माण का यह आधार अधिक निर्दोष और अधिक सरल है, जो पर्व और त्यौहारों को प्रेरणाप्रद ढंग से मनाने पर विनिर्मित होता है। उदीयमान भारत को, उदीयमान समाज के रूप में विकसित होना होगा और उसके लिये पर्वों की प्रेरणाप्रद पद्धति का अवलम्बन हर दृष्टि से श्रेयस्कर है।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारी संस्कृति के स्तंभ

त्यौहार और व्रत

भारतीय संस्कृति का जन्म व्यक्ति को तथा समाज को सुसंस्कृत बनाने की दृष्टि से हुआ है। उसके प्रत्येक सिद्धांत, आदर्श एवं विधि-विधान की रचना इसी दृष्टि से की गई है कि उसका प्रभाव जन-मानस को ऊँचा उठाने एवं परिष्कृत बनाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो।

षोडस संस्कारों में जन्म-काल के जात-कर्म, नामकरण संस्कार से लेकर यज्ञोपवीत, विवाह एवं अंत्येष्टि संस्कार तक सभी की रचना ऐसी है कि जिस व्यक्ति के लिए यह संस्कार प्रयोग किए जाएँ, उस पर वेद-मंत्रों की सूक्ष्म शक्ति से, दैवी कृपा से, संस्कार में प्रयुक्त मंत्रों में दी जाने वाली महत्वपूर्ण शिक्षाओं से तथा उस कर्मकांड के प्रदर्शनात्मक प्रभाव के कारण मनोवैज्ञानिक रूप से अच्छा प्रभाव पड़े। व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने का उद्देश्य ही इन संस्कारों का प्रधान हेतु है। जिस समय इन षोडस संस्कारों की विद्या को लोग भली प्रकार जानते थे, उस समय इन विधि-विधानों के मनोवैज्ञानिक प्रभाव, दैवी अनुग्रह एवं शिक्षाओं के द्वारा वस्तुतः व्यक्ति को सुसंस्कारी बना देते थे। व्यक्तिगत चरित्र-निर्माण एवं मनोभूमि को सुव्यवस्थित बनाने की दृष्टि से षोडस संस्कार भारतीय संस्कृति की एक महान् देन है।

जिस प्रकार व्यक्तिगत जीवन की वैयक्तिक मनोभूमि निर्माण के लिए षोडस संस्कारों की रचना हुई है, उसी प्रकार सामूहिक जीवन को, सारे समाज को, सुसंस्कृत बनाने के लिए ऋषियों ने अनेक त्यौहारों की रचना की है। हिन्दू-धर्म का प्रत्येक त्यौहार एक आदर्श, सिद्धांत एवं प्रेरणा को लिए हुए है। समाज पर उन सिद्धांतों की छाप डालने के लिए सामूहिक आयोजनों, उत्सवों, उल्लासों एवं सम्मेलनों के द्वारा यह प्रयत्न किया गया है कि लोग उस प्रकार की प्रेरणा ग्रहण करके, उसे अपने जीवन में ढालें। केवल समझाने-बुझाने, लिखने-पढ़ने, सुनने-सुनाने से वह प्रभाव नहीं पड़ता, जो बड़े प्रदर्शनों एवं उत्सवों का पड़ता है। जन समुदाय बड़े रूप में, सामूहिक रूप में, जिस उत्सव को मनाता है, उससे उस उत्सव में भाग लेने वाले लोग निश्चय ही प्रेरणा एवं प्रकाश ग्रहण करते हैं।

जन-जीवन को सच्चरित्रता, आदर्शवाद, सेवा, सद्भावना, सहयोग एवं सज्जनता से परिपूर्ण करने वाली प्रेरणाओं से भर देना त्यौहारों एवं व्रत पर्वों का मूल उद्देश्य है। इन उद्देश्यों की पूर्ति बहुत कुछ हो सकती है, यदि उन्हें ठीक प्रकार मनाया जाए। जब तक लोग इन्हें उचित रीति से मनाते रहे, तब तक उन्हें जीवन को महान् बनाने की प्रेरणा समुचित रीति से प्राप्त होती रही और भारतीयों का मानसिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक स्तर असाधारण रूप से ऊँचा रहा। अब इन त्यौहारों को मनाने की प्रेरणाप्रद प्रक्रियाएँ नष्ट हो गईं और चिन्ह पूजा मात्र शेष बची है। इसलिए वे व्यर्थ का व्यय भार बढ़ाने वाले आडंबर मात्र बने हुए हैं। पकवान, मिष्टान्न, बनाकर खा लेना या और कोई छोटा-मोटा धार्मिक कर्मकांड एक लकीर पीटने के रूप में कर लेना-बस इतनी-सी बात त्यौहार मनाने की शेष रह गई है। यह स्थिति वस्तुतः बड़ी निराशा की है। जिस देश, जाति की प्राचीन प्रेरणाएँ शिथित या दुर्बल हो जाती हैं, वह समाज भी दुर्बल होने लगता है।

यदि हमें अपनी संस्कृति का पुनरुत्थान करके भारतीय जन-समाज को प्राचीनकाल जैसे उच्च स्तर पर पहुँचाना हो तो त्यौहार एवं पर्वों को मनाने की उस प्राचीन परिपाटी को पुनः जीवित करना पड़ेगा। यों प्रत्येक पर्व को मनाने की पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न हैं। देश, काल-भेद से भी इनके मनाने की विधियों में अंतर है। उन सबका एकीकरण और समन्वय करने की आवश्यकता है ताकि सारे देश में एक ही विधि-व्यवस्था से, एक ही रीति-नीति से इन पर्वों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को मनाया जाना संभव हो सके। इसके लिए विभिन्न प्रदेशों के प्रतिनिधि एकत्रित होकर पृथक्-पृथक् स्थानों में प्रयुक्त होने वाले रिवाजों में से जितने-जितने अंश उत्तम लगें, उन्हें चुनकर एक सार्वदेशिक विधि इन त्यौहारों को मनाने की घोषित कर दें। इस प्रकार हमारे प्रत्येक पर्व-त्यौहार को राष्ट्रीय एकता, सामाजिक एकरूपता एवं आध्यात्मिक श्रेष्ठता उत्पन्न करने का माध्यम बनाया जाए।

एक बात तो अभी से तुरंत ही आरंभ की जानी चाहिए कि इन पर्वों पर स्थानीय जनता एक जगह एकत्रित होकर उस पर्व का सामूहिक विधि-विधान पूरा किया करे और उस त्यौहार के पीछे जो इतिहास एवं आदर्श है, उसे भजन, कीर्तन, उपदेश, अभिनय आदि प्रक्रियाओं के द्वारा अपने अंतःकरण में उतारने का सामूहिक आयोजन किया करे। हमारा हर पर्व एक सार्वजनिक सामूहिक सम्मेलन का रूप धारण करे। इन दिनों राजनैतिक सभा-सम्मेलनों की या किन्हीं आंदोलनकारी आयोजनों की ही सामूहिक चेतना जहाँ-तहाँ दिखाई पड़ती है। अब सांस्कृतिक सामुदायिक योजनाएँ आरंभ की जानी चाहिए। नैतिक और सांस्कृतिक वातावरण पैदा करने के लिए जनता को प्रबुद्ध एवं तत्पर करना चाहिए। इसके लिए हमारे पर्व और त्यौहार एक श्रेष्ठ माध्यम हैं।

षोडस संस्कारों की भांति प्रमुख पर्व त्यौहारों को इस पुस्तक में प्राथमिकता देते हुए आरंभ में लिखा गया है। इसके बाद सामान्य व्रत, पर्वों को साधारण परिचय की तरह परिशिष्ट रूप में दे दिया है। बहुत अधिक पर्व, त्यौहार मनाने से मनुष्य ऊब जाता है और सभी को एक-सी दृष्टि से देखता है। इसलिए चुने हुए त्यौहारों को ही पूरी तत्परता एवं उत्साह के साथ मनाया जाना चाहिए।

आत्मविकास के लिए व्रत पालन की आवश्यकता

आत्म-ज्ञान या शाश्वत जीवन का बोध व्रताचरण के द्वारा होता है। ऊपर चढ़ने की जरूरत पड़ती है तो सीढ़ी लगाते हैं। एक डंडे को हाथ से पकड़ कर दूसरे पर पैर रखते हुये ऊपर आसानी से चढ़ जाते हैं। जीवन में क्रमिक रूप से छोटे-छोटे व्रतों से प्रारम्भ करके अन्त में महा-व्रत की परिधि प्राप्त करना अन्य साधनों की अपेक्षा अधिक सरल है। शास्त्रकार का कथन है—

व्रतेन प्राप्यते दीक्षा दक्षिणा दीक्षपाप्यते।

तया च प्राप्यते श्रद्धा श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

अर्थात्—उन्नत जीवन की योग्यता मनुष्य को व्रत से प्राप्त होती है। इसे दीक्षा कहते हैं। दीक्षा से दक्षिणा अर्थात् जो कुछ कर रहे हैं उसके सफल परिणाम मिलते हैं। सफलता के द्वारा आदर्श और अनुष्ठान के प्रति श्रद्धा जाग्रत होती है और श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।" सत्य का अर्थ मनुष्य के जीवन लक्ष्य से है। यह एक क्रमिक विकास की पद्धति है। व्रत जिसका प्रारम्भ और सत्य-प्राप्ति ही जिसका अन्तिम निष्कर्ष है।

व्रत का आध्यात्मिक अर्थ उन आचरणों से है, जो शुद्ध, सरल और सात्विक हों और उनका पालन विशेष मनोयोग पूर्वक किया गया हो। यह देखा गया है कि व्यवहारिक जीवन में सभी लोग अधिकांश सत्य बोलते हैं और सत्य का ही आचरण भी करते हैं किन्तु कुछ क्षण ऐसे आ जाते हैं, जब सच बोल देना स्वार्थ और इच्छा पूर्ति में बाधा उत्पन्न करता है, उस समय लोग झूठ बोल देते हैं या असत्य आचरण कर डालते हैं। निजी स्वार्थ के लिये सत्य की अवहेलना कर देने का तात्पर्य यह हुआ कि आपकी निष्ठा उस आचरण में नहीं है। इसे ही यों कहेंगे कि व्रतशील नहीं हैं।

बात अपने हित की हो अथवा दूसरे की जो शुद्ध और न्यायपूर्ण हो उसका निष्ठापूर्वक पालन करना ही व्रत कहलाता है। संक्षेप में आचरण शुद्धता को कठिन परिस्थितियों में भी न छोड़ना व्रत कहलाता है। संकल्प का छोटा रूप व्रत है। संकल्प की शक्ति व्यापक होती है और व्रत उसका एक अध्याय होती है। वस्तुतः व्रत और संकल्प दोनों एक ही समान हैं।

विपरीत परिस्थितियों में भी हँसी-खुशी का जीवन बिताने का अभ्यास व्रत कहलाता है। इससे मनुष्य में श्रेष्ठ कर्मों के सम्पादन की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योग्यता आती है। थोड़ी-सी कठिनाइयों में कर्म-विमुख होना मनुष्य की अल्प-शक्ति का बोधक है, जो कठिनाइयों में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहे, ऐसी शक्ति व्रत में होती है।

नियम-पालन से मनुष्य में आत्म-विश्वास और अनुशासन की भावना आती है। जीवन के उत्थान और विकास के लिये यह दोनों शक्तियाँ अनिवार्य हैं। आत्मशक्ति या आत्म-विश्वास के अभाव में मनुष्य छोटे-छोटे भौतिक प्रयोजनों में ही लगा रहता है। अनुशासन के बिना जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। शक्ति और चेष्टाओं का केन्द्रीकरण न हो पाने के कारण कोई महत्वपूर्ण सफलता नहीं बन पाती। आध्यात्मिक-लक्ष्य की प्राप्ति के लिये बिखरी हुई शक्तियों को एकत्रित करना और उन्हें मनोयोग पूर्वक जीवन-ध्येय की ओर लगाये रखना आचरण में नियमबद्धता से ही हो पाता है। नियमितता व्यवस्थित जीवन का प्रमुख आधार है। आत्मशोधन की प्रक्रिया इसी से पूरी होती है। आत्मवादी पुरुष का कथन है—

उत्तरोत्तर मुत्कर्षं जीवने लब्धुमुत्सुकः।

प्रतिजाने चरिष्यामि व्रतमात्मविशुद्धये।।

मैं जीवन में उत्तरोत्तर उत्कर्ष प्राप्त करने की प्रबल इच्छा रखता हूँ। यह कार्य पवित्र आचरण या आत्मा को शुद्ध बनाने से ही पूरा होता है, इसलिये में व्रताचरण की प्रतिज्ञा लेता हूँ।

व्रत-पालन से आत्म विश्वास के साथ संयम की वृत्ति भी आती है। आत्म-विश्वास शक्तियों का संचय बढ़ाता है और संयम से शक्तियों का अपव्यय रुकता है। इस तरह जब विपुल शक्ति का भण्डार आत्म-कोष में भर जाता है, तो आत्मा अपने आप प्रकट हो जाती है। शक्ति के बिना आत्मा को धारण करने की क्षमता नहीं आती। व्रत शक्ति का स्रोत है इसलिये आत्मशोधन की वह प्रमुख आवश्यकता है। अपनी शक्ति और स्वरूप का ज्ञान मनुष्य को न हो तो वह जीवन में किसी तरह का उत्थान नहीं कर सकता है। शक्ति आती है तभी आत्म विश्वास की भावना का उदय होता है और मनुष्य विकास की ओर तेजी से बढ़ता चला जाता है।

व्रत जीवन की त्रुटियों और भूलों को सुधारकर मनुष्य को शुद्ध बनाता है। असंयमित जीवन के कारण जो अनियमिततायें और अशुद्धियाँ आ जाता हैं उनका एक सफल उपचार है—व्रताचरण। गान्धी जी का प्रारम्भिक जीवन बिलकुल अस्त-व्यस्त रहा है इसलिये उन दिनों में वे कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं कर पाये। पहला व्रत उन्होंने ३६ वर्ष की अवस्था में धारण किया। ब्रह्मचर्य से उनकी प्रसुप्त शक्तियाँ जागीं और उनका जीवन क्रम व्यवस्थित होने लगा। व्यवस्थित जीवनचर्या और आन्तरिक शक्तियों के जागरण से महात्मा गान्धी असाधारण कार्य कर सके। महापुरुषों का जीवन सदैव व्रतशील रहा है। आत्म-निर्माण के साधकों को भी सफलता के लिये आचरण की शिक्षा ग्रहण करनी ही पड़ती है।

जीवन की सफलता के लिये जिन-जिन विचारकों ने अपने अनुभव दिये हैं, उन सबने पहले उसे कसौटी पर कसा होता है। उन नियमों की सत्यता के लिये हमें लम्बे परीक्षण की आवश्यकता नहीं है। इसमें समय बर्बाद करने की अपेक्षा यह अधिक श्रेष्ठ है कि उदाहरण और विवेक के द्वारा नियमों की परख कर लें और उन्हें प्रयोग करने लगें, इतने से ही हम अपने श्रेष्ठ जीवन का निर्माण कर सकते हैं।

पूर्व जन्मों के संस्कारों के थोड़े से अपवाद हो सकते हैं किन्तु अधिकांश लोगों के लिये आत्म-ज्ञान प्राप्त करने का जो एक सरल रास्ता निश्चित किया हुआ है वह है—नियम पालन की योग्यता। मनुष्य के जीवन में आत्म-रक्षा वृत्ति से लेकर समाज-वृत्ति तक जो मर्यादायें निश्चित हैं उन्हीं के भीतर रहकर ही आत्म विकास करने में सुगमता होती है। एक व्यक्ति के लिये नहीं, सामूहिक हित साधना का कार्यक्रम इसी प्रकार पूरा होता है। व्यक्ति का निजी स्वार्थ भी इसीमें सुरक्षित है कि सबके लिये समान व्रत का पालन करें। दूसरों को धोखे में डालकर आत्म-कल्याण का मार्ग प्राप्त नहीं किया जा सकता। साथ-साथ चलकर लक्ष्य तक पहुँचने में जो सुगमता और आनन्द है वह अकेले चलने में नहीं है। अनुशासन और नियमपूर्वक चलते रहने से समाज में एक व्यक्ति के भी हितों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रक्षा हो जाती है और दूसरों की उन्नति का मार्ग भी अवरुद्ध नहीं होता।

सृष्टि का संचालन नियमपूर्वक चल रहा है। सूर्य अपने निर्धारित नियम के अनुसार चलता रहता है, चन्द्रमा की कलाओं की घटना-बढ़ना सदैव एक-सा रहता है। सारे के सारे ग्रह नक्षत्र अपने निर्धारित पथ पर ही चलते हैं, इसी से सारा संसार ठीक-ठीक चल रहा है। यदि ये अपनी-अपनी मर्यादायें छोड़ दें तो आपस में टकराकर विश्व-नाश के दृश्य उपस्थिति कर दें। अग्नि-वायु, समुद्र, पृथ्वी आदि सभी अपना-अपना व्रत धारण किये हुये हैं। नियमों की अवज्ञा करना उन्होंने शुरू कर दिया होता तो सृष्टि-संचालन का कार्य कभी का रुक गया होता। अपने कर्तव्य का अविचल भाव से पालन करने के कारण ही देव-शक्तियाँ "अमृत-भोजी" कहलाती हैं। इन्हीं नियमों का पालन करते हुये मनुष्य भी अपना लौकिक और पारलौकिक जीवन सुखी तथा समुन्नत बना सकता है।

ऊँचे उठने की आकांक्षा मनुष्य की आध्यात्मिक प्रतिक्रिया है। पूर्णता प्राप्त करने की कामना मनुष्य का प्राकृतिक गुण है किन्तु हम जीवन को अस्त-व्यस्त बनाकर लक्ष्य-विमुख हो जाते हैं। हर कार्य की शुरूआत छोटी कक्षा से होती है, तब कहीं श्रेष्ठता की ओर बढ़ पाते हैं। आत्म-ज्ञान के महान् लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रारम्भिक कक्षा व्रत-पालन ही है इसी से हम मनुष्य जीवन को सार्थक बना सकते हैं। व्रताचरण से ही मनुष्य महान् बनता है, यह पाठ जितनी जल्दी सीख लें उतना ही श्रेयस्कर है।

व्रत रखने के त्रिविध लाभ

किसी लक्ष्य को सामने रखकर विशेष संकल्प के साथ लक्ष्य सिद्धि के अर्थ किये जाने वाली क्रिया विशेष का नाम व्रत है। व्रत प्रकृति और निवृति भेद से दो प्रकार के और नित्य-नैमित्तिक-काम्य भेद से तीन प्रकार के होते हैं।

द्रव्य विशेष-भोजन तथा पूजादि के द्वारा साध्य व्रत प्रवृत्ति मूलक और केवल उपवासादि द्वारा साध्य व्रत निवृत्ति मूलक हैं। ये दोनों ही प्रकार के व्रत पुनः लक्ष्य भेद से तीन प्रकार के होते हैं यथा नित्य, नैमित्तिक और काम्य।

एकादशी आदि व्रत जिनके न करने से प्रत्यवाय होता है, उन्हें नित्य व्रत कहते हैं।

पापक्षय आदि निमित्त को लेकर अनुष्ठित चान्द्रायण आद व्रत नैमित्तिक है।

किसी विशेष तिथि में अनुष्ठित सावित्री व्रत आदि—ऐसे व्रतों को काम्य व्रत कहते हैं।

इस प्रकार धर्म-शास्त्रों में व्रत के विभिन्न भेद कहे गये हैं। इसके अतिरिक्त कायिक और मानसिक भेद से भी व्रत के दो भेद होते हैं।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य ये सब मानसव्रत हैं तथा दिवा-रात्रि उपवास या अशक्त-पक्ष में रात्रि को भोजन, अयाचित, नियम तथा शारीरिक तप के द्वारा सभी वर्ण के मनुष्य पापमुक्त होकर पुण्य प्रभाव से उत्तम गति लाभ करते हैं।

शुक्ल पक्ष की विभिन्न तिथियों को चन्द्रमा की विभिन्न कलाओं का प्रभाव पृथ्वी और जीवों पर चन्द्रमंडल द्वारा कृष्णपक्ष की विभिन्न तिथियों को सूर्य मंडल द्वारा पड़ा करता है। इसके अतिरिक्त नक्षत्र-लोक आदि का भी प्रभाव पड़ा करता है। इसी कारण उपवास द्वारा शरीर को सम्हालना और इष्ट पूजन द्वारा मन को सम्हालना इन व्रत-विधानों का मुख्य रहस्य, उद्देश्य और वैज्ञानिक-आधार है।

व्रतों का वर्णन करके, विवेचन करके अब उनकी महिमा तथा उपयोगिता पर विचार किया जाता है।

विधिपूर्वक प्रतानुष्ठान होने पर शरीर, मन, बुद्धि तीनों का अथवा आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक त्रिविध कल्याण होता है।

(१) व्रतों से आधिभौतिक लाभ

काम, क्रोध, लोभ, मोह की वृत्ति मनुष्यों में स्वाभाविक होने के कारण पाचन शक्ति से अधिक भोजन मनुष्य प्रायः कर लेता है। वही अन्न अपच उपजाता हुआ अनेक प्रकार की व्याधियों का घर बन जाता है।

व्रत के पूर्व दिन, व्रत के बीच में या एकादशी आदि व्रतों में जो उपवास, फलाहार,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लघुआहार या आहार-संयम की विधियाँ हैं, उनसे अनायास ही पाकयन्त्र को विश्राम मिल जाता है तथा अपक्व अन्न पचकर शरीर को स्वस्थ बना देता है।

अनेक भारतीय और विदेशी चिकित्सकों ने भी विभिन्न चिकित्साओं से थककर शारीरिक निरोगिता के लिये उपवास चिकित्सा की ही सबसे अधिक महिमा बताई है।

फिर अनियमित स्वभाव उद्दाम बनकर वे लगाम घोड़े की तरह मनुष्य को विविध प्रकार की विपत्तियों के खड्डे में डाल देता है। व्रत की विधियों में आहार-विहार का ऐसा सुन्दर नियम रख दिया गया है कि उससे उद्दाम प्रवृत्तियाँ स्वयं ही नियन्त्रित हो जाती हैं तथा मनुष्यों को क्रमशः उन्नत बनाकर आध्यात्मिक-पथ में सुप्रवृत कर देती हैं।

(२) व्रतों से आधिदैविक लाभ

नित्य, नैमित्तिक, काम्य सभी व्रतों में ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय और मन का संयम तथा विविध प्रकार तपस्याओं का विधान है।

फिर समस्त संयम या तप निष्काम-भाव से अनुष्ठित होने पर आत्मोन्नति का कारण बनता है और सकाम भाव से अनुष्ठित होने पर विविध विभूतियों को प्रदान करता है यह सर्वविदित है।

आँखों के संयम करने वाले 'दिव्य-नेत्र' बनते हैं, वाक्संयमी, वाकसिद्ध या सुवक्ता बनते हैं।

इस तरह संसार में जितनी प्रकार की दैवी विभूतियाँ देखी जाती हैं, सभी तपस्याओं के फल से उपलब्ध हैं।

अनेक प्रकार की दिव्य औषधियाँ, चिकित्सा, विद्या आदि दैवी-विभूतियाँ—तपस्या के ही बल से प्राप्त होती हैं। जो कुछ दुस्तर, दुष्प्राप्य, दुर्लभ या दुष्कर है—वह सब तपस्या के द्वारा ही सिद्ध होता है।

सुन्दर वस्त्र, अलंकार, विद्या, अधिकार, उत्तम खान-पान सभी कुछ तपोबाल से ही प्राप्त होते हैं। नित्य, नैमित्तिक, काम्य तीनों व्रतों में ही दैवी-विभूति प्रदानकारी ऐसे अनेक तपों के विधान देखने में आते हैं।

देव-पूजा सकाम हो या निष्काम हो, विधिपूर्वक होने से आधिदैविक लाभ बहुत कुछ हो जाता है, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। इष्ट की प्रसन्नता से आधिभौतिक धन-सुखादि प्राप्ति के साथ-साथ आधिदैविक-सिद्धियाँ भी बहुत कुछ मिलती हैं। इष्ट में तन्मयता द्वारा उनकी सर्व शक्तिमत्ता का अंश साधक को अवश्य ही मिल जाता है।

उनके दिव्य गुणों का प्रभाव भी साधक को अति उच्चकोटि का महात्मा बना देता है। भक्त-साधक इष्टदेव के शक्ति-सागर में अवगाहन स्नान करता हुआ शरीर, मन, प्राण, आत्मा सभी को आप्यायित तथा भरपूर बना लेता है।

यही सब व्रतों से आधिदैविक लाभ हैं।

(३) व्रतों से आध्यात्मिक लाभ

हमारे धर्म-ग्रन्थों में व्रतोपवास सम्बन्धी जिन अनुष्ठानों का विधान है, उनसे आत्मा का प्रचुर कल्याण होता है यह तो निर्विवाद है।

बहिरिन्द्रियों और अन्तरिन्द्रियों का संयम, यम नियम ब्रह्मचर्य-सदाचार-सात्विक आहार-बिहार—यह सब व्रत के प्राण हैं। इनके पालन किये बिना व्रत में सफलता कभी हो ही नहीं सकती, साथ ही यही सब अनुष्ठान आध्यात्मिक उन्नति के भी मूलमन्त्र हैं।

जिस प्रकार तपाने पर सोने का मल निकल जाता है, उसी प्रकार तपस्या अग्नि के द्वारा शरीर-मन को तपाने पर उनका मल दूर होकर वे निष्पाप, निर्मल बन जाते हैं तथा निर्मल अन्तःकरण में ही आत्मिक ज्ञान ठहर सकता है।

नित्य, नैमित्तिक, काम्य तीनों व्रतों में ही प्रायश्चित आदि कितने ही शरीर-मन तपाने के विधान हमारे महर्षियों ने किये हैं, जिनके द्वारा अन्तःकरण निर्मल होकर आत्माभास ग्रहण के योग्य हो जाता है।

फिर आहार निवृत्ति से विषय निवृत्ति होती है और विषय निवृत्ति ही मुक्ति का द्वार है।

विषयासक्त मन बन्धन का और विषय शून्य मन मोक्ष का कारण है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्रतों में निराहार, स्वल्पाहार का विशेष विधान है। अतः व्रतों में आहार निवृत्ति द्वारा विषय निवृत्ति करके मुक्तिपथ प्रशस्त करने के उपाय बताये गये हैं— यही सिद्ध होता है।

एकाग्र चित्त से इष्ट ध्यान तथा इष्ट जप करना प्रत्येक व्रत में विशेष रूप से विहित है।

"तत्र प्रत्ययैक तानता ध्यानम्", ध्यानात् प्रत्यक्षमात्मनः" इष्ट में चित्त के एक ज्ञान हो जाने का नाम ध्यान है। उससे आत्मा प्रत्यक्ष हो जाती है।

ध्यान के द्वारा ध्येय में चित्त निविष्ट होता है। अनुराग तथा प्रेम भक्तिपूर्वक निविष्ट चित्त से ध्येय देव का ध्यान करते-करते देवता का दर्शन होता है।

इष्टदेव के दर्शन से समस्त पाप बट जाता है और अन्तःकरण निर्मल होकर स्वरूप में स्थित हो जाता है।

ध्यान के अन्त में ध्याता और ध्येय की एकता होने पर समाधि लग जाती है और समाधि में अन्तःकरण परमात्मा में विलीन हो जाने पर आनन्दमय आत्मा का निरतिशय असीम आनन्द मिलने लगता है।

"सुखमात्यनितकं यत्तद् बुद्धि ग्राह्यमतीन्द्रियम्।
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।"

"वह आसीम आनन्द इन्द्रियों से अतीत, योग बुद्धि से अनुभव करने योग्य है, इसके पाने से सांसारिक कोई भी वस्तु इससे अधिक उत्तम नहीं मालूम पड़ती है।"

यही मनुष्य-जन्म का अन्तिम सर्वोत्तम प्राप्तव्य पदार्थ है। व्रत आध्यात्मिक लाभ में उपासना-परायण व्रती को यही अनोखा लाभ मिलता है। इस प्रकार व्रतानुष्ठान द्वारा आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक, त्रिविध कल्याण प्राप्त होते हैं।

ऊपर वर्णित त्रिविधि कल्याण आदि के अतिरिक्त व्रतों से अनेक प्रकार की जीवनोपयोगी-शिक्षा भी प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ—देवादिदेव महादेव के भण्डारी—कुबेर और गृहिणी—अन्नपूर्णा हैं। किन्तु फिर भी वे भिक्षा ही माँगते रहते हैं। अन्नपूर्णा का अन्न और कुबेर का धन वे विश्व में ही बाँट देने हैं—इसीलिए वे महान् हैं।

महाशिवरात्रि व्रत का उत्सव करते समय हमारे भीतर भी यही महान् भाव आना चाहिये कि सत्पुरुषों की समस्त सम्पत्ति परोपकार के लिये ही होती है।

यही व्रतोत्सव का अपूर्व, अलौकिक तत्व है।

हमारे त्यौहार और पर्व

यह विश्व-प्रकृति, जिससे मानव तथा अन्य समस्त प्राणियों और भौतिक पदार्थों की उत्पत्ति हुई है, एक विशेष नियम से बँधी है। उस नियम के अनुसार ही मानव-प्रकृति का भी विकास हुआ है। इस व्यापक नियम के नियंत्रण में ही हमको दिखलाई पड़ने वाले इस जड़-चैतन्य संसार के सब कार्य चल रहे हैं। इन्हीं नियमों को, जिनके आधार पर यह विश्व-संसार टिका हुआ है, जान लेना और उनके अनुकूल व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन की व्यवस्था करना यही भारतीय संस्कृति और सभ्यता का सार है। यहाँ के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने समाज और व्यक्तियों के लिए जो आचरण और कर्तव्य नियत किये हैं, उन सब में इसी गहन तत्व को दृष्टिगोचर रखा गया है। वे जानते थे कि मनुष्य की समस्त जीवन इन्हीं नियमों की एक शृंखला के रूप में है, इसलिए उसका कोई भी कार्य इनके विपरीत नहीं होना चाहिए। अन्यथा प्रकृति उसे अवश्य दंड देगी। इसलिए उन्होंने हमारे छोटे-बड़े सभी कर्तव्यों और प्रातःकाल से लेकर शयन-काल तक के दैनिक कृत्यों को धर्म का रूप दे दिया, जिन पर आचरण करके ही हम सुख और शांति प्राप्त कर सकते हैं।

जिस प्रकार हिन्दू शास्त्रों में हमारे व्यक्तिगत कृत्यों को धर्म का रूप दिया गया है, उसी प्रकार सामाजिक कार्यों को भी धर्म का अंग बना दिया गया है, जिससे लोग उनके पालन में ढिलाई न करें और उनसे यथोचित प्रेरणा प्राप्त करते रहें। त्यौहार, धार्मिक और सामाजिक उत्सव तथा व्रत आदि का विधान वैसे संसार की सभी जातियों और देशों में पाया जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभी मजहबों के संस्थापकों और आचार्यों ने कुछ ऐसे विशेष दिन नियत कर दिए हैं, जिन पर वे अपने विशेष मनोभावों को प्रकट करने के लिए कुछ विशेष कृत्य करते देखे जाते हैं। दूसरा कारण यह भी है कि अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार मनुष्य सदा एक ही रस में रहना पसंद नहीं करता। अगर वह वर्ष के ३६५ दिन नित्यप्रति के कार्यों और नियमित व्यवसाय या नौकरी आदि में ही लगा रहे तो उसके चित्त में अवश्य उद्विग्रता का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक समझा गया कि उसके बीच-बीच में कभी ऐसा अवसर मिलता रहे, जिससे वह अपने जीवन में कुछ नवीनता तथा आमोद-प्रमोद का अनुभव कर सके और विश्राम भी पा सके।

अन्य समस्त जातियों के त्यौहारों की भाँति उपयुक्त सब उद्देश्य हिन्दू-जाति के त्यौहारों में भी पाए जाते हैं। पर हमारे यहाँ इतनी विशेषता और है कि त्यौहारों को केवल छुट्टी का अथवा धर्माचार्यों की जयंती' आदि का दिन ही न समझकर उससे मनुष्यों की आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक विकास का भी उद्देश्य सिद्ध किया गया है। सच पूछा जाए तो हिन्दू-जाति अपनी प्राचीन सभ्यता और आचार-विचार को इतनी शताब्दियों के परिवर्तन के बाद भी जो अभी तक कायम रख सकी है, इसका बहुत कुछ श्रेय इन त्यौहारों और उत्सवों को ही है। साधारण जनता धर्म के गंभीर उपदेशों को नहीं समझ सकती और न आध्यात्मिक तत्वों पर अमल कर सकती है। उसको शिक्षा देने और सुमार्ग पर चलाने का एकमात्र मार्ग धार्मिक कथा-कहानी श्रवण कराना और मनोरंजन के साथ धार्मिक कृत्यों के करने की विधि बतलाना ही है। यह उद्देश्य त्यौहारों और व्रतोत्सव आदि से ही सुगमतापूर्वक सिद्ध हो सकता है।

त्यौहारों की स्थापना मुख्यः निम्नलिखित उद्देश्यों को लेकर की गई है—

(१) जनता में जागृति, सद्भावना, ऐक्य, संगठन की वृद्धि करना, लोगों को सुसंस्कृत, शिष्ट और सुयोग्य नागरिक बनाना, उनमें सच्ची सामाजिकता की भावना उत्पन्न करना।

(२) किसी विशेष अवसर पर बड़े यज्ञ के लिए। यद्यपि शास्त्रों के मतानुसार 'यज्ञ' शब्द का अर्थ परोपकार के कार्यों के लिए होता है तथापि वैदिक कालीन पर्वों और उत्सवों में यज्ञ का अर्थ बड़े हवन से ही लिया जाता है।

(३) किसी विशेष ऋतु के परिवर्तन या फसल के तैयार होने पर सामाजिक समारोह के रूप में।

(४) सर्वसाधारण के मनोरंजन और हृदयोल्लास-प्रकाश के लिए।

(५) किसी युग-प्रवर्त्तक, महापुरुष, अद्वितीय कर्मवीर, शूरवीर, प्राणवीर, दानवीर, महान् विद्वान, आदर्श प्रतापी की अथवा किसी महान् राष्ट्रीय घटना की स्मृति मनाने के निमित्त।

हमारे तत्ववेत्ता, पूज्यपाद ऋषि-महर्षियों ने ऊपर बतलाए चारों उद्देश्यों के अनुकूल अनेक त्यौहार और पर्व के दिवस नियत कर दिए हैं और उन सब में लौकिक कार्यों के साथ ही धार्मिक तत्वों का ऐसा समावेश कर दिया है कि उनसे हमको अपने जीवन-निर्माण में बड़ी सहायता मिलती है और समाज भी सुमार्ग पर अग्रसर हो सकता है। मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरणीय प्राणी है। दूसरों को कोई शुभ काम करता देखकर उसके मन में भी वैसा ही काम करने की इच्छा स्वतः उत्पन्न होती है। फिर यदि उस शुभ कर्म के करने वाले उसके कुटुम्बीजन अथवा पूर्वज हों तो उस कार्य में उसका अनुराग और भी बढ़ जाता है। यही कारण है कि प्राचीन काल में जिनके कुलों में उत्तम सत्कर्म होते चले आए थे, उनकी संतान भी प्रायः सन्मार्गगामी होती थी। इसके विरुद्ध जिनके पूर्व पुरुष बहुत समय से जघन्य आचार वाले अथवा निंदनीय वृत्ति वाले रहे हों, उनकी संतान का सुधार बड़ी कठिनता से होता था, क्योंकि बालक अधिकांश में अपने बड़ों से ही आचरण सीखते हैं और उसी साँचे में ढलते हैं, जिसमें उनके पूर्व पुरुष ढले होते हैं।

जो बात एक व्यक्ति के सम्बन्ध में कही गई है, वही समाज के सम्बन्ध में भी सत्य है, क्योंकि समाज या जाति व्यक्तियों के समूह का ही नाम है। जिस समाज या जिस जाति में जितनी संख्या भले या बुरे, उन्नतिशील अथवा अवनतिशील लोगों की होगी, वैसी ही वह जाति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बन जायगी। इसीलिए सभ्य जातियाँ अपने महान कार्य करने वाले पूर्व पुरुषों, महात्माओं, प्रतापवान व्यक्तियों को स्मृति को सुरक्षित बनाये रखने के लिए प्राणपण से यत्न करती हैं, जिससे आगामी पीढ़ियों को उनका श्रेष्ठ आदर्श प्रेरणा देता रहे। इस स्मृति को स्थिर रखने और ताजा बनाए रखने के दो उपाय हैं,

एक, ऐतिहासिक ग्रंथों की रचना और उनका पठन-पाठन जिससे बालकों और युवकों के हृदयों में अपने प्रातः स्मरणीय पुरुषों के कीर्ति-कलाप और उच्च आदर्श स्थान बना लेते हैं। दूसरी विधि उन खास तिथियों को, जब उन महापुरुषों के जीवन की कोई महान घटना घटी हो अथवा जिस दिन उनका जन्म हुआ हो, उत्सव अथवा त्यौहार मनाना है। इससे साधारण मनुष्यों को भी उन महापुरुषों के नाम लेने और उनके सम्बन्ध में कुछ चर्चा करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे वे सत्शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं, अपने जीवन को किसी उच्च लक्ष्य की तरफ मोड़ सकते हैं। संसार की सभी सभ्य जातियों में इस प्रकार के स्मारक-दिवस बड़े उत्साह और समारोह के साथ मनाये जाते हैं और किसी जाति की सभ्यता और उच्चता का अनुमान पूर्व पुरुषों के प्रति उसके सम्मान और वीर-पूजा से लगाया जाता है।

जिस जाति के पास ऐसे कोई महापुरुष नहीं हैं, वह बड़ी अभागी है और उन्नति के मार्ग पर उसका अग्रसर होना अत्यन्त कठिन है, क्योंकि जब उसके सामने कोई उच्च आदर्श ही नहीं हो तो किस प्रकार अवनति के गड्ढे से निकलकर उन्नति के शिखर की तरफ अग्रसर हो सकती है ? इसलिए समाजशास्त्र वेत्ताओं ने यहाँ तक कह दिया है कि जिस जाति के पास दुर्भाग्य से उच्च आदर्श के लायक कोई महापुरुष न हो उसे किसी अन्य जाति के महापुरुषों को अपना लेना चाहिए, क्योंकि बिना आदर्श के उत्कर्ष की संभावना बिना जड़-मूल के पौधे के फलने-फूलने की आशा के समान हास्यास्पद है। कहा जाता है कि योरोप में फ्रांस देश इस विषय में अग्रगण्य है और पूर्व पुरुषों के जितने स्मारक तथा स्मृति-दिवस वहाँ पाए जाते हैं उतने और किसी देश में नहीं पाए जाते। जापान वाले तो अपना मुख्य धर्म ही पूर्वजों की पूजा करना मानते हैं और वहाँ जो ११ मुख्य त्यौहार प्रचलित हैं, उनमें से नौ पूर्व पुरुषों के स्मारक दिवस ही हैं।

सौभाग्य से हमारा भारतवर्ष भी इस विषय में किसी अन्य जाति से पीछे नहीं है। एक प्रकार से तो हम कह सकते हैं कि हिन्दुओं के बराबर त्यौहार और पर्व-दिवस संसार की किसी भी जाति में प्रचलित नहीं हैं। यदि यहाँ के सब त्यौहारों, पर्वों तथा व्रतोत्सव आदि की गणना की जाय तो उनकी संख्या इतनी अधिक है कि १ वर्ष के ३६५ दिन में से एक भी दिन ऐसा नहीं मिल सकता, जो किसी न किसी दृष्टि से पवित्र पर्व और विशेष धार्मिक कृत्य से शून्य हो। इसी से यहाँ एक कहावत प्रचलित हो गई है कि—"आठ बार और नौ त्यौहार।"

पर जिस प्रकार वर्तमान काल में हिंदू जाति में एक प्रकार की निर्जीवता आ गई है, वह ऋषि-मुनियों द्वारा निर्धारित जीवन-प्रदायक प्रथाओं को भूलकर सारहीन रूढ़ियों के जाल में ग्रसित हो गई है, उसी प्रकार हमारे त्यौहारों और पर्वों का रूप भी विकृत हो गया है। अब लोग उनके मूल स्वरूप को तो बहुत कुछ भूल गए हैं और उनके स्थान पर उद्देश्यहीन बेढंगी रूढ़ियों को अपनाकर पुरानी लकीर पीटते जा रहे हैं। इतना ही नहीं, कितने ही त्यौहारों पर लाभदायक कृत्यों के बजाय लोग ऐसे काम करने लग गए हैं, जो स्पष्टतः हानिप्रद हैं। उदाहरण के लिए कुछ लोगों ने दिवाली को जुआ खेलने का ही त्यौहार बना डाला है और वे इस अवसर पर एक दिन नहीं, कई दिन तक भयंकर रूप से जुआ खेलते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि अनेक बार बड़ी दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। इसी प्रकार होली पर जबरदस्ती रंग और कीचड़ आदि फेंकने तथा गंदी से गंदी गाली बकने का ही त्यौहार का उद्देश्य समझ लिया जाता है। इसके कारण भी मार-पीट हो जाना और सिर फूटना साधारण बात हो गई है। गत कुछ वर्षों में तो इसके कारण कई स्थानों पर अनेक हत्याएँ भी हो चुकी हैं।

• यों तो समाज में आज ऐसे भी महापुरुष मौजूद हैं, जो पंडित और ज्ञानी होने का दावा करते हुए इन सब कुरीतियों का समर्थन करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं, पर हम त्यौहरों के नाम पर या प्राचीन रूढ़ियों के बहाने किसी ऐसी बात का समर्थन नहीं कर सकते, जिनसे व्यक्तियों और समाज को हानि उठानी पड़े। अधिकांश मनुष्यों की प्रकृति प्राय: अधोगामिनी होती है और उसे जरा भी सहारा या बहाना मिल जाए तो फौरन दुर्व्यसनों की तरफ प्रेरित होती है। यही कारण है कि मनुष्यों को सदैव सत्मार्ग, पुण्य कार्यों का ही उपदेश दिया जाता है। हानिकारक कार्यों, दुर्व्यसनों अथवा गंदे आमोद-प्रमोद के लिए किसी को उपदेश देने की जरूरत नहीं होती, इनके सिखाने वाले (गुरु लोग) तो हर जगह बिना पैसे कोड़ी के स्वयं ही मिल जाते हैं। इसलिए कोई त्यौहार किसी भी उद्देश्य की सिद्धि के लिए क्यों न स्थापित किया गया हैं, अगर उसमें कुछ हानिकारक बातों का समावेश हो गया हो तो उनका त्याग अवश्य करना चाहिए। ये बातें व्यक्तिगत रूप से तो किसी प्रकार सहन करनी भी पड़ती हैं, पर इनको सामाजिक रूप दे देना तो महापाप समझना चाहिए, क्योंकि फिर तो उसका प्रभाव भले-बुरे सभी श्रेणियों के लोगों पर पड़ता है।

त्यौहार और धार्मिक उत्सव जाति के लिए नव-जीवन प्रदान करने वाले स्फूर्ति प्रदायक होते हैं, इसलिए उनका प्रचार बढ़ाना और उनको उत्साह से मनाना तो सभी समाज-हितैषियों का परम कर्तव्य है, पर साथ ही यह ध्यान रखना भी परमावश्यक है कि हम उनके वास्तविक उद्देश्य और रूप को न भूलें। समय के प्रभाव से व्यक्ति और वस्तुओं की तरह संस्थाएँ और प्रथाएँ भी जीर्ण पड़ जाती हैं और उनमें अनेक प्रकार की कमजोरियाँ, दूषण प्रवेश कर जाते हैं। समझदार समाज-नेताओं का कर्तव्य है कि इस तरफ ध्यान देते रहें और जिस प्रकार हम प्रति वर्ष अपने गृहों, वस्तुओं की सफाई, मरम्मत आदि कराते रहते हैं, उसी प्रकार सामाजिक प्रथाओं का भी समयानुकूल संशोधन और परिवर्तन करते रहें। प्रत्येक सामाजिक प्रथा, त्यौहार या उत्सव आदि को अटल-अचल समझ लेना मूर्खों का लक्षण है। हमें इस सम्बन्ध में सबसे पहले यह सूत्र याद कर लेना चाहिए कि 'तमाम प्रथाएँ मनुष्यों के लिए बनाई गई हैं, न कि मनुष्य इन प्रथाओं के लिए।' जो व्यक्ति ऐसा समझते हैं या ऐसा कहते हैं कि ये तमाम त्यौहार और उनकी पद्धतियाँ सदा से ऐसी ही चली आई हैं और सदा ऐसी ही रहनी चाहिए, वे विचारशील कदापि नहीं हो सकते। बुरा न माना जाय तो उनको 'कूप-मंडूक' भी कहा जा सकता है। त्यौहार और सामाजिक उत्सव सदैव कुछ न कुछ बदलते रहते हैं और उनके करने की विधियाँ तो आज भी हर प्रदेश में कुछ न कुछ भिन्न हैं। हजार दो हजार वर्ष की बात तो छोड़ दीजिए, अब से पाँच-सात सौ वर्ष पहले के साहित्य और ऐतिहासिक ग्रंथों की ही भली प्रकार खोज कीजिए तो आपको मालूम पड़ेगा कि उस समय मनाये जाने वाले अनेक त्यौहार आज समाप्त हो गए हैं और कितने ही नए प्रचलित हो गए हैं। इतनी दूर भी जाने की जरूरत नहीं, हम अपनी आयु के भीतर ही विचार करके देखें और पता लगावें तो कितने ही त्यौहार और उत्सव जो हमारी बाल्यावस्था में जोर से मनाए जाते थे, आज बिल्कुल खत्म हो गए हैं या कम पड़ गए हैं। पर खेद है कि जो लोग विचारशीलता से कोई नाता ही नहीं रखते, 'खोज करना' किस चिड़िया का नाम है, यह जानते ही नहीं और जिनकी निगाह अपनी गली से बाहर भी नहीं जाती, वे किसी भी प्रथा के लिए लाखों और करोड़ों वर्ष से कम की बात ही नहीं करते। ऐसे ही लोग समाज को पीछे की तरफ ढकेलने वाले होते हैं।

त्यौहारों और सार्वजनिक उत्सवों की विवेचना में हमारा लक्ष्य यही है कि अपने पूर्व पुरुषों के अनुकरणीय और उज्जवल सत्कार्यों की स्मृति को कायम रखते हुए, हम उनको इस प्रकार मनावें, जिससे वे हमारे लिए ही नहीं, मनुष्यमात्र के लिए कल्याणकारी सिद्ध हों। हमें सदैव उनसे कोई सत्शिक्षा, सत्प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए। हमें उनको ऐसे समयानुकूल ढंग से मनाना चाहिए, जिससे वे हमारी किसी आवश्यकता की पूर्ति करें और त्रुटियों को दूर करें।

एक आवश्यक बात यह भी है कि त्यौहारों की संख्या बहुत बड़ी होना कोई प्रशंसा की बात नहीं है। 'आठ बार और नौ त्यौहार' वाली स्थिति का नतीजा यह होता है कि त्यौहारों का महत्व और विशेषता अनेक अंशों में खत्म हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाती है और लोग उनको भारस्वरूप समझने लगते हैं। जैसा हम आरम्भ में लिख चुके हैं, त्यौहारों का एक बहुत बड़ा उद्देश्य यह है कि मनुष्य बहुत समय तक एक-सा काम करते हुए और एकरस जीवन व्यतीत करते हुए जब ऊब जाता है तो उसकी तबियत को बदलने के लिए, थकावट दूर करके विश्राम पाने के लिए उसके सामने कोई नवीन कार्यक्रम, कोई नवीन आकर्षण उपस्थित किया जाए। यह उद्देश्य तभी सिद्ध हो सकता है, जबकि त्यौहारों का अवसर उचित समय और फासले से आए। अगर हम हर रोज ही त्यौहार और व्रतोत्सव मनाते रहें तो उनका विशेषता कैसे टिक सकती है। फिर तो वे लोगों को समय और धन खर्च कराने वाले एक बोझ की तरह जान पड़ते हैं। इसलिए आवश्यकता है कि हम चाहे दस या बीस कितने भी त्यौहार मनाएँ, पर उनको पूरे उत्साह और व्यवस्था के साथ मनाएँ। तभी उनके मनाने का उद्देश्य पूरा हो सकता है और हमारी दृष्टि में उनकी श्रद्धा और प्रतिष्ठा कायम रह सकती है।

हमने यहाँ मुख्य रूप से अपना लक्ष्य यही रखा है कि पाठक प्रत्येक त्यौहार के वास्तविक रूप को समझकर उसे ऐसे तरीके से मनावें, जो समाज के लिए हितकारी सिद्ध हो। उनको यह समझ लेना चाहिए कि जिस प्रकार हिन्दू-शास्त्रों में बतलाए षोडश या द्वादश संस्कार मनुष्य के व्यक्तिगत चरित्र का निर्माण करके, उसकी उन्नति में सहायक होते हैं, उसी प्रकार ये त्यौहार और पर्वोत्सव आदि सामाजिक विकास और उसके संगठन को सुदृढ़ करने वाले संस्कार हैं। इनका उद्देश्य सदैव समाज का हित होना चाहिए और जो कोई बात इसके विपरीत जान पड़े, उसका धर्म के वास्तविक तत्वों को दृष्टिगोचर रखते हुए संशोधन करना चाहिए।

त्यौहारों के मनाने की विधियाँ हमने बहुत कम स्थलों पर दी हैं, क्योंकि प्रत्येक त्यौहार के अवसर पर यज्ञ (हवन), अध्ययन (शास्त्रों का पठन-पाठन) और दान (सत्पुरुषों और लाभकारी संस्थाओं की सहायता) तो हमारा कर्तव्य ही है। इनके सिवाय जो लौकिक या आमोद-प्रमोद की विधियाँ हैं, वे सभी स्थानों में कुछ न कुछ भिन्न हुआ करती हैं। इसलिए उनको अपने स्थान की प्रथा के अनुसार सुरुचिपूर्ण ढंग से मनाने में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। हाँ, जैसा हम ऊपर बतला चुके हैं, उन सब में सामाजिक हित के मूल सिद्धांतों का ध्यान अवश्य रखा जाए, उसके विपरीत कोई कार्य न किया जाए और जहाँ ऐसी कोई बात दिखलाई पड़े, उसका समझदारी और प्रेमपूर्वक संशोधन कर दिया जाए।

पर्व और त्यौहारों की उपयोगिता

हिन्दू-धर्म में पर्व और धार्मिक त्यौहारों का इतना बाहुल्य है कि उनके लिये जनता में "सात बार और नौ त्यौहार" की कहावत प्रचलित हो गई है। यदि खोज और विचार करके देखा जाय तो इस कहावत में कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है। हिन्दू-धर्म में वास्तव में प्रत्येक तिथि और बार का पर्व माना गया है और उसे मनाने के लिये विशेष धार्मिक विधान भी बतलाया है। इनके सिवाय देवताओं, अवतारों, महापुरुषों की स्मृति अथवा जयन्ती के लिये भी त्यौहार नियत किये गये है। कुछ अन्य पर्व जैसे संक्रांति, ग्रहण, कुम्भ आदि आकाशस्थित ग्रहों के योग्य और उनसे पृथ्वी पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव को दृष्टिगोचर रखकर मनाये जाते हैं।

ये पर्व या त्यौहार किसी भी श्रेणी के क्यों न हों और उनका बाह्यरूप कैसा भी क्यों न हों, उनको स्थापित करने में हमारे पूर्वजों का मुख्य उद्देश्य यही था कि सर्व साधारण में धार्मिकता, सामाजिकता और परोपकार आदि की भावनायें बढ़ें, तथा लोगों की प्रवृत्ति भौतिकता की तरफ से आध्यात्मिकता की ओर हो। भारतीय संस्कृति का एक मुख्य लक्षण अन्तर्मुख होना है। बाहरी चीजें चाहे कितनी भी चमक-दमक वाली और आकर्षण जान पड़ें पर उनके द्वारा आत्मा का विकास नहीं हो सकता, उल्टा वे मनुष्य के विचारों को परमार्थ से स्वार्थ की तरफ प्रेरित करने वाली ही होती हैं इसलिये भारतीय ऋषि-मुनियों ने लोगों को यथाशक्ति अधिक से अधिक समय धार्मिक कृत्यों, धर्मोत्सवों, धार्मिक विधि-विधानों में लगाने की व्यवस्था की है, जिससे वे जीवन के वास्तविक लक्ष्य को याद रखते हुये सन्मार्ग पर स्थिर रहें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म और आध्यात्मिकता के भावों की वृद्धि के साथ ही धार्मिक और सामाजिक त्यौहारों का एक दूसरा बड़ा उद्देश्य सामूहिक की वृद्धि करना भी है। मानव जीवन की सफलता के लिये जहाँ व्यक्तिगत उन्नति और सत्प्रवृत्तियों को ग्रहण करने की आवश्यकता है, वहाँ समाज संगठन का सुदृढ़ बनाना और पारस्परिक सहयोग के द्वारा सामाजिक हित की बड़ी योजनाओं की पूर्ति करना भी अत्यावश्यक है। इसके लिये लोगों में पारस्परिक एकता—भाई चारे की मनोवृत्ति का उत्पन्न होना आवश्यक है। हमारे यहाँ होली, दिवाली, दशहरा और स्नान आदि के जो त्यौहार और पर्व नियत किये गये हैं, उनका विशेष उद्देश्य यही है कि लोग परस्पर प्रेम पूर्वक मिलें और सामूहिकता की भावना को सुदृढ़ बनावें।

जो त्यौहार या उत्सव किसी प्राचीन महापुरुष या अवतार की जयंती के रूप में मनाये जाते हैं, उनका एक बहुत बड़ा लाभ यह होता है कि जनता के उनके द्वारा सच्चरित्रता, नैतिकता, सेवा, सद्भावना आदि की शिक्षा मिलती है। इस प्रकार के उत्सव संसार के सभी देशों में मनाये जाते हैं और इस बात का ध्यान रखा जाता है कि जन साधारण अपने उन महान् पूर्वजों के चरित्रों से उच्च कोटि के सद्गुणों की प्रेरणा प्राप्त करे। वास्तव में जिस जाति के यहाँ ऐसे-ऐसे महापुरुषों का अभाव है, वह उन्नति की आशा नहीं रख सकती क्योंकि साधारण मनुष्य के लिये बिना किसी मार्गदर्शक आवा प्रकाशस्तम्भ के संसार में सफलतापूर्वक अग्रसर हो सकना सम्भव नहीं है। यही कारण है कि उन्नति की कामना रखने वाली जातियाँ अपने पूर्व पुरुषों के चरित्रों और महान् कार्यों का बड़े गौरव के साथ याद करती हैं। उदाहरण के लिये योरोप में फ्रांस और एशिया में जापान का उल्लेख कर सकते हैं। ये दोनों देश अपेक्षाकृत छोटे होने पर भी वीर-पूजा के गुण के कारण ही संसार की राष्ट्र मण्डली में अग्रगण्य बन गये।

उस दृष्टि से जब हम भारतवर्ष की अवस्था पर विचार करते हैं तो यहाँ भी महापुरुषों का कोई अभाव दिखलाई नहीं पड़ता। वरन् सत्य बात तो यह है कि हमारे देश में जितने अधिक आदर्श चरित्र के व्यक्ति हुए हैं, उतने संसार के किसी भी बड़े से बड़े देश में मिल सकना असम्भव है। राम, कृष्ण, बुद्ध आदि ईश्वरीय श्रेणी के महामानवों की बात छोड़ दीजिये, हमारे जितने भी मुनि, ऋषि, नरेश संत आदि हुए वे सभी आदर्श जीवन बिताने वाले महापुरुष थे और उनमें से प्रत्येक का जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है। हिन्दुओं के अधिकांश त्यौहारों का ऐसी ही किसी न किसी दैवी विभूति से सम्बन्ध है और इस कारण वे हमारे लिये हर प्रकार से शिक्षाप्रद और कल्याणकारी मार्ग के प्रदर्शन है।

पर खेद का विषय है कि जिस प्रकार हिन्दू समाज के संगठन में अन्य अनेक प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न हो गई हैं, उसी प्रकार इन पर्वों और त्याहारों के स्वरूप में भी बड़ा अन्तर पड़ गया है। लोग उनके मूल उद्देश्य और वास्तविक नियमों को तो भूल गए हैं और स्वार्थी अथवा अशिक्षित लोगों द्वारा बीच में पैदा की गई रूढ़ियों की लकीर को ही पीट रहे हैं। इतना ही नहीं कितने ही हीन चरित्र के अथवा दुर्व्यसनी लोगों ने तो इन त्यौहारों में अनेकों हानिकारक और गन्दी बातें शामिल कर दी हैं और उनकी निगाह में वे ही सार रूप होती हैं। उदाहरण के लिए अनेक जुएवाज दिवाली की राह बड़े शौक से देखते रहते हैं और उसके आने पर एक दिन, घंटे दो घंटे के लिए नहीं, जितना संभव होता है दस-दस, बीस-बीस दिन तक जुए का बाजार गर्म रखते हैं। इसी प्रकार होली के अवसर पर गुण्डा और बदमाश श्रेणी के लोग तरह-तरह के उपद्रव मचाने और भले आदमियों को तंग करने के मौके ढूँढ़ते रहते हैं। वे जान बूझकर दूसरों की वस्तुओं को नष्ट करते हैं और हर किसी को बेइज्जत करने की कोशिश करते हैं, जहाँ होली सामूहिकता की भावना को बढ़ाने वाला हमारा सब से प्रमुख त्यौहार था, वहाँ ऐसे नीच लोग उसे वैमनस्य और झगड़े फसाद का कारण बना देते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अब समय बदल रहा है और हिन्दू जाति सावधान होकर अपनी त्रुटियों को दूर करके, अपने सगंठन को सुदृढ़ बनाने की कोशिश कर रही है, करने लगती है कि इस सृष्टि में भी सभी सुखी, आरोग्य, शुभ दृष्टि वाले एवं आनन्दमय बनें। उनकी यही अभीप्स संसार में फलवती—चरितार्थ हो इसके लिये उन्होंने भिन्न-भिन्न, सद्गुणों का चयन, दुगुर्णों का परित्याग, संयम, नियम, जप, तप, उपासना, दान, उपकार, सत्कर्मों के विधान रचे। पर ये बाह्य कर्म विधानों के रूप— एक ही लक्ष्य स्थान पर जाने वाले विविधि पंथों की भाँति कभी एक नहीं हो सकते। इसके अतिरिक्त व्यक्तियों और समुदायों की मनोवृत्ति तथा रुचि में देश, काल और पात्र के कारण जो भेद रहता है, उसके अनुसार भी विभिन्न प्रकार के मार्गों की आवश्यकता पड़ती है। इसीलिये भिन्न-भिन्न ऋषियों द्वारा एक ही काल, देश एवं मात्र के लिये भिन्न-भिन्न विधान रचे गये। परिस्थिति की परिवर्तित स्थिति के अनुसार उन विधानों के स्वरूपों की विविधता बढ़ती ही गयी, पर लक्ष्य एकता के कारण इन विविध विधानों को एक दूसरे के विरोध में कभी खड़ा नहीं किया गया। जब कभी मन-बुद्धि की सीमितता, अज्ञानता और खण्डित—अपूर्ण दृष्टि के कारण व्यापक-विस्तृत विरोध हुआ, उसी समय किसी ऋषि के प्रगटीकरण द्वारा उसे प्रेम, ज्ञान, अनुभूति और सामञ्जस्य से दूर किया गया—समाधानपूर्वक अज्ञान के अन्धकार का नाश हुआ।

भारतीयों की इसी आस्था, श्रद्धा, विश्वास एवं निष्ठा के कारण ही भारतीय संस्कृति अनेकों बाह्य रूप परिवर्तनों के बीच बहती हुई भी अपनी अखण्डता-अजस्रता-निरन्तरता संरक्षित रखे रही साथ ही सदा समय-समय पर आवश्यक परिमार्जन होते रहने के कारंण कोई कालिमा-कलंक और कोई इसमें नहीं लगने पाई और न आज भी उस में कोई धूमिलता का लवलेश वहाँ टिकने पाया है—भले ही यह कहा जा सकता है कि आज उसके लक्ष्य के अनुसार आचरण करने वालों की संख्या में भारी कमी आ गयी है, पर व्यक्तिगत रूप से ही नहीं सामाजिक रूप से भी उसका स्वरूप अव्याहत और अक्षुण्ण रहा है। इसीलिये इस संस्कृति और धर्म को सनातन कहा जाता है।

भारत की आध्यात्मिकता में ही भारतीय संस्कृति का निवास है यही भारतीयता है, इसीलिये ही भारतीय संस्कृति एकमात्र आध्यात्मिक, अति मानसिक—अतिबौद्धिक संस्कृति है। जिस प्रकार परमात्मा सृष्टि के सभी प्राणियों के कल्याण का विधान करता हुआ सृष्टि, रक्षा और संहार करता है—उसी भाँति भारतीय संस्कृति भी सदा सद्गुणों की सृष्टि, उनका संरक्षण एवं कल्याण विरोधी दुष्ट तत्वों के विनाश की व्यवस्था करती है। वस्तुतः यह मानवीय, विश्वव्यापी एवं सर्वलोक हितकारिणी संस्कृति है। जो उसका अपनी अज्ञानता के कारण विरोध करता है, उसका भी कल्याण करने की ही यह संस्कृति सोचती और मार्ग बताती है।

अभी तक मनुष्य ही इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ या सर्वाधिक विकसित प्राणी है। इससे इतर सभी प्राणियों की अपेक्षा मनस्तत्व (मन-बुद्धि) का उन्नत विकास इसी में आकर हुआ है। पर मन-बुद्धि का स्वभाव ही है। सभी वस्तुओं का विश्लेषण करना, सभी को अलग-अलग करके देखना, एक दूसरे के विरोध में खड़ा करना, समष्टि रूप से भी अनुकूल और प्रतिकूल की भिन्न-भिन्न श्रेणियाँ बनाना आदि-आदि। यदि इसके द्वारा कहीं संगठन-एकता मिलन कराये भी जाते हैं तो उसका अन्तर भेद ज्यों-का-त्यों अविचल रखा जाता है। इसका एक श्रेष्ठतर नाम रखा गया है। "आत्म स्वातन्त्रय"। यह वैयक्तिक स्वतन्त्रता का संरक्षण एवं पोषण करते हुए आत्म स्वार्थ (अपने आपके सुख स्वार्थ) में आकर परिणत हो जाता है। यदि यह उदार भाव से अपना विस्तार भी करता है तो कभी अनन्तता—असीम विस्तार की ओर—जो अध्यात्म दृष्टि की गति है, पग नहीं बढ़ाता, क्योंकि ऐसा करने से उसकी भेदवादी वृत्ति नष्ट होती है। भेदवादी दृष्टि को खोना—उसे नष्ट होने जाने देने में वह अज्ञानता से अपना ही अस्तित्व विनाश होता हुआ देखता है। अपना अस्तित्व नष्ट होने देना कौन पसन्द करता है ? अतः इसी भय के कारण वह विस्तार में जाते हुए कहीं अटककर अपनी सीमा बना लेता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है और इस सीमा से बाहर के व्यक्तियों, समूहों और दलों को यदि अपना विरोधी नहीं तो पराया बना लेता है और यही कारण है कि (आत्म चेतनाहीन) बुद्धिवादी संस्कृति, चाहे वह सुख, वैभव ऐश्वर्य, सौंदर्य कला एवं विज्ञान में कितनी ही उन्नति क्यों न प्राप्त कर ले, आध्यात्मिक (भारतीय) संस्कृति की विरोधिनी होती है।

बुद्धिवादी संस्कृति और दर्शन वैयक्तिक सत्ता के विलय (अहं तत्व के विनाश) को सदा भय की दृष्टि से देखते हैं। लगता है कि इसके बिना तो जीवन, जीवन ही नहीं रह सकता। पर भारतीय संस्कृति ने इसी के द्वारा जो खोज पाया है—उपलब्ध किया है, वही इसे अमर बनाता है। व्यक्ति सत्ता को विकसित कर समष्टिरूप होना, मन-बुद्धि के व्यापार को शान्त कर अखण्ड में प्रवेश पाना, भारतीय संस्कृति का भावात्मक आदर्श है। बुद्धि जिसकी कल्पना करने में असमर्थ है, फिर उसकी प्राप्ति करने-कराने की बात ही नहीं—इस आदर्श को कोरी भावुकता, कहकर उपेक्षा या मजाक कर सकती है—और इसे असम्भव कहकर मानव जीवन को इसके लिये खपाना व्यर्थ बना सकती है, फिर भी भारतीय संस्कृति से भेदकर अपनी दिव्यता समय-समय पर उद्‌भासित करती रही है।

पर्व आयोजनों द्वारा सामाजिक सुसंस्कारिता

व्यक्ति को इंगित करते हुए समूचे परिवार को सत्परम्परा से अवगत, सहमत और अभ्यस्त बनाने के लिए संस्कार आयोजनों का अपना महत्त्व है। इस आधार पर घर-घर में युग धर्म के अनुरूप प्रकाश पहुँचाने का अवसर मिलता है।

ठीक इसी प्रकार समाज को सामूहिक रूप से सुसंस्कृत बनाने के लिए पर्व त्यौहारों का अपना महत्त्व है। यों वे अपने यहाँ घरेलू उत्सव के रूप में मनाये जाते हैं। पक्वान्न बना लेने, साफ कपड़े पहन लेने, महिलाओं द्वारा मंगल गीत गाये जाने, जिस-तिस देवता की थोड़ी बहुत पूजी-पत्री कर लेने भर से लकीर पिट जाती है। यह भी देखा जाता है कि त्यौहार के लिए लोग घरों पर रहते हैं। कुटुम्बी, सम्बन्धी परस्पर मिल लेने, मिल बैठकर खा-पी लेने जैसा कुछ उपक्रम भी पूरा कर लेते हैं। उस दिन सामूहिक रूप से एकत्रित होने और महत्वपूर्ण विचार विनिमय करने का प्रचलन प्रायः समाप्त हो चला है। समाज को सुगठित और सुसंस्कृत बनाने में इन दिनों पर्वों द्वारा कुछ विशेष प्रेरणा नहीं मिल पाती। इस प्रकार यह पुण्य परिपाटी अपने उद्देश्य से एक प्रकार से भटक ही गयी है।

वस्तुतः पर्व, त्यौहारों का प्रचलन इसलिए हुआ था कि उसके माध्यम से समूचे समाज में सुसंस्कारिता और सत्प्रवृति संवर्धन का कार्य निरन्तर चलता रहे। थोड़े-थोड़े समय बाद ऐसे आयोजन होते रहें और उपेक्षा को उत्साह में परिणत होने का अवसर मिलता रहे। अब तो वे निजी हर्षोत्सव के रूप में सीमित होकर रह गये हैं। मात्र होली ही एक ऐसा पर्व रह गया है, जिस पर रंग गुलाल उड़ाने, होलिका दहन में इकट्ठा होने तथा दूसरे दिन एक-दूसरों के घरों पर मिलने जाने की चिन्ह पूजा किसी प्रकार निभ जाती है। इस शिथिलता को दूर करने की आवश्यकता है और उन महान परम्पराओं की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है, जिनमें सामूहिक सुसंस्कारिता विकसित करने के प्रेरणाप्रद तत्त्व गहराई तक घुले-मिले हैं।

आयोजन मनाने के लिए प्रातःकाल का या सूर्यास्त उपरान्त का समय अधिकांश लोगों के अनुकूल पड़ता है। इसलिए जहाँ जो त्यौहार प्रचलित हों, वहाँ उन्हें मनाने के लिए अधिकांश लोगों को एकत्रित करना चाहिए। गीत वाद्य तो हर्षोत्सव मनाने का सर्वविदित एवं सर्वसुलभ उपचार है ही, उनका प्रबन्ध भी आसानी से हो सकता है। ध्यान इतना ही रखने का है इन दिनों कुरुचिपूर्ण फिल्मी स्तर के संगीतों का जो प्रचार चल पड़ा है, उसे निरस्त करके ऐसा गायन-वादन प्रचलित किया जाय, जो व्यक्ति और समाज को उद्देश्यपूर्ण प्रेरणाएँ दे सकें। इसके लिए जगह-जगह संगीत शिक्षा की छोटी-बड़ी पाठशालाएँ चलनी चाहिए। उपयोगी संगीत की पुस्तकें भी उनमें उपलब्ध रहनी चाहिए। संस्कारों और पर्वों के अवसरों पर इसकी आवश्यकता पड़ेगी। संगीत क्षेत्र में इन दिनों जो पतनोन्मुख सन्दर्भ घुस पड़े हैं, उन्हें हटाने और उनके स्थान पर नये लोकोपयोगी संदर्भ जोड़ने के लिए संगीत का कायाकल्प होना चाहिए। इसलिए छोटी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संगीत पाठशालाओं की अत्यधिक आवश्यकता है। देहाती क्षेत्रों में बिखरे हुए, उच्च शिक्षा से वंचित ग्रामीण समुदाय के लिए स्थानीय भाषाओं में गढ़ा गया संगीत जितना प्रेरणाप्रद सिद्ध होता है, उतना और कोई नहीं। इसलिए संगीत प्रक्रिया को अधिक परिष्कृत एवं अधिक अभ्यस्त किए जाने की आवश्यकता सर्वत्र समझी और उसकी पूर्ति भी की जानी चाहिए।

पिछले दिनों देहाती मेले प्रायः त्यौहारों के दिन ही होते रहे हैं। अब उनका स्वरूप सम्मेलनों का नहीं रहा। वे भीड़ मनोरंजन और खरीद-बिक्री तक सीमित रह गये हैं। जहाँ संभव हो, वहाँ बड़े न सही छोटे मेलों की व्यवस्था प्रमुख त्यौहारों के अवसर पर की जानी चाहिए। इसके अनुरूप ही लोगों में उस समारोह को देखने की उत्सुकता जगती है और जो लोग प्रायः घरों से नहीं निकलते, उनमें भी उन्हें देखने के लिए जा पहुँचने की उमंगें उठती हैं। बड़े मेले तो बड़े प्रयत्न और व्यवस्था के साथ ही बन पड़ते हैं, पर छोटे मेले थोड़े मनोरंजन माध्यमों, खेलों प्रदर्शनियों के साथ गीत वाद्य, अभिनय आदि का समावेश कर देने भर से आसानी से आयोजित किये जा सकते हैं।

एक क्षेत्र में एक-एक त्यौहार पर अलग-अलग तिथियों में मेले नियोजित किये जा सकें, तो यह प्रयत्न हर क्षेत्र को जागृत करने में आसाधारण रूप से सहायक सिद्ध हो सकता है। आवश्यकता केवल इसी बात की है कि उसका नियोजन इतनी बुद्धिमत्तापूर्वक किया जाय, जिसमें लोक-रंजन के साथ-साथ लोक मंगल भी अविच्छिन्न रूप से जुड़ा रहे। उसमें दीख पड़ने वाले सभी कार्यक्रम प्रदर्शनी स्तर के हों और उनसे हर किसी को अपने-अपने ढंग की कल्याणकारी प्रेरणा मिल सके। इस प्रकार के मेले हर क्षेत्र में थोड़े-थोड़े समय बाद होते रहे, तो मनोरंजन की वह आवश्यकता भी पूरी होती रहेगी, जिसके लिए लोगें का मन मचलता रहता है। इसी निमित्त तीर्थयात्रा आदि के बहाने लोग खर्चीली एवं कष्ट साध्य यात्राएँ करते हैं और कुछ पाकर नहीं, खोकर ही वापिस लौटते हैं। समीपवर्ती क्षेत्र यदि मेला परम्परा के आधार पर आपस में जुड़ने लगें, जो उस सघन परिचय का परिणाम सब के लिए, सब प्रकार श्रेयस्कर ही होगा। एक-एक पर्व एक-एक जगह मनाया जाने लगे, तो सभी स्थानों के निवासियों को समान रूप से लाभ मिलेगा। एक ही पर्व के लिए सब स्थान आग्रह करने लगे, तो उस विभाजन से अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति न हो सकेगी।

जहाँ मेला योजना सम्भव नहीं, वहाँ संगीत को प्रधानता देते हुए पर्व आयोजनों की व्यवस्था करनी चाहिए। उसमें जो श्रद्धालु धर्म कृत्यों में भी सम्मिलित हो सकें, उन्हें दीपयज्ञ स्तर का कार्यक्रम अपनाने और प्रस्तुत पर्व संबंधी व्याख्यान, विवेचन, प्रवचन प्रचलनों का लाभ मिलना चाहिए।

पर्व, त्यौहार समस्त भारत में एक समान नहीं मनाये जाते हैं। क्षेत्रों की भाषा-भाषियों की, सम्प्रदायों की अपनी-अपनी परम्पराएँ हैं। उनका उपक्रम यथावत् चलते रहने पर भी, इतना तो होना ही चाहिए कि उस आयोजन के साथ जुड़े हुए सिद्धान्तों-प्रेरणाओं की जानकारी प्राप्त करने और उन्हें अपनाने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त करने का अवसर मिलता रहे। इस देश का कोई भी त्यौहार ऐसा नहीं है, जिसमें कुछ न कुछ महत्त्वपूर्ण प्रेरणाएँ समाहित न हों। यहाँ देश में मनाये जाने वाले समस्त पर्वों का विवेचन और उनकी प्ररेणाओं का उल्लेख संभव नहीं। परिजन, इस आन्दोलन को गतिशील बनाने वाले तथ्य स्वयं ही ढूँढ़ निकालें और तदनुरूप उपस्थिति जनों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देने का प्रयत्न कर। इतना तो हर जगह होना ही चाहिए कि हर पर्व पर धार्मिक समारोह सम्पन्न हों और उस आधार पर सामूहिक चेतना को उत्कृष्टता की दिशा में कुछ कदम बढ़ाने का अवसर मिले।

प्रेरक प्रसंगों का प्रवाह उभारा जाय

किस पर्व को किन-किन प्रेरणाओं के साथ समन्वय किया जाय, यह कोई पूर्व निर्धारित सुनिश्चित क्रम तो है नहीं, इसे सूझ-बूझ के आधार पर ही ढूँढ़ा और समझाया जा सकता है। जैसे--दीपावली लक्ष्मी पूजन प्रधान है। उस दिन किये जाने वाले समारोह में वैयक्तिक एवं सामूहिक अर्थ व्यवस्था के किसी महत्वपूर्ण पक्ष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का विवेचन और मार्गदर्शन किया जा सकता है। विषय बदलना है तो उस पर्व के साथ विवेक के देवता गणेश भी जुड़े हुए हैं। दूरदर्शी विवेकशीलता की व्याख्या उस आधार पर हो सकती है। दूसरे दिन गोवर्धन पूजा होती है। उसके साथ गौ संवर्धन एवं गोबर का सदुपयोग जुड़ता है। दीवाली के तीसरे दिन 'भैया दूज' होती है, उसमे नारी मात्र को भगिनी, पुत्री, माता समझे जाने की परम्परा पर प्रकाश डाला जा सकता है। दीवाली से दो दिन पूर्व धनवंतरि त्रयोदशी होती है, उसमें स्वास्थ्य संवर्धन एवं रोग निवारण के आवश्यक तथ्य जुड़े हैं। इस समूचे प्रेरणा समूह को दीवाली के दिन ही सूझ-बूझ के साथ प्रशिक्षण का केन्द्र बनाया जा सकता है। दीपक छोटे आकार के होते हुए भी मिलजुल कर, सूर्य-चन्द्र के अभाव वाली कार्तिक अमावस्या की सघन तमिस्रा को मिटा सकने में समर्थ हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त दीवाली के साथ कुछ पौराणिक इतिहास भी जुड़े हुए हैं। नरकासुर वध का वह दिन है। अपने भीतर और इर्द-गिर्द फैले हुए नारकीय वातावरण से निपटा जाय। उस दिन राम अयोध्या लौटे थे और राम राज्य स्थापना की घोषणा हुई थी, जनता ने दीप प्रज्ज्वलन करके हर्षोल्लास मनाया था। दीपावली को ही महावीर, दयानन्द, रामतीर्थ ने शरीर छोड़ा था। उनके जीवन से जुड़ी हुई महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर भी प्रकाश डाला जा सकता है।

होली के साथ भी कितने ही तथ्य जुड़े हुए हैं। यह नवान्न यज्ञ है। नई फसल आने पर, नई कमाई का आधार बनने पर, पहले उसका एक बड़ा अंश परमार्थ रूप यज्ञ के लिए निकाला जाय, बाद में उसका उपयोग किया जाय, यह भारतीय परम्परा रही है। होली उसी यज्ञ प्रक्रिया का एक प्रकार है। पतझड़ में अक्सर जहाँ-तहाँ कूड़ा-कचरा जमा हो जाता है। उसे जलाकर सफाई करना भी होली का प्रयोजन है। सामूहिक श्रम से गली-मुहल्ले की सफाई हँसते-खेलते करना भी एक कारण है। जीवन में हर्षोल्लास के लिए समुचित स्थान मिले, यह होली का संकेत है। पौराणिक कथा में प्रह्लाद की अग्नि से रक्षा होना भी सचाई की विजय की ओर इंगित करता है। दूसरों का अहित चाहने वाले अपनी करनी से आप मरते हैं। यह दुर्दशा प्रह्लाद की बुआ की हुई थी। यह भी जन साधारण को समझाये जाने योग्य है।

ज्येष्ठ की दशमी गंगा दशहरा कहलाती है। भगीरथ द्वारा गंगावतरण के लिए तप स्तर का प्रयास किया जाना और उसका सफल होना, हर किसी के लिए प्रेरणाप्रद है। तपस्वी को दैवी सहायता अयाचित रूप से मिलती है। यह गंगावतरण में शिवजी की भूमिका से स्पष्ट है। उसी दिन आद्यशक्ति गायत्री का भी अवतरण हुआ था, वह भी सुविस्तृत तद् विषयक विवेचना का एक बड़ा विषय है। लोग उस दिन प्याऊ लगाने जैसा प्रबंध करते हैं, जिसका तात्पर्य है कि सार्वजनिक जल-संसाधनों की ओर भी उदारता भरे प्रयास होने चाहिए। कुँए, तालाब आदि बनने चाहिए।

आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा अनुशासन, संयम, नियमन एवं प्रशिक्षण जैसी प्रवृत्तियों को अधिक सुदृढ़ परिपक्व करने की प्रेरणा से भरा-पूरा पर्व है।

श्रावणी हरीतिमा संवर्धन के लिए वैयक्तिक एवं सामूहिक प्रयत्नों का पर्व है। वर्षा के दिनों में यह कार्य अधिक सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकता है। श्रावणी अमावस्या, हरियाली तीज से लेकर श्रावणी पूर्णिमा तक का एक पखवारा हरीतिमा संवर्धन से जुड़ा हुआ पर्व माना जाता है। इन दिनों अधिकाधिक वृक्ष लगाये जायें। रक्षाबंधन का अर्थ आन्तरिक और सीमा सम्बन्धित सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए चौकस होना है। उस दिन यज्ञोपवीत बदलने का भी दिन है। सामूहिक रूप में सभी उसे अपनायें और इस प्रतीक के साथ जुड़े हुए नौ सद्गुणों की जीवनचर्या में जोड़े। वर्षभर में बन पड़े कुकर्मों का प्रायश्चित्य भी उस दिन होता है और जो भूलें बन पड़ी हैं, उनके परिमार्जन का व्रत लिया जाता है।

आश्विन का पितृ पक्ष दिवंगत पितरों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने, उनके उपकारों का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करने की अवधि है। इन दिनों ऐसे पुण्य कर्म भी किये जाते हैं, जिनका प्रतिफल पूर्वजों को मिले। इन पुण्य प्रयासों से अपनी आत्मा भी आंशिक ऋणमुक्ति का लाभ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त करती और हलकापन अनुभव करती है। इस बहाने लोक हित के कई उपयोगी कार्य भी बन पड़ते हैं जिनका साधारणतया स्मरण नहीं रहता।

आश्विन नवरात्रि का अन्तिम दिन दशहरा है। इस अवसर पर खेल, व्यायाम, शस्त्र संचालन, स्वास्थ्य, संवर्धन के प्रयोजन का वातावरण बनाया जाता है। देवताओं की सामूहिक शक्ति से दुर्गावतरण इसी दिन हुआ था और उस आधार असुरता पर विजय पायी गयी थी। रावण वध भी उसी दिन हुआ था। इन सब प्रकरणों के साथ संगति बिठाते हुए दशहरा पर्व स्थानीय प्रचलनों को जोड़ते हुए मनाया जाता है। इन दिनों कहीं-कहीं पशुबलि जैसा अनर्थ भी करने की प्रथा चल पड़ी है, उसे रोका जाना चाहिए।

कृष्ण जयन्ती भाद्र कृष्ण अष्टमी को, गणेश चतुर्थी भाद्र शुक्ल चतुर्थी को, गीता जयन्ती मार्गशीर्ष सुदी एकादशी को, सरस्वती जयन्ती बसन्त पंचमी को, शिवरात्रि फाल्गुन वदी त्रयोदशी को, राम जयन्ती चैत्र सुदी नवमी को, हनुमान जयन्ती चैत्र पूर्णिमा को मनायी जाती हैं। इसी प्रकार मकर संक्रांति, वैशाखी, अक्षय-तृतीया, हरतालिका आदि का प्रचलन उन सम्प्रदायों में तथा क्षेत्र विशेषों में, अपने-अपने ढंग से मनाया जाता है। अपनी परम्परा में वर्ष का हर दिन एक न एक त्यौहार है। उन सभी को सभी जगह मनाया जाना सम्भव नहीं। पर जहाँ जिस त्यौहार का प्रचलन है, में उन्हें सम्मिलित करें तो यह एक आम लाभदायक परम्परा, वहाँ उसमें जुड़ गई कुरीतियों को हटाते हुए, सुधरे हुए, विवेक सम्मत तरीके से, उन्हें मनाने के लिए सामूहिक प्रयत्न किये जाने चाहिए और उनके साथ जुड़े हुए तथ्य एवं इतिहास ढूँढ़ निकालने चाहिए। सामूहिक आयोजन में एकत्रित हुए लोगों को इन इतिहासों और उद्देश्यों से परिचित कराते हुए यह बताना चाहिए कि व्यक्ति और समाज के सर्वतोमुखी उत्कर्ष में इन अवसरों पर, किस प्रकार जन मानस को आन्दोलित किया जा सकता है। उसे प्रगतिशीलता की दिशा में अग्रसर करने के लिए क्या कुछ किया जा सकता है।

घरों की सफाई, पुताई, वस्त्रों की धुलाई, अतिरिक्त भोजन की रसोई मिल बैठकर खाने-खिलाने का प्रीति भोज, रोशनी, गायन-वादन, मान्य देवताओं की पूजा जैसे कृत्य घरों पर तो किसी न किसी प्रकार होते ही हैं। इनमें अधिक उत्साह, कलात्मकता एवम् सामूहिक लोक शिक्षण को भी जोड़े जाने के लिए नये सिरे से नये प्रयत्न करने चाहिए। जहाँ अभिनय, नाटक, प्रहसन आदि के कुछ कलात्मक कार्यक्रम जुड़ सकें, वहाँ उन्हें भी जोड़ने का प्रयत्न करना चाहिए। लोक रंजन और लोक मंगल का, लोक शिक्षण का प्रयोजन हमारे हर पर्व-संस्कार के साथ जुड़ना चाहिए।

पुराने पर्वों के अतिरिक्त अब कुछ नये पर्व भी जुड़ गये हैं। १५ अगस्त, २६ जनवरी, गांधी जयन्ती जैसे पर्व राष्ट्रीय बन गये हैं। ऐतिहासिक महापुरुषों की जयन्तियाँ भी हर्षोल्लास के साथ मनायी जाने लगी हैं। तिलक जयन्ती, रविदास, जयन्ती, नानक जयन्ती, कबीर जयन्ती आदि पर्वो को भी वर्ग विशेष का न मानकर सामूहिक, सार्वजनिक उत्सवों में सम्मिलित करना चाहिए।

अपने देश में मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, पारसी आदि भी रहते हैं। उनके उत्सवों में भी हिन्दू सम्मिलित हों और अपने आयोजनों में सम्मिलित करें तो यह एक आम लाभदायक परम्परा होगी। युग निर्माण अभियान के अन्तर्गत अब तक के प्रयोगों द्वारा यह अनुभव किया गया है, कि यदि धार्मिक कर्मकाण्डों के पीछे सन्निहित आध्यात्मिक प्रेरणाओं को ठीक प्रकार उभारा जा सके, तो अन्य सम्प्रदायों से सम्बद्ध व्यक्ति भी उसमें पर्याप्त रुचि लेते हैं।

मनुष्य में आमतौर से शिथिलता, निराशा, उपेक्षा, थकान, एकाकीपन जैसी अनेक विकृतियाँ उत्पन्न होती रहती हैं। उन्हें निरस्त करने में, उत्साह, उल्लास एवम् उमंग उत्पन्न करने में, पर्वो की असाधारण भूमिका हो सकती है। जहाँ संभव हो, वहाँ प्रचार प्रयत्नों को भी अपने ढंग से सम्मिलित किया जाये। प्रदर्शनियाँ लगायी जायें। सामूहिक समारोह तो निश्चय ही सम्पन्न किये जायें। जहाँ बड़े रूप में कुछ बन पड़ते न दिखाई पड़े, वहाँ प्रभावशाली लोग अपने परिचित क्षेत्र के लोगों को एकत्रित कर, अपने यहाँ, या किसी सार्वजनिक स्थान पर, अपनी सुविधानुसार इन्हें सम्पन्न कर लिया करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्वों को पुनर्जीवित करने में, सामाजिक सुसंकारिता का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य समाहित है। वैयक्तिक-पारिवारिक क्षेत्र में जो उद्देश्य संस्कार मनाये जाने की परिपाटी से सिद्ध होता है ! सामूहिक सुसंस्कारिता संवर्धन में उसी उद्देश्य की सिद्धी, पर्व त्यौहारों की भूमिका द्वारा होती है। दोनों प्रयोजनों को समान महत्ता देते हुए इन प्रचलनों को गतिशील बनाकर व्यक्ति और समाज को समग्र प्रगतिशीलता की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

सामूहिकता की आवश्यकता

भारतीय संस्कृति का उद्देश्य व्यक्ति को और उसके द्वारा समाज को धर्मपरायण एवं कर्त्तव्यनिष्ठ बनाना है। ये ही दो बातें किसी भी मनुष्य को सुसंस्कृत कहलाने का अधिकार देती हैं। इसलिये हमारी प्राचीन संस्कृति के सभी आदर्श और विधि-विधान ऐसे रखे गये हैं कि उनके द्वारा मनुष्य की भौतिक उन्नति होने के साथ-साथ मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी उसका उत्थान हो।

हिन्दू-समाज में प्रचलित जात कर्म, यज्ञोपवीत, विवाह आदि से लेकर अन्त्येष्टि क्रिया तक जो सोलह संस्कार प्रचलित हैं, उनका मुख्य उद्देश्य यही है कि उनके द्वारा संस्कार किये जाने वाले व्यक्ति पर और दर्शकों पर भी कल्याणकारी प्रभाव पड़े। इन संस्कारों में प्रयोग किये जाने वाले वैदिक मन्त्रों में एक विशेष प्रकार की सूक्ष्मशक्ति पाई जाती है और शिक्षाएँ भी उच्च कोटि की दी गई हैं। उनसे लोगों पर बहुत उत्तम मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ सकता है बशर्ते कि संस्कारों को उनका आशय समझकर उपयुक्त ढङ्ग से किया जाय। जिस समय हमारे समाज में उनका वास्तविक रूप में प्रचार था और ज्ञानी ऋषि-मुनियों द्वारा वे शास्त्री विधान से प्रयुक्त किये जाते थे, उसी काल में ऐसे व्यक्ति उत्पन्न हुये हैं। जिनका नाम व यश सहस्त्रों वर्ष बीत जाने पर अभी तक स्थिर है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि मनुष्य के चरित्र-निर्माण और मनोभूमि को सुसंस्कृत बनाने के लिये ये संस्कार भारतीय संस्कृति की महान् देन है।

इन संस्कारों के महत्व और लाभों को देखते हुये हमारा कर्त्तव्य है कि उनमें समयानुकूल थोड़ा-बहुत परिवर्तन करके, उनका अपने घरों में प्रचार करें। यदि समस्त संस्कारों का करना कठिन जान पड़े तो भी जन्मोत्सव तथा यज्ञोपवीत संस्कार तो अच्छे रूप में मनाना ही चाहिये। इनमें सबसे पहली बात इनको सामूहिक रूप देने की है। यज्ञोपवीत संस्कार को तो यदि बड़े-बड़े यज्ञों के अवसर पर सामूहिक रूप से किया जाय तो समाज का बड़ा उपकार हो सकता है। वर्तमान समय में इस संस्कार को बड़ा खर्चीला बना दिया गया है, जिससे अधिकांश व्यक्तियों ने उसका करना ही बन्द कर दिया है और बहुत से विवाह के समय ही उसकी रस्म भी नाम मात्र को पूरी कर देते हैं। इसलिये आजकल इस संस्कार को यदि बड़े-बड़े यज्ञों के अवसर पर सामूहिक रूप से किया जाय तो सब तरह लाभ ही है। इन यज्ञों में सब प्रकार की व्यवस्था, योग्य आचार्य, उत्सव की तैयारियाँ पहले से ही होती हैं। उस समय यज्ञोपवीत पूर्णतः शास्त्रानुकूल रीति से हो सकता है और इतने बड़े जन-समुदाय के समक्ष प्रतिष्ठित व्यक्तियों के हाथ से ग्रहण करने के कारण उसका महत्व भी हृदय पर अंकित हो जाता है। यज्ञोपवीत की यह व्यवस्था लाभदायक ही नहीं वरन् वर्तमान परिस्थिति को देखते हुये हम तो इसे अनिवार्य ही मानते हैं। यदि इसे नहीं अपनाया जायेगा तो धन तथा श्रद्धा दोनों के अभाव से कुछ समय में इसका चिन्ह भी शेष न रहेगा।

इसी प्रकार जन्म दिन का जन्मोत्सव संस्कार भी कम से कम खर्च में सामूहिक हवन करके या केवल सत्सङ्ग करके ही अवश्य करना चाहिये। इसमें मुख्य बात तो वे शिक्षायें हैं, जो इस अवसर पर विद्वान् और अनुभवीजनों से प्राप्त होती है। इन सब अवसरों पर सामूहिकता का ध्यान अवश्य रखना चाहिये, क्योंकि कलियुग में इसी का सर्वाधिक महत्व है। सामूहिक कार्यक्रमों से पारस्परिक प्रेमभाव, आत्मीयता एवं सङ्गठन शक्ति की वृद्धि होती है और अनेकों कठिन समस्याएँ स्वयमेव हल हो जाती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिस प्रकार व्यक्तिगत जीवन के उत्थान और निर्माण के लिये संस्कारों की रचना की गई है, उसी प्रकार समस्त समाज का सङ्गठित और सुसंस्कृत बनाने के लिए हमारे पूर्वजों न विभिन्न त्यौहारों की स्थापना की थी। इनमें से प्रत्येक त्यौहार के भीतर एक विशेष आदर्श निहित है, जिससे व्यक्ति को समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व की शिक्षा मिलती है। यह एक प्रत्यक्ष बात है कि केवल लिखने-पढ़ने या उपदेश देने से मनुष्य पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है, पर बड़े-बड़े प्रदर्शनों और उत्सवों द्वारा उसे ये उपयोगी शिक्षाएँ सहज ही में दी जा सकती हैं। फिर हमारे देश में तो अभी पढ़े-लिखे व्यक्तियों की संख्या ही नाम मात्र को है। खासकर ग्रामीण जनता तो अब भी अधिकांश में निरक्षर ही है। इसलिये प्राचीन काल के महापुरुषों और सच्ची देवियों के चरित्रों का स्मरण कराने वाले त्यौहारों का आदर्श रूप में मनाना समाज के लिये सब प्रकार से हितकारी है।

पर इसके लिये सबसे पहली बात यह है कि समय के प्रभाव से त्यौहारों के मनाने में जो हानिकारक रूढ़ियाँ घुस गई हैं और उनका जो विकृत रूप हो गया है, उसका सुधार अवश्य करना चाहिये। उदाहरण के लिए होली हमारे यहाँ का सबसे बड़ा सामूहिक त्यौहार है और समाज के सङ्गठन का उससे बढ़कर दूसरा अवसर मिल नहीं सकता। पर धीरे-धीरे लोगों ने उसको ऐसा बिगाड़ दिया है और इतनी अधिक गन्दगी उसमें भर दी है, कि ज्यादातर भले आदमी तो उसमें भाग लेना तो दूर उस दिन घर से बाहर निकलना भी पसन्द नहीं करते। वह एक प्रकार से हुल्लड़बाजों और आवारा ढङ्ग के लोगों का उत्सव बन गया है। इसी प्रकार दिवाली में भी जुआ खेलने की ऐसी परिपाटी चला दी है कि उससे हजारों व्यक्तियों का सर्वनाश हो जाता है। जो त्यौहार इतने अधिक नहीं बिगड़े हैं, वे भी केवल चिन्ह-पूजा के रूप में रह गये हैं और उनका उद्देश्य पकवान, मिष्ठान बनाकर खा लेना और कोई छोटा-मोटा कर्मकाण्ड कर लेना ही रह गया है यह स्थिति वास्तव में बड़ी निराशाजनक है। जिस देश या जाति के प्रेरणा-दायक सामाजिक उत्सव और त्यौहार शिक्षित और विकृत हो जाते हैं, वहाँ का समाज भी दुर्बल हो जाता है।

हमारा हर एक संस्कार और त्यौहार व्रतोत्सव, पर्व आदि एक सार्वजनिक सामूहिक सम्मेलन का रूप धारण करके समाज के लिये हितकारी सिद्ध हो सकता है। उसका मुख्य उद्देश्य जनता में नैतिकता और सच्चरित्रता के भावों का उत्पन्न करना ही होना चाहिये। इससे हमारे सांस्कृतिक पुनरुत्थान में भी काफी सहायता मिल सकती है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का उदय

सुखद पारिवारिक जीवन के लिए उत्सव तथा त्यौहार बड़े उपयोगी हैं। इनके द्वारा अनेक लाभ हैं—(१) अच्छा मनोरंजन होता है। इसमें सम्मिलित रूप से समस्त परिवार के व्यक्ति सम्मिलित हो सकते हैं। अभिनय, गान, कीर्तन, पठन-पाठन, स्वाध्याय इत्यादि साथ-साथ करने से सबमें भ्रातृभाव का संचार होता है। (२) समता का प्रचार त्यौहारों में हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति सामूहिक रूप से उन्हें सफल बनाने का उद्योग करता है। (३) पुराने सांसारिक एवं आध्यात्मिक गौरव की स्मृति पुनः हरी हो जाती है। यदि हम गहराई से विचार करें, तो हमें प्रतीत होगा कि प्रत्येक त्यौहार का कुछ गुप्त आध्यात्यि अर्थ है। हिन्दू उत्सव एवं त्यौहारों में समता, सहानुभूति तथा पारिस्परिक संगठन की पवित्र भावना निहित है। इन गुणों का विकास होता है। (४) आध्यात्मिक उन्नति का अवसर हमें इन्हीं त्यौहारों द्वारा प्राप्त होता है। हमारे प्रत्येक उपवास, मौनव्रत, समारोह का अभिप्राय सब परिवार में प्रेम, ईमानदारी, सत्यता, उदारता, दया' श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के भाव उत्पन्न होते हैं। ये सब आत्मा के स्वभाविक गुण हैं। यही मनुष्य की स्थायी शक्तियाँ हैं।

ये उत्सव तथा त्यौहार केवल रस्म अदायगी बाह्य दर्शन या झूठी दिखावा मात्र न बनें प्रत्युत पारिवारिक भावना, संगठन, एकता, समता और प्रेम की भावना के विकास में सहायक हों। पारिवारिक जीवन का विकास करने के लिए हमें कटुता और विषमता की भावना त्यागनी होगी, स्नेह सरिता प्रवाहित करनी होगी और सहानुभूति का सूर्य उदय करना होगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्सव तथा त्योहारों में हम सबकी एक ही स्थान पर एकत्रित होने का अवसर प्राप्त हो जाता है, हम मिलजुल कर परस्पर विचार विनिमय कर सकते हैं, एक ही विषय पर सोच विचार कर अपनी समस्याओं का हल सोच सकते हैं। परस्पर साथ रहने से हम एक दूसरे के गुण-दोषों की ओर भी संकेत कर सकते हैं। ये वे अवसर हैं जो पारिवारिक भेदभाव भुला कर पुनः स्नेह सहानुभूति में आबद्ध करते हैं। बड़े उत्साह से हमें इन्हें मानना चाहिए।

पर्व त्यौहारों की उद्देश्यपूर्ण परम्परा

पर्व त्यौहारों की जितनी भरमार हिन्दू धर्म में है उतनी और कहीं किसी में नहीं। कारण यह है कि यह अनेकान्त समुच्चय है। अनेक संस्कृतियों और परम्पराओं का इसमें समन्वय हुआ है। कभी भारतीय संस्कृति विश्वव्यापी थी। यहाँ के देव मानव संसार भर को अपना परिवार मानते थे और सुदूर क्षेत्रों में जाकर भी सर्वतोमुखी अभ्युदय के निमित्त अनवरत प्रयत्न करते थे। इसके लिए उन्हें परिव्राजकों की तरह भ्रमणशील रहना पड़ता था।

बिखराव को एकात्मकता में बाँधने के लिए उन्होंने एक क्षेत्र की महान् घटनाओं, महान परम्पराओं को दूसरे क्षेत्रों में अवगत-प्रचलित कराने के लिए प्रयत्न किये, जिससे सीमित संकीर्णता की परिधि टूटे और व्यापकता का भाव बढ़े। यही कारण है कि चित्र-विचित्र देवी-देवताओं और प्रथा-प्रचलनों का संग्रहालय भारतीय धर्म बन गया। पर्व त्यौहारों के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है। उनमें विभिन्न क्षेत्रों और जातियों की मान्यताओं का समावेश देखा जा सकता है।

वर्ष में ३६० या ३६५ दिन होते हैं, पर अपने हिन्दू समाज में पर्व त्यौहारों की संख्या ४५० के करीब है। इन सभी को मनाना उन्हीं के लिए सम्भव है जिन्हें रोटी कमाने की चिन्ता या और किसी प्रकार की जिम्मेदारी न हो। जो हर रोज एक दो पर्व मनाया करें ऐसा व्यक्ति कोई अतिशय भावुक एवं कुबेर भण्डारी जैसा धनाध्यक्ष ही हो सकता है। साधारण व्यक्ति के लिए इन सब को अपनाना, मनाना सम्भव नहीं हो सकता।

अन्य प्रमुख धर्मों में थोड़े-थोड़े ही पर्व होते हैं। जो होते हैं उनके पीछे कोई प्रेरणा, परम्परा, शिक्षा या उमंग होती है। इसलिए उन्हें मनाया भी भावनापूर्वक जाता है। उनका स्मरण भी रखा जाता है कि उनके साथ जुड़े हुए संदेशों को भी हृदयंगम किया कराया जाता है। यह सब तभी बन पड़ता है, जब उनकी संख्या सीमित हो और मनाये जाने के पीछे कोई भाव भरा उद्देश्य हो।

अपने त्यौहारों में देवताओं की छुट-पुट पूजा-पत्री एवं खान-पान में पकवान मिष्ठान्नों का समावेश इतना भर ही प्रचलन है। जब-तब जहाँ-तहाँ मेले ठेले भी होते हैं और नदी सरोवरों के स्थान देवालयों के दर्शन भी सम्मिलित रहते हैं। आशा की जाती है कि इससे अमुक देवता प्रसन्न होंगे। रक्षा करेंगे, संकट टालेंगे और मनोकामना पूर्ति में सहायता देंगे। एक कारण पूर्व परम्पराओं का निर्वाह भी है चूँकि पूर्वज वैसा करते आये हैं इसलिए वंशजों को भी वह लकीरें पीटनी चाहिए। ऐसे ही कुछ कारण मस्तिष्क में रहते हैं। विभिन्न जाति-वंश भी कुछ पर्वों के लिए अपने लिए विशेष रूप से निर्धारण मानते हैं। अन्य लोगों के न करने पर भी अपनी कुल परम्परा निबाहते हैं।

उपेक्षापूर्वक उदास मन से किसी प्रकार चिन्ह पूजा कर लेने से समय का अपव्यय ही होता है। साथ ही श्रम तथा पैसे की हानि भी। इस प्रकार कुछ टंट-घंट कर लेने को न अपना मन करता है, न किसी अन्य के मन में श्रद्धा उत्पन्न होती है। अन्धविश्वास की मनःस्थिति में किसी प्रकार कुछ कर लेने से किस प्रकार किसी का कुछ भला हो सकता है। इस स्थिति के कारण, पर्व उपहास का कारण ही बनते हैं।

प्राचीन काल में प्रत्येक पर्व त्यौहार के पीछे कुछ प्रेरणाओं का समावेश था। जुड़े हुए आदर्शों के प्रति आन्तरिक उत्साह उभारा जाता था इसके लिए सामूहिक आयोजन होते थे। मिल-जुलकर एक स्थान पर एक उद्देश्य के लिए एकत्रित हुआ जाय और एक पद्धति का क्रिया-कृत्य सम्पन्न किया जाय तो उससे परम्परा मैत्री भी बढ़ती है और सहकृत्य से उत्साह भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बढ़ता है। पर वह होना इतने अन्तर से चाहिए कि बीच के दिनों में नवीनता के लिए उमंग उठने लगे। आये दिन का ढकोसला तो द्वन्द्व उत्पन्न करता है।

प्रचलित पर्वो में कुछेक ही महत्वपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण है। उनको अलग से छाँट लिया जाय। व्यस्तता और महँगाई के दिनों में उतना ही अपनाया जाना चाहिए, जो आवश्यक हो। इस कटौती किफायतशारी के समय में संतानोत्पादन तक में रोकथाम की जा रही है और खर्चीले उत्पादन में कटौती करने की सलाह दी जा रही है। ऐसी दशा में यदि पर्वो में से आवश्यक अनावश्यक की काट-छाँट की जाय जो वह उचित ही होगा। जिन्हें मनाया जाय उनके सम्बन्ध में यह विचारा जाय कि इन्हें किस पद्धति के साथ मनाया जाय और सन्निहित प्रेरणा को किस प्रकार उभारा जाय ?

राष्ट्रीय पर्वों में १५ अगस्त, २६ जनवरी तिलक जयन्ती, गान्धी जयन्ती आदि का महत्व माना जाता है। सम्प्रदायों के जन्मदाताओं की जयंती भी कुछ अर्थ रखती है। सामाजिक पर्वों में होली दिवाली, दशहरा, श्रावणी आदि का महत्व है। अध्यात्म पर्वों में बसन्त पंचमी, गीता जयन्ती, गुरु पूर्णिमा श्रावणी की महिमा है। पारिवारिक त्यौहरों में भाई दौज, दाम्पत्य चतुर्थी, श्राद्ध-अमावस्या शरद् पूर्णिमा आदि के अपने-अपने इतिहास और संदेश है। जिनकी रुचि प्रकृति परम्परा जिनके लिए उत्साह उत्पन्न करती है, वे उन्हें मना सकते हैं। पर इतना आवश्यक है कि जो भी किया जाय, मिलजुल कर किया जाय। मात्र पकवानें बनाने का, पूजा पत्री की चिन्ह पूजा करके बात को समाप्त न किया जाय। सामूहिक आयोजन हर्षोत्सवों के रूप में सामूहिक रूप से मनाये जा सकते हैं। इतना न बन पड़े तो परिवार पड़ौसों के सदस्यों को एकत्रित करके छोटे सहभोज और उस दिन के साथ जुड़े संदेश का स्मरण किया जाय। इससे सद्भाव बढ़ता है और मनोमालिन्य के जमा हुए कचरे को बुहारने का अवसर मिलता है।

जन्मदिन, विवाहदिन, दीक्षादिन आदि मानवी गरिमा का स्मरण दिलाने वाले दिनों को छोटे बड़े जैसे भी तौर-तरीके से उन्हें मनाया जाय, इतना अवश्य स्मरण किया जाय कि इनके साथ ही क्या दायित्व कंधें पर लदे हैं, उनकी पूर्ति के लिए जो आवश्यक था वह किया गया है क्या ? यदि बन पड़ा है तो कितना ? कमी रही है तो कितनी ? इस समीक्षा के साथ यह भी होना चाहिए कि भविष्य में उन दायित्वों को अधिक तत्परतापूर्वक निभाया जाये।

भारतीय धर्म में जयन्तियों की भरमार है। महामानवों देवजनों के जन्मोत्सव ही मनाये जाते हैं। समझा जाता है कि आत्मा अमर है। साथ ही उन दिव्यात्मा का यश शरीर भी विद्यमान है। उनकी गौरव-गरिमा का अनुकरण तथा अभिनन्दन सदा होता रहेगा। आदर्शवादी व्यक्तित्वों का शरीर न रहने पर भी उनकी मृत्यु नहीं होती। अतएव उनका मरण दिन नहीं स्मरण रखा जाता है और न उस दिन किसी प्रकार का आयोजन होता है।

पारिवारिक सम्बन्धियों के श्राद्ध होते हैं, इसका तात्पर्य पूर्वजों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करना है। इसमें एक उद्देश्य उनके ऋणों से उऋण होना भी है। जो चले गये उन्हें अब न तो ढूँढ़ा जा सकता है और न कृतज्ञता अथवा श्रद्धाञ्जलि स्वीकार करने के लिए वापस बुलाया जा सकता है। संभव श्राद्ध यही हो सकता है कि जिन सत्प्रवृत्तियों से प्रभावित होकर वे हमारी सेवा सहायता करते रहे, उनको शाश्वत मानकर अधिकाधिक बढ़ाने के लिए जो सम्भव हो प्रयत्न करते रहा जाय। बड़ों का वात्सल्य, समवर्ग की मैत्री छोटों की आत्मीयता भरी भाव श्रद्धा यह सभी उस सदाशयता के प्रतीक हैं, जिनसे प्रेरित, प्रभावित होकर व्यक्ति कौटुम्बिकता के स्नेह सौजन्य में बँधता है। यदि सत्प्रवृतियाँ कुछ जीवित कर्म दिवंगत व्यक्तियों के साथ पारस्परिक सम्बन्ध बनाकर ही समाप्त न हो जायँ वरन् उनका व्यापक विस्तार जन-जन में हो इसी की चेष्टा होती रहनी चाहिए। श्राद्ध यही हो सकता है कि सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन में अपना योगदान सम्मिलित किया जाय। जो अपनी उपयोगिता गँवा बैठे उन पर्वों में कटौती की जानी चाहिए। और जिनकी उपयोगिता प्रेरणा अभी भी यथावत् बनी हुई है, उन्हें अपेक्षाकृत और अच्छी तरह मनाया जाय। कुछ लोग कुछ पर्व किसी प्रकार मनालें इसकी अपेक्षा अच्छा है कि उन्हें सार्वजनिक उत्कर्ष की प्रेरणा प्रद माध्यम बनाया जाये। पर्वों की मानवी गरिमा का संदेशवाहक बनकर नये सिरे से निखारना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्व आयोजनों का उद्देश्य और स्वरूप

व्यक्ति और परिवार को अपने कर्तव्यों का स्मरण कराते रहने के लिए समय-समय पर संस्कारों का आयोजन किया जाता है। मनुष्य परमार्थ प्रयोजनों में भुलक्कड़ रहता है। स्वार्थ और लिप्सा की बातें तो हर घड़ी सामने रहती हैं। पर जीवनोद्देश्य पूरे करने वाले आदर्शों को वह बार-बार भूलता रहता है। इसलिए उसे याद दिलाते रहने की आवश्यकता पड़ती है। धर्मानुष्ठानों की यही प्रयोजन है।

वैयक्तिक तप, साधना, संध्या, भजन पूजा, पाठ व्रत उपवास, देव-दर्शन तीर्थ-यात्रा, स्वाध्याय, सत्संग, दान पुण्य आदि की यही प्रयोजन है। व्यक्तिगत जीवन में धर्म-कर्त्तव्यों का निरन्तर स्मरण बनाये रहने और जीवन लक्ष्य के विस्मरण से बचने के लिए यह साधनात्मक प्रक्रिया प्रचलित की गई है।

परिवार में भी कर्त्तव्य और उत्तरदायित्वों की जंजीरों से बँधा रहे तो ही उसमें सौजन्य उल्लास रहता है अन्यथा पशु-पक्षियों की तरह बहुत छोटे बालकों का मोह तथा वासनात्मक आवश्यकता ही उसे कच्चे धागे से जोड़े रहती है। वे धागे जहाँ शिथिल होने लगे वहाँ परिवार बिखरने लगता है। भारतीय समाज की अनुपम देन संयुक्त परिवार प्रणाली सुस्थिर और सुविकसित बनी रहे। परिवार संस्था का लाभ उस समुदाय के हर सदस्य को उत्साहवर्धक मात्रा में मिलता रहे, इसके लिए यह नितान्त आवश्यक है कि परिवार का हर सदस्य अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व को समझे, तथा अधिकारों को दूसरों की सुविधा पर निछावर करता रहे। सामाजिक प्रगति और सुख-शान्ति की भी यही आचार संहिता है। जिसका पारिवारिक जीवन की प्रयोगशाला में अभ्यास करना पड़ता है। यह सब कैसे हो ? उसके लिए क्या सोचा और क्या किया जाना चाहिए ? इसे बार-बार समझना पड़ता है। यही संस्कार प्रक्रिया है। साधारण वातावरण में कही-सुनी, समझी-समझाई बात आमतौर से उपेक्षित ही पड़ी रहती है। पर उसे भावनात्मक वातावरण में सामूहिक आयोजन के साथ हृदयंगम कराया जाय तो प्रभाव गहरा और चिरस्थायी पड़ता है। दूरदर्शी ऋषियों के षोडस संस्कारों का प्रचलन इसी दृष्टि से किया था।

व्यक्ति और परिवार के बाद विश्व की तीसरी इकाई है, समाज। व्यक्तिगत दृष्टिकोण परिष्कार करने के लिए पूजा उपासना—पारिवारिक रीति-नीति को उत्कृष्ट बनाये रखने के लिए संस्कार प्रक्रिया है। ठीक इसी प्रकार समाज को समुन्नत और सुविकसित बनाने के लिए सामूहिकता ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, नागरिकता—परमार्थ परायणता, देशभक्ति, लोकमंगल जैसी सत्प्रवृत्तियाँ विकसित करनी पड़ती है। उन्हें सुस्थिर रखना होता है। यह भी बार-बार स्मरण दिलाते रहने वाला प्रसंग हैं। इस प्रयोजन के लिए पर्व त्यौहार मनाये जाते हैं। इन्हें सामाजिक संस्कार प्रक्रिया ही समझना चाहिए। साधना से व्यक्तित्व-संस्कारों से परिवार और पर्वों से समाज का स्तर ऊँचा बनाने की पद्धति दूरदर्शिता पूर्ण है। इसे हजारों लाखों वर्षों तक आजमाया जाता रहा है। प्राचीन भारत की महानता का श्रेय इन छोटी दीखने वाली किन्तु प्रवृत्तियों में प्रखरता उत्पन्न करने वाली धर्म के नाम पर प्रचलित विधि व्यवस्थाओं को ही है।

विश्व का आध्यात्मिक नेतृत्व भारत करेगा यह एक सुनिश्चित तथ्य है। इस उत्तरदायित्व को वहन करने के लिए उसे अपनी आत्मा जगानी पड़ेगी। यह जागरण मात्र लेखनी वाणी से ही सम्पन्न न हो सकेगा वरन् इसमें धार्मिक आध्यात्मिक, उन क्रिया कलापों को भी सम्मिश्रित करना पड़ेगा, जो परोक्ष रूप से व्यक्ति परिवार और समाज को देव-भूमिका में पहुँचाने और स्वर्गीय वातावरण का सृजन करने से सर्वथा समर्थ है। उपरोक्त त्रिविध क्रिया कलाप को उपरोक्त, संस्कार एवं पर्व प्रक्रिया को—प्राचीन भारत की तरह अब पुनः प्रचलित किया जाना है, ताकि भूले हुए आदर्शों और कर्तव्यों को हर क्षेत्र में भली प्रकार स्वीकार शिरोधार्य किया जा सके। नव-निर्माण के लिए धर्म तंत्र की वह क्रिया पद्धति कितनी महत्वपूर्ण सिद्ध होगी, इसे कल हर कोई प्रत्यक्ष देखेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्वों की रचना इसी दृष्टि से हुई है कि प्राचीन काल की महान घटनाओं एवं महान् प्रेरणाओं का प्रकाश जन मानस में भावनात्मक एवं सामूहिक वातावरण के साथ उत्पन्न किया जाय। इसके लिए कितने ही पर्व त्यौहार प्रचलित हैं। उनमें से देश काल पात्र के अनुसार जब जहाँ जिनको प्रधानता देने की आवश्यकता समझी जाती है। उन्हें प्रधान और शेष को गौण कर लिया जाता। एक ही क्षेत्र में, एक ही काल में प्रचलित सैकड़ों पर्वों का मनाया जाना संभव नहीं, उनमें से स्थिति के अनुरूप कुछ को ही चुनना पड़ता है।

आज की स्थिति में पर्व आयोजनों की संख्या सीमित ही रखा जानी चाहिए। बहुत जल्दी-अल्दी किये जाने वाले आयोजन भार लगते हैं। उनका आकर्षण चला जाता है। बहुत देर में देरी आये तो भूलने की बात बढ़ जाती है। इसलिए साधारणतया दो महीने के अन्तर से उन्हें रखा जाय तो ठीक है।

यों होली और दिवाली हिन्दुओं के दो बड़े पर्व हैं। इन्हें सही ढंग से मनाया जा सके, तो इन दो से ही अन्य तब पर्वों की आवश्यकता पूरी हो सकती है। पर वर्तमान ढर्रे को देखकर तथा पिछले दिनों के अनुभव के आधार पर यह मानना पड़ा है कि लोग इन दो पर्वों पर अत्यधिक व्यस्त रहते हैं और प्रचलित रीतिरिवाजों में इतने ज्यादा खोये रहते हैं कि उनका किसी सामूहिक आयोजन से सम्मिलित हो सकना कठिन हो जाता है। यों जहाँ वे भी प्रेरणाप्रद पद्धति से मनाये जा सकें, अवश्य प्रयत्न किया जाय। अन्यथा घरों में व्यक्तिगत रूप से तो कुछ ऐसा विधि विधान जोड़कर रखा ही जाय, जिससे परिवार के लोग उस पर्व का महत्त्व समझ सकें और कुछ प्रेरणा ग्रहण कर सकें।

दो-दो महिने के अन्तर में छः पर्व तलाश करने पर (१) बसन्त पर्व—माघ शुक्ल पंचमी, (२) राम नवमी—चैत्र शुक्ल नवमी, (३) गङ्गादशहरा गायत्री जयन्ती—ज्येष्ठ शुक्ल दशमी (४) श्रावणी—सावन शुक्ल पूर्णिमा (५) विजया दशमी—आश्विन शुक्ल दशमी। (६) गीता जयन्ती—मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी। यह पर्व ठहरते हैं। यदि दो-दो महीने, में निकट मालूम पड़ते हों और ऋतु सुविधा एवं पर्वों की प्रचलित गरिमा को देखना हो तो इन छः में से तीन को अनिवार्य एवं तीन को आवश्यक वर्ग में रखा जा सकता है। यों मनाये जाने योग्य छः ही हैं पर सुविधा की दृष्टि से तीन को पूरे समारोह के साथ मनाये जाने और तीन को साधारण क्रिया कलाप के साथ सम्पन्न करने के लिये रखा जा सकता है। अनिवार्य वर्ग में (१) वसन्त पंचमी, (२) गायत्री जयन्ती, (३) विजय दशमी के शक्ति पर्वों को रखा जा सकता है। आवश्यक वर्ग में (१) राम नवमी, (२) श्रावणी, (३) गीता जयन्ती रह सकते हैं। भगवान राम का प्रतिनिधित्व राम नवमी करती है और कृष्ण का गीता जयन्ती। शिखा और सूत्र का—ऋषि परम्परा का—धर्म और संस्कृति के स्रोत उद्गम का समझने का पर्व श्रावणी है।

आयोजनों की विधि व्यवस्था में बहुत अधिक उलट-पुलट न हो, उनका स्वरूप एक जैसा बना रहे। हर एक में थोड़ा-थोड़ा ही अन्तर करना पड़े इस बात का संस्कारों और पर्वों की पद्धतियों में पहले से ही ध्यान में रखा गया है। भिन्न-भिन्न प्रकार के कर्मकाण्डों को धर्म व्यवसायी तो करते रह सकते हैं। पर जब किसी प्रक्रिया को जन-आन्दोलन का रूप देना हो, और उसे सर्व साधारण को व्यवहार में उतारना हो तो आवश्यक है कि पद्धतियाँ ऐसी हों जिनमें समानता रहे, और विधि विधान बहुत लम्बा, समय साध्य, झंझट भरा तथा खर्चीला न हो। अपनी प्रवृत्तियाँ शास्त्रीय परम्परा की रक्षा करते हुये इसी दृष्टि से सरल, सुबोध किन्तु प्रेरणाओं की परिपूर्णता को ध्यान में रखते हुये विनिर्मित की गई है।

गायत्री यज्ञ प्रत्येक धर्मानुष्ठान का प्राण है। यह विशेष आयोजनों के रूप से भी किया जाता है। संस्कारों में उसी की प्रधानता है और पर्वों में भी। जिसे यज्ञ करना आ गया समझना चाहिये, उसने तीन चौथाई प्रक्रिया सीख ली। एक चौथाई में ही भिन्नतायें सीमित हैं।

संस्कारों में रक्षा विधान के बाद और अग्नि स्थापना के पूर्व जो कुछ अतिरिक्त क्रिया कृत्य हो वह कर लिया जाता है। शेष यज्ञ विधि ही प्रधान रहती है। पर्वों में इतना भर विशेष है कि पर्व प्रधान अधिष्ठाता का प्रतीक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चित्र स्थापित करके उसका पुरुष-सूक्त में षोड़शोपचार पूजन कर लिया जाय। एकत्रित लोग आरम्भ में १५ मिनट सामूहिक गायत्री जप कर लें और अन्त में थोड़ा कीर्तन करना लिया जाय। हर्ष और प्रसन्नता के प्रतीक दीपक यज्ञशाला पर—शाखा कार्यालय पर अथवा प्रवचन मञ्च के निकट जलाये जाय। संक्षेप में—(१) पर्व के अधिष्ठाता का पूजन, (२) सामूहिक जप, (३) कीर्तन, (४) दीपदान इन्हें विशेष उपचार कह सकते हैं। यज्ञ तो प्रधान हैं ही। सबेरे प्रभात फेरी और सायंकाल प्रवचनों की व्यवस्था विशेष रूप से रखी जाये। इतना किया जा सके तो समझना चाहिये पर्व मनाने की प्रक्रिया पूरी हो गई।

पर्वों के अधिष्ठाता प्रतीक देवताओं के चित्र शाखाओं को पहले से ही तैयार रखने चाहिये। (१) बसंत पंचमी के लिये—सरस्वती (२) रामनवमी के लिये—भगवान राम, (३) गायत्री जयन्ती के लिये गायत्री माता, (४) श्रावणी के लिये-विष्णु की कमल नाभि में से निकलते पुष्प पर विराजमान ब्रह्मा, (५) विजयादशमी—दुर्गा, (६) गीता जयन्ती—अर्जुन को गीता का उपदेश देते हुये कृष्ण। यह छहों चित्र सर्वथा मिल जाते हैं। इन्हें बड़े साइज में लेकर शीशे में मढ़ा देना चाहिये।

होली दीवाली भी यदि मनायी जा सके तो दिवाली पर लक्ष्मी और होली पर नृसिंह भगवान द्वारा प्रहलाद के उद्धार का चित्र लेना चाहिये। इसी प्रकार अन्य उत्सव मनाने हों तो शिवरात्रि पर शिव का, हनुमान जयन्ती पर हनुमान का, गुरु पूर्णिमा पर महर्षि व्यास का, जन्माष्टमी पर कृष्ण का, चित्र लगाया जा सकता है। प्रथा स्त्री देवताओं की श्री सूक्त से और पुरुष देवताओं का पुरुष सूक्त से षोडशोपचार पूजन करने की रही है। पर विवेक यह कहता है कि भगवान एक है, नर-नारी मान्यता कल्पना भर है वे या तो दोनों हैं या दोनों में से एक भी नहीं। उनके विराट् रूप का प्रतिपादन पुरुष सूक्त में भली प्रकार हुआ है, उसकी व्याख्या की जाये तो भी भगवान की प्रतिमा यह विराट् विश्व ही प्रतिपादित किया जा सकता है। अस्तु प्रत्येक पर्व पर सभी पुरुष सभी स्त्री-पुरुष देवता के लिये पुरुष सूक्त से ही पूजन का विधान पर्याप्त समझा गया है। अधिक मन्त्र याद करने का झंझट घटाने की दृष्टि से भी यही उपयुक्त है।

एक सुसज्जित मण्डप झाँकी के रूप से अधिष्ठाता देवता की झाँकी के लिये किसी चौकी या तख्त पर सुसज्जित करके बना लेना चाहिये। उपस्थित लोगों का एक प्रतिनिधि पूजा विधान करता रहे। शेष सब लोग मन्त्रोच्चार करें। अन्त में पुष्पाञ्जलि भी सभी लोग चढ़ावें। यज्ञ कार्यों में भी यही तरीका है। हवन पर नौ प्रतिनिधि बिठा दिये जायें। कन्यायें हों तो सर्वोत्तम। अन्यथा अधिक श्रद्धालु लोगों को प्राथमिकता दी जाये। शेष उपस्थित लोग मन्त्र बोलें। पूर्णाहुति की आहुति दें। भस्म धारण, घृत अवघ्राण आदि में भाग लें। हर व्यक्ति आहुति दें तो। इसमें समय और धन दोनों ही बहुत खर्च होते हैं। इसे बचाकर उसे ज्ञान यज्ञ में लगाना चाहिये।

पर्व आयोजन के लिये प्रभात फेरी यज्ञ प्रवचन का समय स्थान नियत करके, उनके लिये आवश्यक उपकरण एवं अर्थ व्यवस्था बनाने में लग जाना चाहिये। आयोजन मण्डपों को जितना अधिक आकर्षक, सुसज्जित सुरुचिपूर्ण बनाया जा सकता हो उसके लिये सूझ-बूझ, श्रम सहयोग एवं साधनों का पूरा-पूरा उपयोग करना चाहिये। अन्यमनस्क रूप में भौंड़ी, फुहड़ी, अधूरी व्यवस्था बनाने से कार्यकर्त्ताओं के अनुत्साह, आलस, उपेक्षा एवं अनुत्तरदायित्व का ही विज्ञापन होता है। हमारा हर काम पूरा उत्साह, मनोयोग एवं कलात्मक सूझ-बूझ से भरा पूरा होना चाहिये।

जन सहयोग एकत्रित करना और आयोजनों में अधिकाधिक उपस्थिति के लिये प्रयत्न करना कार्यकर्त्ताओं का आवश्यक कर्त्तव्य है। पर्चों, पोस्टर लाउडस्पीकर का ऐलान आमतौर से अब तक यही तरीके काम में आते रहे हैं। हमें दो तरीके और भी काम में लाने चाहिये। (१) घर-घर जाकर सम्पर्क करना, उपस्थित होने का अनुरोध करना—समय से कुछ ही पहले फिर स्मरण दिलाने और बुलाने के लिये लोगों के पास जाना। (२) नगर के प्रमुख बाजारों में चौराहों पर सड़क के बीचों बीच कपड़े के बोर्ड लगाना। जनता को अधिक संख्या में बुलाने से ही लोक-शिक्षण का प्रयोजन पूरा होता है, अस्तु उसके लिये समुचित ध्यान दिया ही जाना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्वों को प्रेरणाप्रद पद्धति से मनाया जाय

व्यक्ति और परिवार के बीच कर्त्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों की शृंखला को व्यवस्थित रखने की दृष्टि से संस्कार आयोजनों की परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ। ठीक उसी तरह व्यक्ति और समाज के बीच कर्तव्य पालन का क्रम किस प्रकार चलता रहे इसकी शिक्षा पर्व त्यौहारों के धर्म कृत्यों के साथ जुड़ी हुई है।

महामना मालवीय जी सांस्कृतिक आधार पर भारतीय राष्ट्र के पुनर्जागरण का स्वप्न देखते थे। उनका एक स्वनिर्मित सूत्र श्लोक है—

ग्राम्ये-ग्राम्ये सभा कार्या, ग्राम्ये-ग्राम्ये कथा शुभा।
पाठशाला मल्लशाला, प्रति पर्व महोत्सवः।।

अर्थात् (१) हर ग्राम में सभा संगठन स्थापित किये जायें, (२) हर ग्राम में प्राचीन इतिहास के आधार पर नया इतिहास रचने वाली कथायें कही जायें, (३) पाठशालायें स्थापित हों, (४) व्यायामशालायें खुलें और (५) प्रत्येक पर्व त्यौहार को प्रेरणाप्रद प्रक्रिया के साथ मनाया जाये। यह पंचसूत्री योजना भारत की परिस्थितियों के सर्वथा अनुरूप है। उसमें देश, धर्म, समाज और संस्कृति के पुनरुत्थान की समस्त सम्भावनायें सन्निहित हैं। युग निर्माण योजना इन पाँचों को पूरे मनोयोग के साथ कार्यान्वित करने में संलग्न है। पर्व और त्यौहारों को प्रेरणाप्रद प्रक्रिया के साथ मनाने का कार्य पद्धति इसी योजना का अंग है।

यों अपने यहाँ अनेकों पर्व त्यौहार हैं। हर एक में अपने ढंग की प्रेरणा और शिक्षा भरी हुई है। देश, काल, पात्र के अनुरूप आवश्यकता उन सभी की हो सकती है, पर एक सार्वदेशिक आन्दोलन के रूप में उन सभी को नहीं लिया जा सकता। सुविधा और आवश्यकता की दृष्टि में युग निर्माण योजना द्वारा छः प्रमुख पर्वों को विशेष आयोजन के रूप में मनाने को निश्चय किया है। इसमें से तीन को अनिवार्य मानकर प्राथमिकता दी गई है और तीन को द्वितीय आवश्यक वर्ग में रखकर, उन्हें भी मनाने पर जोर दिया गया है। जहाँ हर दो महीने पर बड़े आयोजन किये जाने की व्यवस्था नहीं हो सकती वहाँ चार महीने पश्चात् एक बड़ा पर्व अधिक शान के साथ मनाया जा सकता है। शेष तीन पर संगठन के सदस्यों तथा अन्य समीपवर्ती लोगों को इकट्ठा करके उन्हें छोटे रूप में भी मनाया जा सकता है।

अनिवार्य वर्ग के तीन पर्व हैं—(१) बसन्त पंचमी—माघ सुदी पंचमी-सरस्वती जयन्ती। (२) गंगादशहरा-ज्येष्ठ सुदी दशमी-गायत्री और गंगा दानों की जयन्ती। (३) विजयादशमी आश्विन सुदी दशमी-दुर्गाजयन्ती। इन तीनों के बीच लगभग चार महीने का अन्तर है।

आवश्यक वर्ग में तीन पर्व आते हैं: (१) श्रावणी-श्रावण सुदी पूर्णिमा शिखा पर्व। (२) गायत्री जयन्ती-मार्गशीर्ष सुदी एकादशी-भगवान कृष्ण द्वारा गीता का उद्बोधन पर्व (३) रामनवमी-चैत्र सुदी नवमी-भगवान राम का जन्म दिन।

यों महत्त्व की दृष्टि से यह सभी एक से एक बढ़कर हैं, गरिमा किसी की कम नहीं। पर जल्दी-जल्दी बड़े आयोजन सम्पन्न करने की कठिनाई को तथा ऋतु अनुकूलता को ध्यान में रखकर अवकाश और सुविधा को ध्यान में रखकर यह वर्गीकरण किया गया है। यों (१) जन्माष्टमी, (२) दीवाली, (३) शिवरात्रि, (४) होली, (५) वैशाखी, (६) गुरु पूर्णिमा पर्व भी कम महत्त्व के नहीं। पर इन पर जोर कुछ व्यवहारिक कारणों से नहीं दिया गया। होली और दिवाली के त्यौहारों पर घर-घर में अपने ढंग की व्यस्तता रहती है, प्रचलित परम्पराओं के निर्वाह का काम इतना बिखरा होता है कि उन्हें सामूहिक रूप से मनाया जाना और लोगों को जमा कर सकना कठिन है। जन्माष्टमी घोर वर्षा के दिनों में होता है। उस समय एक स्थान पर इकट्ठे होने की सुविधा बनने में भारी अड़चन है। गुरुपूर्णिमा भी आषाढ़ सुदी पूर्णिमा की होती है और वह भी जन्माष्टमी की भाँति ही घोर वर्षा के दिन हैं। शिवरात्रि और वैशाखी, क्षेत्र विशेष और वर्ग विशेष में प्रचलित हैं। पर जहाँ इन्हें मनाने की सुविधा हो वहाँ इन्हें भी मनाया जा सकता है, शिक्षाएँ और प्रेरणायें उनमें भी कम नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुगठित और सुसम्बद्ध रूप से हम थोड़े पर्वों को ठीक रीति से मनाने की एक क्रमबद्ध परिपाटी आरम्भ करें यही अधिक उपयुक्त है। लोकमान्य तिलक ने महाराष्ट्र में गणेश पर्व मनाने के लिये असाधारण उत्साह पैदा किया था। यों देखने में वह एक देव पूजा जैसा क्रिया कलाप लगता था पर उस आधार पर उत्पन्न किये गये उत्साह से संगठन के- सहकारिता के- टूटे और मरे हुये मनों में आवेश उत्साह उत्पन्न करने के अनेक महत्त्वपूर्ण प्रयोजन पूरे किये जा सकें। प्रकारान्तर से उन आयोजनों ने उस समाज में अभिनव चेतना उत्पन्न करने का प्रयोजन पूरा किया। उस चेतना ने स्वतन्त्रता संग्राम में अति उपयोगी भूमिका निबाही। हमारी पर्व योजना भी इसी स्तर की है, इसके माध्यम से जहाँ सांस्कृतिक नव-जागरण का प्रयोजन पूरा होता है, वहाँ नव युग निर्माण के बहुमुखी अभियान को गति मिलने की पूरी-पूरी सम्भावना है।

'आयोजनों का स्वरूप यह है—प्रातःकाल प्रभात फेरी। इसके उपरान्त कर्मकाण्डात्मक अनुष्ठान, सामूहिक गायत्री जप, गायत्री यज्ञ, सामूहिक वेद पाठ, (पुरुष सूक्त श्री सूक्त) व्रत प्रतिज्ञायें, भजन, कीर्तन, सायंकाल, पर्व के विशेष देवता का पूजन जनता द्वारा पुष्पांजलि अर्पण। चन्दन धारण। पंचगव्य, पंचामृत प्रसाद। रात्रि को दीप दान तथा पर्व व्याख्या, समझाने वाले संगीत प्रवचन सम्मेलन, कविता सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम।

संक्षेप में प्रत्यक्ष रूपरेखा यही है। इनमें कोई भी कार्य बेगार-भुगतने या चिन्ह पूजा की तरह नहीं किया जायेगा। लकीर नहीं पीटी जायेगी, वरन् जो भी किया जायेगा, उसमें भावना श्रद्धा, कला, सुरुचि, सुसज्जा, स्वच्छता एवं सुव्यवस्था का पूरा-पूरा ध्यान रखा जायेगा। यह सब सस्ते में भी हो सकता है। श्रम-दान से ऐसी सुसज्जा बड़ी सरलता से जुटाई जा सकती है। उत्साह और सूझ-बूझ की कमी न हो तो कहीं भी कभी भी इन आयोजनों को इतने सुन्दर और आकर्षक बनाया जा सकता है कि जन आकर्षण का प्रवाह स्वयमेव उस ओर मुड़ने लगे।

लोक रुचि उत्पन्न करने और अधिक लोगों के अधिक उत्साह के साथ भाग लेने में सफलता मिले, इसके लिये टोलियाँ बनाकर घर-घर जाना होगा और उस आयोजन का प्रयोजन, समय, स्थान बताते हुये उपस्थित होने का व्यक्तिगत आग्रह करना चाहिये। यह प्रचार दो बार होना चाहिये। एक पहला दस पाँच दिन पूर्व और दूसरा एक दिन पूर्व स्मरण दिलाने के लिये। इसके लिये दो-दो की टोलियाँ बनाकर कई दिन निकला जाये तो यह व्यक्तिगत आमन्त्रित क्रम सहज ही उस क्षेत्र में भली प्रकार पूरा हो सकता है।

यों मुनादी, लाउडस्पीकर, इश्तिहार, पोस्टर आदि भी प्रचार के तरीके हैं, पर वे अब पुराने हो चुके। जनता भाषण सम्मेलनों से ऊब गई है और आमतौर से उसमें उपेक्षा देखी जाती है। इसलिये प्रातःकाल के कर्म-काण्डात्मक आयोजन और सायंकाल के प्रवचनात्मक सम्मेलन की अधिक लोगों को जानकारी मिल सके और उपस्थिति हो सकें, इसके लिये टोली पद्धति से व्यक्तिगत निमन्त्रण पत्र—व्यक्तिगत नाम लिखकर व्यक्तियों के पास पहुँचाये जायें तो उनका भी साधारण प्रचार विज्ञापन की अपेक्षा अधिक प्रभाव पड़ता है और अच्छी संख्या में उपस्थिति करने के सन्दर्भ में सन्तोषजनक सफलता मिलती है।

स्थान और समय का निश्चय जनता की सुविधा को ध्यान में रखते हुये करना चाहिये। वक्ता और गायक अपने क्षेत्र से तैयार करने चाहिये। किस पर्व का प्रयोजन क्या है और उसके साथ क्या प्रेरणायें जोड़ी जा सकती हैं, इसकी जानकारी छपी हुई मौजूद है। इसे अपने क्षेत्र में कुशल वक्ताओं को समय से पहले दे देना चाहिये। वे उस पर अच्छे भाषण तैयार कर सकते हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र में गायकों को अपनी कविताओं की ध्वनियाँ तैयार करने तथा अपने साज-बाज एवं मण्डली के साथ पधारने के लिये अनुरोध करना चाहिये। ऐसा प्रयास समय रहते किया जाये तो इन आयोजनों के लिये अच्छे वक्ता और अच्छे गायक अपने क्षेत्र से ही मिल सकते हैं। हमें मिशन के अनुरूप बोल सकने वाले, गा सकने वाले इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में पैदा करने ही हैं। यह इसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकार हो सकता है, कि उन्हें तैयारी के लिये समय तथा साहित्य दिया जाये।

किसी को यों ही संकोचवश स्टेज पर बिठा देना, जनता का समय और अपना उद्देश्य नष्ट करना है। इन उत्सवों के करने का उद्देश्य ही लोक-शिक्षण है, उसके लिये ठोस प्रशिक्षण उपलब्ध हो सकें उसके लिये पूर्व तैयारी और अभीष्ट प्रयास की आवश्यकता है। किसी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर या उसे सम्मानित करने के लिये बोलने या गाने के लिये खड़ा कर देना बहुत ही ना समझी का काम है। ऐसी गलती हममें से कोई करे नहीं, इसकी आगाही पहले से ही होनी चाहिये।

पर्वों की व्याख्या विशेष ढंग से की जानी चाहिये। यों हर पर्व का एक विशेष प्रयोजन विशेष उद्बोधन है। सामान्य समय में पर्व विशेष पर उसी समय विशेष की चर्चा करना उपयुक्त होता। पर यह संक्रान्ति काल है, हम अनेक समस्याओं में उलझे हैं। इसलिये हर पर्व पर सामयिक समस्याओं का तालमेल बिठाकर ऐसी व्याख्यायें करनी होंगी जिन्हें सुनकर जन-साधारण को प्रस्तुत समस्यायें सुलझाने में मदद मिले। ऐसी स्थिति में एक ही विषय न लेकर उसे बहु उद्देशीय बनाना उपयुक्त होगा।

वैसे वसन्त पंचमी विद्या, बुद्धि तथा विद्या की स्वरूप विवेचना के लिये, शिवरात्रि शिव के समान उदार और निस्पृह होने के लिये, होली छोटे-बड़े का भेदभाव मिटाने तथा सार्वजनिक स्वच्छता के लिये, रामनवमी भगवान राम जैसी मर्यादा पालन के लिये—गायत्री जयन्ती गंगा के समान निर्मल विवेकशीलता ऋतम्भरा प्रज्ञा के लिये—गुरु पूर्णिमा अनुशासन और शिष्टाचार के लिये श्रावणी शिखा और सूत्रों में सन्निहित ज्ञान और कर्म को प्रखर बनाने के लिये, जन्माष्टमी कृष्ण जैसे कर्म कौशल के लिये, विजयादशमी शारीरिक, सुरक्षात्मक और संगठनात्मक बल वर्धन के लिये—दीवाली सम्पदाओं के अभिवर्धन एवं सदुपयोग के लिये—गीता जयन्ती मानसिक सन्तुलन युक्त प्रबल पुरुषार्थ की कर्मयोग साधना के लिये विनिर्मित किये गये हैं। इन पर्वों के साथ ऐतिहासिक घटना क्रम भी जुड़े हुये हैं। उन घटनाओं की चर्चा के साथ उसी प्रकार की सामयिक समस्याओं तथा उनके समाधानों का चित्रण ऐसे सुन्दर ढंग से किया जाये कि अपना लोकशिक्षण का उद्देश्य भी पूरा हो जाये तथा यह भी न लगे कि मूल विषय से हटकर कुछ कह रहा है। युग निर्माण साहित्य के सहारे कुशल वक्ता इसे आसानी से कर सकते हैं।

युग निर्माण संगठन छः पर्वों को प्राथमिकता देता है। उनके माध्यम से बहुत कुछ सामयिक लोक-शिक्षण हो सकता है। बसन्त पर्व पर भगवती सरस्वती का शिक्षा का कला का अभिनन्दन किया जाये और समझाया जाये कि आज की निरक्षरता से कैसे लड़ा जा सकता है ? शिक्षा को लोकोपयोगी कैसे बनाया जा सकता है ? शिक्षितों के ऊपर युग की विशेष जिम्मेदारियाँ क्या हैं ? कला का दुरुपयोग कैसे रुके, कला मंच से जन मानस को स्पंदित करने के लिये क्या किया जाना चाहिये ? मनुष्य वाटिका पुष्पों की तरह हर स्थिति में कैसे हँसता हँसाता जीवन जी सकता है। यह सब बातें भगवती सरस्वती के भावनात्मक स्वरूप का, चित्रण करते हुये भली-भाँति कही जा सकती है। युग निर्माण योजना का—उनके संचालक का तो वह जन्म दिन ही है। मिशन की उपलब्धियों, योजना और संभावनाओं पर प्रकाश डालने के लिये यह पर्व उचित अवसर है। मिशन की चर्चा करते हुये उसके अन्य कार्यक्रमों पर भी चर्चा की जा सकती है।

गायत्री जयन्ती-गंगा दशहरा भगवती गंगा की तरह निर्मल बनने, अपने पुण्य प्रयासों से दूसरों के काषाय, कल्मष धोने, अपना सुविधाजनक निवास सुरम्य हिमालय छोड़कर प्यासी भूमि की तृष्णा बुझाने के लिये निकल पड़ने की चर्चा करते हुये जन-साधारण को वैसी ही रीति-नीति अपनाने के लिये कहा जा सकता है। परमार्थ-परायण निरन्तर अनुदान देने वाली गंगा को कुछ घाटा नहीं रहा। हिमालय से जितनी छोटी धारा निकली थी, उसकी तुलना में बंगाल में हजार धाराओं सहित बहने वाला उसका स्वरूप विस्तृत ही हुआ, इसी प्रकार उस रीति-नीति को अपनाने वाला घटता नहीं बढ़ता ही है। गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों में २४ महत्त्वपूर्ण शिक्षायें भरी पड़ी हैं जिनसे आज की, हर समस्या का समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है। गायत्री स्मृति में २४ अक्षरों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्याख्या है और गायत्री गीता में नौ शब्दों को लेकर प्रत्येक शब्द के साथ जुड़े हुये प्रकाश का दिग्दर्शन भरा पड़ा है। भारतीय संस्कृति की जननी मानवता की-सद्भावना की-उत्कृष्ट चिन्तन की. देवी गायत्री की उपासना ही नहीं उसकी प्रेरणाओं को हृदयंगम करने की सजीव साधना भी सम्पन्न करनी चाहिये। यह सब कुछ गायत्री मन्त्र का स्वरूप और रहस्य बताते हुये कहा जा सकता है।

विजया दशमी भगवती दुर्गा का जन्म दिन है। दुर्गा को देवताओं की थोड़ी-थोड़ी शक्ति इकट्ठी करके ब्रह्माजी ने उत्पन्न किया था। दुर्दान्त असुरता को परास्त कर सकना देवताओं के लिये तभी संभव हुआ, जब उन्होंने इस संघ शक्ति दुर्गा का अवलम्बन ग्रहण किया। आज सर्व शक्ति के विकास का और उसे अवांछनीयता के विरुद्ध संघर्ष एवं सृजन प्रयोजनों में प्रयुक्त करने की पूर्व काल की तरह ही आवश्यकता है। विजयादशमी को शस्त्र पूजा, शारीरिक बल प्रदर्शन की प्रतियोगितायें होती हैं। उनके पीछे व्यायाम की उपयोगिता, बलिष्ठ शरीरों की आवश्यकता और शस्त्र-सज्जा के लिये लाठी चलाने जैसे आरम्भिक प्रशिक्षण के जानकार होने की बात कही जा सकती है और इन प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाने के उपाय सुझाये जा सकते हैं।

यह तीनों प्रधान अनिवार्य पर्व हुये। गायत्री को आत्म बल, सरस्वती को बुद्धि बल और दुर्गा को शारीरिक एवं लौकिक बल का प्रतीक माना जा सकता है। इस त्रिविध प्रगति की सुव्यवस्थित रूपरेखा इन तीनों पर्वों की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक व्याख्या करते हुये समझाई जा सकती है। यह लोक शिक्षण इतना भावनात्मक और सर्वांग सुन्दर हो सकता है कि सामान्य प्रवचन उससे बहुत पीछे रह जाते हैं। रचनात्मक शिक्षा में नीरसता अनुभव की जाती है. पर्वों की सांस्कृतिक शृंखला के साथ उसे जोड़ दिया जाये तो ऐसा भावुकतापूर्ण प्रवाह चल पड़ता है कि सरसता बढ़ती ही जाती है। उस रचनात्मक लोकशिक्षण को भी जोशीले भाषणों की अपेक्षा कहीं अधिक पसन्द करते महत्त्व देते और उनसे प्रकाश ग्रहण करते हैं।

श्रावणी के अवसर पर वृक्षारोपण शाक वाटिकायें-पुष्प, तुलसी आदि लगाने का कार्यक्रम चल सकता है। नया यज्ञोपवीत बदलने, उपनयन से सम्बन्धित तीनों बलों और नौ गुणों के अभिवर्धन की प्रतिज्ञा हर वर्ष दुहराई जाती है। शिखा सिंचन किया जाता है। इसका अर्थ है कि विचार पद्धति में जहाँ कहीं दोष आ गये हों उन्हें निरस्त किया जाय, एक वर्ष के किये पापों का प्रायश्चित भी उस अवसर पर होता है। बहिन भाई के पवित्र सम्बन्धों की स्मृति के लिये राखी बाँधने का यही दिन है। राष्ट्र रक्षा की प्रतिज्ञा का उत्तरदायित्व यजमान की मजबूत कलाइयों में पुरोहित इसी दिन बाँधते हैं। यह संस्कृति का जन्मदिन है। इसे ज्ञान योग की साधना का स्वाध्याय-चिन्तन मनन आत्म बोध का पर्व भी कह सकते हैं। इन विषयों की विवेचना करते हुये वक्ता और श्रोता उन प्रेरणाओं को उभार सकते हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति और समाज का निर्माण सम्भव है।

गीता जयन्ती भगवान कृष्ण के गीता वाले अवतार प्रयोजन का जन्म दिन है। सन्तुलित मस्तिष्क रखकर-हानि लाभ की सफलता असफलता की चिन्ता किये बिना कर्त्तव्य कर्म का पालन किस प्रकार किया जा सकता है ? इसका समय शिक्षण न केवल गीता के तत्व ज्ञान में है वरन् कृष्ण के क्रिया कलाप के साथ ही जुड़ा हुआ है। महाभारत में वर्णित कृष्ण चरित्र के प्रसंगों में आज की परिस्थितियों का हल प्रस्तुत करने वाले अनेक समाधान ढूँढ़े और जनता के सामने प्रस्तुत किये जा सकते हैं। इसे कर्मयोग का पर्व कह सकते हैं।

रामनवमी मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म दिन रामायण के माध्यम से राम चरित और कृष्णायन के माध्यम से कृष्ण चरित्र जनता के सामने रखा जा सकता है। रामायण के अगणित प्रसंग और संवाद मानव जीवन को उत्कृष्ट और समाज रचना को आदर्श बनाने का पथ प्रशस्त करते हैं। मर्यादाओं का पालन, आत्म संयम, उदारता और प्रेम भावना का व्यावहारिक स्वरूप भगवान राम के व्यक्तित्व और कर्त्तव्य के सहारे जन-साधारण को भली प्रकार समझाया जा सकता है और उस महान् मार्ग पर चलने के लिये जन-मानस को उल्लसित किया जा सकता है। राम जयन्ती को भक्तियोग का पर्व कहना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तीन अनिवार्य और तीन आवश्यक छहों पर्वों में आदर्शवाद के अभिवर्धन और अवांछनीयताओं के उन्मूलन की समस्त क्रिया प्रक्रिया समाई हुई है। सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परम्पराओं का स्मरण कराते हुये यह पुण्य पर्व हमें आज की उलझी हुई परिस्थितियों को सुलझाने के लिये क्या करना चाहिये—क्या नहीं करना चाहिये, इसका स्पष्ट निर्देश देता है। तात्विक विवेचन वैसे तो कठिन और नीरस लगता है, पर महापुरुषों ने विषम समय पर क्या कहा, क्या किया, के घटनाक्रम के सहारे जन-साधारण उसे रुचिपूर्वक आसानी से समझ भी लेता है और पालन करने का प्रयास भी करता है।

इन पर्वों को प्रेरणाप्रद पद्धति से हर साल मनाये जाने की परम्परा चल पड़े तो जन जागरण की मशाल स्वयं चालित प्रक्रिया के साथ चिरकाल तक जलती रह सकती है। इन्हीं पर्वों के अवसर पर सामूहिक विवाहों तथा अन्य संस्कारों के सामूहिक आयोजनों को जोड़कर इनका महत्त्व और भी अधिक बढ़ाया जा सकता है।

पर्व और त्यौहार इस प्रकार मनायें

पर्व त्यौहारों के समारोह मनाये जाने की पुरातन परम्परा इस उद्देश्य से आरम्भ हुई और लोकप्रिय बनी कि उस आधार पर समाज को अधिक सुसंस्कृत बनाने के उपाय-उपचार समय-समय पर होते रहें।

विभिन्न क्षेत्रों में परम्पराओं के अनुरूप अनेक पर्व त्यौहार मनाये जाते हैं। हर धर्म सम्प्रदाय में उनके समय, स्वरूप, इतिहास एवं आधार भिन्न-भिन्न हैं। इसलिये उन्हें सार्वभौम न मानकर क्षेत्रीय ही कहा जा सकता है। इन्हें किस प्रकार मनाया जाये, उनके वास्तविक उद्देश्य कैसे पूरे हों, इसके लिये प्रचलन के साथ जुड़ी हुई परम्परा पर ही ध्यान देना होगा और उनमें से जो भी प्रेरणाप्रद शिक्षायें उभरती हों, उन्हें प्रमुखता देते हुये लोकशिक्षण का ढाँचा खड़ा करना होगा। अच्छा होता कि यह पर्व भी सार्वभौम होते और उनका स्वरूप संसार भर में एक जैसा मनाया जाता पर इन दिनों परिस्थितियों की जटिलता को देखते हुये यही मानकर चलना होगा कि उनमें जो अवांछनीयतायें जुड़ गयी हैं, उन्हें हटाकर क्षेत्रों और वर्गों का ध्यान रखते हुये इस प्रकार मनाया जाये कि भिन्न मतावलम्बी भी बिना अधिक हिचकिचाये सम्मिलित होने का मन बना सकें। इस प्रकार ये एकता और अखण्डता के अभिवर्धन में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

उत्सव मनाने की इच्छा स्वाभाविक है। मनुष्य लगातार एक जैसे कार्य करते रहने पर मानसिक दृष्टि से थक जाता है। उसे नवीनता चाहिये। वह भी ऐसी जिसमें हर्षोल्लास जुड़ा हुआ हो। सामूहिकता का पुट रहे। अनेक प्रकार के घटनाक्रम घटित होते दीख पड़ें। नृत्य, गीत, देवपूजन, सह मिलन सहभोज एवं उस अवसर के लिये निर्धारित विशेष उपक्रम कार्यान्वित होते हैं। ईद, ईस्टर, होली आदि में बड़े समारोह होते हैं। कोई कम महत्त्व के पर्व अपने-अपने घरों में निर्धारित रीति-रिवाज के आधार पर पूरे कर लिये जाते हैं। साप्ताहिक अवकाश का दिन भी एक वर्ग के लोगों में एक ही दिन रहता है ताकि उनका मिलन सान्निध्य सुविधापूर्वक सम्भव हो सके। शुक्रवार रविवार आदि की धार्मिक क्षेत्रों में प्रमुखता है।

निर्धारण क्रिया कृत्यों में न्यूनाधिक हेरा-फेरी करके, उन्हें ऐसा बना लिया जाय कि भक्ति भावना विनोद प्रसन्नता दर्शाने के अतिरिक्त उनका स्वरूप सह मिलन जैसा भी बन पड़े और उस अवसर पर गीत प्रवचन आदि के माध्यम से ऐसा कुछ प्रशिक्षण उपस्थित जनों को मिले कि वे प्रचलन के इतिहास, कारण आदि को जानने के अतिरिक्त कुछ तदनुरूप प्रकाश, उत्साह एवं मार्ग दर्शन भी प्राप्त कर सकें।

मनुष्य जीवन में जहाँ-जहाँ महत्त्वपूर्ण मोड़ आते हैं, वहाँ मनीषीगणों द्वारा उन्हें उपयुक्त प्रेरणाओं से भर दिया गया है। इसलिये संस्कार आयोजनों की उपयोगिता में अब उतनी हिचक नहीं रही, जो पण्डिताऊ गोरख-धन्धे के कारण मध्य काल के अन्धकार युग में बन गई थी। अब समझदार परिवार भी उपयोगी संस्कारों को मात्र हर्षोत्सव या देवपूजन तक सीमित न रहने देकर उन्हें अधिक प्रेरणाप्रद बनाने एवं अधिक चाव पूर्वक सम्पन्न करते देखे जाते हैं। इनमें से जन्म दिवसोत्सव और विवाह दिवसोत्सव विशेष लोकप्रिय हुये हैं। कारण कि दोनों घटनायें जीवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को एक नया स्वरूप देती हैं और नये भविष्य के अभिनव आधार खड़े करती हैं। उनकी हर वर्ष पुनरावृत्ति होते रहना प्रायः ऐसा हीं लगता है कि लाइसेन्स का वार्षिक नवीनीकरण किया गया हो। त्यौहार पर्वों के सम्बन्ध में भी ऐसा ही होना चाहिये। उन्हें मात्र हर्षोत्सव भर तक सीमित नहीं रहने दिया जाना चाहिये।

भारत में बहुचर्चित पर्व त्यौहारों में दीपावली, गीता जयन्ती, मकर संक्रान्ति, वसन्त पंचमी, शिवरात्रि, होली, रामनवमी, गंगा दशहरा, गुरुपूर्णिमा, श्रावणी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, विजयादशमी जैसे पर्व उत्तर भारत में मनाये जाते हैं। वैशाखी, छठ, गणेश चतुर्थी अनन्त चतुर्दशी आदि का भी कहीं-कहीं बहुत महत्त्व माना जाता और समारोह होता है। इनके मनाये जाने के प्रथा प्रचलन भी अपने-अपने क्षेत्रों में मिलते-जुलते या पृथक्-पृथक् पाये जाते हैं।

आमतौर से लोग घरों में अपने-अपने ढंग से पूजा पाठ या मिष्ठान पकवानों की विशेष व्यवस्था कर लेते हैं। पर यह भूल जाते हैं कि यह सभी पर्व समाजगत सुप्रचलनों को प्रोत्साहित करने के लिये बनाये गये हैं। इन सबके पीछे कुछ उद्देश्य और प्रयोजन हैं। यह निरर्थक का हुल्लड़ नहीं है वरन् उसके लिये यह विधान बनाया गया है कि सभी लोग एक स्थान पर एकत्रित होकर पारस्परिक घनिष्ठता नियोजित करें।

इन सभी पर्व त्यौहारों का खान-पान, पूजा पाठ का निजी स्वरूप जो भी रहे वह अपनी रुचि एवं परम्परा के अनुरूप किया जा सकता है पर कोई एक समय उस दिन ऐसा अवश्य होना चाहिये कि उस गाँव या नगर के सभी लोग एक सभा सम्मेलन के रूप में एकत्रित हों। बड़ा शहर हो और बहुत दूर आने जाने में कठिनाई पड़ती हो तो मुहल्ला बार ऐसी सभायें की जा सकती हैं। इन समारोहों में उस पर्व के साथ जुड़े हुये पुराने इतिहास में से ऐसे प्रेरणाप्रद तत्व ढूँढ निकाले जा सकते हैं, जिनको आज की परिस्थितियों तथा समस्याओं के साथ जोड़ते हुये ऐसा निष्कर्ष निकाला जाये, जिससे उपस्थित जनों को ऐसी प्रेरणा दी जा सके कि आज के सन्दर्भ में उस पर्व से क्या प्रेरणा ग्रहण की जाये और उसे कार्यान्वित करने का क्या तरीका अपनाया जाय ? यह लोकशिक्षण समाजगत सुसंस्कारिता का अभिवर्धन करने के लिये हैं। व्यक्तिगत अभ्युदय की शिक्षायें तो षोडश संस्कारों द्वारा अथवा आवश्यकतानुसार उनमें घट-बढ़ करके भी बतायी जाती रह सकती है।

पुराने पर्व त्यौहारों में कुछ नये भी जुड़ते चलें यह स्वाभाविक है। स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़े हुये पन्द्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी है। उनमें राष्ट्र कल्याण की अनेकानेक बातों का समावेश हो सकता है। महात्मा गाँधी लोकमान्य तिलक जैसे मूर्धन्य नेताओं तथा अग्रणी महिलाओं की जयन्तियाँ भी अनिवार्य रूप से मनायी जा सकती हैं।

अच्छा तो यह भी है कि हर देश में अन्य धर्मावलम्बियों के त्यौहारों को भी मिलजुल कर मनाया जाये। इससे एकता और अखण्डता का पथ प्रशस्त होगा। लोक मिल-जुलकर रहने और समन्वय की नीति अपनायेंगे।

सभी त्यौहारों में कुछ न कुछ पूजा पाठ का समावेश होता है। इसका समन्वय दीपयज्ञों की सरल प्रक्रिया में सहज ही बन पड़ता है। सुसज्जित थाल में दीपकों और अगरबत्तियों की पंक्ति सजाकर रखी जाये और उसे ऊँचे मंच पर स्थापित किया जाये तो वह सभी धर्मों का प्रतीक बन सकता है। प्रतिनिधित्व कर सकता है। दीपक की अभ्यर्थना ऐसे सहगान, संकीर्तन से की जाय जिसके भाव सार्वजनीन हित साधन के सर्वतोमुखी प्रगति से तालमेल खाते हों। मन्त्र अपने अपने मत के अनुसार अनेक प्रकार के होते हैं। यदि उन सभी का उच्चारण बन पड़े तो ठीक अन्यथा अपनी-अपनी परम्परा के अनुसार जो जिसे रुचे वह मानसिक रूप से उसकी अभ्यर्थना कर ले यह भी सम्भव है। प्रतीक रूप में दीपक और अगरबत्तियों की स्थापना एक ऐसा समन्वय है जिसमें कदाचित् ही किसी को आपत्ति हो।

दीवाली में धन को सही रीति से कमाने और सही प्रयोजन में खर्च करने की प्रेरणा है। होली सार्वजनिक सफाई का पर्व है। श्रावणी को हरीतिमा सम्वर्धन के रूप में मनाया जा सकता है। दशहरा स्वास्थ्य सम्वर्धन योजना के साथ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भली प्रकार मिल सकता है। इसी प्रकार हर पर्व के साथ उच्चस्तरीय प्रेरणा को जोड़ते हुये उसकी सज्जा कलात्मक ढंग से मिलाते हुये पर्व आयोजन को युग की आवश्यकता के अनुरूप ढाँचे में ढालकर भली-भाँति लोक शिक्षण दिया जा सकता है, उनकी सार्थकता बढ़ाई जा सकती है।

सभी पर्वों के मनाने का विधान एक है

युग निर्माण शाखाओं द्वारा पर्व आयोजनों को विशेष समारोह के साथ मनाने में कई सुविधा और असुविधाओं को ध्यान में रखते हुये छः का ही चुनाव किया है। इसका अर्थ यही नहीं कि दूसरे पर्वों को महत्त्वहीन या गौण माना गया है, समय और परिस्थितियों की आवश्यकतानुसार धर्म, समाज, भाषा-संस्कृति आदि के आधार पर इस प्रक्रिया में परिवर्तन किये ही जायेंगे। मुसलमान बौद्ध, पारसी, ईसाई आदि धर्मों में ये छः पर्व काम नहीं देंगे, वरन् उन क्षेत्रों में उन्हीं वर्गों की मान्यताओं एवम् परम्पराओं के अनुरूप पर्व मनाये जाये पर उनका स्वरूप और निष्कर्ष अवश्य उस स्तर का रखा जायेगा, जिससे भावनात्मक नव निर्माण का निर्धारित तथ्य पूरा होता है।

लोकमान्य तिलक ने अपने समय में अपने महाराष्ट्र क्षेत्र के गणेशोत्सव को मूर्धन्य बनाया था और उसे अति उत्साह भरे वातावरण में मनाये जाने की व्यवस्था बनाई थी। उन आयोजनों में लोक मानस के उभार और उसमें अभीष्ट उत्पन्न करने के लक्ष्य को स्थिर रखकर हमें परिस्थितियों एवम् आवश्यकताओं के अनुरूप अन्यान्य पर्व मनाने की यदि उपयोगिता प्रतीत हो तो उसके लिये वैसी व्यवस्था जुटानी चाहिये, छः पर्वों को कोई सीमा बन्धन नहीं है। उसे दिशा निर्देश मात्र समझना चाहिये।

भारतीय समाज के पर्वों में होली और दीवाली दो त्यौहार ऐसे हैं, जो सारे भारत में समान रूप से प्रचलित हैं। अन्य पर्व तो स्थानीय महत्त्व के भी हैं पर इन दो को देशभर में कहीं भी देखा जाये, समान उत्साह एवम् प्रचलन पाया जायेगा। कई वर्षों से अपनी चेष्टा इन पर्वों पर विशेष आयोजन करने की रही है। पर उन अवसरों पर आमतौर से लोग ढर्रे की परिपाटी में इतने अधिक व्यस्त रहते हैं कि आयोजनों में सम्मिलित होने की ओर ध्यान नहीं दे पाते। इसी कटु अनुभव के आधार पर उन्हें मनाने की बात को पीछे रखना पड़ता है। पर अभी प्रयास छोड़े नहीं जाने चाहिये कि उन्हें भी अन्य पर्वों की तरह सामूहिक एवम् प्रेरणाप्रद प्रक्रिया के साथ मनाया जा सके।

होली वस्तुतः सामूहिक वार्षिक यज्ञ है, जो नई फसल के आगमन पर हर्ष एवं उदारता की अभिव्यक्ति के लिये सम्पन्न किया किया जाता है। स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार यदि रागरंग में से लोगों को अवकाश मिल सके और गायत्री यज्ञ के क्रिया-कलाप की तरह मनाया जाना चाहिये। नवीन अन्न की आहुतियाँ दी जाये और उसे धूम्र पर तपाकर उसे प्रसाद रूप में वितरण किया जाये। पूजा के लिये नृसिंह भगवान द्वारा प्रहलाद के उद्धार वाला चित्र रखा जाना चाहिये। मिट्टी धूल फेंकने का तात्पर्य है, सामूहिक श्रम दान से सार्वजनिक सफाई में जुटना। इसी हँसी खुशी में सम्भव है, प्राचीन काल में कोई अति उत्साही मजाक में सफाई की मिट्टी धूल साथियों पर डाल देते हों और उस समय संयोगवश "शादी के समय नाद के नीचे बिल्ली बन्द" हो जाने की परम्परा बन जाने की तरह लोग वैसा करना आवश्यक मानने लगे हों। सामूहिक सफाई अभियान की रचनात्मक बात तो भुला दी गई हो और वह 'मिट्टी धूल फेंकने का हुड़दंग' मात्र प्रचलित रह गया हो। इस महँगाई के जमाने में रंग डालकर किसी के कपड़े खराब करना उनकी प्रत्यक्ष आर्थिक हानि करना है। इसे चोरी उठाईगीरी के स्तर की बात कह सकते हैं। रंग फेंकने वालों को अपना मनोरञ्जन करते समय यह भी सोचना चाहिये कि जिसके कपड़े खराब किये गये हैं न जाने वह किस स्थिति में होगा और उस पर इसके कारण क्या बीती होगी। रंग ओर कीचड़ फेंकना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं। अभिवादन के लिये चन्दन का लगाया जाना पर्याप्त माना जाना चाहिये।

ऊँच-नीच छूत-छात का भेद-भाव भुलाकर सब लोग मनुष्य बिरादरी अनुभव करें इस मान्यता को होली की व्याख्या करते समय विकसित किया जा सकता है। यज्ञीय जीवन की रीति-नीति समझाई जा सकती है। सामूहिकता,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वच्छता एवं सम्मिलित श्रमदान का महत्त्व बताया जा सकता है। अनुचित बात पिता तक की नहीं माननी चाहिये। सत्यनिष्ठ बालक भी आततायी महा बलिष्ठ की तुलना में अधिक बलवान होता है। उसे ईश्वर की सहायता एवम् लोक श्रद्धा मिलती है, जो इस मार्ग पर चलते हुये सहन किये जाने वाले कष्टों की तुलना में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। ऐसी शिक्षायें होली पर्व के माध्यम से सहज ही दी जा सकती हैं।

दीवाली भी स्वच्छता का पर्व है। सब लोग अपने घर मकान की कपड़े आदि की सफाई करते हैं यह सफाई यदि आचार विचार की—आहार व्यवहार की भी बन सके ऐसा प्रयास करना चाहिये। दिवाली घनी अमावस्या को जब सूर्य और चन्द्र कोई भी नहीं उगा होता तब अन्धकार को चुनौती देने के लिये तुच्छ समझे जाने वाले दीपक भी यदि पंक्ति बद्ध होकर खड़े हो जायें—जलने लगें तो सघन अन्धकार को चीरते हुये बिना सूर्य चन्द्र जैसे समर्थ नेताओं के भी सफल हो सकते हैं। दिवाली—अन्धकार पर दीपकों की विजय का पर्व है। वह हम में हर एक को सदुद्देश्य के लिये छोटी-छोटी क्षमता वालों के मिलजुल कर उठ खड़े होने की महत्ता से परिचय कराती है। लक्ष्मी नीति पूर्वक कमाई जानी चाहिये और उसके एक-एक पैसे का सदुपयोग करना चाहिये। अपव्यय में एक पाई भी नष्ट न की जाये किन्तु सार्थक प्रयोजनों के लिये कृपणता भी न बरती जानी चाहिये। सम्पन्नता अभीष्ट हो तो अपनी क्षमता योग्यता बढ़ानी चाहिये और मनोयोगपूर्वक कठोर श्रम करने की आदत डालनी चाहिये। यह लक्ष्मी पूजन का प्रशिक्षण है। लक्ष्मी के साथ गणेश पूजन भी होता है। गणेश का अर्थ है विवेक। सम्पदा के उपार्जन और उपयोग पर विवेकशीलता का पूरा-पूरा समावेश रहना चाहिये। अन्यथा अविवेकी के लिये सम्पदा विषाक्त ही सिद्ध होती है।

दीवाली के साथ बहिन भाईदूज आती है। बहिन बिराने घर की हो जाने पर भी उसका स्नेह सूत्र पितृगृह से टूटना नहीं चाहिये। उसकी देखभाल एवम् सहायता का समुचित ध्यान रखना चाहिये ताकि वह जिस घर में जन्मी वहाँ से उसे उपेक्षा मिलने लगी यह अनुभव न हो। भाईदूज को तिलक टीका की रस्म इसी स्नेह सूत्र को सजग करती है। नारी मात्र के प्रति बहिन, पुत्री या माता की पवित्र भावना को उभारना भी उस पर्व का प्रयोजन है।

गोवर्धन पूजा दीवाली के तीसरे दिन होती है। गोबर के गोप आदि बनाकर आँगन में स्थापित किये जाते और पूजे जाते हैं। इसकी प्रेरणा गो संरक्षण, गो संवर्धन की ओर पूरा-पूरा ध्यान दिये जाने की है। गोबर को खाद के ही काम में लाया जाय उसके उपले न बनाये जायें। गोबर + धन का तात्पर्य है कि गोबर बहुमूल्य धन है। खाद के रूप में वह मैला सोना है। उसे जलाने में प्रयुक्त न किया जाय आदि-आदि कितनी ही शिक्षायें हैं, जिन्हें देने के लिये दिवाली आती है। बही-खाता रखना, बजट बनाकर चलना, विद्या को—उसके उपकरणों को लक्ष्मी के समान ही मूल्यवान मानना यह सब शिक्षा हिसाब बही, कलम, दवात आदि के पूजन के साथ जुड़ी हुई है।

लक्ष्मी और गणेश का चित्र रखकर उनका पूजन करना आदि। शेष कर्मकाण्ड दिवाली पर भी अन्य पर्वों की तरह ही किये जा सकते हैं।

शिवरात्रि में भगवान शंकर के प्रतीक मनुष्य के लिये उपस्थित महानता के आदर्शों की झाँकी की जा सकती है। मस्तक पर चन्द्रमा अर्थात् शान्ति एवं सन्तुलन का प्रकाश। जटाओं में गंगा अर्थात् मस्तिष्क से निरन्तर प्रवाहित होने वाली उत्कृष्ट विचारधारा की ज्ञान गंगा। गले में सर्प अर्थात् अपकारी लोगों को भी छाती से लगाकर रखना और उन्हें अपने स्नेह सद्-व्यवहार से ईर्ष्या रहित बनाना। तीसरा नेत्र खुलने से काम दहन, विवेक ज्ञान चक्षु से इन्द्रिय लोलुपता की हानियों का मूल्यांकन और उसकी ओर से घृणा उपेक्षा। विषपान अर्थात् लोक मंगल के लिये बड़े संकट को स्वीकार करने की साहसिकता। नील कण्ठ—विषाक्त अनुभूतियों को न पेट में जड़ जमाने देना न उगलकर वातावरण को कलुषित करना वरन् ऐसे कटु प्रसंगों को बीच ही बीच पटक देना। भूत-प्रेतों की मण्डली—पिछड़े हुये लोगों को साथ साथ रखकर, उन्हें ऊँचा उठाने की चेष्टा। मरघट में निवास-जीवन और मृत्यु को एक साथ जोड़कर देखना और तदनुरूप अपनी कार्य पद्धति निर्धारण करना जैसी अनेक व्याख्यायें उनके अलंकारिक रूप की, की जा सकती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भागीरथ के पुण्य कार्य में सहायता करने के लिये अपनी जटायें पसार देना, गृहस्थ होते हुये योग के अधिपति बनकर रहना जैसे अगणित शिव चरित्र की कथा उन कथाओं के आधार पर शिवरात्रि के अवसर पर महत्त्वपूर्ण लोकशिक्षण किया जा सकता है। पूजा पद्धति में कुछ अन्तर नहीं पड़ता। पूजा स्थान पर शिव, चित्र पुरुष सूक्त से सामूहिक पूजा। गायत्री यज्ञ जैसे अन्य सभी क्रियाकृत्य सभी उत्सवों में एक जैसे हैं। शिवरात्रि का विधान भी उसी स्तर का है।

गुरु पूर्णिमा व्यास पूजन-गुरुजनों के प्रति श्रद्धा, सद्भाव, कृतज्ञता नम्रता रखने की शिक्षा देने वाला पर्व है। अनुशासन मानने वाला ही शासन कर सकता है। इस तथ्य को बाल वृद्ध सभी समझें, तब राष्ट्रीय चरित्र का विकास हो। इस अवसर पर अध्यापकों और छात्रों को उनके कर्त्तव्यों का उद्बोधन कराया जा सकता है। दोनों के बीच सहयोग सद्भाव की धारा बहाने वाला मार्गदर्शन किया जा सकता है। महर्षि व्यास विद्वान लेखक भी थे और चरित्र तथा वाणी से शिक्षा देने वाले वक्ता भी व्यास के आदर्शों का अनुसरण करने की चेष्टा यदि साहित्यकार कलाकार करने लगें तो व्यक्ति और समाज का कायाकल्प ही हो सकता है। यह पर्व इस प्रकार के प्रशिक्षण से भरा पूरा है। व्यासजी के चित्र तो शायद ही मिले पर किसी भी ऋषि आकृति की तस्वीर उस पर्व पूजन के लिये स्थापित की जा सकती है।

इसी प्रकार कृष्ण जन्माष्टमी, पितृ अमावस्या, शरद् पूर्णिमा, मकर-सक्रान्ति, वैशाखी संक्रान्ति, आश्विन और चैत्र की नवरात्रि आदि के अपने धार्मिक महत्त्व है। गान्धी जयन्ती, तिलक जयन्ती, बुद्ध जयन्ती, महावीर जयन्ती आदि महामानवों के जन्म दिन मनाये जा सकते हैं। एक मई का श्रमिक दिवस, भारत का स्वाधीनता दिवस आदि राजनैतिक पर्व हैं। स्थानीय घटनाओं एवं युग पुरुषों का जहाँ जैसा प्रचलन हो वहाँ उस परिस्थिति के अनुरूप पर्वों की एक मात्र पद्धति को ध्यान में रखते हुये कार्यक्रम बनाये जा सकते हैं।

समाज को सुगठित, परिष्कृत, समुन्नत और सद्भाव सम्पन्न बनाने के लिये पर्वों की प्रेरणा प्रद पद्धति निस्सन्देह बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

पर्व आयोजन क्यों ? कैसे ?

भारतीय संस्कृति को देव संस्कृति भी कहा जाता है, इसमें मनुष्य को, मनुष्यता को, आदर्शनिष्ठ बनाये रखने के लिये हर स्तर पर प्रखर दर्शन और विवेक संगत परम्पराओं का ऐसा क्रम बनाया गया है कि मनुष्य सहज रूप में ही प्रगति तथा सद्गति का अधिकारी बन सके।

मनुष्य का हित मात्र जानकारियों से नहीं होता, वह बार-बार भूलता है और याद रहते हुये भी अनेक बातें चरितार्थ नहीं कर पाता। इसके लिये सतत् याद रखने या नियमित रूप से अभ्यास करने के लिये व्यवस्था बनाई गयी है। व्यक्तिगत स्तर पर उपासना, साधना, स्वाध्याय, मनन, चिंतन के क्रम बनाये गये। पारिवारिक स्तर पर श्रेष्ठ गुणों के विकास तथा उत्तरदायित्वों के पालन का वातावरण बनाये रखने के लिये षोड़श संस्कारों का ताना-बाना बुना गया। इनके प्रभाव से परिवार व्यक्तिगत स्वार्थ के साधन नहीं—श्रेय साधना के आश्रय—तपोवन बन गये। परिवार भाव भी रक्त सम्बन्धों की सीमा से आगे बढ़ते हुये 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तक विकसित होता चला गया।

व्यक्ति और परिवार के बाद विश्व की तीसरी इकाई है—समाज। व्यक्तिगत दृष्टिकोण परिष्कृत करने के लिये पूजा-उपासना, पारिवारिक रीति-नीति को उत्कृष्ट बनाये रखने के लिये संस्कार प्रक्रिया है। ठीक इसी प्रकार समाज को समुन्नत और सुविकसित बनाने के लिये सामूहिकता, ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा, नागरिकता, परमार्थ-परायणता, देशभक्ति, लोकमंगल जैसी सत्प्रवृत्तियाँ विकसित करनी पड़ती हैं। उन्हें सुस्थिर रखना होता है, यह भी बार-बार स्मरण दिलाते रहने वाला प्रसंग है—इस प्रयोजन के लिये पर्व-त्यौहार मनाये जाते हैं, इन्हें सामाजिक संस्कार प्रक्रिया ही समझना चाहिये। साधना से व्यक्तित्व, संस्कारों से परिवार और पर्वों से समाज का स्तर ऊँचा बनाने की पद्धति दूरदर्शिता पूर्ण है, इसे हजारों-लाखों वर्षों तक आजमाया जाता रहा है। प्राचीन भारत की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महानता का श्रेय इन छोटी दीखने वाली किन्तु प्रवृत्तियों में प्रखरता उत्पन्न करने वाली धर्म के नाम पर प्रचलित विधि व्यवस्थाओं को ही है।

विश्व का आध्यात्मिक नेतृत्व भारत करेगा—यह एक सुनिश्चित तथ्य है। इस उत्तरदायित्व को वहन करने के लिये उसे अपनी आत्मा जगानी पड़ेगी, यह जागरण मात्र लेखनी वाणी से ही सम्पन्न न हो सकेगा। वरन् इसमें धार्मिक, आध्यात्मिक उन क्रिया-कलापों को भी सम्मिलित करना पड़ेगा, जो परोक्ष रूप से व्यक्ति, परिवार और समाज को देव भूमिका में पहुँचाने और स्वर्गीय वातावरण का सृजन करने में सर्वथा समर्थ हैं। उपरोक्त विविध क्रिया-कलापों को, उपरोक्त संस्कार प्रक्रिया को प्राचीन भारत की तरह अब पुनः प्रचलित किया जाना है ताकि भूले हुये आदर्शों और कर्त्तव्यों को हर क्षेत्र में भली प्रकार स्वीकार शिरोधार्य किया जा सके। नव निर्माण के लिये धर्मतन्त्र की यह क्रिया पद्धति कितनी महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी—इसे कल हर कोई प्रत्यक्ष देखेगा।

पर्वों की रचना इसी दृष्टि से हुई कि प्राचीनकाल की महान् घटनाओं एवं महान् प्रेरणाओं का प्रकाश जनमानस में भावनात्मक एवं सामूहिक वातावरण के साथ उत्पन्न किया जाये। इसके लिये कितने ही पर्व त्यौहार प्रचलित हैं। उनमें से देश-काल-पात्र के अनुसार जब जहाँ जिसको प्रधानता देने की आवश्यकता समझी जाती है, उन्हें प्रधान और शेष को गौण मान लिया जाता है। एक ही क्षेत्र में एक ही काल में प्रचलित सैंकड़ो पर्वों का मनाया जाना सम्भव नहीं, उनमें से स्थिति के अनुरूप कुछ को ही चुनना पड़ता है।

आज की स्थिति में पर्व आयोजनों की संख्या सीमित ही रखी जानी चाहिये। बहुत जल्दी-जल्दी किये जाने वाले आयोजन भार लगते हैं, उनका सामूहिकता के संस्कारों में शिथिलता आने की सम्भावनायें बढ़ जाती हैं। इसलिये प्रयास यह करना चाहिये कि लगभग दो माह के अन्तर से कोई न कोई सामूहिक पर्वायोजन होते रहें। इसे सामाजिक चेतना की, सामूहिक उल्लास की तथा जीवन्तता की कसौटी मानकर चलना चाहिये। जीवन्त व्यक्तियों को प्रयास करना चाहिये कि अपने क्षेत्र में इस प्रकार के पर्वायोजन होते रहें।

वर्ष के दस विशेष पर्व

अपने समाज में आये दिन पर्व-त्यौहार बने रहते हैं, जबकि दूसरे धर्म सम्प्रदायों में वर्ष में दो-चार त्यौहार होते हैं। थोड़ा रहने से उन्हें उत्साहवर्धक वातावरण में मनाया भी जा सकता है, पर जब आये दिन यही प्रक्रिया चले तो उपेक्षा होने लगती है और अनुत्साह की मनःस्थिति में उनकी ज्यों-त्यों चिह्न पूजा भर कर दी जाती है। घर में पूड़ी-पकवान बनने के अतिरिक्त और कुछ ऐसा उत्सव-समारोह नहीं होता, जिससे उमंग उठे और प्रेरणा मिले।

इस स्थिति को बदला जाना चाहिये। अगणित पर्वों में से थाड़े-से चुन लिये जायें और उन्हें व्यवस्थित रूप से मनाने की प्रक्रिया अपनायी जाय। इस मनाने के उपक्रम में इस तथ्य का समावेश हो, कि उनमें सम्मिलित होने वाले कोई उपयोगी दिशाधारा प्राप्त कर सकें, कुछ सार्थक शिक्षा ग्रहण कर सकें।

इसके लिये आवश्यक है उन अवसरों पर भजन कीर्तन-प्रवचन का ऐसा आयोजन रखा जाये, जो उस पर्व के अनुरूप हो। उस जानकारी से उत्साह उमड़े और सुधार-परिष्कार के लिये उपयोगी मार्गदर्शन मिले।

प्रचलित पर्वों में से दस को प्रमुख माना जा सकता है। यह इसलिये भी कि उनमें न्यूनतम एक महीने का फासला है। थोड़े-थोड़े दिन का अन्तर रहे, तो व्यवस्था बन पाती है और उसे मनाने के लिये आवश्यक उमंग उठ पाती है।

यों भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अपने-अपने रीति-रिवाज हैं। तदनुरूप पर्वों में भी भिन्नता है। जहाँ जिसकी ज्यादा प्रचलन है, वहाँ उसे मनाने में उत्साह दिखाया जाये और उसी में प्रगतिशीलता की प्रेरणा ढूँढ निकाली जाये। साधारणतया कुछ पर्व ऐसे हैं, जो सर्वत्र समान रूप से मनाये जाते हैं। इसलिये उनकी जानकारी तो सभी को होनी चाहिये। उनका उद्देश्य तो समझा ही जाना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीपावली कार्तिक अमावस्या की होती है। इसे गणेश-लक्ष्मी की पूजा का विशेष पर्व माना जाता है। गणेश बुद्धि के देवता और लक्ष्मी सम्पन्नता की देवी हैं। इन्हें आन्तरिक और बाह्य प्रगति के माध्यम माना जा सकता है। इन्हें अधिकाधिक मात्रा में प्राप्त करने और उनके सदुपयोग में निरत रहने का हर कोई प्रयत्न करे—यह इस वर्ष की विशेष प्रेरणा है। यह दीप विजय का पर्व भी है। जिस अन्धेरी अमावस्या में सूर्य-चन्द्र का अनुदान उपलब्ध न था, उस अवसर पर छोटे दीपकों ने मिलकर सम्मिलित प्रयास किया, रातभर जलते रहे और अमावस्या को प्रकाश रात्रि में परिणत कर दिया। इससे शिक्षा मिलती है कि छोटे लोग भी यदि सम्मिलित प्रयास का महत्त्व समझें, तो वे भी अपनी विजय-दुन्दभी बजा सकते हैं।

दीपावली से प्रायः सवा मास बाद मार्गशीर्ष सुदी एकादशी को गीता जयन्ती आती है। भगवान का वास्तविक अवतरण गीता के उस उपदेश के साथ होता है, जिसने भयभीत अर्जुन को संघर्षरत बना दिया था। यों भाद्रपद वदी अष्टमी को कृष्ण जन्मोत्सव मनाया जाता है, पर श्रावणी और जन्माष्टमी में मात्र एक सप्ताह का अन्तर रहता है। इसलिये कृष्णोत्सव गीता-गायन के रूप में मार्गशीर्ष सुदी एकादशी को मनाया जाना ही उपयोगी लगता है। उसमें गीतोक्त कर्मयोग के, कर्त्तव्य धर्म के परिपालन की शिक्षा मिलती है।

इसके बाद तीसरा पर्व वसन्त पञ्चमी का माघ सुदी पञ्चमी को आता है। यह भगवती सरस्वती का दिन है। सरस्वती साहित्य, संगीत कला की देवी मानी जाती है। उसे शिक्षा और विद्या की अधिष्ठात्री भी कहा गया है। इस पर्व से विद्या विस्तार के लिये व्यापक प्रयत्न करने की दिशा मिलती है। निरक्षरता के उन्मूलन का प्रकाश मिलता है। संगीत, साहित्य और कला को भी उत्कृष्टता के साथ जोड़े जाने की प्रवृत्ति जगाने के लिये इस पर्व से प्रेरणा ली जा सकती है।

फाल्गुन १३ को महाशिवरात्रि आती है। शिव कल्याण स्वरूप हैं। उनके साथ जुड़े हुये गंगावतरण, चन्द्रधारण, सर्पों का गले लगाना, तृतीय नेत्र भी सक्षम रखना, त्रिशूल धारण करना आदि उपक्रमों की अपनी-अपनी महत्ता है। इनकी विस्तृत विवेचना की जा सकती है। सबसे बड़ी बात यह है कि उनने विष को खुला खेलने का अवसर नहीं मिलने दिया था। उसे समेटकर अपने ही कण्ठ में धारण कर लिया था अर्थात् अपने ही प्रयास से निरर्थक बना दिया था। आज अनैतिकता, अवांछनीयता एवं मूढ़ मान्यता का विष सर्वत्र संव्याप्त है। इन दुर्गुणों, दुर्व्यसनों एवं कुप्रचलनों से अपने विचारशील वर्ग को निरस्त करें, यह शिवरात्रि की प्रेरणा है। शिवरात्रि इन्हीं शिक्षाओं और प्रेरणाओं से ओत-प्रोत है।

इसके बाद होली का पर्व है। उसे सामूहिक श्रमदान का त्यौहार कहना चाहिये। सभी लोग मिल-जुलकर सफाई कार्य करने के लिये धूल-मिट्टी में सने रहना, खुशी-खुशी स्वीकार करें। कूड़ा कचरा एकत्रित कर उसे जला दें। यह परम्परा सामूहिक श्रमदान की महत्ता बताती है। यों इसके साथ सत्य निष्ठ प्रह्लाद का होली की अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण होने की बात भी जुड़ी हुई है। हमारी निष्ठा प्रह्लाद जैसी हो। दबाव और प्रलोभन के आगे झुकने से इन्कार कर दें।

पर्व गंगा दशहरा

गायत्री जयन्ती का है यह ज्येष्ठ सुदी दशमी को मनाया जाता है। गंगावतरण के साथ जुड़े हुये भागीरथ के अथक प्रयास को इस अवसर पर स्मरण किया जाता है। ज्ञान और विज्ञान की अधिष्ठात्री गायत्री प्रादुर्भाव इसी दिन हुआ था। उन महत्ताओं को स्मरण करने के लिये इस दिन को पर्व रूप में मनाया जाता है। गंगा के समान पवित्र और गायत्री की तरह प्रखर प्रामाणिक बनने की इस दिशा शिक्षा को हृदयंगम किया जा सकता है।

आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा

व्यास पूर्णिमा का पर्व है। गुरु की गरिमा है—अनुशासन। कर्त्तव्यपालन के साथ सघन अनुबन्ध में जुड़ना। अपने अन्दर यदि कुछ उच्छृंखलता तत्व प्रवेश कर गये हों तो उनका विशेष साहसपूर्वक निराकरण करना चाहिये।

श्रावण की पूर्णिमा श्रावणी के साथ कई दिशा धारायें जुड़ी हुई हैं। इस दिन हेमाद्रि संकल्प किया जाता है। पिछले दिनों बन पड़े

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाप-दोषों का प्रायश्चित किया जाता है। नया यज्ञोपवीत बदला जाता है ताकि उस सूत्र के साथ जुड़े हुये नौ विशिष्ट गुणों की अवधारणा अधिकाधिक परिपक्व हो सके। बहिन भाई को राखी बाँधती है। इसका अर्थ होता है—हर नर-नारी मात्र की पवित्रता और गरिमा का व्रत लें और उसकी सुरक्षा के लिये जो कुछ बन पड़े, सदा उसके लिये कटिबद्ध रहे।

श्रावणी के डेढ़ मास बाद विजयादशमी का त्यौहार आता है। उन्हीं दिनों आश्विन नवरात्रि भी होती है। साधना के लिये यह सर्वश्रेष्ठ अवसर है। लंका विजय का इतिहास भी इसी का स्मरण दिलाता है। असुरों के उन्मूलन में राम जैसा पराक्रम न बन पड़े तो रीछ-वानरों जैसी हिम्मत और तत्परता तो दिखानी ही चाहिये। यह शक्ति पर्व है। इसमें स्वास्थ्य संवर्धन के उपायों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

पर्वों के पीछे छिपे हुये इन निर्धारणों और प्रशिक्षणों को हमें स्वयं हृदयंगम करना चाहिये और सम्पर्क क्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को एकत्रित कर ज्ञान का ऐसा स्वरूप बनाना चाहिये, जिसमें प्रस्तुत पर्व की प्रेरणा और उसके क्रियान्वयन की योजना को भली प्रकार समझा जा सके। पर्व सत्प्रेरणाओं के स्रोत थे। उपेक्षा में वे चिन्ह-पूजा मात्र बनकर रह गये। अब हमें उनका पुरातन स्वरूप फिर से निखारना चाहिये, ताकि जन साधारण को प्रगति पथ पर अग्रसर होने का प्रोत्साहन एवं अवसर मिल सके।

संकल्प के जागरण से उल्लासवर्धन तक

ऋषियों-मुनियों के विकास के जितने भी महत्त्वपूर्ण आयाम हो सकते हैं, उन पर बड़ा गहरा चिन्तन करते हुये ऐसे निर्धारण किये हैं कि उनकी प्रभावोत्पादकता को देखकर आश्चर्यचकित होकर रह जाना पड़ता है। मनुष्य मानवी गरिमा के अनुरूप आचरण करता हुआ व्रतशील बन आदर्शों की दिशा में निरन्तर चलता रहे, परिवारों में सुसंस्कारिता का निरन्तर अभिवर्धन होता रहे तथा समाज सभ्य बन सतत् विकासोन्मुख होता चले, इसके लिये हमारी संस्कृति में व्रत, पर्व तथा त्यौहारों का प्रचलन रहा है। यहाँ तक कि एक लोकोक्ति बन गयी है—"हिन्दुओं में सात बार, नौ त्यौहार हैं।" पूरे वर्ष में एक भी दिन ऐसा नहीं है, जो पर्व न हो कोई तिथि ऐसी नहीं है, जिसमें कहीं भी किसी के द्वारा पर्व आयोजन न मनाया जाता हो।

चैतन्य सृष्टि की एक इकाई के रूप में मानवी चेतना को मानते हुये उसके सर्वांगपूर्ण विकास-परिष्कार का तथा उसके समूह के रूप में समाज के सर्वतोमुखी अभ्युदय का पथ प्रशस्त करने हेतु ही इनका प्रावधान देव संस्कृति के प्रणेताओं द्वारा किया गया है। व्रतों की परिभाषा करते हुये कहा गया है कि "अभीष्ट कर्म में प्रवृत्त होने का संकल्प ही व्रत है।" व्रतों व उपवासों में अन्तर समझना चाहिये, 'व्रत' संकल्पबद्ध होकर किसी कार्य की सिद्धि के लिये किया गया पुरुषार्थ है। 'उपवास' कायिक, वाचिक, मानसिक, शुद्धि के लिये निराहार रहकर अपना आत्मबल बढ़ाने की प्रक्रिया है। उपवास का शाब्दिक अर्थ है दुर्गुणों व दोषों से बचकर आत्मा अथवा गुणों के साथ वास अर्थात् निवास। कई व्रत ऐसे होते हैं, जिनमें उपवास जुड़ा होता है व कई व्रत चित्त, शुद्धि, आत्म परिष्कृति प्रधान होते हैं, आहार से उनका विशेष सम्बन्ध नहीं होता। कुछ प्राचीन विद्वान पुण्य प्राप्ति के आशय से किसी पुण्य तिथि में उपवास करने या किसी उपवास के कर्मानुष्ठान द्वारा पुण्य संचय करने के संकल्प को व्रत नाम से संबोधित किया है।

व्रत तीन प्रकार के बताये जाते हैं। नित्य व्रत, नैमित्तिक व्रत तथा काम्य व्रत। नित्य वे जिनका समय व माह में तिथि आदि निश्चित है यथा एकादशी प्रदोष आदि। नैमित्तिक जो किसी प्रयोजन विशेष से किये जायें यथा पापक्षय हेतु चान्द्रायणादि तथा काम्य वे, जो किसी विशेष कामना इच्छापूर्ति-अभीष्ट की इच्छा से किये जायें। विश्ववंद्य बापू ने व्रतों के दो ही प्रकार बताये हैं काम्य व नित्य। काम्य व्रत उनने व कहे हैं जो किसी विशेष कामना स्वार्थ को लेकर किये जाते हैं तथा नित्य वे जिनमें कोई कामना का समावेश नहीं होता वरन् अन्तःप्रेरणा वश किये जाते हैं। सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि सम्पन्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऋषिगणों ने व्रतादि उपक्रमों के मूल में शारीरिक शुद्धता व मानसिक पवित्रता पर अत्यधिक बल दिया है। आदिकाल से उनकी धारणा रही है कि दैनन्दिन जीवन में अपना कर्म पुरुषार्थ करते रहने वाले साधारण व्यक्ति से चिंतन सम्बन्धी भूलें होते रहना व भटकाव स्वाभाविक है। उनसे मुक्त होने हर पखवाड़े विभिन्न तिथियों में व्रतादि विधानों द्वारा शरीर की शुद्धि हेतु तपश्चर्या का तथा मन को मजबूत बनाने के लिये संकल्प शक्ति के निर्वाह का उपक्रम चलता रहने से व्यक्ति की जीवन यात्रा सही ढंग से चलती रह सकती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इच्छायें जब परिष्कृत स्थिति में त्राण की ललक के साथ जन्म लेती हैं तो कल्पना जगत् में वे दृढ़ होते-होते संकल्प का रूप ले लेती हैं। व्रतों में यही संकल्प, क्रिया में बदल जाता है। हलका भोजन, भूमिशयन, ब्रह्मचर्य तथा श्रेष्ठ चिंतन हेतु स्वाध्याय यह क्रम व्रतों से पूर्व से ही आरम्भ हो जाता है। व्रत खण्डित न हो इसके लिये संकल्प लिया जाता है व यथाशक्ति उसका निर्वाह किया जाता है। छोटे-छोटे व्रत जब निभने लगते हैं तो व्यक्ति का आत्म-विश्वास-मनोबल सतत् बढ़ने लगता है। फिर बड़े-बड़े संकल्प लेने में उसे झिझक नहीं होती। प्राचीनकाल का व्यक्ति मानसिक दृष्टि से स्वस्थ व दृढ़ मनोबल सम्पन्न था तो उसका मूलकारण था, नित्य नैमित्तिक व्रतों की इस परम्परा का सतत् निर्वाह। प्रगतिशील प्रेरणाओं, कथाओं, माहात्म्य आदि का समावेश कर ऋषियों ने इस उपक्रम को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाकर लोक को धर्म प्रधान बनाने का जो पुरुषार्थ सम्पन्न किया, उसकी जितनी सराहना की जाये, कम है।

संकल्प शक्ति की अभिवृद्धि, कषाय-कल्मषों के निराकरण तथा वर्चस् के जागरण हेतु परम पूज्य गुरुदेव ने चान्द्रायण व्रतों की परम्परा चलाई व इनके शिविर सतत् पहले मथुरा, फिर शांतिकुंज हरिद्वार में सम्पन्न कराये। इनका मत था कि दुष्कर्मों के कारण चित्त पर जमे कुसंस्कारों की मोटी परतें ही आत्मिक प्रगति के क्षेत्र में सर्वाधिक बाधा उत्पन्न करती हैं। उन्हें हटाने के लिये आत्मशोधन की तप-साधना जरूरी है ताकि योग साधनाओं के उपासनादिक्रम इस माध्यम से उर्वर बनी मनोभूमि से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकें। चान्द्रायण व्रत में पाँच महत्त्वपूर्ण पक्ष जुड़े हुये हैं। ये हैं गुप्त पापों का समर्थ सत्ता के समक्ष प्रकटीकरण, आन्तरिक परिवर्तन कर सकने वाले वातावरण में निवास तथा अनुशासन का प्रतिपालन, अन्तःकरण को परिष्कृत करने वाले योगाभ्यास युक्त तप साधना, दुष्कर्मों की क्षतिपूर्ति और पुण्य संवर्धन की परमार्थ परायणता तथा महीने भर तक आहार क्रमशः घटाने व फिर बढ़ाने वाला उपवास का क्रम। पूर्णिमा को पूरा भोजन कर प्रतिदिन उसका चौदहवाँ अंश घटाते चले जाना तथा अमावस्या तक निराहार की स्थिति से क्रमशः धीरे-धीरे बढ़ाकर पूर्णिमा तक पूर्ण आहार तक पहुँचने की पूरी प्रक्रिया इतनी विज्ञान सम्मत है कि यह समग्र शरीर सत्ता से लेकर अन्तःकरण चतुष्टय का कायाकल्प करने की सामर्थ्य रखती हैं। मन की ग्रन्थियों के खुलने से मनका आमूल चूल उपचार हो जाता है, जो कि सभी विकृतियों व रोगों की जड़ मानी गयी है। व्रतशीलता के जागरण; काया संस्थान की ओवर हालिंग तथा आत्म शक्ति के उद्भव के लिये चान्द्रायण से श्रेष्ठ कोई उपक्रम नही है। मुस्लिम संम्प्रदाय में चान्द्रायण का ही एक रूप रमजान के रोजों के रूप में प्रचलित है, जिसे उनके यहाँ बड़े निष्ठापूर्वक निभाया जाता है।

पर्व-व्रतों के बड़े भाई के रूप में माने जाते हैं। समूह में सम्पन्न किये जाने वाल व्रत या सामूहिक उद्यापन पर्व कहलाते हैं हमारी संस्कृति में जहाँ तीर्थ यात्रा व तीर्थों से वन को एक बड़े राष्ट्र के साक्षात्कार की प्रक्रिया माना गया है, वहाँ पर्वोत्सवों को सतत् प्रवाहशीलकाल के प्रतीक रूप मनाया जाता है। पर्वोत्सव मनाने का प्रयोजन है ऋतु परिवर्तन का महत्त्व समझना, ऋतुचक्र और मनुष्य के जीवन चक्र में समानता देखना और काल को प्रवाह के रूप में एक खण्ड के रूप में नहीं, सतत् चलायमान समय की धारा के रूप में देखना। पर्व की शाब्दिक व्याख्या की जाये तो उसका अर्थ होता है—गाँठ संधिकाल। जैसे बाँस का एक कल्ला फूटता है तो एक पोर छूटता चला जाता है। पर्व इस तरह से वृद्धि के सूचक हैं तथा दो समय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विशेष प्रक्रिया विशेष के मिलन की अवधि में आ रहे हैं। पर्व का एक और अर्थ है रिक्तता में पूर्णता का भाव भर देना। पर्व मनाने का प्रयोजन इस प्रकार से जहाँ एक ओर अपने भीतर अखण्डता व पूर्णता का भाव भरना है, वहाँ दूसरी ओर समय के विशेष क्षण को पहचानना है, जब प्रकृति में एक विशेष परिवर्तन आता है। इसी कारण पर्व प्रतिमास अमावस्या तथा पूर्णिमा इन दो संधि उपक्रमों में सर्वाधिक मनाये जाते हैं।

ऋषियों की यह मान्यता है कि अमावस्या के दिन सोम आदित्य के द्वारा आत्मसात किया जाता है अर्थात् सोम की आहुति अग्नि में होती है। जिस प्रकार सोम नया होकर एक-एक कला बढ़कर के पूर्णिमा के दिन पूर्ण होता है। इसी प्रकार जीवन भी एक सोमयज्ञ है, जिसमें जीवन निःशेष होता है, पुनः एक-एक कला बढ़ते-बढ़ते पूर्ण होता है। निःशेष होने की तिथि व पूर्ण होने की तिथि दोनों ही इसलिये बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। माघ की मौनी अमावस्या कार्तिकी अमावस्या (दीपावली), आश्विन अमावस्या (सर्व पितृ अमावस्या) तथा सोमवती अमावस्या का हमारे यहाँ विशिष्ट महत्त्व है। इसी प्रकार कार्तिकी पूर्णिमा, फाल्गुन पूर्णिमा (होलिका) वैशाख पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा) श्रावण पूर्णिमा (रक्षाबन्धन), आषाढ़ पूर्णिमा (गुरुपूर्णिमा) तथा आश्विन पूर्णिमा (शरद् पूर्णिमा) को पर्वों की श्रेणी में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। ये सभी हमारे यहाँ सामूहिक रूप से मनाये जाते हैं। ऋतु संधिकाल पर चैत्रमास में ठण्डक के जाने व गर्मी आने की मिलन बेला पर चैत्र नवरात्रियों तथा अश्विन मास में वर्षा के जाने व शरद ऋतु के आगमन की मिलनबेला पर मनायी जाने वाली शारदीय नवरात्रियों का महत्त्व सर्वविदित है।

पर्व-त्यौहारों को सामाजिक संस्कार की प्रक्रिया कहा गया है। व्रत साधना से व्यक्तित्व, संस्कारों से परिवार तथा पर्वोत्सवों से समाज का स्तर ऊँचा उठाने की हमारी इस ऋषि पद्धति को उनने दूरदर्शितापूर्ण बताते हुये इनके माध्यम से लोकशिक्षण-लोकरंजन की प्रवृत्तियों को उभारने की बात कही है। त्यौहार वस्तुतः पर्वों व व्रतों के सम्मिश्रित रूप हैं। जन-जन की भावनाओं के परिष्कार हेतु बहुरंगी व्यक्तित्व के बहुआयामीय-बहुविध पक्षों के प्रकटीकरण हेतु देव संस्कृति में त्यौहारों का प्रावधान किया गया है। ऋषिगण जानते थे कि मनुष्य असामाजिक व विक्षिप्त भावनाओं के दमन व विकृत होने से ही होता है। यदि भावनाओं को परिष्कृत उल्लास में बदलकर समूह की शक्ति का उसमें समावेश किया जा सके व उसे एक आध्यात्मिक उत्सव का रूप दिया जा सके तो इससे समाज स्वस्थ बना रहेगा। यही कारण है कि पर्व-त्यौहारों की हर ऋतु संधिबेला में बहुतायत हमारे यहाँ पायी जाती है।

पर्व-त्यौहारों में कुछ तो ऐसे हैं, जिनका समय हमारे यहाँ निश्चित है। संध्यादि से लेकर दीपावली होली, एकादशी, चतुर्थी आदि नित्यपर्व कहे जाते हैं। कुछ पर्व किसी निमित्त से आते हैं यथा ग्रहण, कुम्भ, संतति, जन्मोत्सव, ग्रह-नक्षत्रादि के योग अथवा घटना के प्रभाव से होने वाले ये पर्व नैमित्तिक पर्व कहलाते हैं। किसी कामना से किन्हीं समय विशेषों में सम्पन्न किये जाने वाले पर्व काम्य पर्व कहलाते हैं यथा वट सावित्री, करवाचौथ, हरितालिका इत्यादि। गणेश चतुर्थी आदि देवपर्व हैं तो पितरों के श्राद्ध तर्पण के पर्व पितृपर्व। कुछ कालपर्व हैं यथा संवत्सर का शुभारंभ, युग की प्रारम्भ तिथि, वर्ष के प्रारम्भ की तिथि। जयंती पर्व में श्री कृष्ण जन्माष्टमी व श्री रामनवमी प्रमुख हैं प्राणी पर्वों में नागपंचमी, गोपाष्टमी, प्रमुख माने गये हैं। इस प्रकार अगणित विभाजन पर्वों के करने पर यह ज्ञात होता है कि प्रायः वर्ष के आधे दिन हमारे यहाँ प्रेरणा तथा उल्लास के साथ सम्पन्न होते रहे हैं। तुलनात्मक दृष्टि से अन्यान्य धर्मों पर दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि उनके यहाँ वर्ष में दो या तीन ही ऐसे त्यौहार हैं, जब वे सामूहिक रूप से एकत्र होते हैं। कुछ पर्व उनके यहाँ शोक प्रधान हैं, जबकि भारतीय अध्यात्म का दृष्टि विधेयात्मक ही रही है व उल्लास की सृष्टि की बात ही प्रतिपादित करती आयी है।

प्रत्येक पर्व का प्रेरणाप्रद हर्षोत्सव के रूप में मनाकर ग्रामीण स्तर से लेकर साधन सम्पन्न शहरी वर्ग तक जन जागरण की तथा धर्मचेतना के विस्तार की प्रक्रिया को सम्पन्न करते रहने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का दायित्व परम पूज्य गुरुदेव ने इन निर्देशों के अनुसार पूरी तरह निभाया है। राष्ट्र के सांस्कृतिक पुनरुत्थान, आध्यात्मिक नवान्मेष का इससे श्रेष्ठ कोई आधार नहीं हो सकता। बारह त्यौहारों व दो नवरात्रियों को मिलाकर कुल चौदह प्रमुख पर्व गायत्री परिवार द्वारा भारत व विश्वभर में उल्लासपूर्वक मनाये जाते हैं व प्रत्येक में कर्मकाण्ड संपादन के अतिरिक्त धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण-लोकरंजन से लोकमंगल की प्रक्रिया सम्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक मास की पूर्णिमा को राष्ट्र भर में तथा शान्तिकुंज केन्द्र में दीपयज्ञ के साथ संस्कारादि भी सम्पन्न किये जाते हैं। दो राष्ट्रीय पर्वों को भी सभी परिजन उसी उत्साह से मनाते हैं।

ये चौदह प्रमुख पर्वोत्सव हैं: (१) चैत्र नवरात्रि (चैत्रशुक्ल १ से चैत्रशुक्ल ६ तक), (२) रामनवमी (चैत्रशुक्ल नवमी), (३) गायत्री जयन्ती (गंगादशहरा-ज्येष्ठ शुक्ल दशमी), (४) गुरुपूर्णिमा (आषाढ़ पूर्णिमा), (५) श्रावणी-रक्षाबन्धन—(श्रावण पूर्णिमा), (६) श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी), (७) सर्वपितृ अमावास्या, (८) शारदीय नवरात्रि (आश्विन शुक्ल १ से नवमी तक), (९) विजयादशमी (दशहरा-आश्विन शुक्ल दशमी), (१०) दीपावली (कार्तिक कृष्ण अमावस्या), (११) गीता जयन्ती (मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी), (१२) बसन्त पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी), (१३) शिवरात्रि (फाल्गुन कृष्ण (त्रयोदशी) तथा (१४) होलिका (फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा)। प्रत्येक पर्वायोजन के साथ गायत्री यज्ञ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

वर्ष में दो बार आने वाला नवरात्रि पर्व नये शुभारम्भ का पर्व है। उपासना के लिये आत्मशक्ति उपार्जन के लिये दोनों ही नौ दिवसीय पर्वों का अपना विशिष्ट स्थान है। इन दिनों की गयी सामूहिक साधना कषाय-कल्मषों का निवारण तो करती ही है, परोक्ष जगत के संशोधन की उपचार प्रक्रिया भी सम्पन्न करती है। मर्यादापालन, कर्त्तव्यनिष्ठा, व्यवहार में सौजन्य तथा अनीति के विरुद्ध संघर्ष इन चारों लक्ष्यों की प्रेरणा के साथ श्री रामजन्म का राम नवमी पर्व मनाया जाता है। वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता गायत्री एवं पुण्यातोया गंगा के धरा पर अवतरण का पर्व है गायत्री जयंती-गंगादशहरा। परम पूज्य गुरुदेव ने इसी पावन दिन की प्रातःकाल बेला में स्थूल शरीर से महाप्रयाण किया था। पूरा गायत्री परिवार इसे संकल्प पर्व के रूप में मनाता है। गुरुपूर्णिमा अनुशासन पर्व माना जाता है। गुरुतत्व का पूजन कर उनके आदर्शों के अनुरूप चलने का प्रण शिष्यगण इस दिन लेते हैं। प्रायश्चित संकल्प (हेमाद्रि) कर अपने ऋषित्व के अभिवर्धन हेतु श्रावणी पर्व मनाया जाता है। श्रीकृष्ण का जन्मदिन कृष्ण जन्माष्टमी तथा कर्म दिन गीता जयंती के दिन मनाया जाता है। निष्काम कर्मयोग तथा लोकमंगल में साधनों का नियोजन, एक समग्र व्यक्तित्व का निर्माण इन दानों पर्वों की प्रेरणायें हैं। श्राद्धतर्पण के सभी संस्कार पितृ अमावस्या के दिन सम्पन्न किये जा सकते हैं। विजयादशमी, शौर्य, शक्ति व स्वास्थ्य संवर्धन का प्रतीक पर्व है तो दीपावली अर्थ के सुनियोजन से लेकर आदर्शवादी सत्साहस के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। बसंत पंचमी कला, उल्लास, विद्या का पर्व है। परम पूज्य गुरुदेव के आध्यात्मिक जन्म दिवस के रूप में इसे सारा गायत्री परिवार बोध दिवस-वार्षिकोत्सव के रूप में मनाता है महाशिवरात्रि पर्व शुभ कल्याणकारी चिंतन को अंगीकार किये जाने के रूप में तथा होलिका पर्व नवान्नयज्ञ के उपलक्ष्य में हर्षोल्लास के उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

वस्तुतः वर्ष के आरम्भ से अन्त तक पर्व तथा उत्सव उल्लासपूर्वक मनाये जाने की परिपाटी देवमानवों की जीवन जीने की शैली की सूचक है। व्रत, पर्व, त्यौहार हमारी संस्कृति की ऐसी स्थापनायें हैं, जो व्यक्ति को व्रतों के द्वारा अन्तर्मुखी करने के साथ-साथ समष्टि चेतनसत्ता से एकाकार होने की व्यवस्था जुटाते हैं। आधुनिक युग में भी ये पूर्णतः प्रासंगिक है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पर्व एवं त्यौहार प्रकरण

हिन्दू धर्म में प्रचलित व्रत, पर्व एवं त्यौहारों की संख्या लगभग ४५० हैं, जबकि वर्ष में ३६५ दिन ही होते हैं। अतः उन सबका समारोह-पूर्वक आयोजन करना हर किसी के लिए न तो संभव है और न ही आवश्यक। इतने अधिक पर्वों में से वस्तुतः कुछ ही महत्वपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण हैं जिन्हें प्रायः सभी हिन्दू धर्मावलम्बी किसी न किसी रूप में मनाते ही हैं हिन्दी महीने के क्रम से वे इस प्रकार हैं—

(१) चैत्र में—नव संवत्सर, रामनवमी, शीतलाष्टमी (२) वैशाख में—अक्षय तृतीया (३) ज्येष्ठ में—गंगा दशहरा, गायत्री जयन्ती, निर्जला एकादशी (४) अषाढ़ में गुरु पूर्णिमा, (५) श्रावण में—हरियाली अमावस्या, हरियाली तीज, श्रावणी और रक्षाबन्धन (६) भाद्रपद में—श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, ऋषि पंचमी, अनन्त चतुर्दशी (७) आश्विन मास में—सर्वपितृ अमावस्या, नवरात्रि, विजयादशमी (८) कार्तिक माह में—दीपावली, गोवर्धन पूजा और अन्नकूट, भैया दूज या यम द्वितीया सूर्य षष्ठी, गोपाष्टमी, देवोत्थानी एकादशी, भीष्म पंचक (९) मार्ग-शीर्ष में—गीता जयन्ती (१०) पौष-मास में—मकर संक्रान्ति (११) माघ माह में—वसंत पंचमी और (१२) फाल्गुन में—महाशिवरात्रि एवं होली। इसके अतिरिक्त भारत में कई प्रान्तों में पोंगल, ओणम, बिहू आदि जैसे उत्सव भी बड़े धूमधाम से उत्साहपूर्वक मनाये जाते हैं।

।। उपयुक्त पर्वों का चुनाव ।।

हिन्दू धर्म में प्रचलित उक्त पर्वों की संख्या बहुत अधिक होने के कारण सामूहिक पर्वायोजन के वही पर्व चुने जाने चाहिए, जिनका महत्व भी बहुत माना जाता हो और उनमें प्रेरणायें भी सशक्त उभारी जा सकती हों। ऐसे पर्वों को भी क्षेत्र-क्षेत्र के अन्तर से कहीं कम कहीं अधिक मान्यता प्राप्त होती है। अपने क्षेत्र में जिन पर्वों का महत्व अधिक माना जाता हो और उन्हें सामूहिक रूप से मनाया जाना सम्भव हो, उन्हें मनाने का क्रम बना लिया जाना चाहिए। वर्ष में ४-६ बार हर्षोल्लास के वातावरण में सामूहिक पर्व मनाने की व्यवस्था बनायी जा सके तो क्षेत्र में सामाजिक चेतना को जीवन्त और प्रगतिशील बनाये रखने में बड़ी सुविधा मिल सकती है। इस प्रकरण में कुछ सर्वमान्य महत्वपूर्ण पर्व मनाने की पद्धतियाँ दी गयी हैं। अपनी परिस्थितियों और क्षमता को देखते हुए यह निर्णय विवेकपूर्वक किया जा सकता है कि कौन-कौन से कितने पर्व सामूहिक रूप से मनाये जायें।

जहाँ गायत्री शक्ति-पीठें प्रज्ञा-पीठें अथवा गायत्री परिवार युग निर्माण अभियान की सक्रिय शाखायें हैं, वहाँ चैत्र और आश्विन नवरात्रियों में सामूहिक साधना क्रम चलाने का प्रयास तो अनिवार्य रूप से करना ही चाहिए। पूर्णाहुति के साथ रामनवमी पर्व को भी जोड़ा जा सकता है।

आश्विन नव रात्रि के साथ दशहरा पर्व जुड़ा रहता है। उसमें साधना अनुष्ठान की व्यवस्था को एक दिन तक और बनाये रखकर, थोड़ा-सा हेर-फेर करके ही यह पर्व भी साधना शृंखला के अन्तर्गत ही मनाया जा सकता है। नवरात्रि साधनाओं के साथ पर्वों को जोड़ना आवश्यक नहीं है, किन्तु बगैर किसी अतिरिक्त दवाव के नाम मात्र का समय और श्रम जोड़कर यह पर्व उस शृंखला में जोड़े जा सकें तो अच्छा ही है।

इस पुस्तक में जिन प्रमुख पर्वों के विधान दिये गये हैं वे इस प्रकार हैं—(१) चैत्र नवरात्रि-चैत्र शुक्ल १ से चैत्र शुक्ल ६ तक (२) रामनवमी—चैत्र शुक्ला नवमी (३) गायत्री जयन्ती—गंगादशहरा—ज्येष्ठ शुक्ला दशमी (४) गुरूपूर्णिमा-आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा (५) श्रावणी—रक्षा बन्धन—श्रावण शुक्ल पूर्णिमा (६) कृष्ण जन्माष्टमी-भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (७) सर्वपितृ अमावस्या-आश्विन की अमावस्या (८) शारदीय नवरात्रि—आश्विन शुक्ल १ से नवमी तक (९) विजयादशमी—दशहरा—आश्विनशुक्ल दशमी (१०) दीपावली—कार्तिक कृष्ण अमावस्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(११) गीता जयन्ती-मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी
(१२) वसन्त पंचमी-माघ शुक्ल पंचमी
(१३) शिवरात्रि—फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी
(१४) होली—फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा। शेष पर्वों को उसी क्रम से संक्षिप्त रूप से वर्णन किया गया है।

इनमें दोनों नवरात्रियों के विधि-विधान एक जैसे ही हैं। कृष्ण जन्माष्टमी तथा गीता जयन्ती दोनों के विधान एक जैसे हैं प्रेरणा की दृष्टि से दोनों में से कोई एक पर्व मना लेना पर्याप्त मान लेना चाहिए। यह सभी पर्व मनाये जायें अथवा इनके अतिरिक्त कोई अन्य पर्व सामूहिक रूप से न मनायें ऐसा कोई नियम-बन्धन नहीं है। अपने क्षेत्र में प्रचलित महत्ता तथा आयोजन की व्यावहारिक सुविधा संभावना को लक्ष्य करके इनमें से उपयुक्त पर्वों को सामूहिक आयोजन का रूप देने के लिए चुना जा सकता है।

कुछ क्षेत्रों में इनके अतिरिक्त कई पर्वों को बहुत अधिक मान्यता प्राप्त है, उन्हें भी सामाजिक चेतना जागरण के लिए सामूहिक आयोजन का रूप दिया जा सकता है। यद्यपि उन सब के स्वतन्त्र विधान हैं। फिर भी जिस प्रेरणा प्रद ढंग से इन पर्वों को मनाने का क्रम बनाया गया है, उसी ढंग से अन्य किसी पर्व को मनाने की विधि व्यवस्था बनाई जा सकती है। पर्वायोजन का सर्वसुलभ प्रारूप नीचे दिया जा रहा है। इस पुस्तक में जिन पर्वों के विधि-विधान दिये गये हैं वे, भी इसी अनुशासन के अन्तर्गत हैं।

।। अनेक पर्वों का एक प्रारूप ।।

प्रारम्भ में ही उल्लेख किया जा चुका है कि पर्वों की परिपाटी समाज में प्रेरणा और उल्लास के जागरण की दृष्टि से आवश्यक है। उन्हें मनाने के विधान भी इसी ढंग से बनाये गये हैं, जिनसे अभीष्ट उद्देश्य पूरा हो सके। किसी पर्व के लिए विधि-विधान का क्रम इस प्रकार रहता है।

पर्व के प्रमुख देवता के चित्र सहित पूजन मंच सजाया जाय। इसके दोनों ओर कलश एवं दीपक स्थापित किये जायें।

• पर्वायोजन के साथ गायत्री यज्ञ अवश्य जोड़कर रखना चाहिए। उससे स्थूल तथा सूक्ष्म वातावरण में जो प्रभाव पैदा होता है, वह अन्य प्रकार सम्भव नहीं होता। यदि किसी कारण यज्ञ असम्भव सा लगे तो दीप यज्ञ करके काम चला लेना चाहिए।

• यज्ञ करना हो तो देव मंच के सामने यज्ञ वेदी बनाई जाय। यदि उठाने रखने योग्य (पोर्टेबिल) यज्ञ कुण्ड है तो वह भी रखा जा सकता है। वेदी का धरातल देवमंच से तो नीचा हो, किन्तु अन्य लोगों के बैठने के धरातल से ऊँचा होना चाहिए।

• यदि यज्ञ करने की स्थिति नहीं है तो वेदी के स्थान पर सजाई हुई चौकियों पर थालियों में दीप यज्ञ के लिए २४ दीपक रखे जाने चाहिए।

• श्रद्धालु आगन्तुकों को हाथ-पैर धुलाकर पंक्तिबद्ध बिठाया जाय। निर्धारित समय पर पहले युग संगीत, भजन, कीर्तन का क्रम प्रारम्भ कर दिया जाय। इससे वातावरण में सरसता और गम्भीरता आती है।

• मंच पर पूजन तथा यज्ञ के लिए प्रतिनिधि रूप में जहाँ तक हो सके कुमारी कन्याओं को बिठाया जाय। वह कन्यायें पीले वस्त्र पहने हों तथा पूजन यज्ञ आदि के क्रम अनुशासन से भली प्रकार परिचित, उसकी अभ्यस्त हो, उनकी संख्या दो से पाँच तक हो सकती है।

• संगीत के बाद संक्षेप में पर्व के उद्देश्य और अनुशासन पर सबका ध्यान आकर्षित किया जाय। यह गिने-चुने शब्दों में हो। कहीं भी भाषण जैसा लम्बा क्रम न चले। विभिन्न कर्मकाण्डों के साथ खण्ड-खण्ड में संक्षिप्त एवं सारगर्भित प्रेरणायें उभारने का क्रम चलाया जाना चाहिये।

• कर्मकाण्ड प्रारम्भ करने से पूर्व सबसे सामूहिक सस्वर गायत्री मन्त्र का उच्चारण एक बार कराया जाय।

• पवित्रीकरण मन्त्र के स्वयंसेवक कलश हाथ में लेकर पुष्प या पल्लवों से सबके ऊपर जल का सिंचन करें। कलशों की संख्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपस्थिति के अनुरूप कम या अधिक निर्धारित कर लेनी चाहिए।

प्रतिनिधियों-कन्याओं से पूरे षट्कर्म करायें जायें। सभी भक्ति भावना से साथ दे।

• सभी उपस्थित जनों के हाथ में अक्षत पुष्प पहुँचा दिये जायें। इन्हें वे श्रद्धापूर्वक हाथ में लिए रहें, पूजन का भाव बनाये रहें।

• चन्दन धारण के क्रम में सभी के मस्तकों पर चन्दन लगाया जाय। घिसा हुआ चन्दन अथवा गोपी चन्दन (पीला रंग मिला खड़िया मिट्टी का गाढ़ा घोल) प्रयुक्त किया जा सकता है। रोली का भी प्रयोग हो सकता है। इनके साथ थोड़ा कपूर मिलाकर रखा जाय तो इसकी सुगन्धि और ठण्डक श्रद्धा संचार में सहायक सिद्ध होती है।

• कलश पूजन से रक्षा विधान तक का क्रम पूरा किया जाय। समय कम हो तो विवेकपूर्वक कुछ अंश घटाये जा सकते हैं।

• पर्व देवता के विशेष पूजन के लिए भावनायें उभारी जायें। उनकी विशेषताओं पर संक्षिप्त प्रकाश डाला जाय। प्रेरणा उभारने के लिए देवता—उनके पूरक अंग वाहन, आयुध, आभूषण सहयोगी आदि का भी उल्लेख किया जा सकता है। एक-एक का उल्लेख करें और उनका आबाहन किया जाय। इससे प्रेरणा और श्रद्धा का मिला-जुला सशक्त वातावरण बन जाता है।

• आबाहन, नमन के बाद उन सबका संयुक्त षोडशोपचार पूजन पुरुष या स्त्री सूक्त से किया जाय।

• पूजन पूरा होने पर उनके आदर्शों के अनुरूप कोई छोटा-सा ही सही किन्तु सुनिश्चित नियम धारण करने की प्रेरणा देते हुए पूर्व प्रसाद संकल्प बोला जाय।

• संकल्प के बाद प्रारम्भ में दिये गये पुष्प-अक्षत आदि एकत्र करके देव मंच पर अर्पित कर दिये जायें।

• संकल्प प्रसाद को धारण किये रह सकने की सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए यजन (यज्ञ) करने की महत्ता कहलाते हुए यज्ञ या दीपयज्ञ सम्पन्न कराया जाय। यज्ञ किया जाय तो यज्ञ आरती के साथ पर्वदेवता की आरती भी करें। दीप यज्ञ करें तो उसी के बाद पर्वदेवता की आरती भी करें। अन्त में आरती सबके बीच घुमा दी जाय।

• अन्त में विसर्जन जयघोष आदि कराये जायें। युग निर्माण सत्संकल्प दुहराया जाय। प्रसाद वितरण के साथ क्रम समाप्त किया जाय।

यह क्रम प्रत्येक पर्व के लिए एक जैसा है। पर्वदेवता के अनुरूप उनके पूरक अंग, आयुध-आभूषण वाहन आदि का अन्तर पर्व-पर्व में पड़ता है। पर्व प्रसाद संकल्प में भी गुण विशेष धारण करने का क्रम बदलता है।

जिन पर्वों के विधान दिये गये हैं, उनके तो हैं ही जिनके नहीं है, उन्हें मनाना हो तो विवेकपूर्वक उनके लिए ऐसे ही प्रेरणाप्रद माध्यम निर्धारित कर लेने चाहिए। आवाहन के लिए सामान्य प्रकरण मंगलाचरण आदि से कोई मन्त्र चुनकर किऐ जा सकते हैं। इस प्रकार एक ही अनुशासन में नवीनता, रोचकता, विविधता का समावेश किया जाना सम्भव है।

।। पर्व व्यवस्था सूत्र-संकेत ।।

• जो पर्व मनाया जाना है उसके बारे में लगभग एक माह पूर्व निर्णय कर लेना चाहिए। परिजन जहाँ-तहाँ उसकी उत्साहवर्धक चर्चा करते रहें, अपने परिचितों से उसमें शामिल होने का आग्रह भी करते रहें। सप्ताह या ३-४ दिन पूर्व पुरुष एवं महिला टोलियाँ पीले चावल घर-घर देकर आमन्त्रण दें। आवश्यक समझा जाय तो छोटे पर्चे भी छपवाकर बाँटे जा सकते हैं।

• पर्वायोजन का समय ऐसा रखा जाय जब नर-नारियों को उसमें सम्मिलित होने में कठिनाई न हो।

• आयोजन स्थल पर सुन्दर मण्डप सजाकर पर्व देवता की झाँकी सजाई जाय। आमन्त्रित व्यक्तियों को क्रमबद्ध ढंग से बिठाये जाने का प्रबन्ध रखा जाय।

• पर्व पूजन के लिए जितने श्रद्धालू नर-नारी उपस्थित होने की सम्भावना हो, उनके लिए क्रमबद्ध ढंग से बैठने योग्य स्थान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आयोजन स्थल पर होना चाहिए। स्थान का चयन अथवा व्यक्तियों का आमन्त्रण उसी हिसाब से किया जाना चाहिए।

• अभ्यागतों के जूते, चप्पल, उतरवाने, उन्हें व्यवस्थित रखने तथा सुरक्षा के लिए स्वयंसेवक नियुक्त रखना चाहिए।

• पुरुषों, महिलाओं को क्रमबद्ध ढंग से बिठाने के लिए अनुभवी और शालीन परिजन नियुक्त किये जावें। बच्चों की आदत आगे घुसने की होती है, उन्हें काबू में रखा जाय। छोटे बच्चों वाली महिलायें एक ओर बिठाली जायें ताकि बच्चे गड़बड़ करें तो उन्हें उठकर-जाने में कठिनाई न हो।

• पर्व पूजन के समय सबके पास अक्षत-पुष्प पहुँचाने, तिलक लगाने, सिंचन करने आदि के लिए सधे हुए परिजनों को पहले से नियुक्त करके रखा जाय।

• पर्वायोजन-पूजन से सम्बन्धित सभी वस्तुयें समय से पूर्व एकत्र कर लेनी चाहिए तथा उन्हें एक बार चैक करके यथास्थान रख देना चाहिए ताकि समय पर विसंगतियाँ न उठें।

• समय का ध्यान रखा जाय। पर्व पूजन का समय निर्धारित करते समय भली प्रकार सोच समझ लें कि कौन-सा समय लोगों के लिये अनुकूल पड़ेगा। सुविधाजनक समय घोषित करने के बाद समय का अनुशासन पाला जाय। क्रम समय पर आरम्भ कर दिया जाय तथा समय पर समाप्त भी कर दिया जाय। इससे लोगों का समय नष्ट नहीं होगा और भावी आयोजनों के लिए जन उत्साह बढ़ेगा।

• वातावरण को रमणीक, पवित्र बनाने का प्रयास करें। बन्दनवार सज्जा, झण्डियाँ, बैनर आदि लगाये जायें। शान्ति बनाये रखकर, अगर बत्तियाँ लगाकर वातावरण में श्रद्धा का संचार किया जाय। इस प्रकार के छोटे-बड़े उपचारों से वातांवरण में भव्यता भर जाती है।

• आयोजन को खर्चीला न बनने देने का ध्यान प्रारम्भ से ही रखा जाय। प्रसाद में भी पंचामृत, चीनी की गोलियाँ (चिनौरी, चिरौंजीदाना) पंजीरी जैसी कोई एक ही सस्ती वस्तु रखी जाय।

पर्व देवता का षोडशोपचार पूजन

प्रत्येक पर्व का प्रायः एक जैसा ही पूजा विधान है। पर्व के प्रधान देवी या देवता का चित्र स्थापना, उसके मण्डप को सुसज्जित बनाना, पुरुष, सूत्र के या श्री सूक्त के सोलह मन्त्रों से षोडशोपचार पूजन। अन्त में उपस्थित सभी लोगों द्वारा 'यज्ञीय यज्ञ' मन्त्र से पुष्प अथवा पीले चावलों से पुष्पाञ्जलि अर्पण।

श्रावणी पर्व की कुछ विशेष विधि व्यवस्था है उसे भी इसी प्रकरण में दिया गया है।

'राम नवमी को भगवान राम का, श्रावणी को यज्ञ भगवान का गीता जयन्ती को भगवान कृष्ण का पूजन पुरुष-सूक्त के द्वारा किया जाय। बसन्त पंचमी को सरस्वती एवं लाल मशाल का गायत्री जयन्ती का गंगा दशहरा को गायत्री एवं गंगावतरण का, विजयादशी को दुर्गा का पूजन श्री सूक्त के सोलह मन्त्रों से किया जाय। पुरुष देवताओं का पुरुष सूक्त से और नारी देवताओं का श्री सूक्त से पूजन किया जाता है। पूजा में सोलह वस्तुयें काम आती हैं। इसे षोड़शोपचार पूजन कहा जाता हे। किस मन्त्र से क्या वस्तु देवता को अर्पित की जाय उसका उल्लेख साथ ही किया गया है।

पुरुष सूक्त द्वारा देव-पूजन

निम्नलिखित एक-एक मन्त्र बोलते हुए तत्सम्बन्धित वस्तु देवता को समर्पित करनी चाहिए।

१—आवाहन मन्त्र

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।

२—आसन

ॐ पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहित।।

३—पाद्य

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

४—अर्घ्य

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽ उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रमात्सा शनानशनेऽअभि।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

५—आचमन

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः।।

६—स्नान

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।

७—वस्त्र

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाᳬसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

८—यज्ञोपवीत

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।

९—गन्ध

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।

१०—पुष्प

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।।

११—धूप

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ᳬ शूद्रो अजायत।

१२—दीप

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

१३—नैवेद्य

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षᳬ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन्।।

१४—ताम्बूलपुंगीफल

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।

१५—प्रदक्षिणा

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।।

१६—मन्त्रपुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वेसाध्याः सन्ति देवाः।।

श्री सूक्त द्वारा देवपूजन

१—आवाहन

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।।

२—आसन

ॐ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

३—पाद्य

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीजुषताम्।।

४—अर्घ्य

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

५—आचमन

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमींशरणमहंप्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।

६—स्नान

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
नुदन्तु तस्य फलानि तपसा मायान्तरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः।।

७—वस्त्र

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिंना सह।
प्रादुर्भूतोसुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

८—यज्ञोपवीत

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।

९—गन्ध

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

१०—पुष्प

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनांरूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

११—धूप

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।

१२—दीप

ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।

१३—नैवेद्य

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।।

१४—ताम्बूल पुंगीफल

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।।

१५—प्रदक्षिणा

ॐ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्यं पुरुषानहम्।

१६—पुष्पांजलि

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।

सामान्य पर्व-त्यौहार पूजन प्रकरण

संस्कारों की तरह प्रत्येक पर्व-त्यौहार में गायत्री हवन का विधान जुड़ा हुआ है। पर्व मनाने वालों को चाहिए कि जो पर्व त्यौहार मनाना हो, उसमें सबसे पहले पवित्रीकरण से लेकर रक्षा विधान कर्मकाण्ड पूरा करें। इसके पश्चात् सम्बन्धित देवशक्ति का विशेष पूजन उपचार किया जाय। आवाहन के साथ पुरुष या श्री सूक्त से षोडशोपचार पूजन किया जाय। इसके बाद यज्ञ, दीप, आरती आदि में समापन तक के उपचार उपक्रम किये जाय। तदुपरान्त जयघोष एवं प्रसाद वितरण के साथ आयोजन समाप्त किया जाय।

।। मङ्गलाचरणम्।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरै रंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। —यजु० २५/२१

।। पवित्रीकरणम्।।

बाँये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से ढकें। मन्त्र बोलने के बाद मस्तक तथा सिर पर छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

।। आचमनम्।।

निम्नलिखित मन्त्र से तीन बार आचमन करें।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।। १।।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।। २।।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।। ३।।

।। शिखाबन्धनम्।।

निम्न मन्त्र पढ़कर शिखा में गाँठ लगावें—

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

।। प्राणायामः।।

निम्न मन्त्र पढ़कर कम से कम एक बार प्राणायाम करें—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ।

।। न्यासः।।

तत्पश्चात् बाँये हाथ में हथेली में थोड़ा-सा जल लेकर दाहिने हाथ की अँगुलियों से निम्न मन्त्रों द्वारा शरीर के अलग-अलग अंगों का स्पर्श कीजिए और साथ ही यह भावना कीजिए कि मेरे ये सब अंग-प्रत्यंग शक्तिशाली, पवित्र और महा तेजवान् हो रहे हैं।

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु। (मुख को)
ॐ नसोर्मेप्राणोऽस्तु। (नासिका के दोनों छिद्रों को)
ॐ अक्ष्णोर्मेचक्षुरस्तु। (दोनों नेत्रों को)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (दोनों कानों को)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। (दोनों बाँहों को)

ॐ ऊर्वोर्मेओजोऽस्तु। (दोनो जंघाओं को)

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।

समस्त शरीर पर जल छिड़कें।

।। पृथ्वी-पूजनम्।।

निम्न मन्त्र पढ़कर पृथ्वी पर जल छिड़कें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुनां धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

।। कलावा धारणम्।।

क्रिया कर्म करने वाले पुरुषों के दाहिने हाथ में तथा महिलाओं के बाँये हाथ में बँधवाया जाये तथा चन्दन धारण करवाया जाये—

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

।। चन्दन धारणम्।।

ॐ चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।।

।। यज्ञोपवीतधारणम्।।

निम्न मन्त्र बोलकर नया यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रति मुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

।। जीर्णोपवीत विसर्जनम्।।

निम्न मन्त्र पाठ करते हुए पुराना यज्ञोपवीत गले में से ही होकर निकालना चाहिए।

ॐ एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्ते परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्।।

।। मार्जनम्।।

देव कार्य में आने वाली सभी वस्तुओं को पुष्प से जल के छीटें निम्नलिखित मन्त्रोच्चार करते हुए लगाने चाहिए।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।

।। कलश पूजनम्।।

दाहिने हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर कलश की प्रतिष्ठा पूजा करें—

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मानऽआयुः प्रमोषीः।।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोꣳप्रतिष्ठ।।

ॐ वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

तत्पश्चात् जल, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से कलश में प्रतिष्ठित देवताओं का पूजन करें।

गन्धाक्षतपुष्पाणि धूपं, दीपं नैवेद्यं समर्पयामि।

ॐ कलशस्थ देवताभ्यो नमः।

तदुपरान्त निम्नलिखित मन्त्र से हाथ जोड़कर कलश में प्रतिष्ठित देवताओं की प्रार्थना करें।

।। कलश प्रार्थना।।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।। १।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथवर्ण ः।। २।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्ति-पुष्टिकरी सदा।। ३।।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।। ४।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।। ५।।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।। ६।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

।। दीपपूजनम् ।।

पूजा की चौकी पर दीपक प्रज्जवलित करें। सुविधा और साधन बन पड़े तो एक दिन उस स्थान पर दीपक जलते रहने देना चाहिये। ज्ञान और प्रकाश का प्रतीक दीप पूजन निम्न मन्त्र से करें।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

।। गुरुपूजनम् ।।

अक्षत पुष्प हाथ में लें, गुरु पूजन करें।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुरेव महेश्वरः।।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदंदर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।
ॐ श्री गुरवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

।। गायत्रीपूजनम् ।।

ॐ आयातु वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मातः ब्रह्मयोनेनमोऽस्तु ते।।

ॐ श्री गायत्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। ततो नमस्कारम् करोमि।

ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ताम् पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यम् दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।

।। सर्वदेवनमस्कारः ।।

विभिन्न देवी शक्तियों को विभिन्न रूपों में ध्यान करते हुए नमस्कार करें।

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।
ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यान्नमः।
ॐ उमामहेश्वराभ्यान्नमः।
ॐ वाणीहिराण्यगर्भाभ्यान्नमः।
ॐ शचीपुरन्दराभ्यान्नमः।
ॐ माता-पितृचरणकमलेभ्यो नमः।
ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।
ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।
ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः।
ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।
ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः।
ॐ एतत्कर्मप्रधानश्रीगायत्रीदेव्यै नमः।
ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

।। षोडशोपचार पूजनम् ।।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि। आसनम् समर्पयामि।। १।।
पाद्यं समर्पयामि।। २।।
अर्घ्यं समर्पयामि।। ३।।
आचमनम् समर्पयामि।। ४।।
स्नानम् समर्पयामि।। ५।।
वस्त्रम् समर्पयामि।। ६।।
यज्ञोपवीतम् समर्पयामि।। ७।।
गन्धम् विलेपयामि।। ८।।
अक्षतान् समर्पयामि।। ९।।
पुष्पाणि समर्पयामि।। १०।।
धूपमाघ्रापयामि।। ११।।
दीपम् दर्शयामि।। १२।।
नैवेद्यं निवेदयामि।। १३।।
ताम्बूलपुंगीफलानि समर्पयामि।। १४।।
दक्षिणां समर्पयामि।। १५।।
सर्वाभावे अक्षतान् समर्पयामि।। १६
ततो नमस्कारम् करोमि।
नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मयाकृतः।।
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः।।

।। स्वस्तिवाचनम् ।।

हाथ में जल, पुष्प, अक्षत लेकर स्वस्तिवाचन बोला जाय।

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ँहवामहेवसोमम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।। १।।

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।। २।।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। ३।।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोधुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। ४।।

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।। ५।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। ६।।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।। ७।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्ति

सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु।।

।। रक्षाविधानम्।।

बाँयें हाथ में अक्षत लेकर मन्त्र के साथ दसों दिशाओं में छोड़ें, देवत्व का घेरा लगायें।

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेय्यां गरुडध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः।। १।।
पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपतीः रक्षेदैशान्यां हि महेश्वरः।। २।।
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।
अनुक्तमपि यत् स्थानं रक्षत्वीशो ममादिधृक्।। ३।।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।। ४।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभे।। ५।।

।। अग्निस्थापनम्।।

तत्पश्चात् किसी पात्र या चमचे से अग्नि रखकर या कपूर जलाकर नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए श्रद्धा और भक्ति के साथ हवनकुण्ड में अग्नि स्थापित करें।

ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे। अग्निं दूतं पुरोदधे। हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाऽआसादयादिह। ॐ अग्नये नमः। अग्निं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

।। अग्निप्रदीपनम्।।

अग्नि के छोटे काष्ठ और कपूर रखकर निम्न मन्त्र पढ़कर व्यंजन (पंखा) से अग्नि प्रदीप्त करें।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

—यजु० १५/५४

।। समिधाधानम्।।

तत्पश्चात् निम्न चार मन्त्रों से आठ-आठ अंगुल की पलासादि की चार समिधायें प्रत्येक मन्त्र के बाद से घी में डूबोकर अग्नि में डालें—

१—ॐ अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व। चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे नान्ननाद्येन समेधय, स्वाहा। इदम् अग्नये जातवेदसे इदं न मम।।

२—ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।।

३—ॐ सुसमिद्धाय शोचिसे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम।।

४—ॐ तं त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नये अंगिरसे इदं न मम।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

।। जलप्रसेचनम् ।।

तत्पश्चात् अञ्जलि (आचमन) में जल लेकर कुण्ड (वेदी) के पूर्व आदि दिशाओं में चारों ओर छिड़कें। इसके मन्त्र ये हैं—

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व। (इति पूर्वे)

ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व। (इति पश्चिमे)

ॐ सरस्वत्यऽनुमन्यस्व। (इति उत्तरे)

ॐ देवसवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिम् भगाय। दिव्यो गन्धर्व केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।

।। आज्याहुतिः ।।

बड़े हवनों में सभी आवाहित एवं प्रतिष्ठापित देवताओं के लिये आहुतियाँ दी जाती हैं। छोटे हवनों में सात आहुतियाँ केवल घृत की देते हैं और स्रुवा से बचा हुआ घृत 'इदं न मम' उच्चारण के साथ प्रणीता में हर आहुति के बाद टपकाते जाते हैं। यही टपकाया हुआ घृत अन्त में अवघ्राण के काम आता है।

१—ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।।

२—ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदं न मम।।

३—ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।।

४—ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम।।

५—ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।

६—भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम।।

७—ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।।

।। गायत्र्याहुतिः ।।

इसके पश्चात् गायत्री मन्त्र से जितनी आहुतियाँ देनी हों, सो देना चाहिये। मन्त्र—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा।

इदं गायत्र्यै इदं न मम।।

।। स्विष्टकृतहोमः ।।

प्रत्येक कर्म ठीक-ठाक रीति से करना चाहिये तभी फलदायक होता है, या मनुष्य से त्रुटि व अशुद्धि हो जाना स्वाभाविक है। अतः यह आहुति उस त्रुटि व अशुद्धि की पूर्ति के प्रायश्चित रूप से है। निर्धारित संख्या में गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ देने के पश्चात् मिष्ठान्न, खीर, हलुआ आदि से आहुति देनी चाहिये।

ॐ यदस्य कर्मणोत्यरीरिचं यद्वान्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते इदं न मम।।

।। पूर्णाहुतिः ।।

सुचि में सुपाड़ी या नारियल घृत समेत रखकर पूर्णाहुत दें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।

वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्जꣳशतक्रतो स्वाहा।।

ॐ सर्वं वै पूर्णꣳस्वाहा।।

।। वसोर्धारा ।।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसीः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।

।। नीराजनम् (आरती) ।।

तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों को पढ़ते हुए यज्ञ भगवान् देवगणों और पितरों की आरती उतारें—

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति,

परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।

विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा,

तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।।

ॐ यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैःवेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः। ध्यानावस्थित तदगतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो, यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगुणाः देवाय तस्मै नमः।।

।। घृत-अवघ्राण ।।

प्रणीता में इदं न मम के साथ टपकाये घृत को हथेलियों में लगाकर अग्नि पर सेकें और उसे सूघें तथा मुख, नेत्र, कर्ण आदि पर लगावें। मन्त्र—

ॐ तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि।

ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि।

ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊन्नतन्मऽआपृण।
ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु।
ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु।
ॐ मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।

गायत्री मन्त्र बोलते समय घृत मुखमण्डल पर लगाना और सूँघना चाहिये।

।। भस्मधारणम् ।।

स्रुवा से यज्ञ-भस्म लेकर अनामिका उँगली से निम्न मन्त्रों द्वारा ललाट, ग्रीवा, दक्षिण बाहुमूल तथा हृदय पर लगावें—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण बाहुमूले।
ॐ तन्नोऽस्तु त्र्यायुषमिति हृदि।

।। क्षमा प्रार्थना ।।

ॐ आवाहनं न जानामि नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।। १।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।। २।।
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।। ३।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। ४।।
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णः स्यादिति श्रुतिः।। ५।।

।। साष्टाङ्गनमस्कारः ।।

तत्पश्चात् यज्ञ भगवान के प्रति घुटनों के बल झुककर साष्टाङ्ग प्रणाम करें तथा निम्न मन्त्र बोलें—

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः।।
नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।
वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

।। शुभकामना ।।

तत्पश्चात् समस्त प्राणियों के कल्याणार्थ यज्ञ भगवान् से हाथ जोड़कर शुभ कामना करें—

ॐ स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्योः शुभमस्तुनित्यं लोकाःसमस्ताःसुखिनो भवन्तु सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात्।। २।।
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।। ३।।
श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टि श्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।। ४।।

।। शान्तिअभिषिंचनम् ।।

तत्पश्चात् मन्त्र पूत कलश के जल को समस्त परिजनों, घर के सभी स्थानों, उपकरणों पर छिड़कते हुए पवित्रता-शुचिता के समावेश की भावना करें।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा शान्तिरेधि।।

ॐ शान्तिः शांतिः शांतिः। सर्वारिष्टः-सुशान्तिर्भवतु।।

।। प्रदक्षिणा ।।

यज्ञ के अन्त में सब लोग खड़े होकर दाँये हाथ से बाँये हाथ की ओर यज्ञ की चार परिक्रमा यज्ञ महिमा बोलते हुए या निम्न मन्त्र बोलते हुए करें। स्थान कम हो तो अपने स्थान पर खड़े रहकर चारों दिशाओं में घूमकर एक परिक्रमा करने से भी काम चल जाता है।

ॐ यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञात कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे-पदे।।

।। श्रद्धाञ्जलिः (पुष्पांजलि) ।।

स्थापित वेदी पर सब लोग अपनी श्रद्धा का पुष्प नत मस्तक होकर निमन्त्रण बोलते हुए चढ़ायें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः।

।। विसर्जनम्।।

ॐ गच्छ त्वं भगवन्नग्ने स्वस्थाने कुण्डमध्यतः।
हुतमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे।। १।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।। २।।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।। ३।।

।। सूर्याअर्घ्यदानम्।।

ॐ सूर्य देव सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

नवीन संवत्सर

हमारे वर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से होता है। इसलिए इसको संवत्सर प्रतिपदा कहते हैं। 'ब्रह्मपुराण' में लिखा है कि ब्रह्मा ने आज के दिन ही सृष्टि की रचना प्रारम्भ की थी।

चैत्रमासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रं तु तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् "चैत्र शुक्ल—पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत की रचना की।" इसी दिन भगवान के मत्स्यावतार का आविर्भाव हुआ था। सतयुग का प्रारम्भ इसी दिन हुआ था और भारतवर्ष के सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य के संवत का प्रथम दिन भी यही है।

नवीन संवत्सर का उत्सव प्रत्येक देश में मनाया जाता है। ईसाइयों में पहली जनवरी को 'न्यू ईयर्स डे' का त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। फारस देश के निवासी पारसियों के यहाँ सूर्य के मेष राशि में प्रवेश करने के दिन 'जश्न-नौरोज' बड़ी धूमधाम से होता है। अन्य जातियों में भी इसी से मिलती-जुलती प्रथाएँ हैं, इसलिए स्वराज्य प्राप्ति के बाद भारतवर्ष में इस प्रकार का सार्वजनिक उत्सव अवश्य मनाया जाना चाहिए। भारतवर्ष में केवल हिन्दू ही नहीं रहते वरन् मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, बौद्ध और भी अनेक मजहबों के व्यक्ति बहुत बड़ी संख्या में बसते हैं। हिन्दुओं के अन्य त्यौहारों में तो उनके विशेष धार्मिक विधान किये जाते हैं, किसी न किसी देवता का पूजन होता है, तीर्थस्थान, दान, वेदपाठ आदि का भी नियम पालन करना होता है। पर नवीन संवत्सर के उत्सव में कोई नियम अनिवार्य नहीं है। इसको प्रत्येक धर्म के व्यक्ति, जो अपने को भारतीय समझते हैं, अपनी-अपनी रुचि के अनुसार मना सकते हैं। हिन्दू अपने मन्दिरों में भगवान की पूजा और वेदपाठ करके, मुसलमान अपनी मस्जिदों में नमाज पढ़कर और कुरान का पाठ करके, ईसाई अपने गिरजे में ईश प्रार्थना और बाइबिल सम्बन्धी प्रवचन सुनकर इसको मना सकते हैं। इसके सम्बन्ध में यही ऐतराज करना कि हिन्दू शास्त्रों में इसका निर्देश है, ठीक नहीं। जब हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि सब कोई अंग्रेजी अमलदारी में बिना किसी ऐतराज के १ जनवरी को 'नववर्ष' की छुट्टी मना लेते थे और बहुत-से नई रोशनी के व्यक्ति उसमें प्रत्यक्ष रूप से भाग भी लेते थे, तो कोई कारण नहीं जो हम चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को 'नए साल' का उत्सव मनाने में ऐतराज करें।

खेद का विषय है कि अनेक वर्षों से भारतवासियों में राष्ट्रीयता और एकता की भावना का अधिकांश में लोप हो गया है और उसका स्थान संकीर्णता ने ले लिया है। एक देश में अनेक धार्मिक विश्वासों का होना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है, विशेषतः भारतवासी तो इस विषय में आरम्भ से ही सबसे अधिक उदार और अग्रसर रहे हैं। जहाँ ईसाई और मुसलमान देशों में धार्मिक विश्वासों में शंका और तर्क करने वालों को प्राण-दण्ड दिया गया है, भारतवर्ष के धार्मिक क्षेत्र में घोर आस्तिक से घोर नास्तिक तक, अब्बल दर्जे के छुआछूत वाले से लेकर सरभंगी तक, पेड़ और साँपों की पूजा करने वालों से लेकर निराकार सर्वव्यापी ब्रह्म की उपासना करने वाले तक सभी लोगों को सदा से स्थान मिला है। ईसाई मत को जब तक योरोप में भी स्वीकार नहीं किया गया था और जिस समय ईसाइयों पर अत्याचार जारी थे, उसी समय दक्षिण भारत के कोचीन, मालाबार आदि प्रदेशों में उसका स्वागत किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गया, जहाँ आज भी १७०० वर्ष से अधिक प्राचीन गिरिजाघर मौजूद हैं। इसी प्रकार मुसलमान आक्रमणकारियों के आगमन से बहुत पूर्व यहाँ इस्लाम मजहब वालों को भी स्थान दिया गया था। सारांश यह कि हिन्दू जाति धार्मिक विश्वासों के सम्बन्ध में सदा से उदार रही है और उसका यह सिद्धान्त रहा है कि मानव प्रकृति के विकास को देखते हुए भिन्न-भिन्न दर्जे के मनुष्यों के लिए पृथक्-पृथक् पूजा और उपासना की विधि होना असंगत नहीं वरन् स्वाभाविक है। गाँव का एक साधारण किसान भगवान की मूर्ति पर दो-चार फूल चढ़ाकर और स्तुति करके ही शान्ति पा सकता है, जबकि एक योगी या संन्यासी को निर्विकल्प समाधि ही मुक्ति का मार्ग जान पड़ती है। इसी प्रकार वह सभी मजहबों को भी भिन्न-भिन्न रुचियों के मनुष्यों के लिए उचित मानता है।

ऐसी दशा में हमको कोई कारण नहीं जान पड़ता कि इस देश के निवासी धार्मिक मत-मतान्तरों के आधार पर आपस में अनैक्य रखें। हमारा कर्त्तव्य है कि कुछ समय से अज्ञानवश लोगों में जो संकीर्णता का भाव उत्पन्न हो गया है, उसे मिटाने के लिए सार्वजनिक त्यौहारों और उत्सवों की योजना करें। जैसे २६ जनवरी और १५ अगस्त के उत्सव राष्ट्र भर के लिए माननीय समझे जाते हैं और सब कोई उनमें बिना भेद-भाव के भाग लेते हैं, उसी प्रकार नव वर्षारम्भ का उत्सव हमको ऐसे रूप में मनाना चाहिए, जिससे वह किसी एक जाति या सम्प्रदाय का न रहकर सार्वजनिक जान पड़े। वैसे हिन्दू मात्र उस दिन को नवरात्रि का प्रथम दिन होने के कारण मनाते ही हैं और उस दिन उपवास रखकर हवन आदि कृत्य करते हैं पर अभी तक वे 'नववर्ष' का त्यौहार बहुत कम मनाते हैं और अनेक तो इसका कोई महत्व भी अनुभव नहीं करते। इसलिए अब यदि भारतीय नव वर्ष के उत्सव का प्रचार एक सार्वजनिक त्यौहार के रूप में किया जाए तो उससे विविध सम्प्रदायों और मत-मतान्तरों के समन्वय में उल्लेखनीय सहायता मिल सकती है।

पद्धति

नववर्ष के दिन प्रातः काल ही घर की सफाई करके उसे लीपकर, चौक आदि मंगल चिन्हों से सुशोभित करके नए स्वदेशी वस्त्र पहनकर सपरिवार हवन करें। साथ ही हाथ में गन्ध, अक्षत, पुष्प और जल लेकर संकल्प करके नई बनी चौरस चौकी पर स्वच्छ, सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर हल्दी या केसर से रंगे हुए चावलों का अष्टदलकमल बनावें। उस पर भगवान की मूर्ति स्थापित करके "ॐ ब्रह्मणे नमः" मन्त्र का उच्चारण करके पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से उसकी पूजा करें। पूजा के अन्त में ब्रह्मा से प्रार्थना करें—"हे भगवान ! आपके प्रसाद से मेरे सब वर्ष भर के विघ्न नष्ट हो जाएँ और यह आगामी वर्ष मेरे लिए कल्याणकारी तथा शुभ हो। दोपहर के समय श्रद्धानुसार योग्य और निर्धन व्यक्तियों को भोजन कराएँ। इसे राष्ट्रीय पर्व समझकर बड़ी धूमधाम से मनाएँ और इस प्रकार आदर्श भारतीय नरेश विक्रमादित्य की कीर्ति को स्थायी और समुज्ज्वल बनाने में सहयोग दें। यह प्रतिपदा सब पापों को नष्ट करने वाली, वायु को बढ़ाने वाली और सौभाग्यदायिनी है।

राष्ट्र और समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिए देश में बसने वाले विभिन्न समुदायों और सम्प्रदायों का समन्वय और पारस्परिक सद्भावना अनिवार्य है। जहाँ के निवासी आपस में वैमनस्य अथवा उदासीनता का भाव रखने वाले होंगे वह कभी सुदृढ़ और शक्तिशाली न होगा। नवीन संवत्सर का त्यौहार देश के सभी वर्गों और सम्प्रदायों को एक संगठन के सूत्र में आबद्ध करने वाला है, अतएव इसका समारोहपूर्वक मनाना प्रत्येक भारतवासी का पवित्र कर्त्तव्य है।

नवीन वर्ष की प्रेरणा

कल ही तो पिछला वर्ष अपनी बुरी भली प्रिय अप्रिय घटनाओं में उदरस्थ करता हुआ भूत के गर्त में सदा के लिये चला गया। अब उसका दर्शन हो सकना सम्भव नहीं है। उजड़े हुये राष्ट्र बसेंगे, बरबाद हुई बस्तियाँ सरसब्ज होंगी, आज की दुर्धर द्वेष कल शान्त हो जायेगा। जिन वस्तुओं का अभाव हुआ है समय पाकर उनकी पूर्ति हो जायेगी परन्तु यह सन् ४० किसी भी प्रकार देखने को न मिल सकेगा चाहे कितना ही प्रयत्न क्यों न किया जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

महारानी एलिजाबेथ का मृत्युकाल जब उपस्थित हुआ तब उन्होंने आर्तवाणी में गिड़गिड़ा कर समर्थ लोगों से याचना की कि यदि उनका जीवनकाल कोई थोड़ा और बढ़ा दे तो वे उसे विपुल सम्पत्ति दे देंगी। उस स्थान पर बड़े-बड़े डॉक्टर प्रसिद्ध वैज्ञानिक, ख्याति नामा मनस्वी उपस्थित थे पर सब लाचार थे कोई एक क्षण के लिए भी उनका जीवनकाल न बढ़ा सका। सारी फौज, तोपखाने, नौकर चाकर, खजाने, राज्य जहाँ के तहाँ पड़े रहे एक तिनके की बराबर भी किसी से उनकी मदद न हो सकी। उस वक्त के दर्शन अनुभव कर रहे थे कि वास्तव में समय क्या वस्तु है और उसका कितना मूल्य है ?

इन पंक्तियों के पाठक अवश्य ही वयस्क युवा अधेड़ या वृद्ध होंगे। आप लोग जब अपने जीवन की भूलकालीन स्मृतियों पर दृष्टि डालते होंगे तो हृदय में एक टीस उठती होगी, कलेजे में एक हुक पैदा होती होगी। जरा अपने बचपन की याद तो कीजिये पुराने छोटे-छोटे साथी, खेल- कूद का मजा, माता का लाड़-प्यार, सब प्रकार की निश्चिन्तता कितना सुन्दर समय था वह ! क्या वह दिन अब फिर नहीं मिल सकते ? इच्छा होती है कि किसी प्रकार उन दिनों की एक झाँकी फिर कर सकें। किसी तरह आधी घड़ी के लिए वह बचपन फिर मिल जावे तो उसकी गोद में मचल-मचल कर लोट लें। विरही जिस प्रकार अपने अज्ञान स्थान पर चले गये प्रेमी के लिए तड़फड़ाता है हममें से हर एक भावुक व्यक्ति अपने भूतकाल की स्मृतियों में वैसी ही एक टीस का अनुभव करता है।

एक मजदूर बड़े परिश्रम से कुछ चावल कमाकर लाया था, उन्हें खुशी-खुशी सिर पर रखकर घर लिये जा रहा था। अचानक उस बोरी में छेद हो गया और धीरे-धीरे उसकी गैर जानकारी में वे चावल पीछे की ओर गिरते गये यहाँ तक कि कुछ आगे जाने पर उसकी बोरी खाली हो गई। जब देखा तो उसे होश हुआ। पीछे मुड़कर देखा तो फलांगों से धीरे-धीरे वह चावल फैल रहे थे और धूल में मिलकर दृष्टि से ओझल हो गये थे। उसने एक हसरतभरी निगाह उन दानों पर डाली और कहा—काश, मैं इन दानों को फिर से पा सका होता। पर वे तो पूरी तरह धूल में गढ़ चुके थे वे मिल नहीं सकते थे। बेचारा खाली हाथ घर लौटा, दिन भर का परिश्रम, चावलों का बिखर जाना, पेट की जलती हुई ज्वाला इन तीनों की स्मृति उसे बेचैन बनाये दे रही थी।

हमारे जीवन का अमूल्य हार कितना सुन्दर है; हम इसे कितना प्यार करते हैं ? माता खुद भूखी रहकर अपने नन्हें से बालक को मिठाई खरीदकर खिलाती है, बालक के मल मूत्रों में खुद पड़ी रहकर उसे सूखे बिछौने पर सुलाती है वह बड़े से बड़ा नुकसान कर दे एक कड़ुआ शब्द तक नहीं कहती। हमारा आत्मा हमारे जीवन से इतना ही नहीं बल्कि इससे भी अधिक प्यार करता है। जीवन सुखी बीते, उसे आनन्द और प्रसन्नता प्राप्त हो इसके लिए आत्मा पाप भी करता है, खुद भूखा रहकर उसे मिठाई खिलाता है। नरकों की यातना सहता है—खुद मलमूत्रों में पड़ा रहकर उसे सूखे बिछौने पर सुलाता है। यह प्यार माता के प्यार से किसी प्रकार कम नहीं है। जीवन को हम जितना प्यार करते हैं, उतना क्या कोई किसी को कर सकता है। इस अमूल्य हार को हम प्राण प्रिय बनाये हुए हैं। एक राजा कैद में पड़ा सड़ रहा था अपनी आँखें निकलवादी थीं पर हीरे को नहीं दिया था इतना ही प्यारा हमें यह जीवन होता है।

पर हाय ! इसकी एक एक मणि चुपके-चुपके मजदूर के चावलों की तरह बिखरती जा रही है। और हम मद होश होकर मस्ती के गीत गाते हुए झूम झूमकर आगे बढ़ते जा रहे हैं। जीवन लड़ी के अनमोल मोती घड़ी, घण्टे, दिन, सप्ताह, पक्ष मास और वर्षों के रूप में धीरे-धीरे व्यतीत होते जा रहे हैं। एक ओर माता कहती है मेरा पूत बड़ा हो रहा है दूसरी ओर मौत कहती है मेरा ग्रास निकट आ रहा है बूँद-बूँद करके जीवन रस टपक रहा है और घड़ा खाली होता जा रहा है। कौन जानता है कि हमारी थैली में थोड़ा बहुत बचा भी है कि सब फैल चुका जो लोग इन पंक्तियों को पढ़ रहे हैं, उनमें से कितने ही ऐसे होंगे जिन्हें सन् ४१ जनवरी देखने को न मिलेगी। फिर भी क्या हम इस समस्या पर विचार करते हैं ? कभी सोचते हैं कि समय क्या वस्तु है उसका क्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मूल्य है ? यदि हमें नहीं सोचते और अपनी पीनक को ही स्वर्ग मुख मानते हैं तो सचमुच गत वर्ष को गँवाना और नवीन वर्ष का आना कोई विशेष महत्व नहीं रखता।

जब व्यापार में एक रुपये का घाटा पड़ जाता है तो यही गम्भीरता के साथ उस विषय पर विचार करते हैं परन्तु प्यारे पाठक ! क्या आप कभी इस पर भी विचार करते हैं कि आपके जीवन का इतना बड़ा भाग सर्वोत्तम अंश किस प्रकार बर्बाद हो गया। क्या इसे इसी प्रकार नष्ट करना चाहिए था ? क्या आत्मा इन्हीं कर्मों की पूर्ति के लिए ईश्वर ने भेजा था, जिनकी अब तक तुमने पूरा किया है ? मालिक के दरबार में अपने काम का ब्यौरा देने के लिए क्या तुम तैयार हो ? सम्भव है आज तुम्हें यह पंक्तियाँ व्यर्थ जंचती हों और इनका कुछ महत्व न मालूम होता हो परन्तु याद रखो वह दिन दूर नहीं है जब तुम्हें यही प्रश्न शूल की तरह दुःख देंगे। जब जीवन रस की अन्तिम बूँद टपक जायेगी और तुम मरे हुये खरगोश की तरह मृत्यु के कन्धे पर लटक रहे होंगे तब तुम्हारी तेज निगाह, बुढ़ापा, अधेड़ अवस्था, यौवन, किशोरावस्था, बचपन और गर्भावस्था तक दौड़ेगी। अपने अमूल्य हार की एक-एक मणि धूलि में लौटती हुई दिखाई देगी, तब अपनी मदहोशी पर तिलमिला उठोगे। भावुकों के हृदय में बचपन के दर्शनों के लिए जैसी टीस उठती है विधवा के हृदय में अपने स्वर्गस्थ प्राणप्रिय पति के दर्शनों की जैसी हूक होती है उससे करोड़ों गुनी तड़पन उन एक-एक मोतियों को देखने की होगी, जिन्हें आज व्यर्थ की वस्तु समझकर लातों में ठुकरा रहे हो। आज तो 'समय काटने' की जरूरत पड़ती है। फालतू समय को निकालने के लिये ताश या फलाश खेलने की तरकीब सोचनी पड़ती है पर अभागे आदमी ! परसों पछतायेगा इन अमूल्य क्षणों के लिए ! और सिर धुन धुनकर रोयेगा अपने इस पाजीपन पर।

पिछले वर्ष को गये हुये अभी बहुत देर नहीं हुई। देखो वह अभी दिखाई देता है बेचारा गरदन मोड़ मोड़कर हमारी ओर देखता जाता है। आँखों में से आँसू बहाता जाता है। भरे हुए गले से कहता आता है "प्रभु की परम प्रिय सन्तानों ! मैं जा रहा हूँ। इस निर्मल विश्व का यही रिवाज है जो आता है वह चला जाता है। मैं हँसता हुआ बड़े स्वागत सत्कार के साथ आया था और और आँसू बहाता हुआ जा रहा हूँ। अब मेरी छाया भी किसी को देखने के लिये न मिलेगी। मैं जा रहा हूँ पर ओह ! मेरे एक वर्ष के संगियो ! इतना कहे जाता हूँ कि जाना तुम्हें भी है। मेरी तरह तुम भी लोह बंधनों में बँधे हुये घसिटते चले जाओगे। इसलिये भूलना मत। मदहोशों में मत झूमना। सोचना कि "मैं क्या हूँ ? और क्या से क्या बना हुआ हूँ।"

इधर नया वर्ष मुस्कराते बालक की तरह झुककर हमें अभिवादन करता है और कहता है—"ऐ पछताने वालो ! घबराओ मत। जो बीत गया उसे जाने दो रंज मत करो। मैं तुम्हारा वफादार नौकर हाजिर हूँ। मेरे लिये हुक्म करो। जो बनना चाहते हो बना दूँगा जो पाना चाहते हो ला दूँगा।"

क्या यह संक्रान्ति हमें कुछ संदेश नहीं देती ? चैत्र की नवरात्रि का प्रारम्भ जिस दिन होता है, उसी दिन विक्रमी सम्वत् आरम्भ होता है। रामनवमी इसी नवरात्रि पर्व का अन्तिम दिन है। आदि दिन है नवीन सम्वत्सर। विक्रमादित्य साधारण राजा होते हुए भी अपने गुणों के कारण असाधारण थे। सामर्थ्य सम्पन्न होने पर मनुष्य को वह सामर्थ्य कर्तव्य कर्म में नियोजित करनी चाहिए' उसके मूर्तिमान प्रतीक विक्रमादित्य थे। इसी कारण उनके राज्याभिषेक दिन से विक्रमी संवत चलाकर उनकी कीर्ति को अमर किया गया।

विक्रमादित्य की महानता पर प्रकाश डालने वाली अनेक कथा-गाथाएँ हैं। पर उनकी सरल चर्चा बाजार में बिकने वाली एक छोटी पुस्तक 'सिंहासन बत्तीसी' में मिलती है। इनमें से कई कथाएँ ऐसी हैं जो विक्रमादित्य की महानता का वर्णन करते हुए कही जा सकती है। आदर्शवादिता के मार्ग पर ऐसी साहसिकता जो अपनाते हैं, वे महामानव बनते हैं। इस स्तर की चर्चा सुनने वालों को वह प्रेरणा प्रदान करती है कि पेट और प्रजनन के लिए वासना और तृष्णा पर समर्पित होकर जीवन जीना-मनुष्यता के गौरव को गिराना है। जीवित आत्माओं को उत्कृष्ट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चिन्तन और आदर्श कर्त्तव्य अपनाकर ही अपनी महानता एवं दूरदर्शिता सिद्ध करनी चाहिए। नवीन संवत्सर ऐसे ही शिक्षाओं और प्रेरणाओं से भरा हुआ है।

।। नवरात्रि पर्व ।।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल नवमी तक नवरात्रि के नाम से प्रसिद्ध है। वर्ष में दो 'नवरात्र' होती हैं। एक आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होकर नवमी तक रहती हैं और दूसरी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होकर नवमी तक। पहली को शारदीय नवरात्र कहते हैं और दूसरी को वासन्ती नवरात्र। देवी के भक्त इस अवसर पर 'दुर्गा' सप्तशती का पाठ करते हैं। कुछ लोग रामायण और महाभारत आदि का भी पाठ करते हैं।

जिस प्रकार प्रतिदिन संध्या होती है और उस समय को परमात्मा के ध्यान और जप आदि के लिए अन्य समयों से अधिक प्रशस्त माना गया है उसी प्रकार ये दोनों 'नवरात्र' ऋतु-संध्याएँ हैं और उनका उपयोग मुख्य-रूप से आध्यात्मिक उपासना और साधना में करना अधिक प्रशस्त और फलप्रद है। जो लोग आध्यात्मिक कल्याण की कामना में जप-तप के अभिलाषी हैं, उनको इस समय का उपयोग इसी निमित्त करना चाहिए।

इस अवसर पर जप-तप पर विशेष जोर देने का एक और भी कारण है। जिस प्रकार इस समय फसल पूरी तरह से तैयार होकर कार्य में आने लायक स्थिति में आ जाती है, उसी प्रकार यह अवसर जप-तप की सफलता के लिए भी बहुत उपयुक्त होता है अथवा जिस प्रकार ऋतुकाल का समय स्त्रियों में गर्भाधान के उपयुक्त समझा गया है, उसी प्रकार वर्ष के इन दिनों में किया गया जप-तप निश्चित रूप से फलदायक होता है। इसलिए बुद्धिमान साधक अन्य सब समयों की अपेक्षा 'नवरात्र' के अवसर को आध्यात्मिक साधना में ही लगाते हैं!

अखिल जगत की माता-भगवती दुर्गा की आराधना भारत में सदा से होती आई है। यश, राज्य, पुत्र, आयु और धन-संपत्ति की वृद्धि के लिए देवी के पूजन का विशेष महात्म्य है। इसीलिए भगवान व्यास ने कहा है—

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि।।
दारिद्र्यदुःख भयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

अर्थात् हे माता तू स्मरण मात्र से सब भयों का निराकरण कर देती है और जो तुझे स्वस्थ मन से भेजते हैं उनके दरिद्रता, भय आदि सब कष्टों को तू हर लेती है।'

नवरात्र के सम्बन्ध में पुराणों में एक उपाख्यान है कि महिषासुर नाम का दैत्य महा अभिमानी था। अपनी सत्ता जमाने के लिए उसने सूर्य, अग्नि, इन्द्र, वायु, यम, वरुण आदि सब देवताओं को अधिकार-च्युत कर दिया। तब सब देवता ब्रह्मा जी के पास गये, जहाँ भगवान विष्णु और शिवजी भी विराजमान थे। महिषासुर के अत्याचारों को सुनकर विष्णु ने तेज का रूप धारण कर लिया। सब देवताओं का तेज भी उसमें मिल गया और उससे एक महाशक्ति उत्पन्न हुई जिसके तीन नेत्र और आठ भुजाएँ थीं। यही भगवती दुर्गा थी। सब देवताओं ने अपने-अपने आयुध उसे दिए। इस प्रकार के संगठन से शक्तिशाली बनकर देवी ने महिषासुर को ललकारा। इस महासंग्राम में प्रलयकाल का सा दृश्य दिखलाई पड़ने लगा। महिषासुर के साथी भी एक साथ दुर्गा पर उसे अपूर्व शक्ति द्वारा सबका एक साथ संहार कर डाला। अन्त में महिषासुर भी मारा गया और देवताओं तथा मुनियों ने देवी का जय-जयकार किया। देवी ने प्रसन्न होकर कहा कि आप जैसे शान्तिप्रिय और सत्वगुण संपन्न महात्माओं और देवताओं के कल्याण का मैं सदैव ध्यान रखूँगी और उनकी सहायता के लिए सदैव तैयार रहूँगी।

नवरात्रि का यह पर्व सामाजिक हित की दृष्टि से भी बड़ा महत्वपूर्ण है। चैत्र और क्वार के महीनों में ऋतु-परिवर्तन के कारण प्रायः अनेक नये-नये रोग उत्पन्न होते हैं। कितने ही रोग ऐसे छूत वाले होते हैं कि जिनका उपाय औषधियों द्वारा भी भली प्रकार नहीं हो पाता। पर देवी के पूजन और यात्रा, सामूहिक यज्ञ और हवन के द्वारा समस्त ग्राम अथवा नगर का वातावरण शुद्ध होकर सब लोग इस समय के परिवर्तन के कुप्रभाव से बच जाते हैं। हवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि से जो लाभ होता है, उसे सभी विचारशील लोगों ने स्वीकार किया है। दूषित वायु को शुद्ध करने के लिए हवन से बढ़कर कोई उपाय नहीं है। फिर जब वह हवन उत्तम मुहुर्त्त में, वेद मन्त्रों के शुभ भावों को हृदयंगम करते हुए किया जाता है तो उसका प्रभाव और भी चमत्कारी सिद्ध होता है। इसलिए इस अवसर पर कल्याणमयी माता दुर्गा का आशीर्वाद ग्रहण करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है।

वर्तमान काल में भौतिक उन्नति का महत्व लोगों की दृष्टि में बहुत बढ़ गया है और आध्यात्मिकता को केवल कल्पना की अथवा अवकाश के समय चर्चा कर लेने की चीज समझ लिया गया है। पर हमारे शास्त्रकारों ने हजारों वर्ष पूर्व यह घोषित कर दिया था कि बिना आध्यात्मिक उन्नति के भौतिक उत्कर्ष बालू की दीवार के समान क्षणस्थायी हैं इसलिए यदि हम अपने समाज़ और देश की संस्कृति को अटल-अचल बनाए रखना चाहते हैं तो हमकों भौतिक क्षेत्र के साथ-साथ आध्यात्मिक क्षेत्र में भी प्रगति करते रहना चाहिए। नवरात्र का त्यौहार इसी आध्यात्मिकता के अभ्यास को स्थायी बनाने वाला है। इसमें हमको अपना समय विशेष रूप से विशेष साधना में ही लगाना चाहिए, जिससे आध्यात्मिक शक्ति की वृद्धि हो।

नवरात्रि के पर्व की महत्ता और कार्यक्रम

नये वर्ष के शुरू में हर एक देश और जाति के लोग अपने-अपने ढंग से खुशियाँ मनाते हैं और अपने इष्टदेव की उपासना करते हैं, ताकि उनके अगले वर्ष के कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हों। इस लक्ष्य की पूर्ति और नवीन शक्ति की प्राप्ति के लिए अनेकों प्रकार के अनुष्ठान किये जाते हैं। हिन्दूधर्म के मतानुसार सृष्टि रचना का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हुआ था इसलिये हमारा वर्ष इसी दिन से शुरू होता है, जिसका पूर्वार्द्ध छः मास आश्विन कृष्ण अमावस्या को समाप्त होता है और उत्तरार्द्ध भाग आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होता है। वर्ष के इन दोनों भागों के आरम्भ में हमारे पूर्वज महाशक्ति की आराधना किया करते थे। इन्हीं दिनों सर्दी, गर्मी की प्रधान ऋतुओं का मिलन होता है। इसी सन्धि बेला को नवदुर्गा कहा जाता है।

सर्दी-गर्मी की ऋतुओं का मिलन, दिन और रात्रि के मिलने के समान सन्ध्या काल है। पुण्य पर्व है। दिन और रात के मिलन काल-सन्ध्या का समय पूजा उपासना और आत्म साधन के लिये बहुत ही उपयोगी माना जाता है क्योंकि सूक्ष्म दृष्टि से पता चलता है कि इस समय किया गया थोड़ा श्रम भी अधिक फलदायक होता है, इसलिए इस समय ईश्वराराधन को ही विशेष रूप से महत्ता दी गई है और अन्य कार्य जैसे कि भोजन करना, सोते रहना, यात्रा आरम्भ करना, मैथुन करना आदि वर्जित माने गये हैं क्योंकि इस सन्ध्या के समय इन कार्यों को करने से हानि होती देखी गई है। यही नियम ऋतुओं के मिलन—नवरात्रि पर लागू होता है।

पुराणों में अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया गया है। नवरात्रि के सम्बन्ध में लिखा गया है कि ऋतुएँ इन दिनों रजस्वला होती हैं। जिस प्रकार से रजस्वला स्त्री का उस काल में आहार-विहार और आचार-विचार में विशेष ध्यान रखा जाता है, उसी प्रकार से हमें भी इन दिनों को विशेष सावधानी के साथ बरतने का आदेश दिया गया है।

आरोग्य शास्त्र के आचार्यों का कहना है कि आश्विन और चैत्र के महीनों से सूक्ष्म ऋतु परिवर्तन के परिणामस्वरूप शारीरिक स्वास्थ्य की दीवारें हिल जाती हैं और अनेकों व्यक्ति ज्वर, जूड़ी, हैजा, दस्त, चेचक आदि रोगों से ग्रस्त देखे जाते हैं। आयुर्वेद के अनुसार शरीर शोधन कार्यों के लिये यह दो महीने बहुत ही उपयुक्त हैं इसलिए इस काल में आहार-विहार में विशेष प्रकार से संयम रखना चाहिए।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर इन नौ दिनों को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक सब प्रकार की उन्नति की दृष्टि से लाभदायक माना गया है। इसलिए उपवास आदि विशेष साधनाओं द्वारा अनुष्ठान करने का विधान बनाया गया है। यह समय गायत्री साधना के लिये सबसे अधिक उपयुक्त है। आश्विन की नवरात्रि ३ अक्टूबर को आरम्भ होकर ११ अक्टूबर को समाप्त होगी। इन नौ दिनों में उपवास रखकर चौबीस हजार गायत्री मन्त्रों के जाप का या दो सौ चालीस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री चालीसा पाठ या २४०० गयत्री मन्त्र लेखन का अनुष्ठान पूर्ण करने के लिए नित्य प्रति २७ माला गायत्री जप या २७ गायत्री चालीसा पाठ या २६७ गायत्री मन्त्र लेकर करने चाहिए।

साधना के साथ उपवास के लिए (१) एक समय बिना नमक का अन्नाहार, (२) एक समय फलाहार, (३) दो समय दूध और फल, (५) केवल दूध का आहार इसमें से जैसी सुविधा हो अपनी सामर्थ्यानुकूल उपवास करना चाहिए। साधना का अधिकांश भाग प्रातःकाल ही पूरा करना चाहिये। समय के अभाव व अन्य कारणों से सायंकाल को भी किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त ब्रह्मचर्य पालन, भूमिशयन, बाल न कटवाना (दाड़ी के बाल अपने हाथ से बनाये जा सकते हैं), चर्म के जूतों का त्याग आदि के नियमों का, जहाँ तक सम्भव हो, पालन करना चाहिए। आचार, विचार और व्यवहार को पवित्र रखना चाहिए। उत्तम धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करना और मनन-चिन्तन द्वारा उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन का एक अंग बना लेना चाहिए। उपवास और साधना के दिनों में किये गये मनन और चिन्तन का स्थाई प्रभाव हमारे अन्तःकरण पर पड़ता है। अन्तःकरण की पवित्रता पर ही हमारी सुख शान्ति निर्भर करती है।

अनुष्ठान की समाप्ति पर नवें दिन जप का शतांश हवन, ब्रह्म-ब्रह्म कहते हैं ब्रह्मा को इसलिए आत्मा का भोजन—ब्रह्म-भोज, कन्या भोज और प्रसाद वितरण करना चाहिए। ब्रह्मदान ही सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म-भोज माना गया है। गायत्री ज्ञान प्रसाद के लिए गायत्री चित्र, चालीसा, माला व अन्य साहित्य का वितरण किया जा सकता है।

गायत्री परिवार शाखाओं को इस परम पुनीत पर्व को सामूहिक रूप से मनाना चाहिए। इसकी तैयारी के लिये पहिले से ही धर्म-फेरी करके सामूहिक अनुष्ठान में भाग लेने वालों के नाम नोट कर लेने चाहिए। जो व्यक्ति किन्हीं कारणों से सामूहिक उपासना में भाग न ले सके, उसे अपने घर पर ही करने की प्रेरणा देनी चाहिए। जो लोग पूरा अनुष्ठान न कर सकें, उन्हें १२ माला गायत्री जप या १२ चालीसा पाठ या १०८ मन्त्र लेखन करने के लिए प्रोत्साहित करें। इस साधना के साथ अनुष्ठान के विशेष नियम लागू नहीं होते। जो लोग सामूहिक साधना करने के लिये तैयार हो जायें, उन्हें अनुष्ठान के विशेष नियमों की जानकारी करवा देनी चाहिए। साधकों को धोती या दुपट्टा कोई एक वस्त्र पीला अवश्य होना चाहिए। नवरात्रि गायत्री उपासकों का बहुत ही महत्वपूर्ण त्यौहार है इसलिए इसको धूमधाम के साथ मनाना चाहिए।

ऊपर कहा जा चुका है कि नवरात्रि पर्व वर्ष भर में दो बार आता है। (१) चैत्र शुक्ल १ से ६ तक। चैत्र नवरात्रि जिस दिन आरम्भ होती है उसी दिन विक्रमी संवत का नया वर्ष प्रारम्भ होता है अतः चैत्र नवरात्रि का प्रथम दिन नवीन संवत्सर तथा समापन दिवस भगवान राम का जन्म दिन रामनवमी होता है।

(२) दूसरी नवरात्रि आश्विन शुक्ल १ से ६ तक पड़ती है। इससे लगा हुआ विजयादशमी पर्व आता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नक्षत्रों की गणना आश्विन नक्षत्र से प्रारम्भ होती है। इस आधार पर आश्विन मास ज्योतिष वर्ष की प्रथम मास माना जाता है।

इस प्रकार दोनों नवरात्रि पर्वों के साथ नये शुभारम्भ की भावना मान्यता जुड़ी हुई है। दोनों में छः मास का अन्तर है। यह साधना पर्व वर्ष की दो भागों में बाँटते हैं। ऋतुओं के सन्धिकाल इन्हीं पर्वों पर पड़ते हैं। सन्धिकाल को उपासना की दृष्टि से सर्वाधिक महत्व दिया गया है। प्रातः और सायं, ब्रह्ममुहुर्त एवं गोधूलि बेला दिन और रात्रि के सन्धिकाल हैं। इन्हें उपासना के लिए उपयुक्त माना गया है। इसी प्रकार ऋतु सन्धिकाल के नौ-नौ दिन दोनों नवरात्रियों में विशिष्ट रूप से साधना-अनुष्ठानों के लिए महत्वपूर्ण माने गये हैं।

नवरात्रि पर्व के साथ दुर्गावतरण की कथा भी जुड़ी है। देवत्व के संयोग से असुर निकंदिनी महाशक्ति के उद्भव का महत्व हर युग में रहा है। वर्तमान समय, युग सन्धि काल के रूप में तत्वदर्शियों से स्वीकारा है। युग की भयावह समस्याओं से मुक्ति के लिए युगशक्ति के उद्भव की कामना सभी के मनों में उठती है। ऐसी स्थिति में व्यक्तिगत साधना की अपेक्षा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामूहिक साधना अनुष्ठानों का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। इसीलिए युग निर्माण अभियान के सूत्र संचालकों ने हर भावनाशील-विवेकवान से अपेक्षा की है कि नवरात्रि पर्व पर सामूहिक साधना अनुष्ठानों के लिए विशेष रूप से प्रयास करें। शक्तिपीठ, प्रज्ञा संस्थान एवं शाखा संगठनों को तो यह उत्तरदायित्व विशेष रूप से सौंपे गये हैं। जहाँ दो चार-परिजन भी होते हैं, वहाँ भी नवरात्रियों पर सामूहिक साधना अनुष्ठान की व्यवस्था बना लेते हैं, जो किसी मजबूरी में अपना अनुष्ठान घर पर करते हैं वे भी सायंकाल सत्संग आरती में तथा पूर्णाहुति के दिन सामूहिक क्रम में ही शामिल होते हैं। नवरात्रि पर्व पर ऐसे प्रयास सभी विचारशील साधकों को करने चाहिए।

।। व्यवस्था-क्रम ।।

—सामूहिक साधना के लिए कोई सार्वजनिक स्थल चुना जा सकता है, किसी के व्यक्तिगत स्थान का भी उपयोग किया जा सकता है। स्थान ऐसा हो जहाँ अपनी सहज गतिविधियों से दूसरों को तथा उनकी गतिविधियों से अपने साधना क्रम में अड़चन पैदा न हो।

—स्थान इतना होना चाहिए कि देव स्थापना और सामूहिक उपासना के लिए जगह की तंगी न पड़े।

—साधना स्थल पर गायत्री माता का चित्र, कलश, दीपक आदि सजाये जावें। उसे मनोरम बनाने के लिए सुरुचि और श्रम का उपयोग भली प्रकार किया जाय। सामूहिक साधना स्थल पर जौ बोने से पवित्रता एवं सुन्दरता का संचार होता है। जौ एक-दो दिन पहले भी बोये जा सकते हैं। बोने से पूर्व उन्हें चौबीस घण्टे भिगो दिया जाय तो अंकुर जल्दी निकल जाते हैं।

—सामूहिक साधना के लिए कई दिन पहले ही जन सम्पर्क द्वारा साधकों की संख्या बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

—प्रेरणा देने, प्रभाव बतलाने और स्नेह भरे आग्रह, प्रोत्साहन का क्रम अपनाने से कमजोर संकल्प वाले भी साधना का लाभ उठाने लगते हैं।

—नौ दिन में २७ माला नित्य करने से २४०० मन्त्र का अनुष्ठान हो जाता है, जिनसे इतना भी न बन पड़े व १२ माला नित्य करके १०८ माला का संक्षिप्त अनुष्ठान भी कर सकते हैं। प्रयास यह करना चाहिए कि नवरात्रि के क्रम में विशेष साधना क्रम बन ही जाय।

—साधनाकाल में अस्वाद व्रत, एक समय अन्नाहार, शाक, फल जैसे सुगम उपवास का क्रम अपनाने, ब्रह्मचर्य, चमड़े के जूतों का उपयोग न करने, चारपाई पर न सोने, अपने कार्य स्वयं करने जैसी सर्वसुलभ तप-तितीक्षा अपनानें की बात सबको ध्यान में रखनी चाहिए।

—जिस दिन से नवरात्रि प्रारम्भ हों, उस दिन प्रातःकाल अथवा उसके एक दिन पहले शाम को सामूहिक संकल्प की व्यवस्था बनानी चाहिए। उसका क्रम इस प्रकार हैं—

—सजाये हुए देव मंच के सामने सभी साधक व्यवस्थित क्रम से पंक्तिबद्ध बिठाये जायें। संक्षेप में साधना का महत्व एवं नियम समझाते हुए नीचे लिखें क्रम से उपचार करायें।

(१) षट्कर्म (२) यज्ञोपवीत परिवर्तन, जो यज्ञोपवीत न पहने हों उन्हें नवरात्रि साधना के लिए अस्थाई यज्ञोपवीत दिया जा सकता है। (३) तिलक, कलावा, (४) कलश स्थापन—दीप प्रज्जवलन, पूजन (५) सर्वदेव आवाहन, पूजन-नमस्कार। यदि समय की सुविधा हो तो षोडशोपचारपूजन पुरुष सूक्त से भी कराया जा सकता है। (६) स्वतिस्वाचन (७) अनुष्ठान संकल्प (८) सिंचन अभिषेक एवं (९) क्रमशः देव मंच पर आकर संकल्प के अक्षत-पुष्प चढ़ाना प्रणाम करना।

जप के समय दीपक एवं अगरबत्ती आदि जलाये रखें। अखण्ड दीपक आवश्यक नहीं। अखण्ड जप या दीपक रखने की भावना और स्थिति हो तो प्रातःकाल जप शुरू करने के समय से लेकर सायंकाल आरती तक रखा जाना पर्याप्त है।

—शाम की सामूहिक गायत्री चालीसा गान, प्रेरक भजन, कीर्तन, प्रज्ञा पुराण वाचन, विशेष फोल्डर सन्देश सुनाने जैसे सत्संग क्रम चलाये जावें। अन्त में आरती करके समापन किया जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

—नौवे दिन सामूहिक पूर्णाहुति की व्यवस्था की जाय। एक, पाँच नौ जैसी भी स्थित हो तदनुरूप वेदियों बनाकर यज्ञ किया जाय। सामूहिक क्रम में आहुतियों की संख्या का बन्धन नहीं होता। पूर्णाहुति में सुपाड़ी अथवा नारियल के गोले का उपयोग किया जाना चाहिए।

—पूर्णाहुति के बाद सामान्य प्रसाद वितरण करके समापन किया जा सकता है। यदि व्यवस्था हो सके तो सभी साधकों को अमृताशन (दलिया खिंचड़ी जैसे भगौनी में पकाने योग्य पदार्थ) का भोजन कराकर प्रसाद से उपवास की समाप्ति की व्यवस्था बनाई जानी चाहिए।

—अनुष्ठान के साथ दान की परम्परा जुड़ी हुई है। ज्ञान दान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस दृष्टि से प्रत्येक साधक को चाहिए कि यथा शक्ति वितरण योग्य सस्ता युग साहित्य फोल्डर, स्टीकर आदि खरीदकर उन्हें उपयुक्त व्यक्तियों को साधना का प्रसाद कहकर दें। पढ़ने और सुरक्षित रखने का आग्रह करें। साधना अनुष्ठान के बाद इस प्रक्रिया की श्रेष्ठवान एवं ब्रह्मभोज के समतुल्य माना जाता है। यज्ञ पूर्णाहुति के साथ ही इसे सुनिश्चित मात्रा में करने का संकल्प कर लिया जाना चाहिए। बाद में सुविधानुसार उसका वितरण करते रहना चाहिए।

पुर्णाहुति के बाद विसर्जन कर दिया जाता है। यदि उसी क्रम में रामनवमी अथवा दशहरा पर्व उसी स्थल पर मनाना है, तो विसर्जन पर्व पूजन के बाद किया जाना चाहिए।

सामूहिक साधना के संरक्षण, दोष परिमार्जन के लिए शान्तिकुञ्ज हरिद्वार सूचना भेजी जा सकती है।

रामनवमी

कर्त्तव्य पथ का प्रेरक-राम नवमी पर्व

मनुष्य की महानता की कसौटी—उसका जीवन व्यवहार है। शरीर, वाणी और मन के सुन्दर व्यवहार को ही शास्त्रकारों ने धर्म कहा है। धर्मात्मा वही होता है जिसका चरित्र उज्वल और व्यवहार अनुकरणीय हो। महापुरुष उसे कहते हैं, जो असाधारण कार्य करता है। जिसको देखकर लोग चकित हो जाते हैं। साधारण जनता की अपेक्षा उसमें कुछ विशेषताएँ होती हैं, इसलिए वे उनको विशेष प्रकार का आदर और सम्मान देते हैं। वह अपने शरीर की परवाह न करते हुए उसे देश और जाति की निःस्वार्थ सेवा में लगा देता है, कर्त्तव्य पालन के लिए वह अपना सर्वस्व नाश करने के लिए तैयार रहता है। उसके मन में कोमलता होती है, वह दीन दुःखियों के कष्टों को सहन नहीं कर सकता और अपने जीवन की अनमोल घड़ियों को उनके दुःख निवारण में लगा देता है, वह उनके दुःख को अपना दुःख और उनके सुख को अपना सुख समझता है। वह जनता को अभिन्न आत्मा मानता है और तत्वत् व्यवहार करता है। वह अपनी सम्पत्ति की राष्ट्र की सम्पत्ति समझता है। राष्ट्रोत्थान में उस सबको स्वाहा करने में तनिक भी संकोच नहीं करता। गिरे हुओं को ऊँचा उठाना तो उसका जीवन लक्ष्य होता है। इतना होने पर भी उसे इसके बदले में कोई चाह नहीं होती। ऐसी आत्माएँ ऊपरी दृष्टि से तो साधारण मनुष्य के आकार में दीखती हैं परन्तु वास्तव में वह देवतुल्य होती हैं लोग उनकी चरणधूल को अपने मस्तक पर लगाकर अपने जीवन को धन्य मानते हैं। उनकी पूजा और सम्मान करते हैं ताकि उनके श्रेष्ठ जीवन से शिक्षा ग्रहण करके हम भी उनके पद चिन्हों पर चलने का प्रयत्न करें।

जिस महापुरुष के प्रति हमारे मन में आदर के भाव अधिक होते हैं, उनके कार्यों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करते हैं और यदि हम में गुण ग्राहकता की शक्ति है तो हम भी अपने जीवन को वैसा ही बनाने की चेष्टा करते हैं। यही कारण है कि हम अपने आदर्श महापुरुषों की जयन्तियाँ मनाते हैं ताकि यदि अपने गृहस्थ के व्यस्त कार्यक्रम में उनके उज्जवल चरित्र को भूल गये हों तो पुनः उनके देदीप्यमान चरित्र को अपने स्मृति पटल पर अंकित कर लें।

भारतीय इतिहास में भगवान् राम का चरित्र सबमें उच्च और आदर्श रहा है। सहस्त्रों वर्षों से भारतीय जनता उनकी जीवन गाथा को पढ़ती और सुनती आई है क्योंकि कर्त्तव्य का पथप्रदर्शन करने में वह सर्वोपरि है। यदि रामायण को हम हिन्दू जीवन का कर्त्तव्य शास्त्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कह दें तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है क्योंकि भगवान् राम के जीवन में पग-पग पर हमें कर्त्तव्य पालन के दिग्दर्शन होते हैं। यही मानव जीवन की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। जो व्यक्ति मनुष्य शरीर धारण करने के रहस्य को समझकर सद्मार्ग पर अग्रसर होकर उसे श्रेष्ठता की ओर ले जाता है, माता-पिता, बहिन-भाई आदि परिवार के सदस्यों के प्रति उनके पोषण व शिक्षा, आदि का पूरा-पूरा ध्यान रखता है, उनके जीवन को उन्नतिशील बनाता है, इसके अतिरिक्त जो अपने आपको समाज का अंग मानता है समाज के शरीर को पीड़ा होने पर अपने शरीर में दर्द अनुभव करता है और जैसे अपने शरीर में कष्ट होने पर तरह-तरह के उपाय सोचे जाते हैं, वैसे ही समाज कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहता है, तब समझना चाहिए कि उसने कर्त्तव्य शास्त्र का अध्ययन किया है और सभी अपने जीवन को उसी के अनुसार बनाने में समर्थ हो पाया है।

भगवान् राम उन तीनों कसौटियों पर खरे उतरते हैं। उनके व्यक्तिगत जीवन में कोई ऐसी बात नहीं दिखाई देती जिससे हम उन्हें एक साधारण मनुष्य कह सकें। अध्यात्म रामायण में वह स्वयं श्रीमुख से कहते हैं कि "राम कभी झूठ नहीं बोलता, राम एक बात करता है।" ऐसे उत्कट साहस के साथ इन शब्दों को कहना हर किसी की सामर्थ्य की बात नहीं है। उन्हें कभी किसी पर क्रोध नहीं आया। वह दूसरों की बुराइयों की ओर ध्यान नहीं देते थे, उनकी अच्छाइयों का गुणगान करते रहते थे, जिन्होंने उनके साथ उपकार किया हो, उसे वह बार-बार याद करते रहते थे परन्तु जिनके साथ उन्होंने उपकार किया हो, उसे वह कभी अपनी जवान पर नहीं लाते थे। उन्होंने भोग में त्याग का आदर्श व्यवहार हमारे सामने रखा है। राजकुमार होने के नाते वह सभी प्रकार के भोग भोगते होंगे परन्तु जब त्याग का समय आया तो उन्हें तनिक भी क्षोभ नहीं हुआ। महर्षि वाल्मीकि जी के शब्दों में—

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रमः।।

अर्थात् "राज्याभिषेक के लिये बुलाये गये और वन के लिए विदा किये गये रामचन्द्र के सुख के आकार में कुछ भी अन्तर नहीं देखा।"

भारतीय इतिहास बड़ों के सम्मान और माता-पिता की आज्ञा पालन के उदाहरणों से भरा पड़ा है। भीष्म पितामह ने अपने पिता की प्रसन्नता के लिए आजीवन ब्रह्मचर्यपूर्वक रहने और विशाल राज्य पर अधिकार न जमाने की प्रतिज्ञा की थी, श्रवणकुमार ने अपने अन्धे माता-पिता को काँवर में बिठाकर समस्त तीर्थों में घुमाया था, नचिकेता पिता की प्रसन्नता के लिए यमपुर चले गये। परन्तु भगवान् राम का जीवन सबसे उज्जवल है कि जब उनका राज्याभिषेक होने वाला था, उन्हें बल्कल वस्त्र पहनकर वन जाना पड़ा और वह चौदह वर्ष के लिए, जहाँ खाने, पहिनने, रहने सब प्रकार के कष्टों का सामना करना हो। ऐसा उदाहरण संसार के इतिहास में मिलना कठिन है। पिता के लिए इस महान् त्याग ने राम को हिन्दू जीवन में ओत-प्रोत कर दिया है। यदि वह अपने पिता की आज्ञा पालन न करके वन न जाते तो सम्भव है रामायण का जन्म न होता और भारतवर्ष का इतिहास कुछ और ही होता। यदि यह साधारण मनुष्यों की तरह राज्य के लिए लड़ते रहते तो उनकी गिनती केवल राजाओं से ही होती और वह करोड़ों नर-नारियों के हृदय सम्राट न होते। जब कैकेयी के द्वारा उनको वनवास का आदेश मिलता है तो वह कितनी प्रसन्न मुद्रा में कहते हैं—

पिता दीन मोहि कानन राजू।
जेहिं सब भाँति मोर बड़ काजू।।

अध्यात्म रामायण में वह माता कैकेयी से कहते हैं कि "वह पिता के लिये विष खा सकते हैं, अग्नि की ज्वालाओं में कूद सकते हैं, अपने शरीर का त्याग कर सकते हैं। जब भरत के राज्याभिषेक की बात उन्होंने सुनी तो उनके मन में कुछ भी ईर्ष्या द्वेष के भावों की जाग्रति नहीं हुई। भरत के लाख प्रयत्न करने पर भी वह अयोध्या नहीं लौटे और उन्हें आदर्श शासक बनने के लिए उपदेश देते रहे।

भगवान राम केवल अपने ही परिवार के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठ नहीं रहे वरन् राष्ट्रोत्थान के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। वास्तव में उस शरीर का धारण ही आसुरी शक्तियों के नाश और देवत्त्व के विकास के लिए हुआ था। दक्षिण भारत में रावण के यज्ञ के मुखिया आर्यों की नई बस्तियों को नष्ट करके राक्षस राज्य की स्थापना करने का प्रयत्न जारी था। उन आर्य बस्तियों के अगस्त आदि नेताओं ने उन्हें असफल करने का प्रयत्न किया परन्तु वह उसमें कामयाब नहीं हुए और उनकी गतिविधियाँ बढ़ती ही गईं। इस समय उन्हें एक सुयोग्य और वीर नेता की आवश्यकता थी जिसका काम भगवान् राम ने किया। उन्होंने खरदूषण आदि हजारों राक्षसों की समाप्त करके बढ़ते हुए राक्षस साम्राज्य की स्थापना को रोक दिया। लंका के निकट की छोटी जातियों का संगठन करके रावण जैसे शक्तिशाली राजा का वध करके देश में शान्ति की स्थापना की। इसके लिए उन्हें चौदह वर्ष तक वनों में कितने कष्ट सहन करने पड़े होंगे, उसकी कल्पना करके हृदय काँप उठता है। प्रजा के हित के लिए उन्होंने अपनी प्रिय पत्नी तक का त्याग स्वीकार किया। वह स्वयं त्याग की मूर्ति थे।

राम नवमी के शुभ अवसर पर हम भगवान् राम का भजन करें, उत्सव करें धूम-धाम से मनाए, रामायण पाठ के आयोजन रखें, पारायण करवायें, जुलूस निकालें और यज्ञ व सभाएँ करें। सभा में भगवान् के उज्जवल चरित्र का गुणगान किया जाय, उपरोक्त गुणों को समझाकर जनता को बताया जाए कि हमें भगवान् राम की कथा का पाठ ही जीवन भर नहीं करते रहना है वरन् इसके साथ-साथ उनके आदर्श गुणों व कार्यों को अपने जीवन में धारण करना है। यदि हमारी प्रवृत्ति इस ओर नहीं बढ़ती है तो हम राम के जीवन से कोई विशेष लाभ नहीं उठाते। जिस प्रकार से उन्होंने अन्याय के विरुद्ध झण्डा खड़ा किया था, हमें भी सद्ज्ञान प्रसार के लिए जनता का मार्ग दर्शन करना है, अन्याय व अज्ञान के उन्मूलन के लिए अपने कर्त्तव्य को समझना है।

वस्तुतः भारतीय इतिहास में सबसे दैदीप्यमान आदर्श चरित्र भगवान राम का ही है। यह बहुत वर्षों से हिन्दू जाति का पथ-प्रदर्शक रहा है और इसी से यहाँ के निवासी अपने कर्त्तव्य पालन की शिक्षा पाते रहें हैं। सच पूछा जाय तो पिछली अनेक शताब्दियों में विदेशियों की सभ्यता तथा संस्कृति के आक्रमण से हिन्दू संस्कृति की रक्षा का श्रेय भगवान राम की पुण्य गाथा को ही है, जिसके मुकाबले का आदर्श चरित्र संसार की ओर कोई जाति उपस्थित नहीं कर सकी है।

भगवान राम के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उन्होंने आजीवन अपने हानि-लाभ, सुख-दुःख की परवाह न करके एक मात्र कर्तव्य पालन को ही अपना लक्ष्य रखा और उसके लिए कैसा भी कठिन से कठिन प्रसंग सम्मुख क्यों न आ जाए, वे विचलित न हुए। इतना ही नहीं वे बड़ी से बड़ी हानि के अवसर पर भी कर्त्तव्य की रक्षा के लिए सहर्ष प्रस्तुत हो जाते थे और तनिक भी विचलित न होते थे। इसी मनोभावना का परिणाम था कि किशोरावस्था में ही, जब महर्षि विश्वामित्र उनसे धर्म-विरोधियों का उच्छेद करने के लिए सहायता माँगने आए, तो भगवान् राम ने कार्य की गुरुता का तनिक भी ख्याल किये बिना उनके संग जाना स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार जब कैकेयी के षड्यन्त्र के फलस्वरूप उनको राज्याभिषेक के स्थान पर बनवास का आदेश दिया गया, तब भी उनके मुख पर तनिक भी मलीनता नहीं आई।

वास्तव में उनका सबसे बड़ा कर्त्तव्य दक्षिण भारत के वनों में ही था, जहाँ रावण के पक्ष के मुखिया आर्यों की नई बस्तियाँ को नष्ट करके राक्षस-साम्राज्य स्थापित करने का उद्योग कर रहे थे। यद्यपि उन बस्तियों के आर्य-नेता अगस्त आदि ऋषि उनका मुकाबला कर रहे थे, पर राक्षस-जगत की महान शक्ति के मुकाबले में उनको सफलता नहीं मिल रही थी। ऐसे समय में किसी ऐसे सुयोग्य और वीर नेता की आवश्यकता थी, जो युद्ध-कला में निष्णांत होने के साथ ही पूर्ण नीति कुशल भी हो और समस्त बिखरी हुई शक्तियों का एकीकरण करके राक्षसों के मूलाधार पर कुठाराघात करें। ऐसी सामर्थ्य उस समय भगवान राम के सिवा और किसी में दिखलाई नहीं पड़ती थी इसलिए उन्होंने इस महान् कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनको वर्षों तक नंगे पैरों हजारों कोस घोर जंगलों और वनों में घूमना पड़ा और हर तरह से कष्ट सहन करने पड़े। भगवान राम ने 'निशचर हीन करो महि' की जो प्रतिज्ञा की थी, उससे वे एक भी कदम पीछे न हटे। कुछ ही समय में उन्होंने दक्षिण प्रवासी आर्यों का दृढ़ संगठन करके राक्षसों के सबसे प्रबल मुखिया खरदूषण का विध्वंस कर दिया और दक्षिण भारत के पश्चिमी तट से राक्षस-साम्राज्य के विस्तार की संभावना को समूल उखाड़ फेंका। इससे क्रुद्ध होकर रावण उनकी पत्नी को हर ले गया। पर भगवान राम इससे भी विचलित न हुए और उन्होंने राक्षस-साम्राज्य की राजधानी लंका के निकट रहने वाली वनचर जातियों को अपने पक्ष में मिलाकर और संगठित करके लंकापति रावण का संहार कर डाला और दक्षिण भारत में रामेश्वर तक आर्य-साम्राज्य की पताका फहरा दी और इस प्रकार जिस कार्य को किशोरावस्था में उठाया था, उसे अनगिनती विध्न-बाधाओं को सहन करते हुए पूरा करके दिखला दिया।

भगवान राम के चरित्र का दूसरा पहलू समाज की मर्यादा अथवा अनुशासन को पालन करना तथा कराना था। वे जानते थे कि कोई समाज, जिसके अनुयायियों में अनुशासन का भाव पूर्ण रूप से न होगा, कभी उन्नति और सफलता के शिखर पर नहीं पहुँच सकता। इसलिए वे सदैव अपने माता-पिता, गुरू और अन्य गुरुजनों की आज्ञा को शिरोधार्य करते रहे और उन्होंने इसमें कभी उचित-अनुचित तक का विचार नहीं किया। उस समय ब्राह्मण ही समाज के संचालक, पथ-प्रदर्शक थे और भगवान राम आजीवन उनके सामने नतमस्तक रहे और उनके प्रत्येक आदेश का पालन करते रहे। इसी प्रकार अपने छोटे भाइयों और हनुमान, अंगद आदि अनुचरों को भी उन्होंने आदेश पालन की शिक्षा दी। जिन लोगों ने मर्यादा को भंग किया, उनके लिए उन्होंने दण्ड का भी विधान किया और इन उपायों से आर्य-साम्राज्य की जड़ को मजबूत करके उन्होंने देशवासियों को उन्नति के मैदान में अग्रसर कराया।

यह भगवान राम की मर्यादा-पालन की भावना ही थी, जिससे उन्होंने राजगद्दी पर बैठने के कुछ समय बाद ही प्रजा के मनोभावों को जानकर सीताजी का परित्याग कर दिया। वे सदैव अपनी प्रजा के पालन के लिए उसके कल्याण के लिए, उसके सुख-सौभाग्य की वृद्धि के लिए, तत्पर रहते थे। उन्होंने वन जाते समय लक्ष्मणजी से स्पष्ट कहा था—

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवस नरक अधिकारी।।

राज्य का शासन—सूत्र ग्रहण करने के बाद वे इसी नीति पर चले और प्रजा के हित का ध्यान रखते हुए उन्होंने उसको इतना सुखी बना दिया कि 'राम-राज्य' का शब्द आज तक सुशासन का पर्यायवाची समझा जाता है। उनके शासन को जो चित्र गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामायण में खींचा है, उसमें यदि एक बड़ा हिस्सा भी कवि कल्पना का मान लें तो भी 'रामराज्य' का मुकाबला करने वाला शासन संसार में कहीं भी मिल सकना सम्भव नहीं। 'राम-राज्य' का सारांश इन्हीं दो चौपाइयों में आ जाता है—

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम—राज्य नहीं काहुहिं व्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

इस प्रकार भगवान राम का चरित्र हमको अपने कर्त्तव्य पालन और मर्यादानुसार व्यवहार की शिक्षा देता है और रामनवमी के आधार पर उनके इन्हीं गुणों का चिन्तन करना और उन्हें अपने जीवन में यथाशक्ति उतारना हमारा कर्त्तव्य है।

उद्देश्य और शिक्षा

प्रतिवर्षसमागत्य रामस्य नवमी तिथिः।
स्वात्मजीवन गाथाभिर्दिशत्यादर्शजीवनम्।।१।।

रामनवमी पर्व पर प्रतिवर्ष मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का जीवन गाथाओं से लोगों को आदर्श जीवन की प्रेरणा देने आता है।

लोकस्य कल्याणर्थं हि सौख्याधिकारे सत्यपि।
तपस्विवत् कष्टसाध्यं भवत्यादर्शजीवनम्।।२।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समस्त सुख सुविधाओं पर अधिकार होते हुए भी लोक मंगल के लिए तपस्वियों जैसा कष्टसाध्य जीवन वरण करना एक ज्वलंत आदर्श है।

कर्तव्यस्य हि मुख्यत्वं, स्यादधिकारापेक्षया।
रामेण प्रेरणादत्ता जनानां मंगलाय च।। ३।।

अधिकारों की अपेक्षा कर्त्तव्य को प्रधानता देकर भगवान राम ने कर्त्तव्य धर्म की प्रखर प्रेरणा जन साधारण को दी है।

सर्वतः शक्तिमत्वेऽपि महत्कार्याणि कुर्वति।
श्रेयोदानं हि सुहृदेभ्यः स्तुत्यात्मदर्शभावना।। ४।।

सर्व समर्थ होते हुए भी-सारे महत्वपूर्ण कार्यों के सूत्र संचालन करते हुए भी सारा श्रेय अपने सुहृदों को देने का उनका आदर्श स्तुत्य है।

सन्मानं दत्वा रामेण भक्तिमत्केवटाय हि।
निषादाय शबर्यै च न्यक्कृता निम्नोच्चताखलु।। ५।।

भगवान राम ने केवट निषाद तथा शबरी आदि को सन्मान देकर, जन्म जाति के आधार पर नीच-ऊँच की अन्यायमूलक मान्यता का उन्मूलन किया।

अनीतिया स्वार्थसिध्यर्थं शक्तिमान् साधनो यदा।
निवारयति हयान्यायम् सहयोगेन च सन्नृणाम्।। ६।।

जब शक्तिमान् तथा साधन सम्पन्न व्यक्ति स्वार्थवश, अनीति को पोषण दे रहे हों, तब सत्पुरुषार्थियों के सहयोग से अन्याय का निवारण किया जाना चाहिए।

विनयेन सह शौर्यं स्नेहानुशासनद्वयम्।
आत्मीयता न्यायनिष्ठा ह्यापूर्वः संगमोऽभवत्।। ७।।

शौर्य के साथ विनय तथा आत्मीयता के साथ न्याय निष्ठा आदि गुणों का अपूर्व संगम भगवान राम में देखने को मिलता है।

गुणानां राघवे ह्येषां संघः संदृश्यते सदा।
समाजं प्रति नारीणां दृष्टिः कल्याणकारिणी।। ८।।

भगवान राम के जीवन में नारी के प्रति शुद्धि दृष्टि रखने की सामाजिक मर्यादा प्रत्यक्ष दिखाई देती है।

समुत्कृष्टा हि मर्यादा मनुजस्य चारित्रिकी।
सांगं संस्थापनं कतुः श्री राघवस्य जीवने।। ९।।
तत्क्षणेन सर्वेषां जीवनं भवति शुभम्।
ममापि प्रार्थना ह्येषा धन्यस्यात्सर्वदात्मनम्।। १०।।

मानव जीवन के हर अंग की उत्कृष्ट मर्यादा स्थापित करने वाले भगवान श्री राम के शिक्षण को अपने जीवन में धारण करके हम धन्य हो सकते हैं।

माहात्म्य बोध—भगवान के अवतार सदा अधर्म के विनाश और धर्म की स्थापना के लिए, साधुना का परित्राण और दुष्कृत्यों का विनाश, इन दो प्रयोजनों को लेकर होते हैं। जब भी जो भी अवतारी देवदूत इस धरती पर आये हैं, तब उन्होंने बढ़ी हुई असुरता को निरस्त किया और डगमगाते हुए देवत्व का सन्तुलन सम्भाला है। जिनके भीतर इन दो प्रयासों के लिए तीव्र उत्कण्ठा जग रही हो, जिनका कर्तव्य इस दिशा में जितना प्रखर हो रहा हो समझना चाहिए उनके अन्तःकरण में भगवान की उतनी ही ज्योति जगमगा रही है। अवतारी देवदूतों की जन्म जयन्ती मनाने का भी प्रधान उद्देश्य यही है कि उन्हें जो कार्य अत्यधिक प्रिय है, जिसके लिए वे देह धारण करते और कष्ट सहते हैं, उनका अनुकरण-अनुगमन हम भी करें।

यों तो अवतार चौबीस अथवा दस हुए हैं। पर उनमें प्रधानता भगवान राम और कृष्ण को दी जाती है। इन्हीं की कथा-गाथायें प्रख्यात हैं। रामलीला, कृष्णलीला भी इन्हीं की होती है। देव मन्दिरों में इन्हीं की प्रतिमायें हैं। अन्य अवतारों की भी चर्चा प्रतिष्ठा है, पर इतनी नहीं जितनी इन दो की। कारण कि इन दो का अवतरण, शिक्षण उन विशेषताओं से भरा पड़ा है, जिनकी मानव जीवन को समुन्नत, विकसित बनाने के लिए नितान्त आवश्यकता है। मर्यादाओं का पालन, कर्त्तव्य पर अविचल निष्ठा, व्यवहार में सौजन्य और अनीति के विरुद्ध प्रबल संघर्ष यह चारों ही लक्ष्य ऐसे हैं, जिन्हें रामचरित के कथा प्रसंगों में पग-पग पर पाया जा सकता है।

जन्म से लेकर लीला समापन तक के सभी प्रसंगों में उत्कृष्ट आदर्शवादिता ही भगवान राम चरितार्थ करते रहे। चारों भाई गेंद खेलते हैं, छोटे भाई भरत को विजयी सिद्ध करने और प्रसन्न करने के लिए राम हारने का अभिनय करते हैं। अपनी हेटी भी होती हो पर छोटों का श्रेय मिलता हो तो अपनी बात को भुला ही दिया जाना चाहिए। बचपन में ही महर्षि विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा के लिए उन्हें माँगने आये तो प्राण हथेली पर रख खुशी-खुशी तपोवन में चले जाते हैं। लाभ तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्वामित्र का और यज्ञ की रक्षा में अपने प्राणों का जोखम, वे इस तरह नहीं सोचते, वरन् शुभकार्य कहीं भी किया जा रहा हो, कोई भी कर रहा हो, उसमें भरपूर सहयोग करना आवश्यक है। वे प्राणों तक का खतरा उठाकर ऋषि की पूरी सहायता करते हैं। किशोर होते हुए भी महाबलिष्ठ असुरों से जूझते हैं।

विमाता कैकेयी वनवास देना चाहती हैं। विमाता को माता से बढ़कर उन्होंने माना और माता की प्रसन्नता के लिए वनवास स्वीकार किया। अधिकार त्यागा और कर्त्तव्य निबाहा। पिता वचन तोड़ना चाहते हैं। कैकेयी को दिये वचन पूरा करने में आगा-पीछा सोचते हैं। राम उनकी गुत्थी सुलझाते हैं। स्वजन सम्बन्धियों का व्यक्तिगत मोह तुच्छ और सज्जनों की वचन रक्षा उनकी प्रामाणिकता का बना रहना महान् बताते हैं। वन-गमन स्वीकार करके उन्होंने पिता को अपनी प्रामाणिकता अक्षुण्ण बनाये रखने का वचन पालन का अवसर दिया।

चित्रकूट में भरत मिलते हैं। वे वापिस चलने का अनुरोध करते हैं। राज्य सुख भोगने के लिए कहते हैं। राम अपने भाई को राजा और स्वयं तपस्वी बने रहने में अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। सुविधाओं भरे जीवन की अपेक्षा परमार्थ प्रयोजनों के लिए कष्ट-कठिनाई सहने की स्थिति को श्रेयष्कर मानते हैं, वे सुविधाओं के लाभ को स्वीकार करने से इन्कार कर देते हैं।

हारे हुए दुर्बल शरीर का न्यायानुमोदित समर्थन करते हुए प्रचण्ड बलशाली से जुझते हैं, स्वालम्बन का जीवन जीकर निःस्वार्थ भाव से छात्र और ऋषियों का नित्य मार्ग साफ करने वाली शबरी की भक्ति को तथाकथित योगी तपस्वियों से बढ़-चढ़कर ठहराते हैं और उसका अभिवादन करने उसके घर पहुँचते हैं। जन्म-जाति के आधार पर ऊँच-नीच की अवांछनीय मूढ़ता पर पाद प्रहार करते हैं और शबरी के झूठे बेर खाते हैं।

सूर्पनखा के रूप और वैभव भरे प्रस्ताव को अस्वीकार करके एक पत्नीव्रत की प्रबल निष्ठा का परिचय देते हैं। असुरता के आतंक से लड़ने में जब समझदार मनुष्य अपनी प्रत्यक्ष हानि देखते-साथ नहीं देते तो नासमझ कहे जाने वाले पिछड़े वर्ग के वानरों की सेना गठित करते हैं और संसार को बताते हैं कि पाप बाहर से कितना ही बड़ा बलवान क्यों न दीखता हो, भीतर से अत्यन्त दुर्बल होता है और यदि उसके विरुद्ध मनस्वी लोग उठ खड़े हों तो असुरता की बालू का किला ढहने में देर नहीं लगती। अनेक वरदानों से शक्ति सम्पन्न रावण जब मारा गया और उसके शरीर में अनेक बाण-व्रण पाये गये तो राम ने यही कहा—मेरा बाण तो एक ही लगा है, बाकी घाव तो उसके कुकर्मों के हैं, जो अपने आप ही फूटे हैं। अपनी विजय का रहस्य भी उन्होंने धर्म रथ पर आरूढ़ होना बताया है। न्याय नीति और सत्य में हजार हाथी के बराबर बल होता है। वह साधन रहित होते हुए भी अन्ततः विजयी होकर ही रहता है।

प्रजा की प्रसन्नता के लिए अपनी पत्नी को वनवास भेजना, यश के अवसर पर पत्नी की आवश्यकता बताये जाने पर भी पत्नी के होते दूसरे विवाह की बात अंगीकार न करना, वृद्धावस्था में तपसाधन करने के लिए वानप्रस्थ, संन्यास परम्पराओं को स्वीकार करना जैसे अनेकों प्रसंग ऐसे हैं जिनका घटनात्मक वर्णन हजार प्रवचनों से बढ़कर है। भगवान राम को जो कहना था वह उन्होंने जीभ से नहीं, वरन् अपने आचरण द्वारा लोगों के सामने रखा।

भगवान राम के अन्य साथी-सहयोगी, मित्र, स्वजन भी ऐसे ही उच्च चरित्र के हैं। उन्होंने सामयिक लाभ उठाने के लिए खोटे लोगों का न तो समर्थन किया और न उन्हें साथ लिया। लक्ष्मण ने अनन्य सेवक की तरह भाई का साथ दिया। वनवास उन्हें नहीं मिला, तो भी साथ रहे। उनकी पत्नी उर्मिला को माता सुमित्रा ने उन्हें उस आदर्श की स्थापना से रोका नहीं वरन् अपने मोह पर नियन्त्रण करके उन्हें और उल्टा प्रोत्साहित किया। भरत ने भाई के राजगद्दी न लेने पर उनकी खड़ाउओं को सिंहासन पर रखा और स्वयं भाई जैसा तपस्वी जीवन बिताते हुए राजकाज चलाते रहे। केवट ने उन्हें गंगा पार उतारा। निषाद को जब यह आशंका हुई कि भरत सेना लेकर राम को मारने जा रहे हैं, तब उसने निश्चय किया कि सारी नावें डुबो दी जायँ और जीवित रहते भरत के आक्रमण को सफल न होने दिया जाय। पीछे आशंका निर्मूल सिद्ध हुई और खुशी-खुशी राम-भरत की भेंट में उसने सहायता दी, यह दूसरी बात थी पर अनीति की बात सामने रहने पर, निज की कुछ हानि न होने पर भी अपने प्राण देकर भी अन्याय से लड़ने का निश्चय करना निषादराज की महानता का परिचायक है। राम के ऐसे ही मित्र सहयोगी थे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बूढ़ा जटायु रावण से जूझ पड़ा-जीवित रहते किसी की बहू-बेटी का अपमान न होने दूँगा। उसने प्राण गँवा दिये पर बलवान आततायी से अभिभूत नहीं हुआ। रीक्ष-वानरों का त्याग बलिदान देखते ही बनता है। यहाँ तक कि एक गिलहरी बालों में धूल भरकर समुद्र पर छिड़कने लगी ताकि समुद्र उथला हो जाय और अनीति से जूझने वाले वानरों को सफलता मिले। विभीषण ने सुविधायें छोड़ीं, कुटुम्ब रिश्ते का पक्षपात छोड़ा, त्रास सहा किन्तु न्याय का समर्थन करने के लिए राम के साथ रहा । जो स्वयं श्रेष्ठ होता है, उसे श्रेष्ठ ही मानते हैं और वे यही उनके सहयोगी बनते हैं। इस प्रकार के घटनाक्रम और उनके प्रसंगों पर कहे हुए, उनके वचन ऐसे हैं जिनमें नीति, धर्म, सदाचार, संयम, परमार्थ, उदारता, अध्यात्म कूट-कूट कर भरा है। रामनवमी के अवसर पर भगवान राम का जन्म दिन मनाते हुए ऐसे ही घटनाक्रम और प्रसंग सुनाए जायें ताकि जन साधारण को राम-भक्ति के रूप में उनके अनुगमन की प्रेरणा मिले।

रामनवमी के छः दिन बाद चैत्र सुदी पूर्णिमा को हनुमान जयन्ती होती है। उनकी चर्चा भी राम के अनन्य सेवकों के रूप में की जा सकती है। भजन-पूजन भले ही हनुमान जी न चाहते हों, पर उनने अपना शरीर और मन सर्वतोभावेन 'रामकाज' के लिए समर्पित किया और समुद्र लाँघना, लंकादहन, पर्वत उठा लेने जैसे कठिन से कठिन कार्य करने को तत्पर रहे। अपनी सुविधा को भूल गये। न विवाह न बच्चे, न नौकरी, न कोठी, न बंगला। अपने आपको विस्मरण करके ही कोई व्यक्ति भगवान का कार्य कर सकता है और भक्त की कसौटी पर खरा सिद्ध हो सकता है। इसकी जीवन्त शिक्षा हनुमान चरित्र से मिलती है।

रामनवमी ऐसे ही सन्देशों और प्रेरणाओं से भरी हुई है। लोगों को यही समझाया जाना चाहिए कि भगवान राम के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने के लिए उन्हें उनके सन्देश हृदयंगम करने पड़ेंगे और अपने क्रिया-कलाप बदलने पड़ेंगे। मात्र तिलक लगाने, आरती उतारने और नाम रटने से ही भक्ति का प्रयोजन पूरा न हो सकेगा।

।। पर्व पूजन क्रम ।।

—रामनवमी पर भगवान राम का चित्र देव मंच पर सजाया जाय। उसके साथ में देवी सीता, बन्धुगण एवं आदर्श सेवक हनुमान भी हों।

—पर्व व्यवस्था क्रम के अनुसार सारी व्यवस्था बनाकर, प्रारम्भ में सामान्य उपचार-पूजन कराते हुए रक्षा विधान तक का क्रम विवेकपूर्वक सम्पन्न किया जाय।

अब क्रमशः भगवान राम, माता, सीता, बन्धु एवं भक्त हनुमान का आवाहन दिए हुए मन्त्रों के साथ किया जाय। भगवान श्रीराम का व्यक्तित्व इन सभी के संयोग से पूर्ण बनता है। प्रत्येक आवाहन के पूर्व उनकी महानता पर संक्षिप्त सारगर्भित टिप्पणी की जाय। माहात्म्य बोध प्रकरण अथवा सामान्य ज्ञान के आधार पर यह क्रम चलाया जाय। मन्त्रोच्चार के साथ निर्दिष्ट भावना उभारते हुए आवाहन करें।

क्रिया और भावना—भगवान श्रीराम आवाहन—भगवान श्रीराम के जन्म दिन के पावन पर्व पर उनका प्रकाश हम सबके अन्तःकरण में और वातावरण में अवतरित हो, ताकि उनके अनुरूप क्रम अपनाने और जीवन में श्री-समृद्धि और सन्तोष का संचार करने में हम समर्थ हों।

ॐ दाशरथये विद्महे, सीतावल्लभाय धीमहि।
तन्नो रामः प्रचोदयात्। —राम गायत्री

ॐ राम एव परं ब्रह्म राम एव परन्तपः।
राम एव परं तत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम्।।
ॐ श्रीरामय नमः। —रामरहस्योपनिषद् १/६

अर्द्धांग मातृशक्ति सीता आवाहन—पवित्रता और निष्ठा की मूर्ति माँ सीता पवित्र प्रवाह बनकर हम सब में संचरित हों ताकि हम अपूर्णता को पूर्णता में बदल सकें।

ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे भूमिजायै धीमहि।
तन्नोः सीता प्रचोदयात्।। —सीता गायत्री

ॐ उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।
ॐ श्री सीतायै नमः।

बन्धु आवाहन

भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न आदर्श बन्धु भाव के रूप में प्रकट हो, सक्रिय हों, ताकि द्वेष और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विग्रह का समापन होकर आदर्श सहकार का लाभ हम सब उठा सके—

ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियमंहस्तौ मे कर्म वीर्यम्।
आत्मा क्षत्रमुरोमम।। —यजु २०/७
ॐ श्रीरामानुजेभ्यः नमः।

भक्त (हनुमान) आवाहन

भक्तराज प्रभु समर्पित पुरुषार्थ की प्रचण्डधारा के रूप में अवतरित—संचरित हों, जिससे स्वार्थ और निष्क्रियता के फन्दे कटे, असुरता क्षीण हो और जीवन धन्य बने।

ॐ अञ्जनीसुताय विद्महे, वायुपुत्राय धीमहि।
तन्नो मारुतिः प्रचोदयात्।।
ॐ श्री हनुमते नमः। —हनुमान गायत्री

सबका आवाहन हो जाने पर संयुक्त विग्रह का षोडशोपचार पूजन पुरुष सूक्त से करें।

पूजन के बाद पर्व प्रसाद रूप में मर्यादा धारण संकल्प कराया जाय।

.....नामाहं मर्यादापुरुषोत्तम भगवतो रामचन्द्रस्य जन्म पर्वणि देवसंस्कृतिमर्यादानुरूपेण स्वकीय चिन्तनचरित्राऽकांक्षा निर्माणार्थं अद्यप्रभृति ..... पर्यन्तं परिपूर्णनिष्ठापूर्वकं संकल्पं अहं करिष्ये।

संकल्प के बाद यज्ञ, दीपयज्ञ, आरती आदि समापन के उपचार किये जावें।

जयघोष एवं प्रसाद वितरण के साथ आयोजन समाप्त किया जाय।

शीतला अष्टमी

शीतला देवी की पूजा चैत्र कृष्ण अष्टमी को होती है। चैत्र और वैशाख हमारे देश में शीतला के प्रकोप के महीने समझे जाते हैं। इस अवसर पर छोटे बच्चों और अनेक बार बड़ी आयु वालों पर शीतला का आक्रमण होता है, जिससे उनको बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है और कभी-कभी वह घातक भी सिद्ध होता है। शीतला के कारण अनेक बच्चों की शक्ल-सूरत खराब हो जाती है और कितनों की दृष्टि-शक्ति जाती रहती है। इसलिए इस मौसम के शुरू होते ही शीतला से रक्षा पाने के उद्देश्य से शीतला अष्टमी मनाई जाती है।

उस रोज गोबर से घर लीपकर शुद्ध किये जाते हैं और पूजन में समस्त शीतल पदार्थों का ही व्यवहार किया जाता है। पूजा में जो पकवान चढ़ाये जाते हैं, वे भी शीतल अर्थात् एक दिन पहले के होते हैं। अष्टमी के दिन लोग चूल्हा नहीं जलाते और सप्तमी को संध्या काल के समय बनाये हुए भोज्य पदार्थों को ही खाया जाता है। वैसे आहार-शास्त्र की दृष्टि से बासी पदार्थ तामसी हो जाते हैं और उनका खाना वर्जित है, पर वर्ष में एक इसी दिन उस नियम को भंग कर दिया जाता है। इस सम्बन्ध में नीचे लिखी कथा कही जाती है—

किसी जमाने में एक बार शीतला का बड़ा प्रकोप हुआ। नगर के राजा के लड़के को भी शीतला निकल आई। उससे थोड़ी दूर बसने वाले एक गरीब के लड़के को भी जोर की शीतला निकली थी। वह गरीब व्यक्ति भगवती का सेवक था और शीतला के प्रत्यक्ष होते ही वह इस सम्बन्ध के सब धार्मिक नियमों का पालन करने लगा। वह लड़के के आसपास खूब सफाई रखता, जमीन को रोज शुद्ध गोबर और मिट्टी से लीपता, नमक का व्यवहार न करता, घर में कभी कढ़ाई न चढ़ाता, स्वयं नित्य शीतल वस्तुओं का व्यवहार करता और लड़के से भी कराता। इसके प्रभाव से उसका लड़का बिना अधिक कष्ट पाये थोड़े ही दिनों में अच्छा हो गया।

उधर राजा के यहाँ भी लड़के की रक्षा के लिए बड़ा प्रबन्ध किया जा रहा था। पूजा-पाठ और हवन के सिवाय देवी के नाम पर बलिदान भी किया गया। पर राज-भवन में नित्य कढ़ाही चढ़ती और तरह-तरह की मसालेदार तरकारियाँ, माँस, मद्य आदि भी प्रयोग किये जाते। उनकी खुशबू पाकर राजकुमार के मुँह में पानी भर आता और वह नौकरों से सब चीजें मँगाकर इच्छानुसार खाता रहता। इसका नतीजा यह हुआ कि हर तरह से उपाय करने, हजारों रुपया खर्च कर डालने पर भी राजकुमार अच्छा न हो सका, वरन उसकी हालत खराब होती चली गई।

उस गरीब लड़के के चंगे हो जाने का समाचार सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे इसमें भगवती का अन्याय भी जान पड़ा,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

धर्मचक्र प्रवर्तन एवं लोकमानस का शिक्षण ४.२८

क्योंकि वह जानता था कि उनकी जैसी पूजा और भेंट राज-महल में हो रही है, गरीब के यहाँ उसका सौवाँ हिस्सा भी नहीं हो सकता। राजा के मन में ऐसा विचार आने पर भगवती ने रात को स्वप्न में उससे कहा—"राजकुमार अभी तक इसीलिए जीवित है कि मैं तुम्हारी पूजा और भक्ति से प्रसन्न हूँ, किन्तु केवल पूजा से ही काम नहीं चल सकता। पहले तुम उन सब नियमों का पालन करो जो इस समय आवश्यक हैं, फिर मुझे दोष देना। इस अवसर पर ठंडी वस्तुओं का प्रयोग आवश्यक है, नमक का खाना हानिकारक है, छौंक, बघार की गन्ध से रोगी की तबियत चलती है ओर वह चाहे जो खा लेता है, इसलिए कढ़ाई चढ़ाना भी बन्द रहना चाहिए। छुआछूत का भी पूरा ख्याल रखना चाहिए, क्योंकि ऐसा न करने से दूसरों को भी यह बीमारी हो जाती है। इन सब बातों का पालन करने से ही तुम्हारा कल्याण होगा।" अब राजा को अपनी गलती मालूम हुई और उसने सब नियमों के पालन की व्यवस्था की। इससे राजकुमार की बीमारी क्रमशः घटने लगी और थोड़े ही समय में वह निरोग हो गया। फिर राजा ने अपने राज्य भर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि लोग चैत्र कृष्ण अष्टमी को शीतला देवी की इसी विधि से पूजा करें।

छुआछूत के रोगों में सफाई का पूरा ध्यान रखना और दूसरों को उससे बचाना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। ये नियम शीतला के लिए ही लागू नहीं हैं, वरन हैजा, प्लेग, कोढ़, खाज, दाद आदि सभी छूत वाले रोगों में पालन करना चाहिए। प्रायः देखने में आता है कि अनेक व्यक्ति ऐसे समय में अपने बचने की फिकर तो करते हैं, पर दूसरों के भले-बुरे का कुछ भी ध्यान रखना नहीं चाहते। ऐसे स्वार्थी लोग देवी विपत्तियों में सबसे पहले फँसते और अधिक कष्ट भोगते हैं। छुआछूत के रोगों को न फैलने देने के लिए पहले से प्रतिकार के उपाय करना बुद्धिमानी की बात है और जब रोग फैल जाए तब उससे रक्षा पाने के लिए व्यक्तिगत के साथ सामूहिक उपायों को भी करना हम सबका कर्त्तव्य है।

अक्षय तृतीया

वैशाख शुक्ल पक्ष की तीज को अक्षय तृतीया कहते हैं। यह दिन बड़ा पवित्र माना जाता है और शास्त्रों में कहा गया है कि इस दिन दिए हुए दान और किये गये स्नान, जप, होम आदि सभी कर्मों का फल अनन्त होता है। वे सभी अक्षय (नष्ट न होने वाले) होते हैं। शास्त्र में कहा गया है—

वैशाखस्य तृतीयाश्च पूर्वविद्धां करोति वै।
हव्यं देवा न गृहन्ति कव्यं च पितरस्तुषेति।।

एक समय युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से अक्षय तृतीया का महात्म्य पूछा तो वे कहने लगे—"हे राजन् ! इस पुण्य तिथि के पूर्वाह्न में जो पुण्य कार्य किये जाते हैं, उनका फल अक्षय होता है। इसको 'युगादि तृतीया' भी कहते हैं, क्योंकि सतयुग का आरम्भ इसी दिन होता है।"

पूर्वकाल में एक बड़ा निर्धन, पर सत्यवादी और श्रद्धालु वैश्य 'महोदय' नाम का था। उसका कुटुम्ब बड़ा था और आमदनी कम थी, इससे वह प्रायः दुःखी और व्याकुल रहा करता था। उसने वैशाख शुक्ल तृतीया के महात्म्य में सुना कि इस तिथि को दान-पुण्य का बहुत भारी फल प्राप्त होता है। अतः तृतीया के दिन गंगाजी में स्नान करके उसने विधिपूर्वक देवताओं और पितरों का पूजन किया। फिर आकर ग्रीष्म ऋतु के उपयोगी पदार्थ— ओले के लड्डू, सत्तू, पंखा, जल का घड़ा, दही, चावल आदि भक्तिपूर्वक ब्राह्मणों को दान में दिए। वह वैश्य यद्यपि बहुत गरीब था और उसके कुटुम्बीजन उसके दानादि कार्यों के विरोधी भी थे, पर वह अपनी श्रद्धा के बल पर धर्म-कर्म से विमुख न हुआ। इसके फल से आगामी जन्म में वह कुशावती नगरी का राजा हुआ और उसे अक्षय सम्पत्ति प्राप्त हुई।

इस प्रकार अक्षय तृतीया का व्रत इस बात की शिक्षा देता है कि मनुष्य को खान-पान के सम्बन्ध में संयम से काम लेना चाहिए और ऋतु के अनुसार अपने भोजन और रहन-सहन में परिवर्तन करते रहना चाहिए। जो इस बात पर ध्यान नहीं देगा और केवल स्वाद या रुचि के आधार पर ही चाहे जो कुछ खाता-पीता रहेगा वह स्वस्थ और सुखी नहीं रह सकता। भोजन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और स्वास्थ्य का बड़ा निकट सम्बन्ध है और जैसा भला या बुरा भोजन हम करेंगे वैसा ही हमारा शरीर और मन बनेगा और तदनुसार ही हमारे कर्म भी होंगे। भगवान ने गीता में स्वयं बतलाया है कि—

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं श्रृणु।।
आयुः सत्वबलारोग्यसुखप्रीति विवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिधः हृद्या आहाराः सात्विकप्रियाः।।
कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरुक्षविदाहिनः।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः।।
यातायामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।।

अर्थात् "जैसे यज्ञ, तप, दान तीन-तीन प्रकार के होते हैं, वैसे ही भोजन भी तीन प्रकार का सबको अपनी-अपनी प्रकृति के अनुकूल प्रिय लगता है। आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले एवं रसयुक्त चिकने और स्थिर रहने वाले भोजन सात्विक पुरुषों को प्रिय होते हैं। कड़वे, खट्टे, लवणयुक्त, अति गरम तथा तीक्ष्ण, रुखे, दाहकारक एवं दुःख, चिन्ता तथा रोगों को उत्पन्न करने वाले भोजन राजस पुरुषों को प्रिय होते हैं। जो भोजन अधपका, रसहीन, दुर्गन्धयुक्त, बासी और उच्छिष्ट, अपवित्र है, वह तामस पुरुषों को प्रिय होता है।"

उपर्युक्त दृष्टि से विचार करने पर प्रतीत होता है कि भोजन बहुत विचारपूर्वक करना चाहिए और हमारे पूर्वज इस बात का सदैव ध्यान रखते थे। यही कारण है कि उन्होंने जहाँ माघ मास की संक्रान्ति पर मुख्य रूप से तिल और गुड़ का दान देने को बतलाया, वहीं वैशाख में ओला के लड्डू और जौ के सत्तू आदि का विधान किया। इसका वास्तविक आशय यही है कि हमको भोजन करने में सदैव परिस्थिति का ध्यान रखना चाहिए और उसके अनुसार स्वास्थ्यप्रद तथा रोगनाशक आहार की व्यवस्था करनी चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं कि हम सदा घी, दूध, मलाई, बादाम, पिस्ता आदि बढ़िया समझे जाने वाले पदार्थों को ही भरमार करते रहें, क्योंकि हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि जिन राजा, रईस, सेठ, साहूकार लोगों के यहाँ इन वस्तुओं का भण्डार भरा है, वे अक्सर डॉक्टर और वैद्यों की हाजरी दिया करते हैं और रूखा-सूखा खाने वाले किसान और मजदूर उनकी अपेक्षा कहीं अधिक तन्दरुस्त तथा शक्तिशाली बने रहते हैं।

अक्षय तृतीया के व्रत से हम यह भी सीख सकते हैं कि हमको अपने खाने-पीने और आराम के साथ ही अपने आसपास के लोगों का भी ख्याल रखना चाहिए और जो बात हम अपने लिए हितकर समझते हैं उसका लाभ अन्य व्यक्तियों को भी देना चाहिए। इसी भावना से अक्षय तृतीया के व्रत के दिन से अनेक व्यक्ति गर्मियों के मौसम में यात्रियों को पानी पिलाने के लिए प्याऊ (पौसारे) बिठा देते हैं। कुछ लोग सत्तू, चना-चबैना आदि से गरीबों की सहायता करते हैं।

मनुष्य के अनेक कर्त्तव्यों और धर्मों की तरह शरीर-रक्षा पर यथोचित ध्यान देना भी एक परम धर्म है, क्योंकि प्रत्येक धर्म का साधन शरीर द्वारा ही सम्भव है। इस दृष्टि से शरीर के आधारभूत भोजन की उपयुक्तता पर विचार रखना अनिवार्य है और इस बात का प्रयत्न हमको केवल अपनी व्यक्तिगत हैसियत से नहीं वरन् समाज के कल्याण की दृष्टि से भी करना चाहिए।

गायत्री जयन्ती—गंगा जयन्ती

गंगा दशहरा और गायत्री-जयन्ती

हिन्दू-समाज में गंगा का महत्व कितना अधिक माना गया है, इस पर ज्यादा कहने की आवश्यकता नहीं। प्रत्येक हिन्दू गंगा को पूज्य दृष्टि से देखता है, उसके जल को सिर पर चढ़ाता है और उसे हर तरह के पाप का नाशक मानता है।

ऐसी पुण्य सलिला, त्रिविध पापनाशिनी गंगाजी ज्येष्ठ शुक्ल दशमी, बुधवार के दिन हस्त नक्षत्र में इस धरा धाम पर अवतीर्ण हुई थीं। इसीलिए इस पर्व को गंगा दशहरा कहते हैं। शास्त्रों का मत है कि इन दिन गंगा-स्नान करने में दस प्रकार के महापातक छूट जाते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गंगा के अवतरण की कथा लोक प्रसिद्ध है। किस प्रकार राजा भगीरथ ने अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए गंगाजी को पृथ्वी पर लाने का व्रत ग्रहण किया और अनेक वर्षों तक घोर तपस्या करके अन्त में अपने उद्देश्य की पूर्ति की। इसकी कथा धार्मिक हिन्दुओं के लिए ही नहीं, वरन् सभी मनुष्यों के लिए शिक्षाप्रद और अनुकरणीय है। भगीरथ जी की यह जीवन-साधना हम सबको बतलाती है कि यदि मनुष्य दृढ़ निश्चय कर ले और उद्योग में लगा रहे तो कठिन से कठिन कार्य को भी पूरा करके दिखला सकता है। हिमालय की शृंखलाओं और घाटियों में फँसे हुए गंगाजल को समतल भूमि पर लाकर मनुष्यों के जीवन-निर्वाह के कार्यों में प्रयुक्त करना केवल पूर्वजों को तारने वाला कार्य ही नहीं था, वरन् एक बहुत बड़ी लोक-सेवा भी थी। आज भी भारत के अधिकांश प्रसिद्ध नगर, संस्कृति केन्द्र गंगाजी के किनारे पर ही हैं और इसी के अमृतोपम जल को पीकर ऋषि-मुनियों ने यहाँ के साहित्य, दर्शन और आध्यात्मिक तत्वों का निर्माण किया है, जो आज भी हमको उद्धार का मार्ग दिखला रहे हैं। इस दृष्टि से राजा भगीरथ भारतीय संस्कृति के एक बड़े संरक्षक अथवा स्तम्भ सिद्ध होते हैं। जिस कार्य को उनके पितामह तथा पिता अधूरा छोड़ गये थे, उसको उन्होंने अपने अपूर्व अध्यवसाय से सफल करके दिखला दिया और देश तथा जाति के लिए एक ऐसा साधन उपस्थित कर दिया, जिसकी तुलना और किसी कार्य से कर सकना कठिन है। इस महान उपकार के लिए भगीरथ जी समस्त हिन्दू-जाति के श्रद्धा और भक्ति के पात्र हैं और सदैव रहेंगे। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को हम जो उत्सव मनाते हैं, वह वास्तव में भगीरथ जी की ही जयन्ती है, जिससे हम लोक-सेवा, परोपकार का जनता हित-साधन, स्वार्थ-त्याग आदि की अनुपम शिक्षायें ग्रहण कर सकते हैं।

गायत्री-जयन्ती

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी ही गायत्री-जयन्ती का दिन है। गंगा के समान गायत्री भी हिन्दू-धर्म का स्तम्भ है और वेद से लेकर पुराणों तक समस्त धर्म-शास्त्रों का सार है। इसके जप के प्रभाव से ही प्राचीन ऋषिगण मुक्ति-मार्ग का निरूपण कर सके हैं और आज भी अनगिनती व्यक्ति इसकी साधना से अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति कर रहे हैं। गायत्री धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों फलों को देने वाली और भवसागर की समस्त बाधाओं से परित्राण कराने वाली है।

गायत्री केवल हमारे व्यक्तिगत लाभ का ही साधन नहीं है, वरन् इसके द्वारा हमारे समाज की प्रगति में भी अकथनीय सहायता प्राप्त होती है। गायत्री मन्त्र के 'नः' शब्द में इस बात का संकेत है कि गायत्री माता को एकाकीपन नहीं वरन् सामूहिकता पसन्द है। कितने ही लोग जो अकेले रहकर अपने हित-साधन में व्यस्त रहते हैं, उनको आरम्भ में तो कुछ लाभ प्राप्त हो सकता है, पर जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए यह अकेलेपन की भावना बड़ी घातक है। यह स्वार्थपरता का ही एक रूप है। पिछले ३-४ हजार वर्षों से भारतवर्ष में धीरे-धीरे इसकी वृद्धि हो रही है और इसी ने देश में फूट उत्पन्न करके राष्ट्र का सत्यानाश किया है। सदैव वे ही लोग उन्नति करते हैं, जो दूसरों को साथ लेकर चलते हैं, एक-दूसरे को बढ़ाते हैं और मिल-जुलकर खाते हैं। इसके विपरीत जहाँ लोग अपना ही कल्याण चाहते हैं, अपने भाई की उन्नति को देखकर बुरा मानते हैं, अपने थोड़े से स्वार्थ के लिए समाज के बड़े से बड़े नुकसान की भी चिन्ता नहीं करते, वह देश अविद्या, गरीबी, गुलामी, बेबसी, बेकारी आदि के कष्ट ही सहता रहता है। इतिहास से यही सिद्ध होता है कि जब कोई जाति उठी है तो सामूहिकता की प्रवृत्ति को अपनाकर ही उठी है।

गायत्री मन्त्र में अनेक महत्वपूर्ण तत्व भरे हैं। उनमें से एक अत्यधिक महत्व की प्रेरणा सामूहिकता की है। 'नः' शब्द के द्वारा माता बार-बार अपने हर सच्चे पुत्र को, सच्चे उपासक को एकाकी, स्वार्थपरायण न बनाकर सामूहिकतावादी, लोकसेवी बनने की प्रेरणा करती है। इस विषय में अब तक के अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गायत्री माता किसी साधक की व्यक्तिगत साधना से जितनी प्रसन्न होती है, उससे कई गुनी प्रसन्न वह उस साधक से होती है, जो परमार्थ-परायणता की भावना से कार्य करता है। जिस पर भी वह प्रसन्न होती है, उसे निश्चित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप से ऐसी ही प्रेरणा देती है, क्योंकि आत्म-शक्ति, सुख, शान्ति, प्रतिष्ठा, मुक्ति आदि सभी लाभ परमार्थपरायणता से ही प्राप्त होते हैं। स्वार्थी के लिए लाभ बहुत थोड़ा है, जितना परिश्रम किया उतनी ही मजदूरी मात्र का वह अधिकारी है। अनेक लोगों का हित साधन करने से तो अपने आप को वह साधना अनेक गुनी फलदायक हो जाती है। सच्चे गायत्री-साधक का यही मार्ग है। उसका कर्त्तव्य है कि जहाँ तक सम्भव हो स्वयं सामूहिक हित का ध्यान रखकर वैसे कार्यों में सहयोग दें और अपने निकटवर्ती लोगों को भी वैसी ही प्रेरणा करे। यही गायत्री-जयन्ती मनाने का सच्चा उद्देश्य और सच्ची विधि है।

किसी भी महान् कार्य को सिद्ध करने के लिए सामूहिक शक्ति की अनिवार्य रूप से आवश्यकता होती है। हमें दुःख के साथ कहना पड़ता है कि पिछले कई सौ वर्षों से व्यक्तिवाद की भावना ने हमारे यहाँ की सामूहिकता की भावना को दबा दिया था और उसी के फलस्वरूप हमको पराधीनता के बन्धन में बँधना पड़ा। गायत्री अपने भक्तों को पूर्ण रूप से सामूहिकता की शिक्षा देती है, जिससे वे अपने सम्मुख स्थित महान् उद्देश्यों की पूर्ति कर सके। इस पर्व पर इस शिक्षा का हृदयंगम कर लेना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है।

उद्देश्य और शिक्षा

अवतरणं हि गायत्र्या गंगेव दशम्या तिथौ।
ज्येष्ठस्यैव सिते पक्षे जातं लोकाति पावनम्।। १।।

पतित पावनी गंगा की भाँति भगवती गायत्री का समस्त लोक की अति पवित्र करने वाला अवतरण भी ज्येष्ठ की शुक्लपक्ष की दशमी तिथि में ही हुआ।

गङ्गा प्रत्यक्ष रूपेण गायत्री चाप्रत्यक्षतः।
कल्याणं कुरुते नित्यं हठाल्लोकस्य निश्चितम्।। २।।

गंगा प्रत्यक्ष रूप से और गायत्री अप्रत्यक्ष रूप से संसार का नित्य एक निश्चित कल्याण हठात् करती हैं।

गायत्रीमन्त्रः प्रज्ञानं विवेकं च प्रयच्छति।
उभावपि स्वभक्तेभ्यः प्रसादत्वेन यच्छति।। ३।।

प्रसाद की अधिष्ठात्री देवी गायत्री (मन्त्र) प्रकृष्ट ज्ञान और विवेक देती है। वह अपने उपासक भक्तों को ये दोनों गुण प्रसाद रूप से देती है।

ज्ञानविवेकयुक्तस्य चैतन्मन्त्रवतस्तथा।
नाशोहि कष्टं क्लेशानां लोके भवति सर्वथा।। ४।।

इस (गायत्री) मन्त्र की उपासना करने वाले तथा ज्ञान एवं विवेक वाले पुरुष के सम्पूर्ण कष्ट और क्लेशों का संसार में नाश हो जाता है।

यस्य परिष्कृता चास्ति भावना च विचारणा।
अस्मिन्नेव तस्य लोके स्वर्गो वर्त्तते शुभः।। ५।।

जिसकी भावना और विचारणा परिष्कृत और शुद्ध है उसको इसी लोक में कल्याण कर स्वर्ग प्राप्त होता है अर्थात् स्वर्गोपम समस्त सुख यही प्राप्त होते हैं।

कालुष्यं मार्जयेद्बुद्धेः कुर्यादमलां काचिवत्।
सदसद्धि यतः स्पष्टं पश्यति लोके मानवः।। ६।।

बुद्धि की कलुषता का मार्जन करना चाहिए और उसे दर्पण की भाँति मलरहित विशुद्ध कर लेना चाहिए, जिससे मनुष्य संसार में बुरा और भला निश्चय ही स्पष्ट देखता है।

लोष्ठवत्परद्रव्यं च परदारांश्च मातृवत्।
स्वात्मवत्सर्वभूतानि पश्येत्सद्ज्ञानचक्षुषा।। ७।।

सद्ज्ञान रूपी नेत्र से मनुष्य को पराये धन को मिट्टी के ढेले के समान, पराई स्त्रियों को माता के तुल्य और समस्त प्राणियों को अपने समान देखना चाहिए।

गायत्रिभक्ता सर्वं हि विवेकनिकषे पुरः।
शुद्धं कृत्वैव गृह्णन्ति नान्यथाऽन्धवत्क्वचित्।। ८।।

गायत्री देवी के उपासक भक्त सबको अर्थात् प्रत्येक बात को पहिले विवेक की कसौटी पर शुद्ध करके अर्थात् कसकर ही ग्रहण करते हैं और तरह से कभी भी अन्धे की भाँति नहीं।

प्रसारः सद्भावनानामधिकाधिको व्यापकः।
उपासनमेव ह्येतद्गायत्र्याश्चास्ति निश्चलम्।। ९।।

सद्भावनाओं का अधिक से अधिक व्यापक प्रसाद इस गायत्री की निश्चल उपासना ही है। अर्थात् गायत्री की उपासना ही से अच्छी-अच्छी भावनाओं का व्यापक प्रसार हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपासका हि गायत्र्या लाभं लब्धवा सुस्थिरम्।
सुखशान्त्योः परत्रापि स्युर्वैस्वर्गाधिकारिणः।। १०।।

गायत्री के उपासना करने वाले इस लोक में सुख और शान्ति का सुस्थिर लाभ प्राप्त करके परलोक में भी निश्चय ही स्वर्ग प्राप्त करने के हकदार बन जाते हैं।

माहात्म्य बोध

सृष्टि के आदि में ब्रह्माजी जिस शक्ति की साधना करके विश्व संचालन के उपयुक्त ज्ञान एवं विज्ञान, अनुभव एवं पदार्थ प्राप्त कर सकने में समर्थ हुए, पौराणिक प्रतिपादन के अनुसार उसका नाम गायत्री है। सृजन और अभिवर्धन का उद्देश्य लेकर चल रही जीवन प्रक्रिया को भी इसी सम्बल की आवश्यकता है, जो ब्रह्माजी की तरह उसे मानसिक क्षमता एवं भौतिक सम्पन्नता युक्त कर सकें। गायत्री मन्त्र में वे तत्व बीज मौजूद हैं। उपासना और तपश्चर्या के विधान को अपनाकर इन तत्वों को वैज्ञानिक रूप से अपने भीतर-बाहर बढ़ाया भी जा सकता है।

गायत्री को वेदमाता, ज्ञान गंगोत्री, संस्कृति की जननी एवं आत्मबल अधिष्ठात्री कहा जाता है। इसे गुरुमन्त्र कहते हैं। यह समस्त भारतीय धर्मानुयायियों की उपास्य है। इसमें वे सभी विशेषतायें विद्यमान हैं, जिनके आधार पर वह सार्वभौम, सर्वजनीन उपासना का पद पुनः ग्रहण कर सकें। इसी ज्ञान-विज्ञान की देवी गायत्री का जन्म दिन है गायत्री जयन्ती।

इसी दिन भगवती गंगा स्वर्ग से धरती पर अवतरित हुई। जिस प्रकार स्थूल गंगा भूमि को सींचती, प्राणियों की तृषा मिटाती, मलीनता हरती और शान्ति देती है, वहीं सब विशेषतायें अध्यात्म क्षेत्र में गायत्री रूपी ज्ञान गंगा की है। गायत्री महाशक्ति के अवतरण की गंगा अवतरण से संगति भली प्रकार मिल जाती है। एक को सूक्ष्म दूसरे को स्थूल-एक ही तत्व की व्याख्या कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति न होगी।

सगर राजा के साठ हजार पुत्र अपने कुकर्मों के फलस्वरूप अग्नि में जल रहे थे। उनकी कष्ट निवृत्ति गंगा जल से ही हो सकती थी। सगर के एक वंशज भगीरथ ने निश्चय किया कि वे स्वर्ग से गंगा को धरती पर लायेंगे। इसके लिए कठोर तप साधना में लगे। इस निःस्वार्थी, परमार्थी का प्रबल पुरुषार्थ देखकर गंगा धरती पर आयी। पर उन्हें धारण कौन करे, इसके लिए पात्रता चाहिये। इस कठिनाई को शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को धारण करके हल कर दिया। गंगा का अवतरण हुआ। सगर पुत्र उसके प्रताप से स्वर्ग को गये और असंख्यों को उसका लाभ मिला।

आत्म-शक्ति का—ऋतम्भरा प्रज्ञा का अवतरण ठीक गंगावतरण स्तर का है। उसकी पुनरावृत्ति की आज अत्यधिक आवश्यकता है।

सारा संसार पाप-तापों से जल रहा है। इस विरति से छुटकारा उसे उत्कृष्टता और आदर्शवादिता की ज्ञान गंगा ही दिला सकती है। यह अवतरण अनायास ही नहीं होगा। इसके लिए जागृत आत्माओं को भगीरथ की भूमिका निभानी पड़ेगी। ज्ञान-यज्ञ के विस्तार के लिए-भावनात्मक नव निर्माण के लिए निःस्वार्थ-परमार्थ परायण प्रबल पुरुषार्थ करना पड़ेगा। ऐसा करने से वह कठिन और असम्भव दीखने वाली प्रक्रिया सम्भव ही नहीं सरल भी हो सकती है। उस युग परिवर्तनकारी प्रचण्ड शक्ति को यश लोलुप एवं अहन्ता पोषक क्षुद्र व्यक्ति धारण नहीं कर सकते। उसे धारण करने के लिये तपस्वी-मनस्वी और तेजस्वी शंकर चाहिये। ऐसी महानता सम्पन्न विभूतियाँ जब इस नवयुग प्रवर्तिनी ज्ञान गंगा को अपने मस्तक में धारण कर लेंगी, तब उसका प्रवाह आगे बढ़ेगा। न केवल कुबुद्धि और दुर्भावनाग्रस्त पतनोन्मुख सगर सुतों का उद्धार होगा वरन् सर्वसाधारण की सुख-शान्ति का द्वार भी खुल जायेगा। हमें भगीरथ और शंकर की भूमिका निभाते हुए ज्ञान गंगा के अवतरण के लिये गायत्री जयन्ती के पुण्य पर्व पर व्रत लेना चाहिये और उनके लिये कटिबद्ध होना चाहिये। गंगा का जन्म दिन भी यही पर्व है।

यह पर्व महत्वपूर्ण प्रेरणायें देता है। स्वर्ग से उतरकर धरती पर अवतरण। हिमालय की सुख-सुविधाओं का त्याग। कष्टसाध्य लोक मंगल की प्रवृत्ति। लघुता को महानता में परिणत करने वाला-समुद्र मिलन का लक्ष्य, इसके लिये यात्रा द्वारा अपनी पात्रता सिद्ध करने के लिये सुदूर प्रदेशों का सिंचन करने की तप साधना। भूमि की तृषा बुझाने के लिये अपना अस्तित्व गँवा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देने की साध। इस महानता से हरेक को प्रभावित कर सहायता के लिए तत्पर, हिमालय का अजस्त्र अनुदान, बादलों का आश्वासन, नदी-नालों का आत्म समर्पण जैसी उपलब्धियों का प्रादुर्भाव। गंगोत्री की तनिक-सी धारा का बंगाल पहुँचते-पहुँचते हजार धारों में विस्तार। यही महानता गंगावतरण की प्रक्रिया है। जिस व्यक्ति में भी वह अवतरित होती है, उसे गंगा जैसा दृष्टिकोण चरित्र और कर्त्तव्य अपनाना होता है। गायत्री अपना प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मानों प्रत्येक जागृत आत्मा को यह उद्‌बोधन करती है कि जीवन के श्रेष्ठतम सदुपयोग का क्रिया-कलाप यही हो सकता है।

गायत्री मन्त्र के २४ अक्षरों में २४ शिक्षायें हैं, जो आज भी व्यक्ति और समाज के लिये सही मार्गदर्शक हैं। यह गायत्री स्मृति के २४ श्लोकों में विद्यमान हैं। इसी प्रकार गायत्री मन्त्र में ६ शब्द ३ व्याहृतियाँ १ प्रणव-इन १३ पक्षों की १३ श्लोकों में विवेचना 'गायत्री गीता' में की गई है। इन दोनों संकल्पों को गायत्री महाविज्ञान के तृतीय खण्ड में पढ़ा जा सकता है और उस आधार पर गायत्री मन्त्र के प्रकाश में व्यक्ति निर्माण और समाज निर्माण का आधार क्या होना चाहिये, इसके सभी प्रधान पक्षों पर प्रकाश डाला जा सकता है। साधारणतया गायत्री मन्त्र का मोटा शब्दार्थ भी बहुत प्रेरक और प्रकाशपूर्ण है।

भूः भुवः स्वः तीन लोक हैं, तीनों में ॐ परमात्मा समाया हुआ है। वही शीर्ष भाग का प्रणव और व्याहृतियों का तात्पर्य है। भूः शरीर को, भुवः मन और और स्वः अन्तरात्मा को कहते हैं। इन्हीं को स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीर भी कहा जा सकता है। इनमें परमात्मा व्याप्त है। यह परमात्मा के घर हैं। देव मन्दिर तीर्थ हैं। इन्हें सदा निर्मल एवं परिष्कृत ही रखा जाना चाहिए इनमें दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों की मलीनता को स्थान नहीं मिलना चाहिए। व्यक्ति, परिवार और समाज भी भूः भुवः स्वः है। इन्हें परमात्मा का मूर्तिमान स्वरूप, उत्तरदायित्व समझा जाय और उन्हें श्रेष्ठतम स्थिति में रखने के लिए निरन्तर तत्पर रहा जाय, यह प्रेरणा गायत्री के शीर्ष भाग की—'भूः भुवः स्वः' की है।

'तत' अर्थात् 'वह'। यह अर्थात् अप्रत्यक्ष-प्रेय। वह अर्थात् परोक्ष श्रेय। हमें वास और तृष्णापरक लोभ-मोह में ग्रस्त होकर लोभ और मोह की वासना अहंता की पूर्ति में लगे रहकर, प्रत्यक्ष भौतिकता तक अपने को सीमित नहीं कर लेना चाहिये। 'यह' को ही सब कुछ नहीं समझ लेना चाहिए। वरन् 'वह' पर भी ध्यान देना चाहिए। अन्तरात्मा की पुकार, मरणोत्तर स्थिति, ईश्वरीय निर्देशों की पूर्ति, पवित्र कर्त्तव्यों का निर्वाह जैसे महत्वपूर्ण तथ्यों पर भी ध्यान देना चाहिये। सीमित संकीर्णता में चिन्तन अवरुद्ध न रखकर विस्तृत उदात्त दूरगामी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए और अपनी कार्य पद्धति उसी आधार पर निर्धारित करनी चाहिए। यही है गायत्री के प्रथम पद 'तत' का सन्देश।

'सवितु' सृजनकर्त्ता—तेजस्वी, ईश्वर इन दो महान् विशेषताओं से परिपूर्ण है, हम भी उनका अनुसरण करें। ध्वंसात्मक-विघटनात्मक प्रवृत्तियाँ छोड़ें और सृजनात्मक-विधेयात्मक क्रिया-कलाप अपनायें। हम क्या कर सकते हैं, क्या बन सकते हैं, इसी पर ध्यान केन्द्रित रखें। संसार में जो कुछ अवांछनीय है, वह वांछनीयता के अभाव भर का द्योतक है। प्रकाश का न होना ही अन्धकार है। अन्धकार से लड़ते-फिरना बेकार है। प्रकाश उत्पन्न करें ताकि अन्धकार सहज ही तिरोहित हो सके।

दूसरा अर्थ है—तेजस्वी। दासता, मलीनता, विलासिता की दुष्प्रवृत्तियों में बँधना सर्वथा अस्वीकार कर दें। आत्म गौरव को समझें—स्वतन्त्र चिन्तन एवं कर्तव्य अपनायें-सर्वतोमुखी स्वच्छता में गहरी अभिरुचि हो तथा भव-बन्धनों से मनोभूमि को, असंयम से शरीर को अवांछनीय प्रचलनों से समाज को बन्धन मुक्त करायें। सर्वांगीण मुक्ति का लक्ष्य लेकर चलें यही तेजस्वी होने का स्वरूप है। इसके लिए हमें मनस्वी और तपस्वी होना चाहिये। ताकि हमारी दीपक जैसी उपयोगी तेजस्विता का प्रकाश और प्रभाव सर्वत्र अनुभव किया जा सके। उसके आधार पर स्वर्गीय वातावरण का सृजन हो सके। यह है—सविता शब्द के सृजनकर्त्ता और तेजस्वी होने का सही स्वरूप।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

'वरेण्यं' का अर्थ है—वरण करने योग्य चुने जाने योग्य। इस संसार में कूड़ा—करकट भी कम नहीं। ओछे विचार मूढ़—मान्यतायें—हेय परम्परायें तथा खोटे व्यक्तियों से दुनियाँ भरी पड़ी है। इनमें केवल वरेण्य—श्रेष्ठ उचित को ही अपनाया जाय और जो आवांछनीय भरा पड़ा है उसे न तो स्वीकार किया जाय और न सहयोग दिया जाय।

'भर्ग' शब्द का एक अर्थ भून देना भी होता है। अपने भीतर की दुर्भावनाओं को, गुण-कर्म-स्वभाव में भरी अवांछनीयताओं को छोड़ना-तोड़ना ही चाहिए। परिवार में जो अस्त-व्यस्तता और अव्यवस्था का क्रम चल रहा हो उसे बदला जाना चाहिए। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में जो दुष्प्रवृत्तियाँ घुस पड़ी हैं, उन्हें उखाड़ा ही जाना चाहिए। अनीति के विरुद्ध संघर्ष के लिये गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिये हैं, उन्हीं को गायत्री का भर्ग शब्द देता है। धर्म की स्थापना और अधर्म का उन्मूलन करना भगवान के अवतार का प्रधान उद्देश्य रहा है। भाड़ में जिस तरह चने भूने जाते हैं, उसी तरह हमारी तेजस्विता 'अवांछनीयता' को भूनने में तत्पर रहे, यह भर्ग शब्द की प्रेरणा है।

'देवस्य' शब्द देवत्व की ओर संकेत करता है। लोग लेने भर का मजा लूटते हैं। देने का आनन्द उससे कितना अधिक मधुर है, इसका आस्वादन कोई कर सके तो उसका अन्तःकरण निरन्तर आनन्द एवं उल्लास से ओतप्रोत बना रहे। जिसका स्वभाव देना हो वह देव। जिसे तृष्णा खाये जा रही हो वह 'दानव', हमें दानव नहीं देव बनना चाहिए। अनुकरणीय देव जीवन जीना चाहिए। मस्तिष्क में दिव्य दर्शन करते रहना चाहिए। समाज को देवात्माओं से भरा हुआ-स्वर्गीय परिस्थितियों से ओत-प्रोत बनाने के लिये प्रयत्न करना चाहिए। देवाराधना का तात्पर्य देव प्रवृत्तियों का अभिवर्धन ही है। गायत्री मन्त्र का देव शब्द इसी ओर अंगुलि निर्देश करता है।

'धीमहि' का अर्थ है—धारण करना। जो श्रेष्ठ है—धर्म का कर्त्तव्य है, उसे केवल कहने-सुनने, पढ़ने-लिखने के वाक् विलास तक ही सीमित न रखें वरन् उसकी जड़ें अपने मस्तिष्क से आगे बढ़ाकर भाव क्षेत्र में, आकांक्षाओं में उतारें और उन्हें कार्यान्वित करने का प्रयत्न करें। कथा, प्रवचन, स्वाध्याय, सत्संग, मनन, चिन्तन के सहारे बहुधा उच्च आदर्शों की सुधार पद्धति सीमित होकर रहा जाय, जड़ न जमाये, निष्ठा के रूप में परिणत न हो, कार्य-पद्धति में स्थान न पायें तो उसे न उगने वाले बीज की संज्ञा दी जायेगी। गायत्री का धीमहि शब्द कहता है, औचित्य को स्वीकार करना ही पर्याप्त नहीं तदनुकूल आचरण भी करना चाहिये।

'धियो' का अर्थ है—बुद्धि, विवेक, आस्था। इसी बीज का विकसित स्वरूप है—व्यक्तित्व भीतर जैसी भी स्थिति मनुष्य की है उसका बाह्य क्रिया-कलाप वातावरण लगभग उसी स्तर का बनता चला जाता है। यह संकेत अन्तःकरण की आन्तरिक भाव निष्ठा की ओर है। जहाँ से बुद्धि, मन तथा शरीर की गतिविधियों को प्रेरणा मिलती है। हमारी आस्था निष्ठा जब पशु प्रवृत्तियों से भरी होती है तो मस्तिष्क में आदर्शों के प्रवचन और शरीर में धार्मिकता के आडम्बर बढ़ते रहने पर भी बात कुछ बनती नहीं है, दम्भ भर विकसित होता रहता है। गायत्री का 'धियो' शब्द आस्था, निष्ठा, आकांक्षा के मर्मस्थल को स्पर्श करने और परिवर्तन की चाबी वहीं से घुमाने की ओर संकेत करता है। धियो का अर्थ यहाँ ऋतम्भरा प्रज्ञा से है। साधारण समझदारी और बुद्धिमानी को भी सन्मार्गगामी बनाने की उसमें शिक्षा समाविष्ट है।

'यो नः' अर्थात्—हमारा हम सबका। एकाकीपन निकम्मी चीज है। अपने लिए ही धन, भोग, यश, वैभव, पद, सत्ता एकत्रित करने में सभी लोग लगे रहते हैं। तथाकथित भक्त एवं धर्मात्मा भी इसी गलित कुष्ठ के रोगी देखे जाते हैं। उन्हें भी अपने लिए ही स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि, प्रतिष्ठा चाहिए। इस क्षुद्रता के कारण उनकी पूजा उपासना भी व्यापारी-व्यवसाइयों की भाँति अपने मन की संकीर्णता में ही उलझी रह जाती है। न उससे उनका लाभ होता है और न समाज का। स्वार्थी वस्तुतः ओछेपन का नाम है, जो अपनी उपलब्धियों से न स्वतः लाभान्वित हो सकता है, और न दूसरे को होने देता है। कोई एकाकी व्यक्ति उन्नति करे भी तो ऐसे दूषित वातावरण में उसका लाभ नहीं ले सकता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुष्ट और ईर्ष्यालु उसे अकारण ही सताते रहेंगे और चैन से न बैठने देंगे। गायत्री मन्त्र का 'योनः' शब्द यही प्रेरणा देता है कि जो भी सोचना हो 'मैं' की तुच्छ परिधि में नहीं वरन् 'हम' को ध्यान में रखकर सोचना तथा करना चाहिए—अपने को समाज एक घटक मानना चाहिए और सामाजिक प्रगति में ही उपनी प्रगति की झाँकी देखनी चाहिए।

'प्रचोदयात्'—अर्थात् प्रेरणा दे। परमात्मा से प्रार्थना है कि आपने हमें भौतिक सुविधायें उपार्जित करने में समर्थ बुद्धियुक्त शरीर यन्त्र दे दिया, अब भौतिक क्षेत्र में हमारा माँगना और उसका देना व्यर्थ है। पात्रता के अभाव में यदि प्रस्तुत उपलब्धियों से ही लाभ उठा सकना अपने लिए सम्भव न हो तो आगे बढ़ा हुआ वैभव अधिक तृष्णा और अधिक दुष्टता ही करेगा। सदुपयोग न आने पर ही मनुष्य अपने को अभावग्रस्त समझता है और उसका निराकरण वस्तुओं से नहीं, आन्तरिक समाधान में ही सम्भव होता है। अस्तु परमात्मा से ही एक ही प्रार्थना गायत्री मन्त्र में की गई है कि वे हमें सन्मार्ग पर चलने की आकांक्षा जगा दें, उधर चलने का साहस प्रदान करें और घसीटते हुए उस कल्याण मार्ग पर नियोजित कर दें। यही प्रार्थना है कि 'घुनने और धुनने' में समय नष्ट करते रहने की कुण्ठा को हटावें। कुत्साओं से विरत हों और शरीर एवं मन को उस मार्ग पर धकेलें, जिससे मानव जीवन का प्रयोजन पूरा होता है। गायत्री मन्त्र का अन्तिम चरण उत्कृष्ट विचारणा की साहसिक प्रेरणा में—व्यावहारिक गतिविधियों में परिणित करने का आग्रह करता है। उसी बिन्दु पर वह अत्यधिक जोर देता है।

यह है, गायत्री मन्त्र के शब्दों में समाया हुआ मोटा किन्तु अति महत्वपूर्ण-भावपूर्ण और तथ्यपूर्ण अर्थ। इन्हीं की परिधि में वक्ताओं को अपने प्रतिपादन अपने ढंग से प्रस्तुत करते हुए, गायत्री मन्त्र की व्याख्या करनी चाहिए और उपस्थित लोगों के मनःक्षेत्र को इस महाशक्ति की प्रेरणाओं से आलोकित करना चाहिए।

गायत्री का वाहन है—हंस। हंस का अर्थ है स्वच्छ कलेवर। दाग धब्बों से कलंक कालिमाओं से बना हुआ जीवन हंस कैसे कहा जायेगा ? जिसे नीर-क्षीर विवेक करना आता है जो दूध में से पानी हटा देता है, दूध ही ग्रहण करता है, वह हंस है, जीवन को बिना दाग-धब्बे का स्वच्छ निर्मल चरित्र रखने का प्रयत्न करने वाला तथा अनुचित का सर्वथा त्याग-औचित्य कष्टसाध्य होते हुए भी उसे अंगीकृत करने की नीति, हंस प्रवृत्ति है। जिन्होंने यह नीति अपनाई, उन्हीं को गायत्री माता अपना वाहन बनायेंगी। उन्हीं पर विशेष कृपा करेंगी। यह तथ्य भी इस अवसर पर उपस्थित लोगों को समझाया जाना चाहिए।

गंगा और गायत्री के जन्मदिन का पुनीत पर्व हमारे कर्म में गंगा जैसी प्रखरता और चिन्तन में गायत्री जैसी ज्योति उत्पन्न करे, इसी प्रेरणा को अधिकाधिक गहराई तक हृदयंगम किया जाय।

।। पर्व पूजन क्रम।।

देव मंच पर आद्यशक्ति गायत्री और गंगावतरण के चित्रों की झाँकी सजाई जाये।

पर्व व्यवस्था क्रम के अनुरूप प्रारम्भिक उपचार करते हुए रक्षा विधान तक के क्रम यथा शक्ति पूरे कराये जायें।

पर्व पर विशेष रूप से आद्यशक्ति की तीन धाराओं वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता का आवाहन करें। हंस का आवाहन करें। पतितपावनी गंगा का आवाहन करें। प्रत्येक आवाहन के पूर्व उनकी गरिमा का संक्षिप्त, सारगर्भित विवरण दें। फिर भावना संचार के संकेत देते हुए मन्त्रोच्चारपूर्वक आह्वान करें।

वेदमाता आवाहन

वेद अर्थात् ज्ञान की माता। हमारे आवाहन के साथ 'माँ' उस दिव्यज्ञान प्रकाश के रूप में अवतरित हो, जो अज्ञान, शक्ति, अभाव से मुक्ति दिलाकर आदर्श लक्ष्य तक पहुँचने में समर्थ बना दें। दिव्य ज्ञान की उपलब्धि और संधारण करने व उपयोग में लाने की पात्रता माँ सम्पन्न बनायें।

ॐ नमस्ते सूर्यसंकाशे सूर्य सावित्रिवेऽमले।
ब्रह्मविद्ये महाविद्ये वेदमातर्नमोऽस्तु ते।

—गायत्री पुरश्चरण प.

ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः, प्राणं, प्रजां, पशुं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कीर्तिं, द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्यं दत्वा, व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

ॐ श्री वेदमात्रे नमः। —अथर्व १९-७१-१

देवमाता आवाहन

देवत्व, सद्वृत्ति सदाचार की जननी। माँ दिव्य उल्लास के प्रवाह के रूप के जन-जन में प्रस्फुटित हो। हमारा भावभरा पूजन स्वीकार करें, दीनता और दुष्टता का निवारण करके—

ॐ देवस्येति तु व्याकरोत्यमरतां
मर्त्योऽपि सम्प्राप्यते।
देवानामिव शुद्धदृष्टिकरणात्
सेवोपचाराद् भुवि।
निःस्वार्थपरमार्थकर्मकरणात्
दीनाय दानात्तथा।
बाह्याभ्यन्तरमस्य देव भुवनं
संसृज्यते चैव हि।।
ॐ श्री देवमात्रे नमः। —गायत्री गीता

विश्वमाता आवाहन

जगत्माता उस उदार आत्मीय भाव सहित अवतरित हो-जो संकीर्ण स्वार्थपरता वर्गभेदों का उच्छेदन करके हम सबको मनुष्यता के गौरवमय स्तर का अधिकारी बना दे। विश्व परिवार, विश्व संस्कृति, विश्व व्यवस्था के आदर्श को साकार करने की क्षमता प्रदान करें।

ॐ त्वं मातः सवितुर्वरेण्यमतुलं भर्गः सुसेव्यः सदा,
यो बुद्धीर्नितरां प्रचोदयति नः सत्कर्मसु प्राणदः।
तद्रूपां विमलां द्विजातिभिरुपास्यां मातरं मानसे,
ध्यात्वा त्वां कुरु शं ममापि जगतां सम्प्रार्थयेऽहं मुदा।।
ॐ श्री विश्वमात्रे नमः। —गायत्री पुरश्चरण पद्धति

हंस आवाहन

आद्यशक्ति का वाहन हंस है। जीव को भी हंस कहा गया है। हंस—चेतना, विवेक, निर्मलता का अवतरण है। उसके पूजन से हम सब भी महाशक्ति को धारण करके गतिशील होने में समर्थ हो सके।

ॐ परमहंसाय विद्महे, महाहंसाय धीमहि।
तन्नो हंसः प्रचोदयात्।।
ॐ श्री हंसाय नमः। —हंस गायत्री

गंगा आवाहन

पतित पावनी, लोक कल्याणकारी माँ गंगा पवित्र परमार्थ वृत्ति सहित पधारें। पापो-कलुषों की कालिमा धोकर निर्मल बनायें।

ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
—यजु. ३४/११

ॐ शैलेन्द्रादवतारिणी निजजले मज्जज्जनोत्तारिणी,
पारावार विहारिणी भव-भय श्रेणीसमुत्सारिणी
शेषाहेरनुकारिणी हरशिरोवल्लीदलाकारिणी,
काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गंगामनोहारिणी।।
ॐ श्री गंगायै नमः।।

आवाहन के बाद सबका संयुक्त पूजन पुरुष सूक्त से किया जाय।

पूजन के उपरान्त पर्व प्रसाद संकल्प धारण कराया जाय।

.....नामाहं युगशक्ति महाप्रज्ञागायत्र्यवतरणपर्वणि त्रिपदासाधनां स्वयं सम्पादयितुं अद्यप्रभृति च..... जनान् एतत्साधनायांनियोक्तुं श्रद्धापूर्वकं संकल्पयिष्ये।

संकल्प के बाद यज्ञ-दीप यज्ञ सहित समापन के सामान्य अनुशासन क्रम से आयोजन पूर्ण किया जाय।

हमारा आराधना पर्व गायत्री जयन्ती

युग निर्माण परिवार के परिजन व्यक्तिगत आत्म शिक्षण के लिए स्वयं के व्यक्तित्व को संस्कारित और परिष्कृत करने के लिए जप, उपासना तथा जन्म दिन आयोजन जैसी प्रक्रिया अपनाते हैं। उसी प्रकार व्यक्ति और परिवार को परस्पर कर्त्तव्यों तथा दायित्वों का बोध कराने, उन्हें स्मरण रखने के लिए समय-समय पर संस्कारों का आयोजन किया जाता है। इसे अपनी कमजोरी या स्वभाव का दोष ही कहा जाना चाहिए कि हम अपने लाभ और हित को छत्तीसौ घड़ी याद रखते हैं पर जीवन की सार्थकता जिन आदर्शों में है, उन आदर्शों को घड़ी-घड़ी भूलते रहते हैं। इस कमजोरी को दूर करने आदर्शों को स्मृति में बनाये रखने के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही समय-समय पर धर्मानुष्ठानों की आवश्यकता पड़ती है।

धर्मानुष्ठानों के कर्मकाण्ड इसलिए सम्पन्न नहीं किये जाते कि उनसे भगवान खुश होता है। और खुश होकर हमारी झोली में उपहार डाल देता है। कर्मकाण्डों का एक मात्र उद्देश्य है—भाव भरे वातावरण में व्यक्ति की चेतना को प्रशिक्षित करना। इस उद्देश्य को भुलाने का ही परिणाम है कि हम छोटी-छोटी बातों और छोटे कामों को हल करने उन्हें पूरा करने के लिए भगवान को पुकारते हैं, कर्मकाण्ड अपनाते हैं जब हमारा प्रयोजन पूरा नहीं होता तो हम कर्मकाण्डों को ही मिथ्या मानने लगते हैं और भगवान पर पक्षपात का दोषारोपण करने लगते हैं। जबकि न तो कर्मकाण्ड मिथ्या है और न ही ईश्वरीय सत्ता पक्षपाती है। त्रुटि यह रह जाती है कि हम कर्मकाण्डों के उद्देश्य प्रयोजन को भुलाकर उनसे गलत अपेक्षायें करने लगते हैं।

हमारे प्राचीन ऋषियों ने कर्मकाण्डों की व्यवस्था इसलिए की कि व्यक्ति उनके माध्यम से आदर्शों की शिक्षायें ग्रहण करें। यो इस तरह के आदर्शों का शिक्षण सामान्य वार्तालाप, चर्चा, बातचीत और विचार-विमर्श द्वारा भी सम्भव है। लेकिन तब बात और हो जाती है। बात कहने मात्र का प्रभाव नहीं होता, प्रभाव होता है। बात कहने के ढंग का, उस वातावरण का जिसमें कि बात कही गयी है और उस मनोभाव की स्थिति का जिसमें रहते हुए सुनने वाले ने बात सुनी है। सारा खेल भावनाओं का है, कहने वाले की भावनायें, सुनने वाले की भावस्थिति, वातावरण का प्रभाव आदि। कर्मकाण्ड इन सभी आवश्यकताओं को पूरा करने हैं। ये वातावरण में भावनात्मक सृष्टि तो करते ही है, सुनने—शिक्षा प्राप्त करने वाले को भी उस भावदशा में लाते हैं, जिससे कि कही गयी बात का अभीष्ट प्रभाव हो सके। कर्मकाण्डों को आदर्शों के शिक्षण की प्रभावशाली और अचूक पद्धति इसीलिए कहा जाता है।

जप-तप, साधना अनुष्ठान और संस्कार प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति तथा परिवार का जिस प्रकार शिक्षण सम्भव है, उसी प्रकार पर्वायोजन के माध्यम से सामाजिक सुसंस्कारों की प्रक्रिया को जीवित और सक्रिय रखा गया है। पर्वों की रचना और व्यवस्था इसी दृष्टि से की गयी कि प्राचीन काल में घटी महान् घटनाओं के माध्यम से उनकी प्रेरणायें और उनका प्रकाश सामूहिक वातावरण में जनमानस में उत्पन्न किया जा सके। पर्वों से सम्बन्धित घटनाओं में निहित तथ्यों में देश, काल और पात्र के अनुसार जब जहाँ, जिसकी प्रधानता देने की आवश्यकता पड़ती है, उन्हें प्रधानता दे दी जाती है और शेष को गौढ़ कर लिया जाता है इन दिनों हमारे देश में सैकड़ों पर्व मनाये जाते हैं। स्थान और क्षेत्र के अनुसार के जगह-जगह अलग-अलग ढंग से अलग-अलग रूप में मनाये जाते हैं। युग निर्माण परिवार ने इस तरह के पर्वों में छः पर्वों का चुनाव कर उन्हें सार्वभौम बनाया है तथा दो-दो महीने के अन्तर से साल भर तक पर्वों के द्वारा लोक शिक्षण की प्रक्रिया को जीवन्त बनाये रहने का प्रयास किया है।

गायत्री जयन्ती जो जून में पड़ती है—इन्हीं छः पर्वों में से एक है यह सभी परिजन जानते हैं। इसी दिन भगवती गंगा का भी स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। स्थूल दृष्टि से ये दोनों घटनायें भले ही अलग महत्व रखती हो पर तात्विक दृष्टि से दोनों पर्व एक ही अर्थ और एक ही शिखा प्रदान करते हैं। गंगावतरण को पर्व का स्थूल स्वरूप कहा जा सकता है तो उसी की संगति सूक्ष्म दृष्टि से गायत्री भक्ति के अवतरण से मिल जाती है। जिस प्रकार गंगा भूमि को सींचती, प्राणियों की तृषा को बुझाती, मलीनता को दूर करती और शान्ति देती हुई गंगोत्री से सागर तक बहती है। उसी प्रकार गायत्री महाशक्ति, जीवात्मा से लेकर परब्रह्म तक चेतना को उपरोक्त तमाम विशेषताओं से लाभान्वित करती हुई आगे बढ़ती है। गंगा को स्थूल और गायत्री को सूक्ष्म कहकर यह समझा जा सकता है, ये दोनों एक ही तत्त्व को अपने-अपन ढंग से व्याख्यायें करती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सारा संसार इन दिनों पापतापों से जल रहा है। इस विपत्ति से छुटकारा प्राप्त करने में गायत्री की आदर्शवादिता की ज्ञान गंगा ही सहायक हो सकती है। ज्ञानगंगा में हम स्वयं स्नान करें और उसके शीतल जल के औरों की प्यास बुझाने, व्यथा हटने का भी प्रयत्न करें। इसके लिए कठिन पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है, हम अपने आस-पास के लोगों को, समीपवर्ती जनों को उस ज्ञान गंगा में निमज्जति करें तथा स्वयं शीतलता प्राप्त करने के साथ-साथ औरों को भी उस शीतल स्थान का लाभ प्रदान करें। अपने आध्यात्मिक उत्तरदायित्वों का यही तकाजा है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में कहा जा सकता है—"जब तक एक भी जीव दुःख कष्ट की आग में जल रहा है, तब तक बड़े से बड़े योगी महात्मा की मुक्ति भी सार्थक नहीं है क्योंकि सब हैं तो एक ही सत्ता के अंग प्रत्यंग। एक अंग किस प्रकार सुखी और शान्ति रह सकेगा।"

गंगा और गायत्री के जन्म दिन का पुनीत पर्व हमारे कम में स्थूल क्रिया-कलापों में गंगा जैसी प्रखरता और चिन्तन सूक्ष्म हलचलों में गायत्री जैसी ज्योति उत्पन्न करे इस चिन्तन को अधिकाधिक गहराई तक हृदयंगम करना चाहिए। अपने यहाँ कर्मकाण्ड उतने उलझे हुए नहीं है, उनकी विधि व्यवस्था बहुत ही सरल है और सभी पर्वों की विधि प्रायः एक सी ही है उनमें थोड़ा-सा अन्तर ही करना पड़ता है क्योंकि एक तो इस प्रक्रिया को जन-आन्दोलन का रूप देना है, तथा दूसरे उनमें निहित तथ्यों को सर्वसाधारण के व्यवहार और अन्तःकरण में उतारना है। इसीलिए युग निर्माण परिवार द्वारा अपनायी गयी पद्धति शास्त्रीय परम्परा की रक्षा तो करती ही है इतनी सरल सुबोध और प्रेरणाओं से परिपूर्ण भी है कि हर किसी की समझ में आसानी से आ जाती है।

पर्वायोजन के दिन अधिकाधिक जन-सहयोग अर्जित करना तथा कार्यक्रमों में लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहें इस तरह के प्रयास करना अपना लक्ष्य होना चाहिए। इसके लिए पर्चे वितरित करने पोस्टर लगाकर लोगों को सूचना देने, लाउड स्पीकर द्वारा प्रचार करने के तरीके तो अपनाये ही जा सकते हैं—घर-घर जा कर सम्पर्क करने, लोगों से आयोजन में उपस्थित रहने का अनुरोध करने की प्रक्रिया भी अपनायी जानी चाहिए। साथ ही समय से पहले पुनः स्मरण दिलाने और लोगों को बुलाने के लिए उनके पास जाने को भी तैयार रहना चाहिए। पर्व आयोजन के दिन प्रातःकाल प्रभात फेरी अवश्य निकाली जाय। इससे जनता में एक वातावरण बनता है। आयोजन स्थल को जितना हो सके सुसज्जित और आकर्षक बनाया जाय ताकि कार्यक्रम की प्रेरणायें और भी प्रखर बनकर उभरें। इस तरह के कितने ही उपाय हैं, जो सामयिक सूझ-बूझ से प्रयोग में लाये जा सकें। मुख्य ध्येय रहे कि अपनी बात ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचे।

इन कार्यक्रमों में अन्यमनस्कता जरा भी न बरती जाय वरन् पूरी तत्परता मनोयोग की निष्ठा के साथ काम किया जाय ताकि पर्व की प्रेरणायें जन-जन के हृदय में प्रखर और प्रचण्ड रूप में उठें, उमगें। सामान्यतः अपने पर्वों की पद्धति में पाँच कार्यक्रम मुख्य हैं—गायत्री यज्ञ, गायत्री के अधिष्ठाता का पूजन, सामूहिक जप, कीर्तन, दीपदान है। आयोजन में जितने भी लोग हो उन्हें सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित रखा ज़ाय तथा प्रत्येक कर्मकाण्ड की प्रेरणाओं और शिक्षाओं को उभारा जाय।

गंगा और गायत्री की जन्म जयन्ती उपेक्षित न रहे

गंगा का भौतिक महत्व और आध्यात्मिक महात्म्य सर्व विदित है। इस देश की भौतिक परम्परा बढ़ाने में गंगा की अनुकम्पा सर्वविदित है। भूमि भूमि को उपजाऊ बनाने में, धन्य-धान्य की सम्पदा बढ़ाने में वृक्ष, वनस्पति की शोभा विकसाने में गंगा और उसकी सहेलियों का जो योगदान रहा है वह असाधारण है। यदि हिमालय रूपी स्वर्ग से मैदानी इलाके के भूलोक में गंगा न आती तो यह शस्य श्यामला भारत माता वैसी श्री सम्पन्न न होती जैसी अब है। जल वितरण नौका नयन और कृषि उद्यान् पशुपालन जैसे अनेकों उद्योग गंगा के सहारे विकसित हुए और उसके आधार पर करोड़ों को जीवन निर्वाह का द्वार खुला, यह गंगा का भौतिक महत्व।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महात्म्य वह जो चेतना को प्रभावित करता है। पवित्र गंगा जल की स्वास्थ्य संवर्धन की विशेषता सर्व विदित है। उसका जल धरती का अमृत माना जाता है। शहरों की गन्दगी मिल जाने से तो स्थिति में परिवर्तन हुए हैं पर शुद्ध गंगा जल की आरोग्य संवर्धिनी और रोग निवारिणी शक्ति का परिचय अभी भी पाया जा सकता है। मानसिक स्वास्थ्य का लाभ गंगा के निकटवर्ती वन प्रदेशों में अभी विद्यमान है। मनोबल बढ़ाने, मानसिक क्षमता विकसाने और मनोरोगों से छुटकारा पाने का उपयुक्त वातावरण वहाँ मौजूद है। आत्मिक दृष्टि से गंगा को तरण-तारिणी कहा जाता है। उसकी समीपता और हिमालय की गरिमा से संयुक्त उत्तराखण्ड योगाभ्यास और तपश्चर्या के लिए सूक्ष्म विशेषताओं से भरा पूरा माना जाता रहा है। प्राचीन काल में यही क्षेत्र देव भूमि, ऋषि भूमि माना जाता था और यहाँ रहकर आत्मशक्ति के सम्पादन अभिवर्धन के महान प्रयोग होते थे। अभी भी उस परम्परा में जुड़े हुए तथ्य उस क्षेत्र में अन्यत्र की अपेक्षा कहीं अधिक मात्रा में विद्यमान हैं। गंगा स्थान की—गंगा जल की—गंगा तट सेवन की महिमा में धर्मशास्त्रों और ऐतिहासिक कथा पुराणों का साक्ष्य-प्रमाण पर्वत जितना उपलब्ध है। मृतकों की आत्मा को शान्ति दिलाने के लिए उनकी अस्थियाँ गंगा में प्रवाहित की जाती हैं। कितने ही अपनी आत्म साधनाओं के लिए गंगा की गोद में निवास करने की योजना बनाते और अपेक्षाकृत अधिक सफलता प्राप्त करते हैं। गंगा का यह माहात्म्य प्रकरण शास्त्र वचनों कथा पुराणों और मान्यताओं में गहरी जड़ें जमाये हुए हैं।

भगवती गंगा का जन्म दिन जेष्ठ सुदी १० गंगा दशहरा है। उस दिन का गंगा पर्व कितनी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है ? कितने भावुक लोग उस दिन भगवती गंगा को अपनी श्रद्धाञ्जलि चढ़ाने दर्शन मज्जन का लाभ पाने के लिए पहुँचते हैं, इसे गंगोत्री से लेकर गंगासागर तक के सहस्रों कच्चे पक्के घाटों पर करोड़ों की उपस्थिति के आधार पर जाना जा सकता है। जलदान के विभिन्न कर्मकाण्ड और दान पुण्य जगह-जगह होते हैं। ठण्डे मीठे पानी की प्याऊ लगाने, जलकलश दान करने की प्रवृत्तियाँ अभी भी धार्मिक क्षेत्रों में प्रचलित हैं। उनमें गंगा की प्रतीक पूजा का ही तत्व समाया रहता है। कितने ही उस दिन जल उपवास करते हैं। उस दिन के संग्रह किये हुए गंगा जल का विशेष माहात्म्य माना जाता है।

गंगा जयन्ती और गायत्री जयन्ती का पुण्य पर्व एक ही दिन है। जेष्ठ सुदी १० ही गंगा जयन्ती की तरह गायत्री जयन्ती भी है। दोनों के अवतरण इतिहास भी मिलते-जुलते हैं। भागीरथ ने तप करके गंगा को स्वर्ग से धरती पर उतारने में सफलता पाई थी। विश्वामित्र ने गायत्री को तप साधना करके उसे देव परिवार तक सीमित न रहकर सर्वसाधारण के उपयोग में आने की स्थिति तक पहुँचाया था। यों गायत्री महाशक्ति अनादि है। आकाशवाणी के रूप में वे सर्व प्रथम ब्रह्माजी के अन्तः आकाश में गुँथी थी और उन्हें तप के द्वारा सृष्टि का सृजन एवं नियोजन करने की शक्ति प्राप्त करने का निर्देश दिया था। यह गायत्री का अनादि अवतरण है इसके उपरान्त वेद शास्त्रों के रूप में इन्हीं चौबीस अक्षरों का विस्तार होता चला आया है। योगाभ्यास और तप साधना में गायत्री का अवलम्बन ही प्रधान रहा है। उसी के सहारे ऋषि तपस्वी और आत्मिक प्रगति के लिये प्रयत्नशील व्यक्ति लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ते रहे हैं। सर्व साधारण के लिए उसी को गुरु मन्त्र घोषित किया गया है। प्रातः और सायंकाल का संध्या-वन्दन गायत्री उपासना के साथ अविछिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। शिखा के रूप में मस्तिष्क पर और यज्ञोपवीत के रूप में हृदय पर उसी को प्रतीक प्रतिष्ठापना की जाती है।

गायत्री के विनियोग संकल्प में गायत्री छन्द सविता देवता एवं विश्वामित्र ऋषि का उद्घोष कियां गया है। इसका तात्पर्य है रहस्यमय गायत्री के अनादि तत्वज्ञान एवं शक्ति विधान का सर्वोपयोगी स्वरूप योजनाबद्ध रूप से महर्षि विश्वामित्र ने अपनी प्रचण्डतप साधना द्वारा प्रस्तुत किया। ज्ञान गंगा गायत्री के अवतरणकर्त्ता विश्वामित्र थे। और तरणतारिणी गंगा के अवतरण संयोजक भगीरथ। दोनों के प्रयास एक जैसे थे। कहा तो यह भी गया है कि विश्वामित्र और भागीरथ के रूप में एक ही आत्मा ने दो समय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर दो कार्य सम्पन्न किये हैं। इस एकता का आधार यह माना जाता है कि दोनों की जन्म जयन्ती एक ही दिन है। गंगा जयन्ती और गायत्री जयन्ती के पर्व एक ही तिथि को होते हैं।

इन पुण्य अवतरणों से भारतीय संस्कृति धन्य हुई है। भारत माता की गरिमा अमर हुई है। गायत्री का तत्त्व ज्ञान ब्रह्म विद्या के रूप में विकसित हुआ है। यही है अपनी देव सम्पदा, जिसके कारण अतीत के स्वर्णिम इतिहास में देश की देवभूमि कहलाने और समस्त विश्व की अजस्र अनुदान वितरण करने का अवसर हमारे महान् पूर्वजों को मिलता रहा है।

गंगा भूलोक की और गायत्री ब्रह्म लोक की दिव्य शक्ति है। उन्हें प्राण और शरीर की उपमा भी दी जा सकती है। जिस दिन इन दोनों देव वरदानों का लाभ इस भूतल के निवासियों को उपलब्ध हुआ होगा यह निश्चय ही धन्य माना जायेगा। इन उपहारों से इस भूलोक के प्राणियों को नवजीवन का आनन्द मिला, उनके अवतरण की घड़ी भुलाई नहीं जा सकती। महा मानवों की प्रेरक इतिहासों की जयन्तियाँ मनाई जाती हैं। सामान्य व्यक्ति तक अपने जन्म दिन, विवाह दिन मनाते हैं। स्वतन्त्रता समारोह के रूप में १५ अगस्त और २६ जनवरी के समारोह हर साल सम्पन्न होते हैं। अवतारों के जन्म दिन पर सर्वत्र उत्सव मनाये जाते और मेले लगते हैं। फिर कोई कारण नहीं कि वह पुनीत पर्व जिसके साथ गंगा और गायत्री दोनों के अवतरण का इतिहास जुड़ा हुआ है। आसाधारण उत्साह और उल्लास के साथ न मनाया जाय। महत्व और माहात्म्य की दृष्टि से देखा जाय तो अन्य जयन्तियों की तुलना में यह पर्व किसी भी दृष्टि से हल्का नहीं पड़ता वरन् उसकी गरिमा अधिक ही बैठती है।

महत्व देने और मूल्यांकन करने में तथ्यों की गरिमा को ध्यान में रखा जाना चाहिए। जयन्तियों का अपना महत्व है। उनके सहारे भूतकाल के महान तथ्यों को विस्मृति के गर्त से गिरने से बचाया जाता है और उन प्रेरणाओं को स्मृति पटल पर फिर से ला खड़ा किया जाता है, जिन्होंने किसी समय महत्वपूर्ण भूमिकाएँ सम्पन्न की थीं।

मनुष्य की मानसिक संरचना ही ऐसी है कि वर्तमान ही सामने रहता है, उसी को व्यवस्थित बनाने में सारा श्रम और मनोयोग घुस जाता है। भूतकाल की स्मृतियों के साथ सम्पर्क सूत्र कैसे बनाकर रखा जाय ? इसके लिए जयन्ती आयोजन की परम्परा चलाई गई है। इन आयोजनों से विस्मृत अतीत के साथ जुड़ी हुई प्रेरणा और घटनाएँ सामने आकर खड़ी हो जाती हैं और उनके प्रभाव का वर्तमान जीवन क्रम में सामावेश कर सकना सम्भव हो जाता है।

अन्यान्य जयन्तियों का अपना महत्व है। उनसे सम्बन्धित, समुदाय उन्हें अपनी श्रद्धा की न्यूनाधिकता के अनुरूप हल्के भारी रूप में मनाता है। कृष्ण जन्माष्टमी—रामनवमी—शिवरात्रि, गणेश चतुर्थी, हनुमान जयन्ती, बुद्ध जयन्ती, महावीर जयन्ती, नानक जयन्ती, गाँधी जयन्ती जैसे व्यक्ति परक और ईस्टर, मुहर्रम, दुर्गा पूजन, नवरात्रि, दीपावली, होली स्वतन्त्रता दिवस जैसे घटना परक पर्व अपने-अपने क्षेत्रों में कितने उत्साह से मनाये जाते हैं, इसे भली प्रकार देखा जा सकता है। इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि भारतीय धर्म संस्कृति और तत्व ज्ञान की ज्ञान गंगोत्री गायत्री माता और पवित्रता एवं सम्पन्नता को देवी गंगा माता की संयुक्त जन्म जयन्ती उपेक्षित एवं विस्मृत ही पड़ी रहे। यह अतीत की गरिमा को समझने वाले प्रत्येक भावनाशील व्यक्ति के लिए लज्जा की बात है समय आ गया कि इस अवसाद का अन्त किया जाय और इस पावन पर्व के प्रति जनमानस में भाव भरा उत्साह उत्पन्न किया जाये।

अवतरण पर्व-सार्थक बनाया जाय

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को महाशक्ति गायत्री का अवतरण हुआ कहा जाता है। आदि शक्ति की जयन्ती की कल्पना कुछ भ्रम पैदा कर सकती है। जो शाश्वत सनातन है, उसके जन्म की बात अटपटी लगती है। जयन्ती मनाने के पीछे सामान्य भाव यही रहता है कि उस दिन उसका जन्म हुआ जिसकी जयन्ती मनायी जा रही है। परन्तु यहाँ ध्यान देने योग्य यह है कि यह जन्म जयन्ती नहीं अवतरण जयन्ती है। यही पर्व गंगा जयन्ती के रूप में भी तो मनाया जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। गंगा भी उसके पूर्व थी, यह सुनिश्चित बात है, भागीरथ के प्रयास से प्रसन्न होकर वह भूतल पर अवतरित हुई। इसी प्रकार आदि शक्ति गायत्री तो सदैव विद्यमान थी, इस पर्व पर वह इस रूप में सामने आयी कि जन साधारण उसका लाभ ले सके। गंगावतरण के पूर्व, उसके भूतल पर प्रवाहित होने के पहले उसमें स्नान करने का लाभ लेना किसके बस की बात थी ? जन साधारण के लिए तो गंगा का अस्तित्व सार्थक उसी दिन हुआ, जिस दिन वह उनके लिए सुलभ बनी।

माँ गायत्री के सम्बन्ध में भी यही सङ्गति सही बैठती है। आदि काल में गायत्री जयन्ती के दिन वह स्थिति बनी, जिसके अनुसार इस आध्यात्मिक गंगा में अवगाहन करने का सौभाग्य मनुष्यजाति के लिए खुला। आत्मशक्ति का ऋतम्भरा प्रज्ञा का लाभ उठाना मनुष्य के लिए सम्भव हुआ यह लाभ असाधारण है। जिस प्रकार गंगा सूखी भूमि को सींचती, ताप मिटाती मलीनता को दूर करती, वातावरण में शीतलता तथा सौन्दर्य बिखेरती बहती है, उसी प्रकार गायत्री विद्या द्वारा सूक्ष्मस्तर पर भावनात्मक शोधन संवर्धन, सुव्यवस्था विकारों का निवारण उसके प्रवाह के साथ सहज ही होता है।

भगवती गायत्री की उपासना तथा इस महाशक्ति को आशीर्वाद पाने की साधना विधि परिजनों को बताने की आवश्यकता नहीं। अपने-अपने स्तरों के अनुरूप सभी व्यक्ति उसका लाभ उठा भी रहे हैं। अनुभव तथा अध्ययन के द्वारा यह क्रम तीव्रतर तथा अधिक प्रभावशाली होता भी चलेगा। यह तो इस महाशक्ति के अवतरण दिवस को यथार्थ में सार्थक बनाने के सम्बन्ध में विचार करना है।

दिव्य शक्तियाँ इस संसार को नियंत्रित और व्यवस्थित बनाये रहती हैं। उनकी सूक्ष्म एवं अदृश्य प्रक्रिया सतत् चलती ही रहती है। किन्तु कभी-कभी वही स्पष्ट और प्रत्यक्ष रूप से भी दृष्टिगोचर होती है। यही अवसर सर्वसाधारण के सामने उसके प्रकटीकरण का अवतरण कहा जाता है। यह होता भी तभी है, जबकि जन साधारण के स्तर पर उसकी आवश्यकता अनुभव की जाती है।

सर्वप्रथम जब इस शक्ति का अवतरण हुआ उस समय की स्थिति की कल्पना भर की जा सकती है, किन्तु वर्तमान स्थिति पर ध्यान देने से लगता है कि आज आध्यात्मिक ज्ञान गंगा की धारा घर-घर, जन-जन एवं अन्तःकरण तक पहुँचाना अत्यधिक आवश्यक है। साधनों की दृष्टि से मनुष्य जितना सम्पन्न होता जा रहा है, उतना ही उसका कष्ट एवं असन्तोष बढ़ता जा रहा है। बात अजीब भले लगे पर है सत्य ही।

साधनों की दृष्टि से मनुष्य सम्पन्न हो रहा हो और उसकी बौद्धिक अथवा भावनात्मक क्षमतायें समाप्त हो गयी हों ऐसी भी बात नहीं। बुद्धि के जो नये-नये चमत्कार मनुष्य ने इन दिनों किये हैं, वे अपने आप में अनोखे हैं। उन्हें अब तक के इतिहास पर दृष्टि डालकर असामान्य ही नहीं अद्वितीय भी कह सकते हैं। यह बात और है कि इस बौद्धिक क्षमता का उपयोग किस दिशा में किया गया और किस दिशा में होना चाहिए। भावनाओं का भी अभाव नहीं। जिस कारण अभाव कहा जाता है या अनुभव किया जाता है, वह यह है कि भावनात्मक सन्तुष्टि हो नहीं पा रही है। यह स्थिति भी वैसी ही है कि साधन-सामग्री कम नहीं तो भी उनके अभाव का कष्ट सबको है। साधन सामग्री अधिक हो यह कामना बुरी नहीं, पर यदि वितरण व्यवस्था सही हो तो अभी भी स्थिति बहुत कुछ सुधर सकती है। इस तरह भावनाओं की दृष्टि से मनुष्य और अधिक सम्पन्न बने यह विचार अच्छा, है किन्तु भावनाओं को दिशा दी जानी सम्भव हो तो भाव सन्तुष्टि की स्थिति बहुत कुछ अभी भी लायी जा सकती है।

विचारों और भावनाओं को संयुक्त रूप से मोड़ दिया जाना सामान्य शक्ति से सम्भव नहीं। महाशक्ति ऋतम्भरा प्रज्ञा "गायत्री' इसके लिए सर्वथा उपयुक्त है। विचारों के सन्तुलन और भावनाओं की प्रखरता के संयोग से ही ऋतम्भरा प्रज्ञा को जाग्रत किया जाना सम्भव होता है। आज या तो मनुष्य बुद्धिवादी बनकर उपयोगितावाद की अति करते हुए हृदयहीन बनने की दिशा में बढ़ जाता है अथवा भावना के अतिरेक में सन्तुलन खो बैठने से अव्यवहारिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिद्ध हो जाता है। दोनों विभूतियों का समन्वय अभीष्ट है। सर्वसाधारण के स्तर पर सुलभ बनाना गायत्री शक्ति के अवतरण की उक्ति को सार्थक करना है।

गायत्री जयन्ती पर्व को समारोह के रूप में सर्वत्र मनाया जाता है। यह हर्षोल्लास अपना महत्व रखता है, यह किया भी जाना चाहिए। बिना इसके जनसाधारण का ध्यानाकर्षण इस ओर बड़ी संख्या में किया भी कैसे जाये। किन्तु ध्यान रखने वाली बात यह है कि यह समारोह आयोजन प्रयास महा प्रयास की भूमिका है उपसंहार नहीं। इनके सहारे जन चेतना का आकर्षण, भावना का जागरण तथा उत्साह उल्लास का अभिवर्धन किया जाता है। स्पष्ट है कि आकर्षण किसी उद्देश्य से किया जाता है। भावना का उभार तथा उत्साह का संवर्धन किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर किया जाता है। उस लक्ष्य की दिशा में प्रगति को सम्भावना बने तभी उसकी सम्पर्कता है।

उत्साह का उभार और उसका उपयोग कर लेना एक कला है। दोनों ही प्रकरण एक-दूसरे के पूरक हैं, समान रूप से महत्व रखते हैं किन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। दोनों को अलग-अलग प्रकार साधा जाता है। बिना उभार लाये उपयोग की बात सोचना शेष चिल्ली जैसी कल्पना है और उभार लाकर भी उपयोग का अवसर चूक जाना हाथ आयी बाजी खो देने जैसा है। दोनों प्रकार की भूलें समाज में बहुतायत से होती हैं। जो इन भूलों से बचकर दोनों व्यवस्थायें बनाकर रखते हैं, वे अवसर का भरपूर लाभ उठाते हैं।

यह लाभ अनायास ही नहीं मिल जाता। उसके लिए नियमित प्रयास तत्परतापूर्वक किये जाने आवश्यक होते हैं। समारोह के लिये भी तैयारियाँ उसकी पूर्व व्यवस्थायें तथा प्रचार में पहुँच पहले से लग जाना पड़ता है, तब उस वातावरण का निर्माण हो जाता है, जिसमें किसी दिशा विशेष के प्रति लोगों को आकर्षित या उत्साहित किया जा सके फिर उस उत्साह को सार्थक बनाना एक अलग ही साधना है।

यह सब कठिन नहीं। सामान्य व्यक्ति छोटे-छोटे स्वार्थों के लिये इतनी सावधानी और तत्परता बरत लेते हैं। उसके लिये आवश्यक समय और श्रम लगाने में जरा भी नहीं झिझकते। फिर उच्च आदर्शों के लिये, महान् उद्देश्यों के लिये तो संकीर्ण स्वार्थों की अपेक्षा कुछ अधिक कर सकने का औचित्य सर्वविदित है। उसके लिए कुछ अधिक त्याग बलिदान करने की भावना भी स्वभावतः उठती है। ऐसी स्थिति में कोई कारण नहीं रह जाता कि जाग्रत का उपयोग करने में किसी प्रकार की कठिनाई सामने आये। युग निर्माण योजना जिस महान् उद्देश्य के लिये चल रही है, जो आत्म चेतना सम्पन्न, भाव समृद्ध परिजन उसकी अग्रिम पंक्ति में भाग ले रहे हैं, उनके लिये इस प्रकार की तत्परता और व्यवस्था जरा भी कठिन नहीं लगनी चाहिये।

ऊपर की पंक्तियों में विचार किया जा चुका है कि समाज जिस 'प्रज्ञा' के अभाव में सारी स्थूल और सूक्ष्म सम्पन्नतायें होते हुए भी दीन हीन स्थिति में पड़ा हुआ है, उसको जन-जन के लिये सुलभ कराने का प्रयास किया जाना आवश्यक है। गायत्री जयन्ती के प्रकरण में जिन लोगों का ध्यानाकर्षण हो सके अथवा जिनका उत्साह जाग सके उन सबका विनियोग इसी महान् उद्देश्य की पूर्ति में किया जाना चाहिए।

युग निर्माण परिवार का इस सन्दर्भ में विशेष उत्तरदायित्व है। इससे 'न' नहीं की जा सकती। कहीं कोई कठिनाई हो, उसका कारण समझ में न आवे अथवा कारण दिखने पर भी उसके निवारण का मार्ग न सूझे तो उस हालत में प्रयास न करने वालों को क्षमा किया जा सकता है। कहा जा सकता है कि बेचारों को कुछ आता नहीं तो क्या करें ? परन्तु यदि कारण स्पष्ट दिखे और उसके समाधान के उपयुक्त व्यवस्था अपने पास हो, फिर भी उसे लागू न किया जाये, लागू किया भी जाये तो खाना पूरी तरह की दिखावा कर लिया जाये, इसे कोई भी समझदार तथा भावनाशील व्यक्ति क्षमा नहीं कर सकता। जिसने कुछ भी नहीं किया, क्योंकि उसमें क्षमता नहीं थी, उसे क्षमा किया जा सकता है, पर जिसमें सामर्थ होते हुए भी चिन्ह पूजा मात्र करके, अपने कर्तव्य की इति श्री समझ ली उसे किसी भी प्रकार क्षमा नहीं किया जा सकता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह बात असंदिग्ध रूप से कही जा सकती है कि युग निर्माण परिवार को सुनिश्चित रूप से समाज की दुर्दशा का मूल कारण ज्ञात है। यही नहीं उससे निकालने के लिये क्या आवश्यक है इसका भी ज्ञान है। बड़े पैमाने पर प्रयोगों द्वारा उसे सिद्ध भी किया जा चुका है। युग निर्माण योजना के सहस्त्रों कार्यकर्त्ताओं पर औसत स्तर के साधन होते हुए भी, अपनी सामान्य क्षमताओं के सहारे जिस तीव्रता से आगे बढ़ रहे हैं, वह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जिस स्थिति में जिस क्षमता के सामान्य व्यक्ति अपनी घर गृहस्थी के चक्कर में ही दबे-पिसे रहते हैं, उन्हीं में युग निर्माण के सैनिक हँसती चहकती जिन्दगी जीते हुये अपने साधनों और क्षमताओं का एक बड़ा अंश लोक मंगल के लिये आसानी से निकाल लेते हैं। देखने वाले आश्चर्य करें, आलोचना करें या सराहना करें, उन सबसे अविचलित रहकर वे अपने कार्य में जुटे रहते हैं, श्रम की थकान नहीं, असफलता का भय नहीं हम अकेले लगे हैं इसकी शिकायत नहीं। यह सब उसी "प्रज्ञा साधना" का प्रसाद है।

इसीलिए अपने उत्तरदायित्व से मुकर जाने के लिये युग निर्माण परिवार के सृजन सैनिकों के पास कोई बहाना बचता नहीं। उन्हें अपने कार्य में आगे बढ़ना ही पड़ेगा। उनकी अतिरिक्त चेतना का धक्का और परिस्थितियों का खिंचाव दोनों ही उन्हें इस कर्त्तव्य साधना के मार्ग पर चला कर ही रहेंगे। यदि उसकी अवहेलना करके बचने का प्रयास किया गया तो किसी तात्कालिक लाभ या सुख की कामना से लिया गया यह निर्णय बहुत महँगा पड़ेगा। इसलिये आवश्यक यह है कि गायत्री जयन्ती पर्व मनाने के प्रसंग में जाग्रत उत्साह का उपयोग जन-जन के इस 'प्रज्ञा साधना" में किसी न किसी रूप में लगा कर दिया जाये।

ऐसे अवसर का लाभ उठाने के लिए एक अनिवार्य शर्त है। यह है अविलम्ब कार्यवाही। देरी होने का अर्थ है कार्य की गति कई गुनी और उत्कृष्टता में कई गुनी कभी ले आना। उत्साह गर्म लोहे जैसा होता है। भट्टी के बाहर एक समय तक ही गर्म रहता है। गर्मी जितनी कम होती जायेगी श्रम की सार्थकता भी उतनी ही घटती जायेगी। इसलिए समझदार व्यक्ति कार्य में विलम्ब नहीं होने देते।

अविलम्ब कार्यवाही वह कर सकते हैं जो पहले से उसके लिए तैयार हैं। लोहा भट्टी से निकालने पर निहाई जमाने हथौड़ा दंडने जैसे कार्य करने में कितनी भी तत्परता बरती जाये लाभ पूरा नहीं उठाया जा सकता। योजनाबद्ध रूपरेखा सामने होनी भी उसके लिये आवश्यक है। अन्यथा संकल्प विकल्प में न जाने कितना समय निकल जाये ?

लक्ष्य हमारे सामने है। गायत्री जयन्ती पर 'भगवती गायत्री के अवतरण को सार्थक किया जाये और जन-जन को उस महाशक्ति का लाभ प्राप्त करने की स्थिति में पहुँचने में सहायता की जाये। परन्तु यह किया कैसे जाये ? यह रूपरेखा भी तो स्पष्ट होनी चाहिये।

सीधी बात कही जा सकती है कि लोगों को गायत्री उपासना बतायें। उस महाशक्ति के सान्निध्य से लोगों में यह तत्त्व स्वतः धीरे-धीरे बढ़ने लगेगा, जिसकी आवश्यकता है। किन्तु इतने भर से काम चलने का नहीं। वह तो किसी न किसी रूप में परिजन कर ही रहे हैं। शनैः-शनैः गायत्री उपासकों की संख्या बढ़ रही है। यह क्या कोई नई बात हुई ?

इस बार हमें नयी बात तो लेकर चलना है। जो महत्कार्य किया जाना है, वह इतनी धीमी गति के सहारे नहीं छोड़ा जा सकता। गति बढ़ानी होगी तथा 'प्रज्ञा साधना' में अधिकाधिक व्यक्तियों को यथा शीघ्र लगाने का क्रम सामान्य प्रयासों की सीमा से आगे बढ़कर अभियान के स्तर पर चलाना होगा।

प्रश्न उठता है कि लोग इतनी तीव्रता से आगे बढ़ने की स्थिति में नहीं हैं। जनसाधारण उस स्थिति में नहीं तो हमें अपने प्रयासों में निखार लाकर उस कमी की पूर्ति करनी होगी। जन-साधारण नियमित उपासना करने की स्थिति में नहीं है, सही हमें उन्हें और भी हल्का आहार दे सकते हैं। रोगियों को प्रारम्भ में हलका और सुपाच्य आहार देने से ही उनकी भूख खुलती और हालत सुधरती है। भूख नहीं खुलती और हालत सुधरती है। भूख नहीं खुलती, इसलिये यदि उन्हें कुछ न दें तो कमजोरी की स्थिति से बाहर निकलना असम्भव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सा हो जाये। परन्तु शरीर में ताकत लाना है, इस उत्साह में उन्हें गरिष्ठ पदार्थ खिला दिये जायें तो भी उनके स्वास्थ पर बुरा असर पड़ सकता है। जो लोग 'प्रज्ञा साधना से अनभिज्ञ हैं अथवा उनकी धारण क्षमता कम है उन्हें इसी प्रकार धीरे से आगे बढ़ाना होगा। उसके लिए जो तत्परता, सतर्कता और श्रम लगाने की आवश्यकता पड़ेगी; उसे युग निर्माण परिवार के परिजन सहर्ष लगायेंगे।

इसलिए गायत्री जयन्ती से एक विशेष अभियान परिजन चलायें। वह है गायत्री माता के चित्र घर-घर में स्थापित कराने का। आवश्यक नहीं कि पूजा स्थल बनाकर ही चित्र स्थापित कराया जाये तथा उसकी पूजा आराधना का बन्धन लोगों पर लगाया जाये। किसी भी कमरे में ऐसे स्थान पर जहाँ सहज दृष्टि पहुँचती हो वहाँ चित्र स्थापित कर दिया जाये। दीवाल पर लटकाना या चौकी पर रखना, किसी भी पद्धति को अपनाया जा सकता है। हो सके तो कोई लकड़ी या धातु का स्टैण्ड चित्र के नीचे लगाकर रखा जाय, जिसमें अगरबत्ती या दीपक रखा जा सके।

चित्र स्थापन के साथ कठोर शर्त नहीं रखी जाय। उनसे कहा जाये कि परमात्मा के स्मरण के साथ कार्य प्रारम्भ करने, अपने नैतिक सामाजिक कर्त्तव्यों को स्मरण रखने के प्रतीक रूप में इसे स्थापित किया जा रहा है। बड़े लोग अपने कार्य पर जाते समय, बच्चे स्कूल जाते समय भावनापूर्वक केवल नमस्कार भर करके जायें। महिलायें अपने कार्य का प्रारम्भ अपनी श्रद्धा प्रकट करके करें।

जो साकार को मानते हैं, उनके यहाँ छवि चित्र तथा जो निराकार को मानते हैं, उनके यहाँ केवल मन्त्र चित्र स्थापित कराये जायें। उनकी पूजा आरती का कोई बन्धन नहीं। कभी पुष्प चढ़ा देने या अगरबत्ती जला देना भर पर्याप्त माना जाये।

इस अभियान द्वारा जन मानस में सोई हुई श्रद्धा भावना को अंकुरित होने का अवसर मिलेगा। उसे पोषण द्वारा समर्थ एवं सशक्त वृक्ष के रूप में विकसित करने का क्रम परिजन चलाते रहेंगे। छोटी से छोटी शुरूआत उचित [illegible] में बदली जा सकती है। गायत्री जयन्ती पर प्रारम्भ किया गया वह अभियान लोक-मानस को प्रज्ञावान बनाने के लिए अमोघ और सशक्त माध्यम सिद्ध होगा ऐसी आशा की जानी चाहिए।

गायत्री जयन्ती पर्व-अखण्ड परायण के रूप में मनाया जाय

गायत्री भारतीय संस्कृति की जननी है। ब्रह्म विद्या के रूप में उसी का तत्व-ज्ञान धरती पर अमृत की भूमिका सम्पन्न करता है। ब्रह्मवर्चस् के रूप में उसी की तपश्चर्या प्रचण्ड आत्मबल बनकर शक्ति का सर्वोच्च आधार खड़ा करती है। भूलोक को कामधेनु कहा है। उनका पयपान करके मनुष्य में देवत्व का उदय होता है। भारत के देव मानव इसी कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण के दोनों प्रयोजन पूरे करते रहे हैं। शिक्षा और सूत्र के रूप में गायत्री को ही शिरोधार्य किया जाता है, छाती से लगाया जाता है और उसकी प्रेरणा को व्यवहारिक जीवन में उतारने का उत्तरदायित्व कन्धे पर उठाया जाता है। भारतीय उपासना का मूल गायत्री है। संध्या वंदन का मेरुदण्ड वही है। शास्त्रकारों ने 'गुरु मन्त्र' का पद मात्र उसी को दिया है। वेदमाता, विश्व माता और देव माता के नाम से उसे स्मरण करके हम भारतीय धर्मानुयायी अपनी भावभरी श्रद्धा गायत्री माता के चरणों पर चढ़ाते रहे हैं। ज्ञान और विज्ञान की गंगोत्री उसी को माना गया है।

गायत्री महाशक्ति के सम्बन्ध में उत्पन्न हुई अवमानना को इन दिनों पुनः प्रखर परिष्कृत किया जा रहा है। इसके पीछे मानवी भविष्य को प्रस्तुत सर्वभक्षी संकट से निकालकर उज्ज्वल बनाने की सम्भावना सुनिश्चित है। सूक्ष्मदर्शी देखते हैं कि युग बदल रहा है। अवांछनीयता का अन्धकार मिटने जा रहा है और उज्ज्वल भविष्य का अरुणोदय, अपने आगमन का परिचय दे रहा है। इस परिवर्तन प्रभाव का स्वागत करने को कुक्कुटों के बाँग देने से लेकर पक्षियों के चहचहाने तक की सहज प्रक्रिया उठ खड़ी होनी स्वाभाविक है। प्राणिमात्र में सहज हलचलें उत्पन्न होती हैं। गहरी निद्रा में सोये हुए किसी अज्ञात प्रेरणा में जागृति की शरण में जाते और अंगड़ाई लेते देखे जाते हैं। मन्दिरों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में शंख बजते और इस पुष्प बेला की आरती उतारी जाती है। इन दिनों ठीक वैसा ही हो रहा है। भारतीय तत्वज्ञान की आत्मा ने नवोदित ऊषा के रूप में अपने आगमन का परिचय दिया है तो जागृत आत्माओं ने अपनी हलचलें तेज कर दी हैं। गायत्री महाशक्ति के प्रसार-विस्तार के प्रस्तुत अभियान को इसी रूप में देखा समझा जा सकता है। गायत्री परिवार के गठन से लेकर गायत्री महायज्ञों और सामूहिक साधना सत्रों के रूप में महाकाल की इसी इच्छा को उभरता हुआ देखा जा सकता है। यह मानवी प्रयत्नों से चलने वाले आन्दोलनों में नहीं गिना जाना चाहिए। गायत्री अभियान के पीछे देवी प्रेरणा और व्यवस्था का समन्वय काम करता है। उस प्रवाह में सम्मिलित होकर हम सब श्रेयं सौभाग्य सहज ही लूट लेते हैं।

युग परिवर्तन जैसे अति व्यापक और अतिकठिन कार्य को सम्पन्न करने को जिस प्रचण्ड ऊर्जा की आवश्यकता है— उसे युग शक्ति कह सकते हैं। बिजली, तेल, भाप एवं क्षणिक शक्ति से कल-कारखाने चलते हैं। आत्म-शक्ति से लोकमानस का परिवर्तन सम्भव होता है। सर्वत्र हरियाली उगाने के लिए छुट-पुट सिंचाई की व्यवस्था काम नहीं देती उसके लिए वर्षा ऋतु का आगमन ही सर्वत्र हरितिमा उपजाने का काम पूरा करता है। वातावरण की विषाक्तता को हटाने और प्रेरणाप्रद दैवी तत्वों का अवतरण सम्भव बनाने के लिए युग शक्ति का उद्भव आवश्यक है। यह कठिन कार्य गायत्री महाशक्ति की ज्ञान और विज्ञान धाराओं के सहारे ही सम्भव बनाया जा सकेगा। इन दिनों इसी के लिए भागीरथ प्रयास हो रहे हैं। प्रस्तुत गायत्री अभियान के अन्तर्गत चल रही अनेकानेक गतिविधियों को इसी रूप में देखा समझा जा सकता है। इसमें जागृत आत्मा का योगदान किसी बाहरी दबाव से नहीं उन्हीं के अन्तःप्रेरणा के कारण अनायास ही बढ़ता चला जा रहा है। युग शक्ति का उपार्जन किया ही जाना है। गायत्री तत्वज्ञान को कुछेक हिन्दू धर्मानुयायियों की छोटी-सी सीमा में आबद्ध नहीं रखा जा सकता उसका क्षेत्र सर्वजनीत—सार्वभौम बनने जा रहा है। युग परिवर्तन का क्षेत्र समस्त मानव समाज—समस्त संसार है। गायत्री विद्या और ऊर्जा का विस्तार प्राचीन काल की तरह फिर से विश्वव्यापी होने जा रहा है । विश्व-शान्ति की—उज्ज्वल भविष्य की भूमिका बनाने के लिए यह आध्यात्म प्रयास अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इसके प्रभाव से परिवर्तन के लिए उपयोगी एवं आवश्यक भौतिक सरंजाम भी बनते और खड़े होते चल जायेंगे।

गायत्री महाशक्ति का उद्गम पर्व गायत्री जयन्ती कहलाता है। जयन्तिया महामानवों, देवात्माओं और अवतारों तक की जब पूरी उत्साह और धूमधाम के साथ मनाई जाती है तो कोई कारण नहीं कि गायत्री जयन्ती के प्रति जागृत आत्माओं का उत्साह न उभरे। गायत्री जयन्ती पर्व के पीछे हमारे महान गौरव का इतिहास झाँकता है, और उज्ज्वल भविष्य का आश्वासन। अपनी भावभरी श्रद्धा ही प्रस्तुत अवसाद को हटाने और पुनरुत्थान के आवेश को जगाने में समर्थ हो सकेगी। अस्तु हम सबका प्रयत्न यह होना चाहिए कि गायत्री जयन्ती के अवसर पर अपनी श्रद्धा पर नई धार धरें नई शान चढ़ायें। इस पर्व को भी उसी उत्साह के साथ मानाया जाना चाहिए, जिसके साथ कि पिछले दिनों वसन्त पर्व और नवरात्रि का साधना सत्र मनाया गया था।

गायत्री जयन्ती के दिन ही पतित पावनी—भगवती गंगा की भी जन्म जयन्ती है। यह दुहरा सुयोग हर वर्ष आता है इसलिए उसका महत्व और महात्म्य भी दूना है। वस्तुतः गंगा और गायत्री एक ही तत्व के दो रूप हैं। गंगा दृश्यमान है। गायत्री अदृश्य। एक से बहिरंग की शीतलता और पवित्रता मिलती है दूसरी से प्रज्ञा और प्रखरता। प्राण और शरीर की तरह दोनों एक-दूसरे की पूरक हैं। गंगा की तरह ही गायत्री की भी भावभरी मान्यता सर्वत्र है। अस्तु दोनों की संयुक्त जन्म जयन्ती का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। एक जन्म के विश्वामित्र को दूसरे जन्म में भागीरथ हुए हैं। एक जन्म में उन्होंने गायत्री के दृष्टा की भूमिका निबाही दूसरे में उन्होंने गंगा को स्वर्ग से धरती पर उतारने का उद्देश्य पूरा किया। तीसरी बार हम सबका संयुक्त प्रयत्न इसी पुण्य प्रयोजन की युग की माँग पूरी करने के लिए नई भूमिका सँभालने में जुटा हुआ है। गायत्री

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर्व को यदि भावभरे वातावरण में मनाया जा सके तो निश्चय ही उस उभरे हुए उत्साह से अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति और पूर्ति में भारी सहायता मिल सकेगी।

गायत्री पर्व मनाने की एक विशिष्ट परम्परा हमें इसी वर्ष से आरम्भ कर देनी चाहिए। अखण्ड परायण के रूप में गायत्री जयन्ती हम लोग चिरकाल से किसी न किसी रूप में मनाते रहे हैं। छोटे बड़े आयोजन भी होते रहे हैं। इस बार उस पुण्य प्रयोजन को और भावभरा समावेश चल पड़ना चाहिए, जिसमें प्रायः सभी गायत्री उपासकों को एक बारगी किसी न किसी रूप में सम्मिलित होने का अवसर मिल सके। मुसलमानों में ईद, ईसाईयों में बड़ा दिन परम पवित्र माना जाता है और वे अपने-अपने ढंग से अपने अवतारों और सांस्कृतिक उद्‌गमों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। भावभरे-आकर्षक— उत्साहपूर्ण एवं खर्चीले उत्सव के रूप में उसे उन धर्मों के अनुयायी मनाते हैं। हमें भी कम से कम श्रद्धा के क्षेत्र में तो पीछे नहीं रहना चाहिए। यदि गायत्री महाशक्ति के प्रति अपनी निष्ठा गहरी और सच्ची हो तो उसका परिचय जयन्ती पर्व पर तो उभरकर ऊपर आना ही चाहिए। उस दिन भी उदासी उपेक्षा छाई रहे तो यही अनुमान लगाया जायेगा कि भावना नहीं जगी। पूजा पत्री के रूप में किसी प्रकार कुछ लकीर पिटती रही है। अश्रद्धा भरी चिन्ह पूजा किसी के लिए भी गर्व गौरव का विषय नहीं हो सकती। उतने भर से किसी बड़ी उपलब्धि की उपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए।

गायत्री पुत्रों के अपने विशालकाय परिवार को मातृ वन्दन के इस पावन पर्व पर समवेत होना चाहिए और अपने श्रम सीकरों की—श्रद्धा-सुमनों की पुष्पाञ्जलि पुलकित अन्तःकरणों से प्रस्तुत करनी चाहिए। गायत्री पर्व इस तरह मनाया जाना चाहिए जिसमें गायत्री पुत्रों की श्रद्धा में नये प्रकाश का नये उत्साह का अनुपात बहुत अधिक बढ़ जाय। जिन्हें अब तक अपने सांस्कृतिक उद्‌गम का परिचय तक नहीं है, उन्हें यथार्थता को समझने का अनायास ही अवसर मिल जाय। उत्सव आयोजनों का उद्देश्य ही यह है। उन्में श्रम-समय मनोयोग और साधनों को इन्हीं प्रयोजनों की पूर्ति के लिए लगाया जाता है। उद्देश्य इतना बड़ा है कि उसके लिए भावनाशील, श्रद्धासिक्त साधकों को कुछ योगदान करना पड़े तो उसमें ये कतराते नहीं वरन् व्यस्तता और दरिद्रता को सहते हुए भी उछलकर आगे आते और अग्रिम पंक्ति में खड़े होते हैं।

गायत्री पर्व को अखण्ड परायण के रूप में मनाया जाया करे, महाकाल की ऐसी ही इच्छा और प्रेरणा है। इस शुभारम्भ को पूरी जागरूकता के साथ किया जाना चाहिए। अभिनव प्रचलनों में श्रीगणेश ही कठिन पड़ता है। पहली बार ही नये जोड़-तोड़ बिठाने पड़ते हैं। उसके बाद तो गाड़ी अपनी पटरी पर अपने आप ही घूमने लगती है। लुढ़कता गति चक्र अपने आप अपना रास्ता बना लेता है और प्रवाह उस लकीर पर अनायास ही चलता रहता है। जल प्रवाह को आरम्भ से ही नदी पथ बनाने में अवरोधों से जूझना पड़ा होगा। रास्ता निकल आया तो नदियों में जल प्रवाह अनायास ही सहज स्वाभाविकता के साथ बहता रहता है। गायत्री पर्व को अखण्ड पारायण का रूप देने से भी ऐसे ही प्राथमिक साहसिकता की विशेष आवश्यकता पड़ेगी। जागृत आत्माओं को उसी का उत्तरदायित्व सँभालने के लिए आग्रह रूप में यह पंक्तियाँ लिखी गयी हैं।

युग निर्माण परिवार में जहाँ भी सामूहिकता के तत्व उभर आये हों, वहाँ गायत्री जयन्ती पर २४ घण्टे का अखण्ड जप आयोजन किया जाय। इसका आरम्भ एक दिन पहले ही तीसरे प्रहर तीन बजे से विधिवत् आरम्भ किया जाय। गायत्री माता की चित्र स्थापना सुशोभित मंण्डप सिंहासन के रूप में की जाय। उस पर पूजा के उपकरण सुसज्जित रखे जाय। अखण्ड दीपक का प्रबन्ध किया जाय और अगरबत्तियाँ भी जलती रखी जायँ। सभी साधक उपस्थित हों। षटकर्म, स्वस्तिवाचन, यज्ञोपवीत धारण षोडशोपचार पूजन, स्तवन आदि उपचारों के उपरान्त जप प्रारम्भ किया जाय। अखण्ड जप मौन मानसिक किया जाता है क्योंकि उसके मध्य में रात्रि आती है। रात्रि में मानसिक जप ही होता है। ऐसी दशा में चौबीस घण्टे का पूरा जप बिना होठ हिलाये ही चलना चाहिए। जप कर्त्ता सभी वस्त्र पीले न रख सकें तो कन्धे पर पीला दुपट्टा तो रखें ही। पीले कपड़े की बनी गौमुखी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थैली में हाथ डालकर माला जप किया जाय आरम्भिक शाम को तथा प्रातः और समाप्ति के समय तीन बजे सामूहिक आरती की जाय। पुष्पों से सुसज्जित थाली में चौबीस घृत दीपकों का आरती थाल हो। शंख घड़ियाल आदि ध्वनि वाद्यों की पहले से ही व्यवस्था कर ली जाय।

गायत्री जयन्ती के दिन समारोह स्थल पर श्रृद्धा सरंजाम की घूम रहनी चाहिए। उस दिन प्रभात के मन्त्र-लेखन, गायत्री-चालीसा पाठ का क्रम भी रखा जा सकता है। यदि लाउडस्पीकर से कीर्तन की व्यवस्था बन पड़े तो प्रातःकाल से लेकर तीन बजे तक गायत्री चालीसा का सुन्दर वाद्य यन्त्रों सहित मधुर कंठ के गायकों द्वारा उसे भी चलाया जा सकता है। धुनि कीर्तन करना हो तो—"ॐ भूः भुवः ॐ स्वः ॐ— ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ" यह मन्त्र भी सहगान ध्वनि प्रवाह की तरह काम में लाया जा सकता है।

तीसरे प्रहर तीन बजे अखण्ड जप समाप्त कर दिया जाय। शेष समय में कीर्तन शोभायात्रा-सहभोज आदि का जहाँ जो प्रबन्ध बन पड़े वहाँ वैसा कार्य-क्रम बना लिया जाय। सायंकाल आयोजन स्थल पर दीपदान किया जाय और रात्रि को ज्ञान यज्ञ की व्यवस्था बने। संगीत प्रवचनों की ऐसी तैयारी की जाय, इसके प्रभाव से गायत्री महाशक्ति के प्रति भावभरा वातावरण उत्पन्न हो और माता के अंचल का अधिक लाभ लेने के लिए परिचित और अपरिचित को प्रेरणा भरा प्रकाश प्राप्त हो। वक्ताओं और गायकों का पहले से ही प्रबन्ध करके रखना होगा सामान्यतः कार्यक्रम का मोटा स्वरूप यही होना चाहिए। इसकी आवश्यकतानुसार स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार हेर-फेर भी किया जा सकता है। गायत्री जयन्ती के एक महीना पूर्व ही आयोजन की तैयारी में पूरी तत्परता बरती जाय और तैयारी की जाय। तो ही समय पर सब कार्य सही रूप से सम्पन्न हो सकेगा। हाथ पर हाथ रखे बैठे रहे तो नियत समय सामने आ खड़ा होने पर कुछ करते-धरते न बने पड़ेगा। ऐसे ही लंगड़ी लूली, कानी-कुकड़ी चिन्ह पूजा भर बन पड़ेगी। अच्छे आयोजन की तैयारी में एक महीने का समय अधिक नहीं कम ही है। तैयारी आरम्भ करने में एक दिन का भी विलम्ब नहीं किया जाना चाहिए।

(१) स्थानीय सभी परिजनों से सम्पर्क साधा जाय और उस दिन अखण्ड जप में कौन तैयार होते हैं उसकी लिस्ट बनाई जाय और वे कितना समय, कब से कब तक का देंगे यह पूछा जाय ? स्थान-आसन आदि की सारी व्यवस्था का आधार यहीं से प्रारम्भ होता है।

(२) नवरात्रि पर्व के अनुष्ठान कर्त्ताओं को यह उत्तरदायित्व विशेष रूप से सौंपा जाय कि वे गायत्री जयन्ती पर अपने साथ कुछ नये साधक भी अखण्ड पारायण में सम्मिलित होने के लिए तैयार करें। साधना की श्रद्धा का एक पक्ष यह भी है कि नये साधक बनाये जाय और इस प्रकाश को अधिकाधिक व्यापक बनाने के लिए प्रयत्नशील रहा जाय।

(३) दिन में अधिक लोग आ जाते हैं। रात्रि में कम पड़ते हैं। रात्रि को संख्या घट भले ही जाये पर शृंखला टूटने न पाये इसका ध्यान पहले से ही रखा जाय।

(४) उपयुक्त स्थान का चुनाव किया जाय। सफाई रोशनी, हवा, बिछावट, लाउडस्पीकर, पानी, पेशाबघर आदि की ऐसी व्यवस्था पहले से ही बना ली जाय जिससे आगन्तुक नर-नारियों को कठिनाई ना पड़े। जूतों की सुरक्षा तथा उनकी सतर्कता तथा दूसरे सेवा कार्यों के लिए स्वयंसेवकों का प्रबन्ध रहना और ड्यूटी लगाना आवश्यक है।

(५) पंडाल की शोभा—सज्जा इतनी आकर्षक बनाई जाय कि उसे देखने भर से चित्त को प्रसन्नता हो और कुछ समय देखने और बहाने के लिए मन ललचे। आदर्श वाक्य-वंदन बार-झण्डियाँ—चित्र, केला, स्तम्भ पुष्प, पल्लव आदि से सजावट करने में कुछ उठा न रखा जाय।

(६) उपस्थिति अच्छी हो तो ही जुलूस निकालना चाहिए। सहभोज का मध्यान्ह को या तीसरे प्रहर इस प्रकार प्रबन्ध रखा जाय, जिससे अन्य कार्यक्रमों में बाधा न पड़े। इन भोजों में चावल, दाल, खिचड़ी, दलिया जैसी वस्तुयें ही परोसी जायँ। पकवान मिष्ठान्न न हों। उस दिन उपवास को प्रोत्साहित न किया जाय। उपवास रखना हो तो अखण्ड जप प्रारम्भ के समय से जप समाप्ति तक मात्र पेय पदार्थों पर रहा जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(७) जप पण्डाल में नहीं वरन् उससे कुछ हटकर यज्ञशाला बनाई जाय। ताकि धुएँ में जप कर्त्ताओं को कठिनाई न पड़े। यज्ञ गायत्री जयन्ती के दिन प्रातः काल रखा जाय। जपकर्त्ता भिन्न-भिन्न पारियों में क्रमशः यज्ञ करें।

(८) खर्च का बजट पहले से ही बना लिया जाय। जनता से तो वार्षिकोत्सव के समय ही एक बार चन्दा माँगा जाया करे। नवरात्रि, बसन्त पर्व, गायत्री जयन्ती, गुरु पूर्णिमा आयोजनों का खर्च परिजन परस्पर मिलजुलकर ही पूरा कर लिया करें। अतिरिक्त चन्दा देने में आना-कानी लगे तो फिर ज्ञानघटों की राशि भी इसमें लगाई जा सकती है। हिसाब में एक पैसे की भी गड़बड़ी न होने पाये। जमा करने वालों और खर्च करने वालों को हिसाब-किताब की इतनी सफाई रखनी चाहिए कि उसमें उँगली उठाने को कहीं किसी को गुंजायश ही न रह जाय।

(९) आयोजन के समय गायत्री साहित्य विक्रय का प्रबन्ध रखा जाय। प्रचार साहित्य वितरण में ज्ञानयज्ञ का अंग मानकर उसके लिए कुछ राशि निर्धारित रखी जाय।

(१०) गायत्री जयन्ती में उपासना क्षेत्र का विस्तार करने की बात को लक्ष्य मानकर चला जाय। हर परिजन के घर में गायत्री चित्र की प्रतिष्ठापना हो। परिवार के लोग नमन-वंदन के बाद भोजन किया करें। चौके में पाँच आहुतियाँ पड़ने के बाद भोजन मिले। जहाँ सम्भव हो वहाँ घरों में प्रातः प्रार्थना और सायं आरती का कार्यक्रम बने। कथा कहानी की परम्परा का शुभारम्भ होने से पारिवारिकता में शालीनता बढ़ती है। पुराने परिजनों में परिपक्वता लाने और नये लोगों को गायत्री साधना अपनाने के लिए इस अवसर पर प्रबल प्रयत्न किया जाय।

(११) नव निर्माण को ध्यान में रखते हुए जिन्होंने अब तक संकल्प न लिए हो उन परिजनों को आत्म-निर्माण और समाज-निर्माण की दृष्टि से कुछ न कुछ व्रत धारण करने चाहिए। गायत्री, जयन्ती के इस व्रत धारण को विशेष पर्व माना जाये। पिछले व्रतधारियों से उनकी प्रगति की रिपोर्ट लेने—प्रोत्साहन देने का क्रम भी बनायें; जन्मदिन मनाने और ज्ञानरथ चलाने में जहाँ अभी तक उत्साहवर्धक सफलता मिली हो, वहाँ इस अभाव की पूर्ति करने में कुछ उठा न रखा जाय।

(१२) गायत्री जयन्ती की अखण्ड साधना में जिनने भाग लिया हो उनकी नामावली हरिद्वार भेज दी जाय। वहाँ से संयोजक के पते पर इन सभी के लिए आशीर्वाद पत्र भेजे जायेंगे जिन्हें वितरित करने का उत्तरदायित्व उन्हीं को निभाना होगा।

गायत्री जयन्ती के प्रस्तुत प्रचलन को कार्यान्वित करने में प्रत्येक परिजन का योगदान लगना चाहिए। कोई उसके उपेक्षा न बरतें—आना-कानी न करें।

गायत्री जयन्ती की तैयारियाँ सृजनात्मक हों

अनिवार्य पर्वों में से गायत्री जयन्ती जब हमारे एक दम निकट आ जाय, तभी नहीं वरन्, उससे पूर्व ही परिजनों की गतिविधियों की सक्रियता स्थान-स्थान पर दिखाई देनी लगनी चाहिए है। गायत्री-जयन्ती गंगा दशहरे के बाद आती है। फिर ४ माह वर्षा काल के चलते हैं। उनमें कोई बड़ा सामूहिक आयोजन सम्भव नहीं होता, इसलिए इस पर्व पर परिजन वातावरण में ऐसी चेतना प्रवाहित करने के लिए प्रयत्नशील रहे जो चार माह तक जन-जन को जागृत रख सके। युग निर्माण के सैनिकों के लिये ऐसा उत्साह सर्वथा उचित ही कहा जायेगा।

पर्वों के सम्बन्ध में हर शाखा एवं हर सक्रिय कार्यकर्त्ता के अनुभव इतने हो चुके हैं कि अब स्थूल व्यवस्थाओं कर्मकाण्डों के सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी छापना अकारण स्थान घेरने जैसा ही लगेगा। जो शाखायें तथा सदस्य नये हैं, उन्हें भी मार्ग दर्शन और सहयोग देने की स्थिति हर क्षेत्र में पैदा हो गयी है। युग साधना के क्रम से स्वयं की—अपनी शाखाओं की गतिविधियों के संचालन के साथ-साथ अपने स्वजनों को उचित सहयोग एवं मार्ग-दर्शन देना कार्यकर्त्ताओं के स्वभाव का अंग बन चुका है। दुनियाँ को न दिखाई देने वाली यह प्रामाणिक व्यवस्था मिशन की दृढ़ता का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके प्रभाव से ही सारे देश में एक साथ, एक दिन, एक समय में एक ही ढंग से हजारों स्थानों पर पर्वों को प्रेरणा प्रद ढंग से मनाया जाना सम्भव हो पाता है। यह क्षमता निरन्तर बढ़ती ही जा रही है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री जयन्ती पर्व पर भी इस अद्‌भुत क्षमता का सर्वत्र प्रयोग किया जायेगा। रामनवमी के पश्चात् ही अधिकांश शाखायें गायत्री जयन्ती पर्व को भूमिका बनाने में लग जाती हैं। पूजन विधि तथा व्यवस्था का क्रम तो लगभग सबका समझा हुआ ही है। इसलिए उसे उपयोगी ढंग से कर लेना कोई खास बात नहीं है। पर दूसरा पक्ष ऐसा है, जिसके लिये परिजनों का प्रयास आवश्यक है।

युग निर्माण योजना द्वारा पर्वों का मनाया जाना कोई सामयिक समारोह तक ही सीमित नहीं है। यह सर्वविदित है। सामयिक समारोह द्वारा जनसाधारण को एकत्रित करके कुछ सन्देश दे देना कम महत्व का कार्य नहीं है। पर उससे अधिक महत्व इस बात का है कि समय के अनुरूप, जन भावना को उभारा जा सके, तदनुरूप व्यवहारिक कार्यक्रम उन्हें बताया जाय। यह सब यह अदृश्य पक्ष है, जिसे साधक ही देखता समझता है—और उसके लिये श्रम तथा समय लगाने से नहीं चूकता।

गायत्री जयन्ती युग निर्माण योजना द्वारा ज्ञान पर्व, भक्ति पर्व और शक्ति पर्वों के रूप में घोषित तीन अनिवार्य पर्वों में से भक्ति पर्व के नाम से जाना जाता है। ज्ञान, भक्ति और शक्ति सैद्धान्तिक रूप से यह तीनों ईश्वरीय विभूतियाँ भिन्न-भिन्न कही जाने पर भी अभिन्न हैं। परन्तु साधना क्रम उनके लिये कुछ संयुक्त तथा कुछ भिन्न-भिन्न अपनाने पड़ते हैं। इन तीन ईश्वरीय विभूतियों की वृद्धि जन मानस में होती चले तो समझना चाहिए कि दिव्य लक्ष्य की उपलब्धि में विलम्ब नहीं। युग निर्माण योजना इसी प्रयास में लगी है। पर्वायोजनों की शृंखला भी उसी का एक अंग है।

भक्ति पर्व के प्रसंग में उसी के अनुरूप कार्यक्रम लेकर चलना उचित है। अभिनव निर्माण की प्रक्रिया में भावनात्मक उत्कृष्टता बहुत महत्व रखती है। भगवान राम और कृष्ण का साथ उनके रचनात्मक अभियान में देने वाले रीछ बन्दर या ग्वाल बाल शक्ति और ज्ञान में जैसे भी रहे हों—भक्ति भावना में अपना सानी नहीं रखते थे। उसी के प्रभाव से असम्भव समझे जाने वाले कठिनतम कार्यों को उन्होंने खेल-खेल में कर दिखाया। इस पर्व से सम्बद्ध कथानक में ब्रह्मा के मन में भी सृष्टि रचना की दिव्य भावना का प्रस्फुटन ही सृजन क्षमता अर्जित करने तथा विश्व निर्माण का कारण बना। गंगावतरण में भी भागीरथ की भावना जलते हुये सगर पुत्रों के उद्धार के लिये कूद पड़ी और गंगा के रूप में प्रवाहित हुई। कहने की आवश्यकता नहीं आज की विषम परिस्थितियों में भी कुछ उल्लेखनीय कार्य कर दिखाने की स्थिति इसी स्तर की भावना के जागरण से ही सम्भव है। अन्य क्षमतायें उसी के सहारे अपना कौशल और प्रभाव दिखा सकेंगी।

यहाँ स्मरणीय यह है कि यह तभी सम्भव है, जब भक्ति भावना का सही अर्थों में जागृत हो—अथवा यों कहें कि उसे सही दिशा दी जा सके। उपर्युक्त दोनों प्रसंगों के चमत्कारी परिणाम इसीलिये सामने आ सके कि उससे सम्बद्ध भावना बहुत शुद्ध थी और उसे बिलकुल सही दिशा में मोड़ा जा सका। यदि ऐसा न हुआ होता तो यह अनुकरणीय प्रसंग सामने न आ सके होते।

इस भावना को शुद्ध बनाये रखने अथवा सही दिशा में लगाये रखने के लिये युग निर्माण योजना ने बहुत प्रयास किया है तथा आगे उसमें और भी प्रखरता लायी जायेगी। भक्ति भावना कैसी हो—उसे धारण करने वाला भक्त कैसा हो ? इसका संकेत तुलसीकृत रामायण में स्वयं भगवान राम के श्रीमुख से दिलाया गया है। भक्तराज हनुमान में करुणा निधान कहते हैं—

सोई अनन्य जाके अस, मति न टरई हनुमन्त।
मैं सेवक सचराचर, रूपस्वामि भगवन्त।।

यह संकेत भक्ति भावना के जागरण और दिशा निर्धारण में बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। भक्त की यह दृढ़ निष्ठा होनी चाहिये, अविचल आस्था होनी चाहिये कि वह प्रभु के कार्य के लिये है और वह प्रभु स्वयं संसार में चर-अचर रूप में व्याप्त है। इस संसार को पवित्र और सुन्दर बनाने का प्रयास उनकी सर्वोत्कृष्ट सेवा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भक्ति के नाम पर ढोंग आडम्बर बहुत हैं, पर इस कसौटी पर सब कच्चे उतरते हैं। भक्ति का स्वांग भरा जाता है भगवान से अपनी कामनाओं, इच्छाओं और स्वार्थों की पूर्ति कराने के लिये स्वांग कुछ भी भरा जाये, भावना यही रहती है कि हम अपने स्वार्थ में लगे रहें—और भगवान भी अपने नियमों मर्यादाओं को भुलाकर हमारी कामनाओं की पूर्ति के लिये लग पड़े। भगवान के कार्य की कभी चर्चा चले तो नम्रता का ढोंग रचते हुये अपने आप को दीन-हीन, अशक्त कहकर किनारा काटने का प्रयास किया जाता है। कैसी विडम्बना है—हमारी सही गलत कामनाओं की पूर्ति के लिये तो भगवान सर्व शक्तिमान होता है, पर श्रेष्ठ कार्यों की क्षमता हमारे अन्दर पैदा करने में भगवान भी लाचार हो जाता है।

युग निर्माण योजना विकृत मान्यताओं के इस प्रपंच को बड़ी खूबी से खंडित करती हुई आगे बढ़ रही है। हर सृजन सैनिक इसी दृढ़ आस्था के सहारे आगे बढ़ रहा है कि उसे ईश्वरीय प्रयोजन में एक छोटी ही सही पर महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। विश्व विराट को ही अपना आराध्य मानकर अपनी सक्रिय उपासना में वह लग पड़ता है। उपासना के क्षणों में अपनी इसी अस्था को दृढ़तर बनाते हुये वह प्रचण्ड साधना क्रम में श्रद्धा रखता है। इसी क्रम के कारण गिने-चुने व्यक्ति न कुछ के बराबर साधनों से चमत्कारी परिणाम उत्थान करते चले जा रहे हैं।

यही भावना अधिक अन्तःकरणों में जागे, यही विधि अधिक व्यक्तियों द्वारा अपनायी जाये तभी युग परिवर्तन जैसा विशाल कार्य सम्भव हो सकेगा। भक्ति पर्व पर वेदमाता गायत्री के सामने मस्तक झुकाकर यह भाव भूमि के सैनिक भाव जागरण की साधना में जन-जन को जबरदस्ती लगा देने के लिये जुट पड़े तो निश्चित रूप से आश्चर्यजनक परिणाम सामने आयेंगे।

यहाँ जबरदस्ती से लगाने की बात का मर्म समझ लेना उचित है। घर में शिक्षितों की संख्या बढ़ानी है तो बच्चों तथा प्रौढ़ों को पढ़ाने का क्रम बनाना पड़ता है। पढ़ने के प्रति उनमें उमंग जगायी जाती है। उसके लाभ उन्हें समझाये जाते हैं तथा सुविधायें प्रदान की जाती हैं। फिर भी दिखायी यह देता है कि स्वतः की प्रेरणा से कोई विरला ही नियमित रूप से पढ़ पाता है। प्रारम्भ में पढ़ने के लिये उसके ऊपर जोर डालना, नियन्त्रण व्यवस्था लागू करने जैसी प्रक्रियां लागू करनी पड़ती है। इसी क्रम को एक प्रकार से जबरदस्ती पढ़ाने का क्रम भी कह सकते हैं। सैद्धान्तिक रूप से प्रभावित करने के बाद चालू अभ्यास से बाहर खींचने के लिये जो सशक्त विधि अपनायी जाती है उसी के लिये जबरदस्ती शब्द का प्रयोग यहाँ किया गया है।

कई बार यह संकेत दिया जा चुका है कि एक तीव्र भावनात्मक हलचल सूक्ष्मरूप से इन दिनों पैदा की जा रही है। हर व्यक्ति भौतिक जाल में उलझ हुआ भी आज भावनाओं के प्रति अपने आपको उपेक्षित नहीं रख पा रहा है। भाव जगत के अस्तित्व को उसे जबरन स्वीकार करना पड़ रहा है तथा उस सन्दर्भ कें वह बहुत कुछ जानने, समझने तथा करने के लिये बेचैन है।

इसी पृष्ठभूमि पर हमारी गतिविधियाँ आगे बढ़ती हैं। भावनात्मक व्यायाम के रूप में उपयोगी और सुगम उपासना विधि ऐसे व्याकुल अन्तः व्यक्तियों के सामने हमें ही रखनी होंगी। वह उपासना विधि क्या हो—इसका कोई स्थूल रूप निर्धारित नहीं किया जा सकता। व्यक्ति विशेष की मनःस्थिति के अनुरूप अगला चरण उसे सुझाया जाना होगा। नियमित जप साधना, ध्यान, चिन्तन आदि से लेकर कम से कम हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर प्रभु को नमस्कार करने तक की कुछ भी प्रक्रिया फिट बैठ सकती है।

युग साधक उपासना विधियों से भली प्रकार परिचित है। साधना सत्रों में समझायी जाने वाली एक घन्टे की न्यूनतम उपासना, युग साधकों के लिये आधा घण्टे का अनिवार्य उपासना क्रम, १० मिनट में ब्रह्म संध्या युक्त एक माला का जप, मन्त्र लेखन की सुगम साधना, गायत्री चालीसा का भावपूर्ण पाठ या केवल ॐ भूर्भुवः स्वः पंचाक्षरी मन्त्र का जप, में से जिसके लिये जो उपयुक्त लगे, उसे उस ढंग की साधना में लगाया जा सकता है।

ध्यान रहे प्रारम्भ सुगम से सुगम विधि से किया जाये। फिर जिस ढंग की उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावनात्मक भूख हो उसी ढंग से उसे उपासनात्मक प्रक्रिया की अगली सीढ़ियाँ बतायी जावें। गायत्री जयन्ती पर्व के प्रसंग में जितना जन सम्पर्क बने, जितने व्यक्तियों तक पहुँचा जा सके, उन्हें उपासनात्मक प्रक्रिया से जोड़ देने का प्रयास किया जाये।

सामान्य से सामान्य क्रम यह भी अपनाया जा सकता है कि हर घर में वेद माता गायत्री का एक चित्र रहे। उसके समक्ष घर के कोई व्यक्ति नियमित पूजा उपासना करे तो बहुत अच्छा। यह सम्भव न हो सके तो प्रातः सायं एक अगरबत्ती लगा देना तथा घर के हर व्यक्ति द्वारा उसके सामने नमन करने का सुनिश्चित क्रम चलाया जाना भी उपयुक्त है। घर का हर छोटा, बड़ा सदस्य, स्त्री-पुरुष अपने कार्यों का प्रारम्भ उसके सामने जाकर भावनापूर्वक प्रणाम करके करें। दिव्य सत्ता के सामने मस्तक झुकाकर कार्य करने का क्रम अपनाना एक बहुत बड़ी भाव साधना का प्रथम चरण है। प्रभु के निर्देशों के अनुरूप चलने की क्षमता का विकास हम में हो इस श्रेष्ठ भावना से युक्त केवल नमन, अपनी स्वार्थपूर्ति में सहयोग देने के लिये भगवान को निमन्त्रित करने के भाव से की गयी लम्बी उपासना से कहीं अधिक लाभप्रद है।

गायत्री जयन्ती पर्व को मनाने की स्थूल तैयारियाँ जोर-शोर से होनी चाहिये। भावनात्मक जागरण की सूक्ष्म तैयारी भी उससे अधिक गम्भीरता से की जानी चाहिये। पर्व के सन्दर्भ में किये जाने वाले समारोहों में यह सन्देश बड़ी खूबी से प्रभावशाली ढंग से सभी तरह दिये जा सकें ऐसी व्यवस्था प्रबुद्धजनों को कर लेनी चाहिये।

निर्जला एकादशी

यद्यपि पुराणों और धर्म-शास्त्रों में वर्ष की सभी एकादशियों को व्रत रखने का विधान है और फलों के अनुसार उनके भिन्न-भिन्न नाम भी हैं जैसे "मोक्षदा' 'सफला' 'पापमोचिनी' 'योगिनी' 'पुत्रदा' 'जया' 'विजया' 'वरूथिनी' आदि। 'निर्जला' ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की एकादशी को कहते हैं और इसका महत्त्व सबसे अधिक माना जाता है। यहाँ तक कहा गया है कि इस एक ही एकादशी का व्रत रखने से चौबीसों एकादशियों का पुण्य प्राप्त हो जाता है, इसकी कथा इस प्रकार है—

एक बार भीमसेन महात्मा व्यास के पास गये और कहने लगे कि भगवन ! मुझे अर्जुन, नकुल और सहदेव यह कहकर चिढ़ाते हैं कि तुम किसी एकादशी को व्रत नहीं रखते, इसलिये तुम्हें नर्क में जाना पड़ेगा। व्यासजी ने कहा कि "सचमुच एकादशी के दिन अन्न खाना बड़ा पाप होता है।" इस पर भीमसेन ने प्रार्थना की कि महाराज ! मुझे तो भोजन किये बिना चैन नहीं पड़ता, अतः ऐसा उपाय बतलाइये जिससे मैं यम-यातना से बच सकूँ। व्यास जी ने कहा—"भीमसेन ! तुम ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत रखो इससे तुम्हें चौबीसों एकादशी का फल प्राप्त होगा।" तभी से भीमसेन इस व्रत को रखने लगे और इसका 'भीमसेनी एकादशी' भी प्रसिद्ध हो गया।

वास्तव में एकादशी के दिन व्रत रखने का विधान हमारे ज्ञान-संपन्न ऋषियों की दूरदर्शिता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। घर-गृहस्थों में मनुष्य प्रायः जिस प्रकार खाते-पीते हैं, उसमें आहार-शास्त्र की दृष्टि से अनेक त्रुटियाँ रह जाती हैं। किसी-किसी दिन स्वादवश अधिक खा लेने से अथवा ऐसे पदार्थ खा लेने से जिनका पाचन अपेक्षाकृत कठिन होता है, मनुष्य के पेट में कुछ विकार उत्पन्न हो जाता है। वैसे भी आजकल हमारा रहन-सहन जैसा हो गया है, उससे नवयुवकों का हाजमा भी जैसा होना चाहिये, वैसा देखने में नहीं आता। इसके फलस्वरूप पेट में थोड़ी-बहुत गड़बड़ी होती रहती है और धीरे-धीरे कई दिन में हमारे पाचन तन्त्र अथवा आमाशय का भार बढ़ जाता है। बहुत-से लोग इसके प्रतिकार के लिये हाजमे के 'चूरन' आदि का सेवन किया करते हैं, पर वह एक बहुत बड़ी गलती है। कोई 'चूरन' पचाने की शक्ति की वृद्धि नहीं कर सकता। उससे दस्त होकर हमारे पेट का भार कम हो सकता है, पर उसका प्रभाव हमारी पाचन शक्ति पर बुरा ही पड़ता है ओर वह पहले से कमजोर हो जाती है। इसलिये पेट के भार को ठीक करने का सबसे उत्तम उपाय यही है कि हम बीच-बीच में किसी नियत दिन उपवास रखें। इससे उस दिन आमाशय को नित्य के काम से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छुट्टी मिल जाती है और वह पेट में जमा हो गये अनावश्यक पदार्थों को पचाकर निकाल देता है, जिससे हमारे समस्त स्वास्थ्य पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है।

उपवास से शारीरिक और मानसिक लाभ उठाने के लिये यह अनिवार्य नहीं कि केवल एकादशी को ही उपवास रखा जाये। आवश्यकतानुसार अन्य किसी भी दिन उपवास रखा जा सकता है। पर यदि हमको कोई खास शारीरिक व्याधि नहीं है और स्वास्थ्य-रक्षा मन की पवित्रता की दृष्टि से हम शरीर की शुद्धि के लिये उपवास करते हैं, तो उसके लिये एक नियत दिन होना अच्छा है और वह दिन एकादशी होना अधिक लाभदायक है। कुछ विचारशील सज्जनों ने यह निर्णय किया है कि जिस प्रकार सूर्य-चन्द्रमा के आकर्षण का प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है, उसी प्रकार मनुष्यों के शरीर पर भी पड़ता है। एकादशी के दिन उस प्रभाव की स्थिति कुछ ऐसी होंती है कि उस दिन किया गया उपवास शारीरिक उत्तेजना को शांत करके स्वास्थ्य की विशेष रूप से उन्नति करता है।

कुछ भी हो उपवास मनुष्य की स्वास्थ्य-रक्षा के लिये आवश्यक है और हर तरह के रोगों को दूर करने का सबसे विश्वस्त, निश्चित और बिना खर्च का इलाज है। पश्चिमी वैज्ञानिकों ने भी गत पचास वर्षों में उपवास के महत्त्व पर बहुत से प्रयोग किये हैं और अब उन्होंने 'उपवास चिकित्सा' के नाम से एक स्वतन्त्र चिकित्सा-प्रणाली को ही जन्म दे दिया है, जिसके अनुसार अनेक स्थानों पर गम्भीर रोगों का इलाज सफलतापूर्वक किया जाता है। ऐसी दशा में यदि हम अपने शास्त्रों के वचनों के अनुसार प्रति १५ वें दिन विश्वास और श्रद्धापूर्वक एकादशी का व्रत करें, उस दिन जप, संयम, स्वाध्याय द्वारा मन को भी पवित्र रखें तो इससे अथनीय लाभ होगा, इसमें क्या संदेह है ?

गुरुपूर्णिमा
गुरुजनों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का पर्व गुरु पूर्णिमा

जन्म लेने के पश्चात् मनुष्य का बालक दूसरों पर आश्रित रहता है। वह स्वयं कोई भी कार्य नहीं कर सकता। बोलना, चलना आदि सभी कार्य उसे सिखाये जाते हैं। यदि उसका मार्ग दर्शन और सहायता न की जाये तो वह अंधेरे में टटोलता ही रहेगा, वह किसी एक क्षेत्र में उन्नति नहीं कर सकेगा, पशुओं के सम्बन्ध में यह बात नहीं है। उसके बच्चे जन्म लेने के बाद फुदकने लगते हैं, दूध पीने का स्थान स्वयं ढूँढ़ लेते हैं, उनके दैनिक व स्वाभाविक कृत्यों के लिये मार्गदर्शक व सहायक की आवश्यकता नहीं रहती है।

हिन्दू धर्म संसार के सभी धर्मों से श्रेष्ठ माना जाता है। बड़े शास्त्र, दर्शन, ब्राह्मण, ग्रन्थ, स्मृतियाँ, गीता, महाभारत, रामायण आदि साहित्य आज भी संसार को ज्ञान प्रदान कर रहे हैं जिससे वह अपने जीवन के स्वस्थ निर्माण का मार्ग निकाल सकें। हमारे तत्वदर्शी ऋषियों ने हजारों वर्षों की खोज और अनुभव के पश्चात् यह निर्णय किया था कि मनुष्य केवल आर्थिक उन्नति से सुखी नहीं रह सकता। उसका जीवन उत्तम गुणों से अलंकृत होना चाहिये, वह जीवन के तत्व, उद्देश्य व सार को समझे और उसी प्रकार का व्यवहार करें, स्वयं जिये और दूसरों को जीने दें, दीप बनकर स्वयं जले और दूसरों के अज्ञानान्धकार को दूर करे, उनके सुख-दुःख को अपना ही सुख-दुःख समझे, यह मनुष्यता है यदि मनुष्य के जीवन ने यह व्यवहार धारण न किया तो वह पशु से बढ़कर माना जायेगा क्योंकि आहार, निद्रा, भय और मैथुन के चार कार्य तो पशु भी कर लेते हैं, मनुष्य में क्या विशेषता रही। मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने के लिये गुरु की नियुक्ति की जाती थी। जब बालक कुछ समझदार हो जाता था तो वेदारम्भ कराने के लिये उसे गुरु के आश्रम में भेज दिया जाता था, गुरु उसे दीक्षित करके,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञोपवीत संस्कार कर मनुष्यता की सीढ़ियों पर चढ़ने के लिये मार्ग दर्शन करता है।

पूर्वकाल में गुरुजन आजकल की तरह वैज्ञानिक अध्यापक नहीं होते थे। वह अपने गृहस्थ के संचालन के लिये शिष्य से कुछ याचना नहीं करते थे बल्कि शिष्य के भोजन आदि की व्यवस्था वह आश्रम की ओर से कर देते थे। एक तो शिष्य का स्नेह और प्रेम की गंगा में स्नान करने को मिलता था। जीवन के अंधियारे में प्रकाश की ज्योति मिलती थी, आर्थिक व्यवस्था की कोई चिन्ता नहीं रहती थी, स्वच्छ और उत्तम वातावरण में रहकर विद्याध्ययन करके अपने मस्तिष्क का विकास करना था, आदर्श जीवन के महान् आदेशों का वह गुरु की साधारण पाठशाला में व्यवहारिक रूप से सीखता था। गुरुजन अपने सारे जीवन की कमाई शिष्य को देकर प्रसन्न होते थे कि यह ज्ञान दान की स्वस्थ परम्परा आगे भी इसी प्रकार चलती रहेगी। ताली दोनों हाथों से बजती है। पूर्वकाल में गुरु और शिष्य दोनों के आदर्श महान् होते थे। या यूँ कहना चाहिये कि गुरु अपने महान् तप, त्याग, प्रेम सेवा, निर्लोपता, निःस्वार्थता, संयम सदाचार आदि सद्गुणों के कारण सबको जीत लेता था, अपना बना लेता था। उसके महान् आदर्श को देखते हुये ही गुरु का ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पदवी से विभूषित किया गया है। मनु भगवान ने तो विद्या को माता और आचार्य को पिता कहा है।

अज्ञानातिमिरान्धस्य य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

वह गुरु जो संसार रूपी अन्धेरे में भटकने वाले प्राणी को ज्ञान रूपी अंजन प्रदान करके उसके मूँदे हुये नेत्रों को खोल देता है, वह देवता नहीं तो और क्या है, भोग-विलास में पड़े हुये व्यक्तियों को जो संयम और विवेक का पाठ पढ़ाता है, गृहस्थ के जाल में फँसे हुये अविवेकियों को जो अपने पावन कर्त्तव्यों को भूल चुके हैं, मार्ग दिखाता है जीवन के मोड़ पर कठिनाईयों में घबराये हुओं को जो धैर्य देता है, जीवन से निराश होने वालों को जो आशा का अमृत पिलाता है, वह गुरु देवता नहीं तो क्या है। ऐसे गुरु-देवताओं को शिष्यगण श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते थे, जयन्ती मनाते थे, अपनी श्रद्धा के फूल चढ़ाते थे उस दिन नये और पुराने सभी शिष्य एकत्रित होकर समारोहपूर्वक गुरुपूर्णिमा का पावन पर्व-उत्सव आषाढ़ मास के शुक्लपक्ष को मनाया करते थे अपनी श्रद्धा के प्रतीक रूप में वह गुरु के लिये श्रेष्ठ भोजन, वस्त्र और धन भेंट रूप से देते थे। गुरु द्रव्य और पुष्प अर्पण करने वाले दोनों प्रकार के शिष्यों पर एक प्रकार समान स्नेह रखते थे, यही उनकी विशेषता थी।

पूर्वकाल में जैसे महान् गुरु होते थे' वैसे ही शिष्य भी होते थे। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पलटता है। गुरु को देखकर शिष्य भी वैसा बनता जाता है गुरु के मन में ब्राह्मण तत्व, परोपकार, सेवा की भावनायें विद्यमान रहती हैं तो शिष्य भी उन्हीं पदचिन्हों पर चलने लगता है। वह गुरु की आज्ञाओं का पालन करता है चाहे उसके शरीर का नाश तक क्यों न हो जाये। वह गुरु आज्ञा को ब्रह्म वाक्य मानता है। आरुणि अपने गुरु की आज्ञा मानकर सारी रात ठंडे जल प्रवाह में लेटकर मेढ़ को रोके हुआ था। शिवाजी ने शेरनी का दूध लाने के लिये अपने जीवन को संकट में डाल दिया, अर्जुन आदि पाण्डवों ने गुरु द्रोणाचार्य का बदला लेने के लिये द्रोपद पर चढ़ाई करके उसे परास्त करके गुरु के सामने बन्दी बना करके लाये थे, भगवान् कृष्ण ने अपने गुरु महर्षि गर्ग के पुत्र को दूसरे लोगों से लेकर आये थे और उनकी इच्छा को पूर्ण किया था, हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र को राष्ट्र-हित के लिये अपना सारा राज-पाट दे दिया, राजा दशरथ ने गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से महर्षि विश्वामित्र को यज्ञ की रक्षा के लिये, राक्षसों को मारने के लिये, अपने हृदय के टुकड़ों राम और लक्ष्मण को दे दिया था, ऐसे भी शिष्य हुये, जो गुरु के पास, ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने के लिये आये थे परन्तु गुरु ने उन्हें गाय चराने के लिये आज्ञा दी तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया और कर्त्तव्य पालन करते हुये अभीष्ट ज्ञान सिद्धि प्राप्त की। गुरुजनों के विश्वास पर शिष्य महान् शक्तियाँ और सिद्धियाँ प्राप्त कर लेते थे। एकलव्य का उदाहरण एक उज्ज्वल प्रमाण है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस गुरु शिष्य परम्परा को चलाये रखने के लिये ही यह गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। इसके लिये अनेक लाभ हैं। यह एक माना हुआ सिद्धान्त है कि जनता जिस वस्तु को महत्त्व देती है। लोगों का झुकाव उसी ओर हो जाता है। आज के युग में धन की महत्ता बहुत बढ़ गई तो धनवान लोग उचित या अनुचित कैसे भी धन बटोरना चाहते हैं। बेईमानी, धोखेबाजी, भ्रष्टाचार, रिश्वत का कारण है। जब हमारे देश में तपस्वियों का मान था तो घर-घर में तपस्वी उत्पन्न होते थे। जब शारीरिक शक्ति की मान्यता थी तो अर्जुन, भीम जैसे महारथी निकलते थे। राष्ट्र की चारित्रिक उन्नति के लिये विद्या के प्रसार की आवश्यकता है यह तभी सम्भव होगा जब विद्याध्ययन की ओर झुकेंगे। जनता फिल्म अभिनेताओं और अभिनेत्रियों का सम्मान करती है तो नवयुवक और नवयुवतियाँ घर भागकर भी वह बनने की चेष्टा करते हैं। आज विद्यार्थियों में उद्दण्डता अनुशासनहीनता व दूषित वातावरण के कारण अन्य भी हो सकते हैं परन्तु उनमें से एक अध्यापकों का वह महान्, आदर्श उपस्थित न करना भी है। सार यह है कि विद्यावानों का जितना हम सम्मान करेंगे, उतने ही विद्वान् बढ़ेंगे और उन्नति होगी। इसी को एक प्रकार का यज्ञ के अर्थों में एक देव पूजा भी है। देवतुल्य महापुरुषों की पूजा सम्मान करना। इस यज्ञ को बन्द नहीं होने देना चाहिये, अन्यथा यह परम्परा ही लुप्त हो जायेगी। आज हम बड़ों का सम्मान करते हैं तो कल दूसरे हमारा सम्मान करेंगे। यह उत्तम शिष्टाचार की परम्परा चलती जायेगी। यह केवल गुरुओं तक ही सीमित नहीं है वरन् घर के बड़ों पर भी लागू नहीं होती है। माता, पिता, सास आदि की पूजा का सम्मान, उनके प्रति चरण स्पर्श की प्रतिज्ञा लेना भी एक श्रेष्ठ परम्परा है, जिसे चालू करना चाहिये। इससे हमारे गृहस्थ में सुख-शान्ति का साम्राज्य स्थापित होगा। बच्चे अपने माता, पिता व गुरुओं की आज्ञाओं का पालन करेंगे। उद्दण्डता और अनुशासनहीनता कम होगी।

गुरु पूर्णिमा का पुनीत पर्व

माता की सेवा करना सन्तान का धर्म है। उसकी महिमा शास्त्रों में विस्तारपूर्वक कही गई है। पर गुरु की महत्ता उनसे भी बड़ी है क्योंकि माता-पिता केवल शरीर को जन्म देते, शरीर का रक्षण और पोषण करते हैं पर गुरु द्वारा आत्मा का विकास, कल्याण एवं बन्धन मुक्ति का जो महान् कार्य सम्पन्न किया जाता है उसकी महत्ता शरीर पोषण की अपेक्षा असंख्यों गुनी अधिक है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर-मनुष्य जीवन में आध्यात्मिकता को समझने वाले ऋषियों ने गुरुपूर्णिमा का पुनीत पर्व विनिर्मित किया।

आषाढ़ सुदी १५ को गुरु पूर्णिमा का पर्व होता है, हिन्दू धर्म में प्रचलित अन्य सभी त्यौहारों की अपेक्षा इसका महत्त्व अधिक माना गया है क्योंकि सन्मार्ग के प्रेरक सभी व्रतों, पर्वों त्यौहारों में लाभ उठाया जा सकना तभी सम्भव है, जब सद्गुरुओं द्वारा उनकी उपयोगिता एवं आवश्यकता सर्वसाधारण को अनुभव कराई जा सके। यदि मार्ग दर्शक एवं प्रेरक सद्गुरुओं का अभाव हो जाये, उनकी बात पर ध्यान न दें तो पर्व धर्म शास्त्रों से लाभ उठा सकना जनता के लिये सम्भव न होगा। धर्म ग्रन्थ पर घरों में रखे तो रहेंगे उनके पाठ-पूजन भी होते रहेंगे पर उनमें वर्णित तथ्यों में अभिरुचि तो गुरु प्रेरणा बिना कैसे उत्पन्न हो सकेगी ? इसी प्रकार सारे त्यौहारों की चिन्ह पूजा होती रहेगी, लोग उन अवसरों पर मिठाई मलाई खाते रहेंगे, हँसी खुशी मनाते रहेंगे पर उनके द्वारा जो कल्याणात्मक प्रवृत्तियाँ विकसित होनी चाहिये ये गुरु के बिना सम्भव न हो सकेंगी।

जैसे नेत्रों के बिना संसार का सारा वैभव अदृश्य रहता है। जैसे प्रकाश के बिना सर्वत्र अन्धकार ही छाया रहता है, उसी प्रकार गुरु के बिना भी समस्त धर्म शास्त्रों, कर्मकाण्डों, व्रत पर्वों के होते हुये भी अन्धकार ही छाया रहेगी। इसीलिये गुरु की महिमा को हिन्दू धर्म में अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। गुरु विहीन को "निगुरा" कहकर एक प्रकार की गाली दी गई है। गुरु विहीन व्यक्ति के सत्कर्म भी निष्फल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाने की घोषणा की गई है। गुरु की आवश्यकता एवं उपयोगिता को लोग भूल न जायें वरन् भली प्रकार ध्यान में रखें, इसी दृष्टिकोण से गुरुपूर्णिमा का त्यौहार प्रचलित है और उसे उत्साहपूर्वक धार्मिक क्षेत्रों में मनाया भी जाता है। शायद ही कोई विचारशील धार्मिक या शिक्षण संस्था ऐसी हो, जो गुरु पूर्णिमा पर अपने उत्सव आयोजन करती हो। प्रत्येक शिष्य अपने आध्यात्मिक गुरुओं का और प्रत्येक छात्र अपने शिक्षा अध्यापकों का इस दिन अभिवादन करता है और उनके चरणों पर अपनी श्रद्धांजलि के सुमन अर्पित करता है।

स्कूली छात्रों में दिन-दिन बढ़ रही उद्दडता, अनुशासनहीनता और धर्म पथ के पथिकों में बढ़ रही अवज्ञा और अनास्था को देखकर देश के सभी विचारशील लोग चिन्तित हैं। भय है कि यह दुष्प्रवाह यदि रोका न गया तो हमारा भावना स्तर बहुत ही निम्न श्रेणी का हो जायेगा और जिस प्रकार गंगोत्री के धारा प्रवाह के शुष्क हो जाने पर सारी गंगा के ही सूख जाने का भय हो सकता है, उसी प्रकार गुरु भाव शिथिल होने पर सारी धर्मप्रवृत्तियों, ज्ञान राशियों के मुरझा जाने के धूमिल होने का भय उपस्थित हो जायेगा। विज्ञ विचारक इस समस्या के कारण चिन्तित हैं और इस बात के लिये प्रयत्नशील हैं कि गुरु भक्ति की परम्परा किसी न किसी रूप से जीवित अवश्य रखी जाये।

आज की जितनी तो नहीं पर प्राचीन काल में भी इस बात की आवश्यकता अनुभव की गई थी कि मानव अन्तःकरण की सत्प्रवृत्तियों को जीवित रखने एवं विकसित करने के लिये गुरु तत्व के प्रति जन मानस में आस्था कायम रखी जाये। इसी कारण गुरु पूर्णिमा का पर्व बना था और प्रत्येक शिक्षा संस्था तथा धर्म संस्था अपना यह आवश्यक कर्त्तव्य मानती थी कि इस पर्व को पूरे उत्साह और समारोहपूर्वक मनाया जाये। इतिहास साक्षी है कि लाखों वर्षों तक इस देश में गुरु पूर्णिमा उसी उल्लासपूर्ण वातावरण से मनाई जाती रही जिस प्रकार आज होली दिवाली मनाई जाती है। इस पर्व पर प्रत्येक छात्र को अपने अध्यापकों के प्रति और प्रत्येक शिष्य का अपने गुरु के प्रति भक्ति भाव समुद्र के ज्वार की तरह उमड़ता था और गुरुजनों का वात्सल्य भी अमृतमयी गंगा की तरह लहराता था। यह दिन कितने मंगलमय थे, यह भावोल्लास हमारे सांस्कृतिक भविष्य को उज्ज्वल बनाने में कितना सहायक होता था ? इसके सही मूल्यांकन कर सकना भी हमारे लिये कठिन है।

राष्ट्र निर्माण के लिये आज जिस प्रकार योजना आयोग के अन्तर्गत तेजी के साथ निर्माण कार्य हो रहा है, उसी प्रकार युग निर्माण के लिये भी हमें अपनी अस्त-व्यस्त सांस्कृतिक परम्पराओं की पुनः सुव्यवस्था एवं जीवित जागृत करना होगा। इस दिशा में गुरु तत्व की महिमा को अक्षुण्य रखना एवं उसकी महत्ता से जन साधारण को परिचित कराना भी एक आवश्यक कदम होगा। इससे जहाँ जन मानस में अपने मार्गदर्शकों के प्रति पनपने वाली अनास्था एवं कृतघ्नता घटेगी, वहाँ एक लाभ भी होगा कि जनता की तेज़ आँखें उन ढोंगी गुरुओं का भंडाफोड़ भी कर देंगी, जो विज्ञ विचारकों की आलोचना से बचकर किसी कोने में पड़े हुये रोग कीटाणुओं की तरह पनपने और फलते-फूलते रहते हैं। साथ ही सुयोग्य सद्गुरुओं का उत्साह बढ़ेगा और वे अपने चरित्र एवं कर्त्तव्य से प्रति और भी अधिक जागरूक रहकर आदर्श उपस्थित करने का प्रयत्न करेंगे।

गुरु पूर्णिमा का पर्व उसी उत्साहपूर्वक मनाये जाने का धार्मिक संस्थाओं को प्रयत्न करना चाहिये जैसे कि आजकल होली, दिवाली मनाये जाते हैं यों अनेकों धार्मिक पर्व शिक्षा संस्थाएँ आज भी इस पर्व को किसी रूप में मनाते हैं पर अब उसमें नवीन चेतना, नया उत्साह एवं व्यवस्थित कार्यक्रम सम्मिलित करने की आवश्यकता है। इस दिशा में अखण्ड ज्योति परिवार को पहले करनी होगी। अपने परिवार ने सदा से समाज का नेतृत्व किया है। धर्म जागृति के लिये उसका नाम इतिहास में अमर रहे, इतना कार्य किया जा चुका है पर इतने में ही सन्तोष नहीं माना जाना चाहिये। हमें देश में धर्म जागृति के लिये एक के बाद दूसरा कदम उठाते ही चलना है ?

अखण्ड ज्योति परिवार के प्रत्येक सदस्य को गुरु पूर्णिमा के अवसर पर अपने घर पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह पुनीत पर्व मनाना चाहिये। सामूहिक गायत्री जप, हवन, गुरु पूजन, गुरु तत्व की महत्ता पर प्रवचन श्रद्धांजलि और शान्ति पाठ यह प्रमुख कार्यक्रम इस पर्व में हो। जहाँ यह आयोजन सामूहिक हो सकता हो, पास-पड़ौस के या अन्य धार्मिक अभिरुचि के लोगों को बुलाया जा सके तो उत्सव का रूप सामूहिक हो सकता है, अन्यथा उसे व्यक्तिगत एवं निजी पारिवारिक आयोजन का रूप किया जा सकता है। गुरु पूर्णिमा को प्रातः काल नित्यकर्म स्नानादि से निवृत्त होकर घर के नर-नारी बाल वृद्ध सब एकत्रित हों, बीच में हवन की वेदी या कुण्ड बनाया जाय। एक चौकी पर गायत्री माता की तथा गुरु देव की स्थापना की जाय। व्यासजी धर्म प्रवचन कर्त्ताओं में सबसे अग्रणी माने जाते हैं, सच्चे मार्ग दर्शक ही गुरु कहलाने के अधिकारी हैं। इसलिये गुरु पूर्णिमा को व्यास पूणिमा भी कहते हैं। यदि भगवान वेद व्यास जी का चित्र बना सकें तो सबसे उत्तम है अन्यथा अपने-अपने गुरुओं का अथवा गुरुजनों का चित्र चौकी पर स्थापित किया जा सकता है। सब लोग पहले पवित्रीकरण, आचमन, शिखा-बन्धन प्राणायाम, न्यास करें। इसके बाद सब लोग एक-एक माला का जप करें। इसके बाद हवन किया जाय, यदि हवन विधि पूरी आती हो तो ठीक—अन्यथा हवन सामिग्री, समिधा एवं वेदी पर गायत्री मन्त्र पढ़कर जल के छींटे मारकर उस हवन वस्तुओं को पवित्र कर लिया जाये। इसके बाद गायत्री मन्त्र बोलते हुये अग्नि स्थापित की जाये, पहले घी की सात आहुतियाँ देकर फिर २४ या १०८ आहुतियों का गायत्री मन्त्र के अन्त में स्वाहा कार लगाते हुये हवन कर लिया जाये, अन्त में मिठाई की एक आहुति, सुपाड़ी के साथ पूर्णाहुति और चम्मच भरकर घी डालते हुये वसोधारा कर ली जाये। आरती, भस्म धारण बचे घृत का मुख पर लगाना, साष्टांग प्रणाम, परिक्रमा करके हवन पूरा कर लेना चाहिये। अन्य मन्त्र याद न हों तो यह सारी क्रियायें गायत्री मन्त्र से हो सकती हैं। जहाँ सुगन्धित सामग्री न हो वहाँ हलुआ, खीर, मिष्ठान्न, तिल जौ, चावल शक्कर घी आदि जो वस्तुयें आसानी से उपलब्ध हो सकें, उनसे हवन कर लेना चाहिये।

जप और हवन के बाद रोली, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, चन्दन आदि से गायत्री माता तथा गुरुदेव के चित्र का पूजन किया जाय। फिर उपस्थित लोगों में से कोई विज्ञ व्यक्ति गुरु तत्व की महत्ता पर प्रवचन करें, जिन गुरुजनों से अब प्रेरणा मिली है, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करें और जिनने अभी तक कोई गुरु वरण नहीं किया है वे किसी उपयुक्त स्थिति के व्यक्ति को मानसिक संकल्प द्वारा गुरु वरण कर सकते हैं। देव शयन के कारण प्राचीन परिपाटी के कारण इन दिनों विधिवत् गुरु दीक्षा ली या दी नहीं जा सकती। पर मानसिक संकल्प कर लेना और समय आने पर उसका विधान पूरा कर लेने में कोई हर्ज नहीं है। 'निगुरा' होना धर्मच्युत होने का चिन्ह है। गुरु पूर्णिमा के दिन अपने परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को जिसने अब तक गुरु दीक्षा न ली हो मानसिक संकल्प द्वारा गुरु वरण करके इस गायत्री से मुक्त हो जाना चाहिये। गुरु मन्त्र के रूप में गायत्री को ग्रहण करके उसकी एक माला का जप करने का व्रत परिवार के प्रत्येक सदस्य को लेना चाहिये।

हर वर्ष गुरु के चरणों में गुरु पूर्णिमा के दिन कुछ श्रद्धांजलि भेंट करने की परम्परा चिरकाल से चली आती है। आमतौर से शिष्यगण इस दिन अपने गुरुओं को यज्ञोपवीत, फल, अन्न, वस्त्र तथा पैसा गुरुदक्षिणा के रूप में देते हैं। उनका प्रायः अभिवादन करते हैं, रोली, पुष्प, कलावा आदि से सम्मान करते हैं। पर इतना पर्याप्त नहीं है। आत्मकल्याण तभी हो सकता है जब गुरुजनों की सत् शिक्षाओं के हृदयंगम किया जाय उनके मार्ग दर्शन के अनुसार अपना जीवन ढाला जाय, जो बुराईयाँ अपने अन्दर आ गई हों उन्हें ढूँढ-ढूँढ कर निकाला जाये और श्रेष्ठ सद्गुणों की नई स्थापना अपने अन्तःकरण में की जाये।

स्वाध्याय एवं सत्संग से मनुष्य ऋषिगण से गुरु ऋण से मुक्त हो सकता है। सत् साहित्य के कुछ पृष्ठ नित्य पढ़ने का संकल्प लेकर गुरु चरणों में सभी श्रद्धांजलि अर्पित की जा सकती है। अब समय आ गया है कि पुष्प, फल भोजन दक्षिणा आदि से ही गुरु पूजन पर्याप्त न माना जाये वरन् जन-जन को अपना जीवन निर्माण करने के लिये गुरु के उपयोगी वचनों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हृदयंगम करने और उन्हें कार्य रूप में वर्णित करने का प्रयत्न किया जाय। हर वर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर पर यदि एक बुराई छोड़ने और अच्छाई ग्रहण करने की परम्परा पुनः आरम्भ की जाये तो जीवन के अन्त तक इस क्रम पर चलने वाला मनुष्य पूर्णता और पवित्रता का अधिकारी बनकर मानव जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार उस पूर्णिमा का पुनीत पर्व हमारे व्यक्तिगत कल्याण और सामूहिक रूप से युग निर्माण में भारी सहायक सिद्ध हो सकता है।

गुरु पूर्णिमा—उद्देश्य और शिक्षा

गुरुजनाः स्वशिष्येभ्यः शिक्षयन्त्यनुशासनम्।
नियन्त्रणे व्यवस्थायां स्यातुं चोपदिशन्ति वै।। १।।

गुरुजन अपने शिष्यों को अनुशासन की शिक्षा देते हैं तथा नियन्त्रण और व्यवस्था में रहने का उपदेश देते हैं।

सन्देशोऽयं गुरुपूर्णिमायाश्चापि यद्वर्त्तते।
व्यतीयुर्जीवनं सर्वे सुदृढ़ं ह्यनुशासितम्।। २।।

गुरुपूर्णिमा पर्व का यह सन्देश है कि सब लोग अनुशासित जीवन बितायें।

स्वेच्छाधारोच्छृङ्खलताव्यवस्थायाश्च दुर्गुणैः।
समाजस्यैव भवति नाशो व्यक्तेर्न केवलः।। ३।।

स्वेच्छाचार, उच्छृंखलता और अव्यवस्था के दुर्गुणों से केवल व्यक्ति का ही नहीं पूरे समाज का नाश होता है।

पालयन्नियमान्मर्यादायां तिष्ठेच्च सर्वदा।
तदेवात्र कुर्यात्कार्यं सर्वेषां येन स्याद्धितम्।। ४।।

नियमों का पालन करते हुये सदा मर्यादा में रहना चाहिये। इस संसार में वह कार्य करना चाहिये, जिससे सबके हित का सम्पादन हो।

समाजस्याहितं कृत्वा सदा वैयक्तिकं हितम्।
न कुर्याज्जातुचिद् व्यक्तेः समाजो हि महत्तरः।। ५।।

समाज का अहित (हानि या बुराई) करके सदा व्यक्तिगत हित (स्वार्थ या भलाई) कभी नहीं करना चाहिये क्योंकि व्यक्ति से समाज अधिक बड़ा होता है।

विच्छेदो धर्मबन्धानां जायते यैस्तु कर्मभिः।
वर्जयेत्तानि कार्याणि नितरां बलपूर्वकम्।। ६।।

जिन कर्मों से धर्म के बन्धनों का विच्छेद होता हो, उन कार्यों को भी अच्छी तरह बलपूर्वक रोक देना चाहिये अर्थात् कभी नहीं करना चाहिये।

रक्ष्यो हि प्रेमसम्बन्धः पारस्परिकः सर्वदा।
परिहरेद्धि वैमत्यं न च स्वार्थपरो भवेत्।। ७।।

सर्वदा परस्पर प्रेम सम्वलित सम्बन्ध रखना चाहिये। फूट को त्याग देना चाहिये और स्वार्थ परायण नहीं बनना चाहिये।

विधातुं व्यवस्थां नूनं परेषामुपरि क्षमाः।
भवन्ति शासनस्यैव चानुशासनपालकाः।। ८।।

स्वयं अनुशासन का पालन करने वाले पुरुष ही दूसरों के ऊपर शासन की व्यवस्था रखने के लिये कार्य में समर्थ होते हैं।

वर्द्धते फलति नूनं समाजः स हि एव यः।
सगर्वगौरवश्चास्ति पालयननुशासनम्।। ९।।

वही समाज निश्चय बुद्धिशाली होता है और फलता है, जो अनुशासन का पालन करते हुये गर्व और गौरववाला हो।

गुरुपौर्णमास्याः पर्वः ह्यस्त्यनुशासनस्य वै।
मान्यस्तैरेव तस्माद्ये गृह्णीयुः प्रेरणां खलु।। १०।।

गुरुपूर्णिमा अनुशासन का पर्व है जो इस पुनीत पर्व से अनुशासन की प्रेरणा ग्रहण करें, उन्हीं को यह मनाना चाहिये।

माहात्म्य बोध

गुरु पूर्णिमा को अनुशासन पर्व भी कहा जाता है। सामान्यरूप से भी सिखाने वाले गुरुजनों का अनुशासन स्वीकार किये बिना कुशलता में निखार नहीं आ सकता। जहाँ यह आवश्यक है कि गुरुजनों को अपना क्रम ऐसा बनाकर रखना चाहिये कि शिष्य वर्ग में उनके प्रति सहज श्रद्धा-सम्मान का भाव जागे, वहाँ यह भी आवश्यक है कि सीखने वाले शिष्य भाव रखें, गुरुजनों का सम्मान और अनुशासन बनाये रखें। इस दृष्टि से यह पर्व गुरु-शिष्य दोनों वर्गों के लिये अनुशासन का सन्देश लेकर आता है, इसलिये अनुशासन पर्व कहा जाता है। अनुशासन मानने वाला ही शासन कर सकता है—यह तथ्य समझे बिना राष्ट्रीय या आत्मिक प्रगति सम्भव नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुरु पूर्णिमा पर व्यास पूजन का भी क्रम है, जो स्वयं चरित्रवान है और वाणी एवं लेखनी से प्रेरणा संचार करने की कला भी जानते हैं, ऐसे आदर्शनिष्ठ विद्वान को व्यास की संज्ञा दी जाती है। गुरु व्यास भी होता है। इसलिये गुरु-पूजा को व्यास पूजा भी कहते हैं। वैसे महर्षि व्यास अपने आप में महान् परम्परा के प्रतीक हैं। आदर्श के लिये समर्पित प्रतिभा के वे उत्कृष्ट उदाहरण हैं। लेखक-वक्ता यदि लेखनी, तूलिका, वाणी द्वारा भाव सृजन की क्षमता रखने वाले कलाकार यदि व्यासजी का अनुसरण करने लगें तो लोक कल्याण का आधा रास्ता तो पार हुआ माना ही जा सकता है—यह भी एक अनुशासन है।

आध्यात्मिक स्तर पर गुरु-शिष्य के सम्बन्धों में तो अनुशासन और भी गहरा एवं अनिवार्य हो जाता है। गुरु शिष्य को अपने पुण्य, प्राण और तप का एक अंश देता है। वह अंश पाने की पात्रता धारण की सामर्थ्य और विकास एवं उपयोग की कला एक सुनिश्चित अनुशासन के अन्तर्गत ही सम्भव है। वह तभी निभता है, जब शिष्य में गुरु के प्रति गहन श्रद्धाविश्वास तथा गुरु में शिष्य वर्ग की प्रगति के लिये स्नेह भरी लगन जैसे दिव्य भाव हों। गुरु पूर्णिमा पर्व गुरु-शिष्य के बीच ऐसे ही पवित्र, अगम सूत्रों की स्थापना और उन्हें दृढ़ करने के लिये आता है। गुरु पूर्णिमा पर्व मनाने वालों को नीचे लिखे तथ्य ध्यान में रखना चाहिये।

'गुरु व्यक्ति रूप में पहचाना जा सकता है, पर व्यक्ति सीमा में सीमित नहीं होता। जो शरीर तक सीमित है, चेतना रूप में स्वयं को विकसित नहीं कर सका, वह अपना अंश शिष्य को दे नहीं सकता। जो इस विद्या का मर्मी नहीं, वह गुरु नहीं और जो शिष्य गुरु को शरीर से परे शक्ति सिद्धान्त रूप में पहचान-स्वीकार नहीं कर सका वह शिष्य नहीं।

"गुरु शिष्य पर अनुशासन दृष्टि रखता है और शिष्य गुरु से निरन्तर निर्देश पाता, उन्हें मानता-अपनाता रहता है। यह चिन्तन स्तर पर वाणी द्वारा लिखने-पढ़ने के स्तरों पर सम्भव है। जिनके बीच इस प्रकार के सूत्र स्थापित नहीं उनका सम्बन्ध चिन्ह-पूजा मात्र कहा जाने योग्य है और गुरु-शिष्य का अन्ध-बधिर का जोड़ा बन कर रह जाता है।

"भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य का सम्बन्ध दाता-भिखारी जैसा नहीं सहयोगी-साझेदारी स्तर का बनाया जाता है। गुरु-शिष्य को अपनी दिव्य सम्पदा की कमाई का एक अंश देता रहता है, जो अनुशासनपूर्वक प्रयुक्त किया जाकर शिष्य के व्यक्तित्व को ऊँचा उठाता है। उठे हुये व्यक्तित्व के द्वारा शिष्य भी लौकिक-पारलौकिक कमाई करता है।

"इसी प्रकार शिष्य अपनी कमाई, श्रद्धा पुरुषार्थ, प्रभाव एवं सम्पदा का एक अंश गुरु को समर्पित करता रहता है। इनके उपयुक्त उपयोग से गुरु का लोकमंगल अभियान विकसित होता है और उसका लाभ अधिक व्यापक क्षेत्र तक पहुँचने लगता है, इससे गुरु की पुण्य सम्पदा बढ़ती है और उसका अधिकांश शिष्यों के भाग में आने लगता है। जहाँ इस प्रकार की दिव्य साझेदारी नहीं, वहाँ गुरु-शिष्य सम्बन्ध अपनी संस्कृति में वर्णित असामान्य उपलब्धियाँ पैदा नहीं कर सकते।

"जहाँ गुरु अपने स्नेह-तप से शिष्य का निर्माण-विकास पर सकता है, वहाँ शिष्य को भी अपनी श्रद्धा-तपश्चर्या से गुरु का निर्माण एवं विकास करना होता है। इतिहास साक्षी है कि जिन शिष्यों ने अपनी श्रद्धा-संयोग से गुरु का निर्माण किया उनको ही चमत्कारी लाभ मिले। द्रोणाचार्य कौरवों के लिये सामान्य वेतनभोगी शिक्षक से अधिक कुछ न बन सके। पाण्डवों के लिये अजेय विद्या के स्रोत बने। एकलव्य के लिये एक अद्‌भुत चमत्कार बन गये, अन्तर था श्रद्धा-संयोग से बने गुरु तत्व का। रामकृष्ण परमहंस जन सामान्य को बाबाजी से अधिक कुछ लाभ न दे सके, किन्तु जिनने अपनी श्रद्धा से उन्हें गुरु रूप में विकसित कर लिया, उनके लिये अवतार तुल्य सिद्ध हुये, अस्तु शिष्यों को अपनी श्रद्धा, तपश्चर्या, साधना द्वारा सशक्त गुरु निर्माण का प्रयास जारी रखना चाहिये, गुरु-पर्व यही अवसर लेकर आता है।

।। पर्व पूजन क्रम ।।

—पर्व पूजन मंच पर ब्रह्मा-विष्णु-महेश के चित्र अथवा उनके प्रतीक रखने चाहिये। यदि एक ही विचारधारा के व्यक्ति एकत्रित हैं तो शरीर धारी गुरु का चित्र भी रख सकते हैं। यदि विभिन्न धाराओं से सम्बन्ध व्यक्ति एकत्रित होने वाले हैं तो गुरु का प्रतीक नारियल रख लेना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

—प्रारम्भिक उपचार पर्व विधान के अनुसार करा लेना चाहिये।

—विशेष पूजन के लिये क्रमशः गुरु आवाहन एवं ब्रह्मा-विष्णु महेश का आवाहन करना चाहिये। गुरु तीनों धाराओं का संगम होता है। प्रत्येक आवाहन के पूर्व उनकी गरिमा का उल्लेख गिने-चुने शब्दों में किया जाय, फिर भाव संकेत देते हुये मन्त्रोच्चारण पूर्वक आवाहन किया जाये।

गुरु आवाहन

गुरुसत्ता, जो ईश्वरीय सत्ता का ही एक अंश है, हमारी प्रार्थना पर अपने आपको प्रकट कर दे ताकि हम उसको समझ सकें, उपयोग कर सकें। हम उसके अनुशासन पालने का विश्वास दिलाते हुये भाव भरा आह्वान करते हैं। हाथ में पुष्प लेकर गुरु का नीचे लिखे मन्त्र से आवाहन करें।

ॐ आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं
ज्ञानस्वरूपं निजबोध रूपम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं
श्रीसद्गुरुं नित्यमहं नमामि।।
गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः।।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीत निरञ्जनम्।
विन्दुनादकलातीतं तस्मै श्री गुरवे नमः।।
ॐ श्री गुरवे नमः।। —गुरु गीता

ब्रह्मा आवाहन

शिष्य के नाते अपने अन्तरंग एवं बहिरंग क्षेत्र में जो संरचनायें करनी हैं, उनके निर्माण के लिये आदि सृष्टा ब्रह्मा का आवाहन करते हैं, उन्हीं की कृपा से हम नई कल्याणकारी सृष्टि कर सकेंगे। मनुष्य में देवत्व का उदय सम्भव होगा।

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे, हंसारूढाय धीमहि।
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।।
ॐ श्री ब्रह्मणे नमः।। —ब्रह्मा गायत्री

विष्णु आवाहन

गुरु द्वारा प्रदत्त तथा पुरुषार्थ द्वारा जागृत सत्तत्वों, सद्आकांक्षाओं- परम्पराओं के पोषण विकास के लिये, पालनकर्त्ता विष्णु का आवाहन करते हैं। जिनकी कृपा से ही पोषित सद्तत्वों से धरती पर स्वर्ग का अवतरण साकार होगा।

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।।
ॐ श्री विष्णवे नमः।। —विष्णु गायत्री

महेश आवाहन

अनुपयुक्त के हर्ता रुद्र, कल्याणकारी परिवर्तन चक्र के अधिष्ठाता शिव का आवाहन करते हैं। उन्हीं की कृपा के संयोग से जन पुरुषार्थ पतनोन्मुख धारा को पलटकर उत्कर्ष की दिशा दे सकेगा। अवांछनीयता की गलाई और सदाशयता की ढलाई का क्रम चलेगा।

ॐ पञ्चवक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।
ॐ श्री शिवाय नमः।। —रुद्र गायत्री

व्यास आवाहन

महर्षि व्यास, विद्वता, प्रतिभा को आदर्शोन्मुख बनाने की प्रबल चेतना के रूप में अवतरित हों, उनके प्रभाव से ही प्रतिभा मनीषा का भटकाव रुकेगा, कल्याण मार्ग खुलेंगे।

ॐ व्यासं व्यासकरं वन्दे मुनिं नारायणस्वयम्।
यतः प्राप्त कृपा लोका लोकामुक्तेर्कलिग्रहात्।।
नमः सर्वविदे तस्मै व्यासाय कविवेधसे।
चक्रे पुण्यं सरस्वत्या या वर्षमिव भारतम्।।
ॐ श्री व्यासाय नमः।

इस प्रकार आवाहन के बाद पुरुष सूक्त में संयुक्त गुरु विग्रह का पूजन किया जाये।

पूजन के बाद पर्व-प्रसाद-संकल्प धारण करायें।

. . . . . नामाहं अद्यगुरुपूर्णिमापर्वणि गुरुरूपेण मार्गदर्शनसहयोगदातृ ईश्वरीयसत्तायाश्चदिव्यानुशासनं अद्यप्रभृति . . . . . पर्यन्तं परिपालनार्थं श्रद्धापूर्वकं संकल्पं अहं करिष्ये।

संकल्प के बाद गुरु के महान् उद्देश्यों के लिये अंश, समय, प्रभाव, ज्ञान, साधन आदि का उल्लेख कराया जा सकता है।

यज्ञ-दीपयज्ञ आदि समापन उपचारों के बाद प्रसाद वितरण सहित पर्वायोजन समाप्त किया जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुरु पूर्णिमा और श्रावणी पर्व परस्पर पूरक बनें

गुरु पूर्णिमा का उमङ्ग उत्साह अभी उमड़ रहा होता है कि श्रावणी पर्व भी सामने आ पहुँचा होता है। गुरुपूर्णिमा की अनुभूति और श्रावणी पर्व का स्मरण मिलकर एक नयी स्फुरणा पैदा करता है।

गुरु पूर्णिमा पर शिष्यत्व के कर्त्तव्य और गौरव का बोध किया गया। अपने प्रयासों से दुनिया आगे बढ़ने के लिये जी जान से जुटी रहती है। कई उसमें बहुत कुछ सफल भी होते हैं। किन्तु जानकार के अनुभव का लाभ और उससे भी बढ़कर उसका समर्थ सहयोग प्राप्त होने लगे तब तो सोने में सुहागे की उक्ति चरितार्थ होती है। जिन्हें ऐसा सुअवसर प्राप्त होता है वे सचमुच ही सौभाग्यशाली कहे जाने योग्य हैं। गुरु पूर्णिमा पर हर परिजन ने अपने इस सौभाग्य का प्रत्यक्ष अनुभव किया। जिन्हें ऐसा लाभ प्राप्त करने का अवसर मिले तथा वह उसके लिये सन्नद्ध हो जायें उन्हें ही शिष्य कहा जाता है। गुरु के रूप में अनुभवी मार्गदर्शक तथा समर्थ सहायक की उपलब्धि का लाभ उठाने वाला शिष्य कहला सकता है।

किन्तु इस सौभाग्य के साथ कुछ कर्त्तव्य भी जुड़े हैं। उन कर्त्तव्यों का पालन भी शिष्य को करना पड़ता है। समर्थ गुरु कुछ श्रेष्ठ और महत्त्व के कार्य स्वयं भी करते हैं तथा शिष्यों से भी कराते हैं। वह कार्य सामान्य नहीं होते और उसके लिये अपने अन्दर विशेष क्षमतायें विकसित करनी पड़ती हैं। शिष्य कहला कर भी कमजोर मनोभूमि का व्यक्ति वह सौभाग्य पा नहीं सकता यह बात भी बहुत स्पष्टता से परिजनों द्वारा समझी और अनुभव की जा चुकी है। शिष्यत्व का गौरव मिलने के साथ-साथ बहुत-सी कसौटियाँ भी इस सिलसिले में सामने आती ही हैं, उन पर खरा उतरना पड़ता है।

वैसे यह कर्त्तव्य और कसौटियाँ भी सौभाग्य के ही अंग होते हैं। इन पर चलकर ही व्यक्ति का वह व्यक्तित्व उभरता है, जिसके आधार पर स्थायी गौरव और सन्तोष का अनुभव हो सकता है। बिना घिसाई के चमक नहीं आती। घिसाई के कष्ट में ही चमक का सौभाग्य छिपा रहता है। जो भी हो कर्त्तव्यों की पूर्ति उपयुक्त शोधन और विकास शिष्य दीक्षा के लिये आवश्यक है और परिजन उसके लिये कृत संकल्प हैं भी।

इस शुभ संकल्प की मनःस्थिति में ही श्रावणी पर्व अपना सन्देश देने अथवा सच्चे साधकों के संकल्प की पुष्टि के लिये आता है। अपने कर्त्तव्यों का स्मरण किया जाये, उसका पालन करने की व्यवस्था बनायी जाये यह आवश्यक है, उचित है। किन्तु श्रावणी पर्व इसके साथ-साथ कुछ और भी तथ्य साधकों के कान में कहता है, कुछ और भी स्मरण दिलाता है। श्रेष्ठ कार्य करना चाहिये यह सत्य है, उसके लिये व्यवस्था जुटाने तथा प्रयास करने की बात भी बहुत अच्छी है। किन्तु स्मरण यह भी रखना है कि यह कोई ऐसा काम नहीं, जिसको करके हम अपने आपको न जाने क्या-क्या समझने लगें, अपने अहंकार में डूब जायें।

श्रावणी पर्व द्विजत्व के संकल्प के नवीनीकरण का पर्व है। वह मानो स्मरण दिलाता है कि अपने श्रेष्ठ संकल्पों को लेकर आगे बढ़ने की बात सोची यह तो अच्छा है किन्तु यह बात पहले ही सोची जानी थी। द्विजत्व का संकल्प जब लिया था, शिष्यत्व जब ग्रहण किया था, तभी से यह प्रक्रिया साधकों के कर्त्तव्य का अंग बन जानी चाहिये थी। आज उस पर सबल चरणों से आगे बढ़ने की जो बात सोची जा रही है, वह बहुत पहले सोच ली जानी चाहिये थी। बल्कि यह कहा जाये तो और भी सही है कि यह महत्त्वपूर्ण बात-चीत में भुलाई जा चुकी थी। अपने भूले कर्त्तव्यों को याद कर लेना, उस पर चलने का साहस जुटा लेना अच्छी बात तो है किन्तु कोई बड़े गर्व की बात नहीं है। इसका अहंकार नहीं किया जाना चाहिये।

श्रावणी पर्व का आना बड़ा सामयिक होता है। यह हमें स्मरण दिलाता है कि यह सब जो हम कर रहे हैं, करने जा रहे हैं, वह हमारे सहज कर्त्तव्यों का अंग है। यह हमारे ऊपर किसी ने थोपा नहीं हमने स्वयं इसे स्वीकार किया है। इसलिये इसका न तो कोई अहंकार किया जा सकता है और न कोई शिकायत इस सम्बन्ध में किसी अन्य से की जा सकती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वास्तव में श्रावणी पर्व और गुरु पूर्णिमा परस्पर पूरक हैं। जब मनुष्य दीक्षा लेता है, अपने से श्रेष्ठ सत्ता से अपने को जोड़ता है, उसके अनुरूप जीवन क्रम चलाने का संकल्प लेता है, तभी शिष्य बनता है—और उसी संकल्प को द्विजत्व का संकल्प भी कहते हैं। किसी व्यक्ति को लक्ष्य करके हो या सनातन ऋषि परम्परा अथवा आदि शक्ति को लक्ष्य करके हो, शिष्यत्व और द्विजत्व धारण करना एक ही घटना के दो नाम हैं।

यदि व्यक्ति केवल गुरु शिष्य की बात सोचता रहे शरीरों से ही उसका सम्बन्ध जोड़ता रहे तो वह संकुचित ही रह जायेगा, समुचित विकास उसका हो नहीं सकेगा। गुरु वस्तुतः व्यक्ति नहीं एक सिद्धान्त के रूप में विकसित हो चुकता है, अन्यथा वह गुरु पद पाने का अधिकारी नहीं होता। फिर भी शिष्य लोग अपनी सीमित बुद्धि तथा चालू अभ्यासवश शरीरों से ही उसका सम्बन्ध जोड़े रहते हैं।

श्रावणी पर्व यही उद्‌बोधन देने आता है। कहता है गुरु शिष्य परम्परा यह कोई व्यक्तियों की परम्परा नहीं है यह तो ऋषि प्रणीत एक शाश्वत सिद्धान्त है। जो चलता आया है और आगे भी चलता चला जायेगा। गुरु परम्परा ऋषि परम्परा है, इसे उसी विशाल दृष्टिकोण से देखा समझा जाना चाहिये, उसी विशाल हृदयता से अनुभव किया जाना चाहिये। गुरु पूर्णिमा पर हमने अपने चिंतन व्यक्तिपरक ढंग से भले ही चला लिया हो, श्रावणी पर्व उसे सिद्धान्तपरक बनाने का निर्देश देता है। श्रावणी पर्व कहता है कि यह कोई सीमित-छोटा कार्य नहीं, बड़ी विशाल और महान् परम्परा की एक कड़ी है। उस महानता को लक्ष्य किया जाना चाहिये, अपनी अल्प दृष्टि और सीमित वृद्धि के कारण हम कहीं उस महान तथ्य की उपेक्षा न कर बैठें, उसे महान तथ्य को भुला न बैठें।

स्मरण हमारा स्वभाव है तो भूलना भी तो हमारा स्वभाव है। भूलने योग्य बात हम भूल जायें तो कोई हानि नहीं किन्तु स्मरण रखने योग्य भूलने लगें तो यह क्षम्य नहीं होना चाहिये। यदि ऐसी भूलों को क्षमा किया जाने लगा तो भूलने की वृत्ति पर से अंकुश उठ जायेगा और वह हर मनचाही दिशा में बढ़ने लगेगी। न भूलने योग्य बातों को भी भूलने का क्रम चल पड़ा तो भारी हानि होगी।

श्रावणी पर्व विस्मृति के नियन्त्रित करने का भी मर्म समझाता है। हमें जो करना चाहिये था और नहीं किया तथा जो न करने योग्य था उसे भूलवश अथवा आन्तरिक कमजोरी के कारण अपना लिया, उसका प्रायश्चित करने का स्मरण यह पर्व दिलाता है। द्विजत्व के वर्चस्व और शिष्यत्व की सार्थकता के लिये अपनी भूलों का स्मरण और उनका शोधन अति आवश्यक है। अहंकार की विकृति मनुष्य को आत्म विस्मृति में डाल देती है और आत्म विस्मृति द्विज अथवा शिष्य के लिये विष तुल्य है।

हम जो बड़े कदम बढ़ाने जा रहे हैं, उनको लेकर हमारा अहंकार न बढ़े इसकी अच्छी व्यवस्था इस पर्व ने की। पहले यह स्मरण दिलाया कि यह तो हमारा स्वाभाविक कार्य है, फिर याद दिलाया कि हमें इसे बहुत पहले ही करना चाहिये था। अगले चरण में हमारी विस्मृति की ओर इशारा करके अनेक श्रेष्ठ कर्मों की उपेक्षा तथा हीन आचरणों में फँस जाने का स्मरण दिलाकर अहंकार को जड़ से उड़ा दिया। अब तो प्रायश्चित की स्थिति आ गयी अहंकार कहाँ टिकेगी। हम जो कुछ भी करें पिछली भूलों का प्रायश्चित भर कर पायेंगे। अहसान किस पर करें ? कैसे करें ? हम स्वयं किसी के अपराधी बने बैठे हैं, उसकी भरपाई तो पहले कर लें। हम मिथ्या अहंकार से समय पर बच गये। आगे भी सतर्क बने रहें।

इस तरह श्रावणी पर्व हमें अधिक निर्मल बनने का तथा अधिक गौरवपूर्ण ढंग से आगे बढ़ने का उद्‌बोधन देता है। अतः हम उसे उसी शान से मनायें भी। हमें चाहिये कि जो अब तक कर लेना चाहिये था और हम कर नहीं सके, उसको भली प्रकार सोच-समझ कर स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लें।

हमने आदर्श जीवन पद्धति अपनाने, सेवा परायण बनने का संकल्प कभी लिया था। उसके अनुरूप कार्यक्रम भी हमारे सामने थे। हम यह भी बहाना नहीं बना सकते कि हमारी इच्छा तो बहुत थी पर हम क्या करें यह समझ में नहीं आया। सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि और व्यावहारिक कार्य पद्धति दोनों सामने होने पर भी उसे न किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाना अपने संकल्प से विचलित हो जाने जैसा ही है। लाभ न होने देना प्रत्यक्ष हानि ही है। इसलिये यह मान लेने पर कि हमें करना चाहिये यह हमें विदित था, न किये जाने का प्रायश्चित करने के अलावा और कोई रास्ता रह नहीं जाता।

प्रायश्चित क्या हो ? हेमाद्रि संकल्प तो प्रायश्चित संकल्प भर है, प्रायश्चित तो हमें करना पड़ेगा। प्रायश्चित स्नान की भी परम्परा है। किन्तु वह स्नान जो प्रायश्चित की पूर्ति कर सके वह क्या स्थूल स्नान हो सकता है ? हमने विवेक की आराधना की है, शिष्यत्व अथवा द्विजत्व ग्रहण करने में बुद्धिमानी दिखाई है, वही स्तर हमारा बना रहना चाहिये। हम स्थूल स्नान अथवा केवल संकल्प पढ़कर प्रायश्चित की पूर्ति मान लें तो यह हमारे गौरव के अनुकूल नहीं होगा। समझदारी का गौरव इसमें है कि कार्य का लाभ पूरा-पूरा मिले। नाम मात्र का दिखावा करके सन्तोष का ढोंग बनाना लाभ से वंचित रह जाना और अपने गौरव को खो देना है।

सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित पुरानी भूल की पूर्ति अतिरिक्त प्रयास द्वारा करना तथा पुनः उन भूलों को न होने देने के लिये व्यवस्था बना लेना है। यह कार्य श्रम साध्य तो है, किन्तु शिष्य, द्विज अथवा साधक का मार्ग यही है।

यदि हम अपने शिष्यत्व अथवा द्विजत्व का स्वाभिमान अनुभव न करें, तब तो बात ही कुछ और है। फिर तो हम केवल दिखावे पर विश्वास कर सकते हैं। मात्र दिखावे पर विश्वास करें तो फिर बगुला भगत बनने में कोई कठिनाई नहीं। प्रायश्चित संकल्प कर लिया या स्नन कर लिया, बस सब पाप धुल गये, सारे कर्मों का प्रायश्चित हो गया इस भ्रान्ति की पट्टी आँखों पर बाँध लेना क्या कठिन है ? इससे भी आगे प्रायश्चित का ढोंग भी करने की क्या आवश्यकता, हम तो भगवान के कार्य में समर्पित व्यक्ति का वेष बनाये रहे, हमारे भीतरी संकल्पों-विकल्पों, उनकी पूर्ति न हो पाने के मर्मों को किसने देखा ? जो हो गया वही हम करना चाहते थे, ऐसा कहकर अपनी शान लोगों पर जमाये रह सकते हैं।

किन्तु ऐसा हुआ तो अनर्थ हो जायेगा। हम तो श्रावणी पर्व का यही अनुग्रह मान रहे थे कि हमारे शुभ संकल्पों के अहंकार से उसने हमें बचाया। अपनी कमियों पर और कर्त्तव्यों पर हमने गहराई से चिन्तन किया तो अब हम प्रायश्चित भी उसी गहराई और गौरव के साथ करें। प्रायश्चित द्वारा उन सब कमजोरियों को एक-एक करके, खोज-खोज करके, साहसपूर्वक अपने से दूर कर दें। अपने को भावनात्मक स्तर पर रगड़कर पीट-पीट कर ऐसा स्वच्छ और निर्मल बना लें कि श्रेय पथ पर हमारी प्रगति में बाधा देने वाली एक भी गन्दगी अवरोध रहने न पाये।

प्रारम्भ श्रावणी पर्व के स्मरण से ही होनी चाहिये कि हमें श्रेष्ठ का स्मरण भी बनाना है। श्रावणी पर्व के सम्बन्ध में सोचते ही हम अहंकार की पकड़ से बचने की स्थिति में आ जाते हैं। एक बड़ा अवरोध जो कलंक बन सकता था, वह हट जाता है यही क्रम आगे बढ़ाते चलें। अपनी भावनाओं, विचारणाओं, मान्यताओं, कार्य पद्धति, गतिविधि तथा स्वभाव में प्रविष्ट ऐसे अवरोध बनने योग्य कारणों का निवारण करने की ठान लें। जिस वेग से हमारे अन्दर विचार स्पंदन, भाव की स्फुरणा हो रही है, उसके आगे मन की दुर्बलतायें बाधा बनकर टिक नहीं सकेंगी।

यह दिव्य स्फुरणा भी श्रावणी पर्व का प्रसाद है। श्रावणी पर्व का दिव्य स्फुरणा से गहन सम्बन्ध है। ब्रह्म के अन्दर 'एकोहं बहुस्यामि' की स्फुरणा उठी और सृष्टि रचना का क्रम चल पड़ा। श्रावणी पर्व उसी दिव्य स्फुरणा का स्मृति दिवस है। यह भाव स्फुरणा कितनी समर्थ है यह सृष्टि को देखकर अनायास लगाया जा सकता है। निराकार अव्यक्त ब्रह्म में वह स्फुरणा जागी तो व्यक्त विशाल ब्रह्माण्ड उसी के सहारे खड़ा हो गया। स्फुरणा केन्द्र को नाभिक कहते हैं। नाभि से कमल नाल, कमल तथा उस पर प्रजापति के प्रादुर्भाव की कथा इसी सूक्ष्म स्फुरणा के स्थूल प्रतिक्रियाओं के रूप में प्रकट होने का कलात्मक अलंकारिक वर्णन है।

तो इस दिव्य स्फुरणा में अव्यक्त को व्यक्त में परिणित कर देने की क्षमता है। देव कृपा से हमारे अन्दर भी वही स्फुरणा गुदगुदी पैदा कर रही है। हमारे अन्दर भी शेष जीवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रम अपनाने के, ईश्वरीय उद्देश्यों की पूर्ति के लिये कुछ कर दिखाने के प्रखर भाग है। अभी वो अव्यक्त ही सही किन्तु उनके होने में तो कोई शंका अब नहीं ही की जा सकती। तब तो निश्चित रूप से यह दिव्य स्फुरणा हमारी अव्यक्त भावनाओं को व्यक्त बना सकती है। इस सुअवसर का हमें लाभ उठाना ही चाहिये।

हमारे अन्दर यह स्फुरणा कुछ अधिक प्रखर तथा स्पष्ट हो, किन्तु अन्य अन्तःकरणों में भी तो इसका प्रभाव होगा। श्रावणी पर्व के प्रभाव से इस रचनात्मक स्फुरणा के स्पर्श का न्यूनाधिक बोध तो औरों को भी होता है। यदि इन स्फुरणाओं को संयुक्त करने का एक-दूसरे के सहारे विकसित तथा पुष्ट करने का क्रम बन सके तो सब प्रकार हित ही होगा।

श्रावणी पर्व का अपना विशेष प्रयोजन उद्‌बोधन है। द्विजत्व को प्रखर बनाने के लिये संयम के साथ-साथ सामयिक समस्याओं पर भी कुछ चर्चा कर लेनी चाहिये। यह संक्रान्ति काल है, हम और हमारा समाज अनेक समस्याओं में उलझा हुआ है। इन समस्याओं का श्रावणी पर्व के विशेष प्रयोजन से तालमेल बिठाकर ऐसी व्याख्यायें प्रस्तुत की जायें, जिन्हें सुनकर जन साधारण को अपनी उलझनें सुलझाने में मदद मिल सके।

हमारी विचार पद्धति में जहाँ कहीं दोष आ गये हैं, उन्हें निरस्त कर एक वर्ष के किये गये पापों के प्रायश्चित का भी विधान इस पर्व पर है। बहिन भाई के पवित्र सम्बन्धों की स्मृति के लिये इसी दिन राखी बाँधी जाती है। राष्ट्र रक्षा की प्रतिज्ञा का उत्तरदायित्व यजमान की मजबूत कलाईयों में पुरोहित इसी दिन बाँधते हैं। यह संस्कृति का जन्मदिन है। इन विषयों की विवेचना करते हुये श्रोताओं की प्रेरणा उभारी जा सकती हैं। इस प्रकार हर स्थान पर श्रावणी पर्व की शिक्षाओं का महत्त्व बोध कराया जाना चाहिये।

तो श्रावणी पर्व इस ढंग से मनाने की व्यवस्था हो कि हमारी स्फुरणायें संयुक्त रूप धारण कर सकें। जिस प्रकार उनके उद्‌गम का मूल एक महत् तत्व है वैसे ही एक महत् उद्देश्य में उनका नियोजन हो सके। वर्षा ऋतु होने से कोई बड़ा सार्वजनिक आयोजन तो इस अवसर पर हो ही नहीं सकता किन्तु किसी सुविधाजनक स्थान पर भावनाशील विचारशील व्यक्तियों को एकत्रित करके श्रावणी पर्व का पूजन किया जा सकता है।

अगले पृष्ठों पर श्रावणी पर्व का जो विधि-विधान दिया गया है, उसी का अनुसरण करना चाहिये। यह पद्धति उपयुक्त और प्रभावशाली है। स्नान आदि लोग पहले से करके आयें। पर्व पूजन स्थल पर सबको व्यवस्थित ढंग से बिठाया जाये। आचमन पात्रों की व्यवस्था सबके लिये रखी जा सकती है अथवा लोगों को अपने साथ आचमन पात्र लाने के लिये पहले से कहा जा सकता है। लोटा, गिलास, कटोरी, किसी भी पात्र से यह कार्य लिया जा सकता है।

सामने पूजन-स्थल पर कलश दीपक, वेद पूजन के लिये कपड़े में लपेटी हुई पुस्तक, ऋषि पूजन के लिये कुश अथवा चावलों की ढेरी आदि सजाकर रखे जायें। भगवान विष्णु की नाभि से निकले कमल पर विराजमान ब्रह्मा का चित्र भी रखा जा सकता है। न मिले तो भी उस प्रकरण की भावनात्मक व्याख्या पर्व प्रसंग में की जानी उचित है, उस दिव्य स्फुरणा का महत्त्व दर्शाया और समझाया जाना महत्त्वपूर्ण कृत्य है, जिसे कुशलता से किये जाये। अन्य कर्मकाण्ड की व्याख्यायें भी उपस्थित समुदाय के स्तर के अनुरूप की जायें।

पूजन-क्रम पवित्रीकरण आदि से प्रारम्भ करके, रक्षा विधान तक लाकर पर्व का पूजन प्रारम्भ करा दिया जाये। भाग लेने वाले हर व्यक्ति के पास चावल पुष्प एवं यज्ञोपवीत आदि किसी पत्ते या कागज पर रखे जा सकते हैं, जिनका उपयोग वह पूजन क्रम में कर सकें, अथवा स्वयं सेवकों द्वारा समय-समय पर उनके हाथों में वह पहुँचाने की व्यवस्था की जा सकती है। शिखा सिंचन, यज्ञोपवीत नवीनीकरण, प्रायश्चित विधान वेद एवं ऋषिजन, रक्षाबन्धन तथा वृक्षारोपण के छः कर्मकाण्ड अनिवार्य रूप से कराये जायें। दश स्नान तर्पण एवं यज्ञ परिस्थिति की अनुकूलता तथा व्यवस्था की संभावना देखकर ही रखे जायें। स्थूल कर्मकाण्ड

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तथा सूक्ष्मभाव जागरण का मर्म परिजन भली प्रकार समझ चुके हैं, इसलिये किसी कर्मकाण्ड विशेष को अतिरिक्त महत्त्व देकर अव्यवस्था असुविधा पैदा न होने दी जाये। हमारा प्रधान उद्देश्य अधिक से अधिक संख्या में भावनाशील व्यक्तियों के अन्दर दिव्य स्फुरणा का बोध कराना अथवा पुनर्जागृत करना एक अति महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसके लिये कर्मकाण्ड की व्याख्या तथा प्रारम्भिक परिचयात्मक टिप्पणी में बहुत कुछ कहा जा सकता है। श्रावणी पर्व पर सर्वत्र इस महान् उद्देश्य की पूर्ति के प्रबल प्रयासों की श्रृंखला अवश्य चल पड़ेगी ऐसा विश्वास है।

युग निर्माण परिवार की शाखाओं के अतिरिक्त परिजनों से भी यह आशा अपेक्षा की गयी है कि वे इस पुण्य पर्व की उपयोगिता एवं शिक्षा को समझकर निर्दिष्ट ईश्वरीय कर्त्तव्य की पूर्ति में स्वयं को नियोजित करने का सत्साहस करेंगे।

वृक्षारोपण की पुनीत परम्परा— हरियाली अमावस्या

हमारे पूर्वजों ने जिन सिद्धान्तों, आदर्शों और विधि-विधानों को हमारे लौकिक और पारलौकिक जीवन के लिये लाभकारी समझा, उनको उन्होंने धर्म के अन्तर्गत ला दिया। व्यक्तिगत जीवन को ऊँचा उठाने के लिये जिस तरह षोडश संस्कारों की आवश्यकता है, उसी प्रकार से सामूहिक जीवन को सुसंस्कृत बनाने के लिये त्यौहारों की आवश्यकता है। हिन्दू धर्म का प्रत्येक त्यौहार एक प्रेरणा, सिद्धान्त और आदर्श लिये हुये हैं। इन त्यौहारों की प्रेरणा को समाज के मर्मस्थल पर प्रतिष्ठापित करने के लिये उन्हें सामूहिक आयोजनों उत्सवों के रूप में मनाने की पद्धति चली है क्योंकि सामूहिक रूप से जिस उत्सव को मनाया जाता है, उसकी एक छाप उसमें भाग लेने वाले के ऊपर पड़ती है।

हरियाली अमावस्या हमारे भौतिक जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है। हमारे शास्त्रों में किन्हीं क्रियाओं के लाभ इस प्रकार वर्णन किये जाते हैं कि लोग असम्भव से मान लेते हैं परन्तु वास्तविकता यह नहीं है। उन संकेतों में कुछ न कुछ रहस्य अवश्य छिपा रहता है। हरियाली अमावस्या विशेष प्रकार से वृक्षारोपण का त्यौहार है। वृक्षों की महत्ता को स्वीकार करते हुये अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में कहा है कि "वृक्ष वनस्पति भी मनुष्यों की ही भाँति पृथ्वी के पुत्र हैं।" अग्नि पुराण में कहा है, "जो मनुष्य वृक्ष लगाता है, वह अपने तीस हजार पितरों का उद्धार करता है। जो कोई अपने वंश, धन और भावी सुख की वृद्धि चाहता हो तो उसे फल-फूल वाले किसी वृक्ष को न काटना चाहिये।" पद्म पुराण में लिखा है "जो मनुष्य सड़क के किनारे वृक्ष लगाता है, वह स्वर्ग में उतने ही वर्ष सुख भोगता है, जितने वर्षों तक वह वृक्ष हरा रहता है।" महाभारत में भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को उपदेश देते हुये कहा था "वृक्ष लगाने वाले इस लोक में तो यश और कीर्ति प्राप्त करते ही हैं, मरने के बाद भी स्वर्ग लोक को जाते हैं। वृक्ष लगाने वाला अपनी पितरों के साथ-साथ पीछे आने वाली पीढ़ियों का भी उद्धार करता है।"

पाराशर ऋषि का मत है—

दश कूप समो वापी दशवापी समो ह्रदः।
दश ह्रदसमः पुत्रः दश पुत्र समो द्रुमः।

अर्थ

दश कुएँ बनाने के समान एक बावड़ी खुदाने का पुण्य होता है। दश बावड़ी खुदाने के बराबर एक तालाब बनाने का पुण्य है। दश तालाब बनाने के बराबर एक पुत्र या शिष्य को धर्म परायण, समाज सेवी बनाने का पुण्य है। दश समाजसेवी सन्तानों को बराबर वृक्ष लगाने का पुण्य है। पुण्य कारक शुभ कर्मों में वृक्षारोपण का सर्वोपरि स्थान है।

ऋषियों ने जिन रीति-रिवाजों, मान्यताओं, कर्मकाण्डों का जीवन में उपयोग देखा, उनकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने के लिये उनके लाभों का अत्यधिक वर्णन किया है। वृक्षों के सम्बन्ध में मनुष्य के लिये उपयोगिता का विवेचन हम आगे की पंक्तियों में करेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारत कृषि प्रधान देश है। इसलिये यहाँ वर्षा की ऋतु का बड़ा महत्त्व समझा जाता है। वर्षा का बहुत कुछ सम्बन्ध पेड़ों से है। जहाँ पेड़ अधिक होते हैं, वहाँ वर्षा भी अधिक होती है इसलिये जब भारतवर्ष में वन पर्याप्त मात्रा में थे तो यहाँ वर्षा आवश्यकतानुसार हो जाया करती थी क्योंकि बादल बन जाने पर वृक्ष समूह अपने आकर्षण से वर्षा को खींच लेते हैं। परन्तु जब से वनों को काट कर भूमि को जुताई के उपयुक्त बनाया जाने लगा है तभी से वर्षा का क्रम अनिश्चित-सा हो गया है। पेड़ों का प्रभाव देश की जलवायु पर पड़ता है। गर्म देशों में पेड़ों की, पत्तियों से पानी उड़कर वहाँ के तापक्रम को कम करता है। परन्तु जहाँ पेड़ नहीं होते वहाँ की खुली जमीन पर सूर्य की किरणों के पड़ने से वह गर्म हो जाती है जिसके फलस्वरूप वायु भी गर्म होकर बादलों को ऊपर उठा देती है और वहाँ वर्षा नहीं होती। पेड़ों के होने से इस हानि से बचा जा सकता है।

पेड़ों का मनुष्य के स्वास्थ्य से भी सम्बन्ध है क्योंकि यह कार्बन डाई-ऑक्साइड गैस को सोख लेते हैं दिन को ऑक्सीजन गैस छोड़ते हैं, जो शरीर के लिये बहुत आवश्यक है और लाभप्रद वस्तु है। इससे फेफड़ों व खून की सफाई होती है और अनिष्टकर पदार्थों से बचाव होता है। हरी-हरी घास पर प्रातःकाल नंगे पैर चलने और हरी पत्तियों की ओर देखने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। फूलों की सुगन्धि से मस्तिष्क के अनेकों रोग दूर हो जाते हैं। गुलाब अर्क और गुढ़ैल का शर्बत उष्णजन्य कई रोगों में काम आता है। बहुत-से वृक्षों की जड़, छाल, लकड़ी, स्वरस, फूल, फल और पत्तियों से राम बाण औषधियाँ बनती हैं, जो रोग निवारण के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होती हैं।

पेड़ों की जड़ों में कुछ ऐसा प्रभाव होता है कि वह भूमि को कटने से बचा लेते हैं। तालाब और नदियों के किनारों पर पेड़ लगाने का यही प्रयोजन होता है। उन नदियों के पानी का बहाव एक-सा बना रहता है। भारत में कुछ वर्षों से काफी बाढ़ें आने लगी हैं। कुछ हद तक इसका कारण भी वनों का तेजी से सफाया होना है। वनों के अभाव में हमारे देश की भूमि धीरे-धीरे रेगिस्तान बनती जाती है। विशेषज्ञों का कहना है कि राजस्थान का रेगिस्तान उत्तर प्रदेश की ओर बढ़ रहा है, इसके लिये वनों का लगाना आवश्यक है। इसलिये उत्तर प्रदेश में राजस्थान की सीमा पर अब पेड़ लगाये जा रहे हैं।

वृक्षों से हमारी ईंधन की आवश्यकता पूर्ति होती है। उनका कोयला और चीरन का बुरादा चूल्हों, भट्टियों और सिगड़ियों में जलाने के काम आता है। इनमें बची हुई राख खेतों की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती है। वनों में शीशम, सागवान व देवदारु की लकड़ी प्राप्त होती है, जो फर्नीचर, रेल के डिब्बों आदि के उपयोग में आती है। इसके अतिरिक्त तरह-तरह की वस्तुयें तेल, लाख, गोंद, चन्दन की लकड़ी, कत्था, कागज और रस्सियाँ बनाने के लिये सवाई भावर और रबर आदि कितनी ही अन्य उपयोगी वस्तुयें वनों से प्राप्त होती हैं।

जलाने की लकड़ी के अभाव में किसान लोग गोबर को जलाते हैं, जो उनके लिये ईंधन से कहीं अधिक मूल्यवान है। यदि ईंधन पर्याप्त मात्रा में मिलता रहे तो गोबर को खाद के काम में लेकर देश की पैदावार के बढ़ाया जा सकता है।

वनों से किसानों को पशुओं के लिये चारा मिलता है। वह पशुओं के लिये चरागाह के काम आते हैं। भारत के वन विभाग के कुछ भाग चराई के लिये किराये पर उठा दिये जाते हैं। इनसे सरकार को १९-७-४८ में १० करोड़ की आय हुई थी।

वृक्षों की सघन छाया की यह विशेषता है कि गर्मी के दिनों में शीतलता, सर्दी के मौसम में तपश और वर्षा में ऋतु के अनुसार लाभ पहुँचाती है। इनके नीचे साधु-सन्त अपनी धूनि रमाते हैं और मुसाफिर विश्राम करते हैं। पक्षी अपने घोंसले बनाते हैं। पक्षियों का भी मनुष्य जीवन के लिये एक महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि वह पेड़-पौधों को नष्ट करने वाले कीड़े-मकोड़ों को खाकर फसल की रक्षा करते रहते हैं। गिद्ध मरे हुये पशुओं के माँस को खा जाते हैं। यदि पशुओं का माँस सड़ता रहे तो बीमारी पैदा होने का भय रहता है। पेड़ों के अभाव में पक्षियों का अभाव हो जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन्हीं लाभों को देखते हुये भारतीय संस्कृति में वृक्षों को देवता के रूप में माना जाता है और कई की तो पूजा भी की जाती है। पीपल को हिन्दू लोग जल चढ़ाते हैं और स्त्रियाँ धागा बाँधती, परिक्रमा, व अन्य प्रकार से पूजा करती हैं। पीपल की छाया-स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद है और उसके फूलों में सन्तानोत्पादन की बड़ी शक्ति है। वैशाख, ज्येष्ठ मास में जब फल लगता है, तब चिड़ियाँ उस फल को खाकर शीघ्र ही गर्भ धारण कर लेती हैं। पीपल के फल खाने से बन्ध्या को भी पुत्र प्राप्त होता है। इसकी छाल तथा दूध दोनों औषधि के काम में आते हैं। इस वृक्ष से सबसे अधिक नाइट्रोजन' निकलती है, जो जीवन के लिये सबसे अधिक उपयोगी गैस है। इस गैस के बिना मनुष्य क्षणभर के लिये जिन्दा नहीं रह सकता। अशोक की छाल बड़ी संकोचक और गर्भाशय के रक्तस्राव को रोकने की विशेष औषधि है। आँवले में अद्भुत रासायनिक शक्ति है। मस्तिष्क के लिये इसका मुरब्बा बहुत उपयोगी है। नीम की रोग निवारक शक्ति तो जगत् प्रसिद्ध है। आम तो फलों का सिरमौर है। तुलसी को चिकित्सा जगत् में एक आश्चर्यजनक बूटी के रूप में पाया गया है। यह न केवल चिकित्सा की दृष्टि से वरन् सूक्ष्म आध्यात्मिक तत्वों के कारण भी मानव जाति के लिये परम कल्याणकारी है। गेंदा से जलन और दाह दूर होते हैं। इसी प्रकार से प्रत्येक वृक्ष में कुछ न कुछ उपयोगिता है। वृक्षों से उपरोक्त लाभों को देखते हुये ही हमारे धर्म-शास्त्रों में इसका बहुत पुण्य माना गया है।

पेड़ों की आवश्यकता को अनुभव करते हुये भारत सरकार ने भी इस ओर ध्यान दिया है। इसी उद्देश्य से के. एम. मुन्शी ने वन महोत्सव को विशेष प्रोत्साहन दिया था। यह महोत्सव वर्षा ऋतु में एक सप्ताह के लिये मनाया जाता है, जिसमें सरकारी और जनता के व्यक्ति पेड़ लगाते हैं। सरकार ने अधिक वृक्ष लगाने वालों को पुरस्कार भी घोषित किये हैं।

'राजेन्द्र शील्ड' वन महोत्सव में सबसे अधिक वृक्ष लगाने वाले जिले को दी जाती है। 'जवाहर शील्ड' सबसे अधिक पेड़ लगाने वाले विश्वविद्यालय को। उत्तर प्रदेश सरकार ने इस ओर अधिक ध्यान दिया है। उनके द्वारा इटावा और गोवर्धन जि. मथुरा में एक-एक वन लगाया जा चुका है। आगरा जिले में कई सौ मील लम्बा वन बनाने की योजना है। अन्य प्रान्तों में भी इस दिशा में काम हो रहा है। परन्तु फिर भी सरकार को इस ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि अनुमान है कि भारत में २८१ लाख वर्ग मील में वन हैं। यह देश के क्षेत्रफल का कुल २२.३ प्रतिशत है। जहाँ सोवियत रूस में प्रत्येक व्यक्ति के पीछे जंगलों का क्षेत्रफल ३.५ हेक्टा (१ हेक्टर = २.४७१ एकड़) और अमरीका में १८ हेक्टर बैठता है वहाँ भारत में यह केवल ०२ पड़ता है।

हमारे ऋषियों ने वृक्षों की उपयोगिता को बहुत समझकर इसे त्यौहार रूप में मनाने का आदेश दिया है कि जब वर्षा भली प्रकार आरम्भ हो जाये तो उपयोगी वृक्षों को लगाया जाना चाहिये। आज पूर्व परम्परायें प्रायः समाप्त होती जा रही हैं। उनको हमें फिर से कार्य रूप में लाना है।

हरियाली तीज

भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है और इसलिये यहाँ वर्षा की ऋतु बड़ी आवश्यक और महत्त्व की समझी जाती है। जिस वर्ष बरसात समय पर और उपयुक्त परिणामों में हो जाती है, उस वर्ष फसल भी सन्तोषजनक होती है और सभी श्रेणियों के लोग खाने-पीने की सुविधा प्राप्त करते हैं। पर जब वर्षा में व्यतिक्रम हो जाता है और वह समय पर नहीं होती या कम होती है तो मनुष्य ही नहीं पशु तक चारे के लिये तरसते हैं और देश में चारों तरफ तबाही और भुखमरी के दृश्य दिखलाई पड़ने लगते हैं।

शायद बहुत-से लोग इस बात को नहीं जानते कि वर्षा का बहुत कुछ सम्बन्ध पेड़ों से है। जहाँ पेड़ अधिक होंगे वहाँ वर्षा भी पर्याप्त होगी और उसका जल जमीन में ठहरेगा। इसलिये जब भारतवर्ष में जंगल पर्याप्त मात्रा में थे, तब यहाँ वर्षा भी आवश्यकतानुसार हुआ करती थी और दूध, घी आदि पदार्थ भी लोगों को सहज में मिलते रहते थे। पर जब लोगों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की जमीन की भूख बढ़ी और उन्होंने जंगलों को काटकर जमीन को नंगा कर दिया तभी से वर्षा अस्त-व्यस्त हो गई ओर हम प्राय: असामयिक वर्षा का दृश्य देखने लगे। अब पेड़ों के अभाव से जहाँ खेतों की उपज में अन्तर पड़ गया है, वहाँ भूमि का कटाव भी बढ़ गया है और कितने ही प्रदेशों में उपजाऊ जमीन रेगिस्तान के रूप में बदलती जा रही है।

हमारे पूर्वज इस तत्व को भली प्रकार समझते थे और पेड़ों को लगाना तथा उनकी रक्षा करना उन्होंने बड़े पुण्य का काम बतलाया था। 'अग्नि पुराणं' में लिखा है' जो मनुष्य वृक्ष लगाता है, वह अपने तीस हजार पितरों का उद्धार करता है। जो कोई अपने वंश, धन और भावी सुख की वृद्धि चाहता हो तो उसे फल-फूल वाले किसी वृक्ष को न काटना चाहिये।" पद्म-पुराण' में लिखा है कि जो मनुष्य सड़क के किनारे वृक्ष लगाता है वह स्वर्ग में उतने ही वर्षों तक सुख भोगता है, जितने वर्षों तक वह वृक्ष हरा रहता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे पूर्वजों ने वृक्षों की वृद्धि एवं रक्षा के लिये पूरा ध्यान दिया था और लोग इस सम्बन्ध में असावधानी न करें इसलिये तत्सम्बन्धी नियमों का समावेश धर्म ग्रन्थों में कर दिया था। इतना ही नहीं वे अनेक वृक्षों को तो पवित्र तथा पूजनीय भी मानते थे, जैसे पीपल के वृक्ष की रक्षा करना प्रत्येक हिन्दू आज भी अपना कर्त्तव्य समझता है। वास्तव में हिन्दू धर्म में पेड़ों को जीवधारी माना गया है और जहाँ तक सम्भव हो अकारण उनको काटा-पीटा न जाये इसका पूरा ध्यान रखा गया है। हर्ष का विषय है कि वृक्षों में जीव होने की बात विज्ञान से भी भली प्रकार सिद्ध हो चुकी है, जिसका श्रेय भारतीय वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र बोस को ही है।

श्रावण के शुक्ल पक्ष की तीज मुख्य रूप से वृक्षों का ही त्यौहार है। यह समय ऐसा होता है जब वर्षा भली प्रकार आरम्भ हो जाती है और पृथ्वी माता हरित परिधान धारण कर लेती है। जबकि खेत, मैदान, वन, उपवन हर जगह की हरियाली नेत्रों को सुख देने लगती है। नर-नारियों की टोलियाँ बाग-बगीचों में भ्रमण करने लगती हैं और प्रकृति की शोभा को निरख कर मन को प्रफुल्लित करती हैं। तीज के दिन महिलाओं का बाग-बगीचों में झूला झूलना तो प्राचीन प्रथा है। जिस समय हमारे घरों की देवियाँ अपनी सखी-सहेलियों के साथ झूलती हुई कोकिल-कण्ठ से वर्षा के गीत गाती हैं, उस समय की छटा देखने के योग्य होती है।

पर इस पर्व पर केवल प्राकृतिक छटा को देख आनन्दित होना ही हमारे कर्त्तव्य की पूर्ति नहीं कर सकता। इस दिन हमको अपने देश की उद्भिज सम्पत्ति के सम्बन्ध में भी कुछ विचार करना चाहिये और उसकी वृद्धि तथा रक्षा के कार्य में कुछ सहयोग देना चाहिये। यदि उस दिन प्रति घर के पीछे एक नया पेड़ लगाने का नियम बना लिया जाये तो कुछ ही समय में हमारा पूरे का पूरा देश एक हरा-भरा बगीचा बन सकता है, जिससे समस्त प्राणी अपरिमित लाभ उठा सकते हैं।

इसलिये हमारा कर्त्तव्य है कि हरियाली तीज के दिन या तो हम कोई नया पौधा लगा दें या उपयुक्त समय पर लगाने का निश्चय करके उसकी व्यवस्था कर दें। साथ ही यह भी परमावश्यक है कि जो पौधा हम लगावें उसकी देख-भाल, पानी देना आदि का भी काम तत्परता से करें, क्योंकि पौधा लगाने का तात्पर्य उसे पाल-पोष कर वृक्ष बना देने से ही है।

श्रावणी और रक्षाबन्धन

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को दो त्यौहार एक ही साथ मनाये जाते हैं, श्रावणी और रक्षाबन्धन।

प्राचीन समय में ऋषि-महर्षि लोग आज के दिन से वेद का पारायण आरम्भ करते थे जिसे "उपाकर्म" कहा जाता था। वैसे तो वेद का पाठ नित्य ही करना द्विज मात्र का कर्त्तव्य बतलाया गया है पर वर्षा ऋतु में उसके लिये विशेष रूप व्यवस्था की जाती थी। आषाढ़ और श्रावण मास में तो यहाँ की जनता विशेष रूप से कृषि कार्यों में व्यस्त रहती थी। श्रावण के अन्त में उस कार्य से अवकाश मिलता था और वे धार्मिक चर्चा के लिये अधिक समय दे सकते थे। इसी प्रकार वर्षा की अधिकता से क्षत्रियों का सेना लेकर इधर-उधर जाना तथा वैश्यों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यापार भी शिथिल पड़ जाता था। उधर ऋषि-मुनि लोग भी वर्षा के कारण वनों या जंगलों में रहना असुविधाजनक देखकर शहरों के निकट चले जाते थे। इस प्रकार सब तरह की सुविधायें मिल जाने से वेदपाठ और वैदिक तत्वों की व्याख्या करने के लिये सभाओं की योजना की जाती थी। प्राचीन समय में इसके आरम्भ करने का दिन श्रावण मास की पूर्णिमा ही रखा गया था, जो अभी तक प्रचलित है और उत्सर्जन (समाप्ति) की तिथि पौष शुक्ल पूर्णिमा थी। पर अब अन्य वर्णों की कौन कहे ब्राह्मणों ने भी वेद का पठन-पाठन अधिकांश में छोड़ दिया है इसलिये अब प्राचीन काल के उपाकर्म, उत्सर्जन, ऋषि-तर्पण और बड़े हवन आदि का विकृत तथा नाममात्र का रूप रह गया है और उपाकर्म (उपकर्म) के साथ ही विसर्जन या समापन कर दिया जाता है।

अब आवश्यकता इस बात की है कि हम श्रावणी के त्यौहार को पुनः वास्तविक रूप में प्रचलित करें और इसके द्वारा समाज में धार्मिक और आध्यात्मिक ग्रन्थों के अध्ययन का प्रचार बढ़ावें। प्राचीन काल में सब जातियों के बालकों को गुरुकुल में रखकर समस्त शास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी। वर्तमान स्कूल और कालेजों की तरह उस शिक्षा की कोई फीस नहीं ली जाती थी वरन् विद्यार्थियों के व्यय की व्यवस्था भी गुरु की तरफ से ही होती थी। जब ब्रह्मचारी अपनी शिक्षा समाप्त कर लेते थे ओर उनके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने का अवसर आता था तो उनको गुरुदक्षिणा के रूप में यही प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी कि वे अपने जीवन भर अध्ययन को जारी रखेंगे। जाति में ज्ञान की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने के लिये उस समय के विचारशील महापुरुषों ने यही मार्ग निश्चित किया था, जिससे प्रत्येक व्यक्ति जीवन-निर्वाह के अन्य कार्यों को करते हुये स्वयं ज्ञानवृद्धि करता रहे और भावी पीढ़ी के अध्ययन कार्य में भी सहायक बने। यही आदर्श श्रावणी के त्यौहार के दिन हमको अपने सामने रखना चाहिये और समयानुकूल रूप में इसका अन्य लोगों में प्रचार भी करना चाहिये। दुर्भाग्यवश इस समय शिक्षित लोगों का ध्यान भी धार्मिक और आध्यात्मिक ग्रन्थों के अध्ययन से हट गया है और वे केवल अर्थकारी (रुपया कमाने वाली) विद्या को ही सब कुछ समझने लगे हैं। श्रावणी के त्यौहार को उचित रूप से मनाकर समाज का ध्यान आध्यात्मिक तत्वों की ओर मोड़ना भी आवश्यक है। केवल भौतिक ज्ञान और भौतिक लाभ की ओर लक्ष्य रखने का जो कुछ दुष्परिणाम होता है, वह हमारे नेत्रों के सम्मुख है। इसी दूषित मनोवृत्ति के प्रभाव से आज एक मनुष्य दूसरे को खा जाने के लिये तैयार है और इसमें कोई बुराई नहीं समझता। इसलिये अध्यात्म तत्वों का प्रचार करके मनुष्यों में मनुष्यत्व की भावना का जागृत करना परम आवश्यक है।

रक्षाबन्धन

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को ही रक्षाबन्धन का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन उत्तर भारत के प्रायः सभी स्थानों में बहनें अपने भाइयों के हाथों में राखी बाँधती हैं। पुरोहित अथवा अन्य ब्राह्मण भी राखी बाँधते हैं। इसकी कथा शास्त्रों में इस प्रकार लिखी है—

एक बार युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण भगवान से पूछा कि समस्त रोग और अशुभ घटनाओं से वर्ष भर रक्षा करने वाला कोई उपाय बतलाइये। श्रीकृष्ण जी ने कहा—"हे युधिष्ठिर ! प्राचीन काल में इन्द्राणी ने इन्द्र की विजय के लिये जो उपाय किया था उसे मन लगाकर सुनो। देवताओं और असुरों में एक बार बारह वर्ष तक घोर संग्राम होता रहा, जिसमें असुरों ने सम्पूर्ण देवताओं सहित इन्द्र पर विजय प्राप्त कर ली। इस महान पराजय से दुःखी होकर इन्द्र देवगुरु बृहस्पति जी से कहने लगे कि इस समय न तो मैं ठहरने में समर्थ हूँ और न कहीं भागने का अवसर है। अतः मुझे लड़ना अनिवार्य हो गया है, चाहे उसका परिणाम कैसा भी बुरा क्यों न हो। इस बात को सुनकर इन्द्राणी बीच में ही बोल उठीं—"प्राणनाथ ! आप निर्भय रहें। मैं एक ऐसा उपाय करती हूँ जिससे अवश्य ही आपकी विजय होगी।" दूसरे दिन प्रातःकाल ही श्रावणी थी। इन्द्राणी ने ब्राह्मणों द्वारा स्वस्तिवाचन कराके इन्द्र के हाथों में रक्षा की पोटली बाँध दी। रक्षाबन्धन से सुरक्षित इन्द्र ने जब दैत्यों पर चढ़ाई की तब वह उनको काल के समान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भयंकर जान पड़ा और सब दैत्य उसके सामने से भाग गये। इस प्रकार यह रक्षाबन्धन बड़ा सौभाग्यशाली और सब प्रकार की आपत्तियों से बचाने वाला है।''

भविष्य पुराण के अनुसार रक्षाबन्धन का समय दोपहर के पश्चात् होता है और 'स्मृति कौस्तुभ' के रचयिता ने पूर्णमासी में सूर्योदय होने पर रक्षाबन्धन का समय माना है।

आज यद्यपि रक्षाबन्धन का रूप हाथ में एक लाल-पीला डोरा या रेशम और कलाबत्तू आदि की बनी बढ़िया राखी बाँध देना ही रह गया है, पर भारतीय इतिहास के मध्य काल में इसका महत्त्व बहुत अधिक था ओर जो स्त्री जिस पुरुष के राखी बाँध देती थी, वह उसकी प्राणपण से रक्षा करता था। इस सम्बन्ध में सबसे प्रसिद्ध घटना चित्तौड़ की रानी कर्णवती की है। जब उसके राज्य पर गुजरात के बादशाह बहादुरशाह ने चढ़ाई की तो रानी ने देहली के मुगल सम्राट हुमायूँ के पास राखी भेजी और अपनी रक्षा की प्रार्थना की। हुमायूँ उसी समय सेना लेकर रवाना हो गया पर उसके पहुँचने से पहले ही चित्तौड़ का पतन हो गया था और रानी कर्णवती अपनी सहेलियों के साथ जौहर व्रत करके जल मरी थी। तो भी हुमायूँ ने बहादुरशाह पर आक्रमण करके उसे मार भगाया और रानी के पुत्र को चित्तौड़ की गद्दी पर बैठाकर, 'राखी बंद भाई' के नाम को चरितार्थ किया।

आवश्यकता है कि हमारे देशवासी, स्त्री और पुरुष, राखी के वास्तविक महत्त्व को समझें और समय पड़ने पर असहाय अबलाओं की रक्षा करने का व्रत ग्रहण करें।

इस प्रकार श्रावणी मुख्य रूप से धार्मिक स्वाध्याय के प्रचार का पर्व है। भारतवर्ष का प्राचीन धार्मिक साहित्य संसार में अद्वितीय समझा जाता है और हमारी वर्तमान गिरी हुई अवस्था में भी विदेशियों ने उसकी श्रेष्ठता के सम्मुख मस्तक झुकाया है। पर खेद की बात है कि हम स्वयं अपनी इस अमूल्य ज्ञान-राशि की ओर से उदासीन रहते हैं। वेदों और उपनिषदों की बात तो दूर रही, गीता और रामायण जैसे बहुत प्रचारित ग्रन्थों का भी ठीक ढंग से समझकर स्वाध्याय करने वाले बहुत थोड़े निकलेंगे। इसलिये जब तक हम स्वाध्याय का नियम न बना लेंगे, तब तक इस दिशा में विशेष सफलता मिलनी सम्भव नहीं। श्रावणी के पर्व पर हमको स्वाध्याय के लिये कोई भी विशेष समय नियत करके उसका आरम्भ करना चाहिये। जिन लोगों को पढ़ने-लिखने का विशेष अभ्यास या आदत नहीं है, उनको उस दिन से किसी विद्वान पुरुष से सामूहिक कथा के रूप में धर्म-ग्रन्थों को सुनना चाहिये। बिना इस प्रकार के स्वाध्याय के हमारी आध्यात्मिक भावनायें कभी सुदृढ़ नहीं बन सकतीं।

सत्संकल्पों का त्यौहार—श्रावणी

हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार मनुष्य जीवन पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि चौरासी लक्ष योनियों के पश्चात् प्राप्त होता है, इसलिये उसमें पशु-वृत्तियों का आधिपत्य होता है। इन पशु-वृत्तियों को समाप्त करके मनुष्यता की ओर मोड़ने के लिये उसके जीवन को सुसंस्कारित करने की आवश्यकता हुई। जिन लोगों की मनोभूमि, परिपक्व होती है, उनकी एक बार ही प्रेरणा देने से धार्मिक भावनायें जागृत हो जाती हैं और वह अपने कर्त्तव्य को समझकर उसके अनुसार कार्य करते हुये मनुष्य जन्म को सफल बना लेते हैं परन्तु ऐसा व्यक्ति हजारों में एक ही होता है। अधिकांश व्यक्तियों में पिछले हजारों जन्मों की क्षुद्र वासनाओं और कामनाओं के कारण उत्तम धार्मिक ग्रन्थों और सन्त-महात्माओं का भी कम प्रभाव पड़ता है। जिन पर पड़ता है, वह भी धीरे-धीरे प्रगति करते हैं। इसलिये साधारण श्रेणी के मनुष्यों पर बार-बार छाप डालनी पड़ती है, तभी उनमें कुछ स्थायित्व की और आशा की जा सकती है। कुशल वक्ता ओर लेखक वही माना जाता है, जो श्रोता व पाठक पर एक बात की छाप डालने के लिये उसे बार-बार नये ढंग से प्रस्तुत करता है। कील को बार-बार ठोकने से वह खूब गड़ जाती है। बार-बार पाठ करने से ही एक पाठ याद किया जा सकता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस तथ्य को हमारे ऋषिगण भली प्रकार जानते थे कि यदि एक बार अपने शिष्यों को कोई शिक्षा देते हैं तो यह आवश्यक नहीं कि वह एक बार की शिक्षा से ही उसे अपने जीवन में उतार लेंगे। इसलिये उन उपयोगी शिक्षाओं को पुनः उचित समय पर दोहराने की आवश्यकता है, जिसके माध्यम से पशु को मनुष्य बनाने का संस्कार किया जाता है, उसकी मनोभूमि पर यह छाप जमाई जाती है कि पशुओं की तरह मनुष्यों को शिश्नोदर परायण—रोटी और कामुकता के पीछे ही पागल नहीं बना रहना है वरन् जीवन को आदर्शमय, उद्देश्य और धर्ममय बनाने के लिये नियोजित करना है। यह आयोजना यह व्रत, यह संकल्प, यह प्रतिज्ञा धारण करना ही यज्ञोपवीत पहनना है।

यज्ञोपवीत की तीन लड़ें ही महत्त्वपूर्ण संकेत करती हैं। इनसे तीन ऋणों का बोध होता है। ब्रह्मचर्य से ऋषि ऋण, यज्ञ से देव ऋण और प्रजा पालन से पितृ ऋण चुकाया जाता है। इससे ईश्वर, जीवन प्रकृति की ओर संकेत मिलता है कि माया के चंगुल से छूटने के लिये इनके आपसी सम्बन्धों का अध्यात्म विज्ञान समझना चाहिये। संसार की हर एक वस्तु को उत्पत्ति, स्थिति और विनाश की तीन अवस्थाओं में से होकर जाना पड़ता है इसलिये इनकी वास्तविकता को भली प्रकार जानकर जन्म-मरण की घटनाओं या अन्य प्रकार की हानियों से विचलित न हो जाना चाहिये। ब्रह्मा, विष्णु और महेश ईश्वरीय नियमों पर चलने का सन्देश देते हैं। सत, रज, तम से हानिकारक को घटाने और लाभदायक को बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिये। माता, पिता व आचार्य का उचित सम्मान करना चाहिये। भूत काल के अनुभव के आधार पर सुन्दर भविष्य के निर्माण के लिये वर्तमान का कार्यक्रम निर्धारित करना चाहिये। धर्म, अर्थ और काम हमारे मोक्ष में सहायक हों। शुभ काम करते हुये दैनिक, दैविक और भौतिक तापों से बचना चाहिये। अपने जीवन को सफल बनाने के लिये योग, यज्ञ और तप को उचित स्थान देना चाहिये। यज्ञोपवीत की नौ लड़ें जीवन विज्ञान को समझने, सब प्रकार की शक्ति संचय करने, श्रेष्ठता की ओर बढ़ने, मन को सुन्दर बनाने, दिव्य दृष्टि प्राप्त करने, सद्गुणों को ग्रहण करने, प्रत्येक कार्य को विवेकपूर्वक करने की संयम से जीवन यापन करने पिछड़े हुये लोगों को आगे बढ़ाने की ओर प्रयत्न करने का संकल्प लेने की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है। यज्ञोपवीत धारण कराते समय गुरु शिष्य को इन्हीं शिक्षाओं को विस्तारपूर्वक समझाने का प्रयत्न करता है और उससे व्रत लेता है कि वह नियमित रूप से गायत्री मन्त्र की साधना करेगा जिसमें वह उपरोक्त शिक्षाओं को भली प्रकार समझकर व्यवहार में ला सके। इस पुराने संकल्प की स्मृति पुनः एक वर्ष के पश्चात् श्रावणी के दिन दिलाई जाती है।

श्रावणी के दिन नया यज्ञोपवीत बदला जाता है। यूँ कहना चाहिये कि श्रावणी के दिन यज्ञोपवीत की जयन्ती मनाई जाती है। यह सम्भव है कि गृहस्थ में रहते हुये, द्विज पिछले वर्ष की शिक्षाओं को जो उसे यज्ञोपवीत धारण करते समय मिली थी, भूल गया हो। चूँकि मनुष्य जीवन को सुखी बनाने के लिये यह आवश्यक है कि यज्ञोपवीत से मिलने वाली उपरोक्त शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें इसलिये उनकी पुनः याद दिलाई जाती है। इस बीच में यदि कोई व्यक्ति कुमार्ग की ओर चल पड़ा हो या अपना पथ भूल गया हो तो वह सत्पथ पर अग्रसर हो जाये। इस दिन पिछले वर्ष की त्रुटियों पर विचार किया जाता है कि कौन-कौन सी गलतियों से हमें दुःखों, कष्टों और असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है। उनका इस दिन प्रायश्चित करना और आगामी वर्ष की रूप रेखा तैयार करना कि अब हमें अपने सुधार के लिये कौन-कौन से नियम अपनाने चाहिये।

कर्मकाण्ड में दस स्नान किया जाता था। इसके बाद पाप निवार्णार्थ हेमाद्रि संकल्प कराया जाता है, जिसमें भविष्य में पातकों, उपपातकों और महापातकों से बचने, परद्रव्य अपहरण न करने, पर निन्दा व शास्त्र निन्दा न करने, आहार-विहार में ध्यान रखने, हिंसा न करने इन्द्रियों का सदुपयोग करने और सत्य का व्यवहार आदि करने की प्रतिज्ञा लेता है। वेद का कथन है कि—

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात् व्रत से दीक्षा मिलती है, दीक्षा के समय दक्षिणा दी जाती है। दक्षिणा से श्रद्धा बढ़ती है, श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।

व्रत वह शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य की सोई हुई शक्तियाँ जागृत होती हैं। असम्भव कार्यों को सम्भव होते देखकर उसकी निष्ठा बढ़ती है। ज्यों-ज्यों उसकी निष्ठा की वृद्धि होती जाती है, त्यों-त्यों वह त्याग की भूमिका में पदार्पण करता है। त्याग द्वारा शक्तियों का विकास होकर उसकी श्रद्धा में वृद्धि होती है। श्रद्धा की दृढ़ता से सत्य का मार्ग खुल जाता है। इसलिये हमारे धर्म में व्रतों को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

श्रावणी वेद का त्यौहार है। प्राचीन काल में ऋषि मुनि इस दिन से वेद पारायण आरम्भ करते थे जिसको 'उपाकर्म कहा जाता था। वैसे तो वेद का पाठ करना द्विज मात्र का नित्य का कर्त्तव्य है परन्तु वर्षा ऋतु में उसके लिये विशेष रूप से प्रबन्ध किया जाता था। यहाँ की कृषि प्रधान जनता को श्रावण के अन्त में पर्याप्त समय मिल जाता था। क्षत्रियों और वैश्यों के कार्य भी शिथिल पड़ जाते थे। ऋषि-मुनि भी चतुर्मास में शहरों के निकट आकर वेद की कथा कहा करते थे। इन धार्मिक आयोजनों को आरम्भ करने का समय श्रावण मास की पूर्णिमा था, जो अभी तक चला आ रहा है। उस समय लोग वेद पाठ के संकल्प किया करते थे, वेद मन्त्रों को कंठाग्र करने की प्रतिज्ञा लेते थे। इन प्रतिज्ञाओं, संकल्पों और परायण करने के आधार पर ही द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी नाम पड़ा है। आज दुर्भाग्यवश हम इस परम्परा को भूल से गये हैं इसलिये वेद जैसे वृहद् ज्ञान के भण्डार से हम वंचित हो रहे हैं। इनसे पूरा लाभ उठाने के लिये हमें वेद प्रचार करना चाहिये। वेद प्रचार का संकल्प इसी अवसर पर लिया जाता है।

रक्षा बन्धन का त्यौहार भी इसी दिन मनाया जाता है। यह रक्षा सूत्र है। इनको ब्राह्मण वेद मन्त्रों से अभिमन्त्रित करते थे। तप और त्याग की शक्ति का मिलन वेद मन्त्रों की शक्ति के साथ होने से सोने पर सुहागे का काम करती है। उस समय ब्राह्मण राष्ट्र के नेता होते थे, जनता को सन्मार्ग पर लगाना उनका कर्त्तव्य था, आसुरी विचारों से रक्षा करने की जिम्मेदारी उन्हीं की थी। उस दिन वह भी अपने पुराने संकल्प को स्मरण करते थे कि द्विजातियों को ऊँचा उठाने के लिये उन्हें क्या करना है ? यदि एक वर्ष में उनके कार्य में कोई शिथिलता आ गई हो तो जागृत हो जाती थी। परन्तु खेद का विषय हैं कि आज कल हमने इस पवित्र त्यौहार को केवल अपने धनोपार्जन का साधन बना रखा है और अपने यजमान को सूत्र बाँधकर एक और दो उल्टे-सीधे मन्त्र पढ़कर पैसा ऐंठने का प्रयत्न करते हैं। जिस देश के पथ-प्रदर्शक अपने कर्त्तव्य को भूल जाते हैं, उनका पतन की ओर जाना अवश्यम्भावी है।

चूँकि ब्राह्मणों का काम धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन और उनका उपदेश करना होता था और वह स्वतन्त्र रूप से जीवन निर्वाह के लिये कोई कारोबार नहीं करते थे, इसलिये शिष्यगण उनकी आवश्यकता की पूर्ति के लिये धन, वस्त्र आदि के रूप में दक्षिणा दिया करते थे, जो आज तक प्रचलित है। श्रावणी के दिन यज्ञोपवीत को बदलते या धारण करते समय शिष्य गुरु को अपनी श्रद्धा के अनुसार भेंट करते थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में हर वर्ष शिष्य अपने गुरु की भेंट धन के रूप में देते हैं। आज दोनों ओर से शिथिलता आ गई है। इस शिथिलता को दृढ़ता में परिवर्तन करने के लिये ही यह त्यौहार मनाया जाता है।

श्रावणी पर्व का सन्देश

श्रावणी सुदी पूर्णमासी को श्रावणी का त्यौहार होता है। यह 'ज्ञान का पर्व' है। सद्ज्ञान, विद्या, बुद्धि, विवेक और धर्म की वृद्धि के लिये इसे बनाया गया है इसलिये इसे ब्राह्म पर्व भी कहते हैं। वेद का आरम्भ इस त्यौहार से किया जाता है। इस दिन से लेकर भाद्रपद वदी सप्तमी तक एक सप्ताह वेद प्रचार की प्रथा चिरकाल से प्रचलित है। प्राचीन काल में इस त्यौहार के अवसर पर गुरुकुलों में नये छात्र प्रवेश होते थे, जिनका यज्ञोपवीत नहीं हुआ, उन्हें यज्ञोपवीत दिये जाते थे। गुरु शिष्य के परम पवित्र एवं अत्यन्त आवश्यक सबन्ध की स्थापना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होती थी। वेद मन्त्रों से मन्त्रित किया हुआ रक्षा सूत्र आचार्य लोग अपने शिष्यों के हाथ में बाँधते थे, यह सूत्र उनकी रक्षा करता था। और धर्म प्रतिज्ञा के बन्धन में बाँधता था। बहिनें अपने भाइयों के हाथ में राखी बाँध कर या भुजरियाँ (गेहूँ या जौ के दिन बढ़े हुये अंकुर) देकर भाइयों को यह याद दिलाती थीं कि बहिनों की रक्षा के लिये उनका क्या कर्त्तव्य है ? भाई इसके बदले में उन्हें आश्वासन के रूप में कुछ उपहार देते थे, मानों वे कहते हों कि हम पूरी तरह सावधान हैं और बहिनों के ऊपर, नारी जाति के ऊपर, कोई विपत्ति आवेगी तो हम प्राण देकर भी उसका निवारण करेंगे। उस दिन नये-नये लता पुष्प वृक्ष आदि लगाकर संसार की शोभा और समृद्धि बढ़ाने के लिये प्रयत्न किया जाता था।

प्राचीन काल में श्रावणी पर्व का यह महत्त्व था। पर आज तो चिन्ह पूजा मात्र रह गई है। पकवान, सेंमई भात आदि विशेष भोजन खाना, ब्राह्मणों का घर-घर राखी बाँधकर पैसे मांगते फिरना, लोगों का श्रद्धा या अश्रद्धा से उन राखी बाँधने वालों को पैसा, धेला, देकर पीछा छुड़ाना, लड़कियों का भुजरियाँ बाँधना—बदले में बाप, भाई आदि द्वारा कुछ पैसे मिल जाना—बस आज तो इतनी ही चिन्ह पूजा रह गई है।

सबसे प्रधान, सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण इस श्रावणी पर्व की ऐसी दुर्दशा होना खेद जनक है। चिन्ह पूजा से काम न चलेगा अब हमें अपने पूजनीय पूर्वजों द्वारा बड़े गंभीर सोच विचार के साथ बनाये हुये इस त्यौहार का महत्त्व समझना और उनसे लाभ उठाना होगा, तभी हम अपने गौरव की पुनः प्राप्त कर सकेंगे और अज्ञान निशा को नष्ट कर सकेंगे।

(१) श्रावणी को वेद पूजा होती है। वेद का अर्थ है—धर्म पूर्ण ज्ञान। चारों वेदों में जितना ज्ञान भरा पड़ा है, वह सब धर्म पूर्ण है। उसको समझने और अपनाने से जीवन सब प्रकार की सुखशान्ति से भर जाता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों जीवन फलों की प्राप्ति होती है। मनुष्य का शरीर बहुत ही तुच्छ है, इसके हाड़मांस आदि को बाजार में बेचा जाये तो उसकी कीमत करीब पौने पन्द्रह आना होती है। इससे तो पशुओं का शरीर कहीं अधिक मूल्यवान है। शारीरिक बल में पशु मनुष्य से अधिक बलवान होते हैं फिर भी मनुष्य सब प्राणियों में शिरोमणि है, यह उच्च स्थान उसे बुद्धिबल के कारण ही मिला है। जिसमें जितना अधिक ज्ञान है, वह उतना ही बड़ा है। एक कुली ओर एक बैरिस्टर के शरीर में बहुत अन्तर नहीं होता पर उन दोनों में जो बुद्धिबल का अन्तर है, उसी के कारण उनकी स्थिति में भारी अन्तर रहता है। मनुष्य प्राणी में जो चमत्कारी शक्तियाँ है वह उसके मस्तिष्क में है। मस्तिष्क के द्वारा ही वह असुर या देवता, दरिद्र या धनपति, तिरष्कृत या पूजनीय, रोगी या बलवान बनता है। इसीलिये ज्ञान बल को सबसे ऊँचा स्थान दिया गया है। इस ज्ञान के, बुद्धि, मस्तिष्क के परिमार्जन के लिये ही वेद की पूजा की जाती है। वेदों के मन्त्र-सत्ज्ञान के भण्डार हैं। उनके पढ़ने सुनने, समझने और आचरण करने से सद्ज्ञान बढ़ता है। असत् ज्ञान तो चाहे जहाँ मिल सकता है, पर सत्ज्ञान के लिये वेद का ही आश्रय लेना पड़ता है। यहाँ पर एक बात और भी स्मरण रखनी चाहिये कि वेद का ज्ञान परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य की आत्मा को दिया हुआ है, बिना पढ़े लोग भी अपनी अन्तरात्मा में वेद की वाणी सुन सकते हैं।

वेद पूजा से, ज्ञान की महत्ता, प्रतिष्ठा और उपयोगिता को मनुष्य समझता है और उसकी श्रद्धा सद्ज्ञान में बढ़ती है, इसीलिये श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद पूजा का विधान है।

(२) यज्ञोपवीत में नौ तार होते हैं। यह नौ सूत, नौ गुणों के प्रतीक हैं। तीन लड़ों से प्रत्येक में तीन तार होते हैं। यह तीन लड़ें जीवन के तीन प्रधान अंगों का संदेश देती हैं। जीवन तीन भागों में विभक्त है (१) आत्मिक क्षेत्र, (२) बौद्धिक क्षेत्र, (३) सांसारिक क्षेत्र यही यज्ञोपवीत की तीन लड़ें हैं। इनमें से हर एक में जो तीन-तीन तार हैं उनका तात्पर्य उन तीन तीन गुणों से है, जो इस प्रत्येक क्षेत्र के अन्तर्गत होते हैं। आत्मिक क्षेत्र की तीन सम्पत्तियाँ हैं: (१) विवेक, (२) पवित्रता, (३) शान्ति। बौद्धिक क्षेत्र की तीन सम्पत्तियाँ हैं : (१) साहस, (२) स्थिरता, (३) कर्त्तव्यनिष्ठा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सांसारिक क्षेत्र की तीन सम्पत्तियाँ हैं (१) स्वास्थ्य, (२) धन, (३) सहयोग। इस प्रकार यह ६ गुण मनुष्य के लिये आवश्यक हैं। जिसमें यह नौ गुण नहीं हैं जो इन नो गुणों को प्राप्त करने की इच्छा या कोशिश भी नहीं करता वह शूद्र है। जन्म से सभी मूर्ख नासमझ, पशु तुल्य होते हैं पर बड़े होने पर जीवन के तीन क्षेत्रों में विकास करने और प्रत्येक क्षेत्र में तीन-तीन गुण प्राप्त करने के महत्त्व को समझ लेता है और उनकी प्राप्ति के लिये प्रयत्न आरम्भ कर देता है तो उसका नया जन्म हुआ—दूसरा जन्म हुआ—समझा जाता है। यही द्विजत्व है। इस द्विजत्व की नौ गुणों के विकाश की जिम्मेदारी कन्धे पर सदैव धारण किये रहने के चिन्ह स्वरूप तीन तार का जनेऊ, धारण किया जाता है।

श्रावणी के दिन पुराना यज्ञोपवीत बदल कर नया धारण करते हैं अर्थात् उस जिम्मेदारी को नये सिरे से समरण करते हैं। वेद पूजा के साथ यज्ञोपवीत धारण करने का तात्पर्य यह है कि हम ऐसे ज्ञान को ग्रहण करें, जिससे मानव जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक इन परम पुनीत नौ दिव्य सम्पत्तियों की प्राप्ति हो सके।

जिनका याज्ञोपवीत संस्कार पहले नहीं हुआ है उन सबकी सामूहिक रूप से श्रावणी पर्व पर यज्ञोपवीत लेना चाहिये। शुद्र वे हैं जिनकी चेतना अत्यन्त जड़, पशु तुल्य है, जिनमें आत्मोन्नति के लिये कोई आकांक्षा नहीं, ऐसे मानव पाषाणों के लिये यज्ञोपवीत का भला क्या महत्त्व हो सकता है ? उनके लिये उसे धारण करना भी बेकार है। सूत का अनावश्यक दुरुपयोग न हो यह सोचकर हमारे धर्माचार्यों ने ऐसे जड़ बुद्धि लोगों के लिये—शूद्रों के लिये—यज्ञोपवीत धारण का निषेध कर दिया है। ऐसे लोग यदि पहने भी तो बेचारे यज्ञोपवीत को और लजावेंगे। यज्ञोपवीत पहनते समय, बदलते समय और उसे धारण करते समय उन सब तथ्यों पर काफी मनन करना चाहिये, जो यज्ञोपवीत के साथ सन्निहित हैं।

(३) रक्षा बन्धन का तात्पर्य है गुरुजनों से आशीर्वाद प्राप्त करना। माता, पिता, गुरु तथा इनके समकक्ष और भी जो गुरुजन हैं उनकी पूजा, प्रतिष्ठा, वन्दना करना गुरु पूजा कहलाती है। चाचा, ताऊ, चाची, भाई, बाबा, दादी, बड़े भाई, बड़ी भावज, बुआ, बड़ी बहिन, अध्यापक, पुरोहित, स्वामी, यह सब गुरुजन हैं। इनके निकट जाकर उनके चरण स्पर्श करना, हाथ जोड़कर नम्रतापूर्वक उनके प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता के भाव प्रकट करना, जो भूलें हुई हैं, उनके लिये क्षमा मांगना, कृपा रखने एवं आशीर्वाद देने की प्रार्थना करना यह रक्षा बन्धन की प्रार्थना है। इस प्रार्थना के प्रत्युत्तर में गुरुजन अपने सहज वात्सल्य से प्रेरित होकर प्रार्थी को आशीर्वाद देते हैं और अपने आशीर्वाद का प्रतीक एक रक्षा सूत्र उनके दाहिने हाथ में बाँधते हैं। यह रक्षा सूत्र हाथ का कता हुआ, हल्दी रोली या केशर से रंगा हुआ होना चाहिये। बाजारू सूत से बनी हुई चमकदार राखियाँ इस कार्य के लिये सर्वथा अनुपयुक्त हैं। गुरुजनों को अपने हाथ से सूत कात कर यह राखी बनानी चाहिये, जिससे गान्धी जी का प्रिय चक्र सुदर्शन चर्खा चलना वे भूलने न पावें और पवित्रतम भावनाओं के साथ स्वयं ही रक्षा सूत्र तैयार करें।

राखी बँधवाने के बदले में गुरुजनों को पैसे बाँटना आवश्यक नहीं। गुरुजन बच्चे नहीं होते जिन्हें पैसे देकर प्रसन्न किया जा सके और न ये भिक्षुक होते हैं, जिन्हें किसी लोभ से रक्षा बन्धन बाँधने का प्रयोजन हो। हाँ, लोक सेवी ब्रह्मकर्मा पुरोहितों को अन्य पर्वों की भाँति इस पर्व पर भी दान करना चाहिये, चाहे उसे रक्षा बन्धन की दक्षिणा कहा जाये या और कुछ क्योंकि यदि लोकसेवी व्यक्तियों के निर्वाह एवं लोकहित के कार्यों के लिये मुक्त हस्त से दान देने की परम्परा कायम रखी जायेगी तो ही संसार में धर्म वृद्धि होगी, कंजूसी तो एक प्रकार की अनावृष्टि है, जिसके कारण सार्वजनिक धर्म वृद्धि की, सुख शान्ति की, खेती सूख जाती है।

(४) बहिनें भाइयों को राखी बाँधती हैं। अर्थात् वे स्मरण दिलाती हैं कि उनका उत्तर-दायित्व केवल अपने ही बाल बच्चों की रक्षा तक सीमित नहीं है, वरन् बहिनों की सुरक्षा की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिम्मेदारी भी उनकी है। जो जाति अपनी नारियों के कष्टों को दूर करने का, उन्हें सब प्रकार सुखी बनाने का, उनकी ओर कुदृष्टि करने वालों को मजा चखाने का, कर्त्तव्य पालन नहीं करती, वह जाति नष्ट हो जाती है, उसमें वर्ण शंकर पैदा होते हैं और पारिवारिक सुख शान्ति मिट कर कपट, क्लेश ओर द्वेष का साम्राज्य छा जाता है। इसलिये बहिनों की रक्षा के लिये राखी बाँधी जाती है। यहाँ बहिन समस्त नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती है और भाई को कर्त्तव्य बन्धन में बाँधती है कि पौरुष युक्त पुरुष होने के नाते नारी जाति की ओर से भेजी हुई यह राखी-चुनौती के रूप में तुम्हारे हाथ में बाँधी जाती है। हम बहिन, बुआ या बेटी अपनी रक्षा के लिये केवल पति पर निर्भर नहीं है वरन् भाइयों को भी अपने सुरक्षा के लिये प्रतिज्ञा बद्ध करती हैं। किसी अत्याचारी द्वारा-बलात् किसी नारी पर इसलिये अत्याचार न होने पावे, चूँकि वह नारी है, अबला है अशक्त है अन्यायी से बदला नहीं ले सकती। तुम्हारा बल हर अबला की न्यायोचित सहायता के लिये ढाल बने यही राखी की चुनौती है।

(५) भुजरियों का आरोपण और उनकी पूजा यह वृक्षारोपण महोत्सव की चिन्ह पूजा है। श्रावणी के अवसर पर वृक्ष, फल, पुष्प, पौधे, लता, औषधि, घास आदि वनस्पतियों का आरोपण किया जाता है। वनस्पति का उत्पादन संसार की कितनी बड़ी सेवा है और इससे प्राणियों का कितना बड़ा हित होता है इस पर जितना विचार किया जाये उतना ही महत्त्व प्रकट होता है। वायु में फैले हुये विषैले तत्व (कार्बन) को वृक्ष खाते हैं और बदले में प्राण प्रद वायु (ऑक्सीजन) हमें प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक बताते हैं कि वर्षा वहीं अधिक होती है, जहाँ वृक्ष अधिक होते हैं, जिस प्रदेश में वृक्ष कम हो जाते हैं, वहाँ वर्षा भी कम होने लगती है। पत्तियों के खाद से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। लकड़ी दैनिक जीवन की आवश्यक वस्तु है, हर मनुष्य जलाने में, मकान में, चारपाई में, फर्नीचर में, व्यवसायिक कार्यों में, लकड़ी खर्च करता है, यदि उस खर्चे के बदले में, पैदावार न बढ़ाई जाये तो धीरे-धीरे लकड़ी का अकाल पड़ने लगेगा। वृक्षों की छाया में अनेक प्राणी आराम पाते हैं, उनके फलों में प्राण पोषक विटामिन तत्व होते हैं, जो स्वास्थ्य रक्षा के आवश्यक अंग हैं, फूलों की सुगन्ध और सौन्दर्य नेत्र और मस्तिष्क की बड़ी शीतलता मिलती है। औषधियों की जड़ी-बूटियाँ तो एक प्रकार की अमृत प्रतिमा ही है, उनसे कितने ही रोगी, अकाल मृत्यु के मुख में जाते-जाते बच जाते हैं और कठिन बीमारियों से छुटकारा पाते हैं। छप्परों पर, दरवाजों पर वृक्षों पर छाई हुई बेलें रोते हुये, चिन्ता से जलते हुये मनुष्य तक को शान्ति प्रदान करती है। सघन वृक्षों के प्रदेश में रहने वाले मनुष्य अधिक स्वस्थ, शान्तचित्त और दीर्घजीवी होते हैं यह बात भली प्रकार सिद्ध हो चुकी है।

इन सब बातों पर ध्यान रखते हुये श्रावणी के पुण्य पर्व पर—वृक्षारोपण यज्ञ का महात्म्य माना जाता है। खेतों पर, खाली भूमियों में, बंजरों में, घर में, द्वार पर, जहाँ भी सुविधाजनक स्थान मिल सके वहाँ फलों के वृक्ष लकड़ी के वृक्ष, फूलों के पौधे, बेलें, औषधियाँ, तरकारियाँ बोनी चाहिये या उनकी पौध लगानी चाहिये। वर्षा ऋतु का समय इस कार्य के लिये बहुत सुविधाजनक होता है। इसलिये जितनी अधिक वनस्पति उत्पन्न की जाये उतना ही श्रेष्ठ है, शुभ है, पुण्य है। यह कार्य केवल पुरुष ही करें ऐसी बात नहीं है, स्त्रियाँ भी इस यज्ञ में अपना भाग पूरा करती है। वे अधिक नहीं कर सकती तो घर में छोटे मिट्टी के गमलों में छोटे छोटे पौधे बोती हैं,पुष्प आदि के बीज नहीं मिलते तो घर में रखे हुए गेहूँ, जौ आदि अन्न को ही बो लेती हैं और उन अंकुरों की श्रावणी के दिन पूजा करती हैं। भुजरियों की पूजा का यही कारण है। कितने ही घरों में इस अवसर पर तुलसी की स्थापना या पूजा की जाती है।

श्रावणी पर्व पाँच तथ्यों का सन्देश प्रतिवर्ष हमारे लिये लाता है। यदि उन सन्देशों को हम सुनें और उनके अनुसार आचरण करें तो यह पर्व हमारे लिये सब प्रकार मंगलमय हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञान और कर्म का समन्वय पर्व श्रावणी

उपवीत नवीनीकरण और शिखा सिंचन श्रावणी पर्व के दो प्रमुख कृत्य है। इन कृत्यों में निहित शिक्षाओं को जितना गम्भीरता से समझा जा सके उतनी ही मनुष्य जीवन को गरिमामय बनाने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। शिखा और यज्ञोपवीत में निहित शिक्षाओं का विवेचन एक अलग ही विषय है। पर उन प्रतीकों के माध्यम से वरी गयी निष्ठाओं का सद्ज्ञान-विवेक और कर्मनिष्ठा कर्त्तव्य मर्यादा को सदैव स्मरण रखा जाये तो कहना नहीं होगा कि मनुष्य अपने जीवन का सम्पूर्ण आनन्द अपनी परिपूर्णता के साथ उठाता हुआ शान के साथ जी सकता है।

श्रावणी पर्व पर पुराना यज्ञोपवीत बदला जाता है और नया पहना जाता है। मनुष्य परमार्थ प्रयोजनों में इतना भुलक्कड है कि कर्त्तव्य मर्यादा के सूत्र से बन्धन आकण्ठ नाभि आबद्ध होने पर—हमेशा यज्ञोपवीत पहने रहने पर भी उसकी शिक्षाओं आदर्शों को भूल जाता है। यज्ञोपवीत संस्कार के समय यदि कुछ लोगों को यज्ञोपवीत की शिक्षायें भली भाँति समझायी गयी हैं, बाजे वक्त उन्हें भी उन शिक्षाओं का स्मरण यज्ञोपवीत नया-नया लगने तक तो रहता है पर जब वह अभ्यास में आ जाता हे तो उनके स्थूल नियमों का पालन भी यन्त्रवत् होने लगता है अर्थात् ध्यान ही नहीं है कि हाथ उठ रहे हैं और कान में यज्ञोपवीत चढ़ा रहे हैं और हाथ है कि अपना काम कर रहे हैं। कारण यह कि ध्यान उस समय कहीं और ही रहता है।

कहने का अर्थ यह कि संस्कार आयोजन के अवसर पर यज्ञोपवीत और शिखा का महत्त्व शिक्षण समझ लेने के बावजूद भी प्रायः लोगों को उनका स्मरण नहीं रहता तो भारतीय मनीषियों ने श्रावणी के अवसर भारतीय धर्म संस्कृति के इन दो प्रधान प्रतीकों को इनमें निहित शिक्षाओं, आधार भूत सिद्धान्तों को स्मरण में लाने के लिये इन दो विशेष कृत्यों की परम्परा स्थापित की और यह व्यवस्था तब से आरम्भ हुई, जब से भारतीय संस्कृति का विकास होता चला—प्राचीन से प्राचीन ग्रन्थों में इनका उल्लेख है—तभी से इस परम्परा का आरम्भ हुआ भी माना जायेगा। उपवीत नवीनीकरण के सन्दर्भ में श्रावणी पर्व को आत्मावलोकन का पर्व भी कहा जा सकता है। उस दिन पर्वायोजन में सम्मिलित होने तथा उसे मनाने वाले व्यक्ति को स्वयं ही अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा, मर्यादा और विवेकशीलता की ओर प्रवृत्ति को परखना चाहिये। आगे के कृत्यों में इन्हीं त्रुटियों के प्रायश्चित स्वरूप हेमाद्रि संकल्प पिछले दिनों हुई अमर्यादाओं और अवांछनीयताओं का प्रायश्चित विधान आता है। पिछली हुई भूलों के लिये सच्चे हृदय से पश्चाताप, जिनके प्रति वे हुई हैं, उनके लिये क्षमा याचना और आगे के लिये उन्हें पुनः न होने देने का संकल्प हेमाद्रि संकल्प का मर्म रहस्य है।

शिखा सिंचन और याज्ञोपवीत नवीनीकरण को एक प्रकार से उनका वार्षिक संस्कार भी कहा जा सकता है। जैसे प्रतिवर्ष जन्म दिन और विवाह दिन मनाये जाते हैं—उसी प्रकार श्रावणी पर्व की आत्मिक कायाकल्प का संकल्प दिन भी कहा जा सकता है। शिखा के रूप में विवेकशीलता को जीवन में सर्वोपरि प्रतिष्ठा देना तथा यज्ञोपवीत को—कर्त्तव्यनिष्ठा को अपनाये रहना—ज्ञान और कर्म समन्वय माध्यम से स्वयं को प्रगति के पथ पर अग्रसर करते रहना अपनी जीवन नीति बन जाये तो जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में सन्तोषजनक रूप से अग्रसर हुआ जा रहा है—यह गौरव किया जा सकता है।

शिखा सिंचन और उपवीत नवीनीकरण के बाद जो कृत्य सम्पन्न किये जाते हैं—प्रायश्चित विधान, वेद एवं ऋषि पूजन, रक्षा बन्धन और वृक्षारोपण। इन चार कृत्यों के पीछे भी महत्त्वपूर्ण जीवन शिक्षण छुपा पड़ा है। हेमाद्रि संकल्प पढ़ते और प्रायश्चित विधान पूरा करते हुये अब तक के सभी मानवीय नैतिक अपराधों के लिये वे किसी भी सजीव प्राणी या निर्जीव वस्तु के प्रति किये गये हों क्षमा याचना की जाती है।

उसी विश्व वसुधा के वासी वे भी हैं, जिसका कि मनुष्य और उन्हें भी उसकी विभूतियों संपदाओं के उपभोग का उतना ही अधिकार है जितना कि मानव को। परन्तु मनुष्य अपनी स्वार्थ लिप्सा के कारण कहें या अन्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कमियों कमजोरियों के कारण उनके इस अधिकार पर व्याघात पहुँचाता है अतः यह अनुचित है और अवांछनीय। अब तक जाने अनजाने जो अनुचित कर्म बने हैं और सृष्टि परिवार के किसी भी सदस्य को क्षति पहुँची है तो उनसे क्षमा प्रार्थना, अपने में पश्चाताप और आगे के लिये भूल सुधार का संकल्प होना चाहिये।

वेद एवं ऋषि पूजन भी इस अवसर पर किया जाता है। वेद का अर्थ है सद्ज्ञान और ऋषि का अर्थ है वे आप्त महामानव जिनकी करुणा के फलस्वरूप वह सुलभ हो सका। सद्ज्ञान का वरण जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है जिनसे वह प्राप्त हुआ या जिनके परिश्रम, त्याग, तप और करुणा से वह सुगम हो सका उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाये, श्रद्धानत हुआ जाये। गंगा की जितनी महिमा है और लोगों में सुरसरि के प्रति जितनी श्रद्धा है उसे पृथ्वी पर लाने वाले भागीरथ की महिमा और लोक श्रद्धा से कम नहीं आंका जाता। यहाँ तक कि दोनों को एक साथ पूजा जाता है और एक साथ जयन्तियाँ भी मनायी जाती हैं। वेद-सद्ज्ञान और उनके द्रष्टा ऋषि मनीषियों को भी उतना ही श्रद्धास्पद मानना चाहिये।

शिखा सिंचन, उपवीत नवीनीकरण एवं वेद ऋषि पूजन के बाद रक्षा बन्धन होता है। रक्षा सूत्रों को एक-दूसरे के हाथों में बाँधने का अर्थ है, देश और समाज की धर्म और संस्कृति की सुरक्षा सुव्यवस्था बनाये रखने के लिये हम एक धर्मयोद्धा के रूप में सदैव कमर कसे तैयार रहें। मध्यकाल में कन्याओं द्वारा रक्षा-बन्धन की परम्परा चली। इस परम्परा में एक और महत्त्वपूर्ण तत्व का समावेश हुआ। नारी मातृशक्ति है, वह बहिन, पुत्री और माता की दृष्टि से देखी जानी चाहिये। यह प्रेरणा तो रक्षा-बन्धन में निहित है पर उसकी गरिमा को लांछित करने के लिये, अपवित्र करने के लिये जो कुप्रयास चले, उन्हें रोकने का आह्वान भी रक्षाबन्धन करता है। नारी को खिलौना बनाकर उसकी शालीनता को वैश्या स्तर पर गिराने की जो कुचेष्टा कला के नाम पर चली उन पेशेवर दुशासन दुर्योधनों को यह धृष्टता करने से रोकने का व्रत बन्धन भी इसके साथ ही जुड़ा है।

आयोजन के अन्त में एक वृक्षारोपण भी सामूहिक रूप से किया जाये। वृक्षारोपण का आज के समय में बड़ा महत्त्व है और वर्षा ऋतु भी इसके लिये अनुकूल ऋतु है। किसी सम्भ्रान्त व्यक्ति के हाथों ऐसे स्थान पर वृक्षारोपण कराया जाय, जहाँ उसके बाद पानी और रखवाली का समुचित प्रबन्ध हो सके। इस दिन लोग अपने-अपने घरों पर तुलसी के पौधों एवं शाक वाटिका लगाने का प्रबन्ध भी कर सकते हैं।

श्रावणी-उद्देश्य और शिक्षा

वर्त्तते श्रावणी पर्वो ह्यात्मनिर्माणकारकः।
कर्त्ता चात्मविकासस्य चरित्रस्य सुधारकः।। १।।

अर्थ—श्रावणी का पर्व आत्म-निर्माण करने वाला, आत्मविकास का विधायक तथा चरित्र को सुधारने वाला है।

अस्मिन्निरीक्षणं कार्यमात्मनः प्रतिव्यक्तिना।
स्वात्मनस्त्रुटिदौर्बल्यमनुसन्धातव्य यत्नतः।। २।।

अर्थ—इस पर्व पर प्रत्येक व्यक्ति को आत्म निरीक्षण करना चाहिये। अपनी त्रुटियों तथा दुर्बलताओं को यत्न से खोज डालना चाहिये।

सुधारस्य त्रुटीनां वै दौर्बल्यमार्जनस्य वा।
प्रयत्नः सदृढः कार्यः श्रमेण साहसेन च।। ३।।

अर्थ—अपनी त्रुटियों का सुधार तथा दुर्बलताओं का निर्धारण करें। प्रयत्न एवं श्रम पूर्वक सुदृढ़ कार्य साहस के साथ करने चाहिये।

सदाचारो मनुष्याणामुत्तमो हि गुणः स्मृतः।
सार्थकं जन्मतस्यैव नरो यः सदाचारवान्।। ४।।

अर्थ—सदाचार मनुष्यों का एक उत्तम गुण है, जो मनुष्य सदाचार वाला है, उसी का मानवीय जन्म सार्थक है।

पूर्वं विहित पापानां प्रायश्चित्तं समाचरेत्।
वर्जयेत्पुनरावृत्तिं मनसावहितेन च।। ५।।

अर्थ—पिछले अर्थात् पूर्वकाल में किये हुये पापों का प्रायश्चित करना चाहिये और भविष्य में उनकी पुनरावृत्ति को सावधान मन से रोकना चाहिये।

यज्ञोपवीते सन्देशो गुणानां नवानां सताम्।
एतैर्युक्तो भवेद्यज्ञोपवीतोद्देश्यस्थ शुचिः।। ६।।

अर्थ—यज्ञोपवीत में नौ सद्गुणों का सन्देश है। इन गुणों से युक्त बनाना ही यज्ञोपवीत का पवित्र उद्देश्य होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्यनिष्ठा निर्भयता ह्यौदार्यं दूरदर्शिता।
बलिष्ठता संयमश्च माधुर्यंच विनम्रता।।७।।
कर्त्तव्यपरता ह्येतेविख्याताः सद्गुणा नव।
उपवीती भवेदेतैर्युक्त इत्युद्दिशति स स्फुटम्।।८।।

अर्थ—सत्यनिष्ठा, निर्भयता उदारता, दूरदर्शिता, बलिष्ठता, संयम, मधुरता, विनम्रता और कर्त्तव्यपरायणता ये नौ सद्गुण प्रसिद्ध हैं। उपवीतधारी इन उक्त गुणों से युक्त होना चाहिये। यही उसका स्पष्ट उद्देश्य होता है।

रक्षाबन्धननामार्य पर्वः शिक्षयत्येव यत्।
पारस्परिकेषु प्रेम्णो बन्धच्वेध रक्षणम्।।९।।

अर्थ—रक्षाबन्धन नाम वाला यह पर्व यही शिक्षा देता है कि पारस्परिक प्रेम के बन्धनों से रक्षा होती है।

ऋषिभिरुक्तं सन्मन्त्रं कुर्याच्चात्मसात्पुमान्।
इत्येयं श्रावणीपर्वो ह्युपदेशं प्रयच्छति।।१०।।

अर्थ—ऋषियों के द्वारा कहे हुये सन्मन्त्र को अपनाना चाहिये। यह श्रावणी का पुनीत पर्व यही उपदेश देता है।

मुख्योद्देश्यो हि पर्वस्य वर्त्तते सर्वदा नरः।
भूत्वा कर्त्तव्यनिष्ठो वै तिष्ठेच्चेहात्मवान्खलु।।११।।

अर्थ—इस श्रावणी पर्व का मुख्य उद्देश्य यही है कि मनुष्यों को सदा कर्त्तव्यनिष्ठ होकर इस संसार में आत्मवान् रहना चाहिये।

श्रावणी पर्व

माहात्म्य बोध

एकोऽहं बहुस्याम्' की ब्रह्म आकांक्षा जिस दिन पूरी हुई कहते हैं उस दिन श्रावणी थी। एक से बहुत होना, सहयोग, संपर्क, स्नेह के आधार पर आत्मा में उल्लास विकसित होता है और एकाकीपन की नीरसता दूर होती है। यही ब्रह्म ने किया उसे अकेलापन भाया नहीं। अपनी विभूतियों को अपने तक सीमित रखकर भला उस स्थिति में सन्तुष्ट भी कैसे रहता। विष्णु की नाभि में से कमल नाल निकली और वह पुष्प बनकर खिल पड़ी। उसी मकरन्द का भ्रमर ब्रह्मा है—प्रजापति। संकल्प शक्ति क्रिया में परिणत होती है और उसी का स्थूल रूप, वैभव एवं घटनाक्रम बन कर सामने आता है, नाभि में से अन्तरंग-बहिरंग बनकर विकसित होने वाली कर्मबल्लरी को ही पौराणिक अलंकार में कमलबेल कहा गया है, पुष्प इसी बेल का परिपक्व परिणाम है।

सृष्टि का सृजन हुआ, उसमें दो तत्व प्रयुक्त हुये: (१) ज्ञान, (२) कर्म। इन दोनों के सम्मिश्रण से सूक्ष्म चेतना-संकल्प शक्ति स्थूल वैभव में परिणत हो गई और संसार का विशाल कलेवर बनकर खड़ा हो गया, जिसमें ऋद्धि-सिद्धियों का आनन्द-उल्लास भर गया—यह कमल की पंखुड़ियाँ हैं। 'मूल है ज्ञान और कर्म जो ब्रह्म की इच्छा और प्रत्यावर्तन द्वारा सम्भव हुआ। ज्ञान और कर्म के आधार पर ही मनुष्य की गरिमा का विकास हुआ है, इन्हें जो जितना परिष्कृत एवं प्रखर बनाता चलता है, उसकी प्रगति पूर्णता की दिशा में उतनी ही तीव्र गति से होती है—इस तथ्य को स्मरण रखने के लिये भारतीय धर्म के दो प्रतीक हैं—एक ज्ञान ध्वज शिखा, जो मस्तकरूपी किले के ऊपर फहराई जाती है। दूसरा यज्ञोपवीत कर्त्तव्य मर्यादा, जिसमें मनुष्य को आगे और पीछे से पूरी तरह कस दिया गया है। शिखा स्थापन और यज्ञोपवीत धारण उसी ज्ञान और कर्म को परिष्कृत बनाये रखने की चेतावनी है, जो जीवन को उसके आदि उद्गम पर ही दे दी गई थी और जो अद्यावधि अपनी उपयोगिता यथावत् बनाये हुये है।

श्रावणी पर्व पर पुराना यज्ञोपवीत बदला जाता है और नया पहना जाता है। प्रायश्चित संकल्प पढ़ते हैं और पिछले दिनों की हुई अवांछनीयताओं का प्रायश्चित विधान सम्पन्न करते हैं। ऋषिपूजन भी इसी समय किया जाता है। वेद पूजन भी वेद अर्थात् सद्ज्ञान। ऋषि अर्थात् वे व्यक्ति जो सद्ज्ञान को सत्कर्म में परिणत करने के लिये साहसिक तपश्चर्या करते हैं, कष्ट साध्य रीति-नीति अपनाते हैं। शिखा में सिंचन यज्ञोपवीत, नवीनीकरण एक प्रकार से उनका वार्षिक संस्कार है, जैसे हर साल जन्मदिन और विवाह दिन मनाये जाते हैं। मोटर, रेडियो, बन्दूक आदि के लाइसेन्स नये होते हैं, उसी प्रकार यज्ञोपवीत और शिखा जैसे प्रकाश स्तम्भों को कहीं उपेक्षा विस्मृति के गर्त में तो नहीं डाल दिया गया—इसका निरीक्षण-विश्लेषण नवीनीकरण से करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रावणी पर्व ब्राह्मण के, ऋषित्व के, अभिवर्धन का पर्व है। सद्ज्ञान एवं सद्कर्म की मर्यादाओं का कहीं खण्डन-अतिक्रमण हुआ हो तो उसके प्रायश्चित के लिये तथा उच्च आदर्शवादी जीवन को अधिक तेजस्वी बनाने के लिये इस पर्व पर आत्म संकल्प एवं परमात्म अनुदानों का भोग करने का विधान बनाया गया है। सामूहिक रूप से संक्षिप्त ही सही किन्तु भाव भरे उपचारों द्वारा यज्ञीय भाव जनमानस में जाग्रत करने का प्रयास किया जाना चाहिये।

।। पर्व व्यवस्था ।।

श्रावणी पर्व पर द्विजत्व के संकल्प का नवीनीकरण किया जाता है। उसके लिये परम्परागत ढंग से लोग एकत्रित होकर तीर्थ आह्वान करके, दश स्नान, हेमाद्रि संकल्प एवं तर्पण आदि कर्म करते हैं। इसके लिये किसी जलाशय पर जाते हैं अथवा मन्दिर आदि पवित्र स्थल पर जलपात्र-बाल्टी आदि के सहारे यह सब करते हैं। यह सब उपचार प्रायश्चित के अन्तर्गत आते हैं, उसके लिये नीचे लिखे अनुसार क्रम बना लेना चाहिये।

(१) षटकर्म (सामान्य प्रकरण), (२) तीर्थ आवाहन, (इसी पर्व में अगले पृष्ठों पर (३) हेमाद्रि संकल्प (इसी पर्व में) (४) दशस्नान (पृष्ठ ३५) (५) यज्ञोपवीत नवीनीकरण (पृष्ठ ६६) यदि नवीन यज्ञोपवीत देना हो तो भाग एक के यज्ञोपवीत प्रकरण से लें। वैसे समयाभाव में पृष्ठ (६६) वाला प्रकरण भी पर्याप्त माना जा सकता है। (६) तर्पण (पृष्ठ १३५) (७) अर्घ्यदान नमस्कार आदि (सामान्य प्रकरण से) कराकर परम्परा श्रावणी उपकर्म पूरा किया जा सकता है।

इस श्रावणी उपाकर्म में थोड़े से गिने-चुने लोग ही सम्मिलित हो पाते हैं। शहरों में तो यह और भी कठिन हो जाता है। सामूहिक पर्व पूजन में बड़ी संख्या में लोग एकत्रित हो जाते हैं और उसमें कठिनाई भी नहीं होती। इसलिये जलाशय पर किये जाने वाले उपचारों के मूलभूत तत्व भी पर्व पूजन क्रम के साथ संयुक्त करके अधिक उपयोगी और अधिक पुण्यप्रद श्रावणी पर्व का सामूहिक क्रम यहाँ दिया जा रहा है, जहाँ उसे दो खण्डों में करना हो वहाँ वैसा भी किया जा सकता है। श्रावणी पर सामूहिक पर्वायोजन का क्रम इस प्रकार चलाया जाना चाहिये।

श्रावणी पर्व के लिये वयस्कों और बालकों, नर-नारी सभी में उत्साह रहता है। पूजन मंच के सामने सबको बिठाने की व्यवस्था पहले से भी निर्धारित रहे।

—अभ्यागतों को दो वर्गों में विभक्त किया जाये। दोनों के लिये अलग-अलग खण्ड निश्चित रहें। एक खण्ड में केवल उन्हें बिठाया जाय, जो यज्ञोपवीत-परिवर्तन आदि सभी उपचारों में भाग लेंगे। दूसरा वर्ग जो केवल पूजन, रक्षा बन्धन, वृक्षारोपण जैसे गिने-चुने कर्मकाण्डों में ही भाग लेंगे, उन्हें अलग खण्ड में बिठाया जाय, बालक-बालिकायें भी उसी वर्ग में रहें।

सभी उपचार करने वालों को पूजन मंच के निकट तथा अधिक खुली पंक्तियों में बिठायें ताकि बार बार पूजन सामग्री देने, उपचार करने में कठिनाई न हो। सीमित उपचार वालों को अपेक्षाकृत सघन भी बिठाया जा सकता है।

पूर्व पूजन में प्रयुक्त होने वाली सभी वस्तुयें पहले से समुचित मात्रा में रखी जायें, उन्हें कार्य प्रारम्भ के पूर्व जाँच लिया जाये, जैसे देवमंच की सज्जा, ब्रह्माजी का चित्र या प्रतीक नारियल, ऋषियों का प्रतीक कुशाओं का छोटा पूला। वेद पूजन के लिये पीले वस्त्र में लपेटी पुस्तक, पूजन-सामग्री एवं पुष्प-अक्षत यथेष्ट मात्रा में, शिखा सिंचन के लिये चन्दन या सुगंधियुक्त जल, यज्ञोपवीत परिवर्तन के लिये यज्ञोपवीत, रक्षा बन्धन के लिये कलावा-सूत्र, वृक्षारोपण के लिये तुलसी अथवा फूल लगाने योग्य वृक्षों की पौध। यदि यज्ञ करना है तो उससे सम्बन्धित सभी सामग्री।

"सभी व्यवस्था सटीक बनाकर, स्वयंसेवकों एवं संचालकों को यथानुशासन अपने-अपने उत्तरदायित्व सम्भालते हुये पर्व पूजन क्रम प्रारम्भ करें।

"पूजन मंच पर प्रतिनिधि द्वारा षट्कर्म से लेकर रक्षा विधान तक के सभी उपचार, समय एवं परिस्थितियों की मर्यादा के अनुसार करायें। उसके बाद विशेष उपचार भावनापूर्वक प्रेरणा उभारते हुये सम्पन्न करायें जायें।

"अन्त में यज्ञ अथवा दीप-यज्ञ-आरती आदि के समापन प्रक्रिया के उपचार यथानुशासन कराये जायें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

।। पर्व पूजन क्रम ।।

उपस्थित श्रद्धालुओं को संक्षेप में पर्व की भूमिका बतलाकर, भाव जागरण करके षटकर्म आदि कृत्य करायें। कदाचित सामूहिक रूप से षटकर्म कराना सुलभ प्रतीत न हो तो 'ॐ अपवित्र ..... मन्त्र से सामूहिक अभिसिंचन कराके सर्वदेव नमस्कार, स्वस्तिवाचन आदि कृत्य पूरे करे। उपरोक्त सभी कृत्यों के मन्त्र इस पुस्तक के पृष्ठ ६ से १३ के अन्तर्गत हैं। तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र के साथ तीर्थ आवाहन करें—

।। तीर्थ आवाहन ।।

पुष्करादीनि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम।।
त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता।
याचितं देहि मे तीर्थ, तीर्थराज नमोऽस्तु ते।।
अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव।
वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे।।
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

।। हेमाद्रि संकल्प ।।

प्रेरणा प्रवाह

यह सृष्टि नियंता के संकल्प से उपजी है। हर व्यक्ति अपने लिये एक नई सृष्टि करता है, यह सृष्टि ईश्वरीय योजना के अनुकूल हुई तो कल्याणकारी परिणाम उपजते हैं, अन्यथा अनर्थ का सामना करना पड़ता है। अपनी सृष्टि में चाहने, सोचने, करने में कहीं भी विकार आया हो उसे हटाने तथा नई शुरूआत करने के लिये हेमाद्रि संकल्प करते हैं।

क्रिया और भावना

सभी के हाथों में संकल्प के अक्षत पुष्प दें तथा भावनापूर्वक संकल्प दुहराने का आग्रह करें। भावना करें कि—

हम विशाल तन्त्र के एक छोटे किन्तु प्रामाणिक पुर्जे हैं अंग हैं। विराट सृष्टि ईश्वरी योजना, देव संस्कृति, ऋषि प्रणीत नवीन प्रणाली के अनुरूप हमें बनना हैं, ढलना हैं।

हमारे संकल्प के साथ वातावरण की शुचिता और देव अनुग्रह का योग दान हो रहा है। परमात्म सत्ता की प्रतिनिधि आत्मसत्ता उसके लिये पुलकित-हर्षित होकर सक्रिय हो रही है। मन्त्र—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्री मद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यश्रीब्राह्मणो द्वितीये परार्धे, श्री श्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, भूर्लोके, जम्बूद्वीपान्तर्गते भरतखण्डे अस्मिन्वर्तमाने . . . . . मासे . . . . . पक्षे . . . . . तिथौ . . . . . वासरे . . . . . गोत्रोत्पन्नः . . . . . नामाहं ज्ञाताज्ञात स्तेयानृतभाषण नैष्ठुर्यसंकीर्णभावासमानता, कपट, विश्वासघात कटूक्ति, पति-पत्नीव्रतोत्सर्ग, ईर्ष्या, द्वेष, कार्पण्य, क्रोध, मद, मोह, लोभ, मात्सर्य, जनक-जननीगुर्वादि—पूज्यजनावज्ञा जाति-लिंगादि, जनितोच्चनीचाद्यसमता मादक पदार्थ सेवन, सुरापान, मांसाद्यभक्ष्याहारा लस्यातिसंग्रह, द्यूतक्रीडेन्द्रियासंयमानां स्वकृतचतुर्विंशति संख्यकानां दोषाणां परिहारार्थं श्रावणी उपाकर्ममहं करिष्ये।

।। शिखा सिंचन ।।

प्रेरणा प्रवाह

देवसंस्कृति सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। उसके आचरण और अनुकरण का वातावरण बने तो ही उसको लाभ मिल सकता है, शिखा को उसका प्रतीक माना गया है।

विचार सर्वोच्च साधन है। उन्हें उच्च आदर्शों से ही युक्त रखना चाहिये, इसके लिये स्वाध्याय आदि प्रयास नियमित चलाने चाहिये।

अपनी सांस्कृतिक महानता का बोध, उसके प्रति गौरव की अनुभूति उसे क्रियान्वित करने का प्रचण्ड उत्साह उभारने से जीवन धन्य अवश्य बनेगा।

क्रिया और भावना

सबकी बायीं हथेली पर सुगन्धित जल दिया जाये। मन्त्रोच्चारण के साथ दाहिने हाथ से शिखा को उस जल से सिंचित करें। भावना करें कि शरीर के ऊपरी भाग में मस्तिष्क के उच्चतम स्तर पर सांस्कृतिक चेतना को स्थापित करके उसके द्वारा दिव्य तेजस्विता का निवास किया जा रहा है।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञोपवीत नवीनीकरण

तदुपरान्त वानप्रस्थ प्रकरण पृष्ठ १६ से यज्ञोपवीत नवीनीकरण उपचार की प्रेरणा तथा क्रिया लें। पंचदेवावाहन पूर्वक यज्ञोपवीत लेने वाले हों तो उसकी भी व्यवस्था साथ ही की जा सकती है। इस नवीनीकरण का विस्तृत रूप प्रथम खण्ड के यज्ञोपवीत प्रकरण से लेना पड़ेगा। समयाभाव में वानप्रस्थ प्रकरण से भी विधि पूरी हो जाती है।

यज्ञोपवीत नवीनीकरण के लिये सामूहिक पर्व में सब जोर न दें। जो इसके लिये पहले से तैयार हैं, उन्हें अलग बिठाल दें, उन्हीं के करायें। शेष सुनें-समझें और अन्य उपचारों में भाग लें।

।। विशेष पूजन ।।

प्रेरणा प्रवाह

श्रावणी पर्व पर सामान्य देव पूजन के अतिरिक्त विशेष पूजन के लिये ब्रह्मा, वेद एवं ऋषियों का आवाहन किया जाता है। ब्रह्मा सृष्टिकर्त्ता है। ब्राह्मी चेतना का वरण करने-अनुशासन पालन से ही अभीष्ट प्राप्ति हो सकती है। उस विद्या को अपनाने, जानने अभ्यास में लाने वालों को ब्रह्मबन्धु, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण, ब्रह्मज्ञ आदि सम्बोधन दिये जाते रहे हैं। ब्रह्मा का आवाहन पूजन करके इन्ही तथ्यों को प्रत्यक्ष करने का प्रयास किया जाता है।

वेद ज्ञान को कहते हैं। ज्ञान से ही विकास का आरम्भ होता है। अज्ञान ही अवनति का मूल है। ज्ञान का प्रत्यक्षीकरण करने के लिये वेद आवाहन-पूजन करते हैं।

ऋषि जीवन ने ही उच्चतम जीवनचर्या का विकास और अभ्यास करने में सफलता पाई थी, उनके अनुभवों-निर्देशों का लाभ उठाने के लिये ऋषि पूजन करते हैं। अमीरी नहीं महानता का चयन ही बुद्धिमत्तापूर्ण है। यह किसी आदर्श प्रेमी, ऋषि और किसी भ्रष्ट वैभवशाली का तुलनात्मक विश्लेषण करके जनता को समझाया जा सकता है कि कुमार्ग पर चल पड़ना कितना घातक है। सौम्य जीवन अन्ततः कितना सुखद और मधुर सिद्ध होता है, इसकी चर्चा ऋषि तत्व का प्रतिपादन करते हुये की जानी चाहिये।

ब्रह्मा आवाहन

ॐ ब्रह्म सूर्य समं ज्योतिर्यौः समुद्रसम ह्रदं सरः।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते।।

—यजु. २३।४८

।। वेद आवाहन।।

ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः पुरस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽनाय।।

—यजु ३१।१८

।। ऋषि आवाहन।।

ॐ इमावेव गौतमभरद्वाजावयमेव गोतमोऽयंभरद्वाजऽइमावेव विश्वामित्रजमदग्नी ऽअयमेव विश्वामित्रोऽयं जमदग्निरिमावेव वसिष्ठकश्यपावयमेव वसिष्ठोऽयंकश्यपोवागे-वात्रिर्वाचाह्ययुन्नमद्यतेऽत्रिर्ह वैनामैतद्यदत्रि-रितिसर्वस्यात्ता भवति सर्वस्यान्नं भवति मयऽएवंवेद।

आवाहन के बाद सभी संयुक्त षोड़शोपचार पूजन पुरुष सूक्त से करें।

।। रक्षा बन्धन ।।

प्रेरणा प्रवाह

श्रावणी पर रक्षा बन्धन बड़ा हृदयग्राही एवं सर्वप्रिय क्रम है। यह ऋषि परम्परा के अनुरूप मर्यादाओं के बन्धन से परस्पर एक- दूसरे को बाँधने, अपने कर्त्तव्य निर्वाह का आश्वासन देने का अनौखा ढंग है।

—आचार्य ब्राह्मण अपने यजमानों को रक्षा सूत्र बाँधते रहे हैं। उन्हें दिव्य अनुशासन में बाँधकर कल्याणकारी प्रगति का अधिकारी बनाने के लिये अपने पवित्र कत्तर्व्य पालन का यह आश्वासन है, जो देव साक्षी में किया जाता है, इसके बिना मार्गदर्शक और अनुयायी एक-दूसरे से लाभ नहीं उठा सकते।

—आज देश, धर्म, समाज, संस्कृति की चारों सीमायें किस प्रकार खतरे में हैं और उन्हें सुरक्षित रखने के लिये किस प्रकार सर्वसाधारण को धर्मयोद्धा के रूप में, सृजन सेना के सैनिक के रूप में कटिबद्ध होना चाहिये। इसकी स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत की जा सकती है, सृजन सेना के कर्त्तव्य में यह सब बताया गया है। कन्याओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्वारा रक्षा बन्धन में एक और तत्व का समावेश है, वह है—नारी की गरिमा पर इन दिनों कला के नाम पर जो दुःशासन-दुर्योधन जैसी धृष्टता की जा रही है, उसे रोकना। नारी को खिलौना बनाकर उसकी ज्ञालीनता को वैश्या स्तर पर गिराने की जो कुचेष्टा तथाकथित कलाकार, साहित्यकार, और उसके माध्यम से पाप की कमाई करने वाले दुष्ट जो अनाचार कर रहे हैं, उसे रोकने की भी प्रार्थना है। नारी को बहिन पुत्री और माता की दृष्टि से देखने का अनुरोध तो प्रत्यक्ष ही रक्षा बन्धन में सन्निहित है।

नारी के प्रति पवित्र भावना की शक्ति का प्रमाण पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानकों में मिलता है। इन्द्र को विजय तभी मिली जब देवी शची ने पवित्र भाव से रक्षा सूत्र बाँधा। अर्जुन, शिवाजी, छत्रसाल आदि महापुरुषों की सफलताओं के पीछे उनका नारी के प्रति पवित्र दृष्टिकोण भी असाधारण महत्त्व रखता है।

क्रिया और भावना

रक्षाबन्धन पूज्य श्रद्धास्पद व्यक्तियों अथवा कन्याओं से कराया जाता है। सामूहिक आयोजन में कुछ प्रतिनिधि सबको रक्षा सूत्र बाँधें। व्यक्तिगत सम्बन्धों के आधार पर राखी बाँधने का क्रम उस समय चलाने से व्यवस्था गड़बड़ा जाती है, उसे कार्यक्रम के बाद के लिये छोड़ देना चाहिये।

—रक्षा सूत्र बाँधने-बँधवाने के समय परस्पर पवित्र-दिव्य स्नेह सूत्रों से बँधने का भाव रखें—

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीयकाय सुमनस्यमानाः। तन्मऽआबध्नामि शत शारदायायुष्मांजरदष्टिर्यथासम्॥ —यजु० ३४।५२

॥ वृक्षारोपण ॥

प्रेरणा प्रवाह

वृक्ष परोपकार के प्रतीक हैं, जो बिना कुछ माँगे मनुष्यों-पशुओं को छाया, फल, हरियाली प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त वृक्षों की अधिकता से वायु शुद्ध होती है। वैज्ञानिक कहते हैं कि वृक्षों से वर्षा, प्रदूषण, नियन्त्रण आदि में बड़ी सहायता मिलती है। मानव जीवन में वृक्ष वनस्पतियों का बहुत बड़ा हाथ है, मानव-जीवन की सभी आवश्यक वस्तुयें यथा भोजन-वस्त्र-निवास आदि में वृक्षों का ही योगदान अधिक रहता है। इसलिये वृक्षारोपण, उनका पूजन एवं अधिकाधिक हरियाली पैदा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है।

क्रिया और भावना

पर्व प्रकरण में प्रतीक रूप में तुलसी की पौध लगाने का न्यूनतम कार्यक्रम अवश्य पूरा किया जाना चाहिये। उसके लिये समुचित मात्रा में पौध, पूजा वेदी पर अथवा अन्यत्र सजाकर रख लेनी चाहिये। उपस्थित व्यक्तियों में जो अपने यहाँ पौध लगाना चाहें उन्हें वह दी जावे। सभी उसे हाथ में लेकर मन्त्र के साथ अभिमन्त्रित करें। भावना करें कि प्रकृति में संव्याप्त कल्याणकारी चेतना प्रवाह इस पौध को मंगलमय क्षमता से सम्पन्न बना रहा है। मंच पर प्रतीक पौध गमले में मन्त्रोच्चार के साथ आरोपित करें। शेष व्यक्ति कार्यक्रम समाप्त होने पर उसे वांछित स्थानों पर ले जाकर लगायें। जहाँ सम्भव हो, वहाँ उपयोगी बड़े वृक्षों के पौधे भी लगाये जावे। श्रावणी से गुरुपूर्णिमा तक वृक्षारोपण अभियान चलाया जाना चाहिये।

ॐ वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्त्मन्या समञ्जञ्छमिता न देवः। इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः स्वदाति यज्ञ मधुना घृतेन॥ —यजु. २०।४५

॥ संकल्प ॥

.....नामाहं श्रावणीपर्वणि प्रायश्चित्तयविधान शुद्धान्तः करणैः आर्षप्रणाल्याऽनुरूपं तपश्चर्यात्यागयोः स्वजीवने सिद्धान्तमंगीकृत्य श्रद्धानिष्ठापूर्वकं तद्धारणस्य संकल्पमहं करिष्ये। तत्प्रतीकरूपे..... नियमपालनार्थं स्वीकुर्वे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और गीता जयन्ती

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

हिन्दू धर्म का सिद्धान्त है कि "जब कभी धर्म की बहुत अधिक हानि हो जाती है और अधर्म का बोलबाला हो जाता है तो भगवान अवतार लेकर बिगड़ी हुई परिस्थिति का सुधार करते हैं।" ऐसा ही समय भारतवर्ष में अब से लगभग ५ हजार वर्ष पहले आया था। उस समय सीधे-साधे गणतन्त्र राज्यों के स्थान पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बड़े-बड़े साम्राज्यों की स्थापना का सूत्रपात हो गया था और शक्तिशाली तथा कुचक्र रचने में निपुण राजा स्थानीय शासनों का नाश करके अपना साम्राज्य स्थापित करने की लालसा की पूर्ति कर रहे थे। मगध नरेश जरासंध ने बहुत से छोटे-छोटे राजाओं को कैद करके उनके राज्यों पर कब्जा कर लिया था। शिशुपाल भी महा अभिमानी और महत्वाकांक्षी राजा था। प्राज्योतिष (आसाम) के राजा नरकासुर ने दुराचार के लिये असंख्य सुन्दर कन्याओं को पकड़कर अपने महल में बन्द कर रखा था। मथुरा के राज कंस की दुष्टता और राज्य-लोलुपता इतनी बढ़ गई थी कि उसने अपने वृद्ध पिता उग्रसेन को कैद कर सिंहासन पर अधिकार कर लिया था। दुर्योधन की घोर स्वार्थपरता के उदाहरण और अन्य राजा-रानियों के चरित्रों से भी यह प्रकट होता है कि उस समय इस देश के बड़े आदमियों में से अधिकांश का चरित्र और धर्म की निगाह से पतन हो गया था और वे विलास और वैभव के आगे नीति और न्याय की परवाह नहीं करते थे।

ऐसे समय में स्वभावतः ही ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी कि जिससे धर्म का चारों ओर से ह्रास होने लग गया था और लोगों की रुचि अधर्म की ओर प्रवृत्त होने लगी थी। सज्जन कष्ट पाने लगे थे और अन्यायी, अत्याचारी, दुराचारी गुलछर्रे उड़ा रहे थे। द्रोणाचार्य जैसे विद्वान और ज्ञानी भी कौरवों के धन से खरीद लिये गये थे, जिससे द्रौपदी पर घोर अत्याचार होता देखकर भी वे बोलने का साहस न कर सके। भीष्म पितामह जैसे परम ज्ञानी भी वेद के अभ्यासी न थे। ऐसे संकट के समय में किसी महान विभूति के आगमन की आवश्यकता थी, जो अधर्म का नाश करके पुनः धर्म की स्थापना करे। परमात्मा की इच्छा से ऐसा ही हुआ और अब (सं २०५१ वि.) से ५२०० वर्ष पूर्व भाद्रपद बदी अष्टमी, बुधवार रोहिणी नक्षत्र में भगवान श्रीकृष्ण का अवतार हुआ। उनका जन्म कैसी कठिन परिस्थितियों में कंस के कारागार में हुआ, किस प्रकार उनको गुप्त रूप से पालन-पोषण के लिये गोकुल निवासी गोपाधिपति नंद के यहाँ पहुँचा दिया और किस प्रकार छोटी अवस्था में ही उन्होंने अपूर्व तेजस्विता और वीरता का परिचय देकर लोगों को चकित कर दिया, यह कथा सर्वविदित है।

बाल्यावस्था ही नहीं, भगवान कृष्ण का समस्त जीवन ही अन्याय का प्रतिकार और न्याय की रक्षा करने में बीता था। उनके चरित्र से हम भी जो सबसे बड़ी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं, वह यही है कि हमको किसी भी प्रलोभन या भय के वशीभूत होकर अन्याय के सम्मुख सिर नहीं झुकाना चाहिये फिर चाहे वह अन्याय किसी एक व्यक्ति को हो या समाज का हो या राज्य का हो। इतना ही नहीं अगर अन्याय करने वाला अपना सगा भाई-बन्धु व रिश्तेदार भी क्यों न हो अगर वह अधर्म के मार्ग पर चलता है तो उसका विरोध करना हमारा कर्त्तव्य है। भगवान कृष्ण ने राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, कला सम्बन्धी सभी क्षेत्रों में कार्य किया और लोगों का असत् मार्ग से हटाकर सत्मार्ग पर चलाया। इसी प्रकार हमको भी अपने समाज में, राज्य में, व्यक्तियों में जो दोष दिखलाई पड़ें, जो बातें अन्याय या अत्याचार की जान पड़ें उनका निर्भय होकर विरोध करना चाहिये। यह एक बहुत बड़ी जन-सेवा का कार्य है और इसी के करने से हम भगवान कृष्ण की जयंती मनाने के अधिकारी सिद्ध हो सकेंगे।

इस समय संसार की जैसी परिस्थिति हो रही है, उसमें भगवान कृष्ण के उपदेशों को समझना और तदनुसार कार्य करना और भी आवश्यक हो गया है। दुनियाँ के अधिकांश देशों में साम्राज्यवाद का बोलबाला है और वे कमजोरों को दबाकर अपना अनुयायी बनाना चाहते हैं। इसके लिये न्याय अन्याय का कोई विचार नहीं किया जाता, जिसे दबाना चाहा, उसके लिये कोई सच्चा-झूठा बहाना निकाल लिया जाता है। ऐसी हालत में प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि किसी आततायी के अन्याय और अत्याचार के सम्मुख सिर न झुकावें और जो व्यक्ति दुर्भाग्यवश अन्याय के शिकार बन गये हैं, उनकी सहायता के लिये भी सदा तैयार रहें। यह सच है कि इस प्रकार किसी बड़े शक्तिशाली का विरोध कर सकना हर एक का काम नहीं है, पर अगर हम न्याय-पक्ष के अनुयायी है और सच्चे हृदय से कार्य करेंगे तो हमको अपने जैसे अन्य सहयोगी भी मिल जायेंगे। अगर हम अपने उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल न भी हों तो सच्ची कर्त्तव्य बुद्धि से किया गया कार्य निष्फल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं जाता और किसी न किसी रूप में अग्रसर होता हुआ समय आने पर अवश्य सफल होता है। भगवान कृष्ण के इस उपदेश को ध्यान में रखते हुये हमको कभी भी अपने कर्त्तव्यों के पालन से पीछे नहीं हटाना चाहिये।

जन्माष्टमी का उत्सव आदर्शमय हो

मनुष्य के जैसे विचार होते हैं, वैसे ही उसके कार्य होते हैं। यह उसकी स्वाभाविक वृत्ति है। यदि ऐसा नहीं होता है तो उसके विचारों और कार्यों में असमानता समझनी चाहिये। जीवन को उत्तम बनाने वाले विचार हमें अनेकों धर्म ग्रन्थों और वेदशास्त्रों से उपलब्ध हो जाते हैं। यदि इन सद्विचारों का ज्ञान भण्डार हमारे पास पर्याप्त मात्रा में हो और हम उनको व्यवहार रूप में न ला सकें तो हमारे उस स्वाध्याय का कोई विशेष लाभ न होगा। उन्नति के मार्ग पर तभी हम शीघ्रता से अग्रसर हो सकते हैं, जब हम बुरे काम को बुरा समझ कर छोड़ दें और अच्छे कार्य को अच्छा समझ कर उसे ग्रहण करें।

पुराणों की कथाओं का साधारण स्तर के मनुष्यों पर इसलिये अधिक प्रभाव पड़ता है कि उसमें विचारों के साथ-साथ क्रिया भी दिखाई जाती है कि अमुक व्यक्ति ने इस प्रकार का व्यवहार किया। महापुरुषों की आदर्श जीवन घटनायें इसलिये हमारे मन पर स्थाई छाप छोड़ जाती हैं कि उनमें क्रिया का विशेष अंश होता है। उनको पढ़ने या सुनने से वह चित्र हमारी आँखों के सामने तैरने लगता है और हमें यह ज्ञान होता है कि जिस कार्य को एक मनुष्य ने किया है, उसे दूसरा मनुष्य भी अवश्य कर सकता है। महापुरुषों की जयन्तियाँ इसलिये मनाई जाती हैं कि हम उनके जीवन का मन्थन करके आदर्श विचारों और क्रियाओं को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करें। जिस प्रकार से अपने इष्ट देव के साकार रूप का ध्यान करना सरल होता है। उसी प्रकार से सद्विचारों के साकार रूप घटनाओं को पढ़, सुन, मनन करके उन्हें आचरण में लाना सरल होता है।

भगवान श्री कृष्ण, जिनको हम परमात्मा का अवतार मानते हैं, जिन्होंने अपने जीवन में महान् कार्य किये हैं कि उनका अनुकरण करके हम भी क्षुद्रता से महानता की ओर अग्रसर हो सकते हैं। किन्तु धर्म में उनको इतनी लोकप्रियता है कि लाखों व्यक्ति उनको अपना आदर्श मानकर पूजते हैं। सच्चे अर्थों में उनकी पूजा यही है कि हम भी उनके व्यवहार रूप में बतायें हुये मार्ग पर चलें।

जिस समय भगवान् कृष्ण ने अवतार लिया था उस समय कंस अपने राज्य में जनता पर बहुत अत्याचार कर रहा था, अन्याय और अधर्म करता था। सन्त, महात्मा और ब्राह्मणों को बहुत कष्ट देता था, यज्ञों को विध्वंस करता था। जनता उससे बहुत दुःखी थी। वह समस्त ग्रामों से दूध और दही मँगवा लिया करता था ताकि लोगों को दूध, दही और घी आदि पौष्टिक पदार्थ न मिले तो उनके शरीर शिथिल ही रहेंगे और उसका मुकाबला न कर पायेंगे। उस समय लोग गौओं की महत्ता को भूल गये थे। भगवान कृष्ण ने गौओं के महत्त्व को बढ़ाने के लिये उनको स्वयं चराया और उनके दूध, दही की ओर प्रेम प्रकट किया। जो ग्वालनें दूध और दही कंस को देने के लिये जाया करती थीं, उनको वह वहाँ जाने नहीं देते थे और उनका दूध, दही लूट लिया करते थे और कहते थे कि कंस को कहना कि कृष्ण ने उन्हें मना किया था। कंस इतना जालिम था कि बड़े-बड़े राजा भी उसका मुकाबला करने का साहस न कर सकते थे, परन्तु भगवान कृष्ण ने उसके विरोध में जब क्रान्ति खड़ी कर दी और जनता को खिलाफ भड़काया। जनता तो चाहती ही थी कि कोई जन नायक आगे बढ़े और वह उसके पीछे चलकर कंस के राज्य उलट दें। आततायी तो स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ा मारता है, उसके स्वयं के दुष्कर्म उसे खा जाते हैं। सार यह है कि कंस के साथ भी वैसा हुआ जैसा कि संसार में व्यक्तियों के साथ होता आया है।

भगवान् कृष्ण के जीवन में "गोवर्धन" के सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण घटना आती है। उन्होंने जनता को समझाया था कि गौ का गोबर एक प्रकार का धन है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में इसका एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इसके द्वारा खेती में उन्नति होती है। खेती में उन्नति धन की उन्नति ही मानी जायेगी। पुराणों की एक कथा में बताया गया है कि लक्ष्मी का निवास गोबर है।

जब कंस मारा गया और उसके पिता उग्रसेन को जेल से निकाला गया तो महाराज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उग्रसेन (कृष्ण के नाना) ने यह चाहा कि वह अब वृद्ध हो चुके हैं और कृष्ण को ही वह राज गद्दी सौंपना चाहते हैं परन्तु उन्होंने स्पष्ट रूप से इन्कार कर दिया कि यदि मैं राजा बन गया तो मुझ से समाज कल्याण का कार्य छूट जायेगा। उन्होंने इतने बड़े राज्य को समाज हित के लिये ठुकरा दिया।

माता रुक्मणी ने एक बार पुत्र की इच्छा प्रकट की थी तो उन्होंने उत्तर दिया "अभी हम सन्तान के योग्य नहीं हैं। हमें १२ वर्ष तक बद्रिका आश्रम में बेर खाकर तपश्चर्या करनी चाहिये तब हम उत्तम सन्तान करने के योग्य होंगे।" तब उन दोनों ने १२ वर्ष तक गायत्री माता की आराधना की और उन जैसे गुणों का पुत्र प्राप्त हुआ था। भागवत में उनकी दिनचर्या के सम्बन्ध में आता है कि वह नित्य प्रति गायत्री जाप व हवन किया करते थे। हमें उनका अनुकरण करना चाहिये।

महान् आत्माओं की महानता इसी में होती है कि वह मान और अपमान एक समान समझते हैं और समाज में एक महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण करते हुये भी छोटे से छोटे काम को करने में संकोच नहीं करते। जब उन्होंने अनुभव किया कि जब तक अर्जुन का चतुर सारथी न हो तब तक उसका विजयी होना कठिन है और बड़े योद्धाओं में से कोई इस छोटे पद को ग्रहण करने के लिये तैयार न होगा तो उन्होंने स्वयं इस कार्य को करना स्वीकार कर लिया। महाभारत के बाद जब राज्यसूय यज्ञ हुआ तो उसमें सभी को उच्च पद देकर स्वयं ब्राह्मणों के पैर धोने और उनकी झूठी पत्तलें उठाने का कार्य अपने जिम्मे लिया। निरहंकारता का इतिहास में ऐसा उज्ज्वल उदाहरण मिलना कठिन है। सुदामा जी उनके पास आये तो उन्होंने इस नम्रता का व्यवहार किया था कि वह देखकर दंग रह गये। कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगा तेली। कहाँ राजा कृष्ण और कहाँ रंक ब्राह्मण सुदामा। परन्तु फिर भी इस बात का ध्यान न रखकर उन्होंने अपने समान आसन दिया। उनका चरणामृत पिया। उनके कच्चे चावल प्रेम से खाये ओर गुप्त रूप में धन से सहायता की। इस प्रकार से उन्होंने संसार के सामने एक आदर्श मित्र का उदाहरण प्रस्तुत किया।

उनका जीवन यज्ञमय था। वह निरन्तर परोपकार में लगे रहते थे और दूसरों को भी उसी मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा देते रहते थे। महाभारत के पश्चात् उन्होंने पाण्डवों में एक बड़ा विश्व कल्याणार्थ यज्ञ कराया था ताकि महाभारत में जो लाखों मनुष्यों की मार-काट हुई थी, उससे आकाश में व्याप्त आसुरी तत्वों का निवारण हो जाय। कौरव अनीति की राह पर चल रहे थे, ऐसे पापी व अत्याचारियों का नाश करने के लिये पाण्डवों को युद्ध करने की प्रेरणा दी और उनके विजय प्राप्त करने के पश्चात् अपने लिये कुछ भी नहीं चाहा। जरासन्ध ने अनेकों राजाओं को जेल में बन्द करके उनके राज्यों को अपने काबू में कर लिया था। भगवान् कृष्ण ने जरासन्ध को भीम से मरवा कर उन राजाओं के राज्य वापिस दिलवा दिये थे।

जब वह पाण्डवों के दूत बनकर दोनों पक्षों में सन्धि कराने के लिये हस्तिनापुर गये थे और जब उन्होंने दुर्योधन का रुख बदला हुआ देखा तो वह महलों में न रहकर विदुर की कुटिया में चले गये। दुर्योधन के अन्याय से कमाये हुये धन के द्वारा बनाये गये पकवानों को छोड़कर उन्होंने विदुर के रुखे-सूखे भोजन को स्वीकार किया।

भगवान कृष्ण का गीता का संदेश संसार में अद्वितीय है। इस ग्रन्थ में प्रतिपादित सिद्धान्तों पर चलने वाला मनुष्य कभी दुःखी नहीं रह सकता। जिस अनासक्त कर्मयोग का—फल की इच्छा करके अपने कर्त्तव्य कर्मों को करते रहना और सांसारिक कर्मों का करते हुये भी उनमें लिप्त न रहने का उन्होंने गीता में उपदेश दिया है उसे अपनाकर हम सब प्रकार सुख-शान्ति को प्राप्त करके पूर्णता की ओर अग्रसर हो सकते हैं। जो विचार उन्होंने गीता के द्वारा संसार में फैलाये हैं। उनको अपने जीवन में करके दिखाया था।

गीता न केवल महान् आध्यात्मिक ग्रन्थ है बल्कि उच्च कोटि का समाज विज्ञान शास्त्र है। समाज को सुखी बनाने के लिये आज साम्यवाद अथवा समाजवाद की ध्वनि सुनाई दे रही है। परन्तु यह दोनों ही भौतिकवाद के आधार पर केवल भोग पदार्थों के समान बँटवारे पर जोर देते हैं परन्तु गीता का 'समत्व योग' सबकी मौलिक एकता के आध्यात्मिक सिद्धान्त पर आधारित है। स्थान-स्थान पर गीता में 'समःसर्वेषु भूतेषु'' और पंडिताः समदर्शनः के विचार उपस्थित किये गये हैं। भौतिकवादी समाज अस्थिकर है परन्तु आध्यात्मिक समाजवाद शाश्वत है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गीता जयन्ती

भगवान कृष्ण का वास्तविक रूप देखना हो तो उसका योगेश्वर पक्ष गीता में देखा जा सकता है।

कृष्ण चरित्र बहुमुखी है। उसमें इस बात का प्रतिपादन है कि यदि आदर्श ऊँचा हो तो लोक मर्यादाओं का अक्षुण्ण रखना अनिवार्य नहीं है। आदर्शों को कार्यान्वित करने के लिये मर्यादाओं की पूँछ से आदर्शों को नहीं बाँधा जाना चाहिये। जिन दिनों मर्यादा विहीन आसुरी उच्छृंखल जीवन की अति हो गई थी। लंका से उठकर बहती हुई उत्तर तक पहुँचने वाली आँधी ने जिन दिनों सब कुछ धूमिल और भूमिसात कर दिया था। रावण का उच्छृंखल दर्शन उसके सारे परिवार को ही समस्त प्रजा को पतनोन्मुख बना रहा था। उसकी बहिन सूर्पनखा स्वच्छन्द विहार करती हुई विचरण कर रही थी। उन दिनों भगवान राम ने टूटी हुई मर्यादा की कड़ियाँ फिर से जोड़ी और वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। किन्तु कालान्तर में वे मर्यादायें ही सब कुछ हो गईं। प्रथा परम्परायें इतनी जटिल हो गई कि प्रतिबन्धों का पालन करने के लिये मानवता के मूलभूत सिद्धान्तों आदर्शों और कर्त्तव्यों को तिलांजलि देकर भी उन्हीं में जकड़े रहना आवश्यक समझा जाने लगा, तब भगवान कृष्ण ने अपने चरित्र द्वारा यह सिद्ध किया—मुख्य आदर्श है, क्रिया कलाप नहीं। आदर्शों के लिये प्रथा परम्पराओं का उल्लंघन भी यदि करना पड़ता हो तो उसमें कुछ बहुत बड़ा अनर्थ नहीं होता, कृष्ण चरित्र को इसी तथ्य के प्रकाश में देखा जाये तो उसकी महानता को समझा जाना सम्भव है। अन्यथा मर्यादाओं का व्यतिक्रम, उनकी महानता के प्रति सन्देह पैदा करता है।

कृष्ण दर्शन को उनके अवतार की आत्मा कहना चाहिये। वही सनातन और शाश्वत है। इसलिये उनके शरीर जन्म वाले जन्माष्टमी पर्व से भी उसका महत्त्व अधिक है। यों जिन्हें जन्माष्टमी के माध्यम से कृष्ण दर्शन का प्रकाश लाभ लेना है, उन्हें उनकी लीला-क्रीड़ाओं तक सीमित न रहकर गीता पर अधिक गहराई से मनन करना चाहिये। अन्यथा चरित्र भर को प्रधानता देने से साधारण व्यक्ति भ्रम में पड़ सकता है। उनसे कई बातें ऐसी हैं, जिनका अनुकरण करने के लिये उठ खड़ा हुआ जाय तो उस राह से भटका जा सकता है, जिसे दिखाने के लिये अवतार धरती पर आते रहते हैं।

माहात्म्य बोध

युग निर्माण परिवार भारतीय धर्म के अवतारी आत्माओं में राम और कृष्ण को सूर्य-चन्द्र की उपमा देता रहा है। राम का जन्म-दिवस रामनवमी को मनाया जाता है। कृष्ण का दर्शन जन्माष्टमी की अपेक्षा गीता जयन्ती में अधिक प्रखर हुआ है। अर्जुन को भ्रम-जंजाल से छुड़ाकर उन्होंने जिस प्रकार कर्मयोग में प्रवृत्त किया, उसे न केवल महाभारत के घटनाक्रम की दृष्टि से ही, वरन् भारतीय दर्शन में उन दिनों चल रहे अवसाद को तेजी से बदलने की दृष्टि से भी अत्यन्त क्रान्तिकारी कहा जा सकता है।

भगवान कृष्ण के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति तथा उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करने के लिये सामूहिक आयोजन चाहे कृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण ८) किया जाय चाहे गीता जयन्ती (मार्गशीर्ष शुक्ल ११) पर, विधि-विधान एक से रखे जाते हैं। भगवान कृष्ण के व्यक्तित्व और उनके जीवन दर्शन गीता को भिन्न-भिन्न मानकर नहीं चला जा सकता है। दोनों एक-दूसरे से गुथे हुये हैं। प्रेरणा उभारने के लिये दोनों का ही उपयोग किया जाना आवश्यक है।

भगवान श्रीकृष्ण ने जीवन में समग्र सन्तुलन को रख दिया है। उन दिनों त्याग-वैराग्य की हवा जोरों से चल रही थी। ईश्वर भक्ति और आत्म कल्याण जैसे महान् लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये आमतौर से गृह-त्याग, एकान्तवास, संन्यास धारण, भिक्षाचरण, कायाकष्ट जैसे क्रिया कलाप ही अपनाये जाने लगे थे। उसी का प्रचलन परस्पर बन गया था। प्रतिभावान विभूतियाँ सांसारिक, सामाजिक कर्त्तव्यों की उपेक्षा करके आत्मलाभ में लगती थीं। फलतः सारा समाज दुर्बल और अस्त-व्यस्त होता चला जा रहा था। इस प्रवाह की दिशा बदले बिना न अध्यात्म का उद्देश्य पूरा होता था और न व्यक्ति के आत्म-कल्याण सम्भव था। भगवान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ने अर्जुन के माध्यम से समस्त मानव जाति को यही सन्देश दिया है कि आत्म-कल्याण एवं ईश्वर प्राप्ति के लिये सर्वांग साधना कर्मयोग से ही हो सकती है। भावनाओं को निःस्वार्थ उदात्त परमार्थपरक बनाते हुये लोकमंगल के लिये किये सभी कर्मयोग साधन एवं तपस्या हैं। उन्हें अपनाने से आत्म-कल्याण ही नहीं लोकमंगल का उभयपक्षीय प्रयोजन भी पूरा होता है अस्तु जप-तप तक सीमित न रहकर लोकहित के क्रियाकलाप को पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करने का माध्यम बनाया जाना चाहिये।

गीता में भगवान ने अर्जुन को अपने विराट रूप का दर्शन कराते हुये यह बताया कि यह प्रत्यक्ष विश्व ही मेरा साकार रूप है। संसार को सुन्दर, समुन्नत, सुविकसित और सुव्यवस्थित बनाने के लिये किये गये समस्त प्रयत्न ईश्वराधना के श्रेष्ठतम उपचार हैं। यह प्रतिपादन उस एकांगी मान्यता को प्रकारान्तर से खण्डन है, जिसमें अमुक नाम रूप की अनुष्ठानपरक उपासना को जीवन लक्ष्य की पूर्ति का साधन माना जाता था और परमार्थ प्रेमी उसी में अपना सारा समय-श्रम एवं साधन नियोजित किये रहते थे।

गीता में कर्म करने की एक उत्कृष्ट मनोवैज्ञानिक शैली को उभारा गया था। लक्ष्य ऊँचा रखते हुये भी शक्ति भर प्रयत्न करते हुये भी सफलता पूर्णतया निश्चित नहीं रहती। परिस्थितियाँ भी अपना काम करती हैं और कई बार ऐसे परिणाम सामने आ खड़े होते हैं, जिनमें श्रेष्ठ प्रयास भी असफलता के निकट जा पहुँचते हैं। ऐसी घटनाओं से कर्मयोगी को भी बहुत आघात लग सकता है और वह उदास होकर अपना साहस एवं प्रयास ही गवाँ सकता है। भगवान ने इस स्थिति से बचने के लिये यह मनोवैज्ञानिक मोड़ दिया है कि श्रेष्ठ कर्म करने भर की संतोष, गौरव, उल्लास एवं श्रेय का केन्द्र बिन्दु मान लिया जाये। श्रेष्ठ कर्म किया गया, उसमें पूरी तत्परता बरती गई, इसी को अपनी महानता एवं साहसिकता की सफल अभिव्यंजना मान लिया जाय और कर्मफल को गौण समझा जाय। भौतिक सफलता-असफलता तो बाद में मिलती है, उसका मूल्यांकन तो दूसरे करते हैं, अपना मूल्यांकन और अपनी सफलता-सन्तोष तो उस शुभारम्भ के साथ ही उपलब्ध कर लिया जाये जिसमें कि श्रेष्ठ कर्म करने की दिशा में वह कदम उठाया गया जिसे आमतौर से लोभ-मोहग्रस्त उठाते हुये कतराते हैं।

कर्मयोग दर्शन में सफलता की परिभाषा और सन्तोष का केन्द्र बिन्दु बदला गया है ताकि अनाचारी लोगों द्वारा अनुचित मार्ग पर चलकर प्राप्त की गयी सफलताओं की ओर किसी का भी जी न ललचाने लगे। अपने सत्प्रयत्नों का भौतिक परिणाम कुछ बढ़-चढ़कर न मिलने से किसी की हिम्मत टूटने न लगे।

कर्मयोग का दर्शन उस मानसिक असन्तुलन से बचाता है, जो शारीरिक रोगों से भी हजार गुना अधिक कष्टकर और हानिकारक सिद्ध होता है, घटनाक्रम किसी के हाथ में नहीं, प्रिय और अप्रिय परिस्थितियाँ धूप-छांह की तरह आती रहती हैं। मनुष्यों में भी सर्वथा सज्जनता ही कहाँ ? व्यक्तियों तथा घटनाओं द्वारा बार-बार ऐसे व्यवधान प्रस्तुत किये जाते रहते हैं, जो उद्वेग और आवेश उत्पन्न करें। क्रोध, चिन्ता, भय, निराशा, घृणा उत्पन्न करने वाले अवसर आये दिन सामने खड़े रहते हैं, उन्हें बदलने सुधारने के लिये सन्तुलित मस्तिष्क रहने पर कुछ ठीक तरह सोचा और ठीक तरह किया जा सकता है, पर मानसिक दुर्बलता के कारण घटनाक्रम ने पहले मस्तिष्क को आवेशग्रस्त कर दिया होता है, ऐसे मानसिक ज्वराक्रान्त मस्तिष्क द्वारा उल्टा ही सोचा अथवा किया जाता है, फलस्वरूप विपत्ति और कई गुना बढ़ जाती है। दूसरों द्वारा प्रस्तुत व्यवधान व अपेक्षा अपने असन्तुलन की हानि अनेक गुनी होती है। यदि विवेक स्थिर रखा जा सके तो अपना सन्तुलन तो बचाया ही जा सकता है और संकट उतना सीमित ही बना रह सकता है जिसके साथ विवेक बुद्धि से जूझा निपटा जा सके।

मनोविज्ञान शास्त्री जानते हैं कि व्यक्तियों या घटनाओं के कारण मनुष्य को सीमित हानि ही हो सकती है। असीम हानि तो उसके आवेशग्रस्तता उत्पन्न करती है। असफलता अथवा दुर्व्यवहार के कारण मनुष्य का साहस टूट जाता है और वह निराश हताश होकर अपना भविष्य अन्धकारमय बना लेता है, अविश्वासी पलायनवादी बन जाती है। यदि सफलता मिली तो वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अहंकारी, उद्धत, अतिवादी दुस्साहस बन जाता है और वह हर्षातिरेक की स्थिति भी एक तरह का उन्माद उत्पन्न करके अवास्तविकतावादी बना देती हैं। इस प्रकार सफलताओं की उपलब्धि भी यदि असन्तुलन उत्पन्न करे तो वह असफलता से भी महँगी पड़ती है।

स्थित प्रज्ञ की समत्व योग की चर्चा करते हुये भगवान कृष्ण ने गीता के माध्यम से मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता और गरिमा उसके मानसिक सन्तुलन की स्थिरता को बताया है। उस आधार पर मनुष्य अपने विवेक को आड़े समय में स्थिर रख सकता और संकटापन्न लगने वाली स्थिति को खिलाड़ी की अभिनेता की भावना से निर्वाह करता हुआ मानसिक आघात से बचा रह सकता है। प्रसन्नता, प्रफुल्लता को अक्षुण्ण बनाये रह सकता है। ऐसी मानसिक स्थिति वस्तुतः एक बहुत बड़ी उपलब्धि है और उसके दूरगामी परिणाम होते हैं। तीन-चौथाई से अधिक त्रास देने वाले मनोविकारों से छुटकारा मिल जाता है और हलके चित्त वाला व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को किस तरह समुन्नत बनाता चला जाता है तथा सफलताओं को वरण करता चला जाता है यह किसी भी मनःशास्त्र के विद्यार्थी की समझ में सहज ही आ सकता है।

व्यक्तियों को प्यार करते हुये भी उनके दोषों को सहन न किया जाये, यह विश्लेषण की अद्‌भुत शैली है। आमतौर से मित्र के दोष भी सहन किये जाते हैं और शत्रु के गुण भी दम्भ लगते हैं, इस व्यामोह से पक्षपात बढ़ता है और सुधार परिष्कार की गति अवरुद्ध हो जाती है। गीता ने रोगी से प्यार और रोग पर तलवार बरसाने की परिष्कृत दृष्टि अर्जुन को दी तभी वह महाभारत का जीवन संग्राम का महत्त्वपूर्ण पात्र बन सका।

ऐसे अगणित सन्दर्भ गीता के श्लोकों में भरे पड़े हैं, जिनकी प्रकाश किरणों में से यदि थोड़ी भी हमारे अन्तःकरण का स्पर्श कर सकें, तो निस्सन्देह हम जीवन रंगमंच के सफल अभिनेता और दिग्भ्रान्त जन समाज पर मार्गदर्शन कर सकने वाले ऐतिहासिक लोक-नेता बन सकते हैं।

कृष्ण चरित्र में अनेकों प्रेरणाप्रद प्रसंग हैं। आरम्भ काल से ही असुर आततायियों से जूझते रहना, सामूहिक श्रमदान की व्यवस्था जुटाकर गोवर्धन पर्वत खड़ा कर देना, गौ-सम्बर्धन की महत्ता को सर्वसाधारण के मन में गहराई तक बिठाने के लिये गान्धी जी द्वारा काते जाने वाले चर्खे की तरह उस कार्य में स्वयं निरत रहना, न्याय पक्ष को समर्थन देने के लिये अड़े रहना, सारथी बनने जैसे छोटे समझे जाने वाले कार्य को भी अपनाकर श्रमजीवी वर्ग की गरिमा सुरक्षित रखना, सुदामा के गुरुकुल में आर्थिक कमी पड़ने पर उन्हें याचना का अवसर दिये बिना ही उसका अर्थाभाव दूर करना, बहेलिये द्वारा पैर में तीर लगने से होने वाली मृत्यु द्वारा यह सिद्ध करना कि इस जन्म में शुद्ध चरित्र रहने पर भी पूर्वकृत पाप फल की अनिवार्यता बनी ही रहती हैं, उससे कोई बच नहीं सकता। उल्लेखनीय है कि रामावतार द्वारा छिपकर बालि को मारने का पाप दण्ड कृष्णावतार में भोगना पड़ा, बालि बहेलिया बनकर बदला चुकाने आया।

कंस द्वारा व्रज के समस्त दूध-घी को अपने लिये मँगाना और उसे बर्बाद करना कृष्ण को न भाया और उन्होंने ले जाने वाली गोपियों का रास्ता रोका, इसकी गान्धीजी के असहयोग आन्दोलन और सत्याग्रह प्रयोग से तुलना कर सकते हैं। नर-नारी का परस्पर मिलन काम विकृति ही पैदा करेगा इसलिये उसे सहन न किया जाय जैसी उन दिनों की प्रचलित मान्यता को उन्होंने चुनौती दी और कहा नर-नारी का साथ रहना पवित्र दृष्टिकोण में बाधक नहीं हो सकता। दोनों को पृथक् प्रतिबन्धित करना हर दृष्टि से अहितकर है। मनुष्य मात्र मिलकर रहें। नर-नारी साथ-साथ हँसते-खेलते जीवन-निर्वाह करें। दृष्टिकोण की पवित्रता तो भावनाओं पर निर्भर है, सहचरत्व उसमें बाधक नहीं होता, यह शिक्षण उन्होंने गोप-गोपियों की सम्मिलित रासलीला द्वारा दिया है।

जयद्रथ-बध के समय सूर्य प्रकाश में नकलीपन उत्पन्न करना, कर्ण के शस्त्र विहीन होने पर अर्जुन को आक्रमण के लिये कहना—एक पत्नी व्रत को अनिवार्य न मानना, द्रौपदी को पाँच पति रखने और अपनी कई पत्नियों का एक अभिनव प्रयोग करना, जैसे कितने ही प्रसंग ऐसे हैं, जिन्हें सामान्य लोक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परम्परा से ऊँचे उठकर इसी दृष्टि से विचार करना पड़ेगा कि उच्च आदर्शों की रक्षा के लिये प्रचलित आचार संहिता में हेर-फेर भी किया जा सकता है। गुप्तचर विभाग को छल और झूठ के आधार पर ही अपनी राष्ट्र सेवा करने का अवसर मिलता है। सैनिक, योद्धा, हिंसा का प्रयोग करते हैं उन्हें सामान्य दृष्टि से हेय कहा जा सकता है, पर सूक्ष्म विवेचना इसकी भी आवश्यकता अनुभव करती है। दुष्टता से निपटने के लिये आपत्ति धर्म के आधार पर अथवा अपरिहार्य आवश्यकता उत्पन्न हो जाने पर वैसे व्यतिक्रम भी सहन किये जाने चाहिये, कृष्ण के कुछ चरित्र इसी मान्यता का समर्थन करते हैं। उनकी माखन चोरी लीला आदि की क्रान्तिकारियों की डकैती से तुलना की जा सकती है। विश्वामित्र ऋषि द्वारा आपत्तिकाल में कुत्ते का माँस खाकर अपनी प्राण रक्षा करने जैसे-जैसे प्रसंगों को भी इसी श्रेणी में लिया जा सकता है।

जो हो, हम उन्हें दार्शनिक गुत्थियों पर नये ढंग से सोचने का एक तरीका भी समझें और उन पर दूसरे लोगों को विचार करने दें। जनसंख्या निरोध में एक उपाय द्रौपदी वाला भी प्रचलित है। पर्वतीय क्षेत्रों में भूमि की कमी और परिवार विस्तार की गुंजायश न देखकर वहाँ एक भाई का विवाह होता है और शेष सह-पति रहते हैं। जर्मनी में द्वितीय महायुद्ध के समय पुरुष मर-खप गये थे। बढ़ी हुई नारी संख्या की अस्त-व्यस्तता रोकने के लिये पुरुषों को कई पत्नियाँ रखने का कानूनी अधिकार दिया गया था। ऐसे ही विशेष परिस्थितियों में विशेष प्रथाएँ विशेष रूप से बदली जा सकती हैं। इसी का समर्थन भगवान कृष्ण ने किया है। उन्होंने मान्यताओं को पत्थर की लकीर न बनाये रखकर परिस्थितियों के अनुरूप उन पर स्वतन्त्र चिन्तन की गुञ्जायश रखने भर का पथ प्रशस्त किया है।

भगवान कृष्ण हर दृष्टि से महान थे। उनके चरित्र में से जितना अंश सर्वोपयोगी हो उसे हम सब अनुकरणीय मानें। विशेष परिस्थितियों में कुछ विशेष ढंग से सोचने के लिये जो किया या कहा जाता है, उसे विशेषज्ञों के लिये छोड़ देना पड़ता है। जन सामान्य को उसमें न उलझना चाहिये। गीता का प्रतिपादन—अर्जुन को कर्मयोग का शिक्षण उनका एक ही सन्देश इतना महान् है कि यदि उसे गीता जयन्ती के अवसर पर हम सब हृदयंगम कर सकें तो इस महान् पर्व का मनाया जाना सब प्रकार सार्थक सिद्ध हो सकता है।

गीता जयन्ती उद्देश्य और शिक्षा

अर्जुनं श्रीभगवता-कृष्णेन कर्मयोगिना।। १।।
शिक्षायै कर्मनिष्ठाया गीता मन्त्रमश्रावयत्।। १।।

कर्मयोगी भगवान श्रीकृष्ण ने कर्त्तव्यनिष्ठा की शिक्षा देने के लिये अर्जुन को गीता का महामन्त्र सुनाया।

कल्याणं कर्मनिष्ठत्वे धर्मः कर्त्तव्यपालनम्।
श्रेयश्चैव कर्मठस्य स्फुटमत्र निगद्यते।। २।।

कर्मनिष्ठा में कल्याण है और कर्त्तव्य का पालन करना ही धर्म है। कर्मठ पुरुष का ही श्रेय होता है, यही इसमें स्पष्ट कहा गया है।

नात्राधिकोऽस्ति संसारे कर्त्तव्यपरिपालनात्।
आनन्ददायको ह्यन्यस्तोषस्तत्रैव सौख्यकृत्।। ३।।

कर्त्तव्य पालन से अधिक आनन्ददायक अन्य इस संसार में कुछ भी नहीं है। उसी में महान् सुखप्रद सन्तोष मिलता है।

दार्ढ्यात्कठिन्यबाधानां कुर्यात्साम्मुख्यमुपहसन्।
सर्वदा तु भवेच्चात्र स्वकर्त्तव्यपरायणः।। ४।।

कठिनाइयों और बाधाओं का दृढ़ता से हँसते हुये मुकाबिला करना चाहिये और संसार में सर्वथा अपने कर्त्तव्य में परायण रहना चाहिये।

दृष्ट्वावरोधं बाधांश्च नैराश्यं न समाश्रयेत्।
भवेत्स्वकर्मनिरतो विगुणोत्साहेन प्रत्युत।। ५।।

अड़चनों और बाधाओं को देखकर कभी निराश नहीं होना चाहिये वरन् दूने उत्साह से अपने कर्म में संलग्न रहना चाहिये।

विक्षुब्धं न मनः कुर्याज्जातु चिदव्यवस्थितम्।
भवेद्यशायितो हृष्टो वै सन्तुलित चित्तवान्।। ६।।

कभी भी मन को विक्षुब्ध और अव्यवस्थित नहीं करना चाहिये। प्रसन्न, आशायुक्त और सन्तुलित चित्त वाला रहना चाहिये।

प्रत्येकेन स्वकर्त्तव्यमाशापूरितचेतसा।
सानन्देन सयत्नेन पालनीयं निरन्तरम्।। ७।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रत्येक व्यक्ति को आशा से पूर्ण चित्त से आनन्दयुक्त प्रयत्नपूर्वक निरन्तर अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये।

स्वीयं जीवनलक्ष्यं च कदाचिन्नतु विस्मरेत्।
योजनाबद्धयत्नेन तत्प्राप्त्यै स्याच्चयत्नवान्।। ८।।

अपने जीवन के लक्ष्य को कभी भूलना नहीं चाहिये। उसकी प्राप्ति के लिये योजनाबद्ध यत्न से प्रयत्न वाला होना चाहिये।

आनृण्यार्थं समाज स्यापरिमितर्णेषु ध्रुवम्।
जननिःश्रेयसार्थाय नित्यं सेवा रतो भवेत्।। ९।।

समाज के अपरिमित ऋणों से उऋण होने के लिये तथा जन-कल्याण के सम्पादन के लिये सदा सेवा कार्य में रत रहना चाहिये।

प्रसीदतीश्वरो नूनं कर्त्तव्यधर्मपालनात्।
सोऽप्यनुग्रह्णाति तानेव सत्यमेतन्न संशयः।। १०।।

कर्त्तव्य धर्म के पालन से ही ईश्वर प्रसन्न होता है, और निश्चय ही वह उसके ऊपर ही अनुग्रह करता है। यह सत्य है इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

।। पूर्व व्यवस्था ।।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

गीता जयन्ती पर सामान्य पर्वों जैसी व्यवस्था से ही काम चल जाता है। पूजन मंच पर भगवान कृष्ण का सखाओं के प्रतीक अर्जुन या ग्वालबालों का चित्र, गीता की पुस्तक आदि सजाकर रखें। आवाहन पूजन के लिये प्रतीक स्थापना आवश्यक है।

पर्व पूजन का समय ऐसा रखें कि जिसमें सबको पहुँचने में कठिनाई न हो। जन्म समारोह के नाम पर रात्रि के १२ बजे आयोजन की बात न सोचें। पर्व के सन्दर्भ में भगवान कृष्ण का अभिवादन-पूजन करने का भाव रखें। श्रद्धा और उपयोगिता दोनों दृष्टि से यह भाव उपयुक्त रहता है।

।। पर्व पूजन क्रम ।।

• प्रारम्भ में प्रेरणा संचार के लिये गीत एवं संक्षिप्त उद्‌बोधन करके पूजन क्रम आरम्भ करें। षटकर्म से रक्षा विधान तक का क्रम उच्च पर्वों की तरह चलें।

• विशेष पूजन में भगवान कृष्ण का आवाहन, सखा आवाहन एवं गीता आवाहन करें। तीनों का संयुक्त पूजन षोडशोपचार से करें।

• भगवान कृष्ण को नैवद्य में विशेष रूप से गौ-द्रव्य चढ़ाये जावें।

• अन्त में यज्ञ-दीप यज्ञ समापन, देव दक्षिणा संकल्प, संगीत आदि का क्रम रहे।

।। विशेष पूजन ।।

प्रेरणा प्रवाह—पर्व पूजन में भगवान कृष्ण उनके सखा एवं गीता का आवाहन पूजन किया जाता है। विशेष-नैवेद्य में गौ-द्रव्य चढ़ाये जाते हैं। इन उपचारों से सम्बद्ध प्रेरणा उपचार के पूर्व उभारी जानी चाहिये।

भगवान कृष्ण के सन्दर्भ भूमिका में बहुत कुछ संकेत किये जा चुके हैं। उनमें से कुछ आवाहन के पूर्व उभारे जा सकते हैं। सखा सहयोग-सहकारिता के प्रतीक हैं। यह ऐसी वृत्ति है, जिसकी आवश्यकता भिन्न-भिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं के समर्थक भी एक मत से करते हैं। उनके जीवन में बाल्यकाल से लेकर अन्त तक सखाओं का सहकारिता का प्रवाह बड़ी स्पष्टता से उभरा है। सखा आवाहन के साथ उसे उभारें।

गीता को उनका शाश्वत कलेवर कह सकते हैं। ज्ञान को जन सुलभ और सर्वोपयोगी बनाने का उसमें अपने ही ढंग से प्रयास है। व्यक्ति का जीवन-दर्शन ही उसका असली स्वरूप है, इस तत्व को गीता पूजन के साथ उभारें।

गौ-द्रव्य कृष्ण को विशेष प्रिय थे। उन्होंने गौ-संवर्धन अभियान चर्खा और सर्वोदय के ढंग से चलाया था। भारत में गौवंश एवं गौ-द्रव्यों के उपयोग का महत्त्व हर स्तर पर सिद्ध किया जा चुका है। परन्तु संकीर्णतावश उसका महत्त्व जन जीवन में उतर नहीं रहा है। गौ-द्रव्य क्रम के द्वारा उसे व्यापक बनाने की प्रेरणा उभारना, प्रार्थना करना अभीष्ट है।

श्रीकृष्णाऽवाहनम्—

ॐ देवकीनन्दनाय विद्‌महे, वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्। —कृष्ण गायत्री

वंशी विभूषितकरान्नवनीरदाभात्,
पीताम्बरादरुणविम्ब फलाधरोष्ठात्।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविम्बनेत्रात्,
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने।।
ॐ श्री कृष्णाय नमः।

श्रीकृष्ण-सखाऽवाहनम्—

ॐ सखायः सं वः सम्यञ्च मिषꣳस्तोमं चाग्नये।
वर्षिष्ठाय क्षितीनामूर्जो नप्त्रे सहस्वते।
ॐ श्रीकृष्ण-सखाय नमः। —यजु० ५५।२६

गीता आवाहन—

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।।
गीताश्रयेऽहं तिष्ठामि गीता मे चोत्तमं गृहम्।
गीताज्ञानमुपाश्रित्यत्रीँल्लोकान्पालयाम्यहम्।।
सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।
ॐ श्री गीतायै नमः।

उपरोक्त मन्त्रों के साथ आवाहन स्थापन करके पुरुष सूक्त से संयुक्त षोडशोपचार पूजन करें।

गौद्रव्य—अर्पण—मन्त्रोच्चार के साथ गौ का दूध, दही, घृत आदि युक्त पंचामृत भगवान कृष्ण को अर्पित करें।

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्या नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।। ऋग्वेद ८।१०१।१५

।। संकल्प ।।

..... नामाहं कृष्णजन्मोत्सवे। गीताजयन्ती पर्वणि स्वशक्त्यनुरूपं न्यायपक्षवरणं तत्समर्थनं च करिष्ये। तत्प्रतीकरूपेण..... नियमपालनार्थं संकल्पयिष्ये।

गणेश चतुर्थी

भाद्रपद मास की शुक्लपक्ष की चौथ को गणेश जी का व्रत किया जाता है क्योंकि उनका जन्म उसी दिन माना गया है। गणेशजी सबसे अधिक लोकप्रिय देवता हैं। प्रत्येक शुभ कार्य में सर्वप्रथम उन्हीं की पूजा-अर्जना की जाती है। साधारण व्यवहारिक निमंत्रण-पत्रों से लेकर बड़े-बड़े ग्रंथों के आदि में 'श्रीगणेशाय नमः' लिखने की प्रथा चल गई है। सिद्धि-सदन और विद्यावारिधि गणेशजी आठों सिद्धियों और नव-निधियों के देने वाले हैं। गणेश चतुर्थी को लोग दिन भर व्रत रखते हैं। चार घड़ी रात बीतने पर जब आकाश में चन्द्रमा दिखलाई पड़ता है तो आँगन में पवित्र किये स्थान पर ताँबे या मिट्टी का कलश जल से भरकर उसके ऊपर चाँदी, पीतल-या मिट्टी की प्रतिमा स्थापित करके विधिवत् उसकी पूजा करते हैं। इसके बाद गणेशजी का प्रसाद लड्डू आदि ग्रहण करते हैं। जो लोग श्रद्धापूर्वक इस व्रत को करते हैं, उनकी सभी मनोकामनाएँ सिद्ध होती हैं। स्कंद पुराण में लिखा है कि श्रीकृष्णजी के उपदेश से युधिष्ठिर महाराज ने इस व्रत को किया था, जिससे महाभारत संग्राम में पांडवों की विजय हुई थी। तब से इस व्रत का विशेष प्रचार हुआ। गणेश-चतुर्थी का व्रत की कथा इस प्रकार है—

एक समय शंकरजी और पार्वती जी विचरण करते-करते नर्मदा के किनारे पहुँच गये। वहाँ एक अत्यन्त रमणीक स्थान देखकर विश्राम के लिये बैठ गये। कुछ देर बाद पार्वती जी बोलीं—"भगवन् ! मेरी इच्छा है कि यहाँ आपके साथ चौपड़ का खेल खेलूँ।"

शिवजी ने कहा—"अच्छा है, पर हम तुम तो खेलने वाले हुये, हार-जीत का निर्णय करने वाला भी तो कोई होना आवश्यक है।"

पार्वती जी ने आस-पास से थोड़ी-सी घास उखाड़कर उससे एक बालक बना दिया और उसमें प्राण डालकर कहा—"बेटा, हम दोनों चौपड़ खेलते हैं, तुम उसे देखते रहना और बतलाते रहना कि किसकी हार-जीत हुई ?"

खेल में तीन बार पार्वती जी की विजय हुई और शंकरजी तीनों दफे हार गये। परन्तु अन्त में जब बालक से पूछा गया तो उसने शिवजी की जीत और पार्वती जी की हार बताई। उसकी इस दुष्टता को देखकर पार्वती जी बड़ी नाराज हुईं और उसे शाप दिया—"तूने सत्य बात कहने में प्रमाद किया है, इस कारण तू एक पैर से लंगड़ा होगा और सदा इसी बीच में पड़ा रहकर दुःख पावेगा।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माता का शाप सुनकर बालक ने कहा—"मैंने कुटिलता से ऐसा नहीं किया है केवल बालकपन के कारण मुझ से भूल हुई है, इससे मुझे क्षमा करो।"

तब पार्वती जी ने दया करके कहा—"जब इस नदी के तट पर नाग कन्यायें गणेश-पूजन करने आवें, तो उनके उपदेशानुसार तू गणेशजी का व्रत करना। उससे वह शाप दूर हो जायेगा।"

यह कहकर पार्वतीजी हिमालय को चली गईं। एक वर्ष बाद नाग कन्यायें गणेश-पूजन के लिये नर्मदा के किनारे आईं। उस समय श्रावण का महीना था। नाग-कन्याओं ने वहाँ रहकर गणेश व्रत किया और उस बालक को भी व्रत तथा पूजा की विधि बतलाई। नाग-कन्याओं के चले जाने पर उस बालक ने २१ दिन तक गणेश व्रत किया। तब गणेश जी ने प्रकट होकर कहा—"मैं तुम्हारे व्रत से बहुत प्रसन्न हूँ, इसलिये जो इच्छा हो सो वर माँगो।"

बालक ने कहा—"मेरे पाँव में शक्ति आकर लँगड़ापन दूर हो जाये, जिससे मैं कैलाश पर चला जाऊँ और वहाँ माता-पिता मुझ पर प्रसन्न हो जायें।"

गणेश जी वरदान देकर अन्तर्ध्यान हो गये। बालक शीघ्र ही कैलाश पहुँच कर शिवजी के चरणों पर गिर पड़ा। शिवजी ने पूछा—"तूने ऐसा कौन-सा उपाय किया, जिससे पार्वती जी के शाप से मुक्त होकर यहाँ तक आ पहुँचा। अगर ऐसा कोई व्रत हो तो मुझे भी बता, जिससे उसे करके मैं पार्वती जी को प्राप्त करूँ, क्योंकि उस दिन से क्रुद्ध होकर वे अभी तक मेरे समीप नहीं आई हैं।

बालक की बतलाई विधि के अनुसार शिवजी ने भी २१ दिन तक गणेश का व्रत किया, जिससे पार्वती जी के हृदय में आप ही शिवजी से मिलने की इच्छा हुई और वे पिता हिमाचल से विदा माँगकर कैलाश चली आईं।

इस प्रकार गणेश जी का व्रत सब कामनाओं का पूर्ण करने वाला है। गणेश जी हमारे देश के बहुत प्राचीन देवता हैं और ५६ हजार वर्ष पुराने मोहनजोदड़ो के खंडहरों में भी उनकी पूजा का पता लगता है। गुप्त कालीन मूर्ति कला में भी चूहे पर बैठे गणेश जी की आकृतियाँ बनी हैं।

गणेश जी का दूसरा नाम गणपति भी है। इनके सम्बन्ध में जो खोज की गई है, उसके आधार पर अनेक विद्वानों का कथन है कि गणेश जी का नाम अथवा उनकी पूजा का विधान वेदों में नहीं मिलता। फिर भी इतना मालूम होता है कि प्राचीन भारत में स्थान-स्थान पर गणतन्त्र शासन के जो संगठन फैले हुये थे उनके देवता के रूप में गणपति की पूजा की जाती थी और तभी से प्रत्येक शुभकार्य के निर्विघ्न समाप्त करने के लिये गणेश जी सामान्य जनता के देवता और मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किये जाने योग्य हैं। हमारे वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन के महान नेता लोकमान्य तिलक ने भी इसी विचार से महाराष्ट्र में गणपति-उत्सव को एक बहुत बड़े राष्ट्रीय त्यौहार का रूप दिया था, जो अभी तक उक्त प्रान्त में कई दिन तक बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यद्यपि विदेशियों के आगमन से भारत की गणतन्त्र प्रणाली एक-डेढ़ हजार वर्ष से समाप्त प्रायः हो गई है, तो भी जनता की उन्नति के लिये उससे उत्तम शासन प्रणाली अन्य कोई नहीं हो सकती। उसमें प्रत्येक क्षेत्र की जनता अपने निर्वाह के लिये आवश्यक कार्यों की व्यवस्था स्वयं कर सकती है और उसे परावलम्बी नहीं होना पड़ता। वह समय भारत में फिर आ जाये और जनता के कष्ट दूर हों, यही प्रार्थना हमको गणेश जी से इस दिन करनी चाहिये।

वर्तमान काल की प्रजातन्त्र शासनप्रणाली एक प्रकार से प्राचीन गणतन्त्र का ही रूप है। इतना अन्तर अवश्य पड़ गया है कि प्राचीन गणतन्त्र प्रायः छोटे होते थे और उनके अधिकांश निवासी एक ही जाति, भाषा और धर्म के होते थे। इसके विपरीत आजकल के प्रजातन्त्र प्रायः विशाल हैं और उनमें विभिन्न जातियों, धर्मों और भाषाओं के लोग सम्मिलित होते हैं। इसलिये आजकल के प्रजातन्त्रों की समस्यायें पहले से कहीं अधिक जटिल और प्रभावयुक्त हो गई हैं। हमारा देश भी प्रजातन्त्र प्रथा का अनुयायी है और उसमें प्राचीन गणतन्त्रों के गुणों का समावेश करना हमारा कर्त्तव्य है। इसलिये गणेश चतुर्थी के त्यौहार पर प्रजातन्त्र की सच्ची भावना का प्रचार करना ही वास्तविक गणपति पूजा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऋषि पंचमी

यह व्रत मुख्यतः स्त्रियाँ ही करती हैं और यह भाद्रपद शुक्ल पंचमी को किया जाता है। इस व्रत में हल से जोते हुये खेत से उत्पन्न होने वाली समस्त वस्तुयें वर्जित मानी जाती हैं, इसलिये फलाहार के रूप में भी जोते हुये खेत की वस्तुओं को नहीं खाना चाहिये और केवल वे ही पदार्थ काम में लाना चाहिये जो बिना जोते-बोए स्वयमेव उत्पन्न होते हैं, जैसे—साठी का चावल, नारी (करमुआ) का शाक इत्यादि।

यह व्रत अशुद्धाचार के दोषों को मिटाने के लिये किया जाता है।

विशेषतः जो स्त्री रजस्वला होने के अवसर पर सबको छूती रहती है, उसका दोष इस व्रत से ही मिटता है। धर्म-शास्त्र में कहा गया है कि रजस्वला स्त्री पहले दिन चांडालिनी के समान, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी के समान और तीसरे दिन धोबिन के समान अछूत रहती है और चौथे दिन स्नान कर लेने पर शुद्ध होती है। पर जो स्त्रियाँ इस नियम का ख्याल न करके रजस्वला अवस्था में घर के काम-काज करती रहती हैं वे बड़े पाप की भागी होती हैं।

इस दिन प्रातः काल किसी नदी या सरोवर पर जाकर विधिपूर्वक स्नान करना चाहिये। घर में रंग-बिरंगा सर्वतोभद्र मंडल बनाकर सप्त ऋषियों की पूजा करे। सब सामग्री दक्षिणा के समय आचार्य को दे दे और स्वयं ऋषि अन्न का भोजन करें। इस व्रत के सम्बन्ध में कई कथायें कही जाती हैं। उनमें से एक भविष्योत्तर पुराण में दी गई कथा संक्षेप में इस प्रकार है—

सतयुग में वेद-वेदांग जानने वाला सुमित्र नाम का ब्राह्मण अपनी स्त्री जयश्री के साथ रहता था। वे खेती करके जीवन-निर्वाह करते थे। उनके पुत्र का नाम सुमति था, जो पूर्ण पंडित और अतिथि-सत्कार करने वाला था।

किसी समय जयश्री रजस्वला अवस्था में अज्ञानवश घर का सब काम करती रही और अपने पति तथा अन्य ब्राह्मणों का स्पर्श करती रही। समय आने पर संयोगवश दोनों की मृत्यु एक ही साथ हुई। जयश्री ने कुतिया का जन्म पाया उसका पति सुमित्र बैल बना। भाग्यवश दोनों अपने पुत्र सुमति के ही घर रहने लगे।

एक बार सुमति ने अपने माता-पिता का श्राद्ध किया। उसकी स्त्री ने ब्राह्मण भोजन के लिये खीर पकाई, जिसे अनजान में एक साँप ने जूठा कर दिया। कुतिया इस घटना को देख रही थी। उसने यह सोचकर कि खीर खाने वाले ब्राह्मण मर जायेंगे, स्वयं खीर को छू लिया। इस पर क्रोध में आकर सुमति की स्त्री ने कुतिया को खूब पीटा। उसने फिर सब बर्तनों को स्वच्छ करके दुबारा खीर बनाई और ब्राह्मणों को भोजन कराया और उनका जूठन जमीन में गाढ़ दिया। इस कारण उस दिन कुतिया भूखी रह गई।

जब आधी रात का समय हुआ तो कुतिया बैल के पास आई और सारा वृत्तांत सुनाया। बैल ने दुःखी होकर कहा—"आज सुमति ने मुँह बाँधकर मुझे हल में जोता था और घास तक चरने न दी। इससे मुझे भी बड़ा कष्ट हो रहा है।" सुमति दोनों की बातें सुन रहा था और पशु-पक्षियों की भाषा समझ सकने के कारण उसे मालूम पड़ गया कि कुतिया और बैल हमारे माता-पिता हैं। उसने दोनों को पेटभर भोजन कराया और फिर ऋषियों के पास जाकर माता-पिता के पशु योनि में जन्म लेने का कारण और उनके उद्धार की विधि पूछी, ऋषियों ने उसके माता-पिता के उपयुक्त पाप को बतलाया और उनके उद्धार के लिये ऋषि पंचमी का व्रत रहने का आदेश दिया। ऋषियों की आज्ञा के अनुसार सुमति ने विधिपूर्वक श्रद्धा के साथ ऋषि-पंचमी का व्रत किया, जिसके फल से उसके माता-पिता पशु योनि से छूट गये।

इस कथा से हमको यह शिक्षा मिलती है कि स्वच्छता की मनुष्य जीवन में बड़ी आवश्यकता है। जो व्यक्ति गंदे रहते हैं, वे अपना ही नहीं दूसरों का भी नुकसान करते हैं। गंदगी अनेक रोगों की जड़ है और फिर जो शरीर से गंदा रहता है, उसका मन भी स्वच्छ रह सकना कठिन है। बहुत बड़े तपस्वियों और समाधि में लीन रहने वाले योगियों की बात तो हम नहीं करते, पर जो लोग समाज में रहते हैं और सब तरह के लोगों से लेन-देन का व्यवहार करते हैं, उनकी गंदगी से दूसरों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी अपकार होता है और यह एक बड़ा पाप है। इसलिये हमको सदा शरीर और मन से शुद्ध रहने का यत्न करना चाहिये और खान-पान में भी यथासम्भव सादगी से काम लेना चाहिये।

अनंत-चतुर्दशी

भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को अनन्त भगवान का व्रत किया जाता है। आज के दिन व्रत करने वाले दोपहर तक निराहार रहते हैं फिर स्नान करके धूप, दीप, चन्दन आदि से अनन्त भगवान की पूजा करते हैं। इसके बाद किसी एक अन्न का भोजन खाने की प्रथा है, इसलिये बहुत-से लोग गेहूँ की पूड़ी के साथ मैदा से बनी मीठी सेंवई खाते हैं। अनंत भगवान की पूजा करके दाहिनी भुजा पर सूत का बना अनन्त भी बाँधते हैं। अनन्त में तीन लरें और चौदह गाँठें होती हैं। अनन्त भगवान अथवा परमात्मा तीनों लोक और चौदह भुवनों के स्वामी हैं, इसी तत्व को प्रकट करने के लिये अनन्त इस प्रकार बनाया जाता है। इस व्रत की कथा इस प्रकार है—

दुर्योधन से जुये में पराजित होकर अन्य भाइयों और द्रौपदी के साथ युधिष्ठिर को बारह वर्ष तक वनवास का कष्ट सहन करना पड़ा था। जब वे वन में निवास कर रहे थे, एक दिन श्रीकृष्णचन्द्र जी वहाँ आ पहुँचे। युधिष्ठिर ने उनको अपनी विपत्तियों का हाल सुनाया और राज्य को फिर से प्राप्त कर सकने का उपाय पूछा।

भगवान कृष्ण ने कहा—तुम अनन्त चतुर्दशी का व्रत करो, इससे तुम्हारी मनोकामना सिद्ध होगी। सतयुग में सुमंत नाम का वशिष्ठ गोत्री एक ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री का नाम दीक्षा और लड़की का शीला था। शीला रूप और गुण की निगाह से सचमुच ही सुशीला थी। कुछ समय बाद ब्राह्मण की स्त्री ज्वर के प्रकोप से मर गई। सुमंत ने अग्निहोत्र कर्म की रक्षा के लिये दूसरी स्त्री से विवाह किया जिसका नाम दुःशीला था और जो सचमुच बड़ी ही कर्कशा तथा अपने नाम के अनुरूप ही आचरण वाली थी। वह घर में आकर शीला को कष्ट देने लगी। यह देखकर सुमंत ने उसका विवाह कर देना उचित समझा। कुछ ही समय में कौडिन्य नाम के मुनि से उसकी भेंट हुई और उसने अपनी कन्या का विवाह उनके साथ कर दिया। कौडिन्य शीला को रथ में बिठाकर घर ले चला। रास्ते में संध्या हो गई और वे एक नदी के किनारे ठहर गये। रथ से उतर कर कौडिन्य संध्यावंदन करने चले गये। शीला ने देखा कि नदी के किनारे कुछ स्त्रियाँ पूजा कर रही हैं। उसने स्त्रियों के पास जाकर व्रत का परिचय जानना चाहा। स्त्रियों ने अनन्त भगवान के व्रत का माहात्म्य और विधान बतलाया जो सब मनोकामनाओं को पूरा करने वाला है। चलते समय अनन्त का सूत उन्होंने शीला की बाँह में बाँध दिया।

शीला अपनी ससुराल में पहुँचकर अनन्तदेव का व्रत नियमपूर्वक करने लगी। विवाह के पूर्व कौडिन्य बड़ा दरिद्र था, पर अनन्त भगवान की उपासना से उसके घर में धन-धान्य की खूब वृद्धि होने लगी। एक दिन कौडिन्य ने शीला की बाँह में बँधा अनन्त का सूत का धागा देखा जो पुराना होने के कारण काला पड़ गया था। स्त्री के निषेध करने पर भी वह न माना और उसने धागे को तोड़कर आग में डाल दिया। अनन्त भगवान के इस अपमान के कारण ब्राह्मण की पुनः पहले जैसी अवस्था हो गई और उसे दारिद्र्य ने आ घेरा। दरिद्रता का कारण जानकर कौडिन्य वन को चला गया। रास्ते में उसने आम का एक वृक्ष देखा जिसमें फल लदे हुये थे, पर कोई उनको खाता न था। फिर दो नदियों को देखा जिनका जल एक-दूसरे में जाता था। उसने और भी आश्चर्यजनक घटनायें देखीं, पर अनन्त भगवान का पता न चला अन्त में थक कर वह बेहोश होकर गिर पड़ा।

ब्राह्मण को इस प्रकार व्यथित देखकर अनन्त भगवान ने उसको दर्शन दिये और बताया कि तुम्हारी दुर्दशा का कारण अनन्त का अपमान करना है। अब तुम घर जाकर नियम और विधिपूर्वक अनन्त का व्रत करो तो यह दुर्दशा जाती रहेगी। उन्होंने यह भी बतलाया कि वह आमों का वृक्ष पूर्वजन्म में एक महान पंडित था जो किसी को विद्या नहीं पढ़ाता था और वे दोनों नदियाँ दो बहनें थीं जो परस्पर में ही दान दे लिया करती थीं। ब्राह्मण ने घर जाकर बड़ी श्रद्धा के साथ सब नियमों का पालन करते हुये अनन्त का व्रत किया, जिससे कुछ समय में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही उसकी दशा पहले के समान सम्पन्न और सुखी हो गई।

अनन्त का व्रत उस निराकार भगवान की पूजा है, जो सर्वव्यापी है और जिसका न आदि है, न अन्त है। भगवान के निराकार रूप का ज्ञान प्राप्त करना दर्शन शास्त्र का विषय है और तत्वज्ञानी ही उसे भली प्रकार समझ सकते हैं। जीवन की गुत्थियों को सुलझाने और संसार के झूठे प्रलोभनों से बचने के लिये भी तत्वज्ञान की आलोचना करना प्रत्येक विवेकशील मनुष्य का कर्त्तव्य है और अनन्त चतुर्दशी के मूल तत्व को समझकर दार्शनिक विषयों का अध्ययन करना हमारा कर्त्तव्य है।

सर्व पितृ अमावस्या

पितृ-पक्ष का हिन्दू-धर्म और हिन्दू संस्कृति में बड़ा महत्त्व है। जो पितरों के नाम पर श्राद्ध और पिंडदान नहीं करता, वह सनातनधर्मी हिन्दू माना नहीं जा सकता। हिन्दू-शास्त्रों के अनुसार मृत्यु होने पर मनुष्य की जीवात्मा चन्द्रलोक की तरफ जाता है और वहाँ से और ऊँचा उठकर पितृ-लोक में पहुँचता है। इन मृतात्माओं को अपने नियत स्थान तक पहुँचने की शक्ति प्रदान करने के लिये पिंडदान और श्राद्ध का विधान किया गया है। श्राद्ध में पितरों के नाम पर ब्राह्मण-भोजन भी कराया जाता है। इसके पुण्य-फल से भी पितरों का संतुष्ट होना माना गया है। धर्म-शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि जो मनुष्य श्राद्ध करता है वह पितरों के आशीर्वाद से आयु, पुत्र यश, बल, वैभव, सुख और धन-धान्य को प्राप्त होता है। इसीलिये धर्म-प्राण हिन्दू आश्विन मास के कृष्ण पक्ष भर प्रतिदिन नियमपूर्वक स्नान करके पितरों का तर्पण करते हैं। जो दिन उनके पिता की मृत्यु का होता है, उस दिन अपनी शक्ति के अनुसार दान करके ब्राह्मण-भोजन कराते हैं।

एक समय इस देश में श्राद्ध कर्म का इतना प्रचार था कि उसके ध्यान में लोग अपने तन-बदन की सुध भूल जाते थे। उन्हें बाल-बनवाने, तेल लगाने, पान खाने आदि का भी अवकाश न मिलता था। उसी बात के चिन्ह स्वरूप आज प्रायः सभी हिन्दू, चाहे वे श्राद्ध करने वाले न भी हों, इन कार्यों से पृथक् रहना धर्मानुकूल मानते हैं। वैसे जिन लोगों के पिता स्वर्गवासी हो गये हैं, वे अमावास्या तक और जिनकी माता स्वर्गवासी हो गई हैं, वे मातृ-नवमी तक न तो बाल बनवाते हैं और न तेल लगाते हैं।

पितरों का पिंडदान करने का सबसे बड़ा स्थान गया माना जाता है और जनता में ऐसी मान्यता है कि गया में पितरों को पिंडदान कर देने पर प्रति वर्ष पिंड देने की आवश्यकता नहीं रहती ? यह भी कहते हैं कि महाराज रामचन्द्र जी ने गया आकर फल्गू नदी के किनारे मृत पिता महाराज दशरथ का पिंडदान किया था। कुछ भी हो इस प्रथा से इतना प्रत्यक्ष जान पड़ता है कि हिन्दुओं की सभ्यता प्राचीन काल में काफी ऊँचे दर्जे तक पहुँच चुकी थी और वे जीवित माता-पिता की सेवा करना ही अपना परम धर्म नहीं मानते थे, वरन् उनके मरने पर भी उनका सेवा सत्कार करना अपना पवित्र कर्त्तव्य समझते थे और इसके लिये १५ दिन का समय अलग कर दिया था। हिन्दुओं की इस प्रथा की प्रशंसा अन्य लोगों ने भी की है। हिन्दुस्तान के मुगल सम्राट शाहजहाँ को जब उसके लड़के औरंगजेब ने आगरा के किले में कैद कर रखा था, एक पत्र में उसने औरंगजेब को लिखा था—"तुम से तो हिन्दू लोग ही बहुत अच्छे हैं, जो मरने के बाद भी अपने पिता को जल और भोजन देते हैं। तू तो अपने जीवित पिता को भी दाना-पानी के बिना तरसा रहा है।"

इस विषय पर विशेष विचार करने से यही प्रतीत होता है कि पितृपक्ष का महत्त्व इस बात में नहीं है कि हम श्राद्ध-कर्म को कितनी धूमधाम से मनाते हैं और कितने अधिक ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं, वरन् उसका वास्तविक महत्त्व यह है कि हम अपने पिता, पितामह आदि गुरुजनों की जीवितावस्था में ही कितनी सेवा-सुश्रूषा, आज्ञा-पालन करते हैं। चाहे अन्य लोग हमारी बात को ठीक न समझें, पर हम तो यही कहेंगे कि जो व्यक्ति अपने जीवित, माता-पिता आदि की सेवा नहीं करते, उल्टा उनको दुःख पहुँचाते हैं या उनका अपमान करते हैं, बाद में उनका पिंडदान और श्राद्ध करना कोरा ढोंग है और उसका कोई परिणाम नहीं, क्योंकि अगर हमारे श्राद्ध का फल पितरों तक सूक्ष्म रूप में पहुँचता भी है तो वह तभी सम्भव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, जब हम सच्ची भावना और एकाग्र चित्त से उस कार्य को करें। पर जो लोग जन्म भर अपने पिता-माता को हर तरह से कष्ट पहुँचाते रहे, उनको भला-बुरा कहते रहे, वे फिर किस प्रकार हार्दिक भावना से श्राद्ध आदि कर्म कर सकते हैं ?

इसलिये अगर हम सचमुच अपनी इन प्राचीन प्रथाओं में विश्वास रखते हैं, तो हमको उनसे सर्वप्रथम अपने गुरुजनों के सम्मान और सेवा करने की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और उनके सुयश को सदा अपने कार्यों से भी सुरक्षित रखने का प्रयत्न करना चाहिये। इतना ही नहीं, अगर हम अपने पिता-माता का यथोचित सम्मान नहीं करेंगे तो अपनी संतानों से किस प्रकार उत्तम व्यवहार की आशा कर सकते हैं ? इसलिये लोक और परलोक दोनों की दृष्टि से हमारा परम धर्म है कि हम गुरुजनों के प्रति अपने कर्त्तव्य का सच्चे हृदय से पालन करें।

सर्व पितृ अमावस्या का महत्त्व

हिन्दू संस्कृति में माता, पिता और गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और शिव के नाम से सम्बोधित किया गया है क्योंकि इनके प्रयत्न से ही बालक का विकास होता है। इस उपकार के बदले में बालक को इन तीनों के प्रति अटूट श्रद्धा मन में धारण किये रहने का शास्त्रकारों ने आदेश दिया है। "मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव" इन श्रुतियों में इन्हें देव-नर तन धारी देव-मानने और श्रद्धा रखने का विधान किया है। यह कृतज्ञता की भावना सदैव बनी रहे, इसलिये गुरुजनों का चरण स्पर्श, अभिनन्दन करना नित्य के धर्मकृत्यों में सम्मिलित किया गया है। यह कृतज्ञता की भावना जीवन भर धारण किये रहना आवश्यक है। यदि इन गुरुजनों का स्वर्गवास हो जाये तो भी मनुष्य की वह श्रद्धा स्थिर रहनी चाहिये। इस दृष्टि से मृत्यु के पश्चात् पितृ यज्ञों में मृत्यु की वर्ष तिथि के दिन, पर्व समारोहों पर श्राद्ध करने का श्रुति स्मृतियों में विधान पाया जाता है।

श्रद्धा से श्राद्ध शब्द बना है। श्रद्धापूर्वक किये कार्य को श्राद्ध कहते हैं। श्राद्ध से श्रद्धा जीवित रहती है। श्रद्धा को प्रकट करने का जो प्रदर्शन होता है, वह श्राद्ध कहलाता है। जीवित पितरों और गुरुजनों के लिये श्रद्धा प्रकट करने—श्राद्ध करने के लिये, उनकी अनेक प्रकार से सेवा-पूजा तथा संतुष्टि की जा सकती है परन्तु स्वर्गीय पितरों के लिये श्रद्धा प्रकट करने का, अपनी कृतज्ञता को प्रकट करने का कोई निमित्त बनाना पड़ता है। यह निमित्त है—श्रद्धा, मृत पितरों के लिये कृतज्ञता के इन भावों का स्थिर रहना हमारी संस्कृति की महानता को ही प्रकट करता है। जिनके सेवा सत्कार के लिये हिन्दुओं ने वर्ष में ९५ दिन का समय पृथक् निकाल लिया है पितृ भक्ति का इससे उज्ज्वल आदेश और कहीं मिलना कठिन है।

श्रद्धा तो हिन्दू धर्म का मेरुदण्ड है। हिन्दू धर्म के कर्म काण्डों में आधे से अधिक श्राद्धतत्त्व भरा हुआ है। सूर्य, चन्द्रमा ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी, अग्नि, जल, कुआँ तालाब, नदी, मरघट, खेत, खलिहान, भोजन, चक्की, चूल्हा, तलवार, कलम, जेवर, रूपया, घड़ा, पुस्तक आदि निर्जीव पदार्थों की विवाह या अन्य संस्कारों में अथवा किन्हीं विशेष अवसरों पर पूजा होती है। यहाँ तक कि नाली या घूरे तक की पूजा होती है। तुलसी, पीपल, वट, आँवला आदि पेड़-पौधे तथा गौ, बैल, घोड़ा, हाथी आदि पशु पूजे जाते हैं। इन पूजाओं में उन जड़ पदार्थों या पशुओं को कोई लाभ नहीं होता परन्तु पूजा करने वाले के मन में श्रद्धा एवं कृतज्ञता का भाव अवश्य उत्पन्न होता है। जिन जड़-चेतन पदार्थों से हमें लाभ मिलता है, उनके प्रति हमारी बुद्धि में उपकृत भाव होना चाहिये और उसे किसी न किसी रूप में प्रकट करना ही चाहिये। यह श्राद्ध ही तो है।

मरे हुये व्यक्तियों के श्राद्ध कर्म से कुछ लाभ है कि नहीं ? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि होता है, अवश्य होता है। संसार एक समुद्र के समान है, जिसमें जल कणों की भाँति हर एक जीव है। विश्व एक शिला है तो व्यक्ति एक परमाणु। जीवित या मृत आत्मा इस विश्व में मौजूद है और अन्य समस्त आत्माओं से सम्बन्ध है। संसार में कहीं भी अनीति; युद्ध, कष्ट, अनाचार, अत्याचार हो रहे हों तो सुदूर देशों के निवासियों के मन में भी उद्वेग उत्पन्न होता है। जाड़े और गर्मी के मौसम में हर एक वस्तु ठण्डी और गर्म हो जाती है। छोटा-सा यज्ञ करने पर भी उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिव्यगन्ध व भावना समस्त संसार के प्राणियों को लाभ पहुँचाती है। इसी प्रकार कृतज्ञता की भावना प्रकट करने के लिये किया हुआ श्राद्ध समस्त प्राणियों में शान्तिमयी सद्भावना की लहरें पहुँचाता है। यह सूक्ष्म भाव तरंगें तृप्तिकारक और आनन्दकारक होती हैं। सद्भावना की तरंगें जीवित-मृत सभी को तृप्त करती हैं परन्तु अधिकांश भाग उन्हीं को पहुँचता है, जिनके लिये वह श्राद्ध विशेष प्रकार से किया गया है।

स्थूल वस्तुयें एक स्थान से दूसरे स्थान तक देर में कठिनाई से पहुँचती हैं परन्तु सूक्ष्म तत्वों के सम्बन्ध में यह बात नहीं है। उनका आवागमन आसानी से हो जाता है। हवा, गर्मी, प्रकाश और शब्द आदि को बहुत दूरी पार करते हुये कुछ विलम्ब नहीं लगता। विचार और भाव इससे भी सूक्ष्म हैं। वह उस व्यक्ति के पास जा पहुँचते हैं जिसके लिये वह फेंके जायें। तर्पण का कर्मकाण्ड प्रत्यक्ष रूप से बुद्धिवादी व्यक्तियों के लिये कोई महत्त्व न रखता हो परन्तु उसकी महत्ता तो उसके पीछे काम कर रही भावना में है। भावना ही मनुष्य को असुर, पिशाच, राक्षस, शैतान या महापुरुष, ऋषि, देवता, महात्मा बनाती है। इसी के द्वारा मनुष्य सुखी, स्वस्थ, पराक्रमी, यशस्वी तथा महान् बनते हैं और यही उन्हें दुःखी, रोगी, दीन, दास और तुच्छ बनाती हैं। मनुष्य और मनुष्य के बीच में जो जमीन आसमान का अन्तर दिखाई देता है, वह भावना का ही अन्तर है। यही कारण है कि हमारे पूर्वजों ने अपने धार्मिक कर्मकाण्डों का माध्यम इसी महान् शक्ति को बनाया है।

उपरोक्त कारणों के फलस्वरूप हिन्दू अपने पितरों के प्रति श्रद्धा कृतज्ञता प्रकट करने और उनके प्रति अपनी भावनाओं को उत्तेजित करने के लिये वर्ष में पन्द्रह दिन का समय देते हैं। श्राद्ध को केवल रूढ़िमात्र से पूरा न कर लेना चाहिये वरन् पितरों के द्वारा जो हमारे ऊपर उपकार हुये हैं उनका स्मरण करके, उनके प्रति अपनी श्रद्धा और भावना की वृद्धि करनी चाहिये। साथ-साथ अपने जीवित पितरो को भी न भूलना चाहिये। उनके प्रति भी आदर, सत्कार और सम्मान के पवित्र भाव रखने चाहिये।

श्राद्ध में ब्राह्मणों को अन्न, वस्त्र, पात्र आदि का दान दिया जाता है। इसमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिस व्यक्ति विशेष को आप जो वस्तुयें दान रूप में दे रहे हैं, वह शीघ्र ही उनके काम आने वाली हों, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली हों। ऐसा न हो कि आप रुपया खर्च करके दान दें और वह वस्तुयें उनके घर पर लम्बे समय तक बिना काम के पड़ी रहें।

यह बात युक्तिसंगत नहीं दीखती कि यदि किसी वृद्ध या वृद्धा की मृत्यु हो तो वृद्ध या वृद्धाओं को ही भोजन कराया जाय या दान दिया जाये या विधवा के स्वर्गवास होने पर विधवाओं को ही दान दिया जाये। आवश्यकता को देखकर ही दान की महत्ता और लाभ सिद्ध होता है। भोजन कराते समय निर्धन विद्यार्थियों की फीस आदि के लिये भी स्थान रखना चाहिये। पितरों के लिये दिये गये दान द्वारा उनके जीवन का उत्थान होगा तो उनकी अन्तरात्मा से आपके पितरों के प्रति शान्तिदायक सद्प्रेरणायें निकलेंगी। इसी प्रकार से सत्कार्यों में योग देने के लिये दान के अन्य उपाय सोचे जा सकते हैं।

तर्पण तो श्राद्ध में किया ही जाता है। इसके साथ-साथ पितरों की शान्ति के लिये पितृ सूक्त के मन्त्रों से हवन करना चाहिये क्योंकि हिन्दू धर्म में कोई भी शुभ या अशुभ कार्य हवन के बिना पूर्ण नहीं माना जाता।

देव ऋण, ऋषि ऋण से पितृ ऋण बड़ा माना जाता हैं इसलिये उक्त ऋण का चुकाना हमारा कर्त्तव्य है। महापुरुषों, ऋषियों, सन्त-महात्माओं और अवतारों के जीवन-चरित्रों का मनन करना चाहिये। समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिये जो-जो महान् कार्य उन्होंने असहन कष्ट झेलकर किये हैं, उन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। यदि अपनी परिस्थितियाँ आगे बढ़ने से रोकती हों तो जिन कठिन परिस्थितियों में उन्होंने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन का उत्थान किया है, इसका अध्ययन करना चाहिये और उनके ऋण को चुकाने के लिये, जन-कल्याण के लिये सत्संकल्प करने चाहिये। प्रायः संकल्प के बिना बड़े कार्य सफल नहीं होते। इसलिये इनका हमारे शास्त्रों में विधान रखा गया है। परहित की भावना उत्पन्न होने से अपनी आध्यात्मिक उन्नति का द्वार भी खुल जाता है और जितना उस मार्ग पर वह आगे बढ़ता जाता है, उससे अधिक वह स्वयं को उन्नति पथ पर अग्रसर हुआ पाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्वपितृ अमावास्या—उद्देश्य और शिक्षा

सदाचारिणः श्रेष्ठस्य पुंसो नित्योपकारिणः।
कथयन्ति पितृवृन्दा श्रद्धेया ते यत्सर्वदा।। १।।

श्रेष्ठ सदाचारी और सदा उपकार करने वाले पुरुष के पितृगण कहते हैं कि सर्वदा उनके प्रति श्रद्धा रखनी चाहिये।

श्राद्धं भावस्य श्रद्धायाः कृतज्ञत्वस्य च तथा।
नूनमभिव्यक्तिरेव कथ्यते च मनीषिभिः।। २।।

श्रद्धा भावना का प्रकटीकरण तथा कृतज्ञता की अभिव्यक्ति को ही विद्वान् श्राद्ध कहते हैं।

मृतानां जीवितानां च सर्वेषां संतां सदा।
श्रेष्ठानां समये प्राप्ते कार्यं श्राद्धं हि श्रद्धया।। ३।।
पित्रमायां विशेषेण रूपेणैतद्विधीयते।
श्रद्धया करणादेव श्राद्धमित्युच्यते बुधैः।। ४।।

मृत अथवा जीवित सभी श्रेष्ठ पुरुषों का समय प्राप्त होने पर श्रद्धा श्राद्ध करते रहना चाहिये। पितृ अमावस्या को यह विशेष रूप से किया जाता है। श्रद्धा से करने के कारण ही इसका नाम विद्वानों ने श्राद्ध रक्खा है।

वयमुपकृता जाता यैश्च नित्यं कृपालुभिः।
भावः प्रत्युपकारस्य विधेयस्तान्प्रतिध्रुवम्।। ५।।

सर्वदा कृपा करने वाले जिन्होंने हमारे साथ उपकार किये हैं उनके प्रति निश्चय ही प्रत्युपकार की भावना करनी चाहिये।

बहुमानः सज्जनानां स्मृतिस्तेषां च पावनी।
परम्परापालनं च श्राद्धं भवति वस्तुतः।। ६।।

सज्जनों का सम्मान करना, उनकी पावन स्मृति रखना और परम्परा का पालन करना ही वास्तविक श्राद्ध होता है।

श्राद्धेन तुष्टाः पितरो मृताश्च जीवितास्तु वा।
श्रद्धालोर्जायते भद्रं ते यच्छन्त्याशिषस्तदा।। ७।।

श्राद्ध से जीवित अथवा मृत पितृगण सन्तुष्ट होते हुये अपना आशीर्वाद देते हैं, जिससे श्रद्धालु का कल्याण होता है।

स्वयं श्राद्धस्य पर्वेऽस्मिन्भवेम पितरो वयम्।
अस्माभिरीदृशं कर्म विधातव्यमतोऽत्र च।। ८।।

इन श्राद्धों के पर्व पर हम स्वयं (आगे आने वाली पीढ़ी के लिये) पितर होवें, अतः यहाँ हमको ऐसा ही कर्म करना चाहिये।

कायस्य जन्मदातारो मनसो ज्ञान तथा प्रद।
वन्दनीयः सदा सर्वे पितरो मानवेन वै।। ९।।

शरीर को जन्म देने वाले तथा मन को ज्ञान प्रदान करने वाले पितृगण मनुष्य के द्वारा सर्वदा वन्दना करने योग्य होते हैं।

कृतघ्नता कृतं पापाद्रंचितः स्याद्धि सर्वथा।
कृतज्ञत्वं स्वीकुर्यात्कर्त्तव्यं मानवस्य तत्।। १०।।

कृतघ्नता से समुत्पन्न पापों से सर्वदा बचते रहना चाहिये और कृतज्ञता गुण को स्वीकार करना चाहिये। यह मानवता का कर्त्तव्य है।

महालयामा श्रद्धायाः पर्वो भवति पावनः।
विधाय श्राद्धं पितृणां कुर्यान्तोषं च तत्र वै।। ११।।

महालया पितृ अमावस्या पावन श्राद्ध का पर्व होता है। उस समय श्राद्ध करके पितृगणों का परितोष करना चाहिये।

पितृ अमावस्या—पर्व पूजन

यह पर्व आश्विन कृष्णपक्ष (पितृ पक्ष) के अन्त में अमावस्या को होता है। श्राद्ध-संस्कार के आधार पर इसका आयोजन किया जाता है। प्रारम्भ में सामान्य प्रकरण पूजनादि रक्षाविधान तक कराते हैं। फिर यम आवाहन, पितृ आवाहन, तर्पण, पिण्डदान, श्राद्ध संकल्प आदि समय और परिस्थितियों के अनुसार विवेकपूर्ण करा लेना चाहिये। विसर्जन से पूर्व पितृ पक्ष मोक्ष (उऋण भाव) का संकल्प लेना चाहिये। संकल्प दुहराने का क्रम अंत में दिया गया है।

।। पर्व पूजन क्रम।।

पूजन कार्य करने से पहले पूजा वेदी के साथ ही एक चौकी पर यम, पितृ, तथा पंचभूतों की स्थापना करनी चाहिये। एक नारियल में काला कपड़ा एवं कलावा आदि लपेटकर चौकी के मध्य में चावलों की ढेरी बनकर उस पर रखें। तत्पश्चात् तिलों की एक एक ढेरी पितरों के प्रतीक के रूप में रखें। नारियल के दूसरी ओर चावलों को लाल, सफेद, हरे, काले, पीले रंग में रंगकर पाँच ढेरियाँ पंच महाभूतों के प्रतीक के रूप में रखें। तत्पश्चात्, पूजन क्रिया आरम्भ करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यम देवता-पूजन

निम्न मन्त्र पाठ करते हुये यम देवता का आवाहन, पूजन आदि करें।

मन्त्रः—ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳस्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।

ॐ यमाय नमः। यमावाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। ततो नमस्कारं करोमि।—यजु० ३७।११

।। यम—स्तोत्रम् ।।

नियमस्थः स्वयं यश्च कुरुतेऽन्यान्नियन्त्रितान्।
प्रहरिणे मर्यादानां शमनाय तस्मै नमः।। १।।
यस्य स्मृत्या विजनाति भंगुरत्वं निजं नरः।
प्रमादालस्यरहितो बोधकाय नमोऽस्तुते।। २।।
विधाय धूलिशयनं येनाहं मानिनां खलु।
महतां चूर्णितो गर्वस्तस्मै नमोऽन्तकाय च।। ३।।
यस्य प्रचण्डदण्डस्य विधानेन हि त्रासिताः।
हाहाकारं प्रकुर्वन्ति दुष्टस्तस्मै नमो नमः।। ४।।
कृपादृष्टिरनन्ता च यस्य सत्कर्मकारिषु।
पुरुषेषु नमस्तस्मै यमाय पितृस्वामिने।। ५।।
कर्मणां फलदानं हि कार्यमेव यथोचितम्।
पक्षपातो न कस्यापि नमो यस्य यमाय च।। ६।।
यस्य दण्डभयाद्बुद्धः दुष्प्रवृत्तिकुकर्मकृत्।
कृतान्ताय नमस्तस्मै प्रदत्ते चेतनां सदा।। ७।।
प्राधान्यं येन न्यायस्य महत्त्वं कर्मणां सदा।
मर्यादा-रक्षणं कर्त्रे नमस्तस्मै यमाय च।। ८।।
न्याऽयार्थं यस्य सर्वे तु गच्छन्ति मरणोत्तरम्।
शुभाशुभं फलं प्राप्तं नमस्तस्मै यमाय च।। ९।।
सिंहासनाधिरूढोऽत्र बलवानपि पापकृत्।
यस्याग्रे कम्पते त्रासात्तस्मै नमोऽन्तकाय च।। १०।।

।। पितृ आवाहनम्-पूजनम् ।।

इसके पश्चात् पर्व के विशेष कृत्य आरम्भ किये जायें। निम्न मन्त्र से अपने पितृगणों का आवाहन करें और उनका स्वागत सम्मान षोडशोपचार या पंचोपचार पूजन द्वारा करें।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।।

पंच देवता पूजन

निम्न मन्त्रों से क्रमशः पृथ्वी, अग्नि वायु आकाश एवं वरुण देवता का विधिवत् पूजन किया जाये।

पृथ्वी देवता पूजन मन्त्र

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः।

ॐ पृथिव्यै नमः। पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि ध्यायामि।

अग्नि देवता पूजन मन्त्र

ॐ त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ꣳ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।

ॐ अग्नये नमः। अग्निमावाहयामि स्थापयमि ध्यायामि।

वायु देवता पूजन मन्त्र

ॐ आ नो नियुद्भिः शतनीभिरध्वर ꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

ॐ वायवे नमः। वायुमावाहयामि स्थापयामि ध्यायामि।

आकाश देवता पूजन मन्त्र

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा।

ॐ आकाशाय नमः। आकाशमावाहयामि स्थापयामि ध्यायामि।

वरुण देवता पूजन मन्त्र

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ꣳ स मा न ऽ आयुः प्रमोषीः।

तर्पण

जल में दूध, जौ, तिल, चावल, चन्दन डालकर तर्पण करें। तर्पण छः होते हैं, (१) देव तर्पण, (२) ऋषि तर्पण, (३) दिव्य मानव तर्पण, (४) दिव्य पितृ तर्पण, (५) यम तर्पण, (६) मानव पितृ तर्पण। इन छहों को नीचे लिखा जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पितृ आवाहन मन्त्र

ॐ विश्वेदेवाः शृणुतमᳬ हवं मे ये अन्तरिक्षे य ऽ उपद्यविष्ठ। ये अग्निजिह्व उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयध्वम्।।

ॐ आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये तर्पणेऽत्र विहिताः सावधाना भवन्तु ते।।

१—देव-तर्पण

नदी तालाब आदि में तर्पण करना हो तो मुहँ बदलता रहे। यदि एक स्थान पर बैठकर ही तर्पण करना है, तो हाथों से जल छोड़ने का क्रम दिशाओं के अनुसार बदला जा सकता है।

देव तर्पण में यज्ञोपवीत बायें कन्धे पर यथावत् रहे, पैरों से पालथी मारे रहे। (जल में खड़े रहे) पूर्व दिशा—कुशा के अग्रभाग से जल गिरावे। उँगलियों के अग्रभाग से अञ्जलि दें।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसितृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसिस्तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानितृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐभूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

२—ऋषि-तर्पण

शेष सब विधान देव तर्पण की ही भाँति है, केवल कुशायें उँगलियों की ओर न छोड़कर तर्जनी और अँगूठे के मूल से छोड़े।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अंगिरातृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम् ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतातृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।।

३—दिव्य मानव तर्पण

यज्ञोपवीत कण्ठ में कर ले। कनिष्ठिका उँगली के मूल से जल छोड़ें उत्तर दिशा में, दो दो अञ्जलि दें।

ॐ सनकस्तृप्यताम्।। २।। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्।। २।। ॐ सनातनस्तृप्यताम्।। २।। ॐ कपिलस्तृप्यताम्।। २।। ॐ आसुरिस्तृप्यताम्।।२।। ॐ वोढुस्तृप्यताम्।।२।। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्।।३।।

४—दिव्य पितृ तर्पण

दक्षिण दिशा। यज्ञोपवीत दाहिने कन्धे पर। बाँया घुटना मोड़ लें, कुशायें दुहरी करले, मूल और अग्रभाग वाले भाग से जल गिरावें, अँगूठे और तर्जनी के मध्य से, तीन-तीन अञ्जलि दें।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।। ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।।। ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।। ॐ अर्यमातृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।। ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः।। ३।। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः।। ३।। ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तेभ्यः स्वधा नमः।। ३।।

५—यम-तर्पण

जनेऊ साधारण बाँये कन्धे पर, घुटना साधारण मोड़े नहीं। मुख पूर्व को। जल अंगूठा और तर्जनी के मध्य से गिरावें। तीन-तीन अंजलि दें।

ॐ यमाय नमः ।। ३।। ॐ धर्मराजाय नमः ।। ३।। ॐ मृत्यवे नमः ।। ३।। ॐ अन्तकायनमः ।। ३।। ॐ वैवस्वताय नमः ।। ३।। ॐ कालाय नमः ।। ३।। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ।। ३।। ॐ औदुम्बराय नमः ।। ३।। ॐ दध्नाय नमः ।। ३।। ॐ नीलाय नमः ।। ३।। ॐ परमेष्ठिने नमः ।। ३।।ॐ वृकोदराय नमः ।। ३।। ॐ चित्राय नमः ।। ३।।ॐ चित्रगुप्ताय नमः।।३।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

६—मनुष्य पितृ तर्पण

अंञ्जलि दक्षिणाभि मुख, कुशायें दुहरी करके उनके मूल तथा अग्र वाले भाग से जल गिरावे, घुटने जनेऊ साधारण, तीन-तीन अंजलि दें।

अस्मत्पिता (बाप) अमुकशर्मा अमुकगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मत्पितामहः (दादा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मत्प्रपितामहः (परदादा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्र आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मन्माता अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्पितामही (दादी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्प्रपितामही (परदादी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मत्सापत्नमाता (सौतेली मा) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।।

द्वितीयगोत्र तर्पण

अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मद्वृद्धप्रमातामहः (बूढ़े परनाना) अमुकशर्मा अमुकसगोत्र आदित्यरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।। अस्मद्वृद्धप्रमातामही (बूढ़ी परनानी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। ३।।

इतर तर्पण

अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।। १।। अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।। ३।। अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः।। १।। अस्मत्पितृव्यः (पिता के भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मत्पितृभगिनी (बुआ) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।। १।। अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।। १।। अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहिन) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।। १।। अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहिन) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।। १।। अस्मच्छ्वशुरः (श्वशुर) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मद्गुरुः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ।। २।। अस्मच्छिष्यः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मत्सखा अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।। ३।। अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ।। ३।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो नीचे लिखे श्लोकों को पढ़ते हुये जल गिरावे—

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः।।
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।
प्रीतिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः।।
नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।
तेषामाप्यायनायैतदीयते सलिलं मया।।
येऽबान्धवा बान्धवा वा ते येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु ये चास्मत्तोयकांक्षिणाः।।
ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमाता महादयः।।
अतीतकुलकोटीनां सप्तदीपनिवासिनाम्।
आ ब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मानि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा।
ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।।

भीष्मतर्पण

वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृतिप्रवराय च।
गंगापुत्राय भीष्माय प्रदास्येऽहं तिलोदकम्।
अपुवाय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे।।

नमस्कार

'ॐ इन्द्राय नमः' प्राच्यै। 'ॐ अग्नये नमः' आग्नेय्यै।

'ॐ यमाय नमः' दक्षिणायै। ॐ निर्ऋतये नमः' नैर्ऋत्यै।

'ॐ वरुणाय नमः' पश्चिमायै। 'ॐ वायवे नमः' वायव्यै।

'ॐ सोमाय नमः' उदीच्यै। 'ॐ ईशानाय नमः' ऐशान्यै।

'ॐ ब्रह्मणे नमः' ऊर्ध्वायै। 'ॐ अनन्ताय नमः' अधरायै।

इसके बाद जल में नमस्कार करे।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वानस्पतये नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

विसर्जन

ॐ दवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित।
मनसस्पत इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः।।

पञ्चबलि के मन्त्र

(१) गोबलि

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः। प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः। इदं गोभ्य ये न मम।

(२) कुक्कुरबलि

ॐ द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ। इदं श्वभ्यां इदं न मम।

(३) काकबलि

ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतस्तथा। वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम्। इदं वायसेभ्य इदं न मम।

(४) देवादिबलि

ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसंघाः। प्रेतः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्।। इदमन्नं देवादिभ्य इदं न मम।

(५) पिपीलिकादिबलि

ॐ पिपीलिकाः कीटपतंगकाद्याः बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः। तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु। इदमन्नं पिपीलिकादिभ्य इदं न मम।

पिण्डदान के मन्त्र

ॐ उदीरतामवर उत्परास ऽ उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।

ॐ अंगिरसो न पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वय ँ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन्।।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।

ॐ ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्मयाँ उ च न प्रविद्म त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञ ँ सुकृतं जुषस्व।।

इसके पश्चात् अग्नि स्थापन से लेकर सूर्यार्घदान तक का कृत्य पूर्ण किया जाय। विसर्जन से पूर्व पितृ मोक्ष का संकल्प निम्न मन्त्र बोलते हुये लेना चाहिये।

।। संकल्प ।।

. . . . . नामाहं पितृमोक्षपर्वणि परमेश्वर-प्रकृति-पितृ-परिजन आश्रित इतरजना-नांकृतमुपकाराणामृणादानृण्यार्थं श्रद्धापूर्वकं प्रबलपुरुषार्थमहं करिष्ये।

विजयादशमी

विजयादशमी का त्यौहार, जिसे दशहरा भी कहते हैं, आश्विन शुक्ल दशमी को मनाया जाता है। भारतवर्ष में बरसात का मौसम अन्य देशों से भिन्न प्रकार का होता है और उसके कारण यहाँ तीन-चार महीने तक आवागमन में बड़ी कठिनाई उपस्थित हो जाती है। वर्तमान काल में रेल, मोटर आदि के कारण इस कठिनाई का लोगों को उतना अधिक अनुभव नहीं होता, पर प्राचीन काल में जब पक्की सड़कें भी देश में कम थीं और आवागमन के साधनों में बैलगाड़ी या घोड़े आदि ही मुख्य थे, नदी, नालों में बाढ़ आ जाने से कहीं आना-जाना, व्यापार और राज्य सम्बन्धी यात्रायें लगभग रुक जाती थीं। आश्विन मास में जब वर्षा बन्द हो जाती थी और जगह-जगह भरा हुआ पानी सूख जाता था तो लोग रुके हुये कामों की फिर से व्यवस्था करने में लग जाते थे। विशेष रूप से शासक अपने राज्य की सैनिक- व्यवस्था और शासन व्यवस्था का निरीक्षण करके, वर्षा ऋतु में आई शिथिलता को दूर करने का प्रयत्न करते थे, क्योंकि यही अवसर होता था, जब कोई प्रबल शत्रु या विरोधी अकस्मात् आक्रमण करके अपना आधिपत्य स्थापित कर ले। अतः वर्षा की अधिकता के समाप्त होते ही अपने घर को सँभालने की आवश्यकता पड़ती थी और विजयादशमी को सब प्रकार की सैन्य-सामग्री और फौजों को पूर्ण रूप से सुसज्जित कर लिया जाता था।

यद्यपि आजकल आवागमन और सैनिक-व्यवस्था के सिद्धान्त बहुत बदल गये हैं और कई वर्षों से तो हवाई जहाज और अणु अस्त्रों ने संसार की कायापलट ही कर दी है, फिर भी राष्ट्र-रक्षा और सामूहिक सुरक्षा की समस्याओं में विशेष अन्तर नहीं पड़ा है। अब भी देश में शन्ति और सुरक्षा का कायम रहना और नागरिकों का निःशंक होकर अपने जीवन-निर्वाह तथा सामाजिक हित के कार्यों में लगा रहना तभी सम्भव है, जब कि देश के समस्त निवासी परस्पर में संगठन और एकता की भावना को उत्पन्न करें और सार्वजनिक क्षेत्र में जो समस्यायें अथवा कठिनाइयाँ समय-समय पर उत्पन्न हुआ करती हैं, उनका सम्मिलित रूप से निराकरण करने को प्रस्तुत रहें।

प्राचीन परिपाटी के अनुसार विजयादशमी के अवसर पर रामलीला होने और रावण का एक विशालकाय पुतला बनाकर जलाने की प्रथा इस समय सर्वत्र प्रचलित हो गई है। इससे लोगों की यह भी धारणा हो गई है कि विजयादशमी के दिन ही श्री रामचन्द्र जी ने रावण को मारकर विजय प्राप्त की थी और उसी की स्मृति में यह त्यौहार मनाया जाता है। पर यह धारणा न तो वाल्मीकि रामायण से और न तुलसीदास जी के रामचरित मानस से सिद्ध होती है। तुलसीदास ने लिखा है वर्षा ऋतु के चार मास रामचन्द्र जी ने पंपापुर में ही बिताये थे और शरद ऋतु आरम्भ हो जाने पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हनुमान जी को सीता का पता लगाने भेजा था। इस प्रकर विजयादशमी का दिन रावण-वध का किसी प्रकार सिद्ध नहीं होता। कई अन्य लेखकों ने इस विषय पर खोज करके रावण-वध की तिथि बैशाख कृष्ण चतुर्दशी बतलाई है इसे फाल्गुन शुक्ल एकादशी भी बताते हैं। 'भविष्योत्तर पुराण' में विजयादशमी के दिन शत्रु का पुतला बनाकर उसके हृदय को बाण से बेधने का विधान है। सम्भव है कि कालांन्तर में यह पुतला रावण का ही समझकर उसका सम्बन्ध रामलीला से जोड़ दिया गया हो।

कुछ भी हो विजयादशमी का त्यौहार प्राचीन और नवीन दोनों दृष्टिकोण से जन-समुदाय में राष्ट्रीय सुरक्षा की भावना का प्रसार करने के लिये बड़ा उपयुक्त है। प्राचीनकाल में तो देश-रक्षा का कार्य केवल क्षत्रियों के सुपुर्द कर दिया गया था और अन्य, वर्ण उससे अधिकांश में उदासीन रहते थे। पर अब सामाजिक परिस्थितियों और युद्ध-कला में अत्यधिक परिवर्तन हो जाने से सभी देशवासियों का कर्त्तव्य हो गया है कि उसमें भाग लें अथवा अपने को उसके लायक बनावें। अब केवल तलवार-ढाल बाँधकर रणभूमि में जाने वाला अथवा बन्दूक लेकर फौज के साथ कूच करने वाला ही देश-रक्षा के लिये उत्तरदायी नहीं समझा जाता, पर युद्ध-सामग्री तैयार करने वाले, युद्ध के समय सेना और नागरिकों के लिये भोजन-वस्त्र की व्यवस्था ठीक बनाये रखने वाले सेनाओं और युद्ध-सामग्री को लड़ाई के मौकों पर पहुँचाने वाले व्यक्ति भी रक्षा-व्यवस्था के अंग समझे जाते हैं और यदि उनका कार्य संतोषजनक न हो तो राष्ट्र का पतन हो सकता है। इसलिये चाहे युद्ध की परिस्थिति हो या न हो और चाहे मनुष्य किसी भी पेशे में क्यों न लगा हो, पर राष्ट्र-रक्षा की भावना का एक-एक बच्चे में होना परमावश्यक है। विजयादशमी त्यौहार पर खेल, तमाशे, टूर्नामेंट, नाटक आदि विविध उपायों से इस भावना को जन-मानस में उत्पन्न करना हमारा कर्त्तव्य है।

इस त्यौहार के सम्बन्ध में पुराणों में कहा है—आश्विन शुक्ल दशमी नक्षत्रों के उदय होने पर जो 'विजय' नामक काल होता है, वह सब कामनाओं को सिद्ध करने वाला होता है। आज के दिन शमी के वृक्ष के पूजा करने का विधान है। जब दुर्योधन ने पाण्डवों को बारह वर्ष तक बनवास और एक वर्ष तक अज्ञातवास के समय अर्जुन अपना धनुष-बाण शमी के वृक्ष में छिपाकर विराट राजा के यहाँ नौकरी करने लगा था। एक दिन विराट राजा का पुत्र उत्तरकुमार गायों की रक्षा के लिए कौरवों से लड़ने लगा। उस समय अर्जुन भी उसके साथ था। शत्रुओं की प्रबल सेना देखकर उत्तरकुमार ने तो रणभूमि से भागने का उपक्रम किया, पर अर्जुन ने उसे रोककर अपने धनुष-बाण शमी के पेड़ से निकाले और शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। देवराज इन्द्र ने भी इसी दिन प्रयाण करके दानवराज वृत्रासुर पर विजय प्राप्त की थी। इस प्रकार विजयादशमी प्राचीन काल से अधर्म पर धर्म की, पशुता पर मानवता की, राक्षसत्व पर देवत्व की विजय का दिन है और इसको सच्चे स्वरूप में मनाना हमारा कर्त्तव्य है।

वास्तव में विजयादशमी जनता में राष्ट्रीय भावना के प्रसार का त्यौहार है और वर्तमान समय में इसका महत्त्व अतीत काल की अपेक्षा कहीं अधिक है। पहले जमाने में तो राज्य की रक्षा का भार केवल राजा और क्षत्रिय जाति वालों पर ही रहता था, अब न तो राजा है और पहले समय का क्षत्रिय जैसा कोई विशेष वर्ण ही है, जो एक मात्र युद्ध का ही पेशा करता हो। अब तो देश रक्षा के लिये सेना में प्रत्येक जाति और वर्ण के व्यक्ति को शामिल किया जाता है और राष्ट्र पर आक्रमण होने की अवस्था में सभी व्यक्तियों को उसके प्रतिकार में किसी न किसी रूप में भाग लेना ही पड़ता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसलिये इस समय विजयादशमी का उद्देश्य यही होना चाहिये कि देश-निवासियों में राष्ट्र रक्षा की भावना भली प्रकार जड़ जमा ले और राष्ट्र-हित के विरोधी कार्यों से सदैव दूर रहें।

वीरता और स्वास्थ्य का त्यौहार विजयादशमी

भारतीय संस्कृति में लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की उन्नति के उचित स्थान हैं। उसके लिये उचित शिक्षा-दीक्षा का वेधान है। अध्यात्म को मुख्य उद्देश्य स्वीकार करते हुये भी भौतिकता की अवहेलना नहीं की जाती। जीवन उपयोगी वस्तुओं का प्राप्त करने का भी आदेश दिया गया है। हमारे पर्व, त्यौहार और संस्कार भी हमारे मस्तिष्क पर सामूहिक रूप से दोनों प्रकार की छाप डालते हैं। अनेकों त्यौहार और संस्कार हमें जीवन को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा देते हैं, कुछ संगठन बनाकर अत्याचारियों से रक्षा के लिये, संयम और ब्रह्मचर्यपूर्वक रहने से और व्यायाम आदि द्वारा स्वास्थ्य सुधारने की ओर संकेत करते हैं। इनमें से विजयादशमी का त्यौहार, जोकि हर वर्ष आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाता है, हर्ष और उल्लास का त्यौहार है, इससे हमारे अन्दर वीरता और साहस की वृद्धि होती है, अपने शरीर को बलिष्ठ और बलवान् बनने की प्रेरणा मिलती है। अपने पूर्वजों की याद आने पर मन में एक नवीन उत्साह उदय होता है, शिथिल अंग फड़कने लगते हैं और सूखी नसों में तीव्र गति से रक्त का संचार होने लगता है। इससे राष्ट्रीय भावना का प्रसार होता है। किसी देश, जाति, राष्ट्र के उत्थान के लिये यह आवश्यक अंग हैं।

यह दिन भारतवर्ष के लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि कहा जाता है कि इस दिन भगवान राम ने ऋषि-मुनियों और सन्त-महात्माओं पर अत्याचार करने वाले उनके रक्त को कर रूप में लेने वाले जिसके राज्य से सत्य, न्याय और दया प्रस्थान कर चुके थे, रावण जैसे अजेय और शक्तिशाली शत्रु पर विजय प्राप्त की थी। इसी अश्विन मास में पाण्डव दुर्योधन द्वारा दिये गये अज्ञातवास के बाद प्रकट हुये थे, उसी दिन अन्यायी दुर्योधन व उसके राज्य को नष्ट करने के लिये महाभारत युद्ध का आरम्भ हुआ था। उसी विजयादशमी के शुभ अवसर पर इन्द्र ने वृत्तासुर का वध किया था। प्राचीन काल में राजा लोग भी वर्षा के कई महीनों से एक स्थान पर रुकी हुई सेना को विजयादशमी के दिन कूच करने की आज्ञा देते थे। यह मान्यता है इस दिन किया गया कोई भी कार्य असफल नहीं होता। इसीलिये व्यापारी लोग इस दिन अपने कार्य शुरू करते हैं, किसान अपने खेतों में बीज बोते हैं व अन्य कार्य करते हैं।

यह शुभ त्यौहार प्रति वर्ष हमारे लिये उत्तम और कल्याणकारी सन्देश लाता है, हमारी सोई हुई शक्तियों को जगा देता है, हमारे ठण्डे पड़ गये खून में उत्तेजना उत्पन्न करता है, एक नई शक्ति का संचार करता है, अपने पूर्वजों के चिन्हों पर, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में साहस, उत्साह, निर्भयता और बुद्धि से काम लेकर वानरों का संगठन करके शक्तिशाली राक्षसों का संहार किया था, चलने की प्रेरणा देता है। उनके आदर्श चरित्र की स्मृति में हम दशहरे या विजयादशमी का उत्सव तो धूमधाम से मना लेते हैं, परन्तु जो महत्त्वपूर्ण भावना, उसके पीछे निहित है, उस पर बहुत कम लोग ध्यान देते हैं। हमने गौण वस्तु को मुख्य और मुख्य को गौण मान लिया है इसलिये उससे कोई विशेष लाभ नहीं उठा पाते। होना तो यह चाहिये कि स्थान-स्थान पर रामायण की कथायें हों, सभाओं के आयोजन किये जायें, जिनमें भगवान राम के उज्ज्वल चरित्र का गुणगान किया जाये। जनता को एक गलत दृष्टिकोण दिया जाता है कि केवल रामायण का पाठ करने और भगवान राम का चरित्र सुनने से हमारा कल्याण हो जायेगा। कथा में केवल उन घटनाओं का वर्णन किया जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, जिनको सुनने से जनता को कुछ भी शिक्षा प्राप्त नहीं होती, यह अवश्य होता है कि उनका मनोरंजन हो जाता है और उनका समय अच्छी तरह से व्यतीत हो जाता है। इसके बजाय जनता का अमूल्य समय नष्ट न कर उनके सामने सही दृष्टिकोण रखना चाहिये कि भगवान राम ने अपने जीवन में यह आदर्श कार्य किये हैं, जो हम को भी करने चाहिये। सत्य, क्षमा, सहनशीलता, सर्वदा प्रसन्न चित्त रहने, भोग में त्याग करने, पिता की आज्ञा पर सम्पूर्ण राज्य को ठुकरा देने, एक पत्नी व्रत, पराई स्त्री पर कुदृष्टि न डालने माता, स्त्री, भाईयों आदि से आदर्श व्यवहार करने का विवेचन करना चाहिये ताकि हम उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करके उनको अपने जीवन में उतार सकें।

विजयादशमी के दिन राजघराने तथा सामन्तों के परिवारों में शस्त्रास्त्र, हाथी, घोड़े, स्वर्ण आदि का पूजन किया जाता है। कहीं-कहीं तलवार का पूजन होता है। भाव रक्षा का हथियारों से है। विदेशों से रक्षा का भार तो सरकार पर है। अस्त्र-शस्त्रों का बिना लाईसेन्स के रखना भी जुर्म है। इसलिये आधुनिक परिस्थितियों को देखते हुये लाठी की पूजा करनी चाहिये। यह हमारे बहुत काम आ सकती है। चोरी और डाके की तो नित्य वारदातें होती ही रहती हैं। उनसे बचने के लिये सामूहिक संगठन बनाने चाहिये। इस शुभ त्यौहार पर व्यायामशालाओं का उद्घाटन करना चाहिये जिनमें मुद्गर, डम्बल, नाल, स्प्रिंग, पैरलैल बार, वेट लिफ्टर आदि सामान रखना चाहिये। लाठी की सब लोगों का शिक्षा देनी चाहिये। स्वास्थ्य सुधार के नियमों और व्यायाम की महत्ता पर पर्चे छपवाकर जनता में बाँटने चाहिये। सभा सम्मेलनों का आयोजन करना चाहिये जिनमें स्थानीय विद्वानों और डाक्टरों को बुलाकर उनके प्रवचन कराने चाहिये कि देश के जनमानस के बिगड़ते हुये स्वास्थ्य को किस प्रकार से सुधारा जाये। यह स्वास्थ्य का त्यौहार है, उस दिन लोगों से नियमित डंड, बैठक, आसन, प्राणायाम, घूमने व आहार संयम रखने के संकल्प लेने चाहिये। शारीरिक स्वास्थ्य सुधार राष्ट्र उत्थान का एक आवश्यक अंग है। इस पर पूरा ध्यान देना चहिये।

विजया दशमी-विजय पर्व

विजया-दशमी-विजय पर्व है। भगवान राम ने रावण को मारकर इसी पर्व पर विजय पाई। भगवती दुर्गा ने शुम्भ, निशुम्भ, मधुकैटभ और महिषासुर का दमन किया। इसका विजयोत्सव विजय दशमी के दिन मनाया गया। अनीति के विरुद्ध संघर्ष चाहे लम्बा कितना ही क्यों न हो कष्टकर कितना ही रहे पर उसमें विजय न्याय की, सत्य की ही होती है। यह तथ्य सुनिश्चित है। इसी की घोषणा सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिये विजयादशमी का उत्सव मनाया जाता है।

जहाँ-तहाँ राम लीला होती है। वहाँ इसी दिन रावण मारा जाता है। इस आयोजन में इसी तथ्य का प्रतिपादन है कि सोने की ईंटों से जिसके भवन बने हुये थे। जिसके अपने कुटुम्ब परिवार से ही एक पूरे क्षेत्र बसा हुआ था। जिसके पास दस बुद्धिमानों और विद्वानों के बराबर विद्या और चतुरता थी। जिसकी बीस भुजाएँ थी अर्थात् दस मनुष्यों के बराबर बलवान था। विज्ञान का निष्णात् वरुण जिसका पानी भरते थे, पवन जिसका विजन करते थे। अस्त्र-शस्त्रों के रूप में जिसके पास एक से एक बड़ी शक्तियाँ थीं। भौतिक दृष्टि से जिसकी बलिष्ठता में किसी प्रकार की कोई कमी न थी। सुरक्षा की दृष्टि से जिसने समुद्र की खाई के बीच अपनी राजधानी लंका बनाई थी। इतना सब होते हुये भी अनीति को अपनाने के कारण वह आन्तरिक दृष्टि से सर्वथा खोखला ही हो गया था। इतना खोखला कि उसके विशाल वैभव रीछ वानरों जैसी तुच्छ हस्तियों ने बर्बाद कर दिया। पैदल चलने वाले ही साधारण दीखने वाले युवकों ने उसे विनष्ट कर दिया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह अन्याय पर न्याय की—पाप पर धर्म की विजय है। यह पर्व सर्व साधारण के मन पर यह भावना जमाने और सुदृढ़ बनाने के लिये मनाया जाता है कि पाप, अन्याय, कितना ही सशक्त विशाल अजेय क्यों न दीखता हो, पर उससे आतंकित होने की—हिम्मत हारने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। निराशा और पराजय के भाव मन में नहीं लाने चाहिये। न्याय समर्थक शक्तियाँ अपने को अशक्त न मानें। उनके साथ सत्य रहने से परोक्ष बल हजार हाथियों' की बराबर रहता है। चिनगारी छोटी रहने पर भी समयानुसार दावानल का रूप धारण कर सकती है और सुविस्तृत वनों को जलाकर राख कर सकती है।

असुर अन्यायी अनीति अपनाकर अवांछनीय उपायों द्वारा जल्दी ही भौतिक-वैभव एकत्रित कर लेते हैं। अपने आतंक से जन साधारण को भयभीत कर लेते हैं। लोग उनका विरोध करने में अपनी हानि देखते हैं और चुप बैठ जाते हैं। यह चुप्पी ही असुरता का वास्तविक पोषण करती है। असुरता अपने को अपराजेय मानकर निःशंक होकर उद्धत बन जाती है और मनमाने अनाचार करती है। यदि रोक-थाम, टोक-टाक, विरोध संघर्ष का क्रम चलता रहे तो असुर तत्वों की उतना उद्धत होने का दुस्साहस न हो। असुरों को अनाचार से विरत होने के लिये दबाया जाना चाहिये और सज्जनों को पाप से लड़ने के लिये उभारा जाना चाहिये। तभी शक्ति सन्तुलन रह सकता है। यह सन्देश विजय दशमी लेकर आती है।

उद्धता, असुरता सहज ही साधन सम्पन्न बन जाती है जबकि नीति मार्ग पर चलने वाले देव उचित साधनों का सीमित मात्रा में ही संग्रह कर पाते हैं। संघर्ष में साधनों से साधन टकराते हैं। इसमें असुर भारी पड़ते हैं और देवता घाटे में रहते हैं। पुराणों में वर्णित अनेक देवासुर संग्रामों में आरम्भिक विजय असुरों की चित्रित की गई है। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिये कि देवत्व से असुरता की सामर्थ्य बढ़ी-चढ़ी है। वरन् यह समझना चाहिये कि देवत्व के साथ सुरक्षात्मक आवश्यकता के लिये जिस विशेष शक्ति की आवश्यकता थी, उसकी ओर से उदासीनता उपेक्षा बरती गई। देवत्व का—सबसे प्रचण्ड शस्त्र है संगठन। संगठित रहकर ही देवता विजयी हो सकते हैं और असुरता को निरस्त कर सकते हैं। परन्तु कर्म के अभाव में धर्म पंगु ही रहता है और समय-समय पर हारता है। असुर आक्रमण की आरम्भिक सफलता देवताओं की इसी भूल पर ठोकर मारती है और उन्हें होश में आने के लिये झकझोरती है।

एक बार हारे हुये देवता प्रजापति के पास गये। हार का कारण और जीत का उपाय पूछा तो प्रजापति ने कहा देवत्व नहीं हारता—देवताओं की विश्रृंखलता ही हारती है। जीतने का एक मात्र उपाय संघ शक्ति का आश्रय लेना है। प्रजापति ने सब देवताओं की थोड़ी-थोड़ी शक्ति इकट्ठी को और एकीकरण को अभिमन्त्रित करके दुर्गा के रूप में विनिर्मित कर दिया। साहस और पुरुषार्थ के प्रतीक सिंह पर आरूढ़ होकर दुर्गा असुरों पर टूट पड़ी और देखते-देखते उन्हें प्रचण्ड साधनों सहित भूमि सात कर दिया।

इस अलंकारिक कथा में संघ शक्ति—उसकी साहसिक प्रेरणा का—प्रतिपादन है। दुर्दान्त दानवों पर विजय प्राप्त करने का प्रधान उपाय है—देवत्व सम्पन्न सज्जनों का संगठित होना तथा शौर्य साहस का परिचय देना। ऐसा प्राचीन काल में किया गया तो देवताओं के संकट कटे आज भी तथ्य जहाँ के तहाँ हैं यदि अनीति के आतंक त्रास से बचना है तो उसी प्राचीन तथ्य को हृदयंगम करना पड़ेगा और राह पर चलना पड़ेगा।

पराजित वह है जिसने पराजय स्वीकार कर ली। जो हिम्मत हार बैठा—जिससे प्रयत्न छोड़ दिये—जिसने आशा का दीपक बुझाकर उसके चारों ओर अंधेरा इकट्ठा कर लिया। विजयी वह है जो सामयिक असफलताओं को मात्र विराम मानता है और सोचता है सफलता के लिये जितना मनोयोग एवं पुरुषार्थ जुटाया जाना चाहिये था उसमें कमी रह गई। उस कमी को अब अधिक सतर्कतापूर्वक पूरा किया जाना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चाहिये। जिसका पक्ष न्यायोचित है जिसने लक्ष्य में उत्कृष्टता के समावेश किया है—जिसने पुरुषार्थ और सूझ-बूझ का समुचित समन्वय किया है—उसे विजयी होना ही चाहिये। देर हो सकती है—परिस्थितियों के अवरोध आ सकते हैं पर अन्ततः जीतता पुरुषार्थ ही है। समुद्र से टिटहरी के अण्डे वापिस लिये जाने में अगस्त का सहयोग मिलने जैसे अगणित कथानक और उदाहरण यही प्रतिपादन करते हैं कि नीति निष्ठा के साथ मनस्विता घुली मिली हो तो विजय का मिलना सुनिश्चित है।

विजयादशमी इन्हीं तथ्यों से सर्वसाधारण को परिचित कराने आती है कि असुरता के आगे कहीं कोई किसी मोर्चे पर अस्त्र न डालें वरन् उसके साथ असहयोग, विरोध एवं संघर्ष के लिये साहसिकता का परिचय दें। अनीति के विरुद्ध धर्म युद्ध को भगवान का अर्जुन को दिये गये सन्देश के रूप में गीता प्रवचन के रूप में शिरोधार्य किया जाना ही सज्जनोचित रीति-नीति है। इसी केन्द्र पर सदा अपना मनोबल किये रहना चाहिये।

विजया दशमी शक्ति संचय-बल संग्रह का पर्व है। उस दिन शरीर बल, मनोबल, संघ बल का प्रदर्शन करने आयोजनों तथा प्रतियोगिताओं की व्यवस्था की जानी चाहिये। खेल-कूद, कुश्ती दंगल, लाठी शिक्षा, शस्त्र संचालन, दौड़, छलांग, रस्सा कशी, आदि उत्साहवर्धक प्रदर्शनों से दर्शकों के मन में उस ओर प्रगति करने की आकांक्षा जाग्रत होती है। व्यायामशालाओं के आरम्भ, उद्घाटन वार्षिकोत्सव जैसे आयोजन रखे जा सकते हैं।

परिस्थिति की प्रतिकूलता, उद्योग असुविधा एवं कठिनाइयों के बीच जिन लोगों ने अपने साहस, पुरुषार्थ अध्यवसाय, मनोबल एवं लगन के आधार पर शरीर बल, विधिवत् मनोबल सम्पादित किया हो, सफलतायें पाई हों, प्रगति की हो, उनकी चर्चा विजय दशमी पर्व व्याख्यानों का विशेष विषय बनायी जा सकती है। जिनने परमार्थ प्रयोजनों में शौर्य साहस एवं त्याग बलिदान का परिचय दिया हो उनका इस अवसर पर अभिनन्दन भी किया जा सकता है।

विजयादशमी—उद्देश्य और शिक्षा

विजयादशमी पर्वो जीवितुं जयिजीवनम्।
प्रदत्ते स्फुरणां चित्ते सुफलोल्लास संयुताम्।।१।।

विजया दशमी का पर्व विजयशील जीवन जीने की हृदय में सुफल और उल्लासयुक्त स्फुरणा प्रदान करता है।

महत्तमा संघशक्तिः सर्वत्र विश्वविश्रुता।
दुर्गेति नाम्ना सैवास्ति सर्वानिष्टनिवारणी।।२।।

सर्वत्र विश्व में प्रख्यात संगठन की शक्ति सबसे बड़ी है। वही समस्त अनिष्टों का निवारण करने वाली दुर्गा नाम से प्रसिद्ध है।

विद्यायाः शरीरस्य चातुरस्य धनस्य च।
मित्रस्य मनसःशस्त्रबलं धर्मस्य च बलम्।।३।।
साधयितुं च सर्वाणि सुष्ठु कार्याणि जीवने।
इति चाष्टौ बलान्येव ख्यातानि जगतीतले।।४।।

विद्या-बल, शरीर-बल, चातुर्य-बल, मित्र-बल, मनो-बल, शस्त्र-बल और धर्म बल, जीवन में, समस्त कार्यों को भली भाँति सिद्ध करने के लिय ये आठ बल संसार में प्रसिद्ध हैं।

इमाः सुशक्तयश्चाष्टौ देव्याश्चाष्टभुजाः स्मृताः।
एतैरेव हि सा दुर्गा दैत्यान्संहरति सदा।।५।।

ये आठ शक्तियाँ ही दुर्गा की आठ भुजायें हैं, इन्हीं से वह दुर्गा सर्वदा दैत्यों का संहार किया करती है।

दुर्बलतासु स्वान्तेऽस्मिन्स्थिता स्वतः प्रवेशने।
संजातेऽष्ट भुजानां च समीचीनतया खलु।।६।।
सरलायन्ते सुतरां सर्वा बाह्यजीवनस्य च।
कठिनता हि दुश्चिन्त्या ह्यवश्यं नात्र संशयः।।७।।

हृदय में स्थित आन्तरिक दुर्बलताओं पर उपर्युक्त आठ बल स्वरूप भुजाओं के प्रवेश हो जाने पर बाह्य जीवन की दुश्चिन्त्य समस्त कठिनाइयाँ भली प्रकार सरल हो जाती हैं, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

विजयश्च भवत्येव यत्नतः शक्तिशालिना।
लोकेऽतो भवितव्यं हिसुशक्तेर्बलशालिना।।८।।

जो पूर्ण शक्तिशाली होता है, उसकी ही विजय होती है। अतः संसार में यत्नपूर्वक शक्तिशाली (बलवान्) होना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अशक्तता महत्पापं भवेच्चैकं सुनिश्चितम्।

दण्डस्तस्य नरेणात्र भुज्यते च पदे-पदे।। ६।।

शक्तिहीनता निश्चय एक महान् पाप है। उसका दण्ड मनुष्य को पग-पग पर भुगतना पड़ता है।

उपेक्षया च कष्टानि वर्धन्ते वृजिनानि च।

संघर्षस्तन्निराकर्त्तुं विधातव्यं ससाहसः।। १०।।

उपेक्षा करने से कष्ट और पाप बढ़ते हैं। इसलिये साहसपूर्वक उनके हटाने तथा उन्नति के लिये संघर्ष करना चाहिये।

सजगेन सतर्केण तत्परेण हि सर्वदा।

भाव्यं प्रमादमालस्यं न कुर्यात्क्वापि यत्नतः।। ११।।

सदा सजग, सतर्क और तत्पर रहना चाहिये। कभी भी आलस्य और प्रमाद यत्नपूर्वक नहीं करने चाहिये।

आशावाँश्च पुरुषार्थी प्रसन्नहृदयस्तु यः।

विजयश्चास्ति तस्यैव सन्देशो दशम्याः खलु।। १२।।

जो आशावान् पुरुषार्थी तथा प्रसन्न चित्त वाला होता है, उसकी ही विजय होती है, यही विजय दशमी का सन्देश है।

विजय-दशमी इस तरह मनाएँ

वैयक्तिक कुटुम्ब और सामाजिक जीवन में आस्तिकता, आध्यात्मिकता, शुद्धता, पवित्रता, नैतिकता, सद्व्यवहार सदाचार, कर्त्तव्य-परायणता के भाव जागृत रखने के लिये भारतीय आचार्यों ने संस्कार और पर्व दो सांस्कृतिक कार्यक्रम ऐसे विरचित किये हैं, जिनका वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक लाभ किसी भी बाल समाज और देश में निश्चयपूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। संस्कारों और पर्वों के माध्यम से व्यक्ति और समाज के शिक्षण का जितना सुन्दर अनुष्ठान बन पड़ा है, उतना बढ़िया साधन और कहीं अन्यत्र उपलब्ध नहीं यह बात अब पाश्चात्य विद्वान् भी मानने लगे हैं।

युग निर्माण योजना के शत-सूत्री कार्यक्रमों में इसीलिये उनकी अपना विशिष्ट स्थान दिया गया है। अपनी शाखाओं और प्रतिनिधियों को यहाँ से बराबर प्रेरणा और प्रोत्साहन इसीलिये दिया जाता रहता है, जिससे लोकशिक्षण का यह महत्त्वपूर्ण क्रम रुके नहीं। अभी तक लकीर पीटने की परम्परा चलती रही है पर उन्हें यहाँ से प्रबुद्ध रूप प्रदान किया गया है, जिससे उनकी प्रेरणायें सार्वजनिक रूप से जनमानस में उतर सकें।

दस प्रमुख पर्वों में विजयादशमी का महत्त्व श्रावणी और गुरु-पूर्णिमा के समान ही है। विजयादशमी शारीरिक बल, शस्त्र मनोबल, संगठन बल जैसे माध्यमों से सर्वांगीण समर्थता का सन्देश देने आती है। बलवान् ही आत्म-रक्षा कर पाते हैं। निर्बल व्यक्ति न तो अपनी, न देश, कोष, सभ्यता और संस्कृति की ही रक्षा कर सकते हैं, इसलिये 'शक्ति' को जीवन का मूलाधार मानकर प्रतिष्ठा की गई है। आज जब कि सारा संसार संघर्ष के मार्ग का अनुसरण कर रहा है, तब शास्त्र की अपेक्षा शस्त्र का महत्त्व और बढ़ जता है। विजया दशमी उसी का सन्देश देने आती है। इसलिये उसकी विशेष तैयारी सभी शाखाओं और प्रतिनिधियों द्वारा होनी चाहिये।

कार्यक्रम की पूर्व रूपरेखा के लिये पहले विचारगोष्ठी की जाये, जिसमें व्यय, स्थान, सजावट, सामान आदि की पूरी व्यवस्था पर विचार कर लिया जाये। स्थान का चुनाव इस तरह हो कि वहाँ अधिक-से-अधिक लोगों को एकत्रित किया जा सके। विद्यालय, पंचायत-भवन, पार्कों में आयोजन हों तो वहाँ दर्शकों के बैठने और कार्यक्रम देखने की सुविधा रहती है।

एक दिन पूर्व उस स्थान की विधिवत् सफाई की जाये रंगीन झण्डिया, वन्दनवार, आदर्श वाक्यों और महापुरुषों के चित्रों से उस स्थान को सजाया जाय। उतना न हो तो यज्ञ-मण्डप और पूजा के स्थान को तो सजाया ही जाये। संगीत की भी व्यवस्था की जाये।

स्थानीय सुविधा के अनुसार प्रातः या सायंकाल कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाये। सस्वर और कई लोग पाठ करते हैं तो यन्त्र ध्वनि बहुत अच्छी लगती है, इसलिये विजय-दशमी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और दीपावली पर्व विधान' की कुछ अधिक प्रतियाँ अखण्ड-ज्योति संस्थान मथुरा से मँगा लेनी चाहिये। उस पुस्तक में बताये अनुसार पूजा का समान पहले से एकत्रित रखा जाये। शस्त्रों की व्यवस्था उस दिन अवश्य कर लेनी चाहिये। बन्दूक, तमंचा, भाला, बरछी, कटार लाठी जो भी उपलब्ध हो उसकी व्यवस्था कर ली जाये और उनकी पूजा के साथ-साथ हर प्रकरण का विश्लेषण व विवेचन भी किया जाय, सामान्य प्रकरण का विश्लेषण व विवेचन भी किया जाये, सामान्य प्रकरण के पूजन के अतिरिक्त एक चौकी में दुर्गा का चित्र स्थापित कर उसका विधिवत् पूजन लक्ष्मी सूक्त में करना चाहिये, दुर्गा-स्तवन और शस्त्र-पूजन के बाद विशेष आहुतियाँ दी जाये। जिससे लोगों को वहाँ आने की सार्थकता अनुभव हो और वे लौटें तो विचारों का दिव्य प्रसाद लेकर लौटें, जिससे उनका अपने भी हित हो और आयोजन करना भी सार्थक हो। स्वास्थ्य सुधार नियमित व्यायाम, नशे के परित्याग के संकल्प भी कराये जाने चाहिये, बड़ी मात्रा में समाचार छपने के लिये यहाँ भेजे जायें। जिससे दूसरी शाखायें भी प्रेरणा ग्रहण कर सकें।

विजयादशमी—पर्वपूजन

माहात्म्य बोध

दशहरा शौर्य का, शक्ति का, स्वास्थ्य का पर्व है। इस दिन हम अपनी भौतिक शक्ति, मुख्यतया शस्त्र आर स्वास्थ्य बल का लेखा-जोखा करते हैं। अपनी शक्तियों को विकसित एवं सामर्थ्य युक्त बनाने के लिये दशहरा पर्व प्रेरणा देता है। वैसे इस पर्व के साथ अनेकों कथायें जुड़ी हुई हैं। लेकिन मुख्यतः दुर्गा जो शक्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं, इसका इतिहास अधिक महत्त्व रखता है। कथा है कि ब्रह्माजी ने असुरों का सामना करने के लिये सभी देवताओं की थोड़ी-थोड़ी शक्ति संग्रहित करके दुर्गा अर्थात् संघशक्ति का निर्माण किया और उसके बल पर शुम्भ-निशुम्भ, मधु-कैटभ, महिषासुर आदि राक्षसों का अन्त हुआ। दुर्गा की अष्टभुजा का मतलब आठ प्रकार की शक्तियों से है। शरीरिक-बल, विद्या-बल, चातुर्य-बल, धन-शस्त्र बल, शौर्यबल, मनोबल और धर्म-बल इन आठ प्रकार की शक्तियों का सामूहिक नाम ही दुर्गा है। दुर्गा ने इन्हीं के सहारे बलवान राक्षसों पर विजय पायी थी।

समाज को हानि पहुँचाने वाली आसुरी शक्तियों और दुष्ट व्यक्तियों का प्रतिरोध करने के लिये हमें संगठन शक्ति के साथ-साथ उक्त शक्तियों का अर्जन भी करना चाहिये। उक्त आठ शक्तियों से सम्पन्न समाज ही दुष्टताओं का अन्त कर सकता है, समाजद्रोहियों को विनष्ट कर सकता है, दुराचारी षड्यन्त्रकारियों का मुकाबला कर सकता है।

दशहरा का पर्व इन शक्तियों का अर्जन करने तथा शक्ति की उपासना करने का पर्व है। स्मरण रहे संसार में कमजोर, अशक्त व्यक्ति ही पाप बुराई अन्यय को प्रोत्साहन देते हैं। जहाँ इस तरह के व्यक्ति अधिक होंगे वह समाज अस्त-व्यस्त एवं नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। वहाँ असुरता, अशान्ति, अन्याय का बोलबाला होगा ही।

दशहरे पर भगवान राम द्वारा राक्षसराज रावण पर विजय की कथा भी सर्वविदित है। व्यक्ति के अन्दर, परिवार एवं समाज में असुर प्रवृत्तियों की वृद्धि ही अनर्थ पैदा करती है। जिन कमजोरियों के कारण उन पर काबू पाने में असफलता मिलती है, उन्हें शक्ति साधना द्वारा समाप्त करने के लिये योजना बनाने-संकल्प प्रखर करने तथा तदनुसार क्रम अपनाने की प्रेरणा लेकर यह पर्व आता है। इसका उपयोग पूरी तत्परता एवं समझदारी से किया जाना चाहिये।

।। पूर्व व्यवस्था ।।

यह पर्व आश्विन नवरात्रि से जुड़ा रहता है। नवरात्रि साधना का महत्त्व एवं सामूहिक साधना क्रम का विवरण चैत्र नवरात्रि प्रकरण में दिया जा चुका है। नौ दिन का सामूहिक साधना का अनुष्ठान जहाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिस स्तर पर भी हो आयोजित किया जाना चाहिये। नवमी को बहुधा पूर्णाहुति के लिये सभी साधक एकत्रित होते हैं। दशहरे के दिन प्रातःकाल पूर्णाहुति रखकर नवरात्रि साधना की पूर्णाहुति एवं दशहरा पर्व का संयुक्त रूप से दिया जा सकता है। यदि साधना पूर्णाहुति नवमी को दशहरे से एक दिन पूर्व कर ली गई तो स्थानीय सुविधा के अनुसार दशहरा पर्व पूजन दशमी के दिन प्रातःकाल या सांयकाल कभी भी किया जा सकता है।

देवपूजन मंच पर अष्टभुजी माँ दुर्गा का चित्र स्थापित किया जाना चाहिये। शस्त्र पूजन के लिये कोई अस्त्र चौकी पर सजाकर रखना चाहिये। पूजन सामग्री के साथ पुष्प, अक्षत, चन्दन आदि उपस्थिति के अनुरूप पर्याप्त मात्रा में रखना चाहिये।

।। पर्व पूजन क्रम ।।

पर्व के अनुरूप प्रेरणा उभरने के लिये उपयुक्त संगीत एवं संक्षिप्त भूमिका के बाद पूजन क्रम प्रारम्भ किया जाता है।

षट्कर्म से रक्षा विधान तक सामान्य क्रम यथा परिस्थिति चलायें। विशेष पूजन क्रम नीचे लिखे अनुसार करें।

।। दुर्गा—आवाहन पूजन ।।

क्रिया और भावना

दुर्गा देववृत्तियों हितकारी प्रवृत्तियों के युग्म का नाम है। भावना करें कि यह देवानुकूल विशेषतायें हममें, जन-मन में जागें। उनका संयुक्त उपयोग करने की क्षमता मिलें। इन भावना के साथ सभी उपस्थित व्यक्ति हाथ जोड़कर यह मन्त्र बोलें।

ॐ संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनासि जानताम्।

देवाभागं यथापूर्वे सञ्जानानां उपासते।।

इसके बाद माता दुर्गा का विशेष आवाहन करें। मन्त्र—

श्री दुर्गाऽवाहनम्—

ॐ गिरिजायै विद्महे, शिवप्रियायै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।। —दुर्गा गायत्री

ॐ नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे,

नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।

नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे,

नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

ॐ श्री दुर्गायै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

तत्पश्चात् पुरुष सूक्त पृष्ठ २५ से षोडशोपचार पूजन करें।

।। शस्त्र पूजा ।।

प्रेरणा प्रवाह

पाशविक आसुरी शक्तियों को नियन्त्रित करने के लिये जिन साधनों की आवश्यकता पड़ती है, उन्हें शस्त्र कहते हैं। उनका उपयोग रक्षार्थ करना ही पड़ता है। परन्तु एक बार शस्त्र के उपयोग का अभ्यास होते ही उसका उपयोग स्वार्थ पूर्ति के लिये भी किया जाने लगता है। शस्त्रपूजा के साथ यह प्रेरणा जुड़ी है कि शस्त्र का ऐसा उपयोग हो जो पूज्य हो—अभिनन्दनीय हो। निन्दनीय उपयोग से उसे बचावे। शस्त्रों और उनका उपयोग करने वालों में दुर्गा वह संस्कार पैदा करे, जो उनको उद्देश्यों से बहकने न दें।

क्रिया और भावना

एक चौकी पर शस्त्र का प्रतीक रखकर मन्त्र सहित उस पर पुष्प चढ़ायें। जहाँ विशेष शस्त्र न हों वहाँ लाठी चाकू आदि रखकर ही काम चला लेना चाहिये।

ॐ शत्रू षाण्नीषाडभिमातिषाहो गवेषणः सहमान उद्भित्। वाग्वीव मन्त्रं प्रभरस्व वाचं सांग्राम जित्यायेषमुद्वदेह।। —अथर्व ५।२०।१

इसके बाद यज्ञ, दीपयज्ञ, आरती आदि समापन के उपचार यथा परिस्थिति किये जावें।

।। संकल्प ।

. . . . . नामाहं दुर्गापूजनपर्वणि समाजे स्वान्तःकरणे च सद्वृत्तीनां समारोपणे तदभिनन्दनसहकारयोश्च संकल्पमहं करिष्ये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीपावली

कार्तिक कृष्णपक्ष की अमावस्या को दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है। इसे मुख्य रूप से वैश्यों का त्यौहार माना गया है। प्राचीन काल में यह मुख्य रूप से सावनी फसल के तैयार होने की खुशी में मनाया जाता था और इसका नाम 'शारदीय नव सस्येष्टि' था। इस सम्बन्ध में 'मनुस्मृति' में लिखा है–

'सस्यान्ते नवसस्येष्ट्या तथर्त्वन्ते द्विजोऽध्वरैः।'

(अध्याय ४ श्लोक २६)

'नव सस्येष्टि' का अर्थ है

"नये शस्य (अन्न या फसल) के लिए यज्ञ"। इसके अतिरिक्त वर्षाकाल में जल की अधिकता से घरों में और नगरों के वातावरण में जो विकृति आ जाती है और उसके फलस्वरूप मनुष्यों के स्वास्थ्य पर जो प्रभाव पड़ता है, उसके लिए विशेष रूप से स्वच्छता की व्यवस्था करना भी इस त्यौहार का उद्देश्य है। इसके लिए दिवाली से कई दिन पहले घरों की सफाई, लीपा-पोती, सफेदी, मरम्मत आदि होने लगती है और अमावस्या के दिन तक सब लोग अपने घरों और कार्य-स्थलों को अपनी शक्ति के अनुसार अधिक से अधिक साफ-सुथरे और हर तरह से गंदगी से रहित बना देते हैं। दीपावली के पहले की चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी कहने का भी यही तात्पर्य है कि उस दिन तक हम अपने आस-पास की सब गंदगी को दूर करके लक्ष्मी के स्वागत के लिए तैयार हो जाएँ।

एक दृष्टि से दीपावली का त्यौहार विजयादशमी के त्यौहार से सम्बन्धित माना जा सकता है। विजयादशमी को क्षत्रियों का मुख्य त्यौहार और दीपावली को वैश्यों का मुख्य त्यौहार बतलाया गया है। इससे हम यह तात्पर्य निकाल सकते हैं कि जिस प्रकार विजयादशमी राज्य-व्यवस्था और राष्ट्र-रक्षा की व्यवस्था का निरीक्षण करने तथा जो त्रुटियाँ उनमें आ गई हैं, उनको दूर करने का अवसर है, उसी प्रकार दीपावली राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था का दिग्दर्शन करने और उसकी प्रगति के लिए नवीन योजना बनाने का समय है। इसी भावना ने जन-साधारण में इस विश्वास का रूप ग्रहण किया है कि दीपावली पर धन की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी भ्रमण करने को निकलती है और जिस भवन या निवास-स्थान को सुन्दर और आकर्षक ढंग से सजा देखती है, उसी में वर्ष भर के लिए अपना आवास बना लेती है। मानस-शास्त्र की निगाह से यह विश्वास निराधार नहीं है क्योंकि शोभा और समृद्धि तथा गंदगी और दरिद्रता में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। शोभा और सौंदर्ययुक्त स्थान की ओर ही सुख-समृद्धि भी आकर्षित होते हैं, मलीन और गंदे स्थानों में तो दरिद्रता का निवास स्वाभाविक ही है। पुराणों में लक्ष्मी का आसन दिव्य-निर्मल कमल बताया गया है। इसका भी आशय यही है कि लक्ष्मी सुंदर और सुसज्जित स्थान में निवास करती है।

इसलिए दीपावली का सच्चा संदेश यही है कि यदि हम अपने राष्ट्र को अपने समाज को समृद्धिशाली संपति का स्वामी बनाना चाहते हैं तो हम सबको मिलकर दैन्य और दरिद्रता के कारणों का मूलोच्छेदन करना चाहिए। जब देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो जाएगी, हमारे व्यापार और उद्योग-धंधों का विकास होगा, अन्य स्थानों से संपत्ति का प्रवाह हमारे देश की तरफ होगा, तभी हम सुख और वैभव का जीवन व्यतीत कर सकेंगे। यह सत्य है कि हमारे शास्त्रों ने आध्यात्मिक दृष्टि से त्याग और कष्ट-सहन का महत्व बताया है, पर वह मार्ग थोड़े से ही व्यक्ति अपना सकते हैं। यह कल्पना करना कि देश के सभी लोग त्यागी और तपस्वी बनकर लँगोटी बाँध लेंगे, निरर्थक है। फिर त्याग और तपस्या का यह भी अर्थ नहीं कि हम संपत्ति या सुखदायक पदार्थों को हाथ भी न लगावें। वरन् उसका मुख्य आशय यही है कि हम अपने मन की स्थिति को अभ्यास द्वारा ऐसा बना लें अथवा बालकों को आरंभ से ही ऐसी शिक्षा दी जाए, जिससे वे संपत्ति और वैभव के झूठे मोह में न फँसे और सच पूछा जाए तो ऐसी ही मनोवृत्ति के व्यक्ति राष्ट्र को सुख-संपत्ति के शिखर पर चढ़ाने वाले होते हैं। इस सम्बन्ध में उस अंग्रेज डाक्टर का उदाहरण अनुकरणीय है, जिसने मुगल सम्राट शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा को भयंकर रूप से जल जाने पर इलाज करके अच्छा किया था। जब बादशाह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ने उससे पुरस्कार माँगने को कहा तो उसने अपने लिए धन-संपत्ति न माँगकर यही माँगा कि मेरे देश से यहाँ आने वाले माल पर चुंगी न ली जाए। इसका परिणाम यह हुआ कि अन्य देशी व्यापारियों के मुकाबले में अंग्रेजों को बहुत बड़ी सुविधा मिल गई और वे दूसरों की प्रतिद्वंद्विता में सफल हो गए। पर हमारे यहाँ शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति निकलेगा, जो ऐसे अवसर पर अपने लिए कुछ न माँगकर देश या समाज के हित की माँग करे। हमारे यहाँ यह तो संभव है कि ऐसे अनेक लोग मिल जाएँ, जो ऐसा अवसर आने पर कुछ भी लेने से इन्कार करें और अपने कार्य का फल परोपकार या पुण्य ही समझें। यह बहुत बड़ा अन्तर हमारे यहाँ के लोगों और योरोपियन, अमेरिकन आदि देशों के मनुष्यों में है। अभी तक यहाँ के निवासी सामूहिक हित में व्यक्तिगत हित का अनुभव करने में असमर्थ रहे हैं और इसीलिए इस देश को पतन और गुलामी का अभिशाप सहन करना पड़ा है।

इसलिए दीपावली के त्यौहार के वास्तविक महत्व को समझना और उसके द्वारा देश को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करना हमारा परम कर्तव्य है। वैसे तो सभी कार्यों की सफलता के लिए योजना और व्यवस्था की आवश्यकता है, पर आर्थिक विषयों में तो इसके बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता। इस अवसर पर जिस प्रकार हम अपने बहीखातों को ठीक करके आगमी वर्ष के व्यापार के सम्बन्ध में विचार करते हैं, उसी प्रकार हमको इस अवसर पर राष्ट्र की आर्थिक अवस्था पर, अपने निजी पारिवारिक बजट पर भी विचार करना चाहिए। दीपावली के त्यौहार पर फसल का अवसर होने और जाड़े की ऋतु में व्यापार की अधिकता होने से यदि हम अपने देश और समाज के तथा अपने निजी सभी आर्थिक विषयों पर विचार कर लें तो वह निस्संदेह बड़ी लाभजनक प्रणाली सिद्ध होगी।

दीपावली का त्यौहार वास्तव में राष्ट्र के आर्थिक उत्थान का सामूहिक प्रयत्न है। वैसे तो सभी व्यापारी और उद्योग-धन्धों के संचालक सदा अपने हानि-लाभ का विचार करके अपने लिए लाभकारी व्यवस्था करते रहते हैं, पर दीपावली के अवसर पर हम राष्ट्र के आर्थिक हितों के ऊपर विचार कर सकते हैं। प्राचीन काल में ऐसा होता भी था और कदाचित उसी के प्रतीक स्वरूप आज भी प्रत्येक थोक व्यापारी दीपावली के दिन सब वस्तुओं का भाव लिखकर अपने परिचित अन्य व्यापारियों को भेजता है। हमको चाहिए कि हम दीपावली को सच्चे अर्थों में राष्ट्र के आर्थिक हितों पर विचार कर सकने और उसका विकास करने की साधना बना दें।

आर्थिक समस्या पर विचार करने का त्यौहार दीवाली

त्यौहार और संस्कार एक संस्कृति के प्राण कहे जा सकते हैं। संस्कारों द्वारा तो मनुष्यों के अन्तःकरण पर जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले उत्तम विचारों की अमिट छाप डालने का प्रयत्न किया जाता है। त्यौहार एक देश और जाति की सामूहिक समस्याओं को सुलझाने का माध्यम बनते हैं। इन शुभ अवसरों पर मिल-जुल कर, संगठित रूप से यह विचार विनिमय किया जाता है कि हमारी अमुक समस्या का समाधान किस प्रकार से किया जा सकता है। त्यौहारों द्वारा मानव-मस्तिष्क पर क्रियात्मक रूप से यह छाप डालने की चेष्टा की जाती है कि हम सब समाज रूपी शरीर के अभिन्न अंग हैं। अपने को समाज से पृथक् मानने और वैसा व्यवहार करने में अपने स्वार्थों का ही हनन करना है. और समाज हित का ध्यान रखते हुए तदानुसार व्यवहार करने में सब प्रकार से अपना और समाज का लाभ है।

जिस प्रकार से विजयादशमी स्वास्थ्य संवर्धन का, बसन्तपंचमी विद्या का, शिवरात्रि त्याग का, होली सफाई और स्वच्छता का, रामनवमी न्याय की रक्षा का, गायत्री तप का, गुरु पूर्णिमा श्रेष्ठ पुरुषों और गुरुजनों के सम्मान का, हरियाली अमावस्या वृक्षारोपण का, श्रावणी यज्ञोपवीत और वेद का, कृष्ण जन्माष्टमी गौ पालन का त्यौहार है। उसी प्रकार दिवाली हमारी आर्थिक समस्या को सुलझाने का शुभ अवसर है या यूँ कह सकते हैं कि दीपावली राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था का दिग्दर्शन करने और उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रगति के लिए नवीन योजना बनाने का समय है। अर्थ व्यवस्था व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों से एक महत्वपूर्ण समस्या है। जिसको सुलझाये बिना हम सुख और समृद्धि के मार्ग पर नहीं चल सकते। जो धन सम्पत्ति हमारे पास है या अपने पुरुषार्थ द्वारा हम कमाते हैं, उसका क्या उचित उपयोग होना चाहिए, पिछले वर्ष में जो आर्थिक कठिनाइयाँ हुई उनके क्या कारण थे और उनको दूर करने के लिए आगामी वर्ष में क्या-क्या प्रयत्न करने चाहिये। आड़े वक्त में काम आने के लिये अपनी आय में से कौन-कौन से खर्चे कम करके बचत योजना बनानी चाहिए, इन बातों पर सामूहिक रूप से विचार करने के लिये ही दिवाली का त्यौहार मनाया जाता है। इसलिए इस दिन लक्ष्मीपूजन किया जाता है और पिछले वर्ष के आय-व्यय का लेखा जोखा नई बहियों पर अपना व्यापार शुरू किया जाता है। उनका पूजन किया जाता है। इस दिन अपनी आय-व्यय का बजट बनाया जाना चाहिए। उसकी परीक्षा करनी चाहिए। जो व्यक्ति अपनी आय-व्यय की जाँच पड़ताल नहीं करता, यह देखने का प्रयत्न नहीं करता कि कहीं मेरी आय से अधिक खर्च तो नहीं हो रहा, उसका बुद्धिमान मनुष्य नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसके सामने कठिनाइयों का आना स्वाभाविक है। वर्ष में एक बार तो इस पर विचार कर ही लेना चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास जी ने ऐसे व्यक्ति को विचारवान् कहा है—

"तुलसी, सो समरथ, सुमति,
सुकृती, साधु सुजान।
'जो विचारि व्यवहरत जुग,
खरच लाभ अनुमान।।"

गृहस्थ जीवन में कार्य व्यस्तता के कारण नित्य प्रति जिन बातों पर विचार करने में हम असमर्थ रहते है, उनको अतिरिक्त समय में विशेष प्रकार की प्रसन्न मुद्रा में सोचने का अवसर हमें इन त्यौहारों में मिलता है।

दिवाली पर आगामी वर्ष की बचत योजना का बजट भी बना लेना चाहिए। जितनी आय हो, उतना ही खर्च करने में भी बुद्धिमानी नहीं है क्योंकि कौन जानता है ? कब मुसीबत आ जाय और धन की आवश्यकता पड़ जाय। इसलिए विपत्तिकाल के लिए अवश्य धन संचय रखने की योजना बनानी चाहिए कि आगमी वर्ष में हर मास इतने रुपये बचाये जायेंगे। बचत योजना में सहयोग के लिए कई साधन हमारे सामने हैं। बैंक या डाकखाने में कुछ रकम अपनी धर्म पत्नी या बच्चों के नाम से अलग जमा करा सकते हैं, अपने जीवन का बीमा करा के हर मास कुछ रुपए निकाल सकते हैं, नेशनल सार्टीफिकेट खरीद सकते हैं या फिक्स डिपोजिट में जमा करा सकते हैं।

पूर्वकाल में लोग बचत के लिए जेबर आदि मूल्यवान् धातुओं की वस्तुओं को बनवा लेते थे और कान, गले, हाथ, नाक आदि शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों पर पहन लेते थे क्योंकि उस समय धन की सुरक्षा का भय होता था। चूँकि आज धन की सुरक्षा के लिए बैंक आदि अन्य साधन उपलब्ध हैं इसलिए जेवरों की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। उससे तो, आर्थिक हानि ही है क्योंकि जितने धन को जेवर के रूप में बन्द कर लेते हैं, उससे पर्याप्त मात्रा में ब्याज मिल सकता है।

दिवाली को छोड़कर अन्य त्यौहारों पर केवल एक देवता या अवतार की ही पूजा की जाती है या उनके साथ धर्म पत्नि की, जैसे राम के साथ सीता, शंकर के साथ पार्वती की पूजा होती है। यह दिवाली के त्याहौर की विशेषता है कि इसमें दो ऐसे देवी-देवताओं का पूजन होता है, जिनका सीधे रूप में कोई सम्बन्ध नहीं है। लक्ष्मी और गणेश का साथ-साथ पूजन करने का अर्थ है कि लक्ष्मी का आह्वान करने के साथ-साथ, विचारशीलता का भी समावेश होना चाहिए। धन कमाने के साथ उसका उचित उपयोग भी जानना चाहिए। जिस प्रकार से अग्नि अत्यन्त लाभदायक होते हुए भी असावधानी में हानि पहुँचा देती है, उसी प्रकार से धन से सब सुख-सुविधाएँ प्राप्त होते हुए भी यदि उसका दुष्प्रयोग किया जाए तो वह जीवन को नाश की ओर ले जाता है।

सामाजिक दृष्टि से देखने पर भी दीवाली का महत्व कम नहीं है क्योंकि दीवाली आने से कई दिन पूर्व ही सर्वत्र घर-द्वार की सफाई होनी आरम्भ हो जाती है। घर की दीवारों पर सफेदी और रंगाई की जाती है। टूटे-फूटे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थानों की मरम्मत की जाती है। चूने और सीमेंट के अभाव में मिट्टी और गोबर से ही यही काम लिया जाता है। इस प्रकार से इसके आने के कई महीनों पहले विशेषकर वर्षा के चार महीनों की गन्दगी दूर हो जाती है और स्वच्छता का वातावरण उत्पन्न होता है। स्वच्छता का स्वास्थ्य से सम्बन्ध है। जहाँ गन्दगी होती है, वहाँ रोग की उत्पत्ति होती है। स्वच्छता से स्वास्थ्य का सुधार होता है और मन प्रसन्न और प्रफुल्लित रहता है। विष्णु भगवान् द्वारा नरकासुर के मारे जाने का तात्पर्य भी यही है कि नरक अर्थात् गन्दगी रूपी असुर को उस दिन मारा जाता है।

दीवाली हमारे लिए कर्मठता और जागरूकता का सन्देश लाती है। शास्त्रों के अनुसार जो व्यक्ति दिन-रात जागरण करके लक्ष्मी जी की पूजा करता है, उसी के घर में लक्ष्मी जी आती हैं, और आलस्य व प्रमोदवश यह पूजन नहीं करता, उसके घर की ओर लक्ष्मी जी ताकती भी नहीं। दिन-रात जागरण का अभिप्राय है अपने पुरुषार्थ पर आधारित रहना। इसी महाशक्ति द्वारा लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। कहा भी है—उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः। इसी प्रकार से पुरुषार्थ द्वारा प्रसन्न होने वाली लक्ष्मी की पूजा करके हम उसका अनुकरण करते हैं। दीवाली पर हमें पुरुषार्थ पर अवलम्बित रहने की प्रेरणा मिलती है। कुछ लोगों के मन में यह गलत धारणा उत्पन्न हो गई है कि इस रात को यदि जुआ खेलने से धन की प्राप्ति हो गई तो सम्पूर्ण वर्ष धन का लाभ होता रहेगा। जुआ खेलकर धन प्राप्ति की आशा करने का अर्थ है बिना परिश्रम के धनोपार्जन करना जो एक प्रकार से चोरी के समान है। अन्तर यही है कि जुए को खेल समझा जाता है और चोरी में दुःस्साहस किया जाता है। दीवाली का यह सन्देश है कि पुरुषार्थी के पास ही लक्ष्मी आती है। जो कम परिश्रम करके अधिक धन की आशा करता है उसे निराश ही होना पड़ेगा और इसका परिणाम भी प्रायः सन्तोषजनक नहीं होता। इसलिए दीवाली के शुभ त्यौहार पर जुए की प्रचलित लत को प्रोत्साहन न देना चाहिये और लोगों को उससे बचने की प्रेरणा करनी चाहिए। जब पाण्डवों और नल जैसी पुण्य आत्माओं पर इसी बुरी लत के कारण विपत्तियों के पहाड़ टूट पड़े तो साधारण व्यक्ति किस गिनती में है। इन प्रत्यक्ष उदाहरणों से सीख लेकर हमें जुए के त्याग के संकल्प लेने चाहिए।

दीवाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। इसके सम्बन्ध में कई कथाएँ प्रचलित हैं। कुछ लोगों का कहना है कि राजा बलि ने अन्य देवताओं के साथ लक्ष्मी को भी बन्दी बना लिया था और विष्णु भगवान् ने वामन रूप में इसी दिन अन्य देवताओं सहित लक्ष्मी को छुड़वाया था। नरकासुर भी इसी दिन विष्णु भगवान् द्वारा मारा गया था। कुछ विद्वानों का कथन है कि भगवान् राम रावण को मार कर वनवास की १४ वर्ष की अवधि समाप्त करके, जब लक्ष्मण और सीतासहित अयोध्यापुरी लौटे तो सम्पूर्ण भारत में उत्सव मनाया गया था। उसी स्मृति में दीपकोत्सव मनाया जाता है। दीवाली के अवसर पर कोई भी हिन्दू घर ऐसा न होगा, जहाँ दीपक न जलते हों। इस त्यौहार को इसलिए भी अधिक प्रोत्साहन मिला है कि इस दिन भारत की तीन महान् विभूतियाँ महावीर स्वामी, स्वामी दयानन्द और स्वामी रामतीर्थ अपने पवित्र शरीरों को त्यागकर स्वर्गवास को सिधारे। इन महान् आत्माओं ने तिल-तिल जल कर सहस्त्रों मनुष्यों को जो प्रकाश प्रदान किया है, वह कभी बुझने न पाये, इसलिए उनकी स्मृति में घर-घर दीपमाला जलाई जाती है। जो दीप वह जला गए हैं, उसको हम स्थिर रखेंगे प्रतीक रूप में स्थूल दीपक जलाकर हम इसका आश्वासन देते हैं।

दीपक का वैज्ञानिक महत्व भी है। इसके प्रकाश से वायु शुद्ध होती है। वर्षा में जिन कीट-पतंगों की वृद्धि होती है और जिनसे रोगों के फैलने की सम्भावना होती है, वह जलकर मर जाते हैं। मीठे तेल और घी के दीपक से निकलने वाला धुआँ स्वास्थ्य के लिये शीतकाल में विशेष लाभदायक होता है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हमें दीवाली को धूम-धाम के साथ मनाना चाहिए। केवल घर की सफाई और कुछ दीपक जला लेना ही पर्याप्त नहीं है, वरन् जिन महत्वपूर्ण विचारों का ऊपर दिग्दर्शन किया गया है, उन्हें क्रियारूप में लाकर इसे उचित रीति से मनाने चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्तिकी अमावस्या का ज्योति पर्व

दीपावली भारतीय संस्कृति का प्रमुख त्यौहार है। उत्तर भारत के व्यवसायी इस अवसर पर अपना आर्थिक वर्ष आरम्भ करते हैं। इस पर्व में कई देवताओं के पूजन का विधान सम्मिलित है। लक्ष्मी और गणेश की आमतौर से पूजा होती है। यों पौराणिक तारतम्य के अनुसार दोनों के बीच कोई-सम्बन्ध रिश्ता नहीं है, पर दोनों को एक केन्द्र पर जोड़ देने का दार्शनिक महत्व अवश्य है।

गणेश बुद्धि के देवता हैं और लक्ष्मी सम्पदा की देवी। सम्पत्ति की अपेक्षा व्यक्ति को बुद्धिमान होना चाहिए, साथ ही देवोपम-नीतिवान भी। धन का उपार्जन न्याय-नीति के आधार पर हो और उसका उपयोग करने में भी विवेकशीलता से काम लिया जाय। यदि अनीतिपूर्वक उपार्जन और अपव्यय जैसा खर्च किया जाय, तो लक्ष्मी की प्रसन्नता का लाभ न मिल सकेगा। दुरुपयोग से तो उल्टा अनर्थ ही होता है और लक्ष्मीवान गरीब ईमानदार की तुलना में अधिक घाटे में रहता है।

रावण विजय पर दीपावली के दिन राम का राज्याभिषेक हुआ था, इसलिए उसकी खुशी में दीपदान किया गया। नरकासुर वध की कथा भी इसी पर्व के साथ जुड़ी हुई है। यहाँ नरक को गंदगी के रूप में व्याख्यापित किया गया है। वर्षा के बाद कीचड़, गंदगी, ज्वर या फुंसी आदि का प्रकोप होता है। इसका कारण भीतरी और बाहरी गंदगी का उबल पड़ना है। दीपावली के अवसर पर घरों की लिपाई-पुताई तो होती है। इसके अतिरिक्त जलाशयों खाद-कूड़ा आदि जमा करने के स्थानों की स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

एक दार्शनिक प्रतिपादन है कि जब सूर्य-चन्द्र नहीं होते और अमावस्या की भयानक रात डरावनी लगती है, तब उस संकट का निवारण छोटे-छोटे दीपक मिलकर करते हैं। इसमें छोटों की उस गरिमा का प्रतिपादन है, जो उनके एकत्रित होने पर हो सकती है। गोवर्धन पूजा भी दीपावली के दूसरे ही दिन होती है। गोवर्धन का शब्दार्थ है—गोओं का संवर्धन, उनका पालन एवं अभ्युदय। दीपावली इतनी विशेषताओं से भरी हुई है।

इसके अतिरिक्त इस दिन कुछ ऐसी घटनायें भी हुई हैं, जो प्रेरणाप्रद भी हैं और अविस्मरणीय भी। इसी दिन जैन धर्म के तीर्थंकर भगवान महावीर का स्वर्गवास हुआ था। उनका जीवन जितने समय रहा, जन-जन को प्रेरणा और प्रकाश देता रहा। उन्होंने अहिंसा, प्रेम, तप और त्याग को अपने जीवन का प्रतीक बनाया, जो कुछ कहा, लिखा और किया वह सभी इस आदर्शवादिता के अनुकूल था।

स्वामी रामतीर्थ का भी देहावसान इसी दिन हुआ। वे टिहरी के समीप गंगा की पवित्र गोद में समा गये। वे वेदान्त के अनुयायी थे। आत्मा में परमात्मा की ज्योति सत्ता का दर्शन करते थे, साथ ही उन्होंने सब में एकात्मा के समावेश होने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। "आत्मवत सर्वभूतेषु" की सनातन मान्यता को उनने और भी प्रखर किया।

स्वामी दयानन्द का देहावसान भी दीपावली को हुआ। वे एक चले गये, पर अपने पीछे अनेकों ऐसे ज्वलन्त दीपक छोड़ गये, जिनके तर्क और श्रद्धा का समन्वय किया और विवेक को प्रतिष्ठा दी।

दीपावली ज्योति पर्व है। भीतर और बाहर फैले हुए अन्धकार को निरस्त करने के लिए कटिबद्ध होने की उसमें प्रेरणा है। हम स्वरूप प्रकाशवान बन और समूचे वातावरण को जगमग बनाये यही उत्साह हर वर्ष इस पावन पर्व से प्राप्त करते हैं।

दीपावली पर प्रेरणाओं के दीप जलें

दीपावली लक्ष्मी-पूजन का पर्व है। यों पर्व की दृष्टि से हम उसका लाभ भले ही न ले सकें किन्तु उस पूजन-विधान के पीछे जो मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक शिक्षण का रहस्य सन्निहित है, उसे हृदयंगम कर कोई भी व्यक्ति, कोई भी समाज आर्थिक सन्तुलन, समृद्धि एवं सम्पन्नता का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। दीपावली पर्व मनाने का यही मूल उद्देश्य भी है। यदि वह शिक्षण व्यावहारिक जीवन में उतारे न जायें तो लकीर पीटने में कोई महत्व नहीं रह जाता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज यही उल्टी स्थिति है। दीपक जलाते हैं पर प्रकाश न हमारे आन्तरिक जीवन में आता है, न बाह्य जीवन के अभाव और तंगी दूर होती है। जुआ खेलने और अपव्यय बरतने जैसी बुराइयाँ और भर गई हैं, जिसके कारण मूल प्रयोजन ही नष्ट हो जाता है।

धन व्यक्ति और समाज का मेरुदण्ड है। उत्पादन, उद्योग, व्यापार आदि बढ़ाकर ही आर्थिक सम्पन्नता उपलब्ध की जा सकती है। और इसके लिये व्यक्तिगत जीवन में बुद्धि, निरालस्यता, सुमति और कर्मठता की आवश्यकता पड़ती है। श्रमशीलता, ईमानदारी और धन के सदुपयोग का स्वभाव विकसित करना होता है। यह अवलम्बन न हो और व्यसन, बनावट, गूढ़ता, फिजूलखर्ची और शेखी खोरी की आदतें जीवन भर रही हों तो कैसे आशा की जा सकती है कि वह व्यक्ति संपन्न और उद्योगशील बनेगा ऐसी स्थिति में तो दीन और दरिद्र होना ही सम्भव है वही हो भी रहा है।

धन मनुष्य जीवन के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है किन्तु वह जीवन का साध्य नहीं। आज स्थिति बिलकुल उलट गई है। धन की तृष्णा जन-मानस में इतनी बुरी-तरह व्याप्त हो गई है कि उसके लिये कोई भी छल-प्रपंच, भ्रष्टाचार, मिलावट, रिश्वत आदि का रास्ता अपनाने को न पाप मानते हैं, अनैतिक। सामाजिक जीवन में अशांति और असंतोष का यह जबर्दस्त कारण है और उसे आध्यात्मिक पृष्ठ-भूमि पर ही लाकर सुधारा जा सकता है।

इसीलिये दीपावली को एक महान् धार्मिक पर्व माना गया। गणेश, पूजन, लक्ष्मी स्तोत्र, लक्ष्मी पूजन, गौ-पूजन, गो-द्रव्य पूजन, बहीखाता, दवात और दीपदान आदि मांगलिक कृत्य उन प्रेरणाओं को उभारते हैं, जो सामाजिक जीवन में आर्थिक, सयंम और पवित्रता के लिये आवश्यक हैं।

जब-जब परम्परायें विकृत हो चुकी हैं, तो विचारवान् व्यक्तियों का यह पुण्य कर्तव्य हो जाता है कि जन-मानस में धन के धार्मिक मूल्यांकन के लिए कुछ अभिनव प्रयत्न करें। युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत सभ्य समाज की रचना का अत्यधिक महत्वपूर्ण अंग इन प्रयत्नों से ही सफल होना सम्भव है।

कंजूसी न बरती जाय पर यह भी आवश्यक है कि धन का दुरुपयोग न हो। आर्थिक सम्पन्नता के लिये उद्योग और व्यापार को बढ़ाया जाय, किन्तु साथ ही यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि अनैतिकता और बेईमानी को बढ़ावा न मिले। दोष-दुर्गुणों से छुटकारा पाने और वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर उपार्जन बढ़ाने के लिये जन-मानस का आध्यात्मिक नव-निर्माण आवश्यक है। इसलिये अब इन पर्वों को यह शिक्षण लेकर उतरना चाहिये और यह उत्तरदायित्व पूरा करने के लिये प्रबुद्ध व्यक्तियों को प्रसन्नतापूर्वक आगे आना चाहिये।

युग-निर्माण शाखाओं और इस परिवार के विचारशील लोगों पर कर्त्तव्य भार अपेक्षाकृत अधिक है, इसलिये उन पर जोर डालकर भी नव-निर्माण की गतिविधियों को आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है। संस्कारों, गीता-कथा, सत्यनारायण कथा आदि के माध्यम से लोक-शिक्षण की आवश्यकता पूरी कर रहे हैं, वहाँ पर्वो का अभिनव पद्धति से मनाना भी आवश्यक है। इससे आर्थिक क्षेत्र में व्याप्त अशान्ति और असन्तोष एवं वर्ग-संघर्ष की कुटिलता का उन्मूलन संभव होगा। उसके बिना न तो कोई व्यक्ति सुखी रह सकता है और सामाजिक व्यवस्था ही स्थिर रह सकती है।

यों दीपावली हर घर में मनाई जाती है। प्रत्येक घर में कुटुम्बी लोग पर्व और त्यौहार मनाने की इस नई पद्धति से शिक्षाओं और प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए मनावें। इस तरह का आग्रह अपने गाँव, पड़ौस और सम्बन्धियों से करना चाहिये। ऐसा कोई स्थान जहाँ अधिक से अधिक लोगों को बैठाया जा सके, नियत करके उसकी सफाई सजावट आकर्षक ढंग से कर ली जाये। वहीं एक यज्ञ मंडप और पूजन की वेदी तैयार कर ली जाय। दीपावली के लिये कुछ पढ़े-लिखे व्यक्ति पहले से भाषण की तैयारी कर लें। आचार्य उसे नियुक्त करें, जो प्रत्येक कर्मकाण्ड की व्याख्या भी करता रहे और लोगों को उससे सम्बन्धित सद्प्रेरणायें भी देता चले।

सामान्य प्रकरण का पूजन समाप्त कर पुरुष-सूक्त से गणेश पूजन सम्पन्न करें। लक्ष्मी पूजन का सब सामान लक्ष्मी, गणेश के चित्र या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मूर्ति, गोद्रव्य, कलम-दवात और बहीखाते आदि एक वेदी में पहले से रखें। गणेश पूजन के बाद लक्ष्मीपूजन किया जाय। लक्ष्मी स्तोत्र का सब सामूहिक पाठ करें। शंख, चक्र, गदा, पद्म आदि के रंगीन चावलों से प्रतीक चिन्ह बनाकर उनका पूजन किया जाये। गौ और गौ-द्रव्य पूजन के साथ गाय की महत्ता पर प्रकाश डालना चाहिये। इसके बाद बहीखाते, कलम, दवात का पूजन कर दीपदान करें। दीपों के स्थान पर मोमबत्तियों का भी प्रकाश फैलाकर मानव मात्र के अन्तःकरण में प्रकाश की भावना करनी चाहिये। उसके बाद विशेष आहुतियाँ देकर हवन का शेष कृत्य सम्पन्न किया जाना चाहिये। इन सभी क्रिया-कलापों में विवेचन का सर्वाधिक महत्व है। उसके बिना त्यौहार लकीर पीटना मात्र रह जाता है और उससे कोई जनहित नहीं होता। सम्पूर्ण कार्यक्रम में भावनाओं को उभारा जाना बहुत आवश्यक है। उसी से प्रेरणायें व्यावहारिक जीवन में उतरती हैं।

सामूहिक आयोजनों में जैसे पर्व की व्यवस्था हो उसके अनुसार खील, बतासे आदि का प्रसाद भी बाँटना चाहिये। सम्भव हो तो दैनिक उपासना, चालीसा, चित्र आदि भी वितरण किया जाये।

दीपावली की पृष्ठभूमि

प्रत्येक राष्ट्र एवं जाति अपने बीते युग की स्मृति सुरक्षित रखने का प्रयास करती है क्योंकि वर्तमान का भवन निर्माण अतीत की नींव पर ही किया जाता है यही कारण है कि संसार के राष्ट्रीय पर्वों का आधार शिक्षा, मनुष्य की उस प्रकृति पर निर्भर करती है, जिसे वह अतीत की सांस्कृतिक स्मृतियों के संचय पर्व संरक्षण में दत्तचित रखता है।

भारत के सम्बन्ध में यह तथ्य अत्यधिक सत्य है। पुरातन काल से ही भारत सांस्कृतिक पर्वों का स्थान रहा है जिनका आज राष्ट्रीय महत्व और भी बढ़ गया है। भारत के ये सांस्कृतिक पर्व धार्मिक वातावरण में पगे हैं क्योंकि भारतीय संस्कृति की मुख्य प्रेरणा धर्म रही है।

सांस्कृतिक पर्वों के साथ धार्मिक भावना और धार्मिक भावना के साथ लौकिक गाथाओं का सम्बन्ध भारत की अपनी विशेषता है। अतः भारतीय त्यौहारों की वह बहुत बड़ी विशेषता रही है कि चाहे वह छोटा हो अथवा बड़ा, जनता के हृदय में भारतीय संस्कृति के सारगर्भित मूल सिद्धातों को सुलभ रूप में समयानुसार जगाते रहे है इन पर्वों की अक्षुण्णता उसी तरह बनी रही है, जिस तरह अनेक प्रहारों एवं विदेशी आक्रमणों का सामना करते हुए भारतीय एकता भले ही परतन्त्रता जनित नवपोषित संस्कृति के झेकोरों से इन त्यौहारों की दीपशिखा प्रकम्पित हुई हो परन्तु वह वाह्य संस्कृति के किसी झोंके से बुझी नहीं।

दीपावली के पीछे भी यह भावना लिपिबद्ध है। दीपावली का उत्सव प्रति वर्ष बड़ी सजधज और उत्साह के साथ सम्पूर्ण भारत में मनाया जाता है। इस ज्योतिमाला के द्वारा उपनिषदों का 'तमसोमाज्योतिर्गमय' का वालोकपूर्ण एवं आनन्दमय सन्देश पिछले सहस्त्रों वर्षों से हमें मिलता आया है। हो सकता है कि इस श्रृंखलाबद्ध दीपमाला के पीछे भी भारतीय ऋषियों की वही भावना कार्य कर रही हो, जो उनके सामाजिक जीवन के विकास क्रम का वाह्य एवं आन्तरिक प्रतीक बन, इतिहास के तमसाबृत्त पृष्ठों को फाड़कर जीवन की प्रगति का निर्वाह करती हुई, आज तक हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रेरणा, शक्ति एवं आलोक प्रदान करती आई है। ऐसा मालूम पड़ता है कि भारतीय ऋषियों ने चार महीने की बरसात के कारण जो गन्दगी होती होगी उसी को साफ करने के लिए तथा अमावस्या के अन्धेरे को भुलाने के लिए गन्दगी के स्थान पर शरद के रूप में आई हुई स्वच्छता की देवी, लक्ष्मी के आवाहन हेतु अमावस्या के अन्धेरे में दीपकों के आलोक से प्रकाश मय बनाने की धार्मिक भावना जोड़ दी हो, जो बाद में दीपावली कहलाई।

प्राचीन ब्राह्मण साहित्य में वात्सायन का कामसूत्र भी दीपावली पर्व पर कुछ प्रकाश डालता है। कामसूत्र में उल्लेख मिलता है कि कार्तिकी अमावस्या को एक उत्सव मनाया जाता था, जिसे यक्षरात्रि उत्सव कहा जाता था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्मण साहित्य के अतिरिक्त प्राचीन भारत के बौद्ध और जैन साहित्य में दीपावली उसी के अनुरूप पर्वो का वर्णन है।

बौद्धों के 'पुष्कृत जातक' में एक ऐसे त्यौहार का प्रसंग मिलता है, जो कि कार्तिकी महीनों में मनाया जाता था और जिसका सम्बन्ध बुद्ध के ज्ञान प्राप्त के समय से जोड़ा जाता है। पर इस ऐतिहासिक प्रमाण के मिलने पर भी बौद्ध इतिहास में इस पर्व का कोई स्थान नहीं। अशोक बौद्ध धर्म का महान् प्रचारक था उसने बुद्ध के जीवन सम्बन्धित घटनाओं को मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया परन्तु उसके जीवन से सम्बन्धित ऐसी कोई घटना नहीं, जिसमें दीपावली, का उल्लेख हो।

कुछ लोगों ने इस त्यौहार की पृष्ठभूमि में जैन तीर्थकर महावीर स्वामी का निर्वाण और उनके प्रिय शिष्य इन्द्रभूति गौतम को ज्ञान-लक्ष्मी की प्राप्ति बताया है। जैन लोगों का कहना है कि दीपावली महावीर निर्वाण की स्मृति में ही मनाई जाती है। आज से करीब ढाई हजार वर्ष पूर्व कार्तिक कृष्ण चतुर्दर्शी की रात्रि में पाबा नगरी में भगवान महावीर का निर्वाण हुआ। निर्वाण की खबर सुनते ही सुर, असुर, मनुष्य नाग गन्धर्व आदि बड़ी संख्या में पावा एकत्र हो गये। रात अंधेरी थी अतः देवों ने रत्नों के दीपकों का प्रकाश कर निर्वाण उत्सव मनाया और उसी दिन कार्तिकी अमावस्या के प्रातः काल ब्रह्म-मुहूर्त में उनके प्रधान शिष्य इन्द्राभूति गौतम को ज्ञान-लक्ष्मी की प्राप्ति हुई थी। तब से प्रतिवर्ष उक्त तिथि को दीपावली का आयोजन होने लगा।

परन्तु सन्देह निवारण नहीं होता, क्योंकि आज जिस रूप में दीपावली मनाई जाती है, उससे ज्ञान प्राप्ति की भावना का सन्देश नहीं मिलता। आज तो दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजा का विधान है, जो कि धन की सूचित का, वाहिका एवं देवी है साथ ही यदि महावीर के जीवन से सम्बन्धित घटना होती तो भारत के जीवन में व्याप्त न रहकर केवल जैन धर्मावलम्बियों के जीवन तक ही सीमित होती। यह भी नहीं कहा जा सकता कि दीपावली महावीर के समय से ही प्रचलित हुई क्योंकि ब्राह्मण युग में और उससे पूर्व भी इसकी विधि प्रचलित थी।

ऐतिहासिक प्रमाणों के इन अभावों में हमें प्रचलित विश्वासों का भी आश्रय लेना पड़ेगा। प्रचलित विश्वास के अनुसार दीपावली का श्रीगणेश राम के लंका विजय के बाद अयोध्या लौटने के कारण माना जाता है। श्रीराम का रावण को मारकर अयोध्या लौट आना अयोध्यावासियों के लिए एक आनन्द सूचना थी। आनन्द से विभोर हो उन्होंने श्रीराम के सकुशल आगमन हेतु दीप जलाए और सम्पूर्ण अयोध्या नगरी को प्रकाशाभिभूत कर दिया। तभी से आज तक यह परम्परा चली आई है। परन्तु न तो वाल्मीकीय रामायण में और न अन्यत्र ही इस आशय का उल्लेख हमें मिलता है। यदि विजय उपलक्ष्य ही दीपावली पर्व का एक मात्र ध्येय रहा होता तो क्यों न प्राचीन भारत के राजाओं ने अपनी विजय कीर्तियों को चिर स्थिायी बनाने के लिए दीप स्तम्भ बनवाये। हो सकता है, सामग्री के अभाव में और वैज्ञानिक ज्ञान की कमी के कारण ऐसा सम्भव न हो सका हो।

परन्तु त्रेता में जिस प्रकार अयोध्या में दीपावली मनाई गई होगी, उसका रोचक वर्णन गोस्वामी तुलसीदास कृत गीतावली में मिलता है—

सांझ समय रघुवीर पुरी की शोभा आज बनी।
ललित दीप मालिका विलोकहिं हितकर अवध धनी।।
घर घर मंगल चार एक रस हरखिन रंक धनी।
'तुलसीदास' कल कीरति गावहि जो कलिमल समनी।।

कुछ भी हो भगवान राम के जीवन से इस घटना को जोड़कर प्राचीन महर्षियों ने उस भावना को जीवित रखने का प्रयत्न किया, जब कि आर्यों ने अनार्यों पर विजय प्राप्त की और पुरातन संस्कृति को कायम रखा।

प्रारम्भ में दीपावली का जो भारतीय सांस्कृतिक रूप रहा होगा, उसकी कल्पना की जा सकती है। आज जिस धन-लक्ष्मी की पूजा इस पर्व पर होती है, उसका भी ऐतिहासिक महत्व जान पड़ता है। इस पर्व का प्रयोजन एवं सर्वप्रियता हमें वाण भट्ट की रचना से प्राप्त होती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'यह रण रूपी उपवन में भ्रमण करने वाली भ्रमरी लक्ष्मी जिस समय समुद्र मन्थन से निकली उसके साथ अन्य अनेकों वस्तुएँ भी निकलीं। उन प्रत्येक वस्तुओं के दोषों का समावेष लक्ष्मी में है। परित्रास पल्लव से इसने राग लिया। चन्द्रमा से टेढ़ापन, उच्चैश्रवा घोड़े से चंचलता, कालकूट से मोहन शक्ति, मदिरा से मद और कौस्तुभ मणि से अत्यन्त निष्ठुरता।''

सम्भवतः इन दोषों का परिहार करने के लिए ही भारतीय ऋषियों ने दीपावली का यह त्यौहार प्रारम्भ किया हो ताकि लक्ष्मी की शुद्धि करके उसका प्रयोग किया जा सके।

दीवाली का संदेश

दीपावली का उत्सव हर साल आता है और विदा हो जाता है। शत-शत दीप जलाकर हम अपने घरों को सुशोभित बनाते हैं, माता लक्ष्मी की आराधना करते हैं कि वे अपनी कृपा कोर से हमें निहाल कर दें। हर साल हम इस पुण्य पर्व को नवीन आशा के साथ मनाते हैं पर सब व्यर्थ चला जाता है, भगवती प्रसन्न नहीं होतीं।

आज तो वे क्रुद्ध हो रही हैं, दरिद्रता का ताण्डव नृत्य हो रहा है। हर चीज की असाधारण महँगाई, उत्पादन क्षेत्रों का शुष्क हो जाना, अतिवृष्टि अनावृष्टि का प्रकोप ऐसा उग्र रूप धारण किये हुए हैं कि पैसे की सर्वत्र कभी दिखाई देती है, हर व्यक्ति अर्थ चिन्ता से दुःखी हो रहा है, व्यवहार-कारोबार, उद्योग, मजूरी किसी भी ओर संतोष की सांस लेने का अधंकार नहीं है। अभाव और चिन्ता की ज्वाला में गृही विरागी सभी जले जा रहे हैं।

जिस दिन दीप दान हुआ, घृत और तेल के भरे हुए दीप मालों, झरोखों और मुंडेरों पर जगमगाये उस दिन भी विश्व सुख की नींद नहीं सोया। असंख्यो निरीह व्यक्ति बारूद की भट्टी में ऐसे ही भून दिये गये जैसे भड़भूजा चने को भून देता है। जगती की पीठ रक्त की धाराओं से लाल हो रही है, प्रभू के प्रिय पुत्रों का इस प्रकार संहार करने में आज का सभ्य जगत बड़े गर्व के साथ लगा हुआ है।

माता लक्ष्मीजी हमारी उपासना पर प्रसन्न होने की अपेक्षा ऐसा भयंकर रूप धारण करके विनाश के मुहँ में हमें क्यों ढकेले दे रही हैं ? पाठको ! शान्त मन से जरा इस पर विचार करो। अपने बहुत-सा समय फूटे हुए मकानों पर सफेदी कराने और टूटे हुए किवाड़ों पर रंग कराने में लगाया है। अब थोड़ा समय इस बात के चिन्तन में भी लगाइये कि हमारी आराधना से सन्तुष्ट होने के स्थान पर नाशक बज्रदंड क्यों उठाया जा रहा है ?

कहते हैं कि मनुष्य ने पिछली शताब्दियों में ज्ञान विज्ञान की नवीन शोध की है, उसने बड़े-बड़े यंत्र, औजार, साधन, सिद्धान्त आविष्कृत किये हैं और वह इस नतीजे पर पहुँचा है कि—'जीवन शरीर तक ही है इसलिये खाओ पीओ मौज उड़ाओ।'' देह को भस्मी भूत समझते हुए 'ऋण कृत्वा घृतं पिवेत्' के सत्यानाशी मार्ग पर मनुष्य दौड़ पड़ा है। "धर्म ठगों का पेशा है, ईश्वर डरपोकों की कल्पना है, त्याग मूर्खों की सनक है।'' आज का भौतिक विज्ञान इन उक्तियों का प्रतिपादन करता है और चकाचौंध में अन्धे हुए लोग इन उक्तियों के सामने मस्तक झुका देते हैं। मनुष्य जीवन की इस शैतानी व्याख्या का अनेकानेक तर्कों के आधार पर प्रतिपादन किया गया है। फलस्वरूप भूमंडल के एक कौने से दूसरे कोने तक यह विश्वास किया जाने लगा है कि शरीर आत्मा है। शरीर ही उपासनीय है, भोग ही आत्मानंद है। कुच कांचन को जीवन का उद्देश्य बनाकर आदमी पिशाच के रूप में आ गया है। उसका एक मात्र स्वार्थ ही परमेश्वर बना हुआ है।

स्वार्थ यह तो एक बड़ी भारी अतृप्त इकाई है। कितने विषय भोग, सुख सम्पदा से तृप्ति हो सकती है। इसकी कोई मर्यादा नहीं। तृष्णा अनन्त है, वह निरन्तर बढ़ती रहती है और क्षितिज के छोर तक, जब तक मनुष्य चिता पर चढ़ता है, तब तक 'और लाओ' की ही दृष्टि लगी रहती है। इन्द्रिय तृप्ति का मार्ग है ही ऐसा कहते हैं कि अगस्त्य ऋषि इस भूतल के सब समुद्रों का पानी पीकर तृप्ति हो गये थे परन्तु स्वार्थ पूर्ण सुखेच्छा सम्पूर्ण ब्रह्मण्डों को पी कर भी शान्त नहीं हो सकती। अपने लिये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिक चाहने की इच्छा, व्यक्ति, परिवार, नगर और देश अपने सदृश्य दूसरों का शोषण करना चाहते हैं, क्योंकि प्रकृति द्वारा बराबर दी हुई चीजों में से अधिक तो तभी मिल सकती हैं जब दूसरे का शोषण किया जाय, दूसरे के मुख का ग्रास छीन लिया जाय। शोषण एक प्रचण्ड दैत्य है, जिसको पीछे-पीछे बड़े कराल दाँतों वाले भूत भैरवों की सेना चलती है। स्वार्थ से शोषण और शोषण से कलह होता है। प्रभु की पवित्र सृष्टि में कुहराम मचाना या मचने देना यह एक बड़े पातक हैं ऐसे पानकियों के घरों में लक्ष्मीजी नहीं रहना चाहती वे अपने पिता के घर वापिस जा रही हैं। समुद्र से वे प्रकट हुई थीं और समुद्र में ही विलीन होने की इच्छा करती हैं। कंस ने शिला पर पटककर आदि शक्ति को मारा था, हम उसे तोप के मुँह पर उड़ा रहे हैं। ऐसी दशा में कौन आशा करेगा कि मां लक्ष्मी हम से प्रसन्न होगी।

भूल के मार्ग पर चलता हुआ मनुष्य सर्वनाश के खंदक के निकट मरने के लिये पहुँच गया है। यदि वह वापिस न लौटा तो उसे भगवती का और भी अधिक कोप सहन करना पड़ेगा। मानव-धर्म के यथार्थ स्वरूप को हमें ढूढ़ना होगा और पुनः उसका अवलम्बन करके अपने इष्ट मार्ग पर आवृत होने का प्रयत्न करना होगा। ईश्वर ने मानव-प्राणी को इस संसार में इसलिए नहीं भेजा है कि अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के हित का हनन करें और उचित अनुचित रीति से अपनी आसुरी लालसाओं को तृप्त करें। वरन् इसलिये भेजा है कि अपनी दिव्य-शक्ति का सहारा देकर अपने से छोटो को ऊपर उठावें, उन्नत बनायें और सुमार्ग पर प्रवृत्त करें। अपने तुच्छ स्वार्थों को दूसरों के सुखों के लिए छोड़कर उन्हें सुखी बनाने में अपने को सुखी समझें। किन्तु हाय ! हम अपने इस जीवनोद्देश्य को तो बिल्कुल ही भूल गये हैं, जिस वाटिका के माली बनाकर भेजा गया था, उसे काटने में लगे हुए हैं। फिर भी चाहते हैं कि माता लक्ष्मीजी प्रसन्न होकर हमें सुख शान्ति प्रदान करें।

ठहरिए, पीछे लौटिये, अपने स्वार्थों की अतृप्त लालसा को छोड़कर, दूसरों के लिए त्याग करना सीखिए। अपने हृदय के दीपक में प्रेम का रस भरकर, उसे त्याग की अग्नि द्वारा जलने दीजिए। इसी दीपक के प्रकाश में आज का पीड़ित और मतिभ्रमित संसार अपने कल्याण का मार्ग पा सकेगा। अपने हृदय में त्याग और प्रेम के दीपक जलाइए, दूसरों के लिए अपने सुख छोड़ दीजिए, सबको अपना समझिए और आत्मीयता की भावना से उन्हें देखिए। त्याग का यह आदर्श आज के कलह-कष्टों को सदा के लिए हटा सकेगा। छियानवे करोड़ दीपकों का प्रकाश, संसार भर का पथ-प्रदर्शन कर सकेगा और रूठी हुई लक्ष्मी को वापिस बुला सकेगा।

शुभ ज्योति 'जग – मग' 'जगमग' करदे

दीपावली ज्योति पर्व है। परस्पर स्नेह युक्त अभिनन्दन का क्रम इस पर्व पर चलाया जाता है। जिनके प्रति अपने मन में स्नेह है उनके लिए शुभ कामनायें तो उठती ही रहती हैं पर उनकी अभिव्यक्ति और अनुभूति का भी अपना महत्व है। जिन हृदयों में आत्मीयता की तरंगें उठती हैं और जिनकी आत्मीयता का क्षेत्र विस्तृत है, वे निःसंदेह भाग्यवान है। उनके लिए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उन्हें ईश्वरीय अनुग्रह प्रत्यक्ष रूप में मिला है वे उसे धारण कर सके हैं। साथ ही यदि विस्तृत क्षेत्र के आत्मीय परिजनों तक अपनी भाव तरंगों की अभिव्यक्ति पहुँचा सके अथवा शारीरिक दृष्टि से दुरस्थ परिजनों के भाव सिंचन की स्निग्धता अनुभव कर सकें तो सोने में सुगन्धि की उक्ति चरितार्थ होती है।

युग निर्माण परिवार के परिजनों पर यह दोनों ही उक्तियाँ सही उतरती हैं। हम सभी अपने आप को विश्वव्यापी विशाल परिवार का अभिन्न एवं महत्वपूर्ण अंग मानते हैं, अनुभव करते हैं। कहने की बात नहीं कि अपने हृदयों में स्नेह युक्त आत्मीयता की तरंगों की हलचल स्वभावतः बनी ही रहती है। अपने प्रयासों और उपलब्धियों से जनसाधारण को चकाचौंध कर देने वाली गतिविधियों के संचालन में इन्हीं तरंगों का तो हाथ है। अन्यथा स्थूल दृष्टि से कौन, किसे, किस हद तक इस प्रकार उठने, चलने बढ़ने के लिए बाध्य करता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी प्रकार हमें इस दिव्य आत्मीयता की अभिव्यक्ति एवं अनुभूति के अवसर भी सतत् मिलते ही रहते हैं। विभिन्न समारोहों आदि के माध्यम से हमारा स्नेह भावों को आदान-प्रदान चलता ही रहता है। सबसे सुगम, सुलभ और प्रभावशाली माध्यम हमारी पत्रिकायें हैं। इन्हें हाथ में लेते ही परिजनों को अपने परिवार की व्यापकता और आत्मीयता का बोध होता है। इन्हें पढ़ते हुए लगता है कि हम सब एक लक्ष्य के लिये सक्रिय है। सभी में सभी के हित के लिए प्रबल भाव ही नहीं प्रखर क्रियाशीलता भी है। पाक्षिक के पृष्ठ तो विशेष रूप से मानोभावों के धनी पाठकों के लिए टेलीविजन के पर्दे बन जाते हैं। लगता है सारे देश के भाइयों से चर्चा का वार्तालाप का क्रम चल रहा है, एक-दूसरे की गतिविधियों का प्रत्यक्ष दर्शन करके, उनसे प्रेरणायें तथा अनुभवों का आदान-प्रदान हो रहा है।

दीपावली के पुण्य प्रसंग में भी भाव भरे हृदयों की सद्भावनाओं के आदान-प्रदान के लिए इसी माध्यम का लाभ हमें प्राप्त है। अपनी भावना के नेत्रों से अज्ञानान्धकार की, अमावस्या जैसी रात्रि में दीपक की तरह टिमटिमाते जगमगाते, जागृतात्मा-कर्मठ परिजनों की विशाल पंक्ति दिखाई दे सकती है। यह लाखों दीपक एक साथ एक-दूसरे को सराह सकते हैं। "शाबास दीपको, खूब जले—इस अन्धकार में जीना तो तुमने सीखा—जलो और प्रखरता से जलो—जलते रहो और एक 'ज्योति से सहस्त्रों को ज्योतिर्मय कर दो।"

कार्तिक अमावस्या के अन्धकार में टिमटिमाने वाले दीपकों से तो एक रात्रि की शोभा से थोड़ी मूक प्रेरणा पाकर भी संतुष्ट हुआ जा सकता है, किन्तु चैतन्य दीपकों के कर्तव्य की इति श्री तो इतने मात्र से नहीं होती। इन दीपकों की भूमिका तो लम्बी है। हमारा पात्रत्व तो अभी स्थिर है। स्नेह उसमें भरा ही है—वर्तिका तो उसकी अभी बहुत लम्बी है अज्ञान अमावस्या भी अभी समाप्त नहीं हुई तो यह दीपक जलेंगे-जलते रहेंगे ?

इन कर्मठ दीपकों की पंक्ति के हर दीपक को दीपावली के अभिनन्दन को सार्थक करना है। एक जलता हुआ दीपक हजारों दीपक जला सकता है। अन्धकार प्रकाश का अभाव मात्र है। यदि दीपकों की संख्या बढ़े ज्योति निखरे तो फिर काली कलूटी अमावस्या भी सुहावनी और दर्शनीय हो जाये।

पात्रत्व, मित्र और लगन (वर्तिका) युक्त दीपक जैसे व्यक्तित्वों का समाज में नितान्त अभाव नहीं। खोज-बीन की जाय तो सारे बानक बने हुए भी बहुतेरे मिल सकते हैं। पुरुषार्थ प्रेमी सद्भावना शील व्यक्ति समाज में है। उन्हें दीपावली की पंक्ति में लाना भर है। ऐसे भी बहुतेरे व्यक्ति मिल सकते हैं, जिनमें कोई एक पक्ष कम विकसित है। थोड़े प्रयास से वह विकसित भी हो सकता है। आवश्यकता यह है कि उनसे सम्पर्क किया जाय, निकट से देखा समझा जाये और जागृत किया जाय। जो ज्याति-दान हमें मिला है उसके प्रकाश में ही कुछ दीपक ढूँढ़े और ज्योतिर्मय किए जा सकें तो समझना चाहिए कि हमारा दीपकत्व—हमारी कर्मठता सचमुच सार्थक हुई।

युग निर्माण परिवार द्वारा कुछ कार्यक्रम इसी उद्देश्य से चलाये गये हैं। यज्ञों की श्रृंखला ऐसे ही दीपकों की खोज के लिए है। उसके माध्यम से उपयुक्त संस्कारवान् व्यक्तियों से सम्पर्क करना सम्पर्क में आये व्यक्तियों के साथ थोड़ी-सी भी मेहनत की जाये तो उनके सुप्त संस्कार जागृत होकर, उन्हें ज्योविर्दान जैसा लाभ दिया जा सकता है।

थोड़े समय सम्पर्क बनाकर छोड़ देने से उनके अन्दर कुछ हलचल उठी भी तो कालान्तर में शान्त हो जाती है। उसके लिए उनसे नियमित विचार सम्पर्क आवश्यक है। यह कार्य व्यक्तिगंत रूप से मिलते रहकर भी किया जा सकता है पर सबसे अच्छा ढंग उन्हें अपनी किसी पत्रिका के ग्राहक बना देना है। फिर तो स्वध्याय के द्वारा उन्हें नियमित विचार पोषण मिलता रहता है।

अस्तु अपनी पत्रिकायें लोगों तक नियमित पहुँचे यह एक सामयिक महत्वपूर्ण सेवा का पुण्य कृत्य है। पत्रिकाओं का नया वर्ष जनवरी से होता है। पुराने ग्राहकों से चन्दा लेने तथा नये ग्राहक बनाने का क्रम अभी से तत्परतापूर्वक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योजनाबद्ध रूप से चलाया जाना चहिए। ग्राहकों से पूरे वर्ष का चन्दा तो लिया ही जाता है। जो लोग एक साथ चन्दा नहीं दे सकते, उन्हें मासिक, ग्राहक भी बनाया जाये तो ऐसे ग्राहकों की सूची अपने पास रखी जाये। उसके अनुसार पत्रिकायें अपने पास मँगा ली जायें और उनका मूल्य लेकर उन ग्राहकों तक पहुँचा दी जायें।

इस सभी कार्यों के लिए सामूहिक गोष्ठी बुलाकर स्पष्ट रूप-रेखा निर्धारित कर लेनी चाहिए। अच्छा तो यह हो कि व्यक्तिगत टोली गत या सामूहिक न्यूनतम लक्ष्य भी निर्धारित कर लिये जायें।

भावना और लगन के धनीपरिजनों के लिए प्रचार ट्रैक्टरों द्वारा ५-१० व्यक्तियों को प्रभावित करना और व्यक्तिगत अथवा टोली स्तर पर स्थायी या अस्थायी १०-२० नये ग्राहक खड़े कर लेना कोई बड़ी बात नहीं है। अन्तः करणों को स्वच्छ एवं प्रकाशित करने के इस अभियान में युग साधक बढ़ चढ़कर आगे आयेंगे ऐसा विश्वास है।

दीपावली पर्व की प्रेरणा और शिक्षण

सामाजिक सुख समृद्धि के लिए हम सत्प्रवृत्तियाँ जागृत करें

दीपावली को मुख्यतः लक्ष्मी का—धनसंपदा का—आर्थिक वैभव और मानसिक उल्लास का पर्व कहा जाता है। इसी कारण इस दिन धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी का पूजन किया जाता है। पर्व वस्तुतः एक सामाजिक संस्कार प्रक्रिया है। व्यक्तिगत उत्थान के लिए भारतीय मनीषियों ने जिस प्रकार पूजा उपासना का विधान किया और पारिवारिक व्यवस्था को उत्कृष्ट बनाये रखने के लिए जिस प्रकार संस्कार आयोजन चलाये गये। उसी प्रकार समाज को समुन्नत और विकसित बनाने के लिए पर्वों के माध्यम से उन सभी सत्प्रवृत्तियों को सुस्थिर रखने की प्रेरणा दी गयी जो इस प्रयोजन की पूर्ति के लिये आवश्यक है। इन अर्थों में दीपावली को समाज की सुख समृद्धि की व्यवस्था हेतु आवश्यक सत्प्रवृत्तियों और सत्प्रेरणाओं के जागरण का पर्व भी कहा जा सकता है।

धन की अधिष्ठात्री देवी-महालक्ष्मी के पूजन का मर्म यही है कि हम अपने समाज को और सुख संपन्न बनाने में सहायक सिद्ध हो सकें। इन दिनों देश की अधिकांश जनसंख्या सामान्य से भी गये गुजरे स्तर का जीवन जी रही है और हम लक्ष्मी को अपने घर में ही कैद करने की कामना करते रहे, औरों की अपेक्षा अवहेलना कर उल्टे-सीधे तरीकों से अपना ही घर भरने की बात सोचते रहें—दीपावली का यह उद्देश्य नहीं है। यह तो पूरे समाज की आर्थिक उन्नति के उपाय खोजने और उन्हें करने का संकल्प लेने का पर्व है। पर्वायोजनों का उद्देश्य किसी भी व्यक्तिगत आशा-आकांक्षा पूरी करने की अपेक्षा समूह का समाज का उत्थान ही अधिक है और उसी में व्यक्ति का भी हित है।

दीपावली के सम्बन्ध में जनसाधारण का यह विश्वास है कि इस दिन महालक्ष्मी भ्रमण के लिये निकलती है। और जिस स्थान को सबसे सुन्दर, सबसे आकर्षक देखती हैं, उसे ही अपना आवास बना लेती हैं। मानव शास्त्र की दृष्टि से यह विश्वास निराधार नहीं है। क्योंकि शोभा और दरिद्रता में—गंदगी और समृद्धि में परस्पर घोर विरोध है। सुशोभित सुन्दर स्थान पर ही सुख समृद्धि भी आकर्षित होती है और गंदे स्थानों में दरिद्रता का निवास भी स्वाभाविक है। समृद्धि और संपन्नता स्वच्छता, सुव्यवस्था, शुचिता और स्निग्धता भरे वातावरण में ही विकसित होती और फलती-फूलती है।

हमारे देश और समाज में व्याप्त दरिद्रता का कारण यदि वहाँ के बाहरी वातावरण में व्याप्त गंदगी, अस्वच्छता, मलीनता और जन मानस में घुस पड़ी विकृतियाँ निकृष्टतायें तथा कुविचारणायें कहा जाय तो असंगत न होगा देश की दरिद्रता यदि दूर करनी है तो हमें इस तथ्य की ओर भी ध्यान देना पड़ेगा। दीपावली पर्व का सच्चा संदेश यही है कि यदि हम अपने राष्ट्र को अपने समाज को समृद्ध और संपन्न बनाना चाहते हैं तो उन कारणों को दूर करने के लिए प्रयास करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना

व्यक्ति निर्माण के कार्यक्रम को लेकर परिवार निर्माण और समाज निर्माण के उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सक्रिय है। समाज की समृद्धि तथा सम्पन्नता के लिए व्यक्ति और परिवार को भी सुधारना पड़ेगा। इस दृष्टि से काम बहुत बड़ा है—कहा जा सकता है। परन्तु काम बड़ा है—इस आधार पर उसे करने में असमर्थता व्यक्त नहीं की जा सकती। बड़े-बड़े काम भी छोटे-छोटे व्यक्तियों के छोटे-छोटे कदमों से पूरे हुए हैं। और वस्तुतः पूरा राष्ट्र तथा पूरा समाज व्यक्तियों के आधार पर ही कोई स्वरूप ग्रहण करता है। दृष्टिकोण का आधार रहे समाज तथा प्रत्येक व्यक्ति कार्य करे आत्म निर्माण का तब सबका हित सधता चलेगा।

यह शंका उठना स्वाभाविक है कि व्यक्ति निर्माण के छोटे-छोटे प्रयासों द्वारा पूरे समाज को किस प्रकार बदला जा सकता है, महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास भी तो महान और विशाल चाहिए। लेकिन इस कारण छोटे प्रयासों में असफल होने का भय नहीं किया जाना चाहिए।

रात्रि का अन्धकार हो

अमावस की रात और सारी पृथ्वी पर चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा। ऐसी अन्धेरी रात में एक छोटा-सा मिट्टी का दीपक। अपनी टिमटिमाती लौ से जलताहुआ, आखिरी दम तक अन्धकार से सघष करता है। यदि कहीं उसे यह ख्याल आ जाय कि अन्धेरा है पूरी पृथ्वी पर और में हूँ बहुत छोटा। ऐसी स्थिति में अन्धकार को कहाँ तक खदेड़ सकूँगा तो कहा नहीं जा सकता कि वह अपने लिए स्वतंत्र रहता तो जलने के लिए तैयार होता या नहीं। और नहीं जलता तो न तो कोई उसका महत्व होता और न ही जीवन।

जीवन इस बात पर निर्भर नहीं है कि हम अपने उद्देश्य को प्राप्त करने कहाँ तक सफल होंगे। वरन् वह तो इस बात पर निर्भर है कि हम अपना प्रयोजन दायित्व पूरा करने के लिए तैयार हैं या नहीं। तैयार है तो ही जीवन का मूल्य है और महत्व है। अन्यथा जलने से इन्कार करने वाले दियों की भाँति-जिनमें तेल भी भरा है और बाती भी है कोई मूल्य नहीं लाखों, लाखों ही नहीं करोड़ों भी जीव हैं। जीव का सम्बोधन हो, जिनके लिए अनुपयुक्त है ऐसे निष्प्राण निस्तेज और निर्जीव चेतनाओं का क्या मूल्य और क्या महत्व कार्तिक कृष्ण की अमावस्या को दीपावली पर्व मनाने की परम्परा इन अर्थों में गहरा महत्व रखती है।

दीपावली पर्व के आयोजन का आधार समग्र समाज का उत्थान है और कार्यपद्धति है स्वयं की इस दिशा में तैयारी और स्वयं का उत्साह। लक्ष्य बहुत बड़ा है, मंजिल बहुत दूर है और उसकी तुलना में हमारे कदम छोटे हमारी सामर्थ्य बहुत अल्प है—यह कहकर दायित्व से छुटकारा नहीं पाया जा सकता। सामाजिक उद्देश्यों को सामने रखकर व्यक्तिगत और पारिवारिक योजना व्यवस्था बनाने पर न तो एकागी स्वार्थ की नीति रह जाती है तो हमारी और न ही हम औरों के हितों को हानि पहुँचाने का दुष्कृत्य कर पाते हैं। पुराणों और धर्मशास्त्रों में लक्ष्मी का वरदान उन्हीं के लिए सुरक्षित बनाया गया है, जो न्याय और श्रम पूर्वक धन उपार्जन करते हैं। इसका कारण पूरे-समाज के सभी सदस्यों के हित को प्राथमिकता देना ही है। यह तो स्पष्ट ही है कि सबके सुख और सबके हित में व्यक्ति का सुख और व्यक्ति का हित भी अन्तर्हित है।

भारत भर में मनाये जाने वाले इस दीप पर्व को अपनी शाखायें भी मनायेगी। दीपावली के पर्व के अवसर पर लोक शिक्षण के लिए इन सभी तथ्यों को समुचित रूप से उभारा जाना चाहिए। पदों का विधि विधान तो एक सा ही बहुत मामूली और उनमें थोड़ा सा आंशिक अन्तर ही हो सकता है, जिससे परिजन भलीभाँति अवगत हैं, विस्तृत विधि विधान भ्रमतन्त्र से लोग शिक्षण पुस्तक के प्रथम खण्ड में छपा है। उस आधार पर इस पर्व की प्रेरणाओं और शिक्षाओं को भी उभारना चाहिए। तभी पर्वायोजन सार्थक है। दीपावली पर्व वस्तुतः राष्ट्र के उत्थान हेतु सामूहिक प्रयत्नों का प्रेरक पर्व है। केवल घर की सफाई कर लेना अैर कुछ दीपक जला लेना भर ही पर्याप्त नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन विचारों और प्रेरणाओं को भी क्रियान्वित कर ही इसे उचित रूप से मनाया जा सकता है।

दिव्य निर्मल कमल-लक्ष्मी का आसन

दीपावली पर्व भारत में मनाये जाने वाले लोक-प्रचलित त्यौहारों में यह सर्वाधिक जनमान्य है। प्रायः भारत भर के सभी क्षेत्रों में यह पर्व मनाया जाता है और इस पर्व पर लक्ष्मी पूजा के साथ यह कामना की जाती है कि वर्ष भर ऐश्वर्य समृद्धि की देवी लक्ष्मी हमारे घरों में आवास करे। रुढ़ अर्थों में इस पर्व पर केवल बाह्य सतर्कताओं और उस दिन स्वच्छता, शुचिता आदि का ध्यान रखा जाता हो और आशा की जाती हो कि दिन से लक्ष्मी की अनुकम्पा प्रसन्नता प्राप्त हो जाय और घर में सम्पन्नता, श्री और समृद्धि स्थायी बनी रहे, यदि नहीं हो तो हो जाय।

यह आशा—अपेक्षा शायद ही किसी की पूरी होती हो और दीनता दरिद्रता को लक्ष्मी का कोप समझा जाता हो। लेकिन इसमें दोष न तो धन की अधिरात्री देवी लक्ष्मी का है और न ही पर्व के प्रवर्तकों का। यथार्थ अर्थ में सूक्ष्म दृष्टि द्वारा पर्व को समझा ज़ाय तो यह किञ्चित भी असम्भव नहीं है कि दीपावली को सही अर्थों में मनाने वाला दीन-दरिद्र और दुःखी बना रहे। मानस शास्त्र के आधार पर यह मान्यता भी झूठी नहीं है कि लक्ष्मी इस दिन जिस स्थान को स्वच्छ, सुन्दर और आकर्षक देखती है वही निवास करने लगती है। यह एक तथ्य है कि समृद्धि का वास स्वच्छ और सुन्दर स्थानों पर ही होता है। गन्दे, मलीन और मैले स्थानों आवासों की ओर तो लक्ष्मी ताकती भी नहीं। गन्दगी का एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव उन स्थानों में आवास करने वालों पर यह होता है कि उनका स्वभाव आलसी, अकर्मण्य और प्रमादी बनाता चलता है। जिन्हें रोज स्नान का अभ्यास है, कदाचित किन्हीं कारणों से इस अभ्यास में व्यतिक्रम आ जाये तो दिन भर मनोमालिन्य बना रहता है और वे न जाने कैसी सुस्ती, शिथिलता और आलस्य का अनुभव करने लगते हैं। यही स्थिति स्वच्छताप्रिय लोगों की भी होती है, और जिन्हें कभी नहाने का अभ्यास नहीं है या जो गन्दगी में ही रह रहे हो उनकी अकर्मण्ययता भी वातावरण का, परिवेश का मानसिक प्रभाव ही होती है न कि स्वतःजन्य।

गन्दगी और मलीनता का यह एक मानसिक दुष्प्रभाव है और इस दुष्प्रभाव के रहते मनुष्य की कर्मण्यता, श्रम-निष्ठा और मनोयोग सभी आवश्यक गुण जंग लगे हो जाते हैं। कहने का अर्थ यह नहीं है कि गन्दगी भर ही दीनता और दरिद्रता का कारण है। दैन्य-दारिद्रय के लिए अन्य कारण दुर्बलतायें भी उत्तरदायी हैं पर उनके विकास में गन्दगी का—मलीनता का परिवेश ही अधिक उत्तरदायी ठहरता है। यदि बाह्य अर्थों में मलीनता की बात सोची जाय तो यही स्थिति बनती है और आभ्यन्तर दृष्टि से यह सोचा जाय तो सारा दारोमदार मलीनता पर ही है। सारे दोष दुगुर्ण और विकार मलीनता में ही जन्म लेते हैं, जैसे कि गन्दगी में कीड़े, मच्छर और अन्य विषैले जीवाणु।

तो वर्ष भर का रोज साफ न की जा सकने वाली, धीरे-धीरे इकट्ठी होने वाली गन्दगी दीपावली के दिनों में साफ होती है। वैसे भी वर्षा ऋतु के समय ही दो तिहाई से अधिक गन्दगी इकट्ठी होती है। बरसाती पानी में नदी नाले भर जाते हैं तो घरों के आस-पास कीचड़ और गन्दगी इकट्ठी हो जाती है—उन सब की सफाई का अर्थ है पर उससे भी और ज्यादा अर्थ अपनी आन्तरिक मलीनताओं के निष्कासन का। इस तथ्य को समझने के लिए लक्ष्मी के आसन की ओर भी देखना चाहिए। लक्ष्मी का आसन है कमल। कमल को उच्च शुचिता का प्रतीक कहा जाता है, उसका बाहरी रूपरंग और कलेवर भी साफ, स्वच्छ सुन्दर और आकर्षक होता है। उसका जन्म भी मलीनता से पंक से ऊपर उठने और पानी की सतह पर फिर भी जलतल से पृथक् रहते हुए खिलकर होता है।

देववाद और पूजा अर्चा के रहस्यों का प्रतीकात्मक विवेचन आन्तरिक मलीनताओं के निष्कासन और दिव्य शुचिता के आग्रहण की ओर इंगित करता है। अतः लक्ष्मी अनुकम्पा प्राप्ति के लिये आवश्यक है कि बाह्य जीवन में स्वच्छता शुचिता का अवलम्बन लेने के साथ-साथ आन्तरिक शौच का भी विकास करना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चाहिए। शुचिता बाह्य भी हो और आभ्यन्तरिक भी तभी लक्ष्मी का उपविश्व आसन-दिव्य निर्मल कमल प्रस्तुत किया जा सकता है और उसके विराजने की आशा की जा सकती है।

लक्ष्मी को प्रसन्न करने, उसकी कृपा पाने और संपन्न तथा समृद्ध बनने के लिए तो सभी कोई प्रयत्न करते हैं परन्तु उसके साथ ही यह तथ्य भुला देते हैं कि लक्ष्मी—मात्र लक्ष्मी अपूर्ण है। उसकी पूर्णता नारायण के युग्म में है। गाड़ी के दो पहियों की तरह लक्ष्मी और नारायण एक-दूसरे से संयुक्त और दूध चीनी की तरह एक-दूसरे में सम्पृक्त हैं। इन दोनों को प्रसन्न किया जाना चाहिये। नारायण—ईश्वरीयचेतना का प्रतीक है और उसकी सेवा का अर्थ है ईश्वरीय प्रयोजन की पूर्ति में अपनी विभूतियों और सम्पदाओं का नियोजन-समर्पण।

कहा जाता है कि धन की सार्थकता उसके सदुपयोग में है, न कि संचयन में। संचित किया हुआ धन अहंकार को भले ही पोषित करता रहे पर उसकी प्रयोजनीयता का कोई संगत अर्थ नहीं बैठता। धन का, सम्पत्ति और विभूतियों का सर्वश्रेष्ठ उपयोगी यही है कि अपने आस-पास भी नर से नारायण की झांकी खुली आँखों से मिल सके। ऐसी परिस्थितियाँ करने के लिए प्रयत्नशील रहना।

नारायण के बिना लक्ष्मी का कोई अर्थ नहीं और न ही वह कहीं आधे रूप से विराजती है। नारायण के बिना—नर को नारायण बनाने के लिये प्रयत्न किये बिना कोई व्यक्ति धनवान भले ही बन जाय पर लक्ष्मी का कृपा पात्र नहीं बन सकता। लक्ष्मी दैवी अर्थों में है और उसकी कृपा का लाभ जिसे भी मिलेगा उसे सन्तोष, तृप्ति, आनन्द और स्वास्थ्य की प्राप्त होंगी ही। अन्यथा लक्ष्मी-हीन धनवान, अरबपति होने पर भी हाय-हाय करता, अतृप्त खिन्न, उद्विग्न और रुग्ण बने ही देखे जाते हैं।

अपने परिवार की पर्व मर्यादा एक अनूठा गौरव रखती है और वे पर्वायोजनों के माध्यम से लोक शिक्षण का केन्द्र बनकर ही चलती है। थोड़े बहुत अन्तर से सभी पर्वों का विधान एक ही है अतः उसी विधि-विधान के अनुसार यह मनाया जाना चाहिए। विवधि विधि प्रयासों द्वारा जनमानस में यह तथ्य प्रतिष्ठत किया जा सके कि लक्ष्मी का अनुकम्पेय बनने के लिये वे दिव्य निर्मल कमल का आसन तैयार कर और उसके साथ-साथ नारायण की भी अर्चना करें तो चारों ओर सुख समृद्धि की आशा की जा सकती। दीपावली को हमें इसी रूप में मनाने का प्रयास करना चाहिए।

नव प्रकाश से नव प्रयास जुड़ें

दीपावली के अवसर पर हमें उन तथ्यों मार्गदर्शन और जीवनादर्शों का स्मरण भर कर लेना चाहिए जिनके लिए ही वस्तुतः पर्व त्यौहारों की व्यवस्था रखी गयी है। यह चर्चा स्मरण आवश्यक भी है, और इससे भी ज्यादा आवश्यक अनिवार्य यह बात है कि हम उन आदर्शों को हृदयङ्गम करने के लिए कितनी तत्परता दिखाते हैं। व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में हमारी गतिविधियाँ जितनी अधिक उन सिद्धान्तों के अनुरूप ढलेंगी चलेगी पर्व को उतना ही सार्थक समझ जाना चाहिए।

प्रत्येक पर्व एक आदर्श विशेष का सन्देश लेकर आता है, जिसे पर्वयोजना की तैयारी से लेकर कर्मकाण्डों तथा उल्लास भरे विशेषकार्यों का सूक्ष्म विश्लेषण कर समझा जा सकता है। मात्र सैद्धान्तिक प्रतिपादन सर्व सामान्य के लिए एक रूखा विषय होता है, इस प्रकार की सिद्धान्त चर्चा की अपेक्षा विशेष प्रकार से उन आदर्शों की रससिक्त बनाकर प्रस्तुत किया जाय तो ही सर्वसाधारण की रुचि उस दिशा में उन्मुख होती है। इस पद्धति से वह प्रयोजन भी पूरा हो जाता है, जो व्यक्ति को उत्कृष्ट और समाज को सुखी बनाने में सहायक सिद्ध होता है।

दीपावली का प्रधान आयोजन लक्ष्मीपूजा है। हर व्यक्ति के लिए लक्ष्मी—धन, अर्थ शक्ति निर्वाह का मूल आधार है। इसलिए धन—समृद्धि की देवी रूप में प्रतिष्ठा की गयी है, उसे आवश्यकता पूर्ति के लिए अर्जित करने का संकल्प, आह्वान आमन्त्रण और पूजन वन्दन आदि कृत्य सम्पन्न किये जाते हैं। धन को देवता समझकर उसके स्वागत अभिवन्दन, न्यायपूर्वक उपार्जन, उद्योग श्रम और सुख

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अभिवृद्धि के लिए उसका नियोजन आदि कई प्रेरणायें इन कृत्यों के माध्यम से मर्म-स्थल को स्पर्श करने वाली है। जो लोग इस तथ्य का अनुभव इस अवसर पर कर सकें, उन्हें ही समझना चाहिये कि लक्ष्मी ने हमारे यहाँ रहना स्वीकार कर लिया है और उन प्रेरणाओं को अपने जीवन का आधार बना लिया जाय तो वह सदैव हमारे ऊपर अपनी अनुकम्पा बनाये रखेगी।

विश्वास किया जाता है कि दीपावलि के दिन लक्ष्मी प्रत्येक घर में आती है। उसके स्वागत-सत्कार की समुचित व्यवस्था न होने पर पुनः लौट जाती है। शरीर धारी स्त्री जैसा व्यक्तित्व रखने वाली कोई देवसत्ता इस अवसर पर आती हो या न आती हो परन्तु उसके स्वागत सत्कार की तैयारी महीनों पूर्व की जाने लगती है। घर साफ करने गन्दगी धूल और अस्वच्छता हटाने, रंगाई, पुताई करने आदि जैसी सैकड़ों शुचिता-प्रक्रियायें काफी समय पहले ही आरम्भ कर दी जाती है। किसी विशेष सम्मान्य अतिथि के आगमन अवसर पर जो तैयारियाँ की जाती हैं, वे ही इन दिनों भी सम्पन्न होती हैं।

इसी तैयारी व्यवस्था में दीपावलि पर्व का अधिकांश शिक्षण भरा पड़ा है। गन्दगी हटाने और स्वच्छता बढ़ाने का ध्यान दीपावलि के अवसर पर ही दिया जाना चाहिए—बात यह नहीं है। पर्व तो स्वच्छता—शुचिता का महत्त्व समझाने के लिए निर्मित एक विधान विशेष है। उस सन्देश को तो निरन्तर सुनते रहने और क्रियान्वित करने की आवश्यकता है। माना कि दीपवलि पर लक्ष्मी आती है, स्वच्छ साफ और शुचितर घर मकान उसमें निवास करने वाले व्यक्तियों से प्रसन्न होकर वह ठहर भी जाती हैं परन्तु ठहरने के बाद भले ही गन्दगी और मैला बढ़ता रहे तो भी क्या वही बैठी रहेगी ? गन्दगी से घृणा करने वाली शक्ति के लिए गन्दे होते स्थानों में भी जमे रहना कोई जरूरी नहीं है। गन्दगी मलीनता बढ़ती रहने दी जाय तो बात कैसे बनेगी ? जो बाहर से गंदा गलीज रहता है अन्दर से भी आलसी, अकर्मण्य और अस्त-व्यस्त ही रहेगा, ऐसे व्यक्ति के पास लक्ष्मी भला क्यों निवास करेगी ?

मलीनता और गंदगी को हटाने तथा शुचिता स्वच्छता को बढ़ाने की ओर ध्यान देना हमें अपने व्यक्तिगत जीवन से ही आरम्भ करना चाहिए। हम अपने शरीर मन, उपकरण, आचरण को अधिकाधिक शुद्ध रख सकें तो समझना चाहिए दीवाली रोज ही मन रही है। शुचिता को युग निर्माण आन्दोलन का प्रथम आधार इसी कारण निरूपित किया गया है कि हमारा हर उपकरण हर अंग और जीवन का प्रत्येक क्षण पवित्र बने।

दीपावली पर्व पर स्वच्छता का भाव अपने देश में लगभग हर व्यक्ति के मन में किसी न किसी रूप में उभरता है। इस भाव प्रवाह को मलीनता हटाने और स्वच्छता बढ़ाने की प्रवृत्ति गतिमान बनाने में किया जाना चाहिये।

अब शुचिता-प्रधान जीवन और समाज के निर्माण की दिशा में विशेष प्रयत्न किये ही जायें। गन्दगी हटाने से किसी भी प्रकार संकोच न किया जाय, जहाँ भी अशुचिता और मलीनता दिखाई पड़े उसे हटाने में तुरन्त तत्पर हुआ जाय। स्वच्छता के सर्वांगीण महत्व को समझाने और उसे अपनाने की प्रेरणा देने के प्रयास किसी भी समय से चलाये जा सकते हैं। आरम्भ भले ही दीपावली से माना जाय।

पूजा प्रकरण में स्वच्छता की बात सब कहते हैं किन्तु उसे चिन्ह पूजा की तरह नहीं गम्भीर सिद्धान्त के रूप में चलाने की दिशा जनसाधारण को दी जाय। शरीर वस्त्र आदि केवल छींटे देकर पवित्र करने की अपेक्षा यथार्थ रूप में पवित्र बनाने की बात समझाई जाय। हमारे नित्योपयोगी उपकरण वस्तुतः स्वच्छ और व्यवस्थित रहें। घर और मकान को स्वच्छ रखने के लिए नित्य समय व श्रम लगाया जाता रहे। तो स्वच्छता आह्लाद, प्रसन्नता और सुरुचि जन्य आनन्द की प्रदात्री ही सिद्ध होगी।

शुचिता का दूसरा पक्ष है—आचरण की शुद्धि। मन में छल, कपट, द्वेष प्रचण्ड मिथ्या जैसी घृणित दुष्पवृत्तियों और दोषों को दूर करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। जो भीतर हो वही बाहर प्रकट किया जाय। विचार और व्यवहार में साम्य सत्य भाषण आदि सद्गुण और सत्प्रवृत्तियाँ अपनाना आचरण की शुद्धता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बौद्धिक क्षेत्र में शुचिता का समावेश करने के लिए हर मान्यता को विवेक और न्याय की कसौटी पर कसकर ही स्वीकार करने की आदत डाली जानी चाहिए। पिछले दिनों स्वार्थपरता और संकीर्णता से ग्रस्त होकर लोगों ने धर्म और नीति की व्याख्यायें कर डाली हैं, जो विवेक की कसौटी पर कसने से नितांत उपहासास्पद ही लगती हैं। इन विडम्बनाओं से हमें बौद्धिक शुचिता ही बचा सकती है।

भाग्य या संयोग के आधार पर कोई व्यक्ति सम्पन्न समृद्ध नहीं बनता। समृद्धि और सम्पन्नता का मूल आधार है हमारी नैतिक और अभ्यान्तरिक शुचिता।

अगले दिनों चलने वाले क्षेत्र जागरण अभियान के कार्यक्रमों के लिए अभी से इस प्रकरण को जोड़ा जा सकता है। हम जिस महान उद्देश्य को लेकर देव आह्वान यज्ञानुष्ठान करने जा रहे हैं, उसमें क्षेत्र को साफ स्वच्छ बनाये रखने से लाभ ही होगा लोगों को उस समय घर गली, मुहल्ले और सार्वजनिक स्थल सभी स्वच्छ रखने की प्रेरणा दी जाय। इसके लिए कोई सामूहिक नियमित व्यवस्था बनायी जा सके तो उसका परिणाम व्यक्ति और समाज के लिए शुभ ही निकलेगा।

दीपावली—उद्देश्य और शिक्षा

दीपावली समायाति नीत्वा सन्देशमुत्तमम्।
अर्जुनस्योपयोगस्य चोचितस्य श्रियः खलु।। १।।

दीपावली लक्ष्मी के उचित उपार्जन तथा लक्ष्मी के समुचित उपयोग का उत्तम सन्देश लेकर आती है।

मनोयोगेन विहितः कठोरः श्रम एव हि।
सम्प्राप्तेश्चानुकम्पायाः साधनं श्रियः केवलम्।। २।।

मनोयोगपूर्वक किया हुआ कठोर श्रम ही केवल लक्ष्मी की कृपा के प्राप्त करने का साधन होता है।

धर्मेण श्रम शक्त्या च न्यायेनोपार्जितं धनम्।
किंचिच्चापि वरं न्यूनं सुखं तेनाधिकं भवेत्।। ३।।

धर्म, न्याय और श्रम शक्ति से कमाया हुआ धन चाहे कुछ थोड़ा ही हो किन्तु वह श्रेष्ठ है और उससे अधिक सुख मिलता है।

व्यसनिनश्चालसस्य विलासिनस्तु गृहेऽयिवा।
नैव तिष्ठति सा लक्ष्मीर्गुणानुरागिणी सदा।। ४।।

व्यसनशील, आलसी और विलासी के घर में वह सर्वदा गुणों से अनुराग करने वाली लक्ष्मी नहीं ठहरती।

येऽनावश्यककार्येषु स्वधनस्यासत्कर्मसु।
व्ययं कुर्वन्ति दारिद्र्यदुःखं चानुभवन्ति ते।। ५।।

जो अनावश्यक कामों और बुरे कार्यों में अपने धन का व्यय करते हैं, वे दरिद्रता और दुखों का अनुभव करते हैं।

परिवारस्य चोत्कर्षे विकासे जीवनस्य वा।
उपयोगो हि कर्त्तव्यो ह्युपार्जित धनस्य च।। ६।।

उपार्जित धन का उपयोग परिवार के उत्कर्ष में अथवा जीवन के विकास में करना चाहिए।

सत्प्रवृत्त्यभिवृद्ध्यर्थं दलितोत्थापनाय च।
दानेन वदान्यानां लक्ष्मीर्नित्यं प्रसीदति।। ७।।

सत्प्रवृत्तियों की अभिवृद्धि के लिए तथा गिरे हुओं को उठाने के लिए निरन्तर दानशीलो के दान से लक्ष्मी नित्य प्रसन्न रहती है।

कुपात्रेभ्यश्च दानेन ऋणरूपेण धनस्य वा।
संसृतेर्भवत्यहितं दाता प्राप्नोति कल्मषम्।। ८।।

कुपात्रों को दान देने से तथा धन को ऋण रूप में देने से संसार का अहित होता है और देने वाले को पाप लगता है।

विधातव्यः सदा बुद्ध्या चायादल्पतरो व्ययः।
सर्वं च कार्यं कुर्याद्योजनाबद्धं वै सदा।। ९।।

सर्वदा आमदनी से कम व्यय बुद्धिपूर्वक करना चाहिए और समस्त कार्य योजनाबद्ध होने चाहिए।

नातिसुसंग्रहं कुर्यात्सचिंतत्य परस्परम्।
विभाजनेनोपभोगं कुर्यान्नहं कृतिं च वै।। १०।।

अधिक धन तथा वस्तुओं का संग्रह नहीं करना चाहिए और संचित किये हुए धन का अहंकार कभी नहीं करना चाहिए।

लक्ष्मीपूजन प्रारम्भ करने से पूर्व पूजा वेदी पर लक्ष्मी, गणेश के चित्र या मूर्ति, गोद्रव्य, बहीखाते, कलम, दवात आदि भलीप्रकार सजाकर रख देने चाहिए तथा आवश्यक पूजा की सामग्री तैयार कर लेनी चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीपावली पर्व विधान

दीपावली लक्ष्मी का पर्व माना गया है। लक्ष्मी से तात्पर्य है—अर्थ-धन। यह अर्थ का पर्व है। दीपावली पर हम अपनी आर्थिक स्थिति का लेखा-जोखा लेते हैं, उसका चिट्ठा बनाते हैं, लाभ-हानि पर विचार करते हैं, लेकिन केवल हिसाब-किताब तक ही यह पर्व सीमित नहीं है वरन् इस अवसर पर आर्थिक क्षेत्र में अपनी बुराइयों को छोड़कर अच्छाईयाँ ग्रहण करने का पर्व है। अर्थ अर्थात् लक्ष्मी जीवन साधना का, विकास की ओर बढ़ने का सहारा है, लेकिन ठीक उसी तरह जैसे माँ का दूध। हम लक्ष्मी को माँ समझकर उसे अपने जीवन को विकसित-सामर्थ्यवान बनाने के लिए उपयोग करें, न कि भोग-विलास तथा ऐशो-आराम के लिए। इसलिए माँ लक्ष्मी के रूप में अर्थ की पूजा करना दीपावली का एक विशेष कार्यक्रम है। आवश्यकतानुसार खर्च करना, आर्थिक क्षेत्र में सन्तुलन तथा व्यवस्था कायम रखना, ये सब दीपावली पर्व के सन्देश हैं।

गणेश, दीप पूजन और गौ द्रव्य पूजन इस पर्व की विशेषतायें हैं। इनसे तात्पर्य यह है कि धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी का अर्थात् अर्थ का सद्बुद्धि, ज्ञान, प्रकाश और परमार्थिक कार्यों से विरोध नहीं होना चाहिए वरन् अर्थ का उपयोग इनके लिये हो और अर्थोपार्जन भी इन्हीं से प्रेरित हो।

लक्ष्मी पूजन प्रारम्भ करने से पूर्व पूजा वेदी पर लक्ष्मी-गणेश के चित्र या मूर्ति, बहीखाते, कलम, दवात आदि भली प्रकार सजाकर रखने चाहिए तथा आवश्यक पूजा की सामग्री तैयार कर लेनी चाहिए।

यों तो सभी पर्व सामूहिक रूप से मनाये जाते हैं, परन्तु पूजन के लिए किसी प्रतिनिधि को पूजा चौकी के पास बिठाना पड़ता है, इसी परिप्रेक्ष्य में पास बिठाये हुए प्रतिनिधि को षट्कर्म कराया जाये अन्य उपस्थित परिजनों का सामूहिक सिंचन से भी काम चलाया जा सकता है। फिर सर्वदेव नमस्कार, स्वस्तिवाचन आदि क्रम सामान्य प्रकरण पृष्ठ ६ से पूरे कर लिये जायें तत्पश्चात् श्री गणेश एवं लक्ष्मी के आवाहन पूजन प्रतिनिधि से कराये जावें।

गणेश आवाहनम्

गणेशजी को विघ्ननाशक और बुद्धि-विवेक का देवता माना गया है। दीपावली पर गणेश पूजन से तात्पर्य यह है कि हम धन को खर्च करने और कमाने में बुद्धि-विवेक से काम लें। अविवेकी ढंग से बुद्धिहीनता के साथ उसे गलत ढंग से न तो अर्जन करें न खर्च ही।

ॐ एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।।
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय,
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
ॐ श्री गणेशाय नमः। —गणेश गायत्री

लक्ष्मी आवाहनम्

लक्ष्मी को विष्णु भगवान की पत्नी अर्थात् जगतमाता माना गया है। जीवन को भली प्रकार विकसित होने में अर्थ प्रधान साधनों की महती आवश्यकता होती है, लेकिन स्मरण रहे हम इनका उपयोग माता की तरह ही करें। जिस तरह माता का पयपान हम जीवन धारण करने एवं भूख बुझाने के लिए करते हैं, उसी तरह धन आदि साधनों का करें। इसी तथ्य को हृदयंगम करने के लिए दीपावली पर महालक्ष्मी का पूजन किया जाता है।

निम्न मन्त्र से माँ लक्ष्मी का भावभरा आवाहन करें—

ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे, विष्णुप्रियायै धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणी।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
श्वेताम्बर धरे देवि नानालंकरभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
ॐ श्री लक्ष्म्यै नमः।। — लक्ष्मी गायत्री

पुरुष सूक्त से सभी आवाहित देवताओं का षोडशोपचार पूजन करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

।। बहीखाते एवं कलम दवात का पूजन।।

बही बजट बनने एवं हिसाब रखने का साधन है, आय-व्यय को बताने वाली है। इसलिए दीपावली पर बही का पूजन कियाा जाता है। कलम दवात भी हिसाब लिखने के काम में आते हैं। लक्ष्मी के अर्थात् धन के हिसाब-किताब में इनका उपयोग होने से इन सब की भी पूजा की जाती है।

नये वर्ष के लिए प्रयुक्त की जाने वाली तथा कलम-दवात के पूजन विधिवत् निम्न मन्त्रों के साथ करें। पूजन करने के समय उन्हें अक्षत, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप आदि समर्पित करके प्रणाम करें।

।। बहीखाता पूजनम्।।

ॐ प्रसवे त ऽउदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः। यदव्य एषि सानवि।।

—ऋग्वेद ६/५०/२

।। कलम-दवात पूजनम्।।

ॐ शिशुर्न जातोऽव चक्रदद्वने स्वर्यद्वाज्यरुषः सिषासति। दिवो रेतसा सचते पयोवृधा तमीमहे सुमती शर्म सप्रथः।

—ऋग्वेद ६/७४/१

।। दीपदान।।

दीप ज्ञान, के प्रकाश के प्रतीक हैं। ज्ञान और प्रकाश के वातावरण में ही लक्ष्मी बढ़ती है, फलती-फूलती है। अज्ञान और अन्धकार में वह नष्ट हो जाती है इसलिए प्रकाश और ज्ञान के प्रतीक साधन दीप जलाये जाते हैं।

एक थाल में कम से कम ५ या ११ घृत-दीप जलाकर उसका निम्न मन्त्र से विधिवत् पूजन करें। तत्पश्चात् दीपावली के रूप में जितने चाहे उतने दीप तेल से जलाकर विभिन्न स्थानों पर रक्खें।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योति सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।।

—यजु ३/६

।। संकल्प।।

उपस्थित सभी परिजनों से संकल्प करवाया जाय। वही संकल्प पुष्पाक्षत के बाद में पुष्पांजलि मन्त्र बोलते हुए, पूजा चौकी पर चढ़ाते हुए, क्रम समाप्त किया जाये।

. . . . . **नामाहं महालक्ष्मीपूजनपर्वणि अर्थशक्तिं महालक्ष्मीप्रतीकं विज्ञाय अपव्ययादिदोषं दूरीकरणार्थं सुदुद्देश्येनियोजनार्थं संकल्पमहं करिष्ये।**

गोवर्धन और अन्नकूट

दीपावली के दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा और अन्नकूट का त्यौहार मनाया जाता है। इसकी उत्पत्ति भगवान कृष्ण के समय से मानी जाती है, जिसकी कथा लोक प्रसिद्ध है। हम उसे संक्षेप रूप में नीचे देते हैं—

एक समय कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गौएँ चराते हुए नंद-नंदन श्रीकृष्णचंद्र गोवर्धन पहाड़ के निकट पहुँचे तो उन्होंने देखा कि सब गोप और ग्वाल-बाल तरह-तरह के भोजन के पदार्थ बड़ी मात्रा में बनाकर पहाड़ के आस-पास बैठे हैं और पूजा की तैयारी कर रहे हैं। कृष्णजी के पूछने पर उन्होंने बतलाया कि हम देवराज इंद्र की पूजा का आयोजन कर रहे हैं। इंद्र महाराज की कृपा से जब भली प्रकार बरसात होती है, तो उसी से हमको धन-धान्य, चारे आदि की प्राप्ति होती है। गोपों की बात सुनकर श्रीकृष्णजी ने कहा—"यह गिरि गोवर्धन ही वृष्टि करने वाला है और तुम्हारा प्रत्यक्ष हितकर्ता है, क्योंकि इसी की तलहटी में तुम्हारी गाएँ सुखपूर्वक चरती हैं और तुमको अमृतोपम दूध देती हैं। ब्रज के लोग प्राचीन काल में भी इसकी पूजा किया करते थे और अब तुमको भी इसकी पूजा करने से लाभ होगा।" कुछ लोगों ने इंद्र की पूजा त्यागने से अति वृष्टि अथवा अनावृष्टि होने का भय भी प्रकट किया, पर श्रीकृष्ण के वचनों पर विश्वास करके, उन्होंने इंद्र के स्थान पर गोवर्धन की ही पूजा की। जब देवराज इंद्र ने यह समाचार सुना तो उनको बड़ा कोप हुआ और उन्होंने मेघों को बुलाकर आज्ञा दी कि ब्रज पर प्रलयकाल की वर्षा करके उसे नष्ट-भ्रष्ट कर दो। इंद्र की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज्ञा पाकर मेघों ने मूसलाधार वर्षा आरंभ की, जिससे गोप-गोपी, ग्वाल-बाल सब घबड़ा गए और भगवान कृष्ण की शरण में आकर कहने लगे कि "इंद्र के प्रकोप से हमारी रक्षा कीजिए।" कृष्ण जी ने गोवर्धन छाते की तरह हाथ पर उठा लिया और उसी के नीचे सब लोग और गौएँ आदि भीषण वर्षा के प्रकोप से बचे रहे। जब सात दिन तक भीषण वर्षा करने पर भी ब्रज की कोई हानि नहीं हुई तो इंद्र को अपनी भूल मालूम हुई और वह आकर भगवान श्री कृष्ण के चरणों पर गिरकर क्षमा माँगने लगा। इंद्र के चले जाने पर कृष्ण जी ने लोगों को गोवर्धन का प्रभाव बतलाते हुए कहा—"अब तुम लोग प्रति वर्ष गोवर्धन पूजन करके अन्नकूट का उत्सव मनाया करो।"

वर्तमान समय में गोवर्धन पूजा के लिए घरों की स्त्रियाँ, लड़कियाँ और नववधुएँ गोबर की एक बड़ी-सी मूरत बनाती हैं, उसकी पूजा करती हैं और फिर मूसलों से उसे कूटती हैं।

इस कथा और उपयुक्त विवरण से प्रतीत होता है कि गोवर्धन का त्यौहार गौ से उत्पन्न होने वाली संपत्ति की वृद्धि और विकास से सम्बन्धित है। गायों से उत्पन्न होने वाले गोबर और मूत्र आदि खाद के लिए सर्वोत्तम माने गए हैं और उनके यथोचित उपयोग से खेतों की पैदावार में आश्चर्यजनक वृद्धि हो जाती है। अमरीका के वैज्ञानिकों ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है और वहाँ की खेती में गोबर की खाद का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में होता है। गायों के गोबर और मूत्र में लक्ष्मी का निवास है। इसकी मनोरंजक कथा महाभारत के अनुशासन पर्व (८२-८४) में दी गई है। उसमें बतलाया है कि एक बार लक्ष्मी कहीं रहने योग्य स्थान न पाकर गायों के एक बाड़े में गईं और उनसे प्रार्थना की कि तुम मुझे अपने यहाँ स्थान दो। पर गाएँ जानती थीं कि यह चंचला है, किसी जगह ठहरती नहीं। इसलिए उन्होंने उसे चले जाने को कहा पर जब लक्ष्मी ने बार-बार प्रार्थना की तो गायों ने कहा—

अवश्यं मत्तश्च कार्या त्वयाभिर्वशस्विनि।
शकृन्मूत्रे वसत्वं भो : पुण्यमेतद्धि नः शुभे।।

अर्थात् गौओं ने कृपा करके लक्ष्मी से कहा कि तुम हमारे गोबर और मूत्र में रहो, इससे तुम्हारी चंचलता दूर होगी।

इस प्रकार प्राचीन-काल से ही हमारे यहाँ गोबर और गौ-मूत्र का कीमती खाद के रूप में महत्व मालूम था और उसका व्यवहार भी किया जाता था। इसी के प्रभाव से उस समय यह देश संसार भर में सबसे अधिक समृद्ध और धन-धान्य सम्पन्न माना गया था। इसलिए गोवर्धन के शब्दार्थ 'गोबर+धन' को स्वीकार करके इस त्यौहार पर गाय से प्राप्त होने वाली खाद रूपी सम्पति की योग्य व्यवस्था करने पर विचार करना चाहिए।

भैया दूज अथवा यम द्वितीया

दिवाली के बाद कार्तिक शुक्ल द्वितीया को भैयादूज या यमद्वितीया का त्यौहार होता है। यह भाई और बहन के स्नेह को प्रकट करने वाला त्यौहार है। अनेक परिवारों में आर्थिक कारणों से ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिससे लोग बहनों और लड़कियों को देखकर प्रसन्न नहीं होते। ऐसे मनोभावों को मिटाने और भाई-बहन के बीच सद्भाव कायम रखने के लिए यह भैया दूज का त्यौहार बड़ा उपयोगी है।

इस त्यौहार की कथा इस प्रकार कही जाती है कि श्री यमुनाजी अपने भाई यमराज से प्रायः प्रार्थना किया करती थीं कि वे उसके घर आकर भोजन करें। यमराज को काम की अधिकता से कभी यमुनाजी के घर आने का अवसर ही नहीं मिलता था। एक दिन यमुनाजी ने हठ करके यमराज को भोजन निमंत्रण दे ही दिया। यम कार्तिक शुक्लपक्ष की द्वितीया को यमुनाजी के घर गए। बहन ने बड़ी श्रद्धा से यम को भोजन कराया। यम ने भी वस्त्राभूषण, अलंकार आदि बहन को दिए। इसके बाद यम ने कहा कि तुम्हारी जो और इच्छा हो सो माँग लो। यमुनाजी ने कहा कि आप प्रतिवर्ष आज के दिन भोजन करने मेरे घर पधारा करें और इस दिन के उपलक्ष्य में जो व्यक्ति स्नान करके बहन के घर भोजन करे और सामर्थ्यानुसार बहन को भेंट देवे, उसे यमलोक के कष्ट सहन न करने पड़ें। यमराज ने उसे ऐसा ही वर दिया और यह भी कहा कि इस अवसर पर यमुनाजी में बहन के साथ स्नान करने का फल बहुत अधिक होगा और जो व्यक्ति ऐसा करेंगे वे मेरे यहाँ आकर कभी दुःख न उठाएंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस प्रकार भैयादूज मुख्यतः नारियों का त्यौहार है, जो उनको लोकोपकार, जन-सेवा के कार्यों के लिए प्रेरित करता है। इस देश के अनेक भागों में पर्दा-प्रथा का प्रचार है और जहाँ पर्दा-प्रथा का प्रचार नहीं भी है, वहाँ भी स्त्रियों का बाहर निकलकर सार्वजनिक कार्यों में भाग लेना अच्छा नहीं समझा जाता। यद्यपि वर्तमान अवस्था में तो कोई इस रीति का समर्थन नहीं करेगा, पर यहाँ की सभ्यता में प्राचीन समय से ही यह माना गया है कि स्त्री का कार्य-स्थल मुख्यतः अपनी गृहस्थी का संचलान करना है। गृहस्थी का कार्य ऐसा बहुमुखी है कि यदि माता, गृहिणी, पत्नी आदि के सभी कर्त्तव्यों का विधिवत पालन किया जाए तो बाहरी कार्यों के लिए समय मिल सकना बड़ा कठिन है। अतएव ऐसी नारियों के लिए अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए यह स्वाभाविक है कि वे अपने परिवार के व्यक्तियों को सार्वजनिक क्षेत्र, में समाज-सेवा के कार्य में अग्रसर करें।

इस प्रकार यदि इस दिन स्त्रियाँ, त्यौहार की लौकिक रस्मों को पूरा करने के साथ-साथ सार्वजनिक जीवन के प्रति अपने कर्तव्य पर विचार करें और उसके लिए अपने को संगठित और प्रस्तुत करें तो यह एक बड़े महत्व का कार्य होगा। यदि पहले जमाने में वे इस ओर कम ध्यान देती थीं तो कोई बात नहीं, त्यौहारों में समयानुकूल सुधार और परिवर्तन अवश्य होना चाहिए, क्योंकि संसार की परिस्थितियाँ कभी एक सी नहीं रहतीं और अगर हम बदली हुई परिस्थितियों का ध्यान न रखेंगे, तो कभी सुख-शांति न पा सकेंगे। इसलिए भैयादूज को नारी-जागरण का प्रधान त्यौहार समझकर उनके द्वारा समाज की सेवा और उन्नति, समाज में उनको यथोचित सम्मान की प्राप्ति आदि बातों की तरफ अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए। नारी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है और माता की हैसियत से वह जाति की सच्ची निर्मात्री है। यदि वह अवनतिपूर्ण अवस्था में पड़ी रही तो समाज के उत्थान की आशा करना ही व्यर्थ है। अतः भैयादूज के अवसर पर महिलाओं को राष्ट्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से तिलक कराई की यही भेंट माँगनी चाहिए कि वे नारियों के अधिकारों का समुचित ध्यान रखें और उनको उन्नति के मार्ग पर बढ़ने में हर तरह से सहायता दें।

गोपाष्टमी

गोपाष्टमी बड़ा प्राचीन त्यौहार है। कहा जाता है कि कार्तिक शुक्ल को गोवर्धन की पूजा कराके और इंद्र के अहंकार को चूर करके भगवान कृष्ण ने गौओं का जलूस निकाला था तथा उनकी पूजा की थी, तभी से यह त्यौहार प्रचलित है। हिन्दुओं के सभी शास्त्रों में गौ की महिमा गाई गई है और उसे सर्वमनोरथों की सिद्धि करने वाली कामधेनु बतलाया गया है। वेद तक में कहा गया है कि 'गोस्तु मात्रा न विद्यते' अर्थात् 'गाय के समान अन्य कोई नहीं है।' इसी सिद्धांत का प्रतिपादन करने के लिए, जनता में इसकी जड़ भली-भाँति जमा देने के लिए, भगवान ने स्वयं गोपाल का रूप धारण किया और इस प्रकार बतलाया कि तुम सब भी गायों का पालन करो, उनकी पूजा करो, उनके द्वारा अपना कल्याण करो। इसके कारण भगवान 'माखन चोर' तक कहलाए। उन्होंने स्वयं उदाहरण देकर बतलाया कि गोरस ही जीवन है और तुम्हें उसका समुचित प्रयोग करके, शक्तिशाली बनना चाहिए। अगर कोई अन्याय या अत्याचार से तुमको उससे वंचित रखता है, तो तुम जबरदस्ती से, सबल बनकर अन्यायियों, अधर्मियों का मुकाबला कर सकोगे और धर्म की रक्षा करने में समर्थ होंगे।

हमारे मत से गोपाष्टमी केवल गौ की पूजा अथवा उसकी उन्नति के उपाय करने का ही त्यौहार नहीं है, वरन् यह देश के पशु-धन की वृद्धि और उसकी नस्ल की तरक्की करने का आयोजन है। जिस प्रकार आजकल पशु-प्रदर्शनी, मवेशी-मेले आदि की व्यवस्था की जाती है, उसी उद्देश्य से प्राचीनकाल में गोपाष्टमी के त्यौहार की स्थापना की गई थी। लोग उत्तम तथा दर्शनीय गौ, बछड़े, बैलों आदि को सजाकर निकालते थे। और उनमें इस बात की होड़ होती थी कि किसके पशु सर्वोत्तम और सुंदर माने जाते हैं। जब यह त्यौहार भली प्रकार प्रचलित था, तब उसमें भाग लेने वाले व्यक्ति अवश्य ही वर्षभर अपने पशुओं को इसके लिए तैयार करते थे और हर एक उपाय से उनको स्वस्थ, दर्शनीय और बलवान बनाने की चेष्टा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते रहते थे। इसी प्रकार के प्रयत्नों का परिणाम था कि प्राचीन काल में यहाँ एक-एक परिवार के पास दस-दस लाख तक गाएँ थीं और दूध दही, से होली खेली जाती थी।

खेद का विषय है कि बहुत समय से यह त्यौहार देश के अधिकांश भागों में बंद सा हो गया है। इधर जब से गौ-रक्षा आंदोलन चला है और गौशालाओं की स्थापना की गई है, तब से पुनः इसकी तरफ लोगों का कुछ ध्यान गया है और थोड़े से नगरों में तथा विशेषतः ब्रज में इसको मनाया जाता है। पर अभी तक इसका जो रूप दिखाई पड़ रहा है, वह देश और समाज-हित की दृष्टि से भी बहुत कम उपयोगी है और उससे इस त्यौहार का वास्तविक उद्देश्य भी सिद्ध नहीं होता। आवश्यकता है कि हम इस दिन केवल गौओं का जलूस निकालकर ही सन्तुष्ट न हो जाएँ और गायों को मिठाई आदि खिलाकर ही इस त्यौहार की पूर्ति न समझ लें, वरन् इस अवसर पर अपने पशु-धन का निरीक्षण करें और उसकी वृद्धि तथा दशा सुधारने की योजना करें। भारतीय कृषि के लिए अब भी पशुओं की आवश्यकता बहुत अधिक है और भूमि को जोतने के लिए उत्तम श्रेणी के बैलों की पर्याप्त संख्या होना अनिवार्य है। इसी प्रकार दूध और घी की पूर्ति के लिए गाय और भैंसों की तरक्की होना अत्यावश्यक है। पर ये कार्य केवल बातों से अथवा गौमाता की जवानी भर भक्ति कर लेने से पूरे नहीं हो सकते। इनके लिए पशुओं की नस्ल को सुधारने, उन्हें उपयुक्त आहार देने तथा उनके रहने के लिए उचित ढंग के स्थान बनाने की आवश्यकता है।

इतना ही नहीं इस त्यौहार का उद्देश्य यह भी है कि हम वर्ष में एक ही दिन पशुओं की आवभगत (खातिर) करके संतुष्ट न हो जाएँ वरन् उनके साथ सदैव दया का व्यवहार करें। क्या आपने कभी गाड़ियों में जोते जाने वाले बैल-भैंसों को पिटते नहीं देखा है ? ताँगों के घायल घोड़ों को ६-६ और गधों पर २-२, ३-३ मन बोझा लादकर सोटों से मार-मार कर चलाते नहीं देखा है ? इन सब मूक पशुओं के साथ इस प्रकार राक्षसी व्यवहार करना मनुष्य को शोभा नहीं देता और इस तरह के व्यवहार से पशुओं की दशा भी नहीं सुधर सकती। इसलिए अगर हम गोपाष्टमी का त्यौहार सच्चे अर्थों में मनाना चाहते हैं और हमारी गौ-भक्ति दिखावटी नहीं है, तो हमको अवश्य ही अपने समस्त पशु-धन की व्यवस्था को सुधारने की ओर ध्यान देना चाहिए। कहने के लिए तो हम निरामिषभोजी होने का दावा करते हैं और चीटियों, पक्षियों आदि को दाना देकर दया का भी दिखावा करते हैं, पर अस्थि-पिंजर मात्र पशुओं को देखकर कोई हमारी बात का विश्वास नहीं कर सकता। जबकि योरोप, अमरीका, के मांसाहारी कहलाने वाले देशों में २०-२० सेर और १-१ मन तक दूध देने वाली असंख्य गाएँ दिखलाई पड़ती हैं, हमारे यहाँ की गायों के दूध का औसत एक या दो सेर प्रति गाय से अधिक न होगा। वहाँ की उन गायों के शरीर, खाने-पीने की व्यवस्था, रहने के स्थानों की स्वच्छता तथा ऊपरी देख-भाल को देखकर आप चकित रह जायेंगे और अपने मन से पूछेंगे कि गायों की पूजा ये विदेशी करते हैं या हमारे देशवासी ?

पशुओं की दशा को सुधारना हमारा कर्तव्य केवल इसी कारण नहीं है कि वह दया के पात्र हैं और उनके बिना हम निर्दय, असभ्य और असंस्कृत जातियों गणना किए जाने योग्य समझे जाएंगे। वरन् इससे भी बड़ा कारण यह है कि इसमें हमारा ही एक बहुत बड़ा हित निहित है। जैसा हम पहले बतला चुके हैं, हमारा देश कृषि-प्रधान है और हम मुख्यतया शाकाहारी लोग हैं। ऐसी अवस्था में भोजन के लिए अन्न तथा पौष्टिकता के लिए घी-दूध हमको पशुओं द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। इसलिए स्वार्थ और परमार्थ दोनों दृष्टियों से हमारा यह कर्तव्य है कि हम पशुओं के प्रति अपने कर्तव्य को सदैव स्मरण रखें और उनके साथ ऐसा व्यवहार करें, जिससे हमारे ऊपर कोई निर्दयता और मनुष्यत्व-हीनता का लांछन न लगा सके।

देवोत्थान एकादशी

कार्तिक शुक्ल एकादशी को देवोत्थान अथवा प्रबोधिनी एकादशी कहते हैं। विष्णु भगवान ने भाद्रपद शुक्ल एकादशी को शंखासुर नामक राक्षस को मारा था और युद्ध की थकावट को मिटाने के लिए क्षीर-सागर में जाकर सो गए थे। वे इसी कार्तिक शुक्ल एकादशी को उठे, इसी कारण इसका नाम 'देवात्थान एकादशी' पड़ा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गाँवों में आज के दिन गन्ने के खेतों में जाकर हवन किया जाता है। लोग गन्ने की पूजा करके अपने घर लाते हैं, देवता को चढ़ाकर तथा इष्टमित्रों को बाँटकर स्वयं भी खाते हैं। इस दिन से पहले गन्ने का खाना निषिद्ध माना जाता है और इसलिए कोई उसे तोड़ता भी नहीं। इस प्रथा के कारण किसानों को इस त्यौहार के पहले गन्ने के खेतों की रखवाली की विशेष आवश्यकता भी नहीं पड़ती।

देवोत्थान एकादशी के व्रत के संबंध में नीचे लिखी कथा कही जाती है।

पूर्व त्रेता युग में महिष्मती नगरी का राजा कृतवीर्य हैहय के नाम से प्रसिद्ध था, जो अत्यंत प्रतापी और वैभवशाली था। उसके एक हजार रानियाँ थीं पर किसी के पुत्र उत्पन्न न हुआ। तब कृतवीर्य ने ऋषि-मुनियों से पूछकर तरह-तरह के यज्ञ, जप, अनुष्ठान, दान आदि किए, जिससे संतान उत्पन्न हो सके। परन्तु किसी तरह भी पुत्र नहीं हुआ। तब दुःखी होकर तपस्या करने के लिए वह जंगल चला गया। साथ में उसी रानी पद्मिनी, जो राजा हरिश्चन्द्र की पुत्री थी, वन में गई और बल्कल वस्त्र धारण करके तपस्या करने लगी। राजा दस वर्ष तक गदाधर भगवान की पूजा करते हुए तप करता रहा, पर उसकी मनोकामना पूरी न हुई।

पद्मिनी एक दिन अनुसुइया के आश्रम में गई और वहाँ उसने अपना सब दुःख उसे कह सुनाया। अनुसुइया ने देवोत्थान एकादशी का व्रत करने को कहा और उसकी विधि समझा दी। पद्मिनी ने बिना जलपान किए निराहार व्रत किया। रात्रि को जागरण और कीर्तन किया। भगवान ने प्रकट होकर वर माँगने को कहा, तो पद्मिनी ने अपने पति की अभिलाषा पूरी करने की याचना की। भगवान के वर से कृतवीर्य के ऐसा पराक्रमी पुत्र हुआ कि उसके समान तीनों लोकों में कोई न था। उसने रावण को भी हराकर कैदखाने में बंद कर दिया तब पुलत्स्य ऋषि ने जाकर उसे छुड़ाया था।

अन्य एकादशियों के व्रत की भाँति इस व्रत का उद्देश्य भी संयम-नियम का जीवन बिताना और परोपकार में दत्तचित्त रहना है। व्रत और उपवासों के जो महान परिणाम बतलाए गए हैं, वे तभी सत्य हो सकते हैं, जब हम उनको आंतरिक प्रेरणा और सच्ची भावना से करें और उनमें जैसा बतलाया गया है, उसी के अनुसार जीवन व्यतीत करें। यों एक दिन का भोजन त्याग देने या किसी देवता की पूजा कर लेने मात्र से कथाओं में बतलाए गए अनुसार असंभव कार्यों को भी संभव बनाने की शक्ति उत्पन्न नहीं हो सकती। अतः हमको व्रतों की सच्ची भावना को ही अपने जीवन में व्यवहार में लाने का प्रयत्न सदैव करना चाहिए।

भीष्म पंचक

यह व्रत कार्तिक शुक्ल एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक ५ दिन रखा जाता है। इसी से इसका नाम 'भीष्म पंचक' है। इस दिन सबेरे ही स्नान करके पापों के नाश और धर्म, अर्थ काम, मोक्ष की प्राप्ति के लिए इस व्रत का संकल्प करें। घर में चारों ओर दरवाजों वाला मण्डप बनाकर उसे गोबर से लीपें फिर सर्वतोभद्र वेदी बनाकर तिलयुक्त कलश की स्थापना करें। पाँचों दिन वेदी पर घी का अखंड दीपक जलावें और १०८ आहुतियों का हवन करें। इस व्रत की कथा महाभारत में इस प्रकार कही गई है—

जिस समय भीष्म पितामह शर-शैय्या पर लेटे थे उस समय श्रीकृष्ण के साथ पाँचों पाण्डव उनके पास गए। धर्मराज युधिष्ठिर ने भीष्मजी से उपदेश करने की प्रार्थना की, युधिष्ठिर की भावना को समझकर राजर्षि भीष्म ने राज, धर्म, मोक्ष, काम, वर्ण-धर्म आदि का उपदेश ५ दिन तक दिया, जिसे सुनकर सब अत्यंत संतुष्ट हुए। भगवान श्रीकृष्ण ने प्रसन्न होकर कहा—"राजन अपने कार्तिक शुक्ल एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा तक जो अमूल्य उपदेश दिए हैं, उनकी स्मृति-रक्षा करने के निमित्त मैं इस व्रत की स्थापना करता हूँ और इसका नाम 'भीष्म पंचक' रखता हूँ, जो कोई श्रद्धापूर्वक इसको करेंगे उनके सारे कष्ट दूर हो जायेंगे और वे मोक्ष प्राप्त करेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भीष्म पितामह का चरित्र अनुपम है और उनके समान अखंड ब्रह्मचारी दूसरा नहीं हुआ। उन्होंने अपने पिता की अभिलाषा की पूर्ति के लिए आजन्म विवाह न करने और इस प्रकार संतानोत्पत्ति से विरत रहने का प्रण किया था और लगभग १७० वर्ष की महान् आयु तक वे उस पर दृढ़ रहे। यही कारण है कि आज तक प्रत्येक हिंदू उनको अपना पूर्वज स्वीकार करके उनके नाम से तर्पण करना अपना कर्तव्य मानता है, जिससे उनकी निस्संतान रहने की त्रुटि दूर हो जाय। देश और जाति के ऐसे आदर्श चरित्र पुरुषों का सम्मान करना हमारा परम कर्तव्य है, क्योंकि जो जाति अपने सुयोग्य पूर्वजों को आदर के साथ स्मरण नहीं करती वह कभी बड़ी नहीं बन सकती। इस दृष्टि से भीष्म-पंचक त्यौहार बड़े महत्व का है।

मकर संक्रांति

संक्रांति अथवा संक्रमण का अर्थ है—एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। पृथ्वी जिस मार्ग से होकर एक वर्ष में सूर्य की परिक्रमा करती है, उसका नाम ज्योतिषियों ने क्रांतिवृत रखा है। इस मार्ग को बारह भागों में बाँट दिया गया है, जिनको राशि कहते हैं। इन बारह राशियों के नाम क्रम से इस प्रकार हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन। सूर्य को एक राशि से दूसरी राशि में जाने में एक महीना लगता है और जिस दिन सूर्य एक राशि को पार करके दूसरी में प्रवष्टि होता है, उसी दिन संक्रांति मानी जाती है। वैसे तो धार्मिक जन सभी संक्रांतियों को पवित्र मानते हैं, पर मेष और मकर की संक्रांतियाँ विशेष महत्व की मानी जाती हैं। इनमें से पहली चैत या वैशाख के महीने में पड़ती है और दूसरी पौष या माघ में।

मकर संक्रांति शीतकाल के मध्य पड़ती है, इसलिए उस दिन तिल आदि गर्म वस्तुएँ खाने और कंबल आदि दान देने का विशेष महत्व माना जाता है। उस दिन देश में खिचड़ी खाने और दान देने का भी रिवाज है। आज के दिन तिल का उबटन करना, तिल का हवन करना भी शुभ माना गया है।

पुराने समय में उपयुक्त दोनों संक्रांतियों के अवसर पर धार्मिक सिद्धांतों का प्रचार करने के लिए हरिद्वार तथा प्रयाग में बड़ी-बड़ी सभाएँ हुआ करती थीं, जिनमें देश के बहुसंख्यक ज्ञानी, महात्मा, ऋषि, मुनि, पंडित आदि अनेक राजा-महाराजा भी एकत्रित होकर विचार-विनिमय करते थे। इन अवसरो पर अनेक ऐसी धार्मिक और सामाजिक समस्याओं का निर्णय होता था, जो उस समय समाज के सम्मुख उपस्थित होती थीं। इस उपाय से समस्त हिंदू जाति को एक सूत्र में संगठित करने का मौका मिलता था और हिंदू-धर्म के आदर्श सिद्धान्तों को देशव्यापी बनाने में सहायता मिलती थी। उस समय प्रचार के वर्तमान साधन सुलभ नहीं थे, इसलिए ऐसे धार्मिक समारोहों के द्वारा ही देश के दूरवर्ती स्थानों तक विद्वानों के निर्णय पहुँचाए जाते थे। अब इन धार्मिक समारोहों ने परिवर्तन होते-होते मेलों का रूप धारण कर लिया है, जहाँ साधु लोग जलूस बनाकर स्नान करते हैं और गृहस्थ उनके दर्शन कर लेते हैं। धर्म-चर्चा भी होती है, पर वह कथा-वार्ता के रूप ही होती है। यदि पुरानी परिपाटी को फिर से प्रचलित किया जाय, तो इन समारोहों से अब भी हिंदू जाति के संगठन का बहुत बड़ा काम लिया जा सकता है।

वसंत पंचमी

हमारे अधिकांश त्यौहारों का किसी न किसी देवता की पूजा और उपासना से सम्बन्ध हैं, वसंत पंचमी का त्यौहार विशेष रूप से ऋतु-परिवर्तन के उपलक्ष्य में एक सामाजिक समारोह माना जाता है। यह मानसिक उल्लास और आह्लाद के भावों को व्यक्त करने वाला त्यौहार है। भारतवर्ष में वसंत का अवसर बहुत सुहावना, सौंन्दर्य का विकास करने वाला और मन की उमंगों में वृद्धि करने वाला माना जाता है। वैसे इस ऋतु का आगमन होली के आस-पास होता है, पर वसंत पंचमी का त्यौहार माघ शुक्ल पंचमी को ऋतुराज बसंत के स्वागत के रूप में मना लिया जाता है और उसी दिन से होली की तैयारियाँ शुरू कर दी जाती हैं। मनुष्य ही नहीं जड़ और चैतन्य प्रकृति भी इस महोत्सव के लिए इसी समय से नया श्रृंगार करने लग जाती हैं। वृक्षों और पौधों में पीले, लाल, नवीन पत्ते और फूलों में कोमल कलियाँ दिखलाई पड़ने लगती हैं। आम के वृक्षों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सौरभ चारों ओर बिखरने लगता है। सरसों के फूलों की शोभा तो अद्वितीय दिखलाई पड़ती है और कदाचित उन्हीं के रंग के आधार पर मनुष्य भी बसंती रंग के वस्त्र पहनना आवश्यक समझने लगे हैं। कोयल और भ्रमर भी अपना मधुर संगीत आरंभ कर देते हैं। वास्तव में वसंत का अवसर जीव-जंतु और वनस्पतियों की भी काया-कल्प का अवसर होता है और उस समय नव-जीवन का विकास होते देखा जाता है।

वसंत नव-जीवन प्रदायिनी शक्ति का प्रभाव हमारे शरीर पर ही नहीं पड़ता, वरन् उस समय हमारी मानसिक शक्तियाँ विकासोन्मुख होती हैं और उनके द्वारा हम ज्ञान-विज्ञान, साहित्य के क्षेत्र में विशेष रूप से प्रगति कर सकते हैं। शरीर और मन का एक-दूसरे से अति निकट का संबध है। जिस समय मनुष्य का स्वास्थ्य निर्बल होगा या उसे किसी प्रकार की पीड़ा होगी, उस समय मानसिक कार्य भी यथोचित रूप में नहीं हो सकते। इसलिए वसंत आगमन के समय जब शीत का अवसान होकर हमारी देह और मन नवीन शक्ति का अनुभव करने लगते हैं, हमें अपना ध्यान जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों की ओर लगाना चाहिए, आगामी वर्ष भर के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उपयुक्त सामग्री एकत्रित कर लेनी चाहिए।

संभवतः यही कारण हो कि हमारे पूर्वजों ने बसंत पंचमी के दिन सरस्वती-पूजा की प्रथा चलाई थी। सरस्वती विद्या और बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी है और उसकी कृपा के बिना संसार का कोई महत्वपूर्ण कार्य समुचित रूप से सफल नहीं हो सकता। प्राचीन समय में जब यहाँ के निवासी सच्चे हृदय से सरस्वती की उपासना और पूजा करते थे, तो इस देश को जगतगुरु की पदवी प्राप्त हुई थी और दूर-दूर के देशों के विद्याभिलाषी यहाँ सत्य-ज्ञान की खोज में आते थे और भारतीय गुरुओं के चरणों में बैठकर विद्याध्ययन करके अपने को धन्य समझते थे। पर उसके बाद जब यहाँ के लोगों ने सरस्वती की उपासना छोड़ दी और वे वसंत के त्यौहार को सरस्वती-पूजा के बजाय कामदेव की पूजा का त्यौहार समझने लगे और उस दिन मदन-महोत्सव मनाने लगे तब से विद्या-बुद्धि का ह्रास होने लगा और अन्त में ऐसा समय आ गया कि यहाँ के विद्यार्थियों को ही अन्य देशों में जाकर अपने ज्ञान की पूर्ति करनी पड़ी।

इस वसंत के अवसर पर सरस्वती पूजा की प्रथा विशेष रूप से बंगाल में ही प्रचलित है। दुर्गा-पूजा तो बंगालियों का सर्वप्रधान त्यौहार है ही, पर सरस्वती, पूजा भी वे काफी धूमधाम से करते हैं। वहाँ इसके लिए मिट्टी की बड़ी सुन्दर मूर्ति बनाई जाती है, जिसकी लागत काफी होती है और उसकी पूजा का उत्सव भी पर्याप्त समारोह के साथ मनाया जाता है। अन्य प्रांतों के निवासियों को भी बंगाली भाइयों से इस सम्बन्ध में प्रेरणा लेनी चाहिए और बसंत पंचमी को वास्तविक रूप से शिक्षा-प्रचार के उत्सव के रूप में मनाना चाहिए, जिससे सरस्वती देवी की हम पर कृपा हो और हम ज्ञान के क्षेत्र में पुनः जगतगुरु की पदवी के योग्य बन सकें।

वर्तमान समय में साधारण पढ़-लिख सकना तो सभ्यता का आवश्यकीय अंग माना गया है। पर खेद है कि हमारे देश के आधे व्यक्ति अभी तक अक्षर-ज्ञान भी नहीं रखते। यह एक ऐसी बात है, जिसके कारण हम उन जातियों के सम्मुख, जिनकी १०० प्रतिशत जनता शिक्षित है, आँख नहीं उठा सकते। इस अवस्था को शीघ्र से शीघ्र बदलना हमारा कर्तव्य है और शिक्षा-प्रसार के लिए जिससे जहाँ तक बने उद्योग करना परम धर्म है। देश से निरक्षरता का चिन्ह मिटा दिया जाए, इस बात का व्रत हमको वसंत पंचमी के त्यौहार पर ग्रहण करना चाहिए।

विद्या और ज्ञान का त्यौहार वसन्त पंचमी

हिन्दू धर्म की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं। इन विशेषताओं के कारण ही इसे जगत् में इतनी ऊँची पदवी प्राप्त थी। इसके प्रत्येक रीति-रिवाज़, पर्व-त्यौहार, और संस्कार में महत्वपूर्ण रहस्य छिपा रहता है, जो हमारे जीवन की किसी न किसी समस्या का समाधान करता है। हमारे मानसिक व आत्मिक विकास का साधन बनता है। शारीरिक व बौद्धिक उन्नति की ओर अग्रसर करता है, विचारों को एक नई मोड़ देता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिस प्रकार से अन्य पर्व व त्यौहार महत्वपूर्ण रहस्यों का उद्घाटन करते हैं, उसी तरह से वसंत पंचमी का त्यौहार भी अपने अन्दर एक जीवन प्रेरणा लिये आता है। इस त्यौहार से हम जीवन का सूक्ष्म कायाकल्प करना आरम्भ करते हैं। मनुष्य योनि ८४ लाख योनियों के पश्चात् प्राप्त होती है इसलिये हमारे मनः क्षेत्र में पशु वृत्तियों का अधिपत्य होता है। मनुष्य की जैसी मानसिक वृत्तियाँ होती है, वह वैसे ही कार्य करने पर बाध्य होता है। शरीर के कार्यों का सञ्चालन तो मन के विचारों पर निर्भर करता है। इसलिये हमारे पूर्वजों ने भौतिक उन्नति से आध्यात्मिक व मानसिक उन्नति को उत्तम समझा था और उन्होंने अपने मूल्यवान् जीवनों को इन्हीं खोजों में गला दिया था कि मानव का मानसिक व आत्मिक विकास किस प्रकार से हो ?

वसन्त पंचमी सरस्वती का विद्या का त्यौहार है। इस दिन हम पशुता से मनुष्यता की ओर बढ़ने की तैयारी आरम्भ करते हैं। बड़ी धूम-धाम के साथ इस त्यौहार को मनाते हैं इसलिए कि हमने जीवन के सबसे बड़े रहस्य को समझ लिया है कि बिना विद्या और ज्ञान के मनुष्य पशु होता है। आज हमने उससे ऊपर उठने का संकल्प किया है। उत्तम ग्रन्थों के स्वाध्याय, सत्संग और ज्ञानोपार्जन के बिना विवेक की अनुभूति नहीं होती। कर्तव्य-अकर्त्तव्य, सत्य-असत्य न्याय-अन्याय आदि के निर्णय करने को शक्ति व प्रेरणा जब तक जागृत नहीं हो तब तक मनुष्य-मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता। मनुष्य के अन्य कार्य तो पशु बड़ी सुन्दरता व स्फूर्ति के साथ करते हैं बल्कि कई बातों में तो पशु मनुष्य से बढ़कर हैं। मनुष्य की श्रेष्ठता तो उपरोक्त गुणों के विकास में ही है।

वसन्त का त्यौहार हर्ष व उल्लास का त्यौहार है, इसमें नई-नई उमंगें उत्पन्न होती हैं। इससे हम शोभा और सौन्दर्य की वृद्धि करना सीखते हैं। जिस प्रकार से ऋतु परिवर्तन होना आरम्भ होता है, उसी तरह से हमारे जीवन में भी नवीन परिवर्तन का श्री गणेश होना चाहिये। वसन्त के दिन लोग पीले बसन्ती नये कपड़े पहिनते हैं, यह उज्ज्वल जीवन का प्रतीक हैं। इससे शोभा और सौन्दर्य टपकता है। इसलिए हर वर्ष जीवन में सौन्दर्य-वृद्धि के लिए इस दिन विचार करते हैं। हमारे, अन्दर जो मलिनतायें हैं उन्हें दूर करने का प्रयत्न करते हैं।

वसन्त के दिन सरसों, अरहर व अन्य प्रकार के पीले फूल लाये जाते हैं। उनका अभिप्राय यह होता है कि हमारा जीवन भी फूल जैसा आदर्श बनना चाहिये। फूल खिलता है, संसार को सुगन्धि देता है, वह किसी से कुछ माँगता नहीं, निरन्तर देने का स्वभाव बनाए रहता है। जब मनुष्य उसके शरीर पर आघात करता है, तब भी वह दुःखी नहीं होता, उसे क्षोभ नहीं होता है, तोड़ने वाले के ऊपर क्रोधित नहीं होता बल्कि शरीर त्यागने से पूर्व भी हँसते-हँसते देवताओं, महापुरुषों व विद्वानों के गले की सजावट का माध्यम बनता है। उसका यह त्याग अनुकरणीय है। हमारा जीवन भी फूल जैसा बने तपोमय हो, उज्जवल हो, यह प्रेरणा इस महान् त्यौहार से हम ग्रहण करते हैं।

हमारे पूर्वज इस तथ्य को भली प्रकार से जानते थे कि जिन सूक्ष्म गुणों की छाप मनुष्य के मस्तिष्क पर डालनी हो, उनका स्थूल रूप ही उनके सामने रखना उपयुक्त होता है, उसी से वह प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। अपने बौद्धिक स्तर के अनुरूप ही मनुष्य हर एक विचार को अपनाता है। इस त्यौहार में भी ऐसा होता है। जिस वस्तु को हम उत्तम समझते हैं, उसका सम्मान करते हैं, प्रतीक रूप में उसकी पूजा करते हैं, यही सनातन पद्धति चली आ रही है, वसन्त के दिन हम जीवनविद्या को सीखना आरम्भ करते हैं इसलिए विद्या के प्रतीकों का हमें सम्मान करना चाहिये, उनकी पूजा करनी चाहिए। जिसकी हम पूजा करते हैं, जनता की दृष्टि में वही श्रेष्ठ गिनी जाती है। विद्या, बुद्धि की प्रतीक सरस्वती हैं। सरस्वती देवी के एक हाथ में पुस्तक और दूसरे हाथ में वीणा होती है। ज्ञान प्राप्त करने के साथ मन में उल्लास, स्फूर्ति, झंकार भी आवश्यक है। वीणा के बजने से मन तरंगित होता है। हमारे जीवन में विद्या के साथ-साथ जीवन को सुन्दर व शोभायमान बनाने के लिये नई-नई उमंगें पैदा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हों। हम सरस्वती का पूजन करते हैं। ताकि हमारे अन्दर इन गुणों का विकास हो। इस दिन हम कागज, कलम, दवात की पूजा करते हैं क्योंकि यही शिक्षा प्राप्त करने के साधन हैं। इस दिन हमें विद्वानों का सम्मान करना चाहिए। उन्हें सम्मान सूचक पद देने चाहिये ताकि साधारण व्यक्ति भी इस मार्ग की ओर अग्रसर हों। आम लोग उसी ओर चलते हैं, जिनका विशेषप्रकार से सम्मान किया जाता है। चूँकि आजकल धनवानों की लोग कदर करते हैं इसलिये जनता की प्रवृत्ति अधिक धन प्राप्त करके सम्मान प्राप्त करने की है। इस प्रवृत्ति को हम एक नई मोड़ देना है। हमारे सामने हर वर्ष यह शुभ अवसर आता है परन्तु हम उसे केवल मनोविनोद में ही समाप्त कर देते हैं। जनता के दृष्टिकोण को बदलने के लिए हमें विद्वानों का सम्मान विशेष धूम-धाम के साथ करना चाहिये। वेद-शास्त्रों की पूजा व उनके जलूस निकालने चाहिए। सिख लोग अपने पवित्र धर्म ग्रन्थ गुरु साहब का जलूस निकाला करते हैं। हमें भी यह पद्धति अपनानी चाहिए।

शिक्षा और विद्या की वृद्धि के सम्बन्ध में जो विचार उत्पन्न हों, उनको क्रियान्वित करने का प्रयत्न करना चाहिये। पुस्तकालय, स्कूल, पाठशालाएँ बढ़ाने के प्रयत्न होने चाहिये। गायन, संगीत और भाषण के आयोजन होने चाहिए। उत्तम पुस्तकें लिखने वालों को पुरस्कार मिलने चाहिये। यदि हम उनको कुछ भेंट देने की स्थिति में न हों तो उनका विशेष सम्मान करना चाहिये। बच्चों को उत्साहित करने के लिए इनाम देने चाहिये। सरस्वती के चित्र का पूजन व जलूस निकालना चाहिए।

वसन्त का त्यौहार हमारे लिए पीले फूलों की जयमाला लिए खड़ा है। यह उन्हीं के गले में पहनाई जायेगी, जो लोग उसी दिन से पशुता से मनुष्यता, अज्ञानता से ज्ञान, अविवेक से विवेक की ओर बढ़ने का दृढ़ संकल्प करते हैं और जिन्होंने तप, त्याग और अध्यवसाय से इन्हें प्राप्त किया है, उनका सम्मान करते हैं, संसार में ज्ञान गंगा को बहाने के लिए भागीरथी जैसा तप करने की प्रतिज्ञा करते हैं। श्रेष्ठता का सम्मान करने वाला भी श्रेष्ठ होता है। इसलिये आइये हम इस शुभ अवसर पर उत्तम मार्ग का अवलम्बन लें।

वसंत का उल्लास और अभिनंदन

वसंत के सम्बन्ध में एक आख्यान बहुत प्रचलित है, जो उस समय का लगता है। जब सृष्टि निर्माण का क्रम पूरा हो चला था और प्रकृति की सभी व्यवस्थायें, गतिविधियाँ नियमित और क्रमबद्ध रूप से आरम्भ हो गयी थीं। लोक समाज ने तब वसंत को ऋतुराज की मान्यता दे दी थी और भगवान भी 'ऋतूनां कुसुमाकरः' की घोषणा कर चुके थे। उस समय ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर और हेमन्त इन पाँच ऋतुओं ने मिलकर वसन्त के अभिनन्दन की बात सोची। सम्वत्सर के छः काल खण्डों में से एक को सार्वजनीन, सार्वभौमिक और सर्वोपरि सम्मान दिया जा रहा हो तो उसके ही अपने परिजन अभिनन्दन करने में पीछे क्यों रहें ?

कहा जाता है कि ऋतुओं ने अपनी ओर से कोई अमूल्य उपहार ऋतुराज को भेंट करने का निश्चय किया। ऋतुओं के पास सर्वाधिक अमूल्य वस्तु क्या हो सकती है ? संसार में सबसे अमूल्य तो एक ही वस्तु समझी गयी है और वह है जीवन। लेकिन ऋतुओं के सामने शायद अपने जीवन के अस्तित्व का भी प्रश्न रहा होगा। फिर भी दुविधा तो थी ही कि जीवन से अमूल्य और कोई चीज है ही नहीं जगत् में और जिस जीवन को अमूल्य नहीं कहा जा सके वह भी क्या जीवन है, वह तो मात्र अचेत, मृतक थका देने वाली बोझिल यात्रा ही हो सकती है, जो जन्म से आरम्भ होकर मृत्यु तक पूरी हो जाती है।

गहन विचार विमर्श के बाद ऋतुओं ने बसंत को अमूल्य उपहार देने की चिंता का समाधान पा ही लिया। सुनते हैं विचार-विमर्श के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि समूचा जीवन ही भेंट न किया जा सके तो कम से कम जीवन का एक भाग तो अवश्य ही उपहार में दिया जा सकता है। वह भाग ही निश्चित हो गया—एक चौथाई हिस्सा अर्थात् माह में से आठ दिन पाँचों ऋतुओं के जीवन का चौथाई हिस्सा मिलकर कुल चालीस दिन हुए और वे लोक में उतरने की तैयारी करते हुए ऋतुराज के पास पहुँचे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वसंत के आगमन में अभी काफी समय शेष था तभी ऋतुओं ने पहुँचकर निवेदन किया कि हम लोग—आप जो लोक और प्रभु से सर्वोच्च सम्मान पा गये हैं—के लिए अपने जीवन का चौथाई हिस्सा अभिनन्दन स्वरूप भेंट करना चाहते हैं। आप इसे स्वीकार कीजिये। हम लोगों को अपने जीवन से अधिक मूल्यवान और कोई वस्तु नहीं दिखाई दी जो हमारे पास रही हो। इसलिये संयुक्त रूप से ये चालीस दिन ही आपको अर्पित कर रहे हैं।

और तभी से कहा जाता है कि वसंत का आगमन-स्वागत उसके आने से चालीस दिन पूर्व किया जाने लगा। तभी से चालीस दिन पूर्व जबकि प्रकृति का वर्ष अपने वार्धक्य से गुजर रहा होता है—वसंत का संदेश सुना जाने लगा। इसी वार्धक्य में जर्जर पुरातन की मृत्यु की सम्भावना देखी गयी और नवीन नूतन उल्लास की कामलें फूट रही हैं माना गया। कथानक को कवि हृदय की कल्पना भले ही कहा जाय परन्तु यह जो एक महानतम तथ्य उद्घाटित करता है, उसे काल्पनिक या तथ्यहीन कहकर अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

वसंत पर्व अनेक विशिष्टताओं से सम्पन्न है, वह अनायास ही जड़ चेतन में उत्साह, उमंग एवं उल्लास की असाधारण मात्रा उभार देता है। भावशीलता का जहाँ भी अस्तित्व है, वहाँ तो यह स्फुरणा और भी अधिक मात्रा में उभरती है। पुष्प पल्लवों से लदी प्रकृति की सुषमा देखते ही बनती है। लता गुल्मों से लेकर पतझड़ से ग्रस्त वृक्ष पादपों तक में मुस्कराती अभिनव सरसता मन को बरबस ही लुभा लेती है। कीट-पतंगों से लेकर पशु-पक्षियों तक की उमंगें न जाने क्या गुन गुनाती फिरती हैं? जिनके पास कोई उच्चस्तरीय भाव नहीं है उनका हुलास-उल्लास प्रणय प्रतिवेदना और क्रीड़ा कल्लोल के रूप में छलकता है। यही प्रवाह उच्च स्तरीय श्रद्धा सद्भावना के क्षेत्र में भी अपना कार्य करता है।

वसंत एक अभिनव चेतना का विशेष प्रवाह है। जर्जर मृत प्राय को अन्तिम सांस और है, और अभिनव उल्लास का चेतना प्रवाह कुछ और। यों ऐसा उल्लास वर्षा ऋतु के बाद श्रावण भाद्रवद मास में भी दीख पड़ता है। परन्तु वर्षा की झड़ियों में बहुत कम समय तक ही लोग उस उल्लास की सुषमा को देख पाते हैं। फिर बसंत की अपनी विशेषता है, जो उसे वर्षा से भिन्न ही रखती है। वह आनन्द, वह उत्साह, वह उल्लास और वह सुषमा वर्षा में इतनी सुलभ कहाँ ?

पहले ही कहा जा चुका है कि बसंत के आगमन की सूचना और संकेत उल्लास और उत्साह के रूप में हर भावशील हृदय स्पंदित होता है। उच्च स्तरीय सद्भावना के केन्द्र हृदय अनुभव करने लगते हैं कि ईश्वरीय प्रेरणायें और अनुदान बरसने लगे हैं। यह सम्भावना इन दिनों तो और अधिक सही सिद्ध हो रही है। युग निर्माण परिवार का शुभारम्भ उसके सूत्र संचालक का अवतरण एक प्रकार से बसंत पर्व के ही वरदान हैं। जिस सूत्र में श्रृंखला में लक्षलक्ष प्रबुद्ध व्यक्तियों के मणि मुक्तक आबद्ध होकर युग निर्माताओं की भूमिका निभा रहे हैं, उनका शुभारम्भ, श्री गणेश बसंत पर्व को ही हुआ है। विश्व मानव के भाग्य और भविष्य निर्माण में कटिबद्ध इस युग के अनुपम एवं अद्भुत अभियान का जन्म संवत पर्व को हुआ है और उसकी प्रगति एक-एक सीढ़ी करके हर साल ऊँची उठी है।

युग निर्माण परिवार के परिजन अगले दिनों लोक नायकों की भूमिका संपादित करने के लिये नियति द्वारा नियुक्त संस्कारवान आत्माओं को इन्हीं दिनों कोई दिव्य सत्ता झिझोड़ने झकझोरने आती और और जिनके, जीवन में कुछ करने लायक निष्ठायें विद्यमान हैं, वे अन्तर्मुखी होकर दिव्य सत्ता की प्रेरणायें सहज ही सुनने लगते हैं—सुनकर ग्रहण करने की कुलबुलाहट भी अनुभव करते हैं।

इन दिनों संसार जिस दौर से गुजर रहा है उस दौर में वसंत की—आनन्द और उल्लास की नये युग के आगमन की पदचाप जो लोग सुन रहे हैं, वे भली भाँति जानते हैं कि वर्तमान परिस्थितियाँ नये युग की ही प्रसव वेदना है। आगत बसंत का ही पतझड़ है। जर्जर की मृत्यु और व्यर्थ हुए की विदा है। इस परिवर्तन से कोई व्यक्ति या समुदाय विशेष भले ही स्वयं के निहित स्वार्थों पर आघात पहुँचने से क्लांत हो। लेकिन हर दृष्टि सम्पन्न लोग भली भाँति जानते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं कि समूची मानव जाति का कल्याण इसमें निहित है। इन स्थितियों में नये युग के सृजन की सम्भावनायें छुपी पड़ी हैं।

और ऐसे युग के बसंत आगमन पर जीवन्त और जागरूक आत्माओं को निश्चय ही एक विशिष्ट कर्तव्य का आह्वान सुन पड़ता है। अतीत की विकृतियों, प्रदूषणों और विपन्नताओं की अन्तिम घड़ियों में स्वर्णिम आगत के अभिवादन हेतु वे स्वयं को तैयार और कमर कसकर खड़ा करने के लिए तत्पर हैं। ऐसे वसंत का अभिनंदन किस प्रकार किया जाय यह समझना हो तो उपरोक्त आख्यायिका अच्छा आधार बन सकती है।

अभिनंदन के लिए कुछ न कुछ तो उपहार चाहिए ही और महिमामय वसंत के लिए कोई भी वस्तु समुचित आदर देने का सन्तोष नहीं देती। ऋतुओं की कथा नये युग के अभिनन्दन हेतु कौन-सी अमूल्य वस्तु भेंट की जाय बता देती हैं। जीवन जो समय से बना है और समय देकर ही हम नये युग की प्रतीक्षा, सम्भावना पूरी कर सकते हैं। स्मरणीय है समय के साथ जीवन भी जुड़ा है और जीवन्त समय तो श्रम, संकल्प, परिश्रम और परमार्थ भावों से युक्त ही हो सकता है।

वसन्त पर्व—माहात्म्य बोध

भगवती सरस्वती का जन्मदिन-प्रकृति के मूर्तिमान हर्षोल्लास के प्रतीक वसन्त का शुभारम्भ—युग निर्माण योजना के आरम्भ का पुनीत पर्व। शिक्षा अभिवर्धन का सन्देश।

ज्ञान की देवी भगवती का यह जन्मदिन है। आदि काल में मनुष्य ने इसी दिन शब्दों को लिपिबद्ध करने का शुभारम्भ किया। जब ज्ञान केवल मस्तिष्कों, तक सीमित रहता था, लिपि का आविर्भाव नहीं हुआ था, तब प्रायः उपर्जित ज्ञान व्यक्ति के साथ ही चला जाता था। जिज्ञासु अपनी मनोभूमि के आधार पर ही कुछ ले पाते थे। उसे आगे कितना विस्तार मिलेगा संदिग्ध था। पर जब लिपि बनी तो विचारों को चिरस्थायी होने का अवसर मिल गया। एक समय था, जब मनुष्य अपनी भावनाओं को भी प्रकट नहीं कर पाता था। शब्द श्रृंखला बनी तो भावों के प्रकटीकरण का अवसर आया। सीखने सिखाने की प्रक्रिया आरम्भ हुई। पीछे जब शब्दों को लिपिबद्ध करने का अवसर मिल गया तो ज्ञान सम्पदा से मनुष्य सुसम्पन्न होता चला गया। विद्या की विभूति से उसका भण्डार भरता चला गया। यही था मानव-जाति के सौभाग्य सूर्योदय का प्रभात। उस ज्ञान प्रभात का उदय होता देखकर नियति हँस पड़ी प्रकृति गाने लगी। बसन्त अवतरित हुआ—भगवती सरस्वती के अवतरण पर हर्षोल्लास के रूप में।

शब्द और लिपि के अभाव में मनुष्य कितना सीमित, तुच्छ और अभावग्रस्त रहा होगा। जब यह दोनों विभूतियाँ उसने प्राप्त करली तो पूर्वजों का ज्ञान सम्पदा से इसे चिरकाल तक लाभ उठाते रहने का कैसा सुयोग सौभाग्य मिल गया। इन दोनों की तुलना करने पर अन्तर स्पष्ट होता है। निस्सन्देह यही मूलभूत सौभाग्य था जिसके आधार पर पीछे उसे अनेक प्रकार के साधन, उपकरण विधि-विधान मिलते चले गये और उन सुविधाओं साधनों से क्रमशः सम्पन्न होता चला गया, जो आज हम सब के सामने विज्ञान, कला, शिल्प, चिकित्सा, संचार, शिक्षा उद्योग आदि के रूप में प्रस्तुत है।

शिक्षा रूपी सरस्वती की कृपा से आदि काल से मनुष्य कृत्य-कृत्य हुआ। आज भी उसकी गरिमा उपयोगिता आवश्यकता ज्यों की त्यों है। शिक्षा विहीन को पशु कहा गया है, सो अक्षरशः सत्य है। अशिक्षित व्यक्ति अपनी क्षेत्रीय भाषा में समीपवर्ती लोगों से ही संभाषण कर सकता है। शिक्षा के अभाव में न वह अधिक बड़े क्षेत्र के लोगों से बातें कर सकता है, न अपनी कह सकता है न दूसरों की सुन सकता है। दूरवर्ती लोगों से लिपि माध्यम से पत्र व्यवहार कर सकना, उसके लिए अशक्य है। पुस्तकों में संग्रहीत विशेषज्ञों की सम्पदा को न वह देख सकता है न छू सकता है न उससे कुछ लाभ उठा सकता है। ऐसी देशा में उसे आँख, कान, जीभ होते हुए भी अन्धा, गूँगा बहरा कहना पड़ेगा। ईश्वर ने देखने, सुनने, समझने बोलने, जानने की सुविधा दी पर मनुष्य थोड़े से पुरुषार्थ में जरा-सा आलस्य करके अशिक्षित रह जाये तो इसे एक दुर्घटना ही कहना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को दयनीय एवं दुर्भाग्यग्रस्त ही माना जायेगा। जिन लोगों ने उसे शिक्षा का महत्व नहीं समझाया, उसे प्राप्त करने की सुविधा से वंचित रखा उन्हें हितु, सम्बन्धी कहलाते हुए भी अपने कर्तव्य में रहित ही कहा जायेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवती सरस्वती के जन्म दिन पर अनेक अनुग्रह के लिए कृतज्ञता भर अभिनन्दन करें—उनकी अनुकम्पा का वरदान प्राप्त होने की पुण्य तिथि हर हर्षोल्लास मनाये यह उचित ही है। दिव्य शक्तियों को मानवी आकृति में चित्रित करके ही उनके प्रति भावनाओं की अभिव्यक्ति संभव है। भावोद्दीपन मनुष्य की—निज की—महती आवश्यकता है। शक्तियाँ सूक्ष्म, निराकार होने से उनकी महत्ता तो समझी जा सकती है शरीर और मस्तिष्क द्वारा उनसे लाभ उठा सकता है। पर अन्तःकरण की मानस चेतना जगाने के लिए दिव्य तत्वों को भी मानवी आकृति में—संवेदना युक्त मनः स्थिति में—मानना और प्रतिष्ठापित करना पड़ता है। इसी चेतना विज्ञान को ध्यान में रखते हुए भारतीय तत्व वेत्ताओं ने प्रत्येक दिव्य-शक्ति को मानुषी आकृति और भाव गरिमा से संजोया है। इनकी पूजा अर्चन वन्दना धारणा हमारी अपनी चेतना की उसी प्रतिष्ठापित देव गरिमा के समतुल्य उठा ले जाती है। साधना विज्ञान का सारा ढाँचा इसी आधार पर खड़ा है।

भगवती सरस्वती की प्रतीक प्रतिमा, मूर्ति अथवा तस्वीर के आगे पूजा अर्चा की प्रक्रिया प्रस्तुत की जाय इसका सीधा तात्पर्य यह है कि शिक्षा की महत्ता को स्वीकार शिरोधार्य किया जाय। उनको मस्तक झुकाया जाय अर्थात् मस्तक में उनके लिए स्थान दिया जाय। अपनी आज की ज्ञान सीमा जितनी है। उसे और अधिक बढ़ाने का प्रयत्न किया जाय है, वास्तव में संग्रह करने और बढ़ाने योग्य सम्पदा धन नहीं ज्ञान है। लक्ष्मी नहीं विद्या का अधिक संग्रह सम्पादन किया जाना चाहिए। परीक्षा के लिए पढ़ना भी अच्छा है। विदेशों में श्रमजीवी, व्यापारी, शिल्पी तथा दूसरे लोग रात्रि विद्यालयों में निरन्तर पढ़ते रहते हैं और बचपन में स्वल्प शिक्षा रहते हुए भी धीरे-धीरे सम्पदा बढ़ाते चलते हैं और जीवन के अन्त तक अपनी रुचि के विषय में निष्णात बन जाते हैं—ऊँची से ऊँची उपाधि प्राप्त कर लेते हैं।

अपने देश में यह समझा जाता है कि विद्या नौकरी करने के लिए प्राप्त की जानी चाहिए। यह विचार बहुत ही ओछा और निकृष्ट है। उसमें विद्या को हेठी-खोटी समझकर उसका अपमान करने की धृष्टता छिपी हुई है। विद्या मनुष्य के मस्तिष्क के व्यक्तित्व के गौरव के निखार एवं विकास के लिए है। पेट को अन्न की तरह वह मस्तिष्क भूख की पूर्ति है। हमें पेट भरने की तरह मानसिक भूख बुझाने के लिए दैनिक जीवन में अध्ययन के लिए भी स्थान रखना चाहिए। जिन्हें सरकारी पाठ्यक्रम परीक्षा स्तर की पढ़ाई पढ़नी हो वे रात्रि विद्यालयों ट्यूटोरियल स्कूलों की व्यवस्था और उनके आधार पर पढ़ाई जारी रखें, जिन्हें किन्हीं विशेष विषयों में रुचि हो उनका साहित्य खरीदकर अथवा पुस्तकालयों द्वारा प्राप्त कर अपनी ज्ञान गरिमा बढ़ाये। भगवती सरस्वती के पूजन वन्दन के साथ-साथ इस स्तर की प्रेरणा ग्रहण करने और उस दिशा में कुछ कदम उठाने का साहस करना चाहिए। स्वाध्याय हमारे दैनिक जीवन का अंग बन जाय। ज्ञान की गरिमा को समझने लग जायें और उसके लिए मन में तीव्र उत्कण्ठा जाग पड़े तो समझना चाहिए सरस्वती पूजन की प्रतिक्रिया ने अन्तःकरण तक प्रवेश पा लिया।

अपने देश में शिक्षितों की संख्या २३ प्रतिशत और अशिक्षितों की संख्या ७७ प्रतिशत है। यह अभाव अन्न की भुखमरी से भी अधिक भयावह है। यदि मनुष्य शरीर मात्र बनकर जिया उसकी बौद्धिक परिधि चौड़ी न हो सकी तो उसे पशु जीवन ही कहा जायेगा। अपने देश की तीन चौथाई जनसंख्या इसी स्तर का जीवन यापन करती है। अन्न का अकाल जब पड़ता है तब सरकारी गैर-सरकारी स्तर पर दयालु दानी और लोक सेवकों द्वारा उस कष्ट को निवारण करने के लिए कितने ही उपाय किये जाते हैं, पर अत्यन्त खेद की बात है कि इस बौद्धिक भुखमरी की ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाता। स्कूली बच्चों की पढ़ाई भर का थोड़ा-सा प्रबन्ध सरकार कर रही है। बाकी प्रौढ़, पुरुष, महिलाएँ उसी निरक्षरता की व्यथा से ग्रसित हैं। छोटे देहातों में तो लड़कों के लिए भी पढ़ाई का प्रबन्ध नहीं। पिछड़े वर्ग के लोग पढ़ाने की आवश्यकता ही नहीं समझते। जिनके पास गुजारे को है—वे कहते हैं हमें अपने बच्चों की नौकरी थोड़े ही कराना है। हम क्यों पढ़ायें ? लड़कियों का पढ़ाना तो अभी भी बेकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझा जाता है। इस स्थिति का अन्त किया जाना चाहिए। शिक्षितों को विद्या ऋण चुकाने के लिए अपने समीपवर्ती अशिक्षितों को पढ़ाने की संकल्प लेना चाहिए और एक नियत संख्या में उन्हें शिक्षित बनाकर ही रहना चाहिए।

ऊँची पढ़ाई के लिए रात्रि विद्यालय, प्रौढ़ पुरुषों के लिए रात्रि पाठशालाएँ, प्रौढ़ महिलाओं के अपरान्ह पाठशालाएँ, पढ़ने योग्य बच्चों को स्कूल भिजवाने के लिए अनेक अभिभावकों से आग्रह, कन्या शिक्षा के लिए वातावरण बनाना तथा व्यवस्था करना, नये स्कूल खुलवाने के लिए सरकार से आग्रह एवं जनता से सहयोग एकत्रित करना—चालू विद्यालयों के विकास विस्तार का प्रबन्ध करना, पुस्तकालयों की स्थापना, चल पुस्तकालयों का प्रचलन—छात्रों को पाठ्य पुस्तक उधार देने वाले पुस्तक बैंक आदि कितने ही शिक्षा प्रसार सम्बन्धी ऐसे कार्यक्रम हैं, जिन्हें पूरे उत्साह के साथ सर्वत्र विकसित किया जाना चाहिए। बसन्त पर्व पर सरस्वती पूजन की यह ठीक प्रतिक्रिया होगी।

भगवती सरस्वती के हाथ में वीणा है। उनका वाहन मयूर है। मयूर अर्थात् मधुर भाषी। हमें सरस्वती का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए उसका वाहन मयूर बनाना चाहिए। मीठा, नम्र, विनीत, सज्जनता, शिष्टता और आत्मीयता युक्त संभाषण हर किसी से करना चाहिए। जीभ को कड़ुआ, धृष्ट अशिष्ट बोलने की आदत कदापि न पड़ने दें। छोटों को भी 'तू' नहीं 'आप' कहकर बोले। कम से कम 'तुम' तो कहें ही। हर किसी के सम्मान की रक्षा करें, उसे गौरवान्वित करें। सम्मान भरा व्यवहार करें ताकि किसी को आत्महीनता की ग्रन्थि का शिकार बनाने का पाप अपने सिर पर न चढ़े।

प्रकृति ने मोर को कलात्मक, सुसज्जित बनाया है। हमें भी अपनी अभिरुचि परिष्कृत बनानी चाहिए। हम प्रेमी बनें, सौन्दर्य और स्वच्छता और सुसज्जता का शालीनता युक्त आकर्षण अपने प्रत्येक उपकरण एवं क्रियाकलाप में नियोजित रखें। तभी भगवती सरस्वती हमें अपना वाहन पार्षद, प्रिय पात्र मानेगी। हाथ में वीणा का अर्थ संगीत, गायन, जैसी भावोत्तेजक प्रक्रिया को अपनी प्रसुप्त सरसता सजग भरने के लिए प्रयुक्त करना है। हम कला प्रेमी बनें। कला पारखी बनें, कला के पुजारी और संरक्षक भी। माता की तरह उसका सात्विक एवं पोषक पयपान करें। उच्च भावनाओं के जागरण में उसे संजाये। जो अनाचारी कला के साथ व्यभिचार करने पर तुले हुए हैं। ऐसी पशु प्रवृत्ति भड़काने और कामुकता अश्लीलता एवं कुरुचि उत्पन्न करने में लगे हों उनका न केवल असहयोग विरोध ही करें वरन् विरोध भर्त्सना के अतिरिक्त उन्हें असफल बनाने में भी कुछ उठा न रखें।

सरस्वती के अवतरण पर्व पर प्रकृति खिलखिला पड़ती है, हँसी और मुसकान के फूल खिल पड़ते हैं। उल्लास उत्साह और प्रगति के यह अभिनव सृजन के प्रतीक नवीन पल्लव वृक्ष पर परिलक्षित होते हैं। मनुष्य में भी जब ज्ञान का, शिक्षा का प्रवेश होता है—सरस्वती का अनुग्रह अवतरित होता है तो स्वभाव में, दृष्टिकोण में, क्रिया-कलाप में बसन्त ही बिखरा दीखता है। हलकी-फुलकी चिन्ता और उद्वेगों रहित खेल जैसी जिन्दगी जीने की आदत पड़ जाती है। हर कार्य की पूरी-पूरी जिम्मेदारी अनुभव करने पर मन पर बोझ किसी भी भली-बुरी घटना का न पड़ने देना यही है हलकी-फुलकी जिन्दगी। पुष्पों की तरह अपने दाँत हर समय खिले रहें। मुसकान चेहरे पर अठखेलियाँ करती रहे। चित्त हलका रखना, आशा और उत्साह से भरे रहना, उमंगें उठने देना, उज्जवल भविष्य के सपने संजोना, अपने व्यक्तित्व को फूल जैसा निर्मल, निर्दोष, आकर्षक एवं सुगन्धित बनाना ऐसी ही अनेक प्रेरणाएँ बसन्त ऋतु में पेड़-पौधों पर नवीन पल्लवों पुष्पों के आने को देखकर प्राप्त की जा सकती हैं। कोयल की तरह मस्ती में कूंकना, भौरों की तरह गूंजना गुन-गुनाना यही जीवन की कला जानने वाले के चिन्ह हैं। हर जड़ चेतन में वसन्त ऋतु में एक सृजनात्मक उमंग देखी जाती है। उस उमंग को वासना से ऊँचा उठाकर भावोल्लास में विकसित किया जाना चाहिए। सरस्वती का अभिनन्दन प्रकृति बसन्त अवतरण के रूप में करती है। हम पूजा वेदी पर पुष्पाञ्जलि भेंट करने के साथ-साथ जीवन में वसन्त जैसा उल्लास, कलात्मक प्रवृत्तियों का विकास और ज्ञान संवर्धन का प्रयास करके सच्चे अर्थों में भगवती का पूजन कर सकते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और उसका लाभ अपने को तथा अन्य असंख्यों को पहुँचा सकते हैं।

युग निर्माण योजना का जन्म-दिन बसन्त पर्व है इसकी लगभग सारी महत्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ बसन्त पर्व से ही आरम्भ हुई हैं। अब तो 'बसन्त पर्व'—'अखण्ड-ज्योति परिवार' के प्रत्येक सदस्य के लिए प्रकाश-पर्व—प्रेरणा पर्व बन गया है। कोई समय था—जब उस मिशन के संचालक का—उसकी बहुमुखी जन-कल्याणकारी प्रवृत्तियों का 'जन्मदिन' माना जाता था और इसी दृष्टि से उसे मनाया जाता था, पर अब बात उतनी सीमित नहीं रही। अब उसे इस परिवार का प्रत्येक घटक अपने भावनात्मक उत्कर्ष का 'अभिनव-पर्व' मानता और मनाता है। इसी २८ जनवरी को 'वसन्त पंचमी' है, निस्सन्देह उस दिन 'अखण्ड-ज्योति परिवार' का प्रत्येक सदस्य उसी हर्षोल्लास के साथ 'नूतन-प्रेरणाएँ' ग्रहण करेगा—जिस प्रकार किसी अत्यन्त भावोद्दीपन अवसर पर की जा सकती है। उसका बाह्य-स्वरूप पूरे उत्साह के साथ मनाने की तैयारियाँ पिछले महीने से ही चल रही हैं। उत्सव-आयोजन छोटे या बड़े रूप से प्रायः उन सभी स्थानों पर मनाये जाते हैं—जहाँ 'अखण्ड-ज्योति परिवार' के थोड़े या बहुत सदस्य मौजूद हैं।'

भगवती सरस्वती का 'जन्म-दिन' उल्लास और उत्साह के साथ धरती पर अवतरण का दिन ऋतुराज (बसन्त) का शुभारम्भ यों बहुत पहले से भी माघ सुदी पंचमी 'बसन्त पंचमी' की पुण्य-बेला में मनाया जाया करता था। पर जब से 'अखण्ड-ज्योति परिवार' की 'युग-निर्माण योजना' का विकास विस्तार हुआ है, तब से यह माना जाने लगा है कि युगान्तरकारी दिव्य-प्रेरणाएँ इसी दिन इस धरती पर बरसती हैं। इस मान्यता के पीछे वे कारण भी हैं—जो इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। परिवार के कुलपति का आत्म-बोध, 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का आरम्भ, आर्षसाहित्य के सरल प्रस्तुतीकरण का श्रीगणेश, 'युग-निर्माण' आन्दोलन का सूत्र-संचालन, सृजन-सेना का संगठन, गायत्री तपोभूमि का निर्माण, 'शान्ति-कुञ्ज' एवं ब्रह्मवर्चस की स्थापना, विविध भाषाओं में 'विचार-क्रान्ति' साहित्य का सृजन—अभियान को विश्व-व्यापी बनाने का दुस्साहस, प्रत्यावर्तन सत्रों की श्रृंखला आदि-आदि ऐसी अनेक प्रवृत्तियाँ हैं—जिन्हें आरम्भ और अग्रसर करने का श्रेय 'अखण्ड-ज्योति परिवार' को प्राप्त है। इन सभी का शुभारम्भ 'वसन्त-पञ्चमी' की पुण्य-बेला में होता रहा है। अस्तु विश्व का नव-निर्माण युग, युग-परिवर्तन, भावनात्मक पुनरुत्थान आदि इस युग की महानतम् क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों के साथ सहज ही यह शुभ-दिन जुड़ गया है। इस दिन से आरम्भ किया हर कार्य सफल ही होता चला गया है। इसका मूल कारण तो दैवी-विधान के साथ-साथ अपने कदमों का उठना ही समझना चाहिए। हमारी नावें हवा के रुख को पहचानकर चल रही हैं, इसलिए उनमें तेजी आनी स्वाभाविक है। जन-मानस की पुकार और युग की फुहार को सुनकर दौड़ पड़ने वाला यह अभियान सहज ही जनसहयोग और लोक-श्रद्धा का भाजन बनता चला गया है। इतनी गहराई तक न पहुँचने वाले लोग प्रस्तुत सफलताओं को बसंत-पर्व के शुभ-मुहूर्त में किये गये आरंभ की देने मानते हैं, जो हो बसन्त पर्व व अखण्ड-ज्योति परिवार का परिष्कृत उल्लास अब पर्यायवाची शब्द बन गये हैं। अस्तु बिना किसी बाहरी दबाव के अपने परिवार का हर व्यक्ति इस पर्व के आने पर अपने भीतर ऐसी हलचल अनुभव करता है कि उस आन्तरिक अभिव्यक्ति को किसी उत्सव-आयोजन का रूप दिये बिना उससे रहा ही नहीं जाता।

उद्देश्य और शिक्षा

प्राकट्येन सरस्वत्या वसन्तपञ्चमी तिथौ।
विद्या जयन्ती सा तेन लोके सर्वत्र कथ्यते।।१।।

वसन्त पञ्चमी तिथि में भगवती सरस्वती का प्रादुर्भाव होने के कारण संसार में सर्वत्र इसे "विद्या जयन्ती" कहा जाता है।

दृष्ट् वाभिवृद्धिं सर्वत्र भगवत्यधिकाधिकाम्।
सञ्जायते प्रसन्ना सा वाग्देवी तु सरस्वती।।२।।

विद्या की अधिकाधिक सब जगह अभिवृद्धि देखकर भगवती सरस्वती प्रसन्न होती हैं।

पंग्वन्धसमश्चास्ति विद्ययारहितो नरः।
ज्ञानप्रगति शून्याऽसौ विद्यालोकमन्तरा।।३।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किमिह कार्यमकार्यं किं सद सच्च वा तथा।
वेत्ति नेति कुण्ठितास्यात्प्रगतिवित्तया विना।। ४।।

विद्या से रहित मनुष्य पंगु और अन्धे के तुल्य होता है। विद्या के प्रकाश के बिना वह ज्ञान और प्रगति से शून्य रहता है। इस संसार में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए तथा क्या सत् (भला है) और क्या असत् (बुरा) है ? यह वह नहीं जानता है और विद्या के बिना प्रगति कुण्ठित रहती है।

विकसित वै सर्वत्र वसन्तात्सौरभो यथा।
सद्व्यक्तित्व विकासोऽस्य तथा भवति विद्यया।। ५।।

जिस तरह वसन्त ऋतु में सौरभ सर्वत्र विकसित होता है, उसी प्रकार इसके (मनुष्य के) अच्छे व्यक्तित्व का विकास विद्या से होता है।

बसन्ते कुसुमानां च विकास इव मानवे।
विकसिता भवन्त्येव विद्ययानेक सदगुणाः।। ६।।

वसन्त ऋतु में पुष्पों के विकास की तरह विद्या से मनुष्यों में अनेक सद्गुण विकसित होते हैं।

वाग्देव्या वाहनो हंसो मधुरं यथा भाषते।
माधुर्य भाषिणा भाव्यं तथा विद्यानुरागिणा।। ७।।

सरस्वती का वाहन हंस जिस प्रकार मधुर बोलता है, उसी प्रकार विद्या में अनुराग रखने वाले को मधुर भाषी होना चाहिए।

प्रदत्ते प्रेरणा वाद्याद् वीणा हस्ताम्बुजा हि यत्।
हृत्तन्त्री खलु चास्माकं सर्वदा झङ्कृता भवेत्।। ८।।

कर कमलों में वीणा धारण करने वाली भगवती वाद्य से प्रेरणा प्रदान करती है कि हमारी हृत्तन्त्री (हृदयरूपिणी वीणा) सर्वदा झङ्कृत रहनी चाहिए।

नाशिक्षितेन वै भाव्यं नरेण देहधारिणा।
मानवत्वे कलङ्कोऽस्ति ध्रुवमक्षर शून्यता।। ९।।

देहधारी मनुष्य को निश्चय ही अशिक्षित नहीं रहना चाहिए। निरक्षरता मानवता पर अमिट कलङ्क है।

शिक्षया ज्ञानवृद्धिश्च सद्गुणवृद्धिर्विद्यया।
जायते तेऽपि द्वे चात्र प्राप्तव्ये पूर्णयत्नतः।। १०।।

शिक्षा से जानकारी (ज्ञान की वृद्धि) होती है और विद्या से सद्गुणों की वृद्धि होती है। अतः शिक्षा और विद्या ये दोनों ही पूर्ण यत्न से प्राप्त करनी चाहिए।

निम्नक्रमेण विद्यायाः सुखमुत्पद्यते खलु।
विविधोत्तम गुण प्राप्ति निवेश पुरस्सरम्।। ११।।
विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मंततः सुखम्।। १२।।

निम्न क्रम से विद्या से अनेक उत्तम गुण समूह की प्राप्ति से सन्निवेशपूर्वक सुख की उत्पत्ति होती है। विद्याा विनय देती है अर्थात् विद्या से मनुष्य विनय प्राप्त करता है। विनयी होने से उसमें पात्रता उत्पन्न होती है। पात्रता होने से वह धन का लाभ करता है और धन से धार्मिक कार्य करता है तथा धार्मिकता से उसे सुख मिलता है।

वसन्त पर्व क्षणिक उफान बनकर न रह जाय

ऐसा कदाचित ही कोई वृक्ष गुल्म होता है जिस पर वसन्त का प्रभाव न पड़ता हो। नये पल्लव हर लता पादप पर आते हैं। उल्लास भरी मुस्कान का प्रतिनिधित्व करते हुए हर डाली पर पुष्प खिलते हैं। नियति की तरुणाई इसी रूप में उभरती है, उसके प्रभाव आक्रमण से अछूता हरितिमा की सुषमा का कोई कण नहीं रहता।

यह उल्लास मानवी चेतना में भी उभरता है। तमोगुणी और रजोगुणी प्रकृति भी अपनी दिशा में उल्लसित होती है। काम कौतुक की क्रीड़ा इन दिनों देखते ही बनती है। बाल वृद्ध की असमर्थता तरुणाई की दिशा में अपने-अपने ढंग और स्तर से झांकती है। स्तर कुछ भी हो, दिशा कोई भी हो, हर कहीं प्रफुल्लता फूटती दिखाई देगी।

यह प्रक्रिया सतोगुण के क्षेत्र में भी अनवरत् 'रूप से दिखाई पड़ती है। साधक और तपस्वी इस मनः स्थिति में आशातीत प्रगति करते हैं। ध्यानावस्थित समाधिस्थ योगी जिस सफलता के साथ प्रत्याहार और धारणा की कक्षाएँ उत्तीर्ण करते हैं, वह देखने ही योग्य हैं। तपस्वियों के अग्नि संस्कार उनके मूल आवरण विक्षेपों को इन्हीं दिनों दग्ध करते हैं। ज्ञानयोग,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्मयोग और भक्तियोग को सर्वसाधारण के उपयुक्त समन्वयी साधना का विकास विस्तार भी इन्हीं दिनों होता है। ऐसी पुण्य बेला में यदि युग निर्माण परिवार का जन्म हुआ उसके सूत्र संचालक का अवतरण प्रस्तुत हुआ, तो इसे अनुकूल ऋतु का उपयुक्त अवसर ही कहा जायेगा।

युग निर्माण परिवार के महासागर में इन्हीं दिनों समुद्र मंथन होता है और पौराणिक रत्नों की तरह उनकी संख्या मात्र चौदह होकर सीमित नहीं रह जाती वरन् प्रत्येक सक्रिय सदस्य और कर्मठ कार्यकर्ताओं में शाखायें-प्रशाखायें फूटती हैं और परिवार पहले की अपेक्षा कई गुना बढ़ जाता है। एक से दस का क्रम किसी समय आदेश और कर्तव्य भार समझा जाता था। पर अब तो वह हम सबके स्वभाव का ऐसा अंग बन गया है कि उसका साधन सरंजाम जुटाये बिना कोई गति रहे किसी को चैन नहीं। जीवन के दैनिक नित्य कर्मों में नवनिर्माण के परमार्थ प्रयोजन भी अनिवार्य आवश्यकता बनकर जुड़ गये हैं। भोजन स्नान शौच-शयन की तरह ही झोला पुस्तकालयों की प्रक्रिया चलती है। ज्ञान यज्ञ के रचनात्मक और संघर्षात्मक स्तर के बहुमुखी क्रिया-कलाप ऐसे लगते हैं मानो इन्हीं परमार्थ प्रयोजनों में स्वार्थ का चरम बिन्दु केन्द्रित हो गया हो। जहाँ ऐसा उत्साह उमड़ा हो, वहाँ एक से अनेक होने का क्रम चलेगा। ऐसा विकासोन्मुख उद्यान स्वसंचलित रीति-नीति से विशालकाय उपवन बनेगा ही। युग निर्माण परिवार इसी क्रम में बना है—बढ़ रहा है।

वसन्त ऋतु में गुल्म पादपों पर नूतन पुष्प आते हैं वह अभिनव अवतरण बड़ा सुहावना लगता है और हर्षोल्लास भरे क्षण अनायास ही थिरकने लगते हैं। पर यह शुभारम्भ श्री गणेश ऐसी ही क्षणिक चमक दिखाकर समाप्त नहीं हो जाता वरन् उसका क्रमबद्ध विकास निरन्तर अग्रगामी होता रहता है। कोपलें परिपुष्ट पल्लव बनती हैं। कलियाँ पुष्प बनकर चुप नहीं बैठी रहतीं वे फल बनने के विकास क्रम में जुट जाती हैं, और अन्ततः वह शोभा सौन्दर्य बहुमूल्य पदार्थ के रूप में परिपक्व परिपुष्ट होता है। इतना ही नहीं आज की कलिका कल फल बनती है और इसके बाद नये वृक्ष उत्पन्न कर सकने में समर्थ बीजों का एक विशालकाय दल सामने आता है। किसी समय एक बीज ने एक अंकुर उगाया था यह सत्य है पर तथ्य यह भी है कि वह अंकुर एकांकी नहीं रह सकता। वृक्ष बनता है और उसकी हर डाली पर ढेरों फल लगते हैं और हर फल में कई-कई बीज होते हैं। इस प्रकार वृक्ष हर फसल पर ढेरों बीज उत्पन्न करता है और जीवन भर यही क्रम जारी रखता है। एक बीज यदि एक ही वृक्ष उगाये और उस पर एक ही फल लगे तो समझना चाहिए कि सृष्टि की शोभा सुषमा में भर देने वाली हरितमा का मंगलमय अस्तित्व समाप्त ही हो गया और कहीं ऐसा दुर्भाग्य सामने आ खड़ा हो कि वृक्ष स्वयं तो जिये पर फल बीज उत्पन्न करने से विरत हो जाय तो समझना चाहिए यह संसार श्मशान जैसा वीभत्स बनकर रहेगा।

युग निर्माण परिवार का हर सदस्य फलदार कल्पवृक्ष है। यों उसकी शोभा सुषमा सदा ही मंगलमयी प्राण वायु, छाया शीतलता विस्तृत करती रहती है, पर वसन्त पर्व तो उसका उल्लास अप्रितम पुरुषार्थ के रूप में फूट ही पड़ता है। कोई अभागा ही ऐसा होगा जो एक से दस बनने के लिये आतुरता भरा प्रयास न करता हो। झोला पुस्तकालयों की बहार इन दिनों देखते ही बनती है। पत्रिकाओं के सदस्य बढ़ाने की परस्पर प्रतिस्पर्धा लग जाती है और घुड़ दौड़ के अश्वों को पीछे छोड़ने वाली मस्ती ऐसा कुछ कर दिखाती है, जिससे देखने वालों को आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। जौहर के लिये केशरिया बाना पहनकर रणक्षेत्र में उतरने वाले आत्म दानी योद्धाओं का वर्णन राजस्थानी युद्ध इतिहासों में जहाँ-जहाँ मिलता है, पर यदि उसे सजीव साकार रूप से इन्हीं दिनों आँखों के सामने देखना हो तो उन कर्मठ कार्यकर्ताओं के क्रिया-कलाप को देखना चाहिए, जो घर-घर गाँव-गाँव वसन्त पर्व मनाये जाने की व्यवस्था जुटाने में प्राण-प्रण से सलंग्न होते हैं। यों सभी शाखायें इस आयोजन को मानना अपने लिये परीक्षा पर्व के रूप में मानती हैं और ध्यान रहता है कि कहीं शिथिलता उदासीनता के कारण विरादरी को पंक्ति में ले जाने नीचा देखने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का दुर्दिन न आए। फिर भी यदि गहराई से देखा जाय तो इस अवसर पर होने वाले ज्ञान यज्ञों के धर्मानुष्ठान उन्हीं कर्मवीरों की आत्मप्रेरणा भरी उमंगों के परिणाम होते हैं, जो इन दिनों समय, श्रम मनोयोग ही नहीं सामर्थ्य भर धन भी खर्च करते हैं। इन्हीं ज्योति पुञ्ज युग निर्माताओं की ज्वलनशीलता ही अपने-अपने क्षेत्रों में अरुणोदय की आभा बनकर जगमगाती है।

इस अवसर पर अपेक्षाकृत पुरुषार्थ कम नहीं अधिक ही उभरता है। सक्रिय सदस्यों और कर्मठ कार्यकर्ताओं शक्ति भर यह प्रयास करते हैं कि वसन्त पर्व के अवसर पर सामूहिक समारोह और वैयक्तिक आयोजन अधिकाधिक उत्साह के साथ मनाए जायें। इस पुरुषार्थ के प्रतिफल की एक हलकी-सी झाँकी यहाँ देखी जा सकती है।

जो समाचार इस अंक में छपे हैं, वे बहुत ही संक्षिप्त और परिचय मात्र हैं इसके लिए किसने कितना उत्कृष्ठ प्रयत्न किया और उसका प्रतिफल किस स्तर की मंगलमयी जन जागृति के रूप में उत्पन्न हुआ है, उसे न लिखा जा सकता हैं और न कहा जा सकता है। वह दिन दूर नहीं जब युग परिवर्तन को मानवी भाग्य भविष्य को बदल डालने वाली परिस्थितियाँ सामने आयेंगी और अन्वेषी लोग पता लगायेंगे कि यह चमत्कारी विस्फोट आखिर अकस्मात् कहाँ से कैसे फूट पड़ा ? शोध का निष्कर्ष यही निकलेगा कि नीवं के पत्थर बनकर मूक लोकसेवी तिल-तिल करके अपने को जलाते हुए जो चिनगारियाँ उत्पन्न कर रहे थे उन्हीं दधीचि भागीरथी प्रयत्नों का यह सामयिक विकास विस्फोट है। नव निर्माण अभियान में संलग्न युग निर्माताओं का मूल्यांकन आज की भौतिकवादी दृष्टि वाले ही स्वल्प समझे पर अगले दिनों स्पष्ट हो जायेगा कि आसुरी अनाचार को दग्ध करने वाले दावानल के पीछे किन-किन प्राणों के कितने भाव भरे स्फुल्लिंगों की श्रृंखला समवेत हो रही है।

इन समाचारों को इसी दृष्टि से देखा जाना चाहिये। समारोह के मात्र स्वरूपों के आधार पर नहीं उनके पीछे छिपी उन उत्कृष्ट भावनाओं की झाँकी की जानी चाहिए जिनने अगणित अवरोधों का व्यंग उपहास और विरोधों की परवाह न करते हुए अन्धकार में दीपक जलाया और जहाँ कुछ नहीं था, वहाँ निकट भविष्य में चमत्कार उत्पन्न होने की सम्भावना का पथ प्रशस्त किया।

इन पृष्ठों को उलट पलट कर कोई भी दृष्टिवान व्यक्ति यह देख सकता है कि कुछ दिन पूर्व का एक छोटा अंकुर आज नव निर्माण का विशालकाय उद्यान बनकर किस प्रकार गर्वोन्नत मस्तक से सुविकसित होता चला जा रहा है। कुछ दिन पूर्व का एक छोटा-सा संगठन आज सृजन सेना का समर्थ देव दल बना हुआ किस प्रकार सर्वभक्षी असुरता से भिड़ जाने के लिए ताल ठोककर युद्ध क्षेत्र में उतर रहा है।

युग निर्माण अभियान का—उसके सूत्र संचालक का जन्मदिन जिस श्रान से मनाया—जिस भावना से मनाया जाता है, उसे यदि जयन्ती आयोजनों के इतिहास में अद्‌भुत और अनुपम कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति नहीं मानी जानी चाहिए। इस आधार पर हर किसी को यह सहज साहस हो सकता है कि मनुष्य में देवत्व के सदस्य एवं धरती पर स्वर्ग के अवतरण को निकट भविष्य में मूर्तिमान होकर रहने वाले सुनिश्चित तथ्य घोषित कर सकें। जिनने इन प्रयासों में जितना योगदान दिया है, उन्हें उसी अनुपात में दैवी अनुग्रह अनुदान मिलकर रहेगा इसे नोट करने वाले नोट कर सकते हैं। इन पंक्तियों में तो उस प्रयास पुरुषार्थ का भाव भरा अभिनन्दन ही किया जा सकता है।

यहाँ एक बात पूरी तरह ध्यान रखने की है कि कोई यह न मान बैठे कि वसन्त पर्व के दिनों में आयोजन समारोह की व्यवस्था करके अपने कर्तव्य की सामयिक पूर्णाहुति कर दी गई। यह तो उत्साह भर, शुभारम्भ हुआ है। पट्टी पूजन के दिन को शिक्षा समाप्ति का समावर्तन नहीं माना जाना चाहिए और अन्न प्राशन को जठराग्नि की परिपक्वता समझा जाना चाहिए। विवाह संस्कार का दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ है अन्त नहीं। वहाँ से तो कर्तव्यों का आरम्भ होता है। इसके पश्चात् तो हर कदम अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जिम्मेदारी से भरा और अधिक वजनदार होता चलता है। कली खिलना, आरम्भ है—पुष्प बनना विकास, प्रौढ़ता फल बनने में है और परिपक्वता उस बीज के रूप में आंकी जा सकती है जिसमें नये पौधे उगा सकने वाली बीज श्रृंखला सामने आती है। बसन्त पर्व के हर आयोजन को एक सुरभित कली एवं सुकोमल कोंपल माना जाना चाहिए। पूरा एक वर्ष उसके विकास की चेष्टा प्रक्रिया में नियोजित किया जाना चाहिए।

स्पष्ट है कि सभी शाखाएँ वसंत पर्व नहीं मनाती, उनमें से कितनी ही रह भी जाती हैं। स्पष्ट है कि जहाँ संगठन नहीं है, वहाँ के सभी एकाकी परिजन व्यक्तिगत आयोजन नहीं कर सके हैं। उसकी पूर्ति अगले दिनों तो हो जानी चाहिए, कराई जानी चाहिए। यह उत्तदायित्त्व उनके कंधों पर आता है, जो अपने यहाँ आयोजन समारोह की व्यवस्था करा चुके। उन्हें अपने अनुभव, साहस, पुरुषार्थ और परमार्थ का अधिक व्यापक क्षेत्र में विकसित करना चाहिये और अपने समीपवर्ती क्षेत्र में जहाँ भी उंगली रखने की गुंजायश हो पहुँचा पकड़ना चाहिए। ज्ञान यज्ञ के आयोजनों को हर्षोत्सव मात्र नहीं समझा जाना चाहिए वरन् उन्हें लोक शिक्षण की अनिवार्य आवश्यकता एवं सफल प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिये। परिवार की अब तक की प्रगति और परिपक्वता का तीन चौथाई श्रेय युग निर्माण सम्मेलनों में जुड़े हुये गायत्री यज्ञों को ही देना चाहिए। जनमानस में अभिनव चेतना इसी आधार पर भरी गई है और सृजन सेना की चतुरंगिणी उसी समुद्र-मन्थन में से निकली है। विविध विधि रचनात्मक और संघर्षात्मक युगान्तरकारी क्रियाकलाप जो आज गगनचुम्बी बनते चले जा रहे हैं और तूफानी गति से उभर रहे हैं, उनके पीछे इन आयोजनों द्वारा उत्पन्न की गई ऊर्जा ही काम कर रही है। उन्हें आगे भी गतिशील रखना ही पड़ेगा।

प्रत्येक वसन्त पर्व के उपरान्त किस क्षेत्र में—किस कर्मयोगी द्वारा जितने नये समारोह की श्रृंखला चली इस आधार पर है यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यहाँ अधिक आवेश था और कहाँ सुदृढ़ व्यक्तित्व का प्रचण्ड संकल्प काम कर रहा था। चैत्र सुदी नवमी रामनवमी तक तो हर समर्थ शाखा और सक्रिय कर्मयोगी द्वारा अपने क्षेत्र में अधिकाधिक आयोजनों के लिये प्रयास होगा ही। वह क्रम आगे भी चलते रहना चाहिये। गायत्री, श्रावणी, विजयादशमी, गीता जयन्ती भी रामनवमी और वसन्त पर्व की तरह आवश्यक पर्वोत्सव है। उन्हें समय-समय पर मनाते रहने की एक क्रमबद्ध योजना बना लेनी चाहिये। हर दो महीने बाद जहाँ छोटे बड़े आयोजन होते रहेगें वहाँ निश्चित रूप से उत्साह बना रहेगा और लोक शिक्षण होता रहेगा। कहना न होगा कि इसी प्रकार के गरम वातावरण में उन रचनात्मक एवं संघर्षात्मक कार्यक्रमों का सृजन परिपोषण होता है, जिनके आधार पर संसार की वर्तमान कुरूपता को हटा मिटा देने का संकल्प किया गया है।

वसन्तोत्सव का आरम्भ फरवरी के प्रथम सप्ताह से हो जाता है। रामनवमी तक उसकी अवधि का प्रथम चरण चलना चाहिए। पर अन्त तक अगले वर्ष की वसन्त पंचमी को उस अवसर पर होना चाहिए, जिससे कि इस वर्ग से भी बढ़कर अधिक भावनापूर्वक उसे मनाने का उपक्रम किया जाये। वसन्त पर्व को वर्ष माना जाय और अगले ६० दिन तक इसी प्रयास में संलग्न रहा जाय, जिसमें इन दिनों मंगलमय पर्व मनाने के लिए रहा गया है। यह बात हजार बार ध्यान में रखने की है कि अपने आयोजन मात्र हर्षोत्सव नहीं हैं वरन् उनके साथ लोकमंगल के अगणित क्रिया-कलापों का आरम्भ अभिवर्धन जुड़ा रहता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर गायत्री यज्ञों में जुड़े हुए युग निर्माण सम्मेलनों का महत्व दिया जाता है। अब तक अनुभव यही बताता है कि अपना हर आयोजन उस क्षेत्र में जन-जागृति एवं रचनात्मक प्रवृत्ति को उभारने में अद्‌भुत भूमिका प्रस्तुत करता है। इस तथ्य को समझकर ही युग निर्माण परिवार द्वारा वसन्त पर्व एवं अन्य पर्व आयोजनों को मनाया जाता रहा है। यदि यह प्रयत्न इसी प्रकार बना रहे तो अगले वर्ष तक यह मिशन कितनी मंजिल पार कर चुकेगा ? इसे देखते ही बनेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन-जागृति और लोकशिक्षण की प्राथमिक आवश्यकता वैयक्तिक और सामूहिक आयोजन समारोहों में कैसी सरलता और सफलता के साथ सम्पन्न होती है, इसे हम सब जन्म दिन, विवाह दिन, षोडस संस्कार, पर्व एवं त्यौहार एवं विशेष सम्मेलनों के प्रयोग परिणाम को निरन्तर देखते रहने के कारण भली प्रकार समझ गये हैं। इसीलिये बार-बार इस बात पर जोर दिया जाता है कि जहाँ भी सम्भव हो किसी न किसी रूप में युग निर्माण सम्मेलनों एवं विचार गोष्ठियों की व्यवस्था अवश्य की जाय। उनके साथ छोटे या बड़े रूप में गायत्री यज्ञ भी सम्मिलित रखा जाय, जिसमें सद्भावनाओं को गायत्री के माध्यम से सत्प्रवृत्तियों की यज्ञ के आधार पर व्याख्या विवेचना की जा सके। प्रतीकात्मक आधारों की सूक्ष्म गरिमा समझकर ही तत्वदर्शियों ने तीर्थों, देवस्थान से लेकर राष्ट्रीय ध्वजों तक के प्रतीक चिन्ह (सिम्बल) विनिर्मित किये हैं। गायत्री माता की छवि और यज्ञ का अग्निहोत्र परक विग्रह उपक्रम इसी दृष्टि से युग निर्माण परिवार का आधार बनाया गया है। लाल मशाल के नीचे जन संकुल युक्त ध्वज से अभियान का जन मानस में समान परिवर्तन करने का लक्ष्य स्पष्ट होता है। ध्वजों का अभिवर्धन कर आयोजन के साथ हम सब इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए करते हैं।

आयोजनों की सफलता इस बात में है कि उनके साथ-साथ किन्हीं स्थायी रचनात्मक कार्यों का आरम्भ विकास हुआ या नहीं। इस दृष्टि से चल पुस्तकालयों के ज्ञान रथों की स्थापना को सर्वप्रथम स्थान दिया जाना चाहिए। यों व्यक्तिगत चर्चा और झोला पुस्तकालयों में भी कुछ न कुछ कार्य होता ही है, पर नव निर्माण का सत्साहित्य सुसज्जित धकेल गाड़ी पर लेकर जब प्रभावशाली सम्भ्रान्त कार्यकर्ता निकलते हैं और उस दिव्य प्रकाश के घर-घर पर पहुँचाने के लिये कटिबद्ध होते हैं तो उसकी चर्चा एवं जानकारी देखते-देखते गाँव, नगर और मुहल्ले में फैलती है। देखने वाले एक से दूसरे को कहते हैं और जहाँ भी आदर्शवादिता के अंकुर होते हैं, वे सभी उस ज्ञान गंध में लदे पुष्प गुच्छक के इर्द-गिर्द तितली, मधुमक्खी और भ्रमरों की तरह इकट्ठे हो जाते हैं। पुस्तकें, पत्रिकायें पढ़ाने वापिस लेने से लेकर बेचने तक उपक्रम इस ज्ञान रथों में रहता है। इसका प्रभाव परिणाम उस क्षेत्र में कैसा अद्भुत होता है ? इसे लिखकर नहीं बनाया जा सकता अनुभव करके ही देखा जा सकता है। जहाँ आयोजन समारोह हुए हैं, वहाँ दूसरा सुनिश्चित एवं स्थिर कदम यही उठना चाहिये कि वहाँ चल पुस्तकालय की धकेल गाड़ी बनाई जाय। जहाँ कम साधन हों वहाँ कम मूल्य की गाड़ी और कम साहित्य से भी काम चल सकता है। यज्ञ आयोजन में से बचत, सार्वजनिक चंदा, उधार कर्ज जो भी तरीका जहाँ सम्भव हो, वहाँ उसका प्रयोग करके हर हालत में ज्ञान रथ की स्थापना का प्रयत्न किया जाय और उसे चलाने के लिये परस्पर मिल जुलकर समय दान देने की योजना बनाई जाय।

हमारे प्रयासों में भी निखार आये

हमारा प्रिय पर्व वसंत पंचमी अपनी शान से आया और हृदय तंत्रों के तारों को झंकृत करके, भावनाओं से बैट्री चार्ज करके अपने मार्ग पर बढ़ गया। अब हमारे चरण किस ढंग से, किस सबलता से, किस गति से, बढ़ते हैं ? यह देखना है। हमारी अपनी गतिविधियाँ यह सिद्ध करेंगी कि हमने इस पर्व के समय हुई अमृत वर्षा का लाभ कितने अंशों में उठाया ?

यहाँ दो बातें ध्यान में रखने की है। उपलब्धि का अवसर मिलना तथा उसका लाभ उठा लेना एक पक्ष है। अवसर का लाभ-उठाकर हमने कितनी उपलब्धि की यह पात्रता का एक पक्ष है। दूसरा पक्ष इससे कम महत्व का नहीं है। वह है उपलब्धियों का उपयोग किस कुशलता तथा सार्थकता के साथ किया जा सका। यदि गलत ढंग से फूहड़पन से उपयोग किया जाय तो फिर उपलब्धि की सार्थकता अपने आप में सिमिट कर रह जाती है। युग सैनिकों युग साधकों को इन दोनों पक्षों से अपने आपको सही रखना चाहिए।

युग निर्माण परिवार के हर परिजन के अन्दर एक प्रबल आकांक्षा नयी परिस्थितियाँ नयी हवा, नया वातावरण बनाने की है। लगता है कि जितनी जल्दी हो—जो कीमत लगे वह चुकाकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी नव युग का प्रकाश विश्व में फैला ही दिया जाय। किन्तु मूल्य चुकाने की भावना एक बात है—और उसे चुका सकने की क्षमता दूसरी बात है। हमें अपनी भावना के अनुकूल अपनी सफलताएँ भी विकसित करनी ही होंगी। भावना यदि सही है, प्रखर है तो उसके आधार पर हर प्रकार की क्षमता अर्जित की भी जा सकती है। कार्य के लिए वाञ्छित मूल्य चुकाने की स्थिति भी प्राप्त की जा सकती है।

परिजन ज्ञान यज्ञ के रूप में साहित्य पक्ष को लेकर कार्य करने के लिए बहुत कुछ अभ्यस्त हो गये हैं। पत्रिकाओं और पुस्तिकाओं के माध्यम से युगज्ञान का प्रकाश फैलने के लिए हर वर्ष नये उत्साह से कार्य किया जाता है। इसी का फल है कि अपने सीमित साधनों में भी तमाम कठिनाइयों को पार करता हुआ यह अभियान अपनी दिशा में आगे बढ़ता ही चला जा रहा है। युग साहित्य ने किसी कथित बड़े आदमियों अथवा संगठनों की सहायता के बिना ही अपना प्रभाव अपनी शान के साथ समाज पर फैला दिया है। युग साधनों की साधना का यह क्रम चल रहा है और चलता रहेगा भी इसमें सन्देह नहीं।

किन्तु मात्र इतने से काम चलने वाला नहीं है। मात्र साहित्य से भारत जैसे देश में जहाँ अभी भी ७० प्रतिशत से अधिक अशिक्षित हैं—जनसाधारण तक विचार नहीं पहुँचाया जा सकते। उसके लिए वाणी का प्रयोग भी करना होगा। युग निर्माण सम्मेलनों तथा गायत्री यज्ञों द्वारा यह कार्य वाणी के माध्यम से किया भी जा रहा है। परन्तु उनकी भी एक सीमा है। ऐसे यज्ञ एवं सम्मेलन भी कितने स्थानों पर हो पाते हैं ? उनमें भी कितनों ने सिलसिले से क्रमबद्ध रूप से विचार देने की व्यवस्था हो पाती है। हो भी जाये तो उस एक-दो बार सुनी हुई बात का प्रभाव कितने समय तक टिक सकता है ? उस प्रभाव को जाग्रत बनाये रखने की—बढ़ाते चलने की क्या व्यवस्था हो पाती है।

इन सभी प्रश्नों के समाधान के रूप में ही देशभर में ५५ दिवसीय आयोजनों की रूपरेखा बनायी गयी है। उसके लिये कार्यकर्त्ता के रूप में वानप्रस्थों को तैयार किया जा रहा है। २० जनवरी से शान्ति कुंज में पू० गुरुदेव संरक्षण में प्रथम वानप्रस्थ प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ हो भी गया है। यह क्रम मई तक चलता रहेगा तथा प्रशिक्षित वानप्रस्थ विभिन्न शाखाओं के कार्यकर्ताओं के सहयोगी के रूप में देशभर में भेजे जायेंगे। क्षेत्रीय कर्यकर्ता तथा लोक-सेवी वानप्रस्थ परस्पर पूरक बनकर क्षेत्र में नयी हवा पैदा करने की साधना में लग जायेगी।

ध्यान रहे कि इस क्षेत्र जागरण अभियान में हर शाखा को अपनी व्यवस्था स्वावलम्बी होकर ही करनी है। वानप्रस्थियों को तो उनके सहयोग के लिए भेजा जायेगा। वानप्रस्थियों को आपत्ति कालीन अल्प अवधि प्रशिक्षण ही दिया जाना है। क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के सामने आने वाली कठिनाइयों के समाधान में अच्छे सहयोगी सिद्ध हो सकें इस ढंग की तैयारी उन्हें करायी जा रही है। उन्हें विशेष रूप से कहा जा रहा है कि क्षेत्र में कोई एक आयोजन कर आने के लिए उन्हें नहीं भेजा जा रहा है कि क्षेत्र में कोई एक आयोजन कर आने के लिए उन्हें नहीं भेजा जा रहा है, बल्कि क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं द्वारा सफलतापूर्वक आयोजन सतत् चलाये जाते रह सकें ऐसी स्थिति पैदा करने के लिये भेजा जा रहा है।

यह तभी सम्भव होगा जब क्षेत्रीय परिजन अपने प्रयासों का अधिक व्यवस्थित बनाने के लिये तत्पर हो जायें। वाणी का उपयोग लोकशिक्षण के लिए करने की क्षमता अधिक परिजनों में विकसित हो यह आवश्यक है। वक्त उपदेशक बनकर लोगों को उपदेश करने की आकांक्षा तो लोकेषणा के रूप में समाज में खूब फैली हुई है, किन्तु सेवक, सहयोगी बनकर उचित बात लोगों के मनों में विठाल देने की आकांक्षा और कला अपने परिजनों में भी विकसित की जाने की आवश्यकता है। मिल जुलकर इसके लिये प्रयास किया जाय तो परिणाम उत्साहवर्धक रूप में सामने अवश्य आयेंगे।

इसीलिए क्षेत्र में जनता को क्या समझाना है, उसके लिए किस क्रम से चला जाय इसका भी पूरा मार्ग दर्शन किया-जा रहा है। भाषणों के विषय तथा उनके अन्तर्गत आने वाले प्रकरण निर्धारित करके वानप्रस्थियों को भी सिखाये जा रहे हैं तथा क्षेत्रीय कार्य-कर्ताओं के अभ्यास के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए पाक्षिक में भी छापे जा रहे हैं। क्षेत्र में जिन परिजनों को बोलने का थोड़ा-बहुत अभ्यास है, वे इन्हीं के आधार पर अपनी तैयारी कर लें। उसमें दिये गये सूत्रों की व्याख्या और उदाहरण देकर भावना का उभार वक्ता अपने ढंग से करें। पौराणिक, ऐतिहासिक अथवा वर्तमान जन-जीवन के उपयुक्त उदाहरणों द्वारा उन्हें रोचक तथा प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है। अध्यापक गण इस कला में सहज निपुण होते हैं। उनका सहयोग और उपयोग स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप प्राप्त किया जाय। आयोजनों तथा तीर्थयात्राओं सम्बन्धी अन्य तैयारियों के विवरण पहले ही प्रकाशित किए जा चुके हैं। वसन्त पर्व की नयी उमंग लेकर इस नये अभियान को नयी शान के साथ चलाने के प्रयास सभी जगह व्यवस्थित रूप से चल पड़ने चाहिये।

अब जो आयोजन हो उनमें निर्धारित विषयों पर निर्धारित क्रम से व्यवस्थित भाषण किये जाने चाहिए। अन्य मंचों जैसी विद्वता के प्रदर्शन के लिये वक्ताओं की प्रतियोगिता जैसी खड़ी न की जाय। लोगों को रात्रि में बहुत देर तक बिठाये रखने में कोई बड़प्पन नहीं। निर्धारित अवधि में नपी तुला बात रोचक ढंग से कह दी जाय तो उसका प्रभाव जनता पर अधिक टिकाऊ होता है। दो भाषण तथा प्रारम्भ में, बीच में एवं अन्त में दो-दो युग निर्माण विचारधारा के अनुरूप गीतों के सम्पुट लगाकर सभा का कार्यक्रम निश्चित समय में पूरा कर लेना चाहिए।

भाषणों के विषयों के सूत्रों के आधार पर हर शाखा में ऐसे परिजन जो भाषण दे सकते हैं व्यवस्थित ढंग से इन विचारों को प्रस्तुत करने के लिये अपने मस्तिष्कों में उन्हें जमा लें। इन्हें पौन या एक घण्टे का बनाने के लिये सूत्रों की व्याख्या अपने ढंग से की जा सकती है। युग निर्माण साहित्य से उन्हीं विषयों को और अधिक स्पष्टता से समझने में मदद ली जा सकती है। कथानकों संस्मरणों तथा समाचारों की उचित संगति बिठाना इनके साथ आवश्यक है। भाषण अधिक सैद्धान्तिक बनाने की अपेक्षा उदाहरण परक बनाये जाना जन रुचि के अनुकूल पड़ता है। उदाहरणों को फिट करने में ध्यान यह रखा जाय कि किसी पक्ष को आवश्यकता से अधिक तथा किसी को कम महत्व न मिले। संतुलन तथा संगति का ध्यान रहे। आयोजनों के सभी पक्षों को व्यवस्थित करने के साथ-साथ मंच को भी व्यवस्थित करने का महत्व समझा तथा उसे नियंत्रित किया जाना अति आवश्यक है।

वसन्त पर्व का विधि-विधान निर्धारित करें

विभिन्न पक्ष

वसन्त पर्व पर एक दिन या कई दिनों के आयोजन सम्पन्न होंगे। अनेक दिन के आयोजनों की रूपरेखा बहुत कुछ सामूहिक यज्ञों जैसी ही होगी। सांयकाल ज्ञानयज्ञ की सभायें, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रतियोगितायें आदि करायी जायेंगी। उनकी व्यवस्था समय एवं परिस्थितियों के अनुसार कर ली जायेगी, यहाँ तो वसन्त पर्व का संदेश देने प्रेरणा ग्रहण करने के लिये उसकी पूजन सम्बन्धी प्रक्रिया पर विचार किया जा रहा है।

पूर्व तैयारी

पूजा कर्मकाण्ड के लिये भावभरी मनोभूमि का होना आवश्यक है। इसके लिये मां सरस्वती के सामूहिक पूजन-वन्दन, मिशन सूत्र संचालक के आध्यात्मिक जन्म दिन को श्रद्धांजलि, मिशन के अवतरण दिवस का अभिनन्दन आदि प्रसंगों को लेकर भावभरी उमंग-तरंग कार्यकर्ताओं तथा जन साधारण के हृदयों में पैदा की जानी चाहिए। इसके लिये प्रभात फेरी, व्यक्तिगत निमन्त्रण तथा जनसंपर्क जैसी गतिविधियाँ चालू की जानी चाहिये।

आयोजन स्थल, पूजन मंच को पीले वस्त्रों तथा पुष्पों से सुसज्जित किया जाना चाहिये। सभी से उस विशेष पूजन के अवसर पर पीत वस्त्र पहनकर आने का आग्रह भी किया जाये। युग निर्माण परिवार के परिजन या उनके कुटुम्बी तो उस दिन विशेष वेष में रहें ही।

धार्मिक कर्मकाण्ड में यज्ञ तथा पूजन प्रकरण एक साथ भी किये जा सकते हैं तथा अलग-अलग भी। प्रातः अथवा सांयकाल उक्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दोनों ही कार्यक्रम किये जायें अथवा उन्हें दो भागों में विभक्त कर लिया जाये। यदि दो भागों में विभक्त किया जाये तो प्रातः यज्ञ संस्कार आदि तथा सायंकाल पूजन एवं ज्ञान यज्ञ का क्रम रखना उचित होगा। गाँवों में मध्यान्ह का समय भी उपयुक्त रह सकता है।

यज्ञ में पीली साड़ियाँ पहनकर कन्याओं को बिठाना उचित है। कन्यायें ऐसी हों जिन्हें यज्ञीय कर्मकाण्ड का इतना ज्ञान हो कि वह ठीक प्रकार उसे कर सकें। अन्य सभी लोगों को महिलाओं को व्यवस्थित ढंग से बिठाने की व्यवस्था बनायी जाये। यज्ञ कुण्ड ऐसा रखा जाये कि देखने वालों को क्रिया कृत्व स्पष्ट दिखायी देते रहें। पूर्णाहुति के प्रसंग में भी इच्छुक मर्यादित वेष भूषा वाले, नहाये धोये व्यक्तियों को अवसर दिया जाना चाहिए। स्थान तथा व्यक्तियों की संख्या देखते हुये व्यवस्था बनानी चाहिये। यदि व्यक्तियों की संख्या अधिक हो स्थान से उठने, आने-जाने में व्यवस्था बिगड़ने की संभावना हो तो पूर्णाहुति भी प्रतिनिधियों से करा दी जाये तथा आरती घृत एवं भस्म आदि स्वयं सेवकों द्वारा सबके पास पहुँचायी जाये। हर कर्मकाण्ड की उपयुक्त व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ की जाती रहें।

पूजन विशेषोपचार

पर्व का पूजन यज्ञ के साथ, उसके आगे पीछे अथवा दूसरे समय जब भी रखा जाये, बड़े व्यवस्थित ढंग से शान्ति पूर्ण भावनात्मक वातावरण में किया जाय। पूजन मंच अच्छे ढंग से सजाया जावे। माता सरस्वती एवं पू. गुरुदेव अथवा लाल मशाल के चित्र रखे जायें। एक चौकी पर एक ओर दीपदान के लिए दीपक सजाकर रखे जायें तथा ज्ञान यज्ञ पात्रों एवं झोला पुस्तकालयों की झाँकी बनाई जाये।

पूजन के लिए किन्हीं वयोवृद्ध सच्चरित्र प्रतिष्ठित व्यक्ति को बिठाया जाये। पुष्प अक्षत तथा तश्तरियों सहित स्वयं सेवकों की समुचित व्यवस्था रखी जाये ताकि समय-समय पर सर्वसाधारण को पूजन के लिए पुष्प आदि दिए-लिए जा सकें।

पूजन आरम्भ करने के पूर्व सामूहिक पूजन का उद्देश्य और मर्म समझाया जाये। देव शक्तियाँ सूक्ष्म रूप में सर्वत्र व्याप्त हैं। उनकी पूजा भावनात्मक ही की जा सकती है। प्रतीक चित्र के सामने प्रतीक पूजन प्रतिनिधि करेंगे. पर वास्तविक सूक्ष्म रूप का भाव पूजन सबको करना है। सभी लोग अपने को केवल दर्शक नहीं पूजन करने वाला ही मानें तथा उसी तन्मयता एकाग्रता से ध्यान दें।

आरम्भ में षट कर्म कराये जायें भावनात्मक टिप्पणियों द्वारा सबको उसमें शामिल रखा जाये। सामान्य क्रम से कलश, पूजन, देव आहवान आदि कराया जावें। स्वस्तिवाचन के समय सभी उपस्थित व्यक्तियों के साथ अक्षत पुष्प पहुँचाना तथा मंन्त्र पूरा होने पर उन्हें स्वयं सेवकों द्वारा एकत्रित करके देवार्पित करने का क्रम भी बनाने योग्य है। टिप्पणियों के सहारे भावनात्मक एकाग्रता के साथ बीच-बीच में थोड़ी-बहुत क्रिया कराते चलने से रोचकता तथा प्रभावशीलता दोनों ही बढ़ती है। पर ध्यान यह रखना चाहिये कि ऐसे प्रकरणों में स्वयंसेवक व्यवस्था बहुत मुस्तैद रखी जाये।

सामान्य कर्मकाण्ड का विस्तार अधिक न किया जाये। उनकी व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ भी छोटी-छोटी ही की जायें ताकि विशेष प्रकरण के लिये पर्याप्त समय मिल सके तथा समय की मर्यादा बनी रहे।

विशेष पूजन में पहले माँ सरस्वती का पूजन कराया जाय। पूजन के पहले चित्र के प्रतीकों के आधार पर मां सरस्वती के प्रेरणादायी रूप में भावनात्मक रूप का वर्णन किया जाये। किन्हीं शाखा परिजन अथवा मिशन के प्रति निष्ठावान स्थानीय वक्ता को इसके लिए तैयार कर लेना चाहिये। माँ सरस्वती के स्वरूप, पुस्तक, वीणा, ज्ञान यज्ञ एवं कला के प्रतीक, वाहन मयूर मधुर भाषण आदि के प्रकरण धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण पुस्तिका में भी दिये गये हैं। इन प्रतीकों की सुन्दर व्याख्या के साथ माँ सरस्वती के आशीर्वाद की कामना, उनकी सेवा की आकांक्षा लेकर भावनापूर्ण षोडशोपचार पूजन किया जाये। पूजन प्रारम्भ करने के पूर्व सबके हाथों में अक्षत पुष्प दिये जायँ तथा पुरुष सूक्त से पूजन हो जाने पर अन्तिम मंत्र पुष्पांजलि के साथ उन्हें एकत्रित करके माँ के आगे समर्पित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर दिया जाये। इसी अवसर पर माँ सरस्वती की एक अच्छी वन्दना भी गायी जा सकती है।

मिशन का जन्मोत्सव प्रसंग

सरस्वती पूजन के बाद सूत्र संचालक का आध्यात्मिक जन्म एवं मिशन के जन्म दिन का प्रकरण लेना चाहिये। इस प्रकरण के कर्मकाण्ड के पूर्व भी मिशन का संक्षिप्त परिचय दिया जाना चाहिये। जिन महापुरुषों ने इस पर्व पर उपलब्ध दिव्य प्रेरणा को जोड़कर चमत्कारी परिणाम उत्पन्न करने में सफलता पायी और सारा जीवन उपलब्धियाँ लोकहित में लगादीं, उनके प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने की भावना करना उचित ही है।

इस प्रकार थोड़ा परिचय देकर दीपकों को प्रज्ज्वलित किया जाये। 'अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्नि स्वाहा'' मंत्र से उनका पूजन किया जाये। सामने प्रज्ज्वलित दीपकों को रखकर उनकी फैलती हुई आभा का ध्यान किया जाये। भावना की जाये कि संस्थापक के जीवन में प्रकाशित होने वाली दिव्य ज्योति सभी दिशाओं में फैलती हुई हमारे अन्तःकरणों को प्रकाशित कर रही है। समयानुसार ५-११ या २४ गायत्री मन्त्र मधुर स्वर में सामूहिक रूप से बोलते हुए यह ध्यान किया जाये। इस प्रसंग को ढंग से किया जा सके तो परिजनों तथा उपस्थित जन साधारण को भी एक सहज ही दिव्यता का प्रत्यक्ष बोध हो सकेगा।

ज्ञान यज्ञ-पात्र पूजन

इस प्रकरण के बाद ज्ञान यज्ञ एवं झोला पुस्तकालय पूजन किया जाये। मां सरस्वती ज्ञान की देवी हैं। ज्ञान प्रसार ही उनकी सच्ची आराधना है। स्वतः में वह क्षमता विकसित करना तथा अन्यों तक ज्ञान का प्रकाश पहुँचाना अथवा उसके लिए नियमित अनुदान देना मां सरस्वती की एक उत्कृष्ट उपासना साधना प्रक्रिया है। ज्ञान यज्ञ पात्र एवं झोला पुस्तकालय इसी महत्पुण्य दायक शुभ कार्य को नियमित रूप से चलाते रहने के संकल्प का प्रतीक है। यह प्रवृत्तियाँ जितनी अधिक बढ़ेंगी उतना ही माता सरस्वती का आशीर्वाद समाज पर बरसेगा।

इसके लिये कुछ प्रयास पहले से भी करना आवश्यक है। अभी तक जहाँ ज्ञान यज्ञ पात्र स्थापित कराये गये हैं। उन्हें सबको सूचना दी जाये। अतिरिक्त ज्ञान यज्ञ पात्रों की भी व्यवस्था रखे तथा इस भावनात्मक पर्व पर ज्ञान यज्ञ के लिये नियमित अनुदान की प्रेरणा अपने सम्पर्क क्षेत्र में जागृत की जाये। झोला पुस्तकालय भी ज्ञान प्रचार की बहुत महत्वपूर्ण इकाई है। इसका प्रभाव और लाभ भी लोगों की दृष्टि में लाया जाना चाहिए।

टिप्पणी के बाद **'मनोजूतिर्जुषातामा ज्यस्य** मंत्र से सजाये हुए ज्ञान घंटों तक झोलों का पूजन किया जाना चाहिये। अक्षत पुष्प जल आदि हाथ में लेकर उन पर अर्पित किये जायें इस प्रकरण में ज्ञान यज्ञ पात्र रखने वालों के नामों की घोषणा करने अथवा उन्हें तिलक करने ज्ञान यज्ञ पात्र देने के उत्साहवर्धक क्रम भी समय वातावरण तथा परिस्थितियाँ देखकर अपनाये जा सकते हैं।

व्रत धारण संकल्प

वसन्त पर्व पर हम अपने पिछले कार्यक्रमों का लेखा-जोखा करके अगले वर्ष के लिये लक्ष्य निर्धारण करते रहे हैं। आपके लिए भी व्यक्तिगत तथा सामूहिक स्तर पर यह क्रम अंगीकृत किया जाना लाभदायक तो है ही—आवश्यक भी कहा जा सकता है। ऐसा अधिकांश परिजन करते भी हैं।

इस भावना को बढ़ावा देने के लिए वसन्त पूजा के साथ वृत धारण का प्रसंग जोड़ा जाए। इस प्रसंग में शाखा की पिछले वर्ष की प्रगति का संक्षिप्त विवरण देते हुए अगले वर्ष के निर्धारित लक्ष्य की घोषणा की जानी चाहिए। कई कार्य ऐसे हैं, जो व्यक्तिगत अथवा टोली स्तर पर किए जाते हैं उसी स्तर पर उनके संकल्प भी होंगे। उसको विभिन्न व्यक्तियों अथवा टोलियों से नोट कर लेना चाहिए। उन सभी एकत्रित संकल्पों का योग करके उनकी घोषणा करनी उचित है। अन्यथा बड़ी शाखाओं में तो यह संकल्प घोषणा का कार्यक्रम ही जन साधारण को उबा देने वाला बन जायेगा। हम तो अपने लिए भावनापूर्वक लक्ष्य निर्धारण करते हैं तथा उनसे जनसाधारण में भी प्रेरणा पैदा करनी है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसमें एक बात और ध्यान देने योग्य है। संकल्पों की सार्वजनिक घोषणा से जहाँ जनता में उत्साह फैलता है और सहयोगियों की मात्रा बढ़ती है, सद्भावनाओं को बढ़ाने तथा एकीकृत होने का अवसर मिलता है, वहाँ घोषणा के साथ अपनी प्रामाणिकता की रक्षा की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। इसे सभी जगह समझा और निभाया जाना चाहिए।

अपनी प्रतिज्ञाओं में निश्चित रूप से मिशन के विकास कार्यक्रम ही रहेंगे। वर्तमान परिस्थितियों में इन बातों को विशेष महत्व दिया जा सकता है। (१) पत्रिकाओं की ग्राहक संख्या बढ़ाकर ज्ञात स्रोत से अधिकाधिक व्यक्तियों को जोड़ना, (२) नये प्रकाशित साहित्य को अधिक से अधिक संख्या में प्रबुद्धजनों तक पहुँचाना, (३) शाखा की समर्थता के साधन तैयार करना, (४) नयी शाखायें तथा ज्ञान यज्ञ पात्रों की संख्या बढ़ाना, (५) क्षेत्र में अधिक से अधिक स्थानों पर यज्ञोत्सवों का आयोजन कराकर मिशन का संदेश फैलाना। इनके साथ रचनात्मक कार्यक्रमों, प्रौढ़शालायें, व्यायामशालायें, सेवादल, हरितअभियान, आदि को भी स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार घोषित किया जा सकता है।

इसी अवसर पर जन साधारण से भी लोकमंगल के लिये नियमित रूप से कुछ करते रहने के संकल्प करने की अपील करनी चाहिये। व्रत धारण मंत्र "अग्ने वृतपते . . . . . आदि बोलने के पूर्व वृत लेने वाले सभी व्यक्ति ऊपर हाथ उठाये तथा मंत्र बोले जाने तक उन्हें उठाए रखें तथा भगवान से अपने वृत निभा सकने की क्षमता की याचना करें। शाखा प्रतिनिधि के रूप में कोई वयोवृद्ध परिजन अथवा कार्यवाहक वृतधारण के लिए अक्षत पुष्प ले और सभी परिजन जो जहाँ हो वहीं से हाथ उठाकर अपने व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से लिए गए वृतों के प्रति अपनी निष्ठा तथा सहमति घोषित करें।

क्रम व्यवस्था

संक्षेप में कार्यक्रम की व्यवस्था निम्नानुसार की जा सकती है। आवश्यक विवेक सम्मत हेर-फेर कर लेने की बात पहले लिखी जा चुकी है। क्रम के साथ मन्त्र अथवा उन मन्त्रों के संदर्भ दिए जा रहे हैं जो संक्षिप्त हवन विधि में नहीं दिये गये हैं। कर्मकाण्ड का क्रम कुछ इस प्रकार बन सकता है—

(१) पूजन में भावना का महत्व तथा उस स्तर पर सभी उपस्थित नर-नारियों से स्वयं की पूजा करने वाला ही मानने का उद्बोधन।

(२) **षटकर्म**—पवित्रीकरण आचमन, शिखाबन्धन, प्राणायाम, न्यास तथा पृथ्वी पूजन।

(३) **चन्दन धारण**—मस्तिष्क को शान्ति संतुलित रखने की टिप्पणी के साथ व्यवस्था हो सके तो स्वयं सेवकों द्वारा सभी व्यक्तियों को चन्दन लगाया जाये।

(४) **सामान्य पूजन क्रम**—कलश पूजन, सर्वदेव नमस्कार (सभी व्यक्ति हाथ जोड़ें) अन्तिम मन्त्र में 'एतद् कर्म प्रधान सरस्वती देव्यै नमः' कहा जाये।

(५) माँ सरस्वती के प्रतीक स्वरूप की व्याख्या तथा पूजा के लिये सबके हाथों में अक्षत पुष्प देना।

(६) **सरस्वती पूजन**—पुरुष सूक्त के मन्त्रों से।

(७) **सूत्र संचालक का परिचय**—मिशन का परिचय।

(८) **दीपदान**—एवं प्रकाश अवतरण का ध्यान—

मन्त्र—ॐ अग्निर्जोतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्योवर्च्चोज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

ध्यान के समय गायत्री मन्त्र बोले—

(९) ज्ञानघटों का महत्व तथा उपयोगिता पर पर प्रकाश।

(१०) **ज्ञान यज्ञ पात्र पूजन—ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतियंज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइहं मादयन्तामोऽ३म्प्रतिष्ठ।**

(११) **व्रत घोषणा**—संक्षेप में तथा प्रेरक ढंग से की जाये। उपस्थितजनों तथा परमात्मा से सहयोग एवं मार्गदर्शन की कामना व्यक्त करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(१२) **वृत धारण**—सभी संम्बधित व्यक्ति मन्त्र पाठ के साथ हाथ ऊपर उठायें।

मंत्र—१—ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्या समिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।

२—ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमिम तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।

३—ॐ सूर्यो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।

४—ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रीवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।

५—ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।

इसके बाद भाषण, गीत धन्यवाद आदि एवं प्रसाद वितरण का क्रम चलाया जाये।

ध्यान देने योग्य बातें

प्रसाद वितरण के लिये पंचामृत की परिपाटी चलाने का प्रयास करना चाहिए। गौसंरक्षण संवर्धन के लिये गौ दृश्यों का उपयोग एवं महत्व बढ़ाया जाना आवश्यक है। इसलिए नैवेद्य पंचामृत का लगाया जाये। समय हो तो मंच पर मंत्रों के साथ पंचामृत बनाया भी जाये। वितरण के समय एक से अधिक स्थानों से भी व्यवस्था की जा सकती है। इसके साथ हाथ धोने के लिये जल की व्यवस्था भी की जानी चाहिए।

वसन्त पंचमी के दिन सभी परिजनों को अपने-अपने निवास स्थानों पर दीपदान करने की बात ध्यान में रखनी चाहिए।

पूजा प्रकरण में जहाँ-जहाँ सबको पुष्प अक्षत वितरित करना है उनका निर्धारण तथा संख्या के हिसाब से पुष्प अक्षत तथा स्वयंसेवकों की व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

रिहर्सल कर लें।

जिन शाखाओं में कर्मकाण्ड के अनुभवी नहीं उन्हें कुछ कठिनाई हो सकती हैं। क्षेत्र के अनुभवी परिजनों को चाहिए कि वे ऐसे स्थानों के कार्यकर्ताओं के नाटक जैसी रिहर्सल वसन्त समारोह की आयोजन के सम्बन्ध में करा दें। इसके लिए कर्मकाण्ड संचालन, स्वयंसेवक व्यवस्था, टिप्पणियाँ तथा प्रवचन का पूर्वाभ्यास नाटक की रिहर्सल की तरह कर लेना चाहिए। अभी से थोड़ा ध्यान दिया जाए तो यह सब जरा भी कठिन नहीं बल्कि रोचक और उत्साह-वर्धक ही सिद्ध होगा।

।। पूर्व व्यवस्था।।

वसन्त पंचमी पर्व युग निर्माण परिवार के परिजनों के लिए विशेष महत्व रखता है। उसकी सनातन महत्ता भी कम नहीं है फिर भी मिशन के सूत्र संचालक के आध्यात्मिक जन्मदिन के रूप में उसका महत्व और भी बढ़ गया है। पर्व आयोजन का जो विधान यहाँ दिया जा रहा है—वह सार्वभौम उपयोगिता का ही दिया जा रहा है। प्रयास यह किया जाना चाहिये कि अपने प्रभाव क्षेत्र के सभी शिक्षा संस्थानों-पुस्तकालयों आदि में बसन्त पर्व प्रेरणाप्रद ढंग से मनाया जा सके। पर्व संचालन करने वाले यदि पाठ रटाकर भी तैयार किये जा सकें तो तमाम स्थानों पर एक साथ यह आयोजन किये जा सकते हैं। वैसे प्रातः मध्यान्ह और सायं, तीन समयों में आयोजन विभक्त करके क्रम संचालन से भी अधिक स्थानों पर आयोजन कर सकते हैं। उसके लिए व्यवस्था में कुशल सहयोगियों को तैयार करना पड़ता है। वे हर स्थान पर पूर्व व्यवस्था सही ढंग से बनाकर रखें।

पूर्व व्यवस्था में अन्य पर्वों की तरह पूजन मंच तथा श्रद्धालुओं के बैठने की व्यवस्था पर ध्यान दिया जाना चाहिए। मंच पर माता सरस्वती का चित्र, वाद्ययन्त्र, सजाकर रखना चाहिए। चित्र में मयूर न हो तो मयूरपंख रखना पर्याप्त हैं। पूजन की सामग्री तथा अक्षत, पुष्प, चन्दन, कलावा, प्रसाद आदि उपस्थिति के अनुसार रखें।

युग निर्माण मिशन के संचालक का आध्यात्मिक जन्मदिन मनाने के लिए जन्मदिन संस्कार के अनुसार व्यवस्था बना सकते हैं। उसके अभिनन्दन के लिए युग पुरुष वन्दना (प्रज्ञा पुराण के प्रथम खण्ड के अन्त में छपी है) भी संस्कृत अथवा हिन्दी में सधे हुए कण्ठों से संक्षिप्त टिप्पणियों सहित गाई जा सकती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

।। पर्व पूजन क्रम ।।

पर्व पूजन के प्रारम्भिक उपचार षटकर्म से रक्षा विधान तक सभी पर्वों की तरह करते हैं।

विशेष पूजन क्रम में माँ सरस्वती का षोड़शोपचार पूजन करके उनके उपकरण, वाहन तथा वसन्त पूजन का क्रम चलता है।

युग निर्माण मिशन के संचालक का आध्यात्मिक जन्मदिन मनाना है तो वसन्त पूजन के बाद उस प्रकरण को जोड़ा जाना चाहिए।

संकल्प में नवसृजन संकल्प की संगति दोनों ही समारोहों के साथ ठीक-ठाक बैठती है। नव सृजन के लिए अपने संयम, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं साधनों के अंश लगाने की सुनिश्चित रूपरेखा बनाकर ही संकल्प किया जाना उचित है।

बाद के समापन क्रम अन्य पर्वों की तरह ही पूरे किये जाते हैं।

सरस्वती आवाहन

सरस्वती शिक्षा, साक्षरता तथा भौतिक ज्ञान की देवी है। चूँकि वसन्त पंचमी भी शिक्षा-साक्षरता का पर्व है इसलिए इस अवसर पर प्रधान रूप से देवी सरस्वती का पूजन किया जाता है। सरस्वती का चित्र अथवा प्रतिमा स्थापित कर उसे पुष्प पल्लवादि से भली प्रकार सजाकर निम्न मन्त्रों के साथ देवी सरस्वती का आवाहन करना चाहिए।

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः।।
ॐ सरस्वत्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।। —यजु० २०/८४

तदुपरान्त षोडशोपचार पूजन, करके निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करें—

ॐ मोहान्धकारभरिते हृदये मदीये,
मातः सदैव कुरुवासमुदार भावे।
स्वीयाखिलावयव-निर्मल-सुप्रभामिः,
शीघ्रं विनाशय मनोगतमंधकारम्।।
सरस्वती महाभागे विद्ये कमललोचने।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते।।
वीणाधरे विपुलमंगल दानशीले,
भक्तार्तनाशिनि विरंचि हरीशवन्द्ये।
कीर्तिप्रदेऽखिल मनोरथदे महार्हे,
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्।

।। वाद्ययन्त्र पूजन ।।

वाद्य संगीत मनुष्य की उदात्त भावनाओं और उसकी हृदय तरंगों को व्यक्त करने के सहयोगी साधन हैं। इसलिए इन साधनों का पूजन करना उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धा-भावना प्रकट करना है। स्मरण रहे, स्थूल और जड़ पदार्थ भी चेतनायुक्त तरंगों से स्वर लहरियों के संयोग से सूक्ष्म रूप से एक विशेष प्रकार की चेतना से युक्त हो जाते हैं। इसलिए वाद्य केवल स्थूल वस्तु नहीं प्रत्युत उनमें मानव हृदय की-सी तरंगों को समझकर उनकी पूजा करनी चाहिए।

चमड़े रहित जो-जो वाद्य यन्त्र उपलब्ध हों उन्हें एक चौकी पर सुन्दर वस्त्र बिछाकर भली प्रकार पुष्प आदि से सजाकर रखें। तत्पश्चात् निम्न मन्त्र बोलते हुए उनकी विधिवत् पूजा करें। पुष्प, अक्षत, धूप दीप आदि समर्पित करें।

ॐ सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपाꣳ रसेन वरुणो न साम्नेन्द्रꣳ श्रियै जनयन्नप्सु राजा।।—यजु. १६/६४

।। मयूर पूजन ।।

मयूर-मधुर गान, सौन्दर्य तथा प्रसन्नता का सर्वोत्कृष्ट प्रतीक प्राणी है। मनुष्य मयूर की भाँति अपनी वाणी, व्यवहार तथा जीवन को मधुरता युक्त आनन्ददायी बनावें इसके लिए मयूर की पूजा की जाती है।

सरस्वती के चित्र में अंकित अथवा प्रतीक रूप से स्थापित मयूर का पूजन करें। अक्सर चित्रों में मयूर का चित्र होता ही है। यदि कहीं ऐसा चित्र सुलभ न हो तो मयूर पंख को पूजा के लिए प्रयुक्त कर लेना चाहिए। निम्न मन्त्र से मयूर का पूजन किया जाय—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। —यजु. १३/२७

।। वसन्त पूजन ।।

पुष्प प्रसन्नता, उल्लास और नवजीवन के खिलखिलाते रूप के मूर्त प्रतीक होते हैं। प्रकृति की गोद में पुष्पों की महक, उनका हँसना,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खेलना, घूमना, मनुष्य के लिए उल्लास, प्रफुल्लता का जीवन बिताने के लिए मूक सन्देश है। इसी सन्देश को हृदयंगम करने जीवन में उतारने के लिए पुष्प का पूजन किया जाता है।

खेतों से सर्षप पुष्प जो वसन्ती रंग के हों अथवा बाग आदि से फूल पहले ही मँगवाकर एक गुलदस्ता बना लेना चाहिए। यही पुष्प गुच्छ वसन्त देवता की पूजा का प्रतीक मानकर निम्न मन्त्रों के साथ विधिवत् पूजन करें—

ॐ वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान् वर्षाभ्यस्तित्तिरीञ्छरदे वर्त्तिका हेमन्ताय ककराञ्छिशिराय विककरान्।। —यजु० २४/२०

यही पूजा किये हुए फूल सरस्वती माता को पुष्पांजलि के रूप में अर्पण करें।

।। संकल्प ।।

..... नामाहं वसन्तपर्वणि नवसृजन-ईश्वरीय योजना नामनुसरन् आत्म निर्माण-परिवारनिर्माण, समाजनिर्माणादिषु त्रिविधसाधनासु नियमनिष्ठापूर्वकं सहयोग प्रदानस्य संकल्पमहं करिष्ये।

महाशिवरात्रि पर्व

महा शिवरात्रि का व्रत फाल्गुन कृष्ण १४ को होता है और इस दिन शिवजी की पूजा बड़े धूमधाम से की जाती है। इस व्रत की कथा इस प्रकार कही जाती है।

प्रत्यंत देश में एक बहेलिया रहता था, जो प्रतिदिन जीवों को मारकर अपने परिवार का पालन करता था। उस पर एक साहूकार का कुछ रुपया कर्ज था, जिसे समय पर न चुका सकने के कारण उसे एक शिव-मन्दिर में बंद कर दिया गया। उस दिन फाल्गुन कृष्ण तेरस थी। वहाँ पर बहेलिया ने अगले दिन शिवरात्रि के व्रत की बात सुनी। दूसरे दिन साहूकार ने ऋण चुकाने का वायदा कराके उसे छोड़ दिया। वह अपने धंधे के लिए जंगल में गया, पर उसे कोई शिकार न मिला। सायंकाल के समय भूख से व्याकुल होकर वह एक बेल के पेड़ के ऊपर चढ़ गया और बेल के पत्ते तोड़कर नीचे गिराने लगा। वहाँ एक शिवजी की मूर्ति स्थापित थी और वे पत्ते अनायास उस पर चढ़ने लगे। पेड़ पर बैठे-बैठे उसने देखा कि एक गर्भवती हिरणी मंदगति से उसी पेड़ के पास वाले तालाब की तरफ आ रही है। बहेलिया ने उसे मारने के लिए धनुष वाण चढ़ाया। इस पर हिरणी ने कहा कि मैं गर्भवती हूँ और बच्चा पैदा होने का समय भी आ चुका है अतः आप मुझे इस समय छोड़ दो, मैं बच्चे को उसके पिता को सौंपकर शीघ्र ही तुम्हारे पास आ जाऊँगी। बहेलिया का हृदय शिवजी के व्रत के प्रताप से शुद्ध हो गया था। उसे दया आ गयी और उसने हिरणी को छोड़ दिया।

आधी रात बीतने पर एक दूसरी हिरणी दिखलाई दी। जब वह उसे मारने को उद्यत हुआ तो उसने कहा कि मैं रजस्वला हूँ और पति की कामना कर रही हूँ। अगर तुमने मुझे अभी मार डाला तो मेरी कामना अतृप्त रह जायेगी। इसलिए तुम इस समय मुझे छोड़ दो, मैं अपनी कामना की पूर्ति करके सुबह तुम्हारे पास अवश्य आ जाऊँगी। व्याध ने उसे भी छोड़ दिया।

रात्रि का तीसरा पहर बीत जाने पर उसने देखा कि एक हिरणी बच्चे के साथ घूमती-फिरती पानी पीने आ रही है। उसने इसको मारना चाहा, तो हिरणी ने कहा कि मुझे इतना अवकाश दें कि मैं इस बच्चे को इसके पिता के पास पहुँचा आऊँ, तब आप मुझे खुशी से मार डालना। व्याध ने उसकी बात भी मान ली।

जब प्रातःकाल होने में थोड़ा ही समय रह गया तो एक मोटा-ताजा हिरण तालाब के पास पहुँचा। व्याध ने उसे मारने का उपक्रम किया तो वह कहने लगा हे व्याध ! मेरी हिरणियाँ मुझे ढूँढ़ रही होंगी। इसके सिवाय वे तुमसे जिस-जिस बात की शपथ खाकर गई हैं, मेरे न जाने से उसे भी पूरा न कर सकेंगी। इसलिए मुझे इस समय जाने दो, जिससे मैं इस सम्बन्ध में उचित व्यवस्था कर सकूँ। आज की घटना से तथा शिव-रात्रि के प्रभाव से व्याध कुछ आश्चर्य में पड़ गया और उसने हिरण को भी जाने दिया। थोड़ी देर बाद वे तीनों हिरणी और हिरण उसके सामने उपस्थित हो गए। परन्तु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अब उसके विचार बदल गए थे और उसने उनको वापस लौटा दिया। जब शिवजी ने व्याध की ऐसी मनोवृत्ति देखी तो उन्होंने प्रकट होकर उसे अपने लोक में स्थान दिया।

शिवजी का स्थान हिंदू-धर्म में बहुत ऊँचा है और एक दृष्टि से सर्वोपरि है। धर्म-शास्त्रों और पुराणों में अन्य सब देवताओं का चरित्र-चित्रण करते हुए उनको स्वार्थ के वशीभूत अथवा वैभव तथा अधिकार का अभिलाषी दिखलाया गया है। एक शिवजी ही ऐसे देवता बतलाए गए हैं, जो संपत्ति और वैभव के बजाय त्याग और अकिंचनता को वरण करते हैं। वे सर्व शक्तिमान हैं। उन्हीं के इशारे पर संसार में प्रलय का दृश्य उपस्थित होता है और उनका तीसरा नेत्र बड़ी से बड़ी शक्ति को जलाकर राख करने की क्षमता रखता है। पर यह सब होने पर भी वे सदा नंगे, दिगंबर, दीन-हीन, भूत-प्रेतों के साथी बने रहते हैं। उन्होंने अमृत का त्यागकर गरल को पिया, हाथी तथा घोड़े को छोड़कर बैल की सवारी स्वीकार की और हीरा, मोती, रत्नों को त्यागकर सर्प और नर-मुंडों के आभूषण अपनाए। इस प्रकार शिवजी का स्वरूप हमको इस बात की शिक्षा देता है कि हमें प्रकृति ने यदि विशेष शक्ति या योग्यता प्रदान की है, तो उसका उद्देश्य यह नहीं कि हम स्वार्थी बन जाएँ और अपनी शक्ति का उपयोग अपने सुख और भोगों के लिए ही करें। शिवजी का आदर्श बतलाता है कि जिसको जितनी अधिक शक्ति मिली है, उसका उत्तरदायित्व भी उतना ही महान है। ऐसी विशेष सामर्थ्य, जो अन्य साधारण लोगों में दिखलाई नहीं पड़ती, परमात्मा के वरदान स्वरूप समझनी चाहिए और उसका उपयोग स्वार्थ-साधन जैसे तुच्छ उद्देश्य से करना रत्न को काँच के मूल्य में बेच देने के समान है। मानव-जीवन की सफलता इसी में है कि हम व्यक्तिगत लाभ और सुख का ख्याल छोड़कर अपनी शक्तियों का उपयोग परोपकार के लिए ही करें।

भगवान शिव का नंगा रहना अपरिग्रह का भी प्रतीक है। संसार में तरह-तरह की भोग-सामग्री का कोई अन्त नहीं है और वह मनुष्य को ज्यों-ज्यों पास होती जाती है, त्यों-त्यों उसकी लालसा भी बढ़ती जाती है। आज संसार में जितने झगड़े-टंटे दिखलाई पड़ते हैं, उनके सबके भूल में यही परिग्रह की कामना काम कर रही है। प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है कि भोग की सामग्री को अधिक से अधिक परिणाम एकत्रित रख ले, जिससे भविष्य में उसकी कमी से तकलीफ न उठानी पड़े। मनुष्य का यह लालच इतना बढ़ जाता है कि वह यह भी विचार नहीं करता कि अधिक समय रखे रहने से यह चीज खराब हो जायेगी या कुछ ही समय बाद ऐसी परिस्थिति आने की संभावना है, जबकि उस चीज की आवश्यकता ही न रहे। इस चाहे लोभ कहिए, चाहे मोह कहिए, अथवा अज्ञान कहिए, पर वर्तमान समय में मनुष्यों की स्वार्थमयी प्रवृत्ति दिन पर दिन बढ़ती जाती है और इससे उनमें परस्पर में प्रतिद्वंद्विता, ईर्ष्या, द्वेष कलह की वृद्धि होती जा रही है। यह व्यक्तिगत द्वेष-भाव ही आगे बढ़कर सामूहिक रूप ग्रहण कर लेता है और बड़े-बड़े राष्ट्र यह प्रयत्न करने लगते हैं कि संसार की भोग-सामग्रियों का अधिकार हमारे ही हाथ में रहे और उसमें से जो थोड़ा बहुत हिस्सा अपनी खुशी से हम दूसरों को दे दें, उसी पर वे संतोष करें। ऐसी मनोवृत्ति के होते हुए संसार में शांति और सुख की कल्पना करना ही व्यर्थ है। इसका परिणाम नाश-सर्वनाश के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता।

इस प्रकार शिवजी का चरित्र हमको लोभ, मोह, लालसा के स्थान पर त्याग, अपरिग्रह और परहित-साधन का उपदेश देता है। दूसरें को अधिक से अधिक देना और स्वयं कम से कम ग्रहण करने की भावना ही महान् व्यक्तियों का लक्षण है। जो अपने ही सुख की चिंता में व्यस्त रहेगा दुनियाँ कभी उसका हृदय से सम्मान नहीं कर सकती, चाहे वह चक्रवर्ती सम्राट ही क्यों न हो। जिसको हमारे भले-बुरे का कोई ध्यान नहीं और जो हर बात में अपना ही स्वार्थ सिद्ध करने का प्रयत्न करता है, हम भी उसकी तरफ ध्यान क्यों देने लगे ? मनुष्य तो उसी की भक्ति, उपासना, पूजा करेगा जिससे उसे अपने हित की कुछ आशा हो। इसी कारण अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए लोग विभिन्न देवताओं का पूजा-पाठ किया करते हैं। कई देवता प्रसन्न होकर अपने भक्त का कुछ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपकार कर देते हैं। पर उनमें से अधिकांश अपने ही वैभव और अधिकार को कायम रखने की फिकर करते हैं और इस कारण उनसे मनुष्यों का विशेष हित साधन नहीं होता। पर भगवान शिव औगढदानी कहे जाते हैं और बेल के पत्तों तथा धतूरे के फलों से ही संतुष्ट हो जाते हैं। उनको अपने लिए किसी भी प्रकार के वैभव की तनिक भी आवश्यकता नहीं और वे अनायास ही कष्ट और अभाव से पीड़ित जनों की कामनाएँ सिद्ध करते रहते हैं। इसीलिए अन्य 'देवों' के मुकाबले में वे 'महादेव' कहे जाते हैं।

इस समय संसार में धन का बोलबाला है और बनिये, व्यापारी ही नहीं पंडितों के मुख से भी यही निकलता है कि 'सर्वेगुणः कंचनमाश्रयंति'—इस मनोवृत्ति ने मनुष्य को कितना पतन के गर्त में गिराया है, उसका वर्णन कर सकना संभव नहीं। धन के लिए मनुष्य कुटुंब-परिवार को छोड़ देता है, भाइयों से शत्रु की तरह लड़ता है, माता-पिता की तरफ से भी आँखे फेर लेता है, मान-अपमान की कुछ भी परवाह नहीं करता, धर्म-कर्म का ध्यान भुला देता है। इस प्रकार मनुष्य ने धन को भगवान से भी ऊँचा स्थान दे दिया है और इसी का परिणाम है कि आज सच्चे धार्मिक जनों के दर्शन भी दुर्लभ हो गए हैं। इस शोचनीय अवस्था में हमारा कर्तव्य है कि हम देवादिदेव महादेव की शरण लें और प्रार्थना करें कि वे हमको इस धन के प्रपंच से मुक्त करके अपरिग्रह की महिमा समझने का वरदान दें।

महाशिवरात्रि की प्रेरणा

हिन्दू धर्म अध्यात्म प्रधान धर्म है। इसका दृष्टिकोण भौतिक नहीं वरन् आध्यात्मिक है। हमारे पूर्वजों ने भली प्रकार जान लिया था कि क्षणभंगुर भौतिक सुखों से मनुष्य कभी भी स्थाई सुख-शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए मानसिक व आत्मिक विकास की आवश्यकता है। आत्मिक उन्नति के लिए उन्होंने धार्मिक नियमों को बनाया, जिसे अपनाकर मनुष्य अपनी पाशविक वृत्तियों को कम करता हुआ अपने परम लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है। इन धार्मिक नियमों में अनेक प्रकार की साधनाएँ व उपासनाएँ हैं। उनमें एक-व्रत की साधना भी है। व्रत से शारीरिक, मानसिक व आत्मिक सब प्रकार की उन्नति होती है। विश्राम से शारीरिक क्षेत्रों में नवजीवन आ जाता है। पाचन प्रणाली को भी विश्राम लेने की आवश्यकता पड़ती है जिससे पेट में पड़ा हुआ अन्न हजम हो जाता है और पेट आगामी कार्य के लिये तैयार हो जाता है और शक्ति आने से इसके बाद खाया हुआ अन्न स्वाभाविक रूप से पच जाता है। व्रत से दोषों व दुर्गुणों का परिमार्जन होता है। शरीर के सूखने से वह भी सूखने लगते हैं। आध्यात्मिक प्रगति का तो यह अमोघ उपाय है। चिन्तन और मनन के लिये उत्तम अवसर होता है। अधिक खाने वाले व्यक्तियों के विचार स्थूल होते हैं। वह कोई सूक्ष्म बात नहीं सोच सकते। पेटू लोग प्रायः स्थूल बुद्धि के होते हैं इसलिए बुद्धि में तीव्रता लाने के लिए हमारे धर्म-शास्त्रों में व्रतों का विधान है। व्रत के दिन जो विचार मन में आते हैं, उनकी एक अमिट छाप मस्तिष्क पर पड़ जाती है हमारे धर्माचार्यों ने व्रतों के साथ ऐसी कथाओं और विचारों को जोड़ दिया है, जो हमारे इस जीवन और परलोक को भी सुधारने में सहायक सिद्ध होते हैं। शिवरात्रि व्रत जो फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है।

जब समुद्र मंथन हो रहा था और अनेक प्रकार की उपयोगी वस्तुओं के निकलने के पश्चात् जब हलाहल विष निकला तो सब देवता घबरा गए कि यदि यह विष संसार में फैल गया तो समस्त संसार इसके प्रभाव से संतृप्त हो जायेगा, संसार में एक प्रकार की प्रलय आ जायेगी। प्राणियों का जीवित रहना कठिन हो जायेगा। सोचकर देवता भगवान शंकर के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि वह इस होने वाले महान् अनिष्ट से बचने का उपाय बताएँ और सहायता दें। महादेव कहलाने वाले शंङ्कर ने अपने शरीर की परवाह न करते हुए उस हलाहल विष का पान करने का निश्चय किया। जिस व्यक्ति के मन में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परोपकार की भावनायें जागृत हो जाती हैं, भगवान् स्वयं उसकी सहायता करते हैं, उसकी आत्मिक शक्तियों का विकास होने लगता है।

आज के युग में अशान्ति फैलने का प्रमुख कारण स्वार्थपरता है। हर एक व्यक्ति और देश दूसरों को हड़प जाना चाहता है और अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के हानि-लाभ को नहीं देखता है। एटम व हाइड्रोजन बम का आविष्कार इसी मनोवृति के आधार पर हुआ है। यदि राष्ट्र नायकों के मस्तिष्कों से यह स्वार्थ भावना जाती रहे तो संसार में शान्ति की स्थापना कोई कठिन कार्य नहीं है। मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन को लिया जाए तो विदित होता है कि वह अपने व्यक्तिगत जीवन में इसी तत्व के आधार पर सुख-शान्ति को स्थिर रख सकता है।

आज हमारे देश में लाखों नर-नारी भगवान् शिव के उपासक हैं। उपासना का अर्थ है समीप बैठना। उपासक देव के गुणों का चिन्तन मनन और उन्हें ग्रहण करने का प्रयत्न करना, उस पथ पर अग्रसर होने की चेष्टा करना। सच्चे शिव के उपासक वही हैं, जो अपने मन में स्वार्थ भावना को त्यागकर परोपकार की मनोवृत्ति को अपनाते हैं, जब हमारे मन में यह विचार उत्पन्न होने लगते हैं तो हम अपने आत्मीयजनों के साथ झूठ, छल, कपट धोखा, बेईमानी, ईर्ष्या, द्वेष, आदि से युक्त हो जायेंगे। यदि शिवरात्रि व्रत के दिन हम इस महान् पथ का अवलम्बन नहीं लेते तो शिव का व्रत और पूजन केवल लकीर पीटना मात्र रह जाता है। उसने कोई विशेष लाभ नहीं होता।

भगवान् शिव का नंगा रहना अपरिग्रह का प्रतीक है। परिग्रह एक प्रकार का पाप है क्योंकि किसी वस्तु का परिग्रह करने का अर्थ हुआ—दूसरों को उस वस्तु से वंचित रखना। अन्न के भण्डार जमा रखने वाला दूसरों को भूखों मारने के लिए बाध्य करता है। जिसके अनेकों मकान और बंगले हैं, वह औरों को झोंपड़ी बनाने से भी वंचित रखता है। संसार में परिग्रह करने वाले धनवानों का पूजन और सम्मान कोई नहीं करता बल्कि त्यागी, तपस्वी और अपरिग्रही सन्त-महात्माओं की चरणधूल मस्तक पर लगाई जाती है। उनका जीवन आदर्श संसार में शान्ति स्थापित करने के लिये होता है। भगवान शंकर सर्वशक्तिमान थे परन्तु उन्होंने अपने लिए कुछ नहीं किया। सादा जीवन और उच्च विचार ही उनके जीवन का आदर्श रहा। इसी से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति होना सम्भव है।

भगवान् शिव ने योग साधना से अपने जीवन को परिष्कृत किया था। वह गुणों के भण्डार थे। शक्ति उनके इशारे पर नाचती थी। वह अपने तीसरे नेत्र से बड़ी से बड़ी शक्ति को जलाकर राख करने की सामर्थ्य रखते थे। कामदेव को तो उन्होंने भस्म कर दिया था। हमें भी शक्ति की वृद्धि करके अपने व्यक्तिगत जीवन व समाज में से अनैतिकता, अश्लीलता और कामुकता को दूर करने का प्रयत्न करना है।

महादेव रुण्डों की माला अपने गले में पहनते थे अर्थात् क्रोध को वश में किए हुये थे। गंगा उनकी जटाओं से निकल रही है। आध्यात्मिक शान्ति की गंगा का प्रवाह उनसे आरम्भ होता है। उनके मस्तक पर चन्द्रमा का चिन्ह रहता है। वह शान्ति प्रिय और संसार को शान्ति का प्रकाश देने वाले हैं। वह निरन्तर अपनी साधना में लीन रहते हैं। इसी उपाय से उन्होंने अनेक प्रकार की शक्तियों को प्राप्त किया है। गायत्री मञ्जरी नाम की पुस्तक में वर्णन आता है कि भगवान् शिव की साधना का मूलाधार गायत्री उपासना था। इसे उन्होंने पृथ्वी की सबसे बड़ी शक्ति कहा है। वह अखण्ड अग्नि अर्थात् यज्ञ भगवान के समक्ष अपनी साधना का उनके जीवन में विशेष स्थान था। इनके द्वारा प्राप्त शक्ति के द्वारा ही त्रिशूल अथवा त्रितापों को दूर करने की सामर्थ्य रखते थे। यदि हम भी सुखी रहना चाहते हैं तो हमें उनका अनुकरण करना चाहिये।

महान् आत्मायें अपने व अन्य प्राणियों में कोई अन्तर नहीं मानती वह दूसरों को अपने बराबर ही समझते हैं। उनके मन में छोटे-बड़े का कोई भेदभाव नहीं रहता। गीता में भगवान्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ने स्वयं कहा है कि पण्डित और ज्ञानी वह हैं जो विद्या विनय युक्त ब्राह्मण, हाथी गाय आदि को एक समान मानता है। आज लोग धन, वैभव, पद, प्रतिष्ठा, आदि के मद में अपने से छोटों को दुतकारते हैं, उनके साथ दुर्व्यवहार करते और अपने छोटेपन का परिचय देते हैं। वह कभी यह नहीं सोचते कि इस प्रकार व्यवहार उनके साथ किया जाए तो उन्हें कैसा लगे ? ब्राह्मण अपने से छोटी जाति में उत्पन्न मनुष्यों से घृणा करते हैं। परन्तु महादेव ने तो भूत, प्रेतों को अपना साथी बनाया अर्थात् छोटी जाति वालों को अपने गले से लगाया, उनके उत्थान के लिए सत्यप्रयत्न किए। महात्मा गाँधी इस गुण में आज के युग के शिव ही थे। शिवरात्रि व्रत मनाने का अधिकार ब्राह्मण से लेकर चाण्डाल तक को है भोले बाबा के लिए सब एक समान हैं।

यह धारणा है कि भगवान् शिव भाँग व धतूरे खाते-पीते थे अतः हमें भी उसका सेवन करना चाहिये। वह तो परोपकार की मूर्ति थे। प्राणियों को इनके विषैले प्रभाव से हानि न हो इसलिए वह इन्हें ग्रहण करते थे। हम भी अपने समाज के लिये अपने शरीर को कष्ट पहुँचाये तो ही भांग धतूरा खाने की अलंकारिक भाषा की वास्तविकता को समझ सकते हैं।

एक वर्ष के बाद भगवान् शिव हमें चैतन्यता प्रदान करते हैं कि "संसार के लोगों! उठो और जागो यदि अपनी और दूसरों की सुख-शान्ति चाहते हो तो अपरिग्रह, सादा जीवन, उच्च विचार, अक्रोध, परोपकार, समता, परदुःखकातरता, परमात्मा की समीपता को अपनाओ। भोग-विलास का जीवन व्यतीत करने से क्षणिक सुख भले ही मिल जाए परन्तु उनमें स्थायित्व नहीं है। स्वार्थ में क्षणिक आनन्द अवश्य आता है परन्तु उसका अन्त पतन में है। केवल अपनी उन्नति में ही सन्तुष्ट न रहो वरन् दूसरों की, अपने समाज और राष्ट्र की उन्नति को अपनी सफलता मानो।" इन सन्देशों को यदि हम अपने अन्तःकरण में स्थान देते हैं तो हम सच्चे शिव उपासक हैं।

शिवरात्रि का व्रत और उसकी कल्याणकारी शिक्षाएँ

हिन्दू धर्म में जितने त्यौहार मनाये जाते हैं ये सभी किसी न किसी सांस्कृतिक ऐतिहासिक या वैज्ञानिक आधार पर प्रचलित किये गये हैं। यह बात दूसरी है कि बहुत अधिक समय बीत जाने और राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन हो जाने से उनका महत्व हमको पूर्ववत् नहीं जान पड़ता। तो भी यदि हम उनको उचित रीति से मनायें, उनमें उत्पन्न हो गई त्रुटियों को दूर कर दें तो उनमें अभी बहुत लाभ उठाया जा सकता है। देश की साधारण जनता की उनके ऊपर हार्दिक आस्था है और इन त्यौहारों और धार्मिक उत्सवों के द्वारा उनको बड़ी कल्याणकारी नैतिक और चारित्रिक शिक्षाएँ दी जा सकती हैं। यहाँ पर हम शिवरात्रि के व्रत के सम्बन्ध में कुछ विवेचन करेंगे।

पिछली पंक्तियों में शिवरात्रि की स्थूल कथा का वर्णन किया गया था, जिसका सूक्ष्म आशय यह है कि जिसमें यह सारा जगत शयन करता है, जो विकाररहित है वह शिव है। जो सारे जगत को अपने भीतर लीन कर लेते हैं वे ही भगवान शिव हैं। 'शिव महिम्नस्तोत्र" में एक जगह लिखा है कि—"महासमुद्र रुपी शिवजी का एक अखण्ड पर-तत्व है। इन्हीं की अनेक विभूतियाँ अनेक नामों से पूजी जाती हैं। यही सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान हैं, यही व्यक्त-अव्यक्त रूप से क्रमशः सगुण ईश्वर और निर्गुण ब्रह्म कहे जाते हैं, तथा यही "परमात्मा" "जगदात्मा", "शंकर" "रुद्र" आदि नामों से सम्बोधित किये जाते हैं। यह भक्तों को अपनी गोद में रखने वाले "आशुतोष" हैं। यही त्रिविधि तापों के शमन करने वाले हैं तथा यही वेद और प्रणव के उद्गम हैं। इन्हीं को वेदों ने "नेति-नेति" कहा है। साधन पथ में यही ब्रह्मवादियों के ब्रह्म, सांख्य-मतावलम्बियों के पुरुष तथा यागपथ में आरूढ़ होने वालों की प्रणव की अर्धमात्रा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो सुखादि प्रदान करती है वह रात्रि है, क्योंकि दिन भर की थकावट को दूर करके नवजीवन का संचार करने वाली यही है। 'ऋग्वेद" के रात्रिसूक्त में इसकी बड़ी प्रशंसा की गई है, कहा है—"हे रात्रे ! अशिष्ट जो तम है वह हमारे पास न आवे।" शास्त्र में रात्रि को नेत्य-प्रलय और दिन को नित्य-सृष्टि कहा गया है। एक से अनेक की और कारण से कार्य की ओर जाना ही सृष्टि है और इसके विपरीत अनेक से एक और कार्य से कारण की ओर जाना प्रलय है। दिन में हमारा मन, प्राण और इन्द्रियाँ हमारे भीतर से बाहर निकल बाहरी प्रपंच की ओर दौड़ती हैं और रात्रि में फिर बाहर से भीतर की ओर वापस आकर शिव की ओर प्रवृत्ति होती है। इसी से दिन सृष्टि का और रात्रि प्रलय की द्योतक है। समस्त भूतों का अस्तित्व मिटाकर परमात्मा से आत्मसमाधान की साधना ही शिव की साधना है। इस प्रकार शिवरात्रि का अर्थ होता है, वह रात्रि जो आत्मानन्द प्रदान करने वाली है और जिसका शिव से विशेष सम्बन्ध है। फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी की रात्रि में यह विशेषता सर्वाधिक पाई जाती है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार उस दिन चन्द्रमा सूर्य के निकट होता है। इस कारण उसी समय जीवरूपी चन्द्रमा का परमात्मा रूपी सूर्य के साथ भी योग होता है। अतएव फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को की गई साधना से जीवात्मा का शीघ्र विकास होता है।

शिवजी के रूप की एक दूसरी व्याख्या है। वह यह है कि जहाँ अन्य समस्त देवता वैभव और अधिकार के अभिलाषी बतलाये गये हैं, वहाँ शिवजी ही एक मात्र ऐसे देवता हैं, जो सम्पत्ति और वैभव के बजाय त्याग और अकिंचनता को वरण करते हैं। अन्य देवता जहाँ सुन्दर रेशमी वस्त्रों से अलंकृत किये जाते हैं, वहाँ शिवजी सदा नंगे, भस्म लपेटे दीनजन के रूप में रहते हैं। इसी त्याग और अपरिग्रह के कारण वे देवताओं में महादेव कहलाते हैं। इस प्रकार शिवजी का आदर्श हमको शिक्षा देता है कि यदि परमात्मा ने हमको योग्यता और शक्ति दी है तो हम उसका उपयोग शान-शौकत दिखलाने के बजाय परोपकार और सेवा के लिए करें। शिवजी का उदाहरण यह भी प्रकट करता है कि जिसे जितनी अधिक शक्ति मिली है, उसका उत्तरदायित्व भी उतना ही अधिक होता है। जिस प्रकार समुद्र मंथन के समय हलाहल विष निकलने पर उसे पीने का साहस शिवजी के सिवाय और कोई न कर सका उसी प्रकार हमें भी यदि परमात्मा ने विशेष धन, बल, विद्या आदि प्रदान किए हैं तो उनका उपयोग दीन-दुखी और कष्ट ग्रसित लोगों के उपकारार्थ ही करना चाहिए।

एक विदेशी विद्वान ने लिखा है कि ऋग्वेद व अर्थववेद में शिव के रुद्र रूप को, मंगलमय बतलाया है। समस्त वैदिक साहित्य में उन्हें अग्नि का रूप माना गया है। अग्नि और शिव के नामों में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। सारे महाभूतों में अग्नि ही एक ऐसा तत्व है, जो भय को सहन नहीं कर सकता। अग्नि का गुण संहार न समझकर रचना मानना अधिक युक्तियुक्त है। अग्नि के इन दोनों स्वरूपों से मनुष्य की वास्तविकता की भी परीक्षा हो जाती है। यहाँ पर हम यह भी कह देना आवश्यक समझते हैं कि अग्नि का सम्बन्ध गायत्री से भी है और इस महामंत्र में अग्नि की सारी शुभ शक्तियाँ पुंजीभूत हैं।

"गायत्री-मंजरी" में "शिव-पार्वती संवाद" आता है, जिसमें भगवती पूछती हैं कि "हे देव ! आप किस योग की उपासना करते हैं, जिससे आपको परम सिद्धि प्राप्त हुई है ?" शिव इस संसार में आदि-योगी थे, योग के सभी भेदों को मालूम कर चुके थे। उन्होंने उत्तर दिया—"गायत्री ही वेदमाता है और पृथ्वी की सबसे पहली और सबसे बड़ी शक्ति है। वह संसार की माता है। गायत्री भूलोक की कामधेनु है। इससे सब कुछ प्राप्त होता है। ज्ञानियों ने योग की सभी क्रियाओं के लिए गायत्री को ही आधार माना है।"

इस प्रकार विदित होता है कि भगवान शंकर हमें गायत्री-योग द्वारा आत्मोत्थान की ओर अग्रसर होने का आदेश देते हैं। पर पिछले कुछ समय से लोग इस तथ्य को भूल गये हैं और उन्होंने भंग पीना तथा बढ़िया पकवान बनाकर खा लेना ही शिवरात्रि के व्रत का सारांश समझ लिया है। मनोरंजन के लिए स्वांग, तमाशे, गाने के साधन रह गये हैं। अर्थ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोलुप तथा स्वार्थी लोगों ने इन्हीं बाह्य क्रियाओं को सत्य बताकर वैसे ही श्लोक गढ़कर रख दिये, जिससे सीधे सादे लोग भ्रम में पड़ गये। गायत्री परिवार का कर्तव्य है कि वह इस महान पर्व को शुद्ध शास्त्रोक्त रीति से मनाकर लोगों को स्वकल्याण का मार्ग दर्शावे। प्रज्ञापरिजनों में से हर एक को यह महाशिवरात्रि व्रत निष्ठापूर्वक मनाना चाहिए। अपनी शाखा के सब सदस्यों को व्रत रखने की प्रेरणा देनी चाहिए और विधिपूर्वक शिव पूजन करना चाहिए। प्रातः काल गायत्री यज्ञ और सत्संग आयोजन करें जिसमें भगवान शिव के गुणों का गान और समाज के प्रति कर्तव्यों पर प्रकाश डाला जाय। जनता से इस पुनीत पर्व पर नशीली वस्तुओं के त्याग के संकल्प लेने चाहिये। त्याग परोपकार, सादा जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वह इस शुभ अवसर पर जनता को महान् अनिष्ट से बचाने के लिए सिगरेट, बीड़ी, शराब, भांग, गांजा, अफीम आदि नशीली वस्तुओं को छुड़वाने के संकल्प करें तभी वह शिवजी की आत्मा को प्रसन्न करके कल्याण के भागी बनेंगे।

शिवरात्रि—उद्देश्य और शिक्षा

शिवः कल्याणदश्चास्ति देवो हि प्राणधारिणाम्।
सन्मार्गावलम्बश्चेह शिवपूजा प्रकीर्त्यते।। १।।

शिव, देहधारियों को कल्याण प्रदान करने वाले देव हैं, सन्मार्ग का अवलम्बन करना ही संसार में शिव-पूजा कही जाती है।

शिवेत्येतन्नामधेयं चास्ति कल्याणवाचकम्।
शिवकार्यलग्नतैव शिवार्चास्तुष्टिस्तु वै।। २।।

शिव यह नाम कल्याण का वाचक है। शिव (भले) कर्मों में लगे रहना ही शिव की पूजा है और निश्चय ही शिव की प्रसन्नता है।

सामूहिकत्वे कल्याणं निहितमस्ति निश्चितम्।
नृणेयती प्रगतिर्लब्धा स्वीकृत्यैव तत्पद्धतिम्।। ३।।

सामूहिकता में अनिश्चित कल्याण निहित है। मनुष्य ने सामूहिकता की पद्धति को स्वीकार (अपना) करके ही इतनी प्रगति प्राप्त की है।

स्वस्मै चाति कठोरत्वं परेभ्यश्चात्युदारता।
सामूहिकत्वस्यैवायं मूलाधारोऽस्ति सुदृढ़।। ४।।

अपने लिए अत्यन्त कठोरता और दूसरों के लिए उदारता यह ही सामूहिकता का सुदृढ़ मूलाधार होता है।

पतितोत्थापनं कार्यं तिरस्कुर्याच्च नैव तान्।
कारुण्यभावेन सदा व्यवहरेन्निम्नगान्नरान्।। ५।।

गिरे हुओं का उत्थान करना चाहिए और उनका कभी तिरस्कार नहीं करना चाहिए। निम्नस्तरीय मनुष्यों के साथ सर्वदा करुणापूर्ण भाव से व्यवहार करना चाहिए।

विषपानमपि कुर्यात्कल्याणार्थं च संसृतेः।
सानन्दं चेदवसरो स्थयात्युपकृतिः शुभा। ६।।

यदि अवसर आ जावे तो संसार की भलाई के लिये आनन्द के साथ विषपान कर लेना चाहिए। उपकार एक शुभ कार्य है।

शिवः करोत्यवतरणं सुरसरितो ज्ञानस्य च।
यतो हि त्रिविधास्तापा दूरं यान्ति सुसेवनात्।। ७।।

शिव देव ज्ञान-गंगा का अवतरण करते हैं, जिसके भली-भाँति सेवन करने से तीन प्रकार के ताप दूर भागते हैं।

मस्तके हीदृशं ज्ञानं भास्वरं धारयेत्सदा।
यश्च चन्द्रालोकनिभः शीतलश्च सुखप्रदः।। ८।।

मस्तक में सर्वदा ऐसा झलकता हुआ ज्ञान धारण करना जो चन्द्रमा के प्रकाश के तुल्य शीतल और सुख प्रदान करने वाला हो।

जागृत्यर्थं जनानां च कुरुते डमरुध्वनिम्।
दुष्टानां परिहाराय धत्ते त्रिशूलं शंकरः।। ९।।

शिव जन जागरण के लिए डमरू बजाते हैं और दुष्टों के प्रतिकार के लिए त्रिशूल धारण करते हैं।

शिवस्वोदारैर्नित्यं भाव्यं तद्भक्तिनिष्ठितैः।
तृतीयं विवेकात्मकं लोचनं स्यादुन्मीलितम्।। १०।।
मत्वा हि शिवकोपं च मादकपदार्थान्सदा।
प्रतिनिवियेत्तस्मै स्वेन सेव्याश्च न क्वचित्।। ११।।

शिव में निष्ठा रखने वाले भक्तों को सदा शिव की तरह उदार होना चाहिए और विवेक स्वरूप तीसरा नेत्र खुला हुआ रहना चाहिए। सर्वदा मादक पदार्थों को शिव का कोप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानकर उन्हीं को लौटा देना चाहिए और स्वयं कभी भी उनका सेवन नहीं करना चाहिए।

महाशिवरात्रिपर्व—माहात्म्य बोध

महाशिवरात्रि पर्व भगवान शिव की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए प्रसिद्ध है। शिव का अर्थ होता है—शुभ, भला। शंकर का अर्थ होता है—कल्याण करने वाले। निश्चित रूप से उन्हें प्रसन्न करने के लिए मनुष्य को उनके अनुरूप ही बनना पड़ता है। सूत्र है—'शिवोभूत्वा शिवं भवेत्' अर्थात् शिव-बनकर शिव की पूजा करें तभी उनकी कृपा प्राप्त हो सकती है। यह भाव गहराई से साधकों को हृदयंगम कराया जा सके तथा शिव की विशेषताओं का सही रूप उनके ध्यान में लाया जा सके तो वास्तव में ही साधना के आश्चर्यजनक परिणाम मिलने लगें।

शिवजी के रूप जनसाधारण में बहुत आकर्षण है किन्तु उनके सम्बन्ध में भ्रान्तियाँ भी खूब हैं, इसलिए शिव की साधना के नाम पर ही अशिव आचरण होते रहते हैं। शिवरात्रि पर्व पर सामूहिक आयोजन के माध्यम से फैली हुई भ्रांतियों का निवारण करते हुए शिव की गरिमा के अनुरूप उसके स्वरूप पर जन आस्थायें स्थापित की जा सकती हैं। ऐसा करना व्यक्तिगत पुण्य अर्जन और लोक कल्याण दोनों दृष्टियों से बहुत महत्व रखता है।

शिव का अर्थ है—शुभ, शंकर का अर्थ—कल्याण करने वाला। शुभ और कल्याणकारी चिन्तन चरित्र एवं आकांक्षायें बनाना ही शिव आराधना की तैयारी अथवा शिव सन्निध्य का लाभ है।

'शिवलिंग का अर्थ होता—शुभ प्रतीक का चिन्ह बीज। शिव की स्थापना लिंग रूप में की जाती है, फिर वही क्रमशः विकसित होता हुआ सारे जीवन को आवृत कर लेता है। शिवरात्रि पर साधक व्रत उपवास करके यही प्रयास करते हैं।

शिव अपने लिए कठोर दूसरों के लिए उदार हैं। यह अध्यात्म साधकों के लिए आदर्श सूत्र है। स्वयं न्यूनतम साधनों से काम चलाते हुए दूसरों को बहुमूल्य उपहार दान देना स्वयं न्यूनतम में भी मस्त रहना शिवत्व का प्रामाणिक सूत्र है।

नशे आदि शिव को चढ़ाने की परिपाटी है। मादक पदार्थ सेवन अकल्याणकारी है किन्तु उनमें औषधिगुण भी है। शिव को चढ़ाने का अर्थ हुआ—उनके शिव—शुभ उपयोग को ही स्वीकार करना, अशुभ व्यसन रूप का त्याग करना।

ऐसी अगणित प्रेरणायें शिवविग्रह के साथ जुड़ी हुई हैं। त्रिनेत्र विवेक से कामदहन, मस्तक पर चन्द्रमा मानसिक संतुलन, गंगा-ज्ञान प्रवाह, भूत आदि पिछड़े वर्गों को स्नेह देना आदि प्रकरण युग निर्माण साहित्य में जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े हैं, उनका उपयोग विवेकपूर्वक प्रेरणा प्रवाह पैदा करने में किया जा सकता है।

।। पूर्व व्यवस्था ।।

शिवरात्रि पर्व के लिए सामूहिक आयोजन में मंच पर शिवजी के चित्र सजायें। कामदहन, गंगावतरण, विषपान जैसे चित्रों का उपयोग किया जा सकता। शिव पंचायतन जिसमें शिव परिवार तथा गण भी हों ऐसा चित्र मिल सके तो और भी अच्छा है।

सामान्य पूजन सामग्री के साथ विशेष पूजन के लिए किसी प्रतिनिधि को पूजा के लिए बिठाया जाये। इस पुस्तक के सामान्य प्रकरण पृष्ठ ६ से षट्कर्म, सर्वदेव नमस्कार, स्वस्तिवाचन आदि कृत्य पूरे कर लिये जायें। तत्पश्चात् भगवान शिव, उनके परिवार और गणादि का आवाहन पूजन किया जाये।

।। विशेष आवाहन पूजनम् ।।

शिव आवाहन—कल्याणकारी धारा के मूल महादेव-महाकाल भगवान शिव का आवाहन करें। भावना करें कि भक्तों के आवाहन पर ये परम कृपालु युग प्रवर्तक प्रवाह के रूप में प्रकट होंगे, हमारी पूजा स्वीकार करेंगे।

ॐ रुद्राः सꣳ सृज्यपृथिवीं बृहज्जयोतिः समीधिरे।
तेषां भानुरजस्र ऽ इच्छुक्रो देवेषु रोचते।।

—यजु० ११/५४

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे।।
ॐ श्री शिवाय नमः।। —यजु १६/४६

शिव परिवार आवाहन

शिवजी का परिवार आदर्श परिवार है, सभी अपने-अपने व्यक्तित्व के धनी तथा स्वतन्त्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप से उपयोगी हैं। अर्धांगिनी-असुरनिकंदिनि भवानी, ज्येष्ठ पुत्र देव सेनापति कार्तिकेय तथा कनिष्ठपुत्र प्रथम पूज्य गणपति हैं। शिव के आराधक को शिव परिवार जैसे श्रेष्ठ संस्कार युक्त परिवार निर्माण के लिए तत्पर होना चाहिए। आवाहन के साथ भावना करें कि पारिवारिक आदर्श का प्रवाह हमारे बीच प्रवाहित हो रहा है।

भवानी—ॐ हिमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।।
लम्बोदरस्य जननी गौरीमावाहयाम्यहम्।।

स्वा. कार्तिकेय—

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन्।। — यजु० २९/१२

गणेश—

ॐ लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गण आवाहन

'शिवजी के गण उनके कार्य के लिए समर्पित व्यक्तित्व हैं। उनमें भूत-पिशाच पिछड़े वर्ग भी हैं और देव वर्ग के भी। प्रधान गण हैं वीरभद्र। वीरता अभद्र न हो, भद्रता डरपोक न हो तभी शिवत्व की स्थापना होगी। भले काम के लिए देव-पिशाच सभी एक जुट हो जायें यही प्रेरणा शिवजी के गणों से प्राप्त होती है। भावना करें कि शिवजी के अनुयायी बनने योग्य प्रवृत्तियों का प्रवाह उमड़ रहा है। हमारे द्वारा पूजित होकर वह हमारे लिए उपयोगी बनेगें।

ॐ भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रारातिः।
सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा ऽ उत प्रशस्तयः।।

—यजु० १५/३८

तदनन्तर भगवान शिव, उनके परिवार और गणादि का पुरुष सूक्त से षोडशोपचार पूजन करें। पूजन मंत्र पृष्ठ ११ में उद्धृत किया जा चुका है। फिर त्रिपत्र युक्त विल्व पत्र भगवान शिव को निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ायें।

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं विल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
दर्शनं विल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं विल्वपत्रम् शिवार्पणम्।।

तत्पश्चात् सभी लोग हाथ जोड़कर देवाधिदेव शिवजी की प्रार्थना करें।

ॐ नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय,
भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय,
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय।।
मन्दाकिनी सलिलचन्दनचर्चिताय,
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय,
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द,
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय,
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय।।
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमाय,
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय,
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय।।
यज्ञस्वरूपाय जटाधराय,
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय,
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय।।

।। अशिव त्याग संकल्प।।

अशुभ तत्वों का भी शुभ योग सम्भव है। कुछ औषधियों में मादकता और विषैलापन भी होता है, उसे व्यसन न बनने दें।

औषधि प्रयोग तक उनकी छूट है। व्यसन बन गये हों तो उन्हें छोड़ें, शिवजी को चढ़ायें। संकल्प करें कि इनका अशिव उपयोग नहीं करेंगे। मंत्र के साथ अशिव पदार्थ छुड़वाये जायें, बाद में इन्हें जमीन में गाढ़ दिया जाये।

ॐ अमंगलानां शमनं शमनं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्ननाशनं धन्यं प्रपद्येऽहं शिवं शुभम्।।

तत्पश्चात् अशिव त्याग संकल्प करें।

. . . . . नामाहं शिवरात्रिपर्वणि भगवतः शिवप्रीतये तत्सन्निधौ अशिवचिन्तनआचरण-व्यवहारत्यागानां निष्ठापूर्वकं संकल्पमहं करिष्ये। तत्प्रतीकरूपेणं . . . . . दोषंत्यक्तुं संकल्पयिष्ये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संकल्प के अक्षत पुष्प सभी लोग पुष्पांजलि के रूप में भगवान शिव को चढ़ायें, बाद में दीप यज्ञ यज्ञादि कृत्य पूरा कर क्रम समाप्त किया जाये।

होली

होली का त्यौहार समस्त हिंदू-त्यौहारों में अपने ढंग का निराला है। वैसे तो यह फसल के तैयार होने के उपलक्ष्य में 'वासंती नव सस्येष्टि' यज्ञ का ही परिवर्तित रूप है और आजकल भी होली में नये अन्न की बालों को भूनकर खाना अनिवार्य माना जाता है, पर अब इसमें और भी अनेक सामाजिक तत्वों का समावेश हो गया है। इस त्यौहार की सबसे बड़ी विशेषता जो हमको दिखलाई पड़ती है, यह है कि इसमें सामाजिक समानता का बीज विद्यमान है। होली ही एकमात्र ऐसा त्यौहार है, जिसमें हिंदू-समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे के संपर्क में आ सकता है और छोटे से छोटा व्यक्ति भी उच्च स्थिति के व्यक्ति के साथ बेतकुल्लफी का व्यवहार कर सकता है। यद्यपि हम इस त्यौहार में अनेक व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली गंदगी, अश्लीलता, मूर्खतापूर्ण व्यवहार का समर्थन नहीं कर सकते, तो भी इसमें पारस्परिक प्रेम निस्संकोच उल्लास, हार्दिक हास्य-विनोद और समानता का तत्व पर्याप्त रूप से समाया रहता है।

होली का आरंभ कब और कैसे हुआ इसके सम्बन्ध में जनता में कई प्रकार के विश्वास प्रचलित हैं। अधिकांश लोग तो इसका सम्पर्क होलिका द्वारा प्रहलाद को जलाए जाने की घटना से जोड़ते हैं। भविष्य पुराण में लिखा है कि ढुँढला नामक राक्षसी ने शिव-पार्वती की तपस्या करके यह वरदान प्राप्त किया था कि वह सुर, असुर, नर, नाग किसी से न मारी जा सके और जिस बालक को पा जाए उसे खा सके। पर वरदान देते समय महादेव जी ने यह शर्त लगा दी कि वर्ष में केवल होली के एक दिन यह वरदान फलीभूत होगा और उस दिन भी जो बालक वीभत्स आचरण करते और निर्लज्जता पूर्वक फिरते पाए जाएंगे उनको तू न खा सकेगी। इस कारण उस राक्षसी से बचने के लिए लड़के इस त्यौहार पर तरह-तरह के वीभत्स और निर्लज्जतापूर्ण स्वांग करते हैं।

होली का त्यौहार फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है। आज के दिन महर्षि वशिष्ठ जी ने सब मनुष्यों के लिए अभयदान माँगा था, जिससे वे निःशंक होकर हँसे-खेलें, उछलें-कूदें। आज के दिन बालक काठ की तलवार लेकर योद्धाओं की नकल करते हुए विचरण करते हैं। चाहे जहाँ से लकड़ी कंडे उठाकर होली में डाल देना, धूल और राख उड़ाना, नालियों की कीचड़ तक से परहेज न करना भी आज के दिन बालकों के लिए क्षम्य समझा जाता है। बड़ी आयु के व्यक्ति रंग से भरी पिचकारियों और गुलाल अबीर आदि से प्रेमाभिवादन करते हैं। शास्त्रों में गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, दक्षिणा और फलों से होलिका का पूजन करने का विधान लिखा है। आजकल भी स्त्रियाँ गोबर से तरह-तरह की आकृति की वस्तुएँ बनाकर पूड़ी, पकवान आदि के साथ होली में डालती हैं।

इस अवसर पर सब लोग ऊँच-नीच, छुटाई-बड़ाई का विचार छोड़कर खुले दिल से एक-दूसरे से मिलते हैं। अगर गत वर्ष में किसी कारण परस्पर मनोमालिन्य, बैर, विरोध उत्पन्न हो गया हो तो, उसको होली की अग्नि में भस्म करके पुन मित्रता स्थापित कर लेते हैं। इस प्रकार होली का त्यौहार प्रेम-प्रसार का पर्व है। यह बिछड़े हुए, फटे हुए हृदयों को मिला देता है। जाति-पांति का जो घातक विष हिंदू समाज में व्याप्त हो गया है और जिसके कारण देश में फूट तथा कलह का साम्राज्य फैल गया, वह भी होली के दिन अधिकांश में हट जाता है। आज का दिन पूर्णतः आनंद और उल्लास का समझा जाता है और किसी रुढ़ि अथवा नियम के कारण लोग उस आनंद को भंग करना पसंद नहीं करते। इस प्रकार यदि विचारपूर्वक देखा जाय, तो होली का त्यौहार सामूहिकता के भाव की वृद्धि करने वाला तथा संगठन और एक्य को सुदृढ़ बनाने वाला सिद्ध होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं कि इस अवसर पर लोगों को हँसी-मजाक और नियमोल्लंघन की छूट मिलने का यह अर्थ नहीं है कि हम ऐसा आचरण करें, जिससे उपयुक्त उद्देश्य सिद्ध होने के बजाय उल्टा वैमनस्य का भाव उत्पन्न हो अथवा नीच वृत्तियों को जड़ जमाने का मौका मिले। जैसे अधिकांश व्यक्ति होली को नशा करने का दिन समझते हैं और मनमाने ढंग से भांग शराब आदि का सेवन करके उन्मत बन जाते हैं। वे लोग उस अवस्था में ऐसे कृत्य कर डालते हैं, जिनसे लड़ाई—झगड़े उत्पन्न हो जाते हैं। इसी प्रकार अन्य लोग इस अवसर को काम-वासना की पूर्ति का अवसर समझ लेते हैं। जायज-नाजायज तरीके से दुराचार में प्रवृत्ति हो जाते हैं। आजकल एक कुप्रथा भाभियों से अश्लीलतापूर्ण हंसी-मजाक करने की भी समाज में घुस गई है और होली के अवसर पर अनेक व्यक्ति सीमोल्लंघन कर देते हैं। इसी प्रकार अश्लीलतापूर्ण गालियाँ बकने में भी लोग ऐसी अति करते हैं कि उसका समर्थन कोई भला आदमी नहीं कर सकता। हम सामाजिक उत्सवों और त्यौहारों में शासकों द्वारा हस्तक्षेप के पक्षपाती नहीं हैं पर होली के त्यौहार को इन गंदगी और अश्लीलता के शौकीनों ने ऐसा भ्रष्ट कर डाला है कि उसमें सरकार को पुलिस का प्रयोग करना पड़ता है और सैकड़ों आदमी पकड़े भी जाते हैं। पिछले कई वर्षों में इन बुरे रिवाजों के कारण होली के ऐन मौके पर हत्याएँ तक हो चुकी हैं।

इसलिए समाज-हितैषियों और अपने देशवासियों का कल्याण चाहने वाले सभी सज्जनों का कर्तव्य है कि वे होली के त्यौहार को संशोधित रूप में प्रचलित करने का प्रयत्न करें। जैसे आजकल अनेक नगरों में कुछ मौहल्लों में इस अवसर पर सामूहिक चंदा करके केवल रंग-गुलाल की होली और संगीत आदि की व्यवस्था की जाती है। हम मनोरंजन और हास्य-विनोद के विरोधी नहीं है, वरन् हम यहाँ तक मानने को तैयार हैं कि हँसना-हँसाना मनुष्य जीवन के लिए वरदान है और जो हँस नहीं सकता उसकी गिनती मनुष्यों में नहीं करनी चाहिए। मनोरंजन मानव-जीवन का एक परमावश्यक अंग है और उसके लिए सदैव उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। पर इन सब बातों में यह ध्यान रखना अनिवार्य है कि ये कार्य लाभदायक ढंग से किए जाएँ, ऐसे तरीके से नहीं, जिससे हमारी समाज की हानि हो यह ख्याल करना बड़ी बुद्धिहीनता है कि हँसी-मजाक गंदी या अश्लील बातों के बिना नहीं हो सकता। इस प्रकार के मजाक तो उस व्यक्ति के पतनकारी भावों या कुरुचि के प्रमाण हैं। बड़े से बड़े विद्वान, त्यागी, महात्मा, समाज के नेता भी हँसी-मजाक करते हैं, पर उनको गंदगी या अश्लीलता का आश्रय लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अतएव हमको भी होली के अवसर पर इन सब कुप्रथाओं से बचकर सुरुचिपूर्ण आमोद-प्रमोद और मनोरंजन का व्यवहार करना चाहिए।

इस समय हमारे समाज में अनेक त्रुटियाँ ऐसी उत्पन्न हो गई हैं, जिनके कारण हमारी उन्नति का मार्ग अवरुद्ध हो रहा है। उनमें सामाजिक विषमता की भावना भी एक बड़ी प्रधान समस्या है। इसने हिंदू जाति को टुकड़े-टुकड़े कर दिया है और इस प्रकार उसकी शक्ति को निर्बल बना डाला है। आजकल बिना एकता के, बिना आंतरिक संगठन के सफलता मिलना असंभव है। हमारे कोई विद्वान नेता कह भी गए हैं—'संघे शक्ति कलौयुगे।' इसी संघ-शक्ति के प्रभाव से ऐसी जातियाँ भी हमको पराजित कर चुकी हैं, जो संख्या और योग्यता की निगाह से हमसे कहीं कम थीं। इसलिए होली के त्यौहार का संदेश यही है कि हम जाति-पांति के कृत्रिम भेद को त्यागकर अपना सामाजिक संगठन वैदिक आदर्श के अनुकूल करें और समाज के किसी व्यक्ति के साथ सामाजिक असमानता का व्यवहार न करें। इसी उपाय से हिंदू जाति को पुनः नवजीवन प्राप्त हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होली की पौराणिक पृष्ठ भूमि

हिन्दू संस्कृति में प्रचलित प्रायः समस्त उत्सवों में होलिकोत्सव का विशेष महत्व है। इसका सर्वसामान्य स्वरूप केवल भारत के विभिन्न भागों में ही नहीं बल्कि संसार के अन्य राष्ट्रों में भी किसी न किसी रूप में पाया जाता है। मूलतः इस उत्सव के दो अंग आर्य संस्कृति में पाये जाते हैं। एक है होलिका-दहन और उसके साथ-साथ कीचड़, कालिख और भद्दा रङ्ग डालना, नंगे स्वांगों का प्रदर्शन करना और अश्लील कबीर औ जोगीरे गाना तथा दूसरा अंग है वसन्त का उत्सव मनाना, अमीर गुलाल जैसे नेत्र रञ्जक रंगों को छोड़ना, छुड़वाना और साथ ही साथ होली, फाग, झूमर वसन्त आदि रागों को गा-बजाकर उत्सव एवं समारोह मनाना। ये दोनों परस्पर भिन्न रस्में आपस में हिलमिल कर इस उत्सव को इस प्रकार सराबोर कर चुकी हैं कि आज यह निश्चय रूप से नहीं कहा जा सकता कि ये सब एक-दूसरे से मिलीं। आइए अब जरा प्राचीन हिन्दू धर्म-ग्रन्थों, शास्त्रों, पुराणों पर दृष्टि डालें और देखे कि होली का शास्त्रीय स्वरूप क्या है ?

शास्त्रों के अनुसार फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की अन्तिम तिथि को होली का उत्सव मनाया जाना चाहिए। कभी-कभी यह पूर्णिमा दो दिन पड़ जाती है। ऐसी अवस्था में दूसरी पूर्णिमा को ही होली जलानी चाहिए। जिस दिन प्रदोष के समय पूर्णिमा वर्तमान हो, भद्रा न हो, उस दिन सूर्यास्त के उपरान्त ही होली जलाने का विधान है। भद्रों के आरम्भ की पांच घड़ी "भद्रा का मुख" और इसके उपरान्त की तीन घड़ी "भद्रा की पूंछ" कही जाती हैं। कहीं-कहीं भद्रा की 'पूंछ' में होली जलाने की छूट शास्त्रकारों ने दी है किन्तु प्रायः सभी आचार्य- शास्त्रियों ने दिन, प्रतिपदा, चतुर्दशी तथा होली प्रज्ज्वलित करने का विरोध किया है। उनका ऐसा विश्वास है कि जहाँ इन तिथियों एवं समयों में होली जलाई जाती है, वहाँ वर्ष भर के अन्दर ही क्या मनुष्य, क्या राज्य, सभी का नाश हो जाता है। यथा--

प्रतिपदभूतभद्रासु याचिता होलिका दिवा।
संवत्सरं तु न द्राष्ट्रं पुर दहति साद्भुतम्।।

पुराण समुच्चय में लिखा है कि भद्रा में होली जलाने से देश में शीघ्र ही उत्पात आरम्भ हो जाते हैं तथा उस गाँव या शहर में अशान्ति रहती है।

होली के अवसर पर काष्ठ संचय करने की अनेक कुप्रथाएँ हमारे हिन्दू समाज में प्रचलित हैं। लकड़ी को चोरी करना धर्म माना जाता है। ऋतुओं के विभाजन के समय पता नहीं कब से माघ और फाल्गुन को शिशिर तथा चैत्र एवं वैशाख को बसन्त माना गया है किन्तु आजकल तो माघ की पंचमी से ही वसन्त का आगमन मान लिया जाता है। माघ के शुक्ल पक्ष की पंचमी को जिसे वसंत पंचमी भी कहते हैं, रात को ही होली का प्रतीक एक काष्ठ या रेंड प्रत्येक गांव, मुहल्ले या टीले में गाड़ दिया जाता है। उसी दिन से काष्ठ-संचय आरम्भ हो जाता है और वसन्त राग चौताल आदि गाये जाने लगते हैं। पर शास्त्रों में फाल्गुन शुक्ल पक्ष की पंचमी से पूर्णिमा तक दस तिथियों में लकड़ी संचय करने का विधान है इन दस दिनों में लकड़ी की चोरी करना शास्त्रकारों को भी मान्य था। यथा—

पंचमी प्रमुखास्तास्तु तिथयोनन्तपुण्यदाः।
दशस्युःशोभनास्तासु काष्ठस्तर्य विधीयते।।

इतना ही नहीं, आजकल की गाली-गलौज की प्रथा भी शास्त्र सम्मत है। उनका तो यहाँ तक कहना है कि होलिकोत्सव के अवसर पर जो किसी कारणवश गाली-गालौज नहीं बकता वह पाप का भागी होता है और उसे इसके लिए प्रायश्चित करना चाहिए। वास्तव में समाजशास्त्रियों ने मानव के इस पशु-धर्म को वर्ष में एक बार निरर्गल रूप में छोड़ने की छूट देकर अपनी चतुराई का ही परिचय दिया है।

नारदीय पुराण के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को सूर्यास्त होने पर प्रदोष काल में घर के चौड़े आंगन, किसी चौराहे या किसी निश्चित स्थान पर गोबर से लिपी-पुती भूमि पर सूखी लकड़ी, गोबर के कंडे, घास-फूस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि इकट्ठा करना चाहिए और उसे जलाकर होलिका का विधिवत् पूजन करना चाहिए।

फाल्गुने पौर्णमायांतु होलिका पूजनं स्मृतम्।
संचयं सर्वकाष्ठानां पीलालानाञ्च कारयेत्।।

जैसा कि ज्योति निबन्ध के निम्नांकित श्लोक से स्पष्ट है, होलिका दहन के लिए किसी चाण्डाल या प्रसूता स्त्री के घर से आंग मंगानी चाहिए और वह भी वयस्कों द्वारा नहीं बल्कि बच्चों द्वारा।

चाण्डाल सूतिका गेहाच्छिशु हरित वह्निना।
प्राप्त्यां पूर्णिमायान्तु कुर्यात्तत्काष्ठ दीपनम्।।

होली जलाने के पूर्व निम्नलिखित मन्त्र पढ़ना चाहिए—

दीपयाम्यद्य ते घोर चिन्तादात्री राक्षसी।
महिताय सर्वजगतां प्रीतये पार्वतीयते।।

अर्थ यह है कि आज हम चिन्ता तथा दुःख देने वाली राक्षसी को जला रहे हैं। यह कार्य-भगवान् शिव को प्रसन्न करने तथा सारे संसार के कल्याण के लिए किया जा रहा है।

होली जलाने के पूर्व होलिका को अर्घ्य देने का भी विधान शास्त्रों में है। अर्घ्य का मन्त्र इस प्रकार है—

होलिके च नमस्तुभ्यं दृष्टातेबो विमर्दिनी।
सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।

अर्घ्यदान के उपरान्त आग जलाते समय अग्नि की प्रार्थना करनी चाहिए, जिसका मन्त्र इस प्रकार है—

यन्मया शीतमीतवे निषिद्धाचरणं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां वह्नि यतःसर्व महोभव।।

अब सुनिये होली जलाने की विधि क्या है ? जलती हुई काष्ठ या घास फूस के ढेर में नारियल, विजौरा, धान का लावा, नीबू के फल तथा घी मिश्रित दूध आदि डालकर रक्षोघ्न मन्त्रों को पढ़कर हवन करना चाहिये—

ततोऽभ्युक्ष्य चिति सर्वा साव्येन पयसा सुधीः।
नारिकेलानि देयानि, बीजपुरफलानि च।।

होली जलाते समय होली के शव की पूजा एवं प्रार्थना का विधान भी शास्त्रों में है। होली से आग की लपट निकलने पर निम्नांकित मन्त्रों से किसी एक को पढ़ते हुए उसकी तीन बार परिक्रमा करनी चाहिए—

अस्पृक्त्याभय संत्रास्ते कृतात्वं होलिबालिशैः।
अतस्त्वं पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव।।
होलिकायां प्रज्वलितायां तमग्नि त्रिपरिक्रम्य।
तेन शब्देन प्रायासा राक्षसी तृप्तिमापुयात्।।

शव पूजन के कुछ मन्त्र इस प्रकार हैं—

अतो मां पाहि मीतिन्यो मतिवापत्यमात्मन।
आयुर्देहि यशो देहि शिशूनां कुरु रक्षणम्।
शत्रूणां च क्षयं देहि होलिके पूजिता सदा।

इस होलिका के शव-पूजा एवं प्रार्थना के मन्त्रों से यह स्पष्ट ध्वनित होता है कि होलिका विशेषतया बालकों के मनोरञ्जन का त्यौहार है।

इस प्रकार होली जलाने के उपरान्त सारी रात गीत वाद्य और नृत्य में व्यतीत करनी चाहिए—

गीतवाद्यैस्तथा नृत्यैः रात्रिः सा नीयते जनैः।

होली जलाने के दूसरे दिन अर्थात् धूरेड़ी के दिन होली का भस्म (राख) लेकर शरीर पर धारण करना चाहिए, जिसका मन्त्र इस प्रकार है—

वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शङ्करेण च।
अतस्त्वं पाहि नो देवि विभूतिभूतिप्रदा भवेत्।।

इन्द्र, ब्रह्मा तथा शङ्कर द्वारा सम्मानित हे होलिके ! तू मेरी रक्षा कर और यह राख हमारे सुख समृद्धि की वृद्धि करे।

ऐसा प्रतीत होता है कि राख लगाने की यही प्रथा कालान्तर में कीचड़, मलमूत्र, गन्दे पानी आदि के भी डालने की प्रेरणा देने वाली बन गई। शरीर पर राख धारण करने के उपरान्त तेल लगाने का भी विधान शास्त्रों में है। कुछ शास्त्रकारों के मतानुसार तो इस दिन चौसठ योगिनियों की पूजा या यात्रा करनी चाहिए।

होली के दिन नित्य कर्मों से निवृत्त होकर समस्त ऐहिक कामनाओं की सिद्धि के लिए आम का बौर चन्दन के साथ मिलाकर पीना चाहिए।

आम्रमर्थ वसन्तस्य माकन्द कुसुमेन सह।
स चन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थ सिद्धये।

होली सर्वसाधारण का त्यौहार है और इस दिन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छोटे-बड़े ऊँच-नीच का भेद-भाव मिटाकर सभी परस्पर हिलमिल कर इस समारोह को प्राचीनकाल से ही मनाते आए हैं। यह इसीसे स्पष्ट है कि हमारे शास्त्रों में इस दिन चाण्डाल के स्पर्श करने का विशेष महत्व वर्णित है। भविष्य पुराण में तो यहाँ तक लिखा है कि जो व्यक्ति इस दिन चाण्डाल को स्पर्श करता है, उसे आगामी वर्ष किसी प्रकार की विपत्ति या आधि-व्याधि नहीं सताती। यथा—

चैत्रे मासि महाबाहो पुण्ये तु प्रतिपहिने।
यस्तत्र श्वपचं दृष्टा स्नानं कुर्यात्ररोत्तमः।
न तस्य दुरितं किंचिद् आधिषो व्याधमो नृप।

कुछ शास्त्रों में चाण्डाल के स्थान पर केवल दर्शन का ही विधान बताया गया है।

होलिकोत्सव में बच्चों के आमोद-प्रमोद पर विशेष रूप से जोर दिया गया है। इस अवसर पर उन्हें निःशक होकर मनमाने तौर से हँसने, बोलने, खेलने-कूदने एवं गाने-बजाने की पूर्ण छूट दी गई है—

अभयं सर्वलोकानां दातव्यं पुरुषषेभ।

यथा—

हयशङ्किता क्षोका रमन्ति च हसन्ति च।
वारुजानि च खड्गानि शिंशिवः संप्रार्थिता।।

समरोत्सुक योद्धाओं की भाँति बच्चों को लकड़ी की तलवार लेकर अत्यन्त हर्ष एवं उल्लासपूर्वक घर से बाहर निकलकर खेल-कूद मचाना चाहिए, किंतु होली की रात्रि के समय बच्चों की रक्षा की ओर भी संकेत किया गया है, जैसा कि भविष्योत्तर पुराण के निम्नांकित श्लोकों से प्रकट है—

अस्यां निशागमे पार्थ। संरक्ष्या शिशवो गृहे।

होलिकादहन के धुएँ के प्रति भी शुभाशुभ की कामनाएँ पुराणों एवं फलित ज्योतिष के ग्रन्थों में लिखा है कि यदि होलिका की लपटें पूर्व दिशा की ओर जायँ तो वह राजा प्रजा के लिए सुख-समृद्धि का सूचक है। अग्निकोण में अग्नि का भय, दक्षिण तथा नेर्ऋत्य में दुर्भिक्ष, युद्ध, संकट की संभावना, उत्तर में समस्त राष्ट्र को अन्न सुख, ईशान में प्रजा में सुख-शांति, पच्छिम में विपुल वृष्टि, वायव्य में आँधी तूफान का सूचक है।

होली का वास्तविक स्वरूप

त्यौहारों की महत्ता को सभी स्वीकार करते हैं। मनुष्य जब निरन्तर एक काम करता रहता है, चाहे वह उसके लिए कितना ही रुचिपूर्ण क्यों न हो, वह उससे ऊब जाता है। इसलिए बुद्धिमान पुरुष उसमें सजीवता लाने के लिए काम में परिवर्तन कर लेते हैं, कुछ समय के लिए कुछ और काम करने के पश्चात् वह पहिले वाला काम करने लगते हैं। इस परिवर्तन अथवा पहिले के काम में कुछ विश्राम होने से वह कार्य पूर्ववत् होने लगता है। इसी तथ्य के आधार पर हिन्दू धर्म में त्यौहारों की व्यवस्था की गई है। इन त्यौहारों में इस उद्देश्य की पूर्ति के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण रहस्य भी छिपे हुए हैं। नौकरी, व्यापार आदि के व्यस्त कार्यक्रम से अवकाश प्राप्त करके स्वादिष्ट भोजन, सुन्दर वस्त्र व अन्य मनोरञ्जन के साधन तो रहते ही हैं, जिससे मुर्दा मन में भी नवजीवन का संचार हो जाता है। वह कुछ समय के लिये अपने नित्य के चलने वाले कार्य को भूल जाता है और जिस प्रकार से मुरझाई हुई फूल की कली खिल जाती है, उसी प्रकार से उसका मन खिल जाता है। उसके इस प्रफुल्लित मन से शारीरिक व मानसिक शक्तियों का विकास होता है। गृहस्थी व आजीवका के साधनों द्वारा जो चिन्ताएँ उसे खा रही थीं, उस क्षति की कुछ पूर्ति इन अवसरों पर हो जाती है।

त्यौहार केवल मनोविनोद के लिए मनाए जाते हों ऐसी बात नहीं है। यह जीवन को उज्ज्वल और महान् बनाने का साधन भी बनते हैं। यह हमारे लिए नवीन सन्देश लाते हैं। यह जीवन को श्रेष्ठ व आदर्श बनाने वाले सिद्धान्तों के विचार ही हमारे सामने नहीं रखते वरन् उन विचारों को क्रियात्मक रूप में हमारे जीवन को व्यवहार में ला देते हैं। त्यौहारों की इस विशेषता के कारण इन्हें मनाने पर अधिक बल दिया जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारे मनीषी ऋषियों ने उन विचारों के विस्तार का माध्यम इन त्यौहारों को बनाया, जिसमें उनको आशङ्का थी कि इनमें व्यक्तिगत पतन और सामाजिक अस्त-व्यस्तता होनी सम्भव हो सकती है। आज जाति-पाँति के झगड़ों से हमारा सामाजिक ढाँचा जर्जर होता जा रहा है। गाँधीजी ने सबको एकता के सूत्र में बाँधने के लिए ही सबको गले लगाने का उपदेश दिया था। यह सामाजिक विकृत अब बढ़ती जा रही है। इस समस्या को सुलझाने का एक सुन्दर साधन है होली का त्यौहार जिसमें छोटे बड़े सभी अपनी सामाजिक ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी पद-प्रतिष्ठा आदि को भूल जाते हैं, एक-दूसरे से गले मिलते हैं। गुलाल व रंग द्वारा अपने सम्बन्धों का प्रदर्शन करते हैं और एक-दूसरे के साथ बेतकुल्लफी के साथ व्यवहार करते हैं। पिछले वर्ष में एक-दूसरे के द्वारा हुए मनोमलिन्य को भूल जाते हैं। विरोधी भावों से जो फूट के बीज उत्पन्न हो रहे थे, वह समाप्त हो जाते हैं और उसके स्थान पर सामूहिकता और संगठन की नींव रखी जाती है। बिछड़े हुए फटे हुए हृदयों को यह त्यौहार मिला देता है। इससे एक नव उल्लास उत्पन्न होता है।

होली के उत्सव में एक बड़ी विशेषता यह है कि इसमें समानता के भाव आते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सब एक साथ मनोरञ्जन करते हैं। इसमें वर्णाश्रम धर्म की कोई मर्यादा नहीं। धर्म शास्त्रों की भी आज्ञा है कि ब्राह्मण इस दिन चाण्डाल को स्पर्श कर सकता है। इस दिन लोग अपने घरों की सफाई करते हैं, नालियों में से स्वयं कूड़ा-कचरा निकालते हैं। होली के शुभ अवसर पर जब समानता के भावों का प्रदर्शन होता है, सामूहिक सफाई व स्वच्छता के कार्यक्रम रखने चाहिए, सार्वजनिक स्थानों की सामूहिक सफाई करनी चाहिए ताकि इस कार्य को व्यवसाय के रूप में करने वाले लोगों के मन से यह हीन भाव निकल जाए कि झाड़ू देना, नाली साफ करना आदि कार्य घृणित व नीच हैं, इन्हें बड़े-बड़े व्यक्ति भी करने में संकोच नहीं करते। इस हीन भाव के मन से निकल जाने से अपने व्यवसाय में अधिक रुचि लेंगें वरना वह अपनी डेढ़ ईंट की मसजिद अलग खड़ी कर लेंगे और अपने को पृथक् जाति घोषित कर देगें। सामूहिक स्वच्छता के माध्यम से हम अपने जाति और देश के संगठन को बनाये रह सकते हैं। प्रेम भावों की वृद्धि से आपस में आकर्षण बढ़ता है। यह आकर्षण ही एकता का सूत्र है।

इस महान् उद्देश्य की ओर ले जाने वाले महान् त्यौहार में कुछ विकृतियाँ भी आ गई हैं। हास-परिहास इतना हो जाता है कि वह अश्लीलता का रूप धारण कर लेता है। ग्रामों में लोग फगुआ, चौताल और झूमर गाने लगते हैं और कुछ असभ्य लोग स्त्रियों को देखकर अश्लील गाने-गाने लगते हैं। भाभियों से अश्लीलता पूर्ण हँसी-मजाक करने की एक प्रथा समाज में घुस गई है। इस अवसर पर लोग गन्दी गालियाँ देने से भी नहीं चूकते, काम वासना की तृप्ति का एक शुभ अवसर मानते हैं। कुछ लोग मनमाने ढंग से भांग, शराब आदि का सेवन करते हैं। यह उल्लास व प्रसन्नता के माने जाने वाले साधन समाज के लिए घातक हैं। हँसी-मजाक तो सभी करते हैं। इसके बिना तो जीवन नीरस हो जाएगा, यह शरीर रूपी पौधा सूख जाएगा। सन्त, महात्मा और महापुरुष भी मनोविनोद करते हैं परन्तु उसमें सभ्यता टपकती है। इस शुभ अवसर पर जब हमें अपने मनोभावों व चरित्र का विकास करना चाहिए हम सामाजिक मर्यादा का उल्लङ्घन करके सामाजिक पाप के भागी बनते हैं।

माना कि होली का उत्सव हर्ष और उल्लास के लिए आता है परन्तु अपने ऊपर नियन्त्रण रखना भी सीखना चाहिए, दूसरों के हानि-लाभ की ओर भी ध्यान देना चाहिए। कूड़ा-करकट और गंदगी फेंकने से किसी के मूल्यवान वस्त्र खराब हो जायेंगे इस पर विचार नहीं किया जाता। प्रायः ऐसा होता है कि होली के दिनों में यदि कोई व्यक्ति अच्छे कपड़े पहिन-कर जा रहा हो तो उस पर रङ्ग आदि जानबूझ कर फेंका जाता है कि उसके वस्त्र खराब हो जायँ। यह व्यवस्था बन्द होनी चाहिए। हमें सभ्य पुरुषों की तरह व्यवहार करना चाहिए। हमें चाहिए कि भद्दे रङ्ग और कीचड़ से होली खेलने के स्थान पर टेशू के रंग से होली खेलें। इससे एक लाभ यह भी होता है कि चेचक की बीमारी का शमन होता है। अश्लीलता का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

व्यवहार बन्द कर जीवन को उज्ज्वल बनाने वाले भजन व गीत उपदेशों के आयोजन करने चाहिए। अश्लीलता के विष वृक्ष को समाज से उखाड़ फेंकने के लिये अश्लीलता नाम की राक्षसी का कागज का पुतला बनाकर, गाजे बाजे के साथ जुलूस निकालकर उसके पुतले व अश्लील चित्रों व साहित्य की होली जलाई जानी चाहिए ताकि लोग यह समझे कि इस घातक प्रथा का बहिष्कार करना चाहिए। गन्दे चित्रों को घरों से हटवाने के सामूहिक प्रयत्न होने चाहिये। टोली बना बनाकर घर-घर धर्म-फेरी करनी चाहिए और लोगों से कामुकता का प्रदर्शन करने वाले चित्रों को हटाकर शिक्षाप्रद वेद वाक्यों को टाँगने की प्रार्थना करनी चाहिए।

वास्तव में होली जलाने का आधुनिक रूप यज्ञ का ही परिवर्तित रूप है। आज लोग केवल लकड़ी जलाकर ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। पूर्वकाल में यह सामूहिक यज्ञ का रूप था। यज्ञ की प्रथा का लोप होने से इसका शुद्ध रूप भी विकृत हो गया है। अब हमें इसका पुनरुत्थान करना है। यज्ञ हमारी भारतीय संस्कृति का पिता माना गया है। समय के फेर से जो विकृति इसमें आ गई है, उसका सुधार करना चाहिए।

होली का संदेश

अनावश्यक और हानिकारक वस्तुओं को हटा देने और मिटा देने को हिन्दूधर्म में बहुत ही महत्वपूर्ण समझा गया है और इस दृष्टिकोण को क्रियात्मक रूप देने के लिए होली का त्यौहार बनाया गया है। रास्तों में फैले हुए कांटे, शूल, झाड़ झंखाड़, मनुष्य समाज की कठिनाइयों को बढ़ाते हैं, रास्ते चलने वालों को कष्ट देते हैं, ऐसे तत्वों को ज्यों को त्यों नहीं पड़ा रहने दिया जा सकता, उनकी ओर से न आंख चुराई जा सकती है और न उपेक्षा की जा सकती है। इसलिए हर वर्ष होली पर लोग मिल जुलकर रास्तों में पड़े हुए कँटीले अनावश्यक झाड़ों को बटोरते हैं और उन्हें जलाते हुए उत्सव का आनन्द मनाते हैं। इसी प्रकार नाली, गड्ढे कीचड़, धूलि, कचरा आदि की सफाई करके जमी हुई गन्दगी को हटाते हैं। गली मुहल्लों के कोने-कोने को छान डाला जाता है कि कहीं गन्दगी छिपी हुई तो नहीं पड़ी है, जहाँ होता है वहाँ से उसे हटाकर दूर कर देते हैं।

होली के त्यौहार का छिपा हुआ संदेश यह है कि जमी हुई गन्दगी को दूर करो, रास्ते में बिछे हुए कष्टदायक तत्वों को हटाओ। बाहर की गली मुहल्लों की गंदगी को साफ करके स्वच्छता और शुद्धता का वातावरण उत्पन्न करना आवश्यक है अन्यथा चेत्र में ऋतु परिवर्तन के साथ-साथ यह गंदगी विकृत रूप धारण करके चेचक आदि बीमारियों को और भी अधिक बढ़ावा दे सकती है। सफाई का यह बाहरी दृष्टिकोण हुआ भीतरी सफाई करना, मानसिक दोष दुर्गुणों को हटाना भी इसी प्रकार आवश्यक है अन्यथा अनेक मार्गों के असंख्य प्रकार के अनिष्ट होने की सम्भावना है।

रास्ते में काँटे आते रहने का नियम प्रकृति प्रदत्त है। यदि काँटे सामने न आवें, विघ्न बाधाओं का अस्तित्व न रहे तो मनुष्य की जागरूकता, क्रियाशीलता, चैतन्यता और विचारकता नष्ट जो जायेगी, रगड़ में वह शक्ति है कि हथियार को तेज बनाती है, यदि हथियार घिसा न जाय तो वह कुन्द हो जायेगा और जंग लगकर कुछ समय बाद वह निकम्मा बन जायेगा। मनुष्य जीवन में रगड़ और संघर्ष की बड़ी भारी आवश्यकता है अन्यथा जीवित रहते हुए भी मृत अवस्था के दृश्य देखने पड़ेगें। जो जातियाँ अपनी सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक विकृतियों को संघर्षपूर्वक हटाती रहती हैं, अनावश्यक तत्वों को नष्ट करती रहती हैं, वे-जीवित रहती हैं और जो भाग्य भरोसे शुतुर मुर्ग की तरह बालू में मुँह गाढ़कर निश्चिन्त एवं निष्क्रिय बनती हैं, वे गरीबी, गुलामी, बीमारी, वे इज्जती आदि के दुःख भोगती हुई नष्ट हो जाती हैं।

हिन्दू धर्म जीवित और पुरुषार्थी जाति का धर्म है। उसका हर एक व्यौहार जागरूकता और क्रियाशीलता का सन्देश देता रहता है। होली का सन्देश यह है कि भीतरी और बाहरी गन्दगी को ढूँढ़-ढूँढ़कर साफ कर डालें और चतुर्मुखी पवित्रता की स्थापना करें एवं मानसिक सामाजिक राजनैतिक विकृत विकारों के कंटक जो रास्ते में बिछे हुए हैं उन्हें सब मिल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जुलकर ढूँढ-ढूँढ़कर लावें और उनमें आग लगाकर उत्सव मनावें। होली मनाने का यही सच्चा तरीका है। अश्लील अपशब्द बकना, कीचड़ मिट्टी मनुष्यों पर फेंकना यह तो पशुता का चिन्ह एवं असभ्यता है इससे तो दूर ही रहना चाहिए।

होली—उद्देश्य और शिक्षा

होलास्ति समतापर्वस्तद्दिनेऽन्योन्यस्य वै।
असमता ऽ सुरत्वस्य दाहः कार्यो होलिकावत्।। १।।

होली समता का त्यौहार है। उस दिन निश्चय ही आपस की असमता रूपी असुरता का होली की तरह दाह करना चाहिए।

कमप्यत्र समानेऽस्मिन्प्रभेदाज्जन्मलिङ्गयोः।
नोच्चं नीचं च मन्तव्यं प्रभोरेकस्य सन्ततौ।। २।।

जन्म और लिंग के प्रभेद के कारण इस समान और एक प्रभु को सन्तति में किसी को भी ऊँचा और नीचा नहीं मानना चाहिये।

गुणकर्मस्वभावानां कृत्रिमभेदेन मानवाः।
जायन्ते लिंग जातिभ्यां नीचाश्चोच्चास्तु न वस्तुतः।। ३।।

गुण, कर्म और स्वभाव की कृत्रिम भिन्नता से मनुष्य उच्च और नीच बनते हैं, लिंग और जाति से नहीं। वैसे वास्तव में कोई भी उच्च और नीच नहीं होता।

दूरीकुर्वन्विषमतां विभेदानां प्रयत्नतः।
आत्मीयत्वमेकतां च स्वीकुर्यात्स्वात्मवत्तया।। ४।।

भेद-प्रभेदों की विषमता को दूर हटाते हुए एकता और आत्मीयता (अपनेपन) को अपनाना चाहिए।

निन्दितं चार्थिकं लोके विषमत्वमसङ्गतम्।
प्राप्तव्यो निखिलैस्तत्र चावसरस्तुल्योचितः।। ५।।

संसार में आर्थिक विषमता, असंगत और निन्दित है। इस जगती-तल में सभी को (चाहे गरीब हो या अमीर) समान एवं उचित अवसर मिलने चाहिये।

भूत्वा भीरुः दुर्बलो वा दीनस्तिष्ठेन्न मानवः।
नृसिंहवच्च निर्भयो वीरो जीवेदिह सदा।। ६।।

दीन, दुर्बल और डरपोक होकर मनुष्य को नहीं रहना चाहिए। सर्वदा इस संसार मे नृसिंह की तरह निर्भय और वीर का जीवन जिये।

धूलिं च मातृभूमेस्तु मस्तके धारयन्ति ये।
सदैव तां च ध्यायन्ति ते नरा धन्यजीवनाः।। ७।।

जो मनुष्य मातृभूमि की धूलि को मस्तक पर धारण करते अर्थात् चढ़ाते हैं और सदा उस मातृभूमि का ध्यान रखते अर्थात् उसके लिये त्याग करते हैं, वे मनुष्य धन्य जीवन वाले अर्थात् सौभाग्यशाली हैं।

वैमनस्यं दुर्भावत्वं ज्वालयेच्च समूलतः।
समानत्वेन प्रेम्णा च सानन्दं निवसेदिह।। ८।।

द्वेष और दुर्भाव को जड़ सहित जला देना चाहिए। संसार में समानता से और प्रेम से आनन्दपूर्वक रहना चाहिए।

उचितमेव कर्तव्यं कर्मात्र खलु सर्वदा।
जनकस्याप्यनुचितं चादेश कुर्यान्नैव हि।। ९।।

संसार में सदा उचित कर्म ही निश्चय रूप से करना चाहिए। पिता की भी अनुचित आज्ञा अर्थात् बात को नहीं मानना चाहिये।

प्रथमोऽस्ति समाजस्य चाधिकारो हि स्वार्जिते।
यज्ञावशिष्टमितिच मत्वोपभुञ्जीत स्वयम्।। १०।।

अपनी कमाई में समाज का पहिला अधिकार है। शेष को यज्ञावशिष्ठ है, यह मानकर स्वयं उपभोग में लाना चाहिये।

होली का त्यौहार कैसे मनाया जाय ?

किसी भी जाति के त्यौहार और उत्सव वहाँ के इतिहास और परम्परा के परिचायक होते हैं। उनसे उस जाति के ओज, शौर्य और अन्य गुणों का भी अनुमान लगाया जा सकता है। पर आजकल हमारे अधिकांश देशवासी त्यौहारों के मूल-तत्व को भूलकर उनको प्रायः उल्टे-सीधे ढङ्ग से मनाने लग गये हैं, जिससे लाभ के स्थान पर प्रायः हानि ही होती जान पड़ती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समाज में विशेष रूप से चार श्रेणियों के व्यक्ति दिखलाई पड़ा करते हैं। पहले प्रकार के व्यक्ति वे हैं, जो अपने स्वार्थ का ध्यान बहुत कम रखते हैं और अपनी शक्ति तथा साधनों का उपयोग संसार के हित के लिये करते हैं। दूसरी श्रेणी के मनुष्यों में शक्ति की अधिकता होती है और वे उस बल का प्रयोग सज्जनों की रक्षा तथा दुष्टों के दमन में करते हैं। तीसरे व्यक्ति वे होते हैं, जो ज्ञान और शारीरिक शक्ति का अभाव होते हुये भी आर्थिक दृष्टि से सफल होते हैं। वे कृषि, पशु, पालन और व्यापार द्वारा उचित ढंग से धन कमाकर समाज के अनेक अभावों को दूर करने में सहायक बनते हैं। चौथी श्रेणी उन मनुष्यों की होती है, जो ज्ञान, बल और धन से रहित होते हुये शारीरिक श्रम से समाज की अत्यन्त उपयोगी सेवा करते हैं। इन चारों प्रकार के मनुष्यों को हम भारतीय समाज के प्राचीन सङ्गठन के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के नाम से पुकार सकते हैं।

ये चारों श्रेणियों के व्यक्ति अपनी प्रवृत्ति के अनुसार समाज सेवा करते हुए एक-दूसरे को सहयोग व सहायता प्रदान करते रहते थे। अपने कर्तव्यों के स्मरणार्थ प्रत्येक श्रेणी का एक-एक त्यौहार भी नियत किया गया था। इनमें से श्रावणी ब्राह्मणों का त्यौहार है जिस पर वे किसी पवित्र जलाशय के तट पर अपने धार्मिक कर्तव्यों का स्मरण करते हुए नवीन यज्ञोपवीत धारण करते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि उस वर्ष द्विजत्व के कर्तव्य के पालन व सद्ज्ञान के प्रचार में दत्तचित्त रहेंगे। दशहरा क्षत्रियों का त्यौहार माना गया था। इस दिन पुरुषार्थी व्यक्ति अपने बल-पौरुष का अभ्यास कर हथियारों को साफ करके काम के लायक बनाते थे। दिवाली वैश्यों का त्यौहार माना गया था, जिसमें वे अपने आर्थिक कारोबार का सिंहावलोकन करके आगामी वर्ष के लिये बजट और योजना पर विचार करते थे। चौथा होली का त्यौहार है जिसमें श्रमजीवी वर्ग की ओर से सेवा और समानता के आदर्श की घोषणा की जाती थी।

वर्तमान समय में यद्यपि सभी त्यौहारों में अनेक दोष घुस गये हैं और उनका आदर्श स्वरूप अधिकांश में लोप हो गया है, परन्तु होली का रूप सबसे अधिक बिगड़ा है। वैसे इस त्यौहार के मनाने की जो प्राचीन परिपाटी प्रतीक रूप में अब भी प्रचलित है, उससे प्रकट होता है कि यह एक विशुद्ध सामूहिक यज्ञ है। इस सम्बन्ध में निम्न तथ्य ध्यान देने योग्य हैं—

(१) एक मास पूर्व शमी की लकड़ी गाड़कर फाल्गुण सुदी १५ को लकड़ी, कंडे इकट्ठे करके जलाना यज्ञ का ही रूप है।

(२) ज़लाने से पूर्व आचार्य पंडित द्वारा उसका पूजन होना और गाँव के मुखिया द्वारा पूजन करवाना यह यज्ञ के यजमान बनाये जाने का चिन्ह है।

(३) होली में नारियल के लच्छे लपेटकर डालना यज्ञ की पूर्णाहुति में नारियल चढ़ाने का चिन्ह है।

(४) इसके पूजन में मिठाई गुड़ आदि चढ़ाकर बच्चों में बाँटना यज्ञ में प्रसाद वितरण का लक्षण है।

(५) इसकी लपटों में, अग्नि में हविपात्र की बालों को पकाकर खाना भी यज्ञ का ही एक लक्षण है।

(६) होली एक ऐसा त्यौहार है जो ऋतुराज वसंत में आता है। इसी समय सर्दी का अन्त और ग्रीष्म का आगमन होता है। इस समय ऋतु-परिवर्तन से चेचक के रोग का प्रकोप होता है। इस संक्रामक रोग से बचने के लिये पुराने समय में टेसू के फूलों का रंग बनाकर एक-दूसरे पर डालने की प्रथा चलाई गई थी और यज्ञ की सामग्री में भी इन्हीं फूलों की अधिकता रखी गई थी जिससे वायु में उपस्थित रोग के कीटाणु नष्ट हो जायें। पर आज उस टेसू के लाभदायक रंग के स्थान पर हानिकारक विदेशी रंगों का प्रयोग किया जाता है और लोग उनके चटकीलेपन को पसन्द भी करते हैं। अब वह प्रथा बहुत विकृत हो गई है और लड़के तथा नवयुवक बुरे-बुरे रंग सर्वथा अनजान और भिन्न समाज वालों पर भी डाल देते हैं, जिससे अनेक बार खून-खराबी की नौबत तक आ जाती है और रंग की होली के बजाय खून की होली दिखलाई पड़ने लगती है। यह मूर्खता की पराकाष्ठा है, और ऐसे लोग-त्यौहार मनाने की बजाय देश तथा धर्म की हत्या करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(७) होली को पूर्वजों ने एक सामूहिक सफाई के त्यौहार के रूप में भी माना था। जैसे दिवाली पर प्रत्येक व्यक्ति निजी घर की लिपाई, पुताई और स्वच्छता करता है, उसी प्रकार होली पर समस्त ग्राम या कस्बे की सफाई का सामूहिक कार्यक्रम रखा जाता था। वसंत ऋतु में सब पेड़ों के पत्ते झड़-झड़ कर चारों और फैल जाते हैं, बहुत कुछ कूड़ा कबाड़ भी स्वभावतः इकट्ठा होता है, उस सबकी सफाई होली में कर दी जाती थी। पर अब लोग उस उद्देश्य को भूलकर दूसरों पर कीचड़ और धूल फैंकने को त्यौहार का अंग समझ बैठे हैं। इससे उल्टा लोगों का स्वाथ्य खराब होता है और अनेक बार आँख आदि में चोट भी लग जाती है।

(८) प्राचीन समय में होली प्रेम भाव को बढ़ाने वाला त्यौहार था। अगर वर्ष भर में आपस में कोई-झगड़े या मनमुटाव की बात हो गई हो तो इस दिन उसे भुलाकर सब लोग प्रेम से गले मिल लेते थे और पुरानी गलतियों के लिए एक-दूसरे को क्षमा करके फिर से मित्र सहयोगी बन जाते थे। अब भी इस दिन एक-दूसरे के यहाँ मिलने को जाते हैं, पर प्रायः नशा करके और गाली बककर झगड़ा पैदा कर लेते हैं, जो होली के उद्देश्य के सर्वथा प्रतिकूल है।

वास्तव में होली का त्यौहार हमारे समाज में सबसे अधिक सामूहिकता का परिचायक है और यदि इसे समझदारी के साथ मनाया जाय तो यह हमारे लिये अत्यन्त कल्याणकारी सिद्ध हो सकता है। जिस प्रकार होली के पौराणिक उपाख्यान में बतलाया गया है कि सच्चे भक्त प्रहलाद् ने असत्य और अन्याय का प्रतिरोध करके सत्य की रक्षा की थी और उसी की स्मृति में होली के त्यौहार की स्थापना की गई थी, उसी प्रकार हम भी यदि इस वास्तविक उद्देश्य का ध्यान रखकर होली का त्यौहार मनायें तो इस अवसर पर वर्तमान समय में होने वाली अनेक हानियों से बचकर इस त्यौहार को लोक कल्याण का एक प्रमुख साधन बना सकते हैं।

सामूहिक यज्ञ

होली एक सामूहिक यज्ञ है। इस दिन सभी उपासक मिलकर गाँवों वालों को साथ लेकर नगर से बाहर समिधा व कंडे संग्रह करके थोड़ा-थोड़ा हवन-सामिग्री इकट्ठा करके हवन (होली) करें। इसके लिये पहले से जो शमी वृक्ष (छोंकरा या खेजड़ी) की लकड़ी गाढ़ने की प्रथा है, उसे एक अच्छा लम्बा, चौड़ा और गहरा हवन कुण्ड खोदकर उसके बीच में खड़ा किया जावे। इसके बाद नित्य प्रति या सुविधानुसार सब लोग मिलकर गाँव के बाहर जावें और वहाँ से हवन की समिधाएँ (पलास, आम, पीपल, बड़, गूलर, खैर आदि को लकड़ी) तथा अरने उपले (कंडे) इकट्ठे करें और उन्हें किसी सुरक्षित स्थान पर जमा करते रहें। यदि सब साथ न जा सकें तो अपनी सुविधानुसार थोड़े-थोड़े लोग भिन्न-भिन्न समय भी जा सकते हैं। पर होली से पूर्व एक महीने के भीतर चार बार सबको अवश्य सम्मिलित होकर सामूहिक रूप से समिधाएँ इकट्ठी करने को जाना चाहिये।

(१) सामूहिक रूप से जाने वालों की वेषभूषा एक सी हो और वह यथासंभव बसंती रंग (हलके पीले रंग) की हो। उनके हाथों में कलाया बाँधकर तिलक लगा दिया जाय और साथ में शंख, घंटा, घड़ियाल और कीर्तन के साधन हों।

(२) सबके पास समिधाओं के संग्रह करने के साधन जैसे—कुल्हाड़ी, गैंती, हंसिया, टोकरी आदि में से कोई एक वस्तु हो।

(३) गाँव के बाहर जाकर सब-गायत्री मंत्र का जप करते हुये हवन के उपयुक्त औषधियों और समिधाओं का संग्रह आरम्भ कर दें। क्या-क्या वस्तु संग्रह करना है, यह सब लोगों को पहले ही समझा दिया जाय।

(४) जंगल को जाते समय शंख, घंटा, घड़ियाल बजाते और कीर्तन करते हुये जाना चाहिये। बीच-बीच में गायत्री परिवार के नारे और राम, कृष्ण भक्त प्रहलाद आदि के नामों का जय घोष करना चाहिये।

(५) निश्चित समय तक संग्रह करने के पश्चात् शंख बजाकर सबको एकत्रित कर लिया जावे और उन्हें अपने-अपने एकत्रित समान को व्यवस्थित ढंग से ले चलने को कहकर कीर्तन और जय ध्वनि करते हुये अपने निश्चित स्थान पर आना चाहिये। वहाँ शांति पाठ करके सबको विदा करना चाहिये और सामग्री को सुरक्षित स्थान में रख देना चाहिये। यह सामूहिक कार्य अगर किसी कारण वश अधिक न हो सके तो महीने में एकबार तो अवश्य हो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

(६) गाँव में घर-घर जाकर होलिका-यज्ञ के लिये हविपान्न, औषधियाँ, मेवा, गोला, घृत, शक्कर आदि सामग्री में से कोई एक वस्तु लाने की प्रार्थना करनी चाहिये।

(७) होली की निश्चित तिथि व समय पर यज्ञ स्थल पहुँचकर कुंड व होली का पूजन आचार्य (पंडित) द्वारा विधिवत् करना चाहिये।

(८) हवन होने के पश्चात् अपने साथ लाये नारियल, गोला, सुपाड़ी आदि से पूर्णाहुति करनी चाहिए तथा कीर्तन करते हुए ४ परिक्रमा लगानी चाहिए।

(९) इस हवन की उठती हुई ज्वालाओं में अपने-अपने खेत से लाए हुए पके अन्न की बालों का सेंकना चाहिए और सब को प्रसाद रूप में वितरण करके खाना चाहिए, जो अकेला खाता है सो पाप खाता है। अगर व्यक्तियों की संख्या अधिक हो तो एक साथ बहुत-सी मिलाकर सेक लें और उनको सबको वितरण कर दें। इस भुने अन्न को खाने से आँतों को लाभ होता है।

(१०) इसके पश्चात् होलिका की भस्म को मस्तक पर लगाकर सत्यव्रत प्रहलाद की तरह ईश्वर की उपासना में दृढ़ रहने का व्रत लेना चाहिए। दूसरे दिन चैत्रमास आरम्भ हो जाता है और होलिका दाह की कल्पना करके प्रतिपदा को स्नान का त्यौहार मानते हैं। इसके लिए केसु (या टेसू) के फूल रात को ही भिगोकर रंग तैयार कर लेना चाहिये। सबको अपने साथ यही रंग लेकर एकस्थान पर इकट्ठा हो प्रेम पूर्वक होली का रंग खेलना चाहिये। मस्तक पर गुलाल, या चन्दन, रोली आदि लगा देना चाहिये। केसु के फूलों का रंग स्वास्थ्य लिये लाभ जनक होता है, इसलिये जहाँ पैदा न होते हो वहाँ व्यापारियों को बाहर से मँगवाकर देना चाहिये।

रात्रि में प्रवचन

दोपहर तक रंग आदि खेलने से निवृत होकर स्वच्छ पानी से स्नान करके नवीन वस्त्र धारण कर मित्रों से भेंट करना चाहिये। सायंकाल के पश्चात् किसी सार्वजनिक स्थान में सभा की जाय। उसमें किसी माननीय व्यक्ति को सभापति बनाकर होली के महत्व, उसमें उत्पन्न हो गई कुरीतियों तथा आगामी सुधारों के सम्बन्ध में प्रवचन किये जायें। होलिका का उपाख्यान सुनाकर उससे प्राप्त होने वाली शिक्षाओं को समझाया जाय तथा हो सके तो जनता के मनोरंजनार्थ भक्त प्रहलाद का नाटक भी दिखलाया जाय। इस अवसर पर जहाँ जैसी सुविधा हो सुरिचपूर्ण गायन, भजन, कीर्तन, कवि सम्मेलन आदि का आयोजन भी किया जा सकता है।

भैया दूज

तीसरे दिन भाई बहिन का त्यौहार होता है, जिसमें बहिन अच्छे भोजन बना भाई को खिलाती है और वह उसे कुछ भेंट देता है। यह भी बड़े महत्व का त्यौहार है। वास्तव में ग्राम में उत्पन्न सभी बालक-बालिकायें परस्पर भाई-बहिन ही होते हैं। वर्तमान समय में मूर्खता तथा संकीर्णता के कारण यह भावना लुप्त होती जाती है। अब हमको प्रयत्न करके उसे पुनः जागृत करना है। सभी महिलायें हमारी माताएँ और बहिनें हैं इसी भावना का प्रतीक यह भैया दूज का त्यौहार है। इसलिये गाँव के सभी बालक-बालिकाओं को एक स्थान पर इकट्ठा करके बालिकाओं द्वारा बालकों के तिलक कराना और कलावा बँधवाना चाहिये, तथा बालकों द्वारा उनको कुछ बतासे या अन्य मिठाई प्रसाद के रूप में दिलवाना चाहिये। यह कार्यक्रम प्रति वर्ष होते रहने से आजकल के युवकों की अश्लील भावनाएँ शुद्ध होने लगेंगी तथा हमारे समाज पुनः माता-पुत्र और भाई-बहिन की शुद्ध भावना का अधिकतम रूप में प्रचार होने लगेगा।

इस प्रकार होलिकोत्सव मनाने से हम में सामूहिकता की भावना की वृद्धि होगी और वर्तमान समय में इसने जो वीभत्स रूप ग्रहण कर लिया है, जिससे अधिकांश भले लोग इससे नाक भौं सिकोड़ने लगे हैं, उसका भी संशोधन हो जायेगा। इस अवसर पर विधि पूर्वक यज्ञ करने से इस मौसम की बीमारियों से रक्षा होगी स्वास्थ्य तथा सद्भावना की वृद्धि होगी, और फसल में पौष्टिक तत्व बढ़ेंगे। परस्पर के रागद्वेष और मनोमालिन्य के भाव मिटकर परस्पर सहयोग और स्नेह का व्यवहार होने लगेगा। हिन्दू समाज में फैला जात-पाँत और ऊँच-नीच का भूत शांत होकर एकता की वृद्धि होगी। इस प्रकार होली का त्यौहार अश्लीलता और कुत्सित का भंडार होने के स्थान पर हमारे जातीय सगंठन को सुदृढ़ बनाने वाला तथा नर-नारियों में सद्भावों का विकास करने वाला, बन सकेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होलिकापर्व—माहात्म्य बोध

होली पर्व सारे भारत के हर्षोल्लास का पर्व है, जिसमें छोटे-बड़े का भेद भुलाकर जनमानस एकाकार होकर तरंगित होने लगता है।

यह यज्ञीय पर्व है। नई फसल पकने लगती है, उसके उल्लास में सामूहिक यज्ञ के रूप में होली नवीन अन्न का यज्ञ करके उसके बाद उपयोग में लाने का क्रम बनाया गया है। कृषि प्रधान देश की यज्ञीय संस्कृति के सर्वथा अनुकूल यह परिपाटी बनाई गई है।

पुराण कालीन आदर्श सत्याग्रही भक्त प्रहलाद के दमन के लिए हिरण्यकश्यप के छल-प्रपंच सफल न हो सके, उसे भस्म करने के प्रयास में होलिका जल मरी और प्रहलाद तपे कंचन बन गये। खीज-क्रोध से उन्मत्त हिरण्यकश्य जब स्वयं उसे मारने दौड़ा तो नृसिंह भगवान ने प्रकट होकर उसे समाप्त कर दिया। इस कथा की महान प्रेरणाओं को होली के यज्ञीय वातावरण में उभारा जाना उपयुक्त है।

यह राष्ट्रीय चेतना के जागरण का पर्व है। जहाँ वर्गभेद है, वहाँ समस्त साधना होते हुए भी क्लेश और अशक्तता ही रहेगी, जिनमें भ्रातृत्व सहकार है, वे अपने अल्प साधनों भी प्रसन्न और अजेय रहेंगे, इसलिए इसे समता का पर्व भी मानते हैं। कार्य विभाजन के लिए किये गये चार वर्णों में कोई दूसरे को हीन न माने, इसलिए चार प्रमुख पर्वों पर चारों वर्णों को प्रमुख महत्व देने की परम्परा रखी गई है। होली पर्व में शुद्ध वर्ग को प्रधान महत्व देकर समता-सिद्धान्त का चरितार्थ किया जाता रहा है।

इन सब प्रेरणाओं विशेषताओं को उभारने-पनपाने के लिए होली पर्व का सामूहिक आयोजन अतीव उपयोगी है। प्रभावशाली लोकसेवी भावना पूर्वक इसके लिए प्रयत्नरत हों तो बड़े आकर्षक और प्रभावशाली रूप में यह मनाया जा सकता है।

होली पर्व पर जो कुरीतियाँ पनप गई हैं, उन्हें निरस्त करने में भी सामूहिक पर्व आयोजन से बड़ी सहायता मिलती है। उत्साह बना रहे, पर उसे और उच्छृंखल न बनने दिया जाय यह कलाकारिता है, इसे प्रभावशाली लोकसेवी थोड़े प्रयास-पुरुषार्थ सूझ-बूझ से साध सकते हैं। कुछ प्रयोग इस प्रकार किये जा सकते हैं—

होलिका दहन वाले दिन टोली बनाकर निकलें तथा घर-घर से अश्लील चित्र, अश्लील साहित्य माँगे, जो ऐसे चित्र दें उनके नाम नोट करते चलें। होलिका दहन के समय दोषदहन क्रम में उन सबको होली में जलायें। होली पर्व पर चन्दा हो, पूजन में चढ़ोत्तरी हो उससे अच्छे वाक्य-चित्र खरीदकर उनके यहाँ पहुँचायें जिनने अश्लील चित्र निकाल दिये थे। इसके लिए कुछ सद्भावनाशील सम्पन्नों से अलग से भी अनुदान लिया जा सकता है।

होलिका दहन के दूसरे दिन सबेरे लोग धूल-कीचड़ उछालते हैं, इसे सामूहिक सफाई का रूप दिया जा सकता है। गन्दगी की अर्थी निकालने, सामूहिक जूलूस आदि से इस कुप्रथा को मोड़ दिया जा सकता है। ऐसे प्रयोग गाँवों-कस्बों में कुछ साहसी समाजसेवी आसानी से कर सकते हैं। ऐसी स्थिति न दीखे तो केवल पर्व पूजन क्रम से ही संतोष किया जा सकता है।

।। पूर्व व्यवस्था ।।

होली पर्व मनाने के लिए स्थानीय साधनों-परिस्थितियों के अनुसार पहले से रूपरेखा बना लेनी चाहिए। सामूहिक पर्व पूजन के लिए परम्परागत होलिका दहन के पूर्व सांयकाल का समय उपयुक्त रहता है सूर्यास्त के बाद किसी निर्धारित देवस्थल पर सभी लोग एकत्रित हों आने वाले सभी नर-नारियों को यथा स्थान पंक्तिबद्ध बिठालने की व्यवस्था रहे। निम्नांकित सामान तथा व्यवस्थायें पहले जुटा लें—

पूजन मंच आकर्षक हो, उस पर नृसिंह भगवान का चित्र भी आवश्यक हो।

सामान्य पूजन सामग्री के साथ समतादेवी के पूजन के लिए चावल की तीन ढेरियाँ पूजा मंच पर पहले से लगाकर रखें। मातृभूमि पूजन के लिए मृतिका पिण्ड (मिट्टी का छोटा ढेला) भी रखें। स्वस्तिवाचन पुष्पांजलि आदि के लिए पर्याप्त मात्रा में पुष्प अक्षत रहे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नवान्न यज्ञ के लिए गेहूँ की बाल, चने के बूट आदि तैयार रहें, इन्हें भूनकर चीनी की गोलियाँ इलाइचीदाने के साथ मिलाकर प्रसाद बाँटा जा सकता है।

।। क्रम व्यवस्था ।।

पर्व आयोजन स्थल पर सबको यथास्थान बिठाकर संगीत आदि संक्षिप्त उद्‌बोधन से प्रेरणाप्रद वातावरण बनाकर पर्व पूजन क्रम प्रारम्भ किया जाय।

सामान्य क्रम पूरा करने के बाद भगवान नृसिंह का आवाहन करके षोडशोपचार पूजन करें। उसके बाद मातृभूमि पूजन-धारण तथा समतादेवी का पूजन तथा क्षमार्वणी करें।

क्षमार्वणी के साथ छोड़े जाने वाले दोष-दुर्गुणों को कागज की पर्चियों पर लिखकर ले लें, इन्हें होली के समय दोषदहन क्रम में होली में झोंक दिया जाय।

विशेष पूजन क्रम समाप्त होने पर यदि यज्ञ करने की स्थिति है तो विधिवत गायत्री यज्ञ करें। पूर्णाहुति से पहले उसी में नया अन्न भूनें तथा उसकी आहुति दें। यज्ञ की अग्नि सुरक्षित रखें। होलिका दहन यज्ञाग्नि से ही करायें। यदि यज्ञ नहीं करना है तो दीपयज्ञ करके अन्य पर्वों की तरह समापन करें, उस स्थिति में होली जलाने के समय अग्नि स्थापना मन्त्र के साथ अग्नि प्रवेश करायें, नवान्न उसी में भूनें तथा उसकी आहुति डालें।

होली में दोषदहन क्रम चलायें। दोष लिखी हुई पर्चियाँ एक साथ होली में जलायें। अश्लील चित्र, केलेण्डर आदि एकत्रित किये गए हों तो वह भी झोंकें, इस क्रम को बड़ा प्रभावशाली बनाया जा सकता है। पूजन क्रम समाप्ति के बाद अथवा होली जलाने पर परस्पर मृतिका भस्म लगाकर प्रणाम करें गले मिलें।

।। नृसिंह पूजन ।।

दुष्टजनों के अन्याय और अत्याचार से पीड़ित व्यक्तियों की रक्षा सेवा तथा उद्धार करने वाला व्यक्ति नृसिंह कहलाता है। हम इन बातों को जीवन में उतारकर अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठायें, इससे पीड़ित लोगों का उद्धार करें। इसके लिए प्रतीक में नृसिंह पूजन किया जाता है।

क्रिया और भावना—हाथ में अक्षत पुष्प लेकर नृसिंह भगवान का आवाहन मन्त्र बोलें। भावना करें कि दुर्बल, साधनहीन, आदर्शवादियों के समर्थक, समर्थ सम्पन्न, अनाचारियों के काल भगवान नृसिंह की चेतना यहाँ अवतरित हो रही है। इसके संसर्ग से समाज का कायाकल्प होने की सम्भावना बनेगी।

ॐ नृसिंहाय विद्‌महे। वज्रनखाय धीमहि। तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात्।। ॐ श्री नृसिंह भगवते नमः। नृसिंहं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

आवाहन के बाद सबके हाथ में अक्षत पुष्प देकर प्रतिनिधि से पुरुष सूक्त के साथ षोडशोपचार पूजन करायें। अन्त में पुष्पांजलि के समय सबके पुष्प एकत्रित करके अर्पित किये जायें।

।। मातृभूमि पूजन ।।

मिट्‌टी, इस धरती की रज हमें उसके उपकारों की याद दिलाती है, जिस पर खेले हैं, बड़े हुए हैं। जिसकी गोद में हमने शिशु की तरह उछल-कूद की है, जिसके पदार्थों से हमारा जीवन बढ़ा-चढ़ा है, ऐसी मातृभूमि स्वदेश के लिए अपनी श्रद्धा, भक्ति, निष्ठा को व्यक्त करने के लिए उसकी रज का पूजन, उसको मस्तक पर धारण करना, उसके प्रति कर्तव्यों का संकल्प लेना आवश्यक होता है।

मृतिका पूजन करने के लिए एक मिट्‌टी की वेदी पर मृतिका पिण्ड को पुष्प, रोली, कलावा, चन्दनादि से भली भाँति सुसज्जित करना चाहिए। तत्पश्चात् निम्न मन्त्र बोलते हुए उसकी पूजा करें।

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः।। ॐ पृथिव्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

—ऋग्वेद १/२२/१३

।। त्रिधा समता देवी पूजन ।।

भेद-विभेद को मिटाकर समता को अपनानां मानव समाज के उत्थान, विकास एवं कल्याण के लिए आवश्यक होता है। जो समाज जितना एक ओर संगठित होगा, वह उतनी ही उन्नति की ओर बढ़ेगा। इसके विपरीत भेद-विभेद में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

असमानताओं में बँटा हुआ विश्रंखलित समाज नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है, उसे दूसरों के सामने झुकना पड़ता है, पददलित होना पड़ता है, समाज की शक्ति क्षमता में एकता में और संगठन में ही निहित है।

एक चौकी पर चावलों की तीन ढेरियाँ रखकर उनका निम्न मन्त्रों से विधिवत् पूजन करना चाहिए। स्मरण रहे एक ढेरी लिंग भेद को मिटाने की प्रतीक है दूसरी जाति भेद और तीसरी अर्थभेद अर्थात् असमानताओं को दूर करने के लिए। इस प्रकार इन तीन समानताओं के प्रतीक के रूप में यह पूजन किया जाता है। भावना करें कि पूजन के साथ विषमता को निरस्त करने वाले समत्व भाव का संचार सब में हो रहा है।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

पूजन के बाद यदि समय हो तो यज्ञ करें। अन्यथा दीपयज्ञ करके आगे का क्रम वहीं पूरा कर लें। यदि होली के स्थल पर भीड़ को नियन्त्रित रखते हुए प्रेरणा संचार की स्थिति हो तो ही वहाँ के लिए अगले क्रम जोड़ें अन्यथा पूजा स्थल पर ही सारे उपचार भाव भरे वातावरण में करा लें। होली परम्परागत ढंग से ही जलने दें। स्थिति के अनुरुप विवेकपूर्वक निर्धारण करें।

।। क्षमावाणी।।

स्मरण रहे होली समता का पर्व है। इस अवसर पर छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष, ऊँच-नीच, गरीब-धनवान का भेद भुलाकर सबसे अपने अपराधों की, दुष्कर्मों की क्षमा माँगना, भविष्य में ऐसा न करने का व्रत लेना तथा अपनी भूलों-पर पश्चाताप करना समता के भावों को बलवान और जागरूक बनाने के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

सभी लोग अपने-अपने हाथों को अञ्जलिबद्ध करके निम्न मंत्र बोलते हुए द्वेष दुर्भाव छोड़ने के रूप में जलाञ्जलि दें। स्मरण रहे आचार्य सभी की अञ्जलि में थोड़ा जल देकर मन्त्रोच्चार प्रारम्भ करावे।

ॐ मित्रस्य मा चक्षुषेक्षध्वमग्नयः सगराः सगरास्थ सगरेण नाम्ना रौद्रेणानीकेन पात माऽग्नयः पिपृत माऽग्नयो गोपायत मा नमो वोऽस्तु मा मा हिꣳसिष्ट। —यजु. ५/३४

मन्त्रोच्चार के बाद अञ्जलि का जल सब लोग भूमि पर छोड़ दें और जिनके प्रति भी मन में जो द्वेष-दुर्भाव हो त्याग दें।

।। रज-धारणम्।।

मातृभूमि की रज मस्तक पर धारण करके हम उसके प्रति अपना सम्मान ही प्रकट नहीं करते वरन् अपना जीवन धन्य बनाते हैं। उसे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान देने के लिये मस्तक, कण्ठ, हृदय, भुजाओं में धारण करते हैं, इससे तात्पर्य यह है कि उन अंगों के रहते हुए हम मातृभूमि के प्रति कर्तव्य, उत्तरदायित्व से विलग न हों।

सबके बाँये हाथ में थोड़ी-थोड़ी मिट्टी पहुँचायें। मन्त्र के साथ ललाट, बाहुबल, कण्ठ एवं हृदय आदि में लगावें।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्।
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले।
ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषमिति हृदि।

—यजु. ३/६२

।। नवान्न यज्ञ।।

भारतीय आदर्शों के अनुसार प्रत्येक शुभ पदार्थ, नई वस्तु भगवान को समर्पित करके उनके प्रसाद के रूप में, यज्ञवशिष्ट रूप से ग्रहण की जाती है। होली के अवसर पर आये नवान्न को भी हम भगवान का प्रसाद बनाकर ग्रहण करें, इसलिये यज्ञ में नवान्न की आहुतियाँ दी जाती हैं। इसे नवशस्येशिष्ट कहते हैं।

नवान्न को निम्न मन्त्र बोलते हुए यज्ञाग्नि में भून लें।

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

—यजु. ११/८३

तत्पश्चात् प्रसाद वितरण और जय घोष के बाद क्रम समाप्त किया जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिशिष्ट

अन्य व्रत और त्यौहार

यहाँ तक हमने जिन त्यौहारों और व्रतों का वर्णन किया है, उनके सिवाय भी बहुत-से व्रत आदि जनता में प्रचलित हैं। इनमें से अनेक तो ऐसे हैं जो अभी सौ-दौ-सौ वर्ष के भीतर किसी घटनावश किसी एक प्रदेश की जनता में चल पड़े हैं ओर उनका उल्लेख किसी प्राचीन ग्रन्थ या शास्त्र आदि में नहीं है। जैसे हमको व्रतों और त्यौहारों की एक पुस्तक में 'औसान बीबी की पूजा' 'आस भाई की पूजा' 'गाजबीज की पूजा' 'दशारानी का व्रत' 'पूजूनो पूनो' 'अहोई आठें' 'बछा बाछा व्रत' आदि अनेक ऐसे व्रतोत्सवों का उल्लेख मिला जो न तो सब प्रदेशों में मिलते हैं और न जिनका नाम शास्त्रों में आया है। इसी के साथ-साथ पुराणों में बहुसंख्यक ऐसे व्रत दिए गए हैं, जिनका प्रचार अब सर्वथा बंद हो चुका है और जिनको कोई जानता ही नहीं है। इस प्रकार हिंदुओं के व्रत और त्यौहारों की पूर्णसंख्या बहुत बड़ी है और उन सबका वर्णन करने से पुस्तक का विस्तार अनावश्यक रूप से बढ़ सकता है। तो भी हम यह आवश्यक समझते हैं कि धर्मशास्त्रों में वर्णित व्रतोत्सवों की एक सूची यहाँ दे दी जाए, जिससे पाठक उनका साधारण परिचय पा सकें और जिसको आवश्यकता हो वह उनका हाल 'व्रतराज' आदि किसी बड़े ग्रंथ से मालूम करके उन पर आचरण कर सके।

(१) **अक्षय नवमी**—कार्तिक शुक्ल नवमी को आँवले के वृक्ष की पूजा की जाती है, इसे 'धात्री नवमी' अथवा 'कुष्मांड नवमी' भी कहते हैं।

(२) **अखंड एकादशी**—आश्विन शुक्ल ११ का व्रत, बामन पुराण के अनुसार।

(३) **अंगारक चतुर्थी**—जिस किसी मास में मंगलवार को चतुर्थी पड़े तो मत्स्य पुराण के अनुसार उस दिन अंगारक चतुर्थी का व्रत करना चाहिए।

(४) **अचला सप्तमी**—यह स्त्रियों को सौंदर्य और सौभाग्य देने वाला व्रत है, जो माघ शुक्ल सप्तमी को किया जाता है।

(५) **अदारिद्र षष्ठी**—स्कंद पुराण के अनुसार एक वर्ष तक प्रत्येक षष्ठी को यह व्रत करना होता है।

(६) **अर्द्धोदय व्रत**—स्कंद पुराण के अनुसार माघ मास की अमावस्या के दिन यदि रविवार, व्यर्तायात योग और श्रवण नक्षत्र हो तो अर्द्धोदय योग होता है और उस दिन व्रत रखना बड़ा पुण्यदायक होता है।

(७) **अमावस्या व्रत**—कूर्म पुराण के अनुसार प्रत्येक अमावस्या को शिवजी का यह व्रत करना चाहिए।

(८) **अरुंधती व्रत**—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से तृतीया तक किया जाता है। यह स्त्रियों को वैधव्य से बचाने वाला है।

(९) **अशून्य शयन द्वितीया व्रत**—भविष्य पुराण के अनुसार सावन से लेकर चौमासे भर हर कृष्ण पक्ष की द्वितीया को यह व्रत किया जाता है।

(१०) **अहोई आठें**—कार्तिक कृष्ण अष्टमी को संतान की कुशलता के लिए व्रत रखा जाता है।

(११) **आदित्य व्रत**—साल भर तक प्रत्येक रविवार का व्रत।

(१२) **कजरी व्रत**—श्रावण शुक्ल सप्तमी को जौ बोए जाते हैं ओर व्रत रखा जाता है।

(१३) **करवा चौथ**—कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को स्त्रियों का व्रत।

(१४) **कार्तिक स्नान**—कार्तिक के महीने भर सूर्योदय से पहिले स्नान करके संयमपूर्वक रहना पड़ता है तथा दान-पुण्य करना पड़ता है।

(१५) **कार्तिकीय पूर्णिमा**—आँवले के वृक्ष के नीचे भोज करने का विशेष महात्म्य माना जाता है।

(१६) **काल भैरव अष्टमी**—मार्गशीर्ष कृष्ण ८ को भैरवजी की जयंन्ती मनाई जाती है और व्रत रखा जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(१७) **कोजागर व्रत**—आश्विन कृष्ण पूर्णिमा को मनाया जाता है, इसको शरद पूर्णमासी भी कहते हैं। कोजागर का शुद्ध रूप है 'कोजागृति' अर्थात् कौन जग रहा है ? आज जागरण करने का विशेष महात्म्य है।

(१८) **कूर्म द्वादशी व्रत**—भविष्य पुराण के अनुसार पौष शुक्ल १२ को किया जाता है।

(१९) **गनगौर**—चैत्र शुक्ल ३ को सौभाग्यवती स्त्रियाँ गौरा-पार्वती का पूजन करती हैं।

(२०) **गीता जयंती**—मार्गशीर्ष शुक्ल १० को भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया, उसी का उत्सव मनाया जाता है।

(२१) **गोविंद द्वादशी व्रत**—पुष्य नक्षत्र युक्त फाल्गुण कृष्ण द्वादशी को गोविंद द्वादशी कहते हैं।

(२२) **चंडिका व्रत**—प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशी को यह व्रत साल भर तक करना पड़ता है।

(२३) **चातुर्मास्य व्रत**—भविष्योत्तर पुराण के अनुसार यह व्रत आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक किया जाता है।

(२४) **चंद्रव्रत**—बारह पुराणों में बतलाए विधानानुसार यह व्रत प्रत्येक पूर्णिमा को पंद्रह वर्ष तक किया जाता है।

(२५) **चंद्रायण व्रत**—चंद्रमा के ह्रास के साथ आहार में ह्रास और चंद्रमा की वृद्धि के साथ आहार में वृद्धि करके एक महीने में यह व्रत पूरा किया जाता है। यह महापातकों को नष्ट करने वाला है।

(२६) **जानकी जयंती**—फाल्गुण कृष्ण अष्टमी को सीता महारानी की जन्म-तिथि मनाई जाती है।

(२७) **जीवत्पुत्रिका व्रत**—आश्विन शुक्ल ८ को संतान के हितार्थ रखा जाता है।

(२८) **तिल द्वादशी व्रत**—माघ मास की कृष्ण पक्ष की द्वादशी को पूर्वाषाढ़ा या मूल नक्षत्र हो तो यह व्रत रखा जाता है।

(२९) **तुलसी विवाह**—कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन तुलसी के साथ विष्णु के विवाह का उत्सव होता है। तुलसी का एक नाम विष्णु-प्रिया भी है।

(३०) **त्र्यम्बक व्रत**—चतुर्दशी तिथि में भगवान शंकर के लिए यह व्रत किया जाता है।

(३१) **त्रिपुरोत्सव**—कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को जिस दिन भगवान शंकर ने त्रिपुरासुर का नाश किया था।

(३२) **दत्तात्रेय जयंती**—मार्गशीर्ष पूर्णिमा को भगवान दत्तात्रेय की जन्म-तिथि।

(३३) **नरसिंह चतुर्दशी व्रत**—वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को नरसिंह अवतार की जयंती।

(३४) **नागपंचमी**—श्रावण शुक्ल पंचमी को नागदेवता की पूजा।

(३५) **परशुराम जयंती**—भगवान के छठे अवतार महा तेजस्वी परशुराम जी की जयंती का उत्सव।

(३६) **बहुला व्रत**—भाद्रपद कृष्ण ४ को स्त्रियों द्वारा संतानोत्पत्ति निमित्त किया जाता है।

(३७) **भीष्माष्टमी**—माघ शुक्ल अष्टमी को जिस दिन भीष्म-पितामह ने मुक्ति पाई।

(३८) **भौमवार व्रत**—स्कंद पुराण के अनुसार प्रत्येक मंगलवार को यह करना होता है।

(३९) **महालया**—आश्विन कृष्ण पक्ष की अमावस्या को जिस दिन पितृगण पुनः अपने लोक में वापिस जाते हैं।

(४०) **महालक्ष्मी व्रत**—भाद्रपद शुक्ल ८ से आश्विन कृष्ण ८ तक सोलह दिन में महालक्ष्मी के पूजन का अनुष्ठान पूर्ण होता है।

(४१) **माघी पूर्णिमा**—माघ मास के अंतिम दिन का स्नान जो विशेष रूप से तीर्थराज प्रयाग में पुण्य देने वाला माना जाता है।

(४२) **मातृ नवमी व्रत**—भविष्योत्तर पुराण के अनुसार यह व्रत आश्विन कृष्ण पक्ष की नवमी को किया जाता है।

(४३) **मौन व्रत**—यह व्रत स्कंद पुराण के अनुसार श्रावण शुक्ल १५ को रखा जाता है।

(४४) **मौनी अमावस्या**—माघ कृष्ण १५ को तीर्थराज प्रयाग में मनाई जाती है। इस दिन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मौन रहकर धार्मिक कृत्य करने का विशेष माहात्म्य है।

(४५) **रथयात्रा**—आषाढ़ शुक्ल २ को भगवान की सवारी निकाली जाती है।

(४६) **लामार्क षष्ठी**—यह बलदाऊजी की जन्मतिथि है। पूवी जिलों में इसे 'ललही छट्ट' के नाम से पुकारा जाता है। पुत्रों के कल्याणार्थ स्त्रियाँ व्रत रखती हैं और बैलों द्वारा जोती-बोई कोई चीज नहीं खातीं।

(४७) **वट सावित्री**—जेठ सुदी तेरस से पूर्णमासी तक किया जाता है। यह सौभाग्यवती स्त्रियों को व्रत है। इसी दिन सावित्री ने अपने पति सत्यवान की यमराज से प्राण-रक्षा की थी।

(४८) **बामन द्वादशी**—चेत्र शुक्ल १४ द्वादशी को भगवान बामन अवतार की जयंती।

(५६) **बैकुंठ चतुदर्शी**—कार्तिक शुक्ल १४ को विष्णु भगवान की पूजा का व्रत है।

(५०) **व्यास पूजा अथवा गुरु पूजा**—अषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरु की पूजा का त्यौहार।

(५१) **शनि व्रत**—प्रत्येक शनिवार को शनि ग्रह के प्रीत्यर्थ किया जाता है।

(५२) **संतान सप्तमी**—भाद्रपद शुक्ल ७ को शिव-पार्वती की पूजा की जाती है। इसे मुक्ताभरण व्रत भी कहते हैं।

(५३) **सकट चौथ**—गणेशजी का यह व्रत माघ कृष्ण ४ को रखा जाता है। इस दिन तिल चढ़ाने का महात्म्य है।

(५४) **सत्यनारायण व्रत**—सत्यनारायण के व्रत की कोई तिथि नियत नहीं है, तो भी एकादशी, पूर्णमासी, अमावस्या की तिथियाँ उत्तम मानी गई हैं। व्रत के साथ कथा भी सुनी जाती है।

(५५) **सूर्य षष्ठी**—कार्तिक शुक्ल ६ को यह व्रत संतान की दीर्घायु के लिए किया जाता है।

(५६) **सोमवार व्रत**—प्रत्येक सोमवार को भगवान शंकर के प्रीत्यर्थ प्रदोष व्रत रखने का नियम है।

(५७) **स्वर्ण-गौरी-व्रत**—श्रावण शुक्ल ३ को रखा जाता है। इसे 'सुकृत तृतीया' भी कहते हैं।

(५८) **हरितालिका**—यह स्त्रियों के सौभाग्य का सबसे बड़ा व्रत माना जाता है। इसमें दिन-रात जल भी ग्रहण नहीं किया जाता। यह भाद्रपद शुक्ल ३ को किया जाता है।

(५६) **हनुमान जयंती**—चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को महापराक्रमी, हनुमानजी की जयंती मनाई जाती है।

(६०) **हरिशयनी एकादशी**—आषाढ़ शुक्ल एकादशी को यह व्रत रखा जाता है, जो बड़े-बड़े संकटों का निवारण करने वाला है।

इनके अतिरिक्त भविष्य पुराण में और भी अनेक व्रतों का उल्लेख है, जिनका अब कहीं प्रचलन नहीं है। समय के प्रभाव से और समाज की परिस्थितियाँ बदल जाने से जनता उनको न करती है, न जानती है। हाँ, कोई एक व्यक्ति अपनी विशेष मनोकामना के लिए उनको कर सकते हैं। इससे हम केवल उनके नाम मात्र यहाँ दिए देते हैं, जिनको विवरण देखना हो वे उक्त पुराण में देख सकते हैं—

(६१) रथ सप्तमी, (६२) अपराजिता सप्तमी,
(६३) मार्तण्ड सप्तमी, (६४) शकट व्रत,
(६५) तिलक व्रत, (६६) अशोक व्रत,
(६७) करवीर व्रत, (६८) कोकिल व्रत,
(६६) भद्र व्रत, (७०) ललिता व्रत,
(७१) उमा-महेश्वर व्रत, (७२) सौभाग्य शयन व्रत
(७३) अनंत फलदा तृतीया, (७४) शांति व्रत,
(७५) सरस्वती व्रत, (७६) श्री पंचमी व्रत,
(७७) विशोक षष्ठी, (७८) कमल षष्ठी,
(७६) कुक्कुटी व्रत, (८०) बुधाष्टमी,
(८१) दूर्वाष्टमी, (८२) सोमाष्टमी,
(८३) श्री वृक्ष नवमी, (८४) उल्का नवमी,
(८५) दशवतार व्रत, (८६) रोहिणी व्रत,
(८७) अवियोग व्रत, (८८) मल्ल द्वादशी,
(८६) अखंड द्वादशी (६०) मदन द्वादशी,
(६१) अंक पद व्रत, (६२) दुर्गंध नाशन व्रत,
(६३) यमादर्शन व्रत, (६४) अनंग त्रयोदशी,
(६५) पाली व्रत, (६६) रंभा व्रत,
(६७) श्रवणिका व्रत, (६८) नक्त व्रत,
(६६) नक्षत्र-पुरुष व्रत, (१००) ग्रह-नक्षत्र व्रत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राचीन काल के कुछ विशेष व्रत

प्राचीन समय में हमारे देश में व्रतों का माहात्म्य इतना अधिक बताया गया था कि सभी पुराणों के हजारों पृष्ठ उससे भरे हैं और जिस पुराण को देखो नये-नये व्रतों के नाम और विधान मिलते चले जाते हैं। इनमें से कितने ही विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिये होते थे। उदाहरणार्थ "चान्द्रायण व्रत" द्वारा अनेक प्रकार के पातकों से निष्कृति का वर्णन मिलता है। उस समय धार्मिक समुदाय में इस व्रत का बहुत अधिक प्रचार था और इसे प्रायश्चित का एक प्रमुख साधन माना जाता था। इसमें एक मास तक भोजन को बहुत ही नियमित और सीमित किया जाता था, जिससे मनुष्य को आत्मिक पवित्रता तथा शांति मिलने के साथ ही, शारीरिक स्वास्थ्य की भी प्राप्ति होती थी। इसके क्रछ चान्द्रायण और तप्त-क्रछ-चान्द्रायण आदि अन्य भेद भी हैं, जो बहुत कष्ट साध्य होते हैं और विशेष पाप कर्मों के प्रायश्चित स्वरूप किये जाते. हैं।

वाराह पुराण के व्रत

इसमें अनेक ऐसे व्रतों का वर्णन पाया जाता है, जो अन्य पुराणों में वर्णित व्रतों से भिन्न हैं, जैसे 'धरणी व्रत' शुभ व्रत' 'धन्य व्रत' 'क्रांति व्रत' सौभाग्यव्रत' 'अविघ्नव्रत' 'शान्ति व्रत' 'काम व्रत' आरोग्य व्रत' 'पुत्र प्राप्ति व्रत' 'शौर्य व्रत' 'सार्वभौम व्रत' आदि। "धारणी व्रत" कार्तिक मास की शुक्ला द्वादशी को किया जाता है। इसको सर्वप्रथम जल में डूबी हुई पृथ्वी ने किया था, जिसके प्रभाव से विष्णु ने वाराह रूप धारण करके उसका उद्धार किया। यह धन-धान्य और राज्य प्रदान करने वाला है। "आरोग्य व्रत" में सूर्य का पूजन सप्तमी को किया जाता है, जिसके फल से शारीरिक आरोग्य की वृद्धि होती है। "शौर्य व्रत" में आश्विन शुक्ल ६ को दुर्गाजी का व्रत किया जाता है। इससे शौर्य की वृद्धि होकर राज्य की प्राप्ति होती है। कार्तिक मास की दशमी को "सार्वभौम व्रत" किया जाता है जिसके फल से साधक को चक्रवर्ती पद की प्राप्ति होती है।

मत्स्य पुराण के व्रत

इसमें "भीमद्वादशी" का व्रत विशेषतायुक्त है। भीमसेन अपने समय के सर्वश्रेष्ठ मल्ल थे। उनकी खुराक बहुत अधिक थी और इससे उनका नाम "वृकोदर' भी पड़ गया था। अपनी तीक्ष्ण जठाराग्नि के कारण उनके लिये व्रत-उपवास करना बड़ा कठिन जान पड़ता था। उसने जब अपनी यह समस्या भगवान कृष्ण के सामने रखी तो उन्होंने बतलाया कि यदि तुम अष्टमी, चतुदर्शी आदि तिथियों में नियमित रूप से उपवास करने में असमर्थ हो तो वर्ष में केवल एक दिन माघ शुक्ल एकादशी को उपवास करके द्वादशी के दिन क्षीर भोजन करने से महान् पुण्य की प्राप्ति हो सकती है। इस व्रत को विधि-विधान पूर्वक करने से तुम अवश्य ही परमगति के अधिकारी बन जाओगे।

दूसरा व्रत "कल्याण-सप्तमी" का है। जब किसी महीने के शुक्ल पक्ष की. सप्तमी को रविवार पड़े तभी उसका व्रत किया जाता है। यह सूर्य का व्रत है। इसी प्रकार अन्य मासों में सप्तमी का व्रत किया जाता है, जिनका नामकरण "विशोक सप्तमी" "शर्करा सप्तमी" "कमल सप्तमी" और "मन्दार सप्तमी" है। इन व्रतों से प्रसन्न होकर भगवान भास्कर उपासक के समस्त मनोरथों की पूर्ति करके उसे देव दुर्लभ गति प्रदान करते हैं। इनके अतिरिक्त "विशोक द्वादशी" 'विभूति द्वादशी" "आदित्यवार व्रत" "सरस्वती व्रत" आदि का भी वर्णन किया गया है।

नारद पुराण के व्रत

व्रतों का सबसे अधिक विधिवत् वर्णन "वृहन्नारदीय पुराण" में मिलता है। उसमें बारहों महीने का समस्त तिथियों को किये जाने वाले व्रतों का उल्लेख एक साथ क्रम पूर्वक पाया जाता है। इस प्रकार वर्ष का प्रत्येक दिन व्रत स्वरूप बन जाता है। उनका परिचय संक्षेप में इस प्रकार है—

चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को सूर्योदय काल में ब्रह्माजी ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की थी। उस दिन "सौर व्रत" किया जाता है, जो समस्त पापों का नाश करने और कलियुग के दुष्कर्मों का निवारण करने वाला होता है। यह व्रत मनुष्यों को आरोग्य प्रदान करने वाला भी है। ज्येष्ठ मास की शुक्ल प्रतिपदा को कनेर के वृक्ष की पूजा की जाती है और "करवीर व्रत" रखा जाता है। श्रावण की प्रतिपदा को "रोटक व्रत" होता है, जिससे लक्ष्मी तथा बुद्धि की प्राप्ति होती है। भाद्रपद मास की प्रतिपदा को "महत्तम व्रत" किया जाता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसका नाम "मौन व्रत" भी है। उस दिन मौन रहकर भगवान का नैवेद्य बनावे। आश्विन की प्रतिपदा को "अशोक व्रत" रखते हैं, जिससे मनुष्य शोक से छुटकारा पाकर सुखी होता है। इसी प्रतिपदा से नवरात्रि व्रत भी आरम्भ किया जाता है। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट का त्यौहार मनाया जाता है। मार्ग शीर्ष की प्रतिपदा को धन व्रत का पालन करना चाहिये और पौष की प्रतिपदा को सूर्य देव की पूजा की जाती है।

माघ की प्रतिपदा को अग्नि स्वरूप महेश्वर का पूजन अर्चन करना चाहिये और फाल्गुन प्रतिपदा को धूल धूसरित दिगम्बर शिव को जल द्वारा स्नान करावे। वैशाख की प्रतिपदा को विश्वव्यापक भगवान विष्णु की पूजा करके ब्राह्मणों को भोजन करावें, आषाढ़ की प्रतिपदा को ब्रह्मा और विष्णु का पूजन करे, ये सब व्रत भोग और मोक्ष देने वाले हैं। इनमें व्रत के दिन ब्रह्मचर्य पालन करना आवश्यक है।

द्वितीया

चैत्र शुक्ल द्वितीया को ब्राह्मी शक्ति के साथ ब्रह्माजी का पूजन करें। इसी प्रकार ज्येष्ठ की द्वितीया को भगवान भास्कर का, आषाढ़ में सुभद्रा के साथ बलराम और कृष्ण का, श्रावण में प्रजापति विश्वकर्मा का, भाद्रपद में इन्द्र का अर्चन करना चाहिये। आश्विन की द्वितीया को दान देने का विशेष महत्व है। कार्तिक की द्वितीया को यम द्वितीया का पर्व मनावें और बहिन के घर भोजन करें। मार्गशीर्ष की द्वितीया को पितरों का, पौष में चन्द्रमा का, माघ में भानुरूपी प्रजापति का और फाल्गुन में भगवान शिव का फूलों का चंदोवा तानकर तथा फूलों का श्रृंगार करके पूजन करें। इनमें भी ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक होता है।

तृतीया

चैत्र सुदी तीज को सौभाग्यवती नारियाँ पति और पुत्रों की मङ्गल कामना करके गौरी देवी और शिव की प्रतिमा बनाकर पूजें (जैसे आजकल गनगौर मनाई जाती हैं) वैशाख की तृतीया को "अक्षय तीज" कहते हैं। वह त्रेता युग की आदि—तिथि है। उस दिन जो सत्कर्म किया जाता है, वह अक्षय हो जाता है। ज्येष्ठ मास में "रम्भा तृतीया" का व्रत किया जाता है। आषाढ़ में एक ब्राह्मण दम्पत्ति में लक्ष्मी सहित भगवान विष्णु की भावना करके, पूजा करनी चाहिये। श्रावण तृतीया को "स्वर्ण गौरी व्रत" तथा भादों में 'हरितालिका व्रत" किया जाता है। आश्विन में "वृहद् गौरी व्रत", कार्तिक में "विष्णु-गौरी व्रत", मार्ग शीर्ष में "हर-गौरी व्रत" और पौष में "ब्रह्म-गौरी व्रत", को करे। माघ में सौभाग्य सुन्दरी" की पूजा फाल्गुन में 'कुल सौख्यंदा" व्रत किया जाता है।

चतुर्थी

चैत्र शुक्ल चतुर्थी को वासुदेव स्वरूप गणेशजी का पूजन करें, वैसाख की चतुर्थी को संकर्षण गणेशजी की पूजा की जाय। इसी प्रकार ज्येष्ठ में प्रद्युम्न रूपी गणेश की, आषाढ़ में अनिरुद्ध रूपी गणेश की और श्रावण में गणेशजी के स्वाभाविक स्वरूप की पूजा करें। भाद्रपद में कृष्ण चतुर्थी को बहुला गणेश का तथा शुक्ला चतुर्थी को सिद्धि विनायक गणेश का पूजन करें। आश्विन का शुक्ला चतुर्थी को कपर्दीश विनायक की पूजा करे। कार्तिक में "करवाचौथ" मनाई जाती है। जिसमें स्त्रियों का ही अधिकार है। उस दिन गणेशजी के सम्मुख दस "करवा" रखकर पूजा करे। मार्ग शीर्ष चतुर्थी को पीत वर्ण के गणेश का पूजन करें। पौष मास में विघ्नेश्वर गणेश की पूजा करके माघ में गणेश जी का सङ्कष्ट व्रत' करे। इस व्रत को 'दुण्ढि व्रत' या 'कुण्ड व्रत' या 'शान्ति व्रत भी कहते हैं। फाल्गुन की चतुर्थी को 'दुण्ढिराज व्रत' किया जाता है। चतुर्थी तिथि किसी भी महीने की और किसी भी पखवारे की हो, उसमें गणेश का पूजन ही विधेय है।

पंचमी

चैत्र शुक्ल की पंचमी "मत्स्य जयन्ती" का दिवस है। इसे 'श्री पंचमी" भी कहते हैं। वैसाख की पंचमी को शेष नाग की पूजा की जाती है और ज्येष्ठ की पंचमी को पितरों की, आषाढ़ की पंचमी को दिक्पालों की पूजा का विधान है। श्रावण की पंचमी "नाग पंचमी" कही जाती है। भाद्रपद में "ऋषि पंचमी" के दिन सातों ऋषियों का पूजन किया जाता है। आश्विन की पंचमी को "उपाङ्ग ललिता व्रत होता है। कार्तिक की पंचमी को "जया व्रत" किया जाता है। मार्गशीर्ष की पंचमी को नागों की पूजा की जाती है। पौष की मास की पंचमी को भगवान् मधु सूदन की पूजा की जाती है। प्रत्येक मास की पंचमी को नागों की और पितरों की पूजा की जानी उत्तम है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

षष्ठी

चैत्र शुक्ला षष्ठी को "कुमार व्रत" का विधान किया गया है। वैशाख में कार्तिकेय की पूजा, ज्येष्ठ में सूर्यदेव की पूजा, आषाढ़ में "स्कन्द व्रत" किया जाता है। भाद्रपद कृष्ण षष्ठी को "ललिता व्रत" का विधान है, जो स्त्रियों को स्थाई सौभाग्य देने वाला होता है। भाद्रपद शुक्ला षष्ठी को "चन्दन षष्ठी" कहते हैं। षष्ठी तिथि विशेषतः शिवजी के पुत्र स्कन्द से सम्बन्धित है और सभी महीनों में उनका पूजन, व्रत आदि करना शुभ फल देने वाला होता है।

सप्तमी

यह तिथि विशेषतः सूर्य से सम्बन्धित है। चैत्र शुक्ल सप्तमी को सूर्यव्रत करने से उपासक शरीर का अन्त होने पर सूर्य मण्डल को भेदकर परमपद को प्राप्त होता है। वैशाख में 'कमल व्रत' अथवा "निम्ब व्रत" द्वारा सूर्य की आराधना की जाती है। इसी प्रकार अन्य मासों में 'अव्यङ्ग व्रत' 'आमुक्ताभरण व्रत' 'फल सप्तमी' शाक सप्तमी' 'अभय व्रत' 'अचला व्रत' 'अर्कपुट व्रत पालन करके सूर्य नारायण की पूजा की जाती है।

अष्टमी

यह विशेष रूप से देवी-आराधना की तिथि है। चैत्र शुक्ल अष्टमी को भवानी का जन्म हुआ था। उस दिन को 'महाष्टमी' कहा गया है। वैशाख में देवी को जटामांसी तथा उशीर (खस) के जल से तथा आषाढ़ में हल्दी मिश्रित जल से स्नान कराने का विधान है। भाद्रपद के कृष्णपक्ष में भगवान कृष्ण की जन्माष्टमी का व्रत सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इसी प्रकार भाद्र पद शुक्ल की अष्टमी को राधा-व्रत किया जाता है। आश्विन मास की अष्टमी भी "महाष्टमी" कहीं जाती है, वह दुर्गा की पूजा की प्रधान तिथि है। माघ में 'भीष्माष्टमी' के दिन भीष्म पितामह को तर्पण करने से विजय प्राप्त होती है।

नवमी

चैत्र शुक्ल नवमी को 'श्रीराम-नवमी व्रत' अत्यन्त महत्व का है। वैशाख में 'चण्डिका व्रत' ज्येष्ठ में 'उमाव्रत' श्रावण में 'कौमारी व्रत' भाद्रपद में 'नन्दा नवमी व्रत' का विधान है। प्रायः सभी नवमी तिथियों को दुर्गा के विभिन्न रूपों की आराधना की जाती है।

दशमी

दशमी के व्रत का पालन करके मनुष्य धर्मराज का प्रिय होता है। उनका पूजन चैत्र शुक्ल की दशमी को किया जाता है। ज्येष्ठ की दशमी को 'दशहरा' मनाया जाता है, जो दश पापों को हर लेता है। भाद्रपद की दशमी को 'दशावतार व्रत' रखा जाता है, आश्विन मास की दशमी 'विजया दशमी' के नाम से जगत प्रसिद्ध है। उस दिन, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न चारों की पूजा की जाती है।

एकादशी

प्रत्येक मास की दोनों एकादशियाँ परम पवित्र मानी गई हैं और उस दिन निराहार रहकर व्रत करने से अपार पुण्य होता है। ये एकादशियाँ कामदा, वरूथिनी, मोहिनी, अपरा, निर्जला, योगिनी, शयनी, पुत्रदा, अजा, पद्मा, इन्दिरा, पापाकुशा, रमा, प्रबोधिनी, उत्पन्ना, मोक्षदा, षटतिला, जया, विजया, आमलकी, पाप मोचिनी आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। एकादशी का व्रत तीन दिन में सम्पन्न होता है। इसमें दशमी तथा द्वादशी को एक-एक समय का और एकादशी को दोंनों समय का भोजन त्यागने का विधान है।

द्वादशी, त्रयोदशी और चतुर्दशी

चैत्र शुक्ल द्वादशी को 'मदन व्रत' लिया जाता है, जिसके फल से दाम्पत्य सुख चिरस्थायी होता है। सभी द्वादशियों को किसी रूप में गौ की पूजा या आराधना की जाती है। चैत्र मास की त्रयोदशी यदि शनिवार से युक्त हो तो 'महावारुणी' कही जाती है। उस दिन गङ्गास्नान करोड़ों सूर्य ग्रहण के स्नान के समान पुण्यकारी होता है। कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी 'धन तेरस' के नाम से मनाई जाती है। त्रयोदशी विशेष रूप से कुबेर के पूजन की तिथि है। उस दिन एक समय भोजन करके कुबेर की अर्चना करने से निर्धन मनुष्य भी धनपति बन जाता है। चतुर्दशी के व्रतों में सबसे मुख्य भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी को किया जाने वाला अनन्त व्रत होता है, उस दिन गेहूँ के आटे में पंजीरी बनाकर एक बार भोजन करे और सूत अथवा रेशम के सूत में चौदह गाँठें लगाकर उसे बाँह में धारण करे। ज्येष्ठ मास की चतुर्दशी को 'नृसिंह व्रत' किया जाता है, जो समस्त पापों का नाश करने वाला है। फाल्गुन कृष्ण की 'शिव चतुर्दशी' सर्व विदित है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूर्णमासी और अमावस्या

पूर्णमासी और अमावस्या की तिथियाँ प्रायः सभी मासों में किसी उत्सव के रूप में मानी जाती हैं। ज्येष्ठ की पूर्णिमा को वट सावित्री व्रत होता है। आषाढ़ में गुरुपूर्णिमा, श्रावण में रक्षा बन्धन की पूर्णिमा, आश्विन में शरदपूर्णिमा, माघ में माघ स्नान की पूर्णिमा तथा फाल्गुन में होलिका दहन की पूर्णिमा प्रसिद्ध है। अमावस्याओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध कार्तिक की अमावस्या है, जिसमें समस्त देश में दीपावली का पर्व मनाया जाता है और लक्ष्मी पूजन होता है। सर्वपितृ अमावस्या को पितरों का पूजन तथा श्राद्ध भी बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। इसके अतिरिक्त जिस किसी अमावस्या को सोमवार पड़ जाय वह स्नान-दान के लिये अत्यन्त पुण्यदायक मानी जाती है।

हिन्दुओं के व्रत और उपवासों की यह सूची भी सम्पूर्ण नहीं है। वर्ष की प्रत्येक एकादशी पवित्र मानी जाती है और उस दिन अन्न का भोजन करने वाले को दोष लगता है, ऐसा शास्त्र का वचन है। एकादशी मुख्यतया वैष्णव सम्प्रदाय का व्रत माना जाता है। इसी प्रकार शिव के उपासक वर्ष की प्रत्येक द्वादशी के दिन प्रदोष व्रत करना आवश्यक समझते हैं। सौर सम्प्रदाय वाले (सूर्य के उपासक) प्रत्येक संक्रान्ति को सूर्य की पूजा करते हैं। श्रावण के प्रत्येक रविवार को अनेक हिन्दू सूर्य की पूजा, जल, दूध, दही, घी, तिल, सरसों, चावल और कुश से करते हैं। प्रत्येक मास की चौथ गणेशजी के व्रत का दिन माना जाता है। अष्टमी और चतुर्दशी की तिथियाँ भी अनेक सम्प्रदायों में पवित्र पर्व की भाँति मानी जाती हैं। अनेकों लोग प्रत्येक रविवार, मंङ्गल या शनिवार का व्रत भी नियम से रखते हैं। इस प्रकार देखा जाय तो वर्ष का शायद ही कोई दिन ऐसा बचेगा, जो एक धार्मिक हिन्दू की दृष्टि में पवित्र और पूजनीय न हो। इसीलिये कहा गया है कि हिन्दू का समस्त जीवन ही धर्ममय होता है और उनके सभी क्रिया-कलाप धर्म की पूर्ति के लिये होते हैं। पर यह बात तभी सत्य समझी जा सकती है, जब हम इन व्रतोत्सव और त्यौहारों के मूलतत्व को हृदङ्गम करके सच्चे हृदय से उनको मनावें और उनके अनुसार अपना आचरण भी रखें। हमारे पूर्वजों ने इन व्रतोत्सवों की स्थापना इसीलिये की थी कि उनके द्वारा हमको अपने वैयक्तिक, सामाजिक और धार्मिक कर्त्तव्यों का स्मरण होता रहे और हम सत्य, न्याय, त्याग, परोपकार के सिद्धान्तों पर ध्यान रखकर अपना और अपने आस-पास वालों का भी हित-साधन करते रहें। यदि हम इन बातों का ध्यान रखते हुये अपने त्यौहारों और व्रतों को मनायेंगे तो उससे हम सब का अवश्य कल्याण होगा।

पर्व अनेक—विधान एक

युग निर्माण शाखाओं द्वारा पर्व आयोजनों को विशेष समारोह के साथ मनाने में कई सुविधा और असुविधाओं को ध्यान में रखते हुए ही छः का चुनाव किया है। इसका अर्थ यह नहीं कि दूसरे पर्वों को महत्वहीन या गौण माना गया है, समय और परिस्थितियों की आवश्यकतानुसार धर्म, समाज, भाषा-संस्कृति आदि के आधार पर इस प्रक्रिया में परिवर्तन किये ही जायेंगे। मुसलमान, बौद्ध, पारसी, ईसाई आदि धर्मों में ये छः पर्व काम नहीं देंगे, वरन् उन क्षेत्रों में उन्हीं वर्गों को मान्यताओं एवं परम्पराओं के अनुरूप पर्व मनाये जायें पर उनका स्वरूप और निष्कर्ष अवश्य उस स्तर का रखा जायेगा जिससे भावनात्मक नव निर्माण का निर्धारित तथ्य पूरा होता है।

लोकमान्य तिलक ने अपने समय में अपने महाराष्ट्र क्षेत्र के गणेशोत्सव को मूर्धन्य बनाया था और और उसे अति उत्साह भरे वातावरण में मनाये जाने की व्यवस्था बनाई थी। उन आयोजनों में लोक मानस के उभार और उसमें अभीष्ट प्रवाह उत्पन्न करने का लक्ष्य रहता है। लक्ष्य को स्थिर रखकर हमें परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप पर्व मनाने की यदि उपयोगिता का प्रतीत हो तो उसके लिए वैसी व्यवस्था जुटानी चाहिए, छः पर्वों का कोई सीमा बन्धन नहीं है। उसे दिशा निर्देश मात्र समझना चाहिए।

भारतीय समाज के पर्वों में होली और दिवाली दो त्यौहार ऐसे हैं, जो सारे भारत में समान रूप से प्रचलित हैं। अन्य पर्व तो स्थानीय महत्व के भी हैं पर इन दो का देश भर में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहीं भी देखा जाय, समान उत्साह एवं प्रचलन पाया जायेगा। कई वर्षों से अपना चेष्टा इन पर्वों पर विशेष आयोजन करने की रही है। पर उन अवसरों पर आमतौर से लोग ढर्रे की परिपाटी में इतने अधिक व्यस्त रहते हैं कि आयोजनों में सम्मिलित होने की ओर ध्यान नहीं दे पाते। इसी कटु अनुभव के आधार उन्हें मनाने की बात को पीछे रखना पड़ता है। पर अभी प्रयास छोड़े नहीं जाने चाहिए कि उन्हें भी अन्य पर्वों की तरह सामूहिक एवं प्रेरणाप्रद प्रक्रिया के साथ मनाया जा सके।

होली वस्तुतः सामूहिक वार्षिक यज्ञ है, जो नई फसल के आगमन पर हर्ष एवं उदारता की अभिव्यक्ति के लिए सम्पन्न किया जाता है। स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार यदि रागरंग में से लोगों को अवकाश मिल सके तो उसे गायत्री यज्ञ के क्रिया-कलाप की तरह मनाया जाना चाहिए। नवीन अन्न की आहुतियाँ दी जायें और उसे धूम्र पर तपाकर उसे प्रसाद रूप में वितरण किया जाय। पूजा के लिए नृसिंह भगवान द्वारा प्रहलाद के उद्धार वाला चित्र रखा जाना चाहिए। मिट्टी धूल फेंकने का तात्पर्य है, सामूहिक श्रम दान से सार्वजनिक सफाई में जुटना। इसी हँसी खुशी में संभव है, प्राचीनकाल में कोई अति उत्साही मजाक में सफाई की मिट्टी धूल साथियों पर डाल देते हों और उस समय संयोगवश शादी के समय नांद के नीचे बिल्ली बन्द हो जाने की बात परम्परा बन जाने की तरह लोग वैसा करना आवश्यक मानने लगे हों। सामूहिक सफाई अभियान की रचनात्मक बात तो भुला दी गई हो और वह मिट्टी धूल फेंकने का 'हुडदंग' मात्र प्रचलित रह गया हो। इस मँहगाई के जमाने में रङ्ग डालकर किसी के कपड़े खराब करना उनकी प्रत्यक्ष आर्थिक हानि करना है। इसे चोरी उठाईगीरी के स्तर की बात कह सकते हैं। रङ्ग फेंकने वालों को अपना मनोरंजन करते समय यह भी सोचना चाहिए कि जिसके कपड़े खराब किये गये हैं न जाने वह किस स्थिति में होगा उस पर इसके कारण क्या बीती होगी ? रङ्ग और कीचड़ फेंकना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। अभिवादन के लिए चन्दन का लगा जाना पर्याप्त माना जाना चाहिये।

ऊँच-नीच छूत-छात का भेद-भाव भुलाकर सब लोग मनुष्य बिरादरी अनुभव करें इस मान्यता को होली की व्याख्या करते समय विकसित किया जा सकता हैं। यज्ञीय जीवन की रीति-नीति समझाई जा सकती है। सामूहिकता, स्वच्छता एवं सम्मिलित श्रमदान का महत्व बताया जा सकता है। अनुचित बात पिता तक की नहीं माननी चाहिए। सत्यनिष्ठ बालक भी आततायी महाबलिष्ठ की तुलना में अधिक बलवान होता है। उसे ईश्वरीय सहायता एवं लोक श्रद्धा मिलती है, जो इस मार्ग पर चलते हुए सहन किये जाने वाले कष्टों की तुलना में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। ऐसी शिक्षाएँ होली पर्व के माध्यम से सहज ही दी जा सकती हैं।

दिवाली भी स्वच्छता का पर्व है। सब लोग अपने घर मकान की कपड़े आदि की सफाई करते हैं यह सफाई यदि आचार-विचार की आहार-व्यवहार की भी बन सके ऐसा प्रयास करना चाहिए। दिवाली घनी अमावस्या को जब सूर्य और चन्द्र कोई भी नहीं उगा होता तब अन्धकार को चुनौती देने के लिए तुच्छ समझे जाने वाले दीपक भी यदि पंक्तिबद्ध होकर खड़े हो जायें—जलने लगें तो सघन अन्धकार को चीरते हुए बिना सूर्य चन्द्र जैसे समर्थ नेताओं के भी सफल हो सकते हैं। दिवाली—अन्धकार पर दीपकों की विजय का पर्व है। वह हममें हर एक को सदुद्देश्य के लिए-छोटी क्षमता वालों के मिलजुल कर उठ खड़े होने की महत्ता से परिचित कराती है। लक्ष्मी नीतिपूर्वक कमाई जानी चाहिए और उसके एक-एक पैसे का सदुपयोग करना चाहिए। अपव्यय में एक पाई भी नष्ट न की जाय किन्तु सार्थक प्रयोजनों के लिए कृपणता भी न बरती जानी चाहिए। सम्पन्नता अभीष्ट हो तो अपनी क्षमता योग्यता बढ़ानी चाहिए और मनोयोगपूर्वक कठोर श्रम करने की आदत डालनी चाहिए। यह लक्ष्मी-पूजन का प्रशिक्षण है। लक्ष्मी के साथ गणेश पूजन भी होता है। गणेश का अर्थ है विवेक। सम्पदा के उपार्जन और उपयोग पर विवेकशीलता का पूरा-पूरा समावेश रहना चाहिए। अन्यथा अविवेकी के लिए सम्पदा विषाक्त ही सिद्ध होती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिवाली के साथ बहिन भाईदूज आती है। बहिन बिराने घर की हो जाने पर भी उसका स्नेह सूत्र पितृगृह से टूटना नहीं चाहिए। उसकी देखभाल एवं सहायता का समुचित ध्यान रखना चाहिए ताकि वह जिस घर में जन्मी वहाँ से उसे उपेक्षा मिलने लगी यह अनुभव न हो। भाईदूज को तिलक टीका की रस्म इसी स्नेह सूत्र को सजग करती है। नारी मात्र के प्रति बहिन पुत्री या माता की पवित्र भावना को उभारना भी उस पर्व का प्रयोजन है।

गोवर्धन पूजा दिवाली के तीसरे दिन होती है। गोबर के गोप आदि बनाकर आँगन में स्थापित किये जाते हैं और पूजे जाते हैं। इसकी प्रेरणा गो संरक्षण, गो संवर्धन की ओर पूरा-पूरा ध्यान दिये जाने की है। गोबर को खाद के ही काम में लाया जाय उसके उपले न बनाये जाय। गोबर + धन का तात्पर्य है कि गोबर बहुमूल्य धन है। खाद के रूप में वह मैला सोना है। उसे जलाने में प्रयुक्त न किया जाय, आदि-आदि कितनी ही शिक्षाएँ हैं, जिन्हें देने के लिए दीपावली आती है। बही-खाता रखना बजट बनाकर चलना, विद्या को—उसके उपकरणों को लक्ष्मी के समान ही मूल्यवान मानना यह सब शिक्षा हिसाब बही, कलम, दवात आदि के पूजन के साथ जुड़ी हुई हैं।

लक्ष्मी और गणेश का चित्र रखकर उनका पूजन करना आदि। शेष कर्मकाण्ड दिवाली पर भी अन्य पर्वों की तरह ही किये जा सकते हैं।

शिवरात्रि में भगवान शङ्कर के प्रतीक मनुष्य के लिए उपस्थित महानता के आदर्शों की झाँकी की जा सकती है। मस्तक पर चन्द्रमा अर्थात् शान्ति एवं सन्तुलन का प्रकाश। जटाओं में गंगा अर्थात् मस्तिष्क से निरन्तर प्रवाहित होने वाली उत्कृष्ट विचारधारा की ज्ञान गंगा। गले में सर्प अर्थात् अपकारी लोगों को भी छाती से लगाकर रखना और उन्हें अपने स्नेह सद्व्यवहार से ईर्ष्या रहित बनाना। तीसरा नेत्र खुलने से काम दहन, विवेक ज्ञान चक्षु से इन्द्रिय लोलुपता की हानियों का मूल्यांकन और उसकी ओर से घृणा उपेक्षा। विषपान अर्थात् लोक मंगल के लिए बड़े से बड़े संकट की स्वीकार करने की साहसिकता। नीलकण्ठ—विषाक्त अनुभूतियों को न पेट में जड़ जमाने देना न उगलकर वातावरण को कलुषित करना वरन् ऐसे कटु प्रसंगों को बीच ही बीच पटक देना। भूत-प्रेतों की मण्डली—पिछड़े हुए लोगों को साथ-साथ रखकर उन्हें ऊँचा उठाने की चेष्टा। मरघट में निवास-जीवन और मृत्यु को एक साथ जोड़कर देखना और तदनुरूप अपनी कार्य पद्धति निर्धारण करना जैसी अनेक व्यवस्थायें उनके अलंकारिक रूप की, की जा सकती हैं।

भागीरथ के पुण्य कार्य में सहायता करने के लिए अपनी जटाएँ पसार देना, गृहस्थ होते हुए योग के अधिपति बनकर रहना जैसे अगणित शिव-चरित्र की कथा उस कथाओं के आधार पर शिवरात्रि के अवसर पर महत्वपूर्ण लोक-शिक्षण किया जा सकता है। पूजा पद्धति में कुछ अन्तर नहीं पड़ता। पूजा स्थान पर शिव चित्र, पुरुष सूक्त से सामूहिक पूजा। गायत्री यज्ञ जैसे अन्य सभी क्रियाकृत्य सभी उत्सवों में एक जैसे हैं। शिवरात्रि का विधान भी उसी स्तर का है।

गुरु पूर्णिमा

व्यास-पूजन गुरुजनों के प्रति श्रद्धा सद्भाव, कृतज्ञता नम्रता रखने की शिक्षा देने वाला पर्व है। अनुशासन मानने वाला ही शासन कर सकता है। इस तथ्य को बाल वृद्ध सभी समझें तब राष्ट्रीय चरित्र का विकास हो। इस अवसर पर अध्यापकों और छात्रों को उनके कर्तव्यों का उद्बोधन कराया जा सकता है। दोनों के बीच सहयोग सद्भाव की धारा बहाने वाला मार्ग दर्शन किया जा सकता है। महर्षि व्यास विद्वान लेखक भी थे और चरित्र तथा वाणी से शिक्षा देने वाले वक्ता भी। व्यास आदर्शों का अनुसरण करने की चेष्टा यदि साहित्यकार कलाकार करने लगें तो व्यक्ति और समाज का कायाकल्प ही हो सकता है। यह पर्व इस प्रकार के प्रशिक्षण से भरा-पूरा है। व्यासजी के चित्र तो शायद ही मिलें पर किसी भी ऋषि आकृति की तस्वीर उस पर्व पूजन के लिए स्थापित की जा सकती है।

इसी प्रकार कृष्ण जन्माष्टमी, पितृ अमावस्या, शरद् पूर्णिमा, मकर-संक्राति, वैशाखी संक्रान्ति, आश्विन और चैत्र की नवरात्रि आदि के अपने धार्मिक महत्व हैं। गान्धी जयन्ती, तिलक जयन्ती, बुद्ध जयन्ती, महावीर जयन्ती आदि महा मानवों के जन्म दिन मनाये जा सकते हैं। एक मई का श्रमिक दिवस भारत का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वाधीनता दिवस आदि राजनैतिक पर्व हैं। स्थानीय घटनाओं एवं युग पुरुषों का जहाँ जैसा प्रचलन हो, वहाँ उस परिस्थिति के अनुरूप पर्वों की एक मात्र पद्धति को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम बनाये जाते सकते हैं।

समाज को सुगठित, परिष्कृत, समुन्नत सद्भाव सम्पन्न बनाने के लिए पर्वों की प्रेरणा पद्धति निस्सन्देह बड़ी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

पर्व आयोजनों का स्वरूप विकृत न होने दें!

मनीषियों ने पर्वों एवं त्यौहारों की परम्परा इसलिए डाली थी कि समय-समय पर विविध वर्गों को एक स्थान मिल जुलकर आत्मीयता के सूत्रों को अधिक सघन और सुदृढ़ बनाने का सुअवसर मिल सके। हर्षाभिव्यक्ति के प्रतीक कितने ही साधनों का भी इन अवसरों पर प्रयोग किया जाता है। लक्ष्य एक ही रहता है कि मनोवैज्ञानिक रूप से प्रत्यक्ष क्रिया कलापों द्वारा मानवी अन्तःकरण की तुष्टि होती चले। साथ ही कुछ ऐसी प्रेरणाएँ मिलती चलें, जिससे श्रेष्ठ जीवन की ओर आगमन सम्भव हो सके। दीपावली, होली, दशहरा बसन्त पंचमी गुरुपूर्णिमा वैशाखी आदि कितने ही पर्व उल्लासपूर्वक मनाने की परम्परा दीर्घकाल से चली आ रही है।

पर्वों एवं त्यौहारों पर हर्ष व्यक्त किये जाने की सार्थकता तब ही है, जबकि अभीष्ट लक्ष्य पूरा होता चले। दुर्भाग्य वश कुछ समय से मूल उद्देश्य गौण पड़ता जा रहा है और पर्वायोजनों का स्वरूप विकृत होता जा रहा है। दीपावली जैसे पावन पर्व पर जुआ सट्टा का बाजार गरम रहता है। आतिशबाजी के चक्कर में कितने ही स्थानों पर अग्निकांड से भयंकर जन शक्ति एवं धन शक्ति नष्ट होती है। सबको एक रंग में रंगने एवं एक मन में बाँधने वाला पर्व होली भी अपना पावन स्वरूप खोता जा रहा है। रंग और भंग की अदूरदर्शी मस्ती में अब कितनी ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं, जिनके कारण कितने ही व्यक्तियों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता है। कुछ ऐसे ही समाचार इस वर्ष की होली के वीभत्स स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं।

नव भारत टाईम्स दैनिक पत्र १२ मार्च ८२ में प्रकाशित समाचार के अनुसार ११ मार्च होली के अवसर पर शराब के नशे में धुत कुछ व्यक्तियों के बीच संघर्ष उस समय आरम्भ हो गया जब सभी होली की मस्ती में नाच रहे थे। नशे की हालत में एक ने दूसरे के ऊपर कीचड़ फैंक दिया। बात गाली-गलौज से बढ़ते-बढ़ते हाथा पायी तक पहुँच गयी। बाद में हथियारों का भी प्रयोग होने लगा। फलस्वरूप चार व्यक्ति तत्काल मारे गये और दर्जनों घायल हुए। उन्हें गम्भीर अवस्था में निकटवर्ती अस्पताल में पहुँचाया गया। एक अन्य समाचार के अनुसार किसी शराब पिये व्यक्ति ने किसी दूसरे व्यक्ति के वर्ण-जाति के सम्बन्ध में अपशब्द कह दिए। बात बढ़ती गयी और अन्ततः संघर्ष की स्थिति आ पहुँची। जिसमें दो व्यक्ति मारे गये तथा दस घायल हुए। पतकुश नामक स्थान से १० कि.मी. दूर जाइपुर गाँव में एक होली हुडदंग में दो व्यक्तियों को छुरा मार दिया गया। फलतः उनकी मृत्यु हो गयी।

हैदराबाद में होली के अवसर पर शराब पिये कुछ युवकों ने रंग में तेजाब मिलाकर फेंकना शुरू किया जिससे १४ व्यक्ति भयंकर रूप से जल गये। जागरूकता के अभाव में होली खेलते दो बच्चे मोटर से कुचल गये। उत्तेजित भीड़ ने बस को आग लगा दिया। लाखों रुपये की क्षति हुई। राजकोट के पास बजड़ी गाँव में कोली जाति के गुटों में संघर्ष छिड़ गया। लाठी और बल्लमों के प्रहार से अनेकों व्यक्ति गम्भीर रूप से घायल हुए तथा एक मारा गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार उस क्षेत्र में हर वर्ष ऐसी संघर्ष की परिस्थितियाँ होली के अवसर पर बन जाती हैं।

आपसी स्नेह, सौहार्द्र बढ़ाने और सम्बन्धों को सुमधुर बनाने का यह पावन पर्व हिंसक वारदातों का कारण बन जाय यह अत्यन्त दुःख की बात है विचारशीलों को चाहिए कि पर्वों त्यौहारों का स्वस्थ और सही स्वरूप प्रस्तुत करें और उन अवसरों पर अवांछनीय कृत्यों पर रोकथाम की व्यवस्था बनाये। साथ ही ऐसा सौम्य वातावरण बनाने की भी आवश्यकता है, जिससे हर व्यक्ति आपसी सम्बन्धों को मधुर बनाने के साथ-साथ आत्मविकास के लिए कुछ विशेष प्रेरणा ले सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वार्षिकोत्सव एक नियमित प्रेरणा पर्व

प्रत्येक प्रज्ञा पीठ एवं प्रज्ञा संस्थान को अपना वार्षिक आयोजन करने की योजना बनाने एवं तत्परता दिखाने की तैयारी रखनी चाहिए। इससे उत्साह का नवीनीकरण होता है और सुस्ताने वाली शिथिलता को एक जोरदार धक्का लगता है। इस आधार पर लोकमानस को झकझोरने और कार्यकर्ताओं में नये सिरे से नया उत्साह उत्पन्न करने का सुयोग बनता है।

पर्वों की परम्परा इसी आधार पर चली कि उनके साथ जुड़े हुए प्रतिपादन को हर साल नय सिरे से समझने और कुछ करने के लिए उत्साह उभरे, प्रयास चले। दिवाली से अर्थ सन्तुलन, गीता जयन्ती से कर्मयोग, वसन्त पर्व शिक्षा संवर्धन, होली में स्वच्छता अभियान गायत्री जयन्ती से प्रज्ञा प्रतिष्ठा, गुरुपूर्णिमा से अनुशासन श्रावणी से आत्मशोधन, विजया दशमी से शक्ति संचय की प्रेरणा मिलती है। यदि उन्हें सही रीति से मनाया जा सके तो प्रायः सभी उपयोगी सत्प्रवृत्तियों का प्रचलन बनाये रहने में उस आधार पर बड़ी सहायता मिल सकती है। यह सभी सामूहिक आयोजन हैं। इन दिनों तो लोग घर में ही कुछ पकाने खाने या छुट-पुट पूजा पत्री करने भर से लकीर पीट लेते हैं। पर यदि उन्हें ठीक तरह सामूहिक आयोजनों के रूप में मनाया जा सके और उनकी प्रेरणाएँ अपनाने के लिए उस अवसर पर लोक मानस को प्रशिक्षित किया जा सके तो उसका प्रभाव जन-जीवन में उत्कृष्टता, प्रखरता, सुव्यवस्था का समावेश, बना रहने के रूप में दृष्टिगोचर होता रह सकता है।

महामानवों देवताओं की जयन्तियाँ मनाने के पीछे भी उन दिव्य आत्माओं के प्रति न केवल श्रद्धा समर्पण कर्तव्य पालन का भाव है वरन् यह भी है कि उनकी विशेषताओं महानता को हृदयंगम करने का हर वर्ष अवसर मिले। कृष्णजन्माष्टमी, राम नवमी, हनुमान जयन्ती, बुद्ध जयन्ती, गाँधी जयन्ती आदि के मनाने का प्रचलन इसी दृष्टि से है। नया वर्ष इसलिए मनता है कि जन-जन को गत वर्ष का लेखा-जोखा लेने और अगले वर्ष की कार्य पद्धति, विधिवत योजना बनाने का अवसर मिले। श्राद्ध पर्व पर पूर्वजों का स्मरण किया जाता है और उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते तथा सद्गति में सहयोग देने के लिए श्राद्ध तर्पण जैसा कुछ किया जाता है। यह विभिन्न प्रयोजनों के लिए विभिन्न निर्धारणों का वार्षिक नवीनीकरण है। मनुष्य आदर्शों की दृष्टि से बड़ा भुलक्कड़ है उस दिशा में उसकी उपेक्षा कहीं उत्कर्ष का द्वार अवरुद्ध न कर दें। इसलिए इस प्रकार के वार्षिक कार्यक्रमों को उपयोगी एवं आवश्यक माना गया है। व्यक्तिगत जन्म दिवसोत्सवों, विवाह दिवसोत्सवों के पीछे इसी उद्देश्य का समावेश है कि उनके पीछे सन्निहित कर्तव्य उत्तरदायित्वों को बार-बार समझा समझाया जाता रहे और भूलों को समय-समय पर सुधारा जाता रहे।

प्रज्ञा पीठों और प्रज्ञा संस्थानों के हर साल वार्षिकोत्सव केन्द्र के साथ अपने आदान-प्रदान को अधिक समर्थ एवं प्रखर बनाने के लिए मनाने चाहिए। प्रज्ञा संस्थान-स्वतन्त्र संगठन नहीं है। वे एक महान् अभियान के अविच्छिन्न अंग अवयव मात्र हैं। यह बोध बना ही रहना चाहिए अन्यथा आत्म विस्मृति की स्थिति बढ़ जायेगी और अहंकार के वशीभूत होकर हर संस्थान श्रेय की आतुरता में अपने को स्वयंभू कहने बताने लगेगा। जड़ से सम्बन्ध कट जाने पर जिस प्रकार तने की, पल्लव परिकर की दुर्गति होती है, वही पल्ले बँधेगी। रोटरी क्लब, रेडक्रास आदि के छोटे-छोटे संगठन इसलिए सम्मान पाते हैं कि उनका अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप अत्यधिक वजनदार है। स्टेट बैंक की छोटी-सी शाखाएँ भी अपने को धनकुबेर मानती हैं। सरकार का एक अदना-सा सिपाही अपने को शासनाध्यक्ष का प्रतिनिधि समझता है। यह उच्चस्तरीय सत्ता के साथ सघन सुसंबद्धता की परिणति है। यह तथ्य हर एक शाखा संगठन को गिरह बाँधकर रखना चाहिए कि कोई दिव्य सत्ता इस महान् परिकर का एक महान् योजना के अन्तर्गत युगान्तरीय चेतना का सूत्र-संचालन करती है और सभी संगठन उसी से ऊर्जा ग्रहण करते और अपने अस्तित्व का परिचय देते हैं। उनके द्वारा भविष्य में बन पड़ने वाले कार्य भी इसी आशा और संभावना के साथ जुड़े हुए हैं। गंगोत्री से सम्बन्ध काट लेने पर गंगा नहरें सूखी नालियों के अतिरिक्त अपने अस्तित्व का और कुछ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिचय दे नहीं सकेंगी। कुएँ, सरोवर, नदी, नाले सभी बादलों के अनुदान पर जीवित हैं। इस तथ्य को भुला देने के कारण उपजी हुई—पृथकतावादी अहमन्यता अन्ततः पश्चाताप का कारण ही बनेगी।

वसन्त पर्व पर हर वर्ष प्रज्ञा मिशन को अभिनव प्रकाश एवं मार्ग दर्शन प्राप्त होता है। उसका—संक्षिप्त विवरण संकेत यों पत्रिकाओं में भी छप जाता है, पर प्रतिनिधियों के माध्यम से उसे सभी प्रज्ञा परिजनों को प्रत्यक्ष बताया-समझाया जाना अपना अलग महत्व रखता है। एक वर्ष में कौन कितना पीछे हटा, कितना आगे बढ़ा, इसका पता भी चलता रहता है। किसे अगले दिनों किस प्रकार क्या करना है ? किन्हें किन—कठिनाइयों को कैसे पार करना है इन सभी प्रसंगों की जानकारी इन वार्षिक सम्मेलनों के माध्यम से जितनी अच्छी तरह इन आयोजनों के द्वारा मिल सकती है, उतनी और किसी प्रकार नहीं। इसलिए उनकी प्रमुख उपयोगिता लोक शिक्षण की—जनजागरण की आवश्यकता पूरी करने के लिए ही नहीं इस दृष्टि से भी है कि स्थानीय कार्यकर्ताओं की सक्रियता एवं तत्परता में नये सिरे से उभार आये।

स्थानीय आयोजन दोनों नवरात्रियों में हर प्रज्ञा संस्थान को किसी न किसी रूप में सम्पन्न करने ही होते हैं वसन्त पर्व गायत्री जयन्ती—गुरुपूर्णिमा आदि पर्वों पर भी स्थानीय लोग परस्पर परामर्श प्रवचन करते रहते हैं। वार्षिकोत्सव की प्रक्रिया विशुद्ध रूप से केन्द्र के साथ आदान-प्रदान को अधिकाधिक सघन बनाने की दृष्टि से है। इसलिए उनमें केन्द्र से प्रतिनिधि पहुँचने का उपक्रम बनता जा रहा है। संख्या की दृष्टि से शाखा संगठनों का असाधारण विस्तार हो रहा है। उन सभी में प्रतिनिधि प्रचारक भेजने में कठिनाईयाँ तो अनेक हैं पर उनके समाधान का प्रयत्न भी चल रहा है। आशा की जा रही है कि संतुलन बैठने में जो अड़चन हैं, उससे निपट लिया जायेगा।

शान्ति कुंज द्वारा इस वर्ष वार्षिक सम्मेलन के लिए दस दीप जत्थे भेजे गये हैं। इतनी गाड़ियों का प्रबन्ध किया गया है। उन सभी में संगीत मण्डली चित्र प्रदर्शनी भेजी गई है। ढाई-ढाई दिन के कार्यक्रम बने हैं। आवश्यकता और माँग अधिक बढ़ जाने से अब नई व्यवस्था तीन-तीन मोटर साइकिलों के जत्थे बनाकर उसकी पूर्ति की गई है। जीपों में पाँच प्रचारक जाते थे मोटर साइकिलों पर तीन-तीन के जत्थे भेजे जा रहे हैं। प्रदर्शनी उनके साथ भी है। संगीत और लोग भी गाते हैं। इनके साथ लाउडस्पीकर विशेषतया इसलिए भेजा गया है कि उन्हें छोटे देहातों में भी पहुँचना है और वहाँ लाउडस्पीकर की व्यवस्था कठिन ही नहीं होती असाधारण रूप से महँगी भी पड़ती है। मोटर साइकिल जत्थे के साथ मिशन का लाउडस्पीकर रहने से आयोजनों का बड़ा एक सिर दर्द हलका होता है। जीपें बड़े नगर कस्बों में जाती हैं, वहाँ लाउडस्पीकर की उतनी कठिनाई नहीं होती। सम्भव हो सके तो अगले वर्ष से जीपों में भी लाउडस्पीकर लगा दिये जायेंगे।

युग संधि के इस ऐतिहासिक परिवर्तन पर्व पर जन साधारण को एक-एक कदम आगे बढ़ते चलने के लिए हर वर्ष नये मार्ग दर्शन की आवश्यकता पड़ती है। प्रज्ञा पुराण का एक नया खण्ड भी हर वर्ष लिखा और छापा जाता है उसकी प्रेरणाओं से भी लोकशिक्षण का उद्देश्य पूरा होता है। सबसे प्रमुख है कार्यकर्ताओं की संगठन तत्परता एवं सक्रियता को उभारना यह कार्य वार्षिकोत्सवों के माध्यम से ही संभव हो सकता है। प्रज्ञा संस्थान, स्वाध्याय मण्डलों को भी अपने वार्षिकोत्सवों की तैयारी करनी चाहिए। वे सरल भी हैं, सस्ते भी, प्रेरणाप्रद भी और उस समूचे क्षेत्र में नवजागरण का वातावरण बनाने की दृष्टि से आवश्यक भी और सफल भी।

धर्म समारोहों द्वारा व्यक्ति और समाज का प्रशिक्षण

दैनिक और सामाजिक जीवन क्रम में धर्म और संस्कृति के स्थूल एवं प्रत्यक्ष स्वरूप का समन्वय किया जाना इसलिए आवश्यक है कि उस माध्यम से उस सूक्ष्म ज्ञान को मान्यता के स्तर से आगे बढ़ाकर व्यवहार और अभ्यास में भी उतारा जा सके। स्वाध्याय सत्संग से कई महत्वपूर्ण बातें समझ में तो आ जाती हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन्हें स्वीकार भी कर लिया जाता है, पर कठिनाई यह रहती कि उन मान्यताओं को बार-बार चरितार्थ करने के अवसर न मिलने से वे स्वभाव का अंग नहीं बन पातीं। तथ्य यह है कि कुछ प्रयोजन उन्हीं मान्यताओं से सिद्ध होते हैं, जो व्यवहार में आने लगें। अन्यथा आदर्शवादी विचारों को मन में ही रखने वाले अनेक व्यक्ति व्यावहारिक जीवन में शून्य बने रहते हैं।

धार्मिक कर्मकाण्डों की महत्ता मनोवैज्ञानिक है। उनके आधार पर निष्ठापरिष्कृत होती है और अन्तः चेतना में उतरती है। मान्यतायें जब व्यावहारिक क्रिया कलापों के साथ जुड़ती हैं तो उस समन्वय के आधार पर स्वभाव बनता है। इस स्वभाव को बहुत दिनों तक कार्यान्वित होते रहने का अवसर मिले तो यह संस्कार बन जाता है। यह संस्कार ही व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। विचार तो हलकी बदली की तरह है जो अभी घनी छाया किए रहती है, अभी हवा का झोंका आते ही कहीं से कहीं चली गयी। इसलिए मनीषियों की सदा यह मान्यता रही है कि यदि प्रवचन आदि से विचार देकर किसी को प्रभावित किया गया है तो यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि वह स्वीकारोक्ति देर तक स्थिर बनी रहेगी। उस उत्साह को पूर्व संचित संस्कार आसानी से उखाड़कर फैंक सकता है। वह क्षणिक प्रभाव एक स्वप्न बनकर रह सकता है।

बुरे विचार और बुरे अभ्यास तो जन्म-जन्मान्तरों से प्रयुक्त होते रहने के कारण इतने प्रबल होते हैं कि बिना प्रयत्न के ही स्वयं बलिष्ठ बने रहते हैं। परन्तु श्रेष्ठ विचारों की नींव जमाने में बहुत श्रम और प्रयत्न करना पड़ता है। निष्ठा की परिपक्वता का एक ही उपाय है, उसे नित्य कर्म के रूप में दिनचर्या का सामयिक व्यवस्था का एक अंग बना लिया जाय। धार्मिक कर्मकाण्डों की विधि व्यवस्था का विशाल कलेवर इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विनिर्मित किया गया है। मोटी बुद्धि से विचार करने पर वे विडम्बना जैसे दिखाई पड़ते हैं और लगता है सब कुछ तो मान्यताओं पर निर्भर है फिर इस पूजा पाठ से लेकर अन्यान्य धार्मिक कर्मकाण्डों को करने में समय और शक्ति क्यों व्यर्थ की जाय ? यह तर्क मानव स्वभाव की गम्भीर जानकारी न रखने वाले ही दिया करते हैं। वे यह नहीं जानते कि अभ्यास का कोई स्वरूप बनाये बिना मानयताओं में परिपक्वता आ नहीं सकती। कला, शिल्प, व्यवसाय, व्यायाम आदि की शिक्षा में से यदि दैनिक अभ्यास को निकाल दिया जाय मात्र सिद्धान्त को बताकर ही छोड़ दिया जाय तो ऐसा कोई छात्र अपने विषय का निष्णान्त नहीं बन सकता।

हमें धर्म कृत्यों की महत्ता समझनी चाहिए और उनकी उपयोगिता स्वीकार करनी चाहिए। तदनुसार नव निर्माण के पुण्य प्रयोजन को लोक व्यवहार के रूप में परिणित-विकसित करने के लिये सर्व साधारण को आदर्शवादी क्रिया कलापों में संलग्न करने का प्रयत्न करना चाहिए। शतसूत्री कार्यक्रम इसीलिए हैं। प्रचारात्मक, रचनात्मक, संघर्षात्मक कार्यक्रमों की उपयोगिता समझा भर देने से क्या काम चलेगा ? भावनाशील व्यक्तियों को उनमें संलग्न होने की प्रेरणा देनी पड़ेगी, तभी वे युग निर्माण की भूमिका प्रस्तुत कर सकेंगे। यदि उन्हें कार्यक्षेत्र में न उतारा जाय तो वे आदर्शवाद को भली-भाँति समझने वाले व्यक्ति भी कल्पना के स्वप्न लोक में विचरण करने वाले मात्र बनकर रह जायेंगे। उनसे लोकहित प्रक्रिया बन न पड़ेगी। अपने महान अभियान के सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति को आरम्भ से ही यह खटखटाना शुरू किया जाता है कि यदि उसे वे विचार पसन्द हैं तो मात्र पसन्दगी तक सीमित न रहा जाय, वरन् किसी न किसी रूप में सक्रिय सहयोग के लिए कदम बढ़ाया जाय, विचारों को त्यवहार के साथ जोड़ा जाय।

'षोडश संस्कार विवेचन' खण्ड में व्यक्ति निर्माण के लिए दैनिक उपासनात्मक क्रियाकृत्य अपनाने पर जोर दिया है और परिवार निर्माण के लिये संस्कार प्रक्रिया एवं समाज निर्माण के लिए पर्व त्यौहारों को प्रगतिशील क्रियाकलापों के साथ सम्पन्न करने पर जोर दिया गया है। यह प्रतिपादन इसलिए है कि विचार और कार्य परस्पर जुड़कर संस्कार और स्वभाव के रूप में विकसित होने का अवसर प्राप्त करें। समारोह के साथ जुड़ी हुई शिक्षा का अपना अलग ही महत्व है, इसे मानव स्वभाव के ज्ञाता और लोक प्रवृत्तियों के अनुभवी लोग भली भांति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जानते हैं। विवाह संस्कार समारोह कृत्य के बीच पति-पत्नी की सात भाँवर पड़ना और पाणिग्रहण करना अपना अलग ही महत्व रखता है और वर-वधू दोनों के हृदय में इतना गहरा जमकर बैठ जाता है कि वे एक-दूसरे से छूटने की बात सोच भी नहीं पाते। यदि वह समारोह नहीं गुप्त रूप से कोई प्रेमी प्रेमिका परस्पर साथ रहने की बात चलाएँ और छिपकर एक-दूसरे का हाथ पकड़ें, पाणिग्रहण करें, टहलते-घूमते सात बार नहीं, सत्रह बार परिक्रमा करलें, तो भी यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि उस दिन की बात सदा सुदृढ़ बनी रहेगी। विवाह संस्कार होने पर बात ही कुछ दूसरी हो जाती है। समारोह के वातावरण में बाँधे गये बन्धन लोहे की जंजीर बन जाते हैं। यज्ञोपवीत संस्कार की भी यही बात है। यदि दस पैसे का धागा यों ही कोई गले में डाल ले तो जब मर्जी हो तब उतार कर फेंक सकता है। पर यदि समारोह-पूर्वक यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया है, तो उसे धारण करने वाले की अन्तःचेतना उसकी गरिमा से प्रभावित हो जाती है और आम-तौर से फिर जनेऊ को धारण करने और उसके नियम पालन करने का क्रम चलता ही रहता है। स्वभाव निर्माण की प्रक्रिया ही अपने आन्दोलन का प्रधान लक्ष्य है सो उसके लिये हमें लोक शिक्षण की प्रक्रिया चलाते हुए उसे कार्य व्यवहार में भी उतारने की विधि व्यवस्था पर पूरा ध्यान और जोर देना होगा।

मनुष्य में आदर्शों के प्रति निष्ठा जमाने का अर्थ केवल धार्मिक और आध्यात्मिक आधार पर ही सम्पन्न किया जा सकता है। राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक कारणों को लेकर भले ही नीतिशास्त्र का कितना ही कड़ा प्रतिपादन किया जाय, यह आवश्यक नहीं कि लोग उसे हृदय से स्वीकार कर लें। मूलतः मनुष्य व्यक्तिवादी है। समूहवादी तो उसे सामाजिक संस्कारों द्वारा संस्कृति की छेनी-हथौड़ी द्वारा बनाया जाता है। भगवान मनु का यह कथन सत्य है कि "मनुष्य जन्म से शूद्र पैदा होता है और संस्कारों से अथक प्रयत्न द्वारा उसे कठिनाई से द्विज बनाया जाता है।" मनुष्य को अपनी व्यक्तिगत आकांक्षायें ही उसकी मूल प्रवृत्ति है। समाज को सुव्यवस्था के नाम पर जो कुछ भी प्रशिक्षण किया गया है वह सामाजिक हित साधन की बात हुई। व्यक्ति का अपना स्वार्थ लोभ, आकर्षण का केन्द्र जहाँ है वास्तविक प्रबलता वहीं रहेंगी और जहाँ व्यक्ति और समाज का स्वार्थ टकरा रहा होगा वहाँ अवसर पाते ही व्यक्ति चतुरतापूर्वक अपनी मान्य समाज व्यवस्था को भी तोड़कर स्वार्थ साधन करेगा। आये दिन ऐसा होता भी रहता है लोग, स्वयं जिन आदर्शों का प्रतिपादन गला फाड़कर करते हैं चुपके-चुपके उन्हीं को ठुकराकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में चूकते नहीं। ऐसा क्यों ? कारण एक ही है अन्तःकरण में आत्मिक आधार पर आदर्शों के प्रति गहननिष्ठा का परिपक्व न होना। इस कमी को जब तक पूरा न किया जाय तब तक कोई व्यक्ति सच्चा आदर्शवादी नहीं बन सकता।

कहना न होगा कि निष्ठाओं की परिपक्वता केवल धार्मिक एवं आध्यात्मिक आधार पर ही सम्भव है। उसी तत्व दर्शन में यह गुंजायश है कि मनुष्य का वास्तविक स्वरूप देह से भिन्न अविनाशी आत्मा के रूप में हृदयङ्गम करादे और आदर्शों को ही उसका वास्तविक स्वार्थ मानने के लिये प्रभावित करदे। शरीर भाव में जाग्रत व्यक्ति अपने को मनुष्य मानेगा और भौतिक लालसाओं के लिये आतुर रहेगा। जब मूलभूत मान्यता अपने को आत्मा, शरीर से भिन्न समझने की हो जाती है, तभी सांसारिक प्रलोभनों को छोड़ने और आत्म कल्याण के लिये संयम और परमार्थ अपनाने की निष्ठा जागती है तभी जीवन नीति में प्रगाढ़ रूप से आदर्शों के प्रति अनन्य आस्था का विकास होता है। व्यक्ति का कर्तव्य तो सामाजिक, राजनैतिक आधार पर भी शानदार हो सकता, पर इसी अन्तःनिष्ठा में उत्कृष्टता की स्थापना के लिये धर्म एवं अध्यात्म को ही आधार बनना पड़ता है। इसके अतिरिक्त अन्य किसी आधार में न स्थायित्व है न गहराई।

कहा यह जा रहा है कि व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण की पुण्य प्रक्रिया को लेकर चलने वाली युग निर्माण योजना को बहुत समझ सोचकर अपना आधार धर्म और अध्यात्म को ही स्वीकार करना पड़ता है। तत्वदर्शी ऋषियों ने लोक-मंगल का आधार इसे ही माना था और अन्य सभी स्तर के प्रतिपादनों को अस्थिर बताया था। उन्होंने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मानवता की विश्व की महती सेवा साधना का विशाल कलेवर धार्मिकता के सहारे खड़ा किया था। यह निष्कर्ष आज भी जहाँ का तहाँ है। और जब कभी भी व्यक्ति की आस्थाओं में आदर्शों का समन्वय करने की आवश्यकता पड़ेगी, तब उसी माध्यम को अपनाने के लिए विवश होना पड़ेगा। अन्य आधारों में भी उत्कृष्ट आदर्शों का समर्थन किया जा सकता है, पर मूल आधार धर्म ही रखना पड़ेगा, अन्यथा व्यक्ति स्वेच्छापूर्वक लोकोपयोगी न बन सकेगा। उसे कम्यूनिस्ट विधि व्यवस्था के अनुसार अत्यधिक बंधित, नियन्त्रित और बंदी जैसी विवशता रखकर ही थोड़ा बहुत उपयोगी बनाया जा सकता है। अन्यथा स्वतन्त्र स्थिति में भौतिकवादी व्यक्ति वैयक्तिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए उद्धत और उच्छृंखल ही बन सकता है। इन तथ्यों पर विचार करने से व्यक्ति निर्माण के महान प्रयोजन को अध्यात्म के अतिरिक्त और किसी आधार पर विकसित किया ही नहीं जा सकता।

हमें प्रयत्न यही करना चाहिये कि वैयक्तिक और सामूहिक जीवन में आदर्शवादिता का समावेश करने के लिये धर्म आधार को मान्यता दें और लोकशिक्षण की प्रक्रिया में धार्मिक कर्मकाण्डों के महत्वपूर्ण प्रभाव का उपयोग करे। बेशक आज की परिस्थितियाँ काफी विचित्र हैं। पिछले दिनों लोगों ने धर्म अध्यात्म के नाम पर पूरा-पूरा अनाचार बरता है। निहित स्वार्थों ने सिंह की खाल ओढ़कर अपना उल्लू सीधा करने वाले गधे की तरह इतना अनर्थ बरता है कि सर्व साधारण की निष्ठा इस ओर से पूरी तरह डगमगा गई है। बुद्धिजीवी लोग धर्म की बात नहीं मानना चाहते और उसका नाम सुनते ही भड़क उठते हैं। दोष उनका तनिक भी नहीं है। इन दिनों में जो कुछ धर्म और अध्यात्म के नाम पर दिखाई दे रहा है, उसे मूढ़ता और धूर्तता का समन्वय ही कहा जा सकता है। बाहर कुछ भीतर कुछ की बात चलती तो हर जगह है, पर यह मिलावट धर्मक्षेत्र में असह्य है। सीमेण्ट में बालू मिल सकती है पर साबुन में कालोंच की मिलावट हो, चीनी में मिर्च मिली हो तो उसका पता चलते ही भारी विक्षोभ उत्पन्न होगा। धर्म में धूर्तता और मूढ़ता का समावेश निस्सन्देह असह्य है। फिर भी उससे मूल तथ्य की उपयोगिता से इन्कार नहीं हो सकता। सिर में जुएँ पड़ जायँ तो जुएँ हटाने पड़ेंगे। सिर को निरुपयोगी कहकर उसे काट फेंकने का आवेश ठीक नहीं। विचारशील लोगों की धर्म के प्रति अनास्था का कारण समझा जाना चाहिये और उनके सामने उसका ऐसा परिष्कृत रूप रखा जाना चाहिये, जिससे वे असली और नकली का स्वरूप समझ सकें। असली का उदय होने पर ही नकली की पोल खुलती है और उसका पलायन होता है। सूर्योदय होने पर ही अन्धकार भागता है। धर्म और अध्यात्म का परिष्कृत उपयोगी और वास्तविक स्वरूप जब सामने आयेगा तो भड़काने वाले लोग उसकी उपयोगिता ही स्वीकार नहीं करेंगे बल्कि फैले हुये अनाचार को भी इस क्षेत्र से पलायन करने के लिए विवश होना पड़ेगा।

इस तथ्य को युग निर्माण शाखाएँ जितनी अच्छी तरह जितनी गहराई के साथ जितनी जल्दी समझ लें उतना ही अच्छा है। बात समझ में आ जाने पर अपनी मौलिकता पर हमें विश्वास होगा। अन्य संगठन या अन्य व्यक्ति क्या सोचते एवं क्या करते हैं, यह देखने की या उनकी नकल करने की जरूरत नहीं है। हमें अनुगमन के लिये ललचाने की जरूरत नहीं। अपना काम मार्गदर्शन है सो अपनी गरिमा को समझते हुये अपनी मौलिकता का ध्यान रखते हुए हम स्वतन्त्र चिन्तन का स्वतन्त्र पथ निर्धारण का साहस भी करना चाहिये और गर्व भी ! हमें यह निश्चित रूप से मानकर चलना चाहिए कि भावनात्मक नव-निर्माण का युग निर्माण का आधार धर्म और आध्यात्म ही हो सकता है, उसकी उपेक्षा करके हम कटी पतंग की तरह इधर-उधर भटकते भर फिरेंगे। किसी लक्ष्य पर न पहुँच सकेंगे। अपने चिन्तन विधि विधान और क्रियाकलाप के प्रति हमें सुदृढ़ निष्ठा परिपक्व रखनी चाहिये और उसी को मजबूती के साथ हाथ से पकड़कर आगे बढ़ना चाहिये। सुनिश्चित लक्ष्य और व्यवस्थित कार्य पद्धति को लेकर परिपूर्ण निष्ठा के साथ अपनी गतिविधियाँ अग्रगामी बनेगी तो उनका सत्परिणाम निश्चित रूप से सामने आयेगा। लक्ष्य तक कल नहीं तो परसों पहुँचकर ही रहा जायेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति निर्माण के लिये समारोह के रूप में वर्ष में एक बार शाखा सदस्यों को अपना जन्म दिन समारोह अवश्य ही मनाना चाहिये। स्वजन सम्बन्धी और पड़ौसियों को जितनी अधिक संख्या में सम्भव हो बुलाना चाहिये। स्वागत-सत्कार कर खर्चा इतना कम रखना चाहिये कि निर्धन व्यक्ति भी उसी आयोजन को उसी शान के साथ मना सकें। जिस प्रकार कि अमीर ने मनाया था। अपने हर आयोजन में यह ध्यान रखना चाहिये कि खर्च की ऐसी परम्परा न चल पड़े जिससे गरीब लोग उसे अपनाने में संकोच करें और कम खर्च की व्यवस्था में अपनी बेइज्जती अनुभव करें। सौंफ सुपारी का स्वागत सत्कार पर्याप्त माना जाना चाहिये। उत्सव की सफलता अधिक उपस्थिति, महत्वपूर्ण प्रवचन, संगीत, उस अवसर पर लिये गये व्रत संकल्प की गरिमा के साथ आँकी जानी चाहिए।

दैनिक जीवन में उपासना, स्वाध्याय, आत्म-निरीक्षण नियमित दिनचर्या सेवा साधना के लिये नियमित क्रम व्यवस्था बने इसके लिये सदस्यों को जोर देकर और सम्पर्क क्षेत्र में अनुरोधपूर्वक कहा जाना चाहिए। आरम्भिक ढर्रा कुछ दिन साथ देकर शुरू कराया जाना चाहिये।

परिवार शिक्षण के लिये वर्ष में एक बार, 'विवाह दिन' मनाने की परिपाटी कम से कम शाखा सदस्य तो आरम्भ कर ही दें। इस माध्यम से दाम्पत्य जीवन से लेकर परिवार की प्रत्येक व्यवस्था पर प्रकाश डाला जा सकता है। परिवार संस्था का इसे वार्षिकोत्सव कहा जाय तो उचित ही होगा।

बच्चों से लेकर बड़े तक के संस्कार यथा समय होते रहे और इस माध्यम से उस कुटुम्ब तथा पड़ौस में व्यक्ति या परिवार के प्रति और परिवार का व्यक्ति के प्रति क्या व्यवहार तथा दृष्टिकोण होना चाहिये यह समझने में सुविधा रहेगी।

त्यौहारों में से जिन दस प्रमुख पर्वों की चर्चा पिछले पृष्ठों में की गई है, उन्हें सामूहिक रूप से किसी सार्वजनिक स्थान पर मनाया जाना चाहिये, और उसमें सम्मिलित होने के लिए उस क्षेत्र के लोगों को घर-घर जाकर अनुरोधपूर्वक आमंत्रित करना चाहिए। ऐसा प्रयत्न प्रारम्भ से ही करना पड़ेगा। कुछ दिन बाद तो उनमें उपस्थित होने की आवश्यकता तथा उपयोगिता वे स्वयं ही समझने लगेंगे और बिना बुलाये आया नहीं करेंगे वरन् पड़ौस के लोगों को भी साथ लाया करेंगे। संगठन की दृष्टि से इस प्रकार के आयोजन बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगे। लोक शिक्षण तो उनमें कूट-कूट कर भरा ही हुआ है। पूजा प्रक्रिया का कर्मकाण्ड इस सूझ-बूझ के साथ मनाया जाना चाहिए, जिससे उपस्थिति हर व्यक्ति यह अनुभव करे कि वह मात्र सुनने वाला या दर्शक ही नहीं वरन् धर्मकृत्य का भागीदार यजमान भी है। अपनी पर्व पद्धति इसी प्रकार की है।

उसमें इन बातों का ध्यान रखा गया है फिर भी आवश्यकतानुसार ऐसी रीति-नीति को उसमें और जोड़ा जा सकता है, जिसमें उपस्थित लोग अपने को उसका भागीदार और श्रेय साधक यजमान अनुभव करें। प्रवचनों की सुन्दर व्यवस्था हर हालत में होनी चाहिये। इसके लिए अनभ्यासी लोग अपनी महिमा बताने के लिये बहुत उछल-कूद न करें वरन् भाषण की कला से विज्ञ प्रतिष्ठित लोगों को उसके लिए तैयार करें। उन्हें नियत विषय पर नियत समय तक निर्धारित तथ्यों के प्रतिपादन करने के लिए पहले से ही तैयार करके रखें। कहना क्या है यह बताना अपना काम है। उस प्रस्तुत संदर्भ की इतनी सामग्री पहले ही देनी चाहिए, जिससे वे अपनी योजना के अनुरूप ही बोल सकने में समर्थ हों। ऐसी सुविधा न देने पर वे अप्रासांगिक भी बोल सकते हैं और उससे आयोजन का उद्देश्य ही खटाई में पड़ सकता है। शाखायें इन सब बातों को ध्यान रखते हुए समारोहों की प्रचलन व्यवस्था कर सकें तो उसमें व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण का प्रयोजन पूरा करने में आशाजनक सहायता मिलेगी।

इस तथ्य को हृदयंगम किया जाना चाहिए तथा उसे चरितार्थ करने की क्षमता व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर की जानी चाहिए। युग निर्माण योजना की शाखाओं के वरिष्ठ परिजनों को इस संदर्भ में पहल करनी चाहिए और परस्पर मिलजुल कर एक-दूसरे की योग्यता तथा उत्साह बढ़ाकर इस प्रक्रिया को सफल बनाना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोक जागरण के लिए जन-सम्मेलन

सामूहिक शक्ति का विकास सम्मेलनों से

एक विचार के लोगों का एक स्थान पर मिलन होने से उनकी प्राण चेतना का समन्वय होता है और सभी में उनकी प्रकृति के अनुरूप उत्साह उत्पन्न होता है। इस उत्साह से अनायास ही क्रियाशीलता की उमंगें उठने लगती हैं। एकाकी मनुष्य अपने आपको अशक्त समझता है किन्तु जब एक साथ एक मन के लोग मिलते हैं तो अपने विस्तार-वैभव का भान होता है। हम अकेले नहीं है। अनेक हमारे साथ हैं। इस कल्पना मात्र से मनुष्य में उमंगें उठने लगती हैं। एकाकीपन में जो भीरूता और दुर्बलता छाई रहती है, उसका समूह में पहुँचने से निराकरण हो जाता हैं। यह मिलन यदि अधिक महत्त्वपूर्ण प्रयोजनों के लिये हो, कारणवश घनिष्ठता उत्पन्न कर दे तो फिर उसका स्वरूप संगठन का बन जाता है। संगठन की शक्ति सर्वविदित है।

वन्य पशु समूह बनाकर रहते हैं। झुण्ड में रहने से उन्हें प्रसन्नता, सुविधा और सुरक्षा का लाभ मिलता है, भले ही वे एक-दूसरे से अधिक सहयोग न कर पाते हैं। पक्षी एक साथ चहचहाते उड़ते और लम्बी यात्राओं पर निकलते देखे जाते हैं। चींटी, दीमक, टिड्डी, मधुमक्खियाँ जैसे स्वल्प बुद्धि वाले प्राणी तक सहमिलन का—सहचरत्व का लाभ जानते हैं। उनकी अन्तः चेतना सूक्ष्म रूप से यह बोध कराती रहती है कि एकाकी रहने से नहीं समान प्रकृति के प्राणियों के साथ रहने में—मिल-जुलकर चलन में लाभ है। यह नियमित संदेश मनुष्य की अन्तरात्मा को भी विदित है। परिवार, गाँव, नगर इसी आधार पर बनते और बसते हैं। जाति और वर्ग इसी अन्तः प्रेरणा से विकसित हुये हैं। यायावरों के कबीले, सभ्यता से दूर रहते हुये भी अपने समूह समुदाय में निवास करते हैं। डाकुओं के गिरोहों से लेकर सन्तों की जमात बनने तक में यही प्रकृति प्रेरणा काम करती है।

समान सद्विचारों के व्यक्ति बार-बार मिलें और एक-दूसरे के निकट आकर अपने उत्साह एवं कर्तृत्व के बढ़ाते हुये अधिक सामर्थ्य प्राप्त करें—लक्ष्य की ओर अधिक द्रुतगति से अग्रसर हों, इस उद्देश्य के लिये तत्वदर्शी महामनीषियों ने सम्मेलनों की परम्परा को बहुत प्रोत्साहन दिया है। समाज समूह का ही नाम है। मिल-जुलकर रहने की विधि व्यवस्था को ही सामाजिक मर्यादा और राजकीय अनुशासन कहते हैं। यह मानवी प्रगति के लिये नितान्त उपयोगी आवश्यकताएँ हैं। श्रेष्ठता की दिशा में अग्रसर होने के लिए भी इसी सामूहिकता की आवश्यकता है। इसका प्रथम चरण मिलन है। इससे परिचय होता, साहस बढ़ता और प्रोत्साहन मिलता है। क्रमशः यही मिलन अधिक सघन होने पर संगठित बन जाता है। मनुष्य जाति की प्रगति का इतिहास उसके संगठित प्रयत्नों का ही प्रतिफल है। धर्म और आध्यात्म-नीति और सदाचार जैसे उच्च प्रयोजनों के लिये तो इन प्रयत्नों की और भी अधिक आवश्यकता है। यों भौतिक प्रगति और सुरक्षा भी इसी में है। कल-कारखानों में श्रमिकों की सामूहिक क्षमता काम करती है—सेना में यही जन बल सुव्यवस्थित रहता है—हाट बाजारों में, मेले-ठेलों में आर्थिक तथा दूसरी तरह के अनेक लाभ मिलते हैं। धर्म क्षेत्र में भी तीर्थों पर्वों की धार्मिक मेलों की, कुम्भ पर्व। जैसे—विशिष्ट आयोजनों की परम्परा है। कथा, कीर्तन, सत्संग आदि में अन्य लाभों के साथ-साथ एक बड़ा लाभ यह भी है कि एक-एक प्रकृति के लोग एक स्थान पर एकत्रित होकर एक प्रकार की गतिविधियों में संलग्न हों। ऐसे प्रयत्न थोड़े समय के लिए होने पर भी समाहित लोगों में नव-चेतना उत्पन्न करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोमवती अमावस्या पर गंगा स्नान के प्रमुख घाटों पर धार्मिक प्रकृति के लोग जिस पुण्य लाभ को पाने के लिये जाते हैं, उसमें एक बड़ा निमित्त धर्म प्रेमियों को परस्पर मिल जुलकर अपने स्वभाव के अन्य लोगों से परिचय प्राप्त करना और घनिष्ठता स्थापित करना और आदान-प्रदान का द्वार खोलना भी है। अनेकानेक तीर्थ-स्थानों में भिन्न-भिन्न कारणों एवं इतिहासों को लेकर वार्षिक मेले होते रहते हैं। कुम्भ पर्वों को अखिल भारतीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का रूप प्राप्त है। इस एकत्रीकरण में एकीकरण के महत्त्वपूर्ण तत्व भरे रहते हैं। एकता की शक्ति से कौन परिचित नहीं है ? कच्चे सूत के धागे मिलकर हाथी बाँधने में समर्थ मजबूत रस्सा बनते हैं और अति दुर्बल सींके मिलकर बुहारी के रूप में कूड़ा-करकट बुहार कर फेंकने योग्य बनती है। ईंटों के मिलन से ही इमारत खड़ी होती है और कोशिकाओं के छोटे घटक मिलकर काया का ढाँचा खड़ा करते हैं। सदुद्देश्य के लिये सज्जनों का सम्मेलन इतने अधिक सत्परिणाम उत्पन्न करता है, जिसकी सहज कल्पना भी कठिन है।

पर्वों में से अनेक ऐसे हैं जो सामूहिक रूप में ही मनाये जाते हैं। बसंतपंचमी, होली, श्रावणी, विजयादशमी, शिवरात्रि, रामनवमी, जन्माष्टमी, मकर संक्रांति, गणेश चतुर्थी जैसे पर्व विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न प्रकार से सामूहिक आयोजन के रूप में ही मनाये जाते हैं। स्त्रियों के अपने पृथक भी शीतला अष्टमी, हरितालिका व्रत, गणगौर आदि के आयोजन होते हैं। इन दिनों तो यह उत्सव मात्र मनोविनोद के तथा प्राचीन परिपाटियों की चिन्ह पूजा मात्र के समान हो गये हैं, पर प्राचीनकाल में इनके साथ-साथ लोक शिक्षण के आधार भी जुड़े रहते थे। इन उत्सवों में एकत्रित जन समुदाय को विद्वान मनीषियों द्वारा प्रेरणाप्रद उद्बोधन दिये जाते थे। असल में पर्वों की परम्परा स्थापित करने का उद्देश्य ही यह था कि इन अवसरों पर जनसाधारण की बड़ी उपस्थिति बिना विशेष निमन्त्रण आयोजनों के अनायास ही नियत समय पर हो जाया करें और उन लोगों को कर्तव्य पालन का मार्ग-दर्शन मिलता रहे। हर पर्व के साथ अपनी-अपनी प्रेरणायें जुड़ी हुई थीं। व्यक्ति और समाज की अगणित समस्यायें हैं। उनके अनेक स्वरूप हैं और समयानुसार उनके समाधान भी अनेक प्रकार के हैं। सामयिक मार्ग-दर्शन के लिए बार-बार एकत्रित होना—विचार विनिमय करना आवश्यक है। पर्वों को मनाने के प्रथा मूलतः इसी प्रयोजन की पूर्ति करती है। ऐतिहासिक स्मृतियों का बनाये रहना और सत्परम्पराओं के प्रति पुनः-पुनः आस्था उत्पन्न करना तथा उत्साह उल्लास की उमंगों से मन संस्थान को अधिक समर्थ बनाना भी इन पर्व समारोहों का अतिरिक्त उद्देश्य रहता था।

यज्ञ के अन्यान्य अनेक लाभ हैं। उन्हीं में एक लाभ यह भी है कि वह एक उपासनात्मक सहप्रयास है। उसकी सारी व्यवस्था सामूहिकता के द्वारा परस्पर सहयोग के आधार पर सम्पन्न होती है। इसमें मात्र मिलन ही नहीं सहकृत्य भी होता है। रीतियों के भाँति इस धर्मानुष्ठानों में भी सहकृत्य से सर्वश्रेष्ठ उमंगें उठती हैं और उनमें सम्मिलित होने वाले व्यक्तियों को ही नहीं पूरे वातावरण में उपयोगी प्रवाह झरने का भी लाभ मिलता है। सहगान में जो आनन्द आता है, वह एकाकी गुनगुनाने में कहाँ आता है ? सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहनृत्य-सहअभिनय होते हैं और उनसे कर्ताओं और दर्शकों को भरपूर लाभ मिलता है। विभिन्न क्षेत्रों में अपने-अपने ढंग से सहनृत्य, सहगान प्रचलित है। उनकी व्यवस्था लोग उत्साह के साथ सम्पन्न करते हैं। गुजरात का गरवा, पंजाब का भांगड़ा, ब्रज के होली रसिया, हिमालय के पाण्डव नृत्य आदि देखते ही बनते हैं। इस सम्बन्ध में जन-जातियों में नृत्य-गान की अपनी-अपनी परम्पराएँ हैं। इन प्रयोजनों को निरर्थक उछल-कूद या सस्ता मनोविनोद मात्र नहीं माना जाना चाहिए। इनका भावनात्मक परिणाम उत्पन्न होता है। उसमें एक विशिष्ट प्रकार की सम्मिलित विद्युत शक्ति उत्पन्न होती है। उसके प्रभाव से सभी उपस्थिति लोग लाभान्वित होते हैं। यह आयोजन जैसे भले-बुरे उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किये गये होंगे उसी के अनुरूप उत्कृष्ट या निकृष्ट परिणाम भी उत्पन्न होंगे। मिलन से भाव शक्ति का उत्पन्न होना निश्चित है, वह किस स्तर का है, किस निमित्त उत्पन्न किया गया और उसे किस प्रयोजन में लगाया गया यह बात अलग है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शोभा यात्राएँ

जुलूस भी एक प्रकार से सैन्य-प्रदर्शन की भाँति है। सेना का, पुलिस का गश्त लगता है, परेट निकलती है और आतंकित, उपद्रव ग्रस्त लोगों को तत्काल सान्त्वना मिलती है और वे सुरक्षात्मक संरक्षण का अनुभव करते हैं। यह समूह शक्ति का प्रभाव है। जुलूसों का उद्देश्य भी यही होता है। उनमें चलने वाले लोग अपने समर्थन एवं संगठन में सम्मिलित जन-शक्ति का परिचय सर्व साधारण को देते हैं। पंक्ति में चलने वाले लोगों का मनोबल बनता है, वे अपने साथ बड़ी जन-शक्ति होने का आश्वासन और सहायता अनुभव करते हैं। संकोच छूटता है और उत्साह बढ़ता है। जुलूस में सम्मिलित होकर घूमने वाले उस शोभा यात्रा के उद्देश्यों के प्रति अधिक परिपक्वता विकसित कर लेते हैं। दूसरों के उस प्रदर्शन में प्रदर्शित तथ्यों के उद्देश्य का परिचय और जन-शक्ति का आनन्द मिलता है। सामर्थ्य को देखकर प्रभावित होना एक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक तथ्य है। जन-मानस को प्रभावित एवं आकर्षित करने के लिए भी अनेक संस्थाएँ अपनी रैलियाँ करती हैं। मोटी दृष्टि से इनमें लगा हुआ धन और श्रम निरर्थक गया लगता है, पर बात ऐसी है नहीं। जितने बड़े प्रदर्शन होते हैं, उतना ही अधिक प्रभाव उत्पन्न होता है और वातावरण बनता है। इस प्रभाव से प्रदर्शन कर्ता अपने उद्देश्य को पूरा कर सकने की क्षमता की जानकारी देते हैं, इससे जिन्हें डराना होता है, वे डरते हैं। जिन्हें सजग करना होता है, वे सावधान होते हैं। जिन्हें आश्वासन देना होता है, वे आश्वासित होते हैं, जिन्हें आकर्षित करना होता वे आकर्षित होते हैं। सामूहिक प्रदर्शनों से वाताव्रण में जो प्रभाव विद्युत उत्पन्न होती है, उससे प्रदर्शनकारियों को अपना उद्देश्य पूरा करने में प्रत्यक्ष और परोक्ष आधार मिलते हैं। यदि ऐसा न होता तो विज्ञ लोग इस प्रकार के आयोजनों की व्यवस्था करने में समय और धन की बरबादी न करते।

लोग अपने घरों पर छोटे-छोटे प्रसन्नता के अवसरों पर मित्र सम्बन्धियों को प्रीत-भोज देते—मित्रों की चाय पार्टियाँ करते देखे गये हैं। विवाह-शादी जैसे बड़े उत्सवों पर तो यह धूम और भी बढ़ जाती है। बरातियों और घरातियों की भीड़ घर में नहीं समाती। यहाँ तक कि कई बार तो मृतक भोजों तक में दावत-जाफत जैसे दृश्य दीखने लगते हैं। कोई बड़ा कारण नहीं होता तो लोग 'सत्यनारायण कथा' से लेकर तीर्थ-यात्रा से वापस लौटने तक में ऐसा ही प्रीतिभोज—ब्रह्मभोज करते हैं। कई तो अपने मरने से पूर्व ही अपना श्राद्ध तर्पण और ब्रह्मभोज कराते हुए पीछे के लिए निश्चित हो जाते हैं। इस प्रकार के सभी आयोजनों के पीछे पुण्य और यश की मान्यता भी हो सकती है, पर प्रमुख कारण वह प्रवृत्ति है, जो सज्जनों के साथ मिल कर बैठने—उन्हें एकत्रित देखने और आमोद-प्रमोद मनाने की अकांक्षा करती और संन्तोष पाती है। मरते समय अन्तिम इच्छा पूछने पर प्रायः मरणासन्न व्यक्ति अपने किन्हीं प्रियजनों को देखने की इच्छा करते हैं। यह वही मिलन आकाँक्षा है, जो मनुष्य को बल, साहस और संतोष प्रदान करती है। यह प्रवृत्ति हर किसी में पाई जाती है, यहाँ तक कि एकान्त गुफाओं में रहने वाले भी वन प्रदेश के किन्हीं पशु-पक्षियों से अपना रिश्ता बना लेते हैं और उनको समीपता में समय काटते और मोद मनाते हैं।

इन तथ्यों पर विचार करने से इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि उद्देश्य की पूर्ति के लिये किसी भी सामूहिकता, सामुदायिकता का उपयोग किया जाना आवश्यक है। भौतिक जीवन में तो इसके बिना एक कदम आगे बढ़ना सम्भव नहीं होता। विद्यार्थी स्कूलों के सम्मिलित उत्साह में ठीक तरह पढ़ते हैं। अमीर लोग घर में ट्यूशन नौकर रखकर भी पढ़ा सकते हैं पर ऐसे छात्र, स्कूल में पढ़ने वालों की तुलना में सदा पीछे ही रहते हैं। दुकानदार का काम ग्राहकों से घनिष्ठता बढ़ाये बिना चलता ही नहीं। "प्रगति के लिये अधिक लोगों का अधिक सहयोग" इस तथ्य से मनुष्य जाति चिरपरिचित है और मैत्री के विभिन्न रूपों का विभिन्न प्रकार से विकास उपयोग किया जाता है। आत्मिक जीवन में भी गुरु शिष्य परम्परा चलती है। गुरुकुलों, आरण्यकों, सत्रों, शिविरों तथा सत्संगों की क्रम व्यवस्था बनती है। शिक्षण चाहे सांसारिक हो अथवा आध्यात्मिक दोनों में ही समान रूप से सामूहिकता का समावेश सिद्ध होता है। एकाकीपन का दवाब कोई सिद्धयोगी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

या अविकसित कृमि कीटक ही सहन कर सकते हैं। सर्वसाधारण के लिए वह कठिन भी है और हानिकारक भी। लखनऊ मेडीकल कालेज में मुद्दतों तक सुधारा गया रामू नर बालक भेड़िये की आदतों को छोड़ ही न सका। उसका पालन तीन साल तक मादा भेड़िये ने अपने माँद में किया था। सभी वनवासी जानते हैं कि समूह छोड़कर एकाकी विचरण करने वाले वन्य प्राणी कितने निर्भय और उदण्ड होते हैं। इक्कड़-अकेला रहने वाला—सुअर, हिरन, हाथी और जो भी हो अकारण उस क्षेत्र के निवासी मनुष्यों तथा पशुओं पर आक्रमण करता है। इक्कड़ को निरस्त करके ही वनवासी दम लेते हैं। मनुष्यों के साथ रहकर कुत्ता सभ्य बन गया है अन्यथा जब वह जंगली होता है तो भेड़ियों को मात देता है। पालतू और वन्य पशुओं में यह सभ्यता असभ्यता का जो अन्तर देखा जाता है। उसमें मानवी सम्पर्क का लाभ मिलने न मिलने की बात ही प्रधान होती है। जिधर भी दृष्टि डाली जाय हम सामूहिकता के लाभ देखते हैं। आत्मिक प्रगति के लिये व्यक्तित्व के परिष्कार के लिये भी सत्प्रवृत्ति के लोगों का सदुद्देश्य के लिये, मिलन-सम्मेलन होते रहना आवश्यक है।

व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण, अपने मिशन का उद्देश्य है। नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति अपने समय ही सबसे बड़ी माँग है। अवगति का उलटकर प्रगति की ओर चल सकना ऐसे ही परिवर्तन से संभव हो सकता है। मनुष्य में देवत्व का उदय करने के लिये हर व्यक्तित्व को परिष्कृत करने की आवश्यकता होगी। धरती पर स्वर्णिम परिस्थितियों का अवतरण कराने के लिए असीम सृजनात्मक साधन जुटाने होंगे और उसके लिए प्रबल पुरुषार्थ करना होगा। इस सुविस्तृत लक्ष्य की पूर्ति के लिये प्रथम चरण विचारशील लोगों का एकत्रीकरण और प्रशिक्षण आवश्यक होगा। यही श्री गणेश है। यही शुभारम्भ है। आरम्भ यहीं से हो सकता है। सद्भाव सम्पन्न लोग जब सत्प्रयोजन लेकर मिलेंगे तो उपयोगी हलचल आरम्भ होगी।

विचार विनिमय क्रिया-कलाप में बदलेगा और सद् विचारणायें सत्प्रयत्नों में कार्यान्वित होती दीख पड़ेंगी। मात्र कल्पनायें करते रहने, योजनायें बनाते रहने से कुछ बात नहीं बनती। काम तो आदमी करता है। आदमी की आदत पशु प्रयोजनों में लगे रहने की है। उसे पेट, प्रजनन के गोरखधन्धे से आगे की कोई बात सूझती ही नहीं। पानी नीचे की ओर सहज ही बहता है, पर उसे ऊँचा उठाना हो तो रस्सी, बाल्टी, पम्प, चरस, ढेंकी आदि का प्रबन्ध करना पड़ता है। छत पर से कोई वस्तु गिरानी हो तो वह कार्य सहज ही पूरा हो जायेगा किन्तु ऊपर चढाने के लिये जीना, सीढ़ी आदि चाहिए। व्यक्ति और समाज को ऊँचा उठाने का लक्ष्य लेकर चलने वालों को सदा से विचारशील लोगों को एकत्रित करना पड़ा है, उनमें सदुद्देश्यों की पूर्ति के लिये उत्साह जगाना पड़ा है, उनकी सम्मिलित शक्ति को सत्प्रयोजनों में जुटाना पड़ा है।

सहयोग के सहारे ही छोटी बड़ी सृजनात्मक प्रवृत्तियाँ विकसित और परिपुष्ट होती हैं। प्रगतिशील प्रयत्न इसी प्रकार बनते और बढ़ते हैं। युग परिवर्तन का संकल्प लेकर चलने वाले सृजन सैनिकों के लिये भी यही रास्ता है। हमें भी अपनी क्रिया प्रणाली में सर्वप्रथम विचारशील जन समुदाय को एकत्रित करने, उन्हें युग की आवश्यकतायें समझाने, सृजन प्रयोजनों में सहयोग देने के लिये प्रशिक्षित करना होगा। इस पद्धति को अपनाये बिना कोई चारा नहीं। इसकी उपेक्षा करके प्रगति के पथ पर एक कदम बढ़ाना भी सम्भव न होगा। साहित्य-सृजन तो एक प्रकार का आहार है। आहार का लाभ तभी है जब उसे खाया, पचाया जाय। खाने वाले लोग ही न हो तो भोजन क्या करेगा ? लेखनी और वाणी का प्रभाव व्यक्ति पर होना चाहिये व्यक्ति की हलचलें ही सृजन प्रयोजन पूरा करती हैं।

एकाकी शिक्षण तो साहित्य पढ़कर या रेडियो सुनकर भी हो सकता है पर इतने से काम कहाँ बनता है ? आवश्यकता तो जीवित मनुष्यों के सजग सहयोग की है और वह होना सम्मिलित प्रयास के हो ही नहीं सकता। सम्मेलनों की इसी दृष्टि से आवश्यकता है। युगान्तरीय चेतना उत्पन्न करने के लिये हमें छोटे-बड़े सम्मेलनों में विचार गोष्ठियों की योजना बनाकर ही चलना होगा। आरम्भ यहाँ से किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है, इस तथ्य को समझने और कार्यान्वित करने में तनिक भी विलम्ब नहीं किया जाना चाहिये।

आयोजनों की पृष्ठभूमि और तैयारी

सड़क चौराहों पर अनेक शक्लें दीखती हैं। रेलों और बसों में ढेरों के साथ मिलना-जुलना होता है। दफ्तर, कारखानों, सिनेमाघरों, स्टेशनों में एक साथ टिड्डीदल की तरह व्यक्ति घुसते और निकलते हैं। मेले-ठेलों की भीड़-भाड़ का तो कहना ही क्या ? मनुष्यों का मनुष्यों से यह मिलना-जुलना निष्प्रयोजन है इसलिए उससे लाभ नहीं, असुविधा ही होती है। रेल में बैठने के लिये उस डिब्बे को तलाश करते हैं जिसमें भीड़ कम हो। होटल, धर्मशालाओं में भी वही पसन्द किया जाता है, जहाँ मनुष्य का कोलाहल कम हो। बाड़े में भेड़ें और जेलों में कैदी भरे रहते हैं पर इससे उनमें से किसी को कोई प्रसन्नता या सुविधा नहीं होती। जिस सम्मेलन का महत्त्व बताया गया है, वह विचारशील व्यक्तियों का सदुद्देश्य के लिये एकत्रीकरण है। ऐसे तो भीड़ जमा करने में मदारी भी प्रवीण होते हैं। वे गली, चौराहों, सड़क, फुटपाथों पर चाहें तब अपने बुद्धि कौशल से रास्ते चलते लोगों को खड़ा कर लेते हैं। छोटी-मोटी अजूबा या सामान्य घटना हो जाने पर फालतू लोग ऐसे ही खड़े हो जाते हैं। नाच-तमाशे का सरंजाम हो तो ऐसे ही बेकार लोग समय काटने और मुफ्त का मनोरंजन करने के लिये जमा हो जाते हैं। ऐसे समूह को सम्मेलन की संज्ञा नहीं दी जा सकती। उपयोगिता जिस जन-समुदाय की मानी जाती है उसकी दो शर्तें हैं। एकत्रित लोग विचारशील हों। मूढ़, अनगढ़, बेतुकी भीड़ जमा न हो गई हो, उपस्थित लोग इस स्तर के हों जिनमें कुछ समझने की क्षमता हो, जिन्हें विचारों का महत्त्व मालूम हो, उनमें दिलचस्पी हो। कुछ लोग ऐसे अनपढ़ होते हैं कि उन्हें विचारों में कोई रुचि नहीं होती। जिन्हें पेट भरने या मौज करने के अतिरिक्त और सब बातें बेकार लगती हैं।

ऐसे लोग एक दो किन्हीं विचार गोष्ठियों मे आते ही नहीं, आते हैं तो ऊँघते हैं, आपस में कानाफूँसी करते हैं या उचक-मचक करके दूसरों का ध्यान बँटाते हैं। बार-बार घड़ी देखते हैं और बीच में से ही उठकर चल देते हैं। ऐसे लोगों को जमा कर लेने से सम्मेलन का उद्देश्य पूरा नहीं होता। तमाशे के नाम पर अक्सर भीड़ जमा की जाती है। उद्देश्यपूर्ण सम्मेलनों में उपस्थित लोगों को कुछ दिशा प्रकाश देने का लक्ष्य रहता है और इस संदर्भ में उन्हें पहले से जानकारी रहती है, जो उसमें रुचि ले आयें। जिन्हें अरुचि हो उन्हें दावत का—मनोरंजन का, न आने पर बुरा मानने का लालच देना व्यर्थ है। घसीट बटोरकर जमा करने से उपस्थिति अधिक दीखने पर भी प्रयोजन कुछ सधता नहीं। सम्मेलनों की सफलता अधिक उपस्थिति के आधार पर आँकी जाती है। यह गलत है। उपस्थित लोगों की मनःस्थिति, सम्मेलन का लक्ष्य, उसमें दी गई प्रेरणा एवं उसे ध्यानपूर्वक सुने जाने का पर्यवेक्षण करके ही यह अनुमान लगाया जाना चाहिए कि सम्मिलित व्यवस्था में किया गया श्रम सार्थक हुआ या नहीं।

नवयुग का संदेश जनमानस में उतारने के लिए छोटी गोष्ठियों या बड़े आयोजनों की व्यवस्था करते समय उनमें सम्मिलित होने के लिए विचारशील व्यक्ति आ सकें। इसके लिए विशेष प्रयत्न करने होंगे। व्यक्तिगत निमंत्रण पत्र, सम्पर्क साधना आग्रहपूर्वक बुलाना जैसे उपायों को अपनाने की आवश्यकता होती है। उद्बोधन कर्ता चरित्र और ज्ञान की दृष्टि से परिपक्व होने चाहिए तथा प्रवचन शैली में प्रौढ़ता रहनी चाहिए। बैठक का स्थान सुरुचिपूर्ण रहे, अन्यथा आमंत्रित लोग अश्रद्धा लेकर लौटेंगे और उन्हें दुबारा फिर कभी आयोजन में बुला सकना कठिन हो जायेगा। इतनी बातों को ध्यान में रखकर चला जाय तो समझना चाहिए कि जो मिलन व्यवस्था बनाई गई है यह सफल सिद्ध होगी, भले ही उसमें उपस्थिति कम ही क्यों न हो ? लोकरंजन के लिए ध्यान रखा जा सकता है। संगीत स्वभावतः सबको रुचिकर होता है उसका भी आदि अन्त में ध्यान रखा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जा सकता है। यदि गाने, बजाने तथा दूसरे मनोरंजनों में ही समय बीत गया और तथ्य की पूर्ण चर्चा न हो सकी, हलकी-फुलकी बातें ही चलती रहीं तो समझना चाहिए कि विनोद व्यवस्था ही बनी। रंगारंग कार्यक्रम हुआ। नवयुग के अवतरण के लिये मानस में जो प्राण संचार अभीष्ट था उसकी पूर्ति के लिये सम्मेलन किस हद तक किस प्रकार सफल हो सकते हैं, उसका ध्यान आयोजन कर्ताओं को आदि से अन्त तक बना रहना चाहिए। अनेक वक्ता अनेक ढंग से अनेक बातें एक मंच से बोलें तो सुनने वालों का कौतूहल तो बढ़ता है पर उपस्थित लोगों के पल्ले कुछ नहीं पड़ता वरन् वे असमंजस लेकर जाते हैं कि वक्ताओं में से अनेक ने जो अनेक बातें कहीं, उनमें से किसे स्वीकार किया जाय किसे नहीं ? मात्र विद्वान, ज्ञानी, महात्मा प्रतिष्ठित आदि की बात सोचकर किसी को भी कुछ भी कहने के लिए मंच पर बिठा देना भारी भूल है। इससे जनता की कुसेवा होता है। वक्ता का सही चुनाव या सही विषय का निर्धारण न करके कुछ भी प्रवचन आरम्भ करा देना उपस्थित लोगों का समय और आयोजनकर्ताओं का श्रम बर्बाद करना है। पाँच हजार जनता के सामने प्रवचन करने के लिए कोई बेतुका आदमी बिठा दिया और वह एक घंटे वेसिलसिले की बातें करता रहा तो पाँच हजार घंटे नष्ट हुए। अब सात घण्टे का एक पूरा श्रम दिन माना जाता है। पाँच हजार घण्टे में ७११ श्रम दिन हुए। हर दिन की कीमत १५) मानी जाय तो यह राशि ७११ × १५ = १०६६५) हुई। जनता का इतना समय और धन बर्बाद करना सरासर अन्याय है।

किसी मोटे आदमी को बकवास करने का अवसर देकर उस एक आदमी को प्रसन्न भले ही किया जा सकता है। हँसी-दिल्लगी की बातें कहलाकर लोगों का मनोरंजन भले ही कर लिया जाय, पर आयोजन के मूल उद्देश्य की इससे तनिक भी पूर्ति न होगी। सम्मेलन में चरित्रवान और विद्वान वक्ता बहुत सोच-विचार कर निश्चित करने चाहिये जो निश्चित हों उन्हें भी कई दिन पूर्व मिशन के अनुसार विषय चुनकर देना चाहिए। वे उस विषय पर तैयारी कर सकें, इसलिए आवश्यक जानकारी देने वाला साहित्य उन्हें समय से पूर्व ही दे देना चाहिए। कोई विषय तैयार करने के लिए हर कुशल वक्ता को काफी पढ़ना, ढूँढना, सोचना और नोट करना होता है। हर प्रोफेसर यही करता है। केवल वज्र मूर्ख या ब्रह्मा जैसे पारंगत ही इस प्रकार के दावे कर सकते हैं कि उन्हें बोलने से पूर्व सोचने या निश्चय करने की आवश्यकता नहीं होती।

सम्मेलनों के आयोजन ढाई से तीन घंटे के होने चाहिए। आरम्भ में या अन्त में संगीत। परिचय प्रस्तावना का आरम्भ और धन्यवाद समापन का अन्त पन्द्रह-पन्द्रह मिनट कुल आधा घण्टा। संगीत आधा घण्टा, एक प्रवचन डेढ़ घण्टा, इस प्रकार ढाई घण्टा पूरा हो जाता है। सामान्यतया एक दिन के लिए एक वक्ता पर्याप्त होना चाहिए। पर यदि अधिक उपस्थित हों और कईयों को बुलवाने की आवश्यकता हो तो आधा घण्टा से कम समय किसी को भी नहीं देना चाहिए। अधिकतम दो तीन वक्ता ही पर्याप्त हैं। सभी मिशन की विचारधारा व्यक्त करें और उसके लिये मिशन के साहित्य के आधार पर बोलने की तैयारी करके आयें। यह बड़े सम्मेलनों की बात है। एक डेढ़ घण्टे की गोष्ठियों में एक वक्ता ही पर्याप्त है।

उपस्थित लोगों को भेड़ों की तरह नहीं वरन् पंक्तिबद्ध बिठाने के लिये स्वयं सेवकों की पूर्व व्यवस्था होनी चाहिए। स्त्रियों की प्रथम पंक्ति हो। बच्चे अक्सर आगे बैठते हैं और गड़बड़ी फैलाते रहते हैं। उन्हें पीछे या एक कोने में बिठना चाहिए। उन पर एक व्यक्ति अलग से नियुक्त करना चाहिए ? क्योंकि वे महत्त्वपूर्ण प्रवचन समझ तो पाते नहीं, चंचल स्वभाव होने से आपस में बात करते, झगड़ते, भागते हैं तथा दूसरी तरह की गड़बड़ियाँ पैदा करके सम्मेलन का वातावरण बिगाड़ते हैं। अच्छा तो यह है कि उन्हें पृथक ही रखा जाय। यदि बिठाना हो तो उन पर विशेष रूप से नियंत्रण रखा जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जूते, चप्पल या तो लोग पहने ही रहें या फिर उनकी रखवाली का प्रबन्ध वैसा ही रहे जैसा कि साइकिल स्टेण्ड पर। यह सुव्यवस्था मंदिरों में रहती है। ऐसा न करने से जूते चप्पल चोरी जाते और बदलते हैं। इससे जिनकी चीजें खोती हैं वे दुःख पाते हैं।

सम्मेलन स्थान की स्वच्छता, खुलापन, सज्जा, बिछावन, आच्छादन, मंच, लाउडस्पीकर, रोशनी आदि सब कुछ पहले से ही सुन्दर नयनाभिराम बनाया जाय। सादगी के साथ सज्जा का मिला देना ही कला है। सम्मेलन स्थल कलात्मक बनाने से सुरुचि, तत्परता एवं दिलचस्पी का परिचय दिया जाना चाहिये। मंच पर वे ही लोग बैठें, जिन्हें बोलना है। जिन्हें बोलना नहीं है ऐसे लोग भी अपनी मूर्खता अथवा शान दिखाने के लिए बिना आग्रह के ही मचक कर मंच पर जा बैठते हैं। ऐसे लोग अहंकार एवं उपहास्पद न बनने पायें इसलिये उनकी हरकत उसी समय टोक देनी चाहिए, जब वे आरम्भ कर रहे हों।

जिस-तिस बहाने बेकार लोगों का जमघट इकट्ठा करके विचार क्रान्ति के उद्देश्य से किये जाने वाले सम्मेलनों का स्तर न गिराने की नीति अपनाई जानी चाहिए और प्रयत्न भी किया जाना चाहिये कि उसमें समझदार वर्ग के लोग अधिकाधिक संख्या में उपस्थित हों। इसके लिए उस वर्ग को अपने उद्देश्य और कार्यक्रम से भी परिचित कराने की आवश्यकता होगी। विज्ञ लोग व्यस्त रहते हैं। समय का मूल्य समझने के कारण वे ऐसे ही किसी सभा-सम्मेलन की सूचना पाते ही दौड़ नहीं पड़ते। उन्हें यह विदित कराना पड़ता है कि वहाँ जाने की क्या उपयोगिता है ? अब सभा सम्मेलनों में शामिल होने का शौक घट गया है क्योंकि ऐसे आयोजन मनचले लोगों द्वारा ऐसे ही सस्ती वाहवाही लूटने, नेतागीरी कमाने, नाम छपाने और चंदा चाटने की ओछी दृष्टि से किये जाते रहे हैं।

वहाँ पहुँचने पर उथली उछल-कूद के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं लगता। इस असमंजस में विचारशील लोग तभी किन्हीं आयोजनों में सम्मिलित होने का निश्चय करते हैं जब उन्हें उस प्रयास के द्वारा कोई ठोस जनहित होने की सम्भावना प्रतीत होती है। इस तथ्य का ध्यान न रखते हुए हमें आयोजनों की सूचना पर्चे, पोस्टर, लाउडस्पीकर आदि से जनता के देते समय एक बात और ध्यान में रखनी चाहिए कि मिशन के उद्देश्यों, योजनाओं एवं गतिविधियों से सर्वसाधारण को अधिकाधिक परिचित कराया जाय। इसके लिये सम्मेलनों में उपस्थित होने के लिए जिन्हें आमंत्रित करना है उनकी प्रयत्नपूर्वक लम्बी सूची बनाई जाय।

भिन्न-भिन्न मुहल्लों के लोगों से पूछकर इस तरह की लिस्ट पहले ही तैयार करली जाय। इनमें न बहुत बड़े अमीर, विद्वान, अफसर व्यस्त व्यक्ति हों और न रुग्ण, वृद्ध अशक्त, असमर्थ, अस्त-व्यस्त लोग हों। मध्यम श्रेणी के लोग ही काम के हो सकते हैं, इसको नोट करके रखा जाय। ऐसे लोगों के पास जाने, सम्पर्क साधने एवं आमन्त्रित करने के लिए दो-दो की ऐसी टोलियाँ बना दी जायें, जो उनके स्थान, समय, शकल एवं स्वभाव से परिचित हों। स्मरण रहे ऐसे लोगों की उपस्थित बिना व्यक्तिगत निमन्त्रण के और किसी प्रकार नहीं हो सकती।

इस आमन्त्रण सम्पर्क में छपे निमन्त्रण पत्र आवश्यक है। साथ ही मिशन का परिचय एवं सम्मेलन का उद्देश्य बताने वाले पत्रक भी अवश्य हों। ऐसे पत्रक मथुरा से सस्ते मूल्य पर मिलते हैं। आमन्त्रण की सूची बड़ी भी रखी जा सकती है। कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं, जिनके उपस्थित होने की आशा नहीं की जा सकती। किन्तु उन्हें मान देने, सहानुभूति पाने एवं मिशन का परिचय कराने की दृष्टि से भी आमन्त्रण देने में हर्ज नहीं है। प्रचार परिचय भी तो अपना एक उद्देश्य है। जो न आ सके वे कम से कम इन महान् प्रयासों से तो परिचित रहने ही चाहिए। इस सम्पर्क प्रयत्न को पूरा महत्त्व मिलना चाहिए। प्रचार आमन्त्रण पर पैसा और समय खर्च करने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह भी सम्मेलन का उद्देश्य पूरा करने वाला उसका परोक्ष भाग है। इससे भी उपस्थित लोगों को प्रभावित करने की तरह ही न्यूनाधिक मात्रा में लाभ मिलता ही है।

बड़े पोस्टर गलियों के मध्य टाँगी जाने वाली कपड़े पर लिखी सूचनायें, दीवारों पर लेख

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जैसे प्रयत्नों से सर्वसाधारण को आयोजन की सूचनाएँ दी जानी चाहिए। प्रभात फेरियाँ निकलनी चाहिए। लाउडस्पीकर से सूचना प्रसारण होते रहना चाहिए। छोटे साइज के पत्रक बड़ी संख्या में बटते रहने चाहिये। इस प्रकार के अन्यान्य प्रयत्न को जनता को आयोजन अधिकाधिक सामाजिक जानकारी देते रह सकें, पहले से ही चलते रहने चाहिये।

आयोजनों में निमंत्रित करने के लिये लम्बी सूची बनाने और उनसे आमंत्रण देने के बहाने मिलने जाने को प्रकारान्तर से एक परोक्ष सम्मेलन ही माना जाय। उन्होंने अपने यहाँ आकर मिशन की विचारधारा का परिचय प्राप्त किया अथवा संयोजकों ने उनके घर जाकर परिचय कराया दोनों ही दृष्टि से एक ही उद्देश्य की पूर्ति होती है। अस्तु इसे प्रचार अभियान का अति महत्त्वपूर्ण पक्ष माना जाय और उसे करने योग्य आवश्यक कार्यों में ही सम्मिलित रखा जाय। सुविधा हो तो एक बार निमंत्रण देने के लिये दूसरी बार फिर स्मरण दिलाने और आग्रह करने के लिये भी जाया जा सकता है। यहाँ पर ध्यान देने की बात है कि दोनों बार कुछ न कुछ प्रचार साहित्य उन तक पहुँचाने की बात को स्मरण रखा जाय। एक बार में एक पत्रक से, एक सम्पर्क से जो बात नहीं बनी थी वह दो बार सम्पर्क साधने, दो प्रचार पत्रक पहुँचाने, दो बार चर्चा करने से अधिक अच्छी तरह हो सकती है। अस्तु निमंत्रण दो किश्तों में देने की योजना बनाई जाय। एक को अनुरोध कहा जाय दूसरे को आग्रह।

आगन्तुकों के आगमन के समय संयोजन कर्ताओं में से कुछ प्रमुखों को स्वागत द्वार पर रहना चाहिए। जाने वाले अभिवादन, आने की प्रसन्नता अभिव्यक्ति, कृतज्ञता को प्रकट करने वाले कुछ शब्द, यथास्थान बिठाना जैसे कार्यों के लिये कितने ही सुयोग्य संयोजकों की संलग्न रहना चाहिये। स्टेज आदि व्यवस्था सामान्य बुद्धि से सामान्य स्वयं सेवक संभाल सकते हैं। निमंत्रण देने जाना और आने पर स्वागत करना बड़ा काम है। यह कार्य प्रमुख व्यक्तियों को स्वयं ही सम्पन्न करना चाहिये।

पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में भगवान कृष्ण ने आगन्तुकों के पैर धोने का काम स्वयं अपने जिम्मे लिया था। इसमें उनकी नम्र विनयशीलता भी थी और साथ ही दूरदर्शिता भी। आगन्तुकों का उपस्थित होना एक अनुग्रह माना जाय और उनके प्रति उसी स्तर की विनम्र अभिव्यक्ति की जाय तो समझना चाहिये कि उन्हें अपना बना लिया गया। इस प्रकार अनुकूल मनःस्थितियों में बनाकर उपस्थित लोगों को आयोजन में दी गई प्रेरणाओं से अधिक प्रभावित किया जा सकता है। यह अनुकूलन ही भविष्य के जन समर्थन का द्वार खोलता है और सार्वजनिक प्रयोजनों में जन सहयोग से ही कोई प्रयत्न सफल होते हैं।

सार्वजनिक आयोजनों का एक उद्देश्य जन-समुदाय को एकत्रित करके उन्हें प्रेरणास्पद विचारों से प्रभावित करना है। हर व्यक्ति से मिलने और अलग-अलग बातें करने में बहुत समय नष्ट करके थोड़ा-सा लाभ प्राप्त हो सकेगा। सम्मेलन में एक जगह एकत्रित हुई जनता को एक ही समर्थ में विचार देने से कम समय में अधिक काम होता है। इसलिये जन-जागृति के लिये उनकी उपयोगिता असंदिग्ध है। इसलिये छोटे-बड़े जहाँ जैसी योजना बनाई गई हो, वहाँ इस प्रकार के सम्मेलन किए जाने चाहिए। लोक-शिक्षण से जनमानस को अनुकूल बनाया जाता है। इस अनुकूलता से समर्थन, समर्थन से सहयोग, सहयोग से अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति होती है। सम्मेलनों का प्रबन्ध एक प्रकार से बीजारोपण है, जिससे उपयोगी फसल काटी जा सकती है।

सम्मेलनों का एक उद्देश्य यह है कि आयोजनों के ढाँचे खड़े करने और व्यवस्था संभालने के लिए कुशल कार्यकर्ता प्रशिक्षित किए जायें। यह कार्य भी साथ-साथ ही चलना चाहिए। उनकी व्यवस्था में हाथ बँटाने वाले कार्यकर्ताओं को स्वयं-सेवकों की संख्या किस प्रकार बढ़ सकती है और उनसे न्यूनाधिक मात्रा में किस प्रकार श्रम सहयोग लिया जा सकता है, उन्हें क्या उत्तरदायित्व सौंपा जा सकता है, यह लम्बी तैयारी आयोजन कर्ताओं के मस्तिष्क में रहनी चाहिए। यों पैसा खर्च करके नौकरों से कुछ भी कराया जा सकता है। फिर सम्मेलनों की व्यवस्था पैसा देकर क्यों नहीं कराई जा सकेगी ? परन्तु इससे भावनाशील लोगों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रमदान संग्रह करने से जो दूरगामी परिणाम होते हैं वे न हो सकेंगे।

माना कि अनुभवहीनता के कारण नये लोग उतना अच्छी तरह काम नहीं कर सकते हैं जैसा कुशल मजदूर कर लेते हैं। इस कमी को दूर करने के लिए या तो उनके साथ स्वयं लगकर उन्हें काम सिखाना चाहिए अथवा उन्हें सहायक मजदूर देकर सुविधा पैदा करनी चाहिए। हर हालत में अधिक कार्यकर्ताओं का आधार श्रम दान लेने, उनमें सहयोग करने का उत्साह पैदा करने एवं भविष्य में अधिक सुयोग्य सिद्ध होने के लाभों को देखते हुए इस श्रमदान संचय को पूरा महत्त्व दिया जाना चाहिये और इसे धन दान से कम मूल्य का नहीं समझा जाना चाहिए। धन के बिना काम रुके नहीं रहते, उसकी व्यवस्था तो कर्ज लेकर या घर बेचकर एक आदमी भी पूरी कर सकता है। किन्तु श्रम सहयोग के बिना कोई लोक प्रवाह गतिशील हो ही नहीं सकता। उसके लिये आयोजन कर्ताओं की एक कुशल टीम का होना हर दृष्टि से आवश्यक है। हर बार के हर आयोजन में नये-नये सहयोगी, श्रमदानी ढूँढे जाने चाहिये और उनमें प्रत्येक के लिये काम ढूँढ़ने और देने के लिये गम्भीरतापूर्वक सोचा जाना चाहिये। निमंत्रण देने, प्रचार में संलग्न रहने, उत्सव के समय व्यवस्था में हाथ बँटाने के लिये स्वयं-सेवक को ड्यूटी देने, पंडाल यज्ञशाला आदि श्रमदान पूर्वक बनाने, सजाने जैसे अनेक काम सहयोगी कार्यकर्ताओं के लिये सोचे और दिये जा सकते हैं। इसलिये जितने अधिक श्रम सहयोगी मिल सकें, उन्हें ढूँढ़ने के लिये उतनी ही सूझ-बूझ का परिचय देना चाहिये जितना कि धन सहयोग प्राप्त करने पर दिया जाता है।

प्रचुर साधन इस प्रकार जुटेंगे

जनमानस का भावनात्मक परिष्कार ही युग परिवर्तन का प्रधान आधार है। उसके लिये गोष्ठियों से लेकर सम्मेलनों तक के अनेकानेक कार्यक्रम बनाने पड़ेंगे। वर्ष में एक बार का वार्षिकोत्सव तो हर शाखा को करना ही होता है। इसके अतिरिक्त बसन्त पर्व, गायत्री जयन्ती, गुरु पूर्णिमा पर एक-एक दिन और दोनों नवरात्रियों में नौ-नौ दिन के सत्र आयोजन करने होते हैं। इतना आयोजन कार्य तो हर जीवन्त शाखा को स्थानीय ही करने होते हैं। इसके अतिरिक्त जहाँ जीवन है वहाँ अपने घर से बाहर निकलकर पड़ोस में भी प्रकाश फैलाये बिना नहीं रह सकते। नई शाखाएँ स्थापित करने का प्रयास नई पीढ़ी बनाने के समान है। केला अपनी जड़ों में से नये-नये सजातीय पौधे उगाता रहता है। पेड़ के तने में से शाखा फूटती है और शाखाओं में उपशाखाएँ निकलने का सिलसिला चलता है। सभी जीवित प्राणी अपनी वंश वृद्धि करते हैं। जीवन का चिह्न विकास है। इसे शाखा प्रसार भी कह सकते हैं। युग निर्माण परिवार का जहाँ जीवित संगठन होगा, वहाँ उसका विकास विस्तार पड़ोस के क्षेत्र में हुए बिना रह ही नहीं सकता। इन नई स्थापनाओं से पहले भी उस क्षेत्र में सम्मेलन आयोजन करने होते हैं और जब वहाँ एकत्रीकरण संगठन का शुभारंभ होता है तो उसका शैशव रहने तक संरक्षण, सहयोग भी देना होता है। इसका तात्पर्य है, वहाँ भी काफी समय तक सम्मेलन आयोजनों के व्यवस्था उन्हीं जीवन्त शाखाओं को करनी होती है, जिसने कि वह स्थापना करने का उत्साह दिखाया था। इसके अतिरिक्त जहाँ संगठन नहीं है, वहाँ भी प्रचार कार्य करना आवश्यक है। अन्यथा जहाँ शाखाएँ नहीं हैं वहाँ अन्धकार पड़ा रहेगा। तब तो कुछ थोड़े से स्थानों में ही यह प्रकाश सीमित होकर रह जायेगा। आगे प्रसार विस्तार की परिपाटी तो चल ही नहीं सकेगी। प्रकाश का विस्तार हमारा लक्ष्य है और उसके लिये निरन्तर प्रयत्नरत रहना आवश्यक है।

इस क्षेत्रीय प्रसार विस्तार के सिलसिले में आरम्भिक खर्च तो समर्थ शाखाओं को ही करना होता है। पीछे तो स्थानीय सहयोग भी मिलने लगता है और वह नये क्षेत्र भी स्वावलम्बी बन जाते हैं। पर आरम्भ में ही वैसा नहीं बन पड़ता। स्पष्ट है कि हर छोटे-बड़े सम्मेलन के लिये कुछ तो खर्च चाहिये ही। यह प्रारम्भिक मूलधन जुटाने का उत्तरदायित्व उन्हीं के कंधों पर आता है, जिन्हें इस विकास-विस्तार में अभिरुचि है। ऐसी उदीयमान शाखाओं को अपने क्षेत्र में जन-जीवन का, नव जागृति का, नवयुग का संदेश सुनाने के लिए व्यापक कार्यक्रम बनाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होंगे और उनके लिये अर्थ व्यवस्था जुटानी होगी। हर आयोजन के लिए हर जगह हर बार चंदा किया जाय तो माँगने वालों का स्तर गिर जाता है। लोग उन्हें याचक वर्ग का मान लेते हैं और सम्पर्क में आने से कतराने लगते हैं। सर्वसाधारण से चंदा माँगना हो तो वह वार्षिक रूप में ही ले सकते हैं। वर्ष में एक बार वार्षिकोत्सव के या किसी दूसरे अवसर पर चंदा कर लेना उचित है। लोग उसे वार्षिक अनुदान के रूप में स्वीकार भी कर लेते हैं और अन्य टैक्सों की तरह उसे भी बिना किसी कठिनाई के देते रहते हैं। बार-बार माँगने और बार-बार देने से उस क्षेत्र में भी उपेक्षा और अवमानना आरम्भ हो जाती है। अस्तु, ज्ञान यज्ञ का प्रसार विस्तार करने के लिये अर्थ साधन जुटाने वाले कुछ स्थायी स्रोत होने चाहिये।

यह कार्य एक ही प्रकार हो सकता है कि सक्रिय सदस्य इस अनुदान की व्यवस्था अपने घर में अपने आप से आरम्भ करें और उसका अनुकरण करने के लिये अन्य लोगों को प्रोत्साहित करें। स्वयं कृपणता धारण किये रहने वाले दूसरों को प्रवाहित नहीं कर सकते। त्याग और बलिदान की दृष्टि से अपना आदर्श उपस्थित करने वाले ही दूसरों से वैसा करा सकने में सफल होते हैं। जो अपनी चमड़ी बचाते रहते हैं और दूसरों को आदेश देते रहते हैं, उनकी वाणी विदूषकों, अभिनेताओं जैसी हो जाती है। मुँह सामने लोग भले ही न कहें पर पीठ पीछे मजाक बनाते हैं और कहते हैं—"खैरात घर से आरम्भ की जाती है।" स्वयं आगे बढ़ने वालों के पीछे ही अनुयायियों की कतार चलती है। यदि सचमुच स्वेच्छा सहयोग एकत्रित करना हो तो इसके लिये पहले समर्थ शाखा के सदस्यों को उसका शुभारम्भ अपनों से ही कराना चाहिये। अंश दान को पूजा उपासना, स्वाध्याय, तप-साधन की तरह ही पवित्र धर्मकृत्य माना जाना चाहिये। अंश दान में श्रम समय का एक भाग लगाते रहना तो अनिवार्य है ही। आर्थिक अनुदान को भी आवश्यक माना गया है। युग-निर्माण मिशन के हर सच्चे सदस्य को एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य ज्ञान यज्ञ के लिये लगाते रहने की शर्त कर दी गई है। इस शर्त के पालन करने से ही यह जाना और माना जा सकता है कि निष्ठा में गहराई और सच्चाई है। अन्यथा जीभ के बकवास करते रहने में तो तोता भी प्रवीण होता है। 'पर उपदेश कुशल' तो कोई उचक्का भी हो सकता है। युग निर्माण परिवार के सदस्य इस श्रेणी के नहीं हो सकते। उन्हें अपनी आस्था का न्यूनतम परिचय ज्ञान घट स्थापित करने और सम्पर्क क्षेत्र में थैला पुस्तकालय चलाने के रूप में देना ही होता है।

समर्थ शाखाएँ अपने सभी सदस्यों को ज्ञानघट स्थापित करते रहने के लिये बाध्य करें और उन्हें बतायें कि यह सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। इसके बिना मिशन की सदस्यता अधूरी ही मानी जाती है। जो इतना नगण्य-सा त्याग अनुदान प्रस्तुत न कर सकें उनकी उदार आदर्शवादिता—सजीव तत्परता का लाभ नव निर्माण आन्दोलन को मिल ही नहीं सकेगा। मौखिक सहानुभूति से क्या काम चलेगा ? बातों के बताशे खाकर किस प्रकार पेट भरेगा ? सदस्यों में जो शिथिलता दिखा रहे हो उन्हें उस उपेक्षा से उबारना चाहिये। ज्ञान घट हर सदस्य के घर में रहना चाहिये।

इन दिनों सभी जीवन्त शाखाओं ने यह नीति निर्धारित करली है कि ज्ञान घटों की राशि का आधा पैसा प्रचार साहित्य के रूप में वापस लौटा दिया जाता है ताकि उसके सहारे वह थैला पुस्तकालय चलता रहे। इस प्रयोजन के लिये सस्ती प्रचार सामग्री इन्हीं दिनों छपी है। पत्रिकाएँ भी थैला पुस्तकालय के रूप में पढ़ाई जा सकती हैं। इसके लिये ज्ञानघट स्थापन कर्ता को अपनी तीन रुपया मासिक की राशि में से आधा धन प्रचार साहित्य के रूप में वापिस मिल जाता है और वह उसके सहारे अपने सम्पर्क क्षेत्र में थैला पुस्तकालय चलाता रहता है। शेष आधी राशि शाखा संगठन द्वारा व्यापक क्षेत्र में ज्ञान प्रसार के काम आती है। इसका सर्वप्रथम उपयोग चल पुस्तकालय के लिये होता है। यह ज्ञान रथ हर जगह आवश्यक है। जहाँ यह चलते रहेंगे, वहाँ जन जागृति और सक्रियता बनी रहेगी और नये सहयोगी मिलते रहेंगे। जहाँ चल पुस्तकालय नहीं चलते वहाँ देर-सबेर से शिथिलता आती और निष्क्रियता होनी निश्चित है। व्यक्तिगत रूप से थैला पुस्तकालय और सामूहिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप से चल पुस्तकालयों का चलना वह प्रथम चरण है जिनके सहारे शाखा की सक्रियता बनी रहने और बढ़ती रहने की आशा की जा सकती है। इसके लिये आवश्यक है कि एक सेवाभावी कार्यकर्त्ता स्थायी रूप से नियुक्त किया जाय। उसके पारितोषिक की राशि इन ज्ञानघटों की आधी बचत से शाखा द्वारा पूरी की जाय। कुछ कमी पड़ती होगी तो उसकी पूर्ति पुस्तक विक्रय के कमीशन से भी होती रह सकती है।

दोपहर से शाम तक चार घण्टे नित्य चलता है तो भी काम चल सकता है। इसके लिये पारितोषिक भी थोड़ा ही देना पड़ेगा। जहाँ अर्थ व्यवस्था ठीक हो वहाँ पूरे समय का ऐसा कार्यकर्ता रखा जाय जो प्रातः दो घण्टे सदस्यों से सम्पर्क साधने, जन्म दिन मनाने जैसे कार्य करता कराता रहे। रात को स्लाइड प्रोजेक्टर के माध्यम से अथवा घरों में कथा कहकर जनजागृति का कार्य करता रहे। स्थानीय प्रचार के लिये ज्ञान घटों की पूँजी काम करती रह सकती है। इसमें से कुछ बचता हो तो उससे शाखा के लिये ऐसे उपकरण खरीदे जाने चाहिए, जो समीपवर्ती क्षेत्र में भी प्रचार प्रयोजन के लिए आवश्यक हों।

ऐसे साधनों में (१) स्लाइड प्रोजेक्टर (२) लाउडस्पीकर (३) टेप रिकार्डर—इन तीन उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। यह तीनों प्रायः दो हजार की पूँजी से खरीदे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त यज्ञ कृत्य में काम आने वाले आच्छादन, पात्र उपकरण बनाने की आवश्यकता होती है, जिसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सके। उन्हें बार-बार न खरीदना पड़े। आयोजनों में हर जगह यह वस्तुएँ खरीदी जायें तो पैसा भी लगता है और बाद में वे वस्तुएँ निरर्थक हो जाती हैं। यदि यह उपकरण किराये पर मिल जायें तो किसी भी आयोजन का खर्चा प्रायः आधा बच जाता है और जगह-जगह आयोजन बड़ी आसानी से कम खर्च में सम्पन्न होते रह सकते हैं। इसके लिये छाया-मण्डप, बिछावन, सामग्री, घी होमने की तश्तरियाँ, काष्ठपात्र, पंचपात्र, पूजा की चौकी सजाने के चित्र आदि, आरती उपकरण जैसे—साधन जुटाने की आवश्यकता पड़ती है।

नौ कुण्डों के लिये उपर्युक्त साधन एक हजार से भी कम पूँजी में बन सकते हैं। पाँच कुण्डों के लायक साधन तो किफायत करने पर पाँच सौ के लगभग भी बन सकते हैं। इसी प्रकार स्थानीय चल पुस्तकालय की स्थापना में प्रायः एक हजार की पूँजी लगानी पड़ती है। दो हजार के यंत्र उपकरण, एक हजार के यज्ञ साधन, एक हजार का चल पुस्तकालय, यह चार हजार की पूँजी तो हर शाखा के पास होनी ही चाहिये। इसके लिये एक बार साहस करके यह सारे साधन जुटा लेने चाहिए। अपने वार्षिकोत्सव के अवसर पर इसके लिए अधिक दौड़-धूप करके चन्दा वसूली की कुछ बड़ी योजना बनाई जा सकती है। धनी-मानी लोगों में से जो मिशन के उद्देश्यों और क्रिया-कलापों से परिचित हों उनसे एक-एक वस्तु खरीद देने के लिए कहा जा सकता है।

बड़ा कदम यह है कि हम लोग दस पैसे का ज्ञान घट रखकर ही अपने कर्तव्य की इति श्री न मानलें। इसमें अधिक उदारता दिखाएँ। महीने में एक-एक दिन की आजीविका देने की बात सदस्यों की प्रौढ़ता का चिह्न है। इससे अधिक अनुदान में परिपक्वता की झाँकी मिलती है। दस पैसा रोज तो 'टोकन' (प्रतीक) मात्र है। यह राशि इतनी छोटी है कि इस घोर महँगाई के जमाने में उसे उपहासास्पद ही कहा जा सकता है। इस राशि से कुछ खरीदने जाया जाय तो उसके बदले में बच्चों को बहलाने जैसी ही कुछ वस्तु मिल सकेगी। अच्छी चाय का प्याला इन दिनों में ४० पैसे का मिलता है। दस पैसे में चौथाई कप अर्थात् इतनी चाय मिलेगी जिसे एक घूँट में पिया जा सके। सस्ती रोटी पच्चीस पैसे में मिलती है। एक तिहाई रोटी का टुकड़ा पाकर तो कुत्ते को भी संतोष नहीं होता। भिखारी भी अब पच्चीस पैसे से कम नहीं माँगते। दस पैसे देने पर इस तरह आकृति बनाते हैं मानो उनकी माँग नहीं सुनी गई और ऐसे ही बहकाकर भगाया गया हो। दस पैसे के छोले चने, टाफी, लेमचूस लेकर बच्चे मन भले ही बहला लें, जलपान उनका भी नहीं होता।

इतनी छोटी राशि सदस्यता की शर्त में इसलिए जोड़ी गई है कि वह निर्धन से निर्धन व्यक्ति के लिए भी सरल रह सके। एक घंटा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय इसलिए है कि उसे भावनाशील व्यक्ति व्यस्त से व्यस्त स्थिति में रहते हुए भी बिना किसी अड़चनन के निकाल सके। यह न्यूनतम अंश दान है। इतने भर को ही यदि अधिकतम—अन्तिम मान लिया गया हो तो समझना चाहिए कि प्रगति का मार्ग समाप्त हो ही गया। इतने न्यूनतम जल सिंचन से तो मिशन को जीवित भले ही रखा जा सके उसका विकास नहीं हो सकता।

यदि वस्तुतः युग निर्माण का महत्त्व समझा गया हो और उसमें अपना योगदान करने की उमंग उठी हो तो उसका एकमात्र उपाय यही है कि भावनाशील, कर्मनिष्ठ कार्यकर्ता अपने अंशदान की मात्रा बढ़ायें। समय भी एक घण्टे से अधिक दें और पैसे की राशि दस पैसे से बढ़ाकर महीने में एक दिन की आमदनी जितनी कर दें। जहाँ इतना उदार साहस मिशन के कर्मनिष्ठ सदस्यों में उभरे वहाँ समझना चाहिये कि शैशव ने प्रौढ़ता के क्षेत्र में प्रवेश कर लिया। बच्चे तो बाल-विनोद करते रह सकते हैं, महत्वपूर्ण कार्यों की तो प्रौढ़ों से ही अपेक्षा की जा सकती है। समय और पैसे का अंशदान जहाँ प्रौढ़ता का स्पर्श करने लगे, वहाँ समझना चाहिये कि वस्तुतः उस क्षेत्र में प्रकाश प्रसार के साधन जुट रहे हैं। वहाँ अर्थव्यवस्था से लेकर अन्य आवश्यकतायें सहज ही पूरी होती रहेंगी।

समय का विभाजन यदि स्वार्थ परमार्थ के साझीदारी से किया जा तो उसमें परमार्थ हिस्से में अब की अपेक्षा कहीं अधिक आ सकता है। आठ घण्टा कमाने के लिये, सात घण्टा सोने के लिये, पाँच घण्टा नित्य कर्म एवं अन्य कार्यों के लिये लगाते रहा जाय तो यह बीस घण्टा शरीर एवं परिवार के निर्वाह के लिए पर्याप्त होना चाहिए। शेष चार घंटा वे लोग परमार्थ के लिए बड़ी आसानी से निकाल सकते हैं, ये जो उसकी उपयोगिता एवं आवश्यकता सच्चे मन से अनुभव करते हैं। शरीर, निर्वाह एवं परिवार का पोषण का अपना महत्त्व है। उसके लिए २० घण्टे नित्य का समय पर्याप्त माना जाना चाहिए। जो शरीर और आत्मा दोनों का अस्तित्व अपने में मानते हैं और शरीर की तरह आत्मा की भी कुछ आवश्यकताएँ अनुभव करते हैं उनके लिए परमार्थ के लिए, मानव जीवन की गरिमा बनाए रखने के लिए इतना अनुदान किसी भी प्रकार कठिन न पड़ेगा। वे अपना समय संतुलन भली प्रकार बिठा सकते हैं।

इसी प्रकार ३० तीस दिन में २९ दिन की आमदनी से शरीर परिवार-पोषण की व्यवस्था बनाकर एक दिन की आजीविका देश, धर्म, समाज और संस्कृति की महती आवश्यकता को पूरा करने में लगा सकते हैं। कठिनाई और कुछ नहीं, एक ही है कि सच्चे मन से 'युग की माँग और अपने-अपने योगदान की आवश्यकता' को गंभीरतापूर्वक समझा गया या नहीं। यदि नहीं तो फुरसत न मिलने से लेकर आर्थिक कठिनाई और याद न रहने जैसे अनेक बहाने मौजूद हैं। किन्तु यदि वस्तुस्थिति गंभीरतापूर्वक समझी गई हो तो हर भावनाशील व्यक्ति एक घंटा समय और दस पैसा नित्य के प्रतीक से कहीं अधिक आगे बढ़ सकता है और अपनी उदारता के अनुरूप अंशदान के ऐसे उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है, जो दूसरों के लिए भी अनुकरणीय हो सकें।

कुछ कहने लायक काम यदि सचमुच ही करना हो तो अग्रिम पंक्ति में खड़े होने वाले युग निर्माण मिशन के कर्मठ कार्यकर्ताओं को अपना अंशदान बढ़ाने के प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए और उसका समाधान उदार महामानवों जैसी साहसिकता अपनाकर खोजना चाहिए। यदि इस सन्दर्भ में अच्छी सदस्यता काम कर रही होगी तो अपने आवश्यक संग्रह में से एक बारगी इतना कुछ दे सकना सुगम दिखाई पड़ेगा जिसको पाकर मिशन को अपना कार्यक्षेत्र अनेक गुना फैलाना संभव हो सके। परिवार के प्रति अपना मोह यदि विश्व परिवार के प्रेम में विकसित हो सके तो कुटुम्बियों के हित में अपना समस्त संचय गँवा देने की अपेक्षा यही अधिक उपयुक्त लगेगा कि घर कुटुम्ब को स्वावलम्बनपूर्वक अपना निर्वाह करने दिया जाय और उत्तराधिकार में जो अतिरिक्त लाभ उन्हें देने की बात सोची गई थी वह मानवीय भविष्य को उज्ज्वल बनाने वाले महान् प्रयोजन के लिए अर्पित किया जाय। इस मार्ग में वे लोग उतने बाधक नहीं होंगे, जिन्हें मुफ्त का माल मिलने में कुछ कमी पड़ती दिखाई देती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मूल बाधा तो अपनी ही कृपण अनुदारता की है। यदि वह किसी प्रकार घट सके तो अपने लोगों में से ही इतना समय और इतना धन प्राप्त हो सकता है, जिससे मिशन के प्रसार, विस्तार में समय और श्रम की जो पूँजी कम पड़ती है, उसकी पूर्ति अति सरलतापूर्वक सम्पन्न हो सके।

नव-निर्माण की आवश्यकताएँ अत्यधिक बढ़ी-चढ़ी हैं। ध्वंस और पतन के आधार खड़े करने में मनुष्य जाति की कितनी अधिक प्रतिभा, सम्पदा, कुशलता, मेहनत का उपयोग हुआ है, तब कहीं मानवीय गरिमा को पतन के वर्तमान स्तर तक गिराने में सफलता मिली है। यदि पुनर्निर्माण करना हो तो ध्यान में रखना होगा कि ध्वंस सरल है—पतन सुगम है। उत्थान एवं निर्माण में उसकी अपेक्षा अधिक साधनों की आवश्यकता पड़ेगी। व्यक्ति, परिवार और समाज के नव-निर्माण का विश्वव्यापी क्रिया-कलाप सम्पन्न करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक साधनों की ही आवश्यकता पड़ेगी। उन्हें जुटाने की बात हमें गंभीरतापूर्वक सोचनी होगी और उसके लिये प्रबल प्रयत्न अपेक्षित होंगे। इन साधनों का संग्रह करने के लिए प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों को सामर्थ्यवान क्षेत्रों में उदारता दिखाने के लिए सहमत करना होगा।

साहित्य, कला, शासन, शिक्षा, विज्ञान, धर्म जैसे सभी क्षेत्रों के सहयोग, अनुदान बड़ी मात्रा में आमंत्रित करने और जुटाने पड़ेंगे। इसके लिए प्रथम चरण हमारा अपना ही होना चाहिए। दूसरों को उदार अनुदान देने के लिए मात्र उपदेश देते रहने से भी तो कुछ काम बनता है, पर कोई बड़ा प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। जानकारी तो वाणी से भी दी जा सकती है, पर आदर्शों के लिए त्याग बलिदान की उदारता अपनाने के लिये अपना उदाहरण प्रस्तुत करने से कम से कम में काम नहीं चलता। महामानवों की उदार परम्पराएँ इसी आधार पर बनी और चली हैं, उनसे पहले अपने को होम किया है, तब उनके पीछे चलने को अन्य लोग उद्यत हुए हैं। इसका और कोई विकल्प नहीं है। यदि युग-निर्माण अभियान के सदस्यगण इस तथ्य पर विचार कर सकें और उदार अनुदान का शुभारम्भ अपने आप से कर सकें तो देखेंगे कि बाँहर से भी सहयोग की वर्षा होती है।

विचार क्रान्ति के लिए लोक शिक्षण की, लोक शिक्षण के लिए सम्मेलन आयोजनों की आवश्यकता रहेगी। इसके लिए टैपरिकार्डरों के माध्यम से विभिन्न वर्ग के लोगों को मिशन का संदेश सुनाने से लेकर, पर्व-संस्कार, सत्र, शिविर, गोष्ठी, सम्मेलन, आयोजन, संगीत, अभिनय, कथा, कीर्तन, आदि का कोई भी स्वरूप क्यों न दिया जाय लोगों को इकट्ठा करने और उन्हें सामूहिक उद्बोधन देने की आवश्यकता बनी ही रहेगी। इस कार्य में प्रतिमाओं की एवं साधनों की व्यवस्था किसी न किसी प्रकार जुटानी ही होगी। यह कार्य एक व्यक्ति नहीं कर सकता। जन सहयोग ही इसका एक मात्र आधार है। जन सहयोग स्वेच्छा एवं सरलतापूर्वक बड़े परिमाण में मिल सके, इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि उद्बोधनकर्ता को उस आदर्श पर विश्वास है या नहीं जिसके लिए वह दूसरों को उकसा रहा है। जन साधारण के भाव भरे सहयोग के लिये इस तथ्य को प्रमाणों की कसौटी पर खरा सिद्ध करना होगा कि अनुदान, माँगने वाले वस्तुतः प्रामाणिक हैं। इसके लिए यदि कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त करनी अभीष्ट हों तो मिशन के प्रत्येक कार्यकर्ता को अपना आपा इस कसौटी पर कसे जाने और खरे सिद्ध होने के लिए प्रस्तुत करना चाहिए। हमारे अनुदान, समय और धन की दृष्टि से यदि अनुकरणीय बन सकें तो प्रचार-प्रसार के लिये किये जाने वाले आयोजनों के लिए ही नहीं, अगले दिनों आरम्भ होने वाले सुविस्तृत रचनात्मक कार्यों के लिए, साधन सहज ही जुटते रहेंगे, उनमें कमी न पड़ेगी।

एक स्थान पर एकत्रित लोगों के लिए मन्दिर, चित्र प्रदर्शिनी, यज्ञ आयोजन के दृश्य उपयोगी उद्बोधन प्रदान करते हैं। दूसरा उपाय यह भी है कि उत्सव स्थानों की शोभा-सज्जा के लिये बड़े साइज के आदर्श वाक्यों का उपयोग किया जाय। प्रेरणाप्रद चित्र भी इस प्रयोजन को पूरा करते हैं।

विभिन्न उत्सवों के उपयुक्त प्रेरणाप्रद वाक्य चुने और बड़े साइज में चित्रवत् बनाये जा सकते हैं। उन्हें उपयुक्त स्थान पर सुसज्जित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रीति से टाँगा जाय तो न केवल उत्सव स्थान की शोभा बढ़ती है वरन् वहाँ उपस्थित होने वाले सभी लोग इन वाक्यों से चिन्तन की दिशा, धारा एवं प्रेरणा लेकर जाते हैं। विवाह-शादियों, गायत्री यज्ञों, युग निर्माण सम्मेलनों, नवरात्रियों जैसे आयोजनों में उनकी प्रवृत्ति के अनुरूप चित्रों और वाक्यों की सज्जा की जा सकती है। जुलूसों में खाली हाथों एवं झुण्ड की तरह निकल जाना एक बात है और आदर्श वाक्यों के कपड़े पर लिखे 'बैनर' हाथ में लेकर चलना दूसरी। रास्ता चलते लोगों और उस क्षेत्र के निवासियों, दुकानदारों को यह पता चलता है कि यह समूह किस प्रयोजन के लिए अपना जुलूस प्रदर्शन निकाल रहा है।

दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन से भी यही उद्देश्य पूरा होता है। उस रास्ते निकलने वाले अनेक व्यक्ति उन्हें पढ़ते जाते हैं। इस प्रकार एक उपयुक्त स्थान पर चित्र, आदर्श वाक्य अपने एक वर्ष के जीवन काल में भी हजारों लाखों को अपनी मूक प्रेरणा देता रहता है और एक अच्छे खासे वक्ता की भूमिका निभाता है। टीन पर स्टेन्सिल काटकर इस प्रकार का लेखन कार्य बेकार लोगों से भी कराया जा सकता है। उन्हें थोड़ी आजीविका मिल सकती है और मिशन का उपयोगी प्रचार कार्य होता रह सकता है।

लिफाफे, कार्ड, लैटर पैड आदि पर आदर्श वाक्य छप सकते हैं। रबड़ की मुहरें भी इधर से उधर आने-जाने वाले कागजों के सहारे अपना प्रभाव अनेक पर छोड़ सकती हैं। गोंद लगे 'स्टीकर' मेज, कुर्सी, अलमारी, किवाड़, हैण्डवेग आदि पर चिपके रहें तो उन पर लिखी प्रेरणाएँ भी उधर देखने वाले लोगों को अभीष्ट उद्देश्यों का परिचय दे सकती हैं।

सम्मेलनों की आवश्यकता पूरी करने के लिए इस प्रकार के अनेक उपाय हैं, जो जन साधारण का ध्यान उत्कृष्ट चिन्तन एवं आदर्श कृतित्व के लिए बहते हुए युग प्रवाह की ओर आकर्षित कर सकते हैं।

लोक-रंजन और लोक-मंगल का समन्वय

कर्म और ज्ञान की अपनी उपयोगिता का प्रत्यक्ष है। भाव संवेदना का महत्त्व उससे भी अधिक है। भाव तत्व ही वस्तुतः व्यक्तित्व के रूप में प्रकट होता है। अन्तः श्रद्धा ही आकांक्षा बनती है। उसी की प्रेरणा से मस्तिष्क और शरीर की गतिविधियाँ चलती हैं। भाव संवेदनाओं को उभारने और परिष्कृत करने का प्रयोजन जिस माध्यम से सम्पन्न होता है, उसे 'कला' कहते हैं। कला को सरस्वती के रूप में भारतीय संस्कृति में अत्यन्त उच्च स्तरीय सम्मान प्रदान किया गया है। कला विहीन को बिना सींग पूँछ का नर पशु कहा गया है।

चेतना के मर्मस्थल को प्रभावित करने, उभारने और प्रखर बनाने के लिये कला की आवश्यकता रहेगी ही। इसके बिना अन्तः क्षेत्र नीरस ही बना रहेगा। उस पर निष्ठुरता छाई रहेगी। ऐसे व्यक्तियों का व्यावसायिक उपयोग पर हो सकता है पर उसके साथ रहने पर किसी को कोई आनन्द नहीं मिल सकता और न वह कहीं भी किसी का भाव संवेदना का लाभ लेकर पुलकित हो सकता है। ऐसे व्यक्ति हलचलों की दृष्टि से ही जीवित कहे जाते हैं, संवेदना की दृष्टि से वे मृतक ही रहते हैं। करुणा, दया, ममता, स्नेह, सद्भाव, उदारता जैसे गुण जिनमें न हों वे लगभग क्रूर कर्कशों की, दुष्ट दुरात्माओं की स्थिति में जा पहुँचते हैं। दूसरों के दुःख में दुःखी होने, दूसरों के सुख से कोई मतलब न रखने पर मनुष्य अन्तःकरण की दृष्टि से मृतक ही कहा जायेगा। ऐसे मनुष्य सामान्यतया नीरस व निरानन्द रहते हैं। विकृति की दिशा पकड़ लें तो उन्हें क्रूर कर्मा नर-पिशाच बनने में देर नहीं लगती। दूसरों का प्राण हरण करना—किसी को तड़पते देखना भी उनके लिये विनोद का विषय होता है। ऐसे व्यक्ति मनुष्यता के लिए अभिशाप ही कहे जा सकते हैं। भाव संवेदनाओं के उभार का जिन्हें अवसर न मिले वे प्रायः इसी हेय स्तर के बन जाते हैं।

जन मानस का परिष्कार ही उज्ज्वल भविष्य की संरचना का एकमात्र आधार है। इसके लिए सत्प्रवृत्तियों का प्रचलन-सद् विचारणाओं का अभिवर्धन जितना आवश्यक है उतना ही भावना क्षेत्र की कोमलता का उत्पादन, परिपोषण भी अनिवार्य है। इसके लिये कला क्षेत्र की उपेक्षा करने से काम नहीं चल सकता। उत्कृष्टता का उद्गम अन्तःकरण है, वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उच्चस्तरीय भाव संवेदना से ही उपजता है। यदि यह उत्पादन न हो सके तो सामाजिक, आर्थिक आधार पर प्रतिपादित की गई नैतिकता अत्यन्त दुर्बल रहेगी। त्याग, बलिदान, संयम, सदाचरण की तपश्चर्या तो बन ही नहीं पड़ेगी क्योंकि भौतिक दृष्टि से उत्कृष्ट जीवन में अभावों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उसे कोई क्यों स्वीकार करेगा ? महामानव, ऋषि, देवात्मा, सज्जनों की मूलभूत उत्कृष्टता उनके अन्तःकरण के मर्मस्थल से ही उपजती है। कला के माध्यम से उसका उद्‌भव, अभिवर्धन होता है। नव-युग के अवतरण में अन्य सभी साधनों की अपेक्षा कला का आश्रय लेना अनिवार्य रूप से आवश्यक होगा। कला को भगवती सरस्वती माना गया है। उसकी गरिमा में, अभ्यर्थना में बहुत कुछ कहा जाता है।

सामान्य स्तर पर साहित्य, संगीत, अभिनय को कला को प्रमुख अंग माना जाता है। इन्हें दृश्य और श्रव्य विभागों में भी विभक्त किया जा सकता है। साहित्य आँखों से पढ़ा जाता है। अभिनय दृश्य है। चित्र, मूर्ति आदि भी दृश्य हैं। श्रव्य में कथा, कीर्तन, गीत, वाद्य, प्रवचन, परामर्श जैसे माध्यमों की गणना होती है। उन माध्यमों में उत्कृष्टता का समन्वय करके निष्ठुर नीरसता को कोमल संवेदनाओं की दिशा में मोड़ा-मरोड़ा जा सकता है। नृत्य एवं अभिनय के साथ गीत वाद्य मिल जाने से श्रव्य और दृश्य दोनों का समन्वय हो जाता है। यही कला क्षेत्र है। नव-निर्माण के लिये युग-परिवर्तन के लिये इस आधार को अपनाए बिना काम चल नहीं सकता।

विचारणीय यह है कि कला का उपयोग भाव संवेदनाओं में उत्कृष्टता उभारने की युग आवश्यकता किस प्रकार पूरी की जा सकती है ? इसके लिए कई काम योजनाबद्ध रूप से उठाने पड़ेंगे, जिनमें एक है तर्कसंगत के साथ-साथ भाव संगत, साहित्य का सृजन। उत्कृष्टता समर्थक एवं भाव संवेदनाओं को उभारने में समर्थ साहित्य का सृजन योजनाबद्ध रूप में किया जाय और उसे सर्व सुलभ-व्यापक बनाने के लिए समर्थ अर्थ तंत्र, व्यवस्था तंत्र तथा प्रसार तंत्र खड़ा किया जाय। अमेरिका से दास प्रथा समाप्त कराने में "टाम काका की कुटिया" उपन्यास ने अद्‌भुत भूमिका निभाई थी। उसे इतिहासकार कभी विस्मृत नहीं कर सके। आन्दोलनों का सरंजाम एक ओर और भावनाओं को उभार देने वाला साहित्य एक ओर रखा जाय तो कोमलता उभारने वाले साहित्य को वरिष्ठता देनी पड़ेगी। हमें ऐसे ही सृजन की तैयारी करनी चाहिए एवं उस उत्पादन को जन-जन तक पहुँचाने की योजना बनानी चाहिए।

साहित्य के उपरान्त दूसरा क्षेत्र है संगीत। अपनी आकर्षक क्षमता के कारण वह सहज ही लोकप्रिय है। लोग उसके कितने ही प्रकार और साधन स्वयं खड़े कर लेते हैं ? हर्षोल्लास की अभिव्यक्ति में उसके बिना काम चलता ही नहीं। गुनगुनाने से लेकर लयबद्ध गाने का कोई न कोई तरीका हर किसी को भाता है। जहाँ वाद्य यन्त्रों की मधुर स्वर लहरी का समन्वय हो जाय, वहाँ तो कहना ही क्या ? अन्यथा ऐसे भी ज्यों-त्यों करके काम धाम के बीच, रास्ता चलते, हल जोतते और बिस्तर पर पड़े-पड़े भी गीत गाये जाते हैं। उनसे न केवल गाने वाले को वरन् सुनने वाले को भी आकर्षण रहता है। यह तो हुआ स्वेच्छा उल्लसित अनगढ़ गायन। अब अभीष्ट प्रयोजन के लिए योजनाबद्ध संगीत की बात आती है। उसके लिए गायनों में आदर्शवादिता का सघन समन्वय ध्वनि प्रवाह की कोमलता और यथा संभव संगीत का समावेश होना आवश्यक है। इसके लिए सृजन, शिक्षण, प्रसार-प्रचलन जैसे कितने ही उपाय काम में लाने होंगे।

छोटे-बड़े संगीत सम्मेलन, सहगान कीर्तन के जो स्वरूप, जिस क्षेत्र में, जिस प्रकार बन पड़ें उसके लिए उस क्षेत्र के विचारशील लोगों को लोकरुचि के अनुरूप साधन खड़े करने चाहिए। क्षेत्रीय परम्पराओं के अनुरूप लोक रुचि ढली होती है इसलिए सर्वत्र एकरूपता नहीं लाई जा सकती। एक भाषा होने का लक्ष्य तो उत्तम है पर उसकी पूर्ति के लिए प्रयत्न करने और धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता पड़ेगी। आज तो जो भाषायें जहाँ प्रचलित हैं, उन्हीं के सहारे उस क्षेत्र की जनता से सम्पर्क स्थापित करना होगा। भाव साहित्य के प्रकाशन में हिन्दी का महत्त्व भले ही सर्वोपरि रहे पर अन्य भाषाओं की उपेक्षा करने से काम नहीं चलेगा। ऐसा करने से तो आधे भारत तक सत्साहित्य का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाश पहुँच ही नहीं सकेगा। ठीक इसी प्रकार गीतवाद्य का, संगीत का, माध्यम अपनाकर जन-मानस के परिष्कार का प्रयत्न करने की योजना में यह बात भी जोड़कर रखनी होगी। कि इस सृजन प्रचलन में क्षेत्रीय स्थिति को ध्यान में रखा जाय। हर क्षेत्र के लिए स्थानीय भाषा में स्थानीय ध्वनियों में गीत वाद्य की व्यवस्था बनानी पड़ेगी। एकरूपता से काम चल नहीं सकेगा। राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रधान रूप से साहित्य और संगीत को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, पर अन्य भाषा एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों की लोक रुचि को भी ध्यान में रखना होगा और उसके लिए भी आवश्यक साधन जुटाने होंगे।

संगीत की गरिमा सर्वविदित है। उसका आकर्षण और प्रभाव किसी से छिपा नहीं है। भारतीय संस्कृति में इस कला-पक्ष को अत्यन्त ऊँचा स्थान प्राप्त है। वेद अपनी संस्कृति के आदि ग्रन्थ हैं। उनकी समस्त ऋचायें छन्दबद्ध हैं। हर मन्त्र के साथ उदात्त-अनुदात्त-स्वरित की स्वर ध्वनियाँ दी गई हैं। सामवेद तो पूरी तरह गायन-शास्त्र ही है। तीन वेदों में से गायन के लिये अधिक उपयुक्त मंत्रों को एक स्थान पर संकलित करके उनकी अनेक ध्वनि लहरियों का निर्धारण किया गया है। साम गान इसी को कहते हैं। शब्द ब्रह्म—नाद ब्रह्म—शब्दों में लयबद्ध ध्वनि प्रवाह को ईश्वर के समतुल्य स्थान दिया गया है। कथा पुराण तो दूर चिकित्सा विज्ञान जैसे ग्रन्थ भी पद्य संस्कृत में लिखे गये हैं। उस समय गद्य की संरचना तो साहित्य में कभी-कभी ही यत्किंचित स्थान पाती थी अन्यथा जो कुछ लिखा जाता वह छन्दबद्ध ही होता था। पद्य का प्रमुख प्रयोजन गायन ही होता है।

गीत वाद्य की वैज्ञानिक प्रतिक्रियायें होती हैं। यदि वे सुनियोजित और सुगढ़ हैं तो उनसे जड़ पदार्थों, वनस्पतियों और जीवधारियों पर असाधारण रूप से अनुकूल प्रभाव पड़ता है। प्राचीनकाल में दीपक राग, मेघ मल्हार आदि ऐसे राग विद्यमान थे, जिनसे बुझे हुये दीपक जलने और बादल घिरने तथा बरसने की बात कही जाती है। यह प्राचीनकाल की बात हुई। आज भी उसके अनेक ऐसे उपयोग हैं, जो आनन्द उल्लास की अभिवृद्धि के अतिरिक्त सांसारिक दृष्टि से भी बहुत लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं। पौधों पर सुमधुर संगीत का उत्साहवर्धक प्रभाव पड़ता है। फसल की पैदावार बढ़ने, पेड़ों को फैलने और अधिक फल देने के रूप में देखा गया है। कृषि और बागवानी के क्षेत्र में यह प्रयोग बहुत सफल हुये हैं कि लाउडस्पीकरों की सहायता से ध्वनियाँ बजाई जायें और वनस्पति वर्ग को अधिक प्रगति करने के लिए उकसाया जाय। इससे दुधारू पशुओं का दूध बढ़ता है। विशेषतया उन्हें दुहते समय संगीत सुनाकर अधिक दूध प्राप्त किया जाता है।

स्नायु रोगों और मस्तिष्कीय विकारों में संगीत का अब चिकित्सा उपचार की तरह प्रयोग किया जाता है। नींद लाने के लिये, मस्तिष्कीय तनाव और रक्तचाप सन्तुलित करने के लिये, आवेशों, उत्तेजनाओं, वेदनाओं और खिन्नताओं को घटाने के लिये। संगीत का ध्वनि प्रवाह बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। वातावरण को उत्तेजित करके युद्धान्माद जैसे आवेग उत्पन्न करने में प्राचीन काल की तरह आज भी रणभेरी, बिगुल आदि बजाये जाते हैं।

कला के संगीत पक्ष को जन-मानस के परिष्कार में प्रयुक्त करने के लिये सर्वप्रथम हिन्दी में तथा प्रान्तीय-क्षेत्रीय भाषाओं में ऐसे गीतों का सृजन करना होगा, जो नव-निर्माण की विविध दिशा धाराओं को उभारने की विचारणा एवं भावसंवेदना से पूरी तरह भरे हुए हों। साथ ही उसकी ध्वनियाँ भी विभिन्न क्षेत्रों को लोक रुचि के अनुकूल हों। इस सृजन का प्रकाशन ही नहीं इस प्रकार प्रसार भी होना चाहिये कि उन्हें गाँव-गाँव, गली, मुहल्ले, घर-घर पहुँचाया जाना सम्भव हो सके।

संगीत हर किसी को नहीं आता है। गाने में कण्ठ को किस प्रकार सधाकर किस तरह ध्वनि प्रवाह में मधुरता भरी जा सकती है, यह एक विधि विशेष है। गायन कला इसी को कह हैं।

गायन का सहयोगी है—वादन। वाद्य यन्त्रों की सहायता से कंठ ध्वनि की। सरसता अनेक गुनी हो जाती है। हर क्षेत्रों में ऐसे संगीत विद्यालय होने चाहिए, जिनमें गायन और वादन का सामान्य अभ्यास करने की सुविधा प्रत्येक इच्छुक को मिल सके। यह शिक्षण पारंगत प्रवीणता के लिये नहीं जन आवश्यकता को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूरा कर सकने वाली सुगम पद्धति से होनी चाहिए, जिससे अधिक लोग कम समय में काम चलाऊ अभ्यास कर सकें। प्रवीणता दिलाने वाली व्यवस्था भी रहे किन्तु विशेष प्रबन्ध तो जन साधारण को जिस काम चलाऊ संगीत शिक्षा का करना है। वह सर्वसुलभ और स्वल्प अभ्यास से कम समय में मिल सकने वाली होनी चाहिए। ऐसे विद्यालयों की स्थापना सर्वत्र बन पड़े ऐसा प्रबन्ध सुनियोजित ढंग से किया जाना चाहिए।

संगीत मण्डलियाँ बनें और समय-समय पर अपने कार्यक्रम जहाँ-तहाँ रखती रहें। पर्व-त्यौहारों या संस्कार-उत्सवों पर विवाह शादी जैसे अवसरों पर प्रायः लोग मनोरंजन के साधन जुटाते हैं उनमें संगीत प्रमुख होता है। संगीत मण्डलियाँ उस आवश्यकता को पूरा कर सकती हैं। धार्मिक उद्देश्य से कितनी ही जगह कीर्तन मण्डलियों का गठन हुआ है और वे बिना पारिश्रमिक लिये परमार्थ भावना से समय-समय पर कीर्तन आयोजन करती रहती हैं। ऐसा बन पड़े तो अति उत्तम है अन्यथा पारिश्रमिक लेकर संगीत आयोजन करने वाली मण्डलियाँ भी गठित की जा सकती हैं। श्रम का मूल्य मिलना उचित है। उसमें स्थायित्व भी है। इसलिये आर्थिक आधार पर युग-निर्माण संगीत मण्डलियों का गठन हो। संस्कार आदि व्यक्तिगत आयोजनों में तथा पर्व, सम्मेलन आदि सार्वजनिक उत्सवों में यह मण्डलियाँ बुलाई जायें, उनका खर्चा भी आयोजनों के आवश्यक खर्च में सम्मिलित रखा जाय। ऐसे भी समय-समय पर जहाँ-तहाँ, जब तक संगीत सम्मेलनों के आयोजन होते रह सकते हैं। जनता की सहज रुचि उनका भरपूर स्वागत करेगी और उनका खर्च भी प्रसन्नतापूर्वक वहन करेगी।

पिछले दिनों कवि सम्मेलनों की धूम थी। अब उस सन्दर्भ में कथा कविता सम्मेलनों का नया तरीका और भी अधिक सरल तथा आकर्षक सिद्ध हो रहा है। मधुर कण्ठ वाले नर-नारी, छात्र-छात्राएँ, प्रेरणाप्रद कवितायें याद करलें। मधुर स्वर से उन्हें कवि सम्मेलनों की तरह गाया जा सकता है। वाद्य-यन्त्रों के साथ इन्हें गाना सुनाया जा सके तो आकर्षण और भी अधिक बढ़ जायेगा। कविता सम्मेलनों की मण्डलियाँ विद्यालयों में भली प्रकार गठित की जा सकती है। इससे छात्रों का अभ्यास उत्साह भी बढ़ेगा और जन-जागरण का उद्देश्य भी पूरा होगा।

संगीत मण्डलियों से आगे का कदम अभिनय मण्डलियों का है। इनका गठन और प्रशिक्षण एवं प्रचलन करने के लिए नये सिरे से प्रयत्न करने की आवश्यकता है। अभी इनके लिए सुविस्तृत कार्यक्षेत्र खाली पड़ा है। यह सही है कि इन दिनों सिनेमा ने मनोरंजन के क्षेत्र में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है और कुछ समय पहले का ख्याति प्राप्त मनोरंजन माध्यम 'नाटक' अब बुरी तरह असफल हो गया है। किसी समय बड़ी-बड़ी अनेक नाटक कम्पनियाँ थीं और उनकी बड़ी धाक थी। अब सस्ते सिनेमा ने उनका क्षेत्र हड़प लिया है और वे बेमौत मर गई हैं। इस तथ्य को स्वीकार करते समय एक बात और ध्यान रखने की है कि यह प्रतिस्पर्द्धा उन बड़े शहरों में ही हुई है, जहाँ सिनेमा का आधिपत्य है। स्मरण रखने योग्य बात है कि तीन चौथाई भारत छोटे देहातों में बिखरा पड़ा है और वहाँ तक सिनेमा के पहुँचने में अभी बहुत समय लगेगा। फिर जीवित और निर्जीव का अन्तर सदा ही बना रहेगा। अधिक खर्चीली नाटक कम्पनियाँ सस्ते सिनेमा के मल्ल युद्ध में हारी हैं। यदि उनका भी सस्ता और छोटा स्वरूप रहा होता तो बिल्ली चूहे की दुश्मनी रहने पर भी चूहे का अजेय अस्तित्व जिस प्रकार बना हुआ है, उसी प्रकार छोटी नाटक मंडलियाँ भी जीवित ही नहीं फलती-फूलती भी रह सकती थीं।

छोटी अभिनय मंडलियाँ अभी भी रामलीला और रासलीला के रूप में भली प्रकार चलती और फलती-फूलती हैं। उनकी माँग कस्बे देहातों में भली प्रकार बनी रहती है। अब तक सिनेमा में पुरानापन आ जाने, निर्जीव नीरसता छाई रहने के साथ-साथ अश्लीलता का समावेश हो जाने से यह आकर्षण बुरी तरह घट रहा है, जो नई बहू के रूप में आरम्भिक दिनों में सर्वत्र सत्कार पा रहा था। हताश अभिनय क्षेत्र ने अपने हाथ-पैर भयभीत होकर अकारण ही समेट लिये हैं। वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है, जिसमें अभिनय मंडलियों के लिए कोई स्थान ही न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रह गया हो। थोड़ा प्रयत्न किया जाय और उसमें आधुनिकता जोड़ दी जाय तो उसकी लोकप्रियता फिर उभरकर ऊपर आ सकती हैं।

प्रशिक्षण के उपकरण तैयार करने के यातायात के साधन यदि ठीक तरह जुटाए जायें तो अभिनव-मंच उतना महँगा न रहेगा और उसका खर्च इतना सीमित बन जायेगा जिसे टिकट के आधार पर अथवा सार्वजनिक चन्दे से सबके लिये खुले रूप में प्रस्तुत किया जा सके। धार्मिकता के साथ नैतिकता और सामाजिकता की संगति पूरी बैठ जाती है। प्रगतिशील कथानक इस प्रकार बन सकते हैं कि वे लोक-मंगल और लोक शिक्षण के समन्वय का उद्देश्य भली प्रकार पूरा कर सकें। अनैतिकताओं, अवांछनीयताओं, गूढ़ मान्यताओं के विरुद्ध इन अभिनयों द्वारा आग उगली जा सकती है। उन पर ममवेधी कटाक्ष करके ऐसा वातावरण बनाया जा सकता है, जिसके कारण इस समय की विकृतियों के पैर उखड़ते ही दिखाई पड़ें। नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति की पृष्ठभूमि बनाने में यह अभिनय मंडलियाँ बहुत बड़ा काम कर सकती हैं। उनकी बदनामी तो मध्यकाल की विलासी मनोवृत्ति अपना लेने कारण हुई है। कामुकता भड़काने वाले अनैतिक आचरणों को बढ़ावा देने वाले तत्व यदि उनमें न रहें तो कोई कारण नहीं कि उनका सम्मान वैसा ही न होने लगे जैसा कि रामलीला, रासलीला आदि का होता है। उन्हें भावनापूर्वक लाखों लोग देखते हैं। इन प्रगतिशील अभिनय मंडलियों का भी वैसा ही स्वायत्त हो सकता है और वे आजीविका की दृष्टि से पूर्ण स्वावलम्बी रहते हुए नव-निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

सिनेमा ही यदि आवश्यक हो तो १६ मिलीमीटर के फिल्म प्रोजेक्टर अभी भी देहातों की आवश्यकता पूरी कर सकते हैं। उनकी लागत तथा कार्यक्षमता दोनों ही इतनी होती है, जिससे देहातों को उनका समुचित लाभ मिल सके। खुले में एक हजार और बन्द टेन्ट में पाँच सौ आदमी उस चित्र पट का भली प्रकार लाभ ले सकते हैं। बड़े विद्यालयों में सरकारी प्रचार विभाग में उनका उपयोग होता है। जहाँ बिजली नहीं है वहाँ जनरेटर से उसे पैदा किया जा सकता है। ऐसा चलता फिरता "मिनी सिनेमा" सैट प्रायः बीस हजार में सर्वांगपूर्ण बन सकता है। बैलगाड़ी पर उसे एक जगह से दूसरी जगह बड़ी आसानी से ले जाया जा सकता है। इसके लिए उपयोगी फिल्में सरकारी फिल्म लाइब्रेरी आदि से भी मिल सकती हैं। सरकारी सूचना प्रसारण विभाग से भी सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

इस संदर्भ में सबसे आसान प्रयोग स्लाइड प्रोजेक्टरों का है। कुछ दिन पहले तक गाँव-गाँव इस प्रकार के साधन का बहुत प्रचलन था। संस्थायें इसका उपयोग करती थीं। "मैजिक लालटैन" के नाम से इसकी बहुत ख्याति थी। अब सिनेमा का अधिक विस्तार हो जाने से इस साधन का उपयोग आत्महीनता की भावनाओं ने स्वतः ही घटा लिया है। वस्तुतः उसकी उपयोगिता अभी भी जहाँ की तहाँ है। चित्र चलते, बोलते नहीं है। फोटोग्राफी से बने न होने के कारण उतने सुन्दर नहीं लगते। इस कमी को दुहराया जाता है पर यह भुला दिया जाता है कि चित्र-प्रदर्शन के साथ-साथ उनके परिचय में जो ओजस्वी प्रवचन उपस्थित लोगों की मनः-स्थिति एवं परिस्थिति को देखते हुए दिया जाता है, उसका महत्व कितना अधिक है ?

सिनेमा घर-घर तो नहीं पहुँचता, बिना पैसे के तो नहीं दिखाया जाता, यह दोनों विशेषताएँ स्लाइड प्रोजेक्टर में मौजूद हैं। सिनेमा के शौकीनों के लिए यह स्लाइडों की उपयोगिता तुलनात्मक दृष्टि से भले ही घट गई हो पर देहातों में घर और झोंपड़ों में वह अभी सैकड़ों वर्षों तक अपनी उपयोगिता भली प्रकार बनाये रहेगा। युग-निर्माण अभियान में इस साधन का समुचित उपयोग किया जा रहा है। बिजली से और जहाँ बिजली नहीं है वहाँ गैस बत्ती से काम करने वाले स्लाइड प्रोजेक्टरों से हर वर्ष लाखों लोगों को लोकरंजन के लिए, लोक-मंगल का समन्वय इस आधार पर भली प्रकार चलता है। इसमें आवश्यक सुधार किया जा सके तो निस्संदेह जनमानस के नव-निर्माण में इसका महत्त्वपूर्ण उपयोग हो सकता हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आँखों पर काँच लगाकर चित्र बड़ी आकृति के देखने के अनेक उपकरण उपलब्ध होते हैं। बच्चों के जेबी "सैरबीन" बाजार में बिकते हैं। बड़े साइज में भी यह बनते हैं। बक्सों में बंद करके कुछ दिन पहले तक इस मनोरंजन को फेरी वाले सिर पर रखकर ले जाते थे और बालकों का तथा बड़ों का मनोरंजन करके अपनी आजीविका कमाते थे। देहाती मेलों में टैन्ट लगाकर इस प्रकार के स्टाल अभी भी लगते हैं और उनके सहारे दस-दस पैसे में अच्छे-खासे मनोरंजन का लाभ ग्रामीण जनता उठा लेती है। कठपुतली का अभिनय अभी भी लोकप्रिय है। विदेशों में इसका अच्छा प्रचार है। छुट-पुट रूप में इसका प्रदर्शन कुछेक मदारी करते और गुजारा चलाते देखे जाते हैं। यदि योजनाबद्ध संगठित सुव्यवस्थित रीति से इस माध्यम को हाथ में लिया जा सके तो मनोरंजन के साथ-साथ कठपुतली आधार पर अनेकों नाटक बनाये और चलाये जा सकते हैं।

कठपुतली नाटक कम्पनियाँ सस्ती, अधिक आकर्षक और एक-दो व्यक्तियों के सहारे थोड़े उपकरणों से सरलतापूर्वक चल सकती हैं। स्मरण रखे जाने योग्य बात यह है कि मनोरंजन भी जनसाधारण की मानसिक आवश्यकता है। इसकी पूर्ति न होने से उत्साह घटता है और मस्तिष्कीय तथा भावनात्मक कोमलता नष्ट होती है। रुखा नीरस व्यक्ति पिछड़ी स्थिति में पड़ा रहता है। इन साधनों का देहाती क्षेत्र में बड़ा अभाव हो चला है। इस कारण लोग इसकी पूर्ति गलत तरह से करेंगे और कामुकता दुर्व्यसन बढ़ेंगे। समय रहते स्वस्थ मनोरंजन के साधन जुटाये जा सकें और साथ में नवयुग के अनुरूप प्रशिक्षण जोड़ा जा सके तो यह एक बहुत बड़ी बात होगी। इसे एक उपयोगी उद्योग के रूप में विकसित करके कितनी को ही आजीविका का भी एक अच्छा माध्यम दिया जा सकता है।

कला का श्रव्य पक्ष संगीत अभिनय है। सिनेमा अपनी जगह पर कायम है किन्तु इसके लिए भी अभी सुविस्तृत क्षेत्र खाली पड़ा है, उसके विकास को सिनेमा क्षेत्र से भी कहीं अधिक गुंजायश है। मिल के वस्त्रों के चकाचौंध में लोग खादी का महत्त्व भूलने लगे हैं, यद्यपि उसमें लाखों लोगों को रोटी देने और स्वावलम्बन की सादगी की भावना उत्पन्न करने की अद्भुत क्षमता मौजूद है। ठीक इसी प्रकार छोटे संगीत मण्डलियों-अभिनय मंडलियों का गठन किया जा सके तो इससे न केवल स्वस्थ मनोरंजन का वरन् भावनात्मक परिष्कार का विचार क्रान्ति का महान् उद्देश्य सरलता पूर्वक पूरा हो सकता है। इस क्षेत्र में कई मशीनें भी बहुत काम कर सकती हैं।

ग्रामोफोन के रिकार्डों का अभी रिकार्ड प्लेयरों में लाउडस्पीकरों द्वारा बहुत उपयोग होता है। उत्सवों के अवसर पर उन्हें सर्वत्र सुना जाता है। यद्यपि रेडियो ने उसकी उपयोगिता बहुत घटा दी है तो भी वह पूर्णतया समाप्त नहीं हुआ है। रिकार्डों का निर्माण अभी भी चल रहा है। इस माध्यम का भी उपयोग करने की पूरी गुंजायश है। युग-निर्माण योजना द्वारा बनाये गये दस ग्रामोफोन रिकार्ड पिछले दिनों भली प्रकार लोकप्रिय रहे हैं। टेप-रिकार्डर उसी स्तर का दूसरा माध्यम है। उसके माध्यम से महत्त्वपूर्ण संदेश, प्रवचन तथा गीत जन-साधारण तक पहुँचाये जा सकते हैं। प्रभातफेरी निकाल कर उपयोगी उद्बोधन, अनुकूल वातावरण में घर-घर पहुँचाने का प्रयत्न पिछले दिनों होता रहा है। फकीर और साधु गली चौराहों पर अपने गीत सुनाकर धार्मिकता का प्रचार किया करते थे। उन संदेशों, गीतों को अब रिकार्डों द्वारा लाउडस्पीकर के चोंगे को किसी ऊँचे स्थान पर रखकर एक-एक क्षेत्र में सुनाया जा सकता है। इस प्रकार प्रभात फेरी की आवश्यकता इस छोटे से उपकरण के सहारे एक व्यक्ति भी घर बैठे पूरा कर सकता है।

कला को यदि हलके स्तर पर न लिया जाय तो वह ईश्वर-भक्ति और धर्म-प्रचार का उच्चस्तरीय माध्यम रह सकती है। कीर्तन यदि 'रामधुन' तक सीमित न रहे और उसे प्रेरणाप्रद सहगान का रूप मिल सके तो उसकी उपयोगिता हर दृष्टि से बढ़ सकती है। कथाएँ कहने के अनेक प्रकार हैं। उनकी कितनी ही शैलियाँ हैं। रामायण सप्ताह भागवत सप्ताह जैसे धर्मानुष्ठानों का प्राचीन रूप बनाये रखा जा सकता है और उसमें प्रेरणाप्रद तत्वों का भली प्रकार समावेश हो सकता है। प्राचीनकाल में योजनाबद्ध प्रचार की इसी शैली को अपनाकर साधु ब्राह्मण अपना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म प्रचार कार्य सम्पन्न करते थे। इस माध्यम से उन्हें निर्वाह के साधन भी सहज श्रद्धा के साथ उपलब्ध होते रहते थे। उन्हें न तो किसी संस्था की नौकरी करनी पड़ती थी और न भिक्षाटन की आवश्यकता पड़ती थी।

कथाकार भी एक प्रकार का कलाकार है। वह अपना निर्वाह और धर्म-प्रचार का उभय-पक्षीय प्रयोजन बिना किसी कठिनाई के आजीवन करता रह सकता है। पंडिताऊ ढंग से भी सत्यनारायण कथा घर-घर कही जा सकती है और उसके सहारे जन जीवन में एक अत्यन्त उपयोगी भाव प्रवाह उत्पन्न किया जा सकता है। कथाएँ संगीत के सहारे भी हो सकती हैं। ग्रन्थ विशेष का आश्रय न लेकर कई कथानकों का समन्वय करके भी चला जा सकता है। उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय नेता और कथाकार साधु बाबा राघवदास ने रामायण कथा के मध्यम से इस प्रान्त का एक बड़ा भाग अपने प्रभाव क्षेत्र में ले लिया था और उसमें सत्याग्रह आन्दोलन की जड़ें बहुत गहरी जमा दी थीं। भारतीय जनता की धर्म प्रवृत्ति को देखते हुए यह कथा माध्यम से अपनाई गई प्रचार शैली अब प्राचीनकाल से भी अधिक सफल हो सकती है। तब लाउडस्पीकर नहीं थे और थोड़े से ही लोग उससे लाभ ले पाते थे, अब उसके सुविस्तृत प्रचलन की पूरी-पूरी सम्भावना है।

चित्र प्रदर्शनियों का चलता-फिरता स्वरूप भी बन सकता है। उसमें नई दिशा देने वाले बड़े साइज के सुन्दर चित्रों को स्थान-स्थान पर समय-समय पर प्रदर्शनी के रूप में दिखाने के लिए बनाया जा सकता है। उनका परिचय कराते हुए दर्शक से बहुत कुछ कहा जा सकता है। इस प्रकार सोचने और ढूँढ़ने पर कला के माध्यम से अनेक ऐसे माध्यम खड़े हो सकते हैं, जिनसे जनमानस के परिष्कार की युग आवश्यकता को पूरा किया जा सके। लोकरंजन के साथ लोक-मंगल का समन्वय कितना सरल और कितना प्रभावी हो सकता है, इसका अनुभव उसके प्रयोग परीक्षण द्वारा सहज ही हो सकता है। इस दिशा में हमें अधिक ध्यान देने और अधिक साहस भरे कदम उठाने चाहिए।

प्रचार सम्मेलनों के लिए अर्थ संग्रह

युग परिवर्तन का आधार है, लोक-मानस का परिष्कार। इसका तात्पर्य है मनुष्य की आकांक्षाओं, मान्यताओं, विचारणाओं और गति विधियों में उत्कृष्ट आदर्शवादिता की मात्रा का अभिवर्धन। इसी प्रयास का दूसरा पक्ष है, पशु प्रवृत्तियों का निराकरण। जन्म-जन्मान्तरों से तुच्छ योनियों में जो स्वभाव संस्कार जमा होते रहे हैं, उनका अब मानवी गरिमा के साथ किसी प्रकार तालमेल नहीं बैठता। बचपन के कपड़े बड़ी आयु हो जाने पर छोटे पड़ जाते हैं, उन्हें पहनने का प्रयास व्यर्थ है। इसी प्रकार हेय प्रवृत्तियाँ तथा योनियों में भले ही उपयुक्त रही हों मनुष्य योनि में आने के उपरान्त उन्हें अपनाये रहना व्यर्थ है।

अन्य योनियों में निर्वसन रहना, पत्नी, पुत्री का भेद न मानना किसी के भी उपार्जन का उपभोग करना, अपने लाभ के लिये दूसरों को हानि पहुँचाने में संकोच न करना, किसी मर्यादा में न बँधना जैसी गतिविधियाँ क्षम्य थीं, पर मनुष्य योनि में आने के उपरान्त वह सब नहीं चल सकता। इसलिये इन पिछड़ी दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध बौद्धिक एवं व्यावहारिक संघर्ष खड़ा करना पड़ता है। भगवान का अवतार संसार के विशाल क्षेत्र में हो या व्यक्ति अन्तःकरण में उसमें अवांछनीयता के प्रति आक्रोश रहना और उन्मूलन के लिए संघर्षरत होना आवश्यक है। युग-निर्माण योजना का, जन मानस के परिष्कार का एक पक्ष यह सर्वतोमुखी परिशोधन भी है।

दूसरा पक्ष यह है कि पशु-प्रवृत्तियों को निरस्त करने से जो स्थान खाली होता है, उसे सत्प्रवृत्तियाँ से भरना। असुरता को पदच्युत करना ही पर्याप्त नहीं उस खाली स्थान पर देवत्व को प्रतिष्ठापित भी तो करना है। इसे सत्प्रवृत्ति संवर्धन कहते हैं। धर्म की स्थापना इसी को कहा गया है। भगवान के अवतार का दूसरा कार्य यही है। सज्जनता और शालीनता की देव परम्परायें स्वीकारी जा सके, व्यवहार में उन्हें भली प्रकार अपनाया जा सकें, यही धर्म धारणा है। मनुष्य में देवत्व का उदय यही है। इसी उत्पादन के साथ सतयुगी-स्वर्गीय परिस्थिति का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आविर्भाव होता है। उज्ज्वल भविष्य की, सर्वतोमुखी प्रगति और समृद्धि की स्थिर सुख-शान्ति की सम्भावना इसी पर टिकी हुई है।

जनमानस के परिष्कार का तात्पर्य अन्तः जीवन में इस प्रकार का परिवर्तन करना है, जिसके आधार पर आवांछनीयता का निष्कासन एवं उत्कृष्टता का समूचे व्यक्तित्व में अभिवर्धन दृष्टिगोचर होने लगे। इसी एक मात्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए युग-निर्माण योजना की समस्त गतिविधियाँ संलग्न हैं। उसका विश्वास है कि परिस्थितियाँ बदलने का कार्य मनःस्थिति बदलने से ही सम्भव हो सकता है। सामयिक समाधान तो व्यवहार बुद्धि से भी निकलते रहते हैं। लोभ और भय से भी मनुष्यों की हरकतें और हलचलें बदल जाती हैं पर विभिन्नता को स्थायी रूप से सम्पन्नता में बदलने के लिये भावनात्मक परिशोधन के दृष्टिकोण का परिमार्जन ही एक मात्र चिरस्थायी समाधान है। इसी मान्यता को लेकर अपनी विभिन्न योजनायें देश, काल, पात्र का ध्यान रखते हुए बनती और चलती हैं।

चिन्तन से क्रिया बनती है। इसलिये सर्वप्रथम ज्ञान यज्ञ में विचार-क्रान्ति को हाथ में लिया गया है। इसी ज्ञान मशाल के प्रकाश में नव-निर्माण की गतिविधियों का सूत्र संचालन हो रहा है। लेखनी और वाणी के माध्यम से देवत्व की विचारधारा लोक-मानस में प्रतिष्ठापित कराई जा रही है। साहित्य सृजन की तरह ही योजना का दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य है—विचारशील वर्ग का एकत्रीकरण, संगठन, उद्‌बोधन और प्रशिक्षण। इस प्रयोजन के लिए छोटे-बड़े सम्मेलन आयोजन की व्यवस्था विभिन्न नाम रूपों से की जाती रहती है। इसे अपनाये बिना अभीष्ट उद्‌देश्य की पूर्ति हो नहीं सकेगी। अनन्य उपाय उपचारों के अतिरिक्त प्रचार प्रक्रिया सम्पन्न करने के लिए हमें छोटे-बड़े सम्मेलन करते ही रहने होंगे। इसे युग साधना का एक अंग माना जाना चाहिए और सृजन सैनिकों को इसके लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। सम्मेलन आयोजनों की विधि व्यवस्था के सन्दर्भ में आवश्यक ज्ञान अनुभव और कौशल हमें प्राप्त करना ही चाहिए।

सम्मेलनों के लिए जहाँ कई तरह की व्यवस्थायें करनी पड़ती हैं, अन्य योजनायें बनानी पड़ती हैं, वहाँ उसके लिए अर्थ साधन जुटाये जाने भी आवश्यक हैं। अन्यथा साधनों के अभाव में कल्पना की क्रिया में परिणित होने का अवसर ही नहीं मिलेगा।

सार्वजनिक आयोजनों के लिए, सम्मेलनों के लिये अथवा मन्दिर आदि किसी स्थायी स्थापना के लिये सर्वविदित उपाय चन्दा करना है। संस्थाएँ रसीद वही छपती हैं, कुछ प्रभावशाली लोग उन्हें लेकर निकलते हैं और अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा एवं स्थिति का उपयोग करके लोगों पर प्रभाव एवं दबाव डालते हैं। इसी आधार पर चन्दा होता है। माँगने वालों के प्रभाव और दवाब पर ही चन्दा संग्रह राशि बढ़ती-घटती है। यह तरीका काम चलाऊ है किन्तु प्रभावशाली नहीं। उसका स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिसमें स्वेच्छा सहयोग झलकता हो। यदि श्रद्धा धन के साथ जुड़ी होगी तो उसके दूरगामी परिणाम होंगे। दवाब, से मिला धन मात्रा में कितना ही न्यूनाधिक क्यों न हो, उससे भावनात्मक परिष्कार जैसे महान उद्‌देश्य की पूर्ति नहीं हो सकेगी।

छोटी-सी इमारत बनाने में कितने साधनों की आवश्यकता पड़ती है यह सभी जानते हैं। फिर युग-निर्माण जैसे महान प्रयोजन की पूर्ति के लिये तो असीम साधन चाहिये। मात्र सम्मेलन आयोजनों के लिये ही नहीं अन्य अनेक सृजनात्मक प्रयोजनों के लिये धन एवं श्रम की शक्ति का संचय तथा उपयोग करना होगा। अस्तु सृजन सैनिकों को सदा इसके लिए रचनात्मक ढंग से सोचना चाहिये और सदा प्रयत्नरत रहना चाहिए। किन्तु वे प्रयास उथले एवं फूहड़ नहीं होने चाहिये अन्यथा एक बार किसी प्रकार कुछ झपट लेने पर भी स्वेच्छा सहयोग के वे द्वार खुल नहीं सकेंगे जिनके ऊपर नव-निर्माण का विशाल भवन खड़ा किया जाता है।

हममें से किसी को भी ऐसा अहंकार नहीं करना चाहिये कि हम किसी से माँगते नहीं, माँगेंगे नहीं। ऐसे कथन से क्षुद्रता और अदूरदर्शिता की दुर्गन्ध आती है। धन संचय का वास्तविक तात्पर्य है—सहयोग संचय। यह श्रम और समय के रूप में भी हो सकता है। सहयोग अनुदान का प्रतीक ही धन है। सहयोग संचय की शक्ति से ही युग-निर्माण का सुविस्तृत कलेवर खड़ा होगा। साधु ब्राह्मण सदा से इसके लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने समीपवर्ती लोगों को उकसाते रहे हैं। जो लोक-सेवा निरत ब्राह्मण नहीं हैं अथवा जो शारीरिक दृष्टि से अपंग नहीं हो गये हैं, उन्हें अपने निजी निर्वाह के लिये भिक्षा नहीं माँगनी चाहिये। किन्तु लोकमंगल के लिये दान देने और दिलाने की प्रवृत्ति को पूरी तरह प्रोत्साहित कराना चाहिये। इसमें संकोच बरतने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है।

स्वेच्छा सहयोग के स्रोत खोलने में जो जितना सफल होता है समझना चाहिये कि उसने नव-निर्माण के उतने ही बड़े आधार खड़े कर दिये। स्मरण रखने की बात यह है कि एक व्यक्ति कितना ही धनी, कितना ही विद्वान्, तपस्वी आदि क्यों न हो मात्र अपने बलबूते राई रत्ती जितना ही काम कर सकने में समर्थ हो सकेगा। असीम निर्माण तो असीम साधनों से ही सम्पन्न होगा। इसके लिये श्रम, समय, सहयोग का जो अंश उपलब्ध होता है, उसी का प्रतीकरूप धन है। मात्रा कितनी है इसके स्थान पर महत्त्व इस बात का है कि अपनी स्थिति का कितना अंश कितने उस पुण्य प्रयोजन के लिये सर्मिपत किया गया है।

एक आदमी कहाँ तक देता रहेगा और देता भी रहेगा तो जन सहयोग के बिना वह निष्प्राण ही बना रहेगा। ढेरों धर्म संस्थान ऐसे होते हैं, जो ब्याज, भाड़े, आमदनी से चलते हैं, उनमें सड़े तालाब के ऊपर जम जाने वाली काई की तरह निष्क्रियता और निर्जीवता ही नहीं विकृतियाँ भी छा जाती हैं। इसलिए आयोजन की अर्थव्यवस्था जन सहयोग से ही चलनी चाहिए। जो देते हैं, वे उसके प्रति आत्मीयता अनुभव करते हैं, ध्यान देते हैं और प्रकारान्तर से समर्थन सहयोग के लिए अधिक बड़े कदम बढ़ाते हैं। महामना मालवीय जी कहा करते थे कि जन सहयोग आवश्यक है। एक मुट्ठी अन्न, एक पैसा हर घर से स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए एकत्रित किया जाना चाहिए। गाँधी जी को स्वराज्य योजना सन् २१ में जब प्रथम बार कार्यान्वित हुई थी, तब "तिलक स्वराज्य फण्ड" के नाम से एक करोड़ रुपया इसी प्रकार मुट्ठी-मुट्ठी करके संग्रह किया गया था। कन्याकुमारी पर बने विवेकानन्द स्मारक के लिए भी इस प्रकार थोड़ा-थोड़ा अर्थ सहयोग लाखों व्यक्तियों से लिया गया है। सर्वोदय पात्रों की योजना प्रसिद्ध है। अपने मिशन की आर्थिक आवश्यकताएँ 'ज्ञान घटों' की स्थापना से पूरी होती हैं।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए अधिक लोगों से स्वेच्छा सहयोग संचय करने की बात पूरी तरह ध्यान में रखनी चाहिए। इसके लिये सम्पर्क करना पड़ेगा। बात समझानी पड़ेगी। तभी तो कोई पैसा देगा। निमन्त्रण देने जाना आरम्भिक कदम और श्रम सहयोग एवं अर्थ सहयोग लेना दूसरा। आयोजनों के साथ जुड़े हुए यह परोक्ष काम हैं, जिन्हें उतना ही महत्त्व मिलना चाहिये जितना आयोजन उत्सव को दिया जाता है। वस्तुतः वह प्रचार परिचय और सहयोग संचय का कार्य ही किसी सम्मेलन का प्राण है और उसी में आयोजन कर्ताओं का अधिकाधिक ध्यान एवं प्रयास नियोजित रहना चाहिये।

श्रमदान की तरह अर्थदान में भी मिशन के घनिष्ठ एवं कर्मठ लोगों की अग्रिम पंक्ति में रहना चाहिए। ज्ञान घटों की स्थापना, सद्भावना को कसौटी समझी जा सकती है। युग-निर्माण मिशन के हर सच्चे सहयोगी को अपने यहाँ न्यूनतम सहयोग की परम्परा अनिवार्य रूप से अपनानी चाहिये। कौन कितना दे—यह हर व्यक्ति को निजी परिस्थिति और मनःस्थिति पर निर्भर है। पर देना हर हालात में चाहिए। ज्ञान घट के दस पैसे प्रतिदिन डालना विशुद्ध रूप से मनःस्थिति पर निर्भर है। इतनी छोटी राशि का किसी की भी आर्थिक स्थिति पर कोई असर नहीं पड़ता। पाँच पैसे तो छोटे बच्चे भी अपने जेब खर्च में से आधा काट कर देते और उससे अधिक मूल्य का आत्म संतोष खरीदते हैं। फिर जो कमाते हैं वे क्यों वैसा नहीं कर सकते ?

जिनकी निष्ठा में परिपक्वता आती जाय उन्हें महीने में एक दिन की कमाई देते रहने की बात सोचनी और हिम्मत दिखानी चाहिये। घर से उदारता का परिचय देकर ही दूसरों को वैसा शिक्षण दिया जा सकता है। स्वयं कृपणता बरतें और दूसरों से उदारता की अपेक्षा करें ऐसा कठिन है। जले हुए दीपक ही नये दीपकों को जलाते हैं। अग्रिम पंक्ति में खड़े होने वालों की उदारता की दृष्टि से भी आगे रहकर ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मार्ग-दर्शन करना है। अपना अंशदान 'ज्ञान घटों' के प्रतीक अनुदान से लेकर महीने में एक दिन की आजीविका तक अथवा उससे भी आगे बढ़ना चाहिये। जहाँ इस प्रकार की उदारता अपने लोगों में आई होगी, वहाँ जन सहयोग की भी कमी नहीं रहेगी।

अर्थ सहयोग की याचना के लिए क्रमशः क्षेत्र विकसित किया जाय। प्रचार से प्रभावित करना और पीछे सहयोग संग्रह करना यह तरीका गौरवपूर्ण है। अपरिचित लोगों के पास याचना के लिये जा धमकना, उन्हें अपनी मिशन की जानकारी न होना, संग्रह कर्ताओं की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में आश्वस्त न होना ऐसे कारण हैं, जिनकी बजह से सम्पन्न लोग भी अर्थ सहयोग करने से कतराते हैं। यह उचित भी है और बुद्धिमतापूर्ण भी है। हर अजनवी को दान माँगने का न तो अधिकार है और न औचित्य। ऐसे ही प्रसंगों में संग्रहकर्ताओं को प्रायः निराश और अपमानित होना पड़ता है। इससे बेइज्जती अनुभव होती है, खीज बढ़ती है और विद्वेष पैदा होता है। हमें अति उत्साह में आकुलता नहीं दिखानी चाहिये और तुरन्त सफलता की बात नहीं सोचनी चाहिये। दबाव देकर कोई धन लेना अनुचित है। जो भी मिले वह श्रद्धासिक्त होना चाहिये। उसमें स्वेच्छा सहयोग की सद्भावना लिपटी रहनी चाहिये। इसके लिये दाता को इस बात के लिये पूर्ण सन्तुष्ट करने का प्रयास करना चाहिये कि उसका किया अनुदान श्रेष्ठतम कार्य में ही खर्च होने वाला है और खर्च करने वाले हाथ पूर्णतया विश्वस्त एवं प्रामाणिक हैं। यह स्थिति पैदा करने में सम्पर्क साधने, वस्तुस्थिति से परिचित कराने एवं धैर्य रखने की आवश्यकता पड़ती है। मिलने न मिलने की प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनाया जाना चाहिये।

घायल पड़े राजा कर्ण तक से याचना करने के लिए भगवान पहुँचे थे। उन्होंने राजा बलि से जमीन माँगी थी। शबरी से बेरों की, गोपियों से छाछ की, सुदामा से चावलों की याचना स्वयं ही की थी। यह अनुदान भगवान को भी बिना माँगे नहीं मिले थे। विश्वामित्र ने अपने परम प्रिय शिष्य हरिश्चन्द्र से राज्य और धन माँगा था। ऐसे उदाहरणों से इतिहास पुराणों का पन्ना-पन्ना भरा पड़ा है। इनमें विचारशील लोगों ने स्वयं तो उदारता का परिचय दिया ही है अपने प्रभाव क्षेत्र को भी उसके लिये उकसाया है। भगवान बुद्ध को छोटे-बड़े शिष्यों ने धर्मचक्र प्रवर्तन के लिए अपने समय, श्रम, जीवन एवं धन को भाव भरी आहूतियाँ प्रस्तुत की थीं। गाँधी जी ने भी ऐसी ही प्रेरणा से अपने सहयोगियों को प्रेरित किया था। राणा प्रताप के साथ सच्ची मित्रता का परिचय भामाशाह ने अपनी संचित पूँजी उनके महान् मिशन की पूर्ति के लिए समर्पित की थी। यहाँ वह स्मरण रखने की बात है कि धन तो प्रतीक है। मूल तो अनुदान प्रस्तुत करने की श्रद्धा है, जो श्रम, समय के रूप में भी अर्पित की जा सकती है। संत और साधु अपनी यही समर्पण करके लोक हित के लिए धनी-मानियों से भी अधिक सेवा करते थे।

जहाँ धन नहीं है वहाँ इस श्रम-दान को भी सोने के पर्वत जितना महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। किन्तु जिनके पास है, वे उसे घर वालों के लिए ही संचित रखें, परमार्थ प्रयोजनों में कुछ देने में कृपणता बरतें तो उनका सहयोग उथला ही माना जायेगा। सत्कार्यों में उदार सहयोग के लिए यदि अपने मित्रों को प्रोत्साहित किया जाता है तो उसमें उनके उज्ज्वल भविष्य का हित साधन समाया हुआ। उन्हें कृपणता से छुड़ाया जा सके तो यह किसी भयंकर शरीर पीड़ा एवं मनोव्यथा से छुटकारा दिलाने के समान ही उपकार है।

लालची संग्रही और कृपण व्यक्ति देश-धर्म, समाज और संस्कृति की पीड़ा को न समझने के कारण निष्ठुर मनःस्थिति के दलदल में ही गढ़ा रहता है। ऐसा व्यक्ति पूजा-पाठ करते रहने पर भी उस सच्ची ईश्वर भक्ति का लाभ और आनन्द प्राप्त नहीं कर सकता, जो सत्प्रयोजनों में उदार सहयोग के रूप में उभरे बिना रह ही नहीं सकती। दान देने के लिए किसी को सहमत कर लेना वस्तुतः उसी के कल्याण का महत्त्वपूर्ण द्वार खोल देना है। इसमें याचक धर्म संस्थान का जितना लाभ है, उससे कहीं अधिक उनका ही है जो कृपणता की पकड़ ढीली करके उदारता प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन-मानस के परिष्कार से सत्प्रयोजन में सहयोग की प्रवृत्ति उभारना भी एक कार्य है। उसे जल्दी-जल्दी या दबाव से नहीं वरन् धैर्यपूर्वक सत्प्रयोजनों का महत्त्व और उसमें सहयोग का उपयोग समझाकर ही स्वेच्छा सहयोग से संचित करना चाहिए। इसमें धन संग्रह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं जितना सहयोग सम्पादन के लिए लोक शिक्षण। सम्मेलनों के लिए धन संग्रह करते समय हमें इस प्रशिक्षण के लिए प्रबल प्रयत्न करने चाहिए। इस प्रयास के बदले में जो धन संग्रह हो सके उसी की मर्यादा में रहकर हमें अपने सम्मेलन आयोजनों का स्वरूप निर्धारित करना चाहिए।

सार्वजनिक धन का दुरुपयोग न हो

अपव्यय का दुर्गुण आज सर्वत्र बढ़ रहा है। शान दिखाने के लिए उद्धत प्रदर्शनों की भरमार है। फैशन, सज-धज, ठाट-बाट, व्यसन, विलासिता के लिए लोग पैसे को पानी की तरह बहाते हैं और उसमें अपना बड़प्पन अनुभव करते हैं। इस आडम्बर को पूरा करने के लिए उन्हें दिन-रात अर्थ उपार्जन में जुटा रहना पड़ता है। ईमानदारी से वह आवश्यकता पूरी नहीं होती तो बेईमानी का आश्रय लेना पड़ता है। पूर्वजों की संचित पूँजी स्वाहा करनी पड़ती है और बहाने बनाकर सम्बन्धियों से ऋण लेना पड़ता है। बढ़ी-चढ़ी आवश्यकताएँ जब पूरी ही नहीं हो पातीं तो ऋण और ब्याज चुकाने पर जो आर्थिक और नैतिक विपत्ति खड़ी होती है उसे किसी भी ऋणग्रस्त दुर्दशा को देखकर भली प्रकार समझा जा सकता है। अपव्यय, बेईमानी कराता है। इस प्रकार की कमाई पर मौज उड़ाने वालों की प्रामाणिकता और प्रतिष्ठा किस बुरी तरह नष्ट होती है—वे सहयोग और सम्मान से कितने वंचित रहते हैं इस तथ्य को हम आँख उठाकर अपने चारों ओर बिखरा हुआ देख सकते हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र में इस अपव्यय की दुष्प्रवृत्ति को न पनपने देकर आरम्भ से ही सतर्कता बरतनी चाहिए। प्रयत्न करना चाहिए कि सार्वजनिक धन के हमें ईमानदार ट्रस्टी होना है, जिन्होंने विश्वासपूर्वक अपने धन का श्रेष्ठतम सदुपयोग करने के लिए ट्रस्टी बनाया है उनकी आत्मा के सामने हमें लज्जित न होना पड़े। सार्वजनिक धन का एक-एक पैसा भी हमें सौ बार विचार करने के उपरान्त खर्च करना चाहिए। उसमें अपव्यय की, अनौचित्य की कहीं गंध भी नहीं रहनी चाहिए। अपना निज का पैसा फिजूलखर्ची में उड़ा देना मान्य हो सकता है पर जनता की वह पवित्र धरोहर जो मात्र पुण्य प्रयोजन के लिए दी गई है, उसमें से एक पैसा भी फिजूलखर्ची या बेईमानी में नहीं जाना चाहिए।

इसका ध्यान न केवल वे लोग रखें, जिन्हें खर्च करने के लिए पैसा दिया गया है वरन् वे अन्य लोग भी रखें जो उस संगठन के सदस्य होने के नाते प्रकारान्तर से सम्मिलित उत्तरदायित्व से बंधे हुए हैं। यदि वे संकोचवश उपेक्षा बरतते हैं और अपव्यय की ओर से आँखें मूँदे रहते हैं तो प्रकारान्तर से वे भी उस पाप के भागीदार बनते हैं, जो जन श्रद्धा से धर्म प्रयोजन के लिए पवित्र धरोहर के दुरुपयोग के रूप से बन रहा है। न केवल संगठन के सदस्यों को वरन् उन लोगों को भी इस संदर्भ में बहुत पैनी नजर रखनी चाहिए जिन्होंने धन दान दिया है। देखभाल, पूछताछ और कड़ाई इतनी अधिक रहनी चाहिए कि खर्च करने वालों को तनिक भी भूल होने पर सर्वसाधारण के सामने लज्जित और तिरस्कृत होने का भय बना रहे।

लोग अपना पैसा तो होली की तरह फूँकते ही हैं। जब उनके हाथों सार्वजनिक धन पहुँचता है और उसकी पूछताछ करने वाला कोई एक मालिक नहीं दिखता, तो वे उस राशि को अपनी ही बपौती मान लेते हैं और बेरहमी से खर्च करते हैं। साथी लोग यह सोचते हैं कि टोकटाक करने से बुराई बँधेगी तो हम क्यों आगे बढ़े। एक-एक करके सभी लोग जानते-बूझते हुए भी मिथ्या संकोचवश नाराजी के भ्रम से चुप बने रहते हैं और अनर्थ होता रहता है। ब्याह शादियों में जिस तरह फिजूल-खर्ची बरती जाती है, प्रायः उसी स्तर की सभा-सम्मेलनों में भी होती है। जो काम श्रम सहयोग से माँग-जाँच कर हो सकते हैं, उनके लिए भी पैसा खर्च किया जाता है। अपनी उदारता दिखाने और अहसान जताने के लिए भी अधिक कीमत चुकाई जाती देखी गई है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

फिजूलखर्ची के अतिरिक्त ऐसे अवसरों पर बेईमानी को भी पूरी गुंजायश रहती है। झूठे बिल-बाउचर बना लेने, खरीद पर मोटा कमीशन मारने, नाप-तौल गलत-गलत बताने, भाव कुछ का कुछ दिखाने, मार्ग व्यय जलपान आदि के खर्चों को कई गुनाकर देने, जैसी घटनाएँ ऐसे अवसरों पर आसानी से हो सकती हैं। बिना रसीद का चंदा जेब में डाल लेना, रसीदों के कट्टों पर एक और कुछ-दूसरी ओर कुछ लिख देना, चतुर लोगों के बायें हाथ का खेल है। ऐसे-ऐसे अनेक हथकंडों में प्रवीणता प्राप्त करके अनेक व्यक्ति सार्वजनिक क्रिया-कलापों में दौड़-दौड़ कर घुसते हैं। उसमें उन्हें ख्याति के साथ-साथ मुफ्त का धन हड़पने की दुहरी आमदनी होती है।

इस प्रकार यह बिना परिश्रम का अति लाभदायक व्यवसाय उन्हें बहुत ही रुचिकर लगता है। फिर वे बिना बुलाये भी, जहाँ भी जगह मिले घुस पड़ने का प्रयास करते हैं। धूर्तों का प्रधान हथियार उनका मधुर भाषण और उदार व्यवहार होता है। इसी जाल में वे लोगों को फँसाते और पैनी नजर वालों का मुँह बन्द करते हैं। इन लोगों से सतर्क न रहा गया और उन्हें संस्था के धन विभाग तक प्रवेश करने दिया गया तो समझना चाहिए कि लाभ एक उठायेगा और बदनाम पूरा संगठन-पूरा मिशन होगा। यह प्रतिष्ठा हानि, अर्थ हानि से भी असंख्य गुनी अधिक दुःखदायी एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी संभावना-आशंका जहाँ भी हो वहाँ अत्यन्त पैनी नजर रखी जानी चाहिए और अप्रामाणिकता को तत्काल निरस्त करना चाहिए।

यों आमतौर से युग निर्माण संगठन की छत्रछाया में पलने वाले व्यक्ति चरित्रवान ही होते हैं और ऐसी सार्वजनिक धन की फिजूलखर्ची या बेईमानी करने वाले प्रायः नहीं होते। फिर भी यह आशंका मन में बनी रहनी ही चाहिये कि गंगा में भी आक्रमणकारी मगरमच्छ छिपे हो सकते हैं। सेना में अनेक की पद वृद्धि और पुरस्कार प्रशस्ति उनकी बहादुरी के कारण होती है, आमतौर से सभी सैनिक कर्तव्य परायण और बहादुर होते हैं, इतने पर ही वे लोग मिलते ही रहते हैं, जिनका कोर्ट मार्शल होता है। फलों की टोकरी में कुछ सड़े हुए पाये जाते हैं और उन्हें उठाकर कूड़े में फेंकना पड़ता है। यह दुर्बुद्धि तभी रुक सकती है, जब उसकी ओर आरम्भ से ही पूरी सतर्कता रखी जाय और जहाँ तनिक भी आशंका इस प्रकार की दिखाई पड़ती हो वहाँ कड़ाई के साथ देखभाल की जाय और जहाँ सुधार परिवर्तन की आवश्यकता हो वहाँ तुरन्त ही वैसा किया जाय।

मोटे तौर पर यह ध्यान रक्खा जाय कि जो खर्च करने के सम्बन्ध में दौड़-दौड़ कर दिलचस्पी दिखाते हों, उनसे सतर्क रहा जाय और जो बदनामी के भय से पीछे हटते हों उन्हें ही समझाकर यह कार्यभार सौंपा जाय। बदनामी की लज्जा भी मनुष्य को ईमानदार बनाये रहने में बहुत हद तक सहायक होती है। यों वह मानवी गरिमा का मौलिक गुण तो है ही, जो पैसे के सम्बन्ध में असंयम बरतता है। वह अपव्ययी हो अथवा बेईमान, दोनों ही दृष्टि से निन्दनीय है। विशेषतया वह सार्वजनिक क्षेत्र के लिए सर्वथा अयोग्य ही है।

एक बार गाँधी जी किसी सभा में से लौट रहे थे। लोगों ने उन्हें सार्वजनिक कार्य के लिए पैसे दिए, वे उनकी मुट्ठी में थे। लौटते समय भीड़ में उनके हाथ से एक पैसा जमीन पर गिर पड़ा। वे उसे खोजने के लिए रुक गए और न मिला तो जमीन पर बैठकर रेत में उसे ढूँढने लगे। भीड़ बहुत थी। इस ढूँढ़-खोज में समय नष्ट हो रहा था। प्रबन्धकों ने कहा पैसा खो जाने दीजिये हम उसकी पूर्ति कर देंगे। इस पर गाँधीजी ने कहा—प्रश्न पैसे का नहीं, उस अमानत का है जो किसी ने मुझे प्रामाणिक समझकर सदुपयोग के लिए दी थी। मैं उसे खोकर उस व्यक्ति के विश्वास की कैसे रक्षा करूँगा, जो उसने मेरे ऊपर किया था। अन्ततः वे तभी आगे बढ़े जब उन्होंने वह पैसा ढूँढ़ निकाला। हमारा आदर्श सार्वजनिक धन के सम्बन्ध में यही होना चाहिए।

चन्दा होने के बाद जमा पूँजी बैंक में, पोस्टआफिस में रखने का तरीका बहुत अच्छा है। इसमें ब्याज से भी अधिक लाभ यह है कि जिसके पास पैसा जमा है वह अपने निजी काम में उसे बरतने और खर्च हो जाने पर देते समय टालटूल करने का संकट उत्पन्न नहीं करता। अधिक दिन तक ऐसा पैसा जमा रहने पर लोग सोचते हैं कि इसकी कड़ी जाँच

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ताल नहीं है। तब वे उसे हजम करने में भी नहीं हिचकते। इस झंझट में पड़नें की अपेक्षा अच्छा यही है कि बचत की राशि बढ़ने ही न दी जाय। इसे स्थाई साधन में खर्च ही कर डालना चाहिए। जमा पूँजी बैंक में रहे और वह भी दो के हस्ताक्षरों से निकाली जाय।

वर्ष में एक बार हिसाब का विवरण छाप कर कार्यालय पर बड़े. कागज पर लिखकर चिपका दिया जाय। पूछने पर उसका विवरण बिना संकोच बताया जाय। अच्छा हो हिसाब वर्ष में कई बार जाँचा और प्रकट किया जाय। किसी प्रकार की गड़बड़ी होने का कहीं छिद्र रहने ही न पाए। हिसाब की गन्दगी जहाँ भी आरम्भ हो गई हो, वहाँ आपस का मनमुटाव उत्पन्न होगा और अन्ततः यह चर्चा बाहर फैलने पर संगठन का विश्वास ही उठता जायेगा। ऐसी दशा में जिस लक्ष्य को लेकर चला गया था। उसमें भारी अड़चन उत्पन्न होगी। काम थोड़ा हो तो हर्ज नहीं, पर वह होना आदर्श चाहिए। सार्वजनिक जीवन में अर्थ लाभ की दृष्टि से प्रवेश करने वालों का रास्ता सतर्कतापूर्वक बन्द कर देना चाहिए। गुप्त या प्रकट रूप में चल रही अर्थ अव्यवस्था का दुष्परिणाम समूचे सार्वजनिक क्षेत्र को भुगतना पड़ता है। इसलिए उसे व्यक्तिगत बेईमानी की अपेक्षा अधिक भयंकर माना जाय और उसे निरस्त करने के लिए संगठन के हर सदस्य और सहयोगी को जागरूक किया जाय।

आवश्यक कार्यों के लिए धन खर्च करने में कृपणता न बरती जाय। आकर्षक साज-सज्जा एवं प्रचार व्यवस्था को अपव्यय न माना जाय। वह हवन में आहुति देने तथा ब्रह्मभोज करने की तरह ही आवश्यक है। हाँ, उसमें उपयोगिता एवं मर्यादा का ध्यान अवश्य रखा जाय। सम्मेलन आयोजन की स्थानीय व्यवस्था में ही नहीं उस प्रयोजन का परिचय अधिक लोगों को हो सके यह भी उस आयोजन के उद्देश्य प्रसार का ही एक परोक्ष अंग है। इसलिए आरम्भ में प्रचार साहित्य और अन्त में ज्ञान प्रसाद वितरण को भी एक महत्त्वपूर्ण मद मानकर चलना चाहिए। मात्र उत्सव के दिन ही प्रचार के लिए पर्याप्त नहीं, उससे बहुत पहले से और बहुत समय तक यह प्रक्रिया चलती रहनी चाहिए। सूर्य उदय होने से पूर्व प्रकाश फैलाना आरम्भ करता है और अस्त होने के बाद भी देर तक रोशनी बनाये रहता है। यह प्रक्रिया युग-निर्माण मिशन के समस्त आयोजनों के साथ जुड़ी ही रहनी चाहिए।

ब्रह्मभोज और प्रसाद वितरण

सम्मेलन आयोजनों के कितने उपाय एवं स्वरूप हैं ? हर क्षेत्र की हर वर्ग की परिस्थिति, मनःस्थिति, अभिरुचि एवं परम्परा अपने विशेष ढाँचे में ढली होती है। उसको ध्यान में रखकर इस प्रकार ताल-मेल बिठाया जाता है कि विचारशील वर्ग अधिक मात्रा में उस आयोजन में भाग लेने के लिए उपस्थित हो सके।

प्राचीनकाल में इसका एक तरीका ब्रह्मभोज के रूप में बहुत प्रचलित रहा है। ब्रह्मभोज का पुण्य धार्मिक क्षेत्र में बहुत विस्तार से बताया गया है। यही कारण है कि छोटे-बड़े प्रत्येक धर्म कृत्य के साथ ब्रह्मभोज जुड़ा हुआ है। नामकरण, यज्ञोपवीत, विवाह, मृतक श्राद्ध जैसे संस्कार के समय अभी भी व्यक्तिगत ब्रह्मभोज होते हैं। तीर्थ यात्रा से लौटने पर, कथा कीर्तन कराने पर लोग अभी भी उसकी पूर्णाहुति ब्रह्मभोज के रूप में सम्पन्न करते हैं। साधु, महात्मा समय-समय पर 'भण्डारा' करते रहते हैं। यह प्रकारान्तर से ब्रह्मभोजों का ही रूप है। इनका एकमात्र उद्देश्य यह था कि विचारशील वर्ग के व्यक्तियों को विशेष अवसरों पर आमंत्रित, एकत्रित किया जाय और उनके विचारों का लाभ उठाया जाय। एकत्रित लोग वस्तुतः विचार-विनिमय के उद्देश्य से ही आते थे। उनके परामर्शों से सामयिक समस्याओं के महत्त्वपूर्ण समाधान निकालते थे। नई परिस्थिति होने पर कार्य का उत्तरदायित्व किस प्रकार निभाया जाय ? प्रस्तुत क्रिया-कलाप में क्या हेर-फेर किया जाय ? इसके लिए विचारशील लोगों के—स्वजन सम्बन्धियों की उपस्थिति में विचार मंथन के उपरान्त जो निर्णय होते थे उसे संबद्ध व्यक्ति पालन करते थे। उस निर्णय का पालन ठीक प्रकार हो रहा है या नहीं इसका ध्यान वे लोग रखते थे, जो उस आयोजन में उपस्थित हुए थे।

नया बच्चा जन्मा—परिवार में नया सदस्य आने पर माता-पिता से लेकर परिवार के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्यान्य सभी सदस्यों को अपनी गतिविधियों में क्या अन्तर करना चाहिये, इसका मार्ग-दर्शन पुरोहित करते थे। भेले ही वे जानकारियाँ नवजात शिशु के अभिभावकों को पहले से ही रही हों, पर नामकरण संस्कार के समय उत्साह भरे वातावरण में वह प्रशिक्षण और भी अच्छी तरह हो जाता था। उस उद्बोधन, मार्ग-दर्शन का लाभ न केवल वह परिवार उठाता था वरन् उस अवसर पर उपस्थित लोग भी शिशु विकास के उत्तरदायित्व को निभाने के सम्बन्ध में बहुत कुछ सीखते थे। जो भूल चुके थे, उसे स्मरण करते थे और अपने-अपने घर में भी उन तथ्यों को क्रियान्वित करते थे।

यज्ञोपवीत का समय है किशोरावस्था में प्रवेश। बचपन की समस्याएँ मालूम होती हैं किशोरावस्था की अलग। दोनों स्थितियों की साज-सँभाल घर के लोगों को अलग-अलग ढंग से करनी पड़ती है। यदि संरक्षण अभिवर्धन का समुचित ज्ञान न हो तो क्या छोटे बच्चे क्या बड़े बच्चे सभी का व्यक्तित्व विकृत होता है। वे समस्या बनते हैं और पालने वालों को परेशानी में डालते हैं। बड़े होने पर उनका विकृत व्यक्तित्व उनके स्वयं के लिए, सम्बद्ध लोगों के लिए, प्रकारान्तर से पूरे समाज के लिए अभिशाप सिद्ध होता है। इसलिए नामकरण के समय जिस प्रकार शिशुपालन के लिए उस परिवार को नये परिवर्तन का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक मार्ग-दर्शन मिला था, ठीक उसी प्रकार किशोरावस्था आरम्भ होने पर उस सम्बन्ध में नई रीति-नीति आरम्भ करने की शिक्षा यज्ञोपवीत संस्कार के समय मिलती थी। इससे उस बालक को बहुत कुछ सिखाया जाता था। वस्तुतः सच्ची शिक्षा तो उस परिवार के साथ ही उपस्थित सम्बन्धियों की होती थी कि उन्हें भी इस समस्या का सामना करते हुए किस तरह सोचना चाहिए—क्या रीति-नीति अपनानी चाहिए।

विवाह इससे भी बड़ा उत्तरदायित्व है, एक वयस्क लड़की का नये परिवार में प्रवेश होता है। यह लड़की के लिए अद्भुत प्रयोग है। लड़के को भी अपने व्यक्तित्व की परिधि दूनी करनी पड़ती है। इस तरह सोचना और इस तरह बरतना पड़ता है मानो उसके कंधे पर अपने शरीर की तरह ही एक-दूसरे सजीव शरीर के निर्वाह, विकास का उत्तरदायित्व आ गया। वर पक्ष को एक नये अजनबी सदस्य को आत्मसात करने के लिए किस प्रकार वातावरण बनाना चाहिए ताकि उसकी आशंकाएँ न पनपने लगें। आरम्भिक भूलें सदा सर्वदा दुःख देती हैं। इस सम्बन्ध में न केवल पति-पत्नी को वरन् समूचे परिवार को किसी नीति को अपनाकर चलना है। यह बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक, नैतिक एवं सामाजिक प्रशिक्षण है। पुरोहित वर्ग यही शिक्षण देते हुए विवाह संस्कार सम्पन्न कराता था। उपस्थित स्वजन सम्बन्धी उस गठबंधन के, समझौते के, न केवल मूक दर्शक साक्षी मात्र होते थे वरन् अपना यह उत्तरदायित्व समझते थे कि उस पवित्र गठबंधन का निर्वाह ठीक तरह होता रहे। उसमें अनीति न बरती जाने लगे। कहीं कुछ अनुचित होता था तो वे विवाह संस्कार के समय उपस्थित लोग उस संदर्भ में अपना नैतिक दबाव देते थे और जो अनीति अपनाता था उसकी मनमानी रोकने के लिए अपने प्रभाव का, दबाव का उपयोग करते थे।

मृतक भोज के समय उपस्थित लोग इसलिए जमा होते थे कि मृतक के न रहने पर जो नई जिम्मेदारियाँ परिवार के ऊपर आई हैं, उनके निर्वाह में घर के किस सदस्य को क्या सोचना और क्या करना चाहिये ? छोड़ी हुई सम्पत्ति एवं जिम्मेदारी का विभाजन किस प्रकार किस उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाय, इसका निर्णय उपस्थित विज्ञजन ही अच्छी तरह कर देते थे। परिवार के लोगों में जो स्वार्थ संघर्ष संभव था वह उस पंच फैसले से टल जाता था। हर्ष और शोक के विशेष अवसरों पर स्वजन सम्बन्धियों की उपस्थिति अच्छी लगती है, उससे बड़ी राहत मिलती है। ऐसे अन्य अनेक कारण थे, जिनके लिये पारिवारिक परिवर्तनों के समय विज्ञजनों का स्वजन सम्बन्धियों का एकत्रीकरण उचित एवं आवश्यक होता था। इस प्रकार के मिलन, सद्स्नेह, सद्भाव के सम्बन्ध सूत्रों को सुदृढ़ बनाते थे। अस्तु, उसकी उपयोगिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझी जाती थी। इस उपस्थिति का मूल उद्देश्य अप्रकट रहता था। आँखों से प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली प्रमुख घटना सहभोज ही होता था।

सहभोज तो बाजारू और घटिया शब्द है, उसकी व्याख्या में तो होटलों, हलवाई की दुकानों में साथ बैठकर खाना भी सम्मिलित किया जा सकता है। चूँकि यह सम्मिलित भोज श्रेष्ठ, ब्रह्म उद्देश्यों के लिये होते थे अस्तु उन्हें ब्रह्मभोज नाम दिया जाना उचित ही था। उपस्थित लोगों में ब्राह्मण वृत्ति के श्रेष्ठ सत्पुरुषों का बाहुल्य रहने के कारण भी उन्हें ब्रह्म भोज कहा जाता था। उस समय उस प्रकार के ब्रह्मभोज हर दृष्टि से उपयोगी ही माने जाते थे। श्रेष्ठ कर्म और पुण्य पर्यायवाची हैं। इन ब्रह्मभोजों के सत्परिणामों को ध्यान में रखकर यदि उन्हें पुण्य फलदायक माना जाता था तो इसमें श्रद्धा की अभिव्यंजना ही है, कोई अवांछनीय अत्युक्ति नहीं।

आज बड़े प्रीतिभोजों का विरोध इसलिये किया जाता है कि उनके पीछे उथला मनोरंजन—अहंकार प्रदर्शन भर होता है। उनसे विचारपूर्ण सम्मेलनों जैसी किसी आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती। दावत बनाने में साधारण भोज की तुलना में कई गुना खर्च करना पड़ता है। खाने के लिये खाने वालों का किराया भाड़ा, श्रम और समय नष्ट होता है। जूठन के रूप में अन्न की बुरी तरह बर्बादी होती है। गरिष्ठ भोजन से खाने वालों के पेट खराब होते हैं। इस घोर महँगाई और व्यस्तता के दिनों में इस प्रकार की बड़ी दावतों से अन्न संकट और भी बढ़ता है, इसलिए आज सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों में उसका विरोध किया जाना उचित ही कहा जायेगा।

इतने पर भी उन सम्मेलनों की उपयोगिता बनी रहेगी, जो पारिवारिक या सामाजिक समस्याओं के उपयुक्त हल ढूँढ़ने के लिये बुलाये गये हों। स्पष्ट है कि दूर से आये हुये देर तक ठहरने वाले व्यक्तियों के लिये आतिथ्य का प्रबन्ध किया जाना सभ्य शिष्टाचार भी है और सुनिश्चित आवश्यकता भी। यदि मात्र सभा करनी हो तो उपस्थित भीड़ के लिए आतिथ्य का प्रबन्ध हो सकना असंभव है। किन्तु चुने हुए आमंत्रित लोगों के लिए किसी प्रकार उनका सत्कार खान-पान के रूप में होना ही चाहिये, भले ही स्वल्प मात्रा में, सस्ता ही क्यों न हो ? सौंफ सुपाड़ी का सत्कार भी ऐसी ही प्रतीक पूजा है। शर्बत, चाय कुछ महँगे हैं। ठण्डा पानी सर्वसुलभ है।

बड़ी संस्थाओं को वार्षिकोत्सवों में, सम्मेलनों में, भोजन का प्रबन्ध करना ही होता है। भले ही मुफ्त कराया जाय या पैसा लेकर। मनुष्य अधिक देर ठहरेगा, निवास करेगा तो खाये-पिये बिना रह नहीं सकता। सो आज भी इन आयोजनों में ठहरने और खाने का प्रबन्ध करना ही होता है, भले ही संस्था ने वह भार उठाया हो अथवा आगन्तुकों ने अपनी जेब से दिया हो। प्राचीनकाल में इतनी दुकानें नहीं थीं। उन दिनों शिष्टाचार एवं व्यवस्था की दृष्टि से यही सुविधाजनक था कि सम्मेलनों के साथ सहभोज, ब्रह्मभोज का प्रबन्ध भी रखा जाय।

कथा, कीर्तन, तीर्थयात्रा, यज्ञ आदि की पूर्णाहुति ब्रह्मभोज के रूप में होने का प्रचलन धर्म सम्मेलनों को देर तक सुविधापूर्वक चलाते रहने की दृष्टि से हुआ है। साधुओं के भंडारे में गुरुजनों एवं धर्म प्रेमियों को एकत्रित करके देर तक धर्म चर्चा चलाना ही उद्देश्य था। आज तो मात्र दावतों तक ही बात सीमित रह गई है। उद्देश्यरहित यह मुफ्त के भोजन की धूमधाम निरर्थक भी है और हानिकारक भी। किन्तु उपर्युक्त उद्देश्य के लिए उनकी आवश्यकता बनी ही रहेगी और वह किसी न किसी प्रकार पूरी करनी ही होगी। नाम उसका ब्रह्मभोज रखा जाय अथवा कोई सम्मेलन। ऐसे आयोजन का नाम 'सम्मेलन' रहे और उसमें प्रबन्ध ब्रह्मभोज का भी रहे ? तब अच्छा लगेगा। यह नामकरण का झंझट है। वस्तुतः दोनों को अविच्छिन्न मानकर ही चलना होगा।

युग परिवर्तन अभियान के आयोजन सम्मेलन गायत्री यज्ञों के नाम से होते हैं। अपने अधिकांश आयोजनों में छोटा या बड़ा गायत्री यज्ञ प्रायः जुड़ा ही रहता है। धर्म मंच से लोक-शिक्षण की प्रक्रिया के अन्तर्गत उपयुक्त वातावरण बनाने और धर्मप्रिय जनता को एक स्थान पर एकत्रित करके एक प्रयोजन में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ-साथ जुटाने की दृष्टि से गायत्री यज्ञों के अतिरिक्त और कोई उपयुक्त उपाय है नहीं। अस्तु, इस प्रक्रिया को एक सुनियोजित अभियान के रूप में अपनाया गया है। उस प्रवचन ने अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति में आशाजनक सफलता प्राप्त की है।

पर्व, संस्कार, नवरात्रि सत्र आदि भी इसी योजना के अन्तर्गत आते हैं। कथा, कीर्तनों में भी यज्ञ होता है। इनका जनता को उद्बोधन अपने स्थान पर है। इनमें भी कम से कम पानी का प्रबन्ध तो करना ही होता है। वह भी एक आतिथ्य है। चाय शर्बत की फेरी वाले तो ऐसे अवसरों पर बिना बुलाये ही अपने ठेले, धकेलें खड़ी कर लेते हैं। बात आमंत्रित विशिष्ट व्यक्तियों की है। विचार विनिमय के लिए इन्हीं लोगों को विशेष रूप में बुलाया गया होता है। इनके लिये अलग चायपार्टियाँ अभी भी होती हैं। इन्हें प्राचीनकाल के ब्रह्मभोज का ही आधुनिक रूप कहा जा सकता है। यह सम्बन्ध सूत्र बना ही रहेगा।

सम्मेलनों के साथ-साथ इस प्रकार का प्रबन्ध करके ही चलना होगा। साथ ही यह भी ध्यान रखना होगा कि आर्थिक कठिनाई और अन्न की कमी की वर्तमान विषम परिस्थितियों में यह प्रबन्ध भार रूप न हो जाय। यह प्रश्न विचारणीय इस दृष्टि से भी है कि अपने समाज में प्रत्येक धर्म कृत्य के साथ ब्रह्मभोज एक प्रकार से ऐसा प्रचलन बन गया है, जिसके बिना धर्म परम्परा की पूर्ति ही नहीं होती और एक प्रकार से अधूरा ही रह जाता है। माता, पिता और गुरु के बाद चौथा देवता अतिथि है। अपने समाज में अतिथि सत्कार को बहुत महत्त्व दिया गया है। घर पर आये हुए को ऐसे ही बिना सत्कार के विदा कर दिया जाय तो यह अटपटा-सा ही लगेगा और उसमें असमंजस ही बना रहेगा।

अतिथि सत्कार के लिये अपने आयोजनों की नीति बहुत समय से स्पष्ट है। घरों में संस्कारों के समय सौंफ, सुपाड़ी, धनियाँ, गिरी का बुरादा, इलायची, दालचीनी जैसी वस्तुयें पर्याप्त मानी गई हैं। ठण्डा जल सबसे सस्ता और सबसे बड़ा सत्कार है। प्रीति भोज, सहभोज, ब्रह्मभोज के लिए 'अमृताशन' को मान्यता दी गई है। चावल, दाल, खिचड़ी, दलिया, शाक को अलग-अलग या मिलाकर पकाने से अमृताशन बनता है। जगन्नाथ जी का भात प्रसिद्ध है। बद्रीनाथ आदि तीर्थों में, अजमेर के ख्वाजा के उर्स में यही परम सात्विक भोजन सब लोग प्रसाद की तरह श्रद्धापूर्वक ग्रहण करते हैं। इसमें पकाने की सुविधा, सस्तापन, जाति-पाँति के आधार पर चल रही कच्ची-पक्की रसोई के भेदभाव की समाप्ति, चटोरपन और पेट खराब करने वाली विडम्बना का अन्त जैसे कितने ही लाभ इस प्रचलन में हैं। कम खर्च और श्रम में इस आधार पर अधिक लोगों को भी भोजन कराया जा सकता है। खाने वाले अपने-अपने घरों में दाल चावल लाकर इकट्ठा करलें, इकट्ठा पकाने और इकट्ठा खाने में दावतों पर लगा प्रतिबन्ध भी बाधक नहीं है। जन-मानस को परिष्कृत करने के लिए सम्मेलन और सम्मलनों के साथ जुड़ी हुई भोजन व्यवस्था का समाधान हमें इसी प्रकार करना होगा।

इसी सन्दर्भ में एक दूसरी बात और रह जाती है, जो प्रायः प्रत्येक धर्मकृत्य के साथ जुड़ी रहती है। वह है—प्रसाद वितरण। इसके लिये थियोसोफी ने प्रसाद के रूप में पवित्र जल का उपयोग अपनाया है। ईसाई धर्म में परम प्रसाद 'वपतिस्मा' जल मात्र ही होता है। अपने देश में पंचामृत और चरणामृत—दो का प्रचलन है। पंचामृत में गाय का दूध, दही, घी, शहद, तुलसी पत्र मिलते हैं। चरणामृत में जल, गंगाजल, शकर, चन्दन, तुलसी पत्र यह पंच वस्तुयें रहती हैं। मन्दिरों में, धर्मकृत्यों के अन्त में यह जल वाला पंचामृत ही काम में लाया जाता है। यही सर्व सुलभ है। दूध शहद शुद्धता भी संदिग्ध रहती है और उन्हें प्राप्त करना कठिन तथा खर्चीला भी पड़ता है। चरणामृत शब्द इस युग में गले नहीं उतरता। इसलिये इस जल, प्रधान चीजों को या पाँच अमृत-पंचामृत कहने में कोई आपत्ति की बात नहीं है। मिठाई हलुआ, शकर की गोलियाँ आदि के रूप में कहीं महँगा कहीं सस्ता प्रसाद वितरण होता है। इसके स्थान पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आयोजनों में जल प्रधान पंचामृत का प्रचलन ही पर्याप्त माना जाना चाहिये।

उस भोज और प्रसाद वितरण के लिए जहाँ जितना उत्साह है, वहाँ वह पैसा ज्ञान वितरण साहित्य के रूप में खर्च किया जा सकता है। इस उपहार में स्थायित्व भी है और हित साधन भी। इस प्रयोजन के लिए युग-निर्माण योजना द्वारा दो पैसा, सात पैसा और दस पैसा मूल्य की अनेक छोटा-बड़ा उपहार देने में योग्य-ज्ञान प्रसार सामिग्री छापी गई है। इसकी पीठ पर यह लिखा या रबड़ की मुहर से यह छापा जा सकता है कि यह प्रसाद उपहार किसकी ओर से भेंट किया गया है। इसमें देने वाले की यशस्वी स्मृति रहती है और प्राप्त कर्ता कुछ महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन प्राप्त करता है। नवयुग अवतरण के लिये किये जाने वाले जन-मानस परिष्कार अभियान में भारी सहायता मिलती है। तीनों ही दृष्टियों से यह ज्ञान-प्रसाद वितरण अति• महत्त्वपूर्ण है।

विवाह शादियों के अवसर पर लोग रूमाल, तश्तरी, गिलास, हैण्डबैग आदि वस्तुएँ विवाह की स्मृति में बरातियों तथा आगन्तुकों को भेंट करते हैं। दिवाली एवं नये वर्ष पर रंगीन कार्ड, चित्र कलैण्डर आदि का उपहार देने की प्रथा व्यापारी समाज में प्रचलित है। किसी उद्‌घाटन एवं हर्षोत्सव के समय भी आगन्तुकों को ऐसे ही उपहार दिये जाते हैं। इनमें विज्ञापन का उद्‌देश्य भी रहता है। आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में प्रचलित इस उपहार परम्परा को धार्मिक क्षेत्र में ज्ञान प्रसार के रूप में अपनाया जाना चाहिए और जहाँ जितना धन प्रसाद या ब्रह्मभोज के रूप में व्यय करना हो, उस राशि को इस ब्रह्मदान में, ज्ञान दान में खर्च किया जाना चाहिए।

आवश्यक नहीं कि जिस दिन धर्मोत्सव हो, उसी दिन वह सारी प्रसाद सामग्री उपस्थित लोगों पर ही बखेर दी जाय। उसे सत्पात्रों के पास उनके घरों पर उसी प्रकार पहुँचाया जाय, जिस प्रकार कि निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, डाक से या हाथों हाथ भेजे जाते हैं। खरीद तो नियत समय पर ही करली जाय पर उसका वितरण धीरे-धीरे किये जाने में कोई हर्ज नहीं है। एक दिन के बजाय यदि वह एक महीने में भी विचार पूर्वक सत्पात्रों के पास भेजा जा सके तो इसमें अधिक विचारशीलता का, सत्पात्र तलाश करने का, कार्य अच्छी तरह सम्पन्न हो सकेगा। उतावली में एक ही दिन उपस्थित लोगों पर किसी वस्तु को बखेर देने की अपेक्षा यह कहीं अधिक उपयुक्त है कि उपयुक्त वस्तु को उपयुक्त हाथों में पहुँचाने के लिए कुछ समय लगता हो तो उसकी चिन्ता न की जाय।

स्कूलों के छात्रों को, बरातियों को, प्रीति भोज में सम्मिलित होने वालों को, आयोजन में भाग लेने वालों को यह दो-दो सात-सात पैसे मूल्य की उपहार सामग्री भेंट की जाय तो वे एक-दूसरे से भिन्न प्रकार की वस्तुएँ होने पर वे एक-दूसरे से अदल-बदल कर देखते हैं। उस प्रकार इस अदला-बदली में उस समुदाय को भिन्न-भिन्न प्रकार के उद्‌बोधन मिलते हैं। इसलिए एक जैसी वस्तुएँ सभी के देने की अपेक्षा अदल-बदल कर देना और भी उपयुक्त तथा उत्साहवर्धक रहता है। इससे रुचि भिन्नता को ध्यान में रखकर जिसके काम की जो वस्तु हो वह उसके हाथों में दी जा सकती है।

बच्चों, प्रौढ़ों, महिलाओं, वृद्धों, व्यावसायियों, सरकारी कर्मचारियों, अध्यापकों, श्रमिकों आदि विभिन्न वर्गों की अभिरुचि में भिन्नता पाई जाती है। उनके लिए उद्‌बोधन भी भिन्न प्रकार के उपयुक्त रहते हैं। ज्ञान प्रसार वितरण में इस उपयुक्तता का ध्यान रखा जा सकता है। धनी-मानी, उदार हृदय व्यक्ति गोओं को चारा, चिड़ियों को दाना, चीटियों को आटा, कुत्तों को रोटी आदि देकर अपनी दान प्रवृत्ति का दैनिक पोषण करते रहते हैं। पेट की अपेक्षा मस्तिष्क और हृदय को भोजन देने वाली यह प्रसाद सामग्री उस दान-पुष्प से किसी भी प्रकार कम महत्त्व की नहीं है।

ब्रह्मभोज के उपयुक्त उपाय हमारे धर्म-कृत्यों के साथ सम्मिलित रखे जायें तो उनकी उपयोगिता में और भी अधिक अभिवृद्धि होगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तीर्थ-यात्रा और धार्मिक मेलों का उद्देश्य

भारतवर्ष धर्म प्रधान देश है। यहाँ की पृथ्वी का कण-कण महत्त्वपूर्ण है। यों तो संसार के देशों में अनेक तीर्थ-स्थान हैं, पर भारतवर्ष में तीर्थ-स्थानों की भरमार है। तीर्थ-स्थान से तात्पर्य ही है पवित्र स्थान और भारत की भूमि अपने महापुरुषों के महान्‌कृत्यों के कारण अपने को कृत-कृत्य कर चुकी है। भारत के हिन्दू हमें जितनी तीर्थयात्रा करते दिखाई देते हैं, उतने और कहीं के भी नहीं। यों तो ईसाइयों और मुसलमानों के भी जेरुसलाम, बेरंकन सिटी, मक्का और मदीना आदि तीर्थ हैं। भारतवर्ष में अजमेर शरीफ जैसे अनेक स्थान तथा दरगाहें हैं, जो मुसलमानों के पवित्र स्थान हैं।

हमारे 'धर्म' के अर्थ बहुत व्यापक हैं और 'तीर्थ' के भी। भारतवर्ष ने सदा ही आध्यात्मिक विकास तथा आत्मिक उन्नति को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया है। अतः अतीत काल से हमारे ऋषि-मुनियों ने अपनी तपस्या, त्याग और परोपकार से अपनी जन्म-भूमि तथा निवास-स्थान को सार्थक 'तीर्थ' नाम दिलवाया है। भारतवर्ष में अनेक तीर्थ हैं परन्तु उत्तर प्रदेश में तो तीर्थों की भरमार है, जहाँ भारत के कौने-कौने से यात्री आते रहते हैं। राम की जन्मभूमि अयोध्या तथा कृष्ण की जन्म तथा लीलाभूमि ४ कोस के घेरे की ब्रजभूमि है, जिसके अन्तर्गत मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, महावन, ब्रह्माण्ड घाट, बड़े दाऊजी, रावल, गोवर्धन, राधाकुण्ड, गिरिराज, जतीपुरा, डीग, कामवन, नन्दगाँव, प्रेम सरोवर, बरसाना, मधुबन आदि हैं। भगवान बुद्ध से सम्बन्ध रखने वाले स्थान बोध-गया, सारनाथ, राजगृह, कालसी आदि भी तीर्थ-स्थान ही हैं। आबू पर्वत जैनियों की तीर्थभूमि है और अमृतसर सिक्खों के तीर्थ हैं।

साधारण परदेशी यात्रियों को बहुत कुछ स्थानीय पण्डों पर निर्भर होना पड़ता है और जो कुछ वे दिखा देते या स्थान, की महत्ता बता देते हैं, उन्हें उसी पर विश्वास और सन्तोष करना पड़ता है। यदि यात्री जिज्ञासु हुआ तो कुछ पूछ-ताछ कर और थोड़ा देख या जान लेता है, बहुत कुछ छूट भी जाता है। बेचारा इसी में अपने को धन्य समझता है, पुण्य का भागी तो वह हो ही गया तीर्थ-यात्रा करने से। पर आजकल न वैसे श्रद्धालु यात्री रहे हैं और न वैसे सात्विक भावनाओं वाले पण्डे। पहले पण्डे 'गाइड' का काम करते थे। वे सन्तोषी-तपस्वी ब्राह्मण जो भी सहर्ष श्रद्धालू यात्री दे देता था, उसी से सन्तुष्ट होकर अपना कुटुम्ब पालते थे, किन्तु आजकल पण्डों का उद्देश्य ही प्रायः यही हो गया है यात्रियों की धोती तक उतरवा लेने का प्रयत्न। यह भारतवर्ष का दुर्भाग्य है। पहले विद्वान् पण्डा यात्रियों को स्थान की धार्मिक महत्ता तथा इतिहास बताते और दिखाते थे और आज केवल धर्म, जो कुछ और जैसे भी हो यात्री से कुछ लेना मात्र रह गया है। पण्डों को ही क्यों दोष दिया जाय ? समाज के प्रत्येक क्षेत्र में यही पाखण्ड और छछोरापन रह गया है। आत्मा का लोप हो चुका है, बाहरी ढाँचा मात्र अवशेष है।

हमारे पुरखों ने बहुत सोच-समझकर तीर्थयात्रा करने का आदेश दिया है। वे जानते थे कि यदि 'यात्रा के लाभ' के नाम पर देशवासियों को घूमने को कहा जायेगा, तो बहुत कम लोग 'यात्रा का लाभ' उठायेंगे रुपये-पैसे की दिक्कत, सांसारिक झंझटों तथा अस्वास्थ आदि न जाने कितने बहाने निकल आयेंगे, परन्तु प्रकृति से ही धर्म-भीरु हिन्दू 'धर्म' के नाम पर अपना परलोक बनाने के लिए सारी कुपरिस्थितियों की अवहेलना करते हुए धर्म लाभ के हेतु अवश्य यात्रा करेंगे और अप्रत्यक्ष रूप में यात्रा के सब लाभों को भोग सकेंगे। तीर्थयात्रा करने से अनेक लाभ हैं। स्थान-स्थान की वेषभूषा, रहन-सहन, आचार विचार, रंग-रूप, भाषा, वनस्पति, पैदावार आदि भिन्न होती हैं, अतः तीर्थयात्री का ज्ञान और अनुभव विस्तृत होता है। धार्मिक-ऐतिहासिक, भौगोलिक कलात्मक, सामाजिक, आर्थिक तथा सामयिक ज्ञान तो होता ही है—मन्दिर और मूर्ति के सामने जाकर, श्रद्धा से नतमस्तक हो अपने कालुष्य का विसर्जन कर कुछ समय तक यात्री आत्मविस्मृति करके इस लोक से उस लोक को पहुँच जाता है। निश्चय रूप से स्थायी तथा सात्विक प्रभाव उसके हृदय और आत्मा पर पड़ता है। उसके हृदय में संसार की अनित्यता और विलास तथा वैभव के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्षणिक एवं मिथ्या अस्तित्व का ज्ञान उदय होता है और अपने भविष्य के संशोधित जीवन तथा इस लोक और परलोक पर वह सोचने लगता है। परमात्मा के प्रति सभी भक्ति, सद्भावनाओं, सद्विचारों सत्कर्मों, परोपकार तथा दान-पुण्य आदि के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है और वह वहीं उनका श्री गणेश भी कर देता है। अपने पुरखों तथा प्राचीन इतिहास की महत्ता का सच्चा आभास उसे मिलता है। इसके अतिरिक्त जलवायु का परिवर्तन और नाना प्रकार के रंग-बिरंगें। प्राकृतिक दृश्य—झरने, पर्वत, कंदरा, जंगल, पशु-पक्षी आदि उनके स्वास्थ्य तथा मन पर अपना अमिट प्रभाव डालते हैं। ईश्वर की महत्ता एवं अपनी लघुता का भी अनुभव वह करता है, तथा अपने और विराट प्रकृति के अटूट सम्बन्ध को समझकर 'ब्रह्मास्मि', 'शिवोऽहम्' महामंत्र का अर्थ समझ पाता है। ईश्वर की दी हुई आँखों का फल वह ईश्वर की कारीगरी और उसकी विचित्र लीला देखकर पाता है। उसकी निरीक्षण-शक्ति, प्रकृति के ज्ञान तथा विज्ञान की उपयोगिता की भावना में वृद्धि होती है। आजकल प्रदर्शनकारियों का फैशन-सा है। प्रदर्शिनी के टीपटाप, अनेक उपायों तथा धन-खर्च से जो उद्देश्य सिद्ध होता है, वह अनायास ही तीर्थ-स्थान तथा मेलों से होता है।

भारतवर्ष के चार प्रसिद्ध धाम हैं। पूर्व में समुद्र-तट पर जगन्नाथ पुरी, दक्षिण में समुद्रतट पर रामेश्वरम्, पश्चिम में समुद्रतट पर द्वारकापुरी तथा उत्तर में हिमालय की गोद में बदरीनाथपुरी। धर्म-ग्रन्थों में कहा गया है कि प्रत्येक हिन्दू का धर्म है कि वह चारों धाम की यात्रा करे। बिना ऐसा किए उसे मोक्ष नहीं मिलेगा। राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का कितना अमोघ उपाय है ? यात्री अनुभव करेगा कि मेरा राष्ट्र सम्पूर्ण भारतवर्ष है। वह कितना विस्तृत और विशाल है। प्राकृतिक सौन्दर्य, धन-धान्य से पूर्ण, वनस्पतियाँ तथा खनिज पदार्थों का भण्डार यह मेरा भारतवर्ष कितना भव्य है ? यात्री के हृदय में स्वतः देश-प्रेम की पूत-भावना यात्रा से जागृत होगी। समुद्र तट का जीवन और दृश्य तथा पर्वतीय दृश्य और जीवन एकबार निकट से देख लेने पर क्या भूला जा सकता है ?

भारतवर्ष की सात पवित्र पुरियाँ हैं। १. अयोध्या २. मथुरा, ३. हरिद्वार, ४. काशी, ५. कांचीवरम्, ६. उज्जैन तथा ७. द्वारका। किसी की भारतवर्ष के मध्य भाग में, किसी की दक्षिण भाग तथा पश्चिम भाग में इनकी स्थिति है। वैसे ही भारतवर्ष के प्रसिद्ध द्वादश ज्योर्तिलिगं निम्नलिखित हैं—१. सोमनाथ २. त्रयम्बकेश्वर, ३. ओंकारेश्वर ४. महाबलेश्वर ५. केदारनाथ ६. विश्वनाथ ७. वैद्यनाथ ८. रामेश्वर ९. मल्लिकार्जुन १०. नागनाथ ११. घृषणेश्वर १२. भीमा शंकर। वैसे ही विभिन्न देवी पीठ विभिन्न स्थानों में है।

अब जो समस्त तीर्थों की यात्रा करेगा, वह स्वाभाविक ही है कि प्रायः समस्त भारतवर्ष घूम लेगा और उससे परिचित हो जायेगा। व्यापार तथा वाणिज्य के दृष्टिकोण से भी यह ज्ञान उसके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा।

हमारे तीर्थ स्थान प्रायः प्रकृति की केलि-भूमि में स्थापित किए गए हैं। मनुष्य कूप-मण्डूक नहीं रह जाता। एक सुन्दर वस्तु सदा के लिए हर्ष का कारण होती है कि व्यापकता को अनुभव-प्राप्त यात्री समझ पाता है। हमारे धर्म-ग्रन्थों में तो प्रत्येक हिंदू के लिए तीर्थ-यात्रा करने का आदेश है। तीर्थ-यात्रा के बिना जीवन नीरस, व्यर्थ, धर्म-रहित माना जाता है। तीर्थ-यात्रा मनुष्य का एक कर्तव्य है, जिसका पालन कभी न कभी मनुष्य को अपने जीवन में करना पड़ता है। किन्तु जैसे प्रायः हर बात में सच्चे अर्थ को न समझ कर हमने उसके अर्थ को बिगाड़ा तथा घसीटा-घसाटा है, वही बात तीर्थ-स्थान के विषय में भी है। जैसे तीर्थ-स्थान अब धर्म-भीरु बूढ़ों और अशिक्षित तथा अर्द्ध-शिक्षित अधेड़ स्त्री-पुरुषों के ही हिस्से में हों। एक मनोवैज्ञानिक सत्य हम न भूलें, वृद्धावस्था में इन्द्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं। नई बातों के प्रति उत्साह की कमी हो जाती है। अतः तीर्थ-यात्रा तो बचपन और जवानी में ही करनी चाहिए, अधिक रस तभी आता है। पर अवकाश प्राप्त जीवन तो वृद्धों को प्राप्त होता है, अतः वह सरलता से तीर्थ-यात्रा के लिए समय दे सकते हैं। तीर्थयात्रा उनके मनोरंजन का विशेष साधन भी है। जब उनका अन्त समय निकट आता है, तब वे अपना परलोक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनाने की चिन्ता में लगते हैं। तो प्रायः वृद्ध-वृद्धा ही क्यों तीर्थ यात्रा करते हैं—युवक-युवतियाँ और बालक-बालिकाएँ क्यों नहीं ? इसका भी कारण है। कारण स्पष्ट है—प्राचीन समय में यात्रा-मार्ग ठीक न थे, यात्रा के साधनों की कमी थी, चोर-डाकुओं तथा मार्ग के अन्य कष्टों का भी भय था। इसी से वृद्धजन जब यात्रा आरम्भ करते थे, तो यही समझ कर करते थे कि ईश्वर जाने अब लौटने की नौबत आए या न आए। यदि न भी लौटे, तो परलोक बनेगा, अंतिम समय तो है ही परन्तु अब रेल, मोटर, लारी, हवाई जहाज, घोड़ा गाड़ी आदि सभी साधन पर्याप्त और सुलभ हैं—मार्ग में भी भय और कष्ट की आशंका नहीं, पक्की सड़कें, धर्मशालाएँ तथा अन्य सुविधाएँ हैं ऐसी दशा में अब छोटे-बड़े सब आयु के स्त्री-पुरुष आराम से यात्रा कर सकते हैं। किन्तु हिन्दू लकीर के फकीर होते ही हैं। पुरानी बातों में यदि बुराइयाँ भी हैं, तो भी उन्हें छोड़ना पसन्द नहीं करते, चाहे अज्ञान के कारण ही वे ऐसा क्यों न करते हों।

काश हम यह समझ लें कि यात्रा से फेफड़े स्वस्थ होते हैं, पैर ठीक होते हैं तथा स्वास्थ्य बनता है। पैर ठीक करने का तो अमोघ उपाय ही पैदल चलना है और यात्रा का वास्तविक आनन्द तो पैदल ही चलने में आता है। उन यात्रा-प्रेमी भुक्तभोगियों से उनके यात्रा के आनन्द तथा अनुभव को पूछिए तो आपको पता चलेगा कि यात्रा में तीर्थ-स्थानों में जाने में कितना रस, कितना आनन्द है ? कठिन मानसिक परिश्रम के बाद विश्रान्ति प्राप्त करने तथा मन-बहलाव के लिए यह यात्राएँ उपयोगी हैं। किन्तु जिन्हें समयाभाव है तथा जिन्हें पैदल चलने की इच्छा, शक्ति या अभ्यास नहीं है और जो धनाढ्य हैं, वे पैदल न भी यात्रा करें तो भी उन्हें अन्य अनेक लाभ तो होंगे ही।

परन्तु अब तो तीर्थ-यात्रा बनाम 'सैर' धीरे-धीरे सभी करने लगे हैं। विदेशी सभ्यता की विषैली वायु से प्रभावित हम भारतीय अपने पुरखों की मखौल उड़ाने में अपनी मर्दानगी खूब समझने लगे हैं। दूसरे, एक बात और भी है अनुभव-प्राप्त-यात्री जानते हैं कि तीर्थ-स्थानों में कितना धर्म के नाम पर अधर्म और सत्यता के स्थान पर ढोंग होता है—कितने पाप, अनाचार और व्यभिचार के अड्डे तीर्थ बन गए हैं। सीधे और धर्म-भीरु यात्री कैसे उल्टी छुरी से मूड़े जाते हैं। न जाने कितने बार हमने पत्र-पत्रिकाओं में पण्डों के अन्यायों को पढ़ा तथा यात्रियों की जवानी सुना है। प्रायः धन और कभी-कभी तो इज्जत पर भी बन आई है। पंडे भूखे गिद्ध की तरह यात्रियों पर टूट पड़ते हैं और किस प्रकार अशांति को प्राप्त होकर, तीर्थ-स्थानों की लूट-फूट से काँपकर वहाँ न जाने के लिए वे कान पकड़ते हैं। उन्हें वास्तव में ऐसे स्थानों से घृणा हो जाती है। विशेषकर नव-यवकों में प्रतिक्रिया के भाव पैदा होना, तीर्थों के लिए अस्वाभाविक नहीं है। मैं स्वयं इस बात का साक्षी और भुक्त-भोगी हूँ। विद्वानों, नेताओं और सरकार का ध्यान इस ओर गया है और उन्होंने बहुत कुछ सुधार भी किए हैं। किन्तु जब तक हमारा अज्ञान और अन्धविश्वास दूर न होगा, तब तक बहुत अधिक आशा इस क्षेत्र में नहीं की जा सकती।

एक विशेष बात हम यह देखेंगे कि प्रायः सभी तीर्थस्थान नदियों के किनारे हैं। प्राचीनकाल में सबसे सुविधाजनक मार्ग नदी ही था। इसी के द्वारा व्यापार तथा आना-जाना रहता था। ऋषि-मुनि भी शान्ति और सुविधा के विचार से नदी-तटों पर ही अपनी कुटियाँ बनाते थे। नदी से जितने लाभ हो सकते हैं, वे सब नदी-तट पर बसने वाले ही उपयोग कर सकते हैं। इन्हीं नदी-तटों पर एक निश्चित अवधि के बाद महापुरुषों के सम्मेलन होते रहते थे और उसी अवसर पर व्यापारी एकत्र होकर उन पर्वों को 'मेला' का रूप दे देते थे तथा साधारण जनता भी इनसे प्रत्येक प्रकार का लाभ उठाने के लिए एकत्र होती थी। इन महा-सम्मेलनों का ही आधुनिक रूप सभायें और अधिवेशन हैं। आधुनिक प्रदर्शनियों का काम यह मेले करते थे। एक ही स्थान पर महान् ऋषियों, साधुओं, विद्वानों तथा जनसाधारण का एकत्रीकरण, निवृत्ति और प्रवृत्ति का जैसे सुन्दर समन्वय हो। साधारण जनता को न केवल बड़े-बड़े महापुरुषों को एक साथ देखने तथा सत्संग का अवसर मिलता था, वरन् दूर-दूर के अपने सम्बन्धियों तथा मित्रों से भी इसी बहाने भेंट हो जाती हैं। इन धार्मिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मेलों का यही उद्देश्य था। कुम्भ, अर्द्धकुम्भ, पूर्णमासी, अमावस्या को नदी स्नान, प्रयाग का माघ-मेला आदि कितने मनोवैज्ञानिक तथा वैज्ञानिक आधार पर चालू किए गए हैं। इन महा-सम्मेलनों को सुचारु तथा सुव्यवस्थित रूप से निरन्तरता कायम रखने के लिए हमारे महर्षियों ने धर्म के नाम पर बड़ा सुन्दर उपाय निकाला। कुम्भ कभी कार्तिक पूर्णिमा, चन्द्र-सूर्य ग्रहणादि और अनेक पर्वों पर नदी-स्नान तथा तीर्थ-दर्शन का आदर्श एवं महत्त्व रखा और इसी बहाने से लाखों यात्री, साधु, महात्मा और व्यापारी एकत्र होते और विचार-विनिमय तथा धर्म-चर्चा के सुयोग से लाभ उठाते थे। क्या ही अच्छा हो यदि तीर्थ-यात्रा तथा धार्मिक मेलों की सच्ची उपादेयता हम समझ जायें।

प्रत्येक तीर्थ की स्थापना का कुछ उद्देश्य-विशेष दृष्टि में रखकर ही हमारे पूर्वजों ने अपनी ज्ञानबुद्धि का परिचय दिया है। तत्कालीन परिस्थितियों तथा वातावरण के वे ज्ञाता थे। जैसे—बदरीनाथ की पर्वत-श्रेणियाँ भूगर्भ-शास्त्र का ज्ञान कराती हैं। हिम, घाटी, जड़ी-बूटी, चट्टान, प्रपात, जलवायु, तथा पर्वतादि का ज्ञान हमें होता है। द्वारका में जलयान द्वारा यात्रा, समुद्र, टापू आदि का ज्ञान, जगन्नाथ पुरी में समुद्र, समुद्र-भर की वनस्पति आदि तथा विभिन्न वस्तु-कला के नमूनों का ज्ञान, रामेश्वरम् में ईश्वरीय प्रकृति की आलौकिकता और मनुष्य की बुद्धि की पराकाष्ठा का ज्ञान 'आदम का पुल' आदि देखकर होता है। भारतवर्ष के प्रति श्रद्धा, भक्ति तथा बन्धुत्व का भाव यात्रियों के हृदय में भरते हैं। विद्यार्थियों को सैर-सपाटे से कार्यात्मक ज्ञान होता है। प्राचीन समय में पैदल, नाव, बैलगाड़ी, घोड़ा, ऊँट आदि पर यात्रा होती थी, जिसमें वस्तुओं को देखने-समझने का काफी समय और अवकाश मिलता था। अब तो मोटर, हवाई जहाज और रेल से हम एक स्थान से अन्य नियत स्थान पर फुर्र से पहुँच जाते हैं—मार्ग के ज्ञान तथा दृश्यों का तो प्रश्न ही नहीं उठता। परन्तु पहले तीर्थ-यात्री को कष्टसहिष्णुता तथा घटनात्मक बातों की शिक्षा मिलती थी।

मेले-ठेले और उनका वर्तमान स्वरूप

अपने देश में स्थान-स्थान पर समय-समय पर अनेकानेक छोटे-बड़े मेले सम्पन्न होते रहते हैं। कुछ नदी, सरोवरों के तट पर सोमवती अमावस्या, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण आदि के समय पर होते हैं। कुछ का स्थानीय देवता की स्मृति से तारतम्य है। मथुरा, वृन्दावन तथा उस क्षेत्र में कृष्ण लीलाओं से सम्बन्धित पर्व मनाये जाते हैं। अयोध्या, चित्रकूट, मिथिलापुरी आदि में रामचरित्र से सम्बन्धित समारोह होते हैं। नवरात्रि में देवी पूजा के अनेक समारोह होते हैं। महाराष्ट्र की गणेश पूजा प्रसिद्ध है। बंगाल में काली तथा कृष्ण पूजा की धूम रहती है। रामलीला के दिनों अनेक जगह रावण मारे जाते हैं। सीता-विवाह तथा भरत-मिलाप जैसे अवसरों पर बढ़े-चढ़े धूम धमाके रहते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में मकर संक्रान्ति की महिमा अधिक है। पंजाब में वैशाखी संक्रान्ति की। दक्षिण भारत के मेले भी अपनी-अपनी तिथि परम्परा के साथ सम्पन्न होते रहते हैं।

इनके अतिरिक्त बड़े पर्वों का अपना स्थान है। कुम्भ पर्व हर तीन वर्ष बाद प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक में होता है। बिहार का सोनपुर मेला भी अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध है। आगरा जिले में बटेश्वर मेला असाधारण तैयारी के साथ सम्पन्न किया जाता है।

तीर्थ यात्राओं का सिलसिला भी इसी के साथ जुड़ता है। अमुक महीनों में अमुक तीर्थ के दर्शन झाँकी का अधिक महत्त्व माना जाता है और लोग वहाँ बड़ी संख्या में पहुँचते हैं। इसके अतिरिक्त मुसलमान, ईसाई प्रधानता वाले भी अनेक त्यौहार हैं, जिनमें सभी वर्गों के लोग सम्मिलित होते हैं। अजमेर में ख्वाजाचिश्ती की दरगाह, रुड़की का पिरानकलियर मेला यों मुस्लिम धर्म से सम्बन्धित है पर उसमें हिन्दू वर्ग के लोग भी इतनी श्रद्धा के साथ सम्मिलित होते हैं। व्यावसायिक मेला तथा हाट बाजार इसके अतिरिक्त हैं। इन सब को मिलाकर देखा जाय तो संस्थाओं के वार्षिकोत्सव इसके अतिरिक्त हैं। प्रायः सभी राजनैतिक पार्टियाँ अपने-अपने वार्षिक समारोह धूम-धाम से इसलिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करती है कि उनके पास कितनी बड़ी जनशक्ति है, इसका पता सर्वसाधारण को लग सके। ऐसे ही प्रदर्शन के लिए समय-समय पर कारण विशेष को लेकर रैलियाँ भी होती रहती हैं। बड़ी संख्या में जनसमुदाय भी उनमें अपनी-अपनी सुविधानुसार सम्मिलित होता रहता है।

निश्चय ही इन समारोहों में बड़ी संख्या में जनता सम्मिलित होती है। इस यात्रा पर उसे बड़ी तादाद में धन भी खर्च करना पड़ता है। वाहनों का अतिरिक्त प्रबन्ध करना होता है। इसके अतिरिक्त एक छोटे स्थान में इतने अधिक मनुष्यों को एक ही समय में एकत्रित होने पर रैन बसेरे की, पानी की, रोशनी की, सफाई की, मल-मूत्र विसर्जन की, खाद्य सामग्री जुटाने की व्यवस्था जुटानी पड़ती है। इन प्रयोजनों में कितने ही व्यक्तियों का समय एवं धन खप जाता है।

इस मेला व्यवस्था पर यदि व्यापक दृष्टिकोण से विचार किया जाय और उनमें खपने वाली व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक शक्ति के व्यय होने का अनुमान लगाया जाय तो प्रतीत होता है कि इस मद में होने वाला खर्च किसी राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजना जितना जा बैठता है। इस शक्ति का सदुपयोग करने के सम्बन्ध में नया दृष्टिकोण अपनाकर नये सिरे से विचार करने की आवश्यकता है।

यदि यह सब ऐसे ही उपेक्षापूर्वक चलने दिया जाय तो उनके अनेक दुष्परिणाम सामने आते हैं। घिच-पिच बढ़ जाने पर सफाई उस मात्रा में नहीं हो सकती जितनी कि आवश्यकता है। बढ़ती हुई गन्दगी बीमारी का निमित्त प्रतीत होगा कि मेलों की परम्परा जितनी हमारे देश में व्यापक है उतनी कदाचित ही कहीं अन्य देश में होती हो। वहाँ प्रायः वर्ष में एक दो बड़े मेले ही लगते हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से ही नहीं आर्थिक दृष्टि से भी मेले बहुत महँगे पड़ते हैं। सीमित उपलब्धि और माँग अधिक होने पर महँगाई भी खूब बढ़ती है और नकलीपन की, महँगाई की मार भी आकाश चूमने लगती है। इसमें कुछ को अतिरिक्त लाभ भी हो सकता है। पर अधिकांश को हैरानी उठाने की कीमत काटकर जो बचता है वह नहीं के बराबर ही होता है। जो लोग मेलों में दुकान ले जाने का धन्धा करते हैं वे जानते हैं कि उचित मूल्य पर उचित वस्तु बेच सकना उनके लिए सम्भव ही न हो सकेगा। सही तरीका अपनायेंगे तो उस भगदड़ वाले व्यापार में घाटा ही उठायेंगे। ऐसी दशा में चोरों, उठाईगीरें की ही नहीं बन पड़ती, तथाकथित व्यापारी भी अपने ढंग से जेब काटने में पीछे नहीं रहते।

मजदूर कुछ दिन तो लाभ उठा लेते हैं पर उससे पहले और पीछे जो बेकारी सहनी पड़ती है, वह ऐसी होती है जो मात्र मन का धन ही बनकर रह जाती है। जिस कारण बनती है यह सर्वविदित है। छूत के रोग फैलने का ऐसी स्थिति में पूरा खतरा रहता है। भीड़ के बिखर जाने पर कौन, कहाँ, कब, किस, रोग से पीड़ित हुआ और उसे कितना कष्ट सहना पड़ा, अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ा, इसका लेखा-जोखा रखा जाना सम्भव नहीं हो सकता। अन्यथा देखा जा सके तो प्रतीत होगा कि जल की, आहार की, सफाई की समुचित स्वच्छता न बन पड़ने पर उस कारण असंख्यों को साधारण हानि इन अव्यवस्थित मेलों के कारण ही उठानी पड़ती है।

बड़ी विवाह-शादी करने-कराने वालों को विदित है कि इन सबका सरंजाम जुटाने और सजाने में कितना खर्च हो जाता है ? कैसी अव्यवस्था फैल जाती है ? इस प्रकार व्यवस्था में वे लगे हुए थे, वहाँ से मजदूरों का आकस्मिक पलायन जिस प्रकार का अवरोध उत्पन्न करता है, उससे उत्पादन घटता ही नहीं, स्तर भी गिरता है और महँगाई भी बढ़ती है।

अतिरिक्त रेलें, मोटरें आदि चलाये जाने से उनका सामान्य रीति से उपयोग करते रहने वालों को अतिरिक्त कठिनाई का सामना करना पड़ता है। सरल ढंग से चलने वाली व्यवस्था गड़बड़ा जाने से उसका प्रभाव पहले से पड़ना आरम्भ हो जाता है और अन्त में बहुत बाद तक उसका दुष्प्रभाव बना रहता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेलों के लिए जगह खाली रखनी पड़ती है। उसका साल भर तक कोई अन्य उपयोग नहीं होता। व्यावसायिक मेलों में व्यापारी उसी समय के लिए माल तैयार करते हैं। बिक गया तो ठीक नहीं तो जो बचा है, उसे अन्यत्र निकालने के लिए उन्हें नई मण्डी ढूँढनी और नये ग्राहक खोजने पड़ते हैं, जो एक प्रकार से नया सिर दर्द बनते हैं। मेलों में कुछ अधिक लाभ मिलने की आशा से कितने ही लोग उसी के सपने संजोते रहते हैं। कोई दूसरा स्थायी काम ढूँढ़ते हुए साँप छछूँदर जैसी गति होती है। मेले के दिनों में वहाँ के स्थायी निवासियों के लिए एक नई आफत अनचाहे मेहमानों-रिश्तेदारों की होती है, जिनके ठहरने के लिए उसी छोटे मकान में किसी प्रकार जगह बनानी पड़ती है। बच्चे उठाने वालों और उठाईगीरों की बन आने से मेले का उत्सव देखने की अपेक्षा आशंका ग्रसित रहने की मनःस्थिति ही अधिकांश में भरी रहती है। ऐसी दशा में सोचा जाना चाहिए कि ये मेले, भीड़-भाड़, रैलियाँ कितनी सार्थक हैं। इनका सही स्वरूप क्या हो ?

मेलों को सुधरे स्तर का बनाया जाय

मेले लगने और उनकी परम्परा चिरकाल से यथावत् बनी रहने के पीछे एक बड़ा कारण है लोगों की व्यस्तता जन्य ऊब का उतरना और विनोद-मनोरंजन का वातावरण मिलना। तीर्थ, स्नान परम्परा निर्वाह, देवताओं से मनौती मानना जैसे कई कारण एक साथ मिल जाते हैं और गाड़ी अपने पहिये पर लुढ़कती रहती है। संस्थाओं के वार्षिकोत्सव का समय और स्थान तो निर्धारित नहीं होता, पर चिरकाल से चले आ रहे मेलों के सम्बन्धों में स्थान और तिथि निश्चित रहने से उनकी बहुत पहले से प्रतीक्षा चलती और तैयारी होती रहती है। इसलिए लोगों का मन वहाँ पहुँचने के लिए पहले से ही बना रहता है। व्यापारी, दुकानदार, फेरी वाले, तमाशे वाले भी उन तिथियों को ध्यान में रखते हैं और तदनरूप अपनी योजनायें बनाते रहते हैं। इन सब करणों से मेले यथा समय पर बिना किसी पूर्व तैयारी के नियोजित हो जाते हैं। वर्षा, आँधी जैसा समय उन दिनों न हो इसका ध्यान पूर्व निर्धारण कर्ताओं ने पहले से ही रखा है।

मेले की उपयोगिताओं और उनके साथ जुड़ने वाली सावधानियों के सम्बन्ध में अनेक बातें गिनाई जा सकती हैं। पर वह औचित्य बन तभी पड़ेगा, जब उनका स्वरूप, आधार, उपक्रम सुनियोजित हो। कितने लोगों के आने की सम्भावना है वे किस स्तर के होंगे ? इसका पूर्व अनुमान न हो तो समुचित व्यवस्था बन ही न पड़ेगी। अस्तु उनकी सफलता का पूरा दायित्व उन पर पड़ता है, जिनके कंधों पर उनकी व्यवस्था बनाने की जिम्मेदारी आती है। बिना किसी सुव्यवस्थित योजना के ऐसे ही भीड़ जमा कर लेने पर हर किसी को हर स्तर की परेशानी हो सकती है।

मेलों के स्थानों का निर्धारण नये सिरे से किया जाना चाहिए। इसके लिए सरकारी, गैर सरकारी, अर्द्ध सरकारी तन्त्र ऐसा होना चाहिए जो सभी छोटे-बड़े मेलों का स्थान इस दृष्टि से निर्धारित करे कि वहाँ संभावित भीड़ को बिना धक्का-मुक्की किये आसानी से देखने और जो खरीदना है, उसे खरीदने की सुविधा मिले। सभी मनोरंजन अथवा विक्रय स्थान इतनी दूरी पर लगे, जहाँ अकारण हजूम जमा न हो। भीड़ को एक जगह जमा न होने देने, उसे चलता-फिरता रखने के लिए स्वयं सेवकों अथवा सिपाहियों की व्यवस्था हो। खाने-पीने की दुकानों पर वस्तुएँ स्वच्छ रखने तथा झूँठन को ढक्कनदार पात्र में रखने की व्यवस्था हो जिससे जहाँ-तहाँ गन्दगी बिखरने, मक्खियाँ भिनकने जैसी कुरुचिपूर्ण स्थिति न बनने पाये। बासी, बुसी, सड़ी-गली मिलावटी वस्तुएँ महँगे दाम पर बेचने से ग्राहकों की जेब न कटे इसका भी ध्यान रखने की आवश्यकता है।

मेलों में मल-मूत्र त्यागने के स्थान जगह-जगह सुरुचिपूर्ण ढंग से बने हों। पीने का पानी भी समुचित मात्रा में उपलब्ध हो। धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर जिन मन्दिरों में लोग घुसते निकलते हैं, वहाँ ऐसा कुछ न बनने पाये कि स्त्रियों के साथ छेड़-छाड़ करने, गले, कान आदि के जेवर झपट लेने का अवसर मिले। भीड़ को क्रमबद्ध और नियन्त्रित रूप से प्रवेश करने और निकालने का अवसर मिले। अवांछनीय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लोग कहीं भी गिरोह बनाकर चौकड़ी की तरह जमा न रहने पायें। जिन जलाशयों में लोग धार्मिक परम्पराओं के अनुरुप स्नान करते हैं, वहाँ कीचड़, गड्ढे गन्दगी आदि का ऐसा संचय न हो जिसमें स्नान कर्ताओं को डूबने फिसलने या जान गँवाने जैसी विपत्तियों का सामना करना पड़े।

दुर्गम घाटियों, चोटियों या सघन वन प्रदेशों में होकर किसी देवालय की यात्रा चलती हो तो वहाँ अकेले-दुकेले व्यक्ति को जाने न दिया जाय, जत्थे बनाकर ही चलें। साथ में अस्त्र-शस्त्र जैसे आयुध भी हों क्योंकि इन दिनों ऐसे ही स्थान पर चोर लुटेरे अक्सर घात लगाकर बैठते हैं और आक्रमण करके माल असबाब लूट लेते हैं। प्रसाद के नाम पर जहरीली वस्तुएँ खिलाकर प्रायः ऐसे ही धार्मिक माहौल में भोले लोगों के जान माल का अपहरण करते हैं। कोई समय था जब समझा जाता था कि तीर्थ-स्थानों के मेले खतरे से सुरक्षित हैं। वहाँ तो भक्त जन ही पहुँचते हैं। पर अब ऐसी बात नहीं रही। भक्तजनों की तुलना में विपरीत प्रकृति के लोगों की ही भर-मार रहती है इसलिए, वहाँ अपेक्षाकृत अधिक सतर्कता बरतनी पड़ती है। जेब कटने गठरी-पोठरी उठाकर चम्पत होने की घटनायें तो साधारण-सी बात हो गयी है। रास्ते चलते मित्रता गाँठने वाले व्यक्ति तो अधिकतर ऐसे ही लोग होते हैं, जिनसे बचकर रहने में ही खेर है।

एक ही तिथि में समीप-समीप ही कई मेले हों तब तो असुविधा और भी बढ़ जाती है। ऐसी दशा में मेलों पर सरकारी नियन्त्रण की आवश्यकता और भी बढ़ गई है। जहाँ फिसलने गिरने का खतरा है, वहाँ जाने से या तो लोगों को रोका जाना चाहिये या फिर उन रास्तों की मरम्मत करा देनी चाहिये। अन्यथा वहाँ कोई दुर्घटना हो जाने पर सहायता करने वाले तक नहीं मिलते। सभी को भगदड़ की जल्दबाजी रहती है। इसलिए आपदाग्रस्त साथियों की भी उस माहौल में उपेक्षा होती देखी गयी है। खतरों की जानकारी रहे तो अन्धे उत्साह से जो क्षति उठानी पड़ती है, उससे बचा जा सकता है।

जो हाट स्तर के मेले दोपहर से आरम्भ होकर शाम तक समाप्त हो जाते हैं, उनमें भी सफाई एवं व्यवस्था बनाये रहना आवश्यक है अन्यथा व्यापारियों के बीच जहाँ बड़े मेले कई-कई दिन के लगते हैं, वहाँ रात्रि को सोने का स्थान और सुरक्षा उपक्रम भी होना चाहिये। प्रकाश और सफाई के बारे में समग्र तत्परता बरती जानी चाहिये। घिच-पिच बीमारियों की चुनौती साथ लेकर आती है। ऐसी दशा में भोजन पानी के दोनों ही क्षेत्र में जिस प्रकार सावधानी बरती जाती है, उसी प्रकार मल-मूत्र को और कचरे को फेंकने का भी उपयुक्त प्रबन्ध होना चाहिये। इन विषयों में उपेक्षा बरते जाने पर सभी को असुविधा होती है। कुरुचि पनपती है और बीमारियों के फैल जाने का खतरा रहता है। अस्तु स्वास्थ्य केन्द्र भी उनमें लगने ही चाहिये। क्रय-विक्रय में धोकाधड़ी न चलने पाये। अन्यथा लोग आस्था खो बैठेंगे। और मेलों में रुचि लेना बन्द हो जाने पर सभी घाटे में रहेंगे। मेले हर दृष्टि से एक उत्तम उद्योग हैं, उन्हें पर्यटन अभिवृद्धि प्रयासों से किसी भी तरह कम महत्त्व का नहीं माना जाना चाहिये। पर्यटन में देश के विभिन्न भागों से यदाकदा विदेशों से भी लोग आते हैं। पर क्षेत्रीय व्यवसाय, मनोरंजन एवं आदान-प्रदान का द्वार इन्हीं मेलों में खुलता है, जो धार्मिक, सांस्कृतिक आधार पर आमतौर से कस्बों में सम्पन्न होते रहते हैं। इनसे मनोवैज्ञानिक, आर्थिक और सामाजिक अनेक स्तर के लाभ होते हैं। यदि उन्हें क्रम-बद्ध, योजनाबद्ध, व्यवस्था सम्पन्न और सुनियोजित बनाया जा सके तो निश्चय ही इन्हें उत्साहवर्धक एवं लाभदायक बनाया जा सकता है। इस माध्यम से अनेक लोगों को रोजगार मिल सकता है।

मेलों को मनोरंजक तो होना ही चाहिये पर उन्हें प्रबन्ध की दृष्टि से सिर दर्द नहीं बनने देना चाहिये। उस क्षेत्र के समझदारों को समय से पूर्व ही एक प्रबन्ध समिति बना लेनी चाहिये जो सार्वजनिक सुविधा का तो पूरा-पूरा ध्यान रखे पर अपनों को लाभान्वित रखने की दृष्टि न रखे। सेवा के साथ स्वार्थसिद्ध जुड़ जाने से उससे व्यक्ति का सम्मान गिरता है और जो दौड़-धूप की गयी थी, उसके बदले अपयश ही हाथ लगता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेलों को लोक शिक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम बनाया जा सकता है। अपने देश में अशिक्षितों का बाहुल्य है। जो पढ़े हैं उनमें से बड़ी संख्या उनकी है, जिन्होंने कुछ कक्षाएँ भर पास की हैं आवश्यक जानकारियाँ प्राप्त करने के लिए जिन्होंने लोकोपयोगी ज्ञापन प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं किया ऐसी दशा में उन्हें भी एक प्रकार से मानसिक एवं व्यावहारिक दृष्टि से अविकसित ही कहा जा सकता है। इस प्रगतिशीलता के युग में उन्हें बहुत कुछ जानना सीखना है। अभ्यस्त ढर्रे में परिवर्तन भी बड़ी मात्रा में करना है। कुरीतियाँ और अंधविश्वास सर्वत्र भरा है। प्रगति प्रयासों में वैसा उत्साह जगता नहीं जैसा किया जाना चाहिये। ऐसी दशा में छोटे बालकों की तरह बड़ी आयु वालों को भी समय के बढ़ते कदमों के साथ कदम मिलाने के लिए बहुत कुछ जानना और सीखना है।

पर्व-उत्सवों व तीर्थों को धर्म-प्रचार के साधन बनाइये

हिन्दू-धर्म पर अनेक अन्य देशीय लोग अन्ध-विश्वास का प्रचारक होने का दोषारोपण किया करते हैं। उनके मतानुसार इसकी रीति-रिवाजें, कर्मकाण्ड सम्बन्धी क्रियाएँ, उत्सव और तीर्थ आदि अज्ञ पुरुषों के लायक हैं, अर्थात् वे सर्वथा दिखावटी और ऊँची श्रेणी के आध्यात्मिक ज्ञान से रहित हैं। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दू धर्म में विभिन्न योग्यता वाले व्यक्तियों के लिये अलग-अलग प्रकार की धार्मिक व्यवस्था की गई है। ऊँचे दर्जे के आध्यात्मिक वृत्ति वाले व्यक्तियों के लिये वेदों और उपनिषदों के धार्मिक सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं, दार्शनिक प्रवृत्ति वालों के लिये पट दर्शन और अन्य शास्त्र मौजूद हैं, और सामान्य श्रेणी की जनता के लिए पुराण आदि लिखे गये हैं क्योंकि ये विदेशी लोग इस देश के नगरों और शहरों में घूमकर प्रायः सामान्य लोगों को ही देखते हैं, इसलिये वे हिन्दू मात्र को अंधविश्वासी और दिखावटी रूढ़ियों में फँसा हुआ समझ लेते हैं।

जिन उत्सवों और तीर्थों की आलोचना करने वाले व्यक्ति लकीर पीटना या अन्धविश्वास का चिह्न समझते हैं, उनमें एक बहुत बड़ा तत्व व्यापक है। सच पूछा जाय तो विदेशियों के प्रबल आक्रमण के समय इन्हीं चीजों ने हिन्दू धर्म की रक्षा की है और विदेशी धर्म तथा संस्कृति के प्रभाव को इन्हींने कुंठित किया है। प्रत्येक उत्सव अथवा तीर्थ किसी महान् विभूति अथवा किसी महान् धार्मिक कार्य की स्मृति नियत किया गया है। उत्सव व तीर्थों द्वारा, हमारे पूर्वज उन महान व्यक्तियों अथवा उनके कार्यों की स्मृति सदैव नई बनी रहती है और नये लोगों को उनके पद चिह्नों पर चलने के लिए प्रेरणा मिलती है। जनता के सम्मुख सदैव एक आदर्श उपस्थित रहता है और उस आदर्श की बराबर याद आते रहने से कल्याण-पथ के थके-माँदे पथिकों में फिर से जीवन का संचार हो जाता है। किसी धार्मिक उत्सव में भाग लेने अथवा किसी तीर्थ की यात्रा का निश्चय करने से उसके सम्बन्ध के विचारों की एक श्रृंखला बन जाती है और हमारा मन कुछ समय के लिये निजी स्वार्थ-साधन के विचारों से हटकर धार्मिक वातावरण में चला जाता है, इससे मन में श्रद्धा, भक्ति, व पवित्रता के भावों का उत्थान होता है।

इसके अतिरिक्त ऐसे उत्सवों अथवा तीर्थों में एक ही प्रकार के बहुसंख्यक व्यक्तियों के इकट्ठे होने से धार्मिक चर्चा और विचारों का आदान-प्रदान होता है, जिससें लोगों को धार्मिक कार्य करने की नवीन शक्ति प्राप्त होती है। उत्सव के समय व तीर्थों में जो धार्मिक कृत्य होते हैं, उससे धार्मिक पद्धतियों के सम्बन्ध में कुछ शिक्षा भी मिल जाती है और भूली हुई बातें फिर से नई हो जाती हैं। इसी सिद्धान्त पर उत्सव व यज्ञ आदि में लोगों को बुला-बुलाकर सम्मिलित किया जाता है। उत्सव में आने वाले विद्वानों तथा आचार्यों के दर्शन और उपदेशों से भी मनुष्य बहुत लाभ उठा सकते हैं और अपनी शंकाओं का समाधान करके आगे का कार्यक्रम निश्चित करने में सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

उत्सव तथा तीर्थों का एक उद्देश्य मनुष्य के जीवन की शुष्कता और नीरसता को दूर करना भी है। धार्मिक आचरण करने के लिये अपनी इच्छाओं पर शासन करना पड़ता है। साधारण मनुष्य का मन इच्छाओं के दमन की कठोरता से अनेक बार ऊब जाता है। परन्तु उत्सव और तीर्थ आदि ऐसी वस्तुएँ हैं कि जो इच्छाओं को धर्म प्रदान रखते हुये भी जीवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को सरस बनादें और उसकी कठोरता को कम कर दें। मनुष्य का यह स्वभाव है कि दृश्य परिवर्तन से उसका शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य सुधरता है। एक ही प्रकार का जीवन व्यतीत करने से मन व शरीर दोनों के थक जाने की संभावना रहती है। इसलिये मनुष्य के जीवन में उत्सव व तीर्थ यात्रा नवीन शक्ति का संचार करके, उसे संसार के पुनः उपयुक्त बनाने में सहायक होते हैं। तीर्थ यात्रा से जलवायु का परिवर्तन हो जाता है और अधिकांश तीर्थस्थान ऐसे ही स्वास्थ्यदायक स्थानों पर बनाये गये हैं, जहाँ कोई नदी या सरोवर आदि हो और जहाँ का प्राकृतिक दृश्य भी हृदय को प्रफुल्लित करने वाला हो।

सामाजिक संगठन में भी उत्सव और तीर्थों से बड़ी सहायता मिलती है। हिन्दुओं में जात-पांत, प्रांतीयता और भाषा के इतने भेद होते हुये भी जो एक सांस्कृतिक भाव पाया जाता है उसका बहुत कुछ श्रेय तीर्थों को ही है। दूर-दूर के लोग जब एक तीर्थ में एकत्र होते हैं तो उनमें भ्रातृभाव और सहानुभूति की प्रवृत्ति को कुछ उत्तेजना मिलती ही है। ऐसे अवसरों पर सामाजिक संगठन के अन्य कार्य भी सहज में किये जा सकते हैं। यही कारण है कि कुंभ आदि स्नानों के अवसर सब तरह के सभा सम्मेलनों की धूम मच जाती है। उत्सवों से भी सामाजिक संगठन के एक विशेष प्रयोजन की पूर्ति होती है। बहुधा किसी जातीय उत्सव से सारे जाति की विचार शक्ति किसी विशेष विचार पर केन्द्रित हो जाती है और वह जाति उस विचार की सफलता के लिये विशेष प्रयत्नशील हो जाती है। उदाहरणार्थ दिवाली के उत्सव को देखिये। इसके पहले धनतेरस और रूप चतुर्दशी होती है। धनतेरस के लिये यह नियम रखा गया है कि प्रत्येक गृहस्थ अपने घर की वस्तुओं में कुछ न कुछ वृद्धि करें और कुछ नहीं तो एक छोटा-सा बर्तन ही खरीद लावे। रूपचतुर्दशी का यह नियम है कि प्रत्येक मनुष्य शरीर को स्वच्छ और सुन्दर बनावे तथा सुन्दर वस्त्र पहने। इस प्रकार दोनों दिन सारी जाति का ध्यान धर्मानुसार धन प्राप्ति और स्वच्छता तथा सुन्दरता की आवश्यकता की ओर आकर्षित होता है। इस प्रकार के उत्सव समाज में विशेष विचारों के प्रचार के लिये बड़े उपयोगी होते हैं और समाज को समृद्धिशाली बनाने में सहायक होते हैं।

परन्तु ये सब लाभ तभी सम्भव है, जब हम उत्सवों तथा तीर्थों का बुद्धिमानी के साथ प्रयोग करें। अन्यथा जिस प्रकार आजकल दिवाली पर हजारों व्यक्ति जुए में बर्बाद हो जाते हैं और होली पर गन्दी गाली-गलौज और धूल कीचड़ के फेंकने से अनेक बार दंगे-फसाद हो जाते हैं, उससे प्रायः सभी उत्सव हानिकारक सिद्ध होने लगते हैं। बहुत-से लोग इन उत्सवों की सफलता तभी समझते हैं, जब इनकी सजावट, दिखावट, नाच गाना आदि में लाखों रुपया खर्च कर दिया जाय। कई जातियों में रथ यात्रा या अन्य धार्मिक उत्सवों के नाम पर प्रतिवर्ष दस-दस बीस-बीस लाख की रकम फफूँदी जाती है। यदि इस धन को किसी सार्वजनिक हित के कार्य में खर्च किया जाय तो कितने ही लोगों का भला हो सकता है। उत्सवों और तीर्थों में लोग अस्वास्थ्यकर तरीकों से रहते हैं और अनेक बार उनमें हैजा आदि फैल जाने से सैकड़ों व्यक्ति मर जाते हैं। दूसरा दोष हुल्लड़बाजी का है। हुल्लड़ से नीच प्रकृति के लोगों का मनोरंजन होता है, परन्तु इससे धर्मस्थानों की प्रतिष्ठा बढ़ने के बजाय उनका पतन होने लगता है। तीर्थयात्रा या धार्मिक उत्सव जीवन के मुख्य उद्देश्य नहीं है। मुख्य उद्देश्य तो सदाचार पालन द्वारा आत्मा का उद्धार करना है। तीर्थ यात्रा केवल एक सहायक साधन है। उस साधन का उपयोग तभी उचित है, जब कि परिस्थिति अनुकूल हो। प्रतिकूल परिस्थति में वह साधन बजाय लाभदायक के हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

इतना ही नहीं आजकल अनेक तीर्थों में अधर्म फैल गया है। कितने ही तीर्थों को तो स्पष्टता दुराचार और ठगी के अड्डे कहा जाता है। तीर्थयात्रा के फल से हम धर्म में श्रद्धा बढ़ने की आशा करते हैं। परन्तु बहुत से व्यक्ति जो श्रद्धा का भाव लेकर यहाँ जाते हैं वहाँ के अधर्म को देखकर उल्टा उस श्रद्धा को गवाँ बैठते हैं। इसलिए धार्मिक उत्सवों और तीर्थों की प्रणाली को तो हमें कायम रखना चाहिए, पर उनमें जो दोष आ गये हैं, उनका रूप विकृत हो गया है, उसका संशोधन अवश्य करना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अद्भुत विलक्षण

हिमालय की यह पद-यात्रा

जितना विलक्षण विचित्र, लीलामय हिमालय का हृदय उत्तराखण्ड क्षेत्र है, उतने ही विचित्र यहाँ के कुछ घटनाक्रम हैं। इनमें से एक है नन्दादेवी की अद्भुत पद यात्रा जो २०० किलोमीटर की होती है, दुर्गम मार्ग से होती हुई गुजरती है एवं जिनका नेतृत्व एक विचित्र मेढ़ा (नरभेड़) करता है, जिसे स्थानीय भाषा में "चौसिंगियाखाडू" कहते हैं, काले रंग का, चार सींग वाला यह मेढ़ा इसे विचित्र "राजजात यात्रा" जो हर बारह वर्ष के अन्तराल पर होती है, के समय की संगति से कुमायूँ-गढ़वाल क्षेत्र के किसी न किसी गाँव में जन्म ले लेता है। यात्रा का समापन जैसे होने लगता है, पूजन सामग्री अपनी पीठ पर लिए यह विचित्र जीव अदृश्य प्रेरणा से जन समूह को पीछे छोड़कर अकेला नंदा देवी शिखर की ओर बढ़ता हुआ अन्तर्ध्यान हो जाता है। वह कहाँ चला जाता है ? कोई नहीं जानता यह यात्रा नौवीं शताब्दी से प्रारम्भ हुई और अब तक सतत् चालू है। इसे भारतवर्ष की सबसे लम्बी धार्मिक पदयात्रा माना जाता है। यह यात्रा हिमालय के अति दुर्गम क्षेत्र से लगभग २०० किलोमीटर की दूरी तय करती है।

ताम्रपत्रों के आधार पर ज्ञात हुआ है कि 'नन्दा' गढ़वाल के राजा 'कनक पाल' की पुत्री थी। उन्हें अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त थीं, जिनका वर्णन लोक कथाओं में आज भी घर-घर होता है। 'नन्दा' का मायका गढ़वाल के गाँव नौटी में था और ससुराल नन्दादेवी के नाम से विख्यात पर्वत पर। 'राजजात' यात्रा नन्दा देवी के मैके से ससुराल तक की यात्रा है। नन्दादेवी के डोले सहित यह यात्रा देवी को मैके से ससुराल पहुँचाने की परम्परा के रूप में की जाती है।

यात्रा के निर्धारित समय के पूर्व 'चौसिंगिया खाडू' जो कहीं न कहीं उसी क्षेत्र में पैदा हो चुका होता है, के जन्म की सूचना कांसुका गाँव में बसे राजघराने के व्यक्तियों को दी जाती है। यात्रा के पूर्व राजकुँवर और राजपुरोहित स्वयं उस गाँव तक जाते हैं, जहाँ चौसिंगिया पैदा हुआ है। उसे "छदोली" (राज-सी छतरी) के साथ सम्मानपूर्वक नौटी गाँव लाया जाता है। वहाँ निर्धारित मुहुर्त में उसका अभिषेक करके यात्रा प्रारम्भ की जाती है। हजारों की संख्या में नर-नारी इसमें सम्मिलित होते हैं। मान्यता है कि राजजात यात्रा के बाद १२ वर्ष तक क्षेत्र में ऋद्धि-सिद्धियों की वृष्टि होती रहती है। वहाँ के निवासियों में सत्प्रवृत्तियाँ बनी रहती है।

गाम नौटी से नन्दा देवी तराई तक की यह यात्रा बड़ी दुर्गम है। वह भी भादों मास में होती है। भीषण वर्षा के बीच पहाड़ी दुर्गम पथ कितना खतरों से भरा है, यह सब जानते हैं। अंतिम चरण में 'वाण' नामक गाँव से आगे १६,२०० फीट की ऊँचाई पर स्थित रूप कुण्ड तक की यात्रा तो नंगे पैर की जाती है।

यात्रा समाप्त होने पर देवी की पूजा करके पूजन की सामग्री चौसिंगिया पर लाद दी जाती है। इसके बाद वह मूक पशु किसी अज्ञात प्रेरणा से स्वतः नंदादेवी शिखर की ओर बढ़ जाता है। चौसिंगिया का निर्धारित समय पर जन्म लेना, स्वतः पर्वत शिखर की ओर चल पड़ना तथा अनजान स्थान पर अंतर्ध्यान हो जाना आज भी एक रहस्य बना हुआ है।

हर बारहवें वर्ष यह निर्धारित यात्रा होती है और राजकुँवर एवं राजपुरोहित चौसिंगया को लेकर भव्य जुलूस के साथ नौटी गाँव पहुँचते हैं। यात्रा का समापन दिवस पर विधिवत् पूजन के साथ नंदादेवी शिखर की तलहटी पर मेढ़े के अन्तर्ध्यान होने के साथ इसकी चरम परिणति होती है। इतना समय बीत गया, पर इस विचित्र प्रकरण का रहस्य कोई नहीं जान पाया।

ऐसे अवसरों के मेले का स्वरूप दिया जा सकता है और जन सभाएँ आयोजित कर उन्हें प्रेरणाप्रद बनाया जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तीर्थ परम्परा के साथ धर्म सम्मेलनों का सुयोग

तीर्थ परम्परा के साथ कई महत्त्वपूर्ण तथ्य जुड़े हुए हैं। उन्हें ध्यान में रखते हुए प्रयत्न यह होना चाहिए कि उस पुण्य-प्रयोजन को किसी प्रकार उसी पुरातन परिपाटी के अनुरूप बनाया, बदला जाय, जिसके कारण वह जनसामान्य से लेकर मूर्धन्य महामानवों और ऋषि कल्प देवात्माओं के लिए समान रूप से उपयोगी सिद्ध होती रहे।

आज तो उन्हें पर्यटन केन्द्र के रूप में परिवर्तित किया जा रहा है। यदि उन्हें वैसा ही बनाना हो तो उसके दूसरे उपाय हैं। निवास के लिए वर्तमान धर्मशाला तथा होटल कम पड़ते हैं। भीड़ अधिक स्थान कम होने पर जो असुविधाएँ होती हैं, उनसे सभी परिचित हैं। जो लोग पर्यटन व्यवसाय से लाभ उठाते हैं, उनका कर्त्तव्य है यात्रियों के लिए ठहरने की सुविधा बनाने के लिए उदारता बरतें। सरकार का भी काम है कि यात्री निवास बनाने वालों के लिए सुविधाएँ प्रदान करें। यात्री गण प्रायः दान पुण्य के नाम पर कुछ न कुछ खर्च करते रहते हैं, उन्हें चाहिए कि वह राशि निवास-स्थल बनाने में खर्च करें। इसके अतिरिक्त उचित मूल्य पर सही चीजें बेचने के लिए सहकारी संस्थायें आगे आयें और भोजन-व्यवस्था से लेकर घर ले जाने वाले उपहारों तक की वस्तुएँ उपलब्ध करायें। गाइडों की नियुक्ति सरकारी या गैर सरकारी संस्थाएँ करें और वे उचित पारिश्रमिक लेकर यात्रियों का मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध रहें। जलाशय हो तो काश्मीर की तरह विशेष प्रकार की नावों का—अन्यथा ऐसे वाहनों का प्रबन्ध हो जो नियत स्थानों को यथाक्रम दिखाते चलें। इसके अतिरिक्त मनोरंजन के अन्य आधार खड़े करें, जिससे यात्री को पर्यटन पर किये गये पैसे से मनोरंजन जैसा लाभ तो मिल सके।

तीर्थों में चलने वाले भिक्षा व्यवसाय को वर्तमान रूप में न रहने दिया जाय। असमर्थता या धर्माडम्बरों के नाम पर इन दिनों की अनुपयुक्त व्यक्तियों द्वारा जितना दबाया दबोचा जाता है उससे उन्हें दोहरी हानि उठानी पड़ती है। जेब तो कटती है साथ ही कुपात्रों द्वारा इस प्रकार विवश किये जाने पर अश्रद्धा भी बढ़ती है। अन्य अपराध रोकने की तरह सरकार का ध्यान इस ओर भी जाना चाहिए और यदि पर्यटन व्यवसाय को वस्तुतः पनपाना है तो पुलिस सुरक्षा के प्रबन्धों में यात्री के दबाने की धीगा-मुस्ती भी रोकनी चाहिए। इसकी उपेक्षा होने पर सर्व आकर्षण घटने और अरुचि बढ़ने का व्यवधान बढ़ चलेगा। अधिक भीड़-भाड़ के आ जाने पर पानी, रोशनी और सफाई की अधिक व्यवस्था बनानी चाहिए। भले ही उस पर पड़ने वाला खर्च लाभ उठाने वालों और यात्रियों पर टैक्स लगाकर वसूल किया जा सकता है।

प्रतिभाओं की संख्या सुसज्जा यात्रियों को आकर्षित करने और अधिक पैसा वसूल करने के स्थान पर ज्ञानवर्धक म्यूजियम स्तर की स्थापना की जाय। प्रेरणाप्रद अभिनय, संगीत जैसे कला मंचों की ओर विचारोत्तेजक प्रवचनों की विशेष व्यवस्था बनायी जा सकती है। आवश्यक नहीं कि बिना मूल्य देखने और गिड़गिड़ाते हुए पैसा माँगने का क्रम चलता ही रहे इसके स्थान पर हर प्रयोजन के लिए टिकट लेकर जाने की प्रथा चल सकती है और उसे देते हुए यात्री अपेक्षाकृत अधिक सन्तुष्ट रह सकता है।

वर्तमान दयनीय दुर्दशा की अपेक्षा तीर्थों की सुव्यवस्थित पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जाना कहीं अधिक उपयुक्त है। किन्तु यह तो मनोरंजन पक्ष हुआ जो विनोद प्रयोजन भर की आवश्यकता पूर्ण कर सकेगा। बात आगे की है। ध्यान उस तथ्य का भी रखना होगा, जिनको दृष्टि में रखकर महा-मनीषियों ने इस पुण्य परम्परा को चलाया था। निर्माणकर्ताओं को उदारता उभारने से लेकर सर्वसाधारण को वहाँ पहुँचने की लम्बी शृंखला जोड़ने से दूरदर्शी विज्ञजनों का क्या-क्या कहना—क्या-क्या लिखना और क्या-क्या पढ़ना और हृदयंगम कराना पड़ा होगा, उसके पर्यवेक्षण करने पर इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि इस स्थापना के पीछे अवश्य ही कोई दूरगामी परिणाम उत्पन्न करने वाला रहस्य छिपा रहा होगा। अन्यथा स्थान विशेष को ऐतिहासिक विशेषता एवं स्नान दर्शन जैसी सामान्य बातों को इतना महत्त्व-महात्म्य नहीं बताया जा सकता कि कोटि-कोटि धर्मप्रेमी उसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए उतनी श्रद्धा सजोये—इतना समय गँवाये और अरबों-खरबों की उस राशि का अपव्यय करें, जो सिंचाई जैसे आयोजनों में नियोजित किये जाने पर दोनों को सच्चे अर्थों में फल प्रदान कर सकती है।

तीर्थों की स्थापना में साधना, शिक्षा एवं मनीषियों के परामर्श से समस्याओं का समाधान एवं उत्कर्ष का निर्धारण प्रमुख कारण है। गुरुकुलों, वारण्यकों और निर्धारण सत्रों के रूप में व्यक्तित्वों के परिष्कार की प्रक्रिया इतनी महत्त्वपूर्ण है कि उसके लाभों को देखते हुए उपयुक्त होने वाले श्रम, सभ्य एवं धन की सार्थकता बिना किसी अनुभव के स्वीकार किया जा सकता है किन्तु बात तन भर से ही समाप्त नहीं होती। वहाँ समय-समय पर होते रहने वाले आयोजन एक प्रकार से बिना नियन्त्रण के विशिष्ट स्तर के व्यक्तियों के लिए ज्ञान भरे सम्मेलनों की तरह व्यवहृत होते थे। आज की तरह उन दिनों डुबकी मार, दर्शन झाँक, पैसा फेंकने वाले भगदड़ के रूप में पर्व मनाये जाते थे वरन् उन दिनों अमुक स्तर की प्रतिभाएँ अपने-अपने समय पर एकत्रित होकर प्रस्तुत समस्याओं के समाधान एवं निर्धारण सोचती थीं।

कुम्भ पर्व इसके उदाहरण हैं। हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, नासिक के कुम्भों को भी प्रकारान्तर से दर्शन झाँकी में काम आने वाले 'धामो' के समतुल्य माना जाता है। धाम यात्रा में सर्व साधारण को सदा आते-जाते देखा जा सकता है किन्तु कुंभ पर साधु सम्मेलन की ऐसी व्यवस्था बनाते थे, जिससे उनके प्रयासों में एकरूपता, एक दिशा का सामयिक समावेश सम्भव हो सके। उन दिनों वाहनों की कमी भी थी और साधुओं की परम्परा भी पैदल चलने की थी। कुम्भ सम्मेलन का लक्ष्य रखकर वे काफी समय पहले अपनी मण्डली समेत निकलते थे और टेढ़े-तिरछे रास्ते आवागमन के बनाकर रास्ते में पड़ाव डालते हुए निर्धारित स्थान पर पहुँचते थे। इस यात्रा में पड़ावों को जन-जागृति के लिए किया गया योजनाबद्ध प्रयास समझा जा सकता है। पर्व स्थान पर विचार विनिमय के निमित्त सम्मेलन और जाने लौटने के मार्गों में प्राणवान ताक शिक्षण की परोक्ष प्रतिक्रिया उतनी महान होती थी कि विज्ञजन साधु सम्मेलन के रूप होने वाले कुम्भ पर्वों से महत्त्व को सच्चे मन से स्वीकार करते थे। उदारमना इसमें सुविधा उत्पन्न करने के लिए अन्न क्षेत्र खोलने जैसे कितने ही दान पुण्य भी करते थे।

इसी प्रकार अन्य पर्वों पर अनेक वर्गों के लिए अनेक स्थानों पर अनेक स्तर के सम्मेलन होते रहते थे। उनका स्थान और समय बार-बार बदलना नहीं पड़ता था। नियत समय पर नियत स्तर के व्यक्ति बिना बुलाये पहुँचते रहें इसके लिए तीर्थों के पर्व आयोजन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते थे। आज तो विभिन्न सम्मेलनों के लिए प्रचार से लेकर अन्यान्य प्रकार के खर्चीले प्रबन्ध करने पड़ते हैं और स्थान बदलते रहने पर नये सिरे से नये ताने-बाने बुनने पड़ते हैं। किन्तु पूर्वकाल में ऐसी कठिनाई तनिक भी नहीं थी। अमुक वर्ग के लोग अपने समुदाय के लोगों में मिलने-जुलने भेंट परामर्श करने को ऐसी सुविधा प्राप्त करते थे, जिसमें लाभ तो पूरा-पूरा मिल जाता था पर विशेष रूप से अतिरिक्त खर्च भी कुछ भी नहीं करना पड़ता था।

सम्मेलनों समारोहों की आवश्यकता, उपयोगिता सर्वविदित है। पर वह है बड़ी खर्चीली और झंझट भरी किन्तु प्राचीन काल में यह सब कुछ अत्यन्त सरल था। किसी वर्ग के लोगों को किस पर्व पर कब कहाँ पहुँचना है इसके लिए एक सुनियोजित परम्परा चलती थी और उसके आधार सम्बद्ध लोगों का आदान-प्रदान का भरपूर लाभ मिलता था। व्यापारिक प्रयोजनों के लिए अभी भी तीर्थ स्थानों पर—बटेश्वर, गढ़ मुक्तेश्वर, दानपुर आदि में विशालकाय मेले लगते हैं। इनमें से सोनपुर के सबसे बड़े पशु विक्रय मेले के रूप में हो रहे हैं।

व्यापारिक मेले अभी भी अपने उद्देश्य को समझते और सफल होते हैं। उनकी योजनाएँ तदनुसार ही बनती हैं, किन्तु धर्म सम्मेलनों का, धार्मिक समारोहों का क्रम सर्वथा अस्त-व्यस्त हो गया है। छोटे धर्मानुष्ठान तो स्थानीय भी हो सकते हैं पर यदि किन्हीं विशालकाय बड़े आयोजनों की आवश्यकता हो तो उसके लिये उपयुक्त साधन और निर्धारित समय की स्थायी व्यवस्था करनी पड़ेगी। यह कार्य तीर्थ पर्वों की यदि एक सुनियोजित शृंखला बन सके तो उससे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रयोजनों की पूर्ति हो सकती है। उदाहरण के लिए वर-कन्याओं की खोज के लिए विभिन्न समुदाय के लोगों के मेले विभिन्न स्थानों पर नियत निर्धारित किये जा सकते हैं। बिहार के मैथिल ब्राह्मण और मध्य प्रदेश के जैन लोग ऐसे कुछ मेले लगाते भी हैं, उनके कारण उन्हें एक ही स्थान पर प्रस्तुत माल में से अपनी मर्जी की चीज तलाश करने और सौदा पटाने का लाभ मिल सकता है।

इस दिशा में दो वर्ष पूर्व शांति-कुञ्ज से एक प्रयत्न किया भी गया था और वह आरम्भिक होने पर भी बहुत सफल रहा विभिन्न जातियों के समाज-सुधार सम्मेलन अलग-अलग बुलाये गये थे और उनसे अन्धकुरीतियाँ छोड़ने के अतिरिक्त विशाल रूप से बिना खर्च के, बिना देन-दहेज की शादियाँ करने पर जोर दिया गया था। इस प्रकार एक हजार उपर्युक्त जोड़े मिल गये और उनमें से अधिकांश विवाह शान्तिकुंज में ही बिना बारात, बिना लेन-देन, बिना खर्च के अत्यन्त उत्साह भरे वातावरण में सम्पन्न हो गये।

स्थान और सादगी की कमी से वह प्रयास आगे तो न बढ़ सका पर उपस्थित लोगों में हर किसी ने इस प्रयास की आवश्यकता-उपयोगिता स्वीकार की और कहा कि ऐसे आयोजन हर क्षेत्र में पूरी तत्परता के साथ नियोजित किये जाने चाहिए। सिख सम्प्रदाय में ऐसी प्रथा है कि उस समुदाय की सभी शादियाँ उनके निर्धारित गुरुद्वारे में वर्ष में एक बार ही होती हैं। इससे किसी प्रकार का प्रदर्शन या अपव्यय नहीं होता। गरीब-अमीर और संभी वर्ग के लोग समान रूप से सम्मान पाते और प्रयोजन पूर्ण करते रहते हैं। ऐसे ही प्रयत्न विभिन्न तीर्थों में सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आयोजन करने की बात सोची और व्यवस्था बनाई जा सके तो उससे शादियों के अपव्यय जैसी अनेक कुरीतियों का उन्मूलन करने में भारी सफलता मिल सकती है।

आवश्यक नहीं कि परम्परागत तीर्थों तक ही समस्त धार्मिक सम्मेलनों की बात सीमित रखी जाय। जनसंख्या एक जीवन के वे असंख्य प्रयोजनों में अप्रत्याशित वृद्धि होने के कारण सभी व्यवस्थाओं का विस्तार हो रहा है। बहुत दिन पहले से स्कूल, अस्पताल स्टेशन आदि थे। अब उनकी संख्या अत्यधिक बढ़ गई। तीर्थों का विस्तार भी उसी आधार पर होना चाहिए। मात्र जल छाया यातायात स्थानीय सहयोग आदि को ध्यान में रखते हुए नये सिरे से नये युग के नये तीर्थ विनिर्मित किये जा सकते हैं। उनके पीछे कोई प्रेरणाप्रद ऐतिहासिक प्रसंग जुड़ा हुआ हो तो और भी अच्छा अन्यथा नये शुभारम्भ का भी एक अविस्मरणीय प्रेरणाप्रद घटना मानकर उसे तीर्थ जैसी मान्यता दी जा सकती है। अनेक स्मारकों की स्थापना सम्बद्ध घटनाओं के उपरान्त ही हुई है। चित्तौड़, जलियाँवाला बाग का स्मृति स्तम्भ अनादि काल के बने हुए नहीं घटनाओं के उपरान्त ही बने हैं। सन्तों की समाधियाँ इसी रूप में हैं। धर्म सम्प्रदाय के स्थापनकर्त्ताओं के जन्म-मरण अथवा विशिष्ट घटनाओं से सम्बद्ध स्थानों पर तीर्थ बन सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि युग-निर्माण के प्रज्ञा अभियान के अति महत्त्वपूर्ण चरण जहाँ पड़े, उसी भूमि को पवित्र कृत्य न माना जा सके और उसे युग तीर्थ की संज्ञा न दी जा सके।

गायत्री तीर्थ का शुभारम्भ उपरोक्त परम्पराओं के पुनर्जीवित करने का उद्देश्य लेकर किया जा रहा है। स्थान सीमित रहने से उसका स्वरूप छोटा तो रहेगा, पर इस पौध को अन्यत्र लगाये जाने पर अनेक स्थानों पर सुरम्य तीर्थ उद्यानों के विकसित होने की पूरी-पूरी सम्भावना है।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मचक्र-प्रवर्तन—परिव्रज्या का पुनर्जागरण

धर्मचक्र प्रवर्तन की क्रान्तिकारी प्रक्रिया

जिन दिनों भारतीय वर्चस्व अधःपतन के गर्त में औंधे मुंह गिर पड़ा था—और उसकी दुर्दशा से दूरवर्ती क्षेत्रों में विविध विधि नारकीय विकृतियां उत्पन्न हो रही थीं, उन्हीं दिनों एक महान क्रान्ति का अवतरण हुआ। यह क्रान्ति भगवान बुद्ध के नेतृत्व में प्रकट हुई। स्थिति को बदला जाना आवश्यक था। ऐसी व्यापक आवश्यकताओं की पूर्ति सुगठित क्रान्तियां ही सम्पन्न करती हैं। उसका नेतृत्व श्रेय किसी को भी क्यों न, मिले पर वस्तुतः उस परिवर्तन अभियान में जन-भावना का उभार ही काम करता है। यह अलग बात है कि उसे उभारने वालों की अग्रिम पंक्ति में कौन था—नेतृत्व किसने किया और श्रेय किसे मिला ?

यह आवश्यकता अनुभव हुई कि प्रतिगामी परिस्थितियों को बदला जाय। भारत के प्राचीन वर्चस्व और कर्तृत्व का पुनरुद्धार किया जाय। संव्याप्त विकृतियों और विपत्तियों का निराकरण किया जाय। इसके लिए आँधी तूफान जैसे परिवर्तन अभियान की आवश्यकता थी। वह भगवान बुद्ध के अन्तःकरण में सर्वप्रथम एक चिनगारी के रूप में फूटी और देखते-देखते सुविस्तृत दावानल के रूप में प्रखर एवं प्रचण्ड हो गई।

समय की पुकार ने एक सामान्य स्थिति और सामान्य स्तर के राजकुमार का अन्तःकरण छुआ। इस भाव-विभोर ने ठान ठानी कि वह वैयक्तिक सुख सुविधाओं का परित्याग करेगा—अपने परिवार को भी कठिनाइयां सहने को बाध्य करेगा और उस कष्ट साध्य मार्ग पर चलेगा, जिस पर चलते हुए बीज गलता है और अपने अस्तित्व को दूसरों की सुविधा के लिए अभिनव वृक्ष के रूप में परिणित कर देता है। इसी भाव भरे साहसिक संकल्प का नाम भगवान बुद्ध का अवतरण है। यों बाहर से बुद्ध-चरित्र एक व्यक्ति विशेष का विशिष्ट कर्तृत्व दिखाई पड़ता है, पर वस्तुतः तात्विक दृष्टि से उसे एक विद्रोह ही कहना चाहिए जिसने तात्कालिक विकृतियों का उन्मूलन करने वाली ज्वाला के रूप में जन्म लिया था। समय-समय पर भगवान के अवतार भी इसी प्रयोजन के लिए होते रहते हैं। धर्म की स्थापना का दूसरा पक्ष अधर्म का उन्मूलन है। दोनों पक्षों को मिलाकर एक पूरी बात बनती है। भगवान बुद्ध ने सामयिक विकृतियों के प्रति विद्रोह एवं संघर्ष खड़ा किया; साथ ही ऐसी भावनात्मक नव निर्माण की आधार शिला भी रखी जिस पर मानवी, गरिमा का सुदृढ़ दुर्ग पुनः स्थापित किया जा सके। इस उभय पक्षीय अभियान का नाम ही बुद्ध भगवान का अवतरण है भारतीय इतिहास में इस अवतरण को असामान्य और अति महत्त्वपूर्ण माना जाता रहेगा।

अन्धकार युग की विकृतियों के कारण उत्पन्न हुए असन्तुलन का निराकरण करने के लिए अतीत की अगणित महाक्रान्तियों की तरह अब से कोई ढाई हजार वर्ष पूर्व एक क्रान्ति भगवान बुद्ध के नेतृत्व में हुई। उन्होंने तत्कालीन अनाचार को ध्यान पूर्वक देखा—उसके दुष्परिणामों को समझा और प्रवाह को बदलने के लिए अपनी सम्पूर्ण साहसिकता एवं सद्भावना प्रयुक्त करते हुए जुट गये। सदुद्देश्य के लिए जब कोई प्रामाणिक व्यक्ति आगे आता है, अपनी निःस्वार्थ परमार्थ-निष्ठा एवं दूरदर्शितापूर्ण रूपरेखा से जनमानस को प्रभावित करता है तो अगणित साथी अनुयायी कदम से कदम, कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने के लिए तैयार हो जाते हैं। भगवान बुद्ध चले तो अकेले पर उन्हें साथियों, अनुयायियों की कमी नहीं रही।

भगवान बुद्ध के अवतरण-युग में सर्वत्र अवांछनीयता का बोलवाला था। धर्म का आडम्बर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ओढ़कर अधर्म का नग्न नर्तन चल रहा था। भारतीय धर्म अपना मानव धर्म जैसा शाश्वत स्वरूप खो चुका था। अन्ध विश्वासों और रूढ़ियों को ही धर्म का पर्यायवाची माना जाने लगा था। गुण कर्म-स्वभाव के आधार पर विनिर्मित वर्ण-व्यवस्था के स्थान पर जन्म-जाति की ऊंच-नीच छूत-छात पनप गई थी। जातियों-उपजातियों के नाम पर देश के सहस्त्रों टुकड़े होकर बिखर रहे थे। जातियों के लिए अलग-अलग कानून और अधिकार, सुविधा और प्रतिबंध ऐसे बने थे, जिनमें न्याय और औचित्य की बेतरह अवज्ञा की गई थी। ब्राह्मण अत्यधिक सुविधा और सम्मान के पात्र थे। क्षत्रियों को हर तरह की मनमानी करने की छूट थी। शूद्रों और अछूतों के अधिकार लगभग पशुओं जितने ही सीमित रह गये थे। साधना के नाम पर स्वेच्छाचारी ताँत्रिक वाममार्ग का बोलबाला था। यज्ञ का पवित्र धर्म-कृत्य निरीह पशुओं को भून खाने की भट्ठी मात्र रह गया था। अविवेक और अनाचार की दिशा में बहते हुए इस प्रवाह ने नीति, न्याय एवं औचित्य का गला घोंट दिया था ऐसे समय में भगवान बुद्ध जन्मे। चारों ओर छाये हुए इस सघन अन्धकार को देखा तो उनकी आत्मा छटपटाने लगी। उन्होंने अपनी आहुति देकर इस अन्धकार से लड़ने का निश्चय किया। व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं और महत्त्वाकांक्षाओं को तिलांजलि देने के बाद ही मनुष्य किन्हीं महान् आदर्शों को पूरा कर सकने में समर्थ होता है। बुद्ध ने उसी शाश्वत मार्ग को अपनाया, वे अपने राज-वैभव और पारिवारिक सुख को ठुकराकर युग की पुकार को पूरा करने के लिए घर छोड़कर निकल पड़े और निश्चय किया कि वे अपने लिए, अपने छोटे परिवार के लिए नहीं जियेंगे, वरन् लोक-मंगल के लिए ही उनका समग्र समर्पण होगा।

दूसरा कदम भगवान बुद्ध ने यह उठाया कि अपने को महान् प्रयोजन की पूर्ति के लायक क्षमता-सम्पन्न बनाने में जुटा दिया। उन्होंने तप किया, अपने उन दोष दुर्गुणों को धोया जिनके रहते सार्वजनिक सेवा विषाक्त हो जाती है और हित-साधन करने का उद्देश्य उल्टा अहितकर परिणाम प्रस्तुत करता है। ज्ञान की साधना परमार्थ परायण व्यक्ति के लिए आवश्यक है। आत्म निरीक्षण, आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण और आत्म विकास की चतुर्विधि तपश्चर्या से ही आत्मा को परमात्मा के स्तर तक पहुँचाया जा सकता है। इसे प्रकार आत्मिक दृष्टि से ऊँचा उठा हुआ मनुष्य ही स्व—पर कल्यांण कर सकने में समर्थ होता है। बुद्ध इस महासत्य को जानते थे इसलिए वे गृह-त्याग के उपरान्त बोधि-गया में बोधि द्रुम के नीचे बैठकर सत्य का प्रकाश पाने के लिए साधनारत हो गये। यहाँ उन्हें बुधत्व प्राप्त हुआ। वे राजकुमार गौतम से बदलकर भगवान बुद्ध बन गये।

तीसरा कदम बुद्ध का धर्म चक्र-प्रवर्तन। लोक-मानस में छाई हुई काली घटाओं को निरस्त करने के लिए सद्ज्ञान की ज्योति जलाना अनिवार्य होता है। वहीं उन्हें भी करना पड़ा। घर-घर जाकर जन-जन से सम्पर्क बनाना भिक्षावृत्ति अपनाकर ही हो सकता है, सो उन्होंने उसी वृत्ति को धारण किया, अपने को 'भिक्षु' श्रेणी में जा बिठाया। ज्ञान-प्रसार का कार्य एकाकी भी नहीं हो सकता था, इसलिए उन्होंने शिष्य, अनुयायी बनाये। जिन्हें परिपक्व पाया उन्हें सद्ज्ञान का आलोक सर्वत्र फैलाने के लिए परिव्राजक बनाया । यही धर्म-चक्र प्रवर्तन अभियान था। भावनात्मक जड़ता की मृत मूर्छित स्थिति से उबर कर सजग और सक्रिय बनाने के लिए आत्मदानी व्यक्तियों को समग्र निष्ठा से जुटना पड़ता है। बुद्ध ने अपने शिष्य इसीलिये बनाये। इसी प्रयोजन को जीवन-लक्ष्य की पूर्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन बनाया। उनके प्रभाव और परामर्श के प्रकाश में सहस्त्रों नर-नारी आगे आये और एक स्थान पर रहकर नहीं देश-देशान्तरों में ज्ञान का प्रकाश फैलाने को कटिबद्ध हो गये। धर्म-चक्र का अभियान अग्रगामी हुआ और वह 'धर्म विजय' के रूप में सुविस्तृत बन गया। भूत काल में प्रतापी राजा देश-विजय के लिए निकलते थे, अपना आधिपत्य सुदूर क्षेत्रों में स्थापित करते थे। बुद्ध का अभियान इससे भिन्न था। उन्होंने देश-विजय के स्थान पर धर्म-विजय की योजना बनाई और उसे किसी देश, धर्म तक सीमित न रखकर विश्वव्यापी बनाने का कार्यक्रम निर्धारित किया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाराणसी से उत्तर दिशा में मैं छः मील पर सारनाथ में उन्होंने धर्म-चक्र प्रवर्तन आरम्भ किया। तब उनके पास उपयुक्त शिष्यों की संख्या केवल पाँच थी। इतनी कम संख्या के बल पर इतना विशाल प्रयोजन कैसे पूरा हो सकता है, इसकी उन्होंने तनिक भी चिन्ता नहीं की वे जानते थे कि यदि आदर्श ऊँचा हो—संचालन दूरदर्शिता पूर्ण हो ओर कर्मरत मनुष्य भाव भरे हों तो सदुद्देश्य निश्चित रूप से आगे बढ़ते हैं और अन्ततः पूर्ण होकर रहते हैं। बुद्ध ने कौडिन्य वग्र, महानाम, भद्र, और अश्वजित नाम के तत्कालीन पाँच शिष्यों को बुलाकर प्रव्रज्या की दीक्षा दी और कहा—'भिक्षुओ! अब तुम जाओ और मनुष्यों तथा देवताओं की भलाई के लिए परिव्राजक बनो। तुम उच्च आदर्शों का प्रचार करो और पवित्र जीवन जीने की विद्या समझाओ।'

बौद्ध धर्म मध्यम-मार्ग का उपदेश देता है। उसमें कट्टरता नहीं है। परिस्थितियों के अनुसार नियम-उपनियमों में थोड़ी शिथिलता बरतने की गुजांइश है, ताकि हर स्थिति का मनुष्य उसमें प्रवेश कर सके और जितना संभव हो उतना लाभ उठाने एवं सहयोग देने के लिए अग्रसर हो सके। चरित्र और आदर्शों को तो कड़ाई से पालने पर जोर दिया गया है, पर बाह्य व्यवहार एवं रहन-सहन में थोड़ी भिन्नता रहने पर आपत्ति नहीं की गई। 'अंगुत्तर निकाय' में एक जगह वर्णन है—'बज्जी पुत्रक नामक भिक्षु तथागत के सम्मुख उपस्थित हुआ और बोला—श्रमणों के लिए जो २५० नियम निर्धारित हैं, वे मुझ से नहीं सधते। इस पर भगवान बुद्ध ने कहा—'तब तुम तीन नियमों को पालते हुए अपना धर्म निवाहो।'

बौद्ध धर्म को हिन्दू-धर्म से पृथक् मानना सर्वथा भूल है। भगवान बुद्ध एक सुधारवादी थे उन्होंने हिन्दू-धर्म में प्रविष्ट हुई सामयिक विकृत्तियों का विरोध करके ऋषि प्रणीत भारतीय धर्म के मूलभूत आदर्शों की स्थापना मात्र की है। कोई नया धर्म नहीं चलाया। उनके समय में तान्त्रिक वामाचार का बोलबाला था। देवताओं के नाम पर पशुबलि का घिनौना प्रचलन चल पड़ा था। अनाचार को धर्म का आवरण उढ़ाकर वर्ग-भेद के विषवृक्ष उगाये जा रहे थे। ईश्वर-भक्ति के नाम पर उपहासास्पद कर्मकाण्डों का आकाश-पाताल जितना महत्त्व बताया जा रहा था। मनुष्य दास-दासी के रूप में खरीदे-बेचे और दान दिये जाते थे। और भी न जाने क्या-क्या होता था ? उन दिनों वैदिक-धर्म-ब्राह्मण-धर्म मात्र बन कर रह गया था। पुरोहित-वर्ग और उनके पिछलग्गू लोग ही देव-कृपा और धर्म-धारणा की आशा करते थे। शेष तो हेय उपेक्षित बना दिये गये थे। यह धार्मिक क्षेत्र में उत्पन्न हुई विकृतियाँ देश के समस्त वातावरण को विषाक्त बनाये हुये थी। उनका धुआँ पूरे मानसिक, सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, राजनैतिक स्तर को कलुषित बनाता चला जा रहा था। बुद्ध ने बिष-वृक्ष के पत्ते काटने के झंझट में न पड़कर जड़ पर प्रहार किया। भावनात्मक अपकर्ष को समस्त अवांछनीयताओं का उद्गम समझकर उन्होंने सुधार भी वहीं से आरम्भ किया वे जानते थे कि भावनात्मक परिष्कार किये बिना विभिन्न क्षेत्रों में फैली अगणित विपन्नताओं का और किसी उपाय से समाधान सम्भव न हो सकेगा। अतः वे समस्त क्रान्तियों की जननी भाव-क्रान्ति में जुट गये।

युद्ध का प्रतिपादन तीन सूत्रों में सार रूप में प्रस्तुत किया गया. है—'बुद्धं शरणं गच्छामि'—'धम्मं शरणं गच्छामि'—'संघं शरणं गच्छामि।' 'हम बुद्धि के विवेक की शरण में जाते हैं'—'हम धर्म की नीति-निष्ठा का वरण करते हैं'—'हम संघबद्ध होकर विकसित होने का व्रत लेते हैं।' विवेक, न्याय और एकता यही है। वे सूत्र जो बौद्ध धर्म के आधार लक्ष्य हैं, उन्हीं को सनातन वैदिक—धर्म का सार भी कह सकते हैं। इस प्रकार वे प्राचीन आर्य धर्म के पुनरुद्धार कर्ता ही कहे जा सकते हैं। उनका अलग से कोई सम्प्रदाय स्थापित करने का विचार स्वप्न में भी नहीं था। उन्होंने अपने प्रवचनों में स्थान-स्थान पर समय-समय परं आर्ष मान्यताओं के हो उद्धरण और प्रमाण प्रस्तुत किये हैं।

विज्ञ-जनों ने यह एक स्वर से स्वीकार किया है कि बौद्ध और हिन्दू धर्म-एक हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारतीय दर्शन में विचार स्वतन्त्रता के लिये पूरी गुंजाइश है। यही कारण है कि यहाँ छः दर्शनों का उद्‌भव हुआ और उनमें मतभेद स्पष्ट है। शैव और वैष्णव धर्म—श्रोत और स्मार्त आचार-आगम और निगम दर्शन पहले से ही प्रचलित थे। इसी प्रकार बौद्ध धर्म को अधिक से अधिक हिन्दू धर्म का सुधरा हुआ रूप भर माना जा सकता है। ईसाई धर्म में भी पुरातन पंथी और सुधारपंथी दो वर्ग हैं। मुसलमानों में भी शिया-सुन्नी का भेद है। इतने पर भी ईसाई धर्म या मुसलमान धर्म दो-दो नहीं माने जाते। ब्राह्मण धर्म और बौद्ध धर्म को एक ही हिन्दू धर्म की दो शाखाओं से अधिक और कुछ नहीं माना जा सकता।

धर्म क्षेत्र में प्रवेश करने वाले प्रायः स्वेच्छाचार बरतते हैं। वे अपने क्रिया कलाप पर किसी का नियन्त्रण स्वीकार नहीं करते। फलतः उस वर्ग में फैली हुई विश्रृंखलता कोई कार्य नहीं करने देती। धर्म की एक विशेषता उसकी अनुशासनशीलता भी थी। व्यक्तिगत जीवन में श्रमणों को कठोरता पूर्वक व्रतशील रहना पड़ता था और सामूहिक जीवन में वे संघ द्वारा निर्धारित कार्य पद्धति को श्रद्धा भरे अनुशासन के साथ पालन करते थे। व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं से, पद-प्रतिष्ठा से दूर रहकर ही लक्ष्य पूर्ति की दिशा में बढ़ा जा सकता है, यह बात आरम्भ से ही मन में भरी जाती थी और कहा जाता था कि जो अपने यश, वर्चस्व के लिये लालायित होगा वही धर्म-चक्र में सबसे बड़ा अवरोध गिना जायेगा। निजी यशस्विता साथियों को गिराकर और अपना अलग से कुछ विलक्षण खड़ा करके ही उपलब्ध हो सकती है। जो इसके लिये मरेगा वह धर्म-विजय के लक्ष्य को क्षति पहुँचाये बिना न रहेगा। इन आदर्शों को श्रद्धा के साथ अंगीकार करने का परिणाम यह हुआ कि बौद्ध-धर्म प्रचारक निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति की दिशा में आशातीत सफलता के साथ अग्रसर हो सके। भारतीय संस्कृति के विस्तार के लिये आज भी उसी परिव्रज्या परम्परा का अनुगमन करना होगा।

बुद्ध का लोकसेवी परिव्राजकों को सन्देश

भगवान बुद्ध ने उस दिन नवदीक्षितों के साथ-साथ पुराने परिव्राजकों को भी बुलाया और कर्त्तव्यों का नये सिरे से बोध कराया और कहा कि "इन साधु मर्यादाओं का परित्याग करने या उनमें उपेक्षा बरतने से तुम अपने कार्य से भटक जाओगे। पथरीला मार्ग अपनाकर जहाँ-तहाँ ठोकर खाओगे। लक्ष्य से भटककर ऐसी जगह जा पहुँचोगे, जिससे तुम्हारा व्रत प्रवेश आत्म प्रवंचना एवं जन उपहास का निमित्त कारण बनेगा।"

"हे तात ! साधु धर्म का परिपालन बड़ा कठिन है। उसमें अपने आप पर ऐसी बड़ी दृष्टि रखनी पड़ती है, जैसे कि शासक अपराधियों के मुक्त होने पर भी उनके आचरणों की जाँच करते रहते हैं। भव बन्धनों से निकल कर आये हो, इसलिये पूर्व संचित लिप्सा, लालसाओं का यह दौर बना रहता है। अवसर पाते ही नई परिस्थितियों में नये ढंग से वे अपना कुचक्र चलाती हैं। बुद्धि को मोहित करती और पतन के गर्त में धकेलती हैं। इसलिये तुम्हें निरन्तर सावधान रहना चाहिये। बाह्य व्यवस्था के अनुशासन में प्रत्यक्ष कृत्यों को ही अनुबंधित किया जा सकता है, किन्तु यदि मानसिक दुर्बलता बनी रही तो चिन्तन की निकृष्टता ही कालान्तर में विपत्ति बन जाती है। छल छद्‌म चल पड़ता है। बड़प्पन का अहंकार सवार होता है तो उनकी पूर्ति का ताना-बाना बुनता चलता है और लुक छिपकर छद्‌म को चरितार्थ करने वाली रीति-नीति चुपके-चुपके स्वभाव में सम्मिलित हो जाती है।"

सो हे धर्म मार्ग के पथिको ! पूरी तरह सावधान रहो ताकि पथ भ्रष्ट करने वाली विडम्बनायें तुम्हें ऊँचे से नीचे न गिरा दें।"

"अपना आहार स्वल्प, सस्ता और नियमित रखो। स्वादों का स्मरण मत करो। अन्यथा इच्छा, क्रिया रूप में परिणत हुये बिना न रहेगी। प्रत्यक्ष सन्त-परिव्राजक दीखते हुये भी परोक्ष रूप से असन्तों जैसे आचरण करने लगोगे।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"पुत्रेषणा, काम कौतुक, धन की लालसा, बड़प्पन प्रदर्शन करने वाले ठाट-बाटों को अपनाना, यह तो लौकिक प्रतिबन्धों और अवसर न मिल पाने की व्यवस्था के कारण भी संयत रह सकते हैं। पर मनोभूमि पर केवल आन्तरिक अंकुश ही काम देते हैं। सतर्कता न बरती जाय तो लोकेषणा उग्र से उग्रतम होने लगती है और फिर अपनी पूर्ति के लिये कितने ही प्रपंच रचती और पाखण्ड फैलाती है।"

"लोकेषणा जब भड़कती है, तो उसकी अस्वाभाविक पूर्ति के लिये अनेकों ढोंग रचने पड़ते हैं। चमत्कार प्रदर्शन द्वारा मूर्खों को अपना भक्त बनाना और उनका शोषण करना चल पड़ता है। इसलिये इन चित्तवृत्तियों को ही संयत रखना योग कहा गया है। योगी अपने पहले चरण में गहरा आत्म विश्लेषण करते हैं और कषाय-कल्मषों में से जो कचरा जमा होता है, उसे बारीकी से निकाल बाहर करते हैं। आत्मावलोकन का यह पहला सोपान तुम सभी जीवन में उतार सको, तो ही सच्चे योगी बन पाओगे।"

"लोक सेवा और धर्मोपदेश सामयिक कार्य हैं। वे कुछ ठहर कर भी किये जा सकते हैं। पर जिसको जो करना है, उसकी योग्यता पहले प्राप्त करनी पड़ती है। तुम सेवा कार्यों के साथ सत्साहस एवं आत्मानुशासन को भी जोड़कर चलो, क्योंकि आन्तरिक दुर्बलताओं के रहते सेवा कार्य बन नहीं पड़ता। पहले क्षमता अर्जित करो, फिर कार्य क्षेत्र में उतरो। पहले अपनी दुष्प्रवृत्तियों से छुटकारा पाओ और उसके बाद जनकल्याण का कार्य हाथ में लो।"

नारद की परिव्रज्या

नारद इस बात को मानने वाले न थे कि, यह संसार मिथ्या है। इससे उदासीन रहकर आत्म कल्याण में ही रत रहना चाहिये। वे इस प्रकार के विचारों को स्वार्थ पूर्ण समझते हुये देखते थे, वे प्राणी मात्र को ईश्वर की पूजनीय प्रतिमा समझते हुये अनन्य भाव से उसकी भक्ति करते थे। परमार्थ ही उनका स्वार्थ था, जिसकी आत्मा उन्नत होती हैं, विकास के मार्ग पर अग्रसर होती है, उसके लिये दूसरों का स्वार्थ अपने स्वार्थ की अपेक्षा किसी दृष्टि से न्यून नहीं होता, वरन् वह अन्य प्राणियों के सुख के लिये स्वयं कष्ट उठाने के लिये तैयार रहते हैं।

नारद ऐसे ही महापुरुष थे। सतयुग के आदि में यह ब्रह्मर्षि अपने तपोबल से मुक्ति के अधिकारी बन चुके थे। उनके लिये कुछ कर्त्तव्य शेष नहीं रहा था, सिद्धियों के बल पर वे सब प्रकार के सुख भोग सकते थे, इन्द्रलोक में उनका समुचित आदर था, विष्णु तो उनके घने मित्र थे, शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ पूर्णता प्राप्त कर चुकी थीं। ऐसी आत्मा को पूर्ण पुरुष ही कहना चाहिये।

परन्तु उन्हें इतने से ही संतोष न हुआ। होता भी कैसे, मनुष्य की आत्मा स्वार्थ तत्वों से बनी हुई नहीं है। परमात्मा हर घड़ी देता रहता है, आत्मा भी दान स्वभावी है। देने से, त्याग से, उपकार से ही उसे शान्ति मिलती है। संसार के दुःखी प्राणियों को देखकर उनका हृदय रो पड़ा। उन्होने सोचा मैं प्रभु की पवित्र संतान हूँ। मेरा कर्त्तव्य है कि अपने पिता की तरह विश्व हित में अपने को प्रवृत्त कर दूँ। वे आर्त प्राणियों की सेवा में जुट पड़े।

संसार की सेवा किस प्रकार की जाय ? पैसा या अन्य भौतिक वस्तुयें दान करने से दूसरों को कुछ तात्कालिक सहायता मिलती है, परन्तु उससे उनका क्लेश नहीं मिट सकता। वह वस्तु समाप्त होते ही फिर नई आवश्यकता उठ खड़ी होती है। इसलिये सबसे उत्तम दान 'ज्ञान दान' है। मनुष्य के पास किसी वस्तु का अभाव नहीं है। उसकी इच्छा मात्र से समस्त चीजें प्राप्त हो सकती हैं, कमी केवल ज्ञान की है। किसी को ज्ञान दान देकर उसे सच्चे रास्ते पर लगा देना यही सर्वश्रेष्ठ और अक्षय ब्रह्म दान है। नारद ने इस ब्रह्म दान द्वारा तप्त प्राणियों के क्लेश मिटाना अपना जीवन लक्ष्य बनाया।

वे अपनी वीणा को लेकर संसार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ज्ञान का उपदेश करते हुये घूमने लगे। कोई पूछे उन्हें धर्मोपदेश देना, कोई सुने या न सुने उन्हें भगवत् गुणानुवाद का गान करना। उन्हें इस काम में बड़ा रस आता। संसार की सेवा करना उन्हें किसी भी योग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधना से उत्तम प्रतीत होने लगा। वे क्रियात्मक रूप से संसार के झगड़े मिटाने में भाग लेते और उत्तम कार्यों की आयोजनो में बड़ी दिलचस्पी दिखाते। कभी विष्णु और लक्ष्मी का विवाह कराने की साँठ-गाँठ कर रहे हैं तो कभी इन्द्र और पुरुरवा का झगड़ा सुलझाने लगे हुये हैं। उर्वशी नामक अप्सरा को प्राप्त करने के लिये इन्द्र और राजा पुरुरवा लड़ रहे थे, भयंकर युद्ध होने की संभावना थी, नारद बीच में जा धमके उन्होंने एक वेश्या के लिये दोनों को लड़ने के लिये धिक्कारा और इन्द्र को इसकी ओर से उदासीन करके झगड़ा मिटवाया। उन्हें पापों के जल्दी नाश कराने की बड़ी उतावली रहती थी, इसीलिए वे ऐसी कूटनीतिक चालें रचा करते थे, जिससे दुष्टों का शीघ्र नाश हो। कंस को उलटी पट्टी पढ़ा कर नाश का समय बिलकुल निकट बुला ही तो दिया। संसार में ये कटु घटनायें भी उत्पन्न कराते थे। क्यों? इसलिये कि उनका अन्तिम परिणाम विश्व के लिये कल्याणकारी हो। पार्वती नामक राजकुमारी को शिव जैसे योगी के साथ विवाह करने के लिये सिखा दिया। सावित्री को, सत्यवान नामक उस व्यक्ति के साथ विवाह कर लेने के लिये समझा दिया जो एक वर्ष बाद ही मर जाने वाला था। राजकुमार ध्रुव को तप करने के लिये प्रवृत्त कर दिया। दुनियादार लोगों की दृष्टि से इस प्रकार की शिक्षा देना, बहका देना कहा जायेगा। उस समय भी कहा गया होगा। परन्तु नारद उस मिट्टी के बने हुये न थे, जो किसी के कडुए शब्दों से विचलित हो जाते हैं और सस्ती वाहवाही के लिये जन रुचिकर कार्य करते रहते हैं। उन्होंने अपने उपदेशों द्वारा अरुचिकर घटनाऐं उत्पन्न कीं, परन्तु अन्ततः वे कडुई घटनाऐं ही उत्तम फलवती सिद्ध हुईं।

महर्षि व्यास महाभारत की रचना कर चुके थे ऐसे महाकाव्य की सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही थी। नारद ने उस ग्रन्थ को देखा और अनुभव किया कि कोरे इतिहास और नीति शिक्षण से ही मनुष्य की आत्मिक आवश्यकता पूर्ण नहीं हो सकती, उसे सच्ची शान्ति के लिये भक्ति और ईश्वरोपासना की भी आवश्यकता है। वे व्यास के पास जा पहुँचे और उन्हें समझा बुझा कर इस काम के लिये तैयार किया कि आध्यात्मिक उपासना और भक्ति रस से पूर्ण एक महाकाव्य की रचना करें। तदनुसार व्यास जी ने श्रीमदभागवत् माहापुराण की रचना कर डाली।

कहते हैं कि नारद अमर हैं। ऐसे महापुरुष का शरीर यदि मर भी गया होगा तो भी वे अमर हैं, जिन्होंने अपने तुच्छ स्वार्थ और शारीरिक सुखों की तिलांजलि देकर संसार के सुख को अपना सुख और परमार्थ को स्वार्थ समझा और उसी में अपना जीवन तिल-तिल करके खपा दिया वे मर नहीं सकते। विश्व हितकारी नारद सच्चे अर्थों में परिव्राजक थे।

एक वर्ष की प्रज्ञा प्रव्रज्या का विशेष आमन्त्रण

यह युग परिवर्तन की बेला है। विनाश-विभीषिकाओं से भरी पूरी तमिस्रा विदा हाने जा रही है और निराशा, आशंका का वातावरण बदलने वाला है। अरुणोदय अपने आगमन का परिचय दे रहा है। ऐसे आकस्मिक परिवर्तन मनुष्य की स्वतः सामर्थ्य से नहीं सृष्टा की इच्छा और व्यवस्था के अन्तर्गत ही सम्पन्न होते हैं। मनुष्य के हाथ में सौंपी सृष्टि व्यवस्था जब लड़खड़ाने लगती है, तब बागडोर नियन्ता अपने हाथ में लेते और असन्तुलन को सन्तुलन में बदलते हैं। इन दिनों भी वही प्रक्रिया दुहराई जा रही है। "यदा यदा हि धर्मस्य " वाला वचन इस बार भी प्राचीन अन्य अवतरणों की तरह निभने जा रहा है।

इस परिवर्तन से—तमिस्रा के प्रकाश में परिणत होने से समूची विश्व व्यवस्था लाभान्वित होती है। विनाश का विकास में परिवर्तन होने से सभी को सन्तोष की सांस लेने का अवसर मिलता है। आशा की उदीयमान किरणों को देखकर किसकी आँखों में उल्लास नहीं चमकता। पर सबसे बड़ा लाभ उन्हें होता है जो इस अदृश्य प्रवाह में दृश्य भूमिका निभाने में अपने शौर्य, साहस का परिचय देते हैं और सहयोगी बड़भागियों की तरह अग्रिम पंक्ति में खड़े होते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवान के अवतरण सदा अदृश्य चेतना प्रवाहों के रूप में होते हैं। जागृत आत्मायें उससे अनुप्राणित होकर सृष्टा की इच्छा से अपनी इच्छा मिलाती हैं। फलतः वे ऐसा श्रेय उपलब्ध करते हैं जैसा कि निजी सामर्थ्य के बलबूते वे कर नहीं सकते थे। तूफान के साथी बनकर पत्ते और धूलिकण तक आकाश चूमते देखे जाते हैं। नदी प्रवाह में सम्मिलित होकर तिनके तक मजेदार लम्बी यात्रा करते और समुद्र तक जा पहुँचते हैं।

सूर्योदय की प्रथम किरणें ऊँचे पर्वत शिखरों पर चमकती हैं। इसी प्रकार जागृत आत्माऐं युग चेतना को आगे बढ़कर अपनाती और अनुकरण के लिये असंख्यों को प्रोत्साहित करती हैं। मुर्गा बांग देता है तो असंख्यों करवट बदलते, आँखें मलते हैं, अँगड़ाते हुये उठ खड़े होते हैं। विषम परिस्थितियों में युगप्रहरी भी एकाकी खड़े होते हैं। निद्रितों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व स्वयं वहन करते हैं और संकटों को अकेले ही चुनौती देते रहते हैं। ऐसों को आत्मसन्तोष, लोक सम्मान और दैवी अनुग्रह के त्रिविध लाभ अनायास ही उपलब्ध होते हैं।

हनुमान यदि अपने बलबूते पहाड़ उठाने, समुद्र लांघने, लंका उजाड़ने में समर्थ रहे होते तो बालि के डर से भागकर छिपे हुये सुग्रीव के यहाँ नौकरी क्यों करते ? बालि से स्वयं ही क्यों न निपट लेते ? अर्जुन यदि अपने पराक्रम से महाभारत जीत सके होते तो द्रौपदी का भरी सभा में अपमान क्यों देखते ? अज्ञातवास के दिनों जिस-तिसकी नौकरी करके क्यों समय गुजारते ? शत्रुओं से वे तब क्यों न निपट लेते ? यह भगवान की इच्छा में अपनी इच्छा मिलाने का ही प्रतिफल है कि उपर्युक्त दोनों भक्तजनों को अपने-अपने समय का 'हीरो' बनने जैसा श्रेय मिला। असहाय पाण्डवों की इतनी बड़ी सेना खड़ी हुई थी, जो उस महायुद्ध को जीत सकी। भगवान तक ने उनके घोड़े चलाये। हनुमान के साथ रीछ-वानरों की विशाल सेना उस मोर्चे पर आ खड़ी हुई, जिसमें मात्र मरण ही दीखता था। इसे दैवी प्रवाह में सहायक बनने का चमत्कार ही कहा जा सकता है।

बुद्ध, गान्धी के समय में उनके साथियों ने जितना त्याग किया उसकी तुलना में कहीं अधिक श्रेय पाया। ऐसे अवसर बार-बार नहीं आते। समय को पहचानने की, उससे लाभ उठाने की दूरदर्शिता, जिन्हें उपलब्ध होती है वे लोभ-मोह के प्रलोभनों से बचते और कृपणताग्रस्त स्वजनों के प्रतिगामी आग्रहों की अपेक्षा करते हुये—प्रवाह चीरकर उलटी बह सकने वाली मछली की तरह आत्मा की पुकार का अनुसरण करते हैं। उस उदात्त साहसिकता का प्रतिफल भी उन्हें कम नहीं मिलता।

अग्निकाण्ड, महामारी, बाढ़, दुर्घटना जैसे आपत्तिकालीन अवसरों पर उदारचेता निजी लाभ-हानि की बात नहीं सोचते वरन् समय की माँग पूरी करने के लिये सहायता को दौड़ते हैं। वैसे अवसरों पर भी जो लाभ-हानि का जोड़ बाकी करते हैं, किसी कोने में छिपे रहते हैं उन्हें वह चतुरता भारी पड़ती है। लोक-भर्त्सना और आत्म-प्रताड़ना के पश्चाताप में उन्हें सर्वदा जलते रहना पड़ता है। यह समय भी ऐसा ही है, जिसमें मानवीय अस्तित्व जीवन-मरण के संकट में फँसा है। इन क्षणों में भी जिन्हें पेट प्रजनन की ही पड़ी रहे, समझना चाहिये कि उन दुर्भाग्यग्रस्तों को समय को समझने और उससे लाभ उठाने की समझ ने साथ ही नहीं दिया और वे उस सुयोग से वंचित रह गये जिससे निश्चय ही कृतकृत्य बना जा सकता था।

निर्वाह और परिवार की समस्याऐं उतनी जटिल नहीं हैं कि जिन्हें इस तरह न सही उस तरह न सुलझाया जा सके। पक्षाघात एवं मरण संकट आ खड़ा हो तो भी सृष्टा की व्यवस्था इस प्रकार नहीं तो उस प्रकार सन्तुलन बिठा देती है। भावना हो तो बुद्ध, शंकर, समर्थ, विवेकानन्द, गाँधी, बिनोवा जैसी भूमिकाऐं हर व्यक्ति निभा सकता है। कृपणता और संकीर्णता की खुमारी चढ़ी हो तो इन्द्र और कुबेर भी अपने को व्यस्त, चिन्तित रहते हुये परमार्थ प्रयोजनों के लिये असमर्थ बताने वाले सैकड़ों बहाने गिनाने लगेंगे। यह समय ऐसे बहाने अपनाने का है नहीं। जो अपनायेंगे वे घाटे में रहेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन दिनों जागृत आत्माओं के समयदान की माँग से आकाश गूँजता है। जो उसे सुन सकें वे कान खोलें और सुनें। जो सामने खड़ी युग चुनौती को देख सकते हैं, आँख खोलें और देखें। जिनमें दूरदर्शिता हो वे युगधर्म को समझें और अपने आप ही कर्त्तव्य का निर्धारण करें। जिनकी भावनायें उठें, वे एक ही बात सोचें कि युग सृजन के लिये समय दान की बढ़ी-चढ़ी श्रद्धांजलि अर्पित करने का साहस किस प्रकार प्रकट किया जा सकता है। प्रतिभावानों, भावनाशीलों और ऐसे प्रामाणिक व्यक्तियों की इन दिनों अत्यधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही है, जो स्वयं पार हो सकें और अपनी नाव पर बिठाकर असंख्यों को पार लगा सकें।

युग परिवर्तन जैसे महान कार्यों में कोई एकाकी व्यक्ति अपने बलबूते ही अपनी योजना बनाकर कुछ कर सकने में समर्थ नहीं हो सकता। डेढ़ चावल की खिचड़ी-ढाई ईंट की मस्जिद बनाने और अपनी ढपली अपना राग अलापने वाले अहमन्यता प्रदर्शित करने और आत्मश्लाघा का बचकानापन ही प्रदर्शित कर सकते हैं। रीछ-वानर, ग्वालबाल, सत्याग्रही, बौद्ध परिव्राजक सभी संघबद्ध होकर लड़े थे। देवताओं की संयुक्त शक्ति से असुर निकंदिनी दुर्गा का अवतरण हुआ था। स्मरण रहे इन दिनों किसी भी समझदार को नेता बनने की मूर्खता नहीं करनी चाहिये। उसमें उपहास के अतिरिक्त और कुछ पल्ले न पड़ेगा। जो अभीष्ट है वह संयुक्त प्रयासों से ही सम्भव है। अकेला चना कहीं भी भाड़ नहीं फोड़ सका है। इन दिनों तो यह किसी भी प्रकार सम्भव नहीं। संयुक्त शक्ति के रूप में सैन्य संगठन का अंग बनकर रहना और सृष्टा की युगान्तरीय योजना का अंग बनकर काम करने में ही उत्साह की सार्थकता है। जागृत आत्माओं का प्रज्ञा अभियान का अंग बनकर काम करना ही एकमात्र मार्ग है, जिसके कुछ कहने लायक परिणाम निकल सकते हैं। तिनके मिलने से रस्सा और धागे मिलने से कपड़ा बनने की बात जो जानते हैं, उन्हें यह भी समझना चाहिये कि नेतागीरी की ललक में किसी को भी बिखराव उत्पन्न नहीं करना चाहिये। महाप्राणों के लिये चल रही सृष्टा की चतुरंगिणी के अंश बनकर रहने और साथियों के साथ कदम मिलाकर चलना ही श्रेयस्कर है।

स्थानीय प्रज्ञा संस्थानों के सुसंचालन में जो सीमित समय दे सकते हैं, उन्हें स्वाध्याय मण्डलों के संस्थापन, संचालन में भावभरा योगदान देना चाहिये और अपने प्रभाव क्षेत्र में नवजागरण की गतिविधियों को व्यापक बनाने में कुछ उठा न रखना चाहिये। समयदान, अंशदान के रूप में हर प्रज्ञा परिजन का कहने लायक अनुदान होना चाहिये।

इसके अतिरिक्त इन दिनों उनकी आवश्यकता है जो अधिक समय दे सकें, अधिक समय घर से बाहर रह सकें। आवश्यकता उनकी पड़ रही है, जो बादलों की तरह परिभ्रमण पर निकलें और प्यासी धरती को मखमली चादर उढ़ाने के लिये मूसलाधार बरसें। सूर्य और चन्द्रमा की तरह धरातल के हर कोने में गर्मी, रोशनी बखेर सकने में सफल हों। पवन यदि दौड़े नहीं तो प्राणी उसे तलाश करने कहाँ भटकें ? दुर्घटनाग्रस्त असमर्थों के पास स्वयं ही सहायकों को पहुंचना पड़ता है। वरिष्ठ प्रज्ञापुत्रों को अपनी योजना इसी आधार पर बनानी और प्रव्रज्या के साथ जोड़नी चाहिये।

इस वर्ष समस्त प्रज्ञा संस्थानों को अपने वार्षिकोत्सव प्रज्ञा आयोजनों के रूप में सम्पन्न करने के लिये कहा गया है। उनमें केन्द्र से प्रचारक प्रतिनिधियों की—गायकों की—वक्ताओं की टोलियाँ भेजी जायेंगी। उस उत्तरदायित्व को वहन कर सकने वाली प्रतिभायें इन दिनों तलाशी जा रही हैं ताकि उन्हें प्रशिक्षण के उपरान्त कार्यक्षेत्र में भेजा जा सके। इसी प्रकार विनिर्मित प्रज्ञा संस्थानों में भी कुछ महीने या सर्वदा रहकर स्थानीय कार्यकर्ताओं के सहयोग से सत्प्रवृत्ति संवर्धन का सर्वत्र माहौल बनाया जाना है। शान्तिकुंज में बढ़ती हुई प्रवृत्तियों के लिये उपयुक्त प्रबन्धक, प्रशिक्षक एवं शोधकर्ता चाहिये। जिनकी स्वयं सेवक मनोभूमि हो ऐसे कार्यकर्ताओं की आवश्यकता पड़ेगी। ऐसे-ऐसे अनेक कामों के लिये ऐसे समयदानियों की अनिवार्य रूप से आवश्यकता पड़ रही है जो घर से बाहर रहकर काम कर सकें। अच्छा होता यदि जीवनदानी ब्रह्मचारी शंकराचार्य, समर्थ रामदास, विवेकानन्द,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानेश्वर की तरह अपने को युगधर्म के निर्वाह में समर्पित करते। पर ऐसा न बन पड़ने पर इतने से भी काम चल सकता है कि एक वर्ष का प्रव्रज्या व्रत लिया जाये और उतने समय बाद वापिस लौट जाया जाय। बहुतों का थोड़ा-थोड़ा समय मिलने से भी काम चलेगा। इस वर्ष के प्रायः दस हजार आयोजनों और २४०० प्रज्ञापीठों की सुव्यवस्था के लिये एक वर्ष की प्रव्रज्या से ही समय की माँग पूरी हो सकेगी।

तीर्थयात्रा का पुण्य फल भारतीय धर्म में असाधारण बताया गया है। इसके अनेक कारण हैं। धर्म प्रचार की गाँव-गाँव पदयात्रा में उपेक्षित क्षेत्रों को आदर्शवादी सृजनात्मक प्रेरणायें मिलने से, उस प्रयास में संलग्न लोगों को उच्चकोटि का पुण्यफल मिलता है। पर साथ ही उसमें स्वार्थ साधन भी कम नहीं है। परिभ्रमण से विभिन्न स्थानों की जलवायु एवं आहार का लाभ मिलने से एक ही स्थान पर रहने के कारण जो कमी रह जाती है, उसकी पूर्ति होती रहती है। अधिकाधिक लोगों के साथ सम्पर्क साधने से मनुष्यों को विभिन्नताओं और विपन्नताओं को समझने का अवसर मिलता है, फलतः व्यवहार कुशलता और बुद्धिमत्ता का वह पक्ष उभरता है, जो एक ही सीमित क्षेत्र में कैद रहने के कारण दबा पड़ा रहता है। पदयात्रा को अनेक रोगों की—विशेषतया मानसिक रोगों की—रामवाण दवा माना गया है।

गोखले ने गाँधी को समूचे देश की यात्रा करने और जनसाधारण की स्थिति समझने के लिये प्रेरित किया था। तभी वे वास्तविक भारत की सही स्थिति देख समझ सकने में समर्थ हो सके और वह सोच सके जो यथार्थता पर आधारित एवं व्यावहारिक है। विवेकानन्द की सही योजनायें तब कार्यान्वित हुईं, जब उनने देश के देहाती क्षेत्रों का लम्बा दौरा पूरा कर लिया। ऋषि-मनीषियों की शिक्षा तथा साधना में एक अति महत्त्वपूर्ण तथ्य लम्बा प्रव्रज्या का भी जुड़ा रहता था। जो चार धामों के लक्ष्य के रूप में प्रयोग होती थी। वे धर्म प्रचार की पदयात्रा के अतिरिक्त तीर्थयात्रा के आधार पर अपनी व्यवहार बुद्धि का भी विकास करते थे। यह प्रक्रिया उन सभी प्रतिभावानों के लिये आवश्यक है, जो अपनी व्यवहार कुशलता बढ़ाने तथा सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में प्रवेश करने के इच्छुक हैं।

हर परिवार से एक व्यक्ति निःस्वार्थ समाज सेवा के लिये मिलने की धर्म परम्परा भारतीय सांस्कृतिक का अविच्छिन्न अंग है। यह मात्र निवृत्त वानप्रस्थों पर ही लागू नहीं होती थी वरन् किशोर, युवक एवं प्रौढ़ भी इस सेवायज्ञ में अपनी आहुतियाँ देते थे। परिवार के अन्य सदस्य उनके निर्वाह एवं उत्तरदायित्व को पूरा कस्ते रहने की जिम्मेदारी अपने शिर पर उठाते हैं। इस प्रथा का प्रचलन पिछले दिनों कई बार उभरा है।

गुरु गोविन्दसिंह, ने अपने प्रभाव क्षेत्र के हर परिवार से एक धर्मसेवी माँगा था और जो मिले थे, उन्हें सिख बनाया था। राजस्थान के शेखावटी क्षेत्र से हर परिवार का एक सदस्य मिलिटरी में भर्ती होना अपनी शान मानता रहा है। समर्थ गुरु रामदास ने भी उस परम्परा को निखारा था और अपने प्रभाव क्षेत्र से अगणित सैनिक शिवाजी की सेना में भर्ती कराये थे। सत्याग्रह आन्दोलन के दिनों में स्वर्गीय महावीर त्यागी जिन गाँवों में जाते वहाँ याचना करते कि इस गाँव से भी दो राम-लक्ष्मण लंका विजय और धर्म राज्य सृजन के निमित्त मिलने चाहिये। यह याचना बहुत हद तक सफल रही थी और गाँव की संयुक्त श्रद्धा ने न्यूनतम दो-दो सत्याग्रही स्वयंसेवक प्रदान किये थे।

थाईलैण्ड में अब तक यह प्रथा रही है कि हर व्यक्ति को एक वर्ष का संन्यास लेकर बौद्ध विहारों में रहना पड़ता था। उस देश का राजा तक इस परम्परा का निर्वाह करता रहा है। इस आधार पर देश को अगणित महत्त्वपूर्ण व्यक्ति अवैतनिक रूप में सार्वजनिक सेवा के लिये मिलते थे। इस प्रकार साधना और सेवा के समन्वय से वह संन्यास सच्चे अर्थों में सार्थक होता था। जब तक यह प्रथा अक्षुण्ण रही तब तक वह देश हर दृष्टि से समर्थ, सम्पन्न, सुसंस्कृत एवं सम्मुन्नत बना रहा।

चीन आदि कई देशों में अफसरों की लम्बी यात्रायें करने और देश की स्थिति का प्रत्यक्ष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवलोकन करने का नियम है। मिलिटरी के जवानों को भी इस आधार पर अनुभव अभ्यास अर्जित करने के लिये देहातों में भेजा जाता है।

इन दिनों जन जागरण की महती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये— सृजन शिल्पियों की निजी प्रतिभा को समुचित रूप से निखारने के लिये—यह निश्चय किया है कि उदीयमान लोक सेवकों को सजीव पाठ्यक्रम पूरा करने तक ही सीमित न रखा जाये वरन् उन्हें अपने कार्यक्षेत्र, व्यवधान एवं समाधान को सही रूप से समझने के लिये प्रचार यात्रा पर भेजा जाये और सच्चे अर्थों में प्रतिभावान बनाया जाये।

इन सभी पुण्य प्रयोजनों की पूर्ति उनसे बन पड़ेगी जो स्थाई न सही एक वर्ष की प्रज्ञा प्रव्रज्या का व्रत लेकर शान्तिकुंज के निर्देशन पर अपनी गतिविधियाँ नियोजित करने का व्रत ग्रहण करेंगे।

इस अवधि में जो अपना निर्वाह व्यय घर से न चला सकेंगे उनके लिये ब्राह्मणोचित व्यवस्था कर देने का मिशन की ओर से प्रावधान रखा गया है।

वानप्रस्थ नवयुग का प्रमुख आधार

प्राचीन काल में वानप्रस्थ की सामान्य योग्यता दो बातों पर निर्धारित थी—एक यह कि आधा आयुष्य पूरा हो गया हो। दूसरा यह किया पारिवारिक उत्तरदायित्व से निवृत्ति मिल गई हो। यह दोनों ही शर्तें सामान्य और सौम्य परिस्थितियों की दृष्टि से सही हैं, पर इन्हें पत्थर की लकीर नहीं समझ जाना चाहिये। विशेष परिस्थितियों के विशेष नियम भी बन जाते हैं। आपत्ति काल के लिये शास्त्रों में आपत्ति धर्म का निरूपण है। वह सामान्य परिस्थितियों से सर्वथा भिन्न है। महामारी, भूकम्प, अग्निकाण्ड, आदि की विशेष परिस्थितियाँ सामने आ जाने पर लोग अपने घरों के सामान्य काम-काज छोड़ कर उस विपत्ति से ग्रसित लोगों की सहायता करनें दौड़ पड़ते हैं। कोई दुर्घटना घटित हो जाने पर नई आपत्ति का सामना करने की व्यस्तता में स्नान, भोजन, निद्रा, जैसे सामान्य नित्य कर्मों की भी उपेक्षा कर दी जाती है। यह आपत्ति धर्म है।

शत्रु का देश पर आक्रमण होने की दशा में सभी नागरिकों को अनिवार्य रूप से सेना में भर्ती होना पड़ता है। सामान्य नियम यह है कि जिसकी इच्छा हो वह अर्जी देकर सेना में भर्ती हो। वे नियम आपत्ति काल में नहीं चलते। सैनिक की निर्धारित आयु से न्यून या अधिक रहने पर भी उन दिनों भर्ती के लिये दबाव दिया जाता है और युद्ध मोर्चे पर जाने की ट्रेनिंग करने की अवधि पूरी न होने पर भी बन्दूक चलाने आदि की थोड़ी-सी जानकारी देकर उन रंगरूटों को रण क्षेत्र में भेज दिया जाता है। आपत्तिकाल में—विशेष परिस्थितियों में ऐसी ही उतावली करनी पड़ती हैं। विवशता में ऐसी उलट-पुलट का होना आश्चर्यजनक नहीं माना जाता।

भगवान बुद्ध ने स्वयं किशोरावस्था पूरी होते-होते परिव्रज्या ले ली थी। उनकी पत्नी भी नव-वधू थी और उसकी गोदी में एक ही नवजात शिशु था। गृह प्रबन्ध सम्भालने का उत्तरदायित्व भी किसी दूसरे को विधिवत् नहीं सोंप सके थे। समय ने उन्हें पुकारा और वे बिना आगा-पीछा सोचे चल पड़े। वानप्रस्थ की निर्धारित परम्परा का पालन करने के लिये उन दिनों उतना अवसर ही नहीं था। आपत्ति धर्म का पालन ही इन्हें उपयुक्त लगा। सामान्य प्रचलन के अनुसार समय की प्रतीक्षा करने में असंख्यों का अहित होता था। नियम के व्यतिक्रम में तो एक ही परिवार के थोड़े से व्यक्तियों को असुविधा सहनी पड़ती थी। बहुत के लिये थोड़े का त्याग करना ही उस स्थिति ने, विवेक ने सही बताया सो अन्तरात्मा की पुकार पर वे बिना आगा-पीछा सोचे युग की आवश्यकता पूरी करने के लिये आत्माहुति लेकर बढ़ ही गये।

न केवल अपने लिये वरन् अन्य सभी भावनाशील लोगों के लिये उन्होंने वह रास्ता खोल दिया। न केवल रास्ता खोला वरन् आह्वान भी किया। एक लाख से अधिक भिक्षु और भिक्षुणी उनके जीवनकाल में ही परिव्रज्या की दीक्षा ले चुके थे। वे सभी नव यौवन में प्रवेश कर रहे थे। वानप्रस्थ की निर्धारित तिथि आने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में देर थी। उतनी प्रतीक्षा की नहीं की जा सकती थी। समय की गुहार कानों को फोड़ती और हृदय को चीरती थी। सामान्य नियम-पालन असामान्य समय में कैसे बन पड़ता ? यदि बुद्ध ने इस मर्यादा का व्यतिक्रम न किया कराया होता तो उन दिनों का नैतिक और सामाजिक संकट अपनी सर्व भक्षी विनाश लीला में शालीनता के रहे बचे तत्वों को भी समाप्त कर देता।

गाँधी ने सत्याग्रही सेना में भर्ती होने के लिये स्कूली छात्रों तक को पढ़ाई छोड़कर चले आने का आमन्त्रण किया। वैसा ही हुआ भी। नियमानुसार लोक सेवा के लिये परम्परागत आयु अधेड़ों की ही होती है। यदि उन्हीं के लिये प्रतीक्षा की गई होती तो सत्याग्रही सेना में जो दो तिहाई नव युवक थे उनमें से किसी को भी प्रवेश न मिलता। ठण्डे रक्त वाले वानप्रस्थी जब उस आपत्तिकालीन आवश्यकता को पूरा कर भी न पाते और स्वतन्त्रता संग्राम जीतना तो दूर प्रखर जन शक्ति के अभाव में उसका सरंजाम भी खड़ा न हो पाता। सम्भवतः भगवान बुद्ध के सामने भी ऐसा ही धर्म संकट रहा होगा। अगति को प्रगति में बदलने के लिये धर्मचक्र का प्रवर्तन आवश्यक था। उसके लिये समर्थ भुजबल-मनोबल ही अपेक्षित था। वह जहाँ भी दृष्टिगोचर हुआ वहीं उन्होंने अपना अंचल जा पसारा।

समर्थ गुरु रामदास विवाह की वेदी पर कंगन बँधी वधू को बैठी छोड़कर भग दिये थे। आद्य शंकराचार्य की माता पुत्रवधू लाने और पोता गोदी में खिलाने के लिये मचल रही थी, युवक शंकर ने परिवार वालों की इच्छा पूर्ण करने के लिये अपने बहुमूल्य जीवन को नष्ट करने से स्पष्ट इनकार कर दिया। ऐसे-ऐसे असंख्यों उदाहरण इस सन्दर्भ के मौजूद हैं कि असामान्य परिस्थितियों का सामना करने के लिये सामान्य परिपाटी काम नहीं आई तो गुरुगोविन्द सिंह जैसे पिताओं ने अपने पुत्रों को बलिदान होने के लिये स्वयं प्रोत्साहित करके भेजा। पतियों को पत्नियों ने तिलक लगाकर रण क्षेत्र में विदा किया है। राजस्थान के एक इलाके में यह प्रथा थी कि घर का एक सदस्य सेना में बना ही रहता था। एक के निवृत्त होने पर उस घर का दूसरा सदस्य उस स्थान को जा सम्भालता था। युद्ध क्षेत्र में जूझने वाले के स्त्री-बच्चों को परिवार के अन्य सदस्य सम्भालते थे।

आयुष्य कितनी है इसका ठिकाना प्राचीन काल के सौम्य जीवन क्रम में तो कुछ था भी। आज का असंयमी और असन्तुलित रीति-नीति अपनाकर चलने वाला मनुष्य कब तक जीवित रहेगा ? जीवित रहने पर भी मृतक तुल्य अशक्त तो नहीं बन जायेगा इसका कुछ ठिकाना नहीं। फिर आधी आयु कितने वर्ष की मानी जाये ? कब से परमार्थ की बात सोची जाये ? यह प्रश्न उलझा हुआ ही रह जाता है।

आज की परिस्थिति में आज के अनुरूप हल सोचने होंगे। जागृत आत्माऐं यदि वर्तमान आपत्तिकाल में परमार्थ प्रयोजनों के लिये अग्रसर होने का अपना उत्तरदायित्व समझती हैं और उसके लिये सचमुच ही कुछ करने की इच्छुक है तो समस्याओं के समाधान दूसरे ढंग से सोचने होंगे जिनके बच्चे स्वावलम्बी हो गये, उनके सामने और कोई अड़चन ऐसी नहीं है जो उन्हें परमार्थ परायण जीवन क्रम अपनाने से रोके। यदि कुछ छोटे बच्चे अभी अपरिपक्व हैं तो यह देखना चाहिये कि उनके अग्रज क्या उनका उत्तरदायित्व सम्भालने की मनः स्थिति में हैं। यदि हों तो उन्हें पितृऋण चुकाने का अवसर देना चाहिये। हर बच्चे को आरम्भ से ही यह सिखाया जाना चाहिये कि अभिभावकों का उत्तरदायित्वों बालकों को स्वावलम्बी बनाने भर का होता है। इसके बाद सन्तान को अपना पितृऋण चुकाना पड़ता है। आवश्यक नहीं कि वह पितृऋण सीधा माँ-बाप को ही वापिस किया जाये। छोटे बहिन-भाइयों को सम्भालने के रूप में भी अभिभावकों का कर्जा चुकाया जा सकता है। यह धर्म परम्परा यदि अपनाई जा सके तो अधेड़ आयु में कुछ बच्चों का उत्तरदायित्व रहते हुये भी युग की पुकार के अनुरूप अनुदान प्रस्तुत करने का अवसर मिल सकता है।

जिनके पास गुजारे लायक संचित पूँजी चल-अचल सम्पत्ति है, उसे अनुपयोगी स्थिति में पड़ी न रहने देकर बैंक में जमा कर सकते हैं और उसकी ब्याज से परिवार का निर्वाह व्यवस्था बना कर निश्चिन्ततापूर्वक लोकमंगल के पुण्य प्रयोजनों में लगे रह सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिन्हें रोज कुआँ खोदना और रोज पानी पीना पड़ता है। आवश्यक समय आजीविका उपार्जन तथा शरीर निर्वाह एवं परिवार व्यवस्था में लगाने के उपरान्त भी परमार्थ प्रयोजनों के लिये कुछ न कुछ समय बचा ही सकते हैं। इतना अंशदान भी यदि नियमित रूप से चलता-अवकाश के दिनों को युगधर्म की पुकार को पूरी करने के लिये लगाया जाता रह सके तो उतने भर से भी बहुत कुछ हो सकता है। बूँद-बूँद जमा करने से घड़ा भर सकता है।

यह कदम हम नहीं तो और कौन उठायेगा

भारत की, विश्व की, समस्त मानव-जाति की अनेकानेक समस्याओं के मूल में एक ही कारण छिपा हुआ है—मानवी दुर्बुद्धि, पारस्परिक स्नेह, सद्भाव-सौजन्य एवं सहयोग में जितनी कमी पड़ती जाती है, उतनी ही नई-नई विपत्तियाँ उत्पन्न होती जाती हैं। जिस बुद्धि का उपयोग एक-दूसरे का शोषण, उत्पीड़न करने के लिये किया जाता है, उसका उपयोग यदि स्नेहासिक्त सद्व्यवहार में किया जा सके तो सुविधायें इतनी बढ़ जायेंगी न तो कहीं किसी को कोई अभाव अनुभव होगा और न कष्टों का कारण शेष रहेगा। विनाश और सुरक्षा प्रयत्नों में नष्ट होने वाली सम्पत्ति एवं बुद्धि यदि विकास एवं सहायता के लिये जुटाई जा सके तो इस धरती के हर कोने में स्वर्ग बिखर पड़ेगा। एक दूसरों को परस्पर भरपूर सद्भाव सौजन्य मिलेगा तो हर घड़ी हर जीवन में हर्षोल्लास ही छलकता पाया जा सकेगा।

मनुष्य की बुद्धि और शक्ति असीम है—आवश्यकता स्वल्प। यदि अपने सोचने और करने का तरीका सुधार लिया जाये तो न कुछ अभाव अनुभव होगा और न किसी को शिकायत करनी पड़ेगी। ठीक यही बात सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के सम्बन्ध में है। उलझनें हैं नहीं—वे पैदा की गई हैं। न्याय और औचित्य को स्वीकार कर लिया जाये—अधिकार से अधिक कर्त्तव्य को मान्यता दी जाये तो जटिल से जटिल दीखने वाली समस्या का भी सरल समाधान मिल सकता है। इसके विपरीत शक्ति और छल से दूसरों को दबाने से तात्कालिक लाभ भले ही मिल जाये, पीछे जब विद्वेष और विद्रोह फूटेगा तो वह अनीतिपूर्वक प्राप्त किये गये लाभ की अपेक्षा कहीं अधिक हानिकारक सिद्ध होगा।

यही बात सम्पदा वृद्धि के माध्यम से सुख-साधन बढ़ाने के सम्बन्ध में लागू होती है। सर्प को दूध पिलाने से उसका विष बढ़ता है, साथ ही उपद्रव भी। व्यक्ति दोष दुर्गुणों से भरा हुआ हो तो जितनी सम्पदा मिलेगी, वह उतना ही अपने लिये और दूसरों के लिये सत्यानाशी दुरभिसन्धियाँ रचेगा। निर्धन और अशिक्षित रहने पर साधनहीन दुष्ट उतना भयंकर नहीं होता, जितना कि चतुरता और साधन सामग्री मिल जाने पर। विद्या अच्छी चीज है—धन भी उत्तम वस्तु है—बलिष्ठता, कुशलता, कलाकारिता सभी विभूतियाँ अभिनन्दनीय हैं, पर यदि वे दुरात्मा के साथ लगेगी तो उनका भयंकर प्रतिफल रोमांचकारी संकटों के रूप में सामने आयेगा।

हमें उथलेपन में नहीं भटकना चाहिये, गहराई में उतरना चाहिये। छुटपुट कठिनाइयाँ सामने देखकर उनका सामयिक समाधान ढूँढ़ने में ही व्यस्त नहीं हो जाना चाहिये, विष-वृक्ष की उस जड़ पर कुठाराघात करना चाहिये, जिसके फल और काँटे पग-पग पर त्रास देते हैं। संकट-ग्रस्त की तात्कालिक सहायता कर देना अच्छी बात है, उससे हमारी दयालुता और उदारता को पोषण मिलता है, पर उससे स्थाई समाधान कुछ नहीं मिलता। भिक्षुक को एक पैसा दे देना सस्ती दयालुता है, पर सच्चा सहायक तो वह है, जो उसे परिश्रम करने के लिये रजामन्द करे और उपार्जन के किसी उपयुक्त साधन में जुटा दे। सस्ती और उथली सेवा तो कितने ही भावुक लोग करते रहते हैं। हमें दूर दर्शियों की भूमिका निभानी चाहिये और व्यक्ति एवं समाज को निरन्तर सन्त्रस्त करने वाली विपत्तियों की जड़ काटने की दूरदर्शिता अपनानी चाहिये। सुख-शान्ति की सुस्थिर आधार-शिला रखनी चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्पष्ट है कि मानवी दुर्बुद्धि को निरस्त किये बिना, भावनात्मक उत्कृष्टता का जन-मानस में बीजारोपण किये बिना—व्यक्ति और समाज की एक भी समस्या का हल नहीं निकलेगा। कोल्हू के बैल की तरह हम विविध प्रकार के हलके-फुलके प्रयासों में चक्कर भले ही काटते रहे। कार्य कठिन है। उसका प्रतिफल प्रत्यारोपण चर्म-चक्षुओं से दीख नहीं पड़ता, इसलिये अदूरदर्शियों को उसका कुछ परिणाम प्रतीत न होने से उत्साह भी नहीं मिलता। इसलिये लोग ज्ञान-यज्ञ जैसे सर्वोत्कृष्ट परमार्थ की उपयोगिता समझ नहीं पाते, उसके लिये साहस जुटा नहीं पाते। यही कारण है कि सेवा परमार्थ की बात सोचने वाले लोग अन्न-दान, जल-दान, वस्त्र-दान, औषधि-दान आदि की बात सोचने तक सीमित रह जाते हैं। बहुत हुआ तो उन कार्यों को हाथ में लेते हैं, जिनसे ख्याति और प्रशंसा मिलती हो। धर्मशाला, मन्दिर आदि इमारतें विशुद्ध रूप से दाता की ख्याति के लिये ही बनती हैं उपयोगिता की दृष्टि से उनका लाभ नगण्य है। कई बार तो उनसे मुफ्तखोरी की दुष्प्रवृत्ति का अभिवर्धन होने लगता है। ब्रह्मभोज जैसी दावतों के पीछे ऐसी ही उथली यशकामना काम करती है। हमें उस बाल-स्तर से अपने को आगे बढ़ाना चाहिये, और दूरदर्शियों की तरह उन कार्यों को हाथ में लेना चाहिये, जिनसे मानवी समस्याओं का स्थिर एवं आत्यन्तिक समाधान सम्भव हो सके।

युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत भावनात्मक परिष्कार के लिये जिस विचार-क्रान्ति की—नैतिक क्रान्ति की—सामाजिक—क्रान्ति की—त्रिवेणी बहाई जा रही है, उसे अग्रगामी बनाने के लिये हमें सर्वतोभावेन जुटना चाहिये। ज्ञान-यज्ञ के उस आलोक को अधिकाधिक ज्योतिर्मय करना चाहिये, जिससे अज्ञानान्धकार की कोंतर में छिपकर बैठी हुई विकृतियों और विभीषिकाओं को मार भगाया जा सके। मानवी सेवा-साधना का यही श्रेष्ठतम आधार पहले भी था, पर आज तो वह युग की अनिवार्य आवश्यकता बनकर सामने आया है। आपत्ति-कालीन विशिष्ट कार्य की तरह हमें उसी की पूर्ति में सर्वतोभावेन जुटना चाहिये। ईश्वर-भक्ति से लेकर आत्म-कल्याण और परमार्थ-प्रयोजन के समस्त प्रयोजन इस एक ही मार्ग पर चलने से पूरे हो सकते हैं।

प्राचीन काल में साधु-संस्था इसी एक प्रयोजनों में संलग्न रही है। बिना इधर-उधर ताके-झाँके एक ही दशा में गतिशील रही है। फलतः उसके द्वारा वे सत्परिणाम उत्पन्न किये गये हैं, जिनके लिये युग-युगान्तरों तक उसके कृतज्ञ बने रहेंगे। करोड़ों कुबेर मिलकर भी जो नहीं दे सकते, साधु-संस्था ने विश्व-मानव को वह अनुदान प्रदान किया है। आज उस परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिये यदि हम कुछ कहने लायक साहस जुटा सके तो भावी इतिहास का स्वरूप कुछ और ही होगा। जो कठिन कार्य साधु-संस्था के माध्यम से पूरा किया जा सकता है, उसे संसार के समस्त बुद्धिमान्, सत्ताधारी और सम्पत्तिवान् मिलकर भी नहीं कर सकते। दुर्भाग्य यह है कि तथ्य की गहराई समझी नहीं जा रही है, अन्यथा हर विचारशील, हर छुटपुट कार्यों को छोड़कर ज्ञान-यज्ञ के अभियान में कन्धा लगाता और सोचता कि समस्त समस्याओं का समाधान बस एक ही धुरी के साथ लिपटा है। इसलिये इधर-उधर ध्यान बखेरने की अपेक्षा इस एक ही प्रयोजन में पूरी तत्परता के साथ जुट जाना ही दूरदर्शिता है।

साधु-संस्था को पुनर्जीवित करने के लिये 'अखण्ड-ज्योति परिवार' को इस वर्ष अधिक साहस के साथ आगे आना है। इसके लिये अपनी वानप्रस्थ योजना सर्वोत्तम है। उसमें साधु और ब्राह्मणों का उभय-पक्षीय समावेश है।

जिनके पास पूरा समय है, साथ ही स्वास्थ्य, योग्यता एवं भावना भी है, ऐसे लोग कम ही मिलेंगे। इतना विशाल क्षेत्र—इतना महान् कार्य थोड़े से लोग नहीं कर सकते। कार्य की विशालता के अनुरूप सृजन-सेना का संख्या भी चाहिये। अस्तु आंशिक समय देने वाले कनिष्ठ वानप्रस्थों की एक नई शृंखला खड़ी करनी पड़ेगी। जुलाई ७३ के अंक में इन्हें कनिष्ठ वानप्रस्थ कहा गया है। पूरा समय सदा सर्वदा के लिये देने वालों को वरिष्ठ और स्वल्प सेवा देने वालों की 'कनिष्ठ' कहा जाये तो यह उपयुक्त ही है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कनिष्ठ वानप्रस्थ का सामयिक व्रत धारण करना हम में से किसी को कुछ बहुत अधिक कठिन नहीं पड़ना चाहिये। प्रवेश-काल में प्रारम्भिक शिक्षा के लिये दो महीने और फिर पीछे हर वर्ष का महीना अभीष्ट उद्देश्य के लिये देते रहना—यह व्रतधारी वानप्रस्थ का न्यूनतम समय दान होना चाहिये। इससे अधिक कितना समय मिल सके, उतना उत्तम है। लगनशील और भावनाशील व्यक्ति इतना समय तो अपने सामान्य कारोबार की मन्दी के दिनों में भी निकाल सकते हैं। खलिहान उठाने के बाद हर वर्ष किसान एक दो महीने फुरसत में रहता है। कहीं-कहीं जाड़े के दिनों में भी थोड़ी फुरसत रहती है। सरकारी कर्मचारियों को भी संचित और सामयिक छुट्टियाँ काफी मिलती हैं। व्यापार का भी चलने-चमकने का खास सीजन होता है। बाकी समय तो वे मन्दी में ऊँघते रहते हैं। बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थी भी वार्षिक छुट्टियाँ पाते हैं। इस अवधि को परमार्थ-प्रयोजनों के लिये देकर आत्म-कल्याण और लोक-निर्माण की उभय-पक्षीय साधनाऐं की जा सकती हैं।

फिर आवश्यकतानुसार घर के दूसरे लोग अथवा कर्मचारी भी उत्तरदायित्वों को अपने कन्धों पर लेकर अवकाश देते ही रहते हैं। इससे आगे-पीछे बड़े उत्तरदायित्व संभालने और व्यवस्था चलाने का अवसर एवं शिक्षण मिलता है। साथ ही अपने ऊपर लदी हुई जिम्मेदारियों के बोझ में कुछ हलकापन भी आता है। चिन्ताओं और नियत जिम्मेदारियों का बोझ जितने समय तक हलका रहता है, उतने समय आदमी अपने आप में बहुत हलकापन अनुभव करता है। इस थोड़े बदलाव की दृष्टि से भी उतना समय व्यस्त लोगों को भी निकालना चाहिये। सारा बोझ सदा सर्वदा अपने ही ऊपर लादे रहने वाले लोग अपने पीछे वालों को अपंग बना देते हैं और खुद बेतरह लदते-मरते हैं। ऐसे लोगों की आँखें जब कभी बन्द होती हैं, तभी अनभ्यस्त उत्तराधिकारी हड़बड़ा जाते हैं और अचानक कन्धे पर आये बोझ को न सँभाल सकने के कारण बना बनाया खेल बिगाड़ देते हैं। इन सब कारणों को ध्यान में रखते हुये पीछे वालों का प्रशिक्षण करने की दृष्टि से और अपना मन हलका करते हुये अधिक दिन जीने के लिये भी तो वैसा करना आवश्यक है।

प्रश्न समय का नहीं—भावना का है। यदि हम सांसारिक कर्त्तव्यों की तरह आध्यात्मिक कर्त्तव्यों की भी गरिमा समझें, लोक की तरह परलोक को भी महत्त्व दें, शरीर की तरह आत्मा के लिये भी आहार जुटाना आवश्यक समझें, पेट और परिवार की तरह संस्कृति और समाज के प्रति भी जिम्मेदारी अनुभव करें, वासना और तृष्णा की पूर्ति जैसी प्रसन्नता आत्म-गौरव बढ़ाने वाले कार्यों में भी अनुभव करें, संसार में प्रशंसा प्राप्त करने की तरह ईश्वर की प्रसन्नता की भी आवश्यकता अनुभव करें, मनुष्य क सुर दुर्लभ शरीर और उसके महान् जीवन-लक्ष्य का स्वरूप समझें, तो यह नितान्त आवश्यक प्रतीत होगा कि जीवन-सम्पदा का शत-प्रतिशत भाग पशु प्रयोजनों में ही नष्ट न करते रह जाये, उसका एक अंश इस प्रकार भी व्यय किया जाये, जिससे आत्म-सन्तोष और परमार्थ कर्त्तव्यों की पूर्ति का साधन जुटता चले।

इन विचारों को यदि मन में स्थान मिल सके तो फिर अवसर न मिलने, अवकाश न रहने का बहाना बिल्कुल थोथा और झूँठा प्रतीत होगा। अवकाश केवल उन्हीं कामों के लिये नहीं मिलता, जिन्हें निरर्थक और निरुपयोगी माना जाता है। जो काम आवश्यक समझे जाते हैं, उन्हें भोजन विश्राम छोड़कर भी पूरा करना पड़ता है। स्वजनों की भयंकर बीमारी अथवा कोई विपत्ति आ जाने पर हफ्तों बिना खाये, सोये दौड़धूप करते बीत जाते हैं। तब अवकाश कहाँ से आ जाता है ? इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता है कि जिस कार्य के लिये अवकाश न होने की बात कही जाती हो, उसे निरर्थक माना गया है, यही निष्कर्ष निकाला जाना चाहिये। उपयोगी समझे जाने वालों को सदा प्राथमिकता मिलती रही है। यदि हम आध्यात्मिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को समझेंगे तो प्रतीत होगा कि जिनके लिये अवकाश न मिलने की बात कही जाती थी, वस्तुतः वे इतने अधिक महत्त्वपूर्ण थे कि बड़ा घाटा सहकर भी उनकी पूर्ति की जानी चाहिये थी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमें इसी दृष्टिकोण से सोचना चाहिये और युग की पुकार पूरी करने के लिये एक कदम साहसपूर्वक आगे बढ़ना चाहिये। आरम्भिक प्रशिक्षण के लिये इसी वर्ष दो महीने निकालने चाहिये और भविष्य के लिये ऐसा निर्धारण करना चाहिये कि एक महीना तो हर वर्ष किसी न किसी प्रकार निकाल ही लिया करेंगे। यह निश्चय जहाँ होगा, वहाँ वे सब आधार बन जायेंगे, जिनके आधार पर अभीष्ट प्रयोजन के लिये अवकाश निकल आये और घर-परिवार का सामान्य काम-काज भी सरलतापूर्वक चलता रहे। अन्य सब व्यवस्थायें बड़ी आसानी से बन सकती हैं। न बन सकने वाली कठिन बात एक ही है कि अपना चोर मन लोभ और मोह की कीचड़ से एक कदम भी आगे बढ़ने से इन्कार करता है, उसे समझ लिया जाये तो वे सारी कठिनाइयाँ सरल हो जायेंगी, जो आज कठिन और असम्भव दीखती हैं।

कनिष्ठ वानप्रस्थों की स्वल्पकालीन शिक्षा-दीक्षा

कनिष्ठ वानप्रस्थों के लिये दो महीने का प्रारम्भिक प्रशिक्षण आवश्यक है। इसकी समुचित व्यवस्था कर ली गई है। शान्ति-कुञ्ज सप्त सरोवर—हरिद्वार में एक महीने का सैद्धान्तिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण चलेगा। क्या करना होगा ? कैसे करना होगा ? इन प्रश्नों का प्रत्येक पहलू समझाया जायेगा। जन-सम्पर्क के लिये वाणी का मुखर होना आवश्यक है।

कई व्यक्तियों के मस्तिष्क में विचारों की पूँजी विपुल मात्रा में होती है, किन्तु उसे वाणी से प्रकट करने का जब अवसर आता है तो लड़खड़ा जाते हैं। झेंप चढ़ आती है, गला सूख जाता है और जो कहना चाहते थे, वह कह नहीं पाते। जन-समूह को देखकर संकोच में मन गढ़ जाता है और जो विचार कहने की इच्छा से मञ्च पर आये थे, वे न जाने कहाँ गायब हो जाते हैं। निदान टूटे-फूटे दो-चार शब्द कहकर उपहास कराते हुये चुप बैठना पड़ता है। यह कठिनाई ऐसी है, जिसे हल करना प्रत्येक जन-सम्पर्क में आने वालों के लिये नितान्त आवश्यक है। वाणी की तलवार पर धार न चढ़ी होगी तो विचार-संघर्ष के मैदान में लड़ा किस तरह जायेगा ?

जन-सम्पर्क में आने वाले का व्यक्तित्व अधिक आकर्षक और प्रभावोत्पादक होना चाहिये, अन्यथा कोई उससे प्रभावित ही न होगा। प्रभावशाली बनने के लिये कपड़े-लत्ते काम नहीं देते। सजधज को आकर्षक बनाने की बात बिल्कुल बचकानी है। बनावटी भाव-भंगिमा दिखाने और हाथ मटकाने से प्रभाव डालने की बात सोचना निरर्थक है। उत्तेजित और आवेश-ग्रस्त होकर भी दूसरों के मन पर कोई अच्छी छाप नहीं छोड़ी जा सकती। जितने भी उथले, ऊपरी और बनावटी तरीके इस प्रयोजन के लिये काम में लाये जाते हैं, वे सभी असफल सिद्ध होते हैं। इतना ही नहीं, वे उस बनावट के प्रति उल्टे घृणा करने लगते हैं और आदमी को ओछा एवं ढोंगी गिनने लगते हैं। वास्तविक प्रभाव तो उन सद्गुणों का होता है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व का अविछिन्न अंग बनते रहते हैं और शरीर की सामान्य चेष्टाओं से ही आन्तरिक वस्तुस्थिति प्रकट करते रहते हैं। ऐसे परिष्कृत व्यक्तित्व सादगी भरे सामान्य वेष में भी बड़े सुन्दर और आकर्षक लगते हैं। दूसरों के मन पर अपनी गहरी छाप छोड़ते हैं।

दो महीने की प्रशिक्षण अवधि में दूसरों पर प्रभाव डालने वाले दोनों ही आवश्यक प्रयोजनों का रहस्य एवं मर्म सिखाया जाता है और निरन्तर अभ्यास कराया जाता है। वक्तृत्व-कला का अभ्यस्त होना जन-सम्पर्क का कार्यक्षेत्र चुनने वाले के लिये आवश्यक है। इसी प्रकार यह भी जरूरी है कि उसका व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक हो। लोग उसे ओछा, बचकाना, मूर्ख अथवा असंस्कृत अव्यवस्थित न समझें। आन्तरिक विशेषतायें रहते हुये भी कितने ही व्यक्ति ऐसी छोटी-छोटी कुसंस्कारी आदतों के अभ्यस्त हो जाते हैं, जो होती तो बहुत ही छोटी हैं, पर उनका देखने वालों पर—सम्पर्क में आने वालों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और उस तनिक से कारण पर लोग बहकने लगते हैं, अपनी बुरी राय बनाने लगते हैं। आत्म निरीक्षण के लिये सूक्ष्म दृष्टि नहीं होती—दूसरा कोई बताने और सुझाने का काम करता नहीं, क्योंकि इसमें बुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मान जाने की आशंका रहती है। इसलिये व्यक्तित्व की बहिरंग प्रक्रिया अस्त-व्यस्त पड़ी रहती है और उस छोटी-सी कमी को दूर न कर पाने के कारण जन-सम्पर्क में आने वाला कार्यकर्त्ता बहुत घाटे में रहता है, जो करना चाहता है, वह कर नहीं पाता। अस्तु दो महीने के प्रशिक्षण में वक्तुत्व-कला के साथ-साथ आकर्षक व्यक्तित्व का निर्माण भी आरम्भिक एवं आवश्यक प्रशिक्षण में सम्मिलित किये गये हैं।

आत्म-बल का अभिवर्धन मनुष्य की आस्थाओं से सम्बन्धित है। उच्चस्तरीय आस्थाओं का अन्तःकरण में प्रतिष्ठापित और परिपक्व करने के आधार पर मनुष्य का ब्रह्मतेज निखरता है। महामानवों के व्यक्तित्व में से ब्रह्म-वर्चस् आलोकित होता है और उसके प्रभाव से सिंह, व्याघ्र जैसे हिंस्र पशु और दुष्ट-दुरात्मा प्रकृति के असुर भी हतप्रभ होते हैं। यथार्थ और गहन प्रभाव अन्तःकरण से ही प्रादुर्भूत होता है। यही मानव-जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि, विभूति और सम्पदा है। इसे प्राप्त करने के लिये तप करना पड़ता है। इसी का नाम योगाभ्यास है। अमुक विधि-विधानों एवं कर्मकाण्डों की सहायता से आस्तिकता एवं ब्रह्म-चेतना के विकास की साधना कराई जाती है। यह साधनाक्रम भी कनिष्ठ वानप्रस्थों की शिक्षा पद्धति में सम्मिलित रखा गया है। उनकी स्थिति एवं प्रकृति के अनुरूप साधना कराई जाती है और स्पष्ट रूप से समझा दिया जाता है कि इन विधि-विधानों और कर्मकाण्डों को ही जादू की छड़ी न मान बैठें, वरन् यह समझें कि जिस प्रकार सीढ़ी के सहारे ऊपर जीने पर चढ़ा जाता है, उसी प्रकार अन्तःकरण में सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन का प्रयास कराया जा रहा है। यदि आन्तरिक मलीनताओं के उन्मूलन का प्रबल प्रयत्न न किया गया, भावना-क्षेत्र में उत्कृष्ट देव-तत्वों का आरोपण न किया तो मात्र विधिविधान करते रहने से बात बनेगी नहीं। तप, साधना एवं योगाभ्यास के कर्मकाण्ड शरीर एवं मन से किये जाये, साथ ही अन्तःकरण की स्थिति को बदलने के लिये वैचारिक दुस्साहस अपनाया जाये। इस समन्वयात्मक पद्धति से की गई साधनायें सदा सफल होती रही हैं। उनसे साधकों का आत्मबल निश्चित रूप से बढ़ता है और उस उपलब्धि का मूल्य बड़ी से बड़ी सम्पदा से अधिक होता है।

इस दो महीने की अवधि में आत्म-शोधन, ईश्वर सान्निध्य-देवत्व का अवतरण कराने वाली साधन-प्रक्रिया हर शिक्षार्थी को उसके स्तर के अनुरूप कराई जाती है और आशा की जाती है कि इस मार्ग पर चलते हुये साधक आत्मा को परमात्मा स्तर तक—नर को नारायण बनाने तक—पहुँचाने के जीवन लक्ष्य क्रमिक रूप से बढ़ता जायेगा और अन्ततः पूर्णता का—जीवन-मुक्ति का परम पद प्राप्त करेगा। कहना न होगा कि इस दिशा में जो जितना आगे बढ़ सकेगा, वही साधु संस्था की सदस्यता का प्रयोजन उतनी ही मात्रा में सम्पन्न कर सकेगा। वानप्रस्थ में प्रवेश जिस लक्ष्य को लेकर किया जा रहा है—उसकी पूर्ति के लिये प्रचण्ड आत्मबल ही वास्तविक पूँजी है। प्रशिक्षण-काल में इस सन्दर्भ में प्रत्येक पक्ष से शिक्षार्थी को अवगत कराया जाता है और साधना प्रयोजन में निरन्तर प्रकाश एवं सहयोग दिया जाता है।

साधु-संस्था का बहिरंग प्रयोजन लोक-निर्माण का प्रतीत होता है, पर वस्तुतः वह आत्म निर्माण का ही प्रतिफल है। अपना निर्माण करने वाला ही दूसरों का निर्माण कर सकता है। वाणी और लेखनी द्वारा प्रचार-कार्य का, बौद्धिक उत्साह का प्रयोजन पूरा हो सकता है, पर यदि दूसरों को कुछ बनाना बदलना हो तो इसके लिये अपने को ही 'साँचे के रूप में विनिर्मित करना होगा। जनता को मिट्टी कहा जा सकता है और लोक-नेता को साँचा। साँचे में ढालकर मिट्टी से खिलौने बनाये जाते हैं। साँचे में जैसी आकृति बनी होगी, खिलौने भी उसी आकृति के बनते चले जायेंगे। लोक-निर्माण के क्रियाकलापों को 'सूखी मिट्टी की जाली बनाना और उसे साँचे के साथ चिपकाना' भर कह सकते हैं। असल तत्व तो साँचा है, लोक-नेता का, आन्तरिक व्यक्तित्व है। इसे लाख प्रयत्न करने पर भी कोई देर तक छिपा नहीं सकता, एक अन्तरात्मा दूसरी आत्मा की वस्तुस्थिति को सहज ही जान लेती है। वाचालता और बनावट के पर्दों में वस्तुस्थिति देर तक नहीं छिपी रहती। लोक-निर्माण में सफलता केवल उत्कृष्टता सम्पन्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महान् व्यक्तित्वों को मिली है। धूर्तता भरी प्रचारक उछल-कूद तो फुलझड़ी का कौतूहल भरा खेल मात्र बनकर विस्मृति के गर्त में चली जाती है। इस तथ्य को हर शिक्षार्थी गहराई के साथ समझ ले, इसका परिपूर्ण प्रयत्न किया जायेगा।

वानप्रस्थ शिक्षा की अवधि में निरन्तर यह प्रयत्न किया जाता रहेगा कि शिक्षार्थी आत्म-चिन्तन, आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण और आत्म-विकास का चतुर्विधि क्रियाकलाप अपनायें और आत्मोत्कर्ष की ऊँची सीढ़ी पर चढ़ने के लिये प्रबल प्रयत्न करता रहे। गुण, कर्म, स्वभाव में ऐसे परिवर्तन करें, जिनसे मानवी महानता गौरवान्वित होती हो। व्यावहारिक जीवन में आध्यात्मिक आदर्शों को किस प्रकार—किस क्रम से समाविष्ट किया जा सकता है, वस्तुतः इसी का नाम ही ब्रह्म-विद्या अथवा आत्म-साधना है। इस सन्दर्भ में शिक्षा और साधना के उभय-पक्षीय उपक्रम शिक्षार्थी के सामने प्रस्तुत रहेंगे तो यह आशा की ही जा सकती है वह अपना व्यक्तित्व इस स्तर तक परिष्कृत कर लें कि उसे साँचे की संज्ञा दी जा सके और उसके सम्पर्क में आने वाले खिलौने सुन्दर एवं सराहनीय बनेंगे, ऐसी आशा की जा सके।

(१) वक्तृत्व-कला, (२) बहिरंग व्यक्तित्व का निर्माण, (३) अन्तरंग ब्रह्म-तेज के विकास के शिक्षण-क्रम की ऊपर की पंक्तियों में चर्चा हो चुकी, अब इस प्रशिक्षण के दो आधार और रह जाते हैं। (४) व्यक्ति और समाज के सम्मुख उपस्थित वर्तमान समस्याओं का स्वरूप और उनके लिये विभिन्न स्तरों पर किये जा रहे सुधार प्रयासों का पर्यवेक्षण तथा (५) युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत धर्म-मञ्च के माध्यम से किये जाने वाले कार्य की सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक जानकारी। इन पाँच आधारों के भेद, उपभेद ही शिक्षार्थियों को सिखाये जाते रहेंगे। सिखाने का उपक्रम बताने-सुनाने तक सीमिति न रहेगा। सुन लेने तथा नोट करने से भी काम न चलेगा। प्रयोगों को व्यवहार में लाने का समुचित अभ्यास भी कराया जाता रहेगा। व्यवहार और सिद्धान्त मिलकर ही तो शिक्षा-क्रम पूरा हो सकता है।

मानव-जाति के सम्मुख उपस्थित दुसह समस्याओं को समझने-समझाने से ही कोई लोक-सेवक अपने कार्यक्षेत्र की उलझनों का स्वरूप जान सकता है और उसका यथार्थ समाधान निश्चित कर सकता है। वानप्रस्थ-शिक्षा में इस प्रकार की गम्भीर विवेचनाओं का समुचित समावेश किया गया है। ताकि शिक्षार्थी सुलझा हुआ परिष्कृत दृष्टिकोण लेकर सेवा-क्षेत्र में प्रवेश कर सकें, एक स्पष्ट मिशन लेकर जन-सम्पर्क में आ सकें। प्रवचनों, प्रश्नोत्तरों, शंका-समाधानों के रूप में इस शिक्षा-प्रक्रिया का दैनिक-क्रम चलता रहेगा।

युग-निर्माण योजना की धर्म-मन्त्र के माध्यम से लोक शिक्षा की पद्धति सर्वविदित है। पर्व, संस्कार, जन्म-दिन, यज्ञ-आयोजन कथा आदि माध्यमों से किस प्रकार लोक मानस परिष्कृत किया जा सकता है ? इसकी विस्तृत जानकारी हम सब बहुत दिनों से प्राप्त करते रहे हैं। प्राचीनता में नवीनता के समावेश का यह अपना प्रयोग आश्चर्यजनक एवं आशातीत गति से सफल होता रहा है। भारतीय जनता ८० प्रतिशत निरक्षर हैं, ७८ प्रतिशत लोग देहातों में रहते हैं। उनकी पूर्व-निर्मित मनोभूमि में धर्म-प्रसंगों के लिये ही थोड़ा स्थान है। राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र को आधार बनाकर अभी कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण बातें सुनने-समझने की उनकी स्थिति नहीं है। धर्म-मञ्च को आधार मानकर जितनी आसानी से व्यक्ति एवं समाज को परिष्कृत बनाने की शिक्षा जिस सरलता और सफलता के साथ दी जा सकती है, उसकी तुलना में और कोई दूसरा प्रयोग हमारे देश में सफल नहीं हो सकता। इस तथ्य को हमें स्वीकार करना ही होगा और यदि विशाल भारत को सुन्दर देहातों के जन-बहुमत तक पहुँचना है, तो धर्म-मंच को साथ लेकर चलना होगा। हम यही तो करने जा रहे हैं।

शिक्षा की आधी अवधि 'एक महीना' शान्ति-कुंज में रहकर स्थानीय प्रशिक्षण के लिये निर्धारित है और आधा समय उन्हें शाखा-संगठनों में जाकर प्राप्त शिक्षा को व्यवहार रूप में परिणत करने का अनुभव अभ्यास करने के लिये है। इसके लिये उनमें से दो-दो के जोड़े बनाकर शाखाओं में भेजा जायेगा। वहाँ जाकर वे अपनी एक महीने की शिक्षा को कार्यरूप में परिणत करने का लोक-सेवा प्रयोजनों में संलग्न होने का अभ्यास और अपना अनुभव परिपक्व करेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यों इतने बड़े प्रयोजन के लिये दो वर्ष का प्रशिक्षण भी कम था। दो महीने तो बिल्कुल ही कम हैं। पर ध्यान इस बात का भी रखना पड़ा है कि कनिष्ठ वानप्रस्थ अत्यन्त व्यस्त और उत्तरदायित्वों से भरे वातावरण में से निकलकर आ रहे हैं। वे पारिवारिक उत्तरदायित्वों से मुक्त नहीं हैं। इसलिये उन्हें लम्बी अवधि तक रोका नहीं जा सकता। युद्धकाल में जब प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को अनिवार्य रूप से भर्ती किया जाता है, तो भी सामयिक ट्रेनिंग बहुत ही स्वल्प-काल में होती है और उतने से ही उन नवागन्तुक सैनिकों को 'कुछ' करने योग्य बना दिया जाता है। आज वैसी ही संकट-काल की स्थिति है। इसमें स्वल्प कालीन प्रशिक्षण की वैसी ही उपयोगिता है, जैसी शान्तिकाल में सुविस्तृत धर्म-शिक्षा प्राप्त करने को किसी विश्व विद्यालय में रहकर गहन एवं दीर्घकालीन अध्ययन साधना करने की।

महान् प्रयोजन के लिये महान् साहस भी चाहिये

कनिष्ठ वानप्रस्थों को सेवा-काल में अपने स्थान से बाहर जाकर कार्य करना चाहिये। सक्रिय सदस्य और कर्मठ कार्यकर्त्ता अपने-अपने क्षेत्र में प्रचारात्मक, रचनात्मक और संघर्षात्मक शतसूत्री योजना चलाते ही हैं। घर-कार्यों से बचे हुये समय को विचार-क्रान्ति—नैतिक क्रान्ति और सामाजिक क्रान्ति के पुनीत क्रियाकलाप में लगाते ही हैं। वानप्रस्थों की भूमिका इससे अगली और ऊँची है। उन्हें बड़े कदम उठाने पड़ते हैं। इनमें एक कदम यह है कि अपने वर्तमान स्थान छोड़कर कहीं अन्यत्र सेवा-कार्य करने के लिये चले जायें। पुरानी परम्परा यही है। वानप्रस्थ का अर्थ—घर छोड़कर वन में निवास करने वाला होता है।

अब वन्य प्रदेश में जीवनोपयोगी साधन सुविधायें नहीं मिलतीं और न वहाँ रहकर वर्तमान परिस्थितियों में अभीष्ट सेवा-कार्य हो सकता है। इसलिये घर छोड़कर वन जाने की बात में आधा अंश ही उपयोगी रह गया है—घर छोड़ना। वन जाने की अपेक्षा हमें भावनात्मक नव-निर्माण के लिये जनसम्पर्क में उतरना चाहिये। आजकल लोक मानस भी झाड़-झंखाड़ भरे वन्य-प्रदेश से कम जटिल नहीं हैं। उसको साफ करके सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों के रहने योग्य बनाना चाहिये।

यों घर में रहना कोई पाप नहीं है। स्त्री बच्चों ने कुछ जुर्म नहीं किया है कि उन्हें छोड़ा जाये। इसलिये घर को भव-बन्धन समझना और बाहर वन में जाकर पुण्य बटोरने से शान्ति-समेटने की कल्पना करना निरर्थक है। घर छोड़ने के पीछे यह निषेधात्मक दृष्टिकोण सर्वथा अनुचित है। हाँ, एक दूसरा दृष्टिकोण है, जिसके अनुसार अन्यत्र जाकर काम करने की उपयोगिता का समर्थन होता है।

घर रहकर पारिवारिक, व्यावसायिक काम बने ही रहते हैं। मित्रों और सम्बन्धियों का पुराने ढर्रे का मिलना-जुलना और वार्तालाप करना बना ही रहता है। इस क्षेत्र में वानप्रस्थ की बदली हुई रीति-नीति फिट नहीं बैठती, उन्हें अखरती है क्योंकि पिछले सामान्य क्रम में उन्हें व्यवधान उपस्थित दीखता है। अस्तु स्वाभाविक ही है कि कुटुम्बी सम्बन्धी और मित्रगण उपहास उड़ायें—बेवकूफ बनायें, ढोंग बतायें और इस झंझट में न पड़ने की सलाह दें। अनेकों ऐसे बात कहें—दलीलें दें, जिनसे अपना मन कमजोर पड़ता हो। जिन लोगों से सदा काम-काजी सांसारिक बातें कही जाती रही हैं, उन्हें उस वानप्रस्थ अवधि में पुराना ढर्रा बदलकर ज्ञान-ध्यान की नई बातें कहने लगें तो उन्हें भी अटपटा लगेगा और जो समझाया जा रहा है उसे मानने-अपनाने की अपेक्षा उलटे असमंजस में पड़ने लगेंगे। अपना ध्यान भी आधा ही परमार्थ प्रयोजनों में लगेगा। जो काम या समस्यायें सामने आयेंगी, उनसे इन्कार तो नहीं किया जा सकता। दोनों ओर ध्यान बना रहे तो एक भी काम पूरी तरह न हो सकेगा। अधूरेपन की मनःस्थिति में जो कुछ होता है, वह लँगड़ा-लूला और असफल ही रहता है। घर का भी हर्ज हुआ—अभीष्ट परिणाम भी न निकला तो ऐसे वानप्रस्थ की क्या उपयोगिता हुई ? सक्रिय सदस्य और कर्मठ-कार्यकर्त्ता भी घर रहकर तो कुछ न कुछ सेवा-कार्य करते ही रहते हैं। वे अपने आपको सामान्य सेवा-रत कहते हैं। साधु-संस्था की अभाव पूर्ति का दावा नहीं करते।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वानप्रस्थ उस उच्चस्तरीय आवश्यकता की पूर्ति के लिये दुस्साहस करता है, इसलिये उसके त्याग-बलिदान की मात्रा भी अपेक्षाकृत अधिक बढ़ी-चढ़ी होनी चाहिये। इसका प्रथम प्रतीक यह है कि जितने दिन वानप्रस्थ निबाहना हो, उतने दिन अन्य किसी कार्य क्षेत्र में जाकर रहना चाहिये, ताकि पूरे मन से पूरा ध्यान लगाकर जो कुछ करना हो, उसे ठीक तरह किया जा सके।

व्यावहारिक क्षेत्र में यह उक्ति सोलह आने सही उतरती है कि "गाँव का जोगी जोगना—अन्य गाँव का सिद्ध" अपने समीपवर्ती क्षेत्र में जिन्होंने आरम्भ से सामान्य स्तर का जीवनयापन किया है वे कम से कम उस क्षेत्र में बदले हुये उच्चस्तरीय परिवर्तन की बात स्थानीय लोगों के गले नहीं उतार सकते। यदि प्रयत्न करें भी तो सफलता प्राप्त करने में मुद्दतें लग जाती हैं, तब कहीं लोग वस्तुस्थिति समझ पाते हैं। आरम्भ में तो इस परिवर्तन के साथ मखौल, मजाक, व्यंग और विरोध असहयोग का दौर चल पड़ता है। जिनसे कभी किसी बात में मतभेद रहा है, वे ऐसे मौके पर बदला चुकाने का प्रयत्न करते हैं। तरह-तरह के आक्षेप, आरोप गढ़ते हैं और लोगों की दृष्टि में उसके पुण्य-प्रयास को इस तरह तोड़-मरोड़ कर रखते हैं कि बात बनने की अपेक्षा और गिरने लगे। चरित्र हत्या के रूप में अक्सर ऐसे ही अवसरों पर शत्रुओं के घात-प्रतिघात चलते हैं। मित्र लोग भी इसमें पीछे नहीं रहते। उनका उद्देश्य शत्रुओं जैसा तो नहीं होता, पर साथ सहयोग का जो लाभ मिलता था, उसमें कमी आने से खीजते वे भी हैं और प्रयत्न यह करते हैं कि उस मार्ग से लौटने के लिये विवश कर दें। इसलिये वे जब समझाने-बुझाने में असफल रहते हैं तो तरह-तरह की कठिनाईयाँ खड़ी करने लगते हैं।

यह समस्या काल्पनिक नहीं—सर्वथा देखी-समझी हुई है। प्रायः सभी महामानवों के अनुभव में आई है। इसलिये उन्हें अपना स्थान छोड़कर अन्यत्र ही कार्यक्षेत्र बनाना, अपनाना पड़ा है। भगवान बुद्ध कपिलवस्तु में जन्मे अवश्य थे, पर वहाँ उनने अपना कार्यक्षेत्र नहीं बनाया। गाँधीजी पोरबन्दर में जन्मे थे, पर उनका कार्यक्षेत्र साबरमती और वर्धा रहा। शंकराचार्य केरल में जन्मे, पर वहाँ टिके नहीं। उत्तर भारत में वे काम करते रहे। स्वामी दयानन्द टंकारा में नहीं रहे, उन्हें मथुरा, अजमेर आदि स्थानों में अपने पाँव जमाने पड़े। सन्तों और महापुरुषों में से कोई एकाध ही ऐसा हुआ होगा, जिसने अपनी जन्मभूमि में ही सेवा-क्षेत्र बनाया हो और आशाजनक सफलता पाई हो। इस्लाम के संस्थापक मुहम्मद साहब को मक्का छोड़कर मदीना के लिये हिजरत करनी पड़ी। ईसामसीह को लोगों ने वहाँ नहीं टिकने दिया, जहाँ वे जन्मे थे। श्रीकृष्ण भगवान ब्रज में रहने की उपयोगिता संदिग्ध होने पर वहाँ से उखड़ दिये थे और महाभारत के लिये इन्द्रप्रस्थ रुकने के उपरान्त द्वारिका जाकर पैर जमाने में समर्थ हुये थे।

यह कड़ुई सच्चाईयाँ हैं, जिनके आधार पर वानप्रस्थों को भी भूतकाल के परिव्राजक सन्यासियों की तरह अपना वर्तमान स्थान छोड़कर अन्यत्र जाने की बात सोचनी चाहिये। वह अवधि स्वल्प-कालीन हो तो ठीक है पर जितने भी दिन कार्य करना हो, उसे समग्र और व्यवस्थित करने की दृष्टि से अपना कार्यक्षेत्र अन्यत्र बनाने की बात ही सोचनी चाहिये।

बाहर का व्यक्ति अचानक सामने प्रस्तुत होता है, इसलिये उसका वर्तमान स्वरूप ही लोग देख-समझ पाते हैं। स्पष्टतः वानप्रस्थ का वर्तमान वेष और स्वरूप सन्त-महात्मा जैसा होता है। अस्तु उसे उसी रूप में देखने मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होती। स्वभावतः ऐसे आगन्तुक का अधिक प्रभाव ग्रहण किया जाता है। मनुष्य की कमजोरी ही सही, पर यह बात उसकी प्रकृति का अंग है कि "दूर के ढोल सुहावने" वाली उक्ति के अनुसार अपनी मान्यता बनाये और अजनबी के बारे में लम्बी-चौड़ी बातें सोचें। यदि यथार्थ में कोई वानप्रस्थी अपने भूतिकालीन जीवन में कुछ ऊँचे स्तर का रहा है तो उसमें नमक-मिर्च मिलाकर सोचने की आदत, बात की ओर भी अधिक बढ़ा देती है और नवागन्तुक धर्म-प्रचारक और भी अधिक प्रभावशाली बन जाता है।

कार्यकर्त्ता को अधिक तत्परता से, अधिक एकाग्रता से संकोच त्यागकर अधिक उत्साह के साथ नई जगह में ही काम करने का अवसर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिलता है। संकोची प्रकृति से भी बाहर जाकर ही पीछा छूटता है। अपनी प्रतिभा के विकास का अवसर भी ऐसे ही वातावरण में बनता है। निस्वार्थता की—निष्पक्षता की स्थिति भी उन्हीं परिस्थितियों में रहती है। नये ढर्रे की जीवन-यापन पद्धति का अभ्यास इस स्थान परिवर्तन की स्थिति में अधिक सुविधापूर्वक— अधिक खुले मन से हो सकता है। बनवास में जिन बदली हुई परिस्थिति के लिये प्राचीन तपस्वी लोग जाते थे, लगभग वैसी ही बात अपना स्थान छोड़कर अन्यत्र काम करने पर चले जाने से भी बन जाती है।

अपने आपको अपनी बदली हुई स्थिति का भान होता रहे। अन्तर्मन को निरन्तर संकेत उद्‌बोधन मिलता रहे, इसलिये वस्त्रों का रंग बदल लेने की परम्परा बहुत ही सारगर्भित एवं तथ्यपूर्ण है। वानप्रस्थ अवधि में पीत वस्त्र धारण करने की परम्परा भूतकाल में जितनी उपयोगी थी, अब भी वह उतनी ही आवश्यक है। इसलिये अपनी परम्परा भी वही है। वानप्रस्थ को शिक्षा-काल में तथा सेवा-काल में पीले रंग से रंगे हुये वस्त्र पहनने होते हैं। धोती, कुर्ता, दुपट्टा तो रहते ही हैं, आवश्यकतानुसार कोट, जाकिट आदि पहनने हों तो वह भी रंगे जा सकते हैं। पेन्ट, पाजामा नहीं चलेगा, उसका तालमेल भारत की धर्म संस्कृति के साथ नहीं खाता। वानप्रस्थ उन्हें पहने तो अटपटा और अस्वाभाविक लगेगा। इसलिये सामान्य भारतीय वेष-भूषा को पीले रंग में रंगकर उस अवधि में पहने रहने की परम्परा यथा स्थान रखी गई है। नियत अवधि पूरी करके कनिष्ठ वानप्रस्थ जब घर लौटे तो फिर सामान्य पोषाक पहले की तरह पहनते रहने में कोई हर्ज नहीं है। जब तक वानप्रस्थ तब तक स्थानान्तरण और तभी तक पीत-वर्ण की पोषाक।

सामान्यतः प्रयत्न यह करना चाहिये कि शिक्षण-काल का भोजन आदि का खर्च अपने पास से ही उठाया जाय। आवश्यक वस्त्र तो घर से ही साथ लेकर चलना चाहिये। सेवा कार्य में प्रायः भोजन-व्यवस्था शाखा-संगठनों में हो जाती है। यदि अपने पास थोड़ी अर्थ-व्यवस्था है तो प्रयत्न यही करना चाहिये कि जनता पर अपना कोई भार न पड़े और समय दान के साथ-साथ उतना अर्थ-भार भी स्वयं ही उठायें, जिसमें अपना निर्वाह-व्यय पूरा होता रहे। जिनकी निजी आमदनी नहीं रही, उनके कमाऊ बच्चों को पितृ-ऋण चुकाने की दृष्टि से वानप्रस्थ काल का व्यय भार उठाना चाहिये। हर दृष्टि से औचित्य इसी में है कि यदि अपने पास थोड़ी अर्थ-व्यवस्था मौजूद है तो दूसरों पर अपना भार क्यों डालें ? सेवा करनी ही है, तो अपना व्यय-भार स्वयं ही उठाते हुये क्यों न करें ? जिनकी आर्थिक स्थिति इस लायक है, उनकी प्रतिष्ठा इसी में है कि तीर्थ-यात्रा के लिये जिस प्रकार अपने खर्च से जाते हैं, उसी प्रकार इस तप साधना के लिये भी यदि अपने पास कुछ है तो उसी का उपयोग करें। पिछली कमाई बेटे-पोतों के लिये और संन्यास में भिक्षा लोगों से—वाली नीति ही चलती रहे तो पिछले पिछड़े हुये साधुओं की तुलना में अपने त्याग का आदर्श क्या रहेगा ?

पर वस्तुतः जिनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि घर से वानप्रस्थ अवधि का निर्वाह-व्यय प्राप्त कर सकें, उनकी आवश्यकतायें शान्तिकुंज से जुटाई जायेंगी। घर के लिये मनीआर्डर तो किसी के लिये भी नहीं भेजा जा सकता, पर अन्न-वस्त्र की कमी के कारण शिक्षा एवं सेवा के लिये आगे बढ़ने से किसी को भी मन मसोसकर नहीं बैठना पड़ेगा।

मात्र भजन, स्वाध्याय, सत्संग से आत्मिक-प्रगति का महान् प्रयोजन पूरा नहीं होता। विचारणा के साथ क्रिया प्रक्रिया जुड़ी रहने पर ही संस्कार बनते हैं, आस्थायें सुदृढ़ होती हैं और स्तर परिपक्व बनते हैं। इसलिये उत्कृष्ट विचारणा के साथ आदर्श क्रिया-पद्धति को जोड़ने से ही श्रेय साधना की धारा गतिगामिनी होती है। वानप्रस्थ प्रयोजन में इन सभी सन्दर्भों का समावेश है, उसे अपनाकर हम अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत करने का अन्तःचेतना में उच्चस्तरीय तत्वों के समावेश का उद्देश्य पूरा कर सकते है।

वानप्रस्थ परम्परा भारतीय-संस्कृति का मूल आधार है—उसी परम्परा ने इस देश को सुयोग्य, अनुभवी, अवैतनिक, भाव भरे लोक-सेवी प्रदान किये थे। इन्हीं नर रत्नों ने इस देश को उन्नति के उच्च शिखर तक पहुँचाया था और उन्हीं के द्वारा हमने जगद्‌गुरु का सम्मान पाया था। समस्त विश्व को प्रगति एवं समृद्धि की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिशा में बढ़ाया था। इस परम्परा को पुनर्जीवित किया जाना चाहिये। आधी आयु के बाद जीवन का उत्तरार्ध-परामर्थ प्रयोजनों में लगाने की परिपाटी का पुनः प्रचलन होना चाहिये, तभी विश्व कल्याण का पथ प्रशस्त होगा। इस लुप्त परम्परा को जीवित करने के लिये यदि हम स्वल्पकालीन वानप्रस्थ क्रम भी आपत्ति-धर्म की तरह चला सके, तो उसके सत्परिणामों को देखकर लोग स्वयमेव आवश्यकता अनुभव करेंगे और वरिष्ठ वानप्रस्थों के द्वारा प्राचीनकाल जैसी सतयुगी स्थिति फिर इस धरती पर दृष्टिगोचर होगी।

हमें कहाँ, कैसे, कब और क्या करना होगा ?

इस युग में साधु-संस्था का प्रतिनिधित्व उन वानप्रस्थों को करना है, जिनमें मात्र भावना ही नहीं, लगन, योग्यता और पुरुषार्थ-परायणता की भी कमी न हो। जो पहले अपने गुण, कर्म, स्वभाव का—चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण करे और साथ ही लोक-मंगल की क्रिया-प्रक्रिया में उसी तत्परता के साथ प्रयत्न करें, जिस प्रकार संसारी लोग अर्थ एवं प्रशंसा प्राप्त करने के लिये जी-जान एक करते हैं। यदि ऐसे नर-रत्नों का उत्पादन अभिवर्धन सम्भव हो सका तो आशा की जा सकेगी कि जन-मानस का भावनात्मक नव-निर्माण सम्भव हो सकेगा और उस आधार पर संकट-ग्रस्त मानवता को अनेकानेक सम्पदाओं से उबारा जा सकेगा। यदि निष्ठावान् लोक-सेवी पैदा न हो सके तो पतन के तूफानी प्रवाह को अन्य किसी उपाय से रोका न जा सकेगा। तब शिक्षा और सम्पदा बढ़ाने के लिये किये जाने वाले विविध-विविध प्रयास बाल-क्रीड़ा की तरह चलते तो रहेंगे, पर उनसे बनेगा कुछ नहीं। कीचड़ भरा दलदल यथा-स्थान रहे तो एक-एक मक्खी-मच्छर को गिनते मारते रहने से उनके भिनभिनाने को कैसे रोका जा सकेगा ?

हम ऐसे युग-नायक बनाने और बढ़ाने में लगे हैं, जो अपने अनुकरणीय आदर्श से अन्य अनेकों को श्रेष्ठता के सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे सकें। उज्ज्वल भविष्य की आशा का केन्द्र जन मानस का भावनात्मक परिष्कार ही है। इस एक ताली से ही वे सब ताले खुल जायेंगे, जिन्होंने सुख-शान्ति तक पहुँचने के समस्त द्वारों को अवरुद्ध कर रखा है। लोगों को दिग्-भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये। छुटपुट सुधार-कार्यों से लम्बी-चौड़ी आशायें नहीं बाँधनी चाहिये। शक्तियों को इधर-उधर नहीं बखेरना चाहिये। समस्त इच्छा-शक्ति और साधन शक्ति को इकट्ठा करके जन-मानस में भावनात्मक उत्साह भरना चाहिये—आदर्श निष्ठों में आस्था उत्पन्न करनी चाहिये। इतना सम्भव हो सका तो लोक-शक्ति की चण्डी जिधर भी बढ़ेगी, उधर ही घमासान उत्पन्न कर देगी।

जन-शक्ति की क्षमता अपार है। उसकी एक हुंकार से न जाने क्या से क्या हो सकता है? जनता ने मत-पेटी में पर्ची डालने जैसा थोड़ा-सा रुख पलटा तो कांग्रेस सरकार सत्तारूढ़ हो गई और वह सत्ताईस वर्ष से सिंहासन पर विराजमान है। जनता ने भवें तरेरीं तो दो सौ वर्षों से जड़ जमाकर बैठे हुये अंग्रेज थर-थर काँपने लगे और उन्हें सिर पैर रखकर भागते ही बना। जनता अपना नगण्य-सा आजीविका अंश लेकर खर्चीली शासन सत्ता का भार हँसते-खेलते वहन कर लेती है। अरबों-खरबों रुपया हर साल खर्च डालने वाला—लगभग एक करोड़ लोगों का भार निर्वाह लादे हुये खड़ा धर्म-तन्त्र जन-श्रद्धा की एक किरण पाकर फल-फूल रहा है। जनता की एक दुर्बलता का तनिक-सा सहारा पाकर कामुकता की दुष्प्रवृत्ति ने, संगीत साहित्य ने कला के स्रोतों पर सहज अधिकार कर लिया है। जन-समाज के छोटे-से छिद्रों में प्रवेश मिल जाने से अपराधी दुष्प्रवृत्तियों को अपनी जड़ें जमाने का अवसर मिल गया है। जनता की धारा बाढ़ का रूप धारण करके उच्छृंखल प्रवाह में बहने लगे तो देखते-देखते सारी समृद्धि डूबती, बहती और नष्ट होती दिखाई देगी। इस धारा को नियन्त्रित और व्यवस्थित दिशा मिल जाये तो आज के सूखे मरुस्थल कल हरे-भरे उद्योनों से विकसित होंगे और सोना उगलेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन-शक्ति से बढ़कर और कोई सामर्थ्य इस संसार में है नहीं। मनुष्य अपने आप में एक छोटा परमेश्वर है फिर यदि उसे संघबद्ध होने का अवसर मिल जाये—उत्कृष्टता की दिशा में वह चल पड़े तो फिर कोई ऐसी सम्पदा नहीं, जो उसके चरणों में लोटती दिखाई न पड़े। मनुष्य दीन दारिद्र नहीं है—उसे कृमि-कीटकों के स्तर पर रखकर छुटपुट उपहारों के माध्यम से दया प्रदर्शित करने की उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी उसका उद्बोधन करके अपने पैरों पर खड़ा कर देने की। चन्दा इकट्ठा करके अन्न, जल, औषधि आदि जुटा देने की चेष्टा करने वाले अपनी दया का परिचय तो दे सकते हैं, पर यह भूल जाते हैं कि समर्थ मानव यदि अपनी शक्ति से परिचित हो जाये—उसका सदुपयोग करना सीख लें तो शरीर से अन्धा, अपंग रहने पर भी वह अपनी नाव पर बिठाकर निज का ही नहीं अन्य अनेकों का उद्धार कर सकता है।

जनता का प्रत्येक घटक अपने में असीम सम्भावनायें छिपाये बैठा है। हर व्यक्ति में रावण, कुम्भकरण, हिरण्यकश्यप, सहस्रबाहु, सिकन्दर, चंगेज खाँ, नादिरशाह, नेपोलियन, हिटलर जैसी वामपक्षी असुरता छिपी पड़ी है। दक्षिण-पक्षी देव-सत्तायें और भी बढ़ी-चढ़ी हैं। राम, कृष्ण हनुमान, परशुराम, अर्जुन, शंकाराचार्य, बुद्ध, महावीर, प्रताप, शिवाजी, विवेकानन्द, दयानन्द, गाँधी कहीं से भी फूट पड़ सकते हैं। वैज्ञानिक, दार्शनिक, तत्वदर्शी, तपस्वी, कलाकार, मनीषी, युगान्तरकारी, क्रान्तिकारी, मनस्वी, दूरदर्शी, सृजेता विजेता जनता की खदान में से ही निकलते हैं। संसार में जो कुछ अद्भुत, आकर्षक, सुन्दर, सुखद दीखता है, वह सब मनुष्य की सूझ-बुझ का उसके श्रम-सीकरों का उद्भव है। अन्यथा यह धरती अपने जन्म-काल में वैसी ही कुरूप वैसी ही नीरव और वैसी ही अस्त-व्यस्त थी, जैसी आज चन्द्रमा सहित अन्यान्य ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति है। कुरूपता को सौन्दर्य में—अभाव को भाव में—नीरवता को उल्लास में—अन्धकार को प्रकाश में परिणत करने की परिपूर्ण क्षमता मानव-प्राणी में विद्यमान है और मनुष्यों के समूह का नाम है जनता, जनता की सत्ता और महत्ता की परिकल्पना कर सकना उसके मूल सृजेता के लिये भी कठिन है।

जन-भावना उभारकर यदि हम दस पैसा प्रतिदिन नव-निर्माण प्रयोजनों के लिये प्राप्त करने की नगण्य-सी सफलता प्राप्त करलें तो ५० करोड़ भारतीय हर रोज ५ करोड़ रुपया जमा कर सकते हैं। वर्ष में १८०० करोड़। इतनी बड़ी धन-राशि से बड़ी से बड़ी योजनायें पूरी होती रह सकती हैं। एक घण्टा श्रम हर वयस्क व्यक्ति से प्राप्त करलें तो २० करोड़ वयस्कों के उस श्रमदान से ८ घण्टा पूरा समय श्रम करने वाले ढाई करोड़ श्रमिकों जितना काम कराया जा सकना सम्भव हो सकता है। यह जनशक्ति, श्रम-शक्ति इतनी बड़ी है कि हर दिन हजारों की संख्या में कुएँ, तालाब, बाँध बनकर एक वर्ष के भीतर सिंचाई की समस्या हल की जा सकती है और इस शस्य श्यामला भूमि के पुत्र विदेशों के आगे अन्न के लिये हाथ पसारने के स्थान पर संसार के भुखमरी-ग्रस्त समस्त मनुष्यों के लिये अनाज निर्यात कर सकते हैं। हर शिक्षित व्यक्ति वर्ष में एक निरक्षर को साक्षर बनाने की प्रतिज्ञा कर ले तो पाँच वर्ष के भीतर अपने देश ८० प्रतिशत अशिक्षित पूरी तरह साक्षर हो सकते हैं।

जिस भ्रष्टाचार को अपराधी दुष्प्रवृत्तियों को पुलिस और अदालतें रोक नहीं पा रही हैं, यदि जागृत जनता इन गुण्डा-तत्वों के विरुद्ध भर्वे तरेर दे तो इन मुट्ठी भर अनाचारियों का जीवित रहना कठिन हो जायेगा। अनाचारी आतंकवाद इसलिये जीवित हैं कि मुट्ठी भर अवांछनीय तत्वों की असामाजिक गति-विधियों के विरुद्ध रोष, आक्रोश, जगाया नहीं गया है। जिस दिन जन-शक्ति की चण्डी जगेगी, उस दिन अभाव, अशक्ति और अज्ञान के दुर्दान्त असुरों का अस्तित्व इस धरती पर बना रहना सम्भव न होगा। इन सबकी दुर्गति महिषासुर, मधुकैटभ और शम्भु-निशम्भु जैसी होगी। संघ-शक्ति का ही दूसरा नाम चण्डी है। पौराणिक कथा-प्रसंग के अनुसार देवताओं की सम्मिलित शक्ति इकट्ठी करके ही तो भगवती दुर्गा को सृजा था। देवताओं को विजेता और असुरों को पराजित करने के लिये उसी प्रयोग की पुनरावृत्ति अब फिर की जाये, इसके लिये आज का ही उपयुक्त समय है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधु संस्था को पुनर्जीवित इसी निमित्त किया जा रहा है। वानप्रस्थ को नव-जीवन देने का अभियान इसी निमित्त चलाया जा रहा है कि जन-शक्ति को जागृत एवं संगठित करने के लिये लोक-मानस में परिष्कारपरक उत्साह उत्पन्न किया जाये, इसके लिये धर्म-मंच को ही माध्यम बनाया जा सकता है। अन्तःकरण को उभारने और मोड़ने-मरोड़ने की विद्या को ही तो माध्यम कहते हैं। उत्कृष्टता और आदर्शवादिता पर चलने की आस्था का नाम ही तो धर्म-प्रेरणा है। व्यक्ति में जो कुछ महान् है—श्रेष्ठ है—उसे छूने उभारने के लिये अध्यात्म-धर्म को माध्यम बनाये बिना गाड़ी एक कदम आगे नहीं बढ़ सकती। राजनीति, अर्थशास्त्र आदि के सहारे लोगों में बौद्धिक हलचलें और क्रिया-परक, हरकतें पैदा की जा सकती हैं, पर अन्तरात्मा के मर्मस्थल में प्रसुप्त पड़ा देवत्व तो धर्मचेतना का स्पर्श कराये बिना और किसी प्रकार जमेगा ही नहीं।

कहाँ, किसे कब, कैसे, क्या करना पड़ेगा ? इसकी कोई चिरस्थायी 'लक्ष्मण-रेखा' नहीं खींची जा सकती। व्यक्ति की योग्यता, अभिरुचि—समय की माँग—साधनों की सुविधा को देखते हुये कार्यक्रमों का निर्धारण और परिवर्तन होता रहेगा। बदलती हुई परिस्थितियों में बदले हुये कदम उठाने के लिये हमें अपना मस्तिष्क खुला रखना होगा। लक्ष्य की पूर्ति के लिये कार्यक्रम बनते हैं। कार्यक्रमों के साथ लक्ष्य जोड़ा नहीं जा सकता। इन बातों पर ध्यान रखने पर सदा-सर्वदा के लिये तो कोई कार्य पद्धति नहीं बन सकती, पर वर्तमान स्थिति में—भारत की सीमा में क्या और कैसे होना चाहिये ? इसका स्वरूप निर्धारण कर लिया गया है। अन्य देशों के लिये वहाँ की स्थिति और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये भिन्न कार्यक्रम बनाने होंगे, किसी बात को हिन्दू-धर्मानुयायियों से अमुक प्रमाण उदाहरण देकर कहना पड़ता है तो मुसलमान को समझाने के लिये उस परम्परा के अनुरूप तर्क एवं तथ्य संग्रह करने पड़ेंगे। कर्मकाण्डों और विधि-विधानों के सम्बन्ध में भी यही बात है। क्षेत्र एवं वर्ग की भूतकालीन परम्पराओं के साथ भावनात्मक नव-निर्माण के लक्ष्य को जोड़ने से जो क्रिया-पद्धति विकसित होती होगी, उसे बिना किसी दुराग्रह के अपना लिया जायेगा। हम सत्य और तथ्य के पुजारी हैं। हमें न्याय और विवेक का समर्थन करना है।

साधारणतया वानप्रस्थों का कार्यक्रम, बौद्धिक क्रान्ति की—नैतिक क्रान्ति की—सामाजिक क्रान्ति की तैयारी में संलग्न होगा। दूसरे लोग राजनैतिक क्रान्ति की—आर्थिक क्रान्ति की बात सोचते हैं, उसके लिये प्रयत्नशील हैं। उस क्षेत्र में पर्याप्त व्यक्ति मौजूद हैं और अपने ढंग से काम कर रहे हैं। हमारे सामने वह अछूता विस्तृत कार्य क्षेत्र खाली पड़ा है, जिसके बिना अन्य सब भौतिक योजनायें अपंग और असफल ही बनी रहेंगी। हमें किसी से प्रतिस्पर्धा नहीं करनी। अनीति और अविवेक के अतिरिक्त और किसी से हमारी कोई लड़ाई नहीं। सभी के सत्प्रयत्नों में सहयोग दें और सभी वर्ग के विचारशीलों की सद्भावना सहकारिता का आह्वान करेंगे। न अपना छोटा दृष्टिकोण है, और न संकीर्णता की परिधि में बँधी हुई अपनी कार्य-पद्धति है। विशाल से विशाल काम की बात ही हमने सोची है और उसी को वानप्रस्थ-संस्था सोचती अपनाती रहेगी।

नव-निर्माण के अन्तर्गत व्यक्ति-निर्माण—परिवार-निर्माण एवं समाज-निर्माण के त्रिविध कार्यक्रम आते हैं। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन और सभ्य समाज की अभिनव रचना करना अपने कर्तृत्व का प्रधान अंग है। इसके लिये प्रचारात्मक-रचनात्मक एवं संघर्षात्मक गति-विधियाँ अपनाई जायेंगी। प्रथम चरण में प्रचार-तन्त्र तो तीव्र किया जायेगा—ज्ञानयज्ञ का आलोक फैलाया जायेगा—विचार-क्रान्ति का बीज बोया जायेगा। इसके लिये छोटे-बड़े सम्मेलनों—गोष्ठियों एवं चर्चा-प्रयोजनों की रूपरेखा रहेगी। धार्मिक-आयोजनों के माध्यम से लोक-श्रद्धा को जागृत करके उसे रचनात्मक दिशा देने का उपक्रम किया जाता रहेगा। लेखनी से—छपे साहित्य के माध्यम से भी जन-जागृति की प्रत्येक सम्भावना को क्रियान्वित किया जायेगा। लेखनी, वाणी, कला और धर्मानुष्ठान इन चारों ही प्रयोजनों में से जहाँ जिस प्रकार उपयोग सम्भव होगा, वहाँ उसकी पृष्ठभूमि बनाई जायेगी। संगीत और अभिनय का नया क्षेत्र निकट भविष्य में ही खुल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जायेगा क्योंकि भावनात्मक स्पर्श में अन्य माध्यमों की अपेक्षा कलातन्त्र का उपयोग अधिक आकर्षक भी रहता है और प्रभावशील भी।

व्यक्ति की अपनी-अपनी योग्यता होती है और अपनी-अपनी अभिरुचि। वानप्रस्थों में से किसे कहाँ, किस प्रयोजन के लिये फिट किया जा सकता है ? इसका निर्णय उसकी क्षमता एवं विशेषता का विश्लेषण करने के उपरान्त ही किया जा सकता है। पर मोटी रूपरेखा यह है कि दो-दो प्रशिक्षित वानप्रस्थों की टोलियाँ बनाकर उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न कार्यक्रमों को अग्रगामी बनाने के लिये जन-सम्पर्क स्थापित करने के निमित्त युग-निर्माण शाखा-संगठनों में भेज दिया जायेगा और वे वहाँ अपनी प्रतिभा का विकास विस्तार करने का अवसर प्राप्त करेंगे।

वानप्रस्थ परम्परा का सर्वथा लोप न होने दें

भारतीय संस्कृति का विश्व विख्यात स्वरूप जिस कारण चिरकाल तक गगनचुम्बी बना रहा उसका मेरुदण्ड जैसा महत्त्वपूर्ण आधार वानप्रस्थ परम्परा का प्रचलन ही रहा है। वर्णाश्रम धर्म के तो सभी प्रतिपादन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं पर उनमें से एक सर्वोत्तम की चर्चा करनी हो तो फिर उसे एक शब्द में वानप्रस्थ परम्परा ही कहना चाहिये। इसी निर्धारण ने योग्यतम भावनाशीलों को अवैतनिक रूप से लोक साधना में प्रवृत्त किया। फलतः लोक जीवन में उत्कृष्ट आदर्शवादिता का स्तर ऊँचा बना रहा। भारत भूमि को स्वर्गादपि गरीयसी कहा जाता रहा है और विशाल भारत के ३३ करोड़ नागरिकों को देव मानवों जैसा सम्मान विश्व के कोने-कोने से मिला है यह न तो अनायास है और न चमत्कार। उमंग भरे भावनाशीलों का परमार्थ प्रयोजन के लियें जीवन समर्पण की परम्परा ने ही विश्व मानव की बहुमुखी सेवा साधना का अवसर प्रदान किया और उस खाद पानी को पाकर समस्त संसार फलते-फूलते उद्यान की तरह लहलाया।

मानवी आयुष्य का विभाजन देव संस्कृति में इस प्रकार किया गया है कि उसका पूर्वार्ध धरती को स्वर्ग बनाने वाली सत्प्रवृत्तियों के सम्वर्धन में लगाया जाये। इसे एक शब्द में भौतिक प्रगति भी कहा जा सकता है। जब पूर्णायुष्य सौ वर्ष का था, तब पच्चीस वर्ष का ब्रह्मचर्य अवधि में शारीरिक मानसिक क्षमता का सम्पादन किया जाता था। इसके उपरान्त पच्चीस वर्ष गृहस्थ सीमा में पराक्रम पुरुषार्थ के सहारे निजी पारिवारिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मनोयोगपूर्वक कठोर परिश्रम किया जाता था। इसमें क्षमताओं, सम्पादन और उसका सर्वजनीन प्रगति के लिये आदर्शवादी उपयोग होता था। यही थी मानव जीवन के पूर्वार्ध की दिशा एवं विधा जिसे भारतीय संस्कृति के अनुचर-भारत भूमि के देवमानव पत्थर की लकीर मानते और कठोर अनुशासन की तरह अपनाते रहे।

जीवन का उत्तरार्ध प्रौढ़ता और वृद्धावस्था के रूप में व्यतीत होती है। उसका नियोजन विशुद्ध रूप से परमार्थ प्रयोजन में करने की मर्यादा है। इक्यावन से लेकर सौ वर्ष तक की आयु उन दिनों प्रत्येक विचारशील को इसी निमित्त लगाने की बात हर किसी के ध्यान में रहती थी। इसके लिये समय रहते उसकी तैयार चलती थी। सन्तानोत्पादन का कार्य प्रायः तीस की आयु तक पहुँचते पहुँचते समाप्त कर लिया जाता—था ताकि पचास तक पहुँचने से पूर्व प्रथम संतान बीस की हो चुके और युवराज का पद सम्भालते हुये गृह कार्यों में पिता का उत्तरदायित्व सम्भालने लगे। बड़े बच्चों को ही अपने छोटे भाई बहिनों की बची खुची जिम्मेदारी पूरी करनी पड़ती थी। वैसे तब तक सभी बच्चे स्वावलम्बन और समझदारी की स्थिति तक पहुँच चुके होते थे। फिर पत्नी तो घर पर ही रहती थी। उसके अनुशासन से परिवार व्यवस्था में कोई व्यतिरेक उत्पन्न न होने पाता था। यही थी वानप्रस्थ की वह पूर्व तैयारी जिसे पूरी करने का सभी को ध्यान रहता था।

वानप्रस्थ नाम इसलिए पड़ा कि ढलती आयु में प्रवेश करते समय मनुष्य घर से बाहर रहने की मनः स्थिति बना लेता था और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तदनुकूल अभ्यास भी सधता था। ऋषियों की तपोभूमियाँ तीर्थ-आरण्यकों के रूप में बनी थीं। वहाँ वानप्रस्थ लेने वालों को कुछ अवधि तक नई प्रक्रिया सीखने और पुरानी आदत छोड़कर नई ढालने की साधना करने का अवसर मिले। जिस प्रकार किशोरों का अधिकांश समय गुरुकुलों में रहकर व्यक्तित्व ढालने के लिए निर्धारित था ठीक उसी प्रकार वानप्रस्थ में प्रवेश लेते ही हर किसी को आत्मकल्याण और लोक कल्याण की समन्वित साधना करने के लिए चिन्तन-चरित्र और व्यवहार में उच्चस्तरीय परिवर्तन करने होते थे। यही है आरण्यक साधना जिसके लिए घर छोड़कर सुदूरतीर्थ स्थानों में कुछ समय निवास करने की आवश्यकता पड़ती थी। इस निमित्त घर छोड़ने और वन में निवास करने की बात को प्रमुखता देते हुए वानप्रस्थ नाम दिया गया। यह स्वल्प कालीन प्रशिक्षणपरक व्यवस्था थी। ठीक वैसी ही जैसी कि गुरुकुलों के वातावरण में व्यक्तित्व ढालने के लिए किशोरों को घर से बाहर रहने की आवश्यकता समझी जाती थी। उठती आयु में जोश अधिक और होंश कम रहने से कुसंग मे पड़ने और भटकाव में फँसने का खतरा अधिक रहता है इसलिए उन दिनों वयस्क छात्रों के लिए गुरुकुल का अनुशासित जीवन ठीक रहता था। ठीक इसी प्रकार गृहस्थ की ललक से निकलकर परमार्थरत रहने का अभ्यास करने के लिए पर्वतों के पुण्य क्षेत्रों में बने तीर्थों में रहकर आरण्यक साधना और शिक्षा को भी एक प्रकार से अनिवार्य माना जाता था। स्तर बदलने के लिए तद्नुरूप अभ्यास भी तो करना पड़ता है।

शिक्षण की सीमित अवधि समाप्त होते ही वानप्रस्थ समुचित संकल्प एवं अभ्यास के साथ कार्य क्षेत्र में उतरते थे। जन सम्पर्क साधते और विभिन्न कार्यक्रमों के सहारे लोकमानस के परिशोधन परिष्कार में निरत होते थे। इसके लिए उन्हें क्षेत्रों की आवश्यकताएँ तलाशनी और लम्बी यात्राएँ करनी पड़ती थीं। तीर्थयात्रा इसी का नाम था। मील के पत्थरों की तरह जहाँ-तहाँ विराम स्थान भी मिलते थे, देवालय और धर्म संस्थान बने तो इसलिए थे। उनसे लोकसेवियों के निवास निर्वाह की यात्रा स्थिरतापूर्वक निर्धारित कार्यक्षेत्र में नियमित कार्यक्रम चलाते रहने की सुविधा भी रहती थी। वे आवश्यकतानुसार स्थान परिवर्तन भी करते रहते थे, जिससे हर योग्यता के व्यक्ति को हर क्षेत्र में अपने-अपने स्तर का लाभ पहुँचाने का अवसर मिलता रहे। एक स्थान में रहकर रागद्वेष पनपने का खतरा भी रहता है। इसलिए पूरातन लोक सेवियों के लिए प्रव्रज्या ही उपयुक्त मानी गई थी। इससे हर पिछड़े क्षेत्र तक प्रगतिशीलता की पहुँच होती रहती थी और एक ही स्थान पर विद्वानों विशेषज्ञों का जमघट होने जैसा असंतुलन भी नहीं पनपता था। अधिक वृद्ध हो जाने पर चलने-फिरने में असमर्थता उत्पन्न होने पर यही वानप्रस्थ किसी स्थान विशेष पर रहकर काम करने लगते थे। इसे सन्यास कहा जाता था। वस्तुतः जीवन के उत्तरार्ध का एक ही सदुपयोग है कि उसे घर के राग-द्वेष भरे वातावरण से दूर रहकर जन साधारण की मान्यताओं, आस्थाओं, भावनाओं, आकांक्षाओं विचारणाओं और गतिविधियों को मानवी गरिमा के अनुरुप उच्चस्तरीय बनाये रहने के लिए प्राण प्रण से प्रयास किया जाय।

यही है विशिष्ट परम्परा जिसे अपनाकर भारत जगतगुरु चक्रवर्ती और स्वर्ग सम्पदाओं का सुमेरु कहलाया। उसके देव मानवों ने परमार्थरत रहकर व्यापक वातावरण को सतयुगी बनाया और सत्परम्पराओं से भर दिया। सुयोग्य एवं भावनाशील लोक सेवियों का बाहुल्य रहने पर ऐसी स्वर्गोपम परिस्थितियों का उत्पन्न होना स्वाभाविक भी था। उच्चस्तरीय लोकसेवियों की पर्याप्त संख्या उत्पन्न करने वाली परम्परा जब तक जीवित रही तब तक कहीं पतन पराभव के कोई चिन्ह उत्पन्न नहीं हुए। सर्वत्र सुख शान्ति विराजती समृद्धि तथा प्रगति बढ़ती रही। देव संस्कृति की महिमा और गरिमा से भरा-पूरा वह समय था। पर जब वानप्रस्थ निर्धारण और दर्शन के प्रति उपेक्षा बरती जाने लगी तो उसका स्वाभाविक परिणाम पुरोहितों का दुर्भिक्ष पड़ने के रूप में सामने आया।

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः का उद्घोष करते हुए राष्ट्र को जागृत और जीवंत रखने का उत्तरदायित्व संभालने वाले वानप्रस्थ वर्ग को जब लोभ मोह के राहुकेतु निगलने लगे तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खग्रास ग्रहण जैसा अन्धकार आतंक छाने लगा। लम्बे समय से हम सब इन्हीं परिस्थितियों में होकर गुजर रहे हैं और देव संस्कृति की अनेकानेक विशेषताओं को धूल धूसरित होते हुए इन्हीं आँखों से देख रहे हैं।

सुधार के अनेक प्रयत्न चलते रहते हैं। पर सुयोग्य एवं भावनाशील लोकसेवियों के अभाव में आगणित योजनाएँ विपुल साधन लगाने पर भी असफल रहती हैं। जन सहयोग के बिना व्यापक सुधार या उत्कर्ष की कोई योजना सफल नहीं हो सकती। आदर्शवादी जन सहयोग जुटाने में मात्र आदर्शवादिता की कसौटी पर खरे उतरने वाले वानप्रस्थ पुरोहित स्तर के लोक सेवी ही सफल हो सकते हैं। आज उन्हीं की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। समाज का अभ्युदय, नवोत्थान इसी वर्ग द्वारा सम्भव है।

हमारी सबसे प्रमुख और सबसे प्रधान आवश्यकता

मनुष्य जिस धातु से, जिस कारीगरी से बनाया गया है, उसकी तुलना में दूसरा कुछ इस संसार में है नहीं। उसके अन्दर एक से एक अद्भुत और एक से एक अनुपम क्षमताएँ संजोकर रखी गई हैं। यदि कोई उन्हें जागृत कर सके और उपयोगी प्रयोजनों में क्रमबद्ध रूप से नियोजित कर सके तो समझना चाहिए कि अप्रत्याशित चमत्कारों जैसी उपलब्धियाँ, सफलताएँ शृंखलाबद्ध रूप से सामने आकर खड़ी होती चली जायेंगी। महामानवों में इतनी सृजनात्मक शक्ति होती है, जिस पर हजारों महादानवों की ध्वंसात्मक शक्ति को निछावर करके फेंका जा संके। अपने सृजेता के अनुरूप मनुष्य सचमुच अनुपम है—अद्भुत है।

इस तथ्य को पुरातन-काल के तत्वदर्शी मनीषियों ने समझा था। इसलिए उनने अपना मन सब ओर से हटा कर इस एक केन्द्र-बिन्दु पर एकाग्र किया कि मनुष्य की गुह्य-शक्तियों के प्रकटीकरण के वैज्ञानिक प्रयोगों में संलग्न रहा जाय। उन क्षमताओं को ऊर्ध्वगामी बनाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया जाय, बाल-क्रीड़ा में उन महान् विभूतियों के नष्ट-भ्रष्ट होने की अपेक्षा उन्हें रचनात्मक प्रयोजनों में नियोजित किया जाय, ऋषि-जीवन का महान् प्रयोजन यही था। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होंने अपने को तपाया, सधाया और ऐसा उपकरण बनाया, जिसके द्वारा सामान्य स्थिति के जन-समूह को अभीष्ट दिशा में सरलतापूर्वक मोड़ा-मरोड़ा जा सके।

यही है संक्षेप में—ऋषि जीवन का भेद भरा रहस्य। यह इतना उपयोगी और महत्वपूर्ण था कि उन्होंने कष्टों और अभावों की, असुविधाओं की चिन्ता किये बिना आत्मनिर्माण के लिए आवश्यक तितीक्षाएँ और तपश्चर्याएँ अपनाईं। साथ ही अपनी कार्य-पद्धति में एक ही तथ्य जोड़ा कि मनुष्यों का भावना-स्तर विकसित और परिष्कृत करने में अनवरत् रूप से संलग्न रहा जाय। साधु-संस्था के सदस्य यही करते थे। उनके उपासनात्मक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, कर्मकाण्डात्मक विविध-विधि प्रयोग इस एक उद्देश्य के लिए ही होते थे कि मानवी-चेतना की पशुप्रवृत्तियों से अस्त-व्यस्त होने से बचाकर उन्हें महान् प्रयोजनों में नियोजित किया जाय।

इसे गर्व और हर्ष के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए कि ऋषि-जीवन से सम्बन्धित उपयुक्त प्रयोजन पूरी तरह सफल हुआ था। अध्यात्म और धर्म के कलेवर ने इस लक्ष्य को पूरा करने में अपनी सफल भूमिका निवाही थी। उन दिनों हर मनुष्य में एक उमंग उठती कि —"वह आदर्शों से भरापूरा अनुकरणीय जीवन जियें और दूसरों के अनुगमन के लिए श्रेयानुवर्ती पद-चिन्ह छोड़ें। उसे संकीर्ण-स्वार्थपरायण—पेट और प्रजनन भर के लिए जीवित रहने वाले नर-पशु न समझा जाय। उसकी गणना जन-कल्याण के लिए महत्वपूर्ण त्याग, बलिदान कर सकने वाले साहसी शूरवीरों में गिना और सहारा जाय। मरण के उपरान्त भी उसका यश-शरीर जीवित रहे। शरीर से कष्ट-ग्रस्त भले ही रहना पड़े, पर अन्तरात्मा के सन्तोष उल्लास में कमी न पड़ने पावे।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षाओं की उमंगें जन-मानस में उठाने के लिए, उन्हें प्रबल और परिपुष्ट करने के लिए साधु-संस्था निरन्तर प्रयत्नशील रहती थी। यही एक तो उसका लक्ष्य था। धर्म और अध्यात्म का विशालकाय कलेवर इसी निमित्त तो गढ़ा गया था। ब्रह्मविद्या, तत्वदर्शन, आत्म-ज्ञान, ईश्वर-मिलन, स्वर्ग-मुक्ति, लक्ष्य प्राप्ति आदि के सहारे बहुत कुछ सोचने-समझने और करने-कराने के लिए प्रस्तुत किया गया है। उस सबका एक मात्र प्रयोजन इतना ही है कि मानवी-चेतना की निकृष्ट पशुता से परिष्कृत करके देवत्व की उत्कृष्टता तक ऊँचा उठाकर ले जाया जाय। जो इस दिशा में जितना बढ़ सके—वह उतना ही बड़ा धर्म-परायण, उतना ही महान ईश्वर-भक्त कहा जाता था। ऋषियों ने अपना जीवन इसी महिमामयी मानवता को सुविकसित करने के लिए अपने को समर्पित किया था। वे धन्य हुए और उनके प्रयासों से समस्त मानवता धन्य' हुई। विश्व-वसुधा ने इन ऋषि-प्रयासों से हर दृष्टि से कृतकृत्य बनाया। ऋषि-जीवन के इन अनुदानों के पीछे भारत की सारी प्राचीन प्रगति झाँकती मिलेगी।

इतिहास के पृष्ठों को जब हम उलट-पलट कर देखते हैं तो एक ही तथ्य उभरकर सामने आता है कि प्राचीन भारत में साधनों का भले ही अभाव रहा हो, पर कुछ ऊँचा कर गुजरने का दुस्साहस आँधी-तूफान की तरह उफनता रहता था। जिस तरह आज वासना और तृष्णा का मानवी मन पर आधिपत्य है, उसी प्रकार—वरन् उसके भी प्रबल वेग के साथ हर विचारशील मनुष्य पर यह आवेश छाया रहता था कि वह अनुकरणीय आदर्शवादिता के लिए तप, त्याग भरा दुस्साहस प्रकट कर सकने वाले शूरवीरों में गिना जाय। महामानवों की पंक्ति में उसे स्थान मिले, आत्मा और परमात्मा के दरबार में वह ऊँचा मस्तक लेकर प्रवेश पा सके।' यह उच्चस्तरीय महत्त्वाकांक्षाऐं इतनी प्रबल होती थीं कि विलासिता, तृष्णा और अहमन्यता जैसी हेय ऐषणाओं को सिर उठाने का अवसर ही नहीं मिल पाता था। पशु-प्रवृत्तियों की दिशा में जिसका मन ललचाता—उन्हें उस समय के प्रखर वातावरण में हर दिशा में भर्त्सना ही बरसती दिखाई पड़ती। आत्मा कचोटती सो अलग। ऐसा वातावरण बौद्धिक-प्रवाह उत्पन्न करने का श्रेय उस समय की सजग साधु-संस्था को ही दिया जा सकता है। वे इसी के लिए निरन्तर ताना-बाना बुनते थे। उनके विविध क्रियाकलाप इसी एक लक्ष्य की दिशा में मानवी अन्तःकरण को घसीट ले जाने के लिए होते थे। जहाँ इतनी सघन एकनिष्ठ तपः पूल सतत्-साधना जुड़ी हुई हो, वहाँ अभीष्ट सफलता मिलनी ही थी, मिली भी भारत—आदर्शवादी महामानवों का देश था। उत्कृष्ट-व्यक्तित्वों को अस्तित्व चमत्कारी होता है। उसकी उपस्थिति पग-पग पर स्वर्गीय परस्थितियाँ उत्पन्न करती है। भूतकाल में भारत ने अपने देश में और संसार भर में जो भूमिका निवाही उसका आधार उन दिनों के सुविकसित लोक-मानस को बिना संकोच के माना जा सकता है।

आज जिस प्रकार मनुष्य दूसरों का शोषक बना हुआ है, ठीक उससे उलटे स्तर की प्रवृत्तियाँ भूतकाल में थीं। लोग पाकर नहीं, देकर प्रसन्नता अनुभव करते थे। आज विलासी और संग्रही भाग्यवान समझे जाते हैं, उन दिनों उन्हें घृणास्पद अभागा कहा जाता था। ठाट-बाट की शान-शौकत दिखाने वाले अपव्ययी उन दिनों वज्रमूर्ख ठहराये जाते थे, पर आज तो इन्हीं अहंकारियों को चापलूस घेरे रहते हैं। समाज का ऋण चुकाने के लिए जो परमार्थ प्रयोजनों में, अपनी क्षमताएँ अर्पित करने में—जिसका साहस न पड़ा, उसे कृपण और कंगाल की भर्त्सना मिली आज तो अपराधी, धूर्त और दुष्ट भी अपने कुकर्मों पर गर्वोक्तियाँ करते पाये जाते हैं। उस समय उन्हें कोढ़ी और कलंकी की तरह समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था। राज्य-दण्ड पाने से पूर्व ही समाज-दण्ड के वज्र-प्रहार से उनकी कमर टूट जाती थी। ऐसा था—उस समय का वातावरण, जिसे साधु-संस्था ने सन्त और ब्राह्मणों ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनवरत् श्रम-साधना के साथ विनिर्मित किया था।

इतिहास बताता है कि उस समय के जन-साधारण ने लोभ और मोह से जीवन-मुक्ति प्राप्त करली थी। मुट्ठीभर अनाज पेट भरने के लिए कहीं भी किसी को भी मिल जाता है। इसके अतिरिक्त जिन्हें महान् कार्यों की ही चिन्ता रहे, वे एक से एक बढ़े-चढ़े सत्कर्म सम्पन्न करते रहेंगे और उनका लाभ समस्त समाज को मिलता रहेगा। ऐसे लोगों के लिए समस्त विश्व अपना घर था और समस्त मानव-जाति अपना परिवार। अस्तु वे देश-विदेश का अन्तर किये बिना जहाँ भी आवश्यकता, उपयोगिता अनुभव करते थे, वहीं चल पड़ते थे। संसार के कोने-कोने में वे इन्हीं प्रेरणाओं से प्रेरित होकर पहुँचे थे और अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुरूप पिछड़े क्षेत्रों को लाभ पहुँचाये थे। कहीं जाकर शासन-तन्त्र बनाना और चलाना सिखाया तो कहीं कृषि व्यवसाय शिल्प, विज्ञान के आधार खड़े किये। कहीं वे धर्म-प्रचारक बनकर पहुँचे, कहीं रुग्णता से जूझने के लिए करुणा ने उन्हें चिकित्सक का कार्य करने के लिए भेजा। अनीति से लड़ने में भी वे पीछे नहीं रहे। जहाँ अनाचार ने आतंक उत्पन्न कर रखा था, वहाँ प्राणों को हथेली पर रखकर उससे जूझे और तब तक लड़े, जब तक कि न्याय की स्थापना न हो गई। यही है, पुरातन भारत द्वारा विनिर्मित विश्व-इतिहास का ढाँचा।

घर-परिवार में स्नेह-सौजन्य की धाराएँ बहती थीं। पतिव्रत और पत्नीव्रत के आदर्श दो शरीर एक प्राण का जीवन्त प्रमाण प्रस्तुत करते थे। दाम्पत्य मर्यादा बाहर की हर नारी—बहिन, पुत्री और माता थी, इसी क्षेत्र में नारी ने अपना स्तर और भी अधिक ऊँचा उठाकर रखा था। भाई-बहिन के बीच, पिता-पुत्र के बीच, माता और सन्तान के बीच जो स्नेह-सौजन्य बिखरा पड़ता था, उसने घास-फूँस के घरों को ऐसा हर्षोल्लास युक्त बना दिया था जिस पर स्वर्ग की सुषमा को निछावर किया जा सके।

वैयक्तिक जीवन में सादगी, सदाचार, स्नेह, संयम, विनय, सौजन्य, माधुर्य, सहकार एवं औदार्य की छटा देखते ही बनती थी। पवित्रता का बाहर और भीतर पूरा साम्राज्य था। छल, प्रपंच से कोसों दूर सरलता एक-दूसरे का मन मोहती थी। लोग थोड़े से भी बहुत सन्तुष्ट थे। विनोदी और जागरूक प्रवृत्ति ने हर व्यक्तित्व में आकर्षण भर दिया था। सत्य और शिव की उपासना में निरत हर किसी का सौन्दर्य देखते ही बनता था। जहाँ कषाय और कल्मष नहीं, वहाँ कुरूपता कैसे पैर जमा सकेगी ? जिधर भी दृष्टि पड़े उधर ही बसन्ती सौन्दर्य बिखर पड़े, ऐसा था उन दिनों का वातावरण।

आज का हमारा सोचने और देखने का तरीका अलग है। अपने ज्ञान-चक्षु बन्द हैं, केवल चमड़े की आँखें खुली हुई हैं। उनसे मात्र भौतिक पदार्थ और साधन दीखते हैं। कल-कारखाने, रंग-मञ्च, भवन, वाहन आदि के साथ हम प्रगति को जोड़ते हैं। जिसके पास जितना अधिक विलासी संग्रह और उद्धत वैभव है, उसे उतना बड़ा सम्पन्न मानते हैं। प्रतिष्ठा कलावन्तों के अधिकार में चली गई है। मल्ल, नट, नर्तक, गायक, लेखक आदि के करतब देखकर लोग हर्षित होते हैं और वैसे बनना चाहते हैं। वैज्ञानिक, शिल्पी, डाक्टर, इंजीनियर आदि वैज्ञानिक या डाक्टर समृद्ध उत्पादक कहा जाता है। तदनुरूप ही उनका महत्त्व माना जाता है, पुरस्कार दिया जाता है। लोकनायक की परिभाषा में आज केवल राज-नेता या विग्रह उत्पन्न करने वाले आते हैं। यह मूल्यांकन चर्म-चक्षुओं के आधार पर ही ठीक हो सकता है। यदि विवेक-दृष्टि से देखें तो यह सारी उपलब्धियाँ मिलकर भी मानव-कल्याण का उतना साधन नहीं जुटा सकतीं, जितना कि प्राचीनकाल की अकेली साधु-संस्था जनमानस का स्तर ऊँचा उठाने के अकेले कार्य द्वारा सम्पन्न करती थीं।

सुविधा साधन कितने ही क्यों न बढ़ जायें सम्पत्ति का उपार्जन कितना ही अधिक क्यों न बढ़ जाय, जब तक मानवी दृष्टिकोण का परिष्कार न होगा, तब तक न पतन रुकेगा और न सर्वनाशी संकट से छुटकारा मिलेगा। इन दिनों शिक्षा की, चिकित्सा की तथा सुविधा साधनों की दृष्टि से पूर्वजों से कहीं आगे हैं, पर इस एकाकी प्रगति से काम कुछ नहीं बना। उल्टे स्वास्थ्य, सन्तुलन, चरित्र, सौजन्य आदि जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महत्त्वपूर्ण था, उसे गँवाते ही चले जा रहे हैं। पारिवारिक स्नेह सद्भाव के बन्धन अब तब समाप्त ही होते जा रहे हैं। अर्थलिप्सा ने मनुष्य को शोषक भर बना छोड़ा है। छल ने सभ्यता का आवरण पहन लिया है। न किसी को किसी की ममता है, न किसी से स्नेह सहानुभूति। सब अपनी आपाधापी में उलझे हैं। व्यस्तता और व्यग्रता चरमसीमा पर पहुँचती जा रही है। मनुष्य अपने को सर्वथा एकाकी और असुरक्षित अनुभव करता है। इसे प्रेत-पिशाच का जीवन ही कह सकते हैं। इन परिस्थितियों के रहते यदि तथाकथित प्रगति और सम्पत्ति की चकाचौंध सामने आई भी तो उससे किसका क्या बनेगा ? व्यक्तियों का सामूहिक असमंजस समाज गत विभीषिकाओं के रूप में किस प्रकार सामने आता है, इसे हम अगणित उलझनों में उलझे विश्व को दयनीय दुर्दशा के रूप में प्रत्यक्ष देख रहे हैं।

व्यक्ति और समाज को उबारने के लिए हमें फिर पीछे लौटना होगा। दृष्टिकोण के परिष्कार का, भावनात्मक पुनरुत्थान का, उत्कृष्टतावादी आदर्श-परायण कर्तृत्व को—फिर समझना होगा। इसके बिना प्रस्तुत सर्वग्राही संकटों से बच सकना सम्भव न हो सकेगा। स्पष्ट है कि भावनात्मक नव-निर्माण के लिए वाणी और लेखनी के साधन पर्याप्त न होंगे। उसे उच्चस्तरीय व्यक्तित्वों से सुसम्पन्न साधु-संस्था का पुनर्जागरण ही सम्भव कर सकता है। इस युग की यही सबसे बड़ी और सबसे प्रमुख आवश्यकता है।

यह विडम्बना न सुधरेगी न बदलेगी

विधि की विचित्र विडम्बना ही है कि अपने देश में इस समय एक करोड़ के लगभग साधु-संस्था के सदस्य होने पर भी उसमें साधु कहे जा सकने वाले नगण्य ही उपलब्ध हैं। शेष तो पूरा नकली माल ही भरा पड़ा है। पिछली जनगणना के अनुसार भारत में लगभग ८० लाख भिक्षा जीवी हैं। इनमें से १४ लाख ऐसे हैं जो शारीरिक असमर्थता के कारण भिक्षावृत्ति करते हैं। शेष ५६ लाख ऐसे हैं, जो साधु महात्मा का वेष धारण करके अपनी आजीविका चलाते हैं। इसके अतिरिक्त पण्डित पुरोहितों का वर्ग अलग है। वे दान-दक्षिणा का लाभ तो लेते हैं पर भिक्षा-वृत्ति उनकी आजीविका नहीं लिखी गई है क्योंकि वे साथ में अन्य व्यवसाय भी करते हैं। दान-दक्षिणा अतिरिक्त आय का सहायक धंधा जिनका है, ऐसे व्यक्तियों की संख्या साधु-महात्माओं से कम नहीं वरन् अधिक ही हो सकती है। बराबर मानलें तो भी ५६ + ५६ लाख मिलकर वह संख्या एक करोड़ बारह लाख बनती है। भारत की आबादी इन दिनों अरसठ करोड़ है। अनुपात से हर पैंतालीस भारतीयों के पीछे एक साधु-सन्त आता है। यह लोग प्रायः हिन्दू ही हैं। हिन्दुओं की संख्या अपने देश में लगभग ३५ करोड़ है। इन पर हिसाब फैलाया जाय तो हर तीस हिन्दू पीछे एक सन्त का अनुपात आता है।

इतनी संख्या में यदि सचमुच साधुसंस्था के सच्चे सदस्य रहे होते तो भारत अत्यधिक सौभाग्यशाली देश होता। ईसाई धर्मानुयायियों के पास लगभग एक लाख पादरी हैं, वे संसार भर में फैले हुए हैं और जिस तत्परता से अपने धर्म की सेवा कर रहे हैं, उसका परिणाम आश्चर्यजनक हुआ है। इन दिनों संसार की आबादी ४०० करोड़ है। इनमें से ईसाई धर्मानुयायी १२५ करोड़ के करीब हैं। अर्थात् संसार की समस्त जनसंख्या में एक तिहाई के लगभग ईसाई हैं। इस आश्चर्यजनक सफलता में पादरी वर्ग की लगन और तत्परता को असाधारण श्रेय दिया जा सकता है। यों दूसरे लोग भी इनके पीछे हैं। साधन अन्य लोग ही जुटाते हैं पर अगले मोर्चे पर तो उन्हें ही लड़ना पड़ता है। पादरी लोग जिस लगन से अपने प्रयास में जुटे हुए हैं उसे देखते हुए उनके हौसले निरर्थक नहीं है कि अगले २५ वर्षों में संसार की आधी आबादी ईसाई धर्मानुयायी होगी। लगन बड़ी चीज है। मनुष्य की संकल्प शक्ति और क्रिया शक्ति का यदि एकाग्र समन्वय हो जाय तो उसका चमत्कारी प्रतिफल होना स्वाभाविक ही है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारत की साधु संस्था में किसी समय ऐसी ही प्रखरता थी। तब उसने एशिया का कोना-कोना प्रभावित किया था। बौद्धधर्म के प्रचारक सुदूर पूर्व और मध्य एशिया के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में दौड़ पड़े थे। कठिनतम मार्ग उन्होंने पार किये थे। सामान्य-सी नौकाओं के सहारे छः-छः महीने में पार हो सकने वाली समुद्र यात्राएँ उनने की थीं। हिमाच्छादित दुर्लंघ्य पर्वत शृंखलाएँ लांघी थीं। अजनबी देशों में जाकर वहाँ की भाषा सीखी थी। अनभ्यस्त जलवायु में अपने को ढाला था। सघन वन्य प्रदेशों में होकर जाने वाले मार्गों में हिंस्र पशुओं और उफनते नदी नालों से टक्कर ली थी। सम्पत्ति और सिक्का न होने से भिक्षा को निर्वाह आधार बनाया था, और भी न जाने क्या-क्या सहा था। इन प्रचार यात्राओं पर निकलने वालों में से आधे तो मार्ग की कठिनाइयों से जूझते हुए ही शहीद हो जाते थे। जो बचते थे वे वापिस लौट सकना असम्भव मानते थे और शेष जीवन की आहुति मानव परिवार की सेवा-साधना के यज्ञ में प्रसन्नता पूर्वक लगाते थे। यह थी जीवट जिसने किसी समय सम्पूर्ण एशिया को हिन्दू धर्म एवं बौद्ध धर्म के झण्डे के नीचे दीक्षित किया था। इतना ही नहीं उनने पृथ्वी के अन्य महाद्वीपों में भी पदार्पण किया था और सच्चे अर्थों में जगद्गुरु का उत्तरदायित्व निवाहा था।

यह उस जमाने की चर्चा हो रही है जब साधु संस्था जीवन्त स्थिति में थी। उन्हीं दिनों परिव्राजक घर-घर जाकर अलख जगाते थे। जन-जन को प्रेरणा देते थे। सत्संग के लिए कोई उनके पास आये इसकी प्रतीक्षा किये बिना वे स्वयं ही घर पहुँचते थे। कष्ट साध्य रोग से ग्रस्त व्यक्ति अस्पताल कहाँ पहुँच पाता है, डाक्टर को ही उसके द्वार तक चलकर जाना पड़ता है। खेत कब बादलों को तलाश करते फिरते हैं। बादल ही दौड़-दौड़ कर खेतों की प्यास बुझाते हैं। इस प्रयास का ही परिणाम था कि एक भी भारतवासी संतों की पकड़ से बाहर न था।

ब्राह्मण वर्ग पण्डित और पुराहितों के रूप में अपने समीपवर्ती लोगों को यजमान बनाकर पकड़ बैठता था और साधु वर्ग परिव्राजक के रूप में जहाँ आवश्यकता समझता था, वहाँ पहुँचता था और जब तक अभीष्ट प्रयोजन पूरा न हो तब तक ठहरता था। दोनों ही वर्ग मिल-जुलकर अनेकानेक सत्यप्रवृत्तियों का संस्थापन विस्तार एवं पोषण करते थे। भावनात्मक परिष्कार एवं प्रगतिशील गतिविधियों के संचालन में निरन्तर संलग्न साधु संस्था इस देश के नागरिकों को देवस्तर से नीचे नहीं गिरने देती थी। ऐसी दशा में स्वर्गोपम परिस्थितियों का निर्माण स्वाभाविक ही था। उसका लाभ दूर-दूर तक के देशों को मिलना ही था। सो ही होता रहा। जीवन्त साधु-संस्था के महान कर्तृत्व का इतिहास इतना उज्जवल है कि उसे शत-शत कण्ठों से युग-युगान्तर तक गाया सुनाया जा सकता है।

आज संख्या की दृष्टि से साधु संस्था प्राचीन काल की तुलना में अत्यधिक बढ़ी-चढ़ी है, पर वह भार भूत बनकर रह रही है। न उसके पास लक्ष्य है न त्याग, न जीवन न साहस। व्यक्तिवाद, पलायनवाद, भाग्यवाद ने उसे घेर लिया है। सुविधाजनक निर्वाह प्राप्त करने के अतिरिक्त लगता है और कोई उद्देश्य सामने नहीं रहा। साधु-सन्तों को परलोक में स्वर्ग और मुक्ति का सुख चाहिए। इस लोक में बढ़िया निर्वाह और प्रचुर सम्मान। यह सब चाहिए ही। देने को उनके पास कुछ नहीं है। करने को भी कुछ रहा नहीं। परम हंस वेदान्ती भजनानन्दी होकर भी भला सेवा कार्यों के झंझट में पड़ना पड़ा तो फिर गृहस्थ का परिश्रमशील जीवन ही किस लिए छोड़ा ?

ब्राह्मण वर्ग को वंश के आधार पर ही जब अभिवादन सम्मान मिल गया तो उसे आदर्शवाद के झंझट में पड़ने से और क्या अतिरिक्त लाभ मिलेगा। दान दक्षिणा का लाभ भी अनायास ही मिल जाता है तो सेवाधर्म अपनाने से भी और अधिक क्या मिलना है ? मन्त्रोच्चारण अथवा कर्मकाण्डों का विधि-विधान सीख लिया तो देवताओं से लाभ-हानि कराने की ऐजेन्सी हाथ लग गई। लोगों पर दबदबा बनाये रखने के लिये यही हथकण्डा क्या कम है। मुहर्त, जन्म-पत्र, ग्रह-दशा आदि नाम पर किसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को भी डराता रोका जा सकता है, यह अधिकार भी क्या कम है ? देवताओं के प्रतिनिधि—ईश्वर के निकटवर्ती पापों के दण्ड फल से छुटकारा दिलाना सस्ते में स्वर्ग का साधन बना देना जैसे सूत्र जब हाथ लग गये तो आज का ब्राह्मण उन झंझटों में क्यों पड़े, जिनमें उसके पूर्वज पड़े और मरे खपे।

आज की साधु संस्था की गति विधियों का निरीक्षण करे और यह देखे कि उसका क्या अनुदान समाज को मिल रहा है तो भारी निराशा होती है। मन्त्र तन्त्र के जाल जंजाल—कथा पुराणों के विनोद प्रसंग—अन्ध- विश्वासी प्रचलनों का समर्थन खर्चीले कर्मकाण्डों में जन सम्पदा का अपव्यय जैसे निरर्थक क्रियाकलापों में स्वयं उलझे हुए और दूसरों को उलझाते हुए ही उन्हें पाया जायेगा। यदि यह शक्ति उपयोगी कार्यों की ओर मुड़ गई होती तो भारत के सात लाख गाँवों में से प्रत्येक के पीछे आठ-आठ सन्त आते और , वे देखते-देखते निरक्षरता, गन्दगी, व्यसन, सामाजिक कुरीतियाँ जैसी दुखदायी समस्याओं को सहज ही हल कर सकते थे। जन-सहयोग जुटाकर श्रमदान से एक से बढ़कर उपयोगी निर्माण कार्य खड़े कर सकते थे। एक-एम मुट्ठी अनाज संग्रह करके उन सृजनात्मक कार्यों को ही सहज सम्पन्न कर सकते थे, जिन्हें करने की बात सरकार के सामने अभी चिरकाल तक विचाराधीन ही बनी रहेगी।

एक छेटा-सा गाँव– दो सौघरों का, उसमें दो सौ मुट्ठी अन्न धर्म-घटों में इकट्ठा कराया जाता रहे तो प्रतिदिन प्रायः ५० किलो अन्न जमा होता है लगभग ५०) प्रतिदिन की इस आमदनी का अर्थ हुआ महीने में १५००) इतने धन से उस गाँव के बालकों की, प्रौढ़ों की शिक्षा समस्या हल हो सकती है। स्वच्छता का प्रबन्ध हो सकता है। एक परिवार पीछे एक आदमी एक घण्टा श्रमदान दिया करे तो दो सौ घरों से २०० घण्टे का श्रम मिला अर्थात् आठ घण्टे श्रम करने वाले २५ श्रमिकों की व्यवस्था हो गई। इस समय में सफाई, मल-मूत्र, गृह,खाद के गड्ढे सड़कों की चौड़ाई तालाबों की सफाई, बाँधों का निर्माण आदि न जाने कितने उपयोगी कार्य हो सकते हैं ? हर गाँव में आठ साधु डेरा डालकर पड़ जायें और उसमें हर घर से एक मुट्ठी अनाज एवं एक घण्टा श्रम प्राप्त करने का प्रयास करले तो देखते-देखते गाँव का काया-कल्प हो सकता है।

यह तो एक छोटा उदाहरण हुआ। वस्तुतः ५६ लाख साधु-संख्या और ५६ लाख ब्राह्मण संख्या इतनी बड़ी जन-शक्ति है कि उसके आधार पर न केवल भारत का, वरन् समस्त संसार का पुनर्निर्माण सरल और सम्भव हो सकता है।

किन्तु ऐसा हो नहीं सकता क्योंकि यह वर्ग जिस ढाँचे में ढल गया है, जिस वातावरण ने उन्हें जकड़ रखा है, वह सब बहुत ही सड़ा-गला है। उसमें विडम्बनाएँ पल सकती हैं, कोई बड़ा प्रयोजन पूर्ण नहीं हो सकता। अब यह वर्ग तप त्याग कर सकने की स्थिति में नहीं रहा क्योंकि मध्यकाल के अज्ञानान्धकार युग में साधु-संस्था का दर्शन ही आक्रमणकारियों ने विकृत कर दिया है, अब उसमें सुधार कदाचित ही हो सके। कितना अच्छा होता कि वर्तमान साधु-संस्था ही सुधर या बदल सकी होती तो फिर नये सिरे से कुछ न करना पड़ता। इन लोगों के थोड़ा-सा बदल जाने से काम चल जाता है, पर वैसा अशक्य है, क्योंकि क्रियाएँ विचारणा पर निर्भर रहती हैं। आदर्शों की प्रबल प्रेरणा ही मनुष्य से तप-त्याग भरे कष्ट-साध्य कार्य करा लेती हैं, उसका अभाव हो तो क्रियाएँ सर्वथा निर्जिव रहेंगी और लकीर पीटने की तरह विवशता में अथवा प्रदर्शन के लिए कुछ चिह्न-पूजा की जाती रहेगी। उससे कुछ काम बनेगा नहीं।

हमने व्यक्तिगत रूप से पूरे तीस वर्ष तक इस सन्दर्भ में पूरा-पूरा प्रयास किया है। लगभग हर जमात, सम्प्रदाय वालों से मिले हैं, यह अनुरोध किया है कि देश की प्रगति में किसी प्रकार योगदान दें। यही प्रार्थना पण्डित, पुरोहितों से भी करते रहे। वे कथा-वार्ताओं में, पूजा-उपचारों में कुछ तो ऐसा कहते ही रह सकते हैं, जो व्यक्ति एवं समाज को ऊँचा उठाने में, आगे बढ़ाने में राई-रत्ती सहायता कर सकें। पर उत्तर में यही प्रतिक्रिया प्राप्त हुई कि उन्हें इस सन्दर्भ में कोई दिलचस्पी नहीं है। स्वर्ग,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मुक्ति की ठेकेदारी से आगे एक कदम भी बढ़ने का उनका इरादा नहीं है। देवताओं को वश में करना उन्हें अभीष्ट है या फिर जनता को ऐसी पट्टी पढ़ाने में उनकी रुचि है, जिससे लोग उनका अधिक रौब मानें, अधिक धन और सम्मान प्रदान करें। लोक-मंगल को वे 'माया में पड़ना' कहते हैं। सेवा करना 'शूद्रों का काम' बताते हैं। जो दुखी हैं, उन्हें पाप-दण्ड भुगतने वाला सिद्ध करते हैं और कहते हैं—ईश्वर के विधान में बाधा डालकर सुधार-संभाल की बातें करने वाले भगवान के क्रोध के भाजन बनेंगे। जो हो रहा है—ईश्वर की मर्जी है। जो होने वाला है—ईश्वर की मर्जी से होगा। सेवा सुधार की बात करना व्यर्थ है। जिनने इस प्रकार की मान्यताएँ बना रखी हों, उनसे यह आशा करना निरर्थक है कि मानवी प्रगति में किसी प्रकार का योगदान करने के लिए वे सहमत हो सकेंगे।

वस्तुतः दोष उनका भी नहीं है। वे एक भ्रान्त-दर्शन के शिकार हैं। मुसलमानी आक्रमण के समय एक ओर जहाँ मन्दिर-मठ गिराये जा रहे थे, कत्लेआम हो रहे थे, वहाँ दूसरी ओर गहरी रिश्वतें देकर यह प्रयास भी किया जा रहा था कि कुछ धर्म-गुरुओं को अपने पक्ष में मिलाकर भारतीय दर्शन को भ्रष्ट किया जाय। जहाँ आत्म परिष्कार और लोकमंगल के सारे तत्व उसमें से हटा दिये गये और भाग्यवाद, पलायनवाद, पराधीनतावाद; व्यक्तिवाद का विष उसमें घुला दिया गया, ताकि विचारशील व्यक्ति अपने स्वर्ग-मुक्ति के धन्धे में फंस जाय और जनता को अन्याय सहने के लिए भाग्यवाद, ईश्वर-इच्छा के नाम पर पददलित पड़ा रहने दिया जाय। उसी दार्शनिक भ्रष्टाचार की शिकार आज की साधु-संस्था है। उस विष से वह इस कदर मूर्छित हो गई कि अब उसके उद्धार का कोई उपाय शेष रहा नहीं दीखता।

इस आपत्ति-काल में हम थोड़ा साहस तो करें ही!

क्रिया या कलेवर एक जैसे होने पर भी व्यक्तियों की वास्तविकता एक जैसी नहीं हो सकती। किसी ऐतिहासिक व्यक्ति की फिल्म बनाने वाले उसी जैसी शक्लसूरत का आदमी ढूँढ़ निकालते हैं और उससे ऐक्टिंग भी वैसा ही करा लेते हैं। इतने पर भी वह नर वैसा नहीं हो सकता, जैसा कि वह मृत व्यक्ति था। सूर, कबीर, मीरा, तुलसी, चैतन्य, विवेकानन्द, ज्ञानेश्वर आदि पर फिल्में बन चुकी हैं। जिसने पार्ट किये हैं, वे देखने वाले को असली या नकली के भ्रम में डाल देते हैं। 'बहुरूपिये' कई-कई तरह के वेष बदलकर दर्शकों को चक्कर में डाल देते हैं और अपनी कला का पुरस्कार पाते हैं। इतने पर भी वे उस असली के स्थान पर नहीं पहुँच सकते, जिसकी कि नकल बनाई गई थी।

आज साधु ब्राह्मणों की नकल बनाने वाले बहुरूपियों की—ऐक्टरों की भरमार है। जटा, कमण्डल, धूनी, चिमटा, दाढ़ी, कोपीन सब ऐसी मानो महर्षि वेदव्यास अभी सीधे ही हिमालय से चले आ रहे हैं। ब्राह्मणों के तिलक-छाप, पगड़ी, दुपट्टा, कथा, मन्त्रोच्चार ठीक वैसा ही जैसे गुरु-वशिष्ठ का आगमन अभी-अभी हो रहा है। बाहरी दृष्टि से सब कुछ ऐसा बन जाता है कि 'टू कापी' कहने में किसी को झिझकना न पड़े। किन्तु आचार और विचार में जमीन-आसमान जितना अन्तर होने से उस नकल से कुछ प्रयोजन सधता नहीं—कुछ बात बनती नहीं।

अवांछनीय लाभ उठाते रहने वाले वर्गों को कष्टसाध्य आदर्शवादी मार्ग पर चलने के लिए तैयार करना प्रायः असम्भव हो जाता है। राजा लोग समय रहते बदल सकते थे। ऐसा करके वे अपना प्रभाव और वर्चस्व भी बनाये रह सकते थे, जनता का हित कर सकते थे और दुर्गति से बच सकते थे, पर उनसे वैसा साहस करते बन नहीं पड़ा। जमीदार, रईस, सामन्त मिटते गये, पर बदले नहीं। जिन्हें मुफ्त में प्रचुर धन वैभव मिल रहा है। बिना तप, त्याग के पूजा-सम्मान पा रहे हैं, उनकी आत्मा इतनी वलिष्ठ नहीं हो सकती कि आदर्शवादी जीवनचर्या अपना सकें, अहंकार को त्याग सकें और कष्टसाध्य सेवासाधना में अपने को संलग्न कर सकें। यह इसलिए और भी अधिक कठिन है। कि उन्हें आरम्भिक प्रेरणा व्यक्तिवादी स्वार्थपरता की पूर्ति से मिली है। उनका मन, मस्तिष्क इसी लाभ ने आकर्षित किया है। लोक में धन, सम्मान, परलोक में स्वर्ग-मुक्ति का लाभ तनिक-सा वेष बदलने भर से मिल सकता है। यही आकर्षण उन्हें इस राह पर खींचकर लाया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरों का शोषण अपनी स्वार्थ सिद्धि जिन्हें उपयुक्त जँची है, उन्ही ने इस मार्ग पर छलाँग लगाई है। यदि उन्हें आरम्भ में ही तप, त्याग, संयम, सेवा की बात कही जाती तो कदाचित वे साधु बनने के लिए कदापि तैयार न होते। इस आन्तरिक दुर्बलता का लगातार पोषण ही होता रहा है, समर्थन ही मिलता रहा है। अब वे अपनी मूल मान्यताएँ बदलें तभी उन्हें सेवा-साधना की बात जँचे-रुचे। यह इतना कठिन है, जिसे असम्भव भी कहा जा सकता है। जो लोग संसार को माया कहते रहे हैं, सेवा को शूद्रों का कार्य बताते रहे हैं, जिन्हें "तोहि बिरानी क्या पड़ी, तू अपनी निरबेर" की बात आदि से अन्त तक सुनने को मिलती रही है, वे परम गहन, सेवा-धर्म स्वीकार करने का प्रभु समर्पित जीवन जीने का साहस कर सकेंगे, ऐसी आशा नहीं ही की जानी चाहिए।

वर्तमान साधु-ब्राह्मणों का दरवाजा खटखटाते हमें एक युग बीत गया। उन्हें नीच-ऊँच समझाने में जितना श्रम किया और समय लगाया, उसे सर्वथा व्यर्थ चला गया ही समझना चाहिए। निराश होकर ही हमें इस नतीजे पर पहुँचना पड़ा है कि सड़ी वस्तु को पुनः स्वस्थ स्थिति में नहीं लाया जा सकेगा। हमें नई पौध लगाने और नई हरियाली उगाने के लिए अभिनव प्रयत्न करने होंगे। उसी का आरम्भ कर भी रहे हैं।

विश्वास किया जाना चाहिए कि आदर्शवादिता अभी पूरी तरह अपंग नहीं हो गई है। महामानव स्तर की भावनाएँ सर्वथा विलुप्त नहीं हो गई हैं। लोभ और मोह ने मनुष्य को जकड़ा तो जरूर है, पर वह ग्रहण पूरा खग्रास नहीं है। सूर्य का एक कोना अभी भी खाली है और उतने से भी काम चलाऊ प्रकाश किरणें विस्तृत होती रह सकती हैं। ऋषि-रक्त की प्रखरता उसकी सन्तानों की नसों में एक बूँद भी शेष न रही हो—ऐसी बात नहीं है। दम्भ का कलेवर आकाश छू रहा है—सो ठीक है, पर सत्य ने अभी मरण स्वीकार नहीं किया है। आपाधापी में हर व्यक्ति अन्धा हो रहा है, पर ऐसा नहीं समझना चाहिए कि परमार्थ की परम्परा का अस्तित्व ही समाप्त हो गया है। देश, धर्म, समाज और संस्कृति की बात सोचने के लिए किसी के भी मस्तिष्क में गुंजाइश नहीं रही हो, अभी ऐसा अन्धकार नहीं छाया है। अब किसी के भी मन में दूसरों के लिए दर्द न रह गया हो, दूसरों के सुख में अपना सुख देखने वाले हृदय सर्वथा उजड़-उखड़ गये हों, ऐसी बात नहीं है। धर्म के बीज नष्ट तो कभी भी नहीं हुए हैं। आत्म-सत्ता की वरिष्ठता का आत्यन्तिक मरण हो गया हो—ऐसी स्थिति अभी नहीं आई है। मनुष्य ने पाप और पतन के हाथों अपने को बेच दिया हो और देवत्व से उसका कोई वास्ता न रह गया हो—ऐसा नहीं सोचना चाहिए। मानवी समानता अभी कहीं न कहीं, किसी न किसी अंश में जीवित जरूर मिल जायेगी। हम उसी को ढूंढ़ेंगे। जहाँ थोड़ी-सी साँस मिलेगी, वहाँ आशा के चँवर डुलाऐंगे और कहेंगे—पशुता से ऊँचे उठकर देवत्व की परिधि में प्रवेश करने का प्रयत्न करो। मरणोन्मुख मनुष्यता तुम्हारी बाट जोहती है। चलो, उसे निराश न करो। हमें आशा है कि कहीं न कहीं से ऐसी आत्मा ढूँढ़ ही निकाली जा सकेगी, जिनमें मानवी महानता जीवित बच रही हो। उन्हें युग की दर्द भरी पुकार सुनने के लिए अनुरोध करेंगे और कहेंगे—मनुष्य जाति को सामूहिक आत्महत्या करने से रोकने का अभी भी समय बाकी है। कुछ तो अभी भी किया जा सकता है, सो करना चाहिए। अपने को खोकर यदि संस्कृति को जीवित रखा जा सकता है तो इस सौदे को पक्का कर ही लेना चाहिए।

साधु-सस्था को पुनर्जीवित करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं, जिसके सहारे आपत्ति ग्रस्त मानवता की प्राणरक्षा की जा सके। समस्याओं के काल-पाश में गर्दन फँसाये हुए इस सुन्दर विश्व को मरण से केवल साधु ही बचा सकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक-दूसरे का मुँह न ताका जाय, वरन् इस आपत्ति काल से जूझने के लिए अपना ही कदम बढ़ाया जाय।

अखण्ड-ज्योति परिवार की मणिमाला में एक से एक बढ़कर रत्न मौजूद है। समय आने पर उनके मूल्यवान् अस्तित्व का परिचय हर किसी को मिल सकता है। अब उसी का समय आ पहुँचा। हमें समय की पुकार पूरी करने के लिए स्वयं ही आगे आना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यों साधु ब्राह्मण का एकसमान जीवन-क्रम होता है और उसी विधि से पूरी जिन्दगी की रूपरेखा बनाने की प्रथा है। पर आपत्ति धर्म के अनुसार सीमित समय के लिए उस क्षेत्र में प्रवेश करने और फिर वापिस अपने स्थान पर लौट आने की पद्धति अपनानी पड़ेगी। या तो पूरा या कुछ नहीं की, बात पर अड़ने की आवश्यकता सदा नहीं होती। मध्यम मार्ग पर चलने से कुछ तो लाभ होना ही है। पूरी न मिले तो अधूरी से काम चलाने की नीति है। युद्धकाल में प्रत्येक वयस्क नागरिक को बाधित रूप से सेना में भर्ती होने का आदेश दिया जा सकता है। जब तक संकट काल रहता है, तब तक वे सामान्य नागरिक सेना में भर्ती रहते हैं। स्थिति सुधरते ही वे सेना छोड़कर घर वापिस आ जाते हैं और अपने साधारण कार्यों में लग जाते हैं। साधु-संकट के इस महान् दुर्भिक्ष में भी हम सामान्य नागरिकों को थोड़े-थोड़े समय के लिए उन उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के लिए आगे आना चाहिए। एक-एक घण्टा श्रमदान करके जब बड़े-बड़े सार्वजनिक प्रयोजन पूरे किए जा सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि हम सब स्वल्प-कालीन व्रत धारण करके साधु-संस्था पर छाये हुए दुर्भिक्ष संकट का निवारण करने के लिए कुछ न कर सकें।

पूरे समय के लिए तत्काल भावनात्मक नव-निर्माण को ब्राह्मणोचित परम्परा का निर्वाह करने के लिए हर किसी को नहीं कहा जा सकता। जिनने पारिवारिक उत्तरदायित्व पूरे कर लिये हैं, उन्हें वानप्रस्थ में प्रवेश करने के लिए बहुत दिनों से कहा जा रहा है। जुलाई ७३ की अखण्ड ज्योति में इस सन्दर्भ में अधिक जोर दिया गया है और जो घर की जिम्मेदारियों से निवृत्त हो चुके, उन्हें परमार्थिक-जीवन में प्रवेश करने के लिए वानप्रस्थ में प्रवेश करने का अनुरोध किया गया है। उनके छः-छः महीने के साधना-शिक्षा का भी प्रबन्ध किया गया है। पहला सत्र २० जनवरी से आरम्भ भी हो रहा है। इसी शृंखला में दूसरे स्तर के कनिष्ठ वानप्रस्थ वे होंगे—जो अभी शेष जीवन पूरी तरह इस महान् लक्ष्य के लिए समर्पित करने की स्थिति में तो नहीं हैं, पर अधिकाधिक साहस इसके लिए जुटाते रहेंगे। इन कनिष्ठ वानप्रस्थों का प्रशिक्षण २५ अप्रैल से दो महीने के लिए आरम्भ होगा।

अब इस शृंखला में एक नई कड़ी और जोड़ी जा रही है कि जिन्हें जब जितना अवकाश हुआ करे, तब वे उतने समय के लिए परमार्थ प्रयोजनों के लिए अपना समय लगाने का निश्चय करें और उन्हें कहाँ क्या करना है—इस निर्देश 'युग-निर्माण योजना' मथुरा से प्राप्त कर लिया करें। इस प्रकार थोड़ा-थोड़ा समय भी अनेक व्यक्ति देने लगेंगे तो उस सबका सम्मिलित परिणाम बहुत बड़ा हो जायेगा। एक लाख व्यक्ति ऐसे थोड़ा-थोड़ा समय देने वाले हों तो उन सबका मिला हुआ कार्य हजारों नियमित एक पूरे जीवन के लिए साधु-संस्था में प्रवेश करने वालों जितना ही हो जायेगा। यह प्रक्रिया सरल बैठेगी। इस योजना के अन्तर्गत व्यस्त पारिवारिक बोझ से लदे हुए व्यक्ति भी थोड़ा-बहुत समय देते रहेंगे तो उन्हें यह पश्चाताप न रहेगा कि हम घरेलू झंझटों में उलझे रहने के कारण युग की पुकार को पूरा करने के लिए कुछ भी न कर सके। ऐसे व्यक्ति पूरा न सही—अधूरा सही का थोड़ा-बहुत अवसर पाकर भी आत्म-सन्तोष की एक साँस ले सकते हैं और कह सकते हैं कि मानवता पर छाई हुई विषम बेला में हम मूक-दर्शक बने रहने वाले अभागों में से नहीं हैं। जितना कुछ संभव था, उतना तो किया ही।

बँधा रुपया न मिले। एक-एक पैसे वाले सौ सिक्के मिल जायें तो गिनने, धरने उठाने का झंझट तो जरूर रहेगा, पर प्रयोजन वही पूरा हो जायेगा—जो एक रुपये से सम्भव होता है। पूरे समय के लिए वानप्रस्थ न मिले तो थोड़ा-थोड़ा समय देने वाले अनेकों का सहयोग लेकर भी सामयिक संकट से जूझने का सुयोग बन सकता है।

सन्यास के आदर्श बहुत ऊँचे हैं। उन्हें निवाहना पूरा समय देने वाले शिथिल प्रकृत मनुष्यों के लिए सम्भव नहीं। इसके प्रतिबन्ध बड़े हैं। भिक्षाटन आज की स्थिति के उपयुक्त नहीं रहा। जिस-तिस का जैसा-तैसा अपमान अवज्ञा और उपेक्षापूर्वक मिला कुधान्य किसी सन्यासी की बुद्धि को सतोगुणी एवं सन्तुलित नहीं रहने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देता। ऐसी-ऐसी अनेक कठिनाइयों के कारण आज की परिस्थितियों में सन्यास के प्रति हम असहमति प्रकट करते रहे हैं और यही कहते रहे हैं कि परमार्थ प्रयोजन के लिए समर्पण करने वालों के लिए वानप्रस्थ ही उपयुक्त है। उसमें घर परिवार के साथ सम्बन्ध बनाये रहने की सुविधा है। साथ ही प्रतिबन्ध में उतने कड़े नहीं है। हरिजन शब्द की तरह आज सन्यास भी निठल्ले, अकर्मण्य लोगों का पर्यायवाची बन गया है। इसलिए भी हम वानप्रस्थ को ही इन दिनों साधु और ब्राह्मण का सम्मिश्रित स्वरूप मानते रहे हैं और उसी में उत्तरार्द्ध परम्परा के दोनों आश्रमों का समावेश करते रहे हैं। आज की स्थिति में युग-धर्म के अनुरूप यही हल सर्वोत्तम है।

अपनी योजना के अनुसार 'अखण्ड ज्योति परिवार' के प्रबुद्ध परिजनों को थोड़े-थोड़े समय के लिए वानप्रस्थ लेने का साहस करना चाहिए और नियत अवधि पूरी करके अपने घरों को लौट जाना चाहिए। जब-जब उन्हें अवकाश मिले, तब-तब ऐसे कदम बार-बार उठा सकते हैं। नियत समय पर नियत अवधि के लिए पहले से भी ऐसा व्रत ले लिया जाय तो उससे अपने ऊपर एक बन्धन, उत्तरदायित्व बँधता है। इस दृष्टि से वैसा साहस कर गुजरना वैसा ही है—जैसा कि परीक्षा का फार्म भर देने पर पढ़ने की गति एवं चेष्टा में गतिशीलता का आना। यह प्रक्रिया यदि उत्साहपूर्वक अपनाई जा सके तो साधु-संस्था के मरणासन्न होने के कारण विश्व-मानव के सिर पर विनाश की जो काली घटाएँ छा रही हैं, उन्हें सुविधापूर्वक हटाया जा सकता है।

प्रस्तुत विकृतियाँ और उनके निराकरण का एकमात्र आधार

युग परिवर्तन की महती आवश्यकता की पूर्ति के लिए भावनाशील व्यक्तियों के प्रबल पुरुषार्थ के साथ उठ खड़े होने का ठीक यही समय है। बढ़ती हुई दुष्प्रवृत्तियों का प्रवाह क्रम इतना प्रचण्ड है कि यथा-स्थिति बनाये रहना किसी भी दृष्टि से वांछनीय नहीं। जन-मानस में विकृतियाँ इस कदर बढ़ती जा रही हैं कि उनके विद्रूपविस्फोट कभी भी विपत्ति खड़ी करके रख देंगे।

अपराधों की दुष्प्रवृत्तियाँ प्रत्यक्ष और परोक्ष स्तर पर इतनी बढ़ती जा रही हैं कि अब किसी घोषित सदाचारी के भी छद्म दुराचारी होने की आशंका रहती है। लगता है चरित्र निष्ठा कोई तथ्य न रहकर वाक-विलास की—परस्पर उपदेश करने में काम आने वाली चर्चा चर्या—बनकर रह गई है।

एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के प्रति अविश्वास चरम सीमा तक बढ़ता जा रहा है। किसी को किसी का भरोसा नहीं—न जाने कौन आज मित्र बनकर कल शत्रु जैसा अप्रत्याशित आक्रमण कर बैठे, इससे हर किसी का दिल दहलता रहता है। पति और पत्नी के बीच की गई पवित्र प्रतिज्ञाएँ एक मखौल जैसी बन गई हैं। छोटे-छोटे कारणों को लेकर कितनी ही परित्यक्ता बना दी जाती हैं और कितनों का प्राण हरण कर लिया जाता है। ऐसे पैशाचिक-कृत्य अब अपवाद नहीं रहे। विवाह के समय देखे गये सुखद-स्वप्नों को रौरव नरक में परिणत होते हुए अगणित सधवाएँ देखती हैं और खून के आँसू बहाती हुई विवशता भरी दुर्दशा के बीच मौत के दिन गिनती हैं। सुखद और सन्तुष्ट दाम्पत्य जीवन का आनन्द किन्हीं विरले ही सौभाग्यवानों को मिलता है अन्यथा कामुक दृष्टि की प्रधानता के कारण पवित्र विवाह-संस्था का लगभग दम ही घुट चला है।

पिता पुत्र के सम्बन्ध अब नाम मात्र के रह गये हैं। पुत्र जब तक वयस्क नहीं होते तभी तक बेटे रहते हैं। जैसे ही पर उगे—विवाह हुआ—आजीविका से लगे, वहीं माता-पिता और भाई-बहिनों का रिश्ता प्रायः समाप्त ही हो जाता है। परिवार संस्था जब समस्त संसार में टूट गई तो अकेले भारत में ही वह कब तक चलती ? पशु-पक्षियों के बालक भी कहाँ अपने माता-पिता को सँभालते हैं—और पिता-माता भी सन्तान से कब कुछ आशा करते हैं, ऐसी दशा में मनुष्य ही उस बन्धन में क्यों बँधे ? उपेक्षा का आरम्भ सन्तान की ओर से भले ही हुआ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो पर उसकी प्रतिक्रिया तो माँ-बाप पर भी होती ही है। पाश्चात्य देशों में पति-पत्नी के बीच—बाप-बेटे के बीच ऐसा कोई आधार नहीं कि कोई किसी से आड़े समय से भी सहायता की आशा कर सके। जब पशु जीवन में ही प्रवेश करना लक्ष्य बन गया तो फिर परिवार संस्था के बीच उच्च आदर्श कब तक जीवित रह सकते थे ? कहना न होगा कि घर-परिवार अब एक होटल, कम्यून-केण्टीन जैसे बनते चले जा रहे हैं। एक समूचे राष्ट्र या समाज का स्वरूप इस छोटी प्रयोगशाला में प्रस्तुत रहने और स्वर्गीय अनुभूतियों का प्रत्यक्ष आनन्द प्रस्फुटित होते रहने वाली स्थिति अब कहाँ किस परिवार की है ?

असंयमी मनुष्य अहर्निशि अपने पैरों पर कुल्हाड़ी बजाता रहता है। नशेबाजी से अब कोई बिरला ही बचा होगा। तमाखू और चाय अब मात्र-जल जैसी आवश्यकता बन गई है। चटोरेपन ने आहार को लगभग विष स्तर का बना दिया है, जिसे खाकर जीवनधारण का प्रयोजन पूरा नहीं होता वरन् वह उलटा जीवन को खाता है। कामुकता किशोरावस्था आरम्भ होने से पहले ही पनप उठती है और बहुमूल्य जीवन रस का क्षरण उस अवोध एवं अपरिपक्व स्थिति में ही आरम्भ हो जाता है। ऐसी दशा में जवानी और बुढ़ापा गाठ जोड़ करके साथ-साथ आने लगे हैं तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? यौवन आने से पूर्व ही शरीर का दीन दुर्बल रोग ग्रसित स्थिति में देखी जा सकती है। अब दवा और डाक्टर दैनिक आवश्यकताओं में जुड़ गये हैं, इनकी सहायता के बिना किन्हीं विरलों की ही काया का छकड़ा आगे धकेला जाता है।

मनोविकारों की तो हद हो गई है। शरीर टूट रहे हैं ये तो प्रत्यक्ष ही है। मनों के भीतर कितनी विषाक्त विकृतियाँ धँस पड़ी हैं, इसे थोड़ी गहराई में उलट-पलट कर देखा जाये तो लगेगा कि मनुष्य जैसी गुण, कर्म स्वभाव वाली—विचारणा, अभिरुचि और आकांक्षा वाले—व्यक्तियों को उँगलियों पर गिन सकने जितनी संख्या में भी ढूँढ़ निकालना कठिन है। सब की अपनी-अपनी सनकें हैं—अपनी-अपनी उद्दण्ड आदतें मर्यादाओं के बाँध तोड़कर उच्छृंखलता का पानी भयावह बाढ़ों को पीछे छोड़ रहा है। क्रोध, आवेश उत्तेजना से ग्रसित मनःस्थिति तनिक-सी बात पर खून खराबी के लिए बाहें चढ़ाकर फिरती देखी जा सकती हैं। खीज, ईर्ष्या, प्रतिशोध और विद्रोह का असुर अपने आदिम अस्त्रों से सुसज्जित होकर कहीं पर भी श्रोणित-तर्पण प्रस्तुत करता देखा जा सकता है। हत्याओं और आत्महत्याओं का सिलसिला इतनी द्रुतगति से आगे बढ़ रहा है मानो यह भी साधारण, स्वभाविक जीवन का एक अंग ही बनने जा रहा हो। सभ्यता का आवरण ओढ़े हुए मानव-प्राणी आदिमकालीन हिंस्र पशुओं की स्थिति में लौटने के लिए कितना आकुल-व्याकुल हो रहा है यह देखते हुए अवाक रह जाना पड़ता है और सोचना पड़ रहा है कि प्रगति के कदम आगे की ओर बढ़ रहे हैं या पीछे की ओर।

चिन्ता, निराशा, आशंका, असुरक्षा, एवं अविश्वास से बचा हुआ स्वच्छ मन अब किसी विरले को ही दृष्टिगोचर होगा। सन्तुलित दृष्टिकोण लेकर वस्तुस्थिति समझ सकने वाले और यथार्थता का मूल्यांकन कर सकने वाले लोग अब ढूंढे नहीं मिलेंगे। जिसे देखो अहंकार भरे आक्रोश और आवेश—पक्षपात और पूर्वाग्रह में ग्रस्त मिलेगा। ऐसी दशा में विवेक की—न्याय की—औचित्य की दुहाई देना अरण्य रोदन जैसा निरर्थक बनकर रह जाता है जिसकी लाठी उसकी भैंस वाले जंगली कानून का जहाँ बोलबाला हो वहाँ आतंकवादी, गुण्डागर्दी ही मनमानी करेगी, यही सब कुछ हो रहा है। थोड़े से आतंकवादी अपने क्षेत्र पर इस तरह छाये मिलेंगे मानो विरोध-प्रतिरोध की उन्हें कोई आशंका सम्भावना ही न रह गई हो। हर भले आदमी के लिए इज्जत बचाकर जिन्दा रह सकना कठिन बन गया है। न्याय की चर्चा तो बड़ी सुन्दर है पर इसे प्राप्त कर सकना ईश्वर को प्राप्त कर सकने से भी अधिक दुर्लभ है। सर्वसाधारण को न्याय मिल सके ऐसी आज की स्थिति नहीं है और न सरकारी मशीनरी ही उस प्रयोजन को पूरा करा सकने में समर्थ है। ऐसी दशा में सदुद्देश्यों पर से—आदर्शों पर से मनुष्यों की निष्ठा प्रायः उठती-सी चली जा रही है। लोग अनास्थावान बनते चले जा रहे हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह दयनीय स्थिति हमें अपने चारों ओर बिखरी दिखाई पड़ेगी और थोड़ा ध्यान देने पर प्रतीत होगा कि मनुष्य जाति कितनी दयनीय दुर्दशा में फँस गई है। यों सज्जनों का—सत्प्रवृत्तियों का—सद्भावनाओं का सर्वथा अभाव नहीं है। सुविस्तृत मरुस्थल में जहाँ-तहाँ हरियाली उगी हुई और छोटी शीतल सरोवर भी देखी जा सकती है पर इन दृश्यों को अपवाद ही कहा जा सकेगा। सामान्य स्थिति जो बन चुकी है और उसमें बिगाड़ के तत्व जिस क्रम से बढ़ रहे हैं, उसे देखते हुए दुःखदायी निराशा भरी अन्धियारी आसमान से उतरती चली आ रही है ऐसा ही माना जायेगा।

सुधारवादी तत्वों की स्थिति और भी उपहासास्पद है। धर्म, अध्यात्म, समाज एवं राजनीति के क्षेत्रों में सुधार एवं उत्थान के नारे जोर-शोर से लगाये जाते हैं पर उन क्षेत्रों में जो हो रहा है—जो लोग कर रहे हैं, उसमें कथनी और करनी के बीच जमीन आसमान जैसा अन्तर देखा जा सकता है, ऐसी दशा में उज्जवल भविष्य की आशा धूमिल ही होती चली जा रही है। विज्ञान के द्वारा—साहित्य और कला के द्वारा—मूर्धन्य व्यक्तित्वों द्वारा जो भूमिका प्रस्तुत की जा रही हैं उनसे सत्परिणामों की आशा नहीं बँधती—वरन् निराशाजन्य दुष्परिणामों की ही आशंका बढ़ती है। देश-देश की राजनीति में जो शतरंज बिछी हुई है, उसमें एक-दूसरे को मात देने के लिए पूरी दुरभि-सन्धियाँ संजोये हुए प्रवीण शकुनि अपनी-अपनी जगह मजबूती से जमे बैठे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति विस्फोटक होती जा रही है। कब किसी दिन विश्व-युद्ध फूट पड़े और कब अणु आयुधों के प्रहार से संचित-सभ्यता का सर्वनाश प्रस्तुत हो जाय कुछ कहा नहीं जा सकता ? यह विभीषिका कल-परसों ही अपने सर्वभक्षी विकराल रूप में सामने खड़ी दृष्टिगोचर हो सकती है और ब्रह्माण्ड के इस अनुपम सौन्दर्य वाले पृथ्वी पिण्ड को महाप्रलय ग्रस सकती है।

हम आज ऐसे ही विपत्ति भरे क्षणों में जीवन-यापन कर रहे हैं। प्रश्न फिर वही सामने आते हैं कि क्या यथास्थिति बनी रहने दी जाय ? क्या हम सब ऐसे ही समय की प्रतीक्षा में ऐसे ही हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहें ? अपने को असहाय, असमर्थ अनुभव करते रहें ? और स्थिति बदलने के लिए किसी दूसरे पर आशा लगाये बैठे रहें ? मानवी पुरुषार्थ कहता है कि ऐसा नहीं होना चाहिए। बदलाव के लिए बड़े लोग सामने न आएँ तो भी निराश नहीं होना चाहिए वरन् हम छोटे लोगों को ही मिल-जुलकर कुछ करना चाहिए। दिवाली की काली अमावस्या को जब मृत्तिका के तनिक-तनिक से दीपक दीपपर्व को उत्साहवर्धक आभा में बदल सकते हैं तो हम भावनाशील और कर्मनिष्ठ व्यक्ति क्या कुछ नहीं कर सकते?

इन परिस्थितियों में हमें निष्क्रिय पर्यवेक्षक के रूप में नहीं बैठा रहना चाहिए, बल्कि यह देखना चाहिए कि इतिहास में क्या कभी ऐसे प्रसंग पहले भी आये हैं और आये हैं तो उस स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए क्या उपाय बरते गये हैं ? इस सम्बन्ध में सब उपयुक्त तुलनात्मक स्थिति त्रेता के अन्त में बढ़ी हुई असुरता से की जा सकती है, जिसका केन्द्र लंका और संचालक लंकेश था। स्थिति को बदलने के लिए दो राजकुमार जटा-जूट बाँधकर आगे आये और उनका साथ देने के लिए रीछ-वानरों की सेना अपने प्राण हथेली पर रखकर खड़ी हो गई। इतिहास साक्षी है कि असम्भव कही जा सकने वाली घटनाएँ सामने आईं। समुद्र पर पुल बँधा और दुर्दान्त दैत्यों का अन्त ईंट-पत्थरों द्वारा लड़ने वाली वानरी सेना द्वारा कर दिया गया। अब भी उसकी पुनरावृति हो सकती है—होनी चाहिए।

आज रीछ-वानरों की तरह प्राण-पण से असुरता से जूझने वाले भावनाशील और कर्मनिष्ठ व्यक्तित्वों की आवश्यकता है, जो हल्के-फुलके ढंग से यश, लिप्सा के लिए लोकसेवा का आडम्बर करने नहीं, वरन् उससे महान् प्रयोजन के लिए अपने को गलाने-खपाने के व्रत संकल्प लेकर ही आगे आयें। ऐसे व्यक्तित्व यदि मिल सकें तो व्यक्ति, परिवार और समाज को—हर क्षेत्र को जकड़े हुए प्रस्तुत अन्धकार का सामना किया जा सकता है। जलने वाला एक दीपक अपने समीपवर्ती अन्धकार को खा सकता है तो कोई कारण नहीं कि युग परिवर्तन की आवश्यकता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को पूरा करने के लिए अपने को खपा देने वाले परिष्कृत व्यक्तित्व समय पर छाई हुई विभीषिकाओं को उलटकर न रख सकें।

इस सन्दर्भ में भारत की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण परम्परा भी है—वानप्रस्थ। उस गौरव गरिमा के दिनों में प्रायः प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति अपने जीवन का उत्तरार्द्ध इसी प्रयोजन के लिए, समर्पित करता था कि समय की विकृतियों पर उगते ही कुठाराघात किया जाय और सर्वतोमुखी उत्कर्ष की सत्प्रवृत्तियों को अभिसिंचित करने में अनवरत रूप से संलग्न रहा जाय। वानप्रस्थ जीवन का उद्देश्य यही था कि समाज को गिराने, मिटाने वाली विकृतियों को खुली छूट न दी जाय वरन् उन्हें निरस्त करने के लिए एक दल निरन्तर क्रियाशील बना रहे। टूट-फूट की मरम्मत करने वालों की व्यवस्था के बिना विशाल इमारतें यों देर तक सुरक्षित नहीं रह सकतीं इसी प्रकार उत्कृष्ट लोक सेवकों की आवश्यकता को झुठलाया नहीं जा सकता। प्राचीनकाल में उस आवश्यकता की पूर्ति वानप्रस्थ आश्रम करता था।

हमें वानप्रस्थ आश्रम को पुनर्जीवित करने में पूरी शक्ति लगानी चाहिए ताकि युग की अवांछनीय स्थिति को बदलने में समर्थ, कर्मठ एवं सुयोग्य व्यक्तियों की कमी न रहे। यह किया जा सका तो युग बदला जा सकेगा और प्रस्तुत अन्धकार को चीरकर रख देने वाला प्रकाश निश्चित रूप से उत्पन्न किया जा सकेगा।

जीवन का उत्तरार्ध परमार्थ में नियोजित हो

आयुष्य के उत्तरार्ध में शरीर और मस्तिष्क के थक जाने से वह आयु न तो भौतिक आकर्षणों में निरत रहने योग्य रहती है न किन्हीं महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने की उसमें सामर्थ्य ही रहती है। यह समय मुख्यतः सेवा साधना के लिए नियोजित होना चाहिए न कि युवावस्था जैसी ललक-लिप्साएँ अपनाए रहने में। देव संस्कृति की वानप्रस्थ आश्रम परम्परा इस वर्ग विशेष के लिए व्यक्तिगत हित साधन एवं समिष्टगत परमार्थ की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ सदुपयोग का अवसर लेकर आती है।

ढलती उम्र में भी कामुकता की खिलवाड़ करने वाले निश्चित रूप से बे मौत मरते हैं। रुग्णता और अशक्तता के गर्त में औंधे मुँह गिरते हैं। चटोरापन भी ढलती उम्र में रही-बची पाचन-क्रिया को नष्ट-भ्रष्ट करके रख देता है। नई पीढ़ी अपने हाथों सत्ता चाहती है, उसे न दी जाय तो घर में विग्रह उत्पन्न होता है। परामर्श, मार्ग-दर्शन, सहयोग और नियन्त्रण का उत्तरदायित्व स्वयं वहन करते रहें और काम करने का बोझ लड़कों पर डालें तो उनकी शिक्षा भी होती है और अपना बोझ हलका होता है। अत्यधिक तृष्णा मग्न रहकर कमाई की आपा-धापी में लगे रहें तो उस मानसिक तनाव से ब्लडप्रेशर, दिल के दौरे, मधुमेह, अनिद्रा आदि कितने ही रोग घेरते हैं।

आध्यात्मिक और परमार्थिक गतिविधियाँ अपनाकर जीवन के उत्तरार्ध को इतना मृदुल और सरस बनाया जा सकता है मानो नवीन जन्म ग्रहण किया गया है। जिस प्रयोजन के लिए यह शरीर मिला है—मानव जन्म का जो परम लक्ष्य है, वह पूर्वार्ध में यत्किंचित ही पूरा हो पाता है। अधिक उत्तम सुअवसर तो उत्तरार्ध में ही मिलता है। मानसिक उभार उतर जाने और परिवार का भार हलका हो जाने से मन भी अच्छी तरह लगता है और चित्त के डांवाडोल होने की—लुढ़कने फिसलने की आशंका भी कम रहती है। मरण का दिन समीप आता देखकर परमार्थ की पुण्य पूँजी संग्रह करने के लिए—अगले जन्म में ऊँची स्थिति पाने के लिए—उत्कंठा जाग्रत होती है और अधिक गम्भीरतापूर्वक दिव्य जीवन की उन गतिविधियों को अपनाया जा सकता है, जो चढ़ती उम्र में प्रायः अरुचिकर और कठिन लगती थीं।

ब्रह्म विद्या की तत्व दर्शन ज्ञान-साधना—योगाभ्यास की तप साधना— लोकमंगल की सेवा साधना यह तीनों अमृतमयी देवसरिताऐं मिलकर गंगा, यमुना, सरस्वती के मिलन, संगम का प्रयोजन पूरा करती हैं और तीर्थराज प्रयाग जैसी त्रिवेणी इस जीवन में प्रादुर्भूत होती हैं। यह अभिनव आनन्द अपने ढंग का अनौखा है और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसा है जिससे बालकपन, किशोरावस्था और यौवन में अर्जित किया गया थे उससे कम नहीं वरन् अधिक ही आनन्दमयी विभूतियाँ उपलब्ध हो सकती हैं—होती हैं। सम्पदाओं से विभूतियों का स्तर हलका ही नहीं भारी ही है। इसलिए पूर्वार्ध में जो उपार्जित किया गया था, उसकी तुलना में उत्तरार्ध की कमाई का मूल्य भी अधिक ही आता है। ऐसी दशा में परमार्थ परायण उत्तरार्ध में प्रवेश करने वाले को बाल्यकाल और यौवन के चले जाने का पश्चात्ताप नहीं करना पड़ता वरन् यही अनुभव होता है कि वह अल्हड़पन चला गया सो अच्छा ही हुआ, यह ढलती आयु ऐसे अनुदान वरदान लेकर आई है, जिनका इस गधापच्चीसी के दिनों मिल ही सकना कठिन है। ऐसे चिन्तन के रहते किसी को पूर्वार्ध के बीत जाने से दुःखी होने पछताने की जरूरत नहीं पड़ती। वरन् यह अधिक महत्त्वपूर्ण अवसर हाथ लगने का सन्तोष ही होता है।

जब सामाजिक दृष्टि से विचार किया जाय तो प्रतीत होगा कि किसी देश या समाज के उत्कर्ष की समस्त आशायें और सम्भावनायें इसी केन्द्र पर केन्द्रित हैं। अगणित विचारशील व्यक्ति एक से एक उत्तम योजनायें बनाते हैं, बना सकते हैं पर सबसे बड़ी कठिनाई एक ही होती है कि उन्हें कार्यान्वित कर सकने योग्य व्यक्ति मिलते ही नहीं। फलस्वरूप वे कागजों में लिखी और मस्तिष्कों में बिखरी रहकर ही हवा में विलीन हो जाती हैं।

लोक निर्माण का कार्य इतना सरल नहीं है कि उसे किसी भी ऐरे-गैरे के सुपुर्द किया जा सके। उसके लिए अनुभवी, सुयोग्य, ईमानदार, सक्षम, लगनशील और प्रभावशाली कार्यकर्ता चाहिए। ऐसे लोग संस्थाओं के पास भी नहीं है। उनसे भी ओछी प्रकृति के यश लोलुप व्यक्ति भरे पड़े हैं सरकार के पास भी उपयुक्त व्यक्ति नहीं हैं। जन सहयोग के बिना कोई योजना सफल नहीं हो सकती यह स्पष्ट है। साथ ही यह भी साफ है कि यह सहयोग जुटाना ऐसे व्यक्तियों का ही काम है, जिनके प्रति सहज श्रद्धा उभरती हो। सरकारी कर्मचारियों की भर्ती जिन उपाधियों के आधार पर होती है, वे जनसम्पर्क कार्यकर्त्ता की योग्यता का आधार नहीं हो सकतीं। अनुभवहीन लड़के जिनकी आयु पच्चीस वर्ष से कम है, उन महान उत्तरदायित्वों को निभा सकेंगे यह कहना कठिन है। फिर वहाँ रौब-दौब, ठाट-बाट, ऐंठ-अकड़ रिश्वत, खुशामद का बोलबाला रहता है। भारत जैसे पिछड़े देश की जनता का तालमेल उनसे बैठता हीं नहीं। न सही अर्थों में जन-सम्पर्क बनता है—न जनसहयोग मिलता है। ऐसे ही कागजी खाना-पूरी चलती रहती है। अफसस मौज-मजा करते हुए-भत्ता बनाते और समय काटते रहते हैं। यह स्थिति जब तक रहेगी, तब तक सरकारी योजनायें कितनी ही अच्छी क्यों न हों, उनसे कुछ ठोस कार्य न हो सकेगा। प्रगति का सरकारी अभियान रुका ही पड़ा रहेगा।

लोक-कल्याण के लिए विनिर्मित संस्थाओं की स्थिति और भी अधिक दयनीय है। यश प्रशंसा के लिए थोड़ी विज्ञापन वाजी करना महत्त्वाकांक्षी लोगों के लिए एक धन्धा बन गया है। तरह-तरह के आडम्बर-सभा सम्मेलन संगठन संस्थान जुलूस, पोस्टरों की इन दिनों बहुत धूम है। नित नई संस्थाएँ बनती और बिगड़ती रहती हैं। पदों के लिए लड़ने-मरने वाले—परदे के पीछे कई तरह के स्वार्थ-साधन करने वाले लोगों का सार्वजनिक संगठनों में बोलबाला है। विविध संस्थाओं का ढाँचा कागज से बने रावण की तरह विशाल कलेवर तो बनाए खड़ा है पर भीतर ही भीतर खोखली पोल भरी पड़ी है। यही कारण है कि काम नहीं के बराबर और आडम्बर पहाड़ के बराबर दृष्टिगोचर होता है। प्रगति के विभिन्न प्रयोजनों को लेकर बने हुए इतने अधिक संस्था, संगठनों तथा—कथित लोकसेवियों, नेताओं के रहते एक इंच भी आगे खिसक सकना सम्भव न हो सके तो समझना चाहिए कि आडम्बर ने यर्थाथता के कुचल-मसल कर रख दिया है।

इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का एक ही कारण है सद्भावना, सम्पन्न, सुयोग्य एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं का अभाव। मिशन अनेक बने हुए हैं और बन रहे हैं पर मिशनरियों का कहीं पता नहीं। ऐसी दशा में लोकशक्ति को जगाना लोकमंगल का प्रयोजन पूरा कर सकना किस प्रकार सम्भव होगा ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जनता की स्थिति भी अब अजीब बन चली है। वक्ताओं और नेताओं की कथनी तथा करनी में जमीन आसमान जितना अन्तर देखकर अपीलों तथा धुँआधार भाषणों का असर ही समाप्त हो गया। स्पीचें सुनने या तो लोग आते ही नहीं—आते हैं तो उथला मनोरंजन मात्र करके पल्ले झाड़ते हुए वहीं पहुँच जाते हैं, जहाँ से आए थे। जब नेता और अभिनेता एक ही पंक्ति में गिने जाने लगें तो यह आशा कैसे की जाय कि जनता उनका कोई कष्टसाध्य अनुकरण स्वीकार करेगी ? अब हड़तालें कराना भर एक काम जैसा है, जिसे कोई भी नेता आसानी से करा सकता है। जिसमें कुछ त्याग और सुधार की कष्टसाध्य बात हो उसे मानना तो दूर, कोई सुनने तक को तैयार नहीं।

इस अभाव की पूर्ति उज्जवल चरित्र, सुसंस्कृत और निस्वार्थ लोकसेवा निरत व्यक्ति ही अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर कर सकते हैं। ऐसे नेतृत्व का उत्पादन वानप्रस्थ आश्रम की ही खदान से होता रहा है और हो सकता है। यदि वानप्रस्थ की पुण्य परम्परा चल पड़े तो एक से एक बढ़कर सुयोग्य और भावनाशील लोकसेवी विभिन्न सत्प्रवृत्तियों में संलग्न दृष्टिगोचर हो सकते हैं। और बिना वेतन भार उठाए जनता को ऐसे कार्यकर्ता लाखों की संख्या में मिल सकते हैं, जो अवांछनीयताओं के विरुद्ध मोर्चाबन्दी पर कटकर लड़ने के लिए साहसी शूरवीरों की भूमिका प्रस्तुत कर सकें। रचनात्मक सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन किन्हीं लोगों के द्वारा होगा। अवैतनिक सेवा-साधना में संलग्न उच्चकोटि के सुशिक्षित एवं अनुभवी व्यक्ति जिस कार्य को भी हाथ में लेते हैं, वह जनता का अजस्र सहयोग उपलब्ध करते हैं और निश्चित रूप से सफल होते हैं। नवनिर्माण की बहुमुखी प्रवृत्तियों में संलग्न होकर ऐसे लोग देश को कितनी जल्दी आगे बढ़ा सकते हैं—ऊँचा उठा सकते हैं—इसकी कल्पना मात्र करने से आँखें चमकने लगती हैं।

नव-निर्माण की—पुनरुत्थान की सभी दिशाएँ सूनी पड़ी हैं। शिक्षा, संस्कृति, समाज, स्वास्थ्य, आजीविका, विनोद जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र जन-सहयोग से ही समुन्नत और सुव्यवस्थित हो सकते हैं। सरकार का मुँह ताकते रहने और शासन को गाली देने से दबे हुए असन्तोष को व्यक्त होने का अवसर मिल सकता है और उससे थोड़ा जी हलका हो सकता है पर कुछ काम नहीं बनेगा। बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक क्षेत्रों में संव्याप्त गगनचुम्बी विकृतियों के विरुद्ध मोर्चा खड़ा कर सकना और उससे जूझकर विजय प्राप्त कर सकना केवल लोकशक्ति के लिए ही सम्भव है। उसी को गठित, सुदृढ़ और परिष्कृत करना होगा। यही है आज का अतिशय महत्त्वपूर्ण कार्य, जिसे बिना कल की प्रतीक्षा किए, आज ही आरम्भ करना चाहिए। हजार वर्ष की बौद्धिक और राजनैतिक गुलामी के उपरान्त अपना देश उठा है, उसकी आर्थिक और राजनैतिक समस्यायें भी हैं—पर सबसे बड़ी समस्या बौद्धिक और चारित्रिक है। इस दिशा में न तो पिछले दिनों कुछ सोचा गया है और न किया गया है। अपने देश की सामाजिक विकृतियाँ ही समस्त संकटों की जड़ हैं। जाति-पाँति के नाम पर राष्ट्र हजारों टुकड़ों में बँटा पड़ा है—हर जाति अपने आप में एक ऐसी स्वतन्त्र इकाई बन गई है। मानो दूसरी जाति वालों से उसे कुछ लेना देना ही न हो। ऊँच-नीच की मान्यताओं ने एक तिहाई मनुष्यों को पद दलित और दो तिहाई लोगों को मिथ्या अहंकार से ग्रसित बना रखा है। विवाह शादियों में होने वाला खर्च देश के आर्थिक मेरुदण्ड को तोड़कर रखे दे रहा है। अन्धविश्वासों और कुरीतियों में कितना समय, कितना धन और कितना मनोयोग नष्ट होता है, इसे देखकर रुलाई आती है।

अस्सी प्रतिशत अशिक्षितों का, अस्सी प्रतिशत छोटी देहातों में रहने वालों का देश वस्तुतः कितना पिछड़ा पड़ा है, इसे शहरों से दूर बसे छोटे देहातों की झोंपड़ियों में जाकर ही देखा समझा जा सकता है। जिस प्रगति की डीगें हांकी जाती हैं, वे केवल बीस प्रतिशत आबादी वाले शहरों तक ही सीमित हैं। राजनैतिक और सामाजिक उछल-कूद इन्हीं थोड़े से लोगों तक सीमित है। अखबारी धुआंधार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रचार केवल इसी छोटे क्षेत्र तक सीमित है। असली भारत अस्सी प्रतिशत बहुमत वाला देहाती अशिक्षा ग्रस्त-कुरीतियों और कुण्ठाओं से जर्जर देश तो अभी सदियों पुराने पिछड़ेपन से ही सन्त्रस्त है। उठना तो उसी को है—उस समुद्र में घुसे कौन ? और कौन गहरे गोते लगाकर मोतियों की तलाश करे ?

इन प्रश्नों का उत्तर वानप्रस्थ परम्परा के पुनर्जागरण पर ही पूर्णतया अवलम्बित है। भारत न तो अमेरिका है न इंग्लैण्ड। यहाँ ऊँचे वेतन देकर मिशनरी नौकर रखने और पिछड़े देहातों में जाकर काम करने के लिए प्रचुर धन उपलब्ध नहीं है, और न सरकारी साधन ही उतने हैं। हों भी तो नौकरशाही के वर्तमान ढर्रे को देखते हुए यह आशा करना बालू में से तेल निकालना है कि वे साधनरहित देहातों में जाकर उनमें घुलेंगें और जनशक्ति के सहयोग से पुनर्निर्माण के कार्यों में लगेंगे। देहाती दवाखानों में जाने के लिए नौसिखिए डाक्टर तक तैयार नहीं होते। सरकारी नौकरी तो जागीर है उसे पाकर भी पंखा और मेज कुर्सी छोड़नी पड़ी तो फिर बात ही क्या रही ? नौकरी करने का लाभ ही क्या रहा ? इस मनोवृत्ति के रहते सरकार भी कुछ कर नहीं सकती। लोक निन्दा से बचने के लिए समाज-कल्याण का खर्चीला आडम्बर खड़ा कर देना भर उसके बस की बात है, सो करती भी हैं करेगी भी।

राष्ट्र निर्माण की समस्यायें अगणित हैं देश बहुत अधिक विस्तृत क्षेत्र में बिखरा पड़ा है। अशिक्षा और यातायात के साधन ऐसे अवरोध हैं, जिनके कारण असली भारत से—पिछड़े भारत से बौद्धिक तथा प्रत्यक्ष संम्पर्क साधना तक कठिन पड़ता है। ऐसी दशा में सबसे बड़ी सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता एक ही सामने उपस्थित होती है—सुयोग्य, भावनाशील, अवैतनिक और सेवा की उत्कट लगन के साथ राष्ट्र निर्माण में जुट पड़ने वाले कर्मठ कार्यकर्ताओं की। इस अभाव को पूरा किए बिना कोई गति नहीं—कोई राह नहीं—कोई आशा नहीं। इस प्रयोजन को वानप्रस्थ परम्परा का पुनर्जागरण करके ही पूरा किया जा सकता है। यदि इस दिशा में एक प्रबल और सुव्यवस्थित आन्दोलन खड़ा किया जा सके तो इस धर्मप्राण देश में—प्राचीन संस्कृति की रक्षा और भाव-प्रेरणा से प्रेरित अगणित व्यक्ति आगे आ सकते हैं और उस सृजन सेना से देखते-देखते द्वापर में उँगली पर गोवर्द्धन उठाये जाने के तरह—त्रेता में सेतुबन्ध बाँधे जाने की तरह यह चमत्कार सम्भव हो सकता है, जिसके आधार पर राष्ट्र का पिछड़ापन—प्रचण्ड प्रगतिशीलता में परिणत हुआ देखा जा सके।

भारत में धर्म, अध्यात्म और संस्कृति के प्रति अभी भी आस्था का सर्वथा अभाव नहीं हुआ है। भौतिकवादी विचारधारा ने नास्तिकवाद को प्रोत्साहन अवश्य दिया है और धर्म ध्वजी वर्ग के कुकर्मों ने जन-मानस में धर्म के प्रति उपेक्षा अवज्ञा एवं आक्रोश का भाव अवश्य पैदा किया है। इतना सब होने पर भी स्थिति अभी इस सीमा तक नहीं पहुँची है कि धार्मिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए आरम्भ किए गए प्रचण्ड अभियान को सर्वथा उपहासास्पद ठहरा दिया जाय और उसकी प्रतिक्रिया उदासीनता एवं निराशा के रूप में सामने आये। हर धार्मिक व्यक्ति वृद्धावस्था में शान्ति प्राप्त करना और परमार्थ साधना की बात सोचता अवश्य है, भले ही परिस्थितियाँ उसे वैसा अवसर ही न होने दें, जिनमें थोड़ा उत्साह है वे साधु-बाबाओं के आश्रम में दिन काटते राम नाम जपते और तथाकथित सत्संग में उलझे देखे जा सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों की संख्या गिनी जाय तो वह लाखों तक अभी भी पहुँचेगी। यदि इन्हें सही मार्ग-दर्शन मिला तो वे आत्मकल्याण के साथ लोकमंगल क्षेत्र में प्रवेश कर सकते थे और नव निर्माण के महान् प्रयोजन की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिकां प्रस्तुत कर सकते थे।

परम्परा का राजमार्ग मौजूद है। भावनाओं का अभाव नहीं। परमार्थ के प्रति अपनी आस्था अपनी जगह यथावत् विद्यमानं है। इसलिए वानप्रस्थ को पुनजीर्वित किया जाय—उसके लिए ओजस्वी आह्वान किया जाय—आने-जाने वाले व्यक्तियों का उचित प्रशिक्षण और मार्ग दर्शन किया जाय तो कोई कारण नहीं कि लाखों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संख्या में प्रचण्ड क्षमता सम्पन्न लोकसेवी कार्यक्षेत्र में उतारे न जा सकें। यह सम्भावना मूर्तिमान हो सकती है—होनी चाहिए।

देव जीवन का अवसर और आयुष्य

द्विजत्व का प्रतीक यज्ञोपवीत माना जाता है। आदर्श पूर्ण जीवन जीने का व्रत धारण करना—होश संभालते ही आवश्यक हो जाता है। भारतीय धर्म परम्परा के अनुसार हर भावनाशील व्यक्ति को पेट प्रजनन के लिए नहीं, जीवन लक्ष्य की, ईश्वर की प्राप्ति के लिए जीना चाहिए और इसके लिए जैसे ही बालक में थोड़ी विचारशीलता का उदय हो वैसे ही उसके कन्धे पर यह स्मृति—जिम्मेदारी लाद देनी चाहिए कि वह प्रलोभनों और आकर्षणों में भटक न जाय वरन् हर घड़ी यह ध्यान रखे कि उसे किसी विशेष प्रयोजन के लिए नर जन्म मिला है और उसकी पूर्ति के लिए सतत जागरूकता अपनाये रहने की आवश्यकता है। यज्ञोपवीत संस्कार का यही उद्देश्य है। संसार में संव्याप्त अज्ञान से लड़ने वालों को ब्राह्मण, अशक्ति से लड़ने वालों को क्षत्रिय और अभावों को हटाने में प्रवृत्ति रखने वाले वैश्य कहलाते हैं। सोद्देश्य जीवन ही सांस्कृतिक गौरव गरिमा के उपयुक्त है। वासना-तृष्णा का लक्ष्य बनाकर जीने वाले, पेट और प्रजनन से आगे की बात न सोचने वाले हेय अन्त्यज कहलाते हैं। ऐसे लोग न तो यज्ञोपवीत पहनने का साहस करते हैं और न ठूंस-ठांस करके उन पर वह लादा ही जाता है।

बचपन में यज्ञोपवीत पहना भर दिया जाता है उसकी चरम परिणति का अवसर आता है पूर्वार्ध जीवन के बाद। यों ब्रह्मचारी और गृहस्थ में भी उच्च दृष्टिकोण ही रखा जाना चाहिए और व्यक्ति निर्माण तथा परिवार निर्माण की आवश्यकता उन दिनों भी पूरी की जानी चाहिए, पर प्रखर परमार्थ जीवन तो तभी दृष्टिगोचर होता है। जब शरीर, मन और परिवार की परिधि से साहसपूर्वक आगे कदम बढ़ाकर लोक मंगल की—विश्व मानव की—सेवा साधना में सर्वतोभावेन तत्पर होकर अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया जाता है। यज्ञोपवीत धारण के समय ली गई परमार्थ परायणता की, इस जन्म में दूसरा जन्म लेने की—द्विजत्व प्रतिज्ञा बहुत समय तक छोटे पौधे के रूप में रहने के पश्चात् वानप्रस्थ स्थिति में ही फल-फूलों से लदती है। व्यावहारिक क्रियान्वित एवं प्रत्यक्ष मूर्तिमान हुई परिलक्षित होती है। असल में द्विजत्व के योग्य क्षमता ढलती आयु में ही उत्पन्न होती है।

प्रकृति प्रदत्त जन्म धारण सरल है इसमें प्राणी को स्वयं कुछ नहीं करना पड़ता। नियति का प्रवाह जन्म लेने, बढ़ने और मरने के लिए विवश करना है तो प्राणधारी के लिए इसी धारा में बहने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं रहता। इसमें साहस की आवश्यकता नहीं पड़ती सब कुछ अपने क्रम से, अपने ढर्रे से होता चला जाता है। साहस की परीक्षा तब होती है जब मनुष्य अपने प्रचण्ड मनोबल को समेटकर प्रकृति प्रदत्त पशु जन्म की धारा उलटकर मनुष्यकृत जन्मान्तर उपस्थित करता है और अपनी भावनात्मक प्रखरता के आधार पर पशु योनि का परित्याग कर देवयोनि में प्रवेश करता है। वानप्रस्थ इसी परम पौरुष का, भावनात्मक दुस्साहस का नाम है। इसे स्वेच्छा बलिदान कह सकते हैं।

युद्ध मोर्चे पर शत्रु की संगीन से सीना छिदवाना आसान है, क्योंकि उसमें सैनिक का उद्देश्य शत्रु का शिर काटना और विजयश्री का वरण करना रहता है—वह उमंगें और आशाएँ इसी स्तर की लेकर चलता है—यह संयोग की ही बात है कि वह आकांक्षा पूरी न हो सके और उलटकर अपना ही शिर कटाना पड़े। आत्म बलिदानी की मनोदशा इससे कहीं अधिक साहसिक होती है। वह आरम्भ से ही अपने पन का—भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं का परित्याग करके चलता है और अपनी समग्रसत्ता को प्रभुचरणों पर सर्वतोभावेन समर्पण करने की शपथ लेकर चलता है। अपने लिए नहीं भगवान के लिए जीता है। सहज स्वभाव मिल सकने वाली सुविधाओं का भी स्वेच्छा से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परित्याग करता है। संयम की आग में अपने को तपाता, गलाता है। उपभोग के लिए जो प्रस्तुत है उसकी ओर से मन को समेटता है और उपलब्धियों को दुःखी संसार के लिए छोड़कर उदारमना स्थिति प्रज्ञ की—परमहंस अवधूत की भूमिका में प्रवेश करता है।

इस वैराग्य बलिदान के लिए कायर और कृपण स्तर का व्यक्ति तैयार नहीं हो सकता। यह तो शूर वीरों का, दुस्साहसियों का, वीर बलिदानियों का मार्ग है, जिस पर काँटे कुचलते हुए, पैरों को लहु-लुहान बनाने की हिम्मत करने के लिए हिम्मत समेटने वाले ही चल सकते हैं। कल्पना जल्पना तो ऐसे उदात्त जीवन की कितने ही करते रहते हैं पर अग्नि परीक्षा की घड़ी देखकर हौसला किसी विरले से ही आगे बढ़ाने का बन पड़ता है। भारतीय धर्म की महान परम्परा यही रही है कि आदर्श जीवन की शपथ लेने वाले हर ब्रह्मचारी को उत्तरार्ध में वैसा साहस करना चाहिए। एक जन्म, प्रकृति ने दिया सो ठीक है। दूसरा आदर्शवादी जन्म अपने साहस पुरुषार्थ को समेटकर लेना चाहिए। वानप्रस्थ इसी विद्या का नाम है।

वानप्रस्थ यों एक संस्कार भी है। षोडश संस्कार में पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्न प्राशन, मुण्डन, विद्यारम्भ उपनयन आदि की गणना है, इनमें हर्षोत्सव मनाये जाते हैं। अमुक कर्मकाण्ड किये जाते हैं और बालक को कुछ दिशा शिक्षा देते हैं। जिस प्रकार अन्य संस्कार कराये जाते हैं, उसी प्रकार वानप्रस्थ कृत्य की परम्परा भी निवाही जानी चाहिए, साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उसके साथ ही कुछ महान कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व कन्धे पर आते हैं। बचपन के संस्कार प्रशिक्षण स्तर के थे, उनमें उद्बोधन और सम्भावनाओं की ही प्रधानता थी पर विवाह संस्कार के साथ शिर पर महान् उत्तरदायित्वों का बोझ आता है एक नये परिवार का श्रीगणेश करना ही तो विवाह है। ठीक इसी प्रकार वानप्रस्थ के भी उत्तरदायित्व महान हैं। इस प्रवेश द्वार में कदम रखने वाले को प्रभु समर्पित जीवन जीने का व्रत धारण करना पड़ता है और विश्व वसुधा को अपना घर परिवार मानकर सर्वजनीन सुख-शान्ति एवं समृद्धि प्रगति के लिए अपनी विभूतियों का समर्पण करना होता है। अपनी मानसिक और शारीरिक गति-विधियाँ उसी दिशा में प्रशिक्षित एवं अग्रसर करनी पड़ती हैं। निस्सन्देह यह देव जीव में प्रवेश कराने की अभिनव भूमिका है, जिसका निर्वाह करने वालों के लिए मानवता शत-शत नमन करती रहती है।

भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन का उत्तरार्ध देव भाग है उसका उपयोग देव प्रयोजनों के लिए ही होना चाहिए। पूर्वार्ध को भौतिक अल्हड़पन की तृप्ति में लगाया गया सो ठीक है। दुस्तर उभारों में उतना भाग लग गया सो ठीक है। उन दिनों इन्द्रियों के घोड़े और मन के मयूर अपनी मस्ती में होते हैं। आगा पीछा देखते सोचते नहीं। नियन्त्रण कठिन पड़ता है ऐसी दशा में बाढ़ का उफान उतर जाने तक की प्रतीक्षा में बैठे रहना बुरा नहीं। फिर व्यक्ति निर्माण और परिवार निर्माण के काम भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। यौवन आने से पूर्व की अवधि इसी के उपयुक्त है कि कठिन जीवन की परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकने योग्य साधन जुटाये जांय। शिक्षा प्राप्त न हो सकी तो अशिक्षित रहने से पग-पग पर ठोकर खानी पड़ेगी। संयम व्यायाम से शरीर पुष्ट न किया गया अनुभव अनुशासन न सीखा गया तो गृहस्थ जीवन में उपार्जन तथा अन्य प्रकार के उत्तरदायित्वों का निर्वाह कैसे होगा ?

परिवार संस्था का संचालन एवं उन्नयन किसी पूरे राष्ट्र समाज को सम्भालने, सुधारने की एक छोटी प्रतिकृति है। उसे चाहें तो गृहस्थ का निर्वाह लोक सेवा की छोटी प्रयोगशाला कह सकते हैं। महत्त्वाकांक्षाएँ कई बार बड़ी प्रबल होती हैं। उन पर नियन्त्रण करना साधारणतया कठिन होता है। स्वप्नों में बहुत सुन्दर और आकर्षक दीखने वाली ललकें और लिप्साएँ प्रायः स्वर्णपरी-सी लगती हैं और उन्हें पाने भोगने के लिए अल्हड़मन बेतरह मचलता है। पर जब वे निकटवर्ती अनुभव में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आती हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि वे दूर से देखने में ही आकर्षक थीं। निकट आने पर तो उनमें जलन और निराशा के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं।

वित्तेषणा, पुत्रेषणा और लोकेषणा के पीछे आदमी पागल जैसा फिरता है। धन लिप्सा—इन्द्रियभोग और अहंकार की पूर्ति के लिए मचलने वाला मन जब उन विष कण्टकों के सम्पर्क में आता है तो नशा उतर जाता है—भ्रम टूट जाता है—और तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि मृग तृष्णा के अतिरिक्त इस जाल जंजाल में कुछ था ही नहीं। दूसरों के बताने समझाने से यह यर्थाथता गले नहीं उतरती, ठोकर खाकर जब अनुभव हो जाता है, तब कहीं मन मानता है और वानप्रस्थ के लिए उपयुक्त मनोभूमि बन जाती है।

यों वानप्रस्थ का समय ढलती आयु के साथ जोड़ा गया है। पर वस्तुतः उसका सीधा सम्बन्ध ढलती मनोभूमि के साथ है। नशों की खुमारी जब भी उतर जाय तभी इस परमशुभ सदुद्देश्य को अपनाने का शुभ मुहूर्त हो सकता है। आयु का पैमाना मौटे तौर पर ही निर्धारित किया गया है। प्राचीन काल में सौ वर्ष की सहज आयुष्य थी। तब पूर्वार्ध पचास वर्ष का होता था। पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्य—पच्चीस वर्ष गृहस्थ के लिए नियत थे। पचास वर्ष बाद वानप्रस्थ ले लिया जाता था। अब वैसी स्थिति नहीं रही। सौ वर्ष कौन जीता है ? पचहत्तर तक भी कोई विरले पहुँचते हैं। इसे ही परम आयु अब माना जाना चाहिए। इसका आधा तो सैंतीस वर्ष ही हुआ। पुराने अनुपात से अब यही उत्तरार्ध है—इसी को ढलती आयु कह सकते हैं। इसी अवधि तक पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्ति मिलना कठिन समझा जाय तो उत्तरार्ध में से भी और कटौत्ती की जा सकती है। आधे के स्थान पर एक तिहाइ से भी संतोष किया जा सकता है।

पचहत्तर वर्ष का दो तिहाई परिवार में गुजारा जाय तो कम से कम पचास से पचहत्तर तक के पच्चीस वर्ष तो वानप्रस्थ सन्यास की मिली-जुली प्रक्रिया में लगाये जाने चाहिए। यह अन्तिम अवधि मानी जानी चाहिए। जिनके लिए इससे पहले ही साहसिक कदम बढ़ाया जाना सम्भव है, उन्हें इस दिशा में रुकने झिझकने की कोई बात नहीं। पचहत्तर का आयुष्य भी ध्रुव सत्य नहीं। मौत तो कभी भी सामने आ खड़ी हो सकती है और पल भर में गर्दन मरोड़कर रख सकती है। आये दिन नौजवानों की लाशें मचलती-मचकती आँखों के आगे से निकलती और श्मशान के शरण पाती दिखाई देती रहती हैं। अपने लिए पचहत्तर की आयु को लक्ष्मण रेखा मान बैठना यथार्थ चिन्तन नहीं है। इस दृष्टि से उस विभाजन अवधि को पहले की ओर तो कितना ही खिसकाया जा सकता है। प्रयत्न यह होना चाहिए कि यथा सम्भव पीछे नहीं ही हटानी पड़े। कितने ही छोटे बच्चे पालन-पोषण के लिए शेष हों और पूरा समय उनके लिए उपार्जन करने में संलग्न रहे बिना काम न चलता हो तो बात दूसरी है।

आयुष्य की दृष्टि से पचास वर्ष की आयु मोटेतौर पर ही निर्धारित की गई है। मन के उफानों पर यदि इससे पहले ही अंकुश स्थापित कर लिया जाय, तृष्णाएँ और वासनाएँ सिमिट सकने की स्थिति बन जाय, परिवार के आर्थिक उत्तरदायित्वों से पूर्व सम्पत्ति के आधार पर अथवा घर के दूसरे लोगों के सहारे उपयुक्त व्यवस्था बन जाये, आश्रितों के भरण-पोषण का क्रम यथावत् चलता रह सके तो उस अवधि को जितना अधिक पहले किया जा सके उतना ही उत्तम है। मनुष्य की एक-एक घड़ी एक-एक साँस हीरे मोतियों से तोलने लायक है, इसकी बहुमूल्य सम्पदा में से पेट प्रजनन जैसे पशु कर्मों के लिए जितना अंश कम बर्बाद हो उतना ही उत्तम है।

यों परमार्थ परायणता हर आश्रम में—हर आयु में, हर स्थिति में किसी प्रकार—किसी स्तर पर चलती रह सकती है। पर उसमें समग्र संलग्नता को स्थिति जब बन सके तो उसे वानप्रस्थ कह सकते हैं। यह अविवाहित जीवन के पश्चात् गृहस्थ का उल्लंघन करके भी हो सकता है। किन्तु एक बार गृहस्थ में प्रवेश कर लेने के बाद पत्नी तथा बच्चों की शारीरिक मानसिक सुव्यवस्था बनाए बिना—उन्हें अनाथ, निराश्रित छोड़कर भावावेश में भाग निकलना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुचित है। यदि गृहस्थ में प्रवेश कर लिया गया है तो तब तक प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी, जब तक यह संतोष न हो जाय कि परिवार व्यवस्था यथा क्रम चलती रहेगी। अच्छा तो यही है कि अपने बालकों के शिक्षा, आजीविका और विवाह के तीनों उत्तरदायित्वों से समय रहते स्वयं ही छुटकारा प्राप्त कर लिया जाय। इसके लिए पूर्ण तैयारी यही होनी चाहिए कि प्राचीनकाल की भाँति तीस-पैंतीस वर्ष की आयु के उपरान्त बच्चे पैदा करना बन्द कर दिया जाय और पचास-पचपन तक रिटायर होते-होते उन सभी को स्वावलम्बी बना दिया जाय। सन्तोषपूर्ण निश्चिन्तता समय से पूर्व तैयारी करने वालों को ही मिलती है।

जिन्हें समय रहते समझ नहीं आई और देर तक बच्चे जनते रहे, उनकी संख्या बढ़ाते रहे, उनके लिए, कुछ अपवाद ही शेष रह जाते हैं। पूर्व संचित सम्पत्ति से बच्चों के स्वावलम्बन तक का काम चल सके तो भी निवृत्ति मिल सकती है—यह एक मार्ग है। दूसरा यह है कि बड़ी सन्तान को आरम्भ से ही यह शिक्षा दी जाय कि वह मातृ ऋण और पितृ ऋण से अपने छोटे भाई-बहिनों के लालन-पालन का उत्तरदायित्व वहन करते हुए उऋण होने के आदर्श पर आस्था रख सके। आज के स्वार्थी वातावरण में प्रायः बड़े बच्चे माता-पिता का आर्थिक शोषण करने के उपरान्त जैसे ही स्वावलम्बी बनते हैं वैसे ही अपनी नव वधू को लेकर अलग हो जाते हैं और गुलछर्रे उड़ाने की चाल चलते हैं। पितृ ऋण चुकाने की बात तो वे कभी स्वप्न में भी नहीं सोचते वरन् जो कुछ उनके पास और बचा-खुचा है, उसे भी किसी न किसी बहाने हड़प लेने के लिए घात लगाते रहते हैं। छोटे भाई-बहिनों की ओर उनकी तनिक भी ममता नहीं होती। उत्तराधिकार सम्पदा में हिस्सेदार होने के कारण वे उन्हें काँटे की तरह खटकते हैं। ऐसी सन्तान मनुष्य के उस हेय अज्ञान का दारुण दण्ड ही है, जिसके कारण उन्हें उठती उम्र में संतान का मुख देखे बिना चैन नहीं पड़ता था और उस उपार्जन के बिना सब कुछ सूना जैसा अनुभव करते थे। लोग यह समझ ही नहीं पाते कि इस घोर कलियुग में संतानों की संख्या बढ़ाना अपने गले में एक से एक कड़ा फाँसी का फन्दा लगाने की बराबर कष्ट कर ही हो सकता है।

वे सौभाग्यशाली हैं जिनके बड़े बच्चे मातृऋण और पितृऋण चुकाने के लिए छोटे भाई बहिनों के स्वावलम्बन का उत्तरदायित्व श्रद्धापूर्वक निबाहें और अपनी पत्नी को इसके लिए सहमत करें। अपनी सन्तानें बढ़ाने में जल्दबाजी न करें। और भाई-बहिनों की सेवा सहायता से निवृत्त होकर ही संतान बढ़ाने के नये खर्च न बढ़ाने की बात सोचें। जो हो, यदि किन्हीं को पितृऋण चुकाने के लिए तत्पर सन्तान मिले और वे स्वावलम्बी होकर अपने भाई-बहिनों को सम्भाले तो भी वानप्रस्थ के परमार्थ जीवन का सुअवसर किन्हीं सौभाग्यवानों को मिल सकता है। यह तो आज के वातावरण में कठिन—फिर भी असम्भव नहीं है।

पूर्व तैयारी का एक तीसरा तरीका यह हो सकता है कि पत्नी को सुशिक्षित और स्वावलम्बी बनाया जाय। वह अध्यापिका आदि कार्य अपनाकर आजीविका कमाने लगे तो वह भी बड़े बेटे की तरह अपने पति को निश्चिंत होकर परमार्थ जीवन का सौभाग्य लेने के लिए अवसर दे सकती है। पर यह सम्भव तभी है जब उस पर न्यूनतम सन्तान संख्या का भार पड़ा हो। बहुत बच्चों की अनेक समस्याओं का तो वह भी अकेली निर्वाह नहीं कर सकती। आखिर पेट भरना ही तो काफी नहीं होता बच्चों के लिए और भी बहुत कुछ करना सहना पड़ता है। उसमें पति के योगदान की आवश्यकता झुठलाई नहीं जा सकती।

पारमार्थिक जीवन जीने के लिए व्रत धारण करने वाले नर-नारी ऐसा भी कर सकते हैं कि विवाह तो करें पर सन्तानोत्पादन के झंझट से बचे रहें। ऐसी स्थिति में भी वे सुविधापूर्वक किसी भी आयु में वानप्रस्थ में प्रवेश कर सकते हैं। जिन्हें संयोगवश सन्तान ही नहीं मिली है उनके लिए सौभाग्य की हजार मुख से प्रशंसा की जानी चाहिए और यह माना जाना चाहिए कि उन्हें ईश्वर की ऐसी अतिरिक्त अनुकम्पा प्राप्त हुई है, जिसके आधार पर वे चाहें तो अत्यन्त सरलतापूर्वक देव जीवन का परिपूर्ण आनन्द लाभ ले सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ स्तर का वानप्रस्थ

वानपस्थ एक महान जीवन दर्शन की व्यवहार प्रक्रिया में प्रत्यक्ष परिणति है। चिन्तन और दर्शन प्रायः मस्तिष्कीय विलासिता तक—बौद्धिक ऊहापोह तक सीमित होकर रहते देखे गये हैं। उच्चस्तरीय चिन्तन को आदर्शवादी रीति-नीति अपनाना कष्ट साध्य होता है, उसमें सुविधायें छिनती हैं और ऐसी प्रयत्न चेष्टा बढ़ती है, जिसमें दूसरों की सुख शान्ति की बढ़ती होकर अपना प्रत्यक्ष एवं भौतिक लाभ नहीं के बराबर होता है।

आदर्शवादी विद्या व्यक्तित्व को महान एवं श्रद्धास्पद बनाती है, उससे आन्तरिक सन्तोष मिलता है, आत्मकल्याण की पृष्ठभूमि बनती है—समाज को समुन्नत बनाने का अवसर मिलता है सो सब ठीक है, पर प्रत्यक्ष सुख-सुविधायें तो घटती ही हैं। स्थूल दृष्टिकोण वालों के लिए प्रत्यक्ष ही सब कुछ है—भौतिक लाभ ही लाभ है—इन्हें यह समझना और समझाना कठिन है कि लौकिक वैभव को घटाकर परमार्थ प्रयोजन में संलग्न होना बुद्धिमत्ता है। दुनियादार आदमी को यह समझाना बहुत कठिन है कि अपने शरीर, मन और परिवार से आगे बढ़कर अन्य किसी के हितसाधन की बात भी सोची जा सकती है। प्रत्यक्ष लाभ का उत्सर्ग परोक्ष परमार्थ के लिए छोड़ा जा सकता है। इन दिनों आदर्शों की बात बढ़-चढ़ कर होती है पर उस तर्क-वितर्क में संलग्न व्यक्ति भी इसे वाक्विलास भर मानते हैं। आदर्शों को व्यवहार में उतारना भी सम्भव हो सकता है। इस पर कोई विरले ही विश्वास करते हैं। दूसरों को त्याग बलिदान की नसीहत देना सरल है पर जब अपने लिए वैसा करने की बात सामने आती है तो सहज ही बोलती बन्द हो जाती है।

वानप्रस्थ को आदर्श के व्यवहार में परिणत करने का महान उत्तरदायित्व वहन करना पड़ता है। इसलिए उसे यथार्थ ब्रह्मवेत्ता कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। सच्चे अर्थों में उपदेशक, वक्ता, व्यास और प्रचारक भी वही है क्योंकि वक्तृताएँ मात्र जानकारी बढ़ा सकती हैं,—गुदगुदी उत्पन्न कर सकती हैं पर प्रेरणा तो अनुकरणीय आदर्श सामने उपस्थित देखने पर ही मिलती है। नीचे गिराने का काम तो वाणी से, लेखनी से भी सध सकता है पर ऊँचा उठाने में सफल वही हो सकता है जो स्वयं ऊँचाई तक चढ़ सका है। जो स्वयं डूब रहा है वह दूसरे डूबने वाले को क्या उवारेगा, जो स्वयं मलीनता ग्रसित है वह दूसरों को स्वच्छ कैसे करेगा ? वानप्रस्थ की लोककल्याण साधना का शुभारम्भ अपने आप से आरम्भ होता है। वह सर्वसाधारण के सामने आदर्श उपस्थित करते हुए यह सिद्ध करता है कि त्याग और सेवा की बात मात्रा बकझक नहीं है वह ऐसी व्यावहारिकता भी है जिसे प्रत्यक्ष करके दिखाया जा सकता है दैनिक जीवन में घोला और घुलाया जा सकता है।

वानप्रस्थ का चरम लक्ष्य उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व को दैनिक जीवन में उतारते हुए जहाँ जीवनोद्देश्य की पूर्ति के लिए साहसपूर्ण कदम बढ़ाना है, वहाँ सर्वसाधारण को यह विश्वास दिलाना भी है, उच्च आदर्शों में—व्यावहारिक जीवन में उतारना न केवल सरल है वरन् सुखद और शान्तिदायक भी है। लोकशिक्षा का यही प्रभावशाली तरीका है। समग्र पुनरुत्थान और अभिनव निर्माण के लिए जन साधारण को कुछ कष्ट उठाना, त्याग करना और अनुदान प्रस्तुत करना ही पड़ेगा। इसी पूंजी से ही प्रगति का भवन बनेगा। लोगों को आदर्शों की बातें तो सुहाती हैं पर उस दिशा में बढ़ने के लिए कोई साहस नहीं करता। फलतः लम्बी-चौड़ी योजनाओं को दीमक चाटती रहती है। जनता को सृजन प्रयोजन के लिए अपना योगदान देने के लिए रजामन्द करना हर किसी का काम नहीं है, उसे प्रभावशाली ढंग से वही कर सकता है जिसने स्वयं वैसा कदम उठाकर दिखाया है। वानप्रस्थ अपनी भूमिका द्वारा वह अधिकार प्राप्त करे, जिसके बलबूते लोगों को देश, धर्म, समाज संस्कृति के लिए कुछ अनुदान प्रस्तुत करने के लिए कहा और मनाया जा सके। ऐसे ही नेतृत्व की सदा से आवश्यकता रही है। सफलता उसे ही मिली है—अनुगमन उसी का किया गया है। भौतिक लाभ कमाने में निरत नेता के मुख से त्याग और बलिदान के उपदेश शैतान के मुँह से बाइबिल वचन की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तरह अटपटे ही लगते हैं—उपहासास्पद ही बनते हैं। युग-नेतृत्व की महती आवश्यकता वानप्रस्थ ही पूरी करता रहा है, उसे ही करने का अधिकार भी है।

प्राचीनकाल के सन्यास को अब वानप्रस्थ में ही विलीन होना पड़ेगा। उस वेष में अवांछनीय व्यक्ति इतने अधिक घुस पड़े हैं कि संचित प्रतिष्ठा को समाप्त प्रायः करके रख दिया। फिर इन दिनों सन्यास के साथ अकर्मण्यता, मुफ्तखोरी—सेवाधर्म से विमुखता और आडम्बर, अन्धविश्वासों के विस्तार की विडम्बना ने स्थिति सर्वथा बदल दी है। भिक्षा व्यवसाय अब जन आक्रोश का केन्द्र बनने जा रहा है। वस्त्र रंगने मात्र से राजसी निर्वाह प्राप्त करने के अधिकार को अगले दिनों कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा और धर्म परम्परा की दुहाई देने से भी चमड़ी को बचाया न जा सकेगा। अस्तु सन्यास को वानप्रस्थ में विलीन करके एक सहज सुलभ परमार्थ जीवन प्रक्रिया को अपनाने से ही काम चलेगा। वही इस योग के अनुकूल है और उपयुक्त भी।

वानप्रस्थ का सामान्य स्वरूप यह है—व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं को जीवन-निर्वाह के सादगीपूर्ण बिन्दु तक सीमित करके संयमी और मितव्ययी जीवन जिया जाय। सन्तोत्पादन न किया जाय। आन्तरिक स्तर को परिष्कृत करने के लिये सद्ज्ञान संचय एवं तपसाधना का आश्रय लिया जाय। इसके अतिरिक्त जन-मानस में युगान्तरकारी परिवर्तन लाने के लिये ज्ञान-यज्ञ की ज्वालायें प्रचण्ड बनाने की सेवासाधना में अनवरत् रूप से तत्पर रहा जाय। यही है वानप्रस्थी जीवन-दर्शन। उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अपनी शक्तियों को अधिकाधिक मात्रा में लगाना आवश्यक हो जाता है, अतएव यह आवश्यक है कि पारिवारिक उत्तरदायित्वों का भार या तो बिल्कुल ही न हो—यदि हो तो वह इतना कम हो कि परमार्थ प्रयोजन की विधि व्यवस्था के लिए अवकाश और मनोयोग की कहने लायक मात्रा हाथ में रह सके।

शरीर और परिवार की सज्जा व्यवस्था में संलग्न क्षमता एवं उत्कण्ठा को समेटकर ही परमार्थ प्रयोजन में लगाया जा सकता है। यदि पूर्व पक्ष में मनोयोग जुटा जकड़ा रहे तो क्षमता का महत्त्वपूर्ण अंश उसी में खप जायेगा, तब परमार्थ की बात अत्यन्त स्वल्प मात्रा में ही सम्भव हो सकेगी। वस्तुतः वानप्रस्थ का उत्तरदायित्व गृहस्थ जीवन की अपेक्षा कई गुना भारी और विशाल है। इसलिए उसमें शक्ति एवं साधनों का भी अत्यधिक मात्रा में लगना अभीष्ट है। यह बचत तभी हो सकती है, जब लोभ और मोह की भावनात्मक दुर्बलताओं से पिण्ड छूटे और घर परिवार की जिम्मेदारियों का छकड़ा खींचने से दम मारने लायक राहत मिल सके। इसलिए वान्रस्थ की पात्रता में सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि व्यक्ति के पारिवारिक उत्तरदायित्व हलके हुए कि नहीं, परमार्थ प्रयोजन के लिए समय और मन का महत्त्वपूर्ण अंश बच सकता है या नहीं। यह गुत्थी सुलझाये बिना वानप्रस्थ की बात बनती नहीं यह आदर्शवादी छलांग लगाना उन्हीं के लिए सम्भव है, जिन्होंने अपने लौकिक उत्तरदायित्वों को हलका करने की स्थिति प्राप्त कर ली है।

वानप्रस्थ का संस्कार कृत्य सरल है। यज्ञ, देव-पूजन, सम्भ्रान्त सज्जनों की उपस्थिति, व्रत धारण कोपीन एवं दण्ड धारण, पीत, परिधान, जलकलशों का अभिषेक, मंगल ऋचाओं का उच्चारण, विवेचन, प्रवचन, प्रभृति क्रिया-कृत्यों के साथ का यह संस्कार एक-दो घण्टे में सम्पन्न हो जाता है। प्रतीकात्मक कम से कम एक अथवा सभी सुविधानुसार पीले वस्त्रधारण करना उपयुक्त माना गया है। अपने आपको उद्बोधन और जनता को उस व्यक्ति के स्तर का परिचय पीत-वस्त्रों के आधार पर होता है इसलिए उनकी उपयोगिता से इन्कार नहीं किया जा सकता। प्राचीनकाल में वानप्रस्थ में पत्नी तो साथ रखी जा सकती थी—पत्नी के साथ रहा जा सकता था पर ब्रह्मचर्य धारण करना अनिवार्य था। समय की स्थिति को देखते हुये इन दिनों सन्तानोत्पादन पर ही प्रतिबन्ध रहना चाहिए। वीर्यरक्षा की उपयोगिता उन्हें स्वयं समझनी चाहिये पर इस पर अनिवार्यता का बन्धन न रहे तो अधिक उत्तम है, उससे उन्हें समय कुसमय होने पर व्रतभंग करने का पश्चाताप न करना पड़ेगा। बाह्य दृष्टि से इतना ही व्रत धारण एवं कर्म-काण्ड पर्याप्त हैं। मूल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बात गतिविधि परक है—परमार्थ प्रयोजनों में समय एवं मनोयोग की मात्रा बढ़ानी ही पड़ती है। यह कटौती घर परिवार की व्यस्तता में से—मन की तृष्णा, लालसा में से ही तो करनी पड़ेगी। इसलिए वानप्रस्थ का मूल-भूत परिवर्तन यहीं से आरम्भ होगा। इसी केन्द्र-बिन्दु से दिशा बदलेगी।

वानप्रस्थ के परमार्थ पथ प्रवेश को तीन स्तरों में विभक्त किया जा सकता है। उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ। सर्वोत्तम, अधिक श्रेष्ठ, एवं श्रेष्ठ के उतार-चढ़ाव इस महान प्रक्रिया में भी हो सकते हैं।

सर्वोत्तम वह स्थिति है जिसमें पारिवारिक उत्तरदायित्वों को अन्य विश्वस्त एवं निष्ठावान परिजनों पर छोड़कर स्वयं पूरा समय परमार्थ प्रयोजन में लगाने के लिए तत्पर हो जायें। कुछ समय इस अभिनव जीवन प्रणाली की विधि व्यवस्था का तात्विक अध्ययन और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करें और फिर विश्व-मानव की सेवा साधना में जुट जायें। दिनचर्या का ऐसा निर्धारण होना चाहिए, जिसमें स्वाध्याय और योग साधन तपश्चर्या के लिए भी समुचित स्थान रहे और शेष समय सेवा-कार्यों में लगा रहे। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस युग की महानतम आवश्यकता और विश्व-मानव की सेवा साधना एक ही है, जनमानस का भावनात्मक नवनिर्माण। इसके लिए ज्ञान यज्ञ की विचार-क्रान्ति श्रृंखला इन दिनों चल रही है। इस केन्द्र पर ही प्रत्येक विचारशील का ध्यान केन्द्रित होना चाहिए। इस चरण को पूरा करने के बाद ही रचनात्मक एवं संघर्षात्मक कार्य हो सकता है। उद्योग, शिल्प, चिकित्सालय, मन्दिर, धर्मशाला, प्याऊ, सदावर्त आदि कितने ही लोकोपयोगी कार्य हो सकते हैं पर वानप्रस्थ को एक ही लक्ष्य सामने रखना चाहिए—विचार-क्रान्ति, बौद्धिक परिष्कार, भावनात्मक नवनिर्माण। इसी से सम्बद्ध सेवा कार्य हाथ में लिए जाएँ। यह कार्य प्रत्यक्ष में नहीं देखा जाता और उसका परिणाम इमारतों की तरह आँखों के सामने नहीं आता इसलिए उथली तवियत के लोग उस दिशा में उदासीन देखे जाते हैं और ऐसे कार्य पकड़ते हैं, जिन्हें आँखों से देखा-जाना जा सके। इस संकटकाल में आपत्ति धर्म की तरह हमें केवल ज्ञान-यज्ञ की महान प्रक्रिया को ही सामने रखना चाहिए। वानप्रस्थ की सेवा-साधना का प्रत्येक कदम इसी दिशा में उठाना चाहिए।

सर्वोत्तम स्तर के वानप्रस्थ-परिव्राजक स्तर की जीवन चर्या अपनाते हैं। वे आश्रम बनाकर नहीं बैठते वरन् जहाँ भी सत्प्रवृत्तियों के अंकुर उगे हुए हैं, उन्हें सींचने के लिये यत्र-तत्र भ्रमण करते हैं। लोग आरम्भिक उत्साह में कई तरह की सत्प्रवृत्तियाँ आरम्भ करते हैं। पीछे जोश ढीला पड़ते ही वे मुरझाने लगते हैं। यही बात व्यक्तिगत उत्साह पर लागू होती है। कितने ही व्यक्ति आवेश पूर्वक परमार्थ पथ पर चलने के लिए अग्रसर होते हैं, पीछे वे भी ढीले हो जाते हैं। इस प्रकार व्यक्तियों का—सत्प्रवृत्तियों का मुरझाना आरम्भ हो जाता है। आकांक्षा रहते हुए भी शिथिलता कुछ करने नहीं देती। ऐसी प्रवृत्तियों और ऐसे व्यक्तियों से सम्पर्क बनाकर उनमें उत्साह उत्पन्न करना और पुनःजागृति करने के लिए उपदेश करना ही नहीं कन्धे से कन्धा, कदम से कदम मिलाना भी आवश्यक होता है। यही कार्य वानप्रस्थी को निरन्तर करना पड़ता है। नये क्षेत्रों में जागृति पैदा करना भी उचित है पर पहली आवश्यकता उन पौधों की है, जो उगे तो सही पर खाद के पानी के अभाव में मुरझाते, झुलसते चले जाते हैं। नये आरोपण की अपेक्षा इन मुरझाये हुओं को सींचना आवश्यक है। वानप्रस्थ की परिव्रज्या इसी प्रयोजन में संलग्न होती है। बुद्ध धर्म में यही परिव्रज्या तपस्वी जीवन का अनिवार्य अंग थी। उससे पूर्वकाल के साधु-ब्राह्मण और वानप्रस्थ इसी के लिये अपने को तत्पर समर्पित करते रहे हैं। बादल जहाँ-तहाँ जाकर बरसते हैं वानप्रस्थ की परिव्रज्या भी बादलों को वर्षा रूप में बदलकर अपने अस्तित्व का श्रेष्ठतम समापन करने के रूप में ही अपना आदर्श उपस्थित करती है। घर परिवार की चिन्ताओं से निवृत्त होकर दीर्घकालीन एवं निश्चित परिव्रज्या को निकल पड़ना—लगभग उसी स्तर का है जिस प्रकार भूत-काल में शत्रु की विशाल सेना से निपटने के लिए थोड़े से सैनिक 'जुहार' प्रथा के अनुसार किले से शिर पर कफन बाँधकर निकलते थे और लड़ते-लड़ते इसी शत्रु सेना में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने को खपा देते थे। दशों दिशाओं में संव्याप्त असुरता के विरुद्ध वानप्रस्थी सेना को उसी महान परम्परा का अनुसरण करना पड़ता है। विचार क्रान्ति की तलवार चलाते हुए उनके सिर कटे, रुण्ड भी उठ-उठकर लड़ते हैं।

मध्यमस्तर के वानप्रस्थी वे हैं जिनके लिए अपने घर परिवार के बीच रहते हुए—अपने समीपवर्ती क्षेत्र में काम करना अधिक सुविधा-जनक पड़ता है। इसमें वे परिवार को मार्गदर्शन, परामर्श, नियन्त्रण और सहयोग का लाभ भी यथासम्भव देते रहते हैं। सुविधाजनक जीवन-यापन का सुयोग भी मिलता रहता है और समीपवर्ती परिचित क्षेत्र में अपना काम भी कस्ते रहते हैं। मुख्य काम वे परमार्थ प्रयोजन को ही मानते हैं और उसी में अपना मनोयोग भी लगाते हैं। परिवार की देख-भाल तो एक सरल स्वभाव चलते रहने वाला गौण कार्य होता है। कोई विशेष अड़चन आ जाय तो बात दूसरी है अन्यथा उनका अपनी रुचि का विषय परमार्थ ही होता है। अपने समय, श्रम और मनोयोग को उसी में लगाते हैं। घर रहते हुए भी जल में कमल जैसी स्थिति ही बनाये रहते हैं। एकान्त निवास के लिए घर में या किसी निकटवर्ती देवालय आदि में अपना निवास रखते हैं, जिससे अपने विरक्तस्तर का भान निरन्तर होता रहे।

कनिष्ठ स्तर का वानप्रस्थ वह है जिसमें पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह भी जुड़ा हुआ है। बच्चे छोटे हैं, पत्नी शारीरिक अथवा मानसिक दृष्टि से रुग्ण है। अन्य विशेषताऐं ऐसी हैं जिनमें घर छोड़कर अन्यत्र जा सकना सम्भव नहीं। परिवार के लिए आजीविका उपार्जन करने से भी छुटकारा नहीं ऐसी स्थिति में भी कनिष्ठ वानप्रस्थ लिया जा सकता है किन्तु उसमें भी दो शर्तें तो पालनी ही पड़ती हैं। एक यह कि सन्तानोत्पादन उत्तम और मध्यम वानप्रस्थी की तरह ही बन्द कर दिया जाय और कम से कम चार घण्टे प्रतिदिन अपने समीपवर्ती क्षेत्र में ज्ञानयज्ञ सत्यप्रवृत्तियों के अभिवर्धन में लगाते हैं। साधारणतया ७ घण्टे सोने के लिए, पाँच घण्टे फुटकर कामों के लिए और आठ घण्टे आजीविका उपार्जन के लिए नियत रखे जायें तो इन बीस घण्टों में शारीरिक पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भली प्रकार निवाही जा सकती हैं और चार घण्टे का समय परामर्श प्रयोजन के लिए बड़ी आसानी से लगाया जा सकता है। मन मुर्दा हो गया हो तो बात दूर अन्यथा कोई भी भावनाशील व्यक्ति इतना समय सदुद्देश्य के लिए निकाल सकता है और लगा भी सकता है। आमतौर से लोग ढेरों समय ऐसे ही आलस्य प्रमाद में नष्ट करते रहते हैं यदि मुस्तैदी से पूरा मन लगाकर काम करने की आदत हो तो घिस-घिस पूरा समय नष्ट करा देती है और फुरसत न मिलने पर शिकायत बनी रहती है—उसका कोई कारण न रह जाय। घरेलू काम भी आसानी से निपट जायें और परमार्थ के लिये भी चार घण्टे निकल आवें। इन सन्तानोत्पादन की बन्दी और चार घण्टे ज्ञानयज्ञ के लिए समय दान का जो साहस कर सके वे भी कनिष्ठ स्तर का वानप्रस्थ ले सकते हैं। प्रभु समर्पित जीवन भी गहन आस्था रखते हुए घर परिवार को संरक्षक माली मुनीम जैसी ईश्वरीय नियुक्ति की मान्यता अपने सम्बन्ध में रख सकते हैं। छुट्टी के दिनों परिव्रज्या के लिये अधिक दूर तक जा सकते हैं किन्तु साधारण समय में समीपवर्ती सम्पर्क क्षेत्र ही उनकी परिव्रज्या की परिधि बना रह सकता है। इतना साहस कर सकने वाले भी ढलती आयु के श्रेष्ठतम सदुपयोग वानप्रस्थ का एक सीमा तक लाभ उठा सकते हैं।

परमार्थ जीवन की समग्र शिक्षा साधना

गृहस्थ में प्रवेश करने से पूर्व किशोरावस्था में विद्याध्ययन और स्वास्थ्य सम्वर्धन ही नहीं उपार्जन और परिवार व्यवस्था की क्षमता भी विकसित करनी पड़ती है। सर्वथा अयोग्य और अक्षम व्यक्ति यदि गृहस्थ में प्रवेश करे तो अचानक शिर पर आ पड़ने वाले भारी उत्तरदायित्वों का निर्वाह कठिन हो जायेगा। तब सम्भव है वह उस कार्य में असफल सिद्ध हो और गृहस्थी एक जंजाल बनकर रह जाय।

वानप्रस्थ में भी यही आवश्यकता सामने रहती है। यह भी एक अनभ्यस्त जीवनचर्या है। पढ़ा, सुना कितना ही कुछ क्यों न हो, अनुभव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और अभ्यास के बिना सब कुछ काल्पनिक ही रहता है। कल्पनायें कितनी ही भावपूर्ण एवं सदुद्देश्य प्रेरित क्यों न हों—जब तक वे व्यावहारिकता के क्षेत्र में न उतरेंगी—लक्ष्य पूरा कर सकने योग्य सक्षम न बनेंगी। डाक्टर, इंजीनियर, ड्राइवर, चित्रकार, सेनापति आदि महत्त्वपूर्ण कार्यों का निर्वाह मात्र पुस्तकें पढ़ने या उन विषयों पर मनन चिन्तन करते रहने से संभव नहीं हो सकता। व्यावहारिक अनुभव के लिए क्रियात्मक शिक्षा प्राप्त करने की अनिवार्य आवश्यकता रहती है। दर्जी, मोची, धोबी, कुम्हार, लुहार, सुनार, जुलाहे, रंगरेज जैसे सामान्य शिल्पी भी वर्षों अभ्यास करने के उपरान्त अपने कार्य में निष्णात हो पाते हैं तो यह कैसे सम्भव हो सकता है कि वानप्रस्थ लेकर अनभ्यस्त परमार्थ जीवन के क्रिया-कलाप की सुसम्पादित किया जा सके। इसलिए भी व्यावहारिक शिक्षा और अनुभव, अभ्यास की कम आवश्यकता नहीं होती। मात्र संस्कार का कर्मकाण्ड पूरा कर लेने और मन चाही रीति-नीति अपनाये रहने से तो इस महान प्रयोजन की पूर्ति नहीं हो सकती। लकीर पीटनी हो तो बात दूसरी है।

वानप्रस्थ प्रक्रिया की अभिनव जीवन पद्धति को अपनाने का श्रीगणेश करते हुए, उसका सुयोग्य प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है। इसके लिए व्यवस्था जुटाई जानी आवश्यक थी सो जुटा भी दी गई है। सातों ऋषियों की तपस्थली—गंगा की सात धाराओं के पुण्य-प्रवाह के दिव्य स्थान—हिमालय के शुभारम्भ पर अवस्थित सप्त सरोवर हरिद्वार का शान्ति कुंज ऐसे ही प्रयोजनों के लिए बना है। सुसंस्कारी मनोभूमि के व्यक्तित्वों को यहाँ प्राण प्रत्यावर्तन स्तर के अनुदान मिले हैं और अनेकों ने अभिनव प्राण संचार की समर्थ प्राण चेतना लेकर उच्चस्तरीय जीवनक्रम में साहस भरा प्रयाण आरम्भ किया है। वह क्रम अपनी गति से चलता रहे साथ ही वानप्रस्थ जीवन की समग्र शिक्षा की प्रबन्ध विधि-व्यवस्था से चल पड़े ऐसा सुयोग बन रहा है। इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए चालीस कमरे इन्हीं दिनों बन रहे हैं उनमें दो-दो शिक्षार्थी आसानी से रह सकेंगे इस प्रकार लगभग ८० वानप्रस्थ शिक्षार्थियों का प्रशिक्षण भी साथ-साथ चलता रहेगा। कहना न होगा कि यह स्थान अभीष्ट प्रयोजन के लिए सर्वथा उपयुक्त ही सिद्ध होगा। स्थान की दृष्टि से उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि असंदिग्ध और असामान्य है। साधना और शिक्षा के समुचित साधन यहाँ उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा का अभाव एवं स्तर यहाँ ऐसा नहीं होगा जिससे किसी को असन्तोष हो। स्नेह और सौजन्य भरा वातावरण भी ऐसा है, जिसके कारण घर छोड़कर वहाँ पहुँचने वालों को उदासीनता प्रायः नहीं ही होती। अधिक न सही पर कम आत्मीयता का वातावरण भी यहाँ नहीं है। ऐसी दशा में ब्रह्म-विद्या की तत्वदर्शी ज्ञान-सम्पादन, योगाभ्यास एवं तप साधना की अभीष्ट मात्रा में उपलब्धि यहाँ सहज ही हो सकती है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति और समाज की वर्तमान समस्याओं का स्वरूप एवं समाधान भी इस तरह सीखा, समझा जा सकेगा कि उस आधार पर लोकसेवा के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले को अभीष्ट सफलता प्राप्त करने में विशेष कठिनाई का अनुभव न करना पड़े।

धर्म मंच लोक-शिक्षण का महान प्रयोजन लेकर चलने वाले को कितनी ही रचनात्मक प्रवृत्तियों का अनुभव, अभ्यास करना पड़ता है। इन प्रयोजनों में आने वाले उतार-चढ़ावों की जानकारी तथा पग-पग पर आने वाली बाधाओं और कठिनाइयों के निवारण का क्रम मालूम हो तो सेवा-साधक का मार्ग सहज ही सुलभ हो जायेगा। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश करने वाले को अनेक स्तरों के, व्यक्तियों से पाला पड़ता है और उनकी असंख्य शंका-कुशंकाओं का समाधान करना पड़ता है, इस स्थिति का सामना कर सकने के लिए पूर्ण तैयारी होनी चाहिए। अध्ययन और चिन्तन जितना विशाल होगा उतना ही समाधान कर सकने की क्षमता सुविस्तृत होगी।

वानप्रस्थों को लोक-शिक्षण की भूमिका का निर्वाह अनिवार्य रूप से करना पड़ता है। अतएव उन्हें प्रवचन कला का ज्ञान और अभ्यास होना ही चाहिए। गोष्ठियों, सम्मेलनों और समारोहों पर उपस्थित जन-समूह को दिशा देनी पड़ती है। पर्व और संस्कारों का प्रचलन युग-निर्माण मिशन ने अत्यन्त उत्साह-पूर्वक किया है। इस सन्दर्भ में आये दिन कुछ आयोजन होते ही रहते हैं और उनमें उद्बोधन करना अनिवार्य हो जाता है। अन्यान्य संस्थाओं द्वारा विविध प्रयोजनों के लिए आयोजित समारोहों में भी युग-निर्माण मिशन के कार्यकर्ताओं को आदरपूर्वक आमन्त्रित किया जाता है और कुछ कहने के लिए अनुरोध किया जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। अतएव अपने मिशन को अन्यान्य संस्थानों के दृष्टिकोणों के साथ तालमेल बिठाते हुए प्रस्तुत करना पड़ता है। इसलिए आवश्यक तैयारी पहले से ही होनी चाहिए। अन्यथा सभी को बड़ी निराशा होती है। वक्तृत्व-कला की उपयोगिता से इन्कार नहीं किया जा सकता वरन् सच तो यह है कि विचार-क्रान्ति का—अस्सी प्रतिशत अशिक्षितों के अपने देश में वाणी का प्रखर प्रयोग करके ही हम विचार-क्रान्ति का उद्देश्य पूरा कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में प्रवचन शैली का अभ्यास ही पर्याप्त नहीं वरन् विचारों की क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित शृंखला भी मस्तिष्क में पहले से ही भली प्रकार जमी रहनी चाहिए ताकि समय पर अविरल प्रयास के साथ बिना रुके, हिचके अपनी बात कही जा सके।

सेवा-साधना के शिक्षा सन्दर्भ में प्रवचन प्रक्रिया को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उसे न केवल सिद्धान्त रूप में वरन् व्यावहारिक अभ्यास में भी इस प्रकार समाविष्ट किया जाता है कि सेवा-साधना हैं निरत वानप्रस्थ को प्रवचन का अवसर आने पर झेंप झिझक का सामना न करना पड़े।

शान्ति कुंज में वानप्रस्थ शिक्षा विद्यालय का शिक्षा सत्र छः-छः महीने का रखा जायेगा। आरम्भिक सत्र जनवरी से आरम्भ होकर ३० जून तक चलेगा। इसके उपरान्त दूसरा छः महीने का सत्र १ जुलाई से ३० दिसम्बर तक चलेगा। यही क्रम लगातार जारी रहेगा। हर वर्ष दो सत्र सम्पन्न हुआ करेंगे। शिक्षण क्रम में वानप्रस्थ के तीनों अनिवार्य अंगों का समुचित समावेश है।

ब्रह्मविद्या के तत्व-दर्शन का सहारा लेकर सद्ज्ञान सम्पादन के लिए उपयोगी पाठ्यक्रम बनाया गया है। वेद-शास्त्र, उपनिषद्, दर्शन-गीता, रामायण, महाभारत आदि आर्यग्रन्थों और ऋषि-मुनियों के—देव अवतारों आदि पुरुषों के अभिवचनों का आधार लेकर आत्मा और परमात्मा तथा जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति और पूर्ति सम्बन्धी सभी आवश्यक तथ्यों से शिक्षार्थियों को अवगत कराया जाता है। अध्यात्म के नाम पर जो भ्रान्तियाँ और विकृतियाँ इन दिनों चल पड़ी हैं, उनके प्रचलन में क्या दुरभि-सन्धियाँ जुड़ी रहीं इसके तथ्य प्रस्तुत किये जाते हैं, ताकि प्रचलित भ्रम-धारणाओं के अन्धकार को चीरते हुए यथार्थ अध्यात्म का स्वरूप स्वयं समझ सकना, दूसरों को समझा सकना इस शिक्षण पद्धति में पूरी तरह समाविष्ट रहेगा। सांगोपांग, वेद-शास्त्र, दर्शन-उपनिषद् तो छः महीने में नहीं सिखाये-पढ़ाये जा सकते पर उनका सारतत्व और मर्म इस थोड़ी सी अवधि में ही इतनी मात्रा में हृदयंगम करा दिया जायेगा—जिसे असन्तोष और अपर्याप्त न कहा जा सके।

इसी प्रकार इन्हीं छः महीनों में गायत्री-उपासना की उच्चस्तरीय भूमिका में वानप्रस्थी साधकों का प्रवेश कराया जायेगा। जप, अनुष्ठान-परक, गायत्री-उपासना के क्रिया-योग से प्रायः सभी परिजन परिचित हैं। उसकी साधना भी दैनिक और सामयिक क्रम पद्धति के अनुसार करते-कराते रहे हैं। अब अगली कक्षा में प्रवेश करना होगा और 'भाव भूमिका' यथा शक्ति भूमिका के उच्चतर और उच्चतम साधन-विधानों का अवगाहन करना होगा।

गायत्री के पाँच मुख, पाँच चरण प्रख्यात हैं। इन्हें अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश, आनन्दमय कोश, समझा जाना चाहिए। इन्हीं पाँचों स्तरों में मूलाधार-चक्र के कुण्डलिनी केन्द्र को छोड़कर पाँच कोशों और पाँच चक्रों की साधना के लिए जिन पाँच योगों की तपश्चर्या करनी पड़ती है उन्हें लययोग, प्राणयोग, बिन्दुयोग, ऋजुयोग और नादयोग कह सकते हैं। इन पाँच योगों की भौतिक और आध्यात्मिक प्रतिक्रियाओं को पाँच देवसत्ताओं के नाम से जाना जाता है। भवानी, गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, महेश के पौराणिक अलंकार वर्णन में जिन महिमा महात्म्यों का वर्णन किया गया है उन्हें प्रकारान्तर से इन पाँच कोशों की, पाँच चक्रों की, पाँच योगों की प्रखरता ही समझनी चाहिए। पंचमुखी गायत्री साधना का उच्चस्तरीय उपक्रम यही है। इसका प्रारम्भिक आभास-अभ्यास प्राण-प्रत्यावर्तन सत्रों में भी कराया जाता है, किन्तु चार दिनों में तो मात्र झाँकी ही मिल सकती है—परिचय ही हो सकता है। उस साधना के लिए अधिक और अनवरत् श्रम समय चाहिए। इस प्रकार के अभ्यास इस छः महीने की तपश्चर्या अवधि में ही सम्भव हैं। गंगा-तट, हिमालय का क्षेत्र, सात ऋषियों की तपोभूमि के अतिरिक्त उपयुक्त मार्ग दर्शन संरक्षण का सुयोग उन दिनों मिलता रहने से प्रयास की सफलता असंदिग्ध ही रहेगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आहार-विहार योगियों जैसे नियम प्रतिबन्धों से जकड़ी हुई ऋषि जीवन-प्रक्रिया साधकों के मल आवरण विक्षेपों के निवारण, निराकरण में कितनी अधिक सहायक हो सकती है, उसे प्राप्त वचनों से ही नहीं अनुभव से भी जानने का जो सुअवसर मिलेगा, उसे हर साधक अपना अभिनव सौभाग्य ही अनुभव करेगा। शारीरिक दृष्टि से तपस्वी रीति-नीति अपनाने वाले को स्वभावतः कुछ कष्ट रहता है पर उसकी भरपाई मानसिक सन्तोष और आत्मिक उल्लास के रूप में सहज ही हो जाती है। तप साधता से निखरा हुआ व्यक्तित्व देव भूमिका की अनुभूति कराता है—इस प्रकार उस कष्ट साध्य प्रणाली को अपनाने पर भी किसी को यह प्रतीत नहीं होता कि घाटा उठाया जा रहा है। तपे हुए स्वर्ण जैसी आभा लेकर ऐसे व्यक्तित्व जब जन-सम्पर्क में उतरते हैं तो उन्हें अपनी प्रतिभा और प्रभावी क्षमता का स्पष्ट अनुभव होता है। जिस कार्य में हाथ डाला जाय जिस—दिशा में कदम बढ़ाया जाय उसमें सफलता ही मिलती चली जाय तो यही निष्कर्ष निकालना पड़ेगा कि तपश्चर्या व्यक्तित्व को प्रखर और ज्योतिर्मय बनाने की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया है।

ब्रह्मज्ञान साधना और योग-तपश्चर्या का स्वर्ण सुयोग यों जितनी लम्बी अवधि तक मिलता रह सके उतना ही मनुष्य का सौभाग्य है पर इस आपत्तिकाल में आपत्ति धर्म का पालन करते हुए सेवा-साधना भी तो करनी ही है। युग-वेदना के विलखते क्रन्दन को भी तो अनसुना नहीं किया जा सकता। जलती हुई मान्यता को दम तोड़ते हुए भी तो नहीं देखा जा सकता। इन दिनों लम्बी योग-साधना और ज्ञान-साधना तक सीमित होकर कोई भावनाशील जीवन्त आत्मा बैठ ही नहीं सकती। अग्निकाण्ड की ज्वालायें बुझाने में समस्त आवश्यक कार्य छोड़कर जुटना पड़ता है, इसी प्रकार समय की विभीषिकाओं और विकृतियों से निपटे बिना भी काम नहीं चल सकता। हर वानप्रस्थ को धर्म क्षेत्र में—कुरुक्षेत्र में—उतरना ही पड़ेगा। गाण्डीव शर-सन्धान से इस आपत्तिकाल में किसी परमार्थ प्रेमी को छुट्टी मिल ही नहीं सकती। आत्म-कल्याण के साधन जुटाने में थोड़ी प्रतीक्षा भी की जा सकती है पर ; आपत्तिधर्म का सामयिक कर्त्तव्य तो हर हालत में पालन करना ही पड़ेगा। विश्व-कल्याण की तुलना में आत्मकल्याण को उपेक्षित भी किया जा सकता है।

यों सेवा साधना भी विशुद्ध रूप में एक योग-साधना ही है। सद्विचारों में सत्प्रवृत्तियों में निमग्न रहना किसी उच्चस्तरीय तप से कम मत्त्वपूर्ण नहीं। दूसरों के आन्तरिक स्तर को ऊँचा उठाना उनके जीवनक्रम को सुख-शान्ति से ओत-प्रोत करने के लिए दिया गया श्रेष्ठतम अनुदान ही है। इसे उच्चस्तरीय पुण्य परोपकार ही कहा जायेगा। देश, धर्म, समाज और संस्कृति के सृजन, सिंचन में बहाये गये स्वेद-बिन्दुओं को पर ब्रह्म को अमृतजल से स्नान कराना है। भगवान का प्रत्यक्ष स्वरूप वस्तुतः यह मूर्तिमान विश्व ही तो है। पिछड़ेपन से जूझकर हम रीछ-वानरों जैसे त्रेता कालीन शूरवीरता का ही परिचय देते हैं। जीवन और आदर्शों के बीच जो समुद्र जैसा व्यवधान खड़ा हो गया है, इस खाई को पाटने में प्रवृत्त होना रामादल द्वारा पत्थर के ढेले इकट्ठे करके समुद्र पुल बनाने की त्रेताकालीन पुनरावृत्ति ही है। हनुमान, अंगद, जामवन्त, नल-नील की—अर्जुन भीम की—बुद्ध, गान्धी, रामदास, गोविन्दसिंह, विवेकानन्द की पुण्य प्रक्रिया अपनाकर वस्तुतः हम युग-साधना में ही प्रवृत्त रहते हैं। उसे किसी भजन या तप से कम महत्त्व का नहीं माना जा सकता। अतएव वानप्रस्थ साधकों को सेवा साधना में भी संलग्न किया जाना अनिवार्य है। ज्ञान-यज्ञ को ज्योतिर्मय बनाने के लिए—विचार क्रान्ति की चिनगारी को दावानल स्तर तक ले जाने की जिम्मेदारी उन्हीं की है।

इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वानप्रस्थों की शिक्षा पद्धति का समय विभाजन किया गया है। वे छः महीने हरिद्वार रहें—इसके उपरान्त प्रशिक्षित एवं प्रामाणिक युग-निर्माता के रूप में लोक-मंगल के अभियान को अग्रगामी बनाने के लिए निकल पड़ें। उन्हें नया कार्यक्षेत्र तलाश भी नहीं करना पड़ेगा। युग-निर्माण परिवार की चार हजार शाखाओं को सक्रिय और अग्रगामी बनाने के लिए एक-एक वानप्रस्थ की स्थाई आवश्यकता है। इस प्रकार चार हजार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वानप्रस्थों के लिए बनाया कार्यक्षेत्र तो उनकी प्रतीक्षा में आँखें बिछाये बैठा है। विदेशों में भारतीय संस्कृति की मिशनरी बड़ी आंतुरता पूर्वक आमन्त्रित की जा रही है। यदि लोक सेवकों की संख्या बढ़े तो शतसूत्री युग-निर्माण योजना को कल ही गगनचुम्बी बनाया जा सकता है। देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए न्यूनतम एक लाख लोकसेवी चाहिए। समस्त विश्व की आवयकता को ध्यान में रखा जाय तो यह संख्या एक करोड़ तो होनी ही चाहिए। वानप्रस्थ स्तर के कार्यकर्ता ही इसकी पूर्ति करेंगे। परिवार की जिम्मेदारियों से निवृत होने के कारण वे अवैतनिक रूप में कार्य कर सकेंगे और जनता उनके भोजन, वस्त्र का खर्च अत्यन्त प्रसन्नता और कृतज्ञतापूर्वक वहन करेगी। परिपक्व आयु की शालीनता, लम्बी अवधि का व्यावहारिक अनुभव, वानप्रस्थ महापीठ में रहकर ज्ञान-साधना तथा तपश्चर्या के आधार पर विकसित प्रतिभा—नव-निर्माण के उपयुक्त सेवा-साधना का उपयोगी प्रशिक्षण—इन सब विभूतियों से सज्जित वानप्रस्थ लोक-निर्माण की महती आवश्यकता पूर्ण कर सकने में सर्व समर्थ सिद्ध हो सकते हैं।

यों वानप्रस्थ सन्यास की लकीर पीटते हुए मरे मुर्दे जहाँ-तहाँ निकम्मी लाशों की तरह गिरे पड़े और सड़ते हुए देखे जा सकते हैं। गृह-कलह से ऊबे हुए—पग-पग पर अपमानित होते हुए—आलस और प्रमाद से अपनी आदतों को घिनौनी बनाये हुए चैन की साँस लेने और मुफ्त की रोटी तोड़ने के लिए जिस-तिस आश्रम में जगह घेरे पड़े पाये जा सकते हैं। उल्टी-सीधी माला सटक लेने और जिधर-तिधर देवदर्शन की मटर गश्ती करते हुए तथा कथित सत्संगों में ऊँघते हुए इस स्तर के हजारों लाखों व्यक्ति जहाँ-तहाँ पाये जा सकते हैं। कोई वानप्रस्थ का वाना पहने है, किसी ने सन्यास के कपड़े रंग लिए हैं। इन भूभार जीवित मृतकों की संख्या में और वृद्धि करना अपना तनिक भी उद्देश्य नहीं। हमें तो तेजस्वी, मनस्वी, कर्मवीर और आत्मकल्याण तथा विश्वकल्याण में प्रबल पुरुषार्थ के लिए जुट पड़ने वाले परमार्थ परायण व्यक्तित्व चाहिए। उन्हीं को वानप्रस्थ में प्रवेश करने का आमन्त्रण दिया जा रहा है।

वानप्रस्थ सेवा साधना का स्वरूप और दर्शन

स्पष्ट है कि वानप्रस्थ परक परमार्थ जीवन में प्रवेश करने वालों को जहाँ ज्ञान साधना और योग साधना द्वारा आत्मबल सम्पादन करना है, वहाँ लोक मंगल के लिए अपनी विभूतियों को समर्पित करते हुए विश्व मानव को अधिकाधिक श्रेष्ठ समुन्नत बनाने में निरत निमग्न भी रहना है। जिन्हें सेवा धर्म पर आस्था न हो मात्र जप, तप और निवृत्तिपरक एकान्त सेवन अथवा सुख चैन के, बिना झंझट भरे दिन काटने हों, उन्हें इस क्षेत्र में प्रवेश नहीं करना चाहिए। वह स्थिति मरणकाल आदि के निकट आ जाने पर थके हारे और अशक्त असमर्थ लोगों के लिए ही उपयुक्त हो सकती है। इसे वैराग्य निवृत्ति सन्यास आदि अन्य किसी नाम से भले ही पुकारा जाय—परम तेजस्वी वानप्रस्थ के साथ तो नहीं ही जोड़ा जा सकता।

मनुष्य को जहाँ समाज प्रदत्त अगणित सुख सुविधाएँ उपलब्ध हैं। वहाँ उसे इस उत्तरदायित्व से भी लाद दिया गया है कि वह सामाजिक उत्कर्ष के लिए बढ़-चढ़ कर अनुदान प्रस्तुत करे और लोक सेवा की दृष्टि से इतना कुछ कर दिखाये जिससे उस पर चढ़ा हुआ भारी ऋण किसी न किसी प्रकार चुकता अथवा हलका हो सके। जो इस उत्तरदायित्व की उपेक्षा करता है, वह समाज द्रोही कहा जा सकता है।

अध्यात्म के दार्शनिक दृष्टिकोण के आधार पर देखा जाय तो मनुष्य को जो कुछ विशेषताएँ अन्य प्राणियों से अधिक दी हैं, वे विशुद्ध रूप से एक अमानत हैं। परमात्मा के सभी प्राणी समान रूप से पुत्र और प्रिय हैं। सबको समान अनुदान देना उसके लिए सामान्य न्याय था। पर मनुष्य को सबसे अधिक विभूतियाँ मिली हैं, उन्हें मौज मजा करने के लिए दिया गया पक्षपात पूर्ण उपहार नहीं माना जाना चाहिए वरन् ऐसी पवित्र अमानत माना जाना चाहिए, जिसका उपयोग विश्व वसुधा को समुन्नत और सुविकसित बनाने में ही किया जाना चाहिए। ईश्वर ने मनुष्य को अपने वरिष्ठ सहकारी के रूप में इसीलिए सृजा है कि विश्व व्यवस्था में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसकी अति महत्त्वपूर्ण भूमिका एवं उपयोगिता सम्भव हो सके।

चौरासी लाख योनियों के बाद मनुष्य जन्म मिलने और उसका सदुपयोग करके जीवन लक्ष्य प्राप्त करने का अवसर अतिशय सौभाग्य माना जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में प्रमाद करने पर फिर चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है। इस शास्त्र प्रतिपादन को ध्यान में रखने पर भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि मानव जीवन एक अद्‌भुत उपलब्धि है और उसका उपयोग परमार्थ प्रयोजनों में ही होना चाहिए। पेट प्रजनन जैसे पशुकर्मों में उसका न्यूनतम भाग ही लगाना चाहिए।

उपर्युक्त सभी दृष्टिकोणों से लोकमंगल के लिए बढ़-चढ़कर अनुदान प्रस्तुत करना मनुष्य का परम पवित्र कर्त्तव्य ठहरता है। पूजा-पत्री के कर्मकाण्डों की टण्ट-घण्ट में मन को इस प्रकार बहकाना उचित नहीं कि नाम रट से पाप कट जायेंगे और ईश्वर मिल जायेगा। यह सर्वथा निस्सार विडम्बना है। जीवन लक्ष्य की पूर्ति और ईश्वर प्राप्ति जैसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए मनुष्य को विश्व मानव की सेवा साधना में उच्चतम भावनाओं और प्रबल पराक्रम भरी चेष्टाओं के साथ संलग्न होना पड़ता है। इस राजमार्ग को छोड़कर और किसी पगडण्डी से जीवनोद्देश्य की पूर्ति हो नहीं सकती।

वानप्रस्थ जीवन इसी परमार्थ प्रयोजन की पूर्ति के लिए नियत निर्धारित है। उत्तरार्ध आयु को लोकमंगल के लिए समर्पित करके उन महान उत्तरदायित्वों को पूरा किया जा सकता है, जो सामाजिक ऋण से उऋण होने के लिए ईश्वर प्रदत्त बहुमूल्य अनुदान का सही उपयोग करने के लिए और चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के उपरान्त मिले अलभ्य अवसर को सदुपयोग करने की दृष्टि से नितान्त आवश्यक है। यह प्रयोजन लोकमंगल में ही प्रवृत्त होने से सम्भव हो सकता है। विश्व मानव की सेवा साधना से बढ़कर ईश्वर की भक्ति पूजा और नर जन्म की सार्थकता का और कोई मार्ग है भी नहीं। सच पूछा जाय तो ज्ञान साधना और योग साधना की उपयोगिता भी इसी दृष्टि से है कि इन उपायों में परिष्कृत किये गये व्यक्तित्व द्वारा अधिक उच्चस्तरीय सेवा साधना सम्भव हो सके अधिक उच्चकोटि का आत्मिक आनन्द प्राप्त किया जा सके।

वानप्रस्थ को लोकसेवा के जिस क्षेत्र को हाथ में लेना पड़ता है, वह जनमानस का भावनात्मक परिष्कार ही है। स्पष्ट है कि संसार की समस्त समस्याएँ मानवी चिन्तन की विकृतियों ने ही उत्पन्न की हैं। उनका समाधान आज या हजार वर्ष बाद जब भी होगा, लोकप्रवृत्तियों के अधोगामी प्रवाह को उलटकर ऊर्ध्वगामी बनाने से ही सम्भव होगा। भौतिक सम्पदाएँ एवं सुविधाएँ चाहे कितनी ही क्यों न बढ़ाली जायें यदि दृष्टिकोण में विकृतियाँ भरी होंगी तो बढ़ी हुई सम्पदा—विनाश व सर्वनाश के सरंजाम में ही बढ़ोत्तरी करेगी—सर्वनाश का दिन ही निकट लावेंगी। इसलिए धन-वैभव की भौतिक सुख सुविधाओं की अभिवृद्धि का कार्य दूसरे लोगों पर छोड़कर वानप्रस्थ का एक ही अछूता काम हाथ में लेना चाहिए कि उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व के लिए आवश्यक वातावरण एवं उत्साह किस प्रकार उत्पन्न किया जाय ? ज्ञान यज्ञ एवं विचार क्रान्ति इसी प्रक्रिया को कहा जा सकता है यह नींव यदि ठीक तरह भरली जाय तो नवयुग-निर्माण का भवन खड़ा करने की आधी समस्या सुलझ जायेगी। तब अनायास ही अगणित रचनात्मक एवं संघर्षात्मक क्रिया-कलाप उठ खड़े होगें और जो अधर्म के उन्मूलन एव धर्म के संस्थापन का ईश्वरीय प्रयोजन सहज ही पूरा करेंगें।

लोकशक्ति की प्रचण्डता और प्रखरता का हमें अनुभव करना होगा और संघबल उत्पन्न करके उसे सृजनात्मक प्रयोजनों में संलग्न करना होगा। यह कार्य इतना महान और इतना समर्थ है कि उसकी तुलना किसी अपराजेय महादैत्य से ही की जा सकती है। जन शक्ति का दैव दानव जिस मोर्चे पर भी डट जायेगा, उसे जीतकर ही छोड़ेगा। उसके सामने बड़ी से बड़ी शक्ति को भी झख मारनी पड़ती है।

दुर्गा अवतरण की कथा प्रसिद्ध है। असुरों के मुकाबिले जब देव हारने लगे, तब प्रजापति ने देवताओं को एकत्रित करके उनकी शक्ति का एक-एक अंश इकट्‌ठा किया और उस संचय से दुर्गा विनिर्मित कर दी। दुर्गा ने अपने प्रचण्ड पराक्रम से देखते-देखते शुम्भ, निशुम्भ महिषासुर, मधुकैटभ जैसे दुर्दान्त दैत्यों का उन्मूलन करके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रख दिया। इस प्रकार देवताओं का संकट दूर हुआ। ठीक इसी प्रकार की त्रेता कालीन कथा वह है जिसमें असुरों से संत्रस्त ऋषियों ने अपना रक्त एकत्रित करके एक घड़े में बन्द किया और जमीन में गाढ़ दिया। राजा जनक का हल उस घड़े से टकराया और उसमें से सीता नामक बालिका निकली। विख्यात है कि सीता के कारण ही लंका काण्ड प्रस्तुत हुआ और असुरों का समग्र निराकरण सम्भव हो गया। यह कथाएँ जन शक्ति की प्रचण्डता का रहस्योद्घाटन करती हैं और बताती हैं कि बड़े से बड़े संकट-विग्रह संघशक्ति के सामने धराशायी होकर रहते हैं।

इतिहास के पृष्ठ इसी तथ्य के प्रतिपादन से रंगे पड़े हैं। रीछ वानरों द्वारा समुद्र का पुल बाँधना और प्रतापी दानवों का परास्त किया जाना वस्तुतः जन-शक्ति की ही विजय है। ग्वाल-बालों की लाठी का सहारा लेकर कृष्ण ने उंगली पर गोवर्धन पर्वत उठाया था। भगवान बुद्ध के ढाई लाख शिष्य समस्त विश्व में प्रव्रज्या के लिए निकले थे और व्यापक हिंसा पर विजय प्राप्त करके धरती के कौने-कौने में अहिंसा धर्म की प्रतिष्ठापना की थी। गान्धी की सत्याग्राही सेना ने प्रतापी अंग्रेजी सल्तनत की पाताल तक गहरी जमी हुई जड़ों को उखाड़ कर किस चमत्कारी ढंग से फेंका इसका विवरण विश्व विख्यात है। फ्रांस की, रूस की, चीन की, अमेरिका की, आयर लैण्ड की, इटली की राज्य क्रान्तियों के इतिहास जिन्होंने प्रढ़े हैं, उन्हें भली प्रकार विदित है कि साधन सम्पन्न सरकारें किस प्रकार जन शक्ति के सामने बालू के महल की तरह धराशायी होगईं। तब से लेकर अब तक न जाने कितने ताज तख्तों को संगठित जनता ने गेंद की तरह उछालकर कूड़े-करकट के ढेर में फेंक दिया है। भारत के राजाधिराजों की कैसी दुर्गति हुई यह देखकर कोई भी यह अनुमान लगा सकता है कि भगवान के बाद दूसरी समर्थ सत्ता के रूप में जनशक्ति की ही गणना की जा सकती है। अन्य पार्टियों के मुकबिले में कांग्रेस के हाथों शासन सौंपने का श्रेय जनमत को ही है। यदि वह चाहे तो उसे गद्दी से उतारकर किसी को भी बिठा सकता है।

यह तो राजनीति एवं शासन सत्ता के सन्दर्भ में जन शक्ति की चर्चा हुई। वानप्रस्थी परमार्थ जीवन की दिशा राजनीति नहीं—समाज संरचना है। बौद्धिक एवं भावनात्मक उत्कर्ष है। सत्प्रवृत्तियों का सम्वर्धन एवं सर्वतोमुखी विकृतियों का उन्मूलन अपना लक्ष्य है। इस प्रयोजन के लिए भी जन शक्ति को ही उभारने, सुधारने और दिशा देने की आवश्यकता पड़ेगी। युग-निर्माण जैसे महान प्रयोजन की अगणित आवश्यकताओं की पूर्ति लोकशक्ति को साथ लिये बिना और किसी प्रकार हो ही नहीं सकती। इसलिए वानप्रस्थी सेवा साधना में जन सम्पर्क बढ़ाना—जीवन्त एवं भावशील व्यक्तित्वों को ढूँढना—उन्हें दिशा देना, साथ लेना और नव-निर्माण में संलग्न कर देना यही है समग्र क्रिया पद्धति जिसमें लोकमंगल के समस्त आधारों को सन्निहित समझा जा सकता है।

धर्म के प्रति जन आस्था की जो थोड़ी सी संलग्नता है, उसका चमत्कार आँखों के सामने है। कुछ समय पूर्व इस देश में ५६ लाख धर्म व्यवसायी थे, नई जनगणना के अनुसार वह संख्या ८० लाख हो गई। जन गणना में जिन्होंने धर्म को व्यवसाय कोष्ठक में नहीं लिखाया है, उनकी आधी चौथाई आजीविका इसी क्षेत्र से चलती है, उनकी संख्या भी इससे कम नहीं हो सकती। इस प्रकार पूरे अधूरे धर्म व्यवसायी लोगों की संख्या डेढ़ करोड़ तक जा पहुँचती है। जनता किसी दबाव जबरदस्ती से नहीं वरन् स्वेच्छा और प्रसन्नतापूर्वक इनका व्यय भार वहन करती है जो सहज ही पाँच करोड़ रुपया प्रति दिन जा पहुँचता होगा। पाँच करोड़ प्रतिदिन अर्थात् वर्ष में १८०० करोड़—१८० अरब। कितनी बड़ी धनराशि है यह । यह तो धर्म क्षेत्र में संलग्न मनुष्यों का निर्वाह व्यय हुआ। इसके अतिरिक्त लगभग १ लाख मन्दिरों का खर्च, तीर्थ यात्राओं में खर्च होने वाली विपुल धनराशि भी कम से कम इतनी तो होगी ही। इस प्रकार वह राशि ३६० अरब वार्षिक हो जाती है। सोमवती अमावस्या पर गंगा जमुना इन दो नदियों के स्नान को ही लें, उनके उद्गम से लेकर विलय स्नान तक कम से कम एक करोड़ व्यक्ति तो अवश्य ही उस पर्व पर स्नान करने जाते होंगे। एक व्यक्ति के ऊपर मार्ग व्यय, काम का हर्ज, भोजन, दान, पुण्य आदि का खर्च बीस रुपया भी जोड़ा जाय तो एक करोड़ व्यक्तियों पर बीस रुपये के हिसाब से २० करोड़ रुपया होता है। ऐसी-ऐसी चार-पाँच सोमवती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अमावश्याएँ वर्ष में पड़ती हैं उनका खर्च १ अरब तक जा पहुँचता है। इसके अतिरिक्त कथा, कीर्तन, यज्ञ, समारोह, भोज, भण्डारे आदि का हिसाब तैयार किया जाय तो वह राशि भी न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचेगी ? इस प्रकार देखने पर उपेक्षित जैसा लगने वाला धर्म क्षेत्र ही इतनी धन सम्पत्ति खर्च करा लेता है, श्रम और समय लगा लेता है जितना कि तरह-तरह के दबाव डालने वाली सुसंगठित सरकार भी लगा नहीं पाती। सरकारी टेक्स लोग कुड़कुडाते हुए देते हैं पर धर्म टेक्सों को स्वेच्छा से देते हैं और पास में न होने पर कर्जा उधार करके भी लगाते हैं।

यहाँ धर्म के नाम पर लगने वाले धन और श्रम का समर्थन खण्डन नहीं किया जा रहा है सिर्फ यह बताया जा रहा है कि लोक रुचि की एक लहर कितने प्रचुर साधन बात की बात में प्रस्तुत कर सकती है। तमाखू, चाय और सिनेमा जैसे व्यसनों में जितना पैसा और श्रम लगता है, उसकी नाप तौल भी धर्म एवं शासन पर पड़ने वाले खर्च के ही समतुल्य आँकी जा सकती है। यह लोक रुचि की प्रतिक्रिया का परिचय मात्र है। यदि इसी लोक रुचि को अभिनव सृजन की दिशा में मोड़ा जासके तो जो कार्य असम्भव दीखते हैं—साधनों के अभाव में जिन कार्यों का हो सकना कठिन लगता है, वे चुटकी बजाते प्रस्तुत हो सकते हैं और अनहोनी-होनी बनकर सामने आ सकती है।

पाँच सौ घरों के एक छोटे से गाँव की बात लें। वहाँ हर परिवार में औसतन पचास पैसे की तमाखू अवश्य पी जाती होगी। पाँच सौ घरों के पचास पैसे अर्थात् ढाई सौ रुपया प्रतिदिन। महीने का ये साड़े सात हजार। वर्ष में ६० हजार। यदि उस गाँव के लोग स्वेच्छा से तमाखू छोड़ दें, वह धनग्राम की उन्नति में लगाने का संकल्प करलें तो हर वर्ष ६० हजार रुपये की आय से स्कूल, हाईस्कूल, कन्यापाठशाला, सड़क, सफाई, कुआँ, तालाब आदि कितने ही नये रचनात्मक काम हर साल खड़े किये जा सकते हैं, और कुछ ही वर्षों में वह गाँव योरोप के गाँवों जैसा समुन्नत दीख सकता है। तमाखू छोड़ने की बात हटा भी दें तो भी जिस परिवार में पाँच छै: आदमी रहते हैं, उसमें पचास पैसा अर्थात् दो कप चाय का मूल्य-खर्च कर देना कुछ भारी नहीं पड़ेगा। आधा किलो अनाज के घर परिवार में रोज चूहे ही बिगाड़ देते हैं। यदि लोक रुचि गाँव सुधार के लिए उमगाई जा सके तो हर वर्ष नब्बे हजार (लगंभग एक लाख रुपया) सृजन कार्यों के लिए बिना किसी अधिक कठिनाई का अनुभव किये उपलब्ध हो सकता है। सरकार का मुँह ताकते रहने पर हर गाँव के लिए १ लाख रुपया वार्षिक का विकास अनुदान मिल सकना शायद कभी भी सम्भव न हो सके।

श्रमदान की बात लें। पाँच सौ घरों के गाँव में डेढ़हजार व्यस्क व्यक्ति माने जा सकते हैं। वे एक-एक घण्टा श्रमदान ग्राम सुधार के लिए देने लगें तो डेढ़ हजार घण्टे का श्रम मुफ्त में मिला। सात घण्टे का दिन मानें तो डेढ़ हजार घण्टे लगभग दो सौ मनुष्यों का दिन भर का पूरा श्रम होता है। दो सौ व्यक्ति नित्य अपना श्रम समर्पण करें तो एक वर्ष में इतना अधिक कार्य हो सकता है, जिसे देखते हुए आश्चर्य- चकित रह जाना पड़े।

ऊपर की पंक्तियों में जन शक्ति के महादैत्य की क्षमता का थोड़ा-सा आभास कराया गया है। उसे जगाया, संगठित किया जाना और सृजन के महान लक्ष्य में नियोजित किया जाना, कठिन दीखता अवश्य है पर वैसा है नहीं। पचास करोड़ की आबादी वाले देश में एक लाख सुयोग्य और भावनाशील वानप्रस्थों का मिल जाना न तो कठिन है और न असम्भव। ८० लाख धर्म व्यवसायी जिस देश में उद्भिज घास-पात की तरह उग पड़ें वहाँ युग के उद्बोधन पर एक लाख वानप्रस्थ न निकलें यह नहीं हो सकता। बुद्ध को २।। लाख तपस्वी शिष्य मिले थे और गाँधी को भी सत्याग्रह आन्दोलन में लगभग इतने ही कर्मवीर मिल गये थे। देश-धर्म और समाज-संस्कृति के पुनरुत्थान की बात यदि विचारशील वर्ग में गले उतारी जा सके तो एक लाख वानप्रस्थों के लिए की गई युग पुकार उपेक्षित न रहेगी। सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए यदि समुचित उत्साह पैदा किया जा सके तो सृजन सेना का नेतृत्व करने लिए इतने वानप्रस्थ सहज ही अग्रिम पंक्ति में खड़े दिखाई देंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन वानप्रस्थों का एक ही काम होगा जन-जागरण—लोक शक्ति का गठन-जन मानस का परिष्कार-भावनाशील लोगों का चयन और उन्हें लोकमंगल के लिए प्रवृत्ति होने का प्रोत्साहन-मार्गदर्शन। यह एक काम ही इतना बड़ा है, जिससे संबन्धित विविध क्रिया-कलापों में वानप्रस्थ वर्ग को निरन्तर लगा रहना पड़ेगा। यह कार्य जिस सीमा तक पूरा होने लगेगा, उसी अनुपात में अगणित रचनात्मक और संघर्षात्मक क्रिया कलाप पनपते दिखाई देंगे और समाज की विभिन्न समस्याओं को स्थानीय उपाय, उपचारों के आधार पर हल करने में निरत होंगे।

कहना न होगा कि यह समस्त क्रिया-कलाप धर्म धारणा पर आधारित होना चाहिए। भावना स्तर का स्पर्श कर सकना धर्म अध्यात्म दर्शन के लिए ही सम्भव है। राजनीति, समाज संगठन, अर्थोन्नति आदि आधार भी पुनरुत्थान के हो सकते हैं पर भारत जैसे अस्सी प्रतिशत अशिक्षितों और घोर देहातों में रहने वाले लोगों के लिए वे आधार उतने हृदयग्राही न हो सकेंगे, जितने धर्म आधार। भारत की वर्तमान परिस्थितियों में नव-निर्माण के समग्र अभियान की सफलता धर्म आस्था का अवलम्बन लेकर ही प्राप्त की जा सकती है। यों मानव तत्व में उत्कृष्टता की स्थापना का प्रयोजन अन्ततः परिष्कृत धर्म-धारणा के आधार पर ही सम्भव हो सकता है।

त्रिविधि साधना पद्धति का अधिक स्पष्टीकरण

वानप्रस्थ जीवन के नित्य-कर्म में ब्रह्मविद्या के तत्व दर्शन का स्वाध्याय अनिवार्य रूप से जुड़ा रहना चाहिए। साथ ही योगाभ्यासी तपश्चर्या का क्रम भी स्नान, भोजन, शयन की तरह प्रभातकालीन आवश्यक क्रिया-कलाप में सम्मिलित रहना चाहिए। आत्मिक प्रखरता बनाये रखने और बढ़ाते रहने के लिए यह दोनों प्रयोग सामान्य स्वास्थ्य रक्षा के लिये आहार और बिहार की सुव्यवस्था बनाये रहने की भाँति ही आवश्यक माने जाने चाहिये, वातावरण में अनैतिक और अवांछनीय विषाक्तता की मात्रा इतनी बढ़ गई है कि यदि उसका नित्यनिवारण परिशोधन न किया जाय तो किसी भली चंगी मनोभूमि का ढलान पतनोन्मुख दिशा में चल पड़ेगा। प्रवाह की धार काटने के लिये मल्लाह अपने डाँड़े मुस्तैदी के साथ लाते रहते हैं, तब कहीं नाव इस पार से चलकर उस पार तक पहुँचती है। प्रमाद बरतें तो नाव कहीं से कहीं जा पहुँचेगी। स्वाध्याय द्वारा विचारणा में सहज ही घुस पड़ने वाली विषाक्तता का समाधान होते रहने पर ही सामान्य मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा स्थिर रखी जानी सम्भव है।

स्वाध्याय को तप कहा गया है। तप की ऊष्मा मलीनताओं को जलाती है। आत्म-चिन्तन, आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण और आत्म-विकास के क्षेत्रों में प्रखरता उत्पन्न करने के लिए स्वध्याय से बढ़कर और कोई सहायक साधन कदाचित ही होगा। इसके लिए ऐसी पुस्तकों का सहारा लेना चाहिए, जो उपर्युक्त प्रयोजन सही रूप से पूरा कर सकने की क्षमता से पूर्ण हों। प्राचीन ग्रन्थों का—कथा पुराणों का पृष्ठपेषण लकीर पीटने की तरह करते रहें तो उससे समय ही बहुत नष्ट होगा पर हाथ कुछ न लगेगा। भाषा संस्कृत हो या हिन्दी, मराठी। पुस्तक पुराने जमाने की लिखी हुई हो या अब की, इससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं। अध्यात्म तथ्यों को सही रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता जिस भी साहित्य में हो, वह स्वाध्याय के लिए उपयुक्त माना जाना चाहिए।

अधिकारी मार्गदर्शकों के सानिध्य में क्रमबद्ध शिक्षण यों अधिक अग्रगामी रहता है पर वैसी सुविधा उन श्रेय साधकों को निरन्तर नहीं मिल सकती, जिन्हें लोकमंगल की सेवासाधना के सन्दर्भ में परिव्राजक क्रम-व्यवस्था अपनानी है। आज यहाँ तो कल वहाँ, हर जगह अधिकारी मार्गदर्शक कहाँ हैं ? ऐसी दशा में सद्ग्रन्थों का, स्वाध्याय ही सत्संग की—तत्वदर्शी प्रशिक्षण की आवश्यकता पूरी कर सकता है। एकान्त अवकाश के समय मनन चिन्तन भी इसी प्रयोजन की पूर्ति करता है। जो पढ़ा समझा गया है उस पर गंभीरतापूर्वक विचार करना—मान्य आदर्शों को जीवन में उतारने की विधि-व्यवस्था सोचना, यही है मनन चिन्तन का स्वरूप। स्वाध्याय, सत्संग, मनन, चिन्तन के चार चरण ब्रह्मविद्या की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपलब्धि के आधार माने गये हैं। इन्हें साधना परायण जीवन क्षेत्र में प्रवेश करने वाले स्वयमेव भी अपने में तो साधना की आवश्यकता पूरी करते रह सकते हैं।

योगाभ्यास की दृष्टि से गायत्री महामन्त्र की साधना सर्वोत्तम है। इन चौबीस अक्षरों के शब्द गुंथन में एक से एक बढ़कर उच्चस्तरीय शक्ति केन्द्रों का समावेश है। भावना और विचारणा के परिशोधन का उद्देश्य यह महामन्त्र आश्चर्यजनक रीति से सम्पन्न करता है। यों साधारण उपासना में इस महामन्त्र का जप और परम तेजस्वी सविता-देवता का ध्यान—रोम-रोम में ज्योति किरणों का अवतरण, समावेश की अनुभूति के साथ किया जाता रहे तो उससे भी आत्मिक प्रगति में बड़ी सहायता मिलती है।

इससे आगे बढ़कर पाँच कोशों को साधना है। लययोग—प्राणयोग—विन्दुयोग— नादयोग—ऋजुयोग के आधार पर ऐसा अतिरिक्त साधनाक्रम भी बनाया जा सकता है, जो क्रमिक रूप से चक्रबेधन, कोशों के अनावरण की दिव्य सम्भावनाओं को मूर्तिमान करता रहे। यह गायत्री महाशक्ति की उच्चस्तरीय साधना ही है, जिसे पौराणिक भाषा में पंचमुखी वेदमाता की पंचदेव साधना कहते हैं। भवानी, गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, महेश को पाँच देव माना है, तात्विक दृष्टि से उन्हें सर्वसमर्थता, प्रज्ञा प्रतिष्ठा, सृजन, अभिवर्धन और विवर्तन का प्रचण्ड क्षमता-सम्पन्न आत्मबल भी कह सकते हैं।

उपनिषदों की भाषा में गायत्री की उच्चस्तरीय साधना ही यम द्वारा नचिकेता को बताई गई रहस्यपूर्ण पंचाग्निविद्या है। पाँच अग्नियां अनन्य शक्ति के ऊर्ध्व लोकों तक फैली हुई ज्योतिर्मयी ऊर्जा ही हैं। इन्हें ब्रह्मतेजस के रूप में साधना परायण लोग धारण करते हैं और आत्मा में परमात्मा का अवतरण सम्भव एवं प्रत्यक्ष बनाते हैं। यह साधनाएँ हर साधक के लिए उसके स्तर के अनुरूप थोड़ी हेर-फेर जैसी होनी स्वाभाविक है। उनकी आरंभिक शिक्षा प्राप्त कर लेने के पश्चात् परिव्राजक साधक उस विधान को स्वयमेव अग्रगामी बनाते रह सकते हैं।

प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर योगसाधना का क्रम एक घंटा क्रमबद्ध रूप से चलता रह सके तो सामान्यतया पर्याप्त कहा जा सकता है। स्वाध्याय के लिए अवकाश का कोई एक घण्टा दिनचर्या में सम्मिलित रहना चाहिए। इन्द्रियों का दमन और मनोगत लिप्साओं का शमन करते हुए संयम, सादगी और तितीक्षा भरी जीवनचर्या नियमित निर्धारित करली जाय तो उसे सामान्यतया उपयोगी तपश्चर्या कहा जा सकता है। आलस और प्रमाद को—असंयम और असंतुलन को निरस्त करके स्वभाव एवं अभ्यास को परमार्थ परायण जीवन के उपयुक्त विनर्मित करना यही तो तपश्चर्या का मूलभूत उद्देश्य है। किसे, किस प्रकार की कितनी, तपश्चर्या किस स्थिति में कैसे करनी चाहिए ? इसमें भी शारीरिक, मानसिक एवं क्रियाकलाप सम्बन्धी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भिन्नता रहेगी। इस तप संदर्भ में भी योगाभ्यास की तरह ही निर्धारण करते समय किसी अनुभवी मार्गदर्शक परामर्श कर लिया जाय तो अधिक सही और अधिक उपयुक्त क्रम व्यवस्था बन सकती है।

स्वाध्याय और योगाभ्यास में सामान्यतया एक-एक घण्टा लगाने के उपरान्त शेष समय उस युग के वानप्रस्थ को लोकमंगल की सेवासाधना में लगाना चाहिए। विश्वमानव का भावनात्मक स्तर ऊँचा उठाने के लिये किये गये प्रयासों को विशुद्ध रूप से पूजा आराधना में ही सम्मिलित किया जाना चाहिये। संसार में उत्कृष्टता का अभिवर्धन ऐसा कर्मयोग है, जिसे साधना क्षेत्र में प्रचलित किसी भी क्रिया कलाप से हलके स्तर का नहीं गिना जा सकता। वरन् सच तो यह है कि युग धर्म के अनुरूप यही सर्वोत्तम तपश्चर्या है। जप-तप से तो अकेले अपना ही कल्याण होता है किन्तु लोगमंगल में निरत ब्रह्मपरायण महामानव तो अपनी यह पुण्य साधना भी पद दलित मानवता के उत्कर्ष में समर्पित कर देते हैं। उदारता को देखते हुए लोकसेवकों को किसी ज्ञानसाधक, योगी, तपस्वी, भगवद् भक्त से कम नहीं वरन् बहुत अधिक ऊँचा ठहराया जायेगा, जो अपने प्रयास का लाभ स्वयं न उठाकर विश्वकल्याण के लिए समर्पित करता है, उसकी आन्तरिक महानता निश्चित रूप से अधिक और अति प्रशंसनीय कही जायेगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योग साधनाओं में तीन ही प्रधान हैं। देव समुदाय में ब्रह्मा, विष्णु, महेश की जिस प्रकार प्रधानता है, उसी प्रकार भावयोगों में तीन ही प्रमुख हैं। (१) ज्ञान योग, (२) भक्ति योग, (३) कर्म योग। वानप्रस्थ साधना में इन तीनों का समुचित समावेश होना चाहिये। ब्रह्मविद्या परायण होकर स्वाध्याय, सत्संग, मनन चिन्तन के माध्यम से अपनी विचारणा को उत्कृष्टतम स्तर तक उठाना ज्ञानयोग है। योगाभ्यास और तपश्चर्या को गायत्री शक्ति स्रोतों पर अवलम्बित साधना क्रम को भक्तियोग कहना चाहिए। लोकमंगल में सहृदय किन्तु साहसी शूर-वीरों की तरह प्राण-पण से जुट पड़ने वाली कर्मनिष्ठा को श्रेष्ठतम कर्मयोग कहा जा सकता है। इस प्रकार वानप्रस्थ जीवन में तीनों प्रधान योगों में निरन्तर संलग्न रहने की विधि-व्यवस्था है। आहार, निद्रा, स्नान जैसे अनिवार्य शरीर धर्म का पालन करने के उपरान्त जो समय बचता है, उसे परमार्थ प्रयोजनों में लगाने वाला साधन अनवरत् रूप से भगवद्भक्ति में निरत कहा जा सकता है। उसे सच्चा वैरागी, योगी, तपस्वी, भक्त अथवा ऋषिकल्प जो भी कहा जाय, सार्थक कथन ही होगा।

लोकमंगल की साधना की यों असंख्य धारा दिशाऐं हो सकती हैं। जनता की आर्थिक समृद्धि, स्वास्थ्य संवर्धन, जल व्यवस्था, धर्मशाला, मन्दिर, तालाब, प्याऊ, अस्पताल जैसे कितने ही उपयोगी कार्य भी लोककल्याण कारक ही कहे जायेंगे पर आज की आपत्तिकालीन स्थिति में हमारा पूरा ध्यान उन्हीं प्रयासों पर केन्द्रित होना चाहिए, जो विचारों को झकझोरने—भ्रान्त-धारणाओं और विकृत मान्यताओं एवं निकृष्ट अभिरुचियों से जनमानस को विरत कर सकने में समर्थ हो सकें।

हमें यह हजार बार सोचना और समझना चाहिए कि चिन्तन को उत्कृष्टता की दिशा न मिली तो बढ़ी हुई सम्पत्ति का परिणाम विपत्ति के अतिरिक्त और कुछ न होगा। बढ़ा हुआ शरीर-बल गुण्डा-गर्दी की, बढ़ा हुआ धन व्यसन-व्यभिचार की, बढ़ा हुआ बुद्धिबल—उपद्रव उत्पातों की अभिवृद्धि करेगा। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हम आज के शरीरबल सम्पन्न, धनी मानी, सत्ताधारी और सुशिक्षितों की गतिविधियों को देखकर सहज ही प्राप्त कर सकते हैं। सद्भाव सम्वर्धन के लिए प्रयास न किये जाने का ही यह परिणाम है, जो सम्पत्तिवानों और विभूतिवानों द्वारा अपनाई गई विघातक दुरभि-संधियों के रूप में सामने प्रस्तुत है। वैभव और वर्चस्व का दुरुपयोग देखकर कई बार खीज में यह कहना पड़ता है कि इन बलवानों, धनवानों और विद्यावानों की अपेक्षा रुग्ण, निर्धन एवं अनपढ़ समाज के लिए कम हानिकारक हैं।

लोक सेवा के नाम पर आज सरकारी और गैर-सरकारी प्रयत्न भौतिक सुविधाओं के अभिवर्धन में ही पूरे जोर-शोर से लगे हुए हैं। विचार परिष्कार की महती और प्रधान आवश्यकता की ओर किसी का भी ध्यान नहीं है। इस स्थिति में वानप्रस्थों की सेवा साधना की दिशा, मात्र एक ही दिशा में चलनी चाहिए—विचार शोधन, भाव परिष्कार विवेक, सम्वर्धन, विचार क्रान्ति एवं ज्ञानयज्ञ का यही लक्ष्य है। उन्हें इसके अतिरिक्त इधर-उधर नहीं देखना चाहिए और इमारतों के रूप में दीख पड़ने वाली विज्ञापन बाजी के आकर्षण बनते हुए मानवता की ठोस सेवा में प्रवृत्त होना चाहिए। भले ही उस सेवा साधना का दृश्य रूप सामने न आने के कारण लोकेषणा से वंचित रहने का त्याग ही क्यों न करना पड़ता हो। जब धन और कामुकता की वित्तेषणा और पुत्रेषणा छोड़ दी तो वानप्रस्थों की लोकेषणा के लिए दृश्यमान भौतिक सुविधा सम्वर्धक कार्यों से ललचाकर ज्ञानयज्ञ में विमुख होने का उथलापन क्यों अपनाना चाहिए ?

धर्ममन्च का आधार लेकर जनमानस के परिष्कार की सुव्यवस्थित क्रिया पद्धति युगनिर्माण की शतसूत्री योजना के अन्तर्गत बहुत पहले से ही घोषित की जा चुकी है। उस पर ध्यानपूर्वक विचार किया जाय तो लोकशिक्षण के लिए ढेरों कार्यक्रम प्रस्तुत दिखाई पड़ेंगे उनमें से जिन्हें जहाँ जिस प्रकार कार्यान्वित किया जा सके उसकी विधि व्यवस्था स्थानीय परिस्थितियों और कार्यकर्ताओं की क्षमता को ध्यान में रखकर बनाई जानी चाहिए। सर्वत्र एकरूपता तो नहीं हो सकती। क्षेत्रीय स्थिति के अनुरूप कार्यक्रमों में भिन्नता तो रहेगी ही पर मूल सिद्धान्त सर्वत्र एक ही रहेगा। दुर्बुद्धि का—दुर्भावनाओं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन किया जाना चाहिए। रुढ़िवादिता, अन्धमान्यता एवं पूर्वाग्रहों के साथ जुड़ी हुई दुष्ट मूढ़ता के विरुद्ध मोर्चा खड़ा करने के लिये प्रथम चरण विचार-क्रान्ति के रूप में ही उठाया जाय। चूँकि अपना कार्य क्षेत्र धर्म एवं अध्यात्म है इसलिए इस प्रक्रिया को ज्ञानयज्ञ के सौम्य नामकरण के साथ सम्बोधित किया जाना अधिक उचित उपयुक्त है।

प्रतिगामी हाथों से शक्तिशाली धर्मक्षेत्र को छीनकर प्रगतिशील हाथों में सौंप देना वानप्रस्थी का प्रधान कार्य होना चाहिए। धर्म परम्पराओं को प्रगतिशीलत रूप देने के लिए बहुत कुछ करना शेष है। वाणी का — प्रवचन शक्ति का उपयोग करने के लिए सत्यनारायण की कथा की एक दिन वाली—रामायण कथा—गीता कथा की सात दिन वाले साप्ताहिक धर्मानुष्ठान की क्रियापद्धति कितनी उत्तम है, उसे प्रत्यक्ष अनुभव करके देखा जा सकता है। होली, दिवाली, बसन्त पंचमी, विजयादशमी आदि पर्वों को सामूहिक रूप से मनाया जाय और उन परम्पराओं के साथ जुड़ी हुई महान प्रेरणाओं को जनसाधारण के साथ प्रस्तुत किया जाय तो लोकमानस में क्रान्तिकारी हलचलें उत्पन्न की जा सकती हैं। परिवार संस्था को सुविकसित समुन्नत बनाने एवं अवांछनीय प्रचलनों से राहत दिलाने के लिए पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कारों के माध्यम से अत्यन्त तेजस्वी मार्ग दर्शन प्रस्तुत किया जा सकता है, विवाह संस्कार के समय सम्पन्न होने वाले कर्मकाण्डों की यदि किसी मनस्वी द्वारा व्याख्या हो सके तो दाम्पत्य जीवन का—गृहस्थ जीवन का तत्वदर्शन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है कि वर-वधू ही नहीं उत्सव में उपस्थित अन्य लोग भी अपने गृहस्थ परिवार की आधारशिला का पुनर्निर्धारण कर सकें।

जन्मदिन और विवाह दिन मनाने की परम्परा कितनी प्रेरणाप्रद है, उन छोटे-छोटे आयोजनों में वैयक्तिक उत्कर्ष के लिये—दाम्पत्य जीवन की सुव्यवस्था के लिए कितनी प्रबल प्रेरणा मिलती है, उसे कुछ आयोजनों का परिणाम देखकर सहज ही जाना जा सकता है।

छोटे-बड़े गायत्री यज्ञों के साथ जुड़े हुए युगनिर्माण सम्मेलनों में अनैतिकता, अवांछनीयता एवं दुष्प्रवृत्तियों के परित्याग का जो प्रतिज्ञा अनुदान जुड़ा रहता है, उसमें उन धर्मोत्सवों का स्वरूप व्यक्ति और समाज की अभिनव संरचना करने में दूरदर्शिता पूर्ण कदम ही कहा जा सकता है। इन आयोजनों में जाति और लिंगभेद की समाप्ति के जो दृश्य सामने रहते हैं उनसे जनता में रूढ़िवादिता को उखाड़ फेंकने के लिए अभिवव साहस का संचार होता है।

धर्म मंच के सहारे ऊपर जिन कार्यक्रमों का संकेत है, उनके अतिरिक्त भी स्थानीय परम्पराओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप और भी बहुत कुछ किये जा सकते हैं। धार्मिक मेलों का आरम्भ करके जहाँ जन उत्साह का संचार हो सकता है, वहाँ उस प्रेरणाप्रद वातावरण से प्रभाव ग्रहण करने के लिए आकर्षित किया जा सकता है वहाँ विक्रेता और खरीददारी को लाभान्वित करने की बात बन सकती है। लोकरंजन के साथ लोकमंगल के कितने ही क्रियाकलाप भंग सकते हैं। गायत्री यज्ञों के साथ नियत तिथि पर हर वर्ष मेला लगाने की प्रथा जहाँ भी चल पड़ी है तथा नवनिर्माण की बहुमुखी हलचलों को व्यापक बनाने में आशातीत सफलता मिली है। वानप्रस्थों के परिव्रज्या प्रवासा में हर प्रकार के आयोजन सहज ही आयोजित होते चल सकते हैं, यह बात पिछले अनुभवों ने पूरी तरह स्पष्ट कर दी है।

धर्मचक्र प्रवर्त्तन के लिए आंशिक समयदान

स्वल्प-कालीन व्रत धारण आज हमें एक अनौखी बात मालूम पड़ती है, पर वस्तुतः इनमें अनौखापन कुछ भी नहीं है। इन दिनों वैसा प्रचलन न रहने से ही ऐसा प्रतीत होता है कि यह कोई नई बात है। प्राचीन काल में साधु-संस्था की सहायक दूसरी पंक्ति खड़ी करने के लिए यह प्रयोग बराबर होता रहा है।

गुरुकुलों में पढ़ने के लिए विद्यार्थी भेजे जाते थे। उन्हें जीवन के पूर्वार्द्ध के प्रथम चरण में ही साधु-जीवन की उपयोगिता, आवश्यकता एवं महत्ता का अनुभव करा दिया जाता था। विद्यार्थी को गुरुकुल में प्रवेश करते ही साधु परिवेश में प्रवेश करना पड़ता था। शोभा सौन्दर्य के सभी विलासी उपकरण उतार दिये जाते थे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिर के बालों का मुण्डन कराके ही आश्रम में प्रवेश मिलता था। लकड़ी की खड़ाऊँ, हाथ में दण्ड, कमर में कसा हुआ लंगोट, छाता आदि सुविधा उपकरणों का त्याग, काजल लगाने जैसे सौन्दर्य उपादानों का त्याग, भूमि-शयन, पीतवस्त्र धारण—यह सभी चिह्न साधु के हैं। गुरुकुल व्यवस्था चलाने के लिए उन्हें भिक्षा माँगने जाना पड़ता था। आश्रम की गौएँ चराकर, कृषि उद्यान् में जुटे रहकर—कठोर श्रमशीलता को अभ्यास में उतारते थे। तप, तितीक्षा के साथ ही अध्ययन चलता था। कामुक चिन्तन से सर्वथा बचाव रखना पड़ता था। यह सारे चिह्न तपस्वी के हैं। भूतकालीन गुरुकुलों के छात्र एक प्रकार से तपस्वी ही होते थे। सेवा या प्रचार कार्य तो अल्पवयस्कता के कारण नहीं कर पाते थे, पर ऋषियों के साथ-साथ यज्ञादि आयोजनों में जाकर सहायक भी रहते थे और सीखते भी थे।

घर परिवार वाले इस तपश्चर्या पूर्ण प्रशिक्षण से प्रसन्न होते थे। वे जानते थे कि इस प्रकार जीवनचर्या में थोड़ी शारीरिक कठिनाई तो रहती है, पर उनके बालकों के व्यक्तित्व के समग्र विकास का लाभ इतना बड़ा है, जिसको देखते हुए इस प्रकार का कष्ट सहन करना बहुमूल्य सम्पदा का मूल्य चुकाकर खरीदने जैसा आवश्यक भी है। इसलिए किसी अभिभावक को इसमें संकोच नहीं होता था, वरन् खुशी-खुशी अपनी प्राण-प्रिय सन्तान को दस वर्ष की आयु में ही गुरुकुलों में प्रवेश करा देते थे।

अध्ययन अवधि पूरी करके छात्र—साधू-बाबाजी नहीं बन जाते थे, वरन् अपने घर-परिवार में वापिस लौटते थे और गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे। सामान्य नागरिक का जीवन जीते थे। जन-साधारण जैसी वेषभूषा धारण करते थे और लोक-प्रचलित पद्धति के अनुरूप आचार-व्यवहार करते थे। विवाह होता था और सन्तानोत्पादन का क्रम भी चलता था। आजीविका उपार्जन के कार्यों को भी संभालते थे। इस प्रकार लम्बी अवधि तक यह बदला हुआ जीवन क्रम अपनाया जाता रहता था। गुरुकुलों में रहकर जिस प्रक्रिया को अपनाना पड़ा था, उससे यह गृहस्थ की रीति-नीति सर्वथा भिन्न ही थी।

यह परिवर्तन यह बताता है कि साधु-संस्था में प्रवेश करके फिर गृहस्थ जीवन में वापिस लौटा जा सकता है। उत्तरार्द्ध में—पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त होने पर अनवरत साधु-जीवन बिताया जा सकता है, पर जब तक वैसी स्थिति नहीं है, तब तक यह अनिवार्य नहीं कि या तो सदा सर्वदा के लिए परमार्थ क्षेत्र में प्रवेश करें या फिर उससे सर्वथा दूर रहें। अतिवाद के इन दोनों सिरों से पीछे हटकर मध्यवर्ती मार्ग अपनाया जा सकता है। बौद्धधर्म में तो मज्झम मग्ग की—मध्यम मार्ग की उपयोगिता पर ही अधिक बल दिया गया है। क्योंकि वह सरल भी है और सर्वोपयोगी भी।

गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के उपरान्त भी बीच-बीच साधु-प्रयोजनों का अभ्यास बनाये रहने के लिए उस क्षेत्र की आवश्यकताओं को पूरा करने में योगदान देने के लिए लोग थोड़-थोड़े समय के लिए परमार्थ-परायण जीवनचर्या अपनाते थे,। इसे तीर्थयात्रा कहा जाता था। उस समय की तीर्थयात्रा आज से सर्वथा भिन्न थी। आज तो लोग अमुक देवालय का दर्शन करने या नदी-सरोवर में नहाने को ही तीर्थयात्रा मान बैठे हैं और उतने भर को ही पुण्यफल का आधार मानने लगे हैं। पुराने जमाने में तीर्थयात्रा इतनी सस्ती न थी। उन दिनों पुण्यफल की गरिमा का सही रूप से मूल्यांकन किया जाता था और उसका समुचित मूल्य चुकाया जाता था। उन दिनों कोई आज जैसी बिडम्बना रचता तो, देखने वाले हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते । रेल-मोटर से दौड़कर सीधे किसी मन्दिर में जा पहुँचना, दर्शन करना, दक्षिणा फेंकना, जलाशय में डुबकी लगाना और झट वापिस लौट पड़ना। थोड़ा-सा समय, थोड़ा-सा पैसा खर्च करना—इतने से ही तीर्थयात्रा हो गई। पर्यटन का मनोरंजन तो हो ही गया, मुफ्त में स्वर्ग मुक्ति का बहुमूल्य पुण्यफल मिल गया सो नफे में। पुराने लोग समझदार थे, उन्हें इतनी सस्ती बिडम्बनाओं में भला कैसे समाधान मिलता ? इन दिनों कोई ऐसी बालक्रीड़ा रच रहा होता तो उसे उपहास और भर्त्सना के अतिरिक्त और कहीं कुछ नहीं मिलता। पर आज तो हर चीज नकली चल पड़ी है। नकली तीर्थयात्रा करके नकली पुण्य से ही लोग सन्तोष कर लेते हैं। नकली दूध, नकली घी, नकली रेशम, नकली स्वर्ण, नकली रत्न, नकली दाँत, नकली आँख आदि हर क्षेत्र में नकलीपन का बोलबाला है तो तीर्थयात्रा और पुण्य फल भी नकली क्यों न हों ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बात आज की नहीं हो रही है। चर्चा विवेक को प्रधानता देकर चलने वाले पुराने समय की जो रही है। उन दिनों में तीर्थयात्रा धर्म-प्रचार के लिए, सेवा-प्रयोजनों के लिए, कल्याण के लिए होती थी। तीर्थयात्री जत्थे बनाकर पैदल चलते थे। थोड़ी-थोड़ी दूर प्रतिदिन चलते थे, रात को किसी गाँव में पड़ाव डालते थे और वहाँ की स्थिति के अनुरूप स्थानीय लोगों से विचार विनिमय करते थे। परामर्श देते थे, प्रवचन करते थे, भावनात्मक वातावरण बनाते थे और श्रम सहयोग की जरूरत पड़ती थी तो कुछ समय वहाँ रुककर उसमें भी जुटते थे। यही क्रम चलता रहता था और वे जत्थे सैकड़ों ग्राम-नगरों में प्रेरणा भरने प्रकाश उत्पन्न करने का प्रयोजन पूरा करते हुए धीरे-धीरे घर वापिस लौटते थे।

कहाँ तक जाना, किस मार्ग से जाना, कहाँ होकर लौटना—यह सब योजनाबद्ध रूप से पहले ही अपनी सुविधा और सामर्थ्य के अनुरूप निश्चय कर लिया जाता था। वस्तुतः वे धर्म-चक्र प्रवर्तन के लिए किये गये प्रवास-प्रयाण ही होते थे। उनका उद्देश्य परिव्राजकों की आवश्यकता को आंशिक और सामयिक रूप से पूरा करना होता था।

तीर्थयात्रा में परिक्रमा-क्रम जुड़ा होता था। जिस मार्ग से जाना होता था, उसी से वापिस नहीं लौटते थे, वरन् परिक्रमा क्रम अपना थे। उत्तराखण्ड की यात्रा, ब्रज-यात्रा, नर्मदा-परिक्रमा आदि अनेकानेक तीर्थयात्रा उपक्रम ठीक इसी आधार पर बने हुए थे। चारों धाम भारत के चारों कोनों पर इसी दृष्टि से बनाये गये थे कि भारत-माता का सम्पूर्ण रूप देखने का उन यात्रियों को सौभाग्य मिले।

तीर्थ-यात्रियों के जत्थे किन्हीं सुयोग्य मनीषियों के नेतृत्व में चलते थे। वे रात्रि को तो ठहरने वाले गाँव की जनता का उद्बोधन करते थे, पर रास्ते में जहाँ-जहाँ पड़ाव विश्राम करते थे, वहाँ यात्री दल का प्रशिक्षण करते थे। इस प्रकार दुहरा प्रयोजन पूरा होता चलता था। एक ओर वे यात्री लोग अध्यात्म दर्शन, उत्कृष्ट जीवन एवं लोक-मंगल के विभिन्न पक्षों पर अपनी ज्ञान-वृद्धि करते थे, दृष्टिकोण परिष्कृत करते थे। वहाँ दूसरा लाभ यह भी होता था कि जन-सेवा का व्यावहारिक स्वरूप अपने अनुभव अभ्यास में ला सकें। जन-सम्पर्क में जो झिझक रहती है, उसे दूर करके हर मनुष्य को अपना आत्मीय समझने की व्यावहारिकता को स्वभाव का अंग बना सकें। तीर्थयात्रा के जत्थे अपने निजी प्रशिक्षण का परिपूर्ण लाभ लेते थे, साथ ही जन-सेवा का सुअवसर भी प्राप्त करते थे। दोनों का समन्वय निश्चय ही उन दिनों पुण्य फलदायक रहता होगा। यात्रा अवधि में ब्रह्मचर्य, भूमि-शयन, क्षोभ-विक्षोभों से बचाव, आहार-विहार का संयम, श्रम-साधना, तितीक्षा-नियमित उपासना आदि की तपश्चर्या तो अनिवार्य रूप से करनी पड़ती थी। इस काल में अमुक व्रतसाधन आदि भी पूरे होते रहते थे। इस प्रकार वह अवधि इन यात्रियों के लिए साधु-संस्था के सदस्यों को मिलने वाला प्रत्येक सुअवसर प्रदान करती रहती थी।

इस वर्ष युग-निर्माण शाखाओं में पन्द्रह-पन्द्रह दिन के शिक्षण-शिविर चलाने की सुविस्तृत योजना बनाई गई है। उनमें प्रातः ५ से ६ बजे तक सक्रिय सदस्यों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत जीवन-निर्माण एवं लोक सेवा के सामयिक क्रियाकलापों की विधि-व्यवस्था चलाई जाया करेगी। सायंकाल जनता की विचार-क्रान्ति के हर पहलू से परिचित कराने वाली व्याख्यान शृंखला का, प्रेरक गायनों का लाभ दिया जाया करेगा। इन शिविरों में कार्यकर्त्ताओं का और जनता का समानान्तर प्रशिक्षण चला करेगा। आशा की जा रही है कि नव निर्माण अभियान में इस शिविर-शृंखला के कारण असाधारण गतिशीलता उत्पन्न होगी।

प्राचीन काल की तीर्थ-यात्राएँ ठीक यही प्रयोजन पूरा करती थीं, जो इस वर्ष शिविर शंखला आन्दोलन के अन्तर्गत हम लोग करने जा रहे हैं। उसमें विशेषता एक और भी थी कि निर्धारित प्रशिक्षण परिव्राजक-पद्धति से होता रहता था, अधिक स्थानों की अधिक जनता लाभ उठाती रहती थी जबकि प्रस्तुत शिविरों में केवल एक ही स्थान के लोग उनसे प्रेरणा ग्रहण कर सकेंगे। इन शिविरों में यात्रा मनोरंजन की विशेषता भी नहीं है। फिर शिक्षार्थी अपने घरों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर ही तो रहेंगे। जहाँ का वातावरण उन्हें प्रभावित करता रहेगा और उच्च प्रेरणाओं को सीमित रूप से ही हृदयंगम कर सकना उनके लिए सम्भव होगा। तीर्थयात्रा के सदस्यगण एक लक्ष्य, एक विचार-पद्धति, एक प्रक्रिया, एक वातावरण लेकर चलते हैं। झंझट जंजालों से उद्विग्न होने की परिस्थितियाँ नहीं रहतीं। अस्तु जो सुना, समझा, सीखा, किया गया है, उसका अधिक गहरा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। इस प्रकार तीर्थ यात्रियों की प्रक्रिया अपनी शिविर शृंखला की तुलना में हलकी नहीं, तगड़ी ही पड़ती थी। उनका प्रचलन खूब था। लोग उत्साह-पूर्वक इन यात्राओं को निकलते थे और एक-दूसरे को उनमें सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहन, आमन्त्रण देते थे।

प्राचीन काल की तीर्थयात्रा प्रक्रिया का गम्भीरता पूर्वक विवेचन विश्लेषण किया जाय तो भली प्रकार स्पष्ट हो जायेगा कि वह वानप्रस्थ और सन्यास की सम्मिलित पद्धति थी। उससे साधु संस्था का प्रयोजन भली प्रकार पूरा होता था।

उन दिनों सुयोग्य वानप्रस्थी और तेज-पुंज सन्यासी होते तो थे, पर उनकी संख्या उतनी नहीं थी—जितनी कि आवश्यकता थी। उस कमी को पूरा करने के लिए तीर्थयात्रा की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया का आविर्भाव हुआ। उसमें थोड़े-थोड़े समय के लिए सुयोग्य व्यक्ति घर से निकलते थे और आत्म-निर्माण लोक-मंगल की उभयपक्षीय आवश्यकताओं को आशाजनक मात्रा में पूरा करते थे। यह धर्म-चेतना के लिए आंशिक समय दान ही तो हुआ।

तीर्थयात्रा के लिए वयोवृद्ध एवं गृह निवृत्त ही नहीं निकलते थे, वरन् उनमें किशोर, वयस्क, विवाहित, अविवाहित नर-नारी सभी वर्ग के, सभी आयु के लोग होते थे। समय निकालने से निकल भी आता है। इच्छा में तीव्रता होते व्यवस्था भी कुछ न कुछ बन ही जाती है। हारी-बीमारी आ जाय, तो भी मनुष्य को अवकाश लेना पड़ता है। तीर्थयात्रा को लोग धर्मधारणा का आवश्यक अंग मानते थे तो उसके साथ समय एवं धन भी किसी प्रकार जुट ही जाता था। परिवार के अन्य सदस्य थोड़े समय तक उसके उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर चलाते थे और इच्छुक को बिना किसी अड़चन के धर्म-प्रवास में सम्मिलित होने का अवसर मिल जाता था।

तीर्थयात्रा से लौटने के बाद लोग फिर सामान्य जीवनयापन करने लगते थे और पिछले उत्तरदायित्वों को पूर्ववत सँभाल लेते थे। कोई यह नहीं सोचता था कि एक बार तीर्थयात्रा पर निकले तो सदा-सर्वदा तीर्थयात्रा ही करती रहनी पड़ेगी। सामयिक स्वल्प-कालीन धर्मसेवा का प्रचलन अपने देश में सदा से रहा है। तीर्थयात्रा उसी का ज्वलन्त उदाहरण है। गुरुकुलों की शिक्षा-पद्धति वाली प्रक्रिया भी सामयिक साधु-जीवन की रीति-नीति ही है। स्पष्ट है कि साधु-संस्था समय अवधि के लिए प्रवेश करना हमारी पुरातन परम्परा है। आज उसके पुनर्जागरण की अनिवार्य आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

सद्भावनाओं का सत्प्रवृत्तियों में नियोजन

शस्त्र जिसके हाथ में पड़ जाता है, उसी की विजय का साधन बनता है। सम्पदा और प्रतिभा ऐसी वस्तु है, जिनका उपयोग जहाँ भी किया जायेगा, वहीं प्रगति का चमत्कार दिखाई पड़ेगा। इसलिये दूरदर्शियों का दृष्टिकोण यह रहा है कि सम्पदा और प्रतिभा को—ऋद्धि-सिद्धि को असुरता के हाथों नहीं जाने देना चाहिए। चली जायँ तो उनसे छीनकर, उसे देवताओं के संरक्षण में ही सौंपना चाहिए।

वानप्रस्थ स्वयं तो कार्य करेंगे ही। शाखा-संगठनों में उत्साह और पुरुषार्थ तो भरेंगे ही। जिन सत्प्रवृत्तियों का संचालन एवं अभिवर्धन सम्भव होगा, वह तो करेंगे ही। प्रवचन और उद्‌बोधन के जितने उपाय हो सकते हैं, उतने तो प्रयुक्त करेंगे ही, पर इतनी बड़ी दुनिया की—इतनी सुविस्तृत मानव-जाति की अनेकानेक बहुमुखी समस्याओं का निराकरण यह छोटी सृजन-सेना ही तो नहीं कर सकती। इस महान प्रयोजन के लिये प्रचुर साधनों और असंख्य प्रखर व्यक्तित्वों के नियोजन की आवश्यकता पड़ेगी। वानप्रस्थों की सेना अपने जन-सम्पर्क

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काल में उसे जुटाने का भी निरन्तर और अनवरत प्रयास करेगी।

ज्ञान-यज्ञ से प्रभावित लोगों को सिर हिलाकर सहमति प्रकट कर देने या विचारों की सराहना कर देने मात्र से छुटकारा नहीं मिल जायेगा। वरन् इस बात के लिये प्रेरित किया जायगा कि यदि उन्हें नव-निर्माण की विचारधारा पसन्द आई है तो इस दिशा में चलने के लिये भी कुछ कदम उठायें। केवल मौखिक-सहानुभूति से ही तो कुछ बनने वाला नहीं है। प्रयोजन तो क्रिया से सिद्ध होता है। उत्कृष्ट विचारणा का संयोग जब तक आदर्श कर्तृत्वों के साथ न हो, तब तक उसे नपुंसक और निरर्थक ही कहा जाता रहेगा। ऐसा अनुत्पादक समर्थन यदि हम संग्रह भी करते रहे तो उससे कुछ बात बनेगी नहीं। ज्ञान-यज्ञ की सार्थकता इस बात में है कि वह प्रखर कर्मठता को जन्म दे सके।

जिस प्रकार 'अखण्ड ज्योति' द्वारा चिर-काल से दिया जाने वाला उद्बोधन अब परिजनों को कर्मठता की राह पर घसीट कर ले आया है और उन्हें सृजन-सेना के सैनिकों की पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया है, उसी प्रकार अपना उद्बोधन ज्ञान-यज्ञ, प्रखरता सक्रियता उत्पन्न करने वाला होना चाहिए। वानप्रस्थों की अन्तर्दृष्टि इस केन्द्र पर निरन्तर केन्द्रित रहेगी और कार्य-क्षेत्र में—जन-सम्पर्क में—जहाँ भी गहरी सहानुभूति दिखाई देगी, वहाँ उसे रचनात्मक सक्रियता की दिशा में धकेलने का प्रयत्न किया जायेगा।

लोगों के पास साधनों की कमी नहीं—पैसा इन दिनों फैला-फैला फिर रहा है—शिक्षा बहुत बढ़ गई—चतुरता और कुशलता में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। कमी एक ही है कि यह सम्पत्ति और बुद्धि की दोनों विभूतियाँ असुरता के हाथों पड़ गईं। उनका उपयोग वासना, तृष्णा और अहंकारिता की पूर्ति के लिये हो रहा है। संग्रह की—अभिवर्धन की—अन्धी दौड़ लग रही है। इसका सदुपयोग क्या हो सकता है, यह किसी के ध्यान में नहीं।

लोगों को कहा जायेगा कि सम्पत्ति का संग्रह ही बुद्धिमानी नहीं है—प्रतिभा का होना ही सराहनीय नहीं है, मूल बात यह है कि इन उपलब्धियों को किसने किस प्रयोजन के लिये खर्च किया ? इसी स्थान पर बुद्धिमान लोग मूर्ख बनते हैं, जिससे विकास हो सकता था, उसे विनाश में प्रयुक्त करते हैं। हम उपार्जन, अभिवर्धन की विधि न बता सकें तो हर्ज नहीं, उसे दूसरे असंख्यों लोग बता रहे हैं और बहुत कुछ उसके लिये बना भी रहे हैं। हमें सदुपयोग की आवश्यकता समझने की दिशा में उद्बोधन करना है और जहाँ सम्भव हो सके, वहाँ उसके लिये साहस भी जुटाना है।

लोगों के पास फालतू समय की कमी नहीं, वह उसे ऐसे ही गपशप और आलस्य-प्रमाद में गुजारता है। इस समय का एक छोटा-सा अंश भी श्रमदान के माध्यम से लोकमंगल के लिये जुटाया जा सके तो थोड़े से व्यक्ति भी मिलकर कई उपयोगी सत्प्रवृत्तियाँ आरम्भ कर सकते हैं और उस प्रवाह में देखा-देखी अन्य लोग भी बहने लगते हैं। दुष्कर्मों की तरह सत्कर्मों की भी बेल फैलती है। दुष्टता में—कुकर्मों में साथ देने वाले यदि उपजाये और बढ़ाये जा सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि लगनशीलता अपने प्रभाव से सद्भावनाओं को आकर्षित न करे और सज्जनताको प्रोत्साहित करके, उसे सत्प्रवृत्तियों में न जुटा सके।

मिल-जुलकर किये जा सकने वाले अनेकों कार्य सामने पड़े हैं। श्रद्धा, श्रम और सहयोग न जुट पाने से अनेकों योजनाएँ मृत प्रायः पड़ी हैं। गाँव-गाँव रात्रि पाठशालाएँ, प्रौढ़-पाठशालाएँ, व्यायामशालाएँ, उद्योगशालाएँ, शाकवाटिकाएँ, पुस्तकालय, सत्संग-गृह आदि स्थापित करने और चलाने की आवश्यकता है। जिनमें श्रद्धा जगे, उन्हें तत्काल ऐसे किसी काम में लगने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, अन्यथा वह आदर्शवादी उत्साह कुछ ही समय में पानी के बबूले की तरह टूट-फूट कर हवा में विलीन हो जायेगा।

लोग कितने ही उद्योग-धन्धे खोलते और चलाते हैं। दृष्टिकोण अधिकाधिक पैसा कमाना रहता है, भले ही उससे जन-समाज का भविष्य अन्धकारमय बनता हो। उदाहरण के लिये नशीली चीजों का उत्पादन आज आकाश चूम रहा है। सिगरेट उद्योग में लाखों मनुष्य और अरबों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रुपया लगा है। यदि इस पूँजी और श्रम-शक्ति को जन-कल्याणकारी व्यवसायों में लगाया जा सके तो देश की अत्यन्त महत्वपूर्ण जीवन-मरण की आवश्यकताएँ पूरी हो सकती हैं। जैसे यदि इसी धन और श्रम को पशु-पालन अथवा निवास गृह बनाने में—पानी और बिजली उत्पन्न करने में लगा दिया जाय तो लोगों की सुविधा और समृद्धि में आशातीत वृद्धि हो सकती है।

जिन्हें व्यवसाय में रुचि है। जो भूखे नंगे नहीं मर रहे हैं। जो थोड़ा कम लाभ प्राप्त करने पर भी चैन से रह सकते हैं, उन्हें कहा जाय कि वे किसी भी प्रकार धन कमाने के लिये पागल न बनें। व्यवसाय ही करना हो तो ऐसे काम करें, जिनसे जन-हित का अभिवर्धन होता हो। यदि यह बात लोगों के गले उतारी जा सके—पूँजी को सृजनात्मक व्यवसायों में लगाने के लिये आमन्त्रित किया जा सके तो इतने मात्र परिवर्तन से भी देश का कायाकल्प हो सकता है।

उदाहरण के लिये लोक-मानस को प्रभावित करने वाले उद्योगों को ही ले लें। सत्साहित्य प्रकाशन आज की अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता है, पतन के गर्त में धकेलने वाली पुस्तकें और पत्रिकाएँ आँधी तूफान की तरह छप और खप रही हैं। इनकी प्रतिद्वन्द्वता में सत्साहित्य-निर्माण का काम इतना बड़ा पड़ा है कि उसमें अरबों रुपयों और लाखों मनुष्यों का श्रम खपाया जा सकता है। देश में १४ मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं, उनमें प्रेरक साहित्य नहीं के बराबर है। उसे हजार गुनी गति से बढ़ाया जाय तो भी युग की आवश्यकता को देखते हुए कम ही पड़ेगा। यही बात चित्रों के बारे में भी है। चित्रों में आकर्षण होता है और प्रभाव भी। वे घरों की शोभा बढ़ाने वाले उपकरणों में एक आवश्यकता बन गये हैं। आज तीन चौथाई चित्र कामुकता की पशु-प्रवृत्ति भड़का कर लोगों के पल्ले विष-बीज बाँधने के लिए छापे जाते हैं। प्रकाशक और विक्रेता जल्दी ही मालामाल तो अवश्य हो जाते हैं, पर यह नहीं सोचते कि इस कसाई की कमाई से उन्होंने कितनों का शारीरिक, मानसिक और नैतिक स्वास्थ्य चौपट करके रख दिया। चित्र प्रकाशन में यदि पूँजी और सूझ-बूझ लगे तो कोई कारण नहीं कि सुरुचि संवर्धन की सामग्री को बाजार में स्थान न मिले—लोग उसे न खरीदें। इस स्तर की वस्तुएँ होंगी तो वे बिकेंगी भी और उनसे असुरता की बाढ़ को रोकने वाली प्रतिद्वन्द्वता को भी कुछ करने का अवसर मिलेगा। आज तो मैदान खाली पड़ा है। असुरता का ही पूर्ण साम्राज्य छाया हुआ है—उसी की 'मोनोपॉली' है।

फिल्म उद्योग भी उसी स्तर का है। भारत में कुल मिलाकर जितने अखबार पढ़ने वालों की संख्या, उससे अधिक सिनेमा देखने वालों की है। सारे अखबार मिलकर जैसा कुछ वातावरण बना सकते हैं, उतना अकेला सिनेमा बना सकता है। फिल्म उद्योग में खरबों रुपयों की पूँजी लगी है, लाखों लोग काम करते हैं। महत्वपूर्ण प्रतिभाएँ उसमें जुड़ी हुई हैं, पर उसकी दिशा जिस ओर है, वह सबके सामने है। जन-मानस को विकृत करने में उसने जितना विष घोला है, उतना शायद ही अन्य किसी उद्योग ने घोला हो। दोष उद्योग का नहीं, वह तो शस्त्र मात्र है। प्रयोक्ता जिसके लिये उसका उपयोग करेंगे, प्रगति उसी दिशा में होगी। यदि हम उद्योग आदर्शों के अभिवर्धन के लिए-सत्यप्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देने के लिए—रचनात्मक मार्ग-दर्शन के लिए प्रयुक्त हुआ होता तो आज हमारे समाज की स्थिति जो है, उससे सर्वथा भिन्न रही होती। तब हमारी देश में सृजनात्मक प्रवृत्तियाँ उफन रही होतीं—तब हमारे मन-मस्तिष्क सज्जनता और शालीनता से ओत-प्रोत हो रहे होते—तब हमारी महत्वाकांक्षाएँ किसी अन्य दिशा में ही अग्रगामी हो रही होतीं।

साहित्य प्रकाशन, चित्र प्रकाशन, फिल्म निर्माण, रिकार्ड-निर्माण जैसे कुछ उद्योग ऐसे हैं, जिनमें तत्काल अधिकाधिक पूँजी लगानी चाहिए और देवत्व के पक्ष में लोक-मानस को मोड़ने का अभिनव प्रयत्न किया जाना चाहिए। यह कार्य वर्तमान उद्योगपति भी कर सकते हैं। उनका लालच यदि आगे न बढ़ने दे तो जन-स्तर पर भी पूँजी जुटाई जा सकती है। लिमिटेड कम्पनियाँ—सहकारी समितियाँ जैसे अर्थ-संस्थान खड़े हो सकते हैं। शेयरों और ऋणों के आधार पर पूँजी जमा करके इस प्रकार के उद्योगों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ढाँचे खड़े किये जा सकते हैं। आज न तो पूँजी कम है—न प्रतिभाओं का अभाव है। कमी केवल आदर्शों की दिशा में चलने के साहस की है। बहुत जल्दी, बहुत अधिक मात्रा में धन कमाने के लालच पर यदि अंकुश रखा जा सके और सामान्य लाभ से सन्तोष हो सके तो आज मारी-मारी फिरने वाली लक्ष्य-विहीन और विनाश में प्रवृत्त औद्योगिक क्षमता उतना काम कर सकती है, जितना कि हमारी इस वर्ष, हजार वानप्रस्थ समाज में धकेल देने वाली दुस्साहस पूर्ण योजना, पूरी तरह सफल होने पर भी नहीं कर सकती।

पूँजी और प्रतिभा की विभूतियों को लोक-मंगल के लिए मिली हुई ईश्वर-प्रदत्त अमानत मानने की मान्यताओं को जन-मानस में स्थान मिल सके और इन उपलब्धियों के सदुपयोग की बात समझ में आने लगे तो नव निर्माण का कठिन प्रतीत होने वाला कार्य अति सरल तथ्य बनकर सामने खड़ा हो सकता है। 'अखण्ड-ज्योति परिवार' के सदस्यों ने इस दिशा में थोड़ा साहस दिखाया है तो 'युग-निर्माण योजना' की सृजन-सेना में लाखों सक्रिय सदस्य, कर्मठ-कार्यकर्त्ता सम्मिलित हैं और अब व्रतधारी वानप्रस्थों का हलचल मचाने वाला वर्ग उभरता चला आ रहा है। थोड़ा-थोड़ा समय देने से ही यह सम्भव हुआ। दस-दस पैसा नित्य निकालने जैसी छोटी उदारता ने ज्ञानयज्ञ के प्रकाश विस्तार को गगन-चुम्बी बनाया है। यही उदार सेवा-भावना—यही परमार्थ-परायणता यदि अगले दिनों बढ़ती रही तो सार्वजनिक सेवा-क्षेत्र में आश्चर्यजनक और आशातीत कही जा सकने वाली क्रान्तिकारी योजनाएँ सम्पन्न होती दिखाई देंगी। परमार्थ बुद्धि को दिशा मिल सके तो धर्म एवं पुण्य के नाम पर जितना कुछ हो रहा है, उतने से ही हम अपने देश का ही नहीं, समस्त विश्व का कायाकल्प कर सकते हैं।

इसी के समानान्तर है पूँजी और प्रतिभा का सदुद्देश्य के लिए व्यावसायिक उपयोग। जिसका थोड़ा-सा संकेत ऊपर की पंक्तियों में किया गया है। पशु-पालन, कुटीर उद्योगों का संवर्धन, शिक्षण-संस्थाओं का संचलन जैसे कार्य विशुद्ध, आर्थिक दृष्टिकोण से भी खड़े किये जा सकते हैं। पूँजी और श्रम लगाकर उचित लाभ लेने में कोई बुराई नहीं है। दान-पुण्य, न सही—सेवा और परोपकार न सही मनुष्य अपनी सद्भावना का परिचय इस प्रकार तो दे ही सकता है कि देश की महती आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपनी आजीविका के ऐसे माध्यम चुनें, जिनसे मानवता को ऊँचा उठाने और आगे बढ़ने में सहायता मिल सके। ऊपर चार विशिष्ठ उद्योगों की ओर जो संकेत किया गया है, उन्हें तो विचार-क्रान्ति, नैतिक क्रान्ति और बौद्धिक क्रान्ति की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण आधार माना जा सकता है। साहित्य-प्रकाशन, चित्र प्रकाशन, रिकार्ड-निर्माण एवं फिल्म निर्माण के लिए यदि पूँजी और प्रतिभा जुट सके तो वह व्यावसायिक आधार भी नव-निर्माण की पृष्ठ-भूमि बनाने में अभिनव योगदान कर सकते हैं।

वानप्रस्थ कार्य-क्षेत्र में उतरेंगे, जन-सम्पर्क बढ़ावेंगे और उद्बोधन के अतिरिक्त इस तथ्य पर ध्यान रखेंगे कि जहाँ भी सद्भावना का उदय होता दिखाई दे, उसे अविलम्ब किसी सत्प्रवृत्ति में नियोजित कर दिया जाय।

वानप्रस्थों का तात्कालिक कार्यक्रम

शिविर संचालन

युग-निर्माण संगठन का विकास विस्तार अपने ढंग की अनौखी घटना है। विश्वास किया जा सकता है कि उसकी तूफानी गति अगले दिनों और भी तीव्र होनी है। अब उसे नियन्त्रित और सुव्यवस्थित करने का कार्य हाथ में लिया जाना चाहिए। अब तक वह बरसात में उगने वाली हरियाली की तरह अनायास और अप्रत्याशित रूप से उगा और बढ़ा है। अब उसे चतुर मालियों की कैंची, दरांती, खुरपी, कुदाली की आवश्यकता पड़ रही है। बाढ़ बनाने, खाद देने जैसे कितने ही कार्य करने को पड़े हैं, ताकि इस उगी हुई हरीतिमा के बहुमूल्य पेड़-पौधों को अधिक सुन्दर, समुन्नत और फल-फूलों से लदा हुआ देखा जा सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकता यह अनुभव की गई है कि प्रत्येक शाखा सङ्गठन के सक्रिय सदस्यों को—कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को क्रमबद्ध रूप से प्रशिक्षित किया जाय। मिशन के आधार, वर्तमान चरण एवं भावी क्रिया-कलाप का सांगोपांग परिचय कराया जाय। यों उन्होंने जाना-पड़ा तो बहुत कुछ है, पर वह क्रमबद्ध रूप से नहीं हुआ है। यह उचित ही है कि मिशन का प्रत्येक सदस्य अपनी योजना एवं क्रिया-पद्धति से भली-भाँति अवगत हो। उसे आत्मनिर्माण के लिए, समाज-निर्माण के लिए क्या करना है ? कैसे करना है ? इसकी विधि-व्यवस्था की उसे समुचित जानकारी होनी ही चाहिए। अस्तु निश्चय यह किया गया है कि इस वर्ष जितनी शाखाओं में सम्भव हो सके, कार्यकर्ताओं के शिक्षिण-शिविर लगाये जायँ। प्रशिक्षित वानप्रस्थों को प्रधान रूप से इस वर्ष इसी कार्यक्रम का संचालन करना होगा। उसके लिए दो-दो वानप्रस्थों के जोड़े बनाकर भेजे जायेंगे, ताकि परस्पर सहयोग से मिल जुलकर अधिक कार्य कर सकना सम्भव हो सके।

शिविर कहाँ किये जायेंगे, किस तारीख से किये जायेंगे ? इसकी पूछताछ एवं जाँच पड़ताल चल रही है आशा है, वे बड़ी संख्या में होंगे और जनवरी से जून तक की प्रथम छमाही में प्रशिक्षित किये गये वानप्रस्थ उसी में खप जायेंगे। शिविर पन्द्रह-पन्द्रह दिन के होंगे इसमें आरम्भ के तीन दिन व्यवस्था जुटाने के और दो दिन बिखरे हुए सारे कार्य को व्यवस्थित रूप से समाप्त करने के लिए निर्धारित हैं। बीच के दस दिन शिक्षण-व्यवस्था चलेगी। यों वे आरम्भ और अन्त के पाँच दिन भी शिक्षण के ही हैं, क्योंकि उस शाखा के कार्यकर्ता भी तो भविष्य में अन्यत्र जाकर इसी प्रकार से व्यवस्था का आरम्भ और अन्त कराया करेंगे।

बीच के दस दिनों में प्रातः ५ से ६ बजे तक चार घण्टे कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण चलेगा। इसकी रूपरेखा 'पाक्षिक युग-निर्माण योजना' के अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर के छः अंगों में विस्तारपूर्वक छाप दी गई है। आत्मनिर्माण और समाज-निर्माण की जो प्रक्रिया वानप्रस्थों को लम्बी अवधि में हरिद्वार रखकर सिखाई गई है, उसका सार-तत्व चार घण्टा प्रतिदिन के हिसाब से इन दस दिनों में स्थानीय कार्यकर्ताओं के गले उतारने का प्रयत्न वानप्रस्थ लोग करते रहेंगे।

सायंकाल ७ से १० तक जनता का प्रशिक्षण चलेगा। दस दिन तक सभी आयोजन चलता रहेगा। अब तक जन-साधारण को 'युग-निर्माण योजना' की अस्त-व्यस्त जानकारी ही प्राप्त हुई है। क्रमबद्ध रूप से अभियान की सांगोपांग रूपरेखा—विचारधारा एवं क्रिया योजना का उसे समझने-समझाने का सुयोग ही नहीं मिला। इस सम्मेलन में उस आवश्यकता की पूर्ति की जायेंगी। व्याख्यानों की एक सुनियोजित विधि-व्यवस्था बनादी गई है। वक्ता उसी मर्यादा में पूर्व तैयारी करके पहुँचेंगे और निर्धारित विषय का ही प्रतिपादन करेंगे। इस प्रकार वह भी जनता का एक व्यवस्थित प्रशिक्षिण-शिविर ही बन जायेगा। संगीत साथ में रहेगा। दो व्याख्यान और तीन संगीत हर दिन होंगे। आरम्भ, मध्य और अन्त में पन्द्रह-पन्द्रह मिनट के तीन संगीत, एक-एक घण्टे के दो भाषण। पन्द्रह मिनट अन्य औपचारिकताओं के लिए। इस प्रकार तीन घण्टे में सभा-कार्य पूरा हो जाया करेगा।

किस दिन किस विषय पर भाषण होने हैं और कौन-से गीत गाये जाने हैं ? इसकी रूपरेखा भी बनादी गई है। स्थानीय कार्यकर्ता यह प्रयास करेंगे कि उस क्षेत्र के प्रतिभाशाली वक्ताओं और कुशल गायकों से सम्पर्क बनाकर अभी से उन्हें सम्मेलनों में अपने भाषण एवं गायन प्रस्तुत करने कें लिए आमन्त्रित करेंगे। जो तैयार होंगे, उन्हें भाषण के विषय तथा गायन के गीत बहुत समय पूर्व दे दिये जायेंगे, ताकि उन्हें आवश्यक तैयारी के लिए समय मिल जाय। इस प्रकार उस क्षेत्र के वक्ताओं एवं गायकों को भी अपने मिशन की विचारधारा का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिल जायेगा। भविष्य में शाखाएँ जब पर्वोत्सव अथवा दूसरे आयोजन समय-समय पर किया करेंगी तो इन गायकों और वक्ताओं से भी काम चल जाया करेगा। शैली विदित हो जाने से वे बताये हुए विषयों को तैयार कर लिया करेंगे। इस प्रकार बाहर से विद्वान वक्ता एवं गायक बुलाने की खर्चीली प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता न पड़ा करेगी। बहुत हुआ तो एक स्थान के वक्ता, गायक दूसरी शांखा को—दूसरी के तीसरी को भेजकर नवीनता उत्पन्न करली जाया करेगी। इस प्रकार वक्ता और गायकों की इन दिनों जो कमी पड़ती है, उसका हल निकल आयेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस सम्मेलन-आयोजन में कविता-गायनों की भी व्यवस्था रखी जाया करेगी। कवि-सम्मेलन बुलाया जाना तो कठिन है, पर कविता-पाठ का सम्मेलन मधुर कण्ठ वाले छात्रों और छात्राओं से भी चल सकता है। इसमें मनोरंजन भी है—प्रेरणा भी और छात्रों को मंच पर आने एवं विचार व्यक्त कर सकने का अभ्यास भी। किस दिन किन कविताओं को गाया जाय ? इसका मार्ग-दर्शन उन्हें पहले से ही करा दिया जायेगा, ताकि तैयारी के लिए उन्हें भी समय मिल जाय।

उत्साही अध्यापक और छात्र संगठन एकांकी नाटकों का अभ्यास भी कर सकते हैं। उन्हें नाटक दे दिया जाया करेंगे—तैयारी वे करेंगे। समय पर प्रदर्शन करने पहुँच जायेंगे। इस प्रकार बीस मिनट या आधा घण्टे का नाटक भी मजे में हो सकता है। किसी दिन संगीत, किसी दिन कविता-सम्मेलन, किसी दिन एकांकी नाटक रहने से विविधता रहेगी और आकर्षण भी। प्रवचनों के दो घण्टे तो सुरक्षित ही रहेंगे। एक घण्टा जो कला-तन्त्र के लिए रखा गया, उसी में स्थिति के अनुरूप यह तीनों कार्य फिट कर लिए जाया करेंगे। इससे सम्मेलनों में कला-तन्त्र का समावेश भी कविता-सम्मेलन, संगीत एवं एकांकी नाटकों के माध्यम से होता रहेगा। लोक-शिक्षण की यह भी एक दिशा है—जिसके लिए प्रस्तुत कर्ताओं की सर्वत्र आवश्यकता पड़ेगी। शिविरों के साथ चलने वाला जन-शिक्षण सम्मेलन न केवल जनता को मिशन की रूपरेखा से परिचित करायेगा, वरन् मञ्च को सँभालने वाले वक्ता, गायक एवं कलाकार को भी प्रशिक्षित करेगा।

शाखा-संगठन के स्थानीय कार्यकर्ताओं को विचार-क्रान्ति का प्रयोजन पूरा करने के लिए अपने क्षेत्र में ऐसे अनेक छोटे-बड़े आयोजन करने होंगे। अस्तु यह जनसम्मेलन भी उनका ज्ञान एवं अनुभव परिपक्व करेगा। जनसम्मेलनों की क्या और कैसे व्यवस्था करनी पड़ती है—क्या साधन जुटाने पड़ते हैं—जनता अधिक संख्या में उपस्थित हो, इसके लिए क्या करना होता है ? भीड़ की व्यवस्था और नियन्त्रण करने के लिए क्या किया जाना चाहिए ? आदि बातों की समुचित जानकारी होने से सम्मेलनों का क्रम ठीक तरह चलाया जा सकता है। एक बार उस रूपरेखा का उपयुक्त मार्ग-दर्शन में सँभाल लेने से भविष्य में स्थानीय कार्यकर्ता ही इस योग्य हो जायेंगे कि वे अन्यत्र जाकर स्वयं ही संचालन व्यवस्था सँभाल सकें।

युग निर्माण सम्मेलनों के साथ-साथ गायत्री यज्ञ आयोजनों को जुड़ा रखने की अपनी कार्य-पद्धति भारतीय जन-मानस के अनुरुप बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुई है। उस आधार पर जन-मानस की धर्म-श्रद्धा आश्चर्य रूप से जगाई जा सकती है। यज्ञ में भाग लेने वालों को अपने वर्तमान दुर्गुणों में से एक छोड़ना पड़ता है और एक नया सद्गुण ग्रहण करना पड़ता है। इस यज्ञ-दक्षिणा की अनिवार्यता को जोड़ देने से यज्ञ-आयोजन चरित्र-निर्माण का—व्यक्तित्व-निर्माण का प्रयोजन पूरा करने में अत्याधिक सहायक होते हैं। यज्ञ-भगवान् के सम्मुख ली हुई प्रतिज्ञाओं को लोग निष्ठापूर्वक निवाहते भी हैं।

धर्मोत्साह का अभिवर्धन—मिल-जुलकर काम करने का अभ्यास—सत्कर्म-परायणता का अभ्यास—प्राचीन परम्पराओं का परिचय आदि कितने ही ऐसे आधार हैं, जिनसे मिशन के उद्देश्यों की पूर्ति में भारी सहायता मिलती है। धर्म-शास्त्रों में वर्णित लाभ इसके अतिरिक्त हैं। अपने यज्ञ-आयोजनों का विरोध कोई सुधारवादी अर्थशास्त्री भी नहीं कर सकता क्योंकि अपने यज्ञों में आहुतियाँ केवल सुगन्धित वनस्पतियों की दी जाती है। अन्न का एक दाना भी नहीं होमा जाता। घी का उपयोग प्रतीक रूप से ही अत्यन्त स्वल्पमात्रा में किया जाता है। अब तो उसमें भी कमी कर दी गई है। आरम्भ की सात और अन्त की तीन, कुल मिलाकर दस आहुतियों में घी होमने से प्रचलन में अब घी नष्ट करने का आक्षेप भी चला गया। उपयोगी खाद्य-पदार्थों को नष्ट करने के आक्षेप से अपना मिशन सर्वथा मुक्त है। यज्ञ में जितना स्वल्प व्यय और जितना अधिक आकर्षण होता है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि सर्वतोन्मुखी सृजन के लिए आवश्यक धर्मोत्साह उत्पन्न करने की दृष्टि से गायत्री-यज्ञ आयोजनों का प्रचलन करके युग-निर्माण योजना ने भारतीय जनता के लिए एक उपयोगी विधान प्रस्तुत किया है।

गायत्री सद्भावनाओं की देवी है और यज्ञ—सत्कर्मों का प्रेरक। भारतीय संस्कृति की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जननी—वेद-माता गायत्री कही जाती है और भारतीय धर्म का स्रोत—त्याग, बलिदान एवं पवित्र जीवन का प्रतीक यज्ञ। उत्कृष्ट विचारणा की व्याख्या गायत्री के माध्यम से और आदर्श क्रिया-पद्धति की शिक्षा यज्ञ विवेचना के माध्यम से जितनी अच्छी तरह दी जा सकती है, उतनी और किसी माध्यम से नहीं। गायत्री-उपासना के शास्त्रीय प्रतिफल और यज्ञानुष्ठान के धार्मिक लाभ को यदि छोड़ भी दें तो भी इन दोनों माध्यमों में इतनी अधिक प्रेरणाप्रद आधार भरे पड़े हैं कि उनके सहारे व्यक्ति और समाज को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने की प्रेरणा भली प्रकार दी जा सकती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर पन्द्रह दिवसीय-शिविर में मध्य के चार दिन गायत्री यज्ञ आयोजन के लिए भी रखे गये हैं।

इस माध्यम से क्षेत्रीय आयोजनों की एक नई विधि व्यवस्था को कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण मिलता है। उसमें जन-मनोविज्ञान समझने की—लोगों से काम लेने की—उन्हें सँभालने की—भोजन-निवास की—सफाई की— सुरक्षा की—अनेकानेक समस्याओं को समझना-सँभालना पड़ता है। यह अपने आप में एक पृथक् विधि-व्यवस्था है, जिसे जाने बिना यदि कोई उस तरह के काम में हाथ डाल बैठे तो सब कुछ गुड़-गोबर हो जायेगा। सहभोज की एक उत्तम परिपाटी इन आयोजनों में ही उभरती है। कच्ची-पक्की रोटी का—एक का छुआ दूसरा न खाये, इस पाखण्ड का उन्मूलन इन यज्ञों में जिस सरलता से होता है, वह देखते ही बनता है। अपने आयोजनों में दाल-चावल जैसी कच्ची कहलाने वाली रसोई ही बनती है और बिना किसी भेद-भाव के मिल-जुलकर खाने, पकाने और परोसने से उस विभेदकारी पृथकतावाद का किला टूटता है, जिसने अपने देश को बेतरह विसंगठित और दुर्बल करके रख दिया है।

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त शिविर-श्रृंखला से चार दिन गायत्री-यज्ञ आयोजन के लिए भी रखे गये हैं। यज्ञ के निमित्त अक्सर लोग श्रद्धापूर्वक अर्थ-सहायता भी देते हैं। आयोजन के आवश्यक खर्चों में ही ज्ञान-यज्ञ का पक्ष भी जोड़कर रखा जाता है और प्रचुर साहित्य वितरित करने—प्रेरक पोस्टर चिपकाने—दीवारों पर आदर्श-वाक्य लिखने का खर्च भी सम्मिलित रखा जाता है। ताकि लोगों को प्रेरणाएँ प्राप्त करने का यह उपयोगी माध्यम भी कार्यान्वित होता रहे। कुछ पैसा बच गया तो स्थानीय शाखाओं को उससे अपने यहाँ ज्ञान-रथ, लाउडस्पीकर, स्लाइड-प्रोजेक्टर (रंगीन चित्र प्रदर्शन-यन्त्र), टेप-रिकार्डर आदि उपयोगी प्रचुर साधन खरीद लेने की सुविधा बन जाती है और उस क्षेत्र में ज्ञान-यज्ञ का अधिक विस्तार करना सम्भव हो जाता है। ऐसे-ऐसे अनेकों लोकमानस में उपयोगी प्रेरणाएँ उत्पन्न करने वाले तथ्यों को ध्यान में रखते हुए पन्द्रह दिवसीय शिविर आयोजनों की रूप-रेखा बनाई गई है। प्रशिक्षित वानप्रस्थों को तात्कालिक कार्यक्रम वही सोंपा जा रहा है।

वानप्रस्थ से तेजस्वी जीवन

वानप्रस्थ एक आध्यात्मिक शक्ति है, जबकि 'पेन्शनर' एक सांसारिक अवस्था है। दोनों को मैं एक करना चाहता हूँ। मैंने अपने जीवन में वानप्रस्थ आश्रम को उत्तेजना देने के लिए काफी कोशिश की है। एक उम्र में विषय-वासना से मुक्त होकर समाज की निष्काम सेवा में लग जाय, इसकी एक व्याख्या मैंने आश्रम की दृष्टि से की है। पहली बात देहासक्ति छोड़े, विषयासक्ति से मुक्त हो, गृहासक्ति छोड़े और निष्काम सेवा में लग जाय। यह विचार में सतत करता आया हूँ। कुछ साथी आश्रम में वानप्रस्थ के बतौर रहने के लिए आये थे। उन्होंने उत्तम मिसाल पेश की। तुलसीदासजी ने रामायण में स्वयंभू मनु की कथा दी है। जीवन के चौथे चरण में वह विषयासक्त था। तब तुलसीदासजी को कहना पड़ा। "बरबस गमन वन कीन्हा"—बलात् वन में गमन करना पड़ा। स्वयंभू मनु आदि—मनु थे, किन्तु विषय-वासना सहज भाव से मुक्त नहीं हुई थी, उसको काटना पड़ा।

विषय-वासना से अगर एक उम्र में ऊपर नहीं बैठते हैं, तो जीवन दुःखी बनता है और पुरुषार्थहीन बनता है। पूर्वजों ने एक सुन्दर रचना की थी, जो सारी दुनिया के लिये अनुकरणीय है। एक उम्र के बाद गृह-मुक्ति, विषय-मुक्ति हासिल करना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शुरूआत में फल का छिलका कड़ा होता है और अन्दर का बीज कच्चा होता है। किन्तु धीरे-धीरे ऊपर का हिस्सा ढीला बनता है, जैसे-जैसे ऊपर का हिस्सा ढीला बनता है, वैसे-वैसे अन्दर का बीज कड़ा होता जाता है। अन्त में जब फल सड़ जाता है तब बीज सख्त और ठोस रहता है। इसी प्रकार मनुष्य ज्यों-ज्यों वृद्ध होगा, आकार जीर्ण-शीर्ण तो होगा ही, किन्तु उसका अन्तस्सत्व, उत्तरोत्तर मजबूत होना चाहिये। मरने की तैयारी है, किन्तु बुद्धि अत्यन्त मजबूत है।

सत्य यह है कि देहासक्ति, विषयासक्ति, गृहासक्ति कम हो। भाई, बच्चे सब काम देख लेंगे। उनको जरा मौका मिलेगा और हमें मुक्ति मिलेगी। अगर ऐसा नहीं करेंगे, तो व्यर्थ का संघर्ष होगा और आदमी जीवन से ऊब जायेगा। वानप्रस्थ जीवन से आयु की वृद्धि होगी, यह नहीं कह सकते। ईश्वर जितनी आयु देगा, उतनी आयु होगी। किन्तु जितनी भी आयु रहेगी, वह तेजस्वी होगी। यह हमारी धर्म-रचना की खूबी है। धर्म-शास्त्रों ने देखा कि मनुष्य सुखासीन होने लगा है, उसको तुरन्त वहाँ से हटाया। बच्चा कुछ बड़ा हुआ और घर के वातावरण में माता-पिता का प्यार मिला और सुखपूर्वक रहने लगा, पर शास्त्र का आदेश है कि गुरु के घर भेजो। माता-पिता को छोड़कर गुरु के घर जाना पड़ता है। आश्रम के नियम का पालन करने की जिम्मेदारी आती है। यद्यपि गुरु उसको बड़े प्रेम से पालते-पोषते हैं यद्यपि घर का आनन्द नहीं मिलता है, फिर भी जैसे-तैसे वह गुरुकुल के वातावरण में समरस, एकरस हो जाता है और वह इस स्थान को आनन्द का स्थान बना लेता है, तो उसको वहाँ से हटाकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने की जिम्मेदारी दी जाती है। नई जिम्मेदारी आने पर शुरू में काफी तकलीफ होती है। लेकिन दस-बीस साल में सब एडजस्ट हो जाता है और सब काम ठीक से चलने लगता है, तो उसे यह आदेश दिया जाता है कि घर छोड़कर वानप्रस्थ-जीवन में आये। यहाँ फिर नया जीवन होता है। लोगों की सतत सेवा करने की जिम्मेदारी आती है, कुछ तकलीफ तो होती है, किन्तु धीरे-धीरे इससे अनेकों का प्यार मिलता है और बाद में लोग उसकी सब प्रकार की व्यवस्था कर देते हैं। शास्त्रकार कहता है कि यह भी अब सब छोड़ो और निरन्तर घूमो। आज तो उलटा होता है। मनुष्य वृद्ध हो गया है, इसलिये उसको एक जगह घर पर रहना चाहिये। किन्तु शास्त्रकार कहता है, सतत घूम। रोज नई-नई तकलीफें आती हैं नई-नई तकलीफों से आनन्द भी आता है और इससे तप होता है। अगर इसी काम को जबरन लादा जाता, तो ताप होता। इसलिये यह व्यवस्था की गई है कि आदमी को घर में हरगिज नहीं मरना चाहिये। सारांश यह है कि मनुष्य फीका और निस्तेज न बने। आराम और सुख की इच्छा उसको तेजोहीन बना देती है। मैं अक्सर देखता हूँ, जिनको बचपन में खूब कष्ट उठाना पड़ता है, ऐसे कष्टप्राप्त लोगों को जब नौकरी अच्छी मिलती है, तो वे अपने बच्चों को तकलीफ और कठिनाई से बचा लेते हैं। परिणाम क्या होता है ? जो पुरुषार्थ वे कर पाये, उसका अवसर बच्चों को नहीं मिलता और जीवन में तेजस्विता नहीं आती है। इसलिये कभी-कभी मैं कहता हूँ कि ये पिता वस्तुतः पिछले जन्म के दुश्मन हैं क्योंकि वे देखते हैं कि बच्चों का जीवन सुखमय कैसे बने ? तेजस्वी बने, यह परवाह नहीं करते हैं। कहने का मतलब यह है कि पराक्रमी का पुत्र ज्यादा पराक्रमी बनना चाहिये और जीवन का सत्व, तेजस्विता बढ़ती रहनी चाहिये।

घर में बीमार पड़कर सड़ते रहना, इसमें जीवन का कोई रस नहीं है, कोई सार नहीं, कोई आनन्द नहीं। इसलिये विषयासक्ति से मुक्त होना चाहिये। यहाँ मैं एक शब्द भी ज्यादा नहीं बोल रहा हूँ। विषयासक्ति काटे बिना नहीं कटती है। ययाति की कहानी है कि जब वह बूढ़ा हो गया तो उसने अपने चार-पाँच लड़कों से जवानी मांगी। सबने इन्कार किया, किन्तु कुरु ने पितृभक्ति के लिये उसको अपनी जवानी दे दी। पिता जवान हो गया, पुत्र बूढ़ा हो गया, किन्तु ययाति को दुबारा बुढ़ापा आया, तो वह अत्यन्त पश्चाताप दग्ध होकर एक श्लोक बोला "ययातेर्गाथा" के नाम से मशहूर है—कामोपभोग काम से शान्त नहीं होते हैं। जैसे घी से अग्नि शान्त नहीं होती है, बल्कि बढ़ती है, वैसे ही काम से काम बढ़ता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वानप्रस्थ जीवन में वृत्ति-विकास को प्रथम स्थान देना चाहिये। थोड़ी देर के लिये जितनी आवश्यक हो, उतनी सेवा भी करेंगे। लेकिन वानप्रस्थ वृत्ति-प्रधान होगा। उसके जीवन में बाह्य कर्म प्रधान नहीं होगा। अपनी आत्मा में स्थित रहने की वह कोशिश करेगा।

वानप्रस्थ की परम तेजस्वी साधना

वर्णाश्रम धर्म भारतीय संस्कृति का—मानव जीवन को सुविकसित करने का एक अत्यन्त ही विवेकपूर्ण मार्ग है। किशोर अवस्था में शरीर और मन को संयम करने से भावी जीवन में सुदृढ़ता और समर्थता आती है। इसके बाद गृहस्थ में उपार्जन और अभिवर्धन की, पौरुष और विकास की साधना करते हुये, आत्मा की उमंगों को तृप्त किया जाता है। छोटे बच्चों का उत्तरदायित्व जब बड़ा बच्चा सँभाल ले युवावस्था समाप्त हो जाये और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ हल्की हो जायें तो हर मनुष्य का परम पवित्र कर्तव्य है कि ढलती आयु को आध्यात्मिक परिष्कार में लगावे। युवावस्था की आँधी, मन के ऊपर कुछ कूड़ा-कचरा बखेर जाती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह से सना हुआ जीवन क्रम स्वभावतः कुछ ऐसे कलुष अन्तःकरण पर जमा कर देता है कि यदि उन्हें शुद्ध न किया जाये तो स्वभाव का अंग एवं संस्कार रूप धारण करके वे जीवन के लिये भव बन्धन में बाँधने वाले रस्से बन जाते हैं और उनमें जकड़ा हुआ वह पुनः चौरासी के चक्र में घूमने लगता है।

जिस प्रकार चढ़ती उम्र में ब्रह्मचर्य, यौवन में गृहस्थ आवश्यक है, उसी प्रकार यह भी उचित है कि ढलती आयु को आत्म-कल्याण की साधना में लगाया जाय। उपासना, जीवन शोधन और परमार्थ के त्रिविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों में पूरी तरह लग जाने का ठीक यही समय है। यदि इस ओर से उपेक्षा बरती गई तो शरीर त्यागते समय कुसंस्कारों में घिरा हुआ जीवन बहुत ही त्रास पाकर विदा होता है। उस समय की मोह, ममता तथा वासना तृष्णा उसे सद्गति का अधिकारी नहीं बनने देती। फिर उन्हीं प्रियजनों की, प्रिय वस्तुओं की समीपता पाने के लिये कर्मानुसार भली-बुरी योनियों में जन्मता मरता रहता है। जिसने मोह बन्धनों से छुटकारा प्राप्त नहीं किया, उसके लिये जीवन मुक्ति असम्भव ही बनी रहेगी।

जिनकी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ इतनी हल्की हो गई हैं कि घर का ढर्रा थोड़े मार्ग दर्शन से अपने आप चलता रहे, उनके लिये सबसे बड़ी दूर-दर्शिता और बुद्धिमत्ता की बात यही है कि वह आत्म-कल्याण की साधना में लगें और वानप्रस्थ-जीवन के नियम धर्मों का पालन करना आरम्भ कर दें। (१) स्वाध्याय सत्संग और चिन्तन मनन में समुचित समय लगाते हुये अपनी अन्तः भूमिका को अधिकाधिक परिष्कृत करने का प्रयत्न करें। (२) ईश्वर उपासना में अधिक मन लगावें। (३) अपने स्वभाव और संस्कारों को परमार्थ, वृत्ति से सम्पन्न करने के लिये लोक-सेवा के कार्यक्रमों को विशुद्ध आध्यात्मिक साधना मानते हुये, जन-कल्याण की प्रवृत्तियों में पूरे उत्साह के साथ भाग लें। संयम, सदाचार, त्याग, उदारता, निर्लोभता और निरहंकारिता का सतर्कतापूर्वक अभ्यास करें। यह तीनों बातें जिनके जीवन क्रम का अंश बन गईं समझना चाहिये कि वानप्रस्थ धर्म अपनाते हुये उनने मानव-जीवन की सफलता का द्वार प्रशस्त कर लिया।

आज की स्थिति अत्यन्त दुःखदायक है। चार आश्रम मिट गये केवल एक गृहस्थ आश्रम ही बचा है। जब से होश सम्भालता और जब तक मरता है मनुष्य गृहस्थ ही बना रहता है। इसी प्रकार चार वर्णों में से तीन मिट गये एक वैश्य वर्ण ही शेष है। धन लालसा के अतिरिक्त किसी का और कोई लक्ष्य नहीं होता। तथाकथित साधु ब्राह्मणों से लेकर चोर-डाकुओं तक हर वर्ग के व्यक्ति केवल धन की आकांक्षा में ग्रसित और उसी का ताना-बाना बुनते देखे जाते हैं। इस प्रकार वर्णाश्रम धर्म की कमर टूट जाने से भारतीय समाज का सारा ढाँचा ही लड़खड़ा गया है। धर्म और संस्कृति एक विडम्बना के रूप में ही जीवित है। वर्णाश्रम धर्म की महान परम्परायें ही जब नष्ट हो गई, रीढ़ की हड्डी ही टूट गई है तो जो कुछ जीवित बचा है, उसे मृत से गया बीता मानना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज हमारे महान धर्म की ऐसी ही दुर्गति हो रही है।

युग निर्माण की पुण्य बेला में सबसे अधिक आवश्यकता वानप्रस्थ आश्रम को जागृत करने की है। गृहस्थ की जिम्मेदारियों से निवृत्त हो जाने पर भी जो लोग 'गृहमोह' की बीमारी से गठिया या लकवे के रोगी की तरह निर्जीव पड़े हैं, उनमें पुनः जीवन संचार करने की आवश्यकता है। प्राचीन काल में यही वर्ग—केवल यही वर्ग—सारे समाज की उत्कृष्ट बनाये रहने का उत्तरदायित्व अपने कन्धे पर उठाता था और निःस्वार्थ एवं सुयोग्य लोक सेवकों की आवश्यकता पूर्ण करता था। किसी समाज की उत्कृष्टता इस बात पर निर्भर रहती है कि उसमें अनुभवी, सुयोग्य, चरित्रवान् और निःस्वार्थ लोकसेवी कितनी संख्या में हैं ? जहाँ यह तत्व जितना अधिक होगा, वहाँ उतना ही प्रकाश, जीवन एवं उत्कर्ष दृष्टिगोचर होगा।

लोक-सेवकों की आवश्यकता वेतनभोगी लोगों से पूरी नहीं की जा सकती। सरकारी महकमों में लाखों कर्मचारी तथाकथित लोकसेवा के लिये नियुक्त हैं। उनका दृष्टिकोण वेतन ही रहने से जो कुछ वे करते हैं वह उसकी अपेक्षा बहुत कम होता है, जितना कि वह कर सकते थे। फिर भौतिक कामों में कुछ उपयोग हो भी सकता है आत्मिक स्तर ऊँचा उठाने में तो ऐसे लोग चाहिये, जो स्वयं सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों से ओत-प्रोत जीवन जी रहे हों। उपेदेश से नहीं लोग आदर्श को प्रत्यक्ष देखकर प्रभावित होते हैं। वानप्रस्थ लोगों की निष्ठा, सच्चरित्रता, अनुभवशीलता और निःस्वार्थता ही जन-जीवन को अनुप्राणित करने में समर्थ हो सकती हैं। ऐसे लोग वेतन से नहीं खरीदे जा सकते, जो खरीदे जाते हैं वे वेतन भर के लिये काम करते हैं। उतनी स्वल्प चेष्टाओं से लोक-निर्माण जैसे महान उद्देश्यों की पूर्ति संभव नहीं हो सकती। भारतीय धर्म को सजीव एवं सशक्त रखा जाना हो तो उसके लिये वानप्रस्थ परम्परा को पुनः सजीव करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।

युग-निर्माण का उद्देश्यपूर्ण करने के लिये हमें चारों आश्रमों का ही पुनर्गठन करना है। ब्रह्मचारी किशोरों के लिये चार वर्ष की, गृहस्थों के लिये एक मास की शिक्षण व्यवस्था बन रही हो तो वानप्रस्थों को ही अछूता क्यों छोड़ा जायेगा, उनके लिये एक वर्ष की शिक्षा का कार्यक्रम बनाया गया है। इस अवधि में उपासना के एक ऊँचे स्तर तक पहुँचने का, जीवन शोधन की दिशा में काफी आगे बढ़ चलने का और परमार्थ कार्यों में युग की आवश्यकता के अनुरूप समुचित अनुभव प्राप्त करने का कार्यक्रम बना लिया गया है और अखण्ड-ज्योति परिवार के उन भावनाशील एवं सुशिक्षित लोगों को इसी ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा से एक वर्ष के लिये मथुरा आने का आमन्त्रण गत अंक में दिया गया है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि उच्च-स्तरीय गायत्री उपासना का पंचकोशी साधना क्रम, चान्द्रायण व्रत और गायत्री पुरुश्चरणों की सम्मिलित साधना विधि कितनी प्रभावशाली हो सकती है। फिर उसके लिये गायत्री तपोभूमि का तीर्थ स्थान तथा सुयोग्य सान्निध्य एवं मार्ग दर्शन का लाभ साधना की सफलता के लिये कितना उपयोगी सिद्ध हो सकता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि स्वाध्याय और सत्संग की कितनी समर्थ सुविधा यहाँ उपलब्ध है ? जीवन शोधन के अनुकूल जहाँ सारा वातावरण हो वहाँ अनायास ही अपने संस्कार भी वैसे ही ढलने लगते हैं। कोई भी वानप्रस्थ का सच्चा लाभ प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति मथुरा आकर प्रस्तुत शिक्षण योजना का लाभ ले तो यही विश्वास करना चाहिये कि उसे खाली हाथ न लौटना पड़ेगा।

त्रिविध प्रशिक्षण की जो महान् योजनायें गायत्री तपोभूमि में आरम्भ की जा रही हैं, उनकी सफलता इन वानप्रस्थ शिक्षार्थियों के उत्साह पर ही निर्भर रहेंगी। उनके लिये वेतनभोगी अध्यापक नियुक्त नहीं किये जाते हैं। चार वर्ष के लिये ब्रह्मचारियों की शिक्षा, एक-एक महीने के लिये पत्नी तथा परिवार समेत आने वाले गृहस्थों की शिक्षा, प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा आगन्तुकों की रोग निवृत्ति, के बहुमुखी व्यस्त कार्यक्रम होंगे। इन कार्यों में हमारे सहायक के रूप में यह एक वर्ष की शिक्षा प्राप्त करने के लिये आने वाले वानप्रस्थ ही कार्य करेंगे। साधना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वाध्याय के अतिरिक्त इन्हें इस ज्ञान-दान में भी हाथ बँटाने का अवसर मिलेगा। सेवा धर्म अपनाये बिना किसी का भी अन्तःकरण शुद्ध नहीं हो सकता इसलिये यह धर्म सेवा भी उन्हें आत्म-कल्याण का एक श्रेष्ठ साधन मानते हुये करनी होगी।

एक वर्ष पूरा करके अधिकाश वानप्रस्थ अपने-अपने क्षेत्र में लौट जावेंगे और फिर यहाँ जो शिक्षा प्राप्त की गई है, उसे निरन्तर व्यापक एवं विकसित बनाने के लिये प्रयत्न करते रहेंगे। जैसा शिक्षण केन्द्र मथुरा में बन रहा है वैसे या उससे मिलते-जुलते शिक्षण केन्द्र शिक्षण शिविरों की योजना देश के कोने-कोने में की जानी है। एक वर्ष जिसने क्रमबद्ध रूप में यहाँ सीखा है वह एक कुशल प्रशिक्षक के रूप में अपने प्रदेश में आशाजनक प्रकाश फैला सकने में सफल होंगे ऐसी आशा है। युग-निर्माण की शतसूत्री योजना में जो कार्यक्रम दिये गये हैं, उन्हें मूर्तमान किया जाना है। षोडश संस्कार, पर्व, त्यौहार, गायत्री यज्ञ प्रवचन आदि का अभ्यास करके लोक शिक्षण को प्रभावशाली किया जाना है। धर्म चेतना को संगठित, सशक्त और सुविस्तृत बनाया जाना है। इसके लिये विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की योग्यता वाले व्यक्ति अनेक प्रकार कार्य पद्धति आरम्भ करेंगे। भारत ही नहीं समस्त विश्व में भारतीय संस्कृति के आधार पर मानव-समाज का नवनिर्माण किया जाना है। इसे परमार्थ बुद्धि एवं निर्लोभ वानप्रस्थ ही पूरा करेंगे। विचार क्रान्ति और सामाजिक क्रान्ति का युग-यज्ञ ऐसे ही तेजस्वी वानप्रस्थों के द्वारा सुनियोजित होगा। मानवता के परित्राण के लिये इसी वर्ग की सबसे अधिक आवश्यकता एवं उपयोगिता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये उन व्यक्तियों का आह्वान किया गया है, जो परमार्थ के लिये अपना जीवन लगाकर मानवता को गौरवान्वित करने के लिये आगे बढ़ सकें।

इस प्रयोजन के लिये अशिक्षित, असमर्थ, रोगी, व्यसनी, दुर्गुणी, आलसी प्रकृति के वृद्धजनों की कोई उपयोगिता नहीं है। उन्हें अपने-अपने घरों पर रह कर ही प्राप्त मार्ग दर्शन के अनुसार आत्म-कल्याण की साधना करनी चाहिये। जिनके जी में देश और धर्म के नव-निर्माण का उत्साह और साहस है, जो शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ और समर्थ हैं, जिनकी शिक्षा सुशिक्षित कहे जाने लायक जितनी है और जो अपना भोजन, वस्त्र आदि का निर्वाह व्यय स्वयं वहन कर सकें, अभी ऐसे ही थोड़े से वानप्रस्थ लिये जाने हैं। आगे सुविधा और आवश्यकतानुसार उनकी संख्या बढ़ाई जाती रहेगी।

वयोवृद्धों के लिये एक अनुपम अवसर

जो इससे चूकेंगे, वे सदा पछताते रहेंगे !

युवावस्था को सुख-शान्तिमय और समृद्ध बनाने के लिये उसकी तैयारी बालकपन में करनी पड़ती है। बचपन में विद्याध्ययन, स्वास्थ्य सम्वर्धन एवं संस्कार अनुशासन का अभ्यास न किया जायेगा तो युवावस्था दीन-हीन होकर बितानी पड़ेगी। यौवन लौकिक-जीवन की सुविकसित अवस्था है। उसमें मनुष्य को सारे इह लौकिक आनन्द प्राप्त करने का अवसर मिलता है। स्वास्थ्य, सौन्दर्य, प्रतिभा, सत्ता, धन, मान, मनोरंजन, यश, पारिवारिक उल्लास आदि आनन्द के बहुत-से अनुभव इसी अवस्था में होते हैं। पर यह लाभ मिलते उन्हें ही हैं, जो बचपन में इसके लिये कठोर तप कर लेते हैं। जिन्होंने शैशव अस्त-व्यस्त बिताया, उनका यौवन निराशाओं और असफलताओं से भरा हुआ ही रहेगा।

भविष्य-निर्माण की तैयारी—

लौकिक जीवन में एक ही बार यौवन आता है। वृद्धावस्था तो लुटे हुये दिवालिये की तरह है। न शरीर काम देता है, न मस्तिष्क, न शक्ति रहती है, न प्रतिभा। बूढ़े को किसी प्रकार जिन्दगी के दिन पूरे करने पड़ते हैं। इसके उपरान्त मरणोत्तर जीवन की प्रौढ़ता एक बार फिर आती है। शरीर त्यागने के बाद परलोक का स्वर्गीय आनन्द और इसके बाद उच्च स्तरीय साधन सम्पन्न परिस्थितियों में नया जन्म। इन दोनों को मिलाकर एक यौवन आनन्द का अवसर फिर मिलता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यों समझना चाहिये कि एक जीवन-चक्र में दो बार यौवन आता है और दो बार उसकी तैयारी करनी पड़ती है। पच्चीस से पचास वर्ष की आयु के बीच रहने वाला लौकिक शारीरिक यौवन उसी के लिये आनन्ददायक बनेगा, जो पच्चीस वर्ष तक उसके लिये आवश्यक तपश्चर्या की तैयारी, शक्ति संचय करता रहा होगा। जिसने वह अवधि—आलस्य और प्रमाद में, उच्छृंखलता और स्वच्छन्दता में बिगाड़ दी, उसे युवावस्था में पग-पग पर नीचा देखना पड़ेगा। तिरस्कृत और असफल की तरह की वह समृद्ध साथियों के बीच संकोच एवं पश्चाताप की व्यथा सहता रहेगा। अभावग्रस्त तो रहेगा ही।

दूसरा यौवन मानसिक आता है। यह मरणोत्तर जीवन है। इसमें परलोक में स्वर्ग एवं मुक्ति का देवोपम सुख सम्मिलित है और ऊँचे साधन सम्पन्न माध्यम लेकर—जन्म, जाति, प्रतिभा के साथ जन्मना भी उसी यौवन के अन्तर्गत आता है। यह अदृश्य एवं अप्रत्यक्ष है, पर है इतना महत्त्वपूर्ण कि शारीरिक यौवन की समृद्धि एवं सफलता उसकी तुलना में नगण्य एवं अकिंचन ही ठहराई जायेगी। स्वर्ग में मिलने वाले अपार सुखों की तुलना में, जवानी के छुटपुट सुख-साधनों को क्या तुलना ? मुक्ति का आनन्द संसार की किसी भी सुविधा से असंख्य गुना अधिक है। सारे जीवन भर प्रयत्न करने पर भी साधारण मनुष्य इतनी प्रतिभा एकत्रित नहीं कर सकता, जितनी कि कोई-कोई तेजस्वी संस्कारी व्यक्ति जन्म से ही अपने साथ लेकर आते हैं। अद्भुत कुशाग्र बुद्धि, मनोरम सौन्दर्य, मधुर कंठ, उत्कृष्ट संस्कार, अद्भुत मनोबल, साधन-सम्पन्न घरों में जन्म आदि कितनी ही विशेषतायें ऐसी हैं, जो अनेक व्यक्तियों को जन्म से ही इतनी प्रचुर मात्रा में मिलती हैं कि उनके भाग्य को सराहना पड़ता है। यह अदृश्य यौवन जो मरण से लेकर नये जन्म की अवधि के बीच में आता है, निःसन्देह शारीरिक यौवन की अपेक्षा हजारों-लाखों गुना अधिक उत्कृष्ट एवं महत्त्वपूर्ण है। इसका आनन्द वे लोग उठाते हैं, जो वृद्धावस्था में उसके लिये आवश्यक तपश्चर्या कर लेते हैं। उन्होंने बुढ़ापा यों ही अस्त-व्यस्त ढंग से बिता दिया, उनके लिये यह अदृश्य यौवन प्रभाव और कष्टों से ही भरा रहता है। उन्हें नारकीय व्यथायें सहनी पड़ती हैं।

बालकपन को सुव्यवस्थित एवं सुविकसित बनाने के लिये चारों ओर बड़ी प्रबल चेष्टायें की जा रही हैं। स्कूल-कॉलिजों की स्थापना और शिक्षा-व्यवस्था के लिये बहुत कुछ किया जा रहा है, खेल-कूद के साधन प्रचुर परिणाम में जुटाये जा रहे हैं, मानसिक विकास के लिये अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम चल रहे हैं। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि बच्चों का अगला समय, यौवन अधिक उज्ज्वल बनाने के लिये आवश्यक ध्यान दिया जा रहा है। किन्तु खेद इसी बात का है कि वयोवृद्धों के भविष्य-निर्माण की दृष्टि से कहीं कुछ भी नहीं हो रहा जबकि उनकी संख्या भी लगभग बालकों के जितनी ही है। उनका भविष्य, उनका मरणोत्तर, यौवन—सच पूछा जाय तो बालकों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।

गृह-निवृत्त व्यक्ति यों सोचें, यों करें—

लगभग पचास-पचपन वर्ष की आयु में यह स्थिति आ जाती है कि बड़े लड़के अपनी शिक्षा पूरी करके आजीविका कमाने लगें। बड़े बच्चों पर यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वे अपने छोटे भाई-बहिनों का पुत्रवत् लालन-पालन शिक्षा और विवाह आदि का उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर उठावें। यदि वे यह भार नहीं उठाते तो समझना चाहिये कि वे माता-पिता के ऋण से उऋण नहीं होते। अपनी कमाई आप ही खाने और भाई-बहिनों की उपेक्षा करने का अर्थ यह है कि उनके बच्चे भी ऐसा ही करें और उनके बुढ़ापे को सार्थक बनाने में कुछ भी सहायता न करें।

सच्ची तीर्थ-यात्रा का पुण्य-फल—

प्राचीन-काल में तीर्थ इसी प्रयोजन के लिये थे। बुढ़ापे में लोग तीर्थ-यात्रा करने जाते थे। वहाँ वयोवृद्धों के लिये शिक्षा एवं साधना की आवश्यक व्यवस्था रहती थी, इसी के लिये लोग वहाँ जाते थे और देर तक वहाँ ठहरते थे। तीर्थों का सृजन ही वानप्रस्थों के लिये, गुरुकुलों एवं साधना संस्थानों की दृष्टि से किया गया था। आज तो सब कुछ उल्टा हो रहा है, तो तीर्थ का स्वरूप भी उल्टा क्यों न होगा ?

हमें एक महत्त्वपूर्ण कार्य, उन वयोवृद्धों के लिये ऐसे सजीव तीर्थों का सृजन करना है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जहाँ रहकर वे ब्रह्म-विद्या का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुये एक अवधि तक साधना संलग्न रह सकें। इस तीर्थ-यात्रा के बिना उनके संस्कार परिपक्व न होंगे। जो इच्छा उत्कण्ठा परमार्थ के लिये किसी अवसर पर उठी होगी, वह फिर पानी के बबूले की तरह बैठ जायेगी। भावनाओं की परिपक्वता के लिये कुछ ठोस प्रयत्न करना होता है। यह प्रयत्न कुछ समय घर से बाहर रहकर करना होगा, जहाँ जीवन के नये मोड़ में काम आने वाली क्षमता उत्पन्न की जा सके। लुप्त प्रायः तीर्थ-परिक्रमा को हमें पुनः साकार रूप देना होगा।

इस अभाव की पूर्ति की जाये—

अखण्ड-ज्योति परिवार के विवेकवान् वयोवृद्धों के लिये ऐसी सुविधा उत्पन्न करना हमारा कर्त्तव्य है। परिजनों में से प्रत्येक को यह प्रयत्न करना चाहिये कि इन पंक्तियों को उन सभी व्यक्तियों को पढ़ाने-सुनाने का प्रयत्न करें, जो पचास वर्ष की आयु पार कर चुके। उन्हें ढलती आयु के धर्म-कर्त्तव्यों का पालन करना ही चाहिये। पारमार्थिक जीवन में साहसपूर्वक प्रवेश करना ही चाहिये। यह प्रेरणा जितने अधिक वयोवृद्धों को दी जा सके उतना ही उत्तम है।

हम मथुरा से लेकर शान्तिकुंज एवं गायत्री शक्ति पीठों में ऐसा प्रबन्ध कर रहे हैं, जिसके अनुसार ऐसे वयोवृद्धों की, वानप्रस्थों की तीर्थ-यात्रा एवं साधना-शिक्षा का प्रयोजन पूरा हो सके। कहना न होगा कि मथुरा तीर्थ का अपना अनुपम स्थान है। 'तीन लोक से मथुरा न्यारी' की उक्ति निरर्थक नहीं, सार-गर्भित है। यहाँ की कुछ विशेषतायें हैं, जो इस भूमि में अनादि-काल से घुली चली आती हैं। यहाँ के निवास का अपना लाभ है। फिर गायत्री-तपोभूमि को संस्कारवान् सिद्ध पीठ बनाने के लिये तो पिछले कई वर्षों से इतना कुछ किया गया है कि यदि कोई नई जगह होती तो भी वह तीर्थ बन जाती। अखण्ड-अग्नि, नित्य-यज्ञ, २४०० तीर्थों का जल, १२३ अरब मन्त्रों की स्थापना, अब तक हुई साधना, तपश्चर्या, यज्ञाहुति आदि का प्रभाव ऐसा है, जिससे यहाँ निवास करने मात्र से बहुत कुछ कल्याण हो सकता है। यमुना तट पर बसी हुई वयह तपोभूमि—साधना एवं तपश्चर्या के लिये, शिक्षा और दीक्षा के लिये कितनी उपयुक्त है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। यही बात शान्तिकुंज के सम्बन्ध में है।

एक वर्षीय तपश्चर्या—

व्यवस्था यह की गई है कि यहाँ निवास करने वाले वयोवृद्धों के लिये साधना एवं शिक्षा का एक वर्षीय कार्यक्रम चला करे। एक वर्ष में सहस्रांशु गायत्री महापुरुश्चरण पूरा हो जाता है। यह एक बहुत बड़ी तपश्चर्या है। एक वर्ष तक इस तीर्थ भूमि में रहकर यह पुरुश्चरण किया जाये तो घर रहकर किये जाने वाले दस पुरश्चरणों से अधिक इसका प्रभाव होगा। इसी एक वर्ष की अवधि में एक चान्द्रायण व्रत कर लिया जायेगा। चन्द्रमा के हिसाब से भोजन घटाने-बढ़ाने का यह चन्द्रायण महाव्रत इस जीवन में बन पड़े तो यह पाप कर्मों का उचित प्रायश्चित है। इस प्रायश्चित से आत्मा में प्रत्यक्ष पवित्रता एवं सात्विकता का प्रकाश बढ़ते हुये परिलक्षित होना सुनिश्चित है। आत्मा की निर्मलता, साधना की सफलता को अधिक सम्भव एवं अधिक सरल बना देती है। एक वर्ष तक नित्य हवन करने का लाभ भी कुछ कम नहीं, उससे शरीर और मन पर चढ़े हुये रोग-शोक एवं कषाय-कल्मषों का शमन होगा ही। साधना में मार्ग-दर्शक का सान्निध्य आवश्यक होता है। गायत्री उपासना में मार्ग पर बढ़ते हुये जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उनका समाधान जितनी अच्छी तरह यहाँ रहने वाले का हो सकता है, उतना और कहीं नहीं। किस साधक के लिये किस प्रकार की साधना उपयुक्त है ? इसका निश्चय यहाँ रहने पर बहुत ही उत्तमता से हो सकता है। जिन्हें गायत्री साधना का कुछ वास्तविक लाभ देखना हो, उन्हें एक वर्ष इधर रहकर अपनी तपश्चर्या पूर्ण करने की बात सोचनी चाहिये।

साथ में ब्रह्म-विद्या की शिक्षा भी—

साधना के साथ-साथ ब्रह्म-विद्या का प्रशिक्षण भी अनिवार्य रूप से आवश्यक है। ज्ञान और कर्म का जोड़ा है। स्वाध्याय और साधना की अन्योन्याश्रय संगति है। ब्रह्म-विद्या का ज्ञान प्राप्त करना ही सच्चा सत्संग है। सच्चे सत्संग की आवश्यकता ऊट-पटांग बकवास से नहीं, वरन्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रमबद्ध शास्त्र अध्ययन से ही पूरी हो सकती है। इस एक वर्षीय वानप्रस्थ साधना में ब्रह्म-विद्या की शिक्षा को भी आधारभूत अंग बना दिया गया है।

ज्ञान का स्रोत वेद है। वेद समस्त प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का महानतम भाण्डागार है। जो इसमें है, वही संसार में है। जो इसमें नहीं, वह कहीं भी नहीं है। ऋषियों ने वेद-ज्ञान के आधार पर ही भारत को, विश्व का मुकुटमणि बनाया था। खेद है कि वह वेद-ज्ञान आज प्रायः लुप्त होता चला जा रहा है। इस सूर्य के अस्त हो जाने पर नाना प्रकार के पन्थ-पाखण्ड उल्लू और चमगादड़ों की तरह कुहराम मचा रहे हैं। ज्ञान के नाम पर अज्ञान फैला रहा है। सच्चा ज्ञान प्राप्त करना हो तो वेद का ही आश्रय लेना पड़ेगा। वानप्रस्थों के लिये ज्ञान के उद्गम वेद को ही पढ़ना सीखना चाहिये। एक वर्ष के इस साधना-काल में वेद का तत्वज्ञान और उसका रहस्योद्घाटन उपनिषदों के द्वारा पढ़ाया जायेगा। चारों वेदों और १०८ उपनिषदों का भाष्य करने के उपरान्त अब हमारे लिये यही उचित भी था कि ब्रह्म विद्या के इस तत्वज्ञान को व्यवहारिक रूप से सिखाने पढ़ाने का भी कार्य करें। सो यह प्रशिक्षण प्रक्रिया द्वारा होगा।

संस्कृत जानने वाले वेद को साहित्यिक ढंग से पढ़ सकते हैं। पर जो संस्कृत नहीं पढ़े हैं, उन्हें हिन्दी के माध्यम से भी भली-भाँति पढ़ाया जा सकेगा। किसी को यह आशंका न करनी चाहिये कि हमें संस्कृत नहीं आती इसलिये वेद कैसे पढ़ सकेंगे ? जो संस्कृत सीख सकते हैं, उन्हें संस्कृत भी पढ़ावेंगे। अन्यथा हिन्दी माध्यम से भी उसी प्रकार वेद का रहस्य सीखा समझा जा सकता है, जैसे कि संस्कृत के माध्यम से। जितना एक वर्ष में सम्भव है, उतना पढ़ा दिया जायेगा। जो अधिक दिन रहना चाहेंगे वे अधिक पढ़ सकेंगे।

प्रातः नित्यकर्म जप, हवन जल पान से निवृत्त होने पर वेद कथायें प्रातःकाल चला करेंगी। दोपहर को शिक्षार्थी अपना-अपना अथवा कई मिल जुलकर भोजन बनायेंगे खायेंगे और फिर विश्राम स्वाध्याय करेंगे। तीसरे पहर गीता, रामायण की कथा चला करेंगी। यों गीता रामायण का पाठ तो कई लोग करते हैं पर धर्म शास्त्रों के निचोड़ इन महाग्रन्थों का रहस्य कोई विरले ही जानते हैं। एक वर्ष में इन दोनों महाग्रन्थों का इस प्रकार शिक्षण किया जायेगा कि शिक्षार्थी भारतीय धर्म और संस्कृति के समूचे स्वरूप को इन दोनों ग्रन्थों के ही आधार पर पूरी तरह समझ लें। इस शिक्षण क्रम में विशेषतायें ही विशेषतायें भरी रहेंगी। सामान्य गीता, रामायण पाठ से यह प्रशिक्षण कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होगा।

आसन, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार, योग की अन्य क्रियायें, प्राकृतिक चिकित्सा आदि छुट-पुट शिक्षण क्रम साथ-साथ चलते रहेंगे।

वानप्रस्थों के लिये धर्म तन्त्र से भावी जीवन में समाज सेवा भी करनी है इसलिये उन्हें प्रवचन की कला, पर्व संस्कार, यज्ञ, कथा सामूहिक धर्मानुष्ठान आदि कर्मकाण्डों की भी अच्छी जानकारी इसी अवधि में करा दी जायेगी। व्यक्तिगत परामर्श एवं शंका समाधान के लिये समुचित स्थान रहेगा।

विधि व्यवस्था एवं रूपरेखा—

साधारणतया यह सोचा गया है कि वयोवृद्ध शिक्षार्थी एक वर्ष की शिक्षा और साधना पूरी करके अपने घरों को वापिस लौट जायेंगे और अपने परिवार की देखभाल करते हुये अपनी उपासना तथा लोक सेवा की साधना में निरत रहकर अपना तथा दूसरों का कल्याण करेंगे। इस मार्ग पर चलते हुये वे अपना भावी यौवन—मरणोत्तर जीवन तो आनन्दमय बनायेंगे ही, इस लोक में भी यश तथा पुण्य से सम्मिश्रित आत्म संतोष प्राप्त करेंगे।

जो आगे अधिक दिन या सदैव यहाँ रहना चाहेंगे, वे प्रसन्नतापूर्वक रह सकेंगे। स्थान इतना यहाँ है। भोजन आदि की व्यवस्था भी है, लेकिन जो स्वावलम्बी हैं, वे अपनी-अपनी स्थिति और सुविधा के अनुरूप सब अपना-अपना सस्ता महँगा प्रबन्ध करेंगे। जो अपनी धर्मपत्नी समेत रहना चाहेंगे वे भी रह सकेंगे। जिन्हें भोजन बनाना न आता होगा, उन्हें इस प्रकार दो-चार दिन में ही सिखा दिया जायेगा कि यह कार्य उन्हें एक खेल की तरह बहुत ही आसान प्रतीत होने लगे। जो अपनी शरीर यात्रा स्वयं चला सकने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में असमर्थ हैं, बीमार हैं, खाँसी या किसी छूत के रोग से ग्रसित हैं, उनका प्रवेश न हो सकेगा। शरीर से स्वस्थ और मन से श्रद्धालु होना आवश्यक है। उजड्ड, कटुभाषी, गन्दे, संकीर्ण, स्वार्थी, आलसी, प्रमादी प्रकृति के व्यक्तियों को भी नहीं लिया जायेगा। ऐसे व्यक्ति व्यवस्था और परम्परा बिगाड़ेंगे तो सारी योजना ही गड़बड़ हो जायेगी। सौम्य, सज्जन और सेवा-भावी ही स्थान पा सकेंगे।

ब्रह्मवर्चस और वानप्रस्थ

ब्रह्म वर्चस साधना सत्रों में उच्चस्तरीय साधना एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था व्यक्ति निर्माण तथा युग परिवर्तन के उच्चस्तरीय उत्तरदायित्व की पूर्ति के लिये की गयी है। उसे कम समय अथवा छुट-पुट प्रयासों से पूरा नहीं किया जा सकता। परिस्थितियों से तालमेल बिठाने के लिये उसे खण्डों में विभाजित तो किया जा सकता है, किन्तु उन्हें भी एक सीमा तक ही छोटा किया जा सकता है। उसकी न्यूनतम अवधि दो माह की रखी गयी है। उससे कम में प्रायश्चित, योग साधना, तपश्चर्या एवं प्रशिक्षण की धाराओं को समुचित महत्त्व दिया जाना सम्भव नहीं।

यों इन सत्रों में प्रवेश के लिये किसी भी वयस्क व्यक्ति पर प्रतिबन्ध नहीं है, किन्तु उसके लिये अधिक उपयुक्त वही रहेंगे, जिनके विचारों में प्रौढ़ता आ गयी है और साधना का जिन्हें पर्याप्त अनुभव है। साधना में थोड़ी ही देर में जिनका चित्त उचटने लगे, गम्भीर अध्ययन एवं चिन्तन से जो पल्ला बचाकर चलना चाहे, साधना काल में जिनका मन सांसारिक आकर्षण अथवा उत्तरदायित्वों की ओर भाग-भागकर जाये, उन्हें इस प्रक्रिया का समुचित लाभ मिलना शायद ही सम्भव हो।

वास्तव में इस स्तर की लोक मंगलपरक एवं आत्मोकर्ष की साधनायें वानप्रस्थों के लिये ही अनुकूल पड़ती हैं। साधना के लिये लम्बा समय लौकिक उत्तरदायित्वों से पूर्ण नहीं तो आंशिक मुक्ति के बिना इस दिशा में सुनिश्चित गति सम्भव नहीं। अस्तु ब्रह्मवर्चस् साधना को प्रकारान्तर से वानप्रस्थ साधना भी कह सकते हैं। आयु की शर्त छोड़ भी दी जाये तो भी मनःस्थिति तथा परिस्थितियों की दृष्टि से वानप्रस्थ स्तर के व्यक्ति ही इसके लिये अपेक्षित हैं।

इस सन्दर्भ में एक तथ्य और भी ध्यान रखने योग्य है, वह यह कि हर महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये घर का मोह छोड़ना पड़ता है। इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद को मक्का छोड़ कर मदीना जाना पड़ा। इस स्थान परित्याग को हिजरत कहा गया और उसी की स्मृति में हिजरी सन् चला। ईसा मसीह जरूसलेम छोड़कर अन्यत्र कार्य करते रहे। बुद्ध ने कपिलवस्तु छोड़ी, आद्य शंकराचार्य ने केरल, जैन धर्म के संस्थापक महावीर और सिक्ख धर्म के प्रणेता नानक अपनी जन्म भूमि में नहीं रहे थे। सन्तों की तरह अवतारों का कार्य क्षेत्र भी अन्यत्र ही रहा है। कृष्ण मथुरा में जन्मे, उज्जैन में पढ़े, इन्द्रप्रस्थ में रहे, कुरु क्षेत्र में लड़े, द्वारिका में बसे और वेराबल में स्वर्गधाम सिधारे। राम अयोध्या में जन्मे, विश्वामित्र आश्रम में पढ़े, वनवास में रहे और अन्ततः वानप्रस्थ की अवधि आने पर चारों भाई गुरु वशिष्ठ के समीप हिमालय पर रहकर साधना करते हुये ब्रह्म-लोक गये। वशिष्ठ जी का स्थान वशिष्ठ गुफा के रूप में अभी भी विद्यमान है। इस क्षेत्र में ही देव प्रयाग में राम, लक्ष्मण झूला में लक्ष्मण, ऋषिकेश में भरत, मुनी की रेती में शत्रुघ्न के तप कुटीर थे।

उपर्युक्त उदाहरणों से सिद्ध होता है कि लक्ष्य आत्मोकर्ष हो या लोक कल्याण, दोनों में ही व्यक्ति को स्थानीयता का मोह छोड़कर भिन्न क्षेत्र से सम्बन्ध जोड़ना पड़ता है। उपयुक्त वातावरण का लाभ उठाना अथवा सीमित छोड़कर व्यापक कार्यक्षेत्र पकड़ना इसके बिना सम्भव नहीं। इसीलिये वानप्रस्थों को घर छोड़कर रहने एवं परिव्राजक का क्रम अपनाने के लिये कहा जाता रहा है। इसी आधार पर भारतीय संस्कृति की कीर्ति पताका सारे विश्व में फहराई जा सकी थी।

अतीत का भारतीय गौरव प्रधानतया वानप्रस्थ परम्परा की आधारशिला पर खड़ा रहा है। पूर्वार्ध भौतिक प्रयोजनों के लिये और उत्तरार्ध अध्यात्म प्रयोजनों के लिये। जीवन सम्पदा का विभाजन अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। इससे लोक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और परलोक दोनों ही सधते हैं। इनमें व्यक्तित्व का—परिवार का और समाज का सुसंतुलित साधन होता है। भौतिक उत्तरदायित्व अधेड़ होने तक निपट जाने चाहिये तदुपरान्त आत्मा और परमात्मा के प्रति देश धर्म समाज और संस्कृति के प्रति जो महान जिम्मेदारियाँ मनुष्य के कन्धे पर रहती हैं, उन्हें पूर्ण करना चाहिये। इसी में स्वार्थ और परमार्थ की समन्वित पूर्ति होती है। यह जीवन लक्ष्य की प्राप्ति का उचित, सरल और मध्यम मार्ग है।

संचित कुसंस्कारों के निराकरण के लिये तपश्चर्या, आत्मिक विभूतियों के अभिवर्धन के लिये योगाभ्यास, तत्वदर्शन के लिये आत्मज्ञान की समन्वित साधना को देवत्व से भरा-पूरा त्रिवेणी संगम कहा गया है। उसका अवगाहन ही आत्मकल्याण और ईश्वर प्राप्ति का मार्ग है, उस पर चल पड़ना वानप्रस्थ स्थिति में ही समग्र रूप से बन पड़ता है। ज्ञान, कर्म और भक्ति का त्रिविध समागम ठीक इसी काल में होता है। त्रिपदा गायत्री की उच्चस्तरीय साधना तीसरेपन की इसी अवधि में ठीक तरह बन पड़ती है। बचपन का अल्हड़पन, जवानी का उन्माद, बुढ़ापे की विक्षिप्तता में अपने-अपने ढंग की विषमतायें छाई रहती हैं। साधना के लिये सन्तुलित वय वानप्रस्थ की ही है। जिस किसी ने आत्म समुद्र मन्थन से जो महत्त्वपूर्ण रत्न पाये हैं, उसमें वानप्रस्थ स्तर की साधना ही प्रमुख रही है।

आत्मकल्याण और लोक कल्याण के आधार पर ही आत्मा और परमात्मा का जीवन को सार्थक बनाने वाला संयुक्त वरदान मिलता है। कषाय-कल्मषों को निरस्त करने वाली तपश्चर्या इन्हीं दिनों ठीक तरह बन पड़ती है। प्राचीन काल में भारत भूमि को देवभूमि बनाने का श्रेय वानप्रस्थों को ही था। परिष्कृत प्रतिभा के धनी होने के कारण वे ही सच्चे और सफल लोक सेवियों की भूमिका निभाते थे। देश के कोने-कोने में, विश्व के क्षेत्र-क्षेत्र में सत्प्रवृत्तियों का आरोपण और अभिवर्धन करने में कुशल माली की तरह वे ही निरन्तर जुटे रहते थे। उन्हीं के श्रम पुरुषार्थ से शालीनता की परम्परायें फलती-फूलती थीं। उसी महक से यह विश्व उद्यान हरा-भरा, शोभा, सुषमा युक्त बना रहता था। असंख्यों निस्वार्थ एवं परिपक्व सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता इसी परम्परा द्वारा पूरी होती है। नर-रत्नों की कृषि करने और विभूतियों के भण्डार भर देने वाली यही खदान थी। आज वह प्रचलन धूमिल हो गया तो सब ओर अन्धेरा ही अन्धेरा छाया हुआ है। समय ने वानप्रस्थ परम्परा को पुनर्जीवित करने की माँग की है। मानवी संस्कृति की प्राण रक्षा के लिये संजीवनी बूटी का काम इसी नव-जागरण एवं पुनर्निधारण से सम्भव हो सकेगा।

उच्चस्तरीय निर्माण अल्प समय में सम्भव नहीं होता। आयुर्वेदिक औषधियों को देर तक घोंटकर एवं बार-बार पुटि देकर सशक्त बनाया जाता है। अस्तु भारतीय गौरव की पुनः स्थापना कर सकने योग्य प्रखर व्यक्तित्वों के निर्माण के लिये भी सामान्य की अपेक्षा अधिक समय लगाया जाना आवश्यक है। सामान्य दृष्टि से तीर्थ-यात्री २-४ दिन के लिये भी जाते हैं, पर विशेष लाभ पाने के इच्छुक दीर्घ प्रवास के लिये ही जाते रहे हैं।

काशी, अयोध्या, मथुरा आदि में निवास करने के लिये अभी भी कितने ही वृद्ध जन यह व्रत लेकर पहुँचते हैं कि वहाँ से फिर वापिस न लौटेंगे। बृज क्षेत्र में इन दिनों हजारों बंगाली इस संकल्प के साथ रह रहे हैं कि मरण पर्यन्त वे इसी पवित्र भूमि में रहेंगे और यहीं शरीर का त्याग करेंगे। 'काशी करवट' के सम्बन्ध में मान्यता है कि वृद्धावस्था में वहीं जाकर रहने और प्राण त्याग करने वाला शान्ति सद्गति पाता है। कई व्यक्ति जब मरणासन्न होते हैं, तब यह इच्छा व्यक्त करते हैं कि उनका शरीर त्याग उसी तीर्थ की पवित्र भूमि में सम्पन्न हो। जो नहीं जा पाते, उनके मृत शरीर की अस्थियाँ और भस्मी हरिद्वार, प्रयाग जैसे तीर्थों में प्रवाहित की जाती हैं। इस प्रचलन का एक मात्र कारण यही है, तीर्थों के वातावरण में जीवित या मृत शरीर का निवास जितने समय हो उतना ही उत्तम है। पुराणों में तीर्थ निवास का महात्म्य और प्रचलन असाधारण रूप में वर्णन किया गया है। कई बार तो लगता है कि यह अलंकारिक और अत्युक्ति पूर्ण है। स्कन्द पुराण में तो तीर्थ खण्ड के अन्तर्गत इस प्रकार के महात्म्यों की ही भरमार है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस प्रतिपादन पर तात्विक दृष्टि से विचार करने पर प्रतीत होता है कि तीर्थों में निवास करने की बात पर जोर देने का कुछ ठोस कारण है। यदि किसी भूमि, या नदी, पर्वत, मन्दिर आदि की ही महिमा गाई गई होती तो निश्चय ही वह अत्युक्ति पूर्ण कही जाती किन्तु तीर्थ का स्वरूप आज जो भी हो प्राचीन काल में अत्यन्त उच्चस्तरीय था। वहाँ श्रेष्ठ मनीषियों का निवास था। उनके आश्रम थे। उन आश्रमों में लोगों के लिये सद्ज्ञान शिक्षण और आत्मोत्कर्ष के साधनों का समुचित प्रबन्ध था। जो वहाँ आते, ठहरते थे वे पर्यटक नहीं होते थे वरन् मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने और आत्मिक प्रगति का आधार प्राप्त करने के लिये ही आते थे। उनका सोद्देश्य आगमन पूर्णतया सार्थक भी होता था।

गंगा के किनारे, हरिद्वार में ब्रह्मवर्चस आरण्यक की स्थापना के पीछे साधकों की इसी स्तर की उपलब्धियों को मूर्तरूप देने का लक्ष्य रखा गया है। उसके लिये आदर्श तीर्थवास अथवा शाश्वत ऋषि आश्रमों में निवास के स्तर से कम की व्यवस्था से काम नहीं चल सकता। ऋषियों ने जिस आधार पर भारत भूमि के निवासियों को 'देवता' स्तर का बनाया था, उसी आधार को पुनर्जागृत करना अभीष्ट है।

ऋषियों के जीवन यापन की—रहन-सहन, निवास, आचार-व्यवहार की शोध करने पर प्रतीत होता है कि उनमें से अधिकांश के विशालकाय आश्रम में से कुछ में गुरुकुल चलते थे, कुछ में आरण्यक। गुरुकुल ब्राह्मण वर्ग के ऋषि चलाते थे और आरण्यक तपस्वी स्तर के। गुरुकुलों में विद्यार्थी पढ़ते थे और आरण्यकों में वानप्रस्थी। बच्चों को गुरुकुलों में इसलिये नहीं भेजा जाता था कि वहाँ कुछ अतिरिक्त पढ़ाई होती थी वरन् वातावरण की विशेषता को ध्यान में रखकर ही विचारवान व्यक्ति अपने बालकों को वहाँ पढ़ने भेजते थे। यद्यपि सुख-सुविधा की दृष्टि से वहाँ कठिनाई ही रहती थी। कठिनाई की परिस्थिति में जीवन विकास का प्रशिक्षण होना, विज्ञजनों की दृष्टि में एक सौभाग्य है। दरिद्रता में पिछड़ेपन में कष्ट सहना एक बात है और आदर्शों के परिपालन की साधना के निमित्त तितीक्षा भरा जीवन यापन करना दूसरी। दरिद्रता के साथ जुड़ी हुई हीनता व्यक्तित्व को दबोचती है। किन्तु आदर्श पालन के साथ जुड़े हुये कष्ट सहन से प्रतिभा और प्रखरता निखारने का अवसर मिलता है। प्राचीन काल में गृहस्थ ब्राह्मणों के संचालकत्व में गुरुकुल चलते थे। बौद्धिक शिक्षण ऋषि करते थे और दुलारा भरी व्यवहार ऋषिकायें सिखाया करती थी। ऋषि उनकी चेतना जगाते थे ऋषिकायें उपयुक्त व्यवस्था बनातीं। दोनों के सहयोग से ऐसे गुरुकुल चलते थे, जिनमें पढ़ने के उपरान्त जो भी छात्र अपने घरों को लौटते थे, नर रत्न होते थे। उनमें महामानवों के सारे गुण भरे रहते थे। व्यवसाय की दृष्टि से वे जो भी करें, परिष्कृत व्यक्तित्व जुड़ा रहने के कारण वे सामान्य काम भी व्यक्ति और समाज की सुख शान्ति का सर्वतोमुखी अभिवर्धन करते थे।

गुरुकुलों में विद्यार्थी आरण्यकों में वानप्रस्थ रहते थे। प्रशिक्षण पद्धति की सार्थकता उन विद्यालयों के वातावरण के साथ जुड़ी रहती थी। वहाँ तपस्वी जीवन की, उच्चस्तरीय अध्यात्म की, शिक्षा व्यवस्था रहती थी। इसका संचालन उसी स्तर के ऋषि करते थे। आरण्यकों का वातावरण गुरुकुलों से इस आधार पर भिन्न रहता था कि दोनों प्रकार के शिक्षार्थियों के स्तर और उद्देश्य में भिन्नता होती थी। गुरुकुल के छात्रों को वयस्क होते ही जीवन संग्राम में उतरना था और आरण्यक के शिक्षार्थी परमार्थ की भूमिका में प्रवेश करते थे। स्वभावतः दोनों की शिक्षण प्रक्रिया एक-दूसरे से भिन्न रहती थी। तदनुसार व्यवस्था, परम्परा आदि में भी भिन्नता की रहना आवश्यक था। इतने पर भी दोनों प्रकार की शिक्षण संस्थाओं का उद्देश्य एक ही रहता था—व्यक्तित्व में देवत्व का अवतरण।

ब्रह्मवर्चस प्रशिक्षण को प्रकारान्तर से वानप्रस्थ प्रक्रिया की ही शिक्षा, साधना एवं व्यवस्था का समन्वय कहना चाहिये। प्रशिक्षण दो महीने का हो अथवा लम्बे समय का उसमें प्रातः तीन घण्टे योगाभ्यास एवं तपश्चर्या की साधना मध्याह्न तीन घण्टे ब्रह्म विद्या आत्म विज्ञान का स्वाध्याय सत्संग, सायंकाल तीन घण्टे लोकसेवा का प्रशिक्षण। यही तीनों क्रम निरन्तर चलते रहेंगे। गंगा की गोद, हिमालय की छाया एवं दिव्य चेतना का प्राण भरा अनुदान यही है। ये विशेषतायें हैं, जिनके आधार पर यहाँ का वातावरण ऐसा बन पड़ा है, जिसमें उच्चस्तरीय साधनाओं के सफल होने की पूरी-पूरी सम्भावना बनती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारे भावी कार्यक्रम जिन्हें सृजन सेना के सैनिक ही पूरा करेंगे

शिविर-संचालन, तीर्थयात्रा-संयोजन, कथा-प्रसंग, कीर्तन-प्रक्रिया, प्रकाश चित्र प्रदर्शन, सम्मेलन विचार-विमर्श, गोष्ठी, परिसंवाद, संगीत-समारोह, कविता-सम्मेलन आदि कार्यक्रम ऐसे हैं, जिनमें वाणी के माध्यम से जन-मानस में नवयुग के अनुरूप विचारणाओं को प्रतिष्ठापित किया जाता है। संस्कार, पर्व, जन्म-दिन, यज्ञानुष्ठान आदि कर्मकाण्डों की प्रक्रिया भी कम प्रेरक नहीं है। इनके माध्यम से धर्मोत्साह भरा वातावरण बनता है और उस अवसर पर जो कुछ शान्त-चित्त से कहा-सुना जाता है, वह सामान्य कहने-सुनने की अपेक्षा अधिक गहराई तक अन्तःकरण में उतरता है। धर्म-प्रचारकों की वाणी इन अथवा इन जैसे अन्य क्रिया-कलापों के माध्यम से मुखर होती है। जमे हुये कूड़े-करकट को साफ करके नवीन बीजारोपण के लिये भूमि परिष्कृत करती है।

लेखनी द्वारा भी ज्ञान-यज्ञ के, विचार-क्रान्ति के बीज बोये जा रहे हैं। वितरण की जाने वाली विज्ञप्तियाँ चिपकाये जाने वाले पोस्टर, झोला-पुस्तकालयों द्वारा पढ़ाये जाने वाले ट्रैक्ट, ज्ञान-रथों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया जाने वाला साहित्य इस प्रयोजन की पूर्ति में संलग्न है। 'अखण्ड ज्योति' तथा 'युग निर्माण योजना' पत्रिका विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होकर लाखों प्रबुद्ध व्यक्तियों के मस्तिष्क को झकझोरती हैं और उन्हें व्यक्ति तथा समाज की समस्याओं पर नये सिरे से विचार करने के लिये बाध्य करती हैं। दीवारों पर लिखे जाने वाले आदर्श-वाक्यों की प्रक्रिया ने करोड़ों मनुष्यों के मस्तिष्कों को युग-सन्देश से परिचित एवं प्रभावित किया है। मिशन के उद्देश्य, स्वरूप एवं क्रिया-कलाप की संसार के कोने-कोने तक जानकारी कराने के लिये लेखनी का माध्यम असाधारण रूप से प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। व्यक्तिगत 'पत्र-व्यवहार की अपनी एक अलग ही शैली है। उससे सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले लाखों व्यक्तियों से विचार-विमर्श होता रहता है, प्रेरणा-प्रवाह अनवरत् रूप से बहता रहता है। मिशन का पत्र-व्यवहार इतना बड़ा है कि दस कर्मचारियों वाला गायत्री-तपोभूमि पोस्ट-ऑफिस केवल 'युग निर्माण योजना' की डाक को कठिनाई से ही वहन कर पाता है। 'सप्त सरोवर हरिद्वार, पोस्ट-ऑफिस' में दो तिहाई डाक 'शान्ति कुंज' की ही आती जाती है। यह सब पत्र-व्यवहार किसी व्यावसायिक उद्देश्य से नहीं, मात्र आदर्शवादी प्रेरणाओं के लिये ही होता है।

वानप्रस्थों को प्रचलित लेखनी और वाणी द्वारा किये जा रहे पिछले क्रिया-कलाप को अधिकाधिक विस्तार से प्रयुक्त किया जाता है। जो कार्य मन्दगति से स्वल्प मात्रा में चल रहे थे, वे अब विशेष रूप से बढ़ जायेंगे। विशेष रूप से वाणी द्वारा प्रचार-कार्य और जन-सम्पर्क क्षेत्र उन्हीं के लिये सुरक्षित रखा गया है। प्रस्तुत योजना के अनुसार आशा की गई है कि 'अखण्ड ज्योति परिवार' में से पूरा समय देने वाले 'वरिष्ठ' और वर्ष में एक महीना देने वाले 'कनिष्ठ' वानप्रस्थ प्रायः बारह हजार तो आसानी से निकाले ही जा सकेंगे। इन सबका औसत समय एक-एक महीने ही लोक-मंगल में लगता रहेगा, ऐसा मान लिया जाये तो पूरा समय देकर काम करने वाले एक हजार सुयोग्य, भाव भरे एवं अवैतनिक लोक सेवियों की सृजन-सेना खड़ी हो जायेगी। यह जन शक्ति कार्य-विस्तार को देखते हुये निश्चय ही स्वल्प है, किन्तु आशा की जानी चाहिये 'तरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलेगा।' 'अखण्ड-ज्योति परिवार' द्वारा उस पुण्य-परम्परा का नेतृत्व आरम्भ कर देने पर पीछे अनेकों व्यक्ति आगे आवेंगे और आज जिस प्रकार वासना और तृष्णा के पीछे मनुष्य पागल है, कल उसी प्रकार उत्कृष्टता और आदर्शवादिता के विभूतिवान् कार्य करने के लिये उसी प्रकार तत्परतापूर्वक कटिबद्ध दिखाई पड़ेगा। वस्तुतः संसार के कोने-कोने में बिखरे हुये विभिन्न देश—धर्म जाति, संस्कृति एवं भाषाओं में बँटे हुये मानव-समाज को विविध प्रकार के प्रचार-माध्यमों से प्रभावित, परिवर्तित करना पड़ेगा। ४०० करोड़ व्यक्तियों को दिशा देने के लिये एक करोड़ धर्म-प्रचारक हों, तो भी कम ही पड़ेंगे। अपना साहस तो अभी एक हजार पूरा समय देने वाले वानप्रस्थों की आवश्यकता पूरी कर सकने जितना ही हुआ है। शुभारम्भ की दृष्टि से इतना कुछ कर सकना भी उत्साहवर्धक है।

प्रथम चरण के रूप में अभी प्रचार-प्रक्रिया पर जोर दिया जा रहा है, क्योंकि जन-मानस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को वर्तमान के साथ जुड़ी हुई कुत्साओं और कुण्ठाओं का दुष्परिणाम सोचने का अवसर इसी आधार पर तो मिलेगा। ज्ञान यज्ञ के आलोक से ही तो वह समझ सकेगा कि उसका आत्यन्तिक हित और परम कल्याण किस दिशा में सोचने और चलने से सम्भव हो सकेगा ? लाभ-हानि में क्या अन्तर है ? मित्र और शत्रु कौन है ? उचित और अनुचित किसे कहते हैं ? तनिक-सी क्रूरता के पीछे कालकूट विष तो छिपा नहीं बैठा है ? आदि प्रश्नों का उत्तर देने लायक जब मानव-मस्तिष्क हो जाये, तभी तो उसे कुछ करने और कराने की बात कही-बताई जा सकती है।

दूसरा चरण है, रचनात्मक क्रियाकलापों का अभिवर्धन। पेट और प्रजनन से भी आगे कुछ उपयोगी बातें हो सकती हैं, इसकी ओर सर्वसाधारण का ध्यान आकर्षित किया जाये और उन्हें मिल-जुलकर पूरा करने का अभ्यास लोक प्रवृत्ति में सम्मिलित किया जाये, इन्हीं प्रयत्नों का नाम रचनात्मक क्रियाकलाप है। आरोग्य संवर्धन के लिये व्यायामशालायें, सद्ज्ञान सम्पादन के लिये पुस्तकालय, वाचनालय, निरक्षरता निवारण के लिये प्रौढ़-पाठशालायें, व्यस्त लोगों के शिक्षा-विकास के लिये रात्रि-पाठशालायें, खाली समय में उपार्जन के लिये गृह उद्योग शालायें, उत्पादक प्रवृत्ति जगाने के लिये शाक-वाटिकायें, हरितिमा संवर्धन के लिय पुष्पगुल्मों का संवर्धन, शाकों की कृषि और वृक्षारोपण, गौ-पालन जैसी अनेकों सत्प्रवृत्तियाँ मिल-जुलकर जगह-जगह चलाई जा सकती हैं और उनसे प्रगति-पथ पर बढ़ने की दिशा में बहुत सहायता मिल सकती है। सहकारिता के आधार पर कितने ही उत्पादक एवं सुविधा संवर्धक उद्योग-व्यवसाय खड़े किये जा सकते हैं। मनुष्यों और पशुओं के मल-मूत्र का सदुपयोग करने की ओर ध्यान आकर्षित हो तो हमारे देहातों की जहाँ स्वच्छता और सुविधा बढ़े, वहाँ कृषि उत्पादन में भी आशाजनक अभिवृद्धि सामने आये। श्रमदान के लिये हर वयस्क व्यक्ति एक घण्टा समय निकाले और लोकोपयोगी निर्माण-कार्य में उसे लगाये तो सड़कें, बाँध, तालाब, कुए, पाठशाला, पुस्तकालय, पञ्चायत-घर, मन्दिर, बगीचे, पार्क क्रीड़ा प्रांगण आदि अनेक-अनेक उपयोगी निर्माण स्वल्प लागत में बन सकें और जो टूटे-फूटे हों, उनका जीर्णोद्धार हो सके। सार्वजनिक स्थानों की गन्दगी इसी श्रमदान से हटाई जा सकती है। एक-एक मुट्ठी अनाज या दस पैसा रचनात्मक कार्यों के लिये निकालते रहने से इस स्वल्प बचत से अनेकों स्थानीय सत्प्रवृत्तियों का संचालन हो सकता है। इस प्रकार जन-मानस का रुझाना अपने बल बूते अपनी आवश्यकताओं का स्वयं हल निकालने और उसके साधन स्वयं जुटाने के लिये मोड़ा जा सके तो आलस्य और व्यसनों में नष्ट होने वाला समय तथा धन अपनी धारा बदल सकता है और समृद्धि के लिये इतने अधिक साधन सामने लाकर खड़े कर सकता है, जिसके सामने अर्थ शास्त्रियों और राज-नेताओं की संवर्धन योजनायें बाल-विनोद जैसी मालूम पड़ने लगें।

हमारे धर्म-प्रचारक सर्वप्रथम विचारों की दिशा स्वार्थ भरी संकीर्णता से ऊँची उठाने का प्रयत्न करेंगे। इसके उपरान्त उस परिष्कृत मनोभूमि को तत्काल सृजनात्मक प्रयोजनों में जुटा देंगे। आत्म-निर्माण, परिवार-निर्माण और समाज-निर्माण के लिये हमें पग-पग पर अनेकों काम करने हैं। अभी हमने सृजन के सम्बन्ध में सोचा तक नहीं—उसे करने के लिये कभी साहस एकत्रित किया नहीं, जिस दिन यह ठान ठानी जायेगी कि हमें सर्वतोमुखी निर्माण करना है, उस दिन प्रतीत होगा कि हमने नये युग में प्रवेश कर लिया। सौभाग्य का सूर्य उदय हो चला और समृद्धि सम्पदा का वरदान अब-तब बरस पड़ने के लिये तत्पर होकर सिर पर आ गया।

स्वास्थ्य संवर्धन के लिये आहार-विहार का नये सिरे से निर्माण करना होगा। प्रकृति के विपरीत चलने का दुराग्रह छोड़कर सौम्य, सादगी और स्वाभाविक सात्विकता को अपनाना होगा—संयम, शीलता और नियमितता हमारी नीति होगी—बच्चों की संख्या बढ़ाने के स्थान पर उनका स्तर बढ़ाने में तत्पर होंगे। दाम्पत्य जीवन में रूप और कामुकता के विष बीज को उखाड़कर उसे दो सहचरों की सघन मान्यता के रूप में परिणत करेंगे।

रचनात्मक कार्यों से आगे का चरण है—संघर्ष। इसके लिये अधिक मजबूती, अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मचक्र प्रवर्तन एवं लोकमानस का शिक्षण ६.८२

साहसिकता, अधिक साधन और अधिक संगठित शक्ति चाहिये। युद्ध एक कला है, समय, शक्ति और साधनों को देखकर ही उसे आरम्भ करना चाहिये। उतावले लोग ऐसे ही असमय लड़ मरते हैं तो पिटते और हारते हैं। हमें व्यापक अनाचार के विरुद्ध सुविस्तृत और समर्थ मोर्चा खड़ा करना ही होगा। असुरता का दमन बिना जूझे हो ही नहीं सकता। रावण, कंस, दुर्योधन, हिरण्यकश्यप, सहस्रबाहु आदि को समझाने वालों ने सारे प्रयत्न कर लिये थे पर सफल केवल संघर्ष ही हुआ। हमें जिनसे लड़ना है उन अज्ञान, अनाचार और अभाव के असुरों का छद्मवेश बहुत ही विकराल है। वे न तो दीख पड़ते हैं और न सामने आते हैं। उनकी सत्ता भगवान की तरह व्यापक ही रही है। अज्ञान-ज्ञान की आड़ में छिपकर बैठा है, अनाचार को पकड़ना कठिन पड़ रहा है, अभावों का जो कारण समझा जाता है वस्तुतः उससे भिन्न ही होता है। ऐसी दशा में हमारी लड़ाई व्यक्तियों से नहीं-अनाचार से होगी। रोगियों को नहीं हम रोगों को मारेंगे। पत्ते तोड़ते फिरने की अपेक्षा जड़ पर कुठाराघात करेंगे।

भावी महाभारत अपने अलग ही युद्ध कौशल से लड़ा जायेगा। उसमें पिछले ढंग की रण-नीति काम न देगी। निहित स्वार्थों से इतने अधिक लोग ओत-प्रोत हो रहे हैं, उनने लोकप्रियता की रेशमी चादर ऐसी अच्छी तरह लपेट रखी है कि उन पर व्यक्तिगत रूप से आक्रमण करते न बन पड़ेगा। हम प्रवाहों से जूझेंगे, धाराओं को मोड़ेंगे और अनाचार का विरोध करेंगे। उसके समर्थन में जो लोग होंगे वे सहज ही लपेट में आ जायेंगे और औंधे मुँह गिर कर मरेंगे।

धर्म-ध्वजी साधु पण्डितों की आड़ में अन्ध-विश्वास, सामाजिक अनाचार छिपे बैठे हैं। वे पुरातनवाद का समर्थन करने के नाम पर मूढ़ताओं और अनीतियों का समर्थन, संरक्षण करते हैं। हम व्यक्तियों पर आक्षेप करने की अपेक्षा उन पाखण्डों की पोल खोलेंगे, जो भी उनका समर्थन करता होगा वह अपने आप जन-आक्रोश का शिकार बनेंगे और बेमौत मरेंगे। साहित्यकार बनकर जो सरस्वती से व्यभिचार कर रहे हैं, पशु प्रवृत्तियों को भड़का कर चाँदी बटोर रहे हैं, हम उनका नाम लिये बिना जनता को यह बतायेंगे कि इस अनाचार ने किस प्रकार जन-जीवन का सर्वनाश किया है, जो भी उस दुष्टता में संलग्न होंगे, उनका मुँह काला होगा। संगीत अभिनय, कला, चित्र और फिल्मों के सहारे जिनने पशु प्रवृत्तियाँ भड़का कर मनुष्य को पशुता के गर्त में धकेला है, उस सोना बटोरने वाली लिप्सा के विरुद्ध हम घृणा का अभियान छेड़ेंगे, फिर जो कोई इस कलंक कालिमा में हाथ धो रहे होंगे कलंकियों की पंक्ति में खड़े किये जायेंगे। आज इन लोगों को जनता की अज्ञानता का लाभ लेकर श्रेय सम्मान और धन वैभव दोनों हाथों से समेटने का अवसर है कल इन्हें सड़क पर चलना और भले लोगों की पंक्ति में सिर उठाकर चल सकना कठिन हो जायेगा। हम जन-आक्रोश का ऐसा वातावरण पैदा करेंगे, जहाँ भी छद्म बनकर अनाचार छिपता है उन सभी छिद्रों को बन्द करके रहेंगे।

व्यापारिक क्षेत्र में, सरकारी मशीनरी में, राजनेताओं में, चिकित्सकों में, शिक्षकों में यहाँ तक कि हर वर्ग में, हर व्यक्ति में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अनाचार की जड़ें अत्यन्त गहराई तक घुसती चली गई हैं। इनमें एक-एक को चुनना सम्भव नहीं, किसी का दोष सिद्ध करना भी कठिन है, ऐसी दशा में व्यक्तियों से नहीं धाराओं से हम लड़ेंगे। हर दुष्प्रवृत्ति का भण्डा-फोड़ करेंगे और वह ऐसा तीखा होगा कि सुनने वाले तिलमिला उठें और उनमें प्रवृत्त लोगों के लिये मुँह छिपाना कठिन हो जाये। जन आक्रोश ही इतने व्यापक भ्रष्टाचार से लड़ सकता है। हम उसी को उभारने में लगे हैं। समय ही बतायेगा कि हमारा संघर्ष कितना तीखा और कितना बाँका होगा। बौद्धिक क्रान्ति की नैतिक क्रान्ति की—सामाजिक क्रान्ति की दावानल इतनी प्रचण्डता पूर्वक उभारी जायेगी कि उसकी लपटें आकाश चूमने लगें। अज्ञान और अनाचार का कूड़ा-करकट उसमें जलकर ही रहेगा।

वानप्रस्थ मात्र प्रचार प्रयोजन के लिये ही आमन्त्रित नहीं किये गये हैं। प्रथम चरण में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थोड़ी सफलता मिलते ही जन-सम्पर्क को अधिक सघन और समर्थ बनाने के लिये वे रचनात्मक कार्यक्रमों का श्री गणेश करेंगे और इसके बाद उन्हें संघर्षात्मक क्रिया-कलापों में जुटना होगा। नव निर्माण का यह त्रिकोण मोर्चा है। तीनों पर एक साथ तो नहीं—एक स्थान पर थोड़े भर जमना दूसरे का सम्भालना यही हमारा रणकौशल है। यही अपनी क्रिया पद्धति है। उसकी सामयिक रूपरेखा समयानुसार बनाई जाती रहेगी और परिस्थितियों को—शक्ति को तथा साधनों को ध्यान में रखकर कार्यान्वित की जाती रहेगी। कार्य-क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है इसलिये थोड़े से कार्य-क्रम लेकर नहीं चला जा सकता। विशाल लक्ष्य को विशाल साधनों और विशाल माध्यमों के साथ ही पूरा किया जायेगा। सामयिक सूझ-बूझ को ही ऐसे महान प्रयोजनों में प्रश्रय देकर चलना पड़ता है।

हिन्दू समाज में धर्म-ध्वजियों द्वारा श्रद्धालु जनता के धन तथा विवेक का शोषण जाति-पांति और छुआ-छूत के नाम पर मनुष्य-मनुष्य के बीच का दुखदायी विभेद—नर-नारी के बीच अन्याय पूर्ण बड़प्पन और लघुता, विवाह शादियों में होने वाला अपव्यय आदि कितनी ही ऐसी सामाजिक दुष्प्रवृत्तियाँ घुस पड़ी हैं, जिन्हें हटाये बिना वह अपनी प्रखरता पुनः प्राप्त कर नहीं सकेगी। इसके बिना उसके लिये अपनी महान संस्कृति को विश्व-व्यापी बनाने का—मानव समाज का अध्यात्म धर्म में पुनः दीक्षित करने का अवसर मिलेगा ही नहीं। इन व्यवधानों से जूझने के लिये वानप्रस्थों की सृजन सेना को अग्रिम मोर्चे पर खड़ा किया जायेगा।

युग-निर्माण योजना का आरम्भ अखण्ड-ज्योति परिवार के सदस्यों से आरम्भ हुआ। पिछले दिनों हिन्दू समाज में, विशेषतया भारतवर्ष में उसे सुविस्तृत होने का अवसर मिला। पर अब यह अभियान उस सीमा में सीमाबद्ध नहीं रहा। उसने विश्वव्यापी रूप ग्रहण कर लिया है। सभी धर्म, सभी संस्कृतियाँ, सभी देश, सभी भाषायें अब उसके कार्य-क्षेत्र की परिधि के अन्तर्गत हैं। भारत से बाहर प्रायः ४५ देशों में लगभग ३ करोड़ हिन्दू बसे हैं। यह पैंतालीस देश ऐसे हैं, जहाँ उनकी संख्या हजारों से लेकर लाखों तक में हैं। जिनमें सौ से लेकर हजार तक की संख्या है उनकी संख्या भी लगभग इतनी ही होती है। अपना प्रयास यह है कि हिन्दू धर्मानुयायी प्रायः सभी भारतीय मूल के लोगों तक सांस्कृतिक पोषण पहुँचाया जाता रहे ताकि वे अपनी भाषा और संस्कृति को भूल न बैठें। इस दिशा में सुव्यवस्थित योजना के साथ कार्य आरंम्भ भी कर दिया गया है। थोड़ी जड़ें मजबूत हो जाने पर उन देशों के निवासियों में भी भारतीय धर्म का प्रवेश और विस्तार उसी तरह कराया जाना है, जिस तरह इसाई मिशनरी भारत तथा अन्य देशों में अपना सांस्कृतिक विस्तार करते हैं।

वानप्रस्थों को भारत के हिन्दू धर्म के निजी क्षेत्र में लोक-निर्माण का अभ्यास कराया जा रहा है। वस्तुतः यह उनका अनुभव वृद्धि और अभ्यास का शिक्षण काल है। जो उसमें खरे उतरेंगे और परिपक्व सिद्ध होंगे, उन्हें विदेशों में भी भेजा जायेगा। आज संसार भर में अध्यात्म धर्म की प्यास है। भौतिकता के उन्माद से उत्पन्न दुष्परिणामों को मनुष्य जाति ने देख लिया है अब उसे उस स्नेह सिक्त शान्ति की प्यास है जिसे भारत द्वारा संसार भर में चिरकाल तक अमृत वर्षा की तरह बरसाया जाता है। भारतीय तत्वज्ञान ही भविष्य में विश्व का दर्शन एवं धर्म होने जा रहा है। उसका प्रकाश सर्वत्र फैलाया जाना है। इसलिये अपना कार्य-क्षेत्र समस्त संसार होगा और हमारे वानप्रस्थों को उसी तरह डेरे डालकर सुदूर देशों में पड़ना होगा जैसे ईसाई धर्म के पादरी सुदूर देशों में जा बसते हैं। बौद्ध धर्म का विस्तार भी जीवट वाले प्रचारकों ने इसी दुस्साहस को अपनाते हुये किया था। अपने वानप्रस्थों को भी उसी राह का अवलम्बन करना होगा।

हिन्दू धर्म से आगे बढ़कर ईसाई धर्म, मुसलमान धर्म, बौद्ध धर्म, यहूदी धर्म, पारसी धर्म आदि संसार के प्रमुख धर्मों को भी अपने महान मिशन के लिये उपयोग किया जाना है, यह कैसा होगा इसे अगले दिनों हम सब प्रत्यक्ष रूप से देखेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वार्थ और परमार्थ की समन्वित साधना

समय की माँग को पूरा करने के लिये अखण्ड-ज्योति परिवार के प्रबुद्ध सदस्यों को आगे आना चाहिये और इस संकट काल में अपने पवित्र कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिये साहस भरे कदम आगे बढ़ाने चाहिये। धर्म और अध्यात्म के सहारे ही भावनात्मक नव-निर्माण की समस्या का समाधान होगा और उसी के बलबूते बहुमुखी विपत्तियों के घटाटोप का निवारण होगा। जन-मानस का स्तर ऊँचा उठाने के लिये वाणी और लेखनी का प्रायः प्रयोग किया जाता है। शास्त्रों की संरचना और कथा सत्संगों का आयोजन तमसाछन्न मनः स्थिति में प्रकाश उत्पन्न करने के लिये होता रहा है पर यह भी एक तथ्य ही है कि उन माध्यमों को बहुमूल्य सूतीक्ष्ण अस्त्र भर माना जा सकता है, जिन्हें चलाने के लिये क्रिया-कुशल और समर्थ साहसी योद्धा चाहिये। मात्र-शस्त्र संचय से ही तो बात नहीं बनती। चलाने वाले प्रशिक्षित शूरवीर भी तो चाहिये। वानप्रस्थ परम्परा को पुनर्जीवित इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिये किया जा रहा है।

अपना कार्यक्षेत्र अब भारत तक—हिन्दू धर्म तक सीमित नहीं है। वरन् संसार के समस्त धर्मों और समस्त देशों तक अभियान को अग्रसर होना है। भगवान बुद्ध के, तप-त्यागों ने और अशोक, कनिष्क, हर्षवर्धन के अनुदान ने किसी समय समस्त विश्व में धर्म-चक्र प्रवर्तन का तो प्रयास किया था—सर्वथा साधन रहित होने पर भी हमें वही प्रयास करना है—उसी मार्ग पर चलना है। मानवी गरिमा को हम गिरने न देंगे। ग्वालबालों की तरह लाठी का सहारा देकर गोवर्धन पर्वत उठाने में योगदान देंगे और कुपित इन्द्र का मनोरथ पूरा न होने देंगे। साधन हीन रीछ-वानर जब अपनी नन्हीं-सी जानें लेकर दुर्दान्त लंकाधिपति के सामने तन कर खड़े हो गये थे तो हमी इन अग्नि परीक्षा के दिनों में लोभ-मोह के पाश में बँधे हुये सड़ी-गली जिन्दगी के लिये ललचाते हुये क्यों मरते खपते रहेंगे। आदर्शों की दिशा में बहुत कुछ कर सकना व्यस्त और सन्त्रस्त लोगों के लिये भी सम्भव हो सकता है। जो भावना नर-कीटकों की महामानवों में बदलती हैं, उसका प्रकाश बहुत समय से अपने अन्तःकरणों में टिमटिमा रहा है अब उसके प्रकट होने का समय आया तो पीछे कौन हटेगा ? अग्रगामी जत्थे अगले ही दिनों सामने प्रस्तुत खड़े दिखाई देंगे, ऐसा विश्वास किया जा सकता है।

जिन-परिवारों में ऐसे अग्रगामी लोग कुछ कदम बढ़ाने का साहस कर रहे हों, उन्हें अपने को सब प्रकार सौभाग्यशाली मानना चाहिये। इसमें किसी को—किसी भी प्रकार की अपनी हानि नहीं सोचनी है। घाटा पड़ेगा तो केवल कायरता और संकीर्णता की ही कुछ घटोतरी होगी बाकी तो सब कुछ बढ़ने ही बढ़ने वाला है।

कांग्रेस आन्दोलन में जिन्होंने कदम बढ़ाये वे या तो चिरस्मरणीय महामानवों में गिने जाते रहेंगे या फिर प्रतिष्ठा, पद पेन्शन पाते रहेंगे। दोनों ही दशाओं में दूसरे सामान्य लोगों की तुलना में ऊँचे ही रहे, उन्हें आत्म सन्तोष और आत्म-गौरव का लाभ तो निश्चित रूप से मिला ही। इनके साहस ने भारत माता को पराधीनता के पाश से छुड़ाया। जन-साधारण के मन में चिरकाल तक उनके प्रति कृतज्ञता और श्रद्धा बनी रहेगी कीट-पतंगों की तरह सड़ते-कटते रहने की अपेक्षा क्या यह सत्साहस भरी उपलब्धि कुछ कम महत्त्व की है। क्या स्वार्थों को सुरक्षित बनाकर बैठे रहने वाले चतुर लोगों की तुलना में कुछ घाटे में रहे ? इन साहसी लोगों ने क्या खोया ? और उन कृपणों ने क्या पाया ? इसका यदि विचारपूर्ण लेखा-जोखा लिया जाये तो प्रतीत होगा कि जो अपने को चतुर समझते रहे वस्तुतः वे ही वज्र मूर्ख थे।

उन्हीं पुरानी परिस्थितियों की पुनरावृत्ति आज फिर सामने आ खड़ी हुई है। उन दिनों राजनैतिक स्वाधीनता का प्रश्न था आज हमें बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक स्वाधीनता के तीन मोर्चों पर लड़ना पड़ेगा इसलिये तीन गुने साहस एवं तप त्याग की जरूरत पड़ेगी। गान्धीजी ७६ सत्याग्रही सैनिकों की सेना ले साबरमती आश्रम से धरसाना से नमक बनाने चले थे। आरम्भ छोटा था पर उसका अन्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारत की मिली स्वाधीनता के रूप में सामने आया। अखण्ड-ज्योति परिवार की सत्याग्रही सेना आगे चलेगी तो पीछे अगणित कदम उठते हुये दिखाई देंगे और उस अभियान का अन्त धरती पर स्वर्ग के अवतरण एवं मनुष्य से देवत्व के उदय के रूप में ही सामने आवेगा। इस श्रेय को हमें शिरोधार्य करना ही चाहिये। समय के उत्तरदायित्वों का हमें स्वागत करना ही चाहिये। मोहग्रस्त अर्जुन की तरह हमें अनार्य जुष्ट और अस्वर्ग व्यामोह से ऊपर उठना ही चाहिये।

विशुद्ध भौतिक दृष्टि से भी विचार करें तो भी यह कोई घाटे का सौदा नहीं। आदर्शवादिता के मार्ग पर चलने वाले किसी भी व्यक्ति ने कभी कुछ खोया नहीं है। भूतकाल में ऐसे भी कठिन प्रसंग आते थे, जब लोग अपने प्राणों तक की बाजी लगाते थे और उसमें भी अक्षय स्वर्ग और अक्षय कीर्ति का लाभ ढूँढ़ निकालते थे, पर अब तो ऐसी कोई बात नहीं है। कहीं लड़ने-मरने या जान-जोखिम पड़ने की कोई योजना नहीं है। मात्र आदर्श जीवन जीने और लोक-मंगल के लिये कुछ समय देते रहने भर की तनिक-सी बात है। इसमें घर परिवार वालों को कुछ असुविधा और धन उपार्जन में थोड़ी बाधा उत्पन्न होती दिखाई दे सकती है, पर यदि दूर दृष्टि से सोचा जाये तो ये दोनों आशंकायें सर्वथा निर्मूल दिखाई पड़ेंगी।

आदर्श जीवन जीने की संजीवनी-विद्या का प्रशिक्षण एवं अभ्यास वानप्रस्थ जीवन का प्रथम सोपान है, जो उसे अपनायेगा उसका स्वयं का जीवन संयमी और व्यवस्थित बनेगा। ऐसी दशा में उसका आरोग्य भी बढ़ना है और दीर्घ जीवन का पक्ष प्रशस्त भी होता है। आहार-बिहार की अस्त-व्यस्तता से ही तो लोग बीमार पड़ते और असमय मरते हैं। संयमी जीवन अक्षय स्वास्थ्य का बीमा है। प्रकृति का अनुसरण करके सृष्टि के अन्य प्राणी आयु पूरी होने पर मरते तो हैं पर बीमार नहीं पड़ते। यदि आरोग्य रक्षा का पथ प्रशस्त होता है तो आये दिन कष्ट भुगतने, घर वालों को परेशान करने, दवा-दारू में पैसा नष्ट होने जैसी अनेक कठिनाईयों का समाधान मिल सकता है। इस प्रकार वानप्रस्थ अवधि में लगा हुआ समय प्रकारान्तर से घाटे का नहीं नफे का ही तो काम हुआ।

चिन्तन में निकृष्टता का समावेश रहने से ही लोग व्यसनी और अपव्ययी बनते हैं। दुष्प्रवृत्तियाँ, बुरी आदतें, पैसा भी नष्ट करती हैं और समय भी। उत्कृष्ट चिन्तन को कूट-कूट कर मनःक्षेत्र में भरने वाली वानप्रस्थ शिक्षा उन सब भ्रष्ट अस्त-व्यस्तताओं की जड़ काट देती है। सुधरी हुई प्रकृति का मनुष्य अपने लिये और समस्त परिवार के लिये अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी सिद्ध होता है। यह स्पष्ट है।

प्राचीनकाल में छोटे-छोटे अबोध बच्चों को गुरुकुलों में ऋषियों के पास प्रसन्नतापूर्वक माता-पिता भेजते रहते थे, उन्हें इस बात की आशंका नहीं होती थी कि बाबाजी के साथ रह कर हमारा बालक भी बाबाजी बन जायेगा। तीर्थ यात्रा के दिनों में भी गृहस्थ लोग आत्मज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने सन्तों के पास रहते थे पर किसी को यह भय नहीं होता था कि वहाँ उसे चेला मूँड़कर भिखारी बना दिया जायेगा पर आज की स्थिति विचित्र है। किसी सद्गृहस्थ को यह मंजूर नहीं कि उसके बच्चे या बड़े किसी बाबाजी से घनिष्टता बढ़ायें क्योंकि यह बात शीशे की तरह स्पष्ट है कि इन भ्रान्त विचारों में उलझें हुये सनकी लोगों के पास बैठने वाला भाग्यवाद, अकर्मण्यता, अनुत्तरदायित्व, नशेबाजी जैसी बुरी बातें ही छूत की बीमारी की तरह लेकर आवेगा। जहाँ जो चीज होगी वहाँ से वही तो मिलेगी। बाबाजी के पास बैठने वाला उसी स्तर का बनेगा। यह सोचकर हर सद्गृहस्थ यह पसन्द करता है कि बाबाजी से उसका परिवार दूर रहे। अन्यथा अपना आदमी बेकार हो जायेगा।

यह आशंका ६६ प्रतिशत सही है पर शत प्रतिशत नहीं। युग-निर्माण योजना, प्राचीन ऋषि परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करती है, उसके सम्पर्क में आकर बाल, वृद्ध, तरुण, अधेड़, नर-नारी किसी का भी अहित नहीं हो सकता। किसी को अवांछनीय दिशा नहीं मिल सकती। जब उसका संचालक बाबाजी नहीं बना—एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सद्गृहस्थ के रूप में आजीवन अपनी स्थिति बनाये रहा तो उसके सम्पर्क में आकर कोई बाबाजी बन जायेगा ऐसी आशंका नहीं की जानी चाहिये। वस्तुतः इस सम्पर्क में हर किसी के व्यक्तित्व का निखार ही हुआ है और उस निखार से उसके घर परिवार को हर प्रकार से लाभ ही पहुँचा है। गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कृत होना ऐसा लाभ है, जिसके साथ आध्यात्मिक ही नहीं भौतिक लाभ भी जुड़े हुये हैं। इन लोगों में पारिवारिक, हर्षोल्लास, प्रेम, सौजन्य से लेकर आर्थिक सुसन्तुलन तक की वे सभी उत्साहवर्धक उपलब्धियाँ सम्मिलित हैं, जो किसी सद्गृहस्थ को सुखी-समुन्नत बना सकती हैं। वानप्रस्थ प्रशिक्षण इस प्रकार के अगणित लाभों से ओत-प्रोत हैं। उसमें जाने से रोकना अपने ही पैरों कुल्हाड़ी मारने, अपने ही लाभ को आप अवरुद्ध करने के समान अबुद्धिमत्तापूर्ण और अदूरदर्शितापूर्ण ही सिद्ध होगा।

आर्थिक दृष्टि से हर मितव्ययी, अधिक परिश्रमी, अधिक सतर्क व्यक्ति, सदा लाभ में रहता है। उसके प्रति सद्भाव और श्रद्धा रखने वालों की संख्या बढ़ती है, फलतः उनके माध्यम से आर्थिक प्रगति के अनेक द्वार खुलते हैं। आजकल वकील और डाक्टर दौड़-दौड़ कर सार्वजनिक संस्थाओं में इसलिये भी प्रवेश करते हैं कि उनका जन-सम्पर्क बढ़े, उन्हें आदर्शवादी समझा जाय, फलतः सम्बन्धित लोग उनके व्यवसाय से भी सम्बन्ध रखें। सचमुच होता भी यही है। अपने मतलब से मतलब रखने वाले नीरस लोग न तो लोकप्रिय हो पाते हैं और न उनका व्यवसाय चमकता है। नौकरी पेशा लोगों के मालिक लोग भी यह पसन्द करते हैं कि उसके अधीनस्थ लोकप्रिय रहें और उनकी कठिनाइयों के समाधान एवं सम्वर्धन में योगदान करें। लेवर यूनियनों के पदाधिकारियों से उनके बड़े अफसर अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने में ही लाभ सोचते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि लोकसेवा के मार्ग में कुछ कदम बढ़ाना यदि आर्थिक दृष्टि से भी देखा जाये तो कुछ घाटे का काम नहीं है। कई लोकसेवी आर्थिक हानियाँ उठाते रहते हैं, उनकी सेवा साधना कारण नहीं होती वरन् अस्त-व्यस्तता और गैर जिम्मेदारी ही प्रधान रूप से उस प्रकार की अड़चनें खड़ी करती है। सतर्क मनुष्य पूरी सावधानी से अपना कारोबार चलाते हैं और पूरी तत्परता से लोक-सेवा करते हैं। दोनों पक्षों में से किसी में भी कोई हानि नहीं होने देते। असावधानी से होने वाली हानि को लोग लोक-सेवा के सिर मढ़ते रहते हैं। इस भूल के कारण ही यह भ्रम फैला है कि जो सेवा क्षेत्र में उतरेगा वह अपनी अर्थ व्यवस्था चौपट करेगा। वस्तुतः ऐसी बात है नहीं।

सारा वजन अपने ही कन्धों पर लादे फिरने की अपेक्षा यह अच्छा है कि घर के दूसरे लोगों को भी पारिवारिक एवं व्यावसायिक अनुभव प्राप्त करने एवं उत्तरदायित्व सम्भालने का अवसर दिया जाये। इससे उनकी सूझ-बूझ एवं प्रतिभा में निखार आता है। इस लाभ को आरम्भिक भूल के कारण होने वाली थोड़ी हानि के रूप में चुकाना पड़े तो भी उठाना चाहिये। ईश्वर न करे कदाचित् असाध्य रुग्णता आ घेरे, साँस पूरी हो जाये तो पीछे वालों को अपंग असहाय की स्थिति में रहना पड़े। इसके लिये प्रत्येक विचारशील को सचेष्ट रहना चाहिये। मार्गदर्शन अपना रखा जाये सो ठीक है पर काम अपने उत्तराधिकारियों को भी करने देना चाहिये। उन्हें साहसी, सतर्क, जिम्मेदार एवं सूझ-बूझ वाला बनाने की दृष्टि से भी यह उचित है कि कुछ समय उन्हें कुछ करने और सम्भालने का अवसर मिलता रहे। यह प्रशिक्षण पीछे वालों के हित में ही पड़ता है। जो पूरा बोझ अपने ही कन्धों पर लादे रहते हैं, वे पीछे वालों को अपंग, अनुभवहीन बना कर उनके साथ अन्याय ही करते हैं। कनिष्ठ वानप्रस्थ-प्रशिक्षण में आने-जाने वाले लोग अपने परिवार का भी हित साधन ही करते हैं। जिस कार्य में अपना-अपने समाज का हित है, उसमें भला परिवार का हित जुड़ा हुआ क्यों न होगा।

वानप्रस्थ शिक्षा, व्यक्तित्व के विकास का अभ्यास निकटवर्ती वातावरण में रहकर करने का प्रयोग सिखाती है। स्त्री, बच्चे, माता-पिता, बहिन-भाई के साथ आवश्यक कर्त्तव्यों का पूरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तरह पालन करने के लिये उसमें बहुत कुछ सिखाया जाता है। बच्चों को अनाथ छोड़कर भाग देने की नहीं वरन् उन्हें अधिक सुसंस्कृत, समुन्नत बनाने के लिये गहरे स्नेह में उन्हें ढालने के लिये अथक प्रयत्न करने की बात को लोक-सेवा का आवश्यक अंग कहा जाता है और उसके लिये उपयुक्त मार्ग बनाया जाता है। ऐसी दशा में यही आशा की जानी चाहिये कि प्रशिक्षित वानप्रस्थ अपने स्त्री-बच्चों के लिये, परिवार के अन्य सदस्यों के लिये पहले की अपेक्षा कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध होंगे। उनके प्रति अपने कर्त्तव्यों का अधिक तत्परता के साथ पालन करेंगे। इस प्रशिक्षण में किसी परिवार को घाटे की अथवा अहित की आशंका नहीं करनी चाहिये। भौतिक एवं सांसारिक दृष्टि से भी उसे नफ़े में ही रहना है।

इन तथ्यों को यदि हम लोग अपने परिवार के सदस्यों को शान्तचित्त और सही रूप से समझा सकें तो यह कठिनाई उपस्थित न होगी कि घर के लोग अपना अहित सोचें और संकट की आशंका करें। उनकी चिन्ता का मूल कारण साधु-बाबाओं की वर्तमान स्थिति ही है। उनका सन्देह-निस्सन्देह चिन्ता और आशंका का विषय है पर नव-निर्माण अभियान की वानप्रस्थ योजना में कोई ऐसा तत्व नहीं है, जो किसी परिवार की सुव्यवस्था में किसी भी प्रकार से बाधक बनता हो। सच तो यह है कि उसके कारण प्रगति और सुख-शान्ति की अनेक सम्भावनाओं का पथ प्रशस्त होता है।

पत्नियाँ यह आशंका कर सकती हैं कि उनके पति सदा ब्रह्मचर्य से रहने लगेंगे और पारिवारिक आकर्षण घट जायेगा। यहाँ यह बात भी स्पष्ट करने जैसी है कि ब्रह्मचर्य की शर्त वानप्रस्थ अवधि के सेवाकाल तक ही सीमित रखी गई है। सदा के लिये वैसा प्रतिबन्ध नहीं है। हाँ—सन्तानोत्पादन में विवेक रखने की बात पर बल अवश्य दिया जाता है और यह बहुधन्धी एवं समाज सेवी दोनों के लिये ही आज की स्थिति में समान रूप से समझदारी की बात है।

हर सद्भावना सम्पन्न परिवार को अपना गौरव इसमें समझना चाहिये कि उसका एक सदस्य नव-निर्माण प्रयोजन में संलग्न रहकर उस कुल का गौरव बढ़ाता रहे। पिछली चीन और पाकिस्तान की लड़ाई के समय अनेक परिवारों ने अपना एक सदस्य युद्ध सैनिक के रूप में प्रदान करने का संकल्प लिया था। गान्धी और बुद्ध को भी अनेक परिवारों से एक-एक सदस्य मिला था। ऐसा उस कुटुम्ब ने पारस्परिक विचार विनिमय से ही स्वेच्छापूर्वक निर्णय किया था। प्राचीन समय में, युद्ध काल में मातायें अपने पुत्रों को और पत्नियाँ पतियों को, बहिन भाईयों को देश-रक्षा के लिये तिलक लगाकर आरती उतारकर विदा करती थीं ? उस आदर्शवादिता का यदि हमारे परिवारों से सर्वथा लोप हो गया तो समझना चाहिये कि वहाँ पारिवारिक स्नेह सद्भाव के बीज भी नष्ट हो जायेंगे। आदर्शवाद की अवहेलना करने के बाद निकृष्ट स्तर की स्वार्थपरता ही शेष रह जाती है, यदि इसी को छाती से चिपकाकर रखा गया तो हमारे घरों में विग्रह और विद्वेष के नरक के अतिरिक्त और कुछ शेष न रहेगा। आज घर-परिवारों में जो विषाक्त मनो-मालिन्य दीख रहा है, उसका कारण उसमें आरम्भ से ही पनपने वाली आदर्शों की उपेक्षा ही तो रही है। इसका निराकरण किये बिना हमारे परिवार नर-रत्नों की खान न बन सकेंगे। वानप्रस्थ परम्परा की आदर्शवादिता का आरम्भ करके वस्तुतः हम अपने समस्त परिवार को ऐसी प्रेरणा देते हैं, जिसे अपनाकर सारा कुटुम्ब, स्नेह-सौजन्य के सूत्र में बँधा रह सकता है और एक-दूसरे के लिये बहुत कुछ कर गुजरने के अरमानों से भरा रह सकता है। वस्तुतः परिवारों की सच्ची सुख समृद्धि ऐसी ही आदर्शवादिता प्रतिष्ठापना के द्वारा सम्भव हो सकती है। वानप्रस्थ में प्रवेश करके कोई अपने घर परिवार के लिये किसी प्रकार का घाटा या संकट उत्पन्न नहीं करता वरन् उसकी सर्वतोमुखी प्रगति का बीजारोपण ही करता है। इस तथ्य को जितनी अच्छी तरह, जितनी गहराई से, जितनी जल्दी, समझ लिया जाय उतना ही उत्तम है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतना तो व्यस्त और विवश होते हुये भी कर सकते हैं

जिनके पास अभीष्ट योग्यता, भावना और सुविधा हो उन्हें इस आपत्तिकाल में मानवता की पुकार सुनकर आगे आना चाहिये और लोभ-मोह की कीचड़ में सड़ते रहने की अपेक्षा उस आदर्शवादी महानता का वरण करना चाहिये जिसे किसी समय इस देश के प्रत्येक नागरिक द्वारा सहज स्वभाव अपनाया जाता था। परिस्थितियाँ, मनोभूमि और प्रवाह प्रचलन बदल जाने से अब इस प्रकार के कदम बढ़ाना दुस्साहस जैसे प्रतीत होता है। किसी समय, जिसमें इतनी भी जीवट न हो, उसे मृतक तुल्य माना जाता था। आज की परिस्थितियों में जो लोग वरिष्ठ अथवा कनिष्ठ वानप्रस्थ का मार्ग अपना सकेंगे विश्व-मानव और विश्व शान्ति के लिये अपना थोड़ा बहुत भी योगदान दे सकेंगे, वे बड़भागी माने जायेंगे। इस घोर अन्धकार में उन छोटे दीपकों का साहस भी भूरि-भूरि सराहने योग्य माना जायेगा।

सम्भवतः इस आह्वान को प्रत्येक जीवित और जागृत आत्मा द्वारा सुनने योग्य माना जायेगा। सम्भवतः बहुतों की आन्तरिक आकांक्षा इस दिशा में कदम बढ़ाने की होगी भी किन्तु यह सम्भव है कि वे ऐसी विषम परिस्थितियों में जकड़े हुये हों कि व्यवहारतः कुछ अधिक कर सकना उनके लिये सम्भव न हो। विधि की विडम्बना विचित्र है। कुछ की परिस्थितियाँ बहुत कुछ करने योग्य होती हैं पर मन इतना गिरा मरा होता है कि आदर्शों की तरह बढ़ने की इच्छा तक नहीं उठती। इसके विपरीत कुछ ऐसे भी होते हैं कि जिनका अन्तरात्मा महामानवों के चरण-चिह्नों पर चलते हुये कुछ कर गुजरने के लिये निरन्तर छटपटाता रहता है पर परिस्थितियाँ इतनी विपरीत होती हैं कि उन्हें लाँघ सकना किसी जिम्मेदार एवं कर्त्तव्य परायण व्यक्ति के लिये सम्भव ही नहीं होता वरन् उन्हें मन मसोस कर बैठना पड़ता है।

मिशन के लिये भी यह सम्भव नहीं कि वानप्रस्थ कार्यकर्त्ताओं के घर परिवार का आर्थिक उत्तरदायित्व वहन कर सके। अधिक से अधिक इतना ही सम्भव है कि कार्यकर्त्ताओं के भोजन-वस्त्र की व्यवस्था जुटाई जाती रहे। ऐसी दशा में जिन्हें घर से बाहर जाकर कार्य-क्षेत्र में कूदने की सुविधा नहीं है उन्हें स्थानीय क्षेत्र में ही प्रकाश फैलाने का प्रयत्न करना चाहिये। सक्रिय सदस्यों और कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को भी सृजन-सेना के द्वितीय मोर्चे पर लड़ने वाले सैनिक माना जाता है। नियमित रूप से कुछ घण्टे अथवा समय दे सकने वाले और अपनी आजीविका का उपयुक्त अंश इस प्रयोजन के लिये लगाने वाले व्यक्ति भी अपने क्षेत्र में इतना काम कर सकते हैं, जिसे अति-महत्त्वपूर्ण कहकर सराहा जा सके।

घर-परिवार के उत्तरदायित्वों को निबाहा जाये, साथ ही आत्मा-परमात्मा और समाज के प्रति कर्त्तव्यों का भी ध्यान रखा जाये तो अपनी क्षमताओं का सन्तुलित विभाजन किया जा सकता है। समय भी बच सकता है। साधारणतया आजीविका उपार्जन के लिये आठ घण्टे पर्याप्त होने चाहिये। सात घण्टे का आराम-विश्राम पर्याप्त है। पाँच घण्टे नित्य कर्म के लिये तथा अन्य आवश्यक कामों के लिये पर्याप्त होने चाहिये। बीस घण्टा घर-परिवार में यदि मुस्तैदी और मनोयोग के साथ लगाये जा सकें तो व्यस्त समझे जाने वाले व्यक्ति भी इतने समय में अपना सारा काम फुर्ती और चुस्ती के साथ पूरा कर सकते हैं। घिस-घिस करते हुये आलस्य और प्रमाद में वक्त खराब करते रहें तो दिन ४८ घण्टे का होने लगे तो भी काम नहीं निपटेगा अन्यथा २० घण्टे हर दृष्टि से घरेलू कामों के लिये पर्याप्त हो सकते हैं।

शेष चार घण्टे बच जाते हैं उन्हें परमार्थ प्रयोजन के सर्वश्रेष्ठ माध्यम नव-निर्माण कार्यक्रमों में लगाया जा सकता है। कोई अकेला व्यक्ति ही इतने समय में चल पुस्तकालय का ज्ञान-रथ चलाता रह सकता है—यह नित्य कितने ही व्यक्तियों को ज्ञानदान से लाभान्वित करता रह सकता है। ऐसे अनेकों प्रचारात्मक, रचनात्मक और संघर्षात्मक कार्यक्रम हैं, जिन्हें अपनी क्षमता, योग्यता और सुविधा के अनुसार हर व्यक्ति चुन सकता है और उस परमार्थ के लिये निकाले हुये समय का उनमें उपयोग कर सकता है। इन, समय दान देने वालों को भी दूसरी पंक्ति का वानप्रस्थ ही कहा जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दस पैसा ज्ञानघट में जमा करना और उसका सत्साहित्य मँगा कर अपने क्षेत्र में फैलाना प्रारम्भिक सदस्य की न्यूनतम त्याग परीक्षा थी। जिनमें उच्चस्तरीय भावनाओं का जागरण हो चुका है, इन्हें इतने स्वल्प अनुदान से सन्तोष न करके कुछ अधिक उदारता दिखाने की हिम्मत करनी चाहिये। घर के सदस्यों में एक सदस्य नव निर्माण मिशन को भी मानना चाहिये। मान लीजिये अभी अपने परिवार में पाँच सदस्य हैं, एक और बच्चा हो जाये तो उसे मार तो नहीं डालेंगे—घर से निकाल तो नहीं देंगे। प्रस्तुत आर्थिक-तंगी के बीच ही उसके लिये भी भोजन, वस्त्र, शिक्षा, चिकित्सा, विवाह-शादी आदि का प्रबन्ध करना पड़ेगा। यदि यही बात मिशन के बारे में सोच ली जाये, उसे भी घर-परिवार का एक सदस्य मान लिया, तो आजीविका का उतना अंश उसके लिये भी निकाला जा सकता है, जितना कि घर के एक व्यक्ति के ऊपर खर्च होता है। यह छटवाँ-सातवाँ अंश माना जाय तो सप्ताह में एक दिन की कमाई उसके निमित्त लगाई जा सकती है। इतना न बन पड़े तो महीने में एक दिन की आमदनी खर्च करते रहने में कृपणता पर अंकुश लगाने के अतिरिक्त और किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न न होगा। किसी अन्य कम महत्त्व के काम में कमी करके इस अनुदान का सन्तुलन बिठाया जा सकता है।

कल्पना की उड़ानें-उड़ने और बातों के बताशे बाँटते रहने से कुछ काम बनने वाला नहीं है, हमें यथार्थवादी होना चाहिये। जहाँ लगन होगी—तड़पन होगी, वहाँ कुछ कर गुजरने की आकांक्षा भी प्रबल रहेगी। आदर्शों का परिपालन तप, त्याग के बिना सम्भव नहीं। समय और श्रम देकर तप-साधना का और अपनी कमाई का अंश दान देकर पुण्य-परमार्थ का प्रयोजन पूरा किया जा सकता है। हमें कर्मवीर होना चाहिये। हमारे विचार का क्रिया में परिणत होना चाहिये। आदर्शवादिता को त्याग-बलिदान का जामा पहनना चाहिये। उसे नंगी उघारी रखकर उपहासास्पद नहीं बनाना चाहिये। कृपणता पर अंकुश लगाये बिना महानता के पथ पर कैसे चला जा सकता है ? त्याग और बलिदान से डरते रहते रहें तो जीवन-लक्ष्य की पूर्ति के लिये ऊँचा कैसे उठा जा सकता है। वानप्रस्थ अग्रिम पंक्ति में खड़े हों तो उसकी दूसरी पंक्ति भी तो मजबूत होनी चाहिये। सेना को रसद और बारूद की सप्लाई न हो तो शूरवीर योद्धा भी कब तक किस तरह लड़ सकेंगे। अगले दिनों हर शाखा में—हर कार्य क्षेत्र में विविध-विधि प्रचारात्मक, रचनात्मक और संघर्षात्मक कार्यक्रमों का उभार आना है, उसके लिये सहयोगियों के श्रम की तथा अभीष्ट साधनों की आवश्यकता बार-बार पड़ती रहेगी। इसे कहाँ से जुटाया जाये ? स्पष्ट है कि भ्रष्टाचारी समाज से हमें लड़ना है—उससे तो शत्रुता ही बनेगी। निहित स्वार्थ की मनमानी पर आघात पहुँचाने हम चले हैं तो उनसे सहयोग की आशा कैसे की जा सकती है ? वे तो हर कार्य में रोड़े उत्पन्न करेंगे। श्रम और धन तो हमें अपने पेट पर पट्टी बाँधकर अथवा समय बचाकर ही पूरी करना होगा। इन दोनों साधनों को अधिकाधिक मात्रा में जुटाने के लिये हमें अपनी भावना और तत्परता को आगे लाना चाहिये। पूरी तरह जो आगे नहीं आ सकते वे कठिन परिस्थितियों में रहकर इतना कुछ तो कर ही सकते हैं।

थोड़े-से पेन्शन पाने वाले या घर के सम्पन्न लोग ही वानप्रस्थ बनने के उपरान्त अपना खर्च आप चला सकेंगे। शेष के लिये भोजन, वस्त्र आदि का प्रबन्ध तो जुटाना ही पड़ेगा। यह भी एक बड़ा काम और एक बड़ा खर्च है। पिछले जमाने में भिक्षा माँग कर निर्वाह चल जाता था पर अब वह प्रथा न तो सम्मान की दृष्टि से उपयुक्त पड़ती है न परिस्थितियाँ ही वैसी हैं। साधु-ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा जनता देती थी, वह भी हमारे वानप्रस्थों को कौन देगा ? उनके शिक्षण काल में—प्रवास में—निर्वाह में—खर्च पड़ेगा ही। इसकी पूर्ति उन उदार एवं भावनाशील लोगों को करनी चाहिये, जो स्वयं आगे आने की स्थिति में तो नहीं हैं पर सहयोग तो किसी न किसी प्रकार कर ही सकते हैं।

आह्वान / आमन्त्रण और अनुरोध

आशा की जानी चाहिये कि वसन्त पर्व से आरम्भ होने वाले इस नये वर्ष में अखण्ड-ज्योति के परिजन नव-निर्माण की दिशा में कुछ अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर गुजरने के लिये साहस भरे कदम बढ़ायेंगे। जिनकी स्थिति वरिष्ठ अथवा कनिष्ठ वानप्रस्थ के लिये उपयुक्त होगी वे उसके लिये साहसपूर्वक कदम बढ़ायेंगे। जिनकी स्थिति वैसी नहीं वे पिछले पृष्ठ पर छपे—"इतना तो व्यस्त और विवश होते हुये भी किया जा सकता है।" अनुरोध के अनुरूप कुछ न कुछ करने का प्रयत्न करेंगे। सक्रिय सदस्य और कर्मठ कार्यकर्त्ता यदि अधिक तत्परता और लगन के साथ अपनी गतिविधियाँ तीव्र कर दें तभी मिशन के महान प्रयोजनों की पूर्ति की दिशा में आशाजनक प्रगति हो सकती है। बसन्त पर्व से लेकर होली तक के ४० दिनों में हममें से प्रत्येक को इस दिशा में अधिक विचार मन्थन और अधिक सक्रिय प्रयास करना चाहिये।

वानप्रस्थ प्रशिक्षण के लिये शान्ति-कुंज में आवश्यक व्यवस्था जुटा ली गई ली गई है २० जनवरी से प्रथम सत्र आरम्भ हो जायेगा। जिन्हें इस दिशा में उत्साह हो उन्हें निम्नलिखित प्रश्नों का विस्तारपूर्वक उत्तर देते हुये अपना आवेदन पत्र भेजना चाहिये।

(१) आयु, (२) शिक्षा, (३) जाति (४) व्यवसाय, (५) शरीर में कोई रोग हो या अभाव हो तो उसका पूरा विवरण, (६) परिवार के सदस्यों का विवरण और उनकी आयु (७) शिक्षण काल में घर परिवार और कारोबार की व्यवस्था कैसे चलेगी ? (८) वरिष्ठ वानप्रस्थ में प्रवेश करना है या कनिष्ठ में, (९) अब तक के जीवन क्रम के घटना क्रम का वर्णन, (१०) पत्र व्यवहार का पूरा पता। जिनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति उपयुक्त न हो उन्हें नहीं आना चाहिये। पत्नी बच्चों समेत भी नहीं आना है, व्यसनी, क्रोधी, सनकी, आवेशग्रस्त, क्रूर अहंकारी तथा अनुशासनहीन प्रकृति के लोग भी न आवें। वानप्रस्थ में प्रवेश करना उन्हीं के लिये उपयुक्त है, जिनमें दूसरों के लिये मार्गदर्शक बनने की क्षमता है। शान्त-एकान्त में रहने और भजन-ध्यान करते हुये मौत के दिन पूरे करने के इच्छुकों के लिये यह योजना उपयुक्त न पड़ेगी। इसी प्रकार तुर्त-फुर्त चमत्कारी जादू-मन्त्रों की सिद्धियाँ सीखने के लिये लालायित लोगों को भी निराश होना पड़ेगा। इसमें तो भावनाशील, कर्मठ, सौम्य स्वभाव एवं क्रान्तिकारी ही खपेंगे। अस्तु उन्हीं के आवेदन-पत्र आने चाहिये। प्रार्थना पत्रों पर विचार करके ही यह बताया जा सकेगा कि किन्हें किस महीने के प्रशिक्षण में आना है, बिना स्वीकृति पत्र पाये किसी को भी नहीं आना चाहिये।

अखण्ड-ज्योति परिवार के प्रत्येक परिजन को इस योजना में अपने को पूरी तरह सम्बद्ध रखना चाहिये, उसे यह मानकर चलना चाहिये कि संचालकों एवं संरक्षकों में से ही एक वह भी है। इस अंक को बहुत ध्यान से दो बार पढ़ना चाहिये और यह देखना चाहिये कि योजना में कहाँ त्रुटि है, उसमें सुधार की—परिवर्तन, परिवर्धन की कहाँ क्या गुंजायश है ? ऐसे परामर्श, विस्तारपूर्वक भेजने चाहिये और सम्भव हो तो यह भी लिखना चाहिये कि मिशन के इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कदम में उसका अपना क्या योगदान होगा, इसे सफल बनाने के लिये वह किस प्रकार क्या प्रयत्न करेगा ?

ऐसे परामर्श प्रत्येक परिजन से माँगे जा रहे हैं। उनके आधार पर कार्य-पद्धति को और भी अधिक परिष्कृत एवं सुव्यवस्थित बनाने में योगदान मिलेगा। अस्तु फरवरी में अपनी प्रतिक्रिया सभी पाठकों को शान्तिकुंज सप्तसरोवर हरिद्वार के पते पर भेज देनी चाहिये।

नारी उत्कर्ष के लिये महिला वानप्रस्थों की आवश्यकता

आमतौर से यह समझा जाता है कि वानप्रस्थ—सन्यास आदि माध्यमों का अवलम्बन लेकर परमार्थ जीवन में प्रवेश करने का अधिकार केवल पुरुषों को ही है, महिलाओं को घर गृहस्थी के काम ही सँभालने चाहिये। परिवार के उत्तरदायित्वों से निवृत्ति मिलने की स्थिति होने पर भी उन्हें घर में ही रहना चाहिये। अधिक से अधिक यह सोचा जा सकता है कि यदि पति वानप्रस्थ ग्रहण करे तो उसकी सेवा-सहायता के लिये वह भी साथ जा सकती है। इन्हीं मान्यताओं का प्रचलन रहने के कारण अपने देश में परमार्थ परायण महिलाओं की संख्या अत्यन्त स्वल्प ही दृष्टिगोचर होती है। फिर कहीं कोई है भी तो उनका कार्यक्षेत्र किसी कुटी आश्रम तक सीमित रह रहा होगा—परिव्राजक जीवन बिताने की रीति-नीति अपनाने का साहस कोई बिरली ही कर पा रही होंगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस स्थिति को बदला जाना चाहिये और वातावरण ऐसा उत्पन्न किया जाना चाहिये, कि उत्तरदायित्वों से निवृत्त महिलाओं को भी विश्व मानव के पुनरुत्थान अभियान में उत्साहपूर्वक नियोजित किया जा सके।

सर्वविदित है कि सामान्यतया समस्त संसार में और विशेषतया भारतवर्ष में नारी को, मानवी अधिकार की दृष्टि से दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है। उसकी गणना पुरुष की उपयोग सामग्री में की जाती है। प्रारम्भ से लेकर अन्त तक उसे बाधित-प्रतिबन्धित स्थिति में कारागृह के कैदी की तरह पुरुष की दया पर आश्रित रहकर जीवन यापन करना पड़ता है। प्रजनन का अतिरिक्त उत्तदायित्व उसे ही वहन करना पड़ता है, शिशु-पोषण का भार उसी पर पड़ता है—इस स्थिति में वह उपार्जन की क्षमता खो बैठती है। पुरुष उसे रोटी देता है, इसके बदले में वह उस पर इतने अमानवीय प्रतिबन्ध लगाता है, जो पशुओं से भी गये बीते होते हैं।

पशु वर्ग में मुँह पर घूँघट डालने का—स्पष्ट शब्दों के साथ मुँह न खोल सकने का प्रतिबन्ध कहाँ है ? पर मनुष्य समाज में वैसी प्रथा प्रचलित है और उसे कुलीनता का चिह्न माना जाता है। व्यभिचार की बात लें तो पुरुष को उस सन्दर्भ में खुली छूट है पर यदि नारी से कभी कोई ऐसा कदम उठ जाये तो उसकी खैर नहीं। परित्याग क्रिये बिना या प्राण लिये बिना पति को—सुसराल वालों को—चैन ही नहीं। दोष अकेली नारी को ठहराया जाता है, मानो पुरुष पर तो उस तरह का कोई प्रतिबन्ध था ही नहीं। पाप, दोष और दण्ड की भागिनी तो अकेली नारी ही है। विवाह की आचार संहिता में भी ऐसे ही जमीन आसमान जैसे अन्तर रखे गये हैं। पुरुष कई विवाह कई बच्चों के रहते हुये भी कर सकता है पर नारी इस प्रकार के अधिकारों से वंचित है। विधुर और विधवा के लिये विवाह की आचार संहिता एक जैसी कहाँ है ?

नारी को सुसज्जा एवं शृंगार की अनुगामिनी बनाने के लिये पुरुष की कामुक, कुचेष्टा ही उत्तरदायी हैं। चूंकि उसे रमणी और कामिनी का कलेवर अधिकाधिक आकर्षक एवं उत्तेजक चाहिये इसलिये नारी को ऐसे मनोवैज्ञानिक जाल-जंजाल में फँसा दिया गया है कि वह पुरुष की इच्छापूर्ति के लिये कठपुतली का अभिनय स्वेच्छापूर्वक करने लगे। नारी की प्रशंसा उसके यौवन और सजधज के साथ जोड़ दी गई है। ऐसी दशा में उसे अपनी मनःस्थिति ऐसी ही ढालनी पड़ी है ताकि वह अधिकाधिक आकर्षक दीखने लगे। इसमें कितनी करुणाजनक विवशता और पराश्रियता दृष्टिगोचर होती है। बेचारी कितनी परमुखापेक्षी हो गई इसे देखकर रुलाई आती है। यदि—शृंगारिकता आवश्यक ही थी तो पुरुषों को भी वैसी ही टीपटाप भरी चित्र-विचित्र स्थिति में रहना चाहिये था। उसकी केश सज्जा—हाथों में मेंहदी, शिर पर बिन्दी मांग में सिन्दूर और पैर में बिछुए—होठों पर लाली आँखों में काजल लगाकर ही घर से बहर निकलना चाहिये था। सुसज्जा और शृंगारिकता यदि अच्छी बात है तो नारी की तरह वह भी उसे क्यों न अपनाये ?

बाध्य सन्तानोत्पादन ने नारी के स्वास्थ्य को कितना जर्जरित करके रख दिया है—प्रसव में कितनी बड़ी संख्या में आये दिन मक्खी-मच्छरों की तरह प्राण गँवाती हैं इस प्रथा प्रचलन में आये हुये हत्याकाण्ड को देखकर छाती फटती है। रुग्ण नारी को भी बख्शा नहीं जाता कि वह जो कष्ट सह रही है, उसे ही वहन करने से छुटकारा मिलने तक वह प्रजनन के अतिरिक्त कष्ट से बची रह सके। उसकी विवशता दुहरा त्रास सहने के लिये बाध्य करती है और अन्ततः अकाल मृत्यु की गोद में जाकर ही उसे पुरुष के अत्याचार से छुट्टी मिलती है।

लम्बा-चौड़ा दहेज देने की स्थिति पिता की न हो—लड़की उर्वशी से कम रंग-रूप वाली हो—काली-कुरूप हो तो उसे रद्दी नीलामी माल की तरह हर जगह दुरदुराया जाता है। बेचारी को पग-पग पर अपमानित होना पड़ता है। ऐसी लड़कियाँ आजीवन कुमारी रहती—बूढ़ों के गले मढ़ी जाती—आत्म-हत्या करती और ऐसी ही किन्हीं दर्दनाक स्थिति में पड़ी पाई जाती हैं। लड़कों को तो रूप की प्यास है। चमड़े का रंग और नख-शिख का बनाव यदि वेश्या नर्तकियों से मिलता-जुलता हो तो ही वह वर महोदय की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आँखों में चढ़ेगी अन्यथा विवाह के दिन से लेकर मौत के दिन तक उसे पग-पग पर अपमान और उपेक्षा की लाठियों से ही पीटा जाता रहेगा। कुत्ते की तरह रोटी के टुकड़े किसी प्रकार मिलते रहें तो बात दूसरी है। ऐसी घटनाओं की संख्या कम नहीं जिसमें कुरूप बधू से पिण्ड छुड़ाकर सुन्दर नई नवेली लाने के लिये उस बेचारी के प्राण हरण कर लिये गये। सुसराल के वातावरण में बधू अकेली पड़ती है—वहाँ उसका कोई अपना नहीं होता, ऐसी दशा में उसकी जान ले लेने के अनेक मन्द एवं तीव्र तरीकों में से कोई भी आसानी से अपना लिया जाता है। पिता विवाहित लड़की को घर रखने में अपनी बेइज्जती समझता है, सुसराल में उसकी आवश्यकता नहीं—ऐसी दशा में बाधित मरण ही उस दयनीय स्थिति से छूटने का रास्ता रह जाय तो इसे कितनी मर्मवेधी स्थिति कहा जायेगा। गोदी में आये बच्चों के पालन का कोई आश्रय न देखकर नारी को आजीवन अनवरत् पददलित स्थिति शिरोधार्य करने के लिये बाध्य होना पड़े तो इसे परिस्थितियों पर पिशाच का खूनी पंजों वाला साम्राज्य छाया हुआ ही माना जा सकता है।

ऐसे ही अनेक कुचक्रों में चिर अतीत से पिसती चली आ रही नारी को भी नवयुग से न्याय पाने की आशा करनी चाहिये। उसके साथ बरते जाने वाले निर्मम शोषण का अन्त होना चाहिये। प्रगति के द्वार उसके लिये भी खुलने चाहिये। मानवी अधिकार की प्रकाश किरणें उस तक भी पहुँचनी चाहिये। यह कार्य अनायास ही सम्पन्न नहीं हो सकता। अनीति से त्राण किसी देश या समाज को ऐसे ही अपने आप मिल गया हो ऐसा कहाँ हुआ है ? कब हुआ है ? जो अनीति, प्रथा परम्परा बनकर औचित्यों की संज्ञा तक जा पहुँचती है, उसकी जड़ें उखाड़ना कितना कठिन पड़ता है, इस तथ्य को सहज ही समझा जा सकता है। इसके लिये प्रचारात्मक और संघर्षात्मक विविध मोर्चे खड़े करने पड़ते हैं। नारी के पुनरुत्थान में उससे कहीं अधिक बड़े और गहरे प्रयास करने पड़ेंगे जैसे कि राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये समय-समय पर करने पड़े हैं।

नारी को न्याय मिले—उसे अनीति उत्पीड़न से राहत मिले—मानवी अधिकारों का वह भी उपभोग कर सके इसके लिये सदियों पुरानी मूढ़ताओं और दुष्टताओं से लोहा लेना पड़ेगा। नारी को इस योग्य बनाना पड़ेगा कि वह अपनी दयनीय स्थिति को समझ सके और उससे त्राण पाने के लिये आकुलता जागृत कर सके। इसके लिये आरम्भिक कदम नारी शिक्षा ही हो सकती है। ऐसी शिक्षा जो न केवल अक्षर ज्ञान कराके उसे नौकरी-चाकरी कर सकने लायक ही बना भर दे वरन् उसे अपनी आत्मा और स्थिति का भी स्मरण दिला सके। कुछ कर गुजरने की हिम्मत और दिशा प्रदान कर सके। इसके लिये कितना कुछ करने के लिये आकाश जैसा विशालकाय कार्यक्षेत्र सामने पड़ा है, पर उसे संभाल सकें ऐसे देव-मानवों का सब ओर घोर अभाव ही दीख रहा है।

नारी सेवा के नाम पर उन्हें कटाई-सिलाई सिखा देने की उद्योगशालायें जहाँ-तहाँ खुलती दिखाई पड़ती हैं। मानो नारी को दुःख एकमात्र रोटी न मिलने की ही हो। इसी प्रकार शिक्षाशालायें भी यहीं तक अपना कर्त्तव्य पूरा कर लेती हैं कि लड़कियाँ उपाधि धारी बनकर अच्छा घर-वार पा सकें या आवश्यकतानुसार नौकरी कर सकें। इस अधूरी शिक्षा से उनकी दयनीय सामाजिक दुर्दशा का अन्त कहाँ हुआ ? पेट भरने को तो पहले भी विधवायें चक्की, चरखा आदि का आश्रय लेकर गुजारा कर लेती थीं। अब भी रोटी बनाने, बर्तन माँजने का धन्धा अपनाकर अशिक्षित होने पर भी गुजारा कर सकती हैं। प्रश्न गुजारे का नहीं—उनकी आत्मा को जगाने का—सामाजिक अत्याचारों से मुक्ति दिलाने का है। इस युग का असली नारी शिक्षा का प्रयोजन यही होना चाहिये और उसके लिये प्रौढ़ पाठशालायें, नारी चल-पुस्तकालय, विचारगोष्ठियाँ, सुधारवादी महिला संगठन, महिला जागरण का साहित्य प्रकाशन, चित्र प्रदर्शनियाँ आदि की विशाल शृंखला चलनी चाहिये। कढ़ाई, बुनाई सिखाने के स्कूल पर्याप्त नहीं।

ऐसे अर्थ-तन्त्र खड़े होने चाहिये, जो निराश्रित नारी द्वारा उत्पादन कराये और उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खरीद-विक्रय का सारा उत्तरदायित्व स्वरूप वहन करे। कार्यकर्त्री महिलाओं के आवास-निवास एवं प्रशिक्षण का प्रबन्ध करे ताकि पीड़ित नारी को वहाँ आश्रय लेकर अपने बच्चों सहित राहत भरा जीवन जी सकने की सुविधा मिले। इस प्रयोजन के न जाने कितने प्रचार—कितने अधिक संस्थान खड़े करने पड़ेंगे। महिला जागरण के लिये—पुरुषों में न्यायबुद्धि उत्पन्न करने के लिये समाज कर्णधारों—नर-नारी के बीच प्रस्तुत असमानता हटाने को सहमत करने के लिये—न जाने कितने बड़े प्रयास करने पड़ेंगे। नारी पुनरुत्थान की योजनायें इतनी गहराई के साथ खड़ी की जा सकें तभी कुछ काम चलेगा। ऊपर की लीपा-पोती तो एक विनोद मात्र बनकर रह जायेगी।

यह कार्य कौन करे ? इन प्रयासों का नेतृत्व किसके हाथ में हो ? इसका सही उत्तर प्राप्त करने के लिये नारी का ही मुँह तकना पड़ेगा। उसे ही अग्रिम पंक्ति में खड़ा करना पड़ेगा। पुरुष का इसमें प्रबल समर्थन होना ही चाहिये। आवश्यक साधन उसे ही जुटाने चाहिये। पीढ़ियों से चले आ रहे पाप का प्रायश्चित वह उसी प्रकार कर सकेगा कि नारी जागरण के प्रचण्ड आन्दोलन खड़े करने के लिये वह अधिक से अधिक ध्यान केन्द्रित करे और अधिक से अधिक साधन जुटायें। इतने पर भी इस महा अभियान का प्रत्यक्ष नेतृत्व नारी के ही हाथ में रहना चाहिये। अग्रिम पंक्ति में उसे ही खड़ा होना चाहिये। नारी से सीधा सम्पर्क स्थापित कर सकना—घरों में प्रवेश कर सकना—महिलाओं से जी खोलकर बातें कर सकना—उन्हें साथ लेकर चल सकना केवल नारी के लिये ही सम्भव हो सकता है। वर्तमान स्थिति में—भारत जैसे पिछड़े देश में—पुरुष वर्ग के लिये इस क्षेत्र में अधिक गहरा प्रवेश कर सकना कठिन है।

लेख का आरम्भ महिलाओं के वानप्रस्थ की चर्चा के साथ हुआ था। वर्तमान परिस्थिति पुकारती है कि महिलाओं को नारी-जागरण का व्रत लेकर अधिकाधिक मात्रा में वानप्रस्थी बनना चाहिये और जिस प्रकार पुरुषों के लिये पुरुष वर्ग में कार्यक्षेत्र खुला पड़ा है, उसी प्रकार अछूते नारी क्षेत्र में प्रवेश करके उन्हें अपने विशिष्ट कर्त्तव्य पालन में जुट जाना चाहिये—पुरुषों को लैक्चर झाड़ने के लिये पहले से ही पुरुष उपदेशकों की भीड़ बहुत बड़ी संख्या में मौजूद है। उसी में कुछ नारियाँ भी घुस पड़ें तो नारी के प्रति सहज आकर्षण होने का मनोविज्ञान उन्हें कुछ अधिक स्वागत प्रदान कर सकता है पर उससे काम कुछ न बनेगा। महिला प्रचारिकाओं को अपना अछूता क्षेत्र ही सम्भालना चाहिये और उसी के सन्दर्भ में सोचना, करना चाहिये। यों वे पुरुषों को भी आवश्यकतानुसार उद्‌बोधन करें—इसके लिये कोई बन्धन नहीं है पर स्मरण रहे वह उनका मुख्य कार्यक्षेत्र नहीं है। सँभालना तो उन्हें नारी जागरण का मोर्चा ही चाहिये, उनके प्रवचन एवं कर्तृत्व का केन्द्र बिन्दु नारी कल्याण की महती आवश्यकताओं की पूर्ति को ही निर्धारित किया जाना चाहिये। इस प्रयोजन की पूर्ति के लिये महिला वानप्रस्थिनियों की बहुत संख्या में आवश्यकता पड़ेगी। सो उसकी पूर्ति के लिये प्रत्येक विचारशील को प्रबल प्रयत्न करना चाहिये।

पुरुषों की तरह महिला वानप्रस्थों की भी दो श्रेणियाँ हो सकती हैं। एक वे जिनके पारिवारिक उत्तरदायित्व अभी शेष हैं और जो घर-परिवार की देखभाल करते हुये अपने स्थानीय क्षेत्र में नारी जागरण के लिये थोड़ा बहुत समय निकालती रह सकती हैं। दूसरी वे जो देशव्यापी धर्म-शिक्षण के लिये दूर-दूर तक जा सकने की सुविधा से सम्पन्न हैं। जिनके पारिवारिक उत्तरदायित्व दूसरों के कन्धों पर चले गये हैं और बिना कठिनाई के परिव्राजक स्थिति अपना सकती हैं। इसके अतिरिक्त महिला वानप्रस्थों का एक तीसरा वर्ग भी हो सकता है जो अपने पति वानप्रस्थों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करती रह सकें। कुछ साधन सम्पन्न महिलायें छात्रावासों को अथवा सुयोग्य सम्बन्धियों को बच्चों के उत्तरदायित्व सँभालकर भी सेवा क्षेत्र में उतर सकती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विधवाओं, परित्यक्ताओं और बड़ी आयु वाली कुमारियों का एक बड़ा वर्ग ऐसा है जिनके लिये अब विवाह के द्वार एक प्रकार से बन्द ही हो चुके हैं। बच्चों के उत्तदायित्व जिन पर नहीं हैं। उनके लिये इस आत्म-कल्याण और सेवा साधना का पवित्रतम कार्यक्षेत्र ईश्वरीय वरदान की ही तरह मंगलमय माना जा सकता है। सन्तान न होने का लांछन लगाकर जिनके पति दूसरा विवाह करने के लिये आतुर हैं, उनके दुष्कर्म को खुल खेलने देने के लिये विचारशील महिलायें रास्ता खाली कर सकती हैं। और रोज के ताने सुनती हुई अपने को बिना आगे के जलते रहने से बचा सकती हैं। ऐसी महिलायें समझ सकती हैं। मानो प्रस्तुत असुविधाजनक स्थिति ईश्वर ने उन्हें उसे विशेष प्रयोजन के लिये वरदान रूप में प्रदान की है। यदि भौतिक लालसाओं से विरत होकर वे इस प्रकार की भावनात्मक उत्कृष्टता अपनाने वाला साहस एकत्रित कर सकें तो समझना चाहिये उनका दुर्भाग्य सच्चे अर्थों में सौभाग्य बन गया। इससे वे अपना ही नहीं समस्त मानव समाज का—नारी समाज का हित साधन करती हुई धन्य बन सकेंगी।

प्रशिक्षण पुरुषों की तरह नारी वानप्रस्थों का भी आवश्यक है। कम से कम उन्हें छः महीने आत्मशोधन की स्थिर तपश्चर्या करनी चाहिये और अपने लिये उपयुक्त सेवा धर्म की कार्यपद्धति का ज्ञान संचित करना चाहिये। जिन्हें परिव्राजक बनना है, उन्हें दो महिला सहेलियों के रूप में जोड़ा बनाकर रहना होगा। एकाकी महिला प्रचारिका की बात अपने देश में उतनी उपयुक्त नहीं। दो महिलाओं का जोड़ा जहाँ परस्पर एक-दूसरे के लिये दैनिक कार्य कलाप में सहयोगी सहायक हो सकता है, वहाँ कार्यक्षेत्र में मिलजुल कर काम करते हुये नारी सुलभ संकोचशीलता की कठिनाई भी सामने न आवेगी। दोनों मिलजुल कर एक-दूसरे को उत्साह देती रहेंगी और परामर्श विचार-विमर्श द्वारा उपयोगी निष्कर्ष निकालती रहेंगी। सबसे बड़ा लाभ इस जोड़ी प्रक्रिया का यह है कि उनकी चरित्रनिष्ठा पर किसी कुतर्की को भी उँगली उठाने का अवसर न मिलेगा। एकाकी कार्य करने वाली महिलायें यदि आयु की दृष्टि से सफेद बालों की स्थिति में नहीं पहुँची हैं तो लोग काना-फूँसी भी कर सकते हैं। पर दो की जोड़ी बनाकर रहने वाली महिलायें उस तरह की चर्चा में भी पूर्णतया सुरक्षित रह सकती हैं। अच्छा तो यह है कि जिन्हें वानप्रस्थ लेना हो वह अपनी एक परिचित सहेली को भी तैयार करके जोड़ी के साथ कदम बढ़ायें। यदि वे ऐसी उपयुक्त साथिन स्वयं नहीं ढूँढ़ सकेगी तो शान्तिकुञ्ज उसके लिये प्रयत्न करेगा और जोड़ी के साथ ही उन्हें बाहर जाने का साधन जुटायेगा। जिन्हें अपने घर ही रहकर—स्थानीय क्षेत्र में काम करना है, उन्हें इस प्रकार की जोड़ी ढूँढ़ना अनिवार्य नहीं। यों साथिन के साथ सुविधा का रहना तो स्पष्ट और निश्चय ही है।

देव संस्कृति के पुरातन स्वरूप का नवीनीकरण

चिर अतीत में देव संस्कृति के निर्माताओं ने उसे चार आश्रम और चार वर्गों में विभाजित किया था। इसी को वर्णाश्रम धर्म कहते हैं। भारतीय धर्म वस्तुतः वर्णाश्रम धर्म है। आश्रम परिस्थिति पर निर्धारित थे और वर्ण कर्म व्यवस्था पर। नव यौवन, प्रौढ़ता, निवृत्ति—यह परिस्थितियाँ हैं। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासियों को सामयिक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी जीवनचर्या ढालती और मर्यादा पालनी पड़ती थी। यह आश्रम धर्म हुआ। सभी को अपनी योग्यता एवं रुचि के अनुरूप कुछ न कुछ कार्य-व्यवसाय चुनना होता है। उसे करते हुये आत्म निर्माण और लोक निर्माण में निरत रहना पड़ता है। उपार्जन नहीं, प्रवाह प्रमुख है। रोटी कोई प्रश्न नहीं। कर्मनिष्ठ के पीछे-पीछे रोटी फिरती है। जिसका मस्तिष्क सही और भुजायें समर्थ हैं, उसे मुट्ठी भर अनाज और तनिक सा वस्त्र कमा लेने में कुछ घंटों का परिश्रम ही पर्याप्त होता है। देव संस्कृति में उस पर विचार नहीं किया गया। सोचा इतना भर गया है कि मनुष्य किन आदर्शों के लिये जिये, क्या कार्यक्रम अपनाये ? अज्ञान से जूझने वाले ब्राह्मण अशक्ति मिटाने वाले क्षत्रिय और अभावों की पूर्ति करने वाले वैश्य कहलाते थे। आदर्श

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन इन्हीं भागों में विभक्त था। पशु से मनुष्य जीवन में प्रवेश करने वाले इन्हीं आदर्शवादियों को 'द्विज' कहा जाता था। जो ऐसा कुछ नहीं सोचते थे, जिनके सामने श्रम और आजीविका दो ही प्रश्न थे, सिद्धान्तों में रुचि नहीं थी, उन्हें शूद्र कहा जाता था।

यह प्राचीन परम्परा का पर्यवेक्षण विहंगावलोकन हुआ। समय चला जाता है, फिर लौटकर नहीं आता। पुरातन परिपाटी के मूलभूत सिद्धान्तों को मान्यता देते हुये भी आज की परिस्थिति में वह विभाजन रेखा यथावत् चलती रहना, शक्य नहीं रहा। वर्ण जाति-पाँति की ऊँच-नीच में बदल गये, जन्म के साथ जुड़ गये तो उनकी उपयोगिता कहाँ रही ? आश्रम व्यवस्था के धुर्रे उड़ गये। मात्र एक आश्रम गृहस्थ ही होश सम्भालने से लेकर साँस बन्द होने तक चलता है। अब मात्र एक ही वर्ग बचा है—"वैश्य"। धन लिप्सा के अतिरिक्त और किसी का कोई लक्ष्य नहीं। ऐसी दशा में देव संस्कृति के वर्णाश्रम विभाजन की सामयिक गलाई-ढलाई आवश्यक हो गई है।

सम्पूर्ण संसार में बसे हुये मनुष्य समाज को किस प्रकार, किस आधार पर वर्गीकृत किया जाय—यह सोचना और करा लेने की अनिवार्यता उत्पन्न करना मूर्धन्यों और समर्थों का काम है। ऐसे समर्थों का, जिनका प्रभाव एवं कार्यक्षेत्र व्यापक है। वैसी सत्तायें भी अगले दिनों अवश्य उभरेंगी, पर उनकी प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ रखे बैठा कैसे रहा जाये। आज की आवश्यकता आज ही पूरी करनी है। अपने अधिकार के सीमित क्षेत्र में योजना बनाना और कार्यान्वित करना तो हर किसी के अपने हाथ में रहता है। उसमें तो अपने स्वतन्त्र निर्धारण किये ही जा सकते हैं। वैसा ही किया भी जा रहा है।

जागृत आत्माओं के प्रज्ञा परिवार को हर काम में, हर क्षेत्र में अग्रगामी रहना पड़ रहा है तो देव संस्कृति की आधारभूत विभाजन रेखा के पुनर्निर्माण में, पुनर्जीवन में उसकी लक्ष्मण रेखा क्यों न खिंचे ? जो करना ठहर उसके लिये फिर कभी के लिये उपेक्षा करने के स्थान पर आज का काम आज की परिस्थितियों में आज के ढंग से ही निपटाया जा रहा है। आवश्यकतानुसार कल उसमें कल के ढंग से सुधार भी होता रहेगा। उसके द्वार बन्द कहाँ किये जा रहे हैं ?

प्रज्ञा परिजनों को नियति की प्रेरणा ने, समय की पुकार ने, भविष्य की सम्भावना ने विवश किया है कि इस आपत्तिकाल में पेट प्रजनन को गौण बनायें, औसत भारतीय का निर्वाह स्तर अपनायें, स्वल्प-संतोषी बनें और अपनी क्षमताओं को युगधर्म के परिपालन में नियोजित करें। महाकाल के इस युग निमन्त्रण को शिरोधार्य करने वाली जागृत आत्माओं के समुच्चय का नाम ही 'प्रज्ञा परिवार' है। उसे देव संस्कृति के पुरातन सिद्धान्तों को अक्षुण्ण रखते हुये वर्णाश्रम धर्म के अभिनव ढाँचे में ढाल सकना न तो कठिन है न असम्भव। जो उपयोगी है, जो आवश्यक है, उसे समय रहते कर गुजरने की अपनी नीति ने यह भी उचित समझा है कि वर्णाश्रम धर्म की विभाजन रेखा प्रज्ञा परिवार से आरम्भ की जाय और फिर से क्रमशः अधिकाधिक व्यापक बनते-बनते समस्त संसार को अपने आंचल में समेट लेने का अवसर दिया जाय।

प्रज्ञा परिवार के तीन आश्रम बने हैं—

(१) **प्रज्ञापुंज**—वे जो सूत्र-संचालन की केन्द्रीय व्यवस्था को समय की माँग के अनुरूप सुदृढ़ बनाये रखने की जिम्मेदारी सँभालेंगे। क्षेत्रीय प्रयोजनों पर कम और केन्द्र की समर्थता लड़खड़ाने न पाये—इस पर अपना ध्यान केन्द्रित रखेंगे।

(२) **प्रज्ञापुत्र**—जो जन सम्पर्क साधेंगे, जन समर्थन उभारेंगे और जन सहयोग के सहारे समय की माँग पूरी करने में निरत रहेंगे। नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक क्रान्ति के रूप में गलाई, व्यक्ति, परिवार और समाज के रूप में ढलाई, इन्हीं की जिम्मेदारी है। वे अपना समय दान, अंशदान, अनुकरणीय रखेंगे और उस आधार पर असंख्यों को अनुगमन की प्रेरणा देंगे। इन्हीं के जिम्मे प्रथम चरण में पंचसूत्री योजना सौंपी गई है और उन्हें ही अगले दिनों दस सूत्री सुधारात्मक और सृजनात्मक कार्यक्रम सम्पन्न करने के लिये तैयार रहने की चेतावनी दी गयी है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(३) **प्रज्ञा प्रयोजन**—जो व्यस्तता एवं दूसरी कठिनाईयों के कारण घर से बाहर निकल सकने की स्थिति में तो नहीं हैं पर अपने निजी जीवन और परिवार क्षेत्र में आदर्शवादी प्रयोजनों का यथाम्भव समावेश करने में किसी से पीछे न रहेंगे। मनोभूमि ऐसी भी बनाते रहेंगे, जिससे अनुकूलता आते ही अगले कदम बढ़ें और प्रज्ञापुत्र के रूप में पदोन्नति का सुअवसर मिले।

अब चार वर्णों के स्थान पर युग सृजेताओं के तीन वर्ण ही पर्याप्त समझे गये हैं। प्राचीन काल में भी वस्तुतः तीन ही वर्ण थे। अवशेष को चौथा कहा गया है। आज उपर्युक्त तीन वर्णों में अपने देव परिवार का विभाजन पर्याप्त है।

प्रज्ञा परिजनों के लिये अखण्ड ज्योति जून ८२ अंक में सप्तसूत्री कार्य पद्धति विस्तारपूर्वक छापी जा चुकी है। प्रज्ञा पुत्रों के लिये 'प्रज्ञा अभियान' पत्रिका का अक्टूबर-नवम्बर ८१ का संयुक्तांक प्रकाशित हो ही चुका है। प्रज्ञापुत्रों के लिये अलग से विस्तारपूर्वक छापना इसलिये आवश्यक नहीं समझा गया कि अभी उनकी गणना मुट्ठी भर है। आत्म दानी-जीवन दानी आगे आते, पीछे हटते रहते हैं। इनमें से अग्नि परीक्षा में कितने खरे, कितने खोटे सिद्ध हुये—यह समय ही बतायेगा। यह समयदानी प्रज्ञापुत्रों की चर्चा हुई। अंशदानी-साधनों का अभीष्ट प्रयोजनों के लिये संकल्पपूर्वक नियोजन करते रहने वाले और भी कम और भी कच्चे हैं। कारणवश उत्साह आता है तो मुट्ठी भर भी दे गुजरते हैं, पर जब कृपणता चढ़ दौड़े तो साधनों का बाहुल्य रहते हुये भी एक दाना देने में सौ बार सोचते और हजार बार विचारते हैं। ऐसे कच्ची-कमजोर मनःस्थिति वालों में से किसे 'प्रज्ञा पुंज' कहा जाय ? किसे न कहा जाये ? यह टेढ़ा प्रश्न है। जब संकल्पवान स्थिरता ही परिपक्व नहीं हुई तो 'प्रज्ञा पुंज कितनों को कहा जाये, कितनों को नहीं—यह असमंजस ही दूर नहीं हो पाता। ऐसी दशा में उनके लिये आचार संहिता, कार्य पद्धति एवं विधि व्यवस्था ही क्यों बने ? जो हो, आज नहीं तो कल परसों—प्रज्ञा पुंजों का घोषित विभाजन परिपक्व भी होगा, तब उसके लिये भी किसी पत्रिका का एक विशेषांक छाप दिया जायेगा। अभी तो उनके लिये मनःस्थिति एवं परिस्थिति को ध्यान में रखते हुये पत्र-व्यवहार से ही काम चलता है। कभी-कभी परामर्श सत्रों के रूप में उन्हें बुला लिया जाता है। भविष्य में इस प्रज्ञा पुंज वर्ग के लिये भी गम्भीरतापूर्वक सोचा और उनको ध्यान में रखते हुये कुछ बड़ा और सुनिश्चित निर्धारण किया जायेगा। अभी तो जैसे-तैसे गाड़ी धकेली जा रही है, पर अगले ही दिनों इस क्षेत्र में नया उभार उत्तरदायित्व एवं संकल्प उत्पन्न करना होगा।

एक हजार जीवन दानियों—की युग देवता ने इन्हीं दिनों माँग की है। उन्हें देश के कोने-कोने में युग-चेतना उभारने—नव जागरण का अलख जगाने के लिये भेजा जाना है। किसी प्रकार दश जीपें खरीदी गयी थी। वे कार्य विस्तार को देखते हुये जलते तवे पर बूँद की तरह अपर्याप्त सिद्ध हुयीं। सुविधा तो है, काम भी अधिक होता है, पर खर्च को देखते हुये कमर टूटती है। ऐसी दशा में एक हजार साइकिलें खरीदने का निश्चय किया है। दो-दो की टोलियाँ ढपली, मजीरा झोले में रखकर सीखे युग संगीत के आधार पर विचारगोष्ठी जमायेंगी और पिछड़े देहातों वाली भारत भूमि को युग धर्म के अनुरूप बदलने उभरने के लिये उत्साहित अनुप्राणित करेंगी।

इन जीवन दानियों के लिये और भी अनेकों काम बाकी पड़े हैं। चौबीस सौ प्रज्ञा-पीठें अब दूनी होने जा रही हैं। उन्हें सम्भालने के लिये कर्मठ कार्यकर्त्ता चाहिये। केन्द्र में दिन दूने रात चौगुने काम बढ़ते जा रहे हैं। दहेज विरोधी आन्दोलन, साक्षरता अभियान जैसी अगणित युग प्रवृत्तियों का बीजारोपण-अभिवर्द्धन करना है। हर क्षेत्र में प्रज्ञा परिजनों के स्थानीय शिक्षण शिविर लगाने हैं। इन प्रयासों के लिये न्यूनतम एक हजार कार्यकर्त्ता तो इसी वर्ष चाहिये। माँग की गयी है कि समर्पण की भावनाओं से प्रेरित, सौंपे गये किसी को छोटा नहीं मानने वाले, जिम्मेदारी समझने और निभाने वाले, साथ ही बफादार, अनुशासन प्रिय, मधुर भाषी, सहयोग के अभ्यस्त प्रकृति के प्रज्ञा परिजन आगे आयें और सृजन शिल्पियों की अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर जलते दीपकों की तरह दशों दिशाओं में प्रकाश फैलायें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(२) **एक लाख की संजीवनी-विद्या का प्रशिक्षण**—शान्तिकुञ्ज की नई व्यवस्था इस प्रकार की जानी है, जिसमें ५०० आसानी से और १००० दूँस-दूँस कर नियमित रूप से शिक्षार्थियों का प्रशिक्षण होता रह सकता है। इस प्रशिक्षण में व्यक्ति का निखार, प्रतिभा का उभार, परिवार में सुसंस्कारिता, समाज में सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन जैसे महत्त्वपूर्ण नियमित पाठ पढ़ाये जायेंगे। आशा की गई है कि इस स्वल्प अवधि में भी जो पाठ्यक्रम हृदयंगम कराया जायेगा, जो प्राण प्रेरणा भरी जायेगी, वह प्रायः ऐसी होगी, जिसे साधना का तत्वज्ञान का सार कह सकते हैं। आशा की जानी चाहिये कि इस संजीवनी विद्या को जो साथ लेकर वापिस लौटेंगे, वे अपना काया-कल्प अनुभव करेंगे और साथ ही ऐसी लोकनेतृत्व-क्षमता सम्पादित करेंगे, जो हर क्षेत्र में हर कदम पर सफलता प्रदान कर सके।

मिशन की पत्रिकाओं के पाठक तो ग्राहकों की तुलना में पाँच गुने अधिक हैं। पत्रिका न्यूनतम पाँच व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है। इस प्रकार प्रज्ञा परिवार की संख्या प्रायः २४-२५ लाख हो जाती है। इनमें नर-नारी शिक्षित वर्ग के हैं। सभी को इस प्रशिक्षण में सम्मिलित होने के लिये आमन्त्रित किया गया है। २५ पीछे एक शिक्षार्थी मिले तो उनकी संख्या एक लाख हो जाती है। युग सन्धि की अवधि में इतने शिक्षार्थी विशेष रूप से लाभ उठा चुके होंगे। इन्हें मात्र स्कूली विद्यार्थी नहीं माना जाना चाहिये। वरन् जिस उच्चस्तरीय ज्ञान को सीख-कर वे लौटेंगे, उससे यह आशा की जा सकती है कि उनका व्यक्तित्व महामानव स्तर का युग नेतृत्व की प्रतिभा से भरा पूरा होगा।

यह शिक्षण इसी मई मास से आरम्भ हो रहा है। उसकी विशेषता यह होगी कि शिक्षार्थियों के लिये निवास, प्रशिक्षण की तरह ही भोजन भी निःशुल्क होगा। इस मद में स्वेच्छा से कोई कुछ देगा तो अस्वीकार भी नहीं किया जायेगा। पर गरीब-अमीर का भेद करने वाली शुल्क परिपाटी को इस प्रशिक्षण में प्रवेश न करने दिया जायेगा। अभिभावक और अध्यापक की दुहरी भूमिका प्राचीन काल के विद्यालय निभाया करते थे। इस प्रयोग को भी उसी प्राचीन विद्यालय प्रणाली का पुनर्जीवन कहा जा सकता है।

जीवन की बहुमुखी समस्याओं का समाधान, प्रगति पथ पर अग्रसर होने के रहस्य भरे तत्वज्ञान के अतिरिक्त इसी अवधि में भाषण कला, सुगम-संगीत, जड़ी-बूटी उपचार, पौरोहित्य, शिक्षा, स्वास्थ्य गृह उद्योगों का सूत्र संचालन भी सम्मिलित रखा गया है ताकि उससे परोक्ष और प्रत्यक्ष लाभ अपने तथा दूसरों के लिये उपलब्ध किया जा सके।

अनुमान है कि १४ वर्षों में एक लाख छात्रों के उपरोक्त प्रशिक्षण पर भारी व्यय होगा। प्रायः एक करोड़ भोजन व्यय में ही चला जायेगा। इमारत की नई रद्दोबदल, फर्नीचर, बिजली आदि के जो नये खर्च बढ़ेंगे, वे भी इससे कम न होंगे। आशा की गई कि बिना याचना किये भारी खर्च को वहन कर अब तक निभा व्रत आगे भी निभता रहेगा और यह संकल्प भी पूरा होकर रहेगा। २५ लाख का इस उच्चस्तरीय शिक्षण में सम्मिलित होना तनिक भी कठिन नहीं, किन्तु फिर भी प्रतिभावानों को प्राथमिकता देने की जाँच पड़ताल करनी पड़ी है और प्रवेशार्थियों से उनका सुविस्तृत परिचय पूछा गया है।

(३) **एक लाख अशोक वृक्षों का आरोपण**—वृक्षारोपण का महत्त्व सर्वविदित है। बादलों से वर्षा खींच लाना, भूमि का कटाव रोकना, भूमि की उर्वरता बढ़ाना, प्राण वायु का वितरण, प्रदूषण का अवशोषण, छाया, प्राणियों का आश्रय, इमारती लकड़ी, ईंधन आदि अनेकों लाभ वृक्षों के कारण इस धरित्री को प्राप्त होते हैं। धार्मिक और भौतिक दृष्टि से वृक्षारोपण को एक उच्च कोटि का पुण्य परमार्थ माना गया है।

वृक्षों में अशोक का अपना विशेष महत्त्व है। उसका गुणगान सम्राट अशोक जैसा किया जा सकता है। सीता को आश्रय अशोक वाटिका में ही मिला था। हनुमान जी ने भी उसी के पल्लवों में आश्रय लिया था। आयुर्वेद में वह महिला रोगों की अचूक औषधि कहा गया है। पुरुषों की बलिष्ठता और प्रखरता बढ़ाने की उसमें विशेष शक्ति है। साधना के लिये अशोक उपवन के नीचे रहा जा सकता है। शोभा तो उसकी असाधारण है ही। यदि अशोक के गुण सर्व साधारण को समझाये जायें तो हर व्यक्ति का अशोक वाटिका बना सकना न सही घर-आंगन, अड़ोस-पड़ोस में उसके कुछ पेड़ तो लगाने और पोसने में समर्थ वे ही हो सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(२) **एक लाख की संजीवनी-विद्या का प्रशिक्षण**—शान्तिकुञ्ज की नई व्यवस्था इस प्रकार की जानी है, जिसमें ५०० आसानी से और १००० दूँस-दूँस कर नियमित रूप से शिक्षार्थियों का प्रशिक्षण होता रह सकता है। इस प्रशिक्षण में व्यक्ति का निखार, प्रतिभा का उभार, परिवार में सुसंस्कारिता, समाज में सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन जैसे महत्त्वपूर्ण नियमित पाठ पढ़ाये जायेंगे। आशा की गई है कि इस स्वल्प अवधि में भी जो पाठ्यक्रम हृदयंगम कराया जायेगा, जो प्राण प्रेरणा भरी जायेगी, वह प्रायः ऐसी होगी, जिसे साधना का तत्वज्ञान का सार कह सकते हैं। आशा की जानी चाहिये कि इस संजीवनी विद्या को जो साथ लेकर वापिस लौटेंगे, वे अपना काया-कल्प अनुभव करेंगे और साथ ही ऐसी लोकनेतृत्व-क्षमता सम्पादित करेंगे, जो हर क्षेत्र में हर कदम पर सफलता प्रदान कर सके।

मिशन की पत्रिकाओं के पाठक तो ग्राहकों की तुलना में पाँच गुने अधिक हैं। पत्रिका न्यूनतम पाँच व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है। इस प्रकार प्रज्ञा परिवार की संख्या प्रायः २४-२५ लाख हो जाती है। इनमें नर-नारी शिक्षित वर्ग के हैं। सभी को इस प्रशिक्षण में सम्मिलित होने के लिये आमन्त्रित किया गया है। २५ पीछे एक शिक्षार्थी मिले तो उनकी संख्या एक लाख हो जाती है। युग सन्धि की अवधि में इतने शिक्षार्थी विशेष रूप से लाभ उठा चुके होंगे। इन्हें मात्र स्कूली विद्यार्थी नहीं माना जाना चाहिये। वरन् जिस उच्चस्तरीय ज्ञान को सीख-कर वे लौटेंगे, उससे यह आशा की जा सकती है कि उनका व्यक्तित्व महामानव स्तर का युग नेतृत्व की प्रतिभा से भरा पूरा होगा।

यह शिक्षण इसी मई मास से आरम्भ हो रहा है। उसकी विशेषता यह होगी कि शिक्षार्थियों के लिये निवास, प्रशिक्षण की तरह ही भोजन भी निःशुल्क होगा। इस मद में स्वेच्छा से कोई कुछ देगा तो अस्वीकार भी नहीं किया जायेगा। पर गरीब-अमीर का भेद करने वाली शुल्क परिपाटी को इस प्रशिक्षण में प्रवेश न करने दिया जायेगा। अभिभावक और अध्यापक की दुहरी भूमिका प्राचीन काल के विद्यालय निभाया करते थे। इस प्रयोग को भी उसी प्राचीन विद्यालय प्रणाली का पुनर्जीवन कहा जा सकता है।

जीवन की बहुमुखी समस्याओं का समाधान, प्रगति पथ पर अग्रसर होने के रहस्य भरे तत्वज्ञान के अतिरिक्त इसी अवधि में भाषण कला, सुगम-संगीत, जड़ी-बूटी उपचार, पौरोहित्य, शिक्षा, स्वास्थ्य गृह उद्योगों का सूत्र संचालन भी सम्मिलित रखा गया है ताकि उससे परोक्ष और प्रत्यक्ष लाभ अपने तथा दूसरों के लिये उपलब्ध किया जा सके।

अनुमान है कि १४ वर्षों में एक लाख छात्रों के उपरोक्त प्रशिक्षण पर भारी व्यय होगा। प्रायः एक करोड़ भोजन व्यय में ही चला जायेगा। इमारत की नई रद्दोबदल, फर्नीचर, बिजली आदि के जो नये खर्च बढ़ेंगे, वे भी इससे कम न होंगे। आशा की गई कि बिना याचना किये भारी खर्च को वहन कर अब तक निभा व्रत आगे भी निभता रहेगा और यह संकल्प भी पूरा होकर रहेगा। २५ लाख का इस उच्चस्तरीय शिक्षण में सम्मिलित होना तनिक भी कठिन नहीं, किन्तु फिर भी प्रतिभावानों को प्राथमिकता देने की जाँच पड़ताल करनी पड़ी है और प्रवेशार्थियों से उनका सुविस्तृत परिचय पूछा गया है।

(३) **एक लाख अशोक वृक्षों का आरोपण**—वृक्षारोपण का महत्त्व सर्वविदित है। बादलों से वर्षा खींच लाना, भूमि का कटाव रोकना, भूमि की उर्वरता बढ़ाना, प्राण वायु का वितरण, प्रदूषण का अवशोषण, छाया, प्राणियों का आश्रय, इमारती लकड़ी, ईंधन आदि अनेकों लाभ वृक्षों के कारण इस धरित्री को प्राप्त होते हैं। धार्मिक और भौतिक दृष्टि से वृक्षारोपण को एक उच्च कोटि का पुण्य परमार्थ माना गया है।

वृक्षों में अशोक का अपना विशेष महत्त्व है। उसका गुणगान सम्राट अशोक जैसा किया जा सकता है। सीता को आश्रय अशोक वाटिका में ही मिला था। हनुमान जी ने भी उसी के पल्लवों में आश्रय लिया था। आयुर्वेद में वह महिला रोगों की अचूक औषधि कहा गया है। पुरुषों की बलिष्ठता और प्रखरता बढ़ाने की उसमें विशेष शक्ति है। साधना के लिये अशोक उपवन के नीचे रहा जा सकता है। शोभा तो उसकी असाधारण है ही। यदि अशोक के गुण सर्व साधारण को समझाये जायें तो हर व्यक्ति का अशोक वाटिका बना सकना न सही घर-आंगन, अड़ोस-पड़ोस में उसके कुछ पेड़ तो लगाने और पोसने में समर्थ वे ही हो सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(२) **एक लाख की संजीवनी-विद्या का प्रशिक्षण**—शान्तिकुञ्ज की नई व्यवस्था इस प्रकार की जानी है, जिसमें ५०० आसानी से और १००० दूँस-दूँस कर नियमित रूप से शिक्षार्थियों का प्रशिक्षण होता रह सकता है। इस प्रशिक्षण में व्यक्ति का निखार, प्रतिभा का उभार, परिवार में सुसंस्कारिता, समाज में सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन जैसे महत्त्वपूर्ण नियमित पाठ पढ़ाये जायेंगे। आशा की गई है कि इस स्वल्प अवधि में भी जो पाठ्यक्रम हृदयंगम कराया जायेगा, जो प्राण प्रेरणा भरी जायेगी, वह प्रायः ऐसी होगी, जिसे साधना का तत्वज्ञान का सार कह सकते हैं। आशा की जानी चाहिये कि इस संजीवनी विद्या को जो साथ लेकर वापिस लौटेंगे, वे अपना काया-कल्प अनुभव करेंगे और साथ ही ऐसी लोकनेतृत्व-क्षमता सम्पादित करेंगे, जो हर क्षेत्र में हर कदम पर सफलता प्रदान कर सके।

मिशन की पत्रिकाओं के पाठक तो ग्राहकों की तुलना में पाँच गुने अधिक हैं। पत्रिका न्यूनतम पाँच व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है। इस प्रकार प्रज्ञा परिवार की संख्या प्रायः २४-२५ लाख हो जाती है। इनमें नर-नारी शिक्षित वर्ग के हैं। सभी को इस प्रशिक्षण में सम्मिलित होने के लिये आमन्त्रित किया गया है। २५ पीछे एक शिक्षार्थी मिले तो उनकी संख्या एक लाख हो जाती है। युग सन्धि की अवधि में इतने शिक्षार्थी विशेष रूप से लाभ उठा चुके होंगे। इन्हें मात्र स्कूली विद्यार्थी नहीं माना जाना चाहिये। वरन् जिस उच्चस्तरीय ज्ञान को सीख-कर वे लौटेंगे, उससे यह आशा की जा सकती है कि उनका व्यक्तित्व महामानव स्तर का युग नेतृत्व की प्रतिभा से भरा पूरा होगा।

यह शिक्षण इसी मई मास से आरम्भ हो रहा है। उसकी विशेषता यह होगी कि शिक्षार्थियों के लिये निवास, प्रशिक्षण की तरह ही भोजन भी निःशुल्क होगा। इस मद में स्वेच्छा से कोई कुछ देगा तो अस्वीकार भी नहीं किया जायेगा। पर गरीब-अमीर का भेद करने वाली शुल्क परिपाटी को इस प्रशिक्षण में प्रवेश न करने दिया जायेगा। अभिभावक और अध्यापक की दुहरी भूमिका प्राचीन काल के विद्यालय निभाया करते थे। इस प्रयोग को भी उसी प्राचीन विद्यालय प्रणाली का पुनर्जीवन कहा जा सकता है।

जीवन की बहुमुखी समस्याओं का समाधान, प्रगति पथ पर अग्रसर होने के रहस्य भरे तत्वज्ञान के अतिरिक्त इसी अवधि में भाषण कला, सुगम-संगीत, जड़ी-बूटी उपचार, पौरोहित्य, शिक्षा, स्वास्थ्य गृह उद्योगों का सूत्र संचालन भी सम्मिलित रखा गया है ताकि उससे परोक्ष और प्रत्यक्ष लाभ अपने तथा दूसरों के लिये उपलब्ध किया जा सके।

अनुमान है कि १४ वर्षों में एक लाख छात्रों के उपरोक्त प्रशिक्षण पर भारी व्यय होगा। प्रायः एक करोड़ भोजन व्यय में ही चला जायेगा। इमारत की नई रद्दोबदल, फर्नीचर, बिजली आदि के जो नये खर्च बढ़ेंगे, वे भी इससे कम न होंगे। आशा की गई कि बिना याचना किये भारी खर्च को वहन कर अब तक निभा व्रत आगे भी निभता रहेगा और यह संकल्प भी पूरा होकर रहेगा। २५ लाख का इस उच्चस्तरीय शिक्षण में सम्मिलित होना तनिक भी कठिन नहीं, किन्तु फिर भी प्रतिभावानों को प्राथमिकता देने की जाँच पड़ताल करनी पड़ी है और प्रवेशार्थियों से उनका सुविस्तृत परिचय पूछा गया है।

(३) **एक लाख अशोक वृक्षों का आरोपण**—वृक्षारोपण का महत्त्व सर्वविदित है। बादलों से वर्षा खींच लाना, भूमि का कटाव रोकना, भूमि की उर्वरता बढ़ाना, प्राण वायु का वितरण, प्रदूषण का अवशोषण, छाया, प्राणियों का आश्रय, इमारती लकड़ी, ईंधन आदि अनेकों लाभ वृक्षों के कारण इस धरित्री को प्राप्त होते हैं। धार्मिक और भौतिक दृष्टि से वृक्षारोपण को एक उच्च कोटि का पुण्य परमार्थ माना गया है।

वृक्षों में अशोक का अपना विशेष महत्त्व है। उसका गुणगान सम्राट अशोक जैसा किया जा सकता है। सीता को आश्रय अशोक वाटिका में ही मिला था। हनुमान जी ने भी उसी के पल्लवों में आश्रय लिया था। आयुर्वेद में वह महिला रोगों की अचूक औषधि कहा गया है। पुरुषों की बलिष्ठता और प्रखरता बढ़ाने की उसमें विशेष शक्ति है। साधना के लिये अशोक उपवन के नीचे रहा जा सकता है। शोभा तो उसकी असाधारण है ही। यदि अशोक के गुण सर्व साधारण को समझाये जायें तो हर व्यक्ति का अशोक वाटिका बना सकना न सही घर-आंगन, अड़ोस-पड़ोस में उसके कुछ पेड़ तो लगाने और पोसने में समर्थ वे ही हो सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक लाख अशोक वृक्ष लगाने का संकल्प पूरा करने में यदि प्रज्ञा परिजन उत्साहपूर्वक प्रयत्न करें तो इतना साधारण निश्चय इतने बड़े जन समुदाय के लिये तनिक भी कठिन नहीं होना चाहिये। उसकी पूर्ति में कोई अड़चन दीखती भी नहीं है। उन्हें देवालय की प्रतिष्ठा दी जायेगी। बिहार के हजारी किसान ने हजार आम्र उद्यान निज के बलबूते खड़ा करा दिये थे तो कोई कारण नहीं कि लाख अशोक वृक्ष लगाने का उद्देश्य पूरा न हो सके। इनकी पौध शान्ति कुञ्ज से देने का भी निश्चय किया गया है और हर प्रज्ञा पुत्र को कहा गया है कि वह अशोक वाटिका लगाने-लगवाने में किसी प्रकार की कमी न रहने दें। उसके द्वारा वायु शोधन का होने वाला कार्य शाश्वत शास्त्र सम्मत यज्ञ के समतुल्य ही समझें। अग्निहोत्र तो थोड़े समय ही कार्य करता है पर यह पुनीत वृक्ष उसी कार्य को निरन्तर चिरकाल तक करता रहता है।

(४) हर गाँव एक युग तीर्थ—जहाँ श्रेष्ठ कार्य होते रहते हैं, उन स्थानों की अर्वाचीन अथवा प्राचीन गतिविधियों को देख कर आदर्शवादी प्रेरणा प्राप्त होती है, उन स्थानों को तीर्थ कहते हैं। जिन दर्शनीय स्थानों की श्रद्धालु जब तीर्थ यात्रा करते हैं, उन स्थानों एवम् क्षेत्रों के साथ कोई ऐसा इतिहास जुड़ा है जो संयमशीलता, सेवा भावना का स्वरूप प्रदर्शित करते हैं। प्रस्तुत तीर्थों में कभी ऋषि आश्रम रहे हैं। गुरुकुल आरण्यक चले हैं और परमार्थ सम्बन्धी विविध कार्य होते रहे हैं।

इन दिनों प्रख्यात तीर्थ थोड़े से ही हैं। वहाँ पर्यटकों की धकापेल भर रहती है। पुण्य प्रयोजनों का कहीं अता-पता तक नहीं। इन परिस्थितियों में तीर्थ भावना को पुनर्जीवित करने के लिये सोचा यह गया है कि भारत के प्रत्येक गाँव को एक छोटे तीर्थ के रूप में विकसित किया जाय। ग्राम से तात्पर्य यहाँ शहरों से द्वेष या उपेक्षा भाव रखना नहीं है वरन् पिछड़ेपन की औसत रेखा से नीचे वाले वर्ग को प्रधानता देना है। मातृभूमि का हर कण देवता है। गाँव और झोंपड़ा भी। आवश्यकता इस बात की है कि उस पर छाया पिछड़ापन धो दिया जाये और सत्प्रवृत्तियों की प्रतिष्ठापना की जाये। इतने भर से वहाँ बहुत कुछ उत्साहवर्धक, प्रेरणाप्रद और आनन्ददायक मिल सकता है। 'हर गाँव एक तीर्थ' योजना का उद्देश्य है, ग्रामोत्थान, ग्राम सेवा, ग्राम विकास। इस प्रचलन के लिये घोर प्रयत्न किया जाये और उस परिश्रम को ग्राम देवता की पूजा माना जाये। यह तीर्थ स्थापना हुई, जिसे स्थानीय निवासी और बाहर के सेवा भावी उद्बोधनकर्त्ता मिल-जुलकर पूरा कर सकते हैं। पिछड़ेपन के हर पक्ष से जूझने और प्रगति के हर पहलू को उजागर करने के लिए आवश्यक है कि गाँव की सार्थक पद यात्रायें की जायें। जन सम्पर्क साधा जाय और युग चेतना का अलख जगाया जाये।

हर गाँव को एक तीर्थ रूप में विकसित करने के लिये तीर्थ यात्रा टोलियाँ निकालने की योजना है। पद यात्रा को साइकिल यात्रा के रूप में मान्यता दी है। चार साइकिल सवारों का एक जत्था पीले वस्त्र धारण किये, गले में पीला झोला लटकाये, साइकिलों पर पीले रंग के कमंडलु टांगे प्रवास चक्र पर निकलेगा। यह प्रवास न्यूनतम एक सप्ताह के, दस दिन के, पन्द्रह दिन के अथवा अधिक से अधिक एक महीने के होंगे। जिनका निर्धारण पहले ही हो चुका होगा। यात्रा जहाँ से आरम्भ होगी एक गोल चक्र पूरा करती हुई वहीं समाप्त होगी। प्रातःकाल जलपान करके टोली निकलेगी। रास्ते के सहारे वाली दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखती चलेगी। छोटी बाल्टियों में रंग घुला होगा। सुन्दर अक्षर लिखने का अभ्यास पहले से ही कर लिया गया होगा। (१) हम बदलेंगे—युग बदलेगा (२) हम सुधरेंगे युग सुधरेगा। (३) नर और नारी एक समान—जाति वंश सब एक समान। वाक्यों की प्रकाशित शृंखलायें जो जहाँ उपयुक्त बैठे, वहाँ उन्हें ब्रुस से लिखते चलना चाहिये।

रात्रि को जहाँ ठहरना निश्चय किया हो वहाँ शंख घड़ियालों से गाँव की परिक्रमा लगाई जाय और ऐलान किया जाये कि अमुक स्थान पर तीर्थ यात्री मंडली के भजन कीर्तन होंगे।

एक दिन के इस कीर्तन में जहाँ सुगम संगीत से उपस्थित जनों को आह्लादित किया जायेगा वहाँ उन्हें यह भी बताया जायेगा कि गाँव को सज्जनता और प्रगति की प्रतिमूर्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनाया जा सकता है। प्रौढ़ शिक्षा, बाल संस्कारशाला, स्वच्छता, व्यायामशाला, घरेलू शाक वाटिका, परिवार नियोजन, नशाबन्दी, मितव्ययिता सहकारिता, वृक्षारोपण आदि सत्प्रवृत्तियों की महिमा और आवश्यकता बताते हुये यह बताया जाय कि इन सत्प्रवृत्तियों को मिल-जुलकर किस प्रकार कार्यान्वित किया जा सकता है और उन प्रयत्नों का कैसे भरपूर लाभ उठाया जा सकता है ?

संभव हो तो सभा के अन्त में उत्साही प्रतिभा वाले लोगों की एक समिति बना दी जाये तो नियमित रूप से समयदान अंशदान देकर इन सत्प्रवृत्तियों को कार्यान्वित करने में जुटें। गाँव की एकता और पवित्रता का ध्वज अशोक वृक्ष के रूप में दूसरे दिन प्रातःकाल स्थापित किया जाये। यह देव प्रतिमा उपयोगिता और भावना की दृष्टि से अतीव उपयोगी है।

इस आन्दोलन से एक लाख गाँवों में शान्तिकुञ्ज ने पहला कदम बढ़ाया है। इसके लिये संचालन केन्द्रों की स्थापना की गई है। वहाँ चार-चार नई साईकिलें, चार छोटी बाल्टियाँ, बिस्तर बन्द, संगीत उपकरण साहित्य आदि साधन जुटाये गये हैं। इनके सहारे यात्रा की सभी आवश्यक वस्तुयें एक ही स्थान पर मिल जाती हैं और कुछ ही दिन की ट्रेनिंग के उपरान्त समय दानियों की टोली आगे बढ़ चलती है। कार्यक्रम की सफलता तब सोची जायेगी जब कम से कम एक नैष्ठिक सदस्य उस गाँव में बनने और समयदान और अंशदान नियमित रूप से देते हुये झोला पुस्तकालय चलाने लगे। यह प्रक्रिया जहाँ भी अपनाई जायेगी, वहीं एक उपयोगी संगठन बढ़ने लगेगा और उसके प्रयास से गाँव की सर्वतोमुखी प्रगति का उपक्रम चल पड़ेगा। यही है तीर्थ भावना—तीर्थ स्थापना। इसके लिये एक हजार ऐसे केन्द्र स्थापित करने की योजना है। जहाँ उपर्युक्त तीर्थ यात्राओं का सारा सरंजाम सुरक्षित रहे। समयदानी तीर्थ यात्री प्रशिक्षित किये जाते रहें और एक टोली का एक प्रवास चक्र पूरा होते-होते दूसरी टोली तैयार कर ली जाये और उसे दूसरे गाँव के भ्रमण प्रवास पर भेज दिया जाये। सोचा गया है कि पचास-पचास मील चारों दिशाओं में देखकर एक तीर्थ मंडल बना लिया जाये और उनमें जितने भी गाँव हों उन सभी में वर्ष में एक बार या वर्ष में दो बार परिभ्रमण होता रहे।

देश में सात लाख गाँव हैं, पर अभी वर्तमान संभावना और स्थिति को देखते हुये एक लाख गाँव ही हाथ में लिये गये हैं। २४ लाख प्रज्ञा परिजन एक लाख गाँव में बिखरे होंगे। उनकी सहायता से यह कार्यक्रम सरलतापूर्वक सम्पन्न हो सकता है। इसके बाद वह हवा समूचे देश को भी अपनी पकड़ में ले सकती है। क्रमिक गति से चलना और जितना सम्भव है, उतना तत्काल करते हुये आगे की योजना को विस्तार देते हुये चलना, यही बुद्धिमत्ता का कार्य है।

(१) एक लाख वर्ष का समयदान

जितने विशालकाय एवम् बहुमुखी युग परिवर्तन की कल्पना की गई है कि उसके लिये साधनों की तुलना में श्रम-सहयोग की कहीं अधिक आवश्यकता पड़ेगी। मात्र साधनों से काम चला होता तो अरबों-खरबों खर्च करने वाली सरकारें इस कार्य को भी हाथ में ले सकती थीं। धनी मानी लोग भी कुछ तो कर ही सकते थे, पर इतने भर से काम नहीं चलता। भावनायें उभारना और अपनी प्रामाणिकता, अनुभवशीलता, योग्यता एवं त्याग भावना का जन साधारण को विश्वास दिलाना, यही वे आवश्यकतायें हैं, जिनके कारण लोकहित के कार्यों में दूसरों को प्रोत्साहित किया और लाया जा सकता है, अन्यथा लम्बा वेतन और भरपूर सुविधायें देकर भी यह नहीं हो सकता कि पिछड़ी हुई जनता को आदर्शवादी चरण उठाने के लिये तत्पर किया जा सके। जला हुआ दीपक ही दूसरे को जला सकता है। भावनाशीलों ने ही भावना उभारने में सफलता प्राप्त की है। सृजनात्मक कार्यों में सदा कर्मवीर अग्रदूतों की भूमिका सफल होती है।

बात पर्वत जैसी भारी, किन्तु साथ ही राई जितनी सरल भी है। व्यक्ति औसत नागरिक स्तर स्वीकार कर ले और परिवार को स्वावलम्बी सुसंस्कारी बनाने भर की जिम्मेदारी वहन करे, तो समझना चाहिये कि सेवा-साधना के मार्ग में जो अड़चन थी, सो दूर हो गई।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनोभूमि का इतना विकास-परिष्कार कर लेने पर भी विचारशील व्यक्ति लोकसेवा के लिये युग परिवर्तन हेतु ढेरों समय निकाल सकता है। प्राचीनकाल में ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और सद्गृहस्थ ऐसा साहस करते और कदम उठाते थे। गुरुगोविन्द सिंह ने अपने शिष्य समुदाय में से प्रत्येक गृहस्थ से बड़ा बेटा संत सिपाही बनने के लिये माँगा था। वे मिले भी थे और उसी कारण सिखों का भूतकालीन इतिहास बिजली जैसा चमकता था। देश की रक्षा प्रतिष्ठा के लिये असंख्यों ने जानें गँवायीं और भारी कठिनाइयाँ सहीं। वह परम्परा गाँधी और बुद्ध के समय में भी सक्रिय हुई थी। विनोबा का सर्वोदय आन्दोलन इसी आधार पर चला था। स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द आदि ने समाज को अनेकानेक उच्चस्तरीय कार्यकर्त्ता प्रदान किये थे। आज वही सबसे बड़ी आवश्यकता है। समय की माँग ऐसे महामानवों की है, जो स्वयं बढ़ें और दूसरों को बढ़ायें।

माना कि आज स्वार्थपरता, संकीर्णता और क्षुद्रता ने मनुष्य को बुरी तरह घेर रखा है, तो भी इस धरती को 'वीर विहीन' नहीं कहा जा सकता। ६० लाख साधु बाबा यदि धर्म के नाम पर घर बार छोड़कर मारे-मारे फिर सकते हैं, तो कोई कारण नहीं कि मिशन की एक लाख वर्ष की समयदान माँग पूरी न हो सके। एक व्यक्ति यदि दो घण्टे रोज समयदान दे सके तो एक वर्ष में ७२० घण्टे होते हैं। ७ घण्टे का दिन माना जाये तो यह पूरे १०३ दिन एक वर्ष में हो जाते हैं। यह संकल्प कोई २० वर्ष की आयु में ले और ७० वर्ष का होने तक ५० वर्ष निबाहे तो कुल दिन ५ हजार दिन हो जाते हैं, जिसका अर्थ हुआ प्रायः १४ वर्ष। एक लाख वर्ष का समय पूरा करने के लिये ऐसे १००००० + १४ = ७१४३ कुल इतने से व्यक्ति अपने जीवन में ही एक लाख वर्ष की समयदान याचना को पूर्ण कर सकते हैं। यह तो एक छोटी गणना हुई। मिशन में ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं, जो साधु-ब्राह्मण जैसा परमार्थ परायण जीवन अभी भी जी रहे हैं और अपना समय पूरी तरह युग परिवर्तन की प्रक्रिया में नियोजित किये हुये हैं। ऐसे ब्रह्मचारी और वानप्रस्थी हजारों की संख्या में अभी भी हैं। उनका पूरा समय जोड़ लेने पर तो वह गणना एक लाख वर्ष से कहीं अधिक की पूरी हो जाती है।

बात इतने तक सीमित नहीं है। प्रज्ञा परिवार के ऐसे कितने ही उदारचेत्ता हैं, जिनने हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में समयदान के आग्रह और अनुरोध को दैवी निर्देशन माना है और अपनी परिस्थितियों से तालमेल बिठाते हुये एक वर्ष से लेकर पाँच वर्ष तक का समय एक मुस्त दिया है। ऐसे लोग भी बड़ी संख्या में है, जो प्रवास पर तो नहीं जा सके, पर घर रहकर ही आये दिन मिशन की गतिविधियों को अग्रगामी बनाने के लिये समय देते रहेंगे, स्थानीय गतिविधियों तक ही सीमित रहकर समीपवर्ती कार्यक्षेत्र को भी संभालते रहेंगे।

पुरुषों की तरह महिलायें भी इस समयदान यज्ञ में भाग ले सकती हैं। शारीरिक और बौद्धिक दोनों ही प्रकार के श्रम ऐसे हैं, जिन्हें अपनाकर वे महिला समाज में शिक्षा-सम्वर्धन जैसे अनेक काम कर सकती हैं। अशिक्षित महिलायें तक घरों में शाकवाटिका लगाने जैसा काम कर सकती हैं। जिनके पीछे पारिवारिक जिम्मेदारी नहीं है, शरीर से स्वस्थ मन में स्फूर्तिवान हैं, वे शान्तिकुंज के भोजनालय विभाग में काम कर सकती हैं और यहाँ के वातावरण में रहकर आशातीत संतोषभरा शेष जीवन बिता सकती हैं।

कार्यक्रमों में प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक अनेक कार्य हैं, जिन्हें घर बाहर रहते हुये परिस्थितियों के अनुरूप कार्यान्वित किया जा सकता है। प्रचारात्मक स्तर के कार्य—(१) झोला पुस्तकालय, (२) ज्ञान रथ, (३) स्लाइड प्रोजेक्टर प्रदर्शन, टेपरिकार्ड से युग संगीत एवं युग सन्देश को जन-जन तक पहुँचाना, (४) दीवार पर आदर्श वाक्य लिखना। (५) साइकिलों वाली धर्म प्रचार पदयात्रा योजना में सम्मिलित होना। संगीत, साहित्य, कला के माध्यम से बहुत कुछ हो सकता है। साधन दान से भी अनेकों सत्प्रवृत्तियों का पोषण हो सकता है। रचनात्मक कार्यों में (१) प्रौढ़ शिक्षा—पुरुषों की रात्रि पाठशाला, महिलाओं की अपरान्ह पाठशाला (२) बाल संस्कारशाला (३) व्यायामशाला (४) स्वच्छता सम्वर्धन (५) वृक्षारोपण आदि।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुधारात्मक कार्यों में अवांछनीयता, अनैतिकता, अन्धविश्वास आदि का उन्मूलन प्रमुख है। (१) जातिगत ऊँच-नीच (२) पर्दा प्रथा (३) दहेज (४) नशेबाजी (५) फैशन के नाम पर अपव्यय, बाल विवाह, बहु प्रजनन आदि के उन्मूलन में सामर्थ्य भर प्रयत्न करना। इसके अतिरिक्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक साहित्यिक क्षेत्रों से सम्बन्धित अनेक कार्यक्रम हैं जिन्हें कार्यान्वित करने के लिये हर क्षेत्र और हर स्थिति में गुंजायश है। जिन्हें नवसृजन के लिये समय देना है, उन्हें अपनी योग्यता एवं परिस्थिति के अनुरूप कोई काम चुन या पूछ लेना चाहिये। यह सभी कार्य प्रगति प्रयास समय दान से सम्बन्धित हैं।

एक व्यक्ति का एक लाख वर्ष का समय यों सुनने कहने में बहुत अधिक प्रतीत होता है किन्तु जब सब परिजन मिल-जुल कर इसकी पूर्ति करने पर कटिबद्ध होते हैं तो हर परिजन के हिस्से में थोड़ा ही आता है।

बड़े अनुदान बड़े वरदान—फुन्सी का मवाद घरेलू सुई चुभोकर भी निकाला जा सकता है पर मस्तिष्क या हृदय में घुसी गोली को निकालने के लिये कुशल सर्जन और बहुमूल्य उपकरणों की जरूरत पड़ती है। मकड़ी का पेट एक मक्खी से भर जाता पर हाथी को मनों गन्ना रोज चाहिये। घोंघे जलाशय की तली में जा बैठते हैं पर समुद्र सोखने के लिये अगस्त्य ऋषि जैसे चुल्लू चाहिये। कुएँ से घड़ा भरकर पानी कोई भी निकाल सकता है पर स्वर्ग से गंगा का अवतरण धरती पर करने के लिये भागीरथ जैसा तप और शिव जटाओं का आधार चाहिये। वृत्तासुर वध के लिये ऋषि दधीच की ऊर्जामयी अस्थियों से वज्र बनाना पड़ा था। छोटे काम साधारण मनुष्यों की साधारण हलचलों से, स्वल्प साधनों से बन पड़ते हैं पर महान कार्यों के लिये महान व्यवस्था बनानी पड़ती है। धरती की प्यास बादल बुझाते और समुद्र की सतह यथावत् बनाये रहने के लिये सहस्रों नदियों की असीम जलराशि का निरन्तर समर्पित होते रहना आवश्यक होता है।

परिवर्तन और निर्माण दोनों ही कष्ट साध्य हैं। भ्रूण जब शिशु रूप में धरती पर आता है तो प्रसव पीड़ा के साथ होने वाला खून खच्चर दिल दहला देता है। प्रस्तुत परिस्थितियों के दृश्य और अदृश्य दोनों ही पक्ष ऐसे हैं, जिनके कण-कण से महाविनाश का परिचय मिलता है। समय की आवश्यकतायें इतनी पड़ी हैं, जिन्हें पूरा करने के लिये बहुतों को बहुत कुछ करना चाहिये। विनाश से निपटने और विकास प्रत्यक्ष करने के लिये असामान्य व्यक्तित्व, असामान्य कौशल और असीम साधन चाहिये। इतने असीम साधन जिन्हें जुटा सकना किसी व्यक्ति का समुदाय के लिये कठिन है। उस सारे सरंजाम का जुटाना मात्र परमेश्वर के हाथ है। हाँ इतना अवश्य है कि निराकार को साकार जीवधारियों में नियोजित रणनीति की ओर कौशल भरी व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है। सो भी बड़े परिमाण में ऐसे कार्यों का संयोजन तो स्रष्टा की विधि व्यवस्था ही करती है, पर उसका श्रेय श्रद्धावान साहसियों को मिल जाता है। हनुमान और अर्जुन की शक्ति उनकी निज की उपार्जित नहीं थी वे स्रष्टा का काम करते हुये उसी की सामर्थ्य को प्राप्त कर सके। अर्जुन को सारथी का यदि समर्थन न रहा होता तो महाभारत कैसे जीता जाता ? हनुमान स्वयं बलवान रहे होते तो सुग्रीव सहित ऋष्यमूक पर छिपे-छिपे न फिरते। समुद्र छलांगने, लंका जलाने, पर्वत उखाड़ने की सामर्थ्य उन्हें धरोहर में इसलिये मिली थी वह राम-काज में समर्पित हों। यदि निजी मनोवांछाओं के लिये किसी भक्त ने माँगा है तो उसे नारद मोह के समय पर मिले उपहास की तरह तिरस्कृत होना पड़ा है।

महान परिवर्तन के साथ जुड़े हुये नवसृजन का उभयपक्षीय कार्य ऐसा है, जिसे सम्पन्न किये जाने के लिये उतना पैसा चाहिये, जिसका विवरण शब्दों में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। वह जुटाया जाना ही है, जुटेगा भी।

अभीष्ट प्रयोजन की महानता को समग्र रूप से आंका जाना कठिन है। इसकी किस्तें ही शृंखला की कड़ियों की तरह प्रादुर्भूत होती हैं। प्रस्तुत संकट या संकल्प इसी प्रकार का है, जो अवतरण पर्व पर विगत बसन्त पंचमी के लिये प्रकट हुआ। उस एक को पाँच भागों की सुविधा की दृष्टि से विभाजित किया गया है। (१) एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लाख यज्ञ (२) एक लाख नर रत्न (३) एक लाख अशोक वाटिका (४) एक लाख ग्राम्य तीर्थ (५) एक लाख वर्ष का समयदान संकलन। यह पाँचों ही काम इतने भारी लगते हैं मानो शेषनाग के शिर पर धरती का बोझ लादने वाले का अनुशासन ही प्रत्यक्ष हुआ हो। यह सभी कार्य ऐसे हैं, जिन्हें मानवी सत्ता न सोच सकती है, न उसकी योजना बना सकती है और न पूरा करने का दुस्साहस ही संजो सकती है। अतिमानवी कार्य हैं, जिसे हमारे जैसा तुच्छ व्यक्ति अपने निज के बलबूते किसी भी प्रकार वहन एवं सम्पन्न नहीं कर सकता। यह परम सत्ता का कार्य है और वही बाजीगर की तरह कठपुतलियों को नचा-कुदा रही है।

अच्छा हो इस गोवर्धन को मिल-जुलकर उठाया जाये। अच्छा हो इस समुद्र-सेतु बाँधने की घड़ी में कंकड़-पत्थर ढोने मात्र से श्रेय लूटा और यशस्वी बना जाये। प्रज्ञा परिजनों के लिये इस योजना में हाथ बँटाना उनके निज के हित में है, जो खोयेंगे उससे हजार गुना अधिक पायेंगे। बीज को कुछ क्षण ही गलने का कष्ट उठाना पड़ता है। इसके उपरान्त तो बढ़ने, हरियाने और फलने-फूलने का आनन्द ही आनन्द है। वैभव ही वैभव है। स्वतन्त्रता संग्राम में जो अग्रगामी बने वे मिनिस्टर बनने से लेकर स्वतन्त्रता सेनानियों वाली पेन्शन, सम्मान सहित प्राप्त कर सके। यह अवसर भी ऐसा ही है, जिसमें ली हुई भागीदारी मणिमुक्तकों की खदान कौड़ी मोल खरीद लेने के समान है। जिसका श्रेय, यश और वैभव सुनिश्चित है, उसे हस्तगत करने में कृपणता बरतना अदूरदर्शिता भरी कृपणता से अधिक और कुछ नहीं हो सकता।

विवेक, सुयोग और सौभाग्य का चिह्न यह है कि उपर्युक्त पंच हीरकों को गले पहनने की बेला में हर उदार चेत्ता की गरदन ऊँची और आगे बढ़ी हुई हो। यह न समझा जाय कि यह संकेत आदेश किसी व्यक्ति विशेष के लिये है इसलिये उसे ही पूरा करना चाहिये। यहाँ यह समझ रखना चाहिये कि इतना बड़ा भार कोई एक व्यक्ति न तो उठा सकता है और न उसे लक्ष्य तक पहुँचा सकता है। यह व्यक्ति वस्तुतः समुदाय है, जिसे आज की स्थिति में प्रज्ञा परिवार जैसी छोटी इकाई समझा जा सकता है किन्तु अगले दिनों यह उदार चेत्ताओं की एक महान बिरादरी होगी। इस यशस्वी वर्ग में सम्मिलित होना, उसके दायित्वों में हाथ बँटाना उन बड़भागियों के लिये एक अलौकिक वरदान है जो अपने हिस्से का काम करके उपयुक्त अनुदान प्राप्त करते हैं।

प्रस्तुत पाँच सन्देश या निर्देश महाकाल द्वारा प्रेरित प्रत्येक वरिष्ठ प्रज्ञा पुत्र के लिये हैं, उन्हें अपना कर्त्तव्य करना और अधिकार पाना है। इस प्रयास के निमित्त आज का दिन ही सर्वोत्तम मुहुर्त है। विलम्ब करने या उपेक्षा बरतने पर पश्चाताप ही हाथ रहेगा। आशा की जानी चाहिये कि ऐसी भूल करते किसी प्रज्ञा परिजन को न पाया जायेगा।

युग सन्धि सन् २००० तक चलेगी। तब तक हमें स्थल या सूक्ष्म शरीर में सक्रिय रहना है। इन सौंपे गये पाँचों कृत्यों को पूरा करके रहना है। परिजन अब तक के सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों में हाथ देते, हाथ बँटाते और कदम से कदम मिलाकर चलते रहे हैं। विश्वास किया गया है कि इस अग्नि परीक्षा की घड़ी में वे साथ नहीं छोड़ेंगे, मुँह नहीं मोड़ेंगे। इस श्रेय साधना में सभी प्राणवानों की बराबर की भागीदारी रहनी चाहिये।

★ ★

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

देव संस्कृति का मेरुदण्ड वानप्रस्थ

जीवन सम्पदा का दुरुपयोग

अन्य जीव-जन्तुओं का लक्ष्य और पुरुषार्थ मात्र शरीर रक्षा एवं सुविधा तक सीमित रहता है। उन्हें न तो चेतना के स्वरूप का ज्ञान होता है और न उसके प्रति किन्हीं कर्त्तव्यों के पालन का दायित्व अनुभव होता है, पर मनुष्य के सम्बन्ध में ऐसी बात नहीं है। उसकी संरचना स्रष्टा की सर्वोत्तम कलाकृति के रूप में हुई है। शारीरिक और मानसिक ढाँचा इस स्तर का विनिर्मित हुआ है कि वह स्वल्प श्रम और समय में शरीर मात्र की उचित आवश्यकताओं को सरलतापूर्वक पूरी कर सके और बची हुई क्षमता को उन प्रयोजनों में लगा सके, जिसके लिये वह जीवन सम्पदा उपलब्ध हुई है। विश्व वाटिका को अधिक सुरम्य, सुव्यवस्थित, समुन्नत एवं सुसंस्कृत बनाना सृष्टा ने अपने श्रेष्ठ पुत्र युवराज—मनुष्य को सौंपा है और कहा है कि वह जीवन सम्पदा का सदुपयोग इसी प्रयोजन के लिये प्रधान रूप से करे। शरीर निर्वाह यदि बुद्धिमत्तापूर्वक किया जाये, तो उसके लिये स्वल्प शक्ति का नियोजन ही पर्याप्त होता रहेगा। शेष बचत से वे सभी प्रयोजन पूरे होते रहेंगे, जिनसे व्यक्तिगत अपूर्णताओं को पूरा करते हुये पूर्णता का लक्ष्य पूरा किया जा सके और साथ ही लोकमंगल के लिये बढ़े-चढ़े अनुदान प्रस्तुत कर सकना भी सम्भव हो सके। इस प्रकार स्वार्थ और परमार्थ के दोनों लक्ष्य साथ-साथ सरलतापूर्वक होते रह सकेंगे। यही है वह राह जिसे मानवी गरिमा को अनुभव करने वाले व्यक्ति को अपनाना उचित है।

इसे अज्ञान, अनौचित्य या भटकाव ही कहना चाहिये कि विचारशील होते हुये भी मनुष्य अविवेकी प्राणियों की तरह जीता है और अपनी सारी क्षमतायें, ललक एवं लिप्साओं में ही खपा देता है। सीमित वस्तुओं से निर्वाह भली प्रकार बन पड़ने पर भी उसे विलास, वैभव एवं संग्रह के लिये इतना पाने की अभिलाषा रहती है, जिसकी न आवश्यकता है और न उपयोगिता। इसी को लोभ कहते हैं। परिवार को स्वावलम्बी एवं सुसंस्कृत बनने की जिम्मेदारियाँ उस परिकर में रहते हुये सहज निभती रहती हैं, पर सोचा यह जाता है कि कुटुम्बियों के ऊपर सुविधा-सम्पदाओं का अम्बार लाद दिया जाये। उत्तराधिकार में इतना छोड़ मरा जाये, जिसे पीछे वाले बिना हाथ-पैर हिलाये सात पुश्त तक बैठे खाते रहें। उसी कुचक्र में अपने उदाहरण और परामर्श से परिजनों को भी हेय जीवन जीने के लिये प्रशिक्षित किया जाता है। इसी प्रक्रिया को मोह कहते हैं। लोभ और मोह की खाई समुद्र जितनी गहरी है। उसे पाटने के लिये इन्द्र जैसी प्रतिभा और कुबेर जितनी सम्पदा भी कम ही पड़ती रहती है। ललक-लिप्सा की आंशिक पूर्ति भी न बन पड़ने पर असंतोष ही छाया रहता है और उस उद्विग्नता में अनाचार पर उतारू होकर तृष्णायें पूरी करने में निरत होना पड़ता है। इन्हीं दोनों को भव बन्धन कहते हैं। लोभ को हथकड़ी और मोह को बेड़ी कहा गया है। इनसे बँधा हुआ प्राणी बेचैनी के अतिरिक्त और कुछ हस्तगत नहीं कर पाता। स्रष्टा के दरबार में पापों की पोटली बाँधकर उपस्थित होना पड़ता है। उस प्रश्न का उत्तर बन नहीं पड़ता, जिसमें पूछा जाता है कि जिस निमित्त मनुष्य जन्म की धरोहर सौंपी गई थी, उसका उपयोग किस प्रकार हुआ ? समुचित उत्तर न बन पड़ने पर उस दुर्गति का भाजन बनना पड़ता है, जिसे "अमानत में खयानत" करने वालों को कठोर प्रताड़ना दिये जाने का विधान है। भविष्य के लिये यह विश्वास भी उठ जाता है कि यदि फिर ऐसा ही अवसर दिया गया, तो अप्रामाणिकता की मनःस्थिति संजोये हुये व्यक्ति फिर अपनी सदाशयता का परिचय दे सकेगा। साधन रहते हुये जो कुछ नहीं कर सका, वह मरणोत्तर जीवन को साधनहीन परिस्थितियों में क्या कर सकेगा ? यही वह स्थिति है, जिसमें पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं रहता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

तीसरी एक और मूर्खता है, जिसे कहते हैं—अहंकार। किराये के घर में रहने वाला, धरोहर के रूपे में मिली हुई बौद्धिक क्षमता को जो स्व उपार्जित मान बैठता है, वह अपनी हर भली-बुरी कृति पर सभी के मुँह से प्रशंसा के शब्द सुनने के लिये आतुर रहता है। हर किसी पर अपनी सम्पन्नता और समर्थता का रौब गाँठना चाहता है। इसी ओछी मनोवृत्ति का नाम है "अहंता"। इसे भी लोभ और मोह की तरह घातक एषणाओं में गिना गया है, और अनर्थों के लिये प्रेरित करती रहने वाली विडम्बना कहा गया है।

तुच्छ होते हुये भी रावण जैसा अहंकारी बना फिरने वाला इसी व्यामोह में प्रायः ऐसे रचता रहता है, जिनका औचित्य किसी भी प्रकार विचारशीलता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। शरीर को सजाकर सुन्दर और बलिष्ठ दिखाने के लिये कितना समय, श्रम खर्च करना पड़ता है, कितना आडम्बर बनाना पड़ता है, इसे सहज ही सर्वत्र देखा जा सकता है। अमीरी दिखाने के लिये गरीबों को भी इतनी आतुरता होती है कि प्रहसनों में स्वांग भरने वाले अभिनेताओं को भी प्रायः पीछे छोड़ दिया जाता है। ठाठ-बाट जमाकर दूसरों को अपनी विशेषता से चमत्कृत करने के लिये लोग इतने आडम्बर खड़े करते हैं, जिन्हें देखकर प्रतीत होता है कि उनके लिये अमीरी प्रदर्शन करने के अतिरिक्त और कुछ भी महत्त्वपूर्ण हो सकता है—यह सूझता ही नहीं। अपव्यय के अगणित स्वांग इसीलिये खड़े किये जाते हैं कि लोग इस भ्रम में पड़ सकें कि इनके पास अपार सम्पदा है। विवाह शादियों में घर फूँककर तमाशा देखने वाले प्रायः सभी इसी निमित्त पैसे की होली जलाते हैं कि बिरादरी वालों में उनकी नाक कछुये से भी अधिक लम्बी दीख पड़े। मुखिया बनने, ऊँची पदवी पाने, साधारण जनों की तुलना में अपने को अधिक बड़ा सिद्ध करने के लिये जो प्रपंच रचने पड़ते हैं, उन्हें देखकर लगता है कि अहंकार की वितृष्णा, लोभ और मोह से भी बढ़ी-चढ़ी है। उन दो में कुछ थोड़ा-बहुत हाथ तो लगता है, पर अहंकारी तो आदि से अन्त तक मूर्खता से घिरा और अपव्यय से बँधा रहता है। चाटुकार उसे बुरी तरह निचोड़ते हैं। शेखी बघारने वाला विचारशील वर्ग में ओछा, बचकाना और भ्रमित स्तर का गिना जाता है। स्वयं को भी इस प्रपंच में इतना अधिक खटाता रहता है कि उस हानि की तुलना नहीं की जा सकती। अहंकार की पूर्ति के लिये जितना कुछ करना पड़ता है, वह अपव्यय के खाते तो जाता ही है, साथ ही मन को मलीन बनाने और ईर्ष्यालुओं, विद्वेषियों, विरोधियों की संख्या बढ़ाने की हानि भी सहन करता रहता है।

जिस सुर दुर्लभ मनुष्य शरीर को स्वयं पार होने और दूसरों को पार करने वाले प्रयोजनों में लगाकर इसी जीवन में स्वर्णोपम दृष्टिकोण का आनन्द लेने और जीवन मुक्त जैसी निर्द्वन्दता प्राप्त करने का लाभ लिया जा सकता था, उसे लोभ, मोह और अहंकार के लिये बेतरह खर्च कर दिया जाता है। नुकसान में तो आलसी और प्रमादी भी रहते हैं, पर उन्हें अपंग, अनगढ़ों की श्रेणी में गिनकर दया का पात्र भी समझा जा सकता है, किन्तु उहें क्या कहा जाये, जो समझदार होते हुये भी नासमझी के तीन-तीन लबादे ओढ़ते हैं और उस भारी भरकम वजन को ठीक तरह वहन न कर पाने पर रोते, कलपते और दुर्भाग्य को कोसते रहते हैं।

विपत्ति कहीं बाहर से आई हो, तो उसके लिये किसी को सहायता के लिये भी पुकारा जा सकता है, पर उस मूर्खता के लिये क्या कहा जाय, जिसने स्वयं ही सड़े कीचड़ के दलदल में घुसते-घुसते दुर्गति की चरम सीमा तक जा पहुँचने की ठान-ठानी है। सही आवश्यकता की पूर्ति के लिये हर किसी को सुविधायें प्राप्त हैं। शरीर यात्रा के लिये वायु, जल और आहार की आवश्यकता पड़ती है। हवा सहज ही उपलब्ध रहती है। पानी थोड़े हाथ-पैर हिलाकर प्राप्त किया जा सकता है। पेट भरने के लिये जितने आहार की आवश्यकता है, उतना औसत मनुष्य एक घण्टे के श्रम में कमा सकता है। तीन आवश्यकताओं की आम चर्चा होती रहती है—रोटी, कपड़ा और मकान। इन सभी को यदि औचित्य की सीमा में उपलब्ध करना पर्याप्त समझा जाये तो अपने और अपने सीमित कुटुम्बियों के लिये इतना पुरुषार्थ पर्याप्त हो सकता है, जिसके उपरान्त शक्तियों का विपुल भण्डार बच सके और मानवी गरिमा के अनुरूप प्रयोजनों में लगाने वाले महामानवों की पंक्ति में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बैठ सकने में सफल हो सके। साधनों की कमी रहने पर भी ऋषि कल्प आप्तजनों ने इतना कुछ एक ही जीवन में पूरा कर दिखाया, जिसका लेखा-जोखा लेने पर प्रतीत होता है कि उनने आत्म-संतोष, जन सम्मान और दैवी अनुग्रह के तीनों वरदान प्रचुर परिमाण में उपलब्ध कर दिखाये।

दुरुपयोग से अमृत भी विष बन जाता है। सदुपयोग से मल-मूत्र भी सोना उपजाने वाली खाद के रूप में श्रेय अर्जित करते हैं। जीवन का सदुपयोग बन पड़े तो वह जीने वाले को धन्य बना सकता है और उसके सम्पर्क में आने वाले भी चन्दन वृक्ष के समीप उगे अन्य पौधों की तरह गौरवान्वित हो सकते हैं, पर जहाँ दुरुपयोग के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं, वहाँ कोयले की दलाली में काले हाथ होने के अतिरिक्त और क्या कुछ पल्ले पड़ने वाला है।

भोग योनि वाले अन्य जीव-जन्तु अपना प्रारब्ध भोगकर जहाँ से आये थे, वहाँ चले जाते हैं। साथ में नई पाप पिटारी लाद कर नहीं ले जाते। जितने दिन जीते हैं, प्रकृति की गोद में स्वच्छन्दतापूर्वक दिन बिताते हैं, पर मनुष्य है, जो निरन्तर चिन्तित, क्षुब्ध, अशान्त और आकुल-व्याकुल पाया जाता है। इसे आश्चर्य भी कहा जाना चाहिये और दुर्भाग्य भी, कि इतनी विपुल साधन-सम्पदा से भरा-पूरा मनुष्य जन्म पाने वाला प्राणी उपलब्ध हीरक हार को कौड़ी मोल बेचकर खाली हाथ विदा होता और भविष्य के लिये पश्चाताप भरी प्रताड़ना और दुर्गति ही साथ लिये जाता है। ऐसा अनर्थ क्यों होता है कि सृष्टि के समस्त प्राणियों में मुकुटमणि समझा जाने वाला प्राणी दिव्य उपलब्धियों का दुरुपयोग करके मात्र घाटा और संकट ही उठाये, जबकि सामान्य क्षमताओं वाले प्राणी प्रकृति के अनुरूप रहकर इस सुरम्य संसार में क्रीड़ा कल्लोल करते और दिन बिताते हैं। इस विपर्यय के मूल में उपलब्धियों का दुरुपयोग ही एक मात्र कारण है।

वैभव को सुयोग कहना भूल है। सौभाग्य का सीधा अर्थ है—सदुपयोग का निर्धारण और उसे पूरा कर दिखाने का कौशल। इसके लिये आवश्यक समझदारी हर विचारशील में होनी चाहिये अन्यथा धन, सन्तान जैसी मनोकामनाओं को पूरी करने वाले अपेक्षाकृत अधिक त्रास सहते देखे गये हैं। धन का अभाव या अपव्यय अपने-अपने ढंग की विपत्तियाँ उत्पन्न करता रहता है। धनी दुर्व्यसनों से, अहंकार से, चाटुकारों से, ईर्ष्यालुओं से घिरते और विलाप करते देखे गये हैं। संतान की संख्या बढ़ा लेने और उन्हें सुसंस्कृत न बना सकने पर उन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिनसे बिना सन्तान वाले ग्रसित नहीं होते। दुरुपयोग करने पर माचिस भयंकर अग्निकाण्ड का कारण बनती और सुई जैसी उपयोगी वस्तु से गहरा घाव होने की पीड़ा सहनी पड़ती है। मनुष्य जीवन प्राप्त होना सचमुच ऊँचे स्तर का सुयोग है। इसे दैवी अनुग्रह का उच्चस्तरीय उपहार भी कह सकते हैं। इतने पर भी यदि उसका दुरुपयोग लोभ, मोह और अहंकार की पूर्ति में ही होता रहे, तो समझना चाहिये कि दुर्बुद्धि की चरम सीमा हो गई। अपनी ही समझ साथ न दे, तो कल्पित मृग तृष्णा में भटककर हिरन की तरह खीज, निराशा और प्यास की पीड़ा सहते-सहते प्राण देना पड़े, तो इसके लिये अन्य किसी को दोष देते कैसे बन पड़े ? मनुष्य जीवन यदि निरानंद, नीरस, निष्ठुर और हेय प्रयोजनों में व्यतीत हो चले तो इसके लिये अपने अविवेक के अतिरिक्त और किसी को क्यों, कैसे कोसा जाये ?

शिक्षा ही नहीं विद्या भी

जिन बालकों की देखभाल, साज-संभाल अभिभावक ठीक प्रकार करते हैं, उनकी शारीरिक, मानसिक क्षमता सुविकसित होती रहती है, जिनकी ओर से उपेक्षा बरती जाती है, वे दुर्बल और अनगढ़ रह जाते हैं। जन समुदाय भी एक प्रकार का बालक है। अपने बलबूते तो वह प्राणी स्तर का निर्वाह ही उचित-अनुचित तरीकों से कर सकता है। उसे समुन्नत और सुसंस्कृत बनाने के लिये वरिष्ठ प्रतिभाओं की आवश्यकता पड़ती है, ऐसी वरिष्ठ जो न केवल प्रेरणाप्रद परामर्श दे सकें, वरन् उँगली पकड़कर छोटे बच्चे की तरह चलने दौड़ने का अभ्यास भी करा सकें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहना न होगा कि शिक्षण और अनुभव के सहारे मात्र सम्पन्नता और समर्थता ही अर्जित की जा सकती है। इससे ऊँचे उठकर सुसंस्कारिता को गरिमामयी आंका जाता है। इसके लिये न केवल अपना उत्साह, साहस काम करता है, वरन् ऐसा वातावरण भी अभीष्ट होता है, जिसमें व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाने वाले तत्वों का बाहुल्य हो। मोती समुद्र की गहराई में ही उपलब्ध होते हैं और ब्रह्मकमल पर्वत की ऊँची चोटियों पर ही खिलते हैं। उन्हें इच्छानुसार कहीं भी पाया नहीं जा सकता। जीवित तो कोई किसी भी परिस्थिति में रह सकता है। इसके लिये अभ्यास और स्वभाव काम दे जाता है, पर उत्कृष्टता को आरोपित एवं विकसित करने के लिये दक्ष प्रशिक्षितों की आवश्यकता पड़ती है। वह दक्ष भी ऐसे, जो अपने जीवन को मार्गदर्शक की कसौटी पर कसें एवं खरा सिद्ध करने में सफल हो सकें।

अनगढ़ों को सुघड़ बनाना उच्चस्तरीय कलाकारिता है। सरकस में चित्र-विचित्र काम करने वाले जानवरों को प्रशिक्षित करना हर किसी का काम नहीं है। उसके लिये साहस और कौशल के धनी "रिंग मास्टरों" की आवश्यकता होती है। पौधे उगाने का काम तो कोई भी किसान-माली कर सकता है, पर उद्यान के नयनाभिराम बना देना उन विशारदों का काम है, जो काटने-छाँटने और कलम लगाने से लेकर सम्भालने-सजाने की प्रवीणता में भी पारंगत हों। उनका अभाव रहे, तो फिर समझना चाहिये कि हरितमा के नाम पर खर-पतवार और झाड़-झंखाड़ ही उग सकेंगे। पार्कों की तरह सुरम्य शोभायमान बनाने के लिये अनुभवी वन विज्ञानियों का कौशल ही काम देता है।

मनुष्यों का समुदाय भी अन्य प्राणियों की तरह प्रकृति व्यवस्था के आधार पर जन्मता और बढ़ता रहता है। वनवासी कबीले भी अपनी जनसंख्या बनाये रहते और उसे बढ़ाते भी रहते हैं। इसमें मनुष्य का, प्रकृति का कौशल काम करता है, उस प्रकृति का जो कृमि-कीटकों को भारी संख्या में उत्पन्न करती रहती है। कहते हैं कि एक वर्ग किलोमीटर भूमि में इतने कृमि-कीटक निवास करते हैं, जितनी कि संसार भर में मनुष्यों की आबादी है। उतने की उत्पादन पोषण व्यवस्था बनाने वाली प्रकृति यदि मनुष्य वर्ग के माध्यम से आबादी उगाती और बढ़ाती हो, तो आश्चर्य ही क्या है ? जनसंख्या की अभिवृद्धि का श्रेय उनके जन्मदाताओं को भी नहीं दिया जा सकता, क्योंकि वे तो प्राणि जगत के अस्तित्व की रक्षा के लिये चल रहे प्रकृति कौशल की कठपुतली मात्र बनकर नियति से जुड़े रहते हैं। भूख की तरह प्रजनन की उमंग भी इस सृष्टि की रहस्यमयी जादूगरी है, जिसके कारण जीवधारियों को आहार ढूँढ़ने से लेकर प्रजनन कौतुक तक के लिये भी प्रवृत्त रहना पड़ता है। किस देश, समाज में कितनी जनसंख्या की गणना होती है, इसका कोई विशेष महत्त्व नहीं। बहुसंख्यक होने के कारण मक्खी-मच्छर अपनी उपयोगिता या विशिष्टता कहाँ सिद्ध कर पाते हैं ? संसार में अनगढ़ और अस्त-व्यस्त ही तो बिखरे पड़े हैं। अधिकांश भूखण्ड खाई-खन्दकों, टीलों, और कंकड़ पत्थरों से ही पटा पड़ा है। भूमि को समतल और उर्वर बनाने में तो मनुष्य की सूझ-बूझ और श्रम पुरुषार्थ ने चमत्कार दिखाया है।

मनुष्य समुदाय भी प्रकृतितः वनचरों की श्रेणी में ही गिना जा सकता है। डार्विन ने तो उसे बन्दर की औलाद तक सिद्ध किया है। अपराध शाखा में निरत कार्यकर्त्ताओं की दृष्टि में लोग प्रायः अनैतिक और असंस्कृत होते हैं और कुकर्म स्तर के क्रिया-कलापों में निरत रहते हैं। यदि ऐसा न होता, तो पुलिस, कचहरी, कानून, जेल आदि की क्या आवश्यकता पड़ती ? जाँच-पड़ताल के लिये इतने अधिक निरीक्षण क्यों नियुक्त करने पड़ते ? अध्यापकों, विद्यालयों, चिकित्सकों और अस्पतालों की आवश्यकता भी इसलिये पड़ती है कि लोग आवश्यक ज्ञान और स्वास्थ्य संरक्षण जैसे सामान्य क्रियाकलाप भी अपने बलबूते उपलब्ध नहीं कर पाते। इस असमर्थता के कारण मनुष्य को मूलतः अनगढ़ भी कहा जा सकता है। मौलिक सामर्थ्य की दृष्टि से वह अगणित जन्तुओं की तुलना में कहीं अधिक असमर्थ है। बन्दर की तरह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उँगलियों पर उछलना, खरगोश की तरह दौड़ना, गधे की तरह भार वहन करना तक तो उससे बन नहीं पड़ता। बतक की तरह तैरना और कबूतर की तरह उड़ना तक तो उसे आता नहीं। फिर भी मनुष्य-मनुष्य है। उसने सृष्टि का मुकुटमणि बनने में सफलता पाई है। इसमें उसकी मौलिक प्रतिमा ही सब कुछ करने में समर्थ नहीं हुई है। शिक्षण का वरदान ही है, जिसने उसे कहीं से कहीं पहुँचा देने में सफलता पाई है।

बोलना-चालना, रहन-सहन, खाना-पहनना तक अभिभावक एवं परिवार वाले ही सिखाते हैं। इस सहायता के बिना एकाकी स्थिति में तो उसे गूँगा-बहरा और बकरे-सियारों की तरह गया-गुजरा जीवन ही व्यतीत करना पड़ता है। शायद बन्दर से अधिक वह अपनी कुशलता प्रदर्शित न कर पाता, क्योंकि वंशानुक्रम के साथ चलते आने वाले प्रगति प्रवाह में स्वावलम्बी जीवन के लिये जो आवश्यक है, उसमें से भी एक बड़ा अंश उसने गँवाया या भुला दिया है।

शिक्षण सुविधा का ही चमत्कार है, जिसने क्रमशः मनुष्य को अधिक प्रबुद्ध और प्रवीण बनाया है। इसी के अभाव में अभी तक वनवासी कबीले आदिम काल से मिलती-जुलती परिस्थितियों में रहने के लिये बाधित हो रहे हैं। जहाँ जितने प्रभावी प्रशिक्षण की व्यवस्था बन पड़ी है, वहाँ प्रगति की उतनी ही अधिक सम्भावना बनती और बढ़ती चली गयी है। समुन्नत वर्ग को इसी सुयोग को उपलब्ध कर सकने वाला सौभाग्यशाली कहा जा सकता है।

उत्कर्ष की योजना बनाने वाले गरीबी हटाओ के साथ-साथ दूसरी जिस योजना को प्रमुखता देते हैं, उसे शिक्षा बढ़ाओ के रूप में प्रमुखता दी गयी है। जीवनयापन के सुविधा साधनों की जितनी आवश्यकता है, उतनी ही यह भी अभीष्ट है कि व्यक्ति साक्षर बने और शिक्षा के उस क्षेत्र में प्रवेश करे, जो संसार, समाज, व्यक्ति, साधन और प्रचलन को प्रभावित करता हो, उस स्तर तक पहुँचने में सहायता करता हो, जिसे सम्मान और संतोषजनक स्थिति कहा जा सके। बिना साक्षरता के मात्र अनुभव और प्रचलन के सहारे अति सीमित ही जाना जा सकता है और वह इतना भी नहीं होता कि भटकावों से बचकर सीधे रास्ते चलने तक के लिये अभ्यास कर सके। निर्वाह के लिये जिस प्रकार आजीविका है, उसी प्रकार कौशल को विकसित करने के लिये शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। इस तथ्य को समझते हुये सरकारी और गैर-सरकारी तन्त्र इस बात के लिये प्रयत्न करते रहते हैं कि आजीविका उपार्जन की तरह व्यक्ति को शिक्षित एवं सुयोग्य बनने का भी अवसर मिलता रहे।

यह सामान्य प्रशिक्षण विद्या है, जिसके आधार पर शारीरिक निर्वाह और बौद्धिक कौशल उपलब्ध करके लोग दरिद्रता और अनगढ़ता से ऊँचे उठकर सुविधाजनक जीवन जी सकें। जिओ और जीने दो की उक्ति को चरितार्थ कर सकें।

शिक्षा के मन्दिर कहे जाने वाले विद्यालयों में बहुत कुछ काम की बातें बताई जाती हैं। भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, स्वास्थ्य आदि के सम्बन्ध में वहाँ बहुत कुछ जानने को मिलता है। नागरिकता, सामाजिकता आदि के सिद्धान्त भी समझाये जाते हैं। अनेक कलायें और विद्यायें उन्हीं शिक्षण केन्द्रों से हस्तगत होती हैं। डॉक्टर, इन्जीनियर, वैज्ञानिक, कलाकार, व्यवस्थापक स्तर की अनेकों कुशलतायें प्रशिक्षण केन्द्रों से ही सीखकर अधिक उपार्जन करने, अधिक कौशल दिखाने में लोग समर्थ होते हैं। यदि शिक्षा व्यवस्था न बन पड़े, तो लोग नर-पशु स्तर का जीवनयापन कर सकने तक सीमित रह सकेंगे।

यह प्रत्यक्ष प्रयोजनों में काम आने वाली विद्याओं का प्रसंग हुआ। यह आवश्यक तो है, पर पर्याप्त नहीं। मानवी गरिमा के अनुरूप संतोष एवं शान्ति के साथ जीवन-यापन सम्भव हो सकता है। यह आत्मिक क्षेत्र है, जिसका स्वरूप, गौरव, निर्वाह एवं प्रयोग बहुत कम ही लोग जान पाते हैं। फलतः वे शिक्षा और सम्पन्नता रहते हुये भी ऐसी गतिविधियाँ अपनाते हैं जिनके कारण अपने को विक्षोभ में और सहचरों को विग्रहों में डूबा रहना पड़े। यही है वह केन्द्र बिन्दु, जिसके कारण व्यक्ति प्रामाणिकता, प्रतिभा और प्रखरता का धनी बनता है, स्वयं समुन्नत रहकर सम्पर्क वालों को सुविकसित बनाने में असाधारण योगदान करता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म की परिभाषा इन दिनों फूहड़ एवं उपहासास्पद समझी जाने लगी है। देवी-देवताओं की उल्टी-सीधी मनुहार करके चित्र-विचित्र मनोकामनाओं की पूर्ति करा लेने की आकांक्षा संजोये रहना आज के अध्यात्म का बहुचर्चित स्वरूप है। इसके आगे वाले कल्पनाशील स्वर्ग और मुक्ति की उड़ानें पूजा-पाठ के कृत्या-कृत्यों के आधार पर संजोते रहते हैं। कोई देवता के साथ व्यक्तिगत घनिष्ठता जोड़ने और उस आधार पर प्रयत्नसाध्य कार्यों को आनन-फानन में पूरा करा लेने की भी कइयों की मान्यता होती है। यह सब पाने के लिये उन्हें इतना ही पर्याप्त लगता है कि कुछ कर्मकाण्डों की चिन्ह-पूजा करके सस्ते मोल, बहुमूल्य प्रयोजनों को सहज पूरा कर लिया जाये।

इन दिनों इसी जाल-जंजाल में फँसकर अध्यात्म दर्शन का भाँड़ा स्वरूप जहाँ-तहाँ दृष्टिगोचर होता है। इन मान्यताओं के जाल-जंजाल में उलझे हुये लोग आशा-निराशा के झूले में झूलते हुये संयोग के अनुसार कोसते और सराहते रहते हैं, पर वास्तविकता दूसरी ही है। अध्यात्म एक ऐसा जीवन दर्शन है, जिसे सही रूप में जानने-अपनाने पर उस परिस्थिति और मनःस्थिति को सुनिश्चित रूप से उपलब्ध किया जा सकता है, जो व्यक्तित्व को सर्वांगपूर्ण सुव्यवस्थित, समुन्नत एवं सुसंस्कृत बनाती है। इसके अपने सिद्धान्त और सफलतापूर्वक व्यवहार में उतारे जाने योग्य निर्धारण हैं। उनका बौद्धिक स्वरूप तो उच्चस्तरीय स्वाध्याय और सत्संग के आधार पर समझा जा सकता है। भ्रान्तियों का निवारण हो सकता है। इतने पर भी एक और आवश्यकता शेष रह जाती है कि आदर्शों को व्यवहार में उतारने के लिये प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किये जायें। गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित व्यक्तित्व को परिष्कृत करने के लिये जो चिन्तन, चरित्र और व्यवहार अभीष्ट है, उसकी प्रक्रिया को अन्तराल की गहराई में प्रविष्ट करा सकने का सुनियोजन ही अध्यात्म है। इसे शिक्षा का उच्चस्तरीय स्वरूप माना और 'विद्या' कहा जाता है। 'विद्या' अर्थात् जीवन कला-संजीवनी विद्या। इसे सिखाने के लिये जो तन्त्र समर्थ हो, समझना चाहिये कि उसने व्यक्ति निर्माण का उत्तदायित्व उठाया। मनुष्य यदि समग्र व्यक्तित्व का धनी हो, समझना चाहिये कि उसने अपने भीतर सोये हुये विभूतियों के अजस्र भण्डार की खोज निकाला और उससे निरन्तर लाभान्वित होते रहने का राजमार्ग प्राप्त कर लिया।

मनुष्य की मूलभूत सत्ता आत्मा है, जिसका स्वरूप ज्ञान, श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा का प्रत्यक्ष दर्शन करते हुये किया जा सकता है। आस्था, मान्यता, भावना, विचारणा की वह परिपक्व स्थिति परिष्कृत आत्मा ही है, जो क्रिया-कलापों में देवोपम उत्कृष्टता का समावेश कर सके। इसे पाने के उपरान्त और कुछ पाना शेष नहीं रह जाता। जो इस लक्ष्य तक लोक मानस को विकसित एवं प्रशिक्षित कर सके, समझना चाहिये कि वही सच्चे अर्थों में पुरोहित है। व्यक्ति और समाज के उत्कर्ष के श्रेय साधक भी ऐसे पुरोहित ही होते हैं। विद्या उन्हीं के द्वारा सुविस्तृत और फलित होती है।

सद्ज्ञान सम्पदा का अभाव

श्रुति वचन है—"विद्याऽमृत मश्नुते", अर्थात् विद्या से अमृत की प्राप्ति होती है। अमृत अर्थात् वह तत्व, जिसे पाकर मरना न पड़े। क्या ऐसी अद्भुत वस्तु का प्राप्त हो सकना सम्भव है ? इसका उत्तर "हाँ" में दिया जा सकता है और कहा जा सकता है कि जिसे यह तत्व उपलब्ध करना हो, तो उसे "विद्या" की प्राप्ति करनी चाहिये।

यहाँ विद्या का तात्पर्य साक्षरता पर अवलम्बित भौतिक जानकारियों तक सीमित नहीं है। उसे संसार के स्वरूप और व्यवहार तक भी सीमित नहीं किया जा सकता। उस स्तर की पढ़ाई तो स्कूलों में चलती है और उसे जानकार अध्यापक अपने छात्रों को सिखाते भी रहते हैं। 'विद्या' उस तत्वदर्शन से अवगत कराती है, जो व्यक्ति की चेतना-परतों का स्वरूप समझाती और उन्हें परिष्कृत करने में भी सहायता करती है। संक्षेप में इसे दृष्टिकोण का परिष्कार भी कह सकते हैं और जीवनचर्या का सर्वतोमुखी सुनियोजन भी। यही संजीवनी विद्या है। अमृत की चर्चा भी इसी प्रसंग में होती है, जिसमें जीवन के अन्तराल को अन्तःकरण को उत्कृष्टता के साथ जोड़ने में सफलता प्राप्त कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ली, समझना चाहिये कि अमृतत्व का अदृश्य स्वरूप चेतना में समाविष्ट करने का सुयोग-सुअवसर मिल गया। दैवी अनुग्रह का ईश्वर दर्शन का ब्रह्म निर्माण का स्वरूप भी यही है। इसी को तत्व-वेत्ताओं ने अनेक प्रकार के अलंकारों से सुसज्जित करके वर्णन, विवेचन किया है।

शरीर को संसार के प्राणियों और पदार्थों के साथ किस प्रकार रखना चाहिये ? इसकी जानकारी करना शिक्षा का काम है। अध्यापक और शिक्षालय इसी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। आरम्भिक दृष्टि से उसकी आवश्यकता भी है और उपयोगिता भी, किन्तु समझा जाना चाहिये कि लौकिक जानकारियों की अभिवृद्धि करने वाली शिक्षा शरीर यात्रा में एक सीमा तक प्रशिक्षित करने के काम ही आती है। इसलिये उसे एक पक्षीय या अधूरा माना जाता है। वह प्रायः बहुज्ञ और अधिक उपार्जन में समर्थ बनाकर ही अपनी सीमा पूर्ण कर लेती है।

विद्या प्राप्त करना इसलिये आवश्यक है कि चेतना को सुसंस्कृत बनाने में उसकी अनिवार्य आवश्यकता होती है। व्यक्ति वस्तुतः आत्मा है। अन्तःकरण उसका क्षेत्र है। इसके उच्चस्तरीय बनने पर ही चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में शालीनता का समावेश होता है। चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को देवोपम बनाने में विद्या का प्रभाव और दबाव ही काम आता है। यदि इस लाभ से लाभान्वित हुआ जा सके, तो व्यक्तित्व का वह स्वरूप निखर कर सामने आता है, जिसके प्रभाव से अन्तरंग और बहिरंग क्षेत्रों में आनन्द एवं उल्लास बिखरने वाले प्रकाश को प्रज्ज्वलित हुआ देखा जा सके।

वैभव का अपना महत्त्व है, इसलिये उसका पथ प्रशस्त करने वाली शिक्षा को भी आवश्यक माना गया है, पर इतने से यह सम्भव नहीं कि आत्मा के साथ जुड़ी हुई विभूतियों को भी उपलब्ध किया जा सके, उन्हें प्रसुप्त स्थिति से जगाकर जागरूक और पुरुषार्थ परायण बनाया जा सके। इसके लिये उस उच्चस्तरीय विवेक को जागृत करना होता है, जिसे विद्या के नाम से जाना, सराहा और अमृतोपम कहकर उसके साथ जुड़ी सम्भावनाओं से अवगत कराया जाता है।

शिक्षा की तरह विद्या की प्राप्ति में भी शिक्षार्थी की उत्कण्ठा और आस्था तो आवश्यक है ही, पर जरूरत इस बात की भी है कि उस प्रयोजन के लिये सही मार्गदर्शक मिल सके। उनका प्रायः अभाव ही पाया जाता है, कारण है कि वह कार्य मात्र परामर्श से बन नहीं पड़ता। उसके लिये ऐसे प्रशिक्षक चाहिये, जिनने उस प्रसंग का स्वयं अभ्यास किया हो, जिसे दूसरों को हृदयंगम कराया जाना है। संगीत पढ़ाने वाला यदि स्वयं गाना-बजाना न जानता हो और मात्र उसका वर्णन-विवेचन भर प्रस्तुत करता हो तो इस आधार पर शिक्षण सम्भव नहीं हो सकता। जानकारियों को तो अध्ययन परामर्श के माध्यम से भी उपलब्ध किया जा सकता है, पर जहाँ तक स्वभाव, अभ्यास का सम्बन्ध है, वहाँ तक उसके लिये अनुकरण की आवश्यकता पड़ती है। साँचे के अनुरूप ही उपकरण औजार, खिलौने आदि ढाले जाते हैं। जीवनचर्या में उत्कृष्टता का समावेश ऐसा कार्य है, जिसे उन्हीं के द्वारा सीखा जा सकता है, जो उस तरह का प्रयोग-परीक्षण अपने जीवन क्रम में सफलतापूर्वक उतार चुके हैं। अखाड़े में अभ्यास करने वाले युवकों को पहलवान बना सकना मात्र दाँव-पेच जानने वाले उस्ताद के लिये ही सम्भव होता है। अन्यान्य प्रकार के शिल्प कौशल भी प्रवीण अध्यापक ही नये छात्र को सिखा सकने में समर्थ होते हैं।

पतन का मार्ग सरल है। किसी वस्तु को ऊपर से नीचे घसीट लाने का कार्य पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति ही निरन्तर करती रहती है। पानी ढलान की ओर सहज, स्वाभाविक रूप से बहने लगता है। जन्म-जन्मान्तरों के संचित कुसंस्कार हर किसी को पाशविक प्रवृत्तियाँ अपनाने के लिये उकसाते रहते हैं। लोक प्रचलन भी ऐसे हैं, जिसमें अवांछनीयताओं का ही बाहुल्य पाया जाता है। उनका आकर्षण उत्तेजना दुष्प्रवृत्तियों की दिशा में ही धकेलता है। यौन कर्म प्राणियों को प्रकृति ही सिखा देती है, पर यदि आदर्शवादी सत्प्रवृत्तियों को स्वभाव में उतारना हो, तो उसके लिये स्वाध्याय, सत्संग, चिन्तन-मनन ही नहीं, उपयुक्त मार्गदर्शक और प्रत्यक्ष उदाहरण भी सामने होने चाहिये। इन्हें जुटा सकने वाले ही उत्कर्ष, अभ्युदय की दिशा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में बढ़ पाते हैं। चिरस्थायी, व्यापक और सर्वतोमुखी प्रगति के लिये इस सुयोग की व्यवस्था होनी ही चाहिये। इस प्रयास-अभ्यास को जीवन-साधना के नाम से जाना जाता है। इसी समग्र मार्ग को अपना सकने पर व्यक्तित्व निखरता और प्रगति का पथ प्रशस्त होता है।

कठिनाई एक ही है कि इस प्रकार के अध्यापकों का इन दिनों बुरी तरह अभाव हो गया जो उच्चस्तरीय सिद्धान्त और व्यवहार अपने आप में समन्वित करने के उपरान्त दूसरों को भी अपने चुम्बकत्व से आकर्षित कर सकें। जलते हुये दीपक ही अपने निकटवर्ती बुझे दीपकों को प्रकाशवान बनाने में सफल, समर्थ हो सकते हैं।

दूसरों को ऊँची बातें कहना अति सरल है। पुस्तकों की खोज-बीन कर ऐसे प्रवचन आसानी से किये जा सकते हैं। किसी के कथन को नोट करके उसे दुहराते रहने का काम ऐसा है, जिसे रटन्त के अभ्यासी तोते भी कर सकते हैं। प्रवचन की, भाषण-परामर्श की कला तो अब असंख्यों का व्यवसाय बन गई है। स्कूल-कॉलेजों में 'लेक्चररों' की नियुक्ति होती है। इस योग्यता के प्रशिक्षित अनेकों नौकरी की तलाश में रहते हैं। मजमा लगाकर अपने वाक्-चातुर्य के आधार पर भीड़ जमा कर लेने और घेरा बनाकर खड़े हुये लोगों की जेब से पैसा निकाल लेने वाले बाजीगर गली-चौराहों पर अपना कौशल दिखाते और आजीविका कमाते देखे जाते हैं। वकालत के पेशे में तो वाचालता ही प्रमुख है। दलाली के धंधे में ऐसे ही लोग सफल होते हैं। दुकानों में काम करने वाले सेल्समैनों को, बीमा एजेण्टों को इस कुशलता के आधार पर वेतन मिलते हैं। ऐसे ही कुछ अच्छे अभ्यास करके धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र में मुखरता के अभ्यस्त व्यक्ति भी अच्छे भाषण कर्त्ता—कथावाचक बन सकते हैं। इतने पर भी उनके द्वारा उस प्रयोजन की सिद्धि नहीं हो सकती, जिसकी कि आशा-उपेक्षा की जाती है। वक्ताओं और लेखकों में यदि व्यक्तित्व सम्पन्नता रही होती तो लोगों के व्यक्तित्व न जाने कितने ऊँचे उठ गये होते और उनके द्वारा कब का उपयुक्त वातावरण बन सकना सम्भव हो गया होता। पर ऐसा होता कहाँ है ? आदर्शवादी प्रतिपादनों को सुनने और पढ़ने में भी लोग उपेक्षा दिखाने लगे हैं। कहते हैं—"थोथा चना बाजे घना।" जोर-जोर से बजने वाले ढोल भीतर से पोले होते हैं। पर उपदेश कुशल होना एक प्रकार का व्यंग है। मंच पर उचकते-मचकते रहने वाले नेताओं को 'अभिनेताओं' की उपमा दी जाती है। इस प्रकार लेखनी और वाणी की अजस्र समझी जाने वाली शक्ति भी अब एक प्रकार से निरर्थक, निष्फल ही सिद्ध होती रहती है। उसे कौतुक-कौतूहल मान-समझ कर लोग उपेक्षा करते और ऐसे समारोहों में अनुपस्थित रहते ही पाये जाते हैं। अब तो जुलुसों में, रैलियों में, प्रदर्शनों में, सभा-समारोहों में विचारशील जनता को एकत्रित कर सकना प्रायः अति कठिन होता जाता है। ठाली बैठे लोग ही प्रायः ऐसे आयोजनों में इकट्ठे होते देखे जाते हैं या फिर उन्हें सफल बनाने के लिये कोई बड़ा-सा कौतुक-कौतूहल खड़ा करने में प्रचुर धन व्यय करना पड़ता है। यही है आज के प्रवचन-परामर्श क्षेत्र की वास्तविकता। लेखनी के सम्बन्ध में भी यही बात है। सिद्धान्त समर्थक पुस्तकों की बाजार में सबसे कम बिक्री है। इस प्रकार के साहित्य सन्दर्भ में जन साधारण की उपेक्षा ही बढ़ती जाती है। कारण एक है कि लेखनी और वाणी के माध्यम से मार्गदर्शन करने वालों की नीयत पर सर्वत्र सन्देह किया जाता है। उनकी कथनी और करनी में अन्तर पाया जाता है। इस अन्तर को देखते ही सर्वसाधारण के मन में अश्रद्धा उत्पन्न होती है। वे अनुमान लगाते हैं कि यदि प्रतिपादन उपयोगी और व्यावहारिक रहा होता, तो उसे यह प्रतिपादनकर्त्ता स्वयं अपने जीवनक्रम में क्यों न उतारता ? यदि वह लाभदायक था, तो इसे स्वयं कर दिखाने में चूक क्यों करता ? यही एक कारण है, जिससे संजीवनी विद्या के क्षेत्र में कारगर अध्यापन कर सकने वालों की एक प्रकार से शून्य स्तर की अभावग्रस्तता सामने आ खड़ी हुई है। उसके अभाव से जनमानस में संकीर्ण स्वार्थपरता ने बुरी तरह अड्डा जमा लिया है। लोग चतुरता-चालाकी को ही सफलता का बड़ा आधार मानने लगे हैं। धर्मोपदेशकों को उपहासास्पद बनते और क्रियाकुशलों को सफल सम्पन्न होते देखकर यही अनुमान लगाया जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है कि स्वार्थ सिद्धि ही व्यवहारिक है, भले ही वह छल-प्रपंच का आश्रय लेकर ही हस्तगत क्यों न की गयी हो।

आज का सबसे बड़ा संकट यही आस्था संकट है। जिसके चक्रव्यूह में फँसकर जन समुदाय का स्तर क्रमशः नीचे की ओर ही गिरता-धँसकता ही जाता है। एक-दूसरे को ठगने की प्रवृत्ति ने समूचा वातावरण ही नैतिक प्रदूषण से भर दिया है। नजर पसारने पर बोने और ओछे लोग ही सर्वत्र भरे दीखते हैं। इसका जो परिणाम होना चाहिये, वह भी सामने है। फूटे घड़े में पानी भरने की तरह लोगों की बढ़ी-चढ़ी कमाई भी कुछ काम नहीं आ रही है। नीति मत्ता का अभाव रहने के कारण बढ़ता वैभव दुर्व्यसनों की, दुर्गुणों की, प्रदर्शनरत अहंकार की ही बाढ़ उत्पन्न करता है। सम्पन्नता की अभिवृद्धि के साथ-साथ यदि सभ्य-सुसंस्कृत भी बन सके होते, तो कम से कम लोगों का ध्यान वैभव उपार्जन में तो विश्वासपूर्वक लगा होता, पर वह भी बन नहीं पा रहा है। फिर अभावग्रस्तों का तो कहना ही क्या ? भूखा-भड़ियाई, उठाईगीरी पर उतारू हों तो बात समझ में भी आती है। अशिक्षा को अज्ञान की जननी बताकर उसे कोसा भी जा सकता है, पर जब सुशिक्षित और सुसम्पन्न भी हेय आचरण में संलग्न दीख पड़ें, तो आँखों के सामने अँधेरा छा जाता है। समाधान सूझ पड़ने पर अवरोध अड़ जाता है और व्यक्ति किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर नास्तिक स्तर का अनास्थावादी बनने लगता है। निरंकुश, लक्ष्य रहित व्यक्ति अनुशासन की उपेक्षा करके जो मन भाये, सो करने लगे, तो एक प्रकार की अराजकता का भी बोलबाला हो चलेगा। हो भी रहा है।

परिस्थितियों की विपन्नता पर जितनी गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाता है और कारण खोजा जाता है तो एक ही निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि चेतना को परिष्कृत कर सकने में समर्थ उस सद्ज्ञान की उपलब्धि का द्वारा ही बन्द हो गया, जिसे विद्याराधन एवं व्यक्तित्व का उच्चस्तरीय उत्कर्ष कहा जा सकता है। यह अवरोध इसलिये अड़ा कि उसके लिये उपयुक्त अध्यापकों की कमी ही नहीं पड़ी, समाप्त होने जैसी स्थिति भी आ गयी। अपने समय का यही सबसे बड़ा संकट है। निवारण-निराकरण इसी का होना चाहिये।

अतीत की गरिमा में धर्मतन्त्र का योगदान

जनमानस का स्तर ऊँचा उठाना इतना बड़ा और इतना महत्त्वपूर्ण कार्य है कि उसका प्रगतिक्रम चल पड़ने पर प्रस्तुत समस्याओं में से हर किसी का समाधान सरलतापूर्वक निकल सकता है। अभावों की पूर्ति के लिये उपार्जन के जितने स्रोत हैं, उनमें से सबसे बड़ा है, व्यक्तित्व का प्रामाणिक और परिमार्जित होना। यदि इसे उपलब्ध किया जा सके, तो समझना चाहिये अवरोधों के जाल-जंजाल से छुटकारा मिल गया। यदि मनुष्य सद्गुणी बन सका, तो समझना चाहिये कि विभूतियों को कहीं से भी घसीट लाने वाला चुम्बकीय शक्ति वाला पारस पत्थर हाथ लग गया। दरिद्रता पैसे की उतनी नहीं सताती जितनी कि व्यक्तित्व की क्षुद्रता पटक-पटक कर मारती है और साधन होते हुये भी आये दिन रुलाती है।

दरिद्रता और कुछ नहीं पिछड़ेपन का ही दूसरा नाम है। संकट कहीं दूर देश से नहीं आता, ओछा और अनगढ़ व्यक्तित्व ही उन्हें जहाँ-तहाँ से बीन-बटोर कर लाता है। इन दिनों पिछड़ेपन को दूर करने के लिये आजीविका, अभिवर्धन के अनेकों प्रगति प्रयास चल रहे हैं। कितना अच्छा होता यदि इसी के साथ-साथ नैतिक, बौद्धिक और सामाजिकता से जुड़ी हुई सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन पर भी उतना ही ध्यान दिया जा सकना बन पड़ा होता। सम्पदा में पदार्थों और साधनों की ही गणना होती है। अच्छा होता यदि शालीनता को भी इसी का एक पक्ष माना गया होता। उसके अभिवर्धन के लिये भी समर्थ मन्त्र खड़ा किया गया होता। वस्तुओं, पदार्थों, साधनों की आवश्यकता होती है, पर यह ध्यान देने योग्य है कि सूझबूझ और पुरुषार्थ-परायणता ही अन्ततः समस्त अभावों को दूर कर सकने में समर्थ होती है। अव्यवस्थाओं, समस्याओं एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संकटों से निपटने के लिये शक्ति भी चाहिये और अंकुश भी। कई बार इसके लिये दमन का आश्रय भी लेना पड़ता है ओर उद्दण्डता पर अनुशासन थोपने वाले साधनों का भी प्रदर्शन करना पड़ता है, पर इन सबका सामयिक प्रतिफल ही हो सकता है। अनौचित्य की जड़ काटने के लिये मनुष्य को विवेकवान, सद्गुणी और साहसी भी होना चाहिये। बाह्य उपचार दीखते भी हैं और जाने, सराहे भी जाते हैं, किन्तु वास्तविकता यह है कि जो दीख नहीं पड़ता, उसकी समर्थता कहीं अधिक है। शरीर कितना ही सुन्दर और बलिष्ठ क्यों न हो, अदृश्य प्राण न रहने पर वह सारा सरंजाम कवाड़ बन कर रह जाता है। इसी प्रकार समझा यह भी जाना चाहिये कि दृश्य वैभव की उपयोगिता कितनी ही क्यों न समझी जाये, अदृश्य मनःतत्व को सुसंस्कृत बनाये बिना उपलब्धियों का सदुपयोग तक न बन पड़ेगा, फिर उपार्जन करने के लिये पराक्रम को सुरक्षित रखने के लिये जिस साहस की आवश्यकता है, उसे संजोये बिना बालू से तेल निकालने जैसा खिलवाड़ ही बन पड़ता रहेगा। कुछ करना चाहिये यह ठीक है, पर यह भी समझना चाहिये कि करने के साथ अपना कुछ स्तर भी होना चाहिये। घड़ी का पेण्डुलम चलता तो बराबर रहता है, पर लक्ष्य सामने न होने के कारण वह पहुँच कहीं नहीं पाता।

भूलों में सबसे बड़ी भूल एक ही है कि एक दृश्य को सब कुछ माना गया और अदृश्य की उपेक्षा, अवमानना के गर्त में गिरा न रहने देने के सन्दर्भ में-उसे उखाड़ कर ऊँचा उठाने के सम्बन्ध में कुछ ऐसा न किया जा सका, जिसे कारगर कहा जा सके।

कठिनाई एक ही है कि अन्तःस्फुरणा उभारने वाले आन्तरिक पौरुष का स्तर दीन दुर्बल जैसा हो गया और बाहर से सहारा दे सकने वाले अवलम्बनों ने इस दिशा में मुँह मोड़ लिया। शिक्षा का प्रबन्ध हुआ, पर सचेतन को परिष्कृत कर सकने वाली 'विद्या' का कहीं से कोई प्रबन्ध न बन पड़ा, न उसका तन्त्र खड़ा किया गया और न उस प्रयोजन को पूरा कर सकने वाले उपाध्यायों का, पुरोहितों का वर्ग उभरकर आगे आया।

मुड़कर पीछे की ओर देखा जाय, तो प्रतीत होगा कि अतीत में आज की तुलना में साधनों का भारी अभाव था, पर जो कुछ हस्तगत था, उसका सदुपयोग कर सकने में कौशल का समुचित प्रबन्ध बना रहने पर परिस्थिति इतनी उच्चस्तरीय रहती रहीं, जिन्हें सतयुग का नाम दिया जाता रहा। तब मनुष्य में देवत्व की अभिव्यक्ति उजागर होती थी और धरती पर ऐसा वातावरण बना रहता था, जिसे स्वर्गोपम कहा जा सके। हर किसी को सुख शान्ति उपलब्ध थी। हर किसी को हँसते-हँसते जीने और मिल-बाँटकर खाने का अवसर उपलब्ध था।

आखिर यह सब बन कैसे पड़ा ? जन्म से तो सभी प्रायः नर-पशु की स्थिति में धरती पर आते हैं। उन्हें बनाने या उठाने में तो सम्बद्ध परिकर ही प्रधान भूमिका निभाता है। स्मरणीय अतीत में साधनों के उपार्जन का, उपयोग का सही तरीका तो अपनाया ही जाता रहा होगा। सबसे बड़ी बात यह बनी रही कि अन्तराल को परिष्कृत और व्यक्तित्व को समुन्नत बनाने के लिये कुशल कारीगर बड़ी संख्या में उपलब्ध रहे और कार्यक्षेत्र में तत्परतापूर्वक जुटे रहे। इस पुण्य प्रताप का ही प्रतिफल था कि स्वल्प साधनों ने असीम आनन्द और सौजन्य से समूचे वातावरण को कृतकृत्य करके रख दिया।

कठपुतलियों से मनोरंजक नाटक करा लेने में प्रायः पर्दे के पीछे छिपकर बैठे हुये बाजीगर की उँगलियाँ ही काम करती हैं, तार हिलते हैं और नृत्य आरम्भ हो जाता है। बाजीगर नदारत हो, तार टूटे पड़े हों, तो बेचारी कठपुतलियाँ पूर्ण स्थिति में होने पर भी ऐसा कुछ नहीं कर सकेंगी, जिसे ध्यानपूर्वक देखा या सराहा जा सके। यही स्थिति इन दिनों बन पड़ी है। बाजीगर के सो जाने के कारण दर्शकों पर उदासी छा गई है कि सब कुछ होते हुये कठपुतलियाँ अपना कमाल दिखा क्यों नहीं रही हैं ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राचीन काल में एक विशेष वर्ग था, जिसे पुरोहित कहते थे। उसकी कई श्रेणियाँ थीं। ऋषि, तपस्वी, योगी, मनीषी स्तर की रीति-नीति अपनाकर वे अपनी योग्यता और पात्रता सम्पादन करते थे, ताकि उनके मार्गदर्शन को जनसमुदाय द्वारा स्वीकारा जा सके। इसके साथ ही वे उस सेवाधर्म को कार्यान्वित करना आरम्भ कर देते थे, जिसके आधार पर चिन्तन में उत्कृष्टता उभरती है और चरित्र एवं व्यवहार को ऐसा सुगढ़, समर्थ बना देती है कि उसके सहारे न केवल निजी जीवन वरन् सम्पर्क में आने वाले परिकर को भी समुन्नत बनने का अवसर मिलता रहे।

लोक चेतना को समुन्नत स्तर का बनाये रहने का घोषित ओर निर्धारित उत्तरदायित्व इसी पुरोहित वर्ग का था। उसके लिये यही नियति थी, जिसे श्रद्धापूर्वक सौंपा और शपथपूर्वक स्वीकारा गया था। राष्ट्र को, समाज को, व्यक्ति को, लोक मानस को जीवन्त और जागृत बनाये रखने का दायित्व यही पुरोहित वर्ग चिरकाल तक संभाले, संजोये रहा। फलतः जनसमुदाय के सभी घटक घड़ी के कलपुर्जों की तरह ठीक काम करते रहे। 'पेण्डुलम' और 'फिनर' यदि अपनी सही चाल पर चलते रहें तो घड़ी के बंद होने का अवसर कदाचित् ही आता है। लोकचेतना की सत्ता और महत्ता तो असीम है, पर उसमें कमी एक ही है—आत्म संकल्प को उभारने में स्वावलम्बी साहस कम ही जुटा पाती हैं। उसे समर्थों का सहारा ताकना पड़ता है। बच्चे भी तो अभिभावकों से प्रायः ऐसी ही आशा करते हैं।

पुरोहित वर्ग दो भागों में विभाजित था—एक ब्राह्मण दूसरे साधु। ब्राह्मण प्रायः गृहस्थ होते थे और अपने सीमित क्षेत्र में जन सम्पर्क साधने और उन्हें भावनात्मक दृष्टि से परिष्कृत किये रहने का दायित्व निभाते थे। गुरुकुल संचालन के लिये उन्हें पत्नी की सहायता अनिवार्य रूप से अपेक्षित होती थी। अपने निजी जीवन का पारिवारिक और वैयक्तिक स्वरूप आदर्शों से ओत-प्रोत रखकर वे जन साधारण के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करते थे कि किस प्रकार सीधे, सरल तरीके से सर्वोपयोगी उत्कृष्ट जीवन जिया जा सकना सम्भव हो सकता था। लोकशिक्षण के लिये वे अपने यजमानों में स्वाध्याय, सत्संग की व्यवस्था बनाये रहते थे। इसके लिये पर्व, त्यौहारों पर व्रत संस्कारों के माध्यम से सामूहिक प्रशिक्षण अधिक उपयोगी और प्रभावी समझा जाता था, अस्तु वे ऐसे ही अवलम्बनों के सहारे अपने परिकर के यजमानों को उच्चस्तरीय प्रेरणाओं से अनुप्राणित किया करते थे।

साधु वर्ग का कार्यक्रम प्रव्रज्या पर अवलम्बित रहता था। इसलिये उन्हें परिव्राजक भी कहा जाता था। परिव्राजक अर्थात् परिभ्रमणकर्त्ता। इस आधार पर उन्हें व्यापक क्षेत्र बहुसंख्यक निवासियों के साथ सम्पर्क साधने में सरलता होती थी। विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों की स्थानीय समस्याओं और आवश्यकताओं को इस आधर पर समझ सकना उनके लिये सरल पड़ता था। साथ ही जहाँ जैसा समाधान सम्भव था, वहाँ उसका कार्यक्रम् बनाने, सरंजाम जुटाने एवं ढाँचा खड़ा करने का प्रयास करते भी बन पड़ता था। इस क्रिया-प्रक्रिया का महत्त्व इसलिये भी अधिक था, कि ज्ञान-पिपासा बुझाने के लिये जिन्हें मनीषियों से सम्पर्क साधने पहुँचना कठिन पड़ता था, उन्हें यह लाभ घर बैठे भी मिल जाता था। बहुत-से लोग एक समय एकत्रित होकर एक मार्गदर्शक से उद्बोधन प्राप्त करें, यह भी एक तरीका था, पर दूसरा यह तरीका भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं था कि सूर्य, चन्द्र, पवन, बादल की तरह स्वयं ही परिभ्रमण पर निकला जाये और जन-जन को अपनी ऊर्जा से प्रतिभाषित किया जाये। जिन्हें यह कार्य-पद्धति पसंद आती थी, वे अविवाहित रहते थे और तीर्थयात्रा के नाम से जन-जागरण की पदयात्रा में निरन्तर निरत रहते थे। एक स्थान पर उतने ही समय टिकते थे, जितना कि स्थानीय आवश्यकतायें उन्हें बाधित करती थीं। विनिर्मित देवालयों में उन्हें स्थान-स्थान पर भोजन, निवास आदि की सुविधायें भी मिलती रहती थीं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधु और ब्राह्मण वर्ग के समन्वय से उस लोक शिक्षण की आवश्यकतायें भली प्रकार पूरी हो जाती थीं, जिससे व्यक्तित्व निखरता है और उस प्रामाणिकता एवं प्रतिभा का अर्जन होता है, जो भौतिक और आत्मिक सफलताओं का पथ प्रशस्त कर सके।

साधु और ब्राह्मण वर्ग के लोकनायकों का एक मिश्रित रूप भी था—वानप्रस्थ। इस वर्ग के लोग आधी आयुष्य तक पहुँचते-पहुँचते अपने सामान्य गृहस्थ जीवन के दायित्व पूरे कर लेते थे और फिर आत्मनिर्माण और लोकमंगल की समन्वित साधना में निरत होते थे, जो पत्नियाँ साथ रहना चाहती थीं, वे पति के साथ उसी प्रयोजन में निरत होती थीं। जो अपने को असमर्थ पाती थीं, वे परिवार को संभालने और पड़ौस को अपनी उपस्थिति का यथासम्भव लाभ देती थीं।

तीर्थस्थानों में सुव्यवस्थित आश्रम इसीलिए बने थे कि वहाँ वानप्रस्थ वर्ग के लोग आरण्यक व्यवस्था के अनुरूप अपनी वरिष्ठता का अभिवर्धन करें और समयानुरूप सेवाक्षेत्र के साथ भी सम्पर्क साधें। गृहस्थजीवन भी तीर्थों के प्रेरक वातावरण में कुछ समय निवास करके अपनी विशिष्टताओं में अभिवर्धन करने वाली साधनायें सम्पन्न करते थे।

इस समूचे धर्मतन्त्र की मिली-जुली सामर्थ्य ऐसी हो जाती थी कि उसका प्रभाव समूचे जनसमुदाय पर पड़े। दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन में सहायता मिले। इस आधार पर धर्मतंत्र उससे कहीं अधिक सेवा-साधना कर पाता था, जितनी कि शासन तंत्र से भी नहीं बन पड़ती। शासन प्रायः आवांछनीयताओं से निपटता रहता है, प्रगति के लिए आवश्यक साधन सुविधा भी जुटाता है, किन्तु उस सबसे भी अधिक महत्वपूर्ण पक्ष है, व्यक्ति की शालीनता और दक्षता का चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में सुसंस्कारिता के समावेश का। इसके बिना समुचित साधन उपलब्ध कर लेने पर भी सार्वजनिक शान्ति और प्रगति का सुयोग बन नहीं पड़ता। धर्मतंत्र इसी महती आवश्यकता की पूर्ति करता था। इसी आधार पर अतीत में ऐसा वातावरण बना रहता है था जिसे स्वर्गोपम कहते हुए हर कोई गौरवान्वित होता था।

प्रतिभा परिष्कार की महती आवश्यकता

महत्वपूर्ण कार्य श्रम, कौशल एवं साधनों के आधार पर ही बन पड़ते हैं। इमारतें, कारखाने, उद्योग उत्पादन आदि में यही शक्तियाँ प्रधान रूप से काम करती हैं। भौतिक प्रगति के माध्यमों की तरह ही एक बड़ा क्षेत्र है, व्यक्ति और समाज के भावनात्मक उत्कर्ष का। उसकी पूर्ति हो सकने पर ही उपलब्ध साधनों का सदुपयोग बन पड़ता है अन्यथा ओछे व्यक्ति या तो अयोग्यता के कारण कुछ उपलब्ध ही नहीं कर पाते, कर भी लें तो, सदुपयोग न बन पड़ने पर उस लाभ से वंचित ही बने रहते हैं, जो सही मार्ग अपनाने पर प्रचुर परिमाण में उपलब्ध हो सकता था, जितना महत्व सुविधा-साधनों के अभिवर्धन का माना जाता है, उससे भी अधिक उपयोगिता इस तथ्य की सामने आती है कि जन-जन की प्रतिभा और प्रामाणिकता का समुचित परिष्कार बन पड़े।

प्राचीनकाल में इस आवश्यकता को सही रूप में समझा गया था, अस्तु भौतिक प्रगति के अतिरिक्त यह प्रयास भी पूरे उत्साह के साथ चला था कि जनमानस को परिष्कृत करने में किसी प्रकार की कमी न रहने पाये। इस दायित्व को निबाहने के लिए पुरोहित वर्ग द्वारा धर्मतन्त्र का सुनियोजित संचालन किया जाता था। उस प्रक्रिया के सही रूप से बन पड़ने का परिणाम था कि सर्वत्र सुख-शान्ति विराजती रही। शालीनता और सहकारिता का समन्वय कितना अधिक प्रभावी हो सकता है, इसका अनुभव सर्वत्र किया जाता रहा और यह बन पड़ा कि अपने छोटे घरों और सीमित साधनों में यह देश मूर्धन्य स्तर तक जा पहुँचा। भारतभूमि विश्व भर में 'स्वर्गादपि गरीयसी' के रूप में जानी जा सकी। यहाँ का धर्मतंत्र जगद्गुरु की उपाधि से विभूषित हुआ। यहाँ का राजतंत्र चक्रवर्ती शासक के रूप में वरण किया गया। परिस्थितियाँ ऐसी थी, जिन्हें स्वर्ग सम्पदाओं की स्वामिनी के रूप में प्रशंसा प्राप्त होती रही।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज की विपन्नता के अन्य कारण भी निमित्त हो सकते हैं, पर सबसे बड़ा कारण एक ही प्रतीत होता है कि जन समुदाय को मानवी गरिमा से सुसम्पन्न करने का अधिकार शिथिल होते-होते समाप्त प्रायः हो जाने की स्थिति में जा पहुँचा। देखने को बहुत कुछ भव्य दीखता है, पर जहाँ तक महानता सम्पन्न व्यक्तित्वों का सम्बन्ध है, वहाँ तक कूड़े-कचरे की भरमार ही दीख पड़ती है। ऐसी दशा में विपन्नता की व्यापकता दीख पड़े, तो आश्चर्य ही क्या है ?

सुयोग्य कार्यकर्त्ताओं के तत्त्वाधान में ही कोई कार्य ठीक प्रकार चल पाता है। समाज, राष्ट्र एवं विश्व की परिस्थितियों का सही, समुचित स्थिति में रहना इस बात पर निर्भर रहता है कि उसे सँभालने वालों का समुदाय, उनका स्तर-कैसा है ? शासन व्यवस्था के अनुरूप देश की समृद्धि बढ़ती-घटती रहती है। इसी प्रकार लोक मानस को प्रभावित करने वाले मनीषी जिस स्थिति में होंगे, उसी के अनुरूप प्रजाजनों के व्यक्तित्वों का निखार होगा। कहना न होगा कि मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्म दात्री है। आस्थायें ही दिशा निर्धारण करती हैं। दृष्टिकोण के अनुरूप क्रिया-कलाप चलते हैं और वह सब कुछ मिलकर व्यक्तित्वों की क्षमता एवं गरिमा का स्वरूप विनिर्मित करते हैं। यह समूचा परिवार शालीनता से सम्पन्न होता है तभी यह आशा की जा सकती है कि समुदाय प्रगति, सुख-शान्ति से और समृद्धि से भरा-पूरा बना रहेगा। यदि यहाँ गिरावट घुस पड़ी, तो समझना चाहिए कि दरिद्रता और अव्यवस्था का दौर ही बढ़ चलेगा और उसकी चपेट में जन-जन को त्रास सहना पड़ेगा।

सम्पन्नता, शिक्षा, बलिष्ठता, कुशलता आदि का अपना महत्व है, पर इन सबसे अधिक आवश्यक शालीनता एवं दूरदर्शिता है। उसी के आधार पर समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी जैसी सत्प्रवृत्तियाँ पनपती हैं। प्रगति का बहुमुखी आधार भी उसी के सहारे खड़ा होता है। इसके उत्पादन एवं अभिवर्धन में युग मनीषियों की ही प्रमुख भूमिका रहती है। अध्यात्म की भाषा में युग मनीषा को ही पुरोहित कहते हैं, वही धरती के देवता कहलाते हैं। अपने उदाहरण, उद्‌बोधन और अनुदान से वे ही सर्वतोमुखी प्रगति के संरजाम जुटाते हैं।

प्राचीनकाल में साधु-ब्राह्मण समाज के हर वर्ग का मार्गदर्शन करते थे और सदा ध्यान रखते थे कि राष्ट्र को जीवित एवं जागृत रखने की जिम्मेदारी के निर्वाह में कहीं कोई कमी न रहने पाये।

इन दिनों मार्गदर्शन का दायित्व जिनके कंधों पर है, वे तथाकथित लोकसेवी शासन के संस्थाओं के प्रतिष्ठानों के माध्यम से कहते, बताते तो बहुत कुछ रहते हैं, पर कठिनाई यह है कि उनके प्रति जन साधारण की गहन श्रद्धा न रहने के कारण उपेक्षापूर्वक ही उनके कथन को सुना जाता है। गंध सूँघी जाती है कि इनका कथन अपना वेतन प्राप्त करने के लिए एक बेगार भुगतने-लकीर पीटने जैसा है। साथ ही यह भी खोजा जाता है कि इन तथाकथित लोकसेवियों के निजी जीवन में उतनी प्रामाणिकता है या नहीं, जिससे उनके तत्वाधान में लोकमंगल के आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा मिल सके। जिस स्वार्थपरता, हरामखोरी, प्रतिगामिता आदि को छोड़ने के लिए अन्यान्यों को कहा जा रहा है, उसे कार्य रूप में परिणत करने के लिए हर किसी का मन करता है। उसमें कमी दीखती हो तो प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है। अविश्वास और आक्रोश रहने की स्थिति में आमतौर से लोग अच्छी बात का भी उपहास उड़ाते देखे गये हैं।

संकीर्ण, स्वार्थपरता के वातावरण में उस मार्ग को तो कोई भी अपना लेता है, किन्तु जब चरित्रनिष्ठा, आदर्शवादिता और लोकहित के लिए संयम बरतने, परमार्थ परायणता अपनाने की बात कही जाती है तो सहज ही प्रश्न उठ खड़ा होता है कि मार्गदर्शक स्वयं उस मार्ग पर चल रहा है या नहीं। संदेह होने पर अन्दर का आक्रोश अवज्ञा के रूप में उभरता है और उपयोगी परामर्श की भी अवमानना करने पर उतारू होता है। यही है- आज के परामर्शदाताओं के सामने सबसे बड़ी कठिनाई जिसके कारण जनसाधारण को कुछ महत्वपूर्ण समझाने और उनके द्वारा चरितार्थ किये जाने की स्थिति बन नहीं पड़ती। कथनी और करनी में अन्तर रहने पर उपदेशकों का सारा परिश्रम व्यर्थ चला जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

इस जटिल अवरोध से प्राचीनकाल के मार्गदर्शक को हैरान ही होना पड़ता था। उनका व्यक्तिगत चरित्र उच्चस्तरीय होने के कारण वे सहज ही लोक श्रद्धा को अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे और जनसमुदाय को अपने कथन से प्रभावित कर लेते थे। साधु, ब्राह्मण वर्ग के पुरोहितों की यही विशेषता थी।

पुरातन पुरोहितों के परामर्श, प्रतिपादन, समाधान जन-जन द्वारा इसलिए अपनाये जाते थे कि वे अपने व्यक्तित्व को इतना प्रामाणिक बना लेते थे कि उनके कथन को भी विश्वस्त हितकर एवं व्यावहारिक माना जा सके।

कला, कौशल, शिल्प आदि के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारियाँ किसी से भी प्राप्त की जा सकती हैं। अनैतिक व्यक्ति से भी वैसा कुछ सीखा जा सकता है, पर जहाँ तक व्यक्तित्व निर्माण के लिए आदर्शवादी सिद्धान्तों को जीवन में उतारने का सवाल है, वहाँ यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि प्रशिक्षक ने अपने निज के जीवन में वह अभ्यास किया या नहीं, जिसे वह अन्यान्यों को करने के लिए कहता है। जिसे स्वयं संगीत न आता हो, वह दूसरों को वह सब कैसे सिखा पायेगा ? शिल्प, कौशल से अनभ्यस्त व्यक्ति यदि दूसरों को वे विधायें सिखाने का दावा करें, तो उसका उपहास ही होगा। ठीक यही बात चरित्रनिष्ठा और समाज सेवा के सम्बन्ध में है। जो स्वयं उन्हें अपना न सका उसके उपदेश किसके गले उतरेंगे ?

इन दिनों वंश के आधार पर ब्राह्मण कहलाने वाले और वेष के आधार पर साधु कहलाने वालों की कमी नहीं, पर उनमें से ऐसे गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से कम ही मिलेंगे, जो कसौटी पर खरे उतरते हों। ऐसी दशा में उनके कथन, उपदेश, वचन आदि से उस प्रकृत्ति के लोगों का मनोरंजन तो हो जाता है, पर अनुकरण करने के लिए कोई विरले ही प्रेरणा प्राप्त करते हैं। ऐसी दशा में धर्म शिक्षण की आवश्यकता अपूर्ण ही बनी रहती है और व्यक्तित्व विकास का क्रम अग्रगामी बन नहीं पाता। यह इतनी बड़ी कमी है, जिसका अभाव समूचे समुदाय को अखरने वाला है और विपन्नता से पीछा छूटने नहीं देता।

प्रगति के अनेक पथों में सर्वोपरि है—जनमानस का परिष्कार, व्यक्ति का आदर्शवादी निर्माण, प्रतिभा, प्रखरता और प्रामाणिकता का अभिवर्धन। इसके लिए उससे भी बढ़-चढ़ कर प्रयत्न किये जाने चाहिए, जितने कि सुविधा साधनों के अभिवर्धन हेतु किये जाते हैं। साधन बढ़े किन्तु स्वभाव और चिन्तन ओछे का ओछा ही बना रहा, तो समझना चाहिए कि उपलब्धियों का दुरुपयोग ही होगा और जो कमाया गया है वह अनर्थ उत्पन्न करने और संकट खड़े करने की भूमिका निभाता रहेगा।

करने योग्य कर्मों में इन दिनों सबसे बड़ा काम यह है कि स्तर सम्पन्न व्यक्तित्व ढालने के लिए जो भी उपाय बन पड़े, उनके लिए अपनी समूची शक्ति नियोजित करनी चाहिए। यदि वे उभारे जा सकें, तो समझना चाहिए कि पिछड़ेपन के जितने भी लक्षण इन दिनों सर्वत्र दीख पड़ते हैं, उनमें से सभी का सहज समाधान हो जायेगा। दरिद्रता, अशिक्षा, अस्वस्थता आदि का स्वतंत्र अस्तित्व कदाचित् ही कहीं दीख पड़ता है, वस्तुतः वे उस अभाव के लक्षण मात्र हैं, जो चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में अनौचित्य रूप में घुसे और घिरे रहते हैं। इन सबके अलग-अलग उपचार करते रहने से बहुत कुछ बन पड़ने वाला नहीं है। रक्त में विषाक्तता भरी रहे, तो चमड़ी उठती रहने वाली खाज, फुन्सी आदि का सामयिक उपचार कदाचित् ही कुछ काम आ सके। जड़ काटे बिना पत्तों को तोड़ने भर से सफाई होती कहाँ है ? इसी प्रकार मनुष्य के बहिरंग जीवन में जो अनेकानेक कमियाँ, कठिनाइयाँ दीख पड़ती हैं, उनका निराकरण मात्र साधन जुटाने भर से बन पड़ने वाला नहीं है। उनका सर्वथा समाधान ढूँढ़ना हो, तो इतने भर से मानवी साहस और पुरुषार्थ मिलकर ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकते हैं, जिनके रहते हुए किसी को, किसी से, किसी प्रकार की शिकायत न रहे, कोई भी अभावों, समस्याओं, संकटों से घिरा हुआ दिखाई न पड़े।

यह कार्य करे कौन ? बिल्ली के गले में घण्टी बँधे कैसे ? इसके उत्तर में एक ही बात कही जा सकती है कि पुरोहित वर्ग को पुनर्जीवित किया जाय। परम्परा वाले लोग यदि जीर्ण-शीर्ण होकर उस दायित्व को उठा सकने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योग्य प्रतिभा अपने में उभार नहीं पा रहे हैं, तो दूसरा विकल्प खोजना होगा। वंश और वेष की परिधि से आगे बढ़कर नये वर्ग को उसके लिए सहमत और समर्थ बनाने की मुहिम संभालनी होगी।

पृथ्वी के देवता—भूसुर—पुरोहित

व्यक्तित्व निर्माण और प्रतिभा परिष्कार की महती युग आवश्यकता को पूरा करने के लिए क्षमता सम्पन्न प्राध्यापकों को फिर से उन्नत करने के लिए इन दिनों समग्र ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। इस आपत्तिकालीन आवश्यकता को सबसे बड़ी समय की पुकार समझा जाना चाहिए और इस प्रयोजन के लिए जितना कुछ बन पड़े, उसे पूरी सामर्थ्य नियोजित करते हुए करने में जुट जाना चाहिए। युग धर्म को पहचानने वाले तदनरूप परिस्थितियों के अनुरूप कदम उठा सकने योग्य प्राणवानों को जहाँ भी देखा, खोजा जा सके, वहाँ उनसे सम्पर्क साधना और अग्रगमन के लिए सहमत करना चाहिए।

अन्यत्र ढूँढ़ने फिरने की अपेक्षा यही अधिक सरल और अधिक उपयुक्त होगा कि शुभारम्भ अपने आप से ही किया जाय। युग निर्माण परिकर के इन दिनों भी लाखों सदस्य हैं, उनमें से जिनमें भी समय की चुनौती स्वीकार करने के लिए उमंग उठें उन्हें इस प्रयोजन के लिए अपने को ही आगे करना चाहिए। मनस्वी जिस औचित्य भरे मार्ग पर चलते हैं, अपनी निष्ठा का परिचय देते हैं, वे देर तक एकाकी नहीं रहते। उनके पीछे चलने वाले अनुचरों की भी कमी नहीं रहती। जब चोर, लवार, नशेबाज, व्यभिचारी आदि भीतर और बाहर से एक रहने के कारण अनेकों सहयोगी, अनुयायी बना लेने में सफल हो जाते हैं, तो कोई कारण नहीं कि सदाशयता के धनी, सत्परम्पराओं के अभिवर्धन में निरत लोग अपने साथी, सहयोगी बड़ी संख्या में न बना सकें। यह नया प्रयोग नहीं है। अतीत के स्वर्णिम युग में इस प्रयोग को चिरकाल तक कार्यान्वित किया जाता रहा है। उसका सत्परिणाम भी हर किसी के द्वारा देखा जाता रहा है, फिर इसमें कुछ संशय नहीं रह जाता कि उस प्रयोग को फिर दुहराया जाय, तो अभीष्ट सफलता का लक्ष्य प्राप्त कर सकने में कुछ अड़चन न रहे।

भारत की देव संस्कृति में वर्णाश्रम धर्म की प्रमुखता है। उन सभी को कार्यान्वित कर सकना इन दिनों न बन पड़े, तो भी उनमें से एक का चयन तो कर ही लिया जाना चाहिए। वह है—वानप्रस्थ। देव परम्परा में इसका अत्यधिक महत्व माना गया है। ब्रह्मचर्य और गार्हस्थ्य भौतिकक जीवन को समर्थ बनाने के लिए और वानप्रस्थ संन्यास के रूप में आधा जीवन परमार्थ प्रयोजनों के लिए। परमार्थों में दीन-दुःखियों की सेवा-सहायता करना भी आता है, पर वैसे अवसर जहाँ-तहाँ कभी-कभी ही आते हैं, फिर उसमें एक खतरा भी रहता है कि कुपात्रों के हाथ में सहायता पहुँचने लगे, तो उनके दुर्गुण बढ़ते हैं और दुष्प्रवृत्तियों का प्रसार होता है। इसलिए प्रत्यक्ष सेवा, सहायता में औचित्य का ध्यान रखते हुए ही मुट्ठी खोलना समझदारी का चिन्ह माना जाता है, किन्तु व्यक्तियों का परिष्कार निस्संदेह इतना महत्वपूर्ण और इतना बिना असमंजस का है कि उसके निमित्त कुछ करना हर दृष्टि से श्रेयस्कर ही सिद्ध होता है। परमार्थों में यही मूर्धन्य है। ज्ञान दान को ब्रह्मयज्ञ कहकर उसका पुण्य अत्यन्त उच्चकोटि का गिना गया है। जीवन का उत्तरार्ध वानप्रस्थ इसी प्रयोजन के लिए प्रमुखता देते हुए नियोजित रहना चाहिए।

प्राचीनकाल में यह परम्परा थी कि विवाह के आरम्भिक दिनों में एक-दो संतानें उत्पन्न करके प्रजनन को विराम दे दिया जाता था, फलतः आधा जीवन बीतते-बीतते बच्चे स्वावलम्बी हो जाते थे और फिर उन्हें अभिभावकों की कुछ अनिवार्य आवश्यकता नहीं रह जाती थी। इस निवृत्ति को ही वास्तविक निवृत्ति कहा जाता था, जिसके कारण मनुष्य की शेष आधी आयुष्य परमार्थ में, वानप्रस्थ में लगाते हुए कहीं कोई कठिनाई नहीं होती थी और लोक-परलोक दोनों ही सहज सध जाते थे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन दिनों परिस्थितियों में, प्रचलनों में अन्तर आ गया है। इसलिए उस पुरातन निर्वाह क्रम में कुछ आवश्यक परिवर्तन किए जा सकते हैं। यदि कई बच्चे हो गये हैं और उन्हें स्वावलम्बी बनाने में देर लगती है, तो बड़ी सन्तान को युवराज वरण कर उसे अपने छोटे भाई-बहनों के भरण-पोषण का दायित्व उठाने के लिए बाधित किया जाना चाहिए। बच्चों को आरम्भ से ही यह शिक्षा दी जानी चाहिए कि अभिभावकों द्वारा उनकी जो सेवा, सहायता हुई है, उसे अपने छोटे भाई-बहनों को स्वावलम्बी बनाने के रूप में चुकाया जाना है। हिसाब-किताब इसी जन्म में पूरा करना है, ताकि अगले जन्म में अभिभावकों का ऋण ब्याज समेत न चुकाना पड़े। यह परम्परा चलनी ही चाहिए। यदि हर कोई अपने स्त्री - बच्चों का ही ध्यान न रखेगा, अभिभावकों का कर्ज न चुकायेगा, बहिन-भाइयों का ध्यान न रखेगा, तो ऐसी बुरी परम्परा चल पड़ेगी, जिससे बुढ़ापा आते ही हर किसी को मन मसोस कर रहना और पश्चात्ताप करना पड़ेगा। बड़ी सन्तानें अपने स्वावलम्बन का लाभ छोटे भाई-बहिनों को दें। परिवार व्यवस्था अपने कंधों पर उठाये, तो फिर हर भावनाशील के लिए यह संभव हो जायेगा कि वह आधी आयु परमार्थ प्रयोजन के लिए लगाकर आत्म शान्ति प्राप्त कर सके, अगला जन्म सफल बन सके और समाज का ऋण चुकाने, युग धर्म का निर्वाह कर सकने का सुयोग प्राप्त कर सकें।

अपने मिशन में लाखों प्राणवान परिजन युगसाहित्य द्वारा अपनी विचारणा, निष्ठा और क्रिया पद्धति से उपलब्ध प्रेरणाओं के आधार पर बढ़-चढ़कर प्रकाश प्राप्त करते रहे हैं। वे औसत नागरिक की तुलना में कहीं अधिक विचारशील हैं। युग धर्म की पुकार भी उन्हें कचोटती है। शुभारंभ इन्हीं को करना चाहिए। अग्रगमन का साहस इन्हें ही जुटाना चाहिए और प्राचीन वानप्रस्थ परम्परा को पुनर्जीवित करने में इन्हीं का प्रमुख योगदान होना चाहिए।

प्राचीन वानप्रस्थ उन दिनों की परिस्थितियों के अनुरूप था। इसलिए उसे धारण करने के लिए आधी आयु के उपरान्त आरण्यक स्तर के ऋषि आश्रमों में लोग चले जाते थे और आत्मशोधन तथा लोकसेवा का अनुभव-अभ्यास करने के उपरान्त शेष समस्त जीवन जनमानस के परिष्कार में लगाते थे।

अब उस परम्परा को जीवित रखने की तो आवश्यकता है, पर समय के अनुसार सरल बनाया जा सकता है। पुरोहित, साधु, ब्राह्मण, वानप्रस्थ, परम्परा का मिश्रित और सामयिक स्वरूप हो सकता है—"व्रतधारी"। इस प्रक्रिया को गृहस्थ में रहते हुए भी अपनाया जा सकता है। घरेलू काम-कार्जों में से समय निकालकर विचार क्रान्ति की युग आवश्यकता को पूरा करने में निरत रखा जा सकता है। व्रतधारी प्रज्ञापुत्र का स्वरूप इतने में ही एक सीमा तक बन जाता है, जो पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत हो चुके हैं, उन्हें नित्यकर्म के उपरान्त बचा हुआ समय युग धर्म के निर्वाह में ही लगाना चाहिए। रहना, भोजन, वस्त्र आदि की सुविधा घर से प्राप्त करनी सम्भव हो तो उसे अपनाया जाय और समयदान, अंशदान के रूप में अपना समय और साधनों का एक अंश निरन्तर लगाते रहने का निश्चय किया जाय। उस निश्चय को निष्ठापूर्वक निबाहा भी जाय।

निजी जीवन में वानप्रस्थों को तपश्चर्या का स्तर अपनाना पड़ता था। अब उतना न बन पड़े तो आहार-बिहार में यथासम्भव सात्विकता कातो अभिवर्धन किया जाय। उपासना में तन्मयता बढ़ाई जाय और उसके साथ साधना-आराधना के तत्वों को संजोया जाय। यह प्रक्रिया अपने विवेक से या शान्तिकुञ्ज के परामर्श से निश्चय की जा सकती है। व्रतधारी बनने के उपरान्त बच्चे उत्पन्न करने के कार्य को तो पूरी तरह बंद ही कर दिया जाय।

मुख्य कार्य है—जन सम्पर्क और उस माध्यम से लोकमानस का परिष्कार। इसके लिए योग्यता और आवश्यकता के अनुरूप मिशन द्वारा जो अनेकानेक कार्यक्रम आरम्भ किए गऐ हैं, उनमें से कुछ को चुना जा सकता है। मनःस्थिति परिस्थिति और स्थानीय आवश्यकता को देखते हुए अपने समयदान का क्रम तथा स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है। समयदान के साथ-साथ न्यूनतम दस पैसा जितना अंशदान तो निर्धारित रहना ही चाहिए। व्रतधारी के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यक नहीं कि आधी आयु पूरी होने के उपरान्त ही वह कदम उठाया जाय। उपार्जन तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वों को निबाहते हुए भी यह प्रयत्न करना चाहिए कि आत्मकल्याण और लोकमंगल के लिए अपना अधिकाधिक समय नियोजित किया जा सके। अपनी आजीविका में से जितना अंश उस कार्य के लिए निकाला जा सके, निकाला जाय।

प्राचीनकाल में पुरोहित वर्ग कोई निजी उपार्जन नहीं करता था। पूरा समय लोकमंगल के लिए नियोजित रखता था। इसलिए उनके पास कोई पूँजी न होने से जन सहयोग पर ही अवलम्बित रहना पड़ता था। तब उनको आर्थिक अंशदान का प्रतिबन्ध नहीं था। समय दान से ही काम चल जाता था, पर अब जब कि 'व्रतधारी' कुछ कमाते भी हैं, कुछ संचय भी है और परिवार के अन्य सदस्य भी कमाऊ हैं तो फिर मात्र समयदान ही पर्याप्त नहीं, अंशदान भी निकाला जाता रहना चाहिए, क्योंकि सभी सेवा कार्यों में श्रम के अतिरिक्त साधन लगाने की भी आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए दूसरों से तो माँगते रहा जाय, पर स्वयं कुछ भी उदारता न दिखाई जाय, तो फिर अन्यान्यों को भी कुछ देने के लिए कैसे कहा जा सकेगा ? अनुकरण के बिना प्रेरणा कैसे मिलेगी ? साधनों के अभाव में सेवा कार्य लुञ्ज-पुञ्ज ही बने रहेंगे। इसलिए आज के पुरोहितों को 'व्रतधारी' का सरल स्वरूप अपनाते हुए अपने समय और श्रम का अधिकाधिक अंश नवसृजन के लिए योगदान के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

जो नौकरी से रिटायर हो चुके हैं, पेंशन पाते हैं, उन्हें समझना चाहिए कि जो सुविधा उन्हें मिली हुई है, वह निठल्ले पड़े रहने, मटरगश्ती करने और हराम में दिन काटने के लिए नहीं है। यह अवसर पूरी तरह युगधर्म के निर्वाह के लिए हो। इसी में से एक छोटा-सा अंश पूजा-पाठ के लिए भी रखा जा सकता है। मात्र पूजा के नाम पर समय बिताते रहना और लोक ऋण चुकाने में कुछ न करना सर्वथा अधूरा निश्चय है। सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन में नियोजित किया गया अंशदान भी किसी उच्चस्तरीय उपासना से कम नहीं है।

जिनके बच्चे-कच्चे नहीं हैं, वे भी बड़े सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें निजी जंजाल में अधिक न उलझने की छूट मिल गई। जिनके पास पूर्वजों की कमाई तथा अपनी बचत के रूप में कुछ है, वे भी उसके सहारे निर्वाह चलाते हुए शेष समय 'व्रतधारी' की तरह बिता सकते हैं।

मनुष्य जीवन की अनेक आवश्यकतायें हैं, उन्हें पूरा करने में सहायक व्यक्ति और साधन आदान-प्रदान के आधार पर सर्वत्र मिलते रहते हैं, पर इन दिनों जिसका लगभग सर्वथा अभाव है, वह है—ऊपर उठाने वाली प्रेरणा दे सकने में समर्थ परिपक्व व्यक्तित्व। यह कार्य मात्र प्रवचन, परामर्श के सहारे बन नहीं पड़ता। इसके लिए उनकी आवश्यकता है, जिनने अपनी कथनी और करनी को एक करके उस स्तर की ऊर्जा अपने में उत्पन्न कर ली हो, जो अपने सदृश सम्पर्क में आने वालों को भी ढाल सकने में समर्थ हों। पुरोहितों को ऐसा ही बनना पड़ता था। तभी पृथ्वी के देवता-भूसुर कहलाते थे। अपने भावनात्मक अनुदानों से जन समुदाय को मानवी गरिमा के अनुरूप ढालते और वातावरण को शालीनता सम्पन्न बनाते थे। साधु-ब्राह्मणों का यह एक ही सुनिश्चित लक्ष्य रहा है। उनने लोक मानस को परिष्कृत बनाने, प्रतिभाओं को प्रखरता सम्पन्न बनाने में अपने समूचे जीवन को समर्पित किया और उसके फलस्वरूप सतयुगी वातावरण बनाने का श्रेय प्राप्त किया। संसार की यही सबसे बड़ी सेवा है। यह जितने अनुपात में बन पड़ती है, उसी के अनुरूप सुख, शान्ति और प्रगति का आधार बनता और सरंजाम जुटाता है।

आज अपनी स्थिति के अनुरूप इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रत्येक भावनाशील को प्रयत्न करना चाहिए। परम्परागत रूप से कोई ब्राह्मण वंश में भले ही न जन्मा हो, परिधान किसी ने भले ही साधुओं जैसा न पहना हो, पर लक्ष्य निर्धारण की दृष्टि से यदि कोई उन्हीं प्रयासों के लिए अपने बढ़े-चढ़े अनुदान प्रस्तुत करता हो, तो अपने समय में उसे सच्चे अर्थों में पुरोहित ही कहा जायेगा। वर्तमान निर्धारण के अनुसार उसे "व्रतधारी" नाम से संबोधित किया जायेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सरल किन्तु अति प्रभावी कार्य पद्धति

जीवन की लम्बी अवधि में से अधिकांश तो शरीरचर्या में ही व्यतीत हो जाती है। रात्रि सोने में निकल जाती है। इस प्रकार प्रायः आधा जीवन तो मूर्च्छित स्थिति में ही व्यतीत हो जाता है। आधे में से प्रायः आधा नित्यकर्म में, आजीविका उपार्जन में, उपलब्ध साधनों की व्यवस्था में कट जाता है। मनोरंजन, थकान मिटाने, आलस्य-प्रमाद में भी ढेरों समय खप जाता है। यारवाशी, मटरगश्ती भी कम समय नहीं खाती। जो बच जाता है, वस्तुतः वही है उस प्रयोजन में नियोजित होने योग्य, जिसके लिये स्रष्टा ने सुर दुर्लभ मनुष्य जन्म धरोहर के रूप में सौंपा है। इस धरोहर का सदुपयोग सुसंस्कारिता संवर्धन, कषाय-कल्मषों के उन्मूलन में किया जाना चाहिए। इसके लिए उपयुक्त साधन है—साबुन जैसा काम करने वाला सेवा धर्म। सेवा उपचारों में सर्वोपरि है—लोकमानस का परिष्कार। यदि वह बन पड़े, तो समझना चाहिए कि छाई हुई दरिद्रता, विपन्नता, मूर्खता, अवांछनीयता, उलझन, विग्रह, अनाचार आदि अनेकों दृश्य-अदृश्य, दैत्य-दानवों से निपट सकना सम्भव हो गया। स्वयं पार होने और अपनी नाव पर बिठाकर असंख्यों को पार करने का सुयोग्य बन गया।

समझदारों से अनुरोध और आग्रह एक ही है कि उपलब्ध जीवन सम्पदा में से जितना अधिक भाग पुण्य-परमार्थ के लिए लगा सकना सम्भव हो, उसे पूरी तत्परता से निकालने और अभीष्ट उद्देश्य के लिए समर्पित करने का प्रयत्न किया जाय। जो अपनी वासना, तृष्णा, और अहंता पर अंकुश लगा सकें, उनके लिए समूचा जीवन भगवत् अर्पण करने में कोई कठिनाई नहीं पड़नी चाहिए। पेट भरने, तन ढकने जैसे स्वल्प साधन स्वयं भी उपार्जित किये जा सकते हैं अथवा जिस सेवा कार्य में अपने को समर्पित किया गया है, उस तंत्र से भी ब्राह्मणोचित निर्वाह प्राप्त किया जा सकता है। किसी सेवाभावी के लिए औसत नागरिक स्तर का निर्वाह जुटा देने में समाज को कभी कोई आपत्ति नहीं रही और न भविष्य में रहेगी। इन दिनों जनगणना के अनुसार धर्म के नाम पर आजीविका प्राप्त करने वालों की संख्या प्रायः ६० लाख है। इसके अतिरिक्त लाभ उठाने वाले भी कम-से-कम इतने ही और भी हो सकते हैं। इस प्रकार एक-सवा करोड़ व्यक्तियों को धर्म के निमित्त अभी भी पोषण मिलता है, जबकि उस निमित्त वास्तविक काम नहीं के बराबर हो पाता है। देवताओं के एजेण्ट बताकर ही वे अपना व्यवसाय सुरक्षित रखे रहते हैं। इसके स्थान पर यदि सच्चे अर्थों में धर्म-धारणा के निमित्त अपने को समर्पित करने वाले सेवा भावी उपलब्ध हो सकें तो इस दिशा में भावनाशील जनता अपेक्षाकृत कई गुना खर्च वहन करने के लिए प्रसन्नतापूर्वक तैयार पायी जा सकती है।

पूरा या आधा-अधूरा समय व्रतधारी स्तर का नियोजित करने वाले को निर्वाह सम्बन्धी चिन्ता न कभी रही है और न रहनी चाहिए। आड़े तो संकीर्ण स्वार्थपरता और आदर्शवादिता के प्रति अनास्था ही आती है। यदि उनसे किसी कदर निपटा जा सके, तो विचारशील वर्ग का एक बड़ा समुदाय युग महती आवश्यकता को पूरा करने के लिए आगे आ सकता है। विरक्तों के लिए इस दिशा में चल पड़ने के लिए राजमार्ग खुला पड़ा है, पर जिनकी जिम्मेदारी गृहस्थ के साथ जुड़ी हुई है, वे औचित्य की सीमा के अन्तर्गत परिवार पोषण की व्यवस्था के बाद बचा हुआ समय युग चेतना को जन-जन के मन तक पहुँचाने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। २४ घण्टे में से चार घण्टे निकाल सकना किसी भावनाशील के लिए भारी नहीं पड़ना चाहिए। व्यस्त लोग भी यदि सच्चे मन से चाहें तो २ घण्टे तो हँसते-हँसाते इस निमित्त लगाते ही रह सकते हैं। अनेकों को साप्ताहिक अवकाश के दिन छुट्टी रहती है। उस एक दिन को तो सहज ही निकाला जा सकता है। इस प्रकार महीने में चार पूरे दिन भी यदि निकलते रहें, तो उतने भर से भी परमार्थ प्रयोजन के लिए इतना अधिक काम हो सकता है, जिसे देखते हुए आश्चर्यचकित रहा जा सके। दो-चार घण्टे नित्य का समय भी यदि निरन्तर लगता रहे, तो उसकी उपलब्धियाँ भी इतनी बढ़ी-चढ़ी हो सकती हैं, जिन्हें एक सच्चे पुरोहित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की समग्र सेवा-साधना के समतुल्य समझा जा सके।

प्रयास का शुभारम्भ अपने घर परिवार से भी हो सकता है। उस छोटे परिकर को समय-समय पर परामर्श देते रहकर नित्य प्रति प्रेरणाप्रद कथा-कहानियाँ सुनाते रहकर इस स्तर का बनाया जा सकता है कि उस समुदाय के छोटे-बड़े, नर-नारी अपने-अपने ढंग से व्यक्तित्व विकास के लिए उन्मुख हो सकें। घरेलू काम-काज में स्वयं सम्मिलित रहकर साथ ही परिजनों को लेकर हँसते-खेलते, श्रमशीलता, शिष्टता, मितव्ययिता, सुव्यवस्था, सहाकारिता जैसे सद्गुणों से अभ्यस्त बनाया जा सकता है। जिनके साथ सदा रहना पड़ता है उन्हें अपना आदर्श प्रस्तुत करते हुए अपेक्षाकृत अधिक समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार, बहादुर बनाने का क्रम अनवरत् रूप से आगे बढ़ता रह सकता है। परिवार शिक्षण की प्रक्रिया अपने आपको भी उसी प्रकार लाभान्वित कर सकती है, जिस प्रकार दूसरों के लिए मेंहदी पीसने वाले के अपनें हाथ भी रंगते और रचते देखे जाते हैं। परिवार पर आदर्शवादी छाप छोड़ने के लिए अपने को तो वैसा बनाना ही पड़ेगा।

उसके उपरान्त पड़ौसिफयों, सम्बन्धियों, मित्रों परिचितों का परिकर आता है। गिनने पर यह लोग भी सौ-पचास से कम नहीं बैठ सकते। इन्हें युग साहित्य पढ़ाते-सुनाते रहने का काम सरलतापूर्वक चलते-फिरते हो सकता है। इस प्रयोजन के लिए युग निर्माण योजना द्वारा बड़ी संख्या में अत्यन्त सस्ते मूल्य का साहित्य प्रकाशित होता रहता है, जिसे मँगाते रहने से वह सिलसिला बराबर चलता रहता है, जिसमें उत्साही जनों को घर बैठे पुस्तकें पढ़ने देने और फिर वापस ले आने का क्रम निःस्वार्थ रूप से चलाया जा सकता है।

समयदान की तरह ही अंशदान भी प्रत्येक युग पुरोहित को निकालना है। न्यूनतम बीस पैसा नित्य निकालते रहने का क्रम भी चलता रहे, तो इतनी छोटी राशि से उतना साहित्य मँगाया जा सकता है, जिसे सम्पर्क क्षेत्र के लोगों को पढ़ाने वापस लेने के उपरान्त अपना घरेलू पुस्तकालय भी अधिकाधिक समृद्ध होता चले। यह दुहरा लाभ निरन्तर उठाते रहना हर सृजन शिल्पी के लिए नितान्त सरल हो सकता है।

आदर्श वाक्यों को दीवार पर लिखते रहना, घरों, दुकानों, दफ्तरों, कारखानों में आदर्श वाक्यों के स्टीकर चिपकाना भी उल्लास भरा वातावरण बनाने की दृष्टि से सहज और सस्ता उपचार है। इन सस्ते आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक स्टीकरों में थोड़े से पैसे खर्च करना किसी को भी भारी नहीं पड़ता।

लेखनी के अतिरिक्त वाणी भी अपना चमत्कारी प्रभाव दिखाती है। इसके लिए इन दिनों सभा-सम्मेलनों के आयोजन किये जाते रहते हैं, पर वे अब बड़े खर्चीले और भारी भाग-दौड़ पर ही सफल हो पाते हैं। उनकी व्यवस्था आये दिन कर सकना कठिन है। फिर उनमें दी गई वक्तृतायें जोशीली होंने पर भी कुछ ही दिन स्मरण रहती हैं।

इसके लिए पगडण्डी जैसा शार्टकट दीपयज्ञों का निकाला गया है। पर्व त्यौहारों पर विशेष अवसरों पर उनकी छोटी-बड़ी योजनायें बनायी जा सकती हैं और निर्धारित धर्मकृत्य के अतिरिक्त उसी अवसर पर सम्मिलित होने वालों से दुष्प्रवृत्तियाँ छोड़ने और सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने की प्रतिज्ञायें करायी जा सकती हैं। सुधार परिष्कार की दृष्टि से यह आयोजन बहुत ही सफल होते देखे गये हैं।

साप्ताहिक सत्संगों का प्रचलन भी अधिक सरल एवं प्रेरणाप्रद है। व्रतधारियों को अपने जैसे चार साथी और ढूँढ़कर पाँच की एक मण्डली 'प्रज्ञा मण्डली' के रूप में गठित कर लेने की प्रक्रिया अब अपने परिकर में तेजी से चल पड़ी है। एक से पाँच हो जाने पर साप्ताहिक सत्संग का क्रम नियमित रूप से चल सकता है। सामूहिक जप, सहगान कीर्तन, द्वीप प्रज्ज्वलन, प्रेरणाप्रद प्रतिपादनों के वाचन की प्रक्रिया प्रायः एक घण्टे में पूरी हो जाती है। इसी अवसर पर झोला पुस्तकालय का सामूहिक उपक्रम चल पड़ता है।

एक से पाँच, पाँच से पच्चीस होने की प्रक्रिया तेजी से चल पड़ी है। इसी चक्रवृद्धि क्रम को अपनाकर पाँच लाख परिजनों से पच्चीस लाख सहयोगी बने हैं। अब इस क्रम को आगे बढ़ाना है। सत्संग मण्डल के संस्थापक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आरम्भ में भले ही पाँच हों, पर उनमें से प्रत्येक को पाँच-पाँच और नये ढूँढ़कर मण्डली को पच्चीस की बनाना ही लक्ष्य रहना चाहिए। विश्वास किया जा सकता कि यह चक्रवृद्धि प्रक्रिया यदि बिना रुके चलती रहे तो न केवल भारत के ८० करोड़ नागरिकों को, वरन् समस्त संसार के ५०० करोड़ मनुष्यों तक भी नवयुग का संदेश पहुँचाना और आदर्शवादिता की पक्षधर विचार क्रान्ति से प्रभावित करना सम्भव हो जायेगा।

साप्ताहिक सत्संगों की प्रक्रिया पर युग पुरोहितों को इन दिनों पूरा-पूरा ध्यान देना और उसे सफल बनाकर रहने का व्रत लेना है। यों छुट्टी का दिन इसके लिए उपयुक्त पड़ता है। पर जहाँ सुविधा हो, वहाँ बारी-बारी से हर दिन उत्साहीजनों के घरों पर यह आयोजन किये जाते रह सकते हैं और उस परिवार के लोगों को आमन्त्रित करके उन्हें नवयुग के अनुरूप प्रेरणाओं से अनुप्राणित करना सम्भव हो सकता है।

जो लोग साप्ताहिक सत्संगों में रस लेने लगें, उनमें नियमित रूप से आगे आने लगें, उन्हें नौ दिवसीय सत्रों में सम्मिलित होने के लिए शान्तिकुञ्ज भिजवाना चाहिए। यहाँ के वातावरण में नौ दिन रहकर भी जो वापस लौटते हैं, वे कुम्हार के अवे में तपकर पके हुए बर्तनों की तरह परिष्कृत व्यक्तित्व लेकर वापस लौटते हैं साथ ही अपने परिचय क्षेत्र में नई चेतना का विस्तार करने में कर्मठ कार्यकर्ताओं की तरह सहायक भी सिद्ध होते हैं। मिशन की विचारधारा से विचाराशीलों को परिचित और प्रभावित करने का काम वृतधारी प्रज्ञापुरोहितों के जिम्में छोड़ा गया है और गीलापन दूर हो जाने पर कुम्हार द्वारा सूखे बर्तनों को अवे में लगाकर पकने की तरह प्रयास करने की जिम्मेदारी शान्तिकुञ्ज ने उठाई है। दोनों पक्ष अपने-अपने जिम्मे का कार्य ठीक तरह से पूरा करते रहें, तो वर्तमान बीसवीं सदी के अन्त तक वे एक लाख प्रशिक्षित लोकसेवी तैयार करने का संकल्प पूरा करने में कोई अड़चन न रहेगी।

"इक्कीसवीं सदी" बनाम "उज्जवल भविष्य" के उद्घोष को यथार्थता में परिणत कर दिखाने के लिए यह आवश्यक है कि एक लाख समयदानी व्रतधारी कार्यक्षेत्र में उतरें और जनमानस के परिष्कार का प्रथम चरण पूरा कर दिखायें। दूसरा चरण क्रिया पक्ष है, जिसमें सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन का वातावरण बनाकर रहना है। मनः स्थिति बंदलने पर परिस्थितियाँ भी परिवर्तित होकर रहती हैं—यह निश्चित है। आज जो कार्य अत्यन्त कठिन दीख पड़ता है, उसे पूरा होने में देर न लगे, यदि समयदानी व्रतधारी युग पुरोहित जनसम्पर्क साधें और स्वाध्याय-सत्संग की ऊर्जा को ज्वलंत बनाये रहने में कटिबद्ध हों।

संक्षेप में युग साहित्य को पढ़ाना, सुनाना प्रज्ञा मण्डलों का गठन एक से पाँच, पाँच से पच्चीस बनने का उपक्रम—मिशन से भलीभाँति परिचित लोगों को शान्तिकुञ्ज भेजकर नौ दिन के प्रशिक्षण की संक्षिप्त, सरल, किन्तु अति प्रभावी विधि व्यवस्था ठीक प्रकार से चल पड़े, तो उसका जादू जैसा चमत्कारी प्रभाव कुछ ही दिन में दृष्टिगोचर होने लगेगा।

विचारक्रान्ति में सामूहिक आयोजनों का महत्व भी कम नहीं है। इसके लिए श्रद्धा और विवेक से भरा-पूरा दीपयज्ञ कार्यक्रम सर्वत्र सरलतापूर्वक नियोजित किया जा सकता है। उसमें न बड़ी पूँजी की आवश्यकता पड़ती है और न बड़े साधन जुटाने के लिए भागदौड़ करने की। इन दिनों यह प्रयत्न चलना चाहिए कि किसी भी क्षेत्र का कोई भी गाँव, मुहल्ला, ऐसा न बचे न जहाँ दीपयज्ञ आयोजनों की प्रक्रिया सम्पन्न हुई हो। सामूहिकता अन्ततः संगठन में बदलती है और अपने उद्देश्यों के अनुरूप प्रतिफल प्रस्तुत करती है। इस तथ्य को दीपयज्ञों के आयोजनकर्त्ता कहीं भी चरितार्थ हुआ देख सकते हैं।

समय दानी युग पुरोहितों के लिए ऐसी व्यवस्था है कि वे समय निकालकर एक महीना शान्तिकुञ्ज में युगशिल्पी प्रशिक्षण प्राप्त करें। इससे उन्हें सुगम संगीत, प्रवचन, दीपयज्ञ तो सीखने को मिलेंगे ही, साथ ही गृह उद्योगों के सम्बन्ध में इतनी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे कि उनका परिवार अपने लिए आवश्यक आजीविका कमा सकें और एक व्यक्ति को युग साधना में निरत होकर निश्चिन्ततापूर्वक कार्य में संलग्न होने का अवसर प्रदान कर सकें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुकरणीय आदर्श हमें ही प्रस्तुत करना है

सतयुग की वापसी इसी एक विधि व्यवस्था पर अवलम्बित है कि लोग आस्था में यह विश्वास उभारें कि मनुष्य जीवन मात्र पेट प्रजनन तक सीमित रहकर पशुओं की तरह श्वाँसों को ढोने के लिए नहीं है, वरन् उससे आत्म-कल्याण और लोक निर्माण के आदर्शों की पूर्ति भी किसी न किसी रूप में की ही जाती रहनी चाहिए।

इसके लिए आवश्यक है कि भारतीय संस्कृति की रीढ़ कही जाने वाली वानप्रस्थ परम्परा को पुनर्जीवित किया जाय। लोग यह रीति-नीति अपनायें कि पूरा न सही आधा जीवन तो उस निमित्त लगना ही चाहिए, जिसके लिए मनुष्य जन्म की धरोहर स्रष्टा ने सौंपी है। यह उद्देश्य पूजा-पाठ भर से पूरा हो सकता है, इस भ्रम में किसी को भी नहीं रहना चाहिए। शारीरिक स्वच्छता के लिए जिस प्रकार स्नानादि नित्य कर्म आवश्यक है, उसी प्रकार मानसिक शुद्धि के लिए उपासना, साधना, आराधना की आवश्यकता है। इतने पर भी आत्म परिष्कार और लोकमंगल में संलग्न रहने की आवश्यकता बनी ही रहती है। इसकी पूर्ति के लिए अधिकाधिक समयदान और अंशदान नियोजित करते रहना चाहिए। इस निर्धारण को कार्यान्वित करने का नाम वानप्रस्थ है। उसी मनःस्थिति से ऐसा कुछ बन पड़ना सम्भव है, जिससे आत्मसन्तोष, लोक सम्मान और दैवी अनुग्रह के त्रिविध लाभों से लाभान्वित हो सकना बन पड़े।

प्रचलन के अनुसार व्यक्ति संकीर्ण स्वार्थपरता के भव-बन्धनों में जकड़े हुए ही अपना आयुष्य बिता देता है। युगक्रान्ति ऐसी होनी चाहिए, जिसमें हर विचारशील को परमार्थ का भी ध्यान रहे और उसके समय एवं साधनों का एक बड़ा अंश उपयुक्त वातावरण बनाने में नियोजित रहे। यह प्रवाह चल पड़े तो समझना चाहिए कि उल्टे को उलटकर सीधा कर दिया गया और उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना का स्वरूप बन गया, सरंजाम जुट गया।

वानप्रस्थ—जन पुरोहित शब्द पुराने हैं। इन दोनों के साथ पाखण्ड की मात्रा इतनी अधिक जुड़ गयी है कि इस तत्वदर्शन को नया नाम देने की आवश्यकता पड़ी। 'गुरु' कभी देवोपम स्तर का परिचायक था, पर अब वह धूर्तता के अर्थ में व्यंग—उपहास के साथ लिया जाता है। इसलिए उस पुराने शब्द के स्थान पर 'मार्गदर्शक' शब्द का उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार पुरोहित को अब व्रतधारी कहा जाय, यही उचित जँचा। प्रज्ञा परिवार के लोग अपने आपको प्रज्ञा पुत्र कहते हैं, इसलिए यदि लम्बा नाम अभीष्ट हो तो व्रतधारी प्रज्ञा पुत्र भी कहा जा सकता है। संक्षिप्त करना हो तो 'व्रतधारी' शब्द भी पर्याप्त है।

शान्तिकुञ्ज ने विश्व के हर कौने में अपना आह्वान गुँजाया कि प्राणवान जीवन्त भावनाशीलों में से जिन्हें भी विषमता का आभाष हो, वे समय की पुकार को सुनें, युगधर्म को समझें और नव सृजन के क्षेत्र में श्रद्धा और साहसपूर्वक उतरें। जिन्हें इस दिशा में चल पड़ने की उमंग उठे, उन्हें न्यूनतम नौ दिन के और अधिकतम एक महीने के सत्र में शान्तिकुञ्ज हरिद्वार आने की तैयारी करनी चाहिए। यों अध्ययन और परामर्श से भी तत्वज्ञान का एक बडा अंश प्राप्त हो सकता है। चिन्तन और मनन का अध्यवसाय भी दिशा निर्धारण कर सकता है, पर उपयुक्त वातावरण में अभीष्ट ऊर्जा उपलब्ध करने का महत्व भी कम नहीं है। इसलिए समय के अनुरूप अपनी गतिविधियों का उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर करने के लिए इन सत्रों में सम्मिलित होने के लिए कहा गया है। व्रतधारी को अपनी परिस्थिति के अनुरूप भावी कार्यक्रम बनाने में अधिक सुविधा रह सकती है। वैसे कुछ विचार-विमर्श तो पत्र व्यवहार से भी सम्पन्न हो जाता है।

अच्छा होता आंशिक समयदान करने वाले वानप्रस्थियों में से एक ऊँची श्रेणी परिव्राजकों की, जीवनदानियों की उभरती। उन्हें प्राचीन काल के संन्यासियों का आधुनिक संस्करण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा जा सकता है। कुछ तो आंशिक रूप से सेवा कार्य करते रहने पर भी बन ही पड़ता है, पर यदि पूरा मन, पूरा समय और पूरा जीवन लक्ष्य ही इसके लिए नियोजित किया जा सके, तो उसे सोने में सुहागे की उपमा दी जा सकती है।

यह भ्रम मन में से निकाल ही देना चाहिए कि जो मात्र खुदगर्जी को ही सोचते, समझते और अपनाते हैं, वे नफे में रहते हैं, मजे में रहते हैं, और मौज उड़ाते हैं। जो परमार्थ में समय और साधन लगाते हैं वे घाटे में रहते हैं। वास्तविकता इससे ठीक उल्टी है। स्वार्थी भले ही कुछ संचय कर लेते और सुविधा साधनों की दृष्टि से भारी पड़ते हों पर संकीर्णता के साथ और जो अनेक दुर्गुण जुड़े होते हैं, उनके कारण व्यक्ति अपनी और दूसरों की आँखों में गया-गुजरा ही सिद्ध होता रहता है। निष्ठुरता, अनुदारता को सघन बनाये रहने पर कोई आज तक व्यक्तित्व की दृष्टि से न तो ऊँचा उठ सका है न आगे बढ़ सका। सड़ी कीचड़ में उपजने और कुलबुलाते रहने वाले घिनौने कीड़ों से अधिक भारी वे बन ही नहीं पाते। अपने परायों की श्रद्धा सहानुभूति से उन्हें वंचित रहना ही पड़ता है। ऐसा मनुष्य अपने आपको अकेला अनुभव करता रहता है और सुनसान में रहने वाले भूत-पलीतों जैसी जिन्दगी जीता है। ऐसों के पास कुछ सुविधा साधन रहते भी हों तो वे साथी सहयोगियों के अभाव में निरानन्द एवं भारभूत बनकर ही रहते हैं।

सुख बाँटने की वस्तु है और दुःख बँटा लेने की। इसी आधार पर आन्तरिक उल्लास और अन्यायों को सद्भाव प्राप्त होता है। महानता इसी आधार पर उपलब्ध होती है। प्रगतिशील स्तर के श्रेष्ठजन सहज ही अपने अन्दर ऐसे सद्गुण विकसित कर लेते हैं, जिनके आधार पर वे जन-जन का सद्भाव अर्जित करते हैं। सराहना के पात्र बनते हैं। लोक-परलोक सुधारते और महामानवों की पंक्ति में अपना प्रतिष्ठित स्थान बनाते हैं। ऐसे लोग भूखे-नंगे भी नहीं रहते। खुशहाली के लिए जिस जन सहयोग की अनिवार्य आवश्यकता पड़ती है, वह उन्हें अनायास ही प्राप्त होता रहता है। उदारता के बदले अन्यायों की उदारता भी मिलकर रहती है। प्रसन्नता और प्रफुल्लता इसी पर अवलम्बित है।

पुरोहित वर्ग को इसलिए समाज का मूर्धन्य माना जाता रहा है कि वे मात्र पदार्थ जन्य सेवा ही नहीं करते, वरन् पिछड़ों को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने वाली प्रेरणायें भी बरसाते हैं। आर्थिक सहायता कुछ समय ही किसी का काम चलाती है। कुपात्रों द्वारा दुरुपयोग बन पड़ने पर तो वह अनर्थकारी भी बन जाती है। ऐसी दशा में ग्रहीता ही नहीं, दाता भी नरक जैसे अपयश का भाजन बनता है, किन्तु आदर्शवादी प्रेरणायें ऐसी हैं, जिन्हें पाकर कोई भी भौतिक एवं आत्मिक क्षेत्र में निश्चित रूप से प्रगति ही करता है। इस अनुदान का बदला प्रतिदान न सही कृतज्ञता तो मिलती ही है। भले ही वह वाणी से व्यक्त न भी की गई हो। ऐसे उदारमना लोग ही देश, धर्म, समाज, संस्कृति की कुछ कहने योग्य सेवा कर पाते हैं। बदले में वह उच्चस्तरीय प्रतिफल प्राप्त करते हैं, जिससे नर-वानरों को वंचित ही रहना पड़ता है।

आधी आयु परमार्थ में लगाने की प्राचीन देव परम्परा का ही सत्परिणाम था कि सतयुगी वातावरण में जन्मे लोग देवमानव कहलाते रहे और धरती को स्वर्गोपम बनाने की भूमिका निभाते रहे। अब उज्ज्वल भविष्य संरचना होने की पुण्य बेला है, इसमें ऐसे ही देव मानवों के प्रयासों की आवश्यकता पड़ेगी। इसकी पूर्ति के लिए जिनमें भी भाव संवेदना विद्यमान हो, उन्हें उसी राजमार्ग पर चलने का साहस जुटाना चाहिए जिस पर कि अपने पूज्य पूर्वज चलते रहे हैं। उच्चस्तरीय लोक सेवियों की कमी न रहने पर जन-जन की भौतिक और आत्मिक प्रगति प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगेगी। युग की इस माँग को पूरा करने के लिए हमें स्वयं ही सोचना और बिना साथियों की, अग्रगामियों की प्रतीक्षा किये स्वयं ही बढ़ चलने का आदर्श उपस्थित करना चाहिए। व्रतधारी प्रज्ञा पुत्रों द्वारा यही अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया भी जा रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वानप्रस्थ परम्परा का पुनर्जागरण

भारत का महान अतीत और उसके आधार

प्राचीन भारत की सर्वतोमुखी प्रगति का विवरण परिचय जब पढ़ते-सुनते हैं तब इस बात का आश्चर्य होता है कि उन दिनों जबकि साधनों का भारी अभाव था, किस आधार पर लोग आगे बढ़ सके होंगे—ऊँचे उठ सके होंगे। उन दिनों मशीनों का आविष्कार नहीं हुआ था, बिजली, भाप जैसे शक्ति स्रोत भी हाथ में न आये थे, यात्रा के लिए न सड़कें थीं, न पुल, न आज जैसे वाहन। शिक्षा सस्थायें भी गाँव-गाँव कहाँ थीं, ? प्रेस न होने से हस्तलिखित पुस्तकें जिस-तिस के पास ही थीं और बहुत महँगी थीं। डाक-तार, टेलीफोन, रेड़ियो जैसी सुविधाओं का अभाव था। नहरें, बाँध, विद्युतकूप जैसी सिंचाई के साधन भी नहीं थे। सुरक्षा के लिए भुजबल पर ही निर्भर रहना पड़ता था। तीर, तलवार जैसे वे ही अस्त्र-शस्त्र थे, जिन्हें कोई बलिष्ठ व्यक्ति ही उठा, चला सकता था। बन्दूक, तोप, मशीनगन, डायनामाइट मिसाइलें जैसी तकनीकी सैन्य-सज्जा भी उन दिनों कहाँ थीं ? साधनों की दृष्टि से निस्सन्देह पुरातन काल बहुत पिछड़ा हुआ था। फिर भी प्रगति का इतना उच्च स्तर-जिसे देखकर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है, किसी रहस्य आधार पर ही सम्भव हुआ होगा।

उन दिनों अपना देश स्वर्ग-सम्पदाओं का स्वामी था। कोलम्बस इस सोने की चिड़िया को तलाश करने निकला था। यहाँ पहुँचने का सीधा, सरल रास्ता तलाश कर रहा था, पर वह पहुँचा अमेरिका। योरोपियन जातियाँ भारत से जो पानी चाहती थीं, वह उन्हें अमरिका महाद्वीप से मिल गया। इससे पहले का इतिहास बताता है कि यहाँ के निवासियों ने विश्व के कौने-कौन तक जाकर कृषि, उद्योग, शिल्प, चिकित्सा शिक्षा आदि के वे आधार सिखाये जिनके आधार पर अर्थ, उपार्जन एवं सुविधा साधनों का अभिवर्धन सम्भव हो सके। न्याय, शासन, सामाजिकता, धर्म आदि की उन पद्धतियों का ज्ञान कराया, जिनके सहारे सुख शान्ति के साथ जिया जा सकता है। शासन सूत्र के संचालन का बोध समस्त संसार को कराने के कारण भारत 'चक्रवर्ती' कहलाया। उसके कारण विश्व में सम्पन्नता का उदय हुआ, इसलिए वह स्वर्ण सम्पदाओं का अधिपति माना गया। ज्ञान विज्ञान की अनेकानेक धाराओं से सुदूर देशों को अवगत कराने के कारण उसे जगद्गुरु का सम्मान दिया गया। अपनी अगणित दिव्य विशेषताओं के कारण भारतवासी समस्त संसार में 'देव' कहलाते थे। भारत भूमि को देव भूमि कहा जाता था। यह प्रत्येक दृष्टि से—'स्वर्गादपि गरीयसी' थी। उसमें रहने वालों को पृथ्वी के देवता कहा जाता था। ३३ कोटि भूसुरों की स्थली 'भारत माता' मानव जाति के लिए परम पावन तीर्थभूमि थी। इस धरती का दर्शन करने जो आ पाते थे, वे अपने को धन्य मानते थे।

आज की स्थिति सर्वथा बदल गई है। अन्न से लेकर शस्त्रों तक के लिए हम परमुखापेक्षी हैं। हमारी शिक्षा, आवश्यकता विदेशी पूरा करते हैं। चिकित्सा तक में आत्मनिर्भर नहीं। यह तो भौतिक सम्पत्ति की बात रही। आत्मिक क्षेत्र की दशा और भी दयनीय है। अनुशासन, वचन पालन, समय की नियमितता, नागरिक कर्तव्य, सामाजिक उत्तरदायित्व, देशभक्ति शिष्ट व्यवहार जैसी मानवोचित विशेषताओं की कसौटी पर हमारा जन-जीवन खरा नहीं खोटा ही सिद्ध होता है। स्वच्छता जैसी प्राथमिक मानवीय आवश्यकता तक से हम अभी परिचित नहीं हो पाये हैं। सामाजिक कुरीतियाँ, मूढ़-मान्यताएँ एक प्रकार से देश की जड़ें खोखली कर चुकी हैं। नर-नारी की असमानता—वंश जाति के आधार पर बरती जाने वाली ऊँच-नीच की मान्यता, लगभग एक करोड़ लोगों द्वारा अपनाया गया भिक्षा व्यवसाय, विवाहों की प्राणघातक खर्चीली धूम-धाम, जैसे कष्ट-व्रण राष्ट्र की काया को किस प्रकार अपंग, कुरूप और कलंकित किये हुये हैं, यह देखकर दर्द उठता है। जिस देश में शिक्षा २० प्रतिशत हो ८० प्रतिशत अशिक्षित भरे पड़े हों, वहाँ विविध भ्रष्टाचारों का पनपना स्वाभाविक है। धर्म से लेकर राजनीति तक धूर्त विडम्बनायें अपनी जड़ें दिन-दिन अधिक गहरी घुसाती चली जा रही हैं इन परिस्थितियों में हम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तर्द्वन्द्वों में—गृहयुद्ध जैसी स्थिति में रहते हुए प्रगति से वंचित ही रह सकते थे—रह रहे हैं।

प्राचीन काल की महान प्रगति आज की अवगति की तुलना पर्वतशिखर और गहरे गर्त से की जा सकती है। भौतिक दृष्टि से खोया सो दुःखद है उसी की क्षति पूर्ति आसानी से नहीं हो सकती है। पर मर्मभेदी दुःख उससे आत्मिक स्थित के पतन का है जिसके कारण इस देश को प्रत्येक घर नर-रत्नों की खान बना हुआ था, जिसके कारण समस्त विश्व अपने उत्कर्ष के लिए आशा भरे सहयोग की अपेक्षा करता था।

यह अत्यधिक विचारणीय प्रश्न है कि धर्म और अध्यात्म का कलेवर भूतकाल की अपेक्षा इन दिनों घटा नहीं बढ़ा है। धर्म संगठन की, धर्मध्वजीमहन्त मठाधीशों की, साधु ब्राह्मण की ही वृद्धि नहीं हुई है, कथा कीर्तनों की, देवाराधन कर्मकाण्डों की भी धूम है। मन्दिर तो इस तेजी से बनते चले जा रहे हैं, मानों उन्हीं की संख्या वृद्धि पर धर्म की आधारशिला रखी हुई हो। इतना सब होते हुए भी धर्म की आत्मा क्यों मर गई ? उसकी सड़ी लाश हमारे हाथ क्यों रह गई ?

सामान्य दृष्टि से लोग इस अवनति के लिए साधन-हीनता को दोषी ठहराते हैं। उससे आगे जो सोचते हैं, वे चारित्रिक शिक्षण के अभाव को उसका कारण बतलाते हैं, किन्तु थोड़ी सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर कुछ और ही तथ्य सामने आते हैं।

यदि साधनों को सुख शान्ति का माध्यम मानें तो आज हमें भूतकाल की तुलना में हर दृष्टि से आगे होना चाहिए था। आज के अर्थशास्त्री प्रायः यही रट लगाते कि धन का अभाव पतनका हेतु है और संपत्ति होने पर उन्नति होती है। साम्यवादी दार्शनिक निरन्तर इसी तर्क को दुहराते हैं। वे पतन को गरीबी से जोड़ते हैं और प्रगति के लिए अधिकाधिक सुविधा साधनों के सम्वर्धन पर जोर देते हैं। यदि यह बात सही रही होती तो अमेरिका जैसे धनी एवं साधन सम्पन्न देशों के नागरिक देवोपम जीवन जी रहे होते, पर वास्तविकता इससे सर्वथा विपरीत है। वे अपनी आन्तरिक विशेषताएँ बेतरह गँवाकर हर दृष्टि से खोखले होते चले जा रहे हैं। निर्धनता से महँगी बढ़ रही है—उन्हें वह सम्पन्नता। यदि धन ही प्रगति का कारण रहा होता तो कोपीनधारी पर्णकुटीरों में रहने वाले ऋषियों से अधिक कोई दुःखी न होता और सम्पन्न लोगों में असंतोष देखने को न मिलता। अस्तु यह नहीं सोचा जाना चाहिए कि प्राचीनकाल की सम्पन्नता उत्थान का कारण रही होगी और आज निर्धनता के कारण हम सब पतनोन्मुख हो रहे हैं।

इसी प्रकार यह कहना भी गलत है कि चरित्र निष्ठा का मार्ग-दर्शन न मिलने से लोग पतनोन्मुख होते हैं। प्राचीनकाल में प्रेस नहीं था। हस्तलिखित पुस्तकें जिस-तिस के पास थीं और उनका मूल्य अधिक था। हर कोई उन्हें प्राप्त नहीं कर सकता था। शिक्षा का प्रसार भी उतना नहीं था। अब हर स्तर का साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। यह ठीक है कि पतनोन्मुख साहित्य आँधी तूफान की तरह बढ़ा है। पर इन्कार इस बात से भी नहीं किया जा सकता कि प्रेरक साहित्य का सर्वथा अभाव नहीं। जो चाहे उसे भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त कर सकता है। यही बात उपदेशकों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। कला-मंच पर कब्जा करके पतन ने निर्लज्ज स्वेच्छाचार का खुलकर समर्थन किया और उसके फलस्वरूप जनमानस में विनाशकारी दुष्प्रवृत्तियों को आश्रय मिला है यह एक नग्न, सत्य और स्पष्ट तथ्य है पर यह कहते भी नहीं बनता कि सदुपदेश देने वाली वाणी सर्वथा मौन है। सभा-सम्मेलनों में आये दिन सदाचरण के पक्ष में बहुत कुछ कहा जाता रहता है। रेडियो से भी कितने ही प्रेरक प्रवचन प्रसारित होते हैं। कथा-प्रवचन करने वाले दिन-दूने रात चौगुने बढ़ते चले जा रहे हैं। धर्मोपदेशों की बाढ़ सी आती दीखती है। इस सबको जोड़ा जाय तो सदाचरण के पक्ष में होने वाले प्रवचनों को नगण्य नहीं ठहराया जा सकता। यदि रुचि हो तो ऐसे प्रेरक प्रसंग भी पर्याप्त मात्रा में सुनने को मिलते हैं, जो सज्जनता की राह पर चलने की प्रेरणा दे सकते हैं।

लेखनी और वाणी को व्यक्ति निर्माण का माध्यम माना जाता है। यह सही भी है, कि यह दोनों माध्यम मनुष्य के मस्तिष्क को झकझोरते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं और उसे दिशा प्रदान करते हैं। इनकी शक्ति से इन्कार नहीं किया जा सकता। इतने पर भी यह प्रश्न तो यथा-स्थान बना ही रहता है कि जब आज लेखनी और वाणी उत्कृष्टता का समर्थन करने में सर्वथा मौन नहीं हुई है तो फिर जनसमाज का स्तर इस द्रुतगति से पतनोन्मुख होता क्यों चला जा रहा है ? शील और सदाचरण मखौल की वस्तु क्यों बन रहे हैं धर्मोपदेशक भी अधर्म आचरण के साथ क्यों चिपके हुए हैं ?

इस प्रश्न का समाधान एक ही है कि मनुष्य का मस्तिष्क भर लेखन-वाणी प्रभावित करती हैं, उसका अन्तःकरण स्पर्श करने की शक्ति, आदर्श को आचरणों में ढालने वाले महामानवों में ही होती है। जनमानस को ऊँचा उठाने में, व्यक्तियों को परिष्कृत बनाने में केवल वे ही समर्थ होते हैं। आज उनकी ही भारी कमी पड़ रही है। भौतिक प्रयोजनों के सन्दर्भ में लेखनी और वाणी का महत्व असंदिग्ध है, स्कूल कॉलेजों का समस्त प्रशिक्षण इन्हीं दो माध्यमों से चल रहा है। तर्क, तथ्य और प्रमाण प्रस्तुत करके पिछड़े विचारों को सुधारने और नई मान्यताएँ बनाने का अवसर मिलता है। ऐसा मस्तिष्क को झकझोरने वाला बहुत कुछ क्रियाकलाप, लेखनी और वाणी सम्पन्न करती है। विचार-शक्ति का अपना स्थान है और अपना महत्व। उसकी शक्ति उपयोगिता और आवश्यकता से कोई कैसे इन्कार करेगा ?

किन्तु जहाँ तक व्यक्तियों को उत्कृष्टता के ढाँचे में ढालने की आवश्यकता का प्रश्न है, वहाँ यही तथ्य सामने आ खड़ा होगा कि आदर्शों को अपने जीवन में उतारने वाले व्यक्ति ही दूसरों को अनुकरण की, अनुगमन की प्रेरणा देकर उन्हें ऊँचा उठा सकने में समर्थ हो सकते हैं। प्राचीनकाल में यह प्रयोजन साधु, ब्राह्मण पूरा करते थे। वे सर्वसाधारण के सामने यह आदर्श प्रस्तुत करते थे कि परमार्थ—परायण जीवन न तो कष्टकर है, न असुविधाजनक, न असम्भव, न अव्यावहारिक वरन् थोड़ी शारीरिक असुविधा सहने पर जो मानसिक एवं आत्मिक लाभ मिलता है, वह इतना बहुमूल्य है कि उसे प्राप्त करने के लिए यत्किंचित असुविधा उठाना बाल-विनोद जैसा तुच्छ समझा जा सकता है। वे आदर्शवादी जीवन जीते थे। उनके प्रति मानस में सहज श्रद्धा उमड़ती थी, वह उन महामानवों द्वारा दी हुई उत्कृष्टतावादी प्रेरणाओं को आत्मसात करने की पृष्ठभूमि बनाती थी। लोग उनके उपदेशों को मखौल नहीं मानते थे, मनोरंजन के लिए नहीं सुनते थे और न वक्तृत्व-कला के आधार पर निन्दा-प्रशंसा करते थे, वरन् आदर्शवादी महामानवों के वचन शास्त्र-मन्तव्यों की तरह—श्रुति-प्रतिपादन की तरह हृदयंगम किये जाते थे। इस पुण्य कार्य के लिए जीवन समर्पित करने वाले महामानवों के दो वर्ग थे, एक गृहस्थ अर्थात् ब्राह्मण, एक सीमित क्षेत्र में रहकर वहाँ का पौरोहित्य धर्म नेतृत्व करने वाले। दूसरे विरक्त, जिन्हें परिव्राजक रहकर सुदूर क्षेत्रों की यात्राएँ करनी होती थीं और सेवा क्षेत्र सुविस्तृत रखना पड़ता था। ब्राह्मण और साधु दोनों ही साधु संस्था के परस्पर पूरक अंग थे। दोनों के कार्यक्रम में थोड़ा अन्तर था पर लक्ष्य पूर्णरूपेण एक ही था, लोक—मानस को उत्कृष्टतम् बनाये रहने के लिए अपने ढंग से अथक एवं अनवरत रूप से उत्कृष्ट प्रयास करना। प्राचीनकाल में यह साधु संस्था उच्च स्तर पर पहुँची हुई थी। उसी ने जन साधारण के व्यक्तियों को ऊँचा उठाया था और उस उत्कर्ष के आधार पर ही वह सब सम्भव होता रहा, जिसका हम आज भी गर्वोन्नत मस्तक से स्मरण करते हैं।

महामानवों की यह टकसाल भारतीय धर्म व्यवस्था का प्रमुख अंग थी। जन्म से अथवा गुण कर्म स्वभाव के आधार पर जो व्यक्ति आजीवन इस कार्य में लगना चाहते थे उन्हें वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत 'ब्राह्मण' संज्ञा दी जाती थी। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों से मुक्त होकर, जो लोग इस धारा में प्रवेश करते थे आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत उन्हें साधु-वानप्रस्थी-संन्यासी कहा जाता था।

"भारतीय धर्म का दूसरा नाम 'वर्णाश्रम-धर्म' है। भारतीय-जीवन, आदर्शों की श्रृंखलाओं से इंच-इंच बँधा है। ब्राह्मण जन-मानस को परिष्कृत बनाये रहने का उत्तरदायित्व सँभाले। क्षत्रिय अनाचार से निपटे, शक्ति की न्यूनता किसी दुर्बल को भी न खटकने पावे। वैश्य समाज के अभावों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को दूर करें, उपार्जन और उत्पादन के स्रोत खोलें। शूद्र, श्रम की आवश्यकता पूरी करे। पेट भरने, तन ढकने की न्यूनतम आवश्यकता हर किसी को पूरी करनी पड़ती है। परिवार का उचित पोषण भी अभीष्ट है, उतना समाज से लिया जा सकता है लेना चाहिए, दिया जा सकता है देना चाहिए। पर जीवन लक्ष्य, ज्ञान, बल, धन एवं श्रम से संसार का भण्डार भरते हुए सर्वतोमुखी प्रगति में अपने आपको खपा देना-लोकमंगल को लक्ष्य मानकर चलना, यही वर्ण धर्म है।

वर्ण धर्म के अनुसार ब्राह्मण वर्ण को नैतिक और सामाजिक स्थिति की सुदृढ़ता बनाये रखने का उत्तरदायित्व सम्भालना पड़ता था। धर्म और आध्यात्म—का उपासना और साधना का विशालकाय-कलेवर मनुष्य की आन्तरिक महानता में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि का लक्ष्य रखकर ही खड़ा किया गया है। नीति-निष्ठ, कर्तव्यपरायण और समाज सेवी व्यक्तित्वों का विकास ही धर्मधारिका—अध्यात्मक दर्शन का एक मात्र प्रयोजन है। ईश्वर की समीपता और प्रसन्नता प्राप्त करने का आधार लेकर चलने वाले मनुष्य को आत्म-परिष्कार और उदार ममता-विस्तार का अवलम्बन स्वीकार करना पड़ता है। इस तरह प्रकारान्तर से आस्तिकता और ईश्वर भक्ति, धर्म धारणा और तपश्चर्या का चरम प्रयोजन मनुष्य में देवत्व का अवतरण ही बनता है। ब्राह्मण वर्ग इसी प्रयोजन की पूर्ति में अपने को खपाता था। आज ऐसा ब्राह्मण कहाँ है ?

यहाँ जन्म के आधार पर अपने को ब्राह्मण कहने और कहाने का अभिमान करने वाले जाति वालों की चर्चा नहीं हो रही है। वे तो अभी भी करोड़ों हैं और प्रजनन की दृष्टि से पीछे न रहकर दिन-दिन बढ़ ही रहे हैं। यहाँ चर्चा कर्म ब्राह्मणों की ही रही है। पोथी-पत्रा के सहारे आजीविका कमाने वाले लोगों को भी यहाँ गणना नहीं की जा रही है, यहाँ ब्राह्मणों से अभिप्राय उस वर्ण से है जो अपने अस्तित्व को लोकमंगल के लिए, भावनात्मक उत्कृष्टता अभिवर्धन के लिए, अपने आपको तिल-तिल करके जलाता है। अपनी सत्ता को पूर्णतया समर्पित करता है। यह वर्ण अपना व्यक्तित्व अत्यन्त उच्चकोटि के समग्र आदर्शवाद में ओत-प्रोत करके आरम्भ करता है और क्रमशः उसकी परणिति लोक-मंगल एवं लोकशिक्षण की विविध प्रवृत्तियों के अभिवर्धन में दृष्टिगोचर होती है। ब्राह्मण की तात्विक परिभाषा के अन्तर्गत ऐसे ही व्यक्तित्व आते हैं और ब्राह्मणत्व का आधार जन्म नहीं कर्म है। आज जो लोग जन्म से वर्ण मानते हैं, वे ऐसी भूल करते हैं जैसी किसी को जन्म से ही वकील, डॉक्टर, प्रोफेसर अथवा चोर-डाकू, व्यसनी, दुर्गुणी आदि मानने वाले करते हैं। जन्म से तो मनुष्य सिर्फ नर-पशु ही पैदा होता है, पीछे जो कुछ वह बनता है, उसी के आधार पर उसका वर्ण विभाजन होता है। उसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए ऊपर की पंक्तियों में ब्राह्मणत्व के अभाव और उसके व्यापक दुष्परिणामों की चर्चा की गयी है।

यों परम्परागत वर्ण-धर्म का भी अपना महत्व है, उससे श्रम एवं उत्तरदायित्वों का विभाजन होता है और एक वर्ग अपने लिए निर्धारित कार्य पद्धति निश्चित करके उस दिशा में वंश परम्परा युक्त विशेषताएँ उत्पन्न करता है। पूर्वज जिस कार्य को करते रहे हैं, उसे भावी संतान भी अधिक अच्छी तरह कर सकती है। अध्यापक के बच्चे अपेक्षाकृत अच्छे अध्यापक बन सकते हैं और व्यापारी के बालकों में व्यावसायिक कुशलता का होना स्वाभाविक है। जो चर्चा, जो क्रिया, जो परिस्थिति सामने रहती है, परम्परागत चली आती है, उसमें पीढ़ियाँ स्वयमेव अधिक सुविधा अनुभव करती हैं और कुशलता बढ़ाती चलती हैं। व्यवसाय एवं श्रम-विभाजन का भी सन्तुलन बना रहता है, बेकारी नहीं बढ़ती। ऐसी कितनी ही विशेषताएँ थीं, जिन्हें ध्यान में रखते हुए वर्ण-व्यवस्था को भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में निर्मित, विकसित किया गया था।

दुर्भाग्य को क्या कहा जाय—जिसने वर्ण व्यवस्था जैसी महत्वपूर्ण समाज-प्रक्रिया को, एक समाज को, खण्ड-विखण्डों में काटकर फेंक दिया। अदूरदर्शिता पूर्ण—अनीति मूलक और अत्यंत अहित कर ऊँच-नीच मान्यता को जन्म दिया और एक समाज के ऐसे असंख्य टुकड़े बँटकर बिखर गये, जो परस्पर रोटी, बेटी तक का व्यवहार करने के लिए तैयार नहीं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वर्ण-व्यवस्था का मूल स्वरूप अब लगभग नष्ट हो गया है।

ऐसी दशा में वर्ण-व्यवस्था पर नये सिरे से विचार करना पड़ेगा और उसमें मौलिक एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन करने होंगे। जन्म-जाति की वर्तमान मान्यताओं का उन्मूलन करना पड़ेगा। मनुष्य-मनुष्य के बीच विरादरी के नाम पर जो ऊँच-नीच की भेड़चाल चल पड़ी है उसे हटाना होगा। व्यवसाय के आधार पर वंश-परम्परा जाति चल सकती है और भले-बुरे कर्मों के आधार पर ऊँच-नीच का निर्धारण किया जा सकता है। इन क्रान्तिकारी परिवर्तनों से निश्चित ही वर्ण-व्यवस्था का समयानुकूल पुनर्निर्धारण होगा। आज जो स्थिति है, उसके रहते वर्ण-धर्म का समर्थन करना, उसे प्रोत्साहन देना आत्मघाती ही हो सकता है।

आश्रम धर्म की महत्ता वर्ण से भी अधिक महत्वपूर्ण रही है। उसके अनुसार भारतीय धर्मानुयायी को बाध्य किया गया है कि अपना आधा जीवन व्यक्तिगत एवं भौतिक प्रयोजनों के लिए रखे और आधा आत्मिक एवं पारमार्थिक उद्देश्य के लिए सुरक्षित रखे। ब्रह्मचर्य की अवधि में मस्तिष्क को—शरीर को परिपुष्ट बनाने में, विद्याध्ययन एवं सम्वर्धन के क्रिया कलापों में लगाये। इसके पीछे जोशीले खून की विविध उमंगों एवं महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए गृहस्थी बसायें—अर्थ उपार्जन करें, परिवार का सुसंचालन करें, समाज की भौतिक प्रगति में योगदान दें, अर्थ उपार्जन का एक बड़ा अंश लोकोपयोगी कार्यों में देकर सत्प्रवृत्तियों का पोषण करें।

आश्रम धर्म का प्रयोजन था आधा जीवन भौतिक प्रगति में और आधा जीवन पारमार्थिक प्रगति में नियोजित रखना। शरीर यात्रा के लिए समृद्धि और साधना के लिए भौतिक प्रगति भी आवश्यक है। स्वास्थ्य, शिक्षा, सम्पत्ति, वंश वृद्धि, परिवार-व्यवस्था, सुरक्षा आदि कार्यों के लिए जीवन का पूर्वार्ध उपयुक्त रहता है। इसलिए ब्रह्मचर्य और गृहस्थ के दो आश्रम इन प्रयोजनों को पूरा करने के लिए निर्धारित किये गये। जीवन का उत्तरार्द्ध परमार्थ प्रयोजनों के लिए है। वानप्रस्थ और संन्यास की सरंचना इसी उद्देश्य के लिए की गई है। इन्हें दूसरे शब्दों में साधु-संस्था के दो भाग कह सकते हैं। वानप्रस्थ ब्राह्मण-धर्म है, क्योंकि उसमें किसी स्थान पर रहने, अध्ययन एवं तप करके आत्मबल बढ़ाने की, गुरुकुल आदि आश्रम चलाने की व्यवस्था है। संन्यासी परिव्राजक को कहते हैं। व्यापक क्षेत्र में भ्रमण करते हुए स्थान-स्थान की समस्याओं को समझना और वहीं मोर्चे पर पहुँच कर उससे निपटना संन्यासी का कार्य है। ऐसे जीवन में परिवार लेकर नहीं चला जा सकता, अस्तु संन्यासी बिना पत्नी के रहते थे, जबकि वानप्रस्थ के एक स्थान पर रहने के कारण पत्नी को साथ रखने में सुविधा रहती थी। वानप्रस्थ और संन्यासी दोनों मिलकर ब्राह्मण और साधु की अनवरत् आवश्यकता पूरी किया करते थे।

भारतीय-जीवन का उत्तरार्द्ध परमार्थ प्रयोजनों के लिए नियत निर्धारित था। यदि १०० वर्ष की पूर्ण आयु मिलने की आशा हो तो पूर्वार्द्ध-उत्तरार्द्ध के लिए पचास-पचास वर्ष काट लिये जाते थे। यदि स्वास्थ्य या परिस्थितियाँ इतना जीने की न हों तो सम्भावित आयु का उसी आधार पर विभाजन करते थे। बच्चे के उत्पादन तथा उनके स्वावलम्बन का आरम्भ से ही ऐसा ध्यान रखते थे कि उत्तरार्द्ध में प्रवेश करते समय कोई पारिवारिक जिम्मेदारियाँ शेष न रहें। बीस-पच्चीस वर्ष की आयु में एक-दो सन्तानें पैदा कर ली जायँ तो पचास की आयु होने तक वे समर्थ और स्वावलम्बी हो जाती थीं। कदाचित् कोई छोटा रह गया तो बड़े भाई अपना नैतिक उत्तरदायित्व मानते थे कि छोटे भाई-बहिनों का पुत्रवत् लालन-पालन करें। इस प्रकार पारिवारिक उत्तरदायित्वों से यथा समय निपट लिया जाता था। पत्नी आमतौर से अपने बेटे-पोतों, पुत्र-वधुओं, दोहित्रों में प्रसन्नतापूर्ण जीवन-यापन करती थीं। जिन्हें पति की तरह सेवा-साधना में अपनी उपयोगिता दिखाई पड़ती थी, वे उनके साथ मंगल-प्रयोजन पूरे करने के लिए भी निकल पड़ती थीं। आगे चलकर यही वानप्रस्थ, संन्यासी के रूप में एक कदम और आगे बढ़ाते थे। यही थी—प्राचीनकाल की आश्रम-व्यवस्था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आश्रम धर्म के अनुसार समाज के सुयोग्य, सक्षम, भावनाशील, परिपक्व बुद्धि के वासना-तृष्णा विमुक्त व्यक्ति वानप्रस्थ अथवा संन्यास आश्रम में प्रवेश करते हुए ब्राह्मणों, साधुवर्ग की आवश्यकता पूरी करते थे। हिमालय से गलकर बर्फ जिस तरह गंगा यमुना के जल प्रवाह को गतिशील बनाये रहती है, उसी प्रकार गृहस्थों में परिपक्व हुए दूरदर्शी लोग वानप्रस्थ और संन्यास वर्ग का सृजन करते थे और साधु-संस्था भी उत्कृष्ट अक्षुण्ण बनी रहती थी।

वर्णाश्रम व्यवस्था जब तक शुद्ध प्रखर बनी रही, तब तक हमारी गौरव-गरिमा भी गगनचुम्बी रही। उसमें विग्रह संकट उत्पन्न हुआ तो सारा ढाँचा ही लड़खड़ा गया और धर्म विडम्बनाओं की अवाँछनीय विकृतियाँ ही हमारे हाथ रह गईं। तत्व दृष्टि से देखते हैं तो अब एक वर्ण शेष है—वैश्य और एक आश्रम जीवित है—गृहस्थ, शेष तीन वर्ण मर गये, तीन आश्रमों का भी अन्त हो गया। हर व्यक्ति का जीवन लक्ष्य धन है। त्यागी वैरागी भी प्रकारान्तर से उसी कुचक्र के इर्द-गिर्द घूमते देखे जा सकते हैं। आकाँक्षाओं का केन्द्र अब सम्पत्ति ही बनकर रह गया है। वासनाओं और तृष्णाओं की पूर्ति उसी से तो होती है, इसके अतिरिक्त अन्य कुछ लक्ष्य किसी का नहीं दीखता। ऐसी दशा में यह कहना अत्युक्ति न होगा कि वर्ण, धर्म सिमटकर वैश्य-वर्ण में सीमित हो गया है। ठीक इसी प्रकार आश्रम धर्म की दुर्गति हुई है। स्कूल में जाते-जाते अबोध बालक काम कुचेष्टाएँ सीख जाते हैं। पास-पड़ौस में उन्हें अश्लील गालियाँ सीखने को मिल जाती हैं। घर बाहर कामुकता की विविध प्रवृत्तियाँ बचपन में गृहस्थ की दीक्षा दे देती हैं और उसमें क्रमशः वृद्धि ही होती रहती है। किशोरावस्था परिपक्व होने से पहले ही बच्चे अपना बहुत हद तक आत्मघात कर चुके होते हैं। स्मरण शक्ति की कमी चेहरे की निस्तेजता, काया की दुर्बलता और मानसिक उद्वेगों का बाहुल्य देखते हुए यह सहज ही समझा जा सकता है कि उन पर क्या बीती है। समय से पूर्व गृहस्थ की किसी भोंड़ी और फूहड़ प्रवृत्ति का जो परिणाम होना चाहिए उसे अपने हर बालक पर काली घटाओं के रूप में छाया देखते हैं। बाल विवाह तो और भी कोढ़ में खाज का काम करता है। जिन्दगी के अन्त तक कामुकता, प्रजनन, अर्थोपार्जन, कुटुम्बचर्या के अतिरिक्त कभी कोई बात सूझती नहीं समस्त प्रवृत्तियाँ इसी केन्द्र पर केन्द्रीभूत रहती हैं। होश संभालने के दिन से लेकर होश बन्द होने की घड़ी तक गृहस्थ स्तर की आकाँक्षाएँ ही मनःक्षेत्र को आच्छादित किये रहती हैं। ऐसी दशा में यही कहा जा सकता है कि चार आश्रमों में से तीन समाप्त हो गये। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास की परम्परायें नष्ट हो गईं। केवल एक ही आश्रम बचा है, गृहस्थ। साधु-सन्तों की मनोदशा और गतिविधियों को देखते हुए उन्हें भी भगवा वस्त्रधारी गृहस्थ ही कह सकते हैं। तीन पाये टूट जाने पर एक के ऊपर खड़ी की गई चारपाई की जो डाँवाडोल स्थिति होनी चाहिए—वही है आज भारतीय समाज की। इन परिस्थितियों में भौतिक, आर्थिक स्थिरता की कुछ बात तो सम्भव है पर आत्मबल पर टिकी हुई उन महानताओं की आशा नहीं की जा सकती जिन पर प्राचीन भारत का महान् गौरव आधारित रहा है।

पतन के कारण और उत्कर्ष की दशा

भारतीय समाज संगठनों में साधु-संस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उसके सदस्यों को, ब्राह्मणों और सन्तों को—'भूसुर' कहा गया है। उन्हें धरती के देवता मानकर पूजा गया, उच्चपद पर आसीन किया गया। उनके चरण-स्पर्श करके लोग अपने को पवित्र हुआ मानते थे। उनके भोजन-वस्त्र की व्यवस्था करने का जिन्हें अवसर मिलता था, वे अपने को धन्य मानते थे। हर्ष-शोक के विशेष अवसर जब भी आते थे, तब अपना चित्त हल्का करने के लिए ब्रह्मभोज करते थे, दान-दक्षिणा देते थे। पुण्य-फल के यह दो अमोघ मार्ग थे।

इसका कारण यह नहीं कि साधु संस्था के सदस्य अपंग असहाय, दरिद्र अथवा दान-हीन होने के कारण उनकी दया के पात्र एवं सहायता के इच्छुक थे, वरन् यह था कि जहाँ भी ब्राह्मण एकत्रित होंगे वहाँ अमृतोपम सद्ज्ञान की वर्षा होगी और हर्ष-शोक को नियन्त्रित करने वाली विवेकपूर्ण स्थिति बनेगी। ब्रह्मभोज इसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महान् प्रयोजन के लिए होते थे। दान-दक्षिणा, ब्राह्मण-साधु के हाथ में जरूर दी जाती थी, पर उसमें से निर्वाह मात्र पर व्यय होने वाला अत्यन्त स्वल्प अंश ही उनके काम आता था। वस्तुतः वह धर्मकृत्यों के लिए विशुद्ध अमानत होती थी, जिसे परमार्थ प्रयोजनों में खर्च किया जाना ही निश्चित था।

साधु-ब्राह्मण को समय-समय पर दान-दक्षिणा देते रहना वस्तुतः लोक मंगल के अनेक प्रयोजनों की पूर्ति करना ही था। इसमें साधु के प्रति सन्देह रहित प्रगाढ़ विश्वास का भाव भी भरा था। साथ ही साधु भी उस विश्वास में कहीं कोई संदेह, आघात उत्पन्न न होने पावे, ऐसा उत्तरदायित्व निबाहने के लिए बाध्य था। जाँच पड़ताल न रहने पर चतुरता से कुछ बचा-चुरा लेना भी बुरा है, पर जहाँ विश्वास पर ही सब कुछ छोड़ दिया गया हो, वहाँ जिम्मेदारी सहस्र गुनी बढ़ जाती है। प्राचीन काल का साधु कभी इस कसौटी पर खोटा सिद्ध नहीं हुआ। लोकमंगल के लिए समर्पित-जीवन जीना, अपने प्रत्येक क्रियाकलाप को अनुकरणीय आदर्शों से ओत-प्रोत करना, संकटों से उबारने के लिए आगे प्रबल प्रयासों से आगे आकर जन-नेतृत्व करना, साधु-संस्था के दोनों सदस्यों का समान कर्तव्य है। इसकी उपेक्षा करते रहा जाय और महान् पूर्वजों को उनकी विशेषताओं के कारण मिलने वाले सम्मान तथा धन-लाभ से लाभान्वित होते रहा जाय, तो यह हर दृष्टि से अनीतिमूलक होगा। विशेषतया उस वर्ग के लिए जिससे कि मनुष्य-जाति ऊँची आशायें करती रहती हैं। अपना मार्ग दर्शक और भाग्य-विधाता मानकर उनकी चरण-रज मस्तक पर चढ़ाती रहती है। ऐसा वर्ग भी यदि अपना उत्तरदायित्व भुला दे और गये-गुजरे लोगों की तरह 'येन-केन-प्रकारेण' धन और सम्मान उपलब्ध करता रहे तो इसे अपने महान् राष्ट्र का, अपने महान् धर्म-दर्शन का दुःखद पराभव ही कहा जायेगा। इस अपराध का दण्ड ही हमें भुगतना पड़ रहा है।

विधि की विचित्र विडम्बना ही है कि अपने देश में इस समय १ करोड़ के लगभग साधु-संस्था के सदस्य होने पर भी उसमें साधु कहे जा सकने वाले नगण्य ही उपलब्ध हैं। शेष तो पूरा नकली माल ही भरा पड़ा है। पिछली जनगणना के अनुसार भारत में लगभग ८० लाख भिक्षाजीवी हैं। इसमें से २४ लाख ऐसे हैं, जो शारीरिक असमर्थता के कारण भिक्षावृत्ति करते हैं। शेष ५६ लाख ऐसे हैं, जो साधु-महात्मा का वेष धारण करके अपनी आजीविका चलाते हैं। इसके अतिरिक्त पण्डित पुरोहितों का वर्ग अलग है। वे दान दक्षिणा का लाभ तो लेते हैं पर भिक्षा वृत्ति उनकी आजीविका नहीं लिखी गई क्योंकि वे साथ में अन्य व्यवसाय भी करते हैं। दान-दक्षिणा जिनका अतिरिक्त आय का सहायक धंधा है, ऐसे व्यक्तियों की संख्या साधु-महात्माओं से कम नहीं वरन् अधिक ही हो सकती है। बराबर मानलें तो भी ५६ + ५६ लाख मिलकर वह संख्या एक करोड़ बारह लाख बनती है। भारत की आबादी इन दिनों साठ करोड़ है अनुपात से हर पैंतालीस भारतीयों के पीछे एक साधु-सन्त आता है। यह लोग प्रायः हिन्दू ही हैं। हिन्दुओं की संख्या अपने देश में लगभग ३५ करोड़ है। इन पर हिसाब फैलाया जाय तो हर तीस हिन्दू के पीछे एक सन्त का अनुपात है।

इतनी संख्या में यदि सचमुच साधु संस्था के सदस्य रहे होते तो भारत अत्यधिक सौभाग्यशाली देश होता। ईसाई धर्मानुयायियों के पास लगभग एक लाख पादरी हैं। वे संसार भर में फैले हुए हैं और जिस तत्परता से अपने धर्म की सेवा कर रहे हैं, उसका परिणाम आश्चर्यजनक हुआ है। इन दिनों संसार की आबादी ३०० करोड़ है, इनमें से ईसाई धर्मानुयायी १२५ करोड़ के करीब हैं अर्थात् संसार की समस्त जनसंख्या में एक तिहाई के लगभग ईसाई हैं। इस आश्चर्यजनक सफलता में पादरी वर्ग की लगन और तत्परता को असाधारण श्रेय दिया जा सकता है। यों दूसरे लोग भी इनके पीछे हैं। साधन अन्य लोग ही जुटाते हैं पर अगले मोर्चे पर तो उन्हें ही लड़ना पड़ता है। ये लोग जिस लगन से अपने प्रयास में जुटे हुए हैं, उसे देखते हुए उनके यह हौसले निरर्थक नहीं कि अगले २५ वर्षों में संसार की आधी आबादी ईसाई धर्मानुयायी होगी। लगन बड़ी चीज है। समन्वय हो जाय तो उसका चमत्कारी प्रतिफल होना स्वाभाविक ही है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारत की साधु संस्था में किसी समय ऐसी ही प्रखरता थी। तब उसने एशिया का कोना-कोना प्रभावित किया था। बौद्धधर्म के प्रचारक सुदूरपूर्व और मध्य एशिया के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में दौड़ पड़े थे। कठिनतम मार्ग उन्होंने पार किये थे। सामान्य-सी नौकाओं के सहारे छः-छः महीने में पार हो सकने वाली समुद्र यात्राएँ उनने की थीं। हिमाच्छादित दुर्ताध्य पर्वत शृंखलाएँ लांघी थीं। अजनबी देशों में जाकर वहाँ की भाषा सीखी थी। अनभ्यस्त जलवायु में अपने को ढाला था। सघन वन्य प्रदेशों में होकर जाने वाले मार्गों में हिंस्र पशुओं और उफनते नदी नालों से टक्कर ली थी। सम्पत्ति और सिक्का न होने से भिक्षा को निर्वाह का आधार बनाया था, और भी न जाने क्या-क्या सहा था। इन प्रचार यात्राओं पर निकलने वालों में से आधे तो मार्ग की कठिनाइयों से जूझते हुए ही शहीद हो जाते थे। जो बचते थे, वे वापिस लौट सकना असम्भव मानते थे और शेष जीवन की आहुति मानव परिवार की सेवा साधना के यज्ञ में प्रसन्नता-पूर्वक लगाते थे। यह थी जीवट जिसने किसी समय सम्पूर्ण एशिया को हिन्दू धर्म एवं बौद्ध धर्म के झंडे के नीचे दीक्षित किया था। इतना ही नहीं, उसने पृथ्वी के अन्य महाद्वीपों में भी पदार्पण किया था और सच्चे अर्थों में जगद्गुरु का उत्तरदायित्व निबाहा था।

यह उस जमाने की चर्चा हो रही है, जब साधु संस्था जीवन्त स्थिति में थी। उन्हीं दिनों परिव्राजक घर-घर जाकर अलख जगाते थे। जन-जन को प्रेरणा देते थे। सत्संग के लिए कोई उनके पास आये इसकी प्रतीक्षा किये बिना वे स्वयं ही घर पहुँचते थे। कष्ट साध्य रोग से ग्रस्त व्यक्ति अस्पताल कहाँ पहुँच पाता है, डाक्टर को ही उसके द्वार तक चलकर आना पड़ता है। खेत कब बादलों को तलाश करते फिरते हैं। बादल ही दौड़-दौड़ कर खेतों की प्यास बुझाने पहुँचते हैं। इस प्रयास का ही परिणाम था कि एक भी भारतवासी संतों की पकड़ से बाहर न था।

ब्राह्मण वर्ग पण्डित और पुरोहित के रूप में अपने समीपवर्ती लोगों को यजमान बनाकर पकड़ बैठता था और साधु वर्ग परिव्राजक के रूप में जहाँ आवश्यकता समझता था और जब तक अभीष्ट प्रयोजन पूरा न हो तब तक ठहरता था। दोनों ही वर्ग मिल-जुलकर अनेकानेक सत्प्रवृत्तियों का संस्थापन विस्तार एवं पोषण करते थे। भावनात्मक परिष्कार एवं प्रगतिशील गतिविधियों के संचालन में निरन्तर संलग्न साधु संस्था इस देश के नागरिकों को देवस्तर से नीचे नहीं गिरने देती थी। ऐसी दशा में स्वर्गोपम परिस्थितियों का निर्माण स्वाभाविक ही था। उसका लाभ दूर-दूर तक के देशों को मिलना ही था। सो ही होता रहा। जीवन्त साधु संस्था के महान कर्तृत्व का इतिहास इतना उज्ज्वल है कि उसे शत-शत कण्ठों से युग-युगान्तर तक गाया सुनाया जा सकता है।

आज संख्या की दृष्टि से साधु संस्था प्राचीनकाल की तुलना में अत्यधिक बढ़ी-चढ़ी है, पर वह आधारभूत बनकर रही है। न उनके पास लक्ष्य है न त्याग, न जीवन, न साहस। व्यक्तिवाद, पलायनवाद, भाग्यवाद ने उसे घेर लिया है। सुविधाजनक निर्वाह प्राप्त करने के अतिरिक्त लगता है और कोई उद्देश्य ही सामने नहीं रहा। साधु-सन्तों को परलोक में स्वर्ग और मुक्ति का सुख चाहिए। इस लोक में बढ़िया निर्वाह और प्रचुर सम्मान यह सब चाहिए ही। देने को उनके पास कुछ नहीं है। करने को भी कुछ रहा नहीं। परमहंस, वेदान्ती, भजनानन्दी होकर भी भला सेवा कार्यों के झंझट में पड़ना पड़ा तो फिर गृहस्थ का परिश्रमशील जीवन ही किस लिए छोड़ा ?

आज की साधु संस्था की गतिविधियों का निरीक्षण करें और यह देखें कि उसका क्या अनुदान समाज को मिल रहा है तो भारी निराशा होती है। मन्त्रतंत्र के जाल-जंजाल, कथा, पुराणों, के विनोद प्रसंग, अन्ध विश्वासी प्रचलनों का समर्थन, खर्चीले कर्मकाण्डों में जन सम्पदा का अपव्यय जैसे निरर्थक क्रियाकलापों में स्वयं उलझे हुए और दूसरों को उलझाते हुए ही उन्हें पाया जायेगा। यदि यह शक्ति उपयोगी कार्यों की ओर मुड़ गई होती तो भारत के सात लाख गाँवों में से प्रत्येक के पीछे आठ-आठ सन्त आते और वे देखते-देखते निरक्षरता, गन्दगी, व्यसन, सामाजिक कुरीतियाँ जैसी दुःखदायी समस्याओं को सहज ही हल कर सकते थे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन-सहयोग जुटाकर श्रमदान से एक से एक बढ़कर उपयोगी कार्य खड़े कर सकते थे। एक-एक मुट्ठी अनाज संग्रह करके उन सृजनात्मक कार्यों को ही सहज सम्पन्न कर सकते थे, जिन्हें करने की बात सरकार के सामने अभी चिरकाल तक विचारधीन ही बनी रहेगी।

एक छोटा-सा गाँव दो सौ घरों का, उसमें दो सौ मुट्ठी अन्न धर्म घटों में कइट्ठा कराया जाता रहे तो प्रतिदिन प्रायः ५० किलो अन्न जमा होता है। लगभग ५०) प्रतिदिन की इस आमदनी का अर्थ हुआ महीने में १५००), इतने धन से उस गाँव के बालकों की, प्रौढ़ों की शिक्षा समस्या हल हो सकती है। स्वच्छता का प्रबन्ध हो सकता है। एक परिवार पीछे एक आदमी एक घण्टा श्रमदान दिया करे तो दो सौ घरों से २०० घण्टे का श्रम मिला। अर्थात् आठ घण्टे श्रम करने वाले २५ श्रमिकों की व्यवस्था हो गई। इस समय में सफाई, मल-मूत्र, गृह, खाद के गड्ढे, सड़क की चौड़ाई, तालाबों की सफाई, बाँधों का निर्माण आदि न जाने कितने उपयोगी कार्य हो सकते हैं। हर गाँव में आठ साधु डेरा डालकर पड़ जायँ और उनमें हर घर से एक मुट्ठी अनाज एवं एक घण्टा श्रम प्राप्त करने का प्रयास करलें तो देखते-देखते गाँव की काया कल्प हो सकती है।

यह तो एक छोटा उदाहरण हुआ। वस्तुतः ५६ लाख साधु-संख्या और ५६ लाख ब्राह्मण संख्या इतनी बड़ी जनशक्ति है कि उसके आधार पर न केवल भारत का वरन् संसार का पुनर्निर्माण सरल और सम्भव हो सकता है।

किन्तु ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि यह वर्ग जिस ढाँचे में ढल गया है, जिस वातावरण ने उन्हें जकड़ रखा है, वह सब बहुत ही सड़ा-गला है। उसमें विडम्बनाएँ पल सकती हैं, कोई बड़ा प्रयोजन पूर्ण नहीं हो सकता। अब यह वर्ग तप त्याग कर सकने की स्थिति में नहीं रहा, क्योंकि मध्यकाल के अज्ञानान्धकार युग में साधु संस्था का दर्शन ही आक्रमणकारियों ने विकृत कर दिया है, अब उसमें सुधार कदाचित ही हो सके।

मुसलमानी आक्रमण के समय एक ओर जहाँ मन्दिर-मठ गिराये जा रहे थे, वहाँ दूसरी ओर रिश्वतें देकर यह प्रयास भी किया जा रहा था कि कुछ धर्म गुरुओं को अपने पक्ष में मिलाकर भारतीय दर्शन को भ्रष्ट किया जाय। तब आत्म परिष्कार और लोक-मंगल के सारे तत्व उसमें से हटा दिये गये और भाग्यवाद पलायनवाद, पराधीनतावाद, व्यक्तिवाद का विष उसमें घुसा दिया गया, ताकि विचारशील व्यक्ति अपने स्वर्ग-मुक्त के धन्धे में फँस जायँ और जनता को अन्याय सहने के लिए भाग्यवाद, ईश्वर-इच्छा के नाम पर पद-दलित पड़ा रहने दिया जाय। उसी दार्शनिक भ्रष्टाचार की शिकार आज की साधु संस्था है। उस विष से वह इस कदर मूर्छित हो गई है कि अब उसके उद्धार का कोई उपाय शेष रहा नहीं दीखता है।

आज साधु-ब्राह्मणों की नकल बनाने वाले बहुरूपियों की (एक्टरों की) भरमार है। जटा, कमण्डल, धूनी, चिमटा, दाढ़ी, कोपीन सब ऐसी मानो वेदव्यास अभी सीधे ही हिमालय से चले आ रहे हैं। ब्राह्मणों के तिलक-छापे, पगड़ी दुपट्टा, कथा, मन्त्रोच्चार ठीक वैसा ही गुरु-वशिष्ठ जैसे का आगमन अभी-अभी हो रहा है। बाहरी दृष्टि से सब कुछ ऐसा बन जाता है कि "टू कापी" कहने में किसी को झिझकना न पड़े, किन्तु आचार और विचार में जमीन आसमान जितना अन्तर होने से उस नकल से कुछ प्रयोजन सधता नहीं, कुछ बात बनती नहीं।

अवाँछनीय लाभ उठाते रहने वाले वर्गों का कष्टसाध्य आदर्शवादी मार्ग पर चलने के लिए तैयार करना प्रायः असम्भव हो जाता है। राजा लोग समय रहते बदल सकते थे। ऐसा करके वे प्रभाव और वर्चस्व भी बनाये रह सकते थे, जनता का हित कर सकते थे और दुर्गति से बच सकते थे, पर उनसे वैसा साहस करते बन नहीं पड़ा। जमींदार, रईस, सामन्त मिटते गये, पर बदले नहीं। जिन्हें मुफ्त में प्रचुर धन-वैभव मिल रहा है। बिना तप, त्याग के पूजा, सम्मान पा रहे हैं, उनकी आत्मा इतनी बलिष्ठ नहीं हो सकती कि आदर्शवादी जीवनचर्या अपना सकें, अहङ्कार को त्याग सकें और कष्टसाध्य सेवा साधना में अपने को संलग्न कर सकें। यह इस-लिए और भी अधिक कठिन है कि उन्हें आरम्भिक प्रेरणा व्यक्तिवादी स्वार्थपरता की पूर्ति से मिली है, उनका मन, मस्तिष्क इसी लाभ ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आकर्षित किया है। लोक में धन, सम्मान, परलोक में स्वर्ग-मुक्ति का लाभ तनिक-सा वेष बदलने भर से मिल सकता है। यही आकर्षण उन्हें इस राह पर खींचकर लाया है। दूसरों का शोषण, अपनी स्वार्थ-सिद्धि जिन्हें उपयुक्त जँची है, उन्हीं ने इस मार्ग पर छलांग लगाई है। यदि उन्हें आरम्भ में ही तप, त्याग, संयम सेवा की बात कही जाती तो कदाचित वे साधु बनने के लिए कदापि तैयार नहीं होते। इस आन्तरिक दुर्बलता का लगातार पोषण ही होता है—समर्थन ही मिलता रहा है। अब वे अपनी मूल मान्यतायें बदलें तभी उन्हें सेवा सेवा-साधना की बात जंचे रुचे। यह इतना कठिन है, जिसे लगभग असम्भव भी कहा जा सकता है। जो लोग संसार को माया कहते रहते हैं, सेवा को शूद्रों का कार्य बताते रहे हैं, "तोहि बिरानी क्या पड़ी, तू अपनी निरबेर" की बात आदि से अन्त तक सुनने को मिलती रही है, वे परम गहन सेवा-धर्म स्वीकार करने का प्रभु समर्पित जीवन का साहस कर सकेंगे, ऐसी आशा नहीं की जानी चाहिए।

वर्तमान साधु-ब्राह्मणों का दरवाजा खटखटाते हमें एक युग बीत गया। उन्हें नीच-ऊँच समझने में जितना श्रम किया और समय लगाया, उसे सर्वथा व्यर्थ चला गया ही समझना चाहिए। निराश होकर ही हमें इस नतीजे पर पहुँचना पड़ा है कि सड़ी वस्तु को पुनः स्वस्थ स्थिति में नहीं लाया जा सकेगा। हमें नई पौध लगाने और नई हरियाली उगाने के लिए अभिनव प्रयत्न करने होंगे। उसी का आरम्भ कर भी रहे हैं।

विश्वास किया जाना चाहिए कि आदर्शवादिता अभी पूरी तरह अपंग नहीं हो गई। महामानव स्तर की भावनायें सर्वथा विलुप्त नहीं हो गई हैं। लोभ और मोह ने मनुष्य को जकड़ा तो जरूर है, पर वह ग्रहण पूरा खग्रास नहीं है। सूर्य का एक कोना अभी भी खाली है और उतने से भी काम चलाऊ प्रकाश किरणें विस्तृत होती रह सकती हैं। ऋषि-रक्त की प्रखरता उसकी सन्तानों की नसों में एक बूँद भी शेष न रही हो—ऐसी बात नहीं है। दम्भ का कलेवर आकाश छू रहा है—सो ठीक है, पर सत्य ने अभी भी मरण स्वीकार नहीं किया है। आपाधापी में हर व्यक्ति अन्धा हो रहा है पर ऐसा नहीं समझना चाहिए कि परमार्थ परम्परा का अस्तित्व ही समाप्त हो गया। देश, धर्म, समाज और संस्कृति की बात सोचने के लिए किसी के भी मस्तिष्क में गुञ्जायश नहीं रही हो, अभी ऐसा अन्धकार नहीं छाया है। अब किसी के भी मन में दूसरों के लिए दर्द न रह गया हो, दूसरों के सुख में अपना सुख देखने वाले हृदय सर्वथा उजड़-उखड़ गये हों, ऐसी बात नहीं है। धर्म के बीज नष्ट तो कभी भी नहीं हुए है। आत्म-सत्ता की वरिष्ठता का आत्यन्तिक मरण हो गया हो—ऐसी स्थिति अभी न आई है। मनुष्य ने पाप और पतन के हाथों अपने को बेच दिया हो और देवत्व से उसका कोई वास्ता न रह गया हो—ऐसा नहीं सोचना चाहिए। मानवीय महानता अभी कहीं, किसी अंश में जीवित जरूर मिल जायेगी, हम उसी को ढूढेंगें। जहाँ थोड़ी सांस मिलेगी, वहाँ आशा के चँवर डुलायेंगे और कहेंगे—पशुता से ऊँचे उठकर देवत्व की परिधि में प्रवेश करने का प्रयत्न करो। मरणोन्मुख मनुष्यता तुम्हारी बाट जोहती है। चलो निराश न करो। हमें आशा है कि कहीं न कहीं से ऐसी आत्मा ढूँढ़ ही निकाली जा सकेगी, जिनमें मानवी महानता जीवित बच रही हो। उनसे युग की दर्द भरी पुकार सुनने के लिए अनुरोध करेगें और कहेंगे—मनुष्य जाति की सामूहिक आत्महत्या करने से रोकने का अभी भी समय बाकी है; कुछ तो अभी भी किया जा सकता है सो करना चाहिए। अपने को खोकर भी यदि संस्कृति की रक्षा की जा सकती है तो इस सौदे को पक्का कर ही लेना चाहिए।

आर्ष परम्परा का पुनर्जागरण आवश्यक

भारत के खोये वर्चस्व एवं गौरव की पुनः स्थापना के लिए साधु परम्परा को उसके परिष्कृत रूप में पुनर्जीवन देना होगा। यह ठीक है कि वर्तमान साधु संस्था विकृत होकर बुरी तरह चरमरा गयी है किन्तु एक तथ्य यह भी है कि इस सनातन आर्ष परम्परा के प्रति धर्मप्राण भारत की जनता में आज भी भारी श्रद्धा बनी हुई है।

भारतीय धर्म का प्रत्येक अनुयायी यह भली भाँति अनुभव करता रहा है कि साधु संस्था

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी गौरव गरिमा एवं महान संस्कृति की रीढ़ है। उसे हर कीमत पर सुरक्षित रखा जाना चाहिए। अनादिकाल से यही प्रक्रिया-कार्यान्वित भी होती रही है। उसे उच्चतम सम्मान और उपयुक्त परिपोषण देने में कभी कोताही नहीं की गई है। स्वयं टूटे-फूटे घरों में रहकर भी सन्तों के लिए बहुमूल्य आश्रमों व भवनों का निर्माण किया है। स्वयं रूखी-सूखी खाकर भी ब्राह्मण को पकवान परोसने का प्रचलन रखा है। वस्त्र, परिधान, यात्रा-व्यय, सेवा-सुश्रुषा आदि की जब जितनी आवश्यकता पड़ी है, उससे कम नहीं अधिक ही प्रस्तुत किया है। अब एक पक्ष ने कन्धा डाल दिया, पर दूसरा पक्ष अपने पक्ष का कर्तव्य-पालन करने के लिए यथावत् तना खड़ा है। साधु-ब्राह्मण अपने महान् कर्तव्यों को एक प्रकार से विस्मरण कर चुके, पर धर्म-प्रेमी जनता ने अपनी परम्परा यथावत् जारी रखी है, उसकी ओर से अभी भी हाथ नहीं सिकोड़ा गया है। साधु-ब्राह्मण का सम्मान और पोषण अभी भी विद्यमान है भले ही गुण कर्म, स्वभाव की दृष्टि से वे खोखले हो गये हों, भले ही उनके पास वंश और वेष की विडम्बना के अतिरिक्त और कुछ शेष न बचा हो।

साधु संस्था के प्रति अद्यावधि बची हुई यह गहन श्रद्धा अकारण नहीं थी चिरकाल के अनुभव से यह भली प्रकार परख लिया गया था कि इस कल्पवृक्ष की उपयोगिता असाधारण है और उसे हर हालत में सींचा ही जाना चाहिए। यह मान्यता इतनी अधिक गहराई के साथ हृदयंगम कर ली गई थी कि आज अश्रद्धा से बढ़कर विद्रोह तक की स्थिति उत्पन्न हो जाने पर भी साधु-संस्था के प्रति अभी आस्था एवं श्रद्धा उखड़ नहीं पाई है।

प्राचीन भारत में साधु-सस्था ही जन-नेतृत्व करने की अपनी प्रामाणिकता प्रस्तुत करती थी और वही सृजनात्मक प्रयोजनों के लिए जन-सहयोग जुटाने में सफल होती थी। समर्थ साधु-संस्था के बलबूते समर्थ जन-सहयोग उपलब्ध होता था और उससे अनेकानेक रचनात्मक सत्प्रवृत्तियाँ उगती और फलती-फूलती हैं।

जन-सहयोग सम्पादित करना जन-श्रद्धा को उपार्जन करके ही सम्भव हो सकता है। गाँधीजी इस मर्म को जानते थे और उन्होंने इस दिशा में ठोस कदम उठाया था, जिसका ठोस परिणाम निकला। भगवान बुद्ध ने अपने समय की, अपने ढंङ्ग की बौद्धिक-क्रान्ति की थी। इसके लिए उन्होंने ढाई लाख भिक्षुओं की सृजन सेना खड़ी की थी और जन-साधारण को उस प्रयोजन के लिए भरपूर साधन जुटाने के लिए तत्पर किया था। गुरुगोविंद सिंह, समर्थ गुरु रामदास—ने भी ऐसे ही कदम उठाये थे, फलस्वरूप उन्हें अपने लक्ष्य पूर्ति के लिए समुचित जन-सहयोग उपलब्ध न हो सका।

प्राचीनकाल में यह प्रक्रिया सर्वविदित थी और सर्व-मान्य बन चुकी थी। अपने उज्ज्वल चरित्र, परिष्कृत व्यक्तित्व एवं सेवा-साधना के लिए समर्पित जीवन क्रम से वे जन-साधारण का हृदय जीतते थे और उस विजय-श्री का उपयोग लोक मङ्गल के लिए जन-सहयोग जुटाने में करते थे। फलतः प्रगति पथ पर अग्रसर करने वाली अनेकानेक सत्प्रवृत्तियाँ सफलता की दिशा में द्रुतगति से बढ़ती रहती थीं।

परिपक्व बुद्धि के सुयोग्य एवं अनुभवी लोक-सेवी साधु-संस्था से ही निकलते थे। उनका निर्वाह व्यय न्यूनतम होता था। उसे पूरा करने में किसी को भार प्रतीत होना तो दूर, जिसे उस सन्दर्भ में कुछ करने का अवसर मिले, वह अपने को धन्य मानता था। इस प्रकार बिना किसी प्रकार का आर्थिक भार पड़े, प्रतिभाशाली, लोक-सेवकों की विशाल सृजन-सेना प्रगति के हर मोर्चे पर लड़ने के लिए खड़ी रहती थी। आज उस दिशा में राजनेता, अर्थशास्त्री, दार्शनिक, समाज विज्ञानी चलते तो हैं, पर निराश होकर लौटते हैं, उस क्षेत्र में प्राचीनकाल के साधु—ब्राह्मण स्वल्प प्रयत्न से ही सफल हो जाते थे। जन-शक्ति जिसके साथ हो उसे किसी उपयुक्त प्रयास में असफलता का मुँह देखना भी क्यों पड़ेगा ?

साधु-संस्था का बोझ उठाना आर्थिक दृष्टि से भी अपने देश को सरल पड़ता था। शिक्षा, चिकित्सा, समाज-कल्याण आदि कार्यों में लगे हुए सरकारी कर्मचारियों का भारी-भरकम वेतन आखिर जनता से ही तो टैक्सों द्वारा वसूल किया जाता है। उन प्रयोजनों के लिए यदि अवैतनिक और अपेक्षाकृत अधिक सुयोग्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्यकर्त्ता मिल जायें तो इसे राष्ट्र की आर्थिक बचत ही कहा जायेगा। उस बचत को अन्य आवश्यक साधन जुटाने में लगाने पर प्रगति का रथ और भी तेजी से अग्रसर हो सकता है। कर्मचारियों का नैतिक स्तर साधारण जैसा ही होने से उन पर अनेक प्रकार के अंकुश, नियन्त्रण, निरीक्षण रखने पड़ते हैं। खर्च तो इसका भी बढ़ता ही है। कर्तव्यनिष्ठ लोक-सेवियों के ऊपर न कोई इन्सपेक्टर रखना पड़ता और न आडीटर नियत करना पड़ता है, वे सस्ते इसी दृष्टि से पड़ते हैं। काम जितना सरकारी कर्मचारी अपने बलबूते करते हैं अथवा श्रमिकों से कराते हैं, उससे अनेक गुना कार्य तो जन-सहयोग से हँसते-खेलते कराया जा सकता है। इन सब तथ्यों पर विचार करने से वे कारण समझ में आते हैं कि प्राचीन काल में क्यों प्रगति के लिए प्रचुर जन-सहयोग मिलता था, कैसे बिना जनता पर बड़ा अर्थ भार पड़े—बड़े-बड़े प्रगति प्रयोजन पूरे होते थे और आज क्यों इस दिशा में हमें पग-पग पर असफलता सामने खड़ी दिखाई देती है ?

साधु-संस्था की उपयोगिता पर जितना अधिक विचार करते हैं, उतना ही वह अधिक महत्वपूर्ण दिखाई पड़ती है। प्राचीनकाल में इस तन्त्र को खड़ा करके दूरदर्शी ऋषियों ने भारतीय-गौरव को गगनचुम्बी बनाने का चमत्कारी प्रयोग किया था। आज भी उस महान् आधार को पुनः पुष्ट प्रामाणिक एवं प्राणवान बनाकर बीते गौरव को प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न उठता है कि वर्तमान परिस्थितियों में वह आर्ष परम्परा किस रूप में लायी जाय ? वर्ण परम्परा के अनुसार गुण कर्म स्वभाव की कसौटी पर खरे उतरने वाले 'ब्राह्मण' एवं आश्रम परम्परा के अनुरूप आदर्श साधु कहाँ से कैसे मिले ? इस प्रश्न पर गहन चिंतन एवं पर्याप्त मंथन करने पर यह निष्कर्ष निकला है कि वर्तमान परिस्थितियों में इस अभाव की पूर्ति वानप्रस्थ परम्परा से की जा सकती है। अनुभवी, निस्पृह एवं प्रामाणिक साधक और प्रखर लोक सेवी इसी शृंखला से प्रचुर संख्या में प्राप्त किये जा सकते हैं। अस्तु युग निर्माण योजना वानप्रस्थ परम्परा के पुनर्जीवन को अपने कार्यक्रम का एक प्रमुख अंग मानकर चल रही है।

यों वानप्रस्थ का समय ढलती आयु के साथ जोड़ा गया है। पर वस्तुतः उसका सीधा सम्बन्ध ढलती मनोभूमि के साथ है। नशे की खुमारी जब भी उतर जाय तभी इस परम शुभ सुदुद्देश्य को अपनाने का शुभ मुहूर्त हो सकता है। आयु का पैमाना मोटे तौर पर ही निर्धारित किया गया है। प्राचीनकाल में सौ वर्ष की सहज आयुष्य थी। तब पूर्वार्ध पचास वर्ष का होता था। पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्य, पच्चीस वर्ष गृहस्थ के लिए नियत थे। पचास वर्ष बाद वानप्रस्थ ले लिया जाता था। अब वैसी स्थिति नहीं रही। सौ वर्ष कौन जीता है ? पचहत्तर तक भी कोई विरले पहुँचते हैं। इसे ही पूर्ण आयु अब माना जाना चाहिए। इसका आधा तो सैंतीस वर्ष ही हुआ। पुराने अनुपात से अब यही उत्तरार्ध है—इसी को ढलती आयु कह सकते हैं। इसी अवधि तक पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्ति मिलना कठिन समझा जाय तो उत्तरार्ध में न और कटौती की जा सकती है। आधे के स्थान पर एक तिहाई से भी सन्तोष किया जा सकता है।

यों परमार्थ परायणता हर आश्रम में, हर आयु में, हर स्थिति में किसी प्रकार—किसी स्तर पर चलती रह सकती है। पर उसमें समग्र संलग्नता की स्थिति जब बन सके तो वानप्रस्थ कह सकते हैं यह अविवाहित जीवन के पश्चात् गृहस्थ का उल्लंघन करके भी हो सकता है। किन्तु एक बार गृहस्थ में प्रवेश कर लेने के बाद पत्नी तथा बच्चों की शारीरिक, मानसिक सुव्यवस्था बनाये बिना—उन्हें अनाथ, निराश्रित छोड़कर भावावेश में भाग निकलना अनुचित है। यदि गृहस्थ में प्रवेश कर लिया गया है तो तब तक प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी, जब तक यह सन्तोष न हो जाय कि परिवार-व्यवस्था यथाक्रम चलती रहेगी। अच्छा तो यही है कि अपने बालकों की शिक्षा, आजीविका और विवाह के तीनों उत्तरदायित्वों से समय रहते स्वयं ही छुटकारा प्राप्त कर लिया जाय। इसके लिए पूर्ण तैयारी यही होनी चाहिए कि प्राचीन काल की भाँति तीस पैंतीस वर्ष की आयु के उपरान्त बच्चे पैदा करना बन्द कर दिया जाय और पचास पचपन तक रिटायर होते-होते उन सभी को स्वावलम्बी बना दिया जाय। सन्तोषपूर्ण निश्चिन्तता समय से पूर्व तैयारी करने वालों को ही मिलती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिन्हें समय रहते समझ नहीं आई और देर तक बच्चे जनते रहे, उनकी संख्या बढ़ाते रहे उनके लिए कुछ अपवाद ही शेष रह जाते हैं। पूर्व संचित सम्पत्ति से बच्चों के स्वावलम्बन का काम चल सके तो भी निवृत्ति मिल सकती है—वह एक मार्ग है। दूसरा यह है कि बड़ी सन्तान क़ो आरम्भ से ही यह शिक्षा दी जाय कि वह मातृ ऋण और पितृऋण से अपने छोटे भाई बहिनों के लालन-पालन का उत्तरदायित्व बहन करते हुए उऋण होने के आदर्श पर आस्था रख सकें। आज के स्वार्थी वातावारण में प्रायः बड़े बच्चे माता-पिता का आर्थिक शोषण करने के उपरान्त जैसे ही स्वावलम्बी बनते हैं वैसे ही अपनी नव वधु को लेकर अलग हो जाते हैं और गुलछर्रे उड़ाने की चाल चलते हैं। पितृ ऋण चुकाने की बात वे कभी स्वप्न में भी नहीं सोचते, वरन् जो कुछ उनके पास और बचा-खुचा है, उसे भी किसी न किसी बहाने हड़प लेने के लिए घात लगाते रहते हैं। छोटे भाई बहिनों की ओर तनिक भी ममता नहीं होती। उत्तराधिकार सम्पदा में हिस्सेदार होने के कारण वे उन्हें काँटे की तरह खटकते हैं। ऐसी सन्तान मनुष्य के उस हेय अज्ञान का दारुण दण्ड ही है, जिसके कारण उन्हें उठती उम्र में सन्तान का मुख देखे बिना चैन नहीं पड़ता था और उस उपार्जन के बिना सब कुछ सूना जैसा अनुभव करते थे। लोग यह समझ ही नहीं पाते कि इस घोर कलयुग में सन्तानों की संख्या बढ़ाना अपने गले में एक कड़ा फाँसी का फन्दा लगाने के बराबर कष्टकर ही हो सकता है।

वे सौभाग्यशाली हैं जिनके बड़े बच्चे मातृऋण और पितृऋण चुकाने के लिए छोटे भाई बहिनों के स्वावलम्बन का उत्तरदायित्व श्रद्धा-पूर्वक निवाहें और अपनी पत्नी को इसके लिए सहमत करें। अपनी संतानें बढ़ाने में जल्दबाजी न करें और भाई-बहिनों की सेवा सहायता से निवृत्त होकर ही संतान बढ़ाने के नये खर्च बढ़ाने की बात सोंचे। जो हो, यदि किन्हीं को पितऋण चुकाने के लिए तत्पर संतान मिले और वे स्वावलम्बी होकर अपने भाई बहिनों को संभालें तो भी वानप्रस्थ के परमार्थ जीवन का सुअवसर किन्हीं सौभाग्यवानों को मिल सकता है। यह तो आज के वातावरण में कठिन-फिर भी असम्भव नहीं है।

पूर्व तैयारी का एक तीसरा तरीका यह हो सकता है कि पत्नी को सुशिक्षित और स्वावलम्बी बनाया जाय। वह अध्यापन आदि कार्य अपना-कर आजीविका कमानें लगे तो वह भी बड़े बेटे की तरह अपने पति को निश्चिन्त होकर परमार्थ जीवन का सौभाग्य लेने के लिए अवसर दे सकती है। पर यह सम्भव तभी है जब उस पर न्यूनतम संतान संख्या का भार पड़ा हो। बहुत बच्चों की अनेक समस्याओं का तो वह भी अकेली निर्वाह नहीं कर सकती आखिर पेट भरना ही तो काफी नहीं होता। बच्चों के लिए और भी बहुत कुछ करना, सहना पड़ता है। उसमें पति के योगदान की आवश्यकता झुठलाई नहीं जा सकती।

पारमार्थिक जीवन जीने के लिए व्रत धारण करने वाले नर-नारी ऐसा भी कर सकते हैं कि विवाह तो करें पर सन्तानोत्पादन के झंझट से बचे रहें। ऐसी स्थिति में भी वे सुविधापूर्वक किसी भी आयु में वानप्रस्थ में प्रवेश कर सकते हैं। जिन्हें संयोग वश संतान ही नहीं मिली है उनके सौभाग्य की हजार मुख से प्रशंसा की जानी चाहिए और यह माना जाना चाहिए कि उन्हें ईश्वर की ऐसी अतिरिक्त अनुकम्पा प्राप्त हुई है, जिसके आधार पर वे चाहें तो अत्यन्त सरलतापूर्वक देव जीवन का परिपूर्ण आनन्द लाभ ले सकते हैं।

यह चरण मनुष्य जीवन की सार्थकता एवं गौरव को बढ़ाने वाला तो है किन्तु उसे अनायास ही नहीं पाया जा सकता। यह एक प्रकार नया जन्म लेने जैसा कदम है, जिसके लिए उच्चस्तरीय आंतरिक साहस की आवश्यकता पड़ती है। प्रकृति प्रदत्त जन्म धारण सरल है, इसमें प्राणी को स्वयं कुछ करना नहीं पड़ता। नियति का प्रवाह जन्म लेने, बढ़ने और मरने के लिए विवश करता है तो प्राणधारी के लिए इसी धारा में बहने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं रहता। इसमें साहस की आवश्यकता नहीं पड़ती, सब कुछ अपने क्रम से—अपने ढर्रे से होता चला जाता है। साहस की परीक्षा तब होती है जब मनुष्य अपने प्रचण्ड मनोबल को समेटकर प्रकृति प्रदत्त पशु जन्म की धारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उलटकर मनुष्य कृत जन्मान्तर उपस्थित करता है। अपनी भावनात्मक प्रखरता के आधार पर पशु योनि का परित्याग कर देवयोनि में प्रवेश करता है। वानप्रस्थ इसी परम पौरुष का—भावनात्मक दुस्साहस का—नाम है। इसे स्वेच्छा बलिदान कह सकते हैं।

युद्ध मोर्चे पर शत्रु की संगीन से सीना छिदवाना आसान है, क्योंकि उसमें सैनिक का उद्देश्य शत्रु का शिर काटना और विजयश्री का वरण करना रहता है। वह उमंगें और आशाएँ इसी स्तर की लेकर चलता है। यह संयोग की बात है कि वह आकांक्षा पूरी न हो सके और उलटकर अपना शिर कटाना पड़े। आत्म बलिदानी की मनोदशा इससे कहीं अधिक साहसिक होती है। वह आरम्भ से ही अपनेपन का—भौतिक महत्वाकांक्षाओं का परित्याग करके चलता है और अपनी समग्रसत्ता को प्रभुचरणों पर सर्वतो भावेन समर्पण की शपथ लेकर चलता है। अपने लिए नहीं भगवान के लिए जीता है। सहज स्वभाव मिल सकने वाली सुविधाओं का भी स्वेच्छा से परित्याग करता है। संयम की आग में अपने को तपाता गलाता है। उपभोग के लिए जो प्रस्तुत है, उसकी ओर से मन को समेटता है और उपलब्धियों को दुःखी संसार के लिए छोड़कर उदारमना स्थिति-प्रज्ञा की—परमहंस अवधूत की भूमिका में प्रवेश करता है।

इस वैराग्य बलिदान के लिए कायर और कृपण स्तर का व्यक्ति तैयार नहीं हो सकता। यह तो शूरवीरों का, दुस्साहसियों का मार्ग है, जिस पर काँटे कुचलते हुए—पैर का लहु-लुहान बनाने की हिम्मत करने के लिए हिम्मत समेटने वाले ही चल सकते हैं। कल्पना-जल्पना तो ऐसे उदात्त जीवन की कितने ही करते रहते हैं, पर अग्नि परीक्षा की घड़ी देखकर हौसला किसी विरले से ही आगे बढ़ने का बन पड़ता है। भारतीय धर्म की महान परम्परा यही रही है कि आदर्श जीवन की शपथ लेने वाले हर ब्रह्मचारी को उत्तरार्ध में वैसा साहस करना चाहिए। एक जन्म प्रकृति ने दिया सो ठीक। दूसरा आदर्शवादी जन्म अपने साहस पुरुषार्थ को समेट कर लेना चाहिए। वानप्रस्थ इसी विधि का नाम है।

वानप्रस्थ परम्परा आय का सर्वश्रेष्ठ सदुपयोग प्रस्तुत करती है। व्यक्तिगत हितसाधना की दृष्टि से यह बुद्धिमतापूर्ण कदम है। शरीर और मस्तिष्क थक जाने से वह आयु न तो भौतिक आकर्षणों में निरत रहने योग्य रहती है और न किन्हीं बढ़ी-चढ़ी महत्वाकांक्षाओं को पूरा कर सकने योग्य पुरुषार्थ पराक्रम शेष रहता है ऐसी दशा में भी यदि युवावस्था जैसी ललकें अपनाये रहा जाय तो जर्जरता और मृत्यु को—खीज और निराशा को—अधिकाधिक समीप ही बुलाया जा सकता है।

ढलती उम्र में कामुकता का खिलवाड़ करने वाले निश्चित रूप से बेमौत मरते हैं। रुग्णता और अशक्तता के गर्त में औधे मुँह गिरते हैं। ढलती उम्र में चेहरे पर पड़ी हुई झुर्रियाँ उसे अनाकर्षक बना देती हैं, तब वह तरुण साथी में कोई उत्साह पैदा नहीं कर सकता। चटोरापन भी ढलती उम्र में रही-बची पाचन क्रिया को नष्ट-भ्रष्ट करके रख देता है। नई पीढ़ी अपने हाथों सत्ता चाहती है, उसे न दी जाय तो घर में विग्रह उत्पन्न होता है। परामर्श, मार्गदर्शन, सहयोग और नियन्त्रण का उत्तरदायित्व स्वयं वहन करते रहें और काम करने का बोझ लड़कों पर डालें तो उनकी शिक्षा भी होती है और अपना बोझ भी हल्का होता है। तृष्णा मग्न रहकर कमाई की आपाधापी में लगे रहें तो उस मानसिक तनाव से ब्लडप्रेशर, दिल के दौरे, मधु-मेह, अनिद्रा आदि कितने ही रोग घेरते हैं ?

ढलती आयु नये स्तर का आनन्द उठाने और नया जीवन जीने की दृष्टि से उपयुक्त होती है। आध्यात्मिक और पारमार्थिक-गतिविधियाँ अपनाकर जीवन के उत्तरार्ध को इतना मृदुल और सरल बनाया जा सकता है मानो नवीन जन्म ग्रहण किया है। जिस प्रयोजन के लिए यह शरीर मिला है—मानव-जन्म का जो परम लक्ष्य है वह पूर्वार्ध में यत्किंचित ही पूरा हो पाता है, अधिक उत्तम सुअवसर तो उत्तरार्ध में ही मिलता है। मानसिक उभार उतर जाने और परिवार का भार हल्का हो जाने से मन भी अच्छी तरह लगता है और चित्त के डाँवाडोल होने की, लुढ़कने, फिसलने की आशंका भी कम रहती है। मरण का दिन समीप आता देखकर परमार्थ की पुण्य पूँजी संग्रह करने के लिए—अगले जन्म में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऊँची स्थिति पाने के लिए—उत्कंठा जागृत होती है और अधिक गम्भीरता पूर्वक दिव्य जीवन को गतिविधियों को अपनाया जा सकता है जो चढ़ती उम्र में प्रायः अरुचिकर और कठिन लगती थी।

ब्रह्मविद्या की तत्व-दर्शन ज्ञान साधना—योगाभ्यास की तप साधना—लोकमंगल की सेवा साधना, यह तीनों अमृतमयी देव सरितायें मिलकर गंगा-यमुना-सरस्वती के मिलन, संगम का प्रयोजन पूरा करती हैं और तीर्थराज प्रयाग जैसी त्रिवेणी इस जीवन में प्रादुर्भूत होती है। यह अभिनव आनन्द अपने ढंग का अनौखा है और ऐसा है जिससे बालकपन, किशोरावस्था और यौवन में जो अर्जित किया गया था, उससे कम नहीं वरन् अधिक ही आनन्दमयी विभूतियाँ उपलब्ध हो सकती हैं—होती हैं। सम्पदाओं से विभूतियों का स्तर हल्का नहीं भारी ही है, इसलिए पूर्वार्ध में जो उपार्जित किया गया था उसकी तुलना में उत्तरार्ध की कमाई का मूल्य भी अधिक ही आता है। ऐसी दशा में परमार्थ परायण उत्तरार्ध में प्रवेश करने वाले को बाल्यकाल और यौवन के चले जाने का पश्चाताप नहीं करना पड़ता वरन् यही अनुभव होता है कि वह अल्हड़पन चला गया सो अच्छा ही हुआ, यह ढलती आयु ऐसे अनुदान-वरदान लेकर आई है, जिसका इस गधापचीसी के दिनों में मिल सकना कठिना था। ऐसे चिन्तन के रहते किसी को पूर्वार्ध के बीत जाने से दुःखी होने, पछताने की जरूरत नहीं पड़ती। वरन यह अधिक महत्वपूर्ण अवसर हाथ लगने का सन्तोष ही होता है।

यह सब तो हुआ व्यक्तिगत हित-साधन की दृष्टि से वानप्रस्थ आश्रम का महत्व। जब सामाजिक दृष्टि से विचार किया जाय तो प्रतीत होगा कि किसी देश या समाज के उत्कर्ष की समस्त आशायें और भावनायें इसी केन्द्र पर केन्द्रित हैं। योजनाएँ अगणित हैं, विचारशील व्यक्ति एक से एक उत्तम योजनाएँ बनाते हैं बना सकते हैं पर सबसे बड़ी कठिनाई एक ही होती है कि उन्हें कार्यान्वित कर सकने वाले सुयोग्य व्यक्ति मिलते ही नहीं फलस्वरूप वे कागजों में लिखी और मस्तिष्कों में बिखरी रहकर ही हवा में विलीन हो जाती है।

लोक निर्माण का कार्य इतना सरल नहीं है कि उसे किसी भी ऐसे-वैसे के सुपुर्द किया जा सके। उसके लिए अनुभवी, सुयोग्य, ईमानदार, सक्षम लगनशील और प्रभावशाली कार्यकर्ता चाहिए। ऐसे लोग संस्थाओं के पास भी नहीं हैं। उनमें भी ओछी प्रकृत्ति के यश लोलुप व्यक्ति भरे पड़े हैं। सरकार के पास भी उपयुक्त व्यक्ति नहीं है, जन सहयोग के बिना कोई योजना सफल नहीं हो सकती यह स्पष्ट है। साथ ही यह भी साफ है कि यह सहयोग जुटाना ऐसे व्यक्तियों का काम है, जिनके प्रति सहज श्रद्धा उभरती हो। सरकारी कर्मचारियों की भर्ती जिन उपाधियों के आधार पर होती है, वे जन सम्पर्क कार्यकर्ता की योग्यता का आधार नहीं हो सकती हैं। अनुभवहीन लड़के जिनकी आयु पच्चीस वर्ष से भी कम है उन महान उत्तरदायित्वों को निभा सकेंगे यह कहना कठिन है। फिर वहाँ रौब-दाब, ठाट-बाट, ऐंठ-अकड़ रिश्वत खुशामद का इतना बोलबाला रहता है कि भारत जैसे पिछड़े देश की जनता का ताल-मेल उनसे बैठता ही नहीं। न तो सही अर्थों में जन-सम्पर्क बनता है—न जन सहयोग मिलता है। ऐसे ही कागजी खाना पूरी चलती रहती है। अफसर मौजमजा करते हुए—भत्ता बनाते और समय काटते रहते हैं। यह स्थिति जब तक रहेगी, तब तक सरकार की योजनाएँ कितनी ही अच्छी क्यों न हों उनसे कुछ ठोस कार्य न हो सकेगा। प्रगति का सरकारी अभियान रुका ही पड़ा रहेगा।

लोक-कल्याण के लिए विनिर्मित संस्थाओं की स्थिति और भी अधिक दयनीय है। यश प्रशंसा के लिए थोड़ी विज्ञापन बाजी करना महत्वाकांक्षा लोगों के लिए एक धन्धा बन गया है। तरह-तरह के आडम्बर, सभा सम्मेलन, संगठन संस्थान, जुलूस, पोस्टरों की इन दिनों बहुत धूम है। नित नई संस्थाएँ बनती हैं और बिगड़ती रहती हैं। पदों के लिए लड़ने-मरने वाले पर्दे के पीछे कई तरह के स्वार्थ साधन करने वाले लोगों का सार्वजनिक संगठनों में बोलबाला है। विविध संस्थाओं का ढाँचा कागज से बने रावण की तरह विशाल कलेवर तो बनाये खड़ा है, पर भीतर खोखली पोल भरी पड़ी है। यही कारण है कि काम नहीं के बराबर और आडम्बर पहाड़ के बराबर दृष्टिगोचर होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रगति के विभिन्न प्रयोजनों को लेकर संस्था संगठनों, तथाकथित लोक-सेवियों, नेताओं के रहते एक इंच भी आगे खिसक सकना सम्भव न हो सके तो समझना चाहिए कि आडम्बर ने यथार्थता को कुचल मसल कर रख दिया है।

इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का एक ही कारण है—सद्भावना, सम्पन्न, सुयोग्य एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं का अभाव। मिशन अनेक बने हुए हैं और बन रहे हैं पर मिशनरियों का पता नहीं। ऐसी दशा में लोकशक्ति को जगाना लोकमंगल का प्रयोजन पूरा कर सकना किस प्रकार सम्भव होगा ?

इस अभाव की पूर्ति उज्ज्वल चरित्र, सुसंस्कृत और निस्वार्थ लोकसेवा निरत व्यक्ति ही अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर कर सकते हैं। ऐसे नेतृत्व का उत्पादन वानप्रस्थ आश्रम की ही खदान से होता रहा है और हो सकता है। यदि वानप्रस्थ की पुण्य परम्परा चल पड़े तो एक से एक बढ़कर सुयोग्य और भावनाशील लोकसेवी विभिन्न सन्तप्रवृत्तियों में संलग्न दृष्टिगोचर हो सकते हैं और बिना वेतन भार उठाये जनता को ऐसे कार्यकर्ता लाखों की संख्या में मिल सकते हैं, जो अवांछनीयताओं के विरुद्ध मोर्चाबन्दी पर कट-कट कर लड़ने के लिए साहसी शूरवीरों की भूमिका प्रस्तुत कर सकें। रचनात्मक सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन उन्हीं लोगों के द्वारा होगा। अवैतनिक सेवा साधन में संलग्न उच्चकोटि के सुशिक्षित एवं अनुभवी व्यक्ति जिस कार्य को भी हाथ में लेते हैं, उसमें जनता का अजस्र सहयोग उपलब्ध करते हैं और निश्चित रूप से सफल होते हैं। नवनिर्माण की बहुमुखी प्रवृत्तियों को संलग्न होकर ऐसे लोग जल्दी आगे बढ़ा सकते हैं—ऊँचा उठा सकते हैं—इसकी कल्पना मात्र करने से आँखें चमकने लगती हैं।

राष्ट्र-निर्माण की समस्याएँ अगणित हैं। देश बहुत अधिक विस्तृत क्षेत्र में बिखरा पड़ा है। अशिक्षा और यातायात के साधन ऐसे अवरोध हैं जिनके कारण असली भारत से—पिछड़े भारत से बौद्धिक तथा प्रत्यक्ष सम्पर्क साधना तक कठिन पड़ता है। ऐसी दशा में सबसे बड़ी, सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता एक ही सामने उपस्थित होती है—सुयोग्य, भावनाशील, अवैतनिक और सेवा की उत्कट लगन के साथ राष्ट्र-निर्माण में जुट पड़ने वाले कर्मठ कार्यकर्ताओं की। इस अभाव को पूरा किये बिना कोई गति नहीं, कोई राह नहीं, कोई आशा नहीं। इस प्रयोजन को वानप्रस्थ परम्परा का पुनर्जागरण करके ही पूरा किया जा सकता है। यदि इस दिशा में एक प्रबल और सुव्यवस्थित आन्दोलन खड़ा किया जा सके तो इस धर्म प्राण देश में—प्राचीन संस्कृति की रक्षा को भाव प्रेरणा से प्रेरित अगणित व्यक्ति आगे आ सकते हैं और उस सृजन सेना से देखते-देखते द्वापर में उँगली पर गोवर्धन उठाये जाने की तरह—त्रेता में सेतुबन्ध बाँधे जाने की तरह वह चमत्कार सम्भव हो सकता है, जिसके आधार पर राष्ट्र का पिछड़ापन—प्रचण्ड प्रगतिशील अभियान में परिणत हुआ देखा जा सकेगा।

भारत में धर्म, अध्यात्म और संस्कृति के प्रति अभी भी आस्था का सर्वथा अभाव नहीं हुआ है। भौतिकवादी विचारधारा ने नास्तिकवाद को प्रोत्साहन अवश्य दिया है और धर्मध्वजी वर्ग के कुकर्मों ने जन-मानस में धर्म के प्रति उपेक्षा, अवज्ञा एवं आक्रोश का भाव अवश्य पैदा किया है। इतना सब होने पर भी स्थिति अभी इस सीमा तक नहीं पहुँची है कि धार्मिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए आरम्भ किये गये प्रचण्ड अभियान को सर्वथा उपहासास्पद ठहरा दिया जाय और उसकी प्रतिक्रिया उदासीनता एवं निराशा के रूप में सामने आये। हर धार्मिक व्यक्ति वृद्धावस्था में शान्ति प्राप्त करना और परमार्थ साधना की बात सोचता अवश्य है, भले ही परिस्थितियाँ उसे वैसा अवसर ही न आने दें। जिसमें थोड़ा उत्साह है वे साधु-बाबाओं के आश्रय में दिन काटते—रामनाम जपते और तथा कथित सत्संग में उलझे देखे जा सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों की संख्या गिनी जाय तो वह लाखों तक अभी भी पहुँचेगी। यदि इन्हें सही मार्ग दर्शन मिला होता तो वे आत्म-कल्याण के साथ लोक-मंगल के क्षेत्र में प्रवेश कर सकते थे और निर्माण के महान प्रयोजनों की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकते थे।

परम्परा का राजमार्ग मौजूद है। भावनाओं का अभाव नहीं। परमार्थ के प्रति आस्था अपनी जगह यथावत् विद्यमान है। इसलिए यदि वानप्रस्थ को पुनर्जीवित किया जाय—उसके लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओजस्वी आवाहन किया जाय, आगे आने वाले व्यक्तियों को उचित प्रशिक्षण और मार्ग दर्शन किया जाय तो कोई कारण नहीं कि लाखों की संख्या में प्रचण्ड क्षमता सम्पन्न लोकसेवी कार्यकर्ता क्षेत्र में उतारे न जा सकें। यह सम्भावना मूर्तिमान हो सकती है—होनी चाहिए। तदनुसार विश्वासपूर्वक यह आशा भी की ही जा सकती है कि राष्ट्र के सर्वतोमुखी नवनिर्माण के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा—उपयुक्त कार्यकताओं की कमी दूर होकर रहेगी और धरती पर स्वर्ग—अवतरण का—मनुष्य में देवत्व के उदय का स्वप्न साकार होकर रहेगा।

वानप्रस्थ की युगानुकूल रूपरेखा

सांस्कृतिक उत्कर्ष के सिद्धान्त सूत्र तो हर युग में वही रहते हैं, किन्तु उनके व्यवहार सूत्र समयानुकूल बनाने पड़ते हैं। अस्तु युग निर्माण योजना द्वारा संचालित वानप्रस्थ परम्परा की पुनर्जीवन प्रक्रिया में भी इसी पद्धति को अपनाया गया है। उस सनातन—प्राचीनतम पद्धति को नवीनतम परिस्थितियों में भी जन साधारण के स्तर पर अपनाने योग्य रूपरेखा तैयार की गयी है। कोई भी प्राणवान—भावनाशील व्यक्ति उसे समझ और अपना सकता है।

वानप्रस्थ को, आदर्श को व्यवहार में परिणत करने का महान उत्तरदायित्व वहन करना पड़ता है। इसीलिए उसे यथार्थ ब्रह्मवेत्ता कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। सच्चे अर्थों में उपदेशक, वक्ता, व्यास और प्रचारक भी वही हैं, क्योंकि वक्तृताएँ मात्र जानकारी बढ़ा सकती हैं—गुदगुदी उत्पन्न कर सकती हैं, पर प्रेरणा तो अनुकरणीय आदर्श सामने उपस्थित देखने पर ही मिलती है। नीचे गिराने का काम तो वाणी से, लेखनी से भी सध सकता है पर ऊँचा उठाने में सफल वही हो सकता है, जो स्वयं ऊँचाई तक चढ़ा है। जो स्वयं डूब रहा है वह दूसरे डूबने वाले को क्या उबारेगा, जो स्वयं मलीनता ग्रसित है, वह दूसरों को स्वच्छ कैसे करेगा ? वानप्रस्थ की लोक कल्याण साधना का शुभारम्भ होता है तो वह सर्वसाधारण के सामने अपना-अपना आदर्श उपस्थित करते हुए यह सिद्ध करता है कि त्याग और सेवा की बात मात्र बकझक नहीं वह ऐसी व्यावहारिकता भी है, जिसे प्रत्यक्ष करके दिखाया जा सकता है, दैनिक जीवन में घोला और घुलाया जा सकता है।

वानप्रस्थ का चरम लक्ष्य उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कृर्तत्व को दैनिक जीवन में उतारते हुए जहाँ जीवनोद्देश्य की पूर्ति के लिए साहसपूर्ण कदम बढ़ाना है वहाँ सर्वसाधारण को यह विश्वास दिलाना भी है कि उच्च आदर्शों को—व्यावहारिक जीवन में उतारना न केवल सरल है वरन् सुखद और शान्तिदायक भी है। लोकशिक्षा का यही प्रभावशाली तरीका है। समग्र पुनरुत्थान और अभिनव निर्माण के लिए जन साधारण को कुछ कष्ट उठाना, त्याग करना और अनुदान प्रस्तुत करना ही पड़ेगा। इसी पूँजी से ही प्रगति का भवन बनेगा। लोगों को आदर्शों की बातें यों सुहाती हैं पर उस दिशा में बढ़ने के लिए जो अनुदान प्रस्तुत करना पड़ता है, उसके लिए कोई साहस नहीं करता। फलतः लम्बी-चौड़ी योजनाओं को दीमक चाटती रहती है। जनता को सृजन प्रयोजन के लिए, अपना योगदान देने के लिए रजामन्द करना हर किसी का काम नहीं है। उसे प्रभावशाली ढंग से वही कर सकता है जिसने स्वयं वैसा कदम उठाकर दिखाया है। वानप्रस्थ अपनी भूमिका द्वारा वह अधिकार प्राप्त करे, जिसके बलबूते लोगों को देश, धर्म, समाज संस्कृति के लिए कुछ अनुदान प्रस्तुत करने के लिए कहा और मनाया जा सके। ऐसे ही नेतृत्व की सदा से आवश्यकता रही है। सफलता उसे ही मिली है—अनुगमन उसी का किया गया है। भौतिक लाभ कमाने में निरत नेता के मुख से त्याग बलिदान के उपदेश शैतान के मुँह से बाइबिल बाँचने की तरह अटपटे ही लगते हैं, उपहासास्पद ही बनते हैं। युग नेतृत्व की महती आवश्यकता वानप्रस्थ ही पूरी करता रहा है, उसे ही करने का अधिकार भी है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यों साधु और ब्राह्मण का एक समान जीवन-क्रम होता है और उसी विधि से पूरी जिन्दगी की रूपरेखा बनाने की प्रथा है। पर आपत्ति धर्म के अनुसार सीमित समय के लिए उस क्षेत्र में प्रवेश करने और फिर वापिस अपने स्थान पर लौट आने की पद्धति अपनानी पड़ेगी। या तो पूरा या कुछ नहीं की, बात पर अड़ने की आवश्यकता सदा नहीं होती। मध्यम मार्ग पर चलने से कुछ तो लाभ होता ही है। पूरी न मिले तो अधूरी से काम चलाने की नीति है। युद्धकाल में प्रत्येक वयस्क नागरिक को बाधित रूप से सेना में भर्ती होने का आदेश दिया जा सकता है। जब तक संकट काल रहता है, तब तक वे सामान्य नागरिक सेना में भर्ती रहते हैं। स्थिति सुधरते ही वे सेना छोड़कर वापिस आ जाते हैं और अपने साधारण कार्यों में लग जाते हैं। साधु संकट के इस महान् दुर्भिक्ष से भी हम सामान्य नागरिकों को थोड़े-थोड़े समय के लिए उन उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के लिए आगे आना चाहिए। एक-एक घण्टा श्रमदान करके जब बड़े-बड़े सार्वजनिक प्रयोजन पूरे किये जा सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि हम सब स्वल्प-कालीन व्रत धारण करके साधु संस्था पर छाये हुए दुर्भिक्ष संकट का निवारण करने के लिए कुछ न कर सकें।

थोड़ा-थोड़ा समय देने वाले बड़ी संख्या में हों तो उन सबका मिला हुआ कार्य हजारों नियमित, एक पूरे जीवन के लिए वानप्रस्थ में प्रवेश करने वालों जितना ही हो जायेगा। यह प्रक्रिया सरल बैठेगी। इस योजना के अन्तर्गत व्यस्त और पारिवारिक बोझ से लदे हुए व्यक्ति भी थोड़ा समय देते रहेंगे तो उन्हें यह पश्चाताप न रहेगा कि हम घरेलू झंझटों से उलझे रहने के कारण युग की पुकार को पूरा करने के लिए कुछ भी न कर सके। ऐसे व्यक्ति पूरा न सही—अधूरा का थोड़ा अवसर पाकर भी आत्मसन्तोष की एक सांस ले सकते हैं और कह सकते हैं कि मानवता पर छाई हुई 'विषम बेला' में हम मूक-दर्शक बने रहने वाले अभागों में से नहीं हैं। जितना कुछ सम्भव था, उतना तो किया ही।

बँधा रुपया न मिले, एक-एक पैसे वाले सौ सिक्के मिल जायँ तो गिनने, धरने, उठाने का झंझट तो जरूर रहेगा, पर प्रयोजन वही पूरा हो जायेगा—जो एक रुपये से सम्भव होता है। पूरे समय के लिए वानप्रस्थ न मिलें तो थोड़ा-थोड़ा समय देने वाले अनेकों का सहयोग लेकर भी सामयिक संकट से जूझने का सुयोग बन सकता है।

वानप्रस्थ के परमार्थ पथ प्रवेश दो स्तरों में विभक्त किया जा सकता है। वरिष्ठ और कनिष्ठ। सर्वोत्तम, अधिक श्रेष्ठ के उतार-चढ़ाव इस महान प्रक्रिया में भी हो सकते हैं।

सर्वोत्तम वह स्थिति है, जिसमें पारिवारिक उत्तरदायित्वों को अन्य विश्वस्त एवं निष्ठायुक्त परिजनों पर छोड़कर स्वयं पूरा समय परमार्थ प्रयोजन में लगाने के लिए तत्पर हो जायें। कुछ समय इस अभिनव जीवन प्रणाली की विधि व्यवस्था का तात्विक अध्ययन और व्यवहारिक अनुभव प्राप्त करें फिर विश्व मानव की सेवा साधना में जुट जायें।

इस स्तर के वानप्रस्थ—परिव्राजक स्तर की जीवनचर्या अपनाते हैं। वे आश्रम बनाकर नहीं बैठते वरन् जहाँ भी सत्प्रवृत्तियों के अंकुर उगे हुए हैं, उन्हें सींचने के लिए यत्र-तत्र भ्रमण करते हैं। लोग आरम्भिक उत्साह में कई तरह की सत्प्रवृत्तियाँ आरम्भ करते हैं। पीछे जोश ढीला पड़ते ही मुरझाने लगते हैं। यही बात व्यक्तिगत उत्साह पर लागू होती है। कितने ही व्यक्ति आवेशपूर्वक परमार्थ पथ पर चलने के लिए अग्रसर होते हैं, पीछे वे भी ढीले हो जाते हैं। इस प्रकार व्यक्तियों का—सत्प्रवृत्तियों का मुरझाना आरम्भ होता है। आकाँक्षा रहते हुए भी शिथिलता कुछ करने नहीं देती। ऐसी प्रवृत्तियों और ऐसे व्यक्तियों से सम्पर्क बनाकर उनमें उत्साह उत्पन्न करना और पुनः जागृति करने के लिए उपदेश करना ही नहीं कन्धे से कन्धा, कदम से कदम मिलाना भी आवश्यक होता है। यही कार्य वानप्रस्थी को निरन्तर करना पड़ता है। नये क्षेत्रों में जागृति पैदा करना भी उचित है पर पहली आवश्यकता उन पौधों की है, जो उगे तो सही पर खाद, पानी के अभाव में मुरझाते, झुलसते चले जाते हैं। नये आरोपण की अपेक्षा इन मुरझाये हुओं को सींचना आवश्यक है। वानप्रस्थ की परिव्रज्या इसी प्रयोजन में संलग्न होती है। बुद्ध धर्म में यही परिव्रज्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तपस्वी जीवन का अनिवार्य अंग थी। उससे पूर्वकाल के ब्राह्मण और वानप्रस्थ इसी के लिए अपने को तत्पर समर्पित करते रहे हैं। बादल जहाँ-तहाँ बरसते हैं। वानप्रस्थ की परिव्रज्या भी बादलों को वर्षा रूप में बदलकर अपने अस्तित्व का श्रेष्ठतम समापन करने के रूप में ही अपना आदर्श उपस्थित करती है। घर परिवार की चिन्ताओं से निवृत्त होकर दीर्घकालीन एवं निश्चित परिव्रज्या को निकल पड़ना उसी दिव्य परम्परा का निर्वाह करना है।

पारिवारिक उत्तरदायित्वों से जो निवृत्त हो चुके हैं, जिनका कार्य बच्चों ने सम्भाल लिया है, अथवा पेंशन से आर्थिक आवश्यकता पूरी हो जाती है, ऐसे व्यक्ति समाज में कम नहीं हैं, किन्तु जीवन में प्रारम्भ से अन्त तक स्वार्थ, लोभ, मोह आदि के इर्द-गिर्द ही चक्कर लगाते रहने के संस्कार उन्हें नयी जीवन पद्धति अपनाने नहीं देते। कुछ अपवादों को छोड़कर शेष अधिकांश के साथ यही होता है। जीवन के सक्रिय काल से ही परमार्थ वृत्ति का विकास करते हुए उत्तरदायित्वों से निवृत्त होने वालों के लिए लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है। तो भी युग की माँग देखते हुए उतना समय व्यर्थ नहीं गँवाया जा सकता। अस्तु वरिष्ठ के साथ कनिष्ठ वानप्रस्थ की प्रक्रिया भी चालू करना आवश्यक है।

कनिष्ठ वानप्रस्थी वे हैं जिनके लिए अपने घर परिवार के बीच रहते हुए—अपने समीपवर्ती क्षेत्र में काम करना अधिक सुविधाजनक पड़ता है। इसमें वे परिवार को मार्गदर्शन, परामर्श नियन्त्रण और सहयोग का लाभ भी यथासम्भव देते रहते हैं। सुविधाजनक जीवन यापन का सुयोग भी मिलता रहता है और समीपवर्ती परिचित क्षेत्र में अपना काम भी करते रहते हैं। मुख्य' काम वे परमार्थ प्रयोजन को मानते हैं और उसी में अपना मनोयोग भी लगाते हैं। परिवार की देखभाल तो एक सरल स्वभाव चलते रहने वाला गौण कार्य होता है। कोई विशेष अड़चन आ जाय तो बात दूसरी है अन्यथा उनका अपनी रुचि का विषय परमार्थ ही होता है। अपने समय, श्रम और मनोयोग को उसी में लगाते हैं। घर रहते हुए भी जल में कमल जैसी स्थिति बनाये रहते हैं।

कनिष्ठ वानप्रस्थ स्थानीय गतिविधियों के अतिरिक्त कभी-कभी समय निकालकर पूर्ण निवृत्त वानप्रस्थ की तरह परिव्राजक बनकर भी निकलते हैं। उतने दिनों वे वानप्रस्थों की वेशभूषा एवं मर्यादायें अपनायें रखें तथा उस अवधि की समाप्ति पर पुनः गृहस्थ मर्यादा में वापिस हो सकते हैं। इससे पूर्णकालीन वानप्रस्थों के अभाव की बड़े अंशों में पूर्ति सम्भव है। साथ ही स्वयं अपने संस्कारों तथा परिवार के सदस्यों को उत्तरदायित्व संभालने योग्य बनाने का दुहरा लाभ भी मिलता है।

स्वल्प कालीन व्रत धारण आज हमें एक अनौखी बात मालूम पड़ती है, पर वस्तुतः इसमें अनौखापन कुछ भी नहीं है। इन दिनों वैसा प्रचलन न रहने से ही ऐसा प्रतीत होता है कि यह कोई नयी बात है। प्राचीन काल में साधु-संस्था की सहायक दूसरी पंक्ति खड़ी करने के लिए यह प्रयोग बराबर होता रहा है।

रामराज्य में जिसे हम आदर्श समाज का भारत को प्रतीक मानते हैं, उस समय आवश्यकतानुसार अंशकालीन वानप्रस्थ परम्परा प्रचलित थी। स्वयं भगवान श्री राम जब बनोवास के लिए गये थे तो उन्होंने लक्ष्मण सहित विधिवत् वानप्रस्थ ग्रहण किया था। वाल्मीकि रामायण में उल्लेख है—

ततो वैखानसं मार्गमास्थितः सहलक्ष्मणः।
व्रतमादिष्टवान् रामः सहायं गुहमब्रवीत्।।

'तब श्रीराम ने लक्ष्मण सहित वानप्रस्थ ग्रहण करके ब्रह्मचर्य व्रत लेकर अपने सहायक गुह से कहा।'

स्पष्ट है कि वनवास से लौटने के बाद श्रीराम लक्ष्मण ने पुनः गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर लिया था। राज्य संचालन एवं सन्तान पैदा करने के कार्य उसके बाद गृहस्थ की मर्यादानुसार ही करते रहे।

यहाँ एक तथ्य और भी प्रकट होता है। श्रीराम के साथ उनकी धर्म-पत्नी सीताजी थीं, और लक्ष्मण अकेले थे। स्पष्ट है कि सामयिक वानप्रस्थ सपत्नीक भी लिया जा सकता है तथा एंकाकी भी। अपनी परिस्थितियों के अनुसार विवेकपूर्वक दोनों में से कोई भी मार्ग अपनाया जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह अंश कालीन परिव्रजा ग्रहण करने की परम्परा भारत से अन्य देशों में भी गई। जब भारत में प्रखर परिव्राजकों की पुण परम्परा थी उन दिनों इस दिव्य संस्कृति का विस्तार प्राय: सम्पूर्ण विश्व में था। शासन-तन्त्रों की स्थापना में भारत ने सदा स्थानीय लोगों को ही प्रशिक्षित किया है और राज-काज चलाने की जिम्मेदारी उन्हीं के कन्धों पर डाली है। राम ने सोने की लङ्का जीती, पर वहाँ से एक लोहे की कील भी अयोध्या नहीं लाये। जिस पुष्पक विमान पर बैठकर आये थे, वह भी उन्होंने वापिस कर दिया। राज्य विभीषण को सौंपा गया। यह नीति अन्यत्र भी रही। थोड़े दिनों प्रशिक्षण के लिये ठहरना पड़ा हो, यह बात दूसरी है। अन्यथा चक्रवर्ती शासन पद्धति के अन्तर्गत न्याय-नीति पर चलने के लिए बाध्य करने लायक शक्ति हाथ में रखना वे पर्याप्त मानते थे। असली भारत का विस्तार तो सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रक्रिया के साथ जुड़ा था। भारत का वास्तविक सीमांकन इस धर्म नेतृत्व के आधार पर ही किया जाता रहा है। इस दृष्टि से वह बौद्ध काल तक सम्पूर्ण एशिया में छाया रहा। इससे पूर्व तो उसकी परिधि समस्त भूमण्डल के सुदूर प्रदेशों तक को छूती रही है।

एक हजार वर्ष पहले के निकटवर्ती भूतकाल में भारत का वर्चस्व मध्य एशिया और सुदूर पूर्व के द्वीप समूहों तक फैला हुआ था। इन पंक्तियों में चर्चा उन द्वीपों की हो रही है, जिन्हें आज हिन्द-चीन के नाम से पुकारते हैं। भारत की सीमा से लगा हुआ वर्मा देश है। उससे आगे श्याम मिला हुआ है। अव सन् १९४८ से उसका नाम बदलकर "थाईलैण्ड" रख दिया गया है।

थाईलैण्ड संसार का एक मात्र देश है, जहाँ बौद्धधर्म—राजधर्म भी है। अन्य देशों ने तो भारत की परम्परागत संस्कृति इन थोड़े ही दिनों में गँवा दी, पर यह अकेला देश ऐसा है, जिसमें वर्तमान भारत की परिधि से आगे जाकर यह देखा जा सकता है कि प्राचीनकाल में भारत की रीति-नीति का क्या स्वरूप था ? वहाँ जो देखने को इन दिनों भी मिलता है, उससे यह पता लगाया जा सकता है कि भारत किन मान्यताओं और आदर्शों के कारण उन्नति के उच्च स्तर पर पहुँचा था और शान्ति का सन्देश सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचाने में किन परम्पराओं के कारण सफल हुआ ? आज कई बातों में थाईलैण्ड हमें ऐसी शिक्षायें और प्रेरणायें दे सकता है, जिन्हें अपनाकर हम प्रस्तुत दुर्गति के गर्त से उबर सकते हैं।

इन दिनों थाइलैण्ड में बौद्ध-धर्मानुयाई ही राजा हैं और उसी धर्म को मानने वाली अधिकांश प्रजा। इस छोटे से देश में पिछली जनगणना के अनुसार एक लाख तीस हजार भिक्षु थे और १६५०३ मठ, मन्दिर एवं बौद्ध-विहार। इतने छोटे देश में इतने अधिक देव स्थानों और साधुओं का होना आश्चर्यजनक है। यह संख्या तो भारत की स्थिति से भी आगे बढ़ी-चढ़ी है। इससे यह आशंका होती है कि उस देश की जनता को हमारी ही तरह निठल्लों को खिलाने का भार वहन करना पड़ता होगा और आर्थिक दृष्टि से उस देश पर भारी दबाव पड़ता होगा।

पर वहाँ की वस्तु स्थिति सर्वथा भिन्न है। वहाँ समय गत भिक्षु-दीक्षा लेने की प्रथा है। थोड़े समय के लिए लोग भिक्षु बनते हैं और फिर अपने सामान्य सांसारिक जीवन में लौट जाते हैं। थाईलैण्ड के प्रत्येक बौद्ध धर्मानुयायी का विश्वास है कि "एक बार भिक्षु बने बिना उसकी सद्गति नहीं हो सकती। उसके बिना उसकी धार्मिकता अधूरी ही रहेगी।" इस आस्था के कारण देर-सबेर हर सुयोग्य नागरिक एक बार कुछ समय के लिए साधु अवश्य बनता है। घर छोड़कर उतने समय विहार में निवास करता है। साधना तथा अध्ययन में निरत रहता है और संघ द्वारा निर्धारित सेवा कार्य में सच्चे मन से पूरा परिश्रम करता है। भिक्षु का मोटा अर्थ भिक्षुक या भिखारी जैसा लगता है, पर वास्तविकता ऐसी नहीं है। बौद्धधर्म में साधु को—धर्म प्रचारक को—भिक्षु कहते हैं। अवसर पड़ने पर उसे भिक्षा द्वारा क्षुधा शान्त करने में भी आपत्ति नहीं हो सकती, पर यह आवश्यक नहीं कि भिक्षु नामधारी को अनिवार्य रूप से भिक्षा माँगनी पड़े। भिक्षुक और भिक्षु दो शब्द अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त होते रहे हैं। भिक्षुक दीन-हीन, अपंग, असहाय व्यक्ति को—उदर निमित्त याचना करने वाले को कहते हैं। जबकि भिक्षु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विशुद्ध रूप से सन्त के अर्थ में प्रयुक्त होता है। थाइलैण्ड निवासी भिक्षुक नहीं, भिक्षु होते हैं। दूसरे अर्थों में उन्हें साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा के चतुर्विध परमार्थ प्रयोजनों में निरत, परमार्थ-परायण व्यक्ति कहना चाहिए। ऐसे लोग जितने अधिक किसी देश में होंगे, वह उतना ही अधिक फूलेगा फलेगा।

थाईलैण्ड में धर्म-आस्था अन्य देशों की तरह डगमगाई नहीं है। वहाँ के नागरिकों को अभी भी प्राचीन काल के धर्मनिष्ठ और कर्तव्य परायण लोगों की तरह जीवन यापन करते हुए देखा जा सकता है, इसका श्रेय वहाँ की समर्थ साधु-संस्था को ही दिया जा सकता है। मन्दिर तथा पूजास्थल तो है, पर उनका उपयोग मात्र उतने ही सीमित प्रयोजन के लिए नहीं होता। प्रत्येक विहार में वहाँ एक साधन सम्पन्न विद्यालय भी होता है, जिनमें न केवल छात्र-छात्राओं को सामान्य शिक्षा दी जाती है, वरन् उच्चस्तरीय धर्म-शिक्षा की व्यवस्था भी रहती है। प्रत्येक विहार में एक अच्छा पुस्तकालय होता है, जिसमें धार्मिक जीवन जी सकने की प्रेरणा देने वाली चुनी हुई पुस्तकें पर्याप्त संख्या में रखी होती हैं।

जनता अपनी धर्म-श्रद्धा की अभिव्यक्ति एक बार अनिवार्य रूप से भिक्षु-दीक्षा लेकर व्यक्त करती है। बुद्ध-संघ उस श्रद्धा का सदुपयोग करता है—व्यवस्थित, नियन्त्रित एवं परिष्कृत करता है। साथ ही ऐसी योजनायें बनाकर तैयार रखता है, जिसके अनुसार उस अर्म-प्रेरणा को उपयोगी कार्यों में संलग्न किया जा सके। अनेकों सृजनात्मक योजनाएँ तैयार रहती हैं, उन्हें पूरा करने के लिए विहार में प्रविष्ट भिक्षुओं को लगा दिया जाता है। उनके श्रम, ज्ञान एवं मनोयोग का समन्वित उपयोग मिलने से अनेक योजनाएँ बिना किसी अतिरिक्त खर्च के सहज ही चलती रहती हैं। सुयोग्य व्यक्ति बिना किसी पारिश्रमिक के यदि रचनात्मक कार्यों में लगेंगे तो उस देश में बहुमुखी प्रगति की बाढ़ आवेगी ही। इस दिशा में थाईलैण्ड की बुद्ध-संस्था बहुत सजग है, वह किसी भी भिक्षु को उच्छृंखल, अनियन्त्रित नहीं होने देती। हर किसी को पूर्ण अनुशासन में रहना पड़ता है। यदि भारत की तरह वहाँ के भिक्षु स्वेच्छाचारी बन जायें और अनियन्त्रित साँड़ की तरह विचरें तो इस छोटे से देश की इतनी बड़ी भिक्षु-संस्था देखते-देखते टिड्डी दल की तरह सारी समृद्धि को चट करके रखदे, पर वहाँ की दूरदर्शी धर्म-संस्थाएँ वैसा होने नहीं देती। अनुशासन और धर्म-परायणता को वहाँ परस्पर पूर्णतया समन्वित बनाने का सफल प्रयोग किया गया है।

थाईलैण्ड कृषि-प्रधान देश है। वहाँ ४८ प्रतिशत लोग खेती करते हैं। पर वे अत्यन्त कर्मठ, पुरुषार्थी, शान्ति-प्रिय और धर्म-परायण लोग हैं। परस्पर मिलजुलकर रहना और हँसी खुशी की जिन्दगी जीना उन्होंने धर्म संस्था से सीखा है। भिक्षु-सेना ने उन्हें अनेकानेक सद्गुण सिखाये हैं और परिष्कृत स्तर का जीवन किस तरह जिया जा सकता है, यह बताया है। इस प्रशिक्षण से न केवल उनकी विचार पद्धति ऊँची उठी है, वरन् भौतिक समृद्धि भी बढ़ी है। यह आश्चर्यजनक प्रसंग है कि एशिया के किसी भी देश की अपेक्षा थाईलैण्ड निवासियों की औसत आमदनी कहीं अधिक है। स्वर्णकोष की दृष्टि से थाईलैण्ड की साख और धाक संसार के आर्थिक क्षेत्र में मानी जाती है।

धर्म-समन्वय उस देश की अपनी विशेषता है। इसके अतिरिक्त सीमित समय के लिए साधु-दीक्षा लेने वाली पद्धति और भी अधिक उपयोगी सिद्ध हुई है। इन सब बातों ने उस छोटे से देश को अपने ढंग की अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रगति करने का अवसर दिया है।

हमारे लिए थाईलैण्ड एक प्रेरणा-स्रोत बनकर सामने खड़ा है। भूतकाल में हमने उसे सिखाया, उठाया होगा पर आज तो वह हमें भी बहुत कुछ सिखाने की स्थिति में सामने खड़ा है।

इस देश की जिस परम्परा के कारण थाईलैण्ड गौरवान्वित है, जिस परम्परा को स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने अपनाया था, उसे आज पुनः जनस्तर पर प्रचलित करना अनुचित नहीं। उस युग में व्याप्त असुरता को निरस्त करने के लिए जिस पद्धति का उपयोग भगवान राम ने किया, उसी का वरण इस युग में संव्याप्त असुरता के उन्मूलन के लिए किया जाना हर प्रकार से शुभ और हितकारक ही सिद्ध होगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योजना और कार्यप्रणाली

युग की आवश्यकता तथा वानप्रस्थों द्वारा उसकी पूर्ति की जा सकने की सुनिश्चित सम्भावना को लक्ष्य करके युग निर्माण योजना के अन्तर्गत वानप्रस्थ परम्परा के पुनर्जीवन अभियान को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उसमें भाग लेने के लिए भावना एवं विचारणा सम्पन्न व्यक्तियों का आह्वान करुण चीत्कार के साथ किया गया है। उस पुकार को सुना भी गया है तथा उसके लिए संकल्प के धनी शूरवीर आगे आ भी रहे हैं।

राजनैतिक संघर्षों में अन्य अनेक राजनैतिक दल उलझे हुए हैं, वे अपने ढंग से उस क्षेत्र में काम कर रहे हैं, किन्तु ध्यान रहे कि देश की सर्वांगीण प्रगति के लिये मात्र राजनीति ही सब कुछ नहीं है। उसके लिये अन्य क्षेत्रों में भी बहुत कुछ किया जाना है। अन्य क्षेत्र प्रायः सूने पड़े हैं। हमें उन्हीं उपेक्षित किन्तु राजनीति से भी महत्वपूर्ण कार्यों को हाथ में लेना है। हमारा कार्य क्षेत्र कितना ठोस, कितना व्यापक, कितना आवश्यक कितना महत्वपूर्ण और कितना सत्परिणामदायक है इसे आज नहीं तो कल समझा जायेगा। वानप्रस्थों को इन्हीं रचनात्मक प्रवृत्तियों का—विकासोन्मुख चेतनाओं का, संचालन अभिवर्धन करना है।

जो कार्य हाथ में लिया जा रहा है। वह निश्चित रूप से असामान्य है। बड़े कार्य के लिए उसी अनुरूप शक्ति, सामर्थ्य एवं योग्यता की आवश्यकता पड़ती है। वानप्रस्थ योजना के अन्तर्गत साहसपूर्वक आगे आने वाले युग सेनानियों को यों ही क्षेत्र में झोंक देने से काम नहीं चलेगा। उनकी योग्यता एवं क्षमता का विकास भी आवश्यक है। उससे एक दम आगे बढ़कर उनमें प्रखर आत्मशक्ति ब्रह्मशक्ति, का भी जागरण करना होगा। युग का प्रवाह उसके बिना बदला नहीं जा सकता।

अस्तु मात्र आह्वान करके ही अपने उत्तरदायित्व की पूर्ति नहीं मान ली गयी है। वानप्रस्थ परम्परा को जीवित बनाने वालों के समुचित प्रशिक्षण, ज्ञान संवर्धन एवं साधना, तपश्चर्या की भी व्यवस्था की गयी है। यह सब सुविधाएँ हरिद्वार स्थित 'शान्ति कुञ्ज' एवं 'ब्रह्मवर्चस' आश्रमों में उपलब्ध हो सकती हैं।

योजना के अन्तर्गत वरिष्ठ वानप्रस्थों से अपेक्षा की जाती है कि वे घर से निवृत्त होकर आश्रम में ही रहें। उन्हें आश्रम में ब्रह्मज्ञान, योग साधना एवं तपश्चर्या का निर्धारित क्रम अपनाना होता है और धर्मप्रचार, जन जागरण के लिए परिव्राजक की तरह निर्धारित कार्यक्रम लेकर निश्चित अवधि के लिए क्षेत्रों में भी जाना पड़ता है। किसी विशेष प्रसंग में घर, कुटुम्बियों में जाना पड़े तो रोक नहीं, किन्तु सामान्य रूप से उनके लिए उस ओर से मोह तोड़ लेना ही उचित समझा जाता है।

कनिष्ठ वानप्रस्थों को प्रारम्भ में न्यूनतम दो माह की साधना एवं प्रशिक्षण सत्र में रहना होता है। इसके बाद वे न्यूनतम अपनी साधना तपश्चर्या का क्रम अपने घरों पर ही चलाते रह सकते हैं। वर्ष में कम से कम एक दो माह के लिए उन्हें भी परिव्राजक के रूप में सन्त परम्परा के अनुरूप सद्ज्ञान प्रचार के लिए क्षेत्रों में निकलना होता है। किसे किस क्षेत्र में, कितने समय के लिए, क्या कार्यक्रम लेकर जाना है—इसकी परिपूर्ण व्यवस्था बना दी जाती है।

वानप्रस्थ के किसी भी वर्ग में प्रवेश लेने वालों के लिए कुछ सामान्य नियम और भी हैं।

(१) यदि उनकी पत्नी है, तो भी उन्हें ब्रह्मचर्य का महत्व समझना एवं उसका यथा साध्य पालन करना चाहिए, किन्तु बच्चे पैदा करने का क्रम तो हर हालत में बन्द कर ही देना चाहिए। इसके लिए संयम से लेकर परिवार नियोजन के विभिन्न तरीकों में से किन्हीं को भी अपनाया जा सकता है।

(२) उन्हें ब्रह्मविद्या, साधना, तपश्चर्या एवं सेवा का निर्धारित क्रम पूरा करना होता है। उसका निर्धारण उनकी शारीरिक एवं मानसिक स्थिति देखकर ही किया जाता है।

(३) उन्हें शरीर से औसत स्तर का स्वस्थ एवं निरोग होना चाहिए।

(४) हर वानप्रस्थ को औसत भारतीय के स्तर के रहन-सहन, खान-पान एवं दिनचर्या का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अभ्यस्त होना आवश्यक है। इसके बिना न तो आत्मबल पाया जा सकता है और न सेवा की जा सकती है।

(५) वरिष्ठ वानप्रस्थों को स्थाई रूप से तथा कनिष्ठ वानप्रस्थों को निश्चित अवधि में वानप्रस्थों के लिए निर्धारित पीले रंग के वस्त्र (धोती-कुर्ता) पहनने का नियम है।

यह सभी नियम ऐसे हैं जिनके पालन में जन सामान्य के लिए भी किसी प्रकार असमंजस खड़ा नहीं होना चाहिए।

जिनके पास पूरा समय है, साथ ही स्वास्थ्य, योग्यता एवं भावना भी है, ऐसे लोग कम ही मिलेंगे। इतना विशाल क्षेत्र—इतना महान् कार्य थोड़े से लोग नहीं कर सकते। कार्य की विशालता के अनुरूप सृजन-सेना का संख्या बल भी चाहिए। अस्तु आंशिक समय देने वाले कनिष्ठ वानप्रस्थों की एक नई शृंखला खड़ी करनी पड़ेगी। कनिष्ठ वानप्रस्थ का सामयिक व्रत धारण अधिकांश भाव सम्पन्न व्यक्तियों को बहुत अधिक कठिन नहीं पड़ना चाहिए। प्रारम्भिक-शिक्षा के लिए दो महीने और फिर पीछे हर वर्ष एक महीना अभीष्ट उद्देश्य के लिए देते रहना—यह व्रतधारी वानप्रस्थ का न्यूनतम समय दान होना चाहिए। इससे अधिक जितना समय मिल सके, उतना उत्तम है। लगनशील और भावनाशील व्यक्ति इतना समय तो अपने सामान्य कारोबार की मन्दी के दिनों में भी निकाल सकते हैं। खलिहान उठाने के बाद हर वर्ष किसान एक या दो महीने फुरसत में रहता है। कहीं-कहीं जाड़े के दिनों में थोड़ी फुरसत रहती है। सरकारी कर्मचारियों को भी संचित और सामयिक छुट्टियाँ काफी मिलती हैं। व्यापार का भी चलने-चमकने का खास सीजन होता है, बाकी समय तो वे भी मन्दी में ऊँघते रहते हैं। बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थी भी वार्षिक छुट्टियाँ पाते हैं। इस अवधि को परमार्थ-प्रयोजनों के लिए देकर आत्म-कल्याण और लोक-निर्माण की उभय-पक्षीय साधनाएँ की जा सकती हैं।

प्रश्न समय का नहीं—भावना का है। यदि हम सांसारिक कर्तव्यों की तरह आध्यात्मिक कर्तव्यों की भी गरिमा समझें, लोक की तरह परलोक को भी महत्व दें, शरीर की तरह आत्मा के लिए भी आहार जुटाना आवश्यक समझें, पेट और परिवार की तरह संस्कृति और समाज के प्रति भी जिम्मेदारी अनुभव करें, वासना और तृष्णा की पूर्ति जैसी प्रसन्नता आत्म-गौरव बढ़ाने वाले कार्यों में भी अनुभव करें। संसार में प्रशंसा प्राप्त करने की तरह ईश्वर की प्रसन्नता की आवश्यकता अनुभव करें, मनुष्य के सुर दुर्लभ शरीर और उसके महान् जीवन-लक्ष्य का स्वरूप समझें, तो यह नितान्त आवश्यक प्रतीत होगा कि जीवन-सम्पदा का शत-प्रतिशत भाग पशु प्रयोजनों में ही नष्ट करते रहा जाय, उसका एक अंश इस प्रकार भी व्यय किया जाय, जिससे आत्म-सन्तोष और परमार्थ कर्तव्यों की पूर्ति का साधन जुटता चले।

वानप्रस्थों को सेवा काल में अपने स्थान से बाहर जाकर कार्य करना चाहिए। सक्रिय सदस्य और कर्मठ कार्यकर्ता अपने-अपने क्षेत्र में प्रचारात्मक, रचनात्मक और संघर्षात्मक शतसूत्री योजना चलाते ही हैं। घर कार्यों से बचे हुए समय को विचार क्रान्ति, नैतिक क्रान्ति और सामाजिक-क्रान्ति के पुनीत क्रियाकलाप में लगाते ही हैं। वानप्रस्थों की भूमिका इससे अगली और ऊँची है। उन्हें बड़े कदम उठाने पड़ते हैं। इनमें एक कदम यह है कि अपना वर्तमान स्थान छोड़कर कहीं अन्यत्र सेवा-कार्य करने के लिए चले जायँ। पुरानी परम्परा यही है। वानप्रस्थ का अर्थ—घर छोड़कर वन में निवास करने वाला होता है।

यों घर में रहना कोई पाप नहीं है। स्त्री बच्चों ने कुछ जुर्म नहीं किया है कि उन्हें छोड़ा जाय। इसलिए घर को भव-बन्धन समझना और बाहर वन में जाकर पुण्य बटोरने से शान्ति समेटने की कल्पना करना निरर्थक है। घर छोड़ने के पीछे यह निषेधात्मक दृष्टिकोण सर्वथा अनुचित है। हाँ, एक दूसरा दृष्टिकोण है, जिसके अनुसार अन्यत्र जाकर काम करने की उपयोगिता का समर्थन होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घर रहकर पारिवारिक, व्यावसायिक काम बने ही रहते हैं। मित्रों और सम्बन्धियों का पुराने ढर्रे का मिलना-जुलना और वार्तालाप करना बना ही रहता है। इन क्षेत्रों में वानप्रस्थ की बदली हुई रीति-नीति फिट नहीं बैठती, उन्हें अखरती है क्योंकि पिछले सामान्य क्रम में उन्हें व्यवधान उपस्थित दीखता है। अस्तु स्वाभाविक ही है कि कुटुम्बी, सम्बन्धी और मित्रगण उपहास उड़ायें—बेवकूफ बतायें, ढोंग बतायें और इस झंझट में न पड़ने की सलाह दें। अनेकों ऐसी बात कहें—दलीलें दें, जिनसे अपना मन कमजोर पड़ता हो। जिन लोगों से सदा काम-काजी साँसारिक बातें कही जाती रही हैं, उन्हें उस वानप्रस्थ अवधि में पुराना ढर्रा बदलकर ज्ञान-ध्यान की नई बातें कहने लगें तो उन्हें भी अटपटा लगेगा और जो समझाया जा रहा है, उसे मानने-अपनाने की अपेक्षा उल्टे असमन्जस में पड़ने लगेंगे। अपना ध्यान भी आधा ही परमार्थ प्रयोजनों में लगेगा। जो काम या समस्यायें सामने आयेंगी, उनसे इन्कार तो नहीं किया जा सकता पर दोनों ओर ध्यान बना रहे तो एक भी काम पूरी तरह न हो सकेगा। अधूरेपन की मनःस्थिति में जो कुछ होता है, वह लँगड़ा-लूला और असफल ही रहता है। घर का भी हर्ज हुआ—अभीष्ट परिणाम भी न निकला, तो ऐसे वानप्रस्थ की क्या उपयोगिता हुई ?

व्यावहारिक क्षेत्र में यह उक्ति सोलह आने सही उतरती है कि "गाँव का जोगी जोगना—अन्य गाँव का सिद्ध" अपने समीपवर्ती क्षेत्र में जिन्होंने आरम्भ से सामान्य स्तर का जीवनयापन किया है, वे कम से कम उस क्षेत्र में बदले हुए उच्चस्तरीय परिवर्तन की बात स्थानीय लोगों के गले नहीं उतार सकते। यदि प्रयत्न करें भी तो सफलता प्राप्त करने में मुद्दतें लग जाती हैं, तब कहीं लोग वस्तुस्थिति समझ पाते हैं।

यह समस्या काल्पनिक नहीं—सर्वथा देखी—समझी हुई है। प्रायः सभी महानुभावों के अनुभव में आ गई है। इसलिए उन्हें अपना स्थान छोड़कर अन्यत्र ही कार्यक्षेत्र बनाना, अपनाना पड़ा है। भगवान बुद्ध कपिल वस्तु में जन्मे अवश्य थे, पर वहाँ पर उनने अपना कार्यक्षेत्र नहीं बनाया। गाँधीजी पोरबन्दर में जन्मे थे, पर उनका कार्यक्षेत्र साबरमती और बर्धा रहा। शंकराचार्य केरल में जन्मे, पर वहाँ टिके नहीं। उत्तर भारत में वे काम करते रहे। स्वामी दयानन्द टंकारा में नहीं रहे, उन्हें मथुरा, अजमेर आदि स्थानों में अपने पाँव जमाने पड़े। सन्तों और महापुरुषों में से कोई एकाध ही ऐसा हुआ होगा जिसने अपनी जन्मभूमि में ही सेवा क्षेत्र बनाया हो और आशाजनक सफलता पाई हो। इस्लाम के संस्थापक मुहम्मद साहब को मक्का छोड़कर मदीना के लिए हिजरत करनी पड़ी। ईसामसीह को लोगों ने वहाँ नहीं टिकने दिया जहाँ वे जन्में थे। श्रीकृष्ण भगवान ब्रज में रहने की उपयोगिता संदिग्ध देखकर वहाँ से उखड़ दिये थे और महाभारत के लिए इन्द्रप्रस्थ में रुकने के उपरान्त द्वारिका जाकर पैर जमाने में समर्थ हुए थे।

यह कड़ुई सचाईयाँ हैं, जिनके आधार पर वानप्रस्थों को भी भूतकाल के परिव्राजक संन्यासियों की तरह अपना वर्तमान स्थान छोड़कर अन्यत्र जाने की बात सोचनी चाहिए। यह अवधि स्वल्प-कालीन हो तो ठीक है, पर जितने भी दिन कार्य करना हो उसे समग्र और व्यवस्थित करने की दृष्टि से अपना कार्य-क्षेत्र अन्यत्र बनाने की बात ही सोचना चाहिए।

बाहर का व्यक्ति अचानक सामने प्रस्तुत होता है इसलिए उसका वर्तमान स्वरूप ही लोग देख समझ पाते हैं। स्पष्टतः वानप्रस्थ का वर्तमान वेष और स्वरूप सन्त महात्मा जैसा होता है। अस्तु उसे उसी रूप में देखने मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होती है।

अपने आपको बदली हुई स्थिति का भान होता रहे—अन्तर्मन को निरन्तर संकेत उद्‌बोधन मिलता रहे इसलिए वस्त्रों का रंग बदल लेने की परम्परा बहुत सारगर्भित एवं तथ्यपूर्ण है। वानप्रस्थ अवधि में पीतवस्त्र धारण करने की परम्परा भूतकाल में जितनी उपयोगी थी, अब भी वह उतनी ही आवश्यक है। इसलिए अपनी परम्परा भी वही है। वानप्रस्थ को शिक्षा काल में तथा सेवा-काल में पीले रंगे हुए वस्त्र पहनने होते हैं।

मात्र भजन, स्वाध्याय, सत्संग से आत्मिक प्रगति का महान प्रयोजन पूरा नहीं होता। विचारणा के साथ क्रिया-प्रक्रिया जुड़ी रहने पर ही संस्कार बनते हैं आस्था सुदृढ़ होती हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्तर परिपक्व बनते हैं, इसलिए उत्कृष्ट विचारणा के साथ आदर्श क्रिया पद्धति को जोड़ने से ही श्रेय साधना की धारा गतिगामिनी होती है। वानप्रस्थ प्रयोजन में इन सभी सन्दर्भों का समावेश है, उसे अपनाकर हम हम अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत करने का, अन्तःचेतना में उच्चस्तरीय तत्वों से समावेश का उद्देश्य पूरा कर सकते हैं।

आमतौर से यह समझा जाता है कि वानप्रस्थ, संन्यास आदि माध्यमों का अवलम्बन लेकर परमार्थ जीवन में प्रवेश करने का अधिकार केवल पुरुषों को ही हैं, महिलाओं को घर-गृहस्थी के काम ही सँभालने चाहिए। परिवार के उत्तरदायित्वों से निवृत्ति मिलने की स्थिति होने पर भी उन्हें घर में ही रहना चाहिये। अधिक से अधिक यह सोचा जा सकता है कि यदि पति वानप्रस्थ ग्रहण करे तो उसकी सेवा-सहायता के लिए वह भी साथ जा सकती है। इन्हीं मान्यताओं का प्रचलन रहने के कारण अपने देश में परमार्थ परायण महिलाओं की संख्या अत्यन्त स्वल्प ही दृष्टिगोचर होती है। फिर कहीं कोई है भी तो उनका कार्यक्षेत्र किसी कुटी, आश्रम तक सीमित रहा होगा—परिव्राजक जीवन बिताने की रीति-नीति अपनाने का साहस कोई विरली ही कर पा रही होंगी।

इस स्थिति को बदला जाना चाहिए और वातावरण ऐसा उत्पन्न किया जाना चाहिए, कि उत्तरदायित्वों से निवृत्त महिलाओं को भी विश्व मानव के पुरुत्थान अभियान में उत्साहपूर्वक नियोजित किया जा सके।

नारी को न्याय मिले—उसे अनीति उत्पीड़न से राहत मिले—मानवी अधिकारों का वह भी उपयोग कर सके इसके लिए सदियों पुरानी मूढ़ताओं और दुष्टताओं से लोहा लेना पड़ेगा। नारी को इस योग्य बनाना पड़ेगा कि वह अपनी दयनीय स्थिति को समझ सके और उससे त्राण पाने के लिए आकुलता जागृत कर सके। महिला जागरण के लिए—पुरुषों में न्याय बुद्धि उत्पन्न करने के लिए—समाज कर्णधारों को नर-नारी के बीच प्रस्तुत असमानता हटाने को सहमत करने के लिए न जाने कितने बड़े प्रयास करने पड़ेंगे। नारी पुनरुत्थान की योजनायें इतनी गहराई के साथ खड़ी की जा सकें तभी कुछ काम चलेगा। ऊपर की लीपा पोती तो एक विनोद मात्र बनकर रह जायेगी।

यह कार्य कौन करे ? इन प्रयासों का नेतृत्व किसके हाथ में हो ? इसका उत्तर—सही उत्तर प्राप्त करने के लिए नारी का ही मुँह तकना पड़ेगा। उसे ही अग्रिम पंक्ति में खड़ा करना पड़ेगा। पुरुष का इसमें प्रबल समर्थन होना ही चाहिए। आवश्यक साधन उसे ही जुटाने चाहिए। पीढ़ियों से चले आ रहे पाप का प्रायश्चित वह इसी प्रकार कर सकेगा कि नारी जागरण के प्रचण्ड आन्दोलन खड़े करने के लिए वह अधिक से अधिक ध्यान केन्द्रित करे और अधिक से अधिक साधन जुटाये। इतने पर भी महिला अभियान का प्रत्यक्ष नेतृत्व नारी के ही हाथ में रहना चाहिए। अग्रिम पंक्ति में उसे ही खड़ा होना चाहिए। नारी से सीधा सम्पर्क स्थापित कर सकना—घरों में प्रवेश कर सकना—महिलाओं से जी खोलकर बातें कर सकना—उन्हें साथ लेकर चल सकना केवल नारी के लिए ही सम्भव हो सकता है। वर्तमान स्थिति में—भारत जैसे पिछड़े देश में—पुरुष वर्ग के लिए इस क्षेत्र में अधिक गहरा प्रवेश कर सकना कठिन है।

पुरुषों की तरह महिला वानप्रस्थों की भी दो श्रेणियाँ हो सकती हैं। एक वे जिनके पारिवारिक उत्तरदायित्व अभी शेष हैं, और जो घर, परिवार की देखभाल करते हुए अपने स्थानीय क्षेत्र में नारी जागरण के लिये थोड़ा बहुत समय निकालती रह सकती हैं। दूसरी वे जो देशव्यापी धर्म-शिक्षण के लिये दूर-दूर तक जा सकने की सुविधा से सम्पन्न हैं। जिनके पारिवारिक उत्तरदायित्व दूसरों के कन्धों पर चले गये हैं और बिना कठिनाई के परिव्राजक स्थिति अपना सकती हैं। इनके अतिरिक्त महिला वानप्रस्थों का एक तीसरा वर्ग भी हो सकता है, जो अपने पति वानप्रस्थों के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर काम करती रह सकें। कुछ साधन सम्पन्न महिलायें छात्रावासों के अथवा सुयोग्य सम्बन्धियों को बच्चों के उत्तरदायित्व सँभालकर भी सेवा क्षेत्र में उतर सकती हैं।

जिन्हें परिव्राजक बनना है उन्हें दो महिला सहेलियाँ के रूप में जोड़ा बनाकर रहना होगा। एकाकी महिला प्रचारिका की बात अपने देश में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उतनी उपयुक्त नहीं। दो महिलाओं का जोड़ा जहाँ परस्पर एक-दूसरे के लिए दैनिक कार्य-कलाप में सहयोगी, सहायक हो सकता है, वहाँ कार्यक्षेत्र में मिल-जुलकर काम करते हुए नारी सुलभ संकोच शीलता की कठिनाई भी सामने न आवेगी। दोनों मिल-जुलकर एक दूसरे को उत्साह देती रहेंगी और परामर्श विचार-विमर्श द्वारा उपयोगी निष्कर्ष निकालती रहेंगी। सबसे बड़ा लाभ इस जोड़ी प्रक्रिया का यह है कि उनकी चरित्र निष्ठा पर किसी कुतर्की को भी उँगली उठाने का अवसर न मिलेगा। प्रशिक्षण पुरुषों की तरह नारी वानप्रस्थों का भी आवश्यक है। कम से कम उन्हें छः महीने आत्मशोधन की स्थिर तपश्चर्या करनी चाहिए और अपने लिए उपयुक्त सेवा धर्म की कार्य पद्धति का ज्ञान संचित करना चाहिए।

'वानप्रस्थ' किसी स्थूल स्वरूप अथवा कर्मकाण्ड तक सीमित नहीं। वह तो आत्मोत्कर्ष एवं जन कल्याण के लिए अपनी आहुति देने के लिए आतुर अन्तःकरण की एक विशिष्ट स्थिति है। लौकिक आकर्षणों—महत्वाकांक्षाओं को बच्चों का खेल मानकर उच्च उद्देश्यों के लिए अपनी सारी शक्ति सामर्थ्य लगा देने की प्रखर उमंग जागने पर ही उसके लिये आवश्यक दिव्य प्रक्रियाओं को आत्मसात किया जाना सम्भव होता है।

ऐसी अवस्था में आत्मा को आनन्द विभोर कर देने वाली ब्रह्मविद्या का तत्व-चिन्तन, मनन, स्वाध्याय और निदिध्यासन सम्भव हो जाता है। आत्म-बोध और तत्वबोध की ज्ञान-साधना से ही ऋतम्भरा प्रज्ञा प्रकट होती है और जीवात्मा का 'भूमा' स्थितिप्रज्ञता में प्रविष्ट होना सम्भव होता है। आत्मा की यह भूख बुझाने के लिए नये सिरे से विद्याध्ययन करना पड़ता है—यह ब्रह्मचारी की लौकिक शिक्षा से सर्वथा भिन्न होता है। वानप्रस्थ लेने का प्रथम सोपान है—ब्रह्म विद्या का पारायण करना, उसमें पारंगत होना। ज्ञानामृत से परिपूर्ण व्यक्ति ही ब्रह्मनिर्माण प्राप्त करते हैं और लोक निर्माण जैसे महान् प्रयोजन के अधिकारी बनते हैं, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

उत्तरार्ध में जिस वानप्रस्थ आश्रम की उपयोगिता मनीषियों ने जोर देकर प्रतिपादित की है, उसका दूसरा चरण है—तप साधना, योगाभ्यास। आत्मा पर चढ़े हुए कषाय-कल्मष और मल, आवरण एवं विक्षेपों का निवारण, निराकरण इसी अग्नि संस्कार द्वारा सम्भव होता है। दबी हुई आन्तरिक प्रखरता इसी मार्ग पर चलने से निखरती है। आत्मबल के सम्पादन का प्रधान मार्ग तप ही तो है, तपस्वी ही प्रकारान्तर से तेजस्वी होता है—अन्तःक्षेत्र में—पञ्चकोषों में—षटचक्रों में—तीन शरीरों से जो एक से एक अद्भुत विभूतियाँ दबी पड़ी हैं, उन्हें सुषुप्त मूर्छना से उबारकर प्रखर एवं प्रचण्ड बनाने का मार्ग तप ही है। योग के बिना आत्मा को परमात्मा से जोड़ा नहीं जा सकता और जब तक ईश्वरीय समर्थन-सहयोग प्राप्त न हो तब तक महामानवों की—ऋषि भूमिका में प्रवेश करना कठिन पड़ता है। आत्मा को—देवात्मा बनाते हुए उसे परमात्मा स्तर तक पहुँचा देना, योग-साधना द्वारा ही सम्भव है। इसलिए तप-साधना का परम पुरुषार्थ भी करना पड़ता है। श्रेयार्थी के लिए तपस्वी जीवन की रीति-नीति अपनानी ही पड़ती है। ब्रह्म-तेजस् उसी से निखरता है। इसी बलिष्ठता के—समर्थता के आधार पर व्यक्ति अपनी जीवन-नौका को खेता हुआ लक्ष्य तक ले पहुँचता और साथ ही उसमें बिठाकर अनेकों को पार कर सकता है।

ब्रह्मविद्या की उपलब्धि और योगाभ्यास परक तपश्चर्या के अतिरिक्त परमार्थ जीवन का तीसरा चरण है—सेवा-साधना। भौतिक सेवा-साधना तो धनी-मानी लोग कर सकते हैं पर जन-मानस में उत्कृष्टता को बोना, उगाना और बढ़ाना केवल ब्रह्म परायण लोगों के लिए ही सम्भव होता है। उसे बकवादी वक्ता पूरा नहीं कर सकते। धर्मशाला, मन्दिर, प्याऊ, सदावर्त, विद्यालय, चिकित्सालय, उद्योगशाला, व्यायामशाला, जैसे अर्थ सम्भव परमार्थ प्रयोजन धनीमानी लोग ही करते हैं। उनके धन का सदुपयोग भी ऐसे ही कार्यों में है, किन्तु उच्चस्तरीय भावनाओं और प्रवृत्तियों का जन-मानस में आरोपण, अभिवर्धन केवल उच्च कोटि के परमार्थ-परायण व्यक्ति ही कर सकते हैं। धन-लोलुप प्रचारक तो लोकरंजन भर कर सकते हैं। उनकी उछल-कूद सुनने वालों का कौतूहल ही तृप्त कर सकती हैं। किसी को बदल सकना उनके लिए कठिन है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसने अपने को ही नहीं बदला वह दूसरों को कैसे बदलेगा ? वक्ताओं और प्रचारकों की सेना हर संस्था द्वारा भर्ती की जाती है, पर उससे प्रोपेगण्डा एवं धन उपार्जन के अतिरिक्त औरकोई लाभ नहीं होता। ऊँचा उठाने और परिवर्तन करने के लिए ऐसे व्यक्तित्व ही समर्थ हो सकते हैं, जो स्वयं ऊँचे उठे हैं, जिन्होंने अपना परिवर्तन किया है। समाज की इसी महती सेवा साधना को ज्ञानवृद्ध—तपस्वी एवं सेवा परायण वानप्रस्थ ही पूरा कर सकते हैं।

कहाँ, किसे, कब, कैसे, क्या करना पड़ेगा ? इसकी कोई चिरस्थाई 'लक्ष्मण रेखा' नहीं खींची जा सकती। व्यक्ति की योग्यता, अभिरुचि—समय की माँग—साधनों की सुविधा को देखते हुए कार्यक्रमों का निर्धारण और परिवर्तन होता रहेगा। बदलती हुई परिस्थितियों में बदले हुए नया कदम उठाने के लिए हमें अपना मस्तिष्क खुला रखना होगा। लक्ष्य की पूर्ति के लिए कार्यक्रम बनते हैं। कार्यक्रमों के साथ लक्ष्य जोड़ा नहीं जा सकता। इन बातों पर ध्यान रखने पर सदा सर्वदा के लिए तो कोई कार्यपद्धति नहीं बन सकती, पर वर्तमान स्थिति में—भारत की सीमा में क्या और कैसे होना चाहिए ? इसका स्वरूप निर्धारण कर लिया गया है। अन्य देशों के लिए वहाँ की स्थिति और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भिन्न कार्यक्रम बनाने होंगे। किसी व्रत को हिन्दू-धर्मानुयायियों से अमुक प्रमाण, उदाहरण देकर कहना पड़ता है तो मुसलमान को समझाने के लिए उनकी परम्परा के अनुरूप तर्क एवं तथ्य संग्रह करने पड़ेंगे। कर्मकाण्डों और विधि विधानों के सम्बन्ध में भी यही बात है। क्षेत्र एवं वर्ग की भूतकालीन परम्पराओं के साथ भावनात्मक नव-निर्माण के लक्ष्य को जोड़ने से जो क्रिया-पद्धति विकसित होगी, उसे बिना किसी दुराग्रह के अपना लिया जाये। हम सत्य और तथ्य के पुजारी है। हमें न्याय और विवेक का समर्थन करना है।

साधारणतया वानप्रस्थों का कार्यक्रम बौद्धिक क्रान्ति की—नैतिक क्रान्ति की—आर्थिक-क्रान्ति की तैयारी में संलग्न होना है। दूसरे लोग राजनैतिक क्रान्ति की—आर्थिक क्रान्ति की बात सोचते हैं, उसके लिए प्रयत्नशील हैं। उस क्षेत्र में पर्याप्त व्यक्ति मौजूद हैं और अपने ढंग से काम कर रहे हैं। हमारे सामने यह अछूता विस्तृत कार्यक्षेत्र खाली पड़ा है, जिसके बिना अन्य सब भौतिक योजनायें अपंग और असफल ही बनी रहेंगी। हमें किसी से प्रतिस्पर्धा नहीं करनी। अनीति और अविवेक के अतिरिक्त और किसी से हमारी कोई लड़ाई नहीं। सभी के सत्प्रयत्नों में सहयोग देंगे और सभी वर्ग के विचारशीलों की सद्भावना, सहकारिता का आह्वान करेंगे। न अपना छोटा-सा दृष्टिकोण है और न संकीर्णता की परिधि में बँधी हुई अपनी कार्य-पद्धति। विशाल से विशाल कांम की बात ही हमने सोची है और उसी को वानप्रस्थ-संस्था सोचती, अपनाती रहेगी।

महत् कार्य का विहंगावलोकन

नवयुग के अवतरण के लिये इस युग में साधु-संस्था का प्रतिनिधित्व उन वानप्रस्थों को करना है, जिनमें मात्र भावना ही नहीं, लगन, योग्यता और पुरुषार्थ-परायणता की भी कमी न हो। जो पहले अपने गुण, कर्म, स्वभाव का—चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण करें और साथ ही लोक-मंगल की क्रिया-प्रक्रिया में उसी तत्परता के साथ प्रयत्न करें, जिस प्रकार संसारी लोग अर्थ एवं प्रशंसा प्राप्त करने के लिए जी-जान एक करते हैं। यदि ऐसे नर-रत्नों का उत्पादन, अभिवर्धन सम्भव हो सका तो आशा की जा सकेगी कि जन-मानस का भावनात्मक नव-निर्माण सम्भव हो सकेगा और उस आधार पर संकट-ग्रस्त मानवता को अनेकानेक विपदाओं से उबारा जा सकेगा। यदि निष्ठावान् लोक-सेवी पैदा न हो सके तो पतन के तूफानी प्रवाह को अन्य किसी उपाय से रोका न जा सकेगा। तब शिक्षा और सम्पदा बढ़ाने के लिए किये जाने वाले विविध विधि प्रयास बाल-क्रीड़ा की तरह चलते तो रहेंगें, पर उनसे बनेगा कुछ नहीं। कीचड़ भरा दल-दल यथा-स्थान रहे तो एक-एक मक्खी, मच्छर को गिनते, मारते रहने से उनके भिनभिनाने को कैसे रोका जा सकेगा ? उज्ज्वल भविष्य की आशा का केन्द्र जन-मानस का भावात्मक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिष्कार ही है। इस एक ताली से ही वे सब ताले खुल जायेंगे, जिन्होंने सुख शान्ति तक पहुँचाने के समस्त द्वारों को अवरुद्ध कर रखा है। लोगों को दिग्-भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। छुटपुट सुधार-कार्यों से लम्बी-चौड़ी आशायें नहीं बाँधनी चाहिए। शक्तियों को इधर-उधर नहीं बखेरना चाहिए। समस्त इच्छा-शक्ति और साधन शक्ति को इकट्ठा करके जन-मानस में भावनात्मक उत्साह भरना चाहिए—आदर्शनिष्ठों में आस्था उत्पन्न करनी चाहिए। इतना सम्भव हो सका तो लोकशक्ति की चण्डी जिधर भी बढ़ेगी, उधर ही घमासान उत्पन्न कर देगी।

जन-शक्ति की क्षमता अपार है। उसकी एक हुँकार से न जाने क्या से क्या हो सकता है ? जनता ने मत-पेटी में पर्ची डालने जैसा थोड़ा-सा रुख पलटा तो कांग्रेस सरकार सत्तारूढ़ हो गई और वह तीस वर्ष तक सिंहासन पर विराजमान रही। जनता ने भवें तरेरी तो दो सौ वर्षों से जड़ जमाकर बैठे हुए अंग्रेज थर-थर काँपने लगे और उन्हें सिर पर पैर रखकर भागते ही बना। जनता अपना नगण्य-सा आजीविका अंश लेकर खर्चीली शासन सत्ता का भार हँसते-खेलते वहन कर लेती है। अरबों-खरबों रुपया हर साल खर्च कर डालने वाला—लगभग एक करोड़ लोगों का भार निर्वाह लादे हुए खड़ा धर्मतन्त्र जनश्रद्धा की एक किरण पाकर फल-फूल रहा है। जनता की एक दुर्बलता का तनिक-सा सहारा पाकर कामुकता दुष्प्रवृत्ति ने, संगीत साहित्य ने कला के स्रोतों पर सहज अधिकार कर लिया है। जन समाज के छोटे-से छिद्रों में प्रवेश मिल जाने से अपराधी दुष्प्रवृत्तियों की अपनी जड़ें जमाने का अवसर मिल गया है। जनता की धारा बाढ़ का रूप धारण करके उच्छृंखल प्रवाह में बहने लगे तो देखते-देखते सारी समृद्धि डूबती, बहती और नष्ट होती दिखाई देगी। इस धारा को नियन्त्रित और व्यवस्थित दिशा मिल जाय तो आज के सूखे मरुस्थल कल हरे-भरे उद्यानों से विकसित होंगे और सोना उगलेंगे।

जनःशक्ति से बढ़कर और कोई सामर्थ्य इस संसार में है नहीं। मनुष्य अपने आप में एक छोटा परमेश्वर है। यदि उसे संघबद्ध होने का अवसर मिल जाय-उत्कृष्टता की दिशा में वह चल पड़े तो फिर कोई ऐसी सम्पदा नहीं जो उसके चरणों में लोटती दिखाई न पड़े। मनुष्य दीनदरिद्र नहीं है—उसे कृमि-कीटकों के स्तर पर रखकर छुट-पुट उपहारों के माध्यम से दया प्रदर्शित करने की उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी उसका उद्बोधन करके अपने पैरों पर खड़ा कर देने की। चन्दा इकट्ठा करके अन्न, जल, औषधि आदि जुटा देने की चेष्टा करने वाले अपनी दया-मया का परिचय तो दे सकते हैं, पर यह भूल जाते हैं कि समर्थ मानव यदि अपनी शक्ति से परिचित हो जाय—उसका सदुपयोग करना सीख ले तो शरीर से अन्धा, अपङ्ग रहने पर भी वह अपनी नाव पर बिठाकर निज का ही नहीं, अन्य अनेकों का उद्धार कर सकता है।

जनता का प्रत्येक घटक अपने में असीम सम्भावनायें छिपाये बैठा है। हर व्यक्ति में रावण, कुम्भकरण, हिरण्यकश्यपु, सहस्रबाहु, सिकन्दर, चंगेजखाँ, नादिरशाह, नेपोलियन, हिटलर जैसी वामपक्षी असुरता छिपी पड़ी है। दक्षिण-पक्षी देवसत्ताएँ और भी बढ़ी-चढ़ी हैं। रामकृष्ण, हनुमान, परशुराम, अर्जुन, शंकराचार्य, बुद्ध, प्रताप, शिवाजी, विवेकानन्द, गाँधी कहीं से भी फूट पड़ सकते हैं। वैज्ञानिक, दार्शनिक, तत्वदर्शी तपस्वी, कलाकार, मनीषी, युगान्तरकारी, मनस्वी, दूरदर्शी सृजेता, विजेता जनता की खदान में से ही निकलते हैं। संसार में जो कुछ अद्भुत, आकर्षक, सुन्दर, सुखद दीखता है, वह सब मनुष्य की सूझ-बूझ का, उसके श्रम—सीकरों का उद्भव है। अन्यथा यह धरती अपने जन्मकाल में वैसी ही कुरूप, वैसी ही नीरव और वैसी ही अस्त-व्यस्त थी, जैसी आज चन्द्रमा सहित अन्यान्य ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति है। कुरूपता का सौन्दर्य में, अभाव को भाव में, नीरवता को उल्लास में, अन्धकार को प्रकाश में परिणत करने की परिपूर्ण क्षमता मानव-प्राणी में विद्यमान है और मनुष्यों के समूह का नाम है जनता। जनता की सत्ता और महत्ता की परिकल्पना कर सकना उसके मूल सृजेता के लिए भी कठिन है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन भावना उभारकर यदि हम दस पैसा प्रतिदिन नव निर्माण प्रयोजनों के लिए प्राप्त करने की नगण्य-सी सफलता प्राप्त कर लें तो ५० करोड़ भारतीय हर रोज ५ करोड़ रुपया जमा कर सकते हैं। वर्ष में १८०० करोड़। इतनी बड़ी धनराशि से बड़ी से बड़ी योजनाएँ पूरी होती रह सकती हैं। एक घण्टा श्रम हर वयस्क व्यक्ति से प्राप्त कर लें तो २० करोड़ वयस्कों के उस श्रमदान से ८ घण्टा पूरे समय श्रम करने वाले ढाई करोड़ श्रमिकों जितना काम कराया जा सकना सम्भव हो सकता है। यह जन-शक्ति, श्रम-शक्ति इतनी बड़ी है कि हर दिन हजारों की संख्या में, तालाब, बाँध बनकर एक वर्ष के भीतर सिंचाई की समस्या हल की जा सकती है और इस शस्यश्यामला भूमि के पुत्र विदेशों के आगे अन्न के लिए हाथ पसारने के स्थान पर संसार के भुखमरी ग्रस्त समस्त मनुष्यों के लिए अनाज निर्यात कर सकते हैं। हर शिक्षित व्यक्ति वर्ष में एक निरक्षर को साक्षर बनाने की प्रतिज्ञा कर ले तो पाँच वर्ष के भीतर अपने देश के ६० प्रतिशत अशिक्षित पूरी तरह साक्षर हो सकते हैं।

जिस भ्रष्टाचार को—अपराधी दुष्प्रवृत्तियों को पुलिस और अदालतें रोक नहीं पा रही हैं, यदि जागृत जनता इन गुण्डा-तत्वों के विरुद्ध भर्वे तरेर दे तो इन मुट्ठी भर अनाचारियों का जीवित रहना कठिन हो जायेगा। अनाचारी आतंकवाद इसलिए जीवित है कि मुट्ठी भर अवांछनीय तत्वों की असामाजिक गति-विधियों के विरुद्ध रोष, आक्रोश जगाया नहीं गया है। जिस दिन जन-शक्ति की चण्डी जगेगी, उस दिन अभाव, अशक्ति और अज्ञान के दुर्दान्त असुरों का अस्तित्व इस धरती पर बना रहना सम्भव न होगा। इन सबकी दुर्गति महिषासुर, मधुकैटभ, और शुम्भ-निशुम्भ जैसी होगी। संघ शक्ति का ही दूसरा नाम चण्डी है। पौराणिक कथा-प्रसंग के अनुसार देवताओं की सम्मिलित शक्ति इकट्ठी करके ही तो भगवती दुर्गा को सृजा था। देवताओं को विजेता और असुरों को पराजित करने के लिए उसी प्रयोग की पुनरावृत्ति अब फिर की जाय, इसके लिए आज का ही उपयुक्त समय है।

साधु संस्था को पुनर्जीवित इसी निमित्त किया जा रहा है। वानप्रस्थ को नव-जीवन देने का अभियान इसी निमित्त चलाया जा रहा है कि जन-शक्ति को जागृति एवं संगठित करने के लिए लोक-मानस में परिष्कार परक उत्साह उत्पन्न किया जाय, इसके लिए धर्म-मंच को ही माध्यम बनाया जा सकता है। अन्तःकरण को उभारने और मोड़ने-मरोड़ने की विद्या को ही तो माध्यम कहते हैं। उत्कृष्टता और आदर्शवादिता पर चलने की आस्था का नाम ही धर्मप्रेरणा है। व्यक्ति में जो कुछ महान् है—श्रेष्ठ है—उसे छूने उभारने के लिए अध्यात्म-धर्म को माध्यम बनाये बिना गाड़ी एक कदम आगे नहीं बढ़ सकती। संसार के कोने-कोने में बिखरे हुए विभिन्न देश-धर्म जाति, संस्कृति एवं भाषाओं में बँटे मानव-समाज को विविध प्रकार के प्रचार-माध्यमों से प्रभावित, परिवर्तित करना पड़ेगा। ४०० करोड़ व्यक्तियों को दिशा देने के लिए एक करोड़ धर्म-प्रचारक हों, तो भी कम ही पड़ेंगे। अपना साहस तो अभी एक हजार पूरा समय देने वाले वानप्रस्थों की आवश्यकता पूरी कर सकने जितना ही हुआ है। शुभारम्भ की दृष्टि से इतना कुछ कर सकना भी उत्साहवर्धक है।

प्रथम चरण के रूप में अभी प्रचार-प्रक्रिया पर जोर दिया जा रहा है, क्योंकि जन-मानस को वर्तमान के साथ जुड़ी हुई कुत्साओं और कुण्ठाओं का दुष्परिणाम सोचने का अवसर इसी आधार पर तो मिलेगा। ज्ञान यश के आलोक से ही तो वह समझ सकेगा कि उसका आत्यन्तिक हित और परम कल्याण किस दिशा में सोचने और चलने से सम्भव हो सकेगा ? लाभ-हानि में क्या अन्तर है ? मित्र और शत्रु कौन है ? उचित और अनुचित किसे कहते हैं ? तनिक-सी क्रूरता के पीछे कालकूट विष तो छिपा नहीं बैठा है ? आदि प्रश्नों का उत्तर देने लायक जब मानव-मस्तिष्क हो जाय, तभी तो उसे कुछ करने और कराने की बात कही—बतायी जा सकती है।

दूसरा चरण है, रचनात्मक क्रियाकलापों का अभिवर्धन। पेट और प्रजनन से भी आगे कुछ उपयोगी बातें हो सकती हैं, इसकी ओर सर्वसाधारण का ध्यान आकर्षित किया जाय और उन्हें मिलाकर पूरा करने का अभ्यास लोक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रवृत्ति में सम्मिलित किया जाय, इन्हीं प्रयत्नों का नाम रचनात्मक क्रियाकलाप है। आरोग्य संवर्धन के लिए व्यायामशालाएँ, सद्ज्ञान सम्पादन के लिए पुस्तकालय, वाचनालय, निरक्षरता निवारण के लिए प्रौढ़-पाठशालाएँ, व्यस्त लोगों के लिए शिक्षा-विकास के लिए रात्रि-पाठशालाएँ, ठाली समय में उपार्जन के लिए गृह उद्योगशालाएँ, उत्पादन प्रवृत्ति जगाने के लिए शाकवाटिकाएँ, हरितिमा संवर्धन के लिए पुष्पगुल्मों की कृषि और वृक्षारोपण, गौ-पालन, जैसी अनेकों सत्प्रवृत्तियाँ मिल-जुलकर जगह-जगह चलाई जा सकती हैं और उनसे प्रगति पथ पर बढ़ने की दिशा में बहुत सहायता मिल सकती है। सहकारिता के आधार पर कितने ही उत्पादक एवं सुविधा सम्वर्धक उद्योग व्यवसाय खड़े किये जा सकते थे। मनुष्यों और पशुओं के मल-मूत्र का सदुपयोग करने की ओर ध्यान आकर्षित हो तो हमारे देहातों की जहाँ स्वच्छता और सुविधा बढ़े, वहाँ कृषि उत्पादन में भी आशाजनक अभिवृद्धि सामने आये। श्रमदान के लिए हर वयस्क व्यक्ति एक घण्टा समय निकाले और लोकोपयोगी निर्माण कार्य में उसे लगाये तो सड़कें, बाँध, तालाब, कुएँ, पाठशाला, पुस्तकालय, पञ्चायत-घर, मन्दिर बगीचे, पार्क, क्रीड़ा प्रांगण आदि अनेक-अनेक उपयोगी निर्माण स्वल्प लागत से बन सकें और जो टूटे-फूटे हों, उनका जीर्णोद्धार हो सके। सार्वजनिक स्थानों की गन्दगी इसी श्रमदान से हटाई जा सकती है। एक-एक मुट्ठी अनाज या दस पैसा रचनात्मक कार्यों के लिए निकालते रहने से इस स्वल्प बचत से अनेकों स्थानीय सत्प्रवृत्तियों का संचालन हो सकता है। इस प्रकार जन-मानस का रुझान अपने बल बूते अपनी आवश्यकताओं का स्वयं हल निकालने और उसके साधन स्वयं जुटाने के लिए मोड़ा जा सके तो आलस्य और व्यसनों में नष्ट होने वाला समय तथा धन अपनी धारा बदल सकता है और समृद्धि के इतने अधिक साधन सामने लाकर खड़े कर सकता है, जिसके सामने अर्थशास्त्रियों और राज-नेताओं की सम्वर्धन योजनाएँ बाल विनोद जैसी मालूम पड़ने लगे।

हमारे धर्म-प्रचारक सर्वप्रथम विचारों की दिशा स्वार्थ भरी सङ्कीर्णता से ऊँची उठाने का प्रयत्न करेंगे। इसके उपरान्त उस परिष्कृत मनोभूमि को तत्काल सृजनात्मक प्रयोजनों में जुटा देंगे। आत्म-निर्माण, परिवार-निर्माण और समाज-निर्माण के लिए हमें पग-पग पर अनेकों काम करने हैं। अभी हमने सृजन के सम्बन्ध में सोचा तक नहीं—उसे करने के लिए अभी साहस एकत्रित किया नहीं। जिस दिन यह ठान ठानी जायगी कि हमें सर्वतोमुखी निर्माण करना है, उस दिन प्रतीत होगा कि हमने नये युग में प्रवेश कर लिया, सौभाग्य का सूर्य उदय हो चला और समृद्धि-सम्पदा का वरदान अब-तब बरस पड़ने के लिए तत्पर होकर सिर पर आ गया।

रचनात्मक कार्यों से आगे का चरण है—संघर्ष। इसके लिए अधिक मजबूती, अधिक साहसिकता, अधिक साधन चाहिए, समय, शक्ति और साधनों को देखकर ही उसे आरम्भ करना चाहिए। उतावले लोग ऐसे ही असमय लड़ मरते हैं तो पिटते और हारते हैं। हमें व्यापक अनाचार के विरुद्ध सुविस्तृत और समर्थ मोर्चा खड़ा करना ही होगा। असुरता का दमन बिना जूझे हो ही नहीं सकता। रावण, कंस, दुर्योधन, हिरण्यकश्यपु, सहस्रबाहु आदि को समझाने वालों ने सारे प्रयत्न कर लिये थे पर सफल केवल संघर्ष ही हुआ। हमें जिनसे लड़ना है उन अज्ञान, अनाचार और अभाव के असुरों का छद्मवेश बहुत ही विकराल है। वे न तो दीख पड़ते हैं और न सामने आते हैं। उनकी सत्ता भगवान की तरह व्यापक हो रही है। अज्ञान-ज्ञान की आड़ में छिपकर बैठा है, अनाचार को पकड़ना कठिन पड़ रहा है, अभावों का जो कारण समझा जाता है वस्तुतः उससे भिन्न ही होता है। ऐसी दशा में हमारी लड़ाई व्यक्तियों से नहीं-अनाचार से होगी। रोगियों को नहीं हम रोगों को मारेंगे। पत्ते तोड़ते फिरने की अपेक्षा जड़ पर कुठाराघात करेंगे।

युग निर्माण योजना का आरम्भ प्राणवान सदस्यों से हुआ। पिछले दिनों हिन्दू समाज में, विशेषतया भारतवर्ष में उसे सुविस्तृत होने का अवसर मिला। पर अब यह अभियान उस सीमा में सीमाबद्ध नहीं रहा। उसने विश्वव्यापी रूप ग्रहण कर लिया है। सभी धर्म, सभी संस्कृतियाँ सभी देश सभी भाषायें अब उसके कार्य-क्षेत्र की परिधि के अन्तर्गत हैं। भारत से बाहर प्रायः

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देशों में लगभग ३ करोड़ हिन्दू बसे हैं। यह पैंतालीस देश ऐसे हैं, जहाँ उनकी संख्या हजारों से लेकर लाखों तक में है। जिनमें से सौ लेकर हजार तक की संख्या है, उनकी संख्या भी लगभग इतनी ही होती है। अपना प्रयास यह है कि धर्मानुयायी, प्रायः सभी भारतीय मूल के लोगों तक सांस्कृतिक पोषण पहुँचाया जाता रहे ताकि वे अपनी भाषा और संस्कृति को न भूल बैठें। इस दिशा में सुव्यवस्थित योजना के साथ कार्य आरम्भ भी कर दिया गया है। थोड़ी जड़ें मजबूत हो जाने पर उन देशों के निवासियों में भी भारतीय धर्म का दर्शन, प्रवेश और विस्तार उसी तरह कराया जाना है, जिस तरह प्राचीन काल में किया जाता रहा है।

वानप्रस्थों को भारत के हिन्दू धर्म के—निजी क्षेत्र में लोक निर्माण का अभ्यास कराया जा रहा है। वस्तुतः यह उनका अनुभव का वृद्धि और अभ्यास का शिक्षण काल है। जो उसमें खरे उतरेंगे और परिपक्व सिद्ध होंगे उन्हें विदेशों में भी भेजा जायेगा। आज संसार भर में अध्यात्म धर्म की प्यास है। भौतिकता के उन्माद से उत्पन्न दुष्परिणामों को मनुष्य जाति ने देख लिया है, अब उसे उस स्नेहसिक्त शान्ति की प्यास है, जिसे भारत द्वारा संसार में भर में चिरकाल तक अमृत वर्षा की तरह बरसाया जाता रहा है। भारतीय तत्वज्ञान ही भविष्य में विश्व का दर्शन एवं धर्म होने जा रहा है। उसका प्रकाश सर्वत्र फैलाया जाना है। इसलिए अपना कार्य-क्षेत्र समस्त संसार होगा। बौद्ध धर्म का विस्तार भी जीवट वाले प्रचारकों ने इसी दुस्साहस को अपनाते हुए किया था। अपने वानप्रस्थों को भी उसी राह का अवलम्बन करना होगा।

हिन्दू धर्म से आगे बढ़कर ईसाई धर्म, मुसलमान धर्म, बौद्ध धर्म, पारसी धर्म आदि संसार के प्रमुख धर्मों को भी अपने महान् मिशन के लिए उपयोग किया जाना है। यह कैसे होगा इसे अगले दिनों हम सब प्रत्यक्ष रूप से देखेंगे।

युग की सर्वनाशी विभीषिकाओं से जूझने और अपनी प्राचीन गरिमा को पुनः प्राप्त करने के लिए अभिनव साहस संजोने के सङ्कल्प के साथ हम आगे बढ़ें तो ही प्रमुख आवश्यकता सामने आ खड़ी होती है—परिष्कृत स्तर के—लोकसेवियों का बड़ी संख्या में पुनर्निर्माण—वानप्रस्थ अनुशासन का पुनः प्रवलन। विश्वास किया जाना चाहिए कि इस महान् उद्देश्य के लिए किए जाने वाले पुण्य प्रयासों के साथ जन समर्थन एवं सहयोग अधिकाधिक सघनता से जुड़ता चलेगा। सुयोग्य व्यक्ति अपना जीवन लोक-मंगल के लिए लगा देने के लिए तत्पर किये जा सकें तो उस सृजन सेना के द्वारा मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का स्वप्न साकार किया जा सकता है—लक्ष्य पूरा हो सकता है।

संघ शक्ति जागे समाज को सुसंस्कृत बनाए

व्यक्ति सुखी रहे, इसके लिए समुन्नत समाज की आवश्यकता है। समुन्नत समाज भी अपने आप नहीं बन जाता, उसे उत्कृष्ट नेतृत्व में अग्रगामी सज्जनों का समूह विनिर्मित करता है। जब श्रेष्ठ व्यक्ति घट जाते हैं और सामाजिक वातावरण में उत्कृष्टता बनाये रखने के रचनात्मक प्रयास शिथिल हो जाते हैं तो समाज का स्तर गिर जाता है। समाज गिरेगा तो उस काल के व्यक्ति भी निकृष्ट, अधःपतित और दीन-दुर्बल बनते चले जायेंगे। अच्छा समाज-अच्छे व्यक्ति उत्पन्न करता है और अच्छे व्यक्ति अच्छा समाज बनाते हैं। दोनों अन्योन्याश्रित हैं। मुर्गी में से अण्डा या अण्डे में से मुर्गी ? बीज में से वृक्ष अथवा वृक्ष में से बीज की तरह हैं। यह प्रश्न भी है कि व्यक्तियों से समाज अथवा समाज से व्यक्ति ? वस्तुतः दोनों इतने अविछिन्न हैं कि उन्हें पृथक किया ही नहीं जा सकता। अच्छे व्यक्तियों को आवश्यकता हो तो अच्छा समाज बनाने के लिए जुटना चाहिए। अच्छा समाज बनाने पर ही श्रेष्ठ व्यक्तित्व की आवश्यकता पूरी होगी। सुखसाधनों का अभिवर्धन और समुन्नत लोक-व्यवहार का प्रचलन ही सर्वतोमुखी—सुख-शान्ति की आवश्यकता पूरी करता है और इस प्रकार का उत्पादन प्रखर प्रतिभा सम्पन्न सुसंस्कृत व्यक्ति ही कर सकने में समर्थ होते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निजी स्वार्थ-सिद्धि की दृष्टि से विचारें अथवा परिवार के हित-साधन की दृष्टि से देखें—दोनों ही तरह यह आवश्यक हो जाता है कि सुसंस्कृत समाज में रहकर ही निर्वाह करने का अवसर मिले। बुरे लोगों के बीच, बुरे बातावरण में—अपनी तथा परिवार की प्रगति के लिए किये गये सारे प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। जिस मुहल्ले में आग लगी हो, हैजा फैला हो उसमें रहने वाले स्वच्छताप्रिय अथवा जागरूक लोगों की भी सुरक्षा नहीं होती। सूखे के साथ गीला जलने की कहावत चरितार्थ होती है। चारों और दुष्ट के पड़ौस में रह रहा कोई सज्जन भी चैन से नहीं बैठ सकता। बैठना चाहे तो भी वे दुष्ट लोग शान्त रहने न देंगे। उपद्रव खड़े करके सन्तुलन बिगाड़ेंगे। अपने परिवार को सुसंस्कृत बनाने के लिए कुछ भी क्यों न किया जाता रहे, पड़ौस की गन्दी हवा अपना प्रभाव छोड़ेगी और निकृष्टता का आकर्षण भी उसी प्रकार की दुर्बुद्धि के संस्कार पैदा करेगा। वेश्याओं के पड़ौस में रहकर—उनकी हरकतें भर देखते रहा जाय तो सदाचार की मानसिक मर्यादाएँ टूटे बिना न रहेंगी।

समाज में यदि अनैतिक, अवांछनीय, अपराधी तत्व भरे पड़े हों तो उनकी हलचलें, हरकतें—किसी सन्त, सज्जन की उष्कृष्टता को सुरक्षित नहीं रहने दे सकतीं। विकृत समाज में असीम विकृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं और अनेक प्रकार के विग्रह उत्पन्न करती हैं। उनकी लपेट में आये बिना कोई नीतिवान् व्यक्ति भी रह नहीं सकता। उसे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष आक्रमणों का शिकार होना पड़ेगा। जहाँ-खाद्य पदार्थों में मिलावट का बोलबाला हो—वहाँ स्वास्थ्य-रक्षा पर ध्यान रखे रहने वाला व्यक्ति भी बीमार पड़े बिना नहीं रह सकता।

कुरीतियों और रूढ़ियों से भरे समाज में सामान्य मनोबल का सुधारवादी—चीं बोल जायेगा और उसे सिद्धान्तवाद ताक पर रखते हुए समूहगत प्रवाह में बहने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। दहेज के विरोधी और आदर्श विवाहों के समर्थक को भी जब अपनी जवान कन्या के लिए विवाह का कोई सुयोग बनता नहीं दीखता तो जातिविरादरी वालों और दहेज-लोभियों की शरण में जाना पड़ता है और उनके इशारे पर चलने के लिए विवश होना पड़ता है। सुविस्तृत समाज के विरुद्ध एकांकी खड़े रहने वाले तो कोई विरले ही दुस्साहसी होते हैं, सामान्य मनोबल के लोग तो लड़खड़ा ही जाते हैं।

शिक्षा में उद्दण्डता भरती चली जाय तो न तो अपनी लड़की का गृहस्थ चैन से बैठेगा और न बेटे की बहू घर में शान्ति से रहने देगी। क्या जामाता क्या पुत्र-वधू ? निकले तो उसी शिक्षा संस्था से हैं, जहाँ उच्छृंखलता का निरन्तर बोलबाला रहता है। यह बच्चे जिस प्रकार प्रशिक्षण पाते रहे हैं, उसका प्रभाव उनके गृहस्थ पर न पड़े—यह हो ही नहीं सकता। 'देश-शिक्षा पद्धति से हमें क्या लेना-देना' कहकर काम नहीं चल सकता। उसका प्रभाव अपने बच्चों के गृहस्थ जीवन पर पड़ेगा ही और फलस्वरूप अपनी बेचैनी भी बढ़ेगी ही।

इसी प्रकार शासन की स्थिति—व्यापारियों की रीति-नीति—अपराधों और अनैतिकता की वृद्धि—साहित्य और कला, सङ्गीत का प्रवाह मूर्धन्य व्यक्तियों का कर्तृत्व-वर्ग-संघर्ष आदि की विषाक्तता—किसी सज्जन सद्गृहस्थ को शान्तिपूर्वक जीवन-यापन नहीं करने दे सकती। वास्तविकता यही है कि व्यक्ति एकाकी निर्वाह नहीं कर सकता, उसे समाज से प्रभावित होना ही पड़ता है। इतना ही नहीं, उस प्रवाह में जन-साधारण की पीढ़ियों का मनः स्तर अनायास ही ढलता चला जाता है। बुरे वातावरण में केवल बुराई ही पनपती है, बुरे लोग बढ़ते हैं और उनके उपद्रवों से बुरी परिस्थितियाँ ही उफनती हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्तिगत रूप से किया गया स्वाध्याय, चिन्तन, मनन, पूजा पाठ अथवा सज्जनोचित निर्वाह में कुछ सार नहीं रह जाता।

व्यक्ति-निर्माण और परिवार-निर्माण की तरह ही समाज-निर्माण भी हमारे अत्यन्त आवश्यक दैनिक कार्यक्रमों का अङ्ग माना जाना चाहिए अपने लिए हम जितना श्रम, समय, मनोयोग एवं धन खर्च करते हैं, उतना ही समाज को समुन्नत, बनाने के लिए लगाना चाहिए। यह परोपकार परमार्थ की दृष्टि से नहीं, विशुद्ध स्वार्थ साधन और सुरक्षा की दृष्टि से भी आवश्यक है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी क्षुद्रता की सङ्कीर्णता को व्यापक आत्मीयता में विकसित करना ही आध्यात्म तत्व-दर्शन का मूलभूत प्रयोजन है। इस दृष्टिकोण को अपनाने पर ही संयम, सदाचार, सेवा एवं लोक मङ्गल के लिए—सङ्कल्प एवं उत्साह उत्पन्न होता है और उन्हें निरन्तर निवाहने के लिए साहस, विश्वास बढ़ता है। ईश्वर भक्ति इस तात्विक दृष्टि का ही नाम है। इसी तत्वदर्शन का प्रतिपादन करने के लिए धर्म, अध्यात्म एवं ईश्वर का विशालकाय कलेवर खड़ा किया गया है। स्वर्ग और मुक्ति जैसे अमरफल आत्म-विस्तार के कल्पवृक्ष पर ही लगते हैं। साधना, उपासना, तपश्चर्या, योग-परायणता, वैराग्य, संन्यास, दान पुण्य, स्वाध्याय सत्सङ्ग एवं विविध-विधि धर्म-कृत्यों का एक मात्र प्रयोजन यही है कि आत्मा पर चढ़े हुए सङ्कीर्ण-स्वार्थपरता के वे कषाय-कल्मष हट जायँ जो वासना-तृष्णा के—लोभ-मोह के भव-बन्धनों में जकड़े रहते हैं। नरक कोई स्थान नहीं, सङ्कीर्ण-स्वार्थपरता की निकृष्ट दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया मात्र है। उदारता एवं सेवा—साधना के जल-साबुन से ही मनःक्षेत्र पर छाई हुई मलीनताएँ धोई जाती हैं। यह समस्त प्रयोजन समाज-सेवा का व्रत धारण किये बिना सम्भव नहीं हो सकते। सेवा-धर्म को अङ्गीकार किये बिना कोई व्यक्ति मात्र पूजा-पाठ की टण्टघण्ट अपनाये रहकर सच्चा अध्यात्मवादी नहीं बन सकता और न उसे आत्मिक प्रगति का लाभ मिल सकता है।

प्राचीन काल में साधु और ब्राह्मण वर्ग अपना समस्त जीवन लोक-मङ्गल के लिए समर्पित करते थे। वानप्रस्थ-आश्रम—स्वार्थ की परिधि से निकलकर परमार्थ की कक्षा में प्रवेश करने की सन्धि बेला ही तो है। क्षुद्रता की, सङ्कीर्णता की, आत्मवत् सर्वभूतेषु, वसुधैव कुटुम्बकम् के देवत्व में विकसित परिणत करने का व्यावहारिक कार्यक्रम वानप्रस्थ के रूप में सप्तपुरुषों ने निर्धारित किया है। भारतीय संस्कृति की सुनिश्चित परम्परा है कि वैयक्तिक और पारिवारिक प्रयोजनों के लिए किसी को भी आधे से अधिक समय एवं मनोयोग नहीं लगाना चाहिए।

जीवन का पूर्वार्ध—ब्रह्मचर्य-गृहस्थ की भौतिक-प्रगति के लिए पर्याप्त है। उत्तरार्ध को वानप्रस्थ एवं संन्यास के रूप में समाज के लिए समर्पित करना चाहिए। यह विधान इसीलिए है कि व्यक्ति को अपना महत्वपूर्ण अनुदान समाज-निर्माण के लिए देना चाहिए। दान-पुण्य का जो महात्म्य महत्व बताया गया है, उसके पीछे भी यही प्रयोजन है।

प्राचीन काल में साधु-ब्राह्मण उन्हें कहते थे, जो लोक-मङ्गल के लिए 'सर्वतो भावेन' आत्म-दान करके उसी में तन्मय निमग्न हो जायँ। उन दिनों देवालयों और तीर्थस्थानों का निर्माण—जनकल्याण के लिए संचालित प्रवृत्तियों के केन्द्र संस्थान के रूप में होता था। उनका संचालन ऋषि-कल्प, देव-पुरुषों के हाथ में रहता था। जनता भी इस झंझट में नहीं पड़ती थी कि इन दिनों किन सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन को प्राथमिकता दी जाय ? यह निर्णय साधु-ब्राह्मणों की परिषद् करती थी।

धार्मिक जनता साधु-ब्राह्मणों को—तीर्थ, देवालयों को दान इसी के लिए देती थी कि उसके द्वारा समाज में सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन का प्रयोजन पूरा होता रहे। इन लोक-सेवा के निमित्त बने धर्म केन्द्रों को भगवान का निवास गृह माना जाता था और वहाँ जाकर लोग श्रद्धा से मस्तक नवाते थे एवं संचालित सत्प्रवृत्तियों में योगदान देने की प्रेरणा प्राप्त करते थे। तीर्थों में विशेष समारोह भी समय-समय पर इसी आह्वान के लिए होते थे कि इन अवसरों पर अधिक संख्या में अधिक भावना-सम्पन्न लोग एकत्रित हों और समाज-निर्माण के लिए तत्कालीन योजनाओं को अग्रगामी बनाने के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन एवं अभीष्ट उत्साह प्राप्त करें। समय दान, श्रम दान, धन दान का एक मात्र उद्देश्य समाज के पिछड़ेपन को दूर करना—पिछड़े वर्गों को ऊँचा उठाना है। इस प्रयोजन को पूरा करने वाले व्यक्तियों तथा सङ्गठनों का पोषण करना है।

पिछड़े वर्ग में अन्धे, कोढ़ी, अपङ्ग, दीन, दुर्बल ही नहीं आते, वरन् ऐसे अज्ञानी, कुमार्गगामी, उद्दण्ड एवं दुराग्रही भी आते हैं—जो औचित्य एवं विवेक का तिरस्कार करके अवाँछनीय लोक-प्रवाह में बहते हुए चले जा रहे हैं। अन्न-वस्त्र अन्धे-अपङ्गों को बाँटने भर से समाज सेवा, की इतिश्री नहीं हो जाती, वरन् उनकी सहायता का भी ध्यान रखना चाहिए—जो अविवेक का शिकार होकर घिनौना और दुराग्रही जीवन जी रहे हैं, वस्तुतः यह वर्ग और भी अधिक दया का पात्र है। सत्प्रेरणाएँ देकर यदि उन्हें सन्मार्गगामी बनाया जा सके तो गन्दे नाले में गिरकर नष्ट होने वाली महत्वपूर्ण शक्ति को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बचाया और उपयोगी प्रयोजनों में लगाया जा सकता है, इसमें उन भूले-भटकों का भी कल्याण होता है और समाज को ऊँचा उठने का भी अवसर मिलता है। विचारक्रान्ति एवं ज्ञान-यज्ञ की पुण्य प्रक्रिया ज्ञान-दान के जिस महान् उद्देश्य को पूर्ण करती है, उसे अन्न-वस्त्र दान की तुलना में लाख-करोड़ गुना अधिक श्रेयस्कर, सत्परिणामोत्पादक माना जायेगा।

अपने समाज में आज अगणित दुष्प्रवृत्ति संव्याप्त है। असंख्य उलझी हुई समस्याएँ सामने हैं। कष्ट, कलह और शोक-सन्ताप के असीम कारण मौजूद हैं। इन विकृतियों के दुष्परिणाम पग-पग पर भुगतने पड़ रहे हैं। मनुष्य पतित और दुष्ट बनता जा रहा है। अपने और दूसरों के लिए विपत्तियाँ और विभीषिकाएँ उत्पन्न कर रहा है। इस समस्त, विश्रृंखलता की जड़ में व्यापक दुर्बुद्धि ही उफनती दिखाई देती है। चिन्तन का स्तर निकृष्टता के दल-दल में फँस जाने से उत्पन्न विग्रह की चीख-पुकार का ही आज दशों दिशाओं में कुहराम गूँज रहा है। संसार में न तो वस्तुओं का अभाव है और न उपयुक्त परिस्थितियों की कोई कमी। विपत्ति केवल दुर्बुद्धि की उत्पन्न की हुई है। सद्भावों का स्थान दुर्भावों ने—सत्प्रवृत्तियों का स्थान दुष्प्रवृत्तियों ने पकड़ लिया है। फलस्वरूप जो वस्तुएँ सुख-शान्ति एवं प्रगति के अभिवर्धन में लग सकती थीं, वे ही विपत्तियाँ एवं उलझनें बढ़ाने में प्रयुक्त हो रही हैं। प्रगति के स्थान पर अधोगति पल्ले बँध रही है। इसका निराकरण फुन्सियों पर मरहम लगाने से नहीं, रक्त-शुद्धि का उपचार करने से होगा। अमुक कठिनाई को अमुक उपाय से हल करने की बात सोचना मुरझाये पेड़ की पत्तियाँ धोने की तरह है, इससे कुछ बनेगा नहीं। काम तो जड़ सींचने से चलेगा।

जीवन के हर क्षेत्र में—समाज के हर वर्ग में—दुष्प्रवृत्तियों ने गहराई तक जड़ें जमा ली हैं। फलस्वरूप हर दिशा में सङ्कटों के दानव सर्वभक्षी नग्न-नर्तन कर रहे हैं। लड़ना हमें उस दुर्बुद्धि से है, जो समस्त विपत्तियों की जननी है। समाज-सेवा के यों छुट-पुट उपाय भी बहुत हैं, और उन्हें खड़ा करने वाले को थोड़ा यश भी मिल जाता है, पर इससे सङ्कट के मूल प्रयोजन को टालने में रत्ती भर भी सहायता नहीं मिलती। अन्न-क्षेत्र, सदावर्त, प्याऊ, धर्मशाला, दवाखाना, बगीचा, मन्दिर आदि स्थापित करने वाले 'धर्मात्मा' कहलाने की वाहवाही प्राप्त कर सकते हैं। आत्म-विज्ञापन का लाभ तो इसमें प्रत्यक्ष है, पर विश्व-संकट की छाई हुई घटाओं को खिसकाने में इससे तनिक भी सहायता नहीं मिलती। दुर्बुद्धि से लड़ने के लिए विचार क्रान्ति का गांडीव उठाना पड़ेगा और पांचजन्य बजाना पड़ेगा। परशुराम के कुल्हाड़े को सँभालकर निकृष्ट-चिन्तन के परिवार का सिर उतारना पड़ेगा। किसी समय रावण, कुम्भकरण, कंस, जरासन्ध, दुर्योधन, दुःशासन, महिषासुर, मधुकैटभ, वृत्रासुर, हिरण्यकश्यप आदि का दमन धर्म-स्थापना के लिए आवश्यक माना गया था। आज दुष्प्रवृत्तियों के परिपोषक ज्ञान का कलेवर ओढ़कर नग्न-नृत्य करने वाले अज्ञानरूपी महादैत्य का दमन करना पड़ेगा। विचार-क्रान्ति किये बिना समाज निर्माण की आधार-शिला नहीं रखी जा सकेगी। ज्ञानयज्ञ के बिना सुख-शान्ति एवं प्रगति की सर्वतोमुखी सम्भावनाएँ प्रस्तुत कर सकने वाले नव-युग का अवतरण नहीं हो सकेगा। हमें हनुमान आदि की तरह—पाण्डवों की तरह—धर्म की स्थापना कर सकने वाले अधर्म-विरोधी अभियान में अपने आप को झोंकना चाहिए। गोवर्धन उठाने में योगदान देने वाले ग्वाल-बालों की तरह अपनी भूमिका उत्साहपूर्वक सम्पन्न करनी चाहिए। भले ही वह देखने में कितनी ही नगण्य क्यों न हो।

युग-निर्माण का तीसरा चरण समाज-निर्माण है। आत्म-निर्माण और परिवार-निर्माण के समान ही महत्ता उपयोगिता है। संगठनात्मक, प्रचारात्मक, रचनात्मक और संघर्षात्मक कार्यक्रमों के अन्तर्गत समाज-निर्माण की जो सुव्यवस्थित क्रिया-प्रक्रिया प्रस्तुत की हुई है, उसमें उन सभी तत्वों का समावेश है—जो आज की स्थिति में समाजोत्थान के सुनिश्चित आधार बन सकते हैं। विचार-विस्तार जैसा व्यापक और महान् प्रयोजन संगठित संस्थान ही कर सकते हैं। वह मिल-जुल कर करने का काम है। एक व्यक्ति चाहे कितना ही प्रतिभाशाली क्यों न हो, जन-सम्पर्क का कार्य बड़े पैमाने पर नहीं कर सकता। इस युग की सबसे बड़ी सामर्थ्य 'संघ-शक्ति' ही है। इसे जाग्रत एवं सुनियोजित करने से ही समाज का नवनिर्माण कर सकना सम्भव है। यह कार्य साधु-ब्राह्मण परम्परा के पुनर्जीवन से ही सम्भव हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विवेक सम्मत दान : एक पुण्य प्रक्रिया

दान की सार्थकता और श्रेष्ठता किसमें ?

पुण्य-परोपकार का सबसे महत्त्वपूर्ण और उच्चस्तरीय मार्ग यह है कि जनमानस में समाई हुई दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों का उदय-अभ्युदय करने के लिये हर सम्भव उपाय किया जाये। इस प्रकार के उपाय 'ज्ञानयज्ञ' कहलाते हैं। यज्ञों की अनेकानेक विधि-व्याख्याओं में 'ज्ञान-यज्ञ' को सर्वोपरि, सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वाधिक पुण्यफल प्रदान करने वाला माना है। साधु, ब्राह्मण, वानप्रस्थ वर्ग के लोग इसी पुण्य प्रयोजन के लिये अपना जीवन समर्पित करते थे। आवश्यकताओं को घटाकर न्यूनतम करते थे और अपनी बची हुई क्षमता को जन सम्पर्क साधकर आदर्शों के प्रति आस्था उत्पन्न करने में लगे रहते थे। इसी उत्कृष्ट रीति-नीति को अपनाने के कारण उन्हें भूसुर अर्थात् पृथ्वी का देवता कहा जाता था।

दूसरे लोग वे हैं जिनकी स्थूल दृष्टि होती है, वे विचारोत्कर्ष जैसे अदृश्य परमार्थ का मूल्य महत्त्व समझ ही नहीं पाते। उन्हें उसी का महत्त्व समझ में आता है, जो दृश्यमान हैं, जो इन्द्रियगम्य हैं, उन्हें अपनी प्रशंसा-प्रतिष्ठा इसलिये सुहाती है कि उसका स्वरूप इन्द्रियगम्य होता है। कान प्रशंसा सुनते हैं। आँखें सम्मान-सरंजाम को देखती हैं, इससे 'अहम्' को पोषण मिलता है, अहंकार फूलता है। लगता है हम सामान्यजनों से अधिक बढ़-चढ़कर हैं। श्रृंगारिकता, विलासिता, ठाट-बाट, खर्चीले प्रदर्शन जैसे सरंजाम जुटाने में ढेरों खर्च किया और समय लगाया जाता है कि लोग हमें अमीर, भाग्यवान्, कुशल, चतुर मानें। श्रृंगारी-सजावट के पीछे भी यही भाव रहता है कि हमारी सुन्दरता को बढ़-चढ़कर आँका जाये। दर्प दिखाने, रौब गाँठने, प्रताड़ित करने के पीछे भी यही मनोवृत्ति काम करती है कि उनकी शक्ति-सामर्थ्य को समझा जाये।

इस प्रकृति के लोग पुण्य-परमार्थ के लिये भी ऐसे ही कार्यों को चुनते हैं, जो लोगों को दीख पड़ें, प्रभावित करें और बदले में प्रशंसा लौटाकर वापिस लावें। आत्म-विज्ञापन के लिये ही वे ऐसे कार्यों को चुनते हैं, जिनके करने पर उन्हें धर्मात्मा, उदारमना, सुसम्पन्न माना जाये। ऐसे काम भले ही निरुपयोगी हों, पर चूँकि उनके द्वारा उनका आत्म-विज्ञापन बन पड़ता है इसलिये चुनते उन्हीं को हैं। ब्रह्मभोज, तीर्थयात्रा, व्रत-अनुष्ठान आदि के कारण दूसरे लोग यह अनुमान लगाते हैं कि यह व्यक्ति हमारी अपेक्षा अधिक धर्मात्मा है। इसी विडम्बना के लिये विवाह-शादियों में बढ़-चढ़कर धूमधाम की जाती है और पैसा पानी की तरह बहाया जाता है, जबकि विवेक यह अनुमान लगा सकता है कि इस प्रकार पैसे की फुलझड़ी बनाकर जलाने की अपेक्षा कहीं अच्छा होता कि अभावों को मिटाने, शिक्षा, स्वस्थता बढ़ाने आदि के कार्यों में यदि इसे खर्च किया जाता तो अनेकों को राहत मिलती, पीड़ा और पतन से छूटने का अवसर मिलता, पर विवशता यही रहती है और आत्मश्लाघा की पूर्ति के लिये धन, समय, श्रम की प्रचुर बर्बादी होते हुये भी वही चुनी नीति अपनाई जाती है। स्वर्ण तुला पर तोले जाने वाले भी इसी विडम्बना से पीड़ित होते हैं। यों उस सोने को गुप्तदान के रूप में कितने ही महत्त्वपूर्ण कार्यों में लगाकर जनजीवन का सुधार एवं सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन किया जा सकता था। निःस्वार्थता अपनाये जाने पर आत्म-संतोष भी अधिक मिलता, पर उस आत्म प्रवंचना को क्या कहा जाये जो आत्मश्लाघा की विडम्बना के साथ जुड़कर पटाखे छुड़ाने में दीखने वाले कौतूहल का ही चयन करती है। ऐसे प्रदर्शन वहीं बन पड़ते हैं, जहाँ अधिक लोगों के सामने अधिक बड़े विज्ञापन की संभावना रहती है। यदि कम भीड़ जुड़े, कम प्रचार हो, जय-जयकार कम सुनने को मिले तो ऐसे लोग खिन्न हो जाते हैं और जो करना चाहते हैं, उसमें भी मुट्ठी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिकोड़ ली जाती है। दान के पीछे प्रायः उथली यश लिप्सा की ही अभिलाषा काम करती रहती है। धर्मशालाओं में, देवालयों में लगे दान दाताओं के नाम-पते वाले पत्थर यही सिद्ध करते हैं कि उनके द्वारा दी गई राशि किसी पुण्य प्रयोजन के लिये नहीं वरन् आत्म-विज्ञापन के लिये ही जेब से निकाली गई है। ऐसी दशा में उसे उदारता का नहीं छिछली आत्मश्लाघा का प्रतीक परिचय ही कहा जायेगा। ऐसी मनोवृत्ति वाले लोग दान का सत्प्रयोजनों के लिये उपयोग किये जाने वाली बात पर ध्यान नहीं देते वरन् इसी फेर में रहते हैं कि किसी प्रकार उनका ढिंढोरा दानी कर्ण होने जैसे पिटे और वे उस ख्याति के बल पर परोक्ष रूप से अपना धंधा चमकाने एवं अनेकों की दृष्टि में प्रामाणिक बनकर उल्लू सीधा करने का प्रयत्न करें। इस प्रकार के दान प्रायः उसी स्तर के होते हैं जैसे कि कोई व्यवसायी अपने माल को मार्केट में पहुँचाने के लिये विज्ञापनबाजी में बड़ी-सी पूँजी लगाते हैं। इससे न तो दाता के प्रति श्रद्धा बढ़ती है और न उसे आत्म-संतोष या पुण्यफल जैसा कोई दिव्य लाभ मिलता है। जन विवेक में इतना पैनापन है कि वह किसी भी धूमधाम के पीछे छिपे हुये वास्तविक प्रयोजन को समझ सकें और तदनुरूप अपनी मान्यता बना सकें।

आत्म-विज्ञापन एक विशेष प्रकार का व्यवसाय है, जिसे कुछ खास किस्म के लोग अपनाते हैं और दानी बनने का मनोरथ लेकर इन ओछे हथकंडों के आधार पर अपने प्रपंच को आगे घसीटते रहते हैं। इस जाल-जंजाल के पीछे ओछी मनोवृत्ति रहने से उसका स्वरूप और कर्त्ता का मनोरथ अपनी वास्तविकता प्रकट करता और उपहासास्पद बनता रहता है। कई तो उस पर तीखे व्यंग्य भी करते देखे गये हैं।

दान को तत्वदर्शियों, शास्त्रकारों और आप्तजनों ने पुण्य परमार्थ का प्रत्यक्ष प्रभाव माना है, उसके सत्परिणामों को भूरि-भूरि सराहा है। विश्व मानव के उत्कर्ष और संतुलन का माध्यम माना है, उसको उदार सेवा-साधना की भावना को व्यापक बनाने का आधार माना है, पर यह सब है, उसी स्थिति में सही जिसमें कि दाता की भावना गिरों को उठाने की, पीड़ितों का दर्द बँटाने की एवं सत्प्रवृत्तियों को सुविकसित करने की रही हो, यदि ऐसा न हो तो उसे प्रवंचना या विडम्बना ही कहा जायेगा।

दाता की सद्भावना का एक ही प्रमाण-परिचय है कि जो किया गया है, जो दिया गया है, उसका ढिंढोरा न पीटा जाये। अपने आप किसी को सहज जानकारी मिल जाये। यह बात दूसरी है, पर अपनी ओर से उसे प्रचारित न तो किया जाये और न किसी को संकेत देकर करवाया जाय। गुप्त दान को सभी प्रकार के दानों में उच्चस्तरीय माना गया है, क्योंकि उसमें कर्त्ता को विनम्रता और परमार्थ परायणता का आभास मिलता है। यही है वह विशेषता जिसकी कसौटी पर कसकर परमार्थ परायण की अंन्तःस्थिति का पता चलता है।

आवश्यक नहीं कि धन के आधार पर ही दान बन पड़े। असंख्य मनुष्य ऐसे हैं, जिनके लिये अपने परिवार का निर्वाह ही कठिन पड़ता है। बचत होने का अवसर ही नहीं आता, जिसे किसी को दिया जा सके। साधु ब्राह्मण वर्ग प्राचीनकाल में ऐसा ही करते थे, उनके पास अपरिग्रही होने के कारण अतिरिक्त पूँजी जमा ही नहीं हो पाती थी फिर भी उन्हें उच्चकोटि का परमार्थी और देवतुल्य उदारमना माना जाता था। वे अपना समय, श्रम, ज्ञान, सद्भाव परमार्थ जनसाधारण को निरन्तर देते रहते थे। प्रतीक्षा इस बात की नहीं करते थे कि अभावग्रस्त उन तक आयें और याचना करें वरन् जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ स्वयं ही पहुँचे और बिना माँगे ही जिस स्तर का भाव देखें वहाँ उसकी पूर्ति के लिये स्वयं जा पहुँचे। असमर्थ और अज्ञानी इतना भी नहीं जानते कि उन्हें किसकी किस स्तर की सहायता करनी चाहिये ? ऐसी दशा में उनके मनुहार के लिये प्रतीक्षा करना किन्हीं अहंकारी लोगों के लिये ही उपयुक्त हो सकता है। यह विवेकशीलों का काम है कि वे पिछड़ेपन को ढूँढें, वहाँ की समस्याओं को समझें और समाधान के लिये भाव-संवेदनाओं के साथ जुट पड़ें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बच्चा अपनी आवश्यकताओं और उनके समाधान के माध्यमों को नहीं जानता। अभिभावक ही उसकी आवश्यकताओं को समझते हैं और उनकी पूर्ति के लिये यथासम्भव प्रयत्न करते हैं। उदारचेत्ताओं की मनःस्थिति इसी प्रकार की होती है, उन्हें सहायता किये बिना रहा ही नहीं जाता। इसके लिये वे सदा सत्पात्र तलाशते रहते और जहाँ भी अवसर होता है, वहाँ मेघमाला की तरह बरस पड़ते हैं। हवा की तरह गतिशील रहते हैं और हर किसी को जीवनयापिनी प्राणवायु की तरह किसी बदले की अपेक्षा किये बिना अपना काम अनवरत् गति से करते रहते हैं। सूर्य का एक ही काम है अपनी प्रभाव परिधि में ऊर्जा और आभा बिखेरते रहना। चन्द्रमा को चाँदनी छिटकाये बिना चैन कहाँ ? यही मनःस्थिति उदारचेत्ताओं की भी होती है, उनकी लगन, ललक एक ही केन्द्र पर केन्द्रित रहती है कि उनके द्वारा कितनी अधिक मात्रा कितनी अधिकों का हित सम्पादन बन पड़े। देने पर मन जितना पुलकित-प्रफुल्लित होता है उतना और किसी प्रकार हो सकना सम्भव नहीं, पर यह उपलब्धि हस्तगत होती तभी है, जब उसमें आत्मश्लाघा की मलीनता धुली हुई न हो। दर्प और अहंकार उसे कलुषित न कर रहे हों—ऐसी दशा में ही सत्पात्रों की सहायता बन पड़ती है अन्यथा यश लोलुपों को चाटुकार ही दुहते रहते हैं। मुँह के सामने प्रशंसा और पीठ पीछे निन्दा करते रहना उन्हीं का स्वभाव होता है। ऐसों की उदारता का लाभ कुपात्र ही उठाते रहे हैं। कहना न होगा कि कुपात्रों के हाथ में पहुँचे हुये साधन अनर्थ ही उपजाते और अनाचार ही भड़काते हैं, इसकी प्रतिक्रिया सर्वसाधारण के लिये तो अहितकर होती ही है, देने वाला व्यक्ति भी उस पाप से बचता नहीं। सोचा गया पुण्य इसी आधार पर पाप बनता है कि उस सहायता का उपयोग अनौचित्य के संवर्धन में होता रहा।

दान की प्रशंसा और प्रतिष्ठा है, पर वह है तभी जब वह सत्पात्रों के माध्यम से सत्कार्यों के लिये नियोजित हो। वृक्ष को देखकर ही उसके बीज का अनुमान लगाया जाता है। किसी के सहयोग-समर्थन से क्या कुछ हो रहा है ? इसी का निरीक्षण-परीक्षण करके यह जाना जा सकता है कि कर्त्ता ने पाप कमाया या पुण्य अर्जित किया। इसी आधार पर कुपात्रों की दी गयी सहायता को निन्दनीय या अनर्थमूलक ठहराया जाता है। पुण्य की बात सोचकर पाप इसी प्रकार कमाया जाता है, होम करते समय भयंकर अग्निकाण्ड होने जैसी दुर्घटना घटित होने के कारण जो असावधानी होती है, वही सहयोग या सहायता करते हुये अनौचित्य का पोषण बन पड़ने पर होता है।

दान, सेवा, सहयोग, समर्थन को आमतौर से प्रशंसा के योग्य ठहराया गया है, पर इसके साथ एक शर्त भी जुड़ी हुई है कि उससे सत्पात्रों को ही लाभ मिले, उस सहयोग से मात्र सत्प्रवृत्तियों का भी अभिवर्धन हो। जहाँ ऐसा बन पड़ रहा होगा वहाँ निश्चित रूप से निरहंकारिता और निष्कपटता भी जुड़ी हुई होगी, इसी में दान की सार्थकता और श्रेष्ठता है।

दान के लिये उपयोगिता की कसौटी जरूरी

दान से प्रशंसा प्राप्त होती है। सेवा सहायता के लिये श्रम करना तो उदारचेत्ताओं से ही बन पड़ता है। उसके लिये अवसर भी यदा-कदा ही प्राप्त होते हैं, पर यह सरल है कि संचित धन में से थोड़ा-सा कुछ दे दिया जाये और बिना समय गँवाये, बिना अपने व्यक्तित्व के खरा होने की परीक्षा दिये सहज में ही यश प्राप्त कर लिया जाये। कई कृपण और निष्ठुर प्रकृति के व्यक्ति भी इसलिये दान देने को किसी हद तक तत्पर हो जाते हैं कि उन्हें पुण्यात्मा समझा जायेगा। ख्याति मिलेगी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और उस आधार पर यह सरल हो जायेगा कि प्रभावित / लोगों को आकर्षित करके उनके साथ आदान-प्रदान का सिलसिला चलाया जाय और फिर साधारण या असाधारण स्तर का लाभ उठाया जाये।

कई व्यवसायी अपने माल को बाजार में प्रख्यात करने के लिये विज्ञापन छपाते हैं, उसमें भारी खर्च करते हैं। हाथों-हाथ बिक्री भले ही न हो पर ख्याति बढ़ जाने पर ग्राहक उसे तलाशने लगते हैं और उसकी खरीद करने में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बुद्धिमानी समझते हैं। आम मान्यता यही रहती है कि अच्छी वस्तु की ख्याति प्राप्त वस्तुओं की बिक्री बढ़ने लगती है। अपरिचित लोग भी खरीदने लगते हैं, यह लाभ उस दान की भरपाई कर देता है, जो किसी समय किसी पुण्य नाम से किये जाने वाले कार्य के लिये खर्च किया गया था।

किसका दान किस स्तर का है ? इसकी परीक्षा इस बात से होती है कि देने वाले ने यश कमाने की बात को कितना महत्त्व दिया। यदि उसके पीछे यश लालसा छिपी है तो समझना चाहिये कि दान नहीं विज्ञापन हुआ और उसका प्रतिफल व्यावसायिकता पर कमा लिया गया। इस प्रकार की दिखावटी उदारता किसी को आत्मसन्तोष का लाभ नहीं दे सकती है। न उससे परलोक में परोक्ष आनन्द देने वाला प्रतिफल ही मिलता है।

जिसमें परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप में यश कामना जुड़ी न हो उसी को सच्चा दान कहना चाहिये। ऐसे अनुदानों को 'गुप्तदान' कहते हैं। शास्त्रों में उसी की वरिष्ठता भी है। कारण कि उसी आधार पर यह जाना जा सकता है कि दानी के मन प्रतिफल की कामना तो नहीं रही है, यदि रही है तो वह एक प्रकार का व्यवसाय बन गया। व्यवसाय का आधार आदान-प्रदान है। एक व्यक्ति किसी को एक वस्तु देता है, दूसरा बदले में उसे दूसरा लाभ देता है। खरीद-फरोख्त में यही उपक्रम चलता है। किसी की प्रसन्नता प्राप्त करके, उससे किसी अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त कर लिया जाता है। उपहार देने में रिश्वत जैसी मनोवृत्ति देखी गयी है। उचित ही नहीं अनुचित कार्य भी इस आधार पर होते रहते हैं। वैश्यावृत्ति इसी का एक उदाहरण है। झूठी गवाही दिलाने से लेकर और भी न जाने क्या-क्या प्रयोजन लोभ-लालच के आधार पर साधे जाते हैं। पैसे के बदले वस्तु या अनुकम्पा खरीदने का लेन-देन बाजार में चलता ही रहता है। यही मनोवृत्ति कई बार दान धर्म में भी कार्य करती देखी जाती है।

देवी-देवताओं को प्रसन्न करके उनसे मनोकामनायें पूरी कराने के लिये कई व्यक्ति भोग प्रसाद बाँटते, पूजा-उपचार कराते, बलि चढ़ाते देखे जाते हैं। प्रकट में ऐसे कृत्यों को धर्म पुण्य कहा जाता है, पर उनके पीछे प्रतिदान की भावना रहने से वस्तुतः वे एक प्रकार से व्यवसाय ही होते हैं।

पापों के दुःखद प्रतिफलों से छुटकारा पाने के लिये स्वर्ग में पाँचतारा होटल में अपनी सीट रिजर्व कराने के लिये कई व्यक्ति दान-पुण्य जैसे कृत्य करते देखे जाते हैं। दर्शक उसे कुछ भी समझें पर वस्तुतः कर्त्ता की मनोभूमि बदले में अधिक पुण्य पाने की ही रहती है। वह थोड़ा देकर बहुत चाहता है। यह भावना का ओछापन न आत्मा से छिपा रहता है और न परमात्मा से। दोनों को बहकाने-फुसलाने का प्रयत्न चतुर लोग करते तो हैं, पर वस्तुतः वे वैसा कुछ पाने में सफल नहीं होते, जैसा कि चाहते हैं।

दान मात्र क्रिया नहीं है। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक खरीद और विक्रेता अपने आपको दिन भर दान-पुण्य करने वाला कहता रह सकता था। पैसा सदा एक हाथ से दूसरे हाथ में आता जाता ही रहता है। लोग बैंकों में जमा करते और निकालते रहते हैं। दृश्य के आधार पर यह भी दान कहा जा सकता है, पर कोई समझदार ऐसा भ्रम नहीं करता। सभी उसे व्यावसायिक आदान-प्रदान मानते हैं। एक हाथ से देकर दूसरे से लेने का सिलसिला सर्वत्र चलता ही रहता है। इसमें दान पुण्य के साथ रहने वाली उदारता का परिचय कहाँ मिलता है ?

सदुद्देश्य के लिये सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन के लिये बिना बदले की भावना से जो दिया जाय उसी को सच्चे अर्थों में दान कहा जा सकता है। यह आत्मा की अभिव्यक्ति है। जो आत्मवत् सर्वभूतेषु की अनुभूति पर निर्भर रहती है, उसके पीछे दया, करुणा का भाव छिपा रहता है, पर दुःख कातरता जुड़ी रहती है और दूसरों के सुख में अपना सुख मानने की अभिव्यक्ति का भी सम्पुट उसमें रहता है। मिल बाँटकर खाने की, अपना सुख बाँटने और दूसरों का दुःख बँटा लेने की भावना से जो कुछ किया जाता है उसी को पुण्य परमार्थ कह सकते हैं। वह धन दान से भी हो सकता है और श्रमदान, समय दान, सेवा, सहयोग, सत्परामर्श आदि के द्वारा भी। धन दान ही इसका एक मात्र माध्यम है, ऐसी बात नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो धन पवित्रता और प्रामाणिकता के आधार पर कमाया गया है, वही पावन माना जाता है और उसी से परमार्थ बन पड़ता है। चोरी, ठगी, बेईमानी, बदमाशी के आधार पर कोई बहुत धन कमा सकता है और बदनामी से बचने के लिये उसमें से थोड़ा अंश दान के नाम पर उलीच सकता है। यह दिखावा वस्तुतः छलावा भर है। कई बार चोर, डाकू अपनी सफलता के लिये देवी-देवताओं की मनौती माँगते हैं। जब उन्हें अभीष्ट लाभ मिल जाता है तो जो सोचा था, उसे देवता की भागीदारी मानकर दे भी देते हैं। दर्शकों की निगाह से चोरी छिप जाती है और तथाकथित धर्म कृत्य ही दिखाई देते हैं। इस आड़ में वे अपने प्रति उभरे आक्रोश से बच जाते हैं। अनुचित रीति से कार्य भी लिया गया और दानवीर का तमगा भी मिल गया। यह दुहरी कमाई हुई। ऐसा लाभ कोई क्यों न उठाना चाहेगा। आयकर की चोरी करने वाले, तस्करी, काला बाजारी करने वाले, भारी कमाई करते हैं और मन पर चढ़ा भार हल्का करने के लिये ऐसे स्थानों पर कुछ धन देते रहते हैं, जहाँ से उनको ढिंढोरा पीटने का अधिक अवसर हो। इन मनोभावनाओं के रहते देखने में कोई कितना ही बड़ा धर्म पुण्य क्यों न प्रतीत होता हो, पर वह तात्विक दृष्टि से आडम्बर भर ही है।

सहृदयता ही उदारता की जन्मदात्री है। सद्भावना में ही उसकी उपज होती है। यह दोनों तत्व तभी उद्भुत होते हैं, जब विवेक की कसौटी पर यह निश्चय हो जाता है कि प्रवंचना के भटकाव में वे भटके या भटकाये तो नहीं गये हैं। जो कुछ दिया गया है, वह सत्प्रयोजन में लगेगा या नहीं, उससे सत्प्रवृत्तियों के पनपने का सुयोग बनेगा या नहीं। परिणाम क्या निकलेगा और प्रतिक्रिया क्या होगी ? जो कार्य व्यक्ति और समाज में सद्भावनाओं का उद्भव करने में समर्थ हैं, उन्हीं के लिये दिया गया अनुदान वस्तुतः सार्थक होता है। मुनादी पीटने वालों को पैसा तो वह कार्य कराने वाले भी चुकाते रहते हैं। वैसी ही क्रिया दूसरे रूप में चरितार्थ करने वाले यदि अपने को दानवीर कहते या कहलाने का आडम्बर करते हैं तो उसे दिखावटी ही कहा जायेगा। चारण, नर्तक, विदूषक आदि मन बहलाकर आमीरों से आये दिन कुछ झटकते ही रहते हैं। ऐसी ही पुनरावृत्ति यदि तथाकथित धर्म प्रयोजन के लिये की गई है तो उसमें विशेषता क्या रही ?

दान देने की उदारता उपजने से पहले अन्तराल में पवित्रता का जन्म होना चाहिये। पवित्रता अर्थात् ईमानदारी। न्यायोचित उपार्जन ही इस योग्य होता है, जिससे परमार्थ सध सकें। आम का बीज बोने पर ही मीठे फल खाने को मिलते हैं। धतूरा बोने पर तो लगे हुये फल नशीले ही होंगे। अनीति उपार्जित धन भले ही किसी भी खेत में बोया जाये, उसकी परिणति दुःखद ही होगी। उसके परिणाम दुर्भाग्यपूर्ण बनकर ही सामने आयेंगे। आवश्यक नहीं कि बड़ी राशि ही किसी कार्य में दी जाये। न्यायोपार्जित स्वल्प दान भी सन्तोषजनक सत्परिणाम उत्पन्न कर सकता है। कुधान्य को खाने वाला भी पचा नहीं पाता। विषैले भोजन की तरह उससे पेट में शूल उठने, उल्टी-दस्त लगने जैसी प्रतिक्रियायें ही होती हैं। ऐसा आहार भरपेट करने की अपेक्षा अच्छा है कि आधे पेट खाकर काम चलाया जाये, पर सात्विकता की कसौटी पर कसकर उसके खरेपन को भली प्रकार जाँच लिया जाये।

अनीतिपूर्वक उपार्जित धन को प्रायश्चित रूप में यदि किसी पुण्य प्रयोजन में बिना ख्याति बटोरे दे दिया जाये तो उससे संचित पाप-कर्म का भार हल्का होता है। यह ऋण के वापिस लौटाने सरीखा है। इसका औचित्य है और भूल का परिमार्जन भी, पर उसे यही समझना चाहिये, दान का ढिंढोरा पीटने की इसमें कोई बात नहीं है। इससे इतना भर हो सकता है कि अनीति उपार्जन का जो दण्ड मिलने वाला था, वह घटकर उतना रह जाये जितना कि भार उतारने पर हल्कापन आता है।

दान को आमतौर से पुण्य परमार्थ की श्रेणी में गिना जाता है, पर यह उथला मूल्यांकन है। यदि दिया अनुदान कुपात्रों के हाथ पहुँचा है और उससे दुष्कर्मों, दुर्व्यसनों और अनाचार को परिपोषण मिला है तो समझना चाहिये कि वह उदारता गृहीता के लिये, समाज के लिये और अन्ततः दाता के लिये भारी पड़ेगी। उसके बदले पुण्य की सुखद परिस्थितियों के दर्शन न हों सकेंगे। बदले में पापजन्य दुष्परिणाम ही फलेंगे और फूलेंगे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दान देना उचित है और आवश्यक भी। उसके साथ मानवीय सहृदयता और भाव संवेदना जुड़ी हुई है। इससे दाता का अन्तःकरण अधिक कोमल और उदात्त बनता है। साथ ही यह भी होता है कि जिस प्रयोजन के लिये वह अनुदान मिला, उसके श्रेयस्कर होने पर सत्परिणाम उपजे और उनके आधार पर सबका सब प्रकार हित साधन हो। संसार की सुव्यवस्था इसी आधार पर टिकी हुई है। सुसंस्कारिता का यही आधार भी है। दान का पुण्य प्रवाह अनवरत् रूप से चलना चाहिये, पर उसके साथ उपयुक्तता और विवेकशीलता की कड़ी जाँच पड़ताल भी जुड़ी रहनी चाहिये।

दान का दुरुपयोग न हो

परमार्थ का मूल्यांकन इस आधार पर नहीं किया जाना चाहिये कि उसका विस्तार कितना बड़ा है, वरन् यह देखा जाना चाहिये कि उसके आधार पर किस स्तर की किस मात्रा में सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ीं और सुविस्तृत हुईं। बड़े-बड़े विशाल निर्माण प्रायः अपने वैभव का प्रदर्शन करने के लिये होते रहते हैं, पर उनकी उपयोगिता नगण्य ही देखी जाती है। ऐसी दशा में विचारशीलों द्वारा उसे देखकर कौतूहल भले ही प्रकट किया जाय, पर उसे श्रेय देना, सराहना करना सम्भव नहीं हो पाता।

कितने ही तथाकथित अमीर अपना वैभव प्रदर्शन करने के लिये, अपनी ख्याति का विस्तार करने के लिये स्मारक बनवाते देखे गये हैं। राजा-महाराजाओं के मरण स्थान पर उनकी 'छतरी' नाम से जानी जाने वाली इमारतें बनवाते हैं। वे देखने में ऊँची, भव्य एवं विस्तृत होती हैं, पर उनका उपयोग किसी पुण्य प्रयोजन में नहीं होता। वे जमीन घेरे खड़ी रहती हैं कि बताओ हमारे निर्माण में कितना श्रम, शिल्प और कितना धन लगाया गया होगा ?

इन स्थानों को सिर उठाकर राह चलते मुसाफिर देखते तो हैं, पर उनका अधिक परिचय पाने या उनका बारीकी से निरीक्षण करने की इच्छा किसी की नहीं होती। दर्शक उनमें भीतर कदाचित् ही प्रवेश करते हैं। चमगादड़ें और अबाबीलें ही उनमें घोंसला बनाती देखी गयी हैं। समय के साथ उस संरचना की चर्चा तक के लिये कोई आधार शेष नहीं रह जाता। उथले दृष्टिकोण का, छिछले निर्णय का ऐसा ही प्रतिफल होना चाहिये और होता भी है।

राजाओं, सामन्तों और जागीरदारों, जमींदारों का समय चला गया। उनने अपना विशाल वैभव प्रदर्शित करने के लिये जो किले-महल बनाये थे, उनकी उपयोगिता-आवश्यकता न रहने पर वे फूट गये या फूटते चले जा रहे हैं। स्मारकों के जीवित रहने की एक अवधि है। वर्षा, गर्मी के प्रभाव से इमारतें प्रभावित होती हैं, उनका विघटन क्रम चलता है और जीर्णोद्धार का प्रबन्ध न होने पर उनका अन्त हो जाता है। चिरकाल की स्थिरता वाली बात जो निर्माताओं ने सोची थी वह कुछ ही दिन अपने ढाँचे-ढकोसले को बनाये रहते हैं। इसके बाद उनका अन्य इमारती निर्माणों की तरह अन्त हो जाता है। भवन की विशालता कौतुक-कौतूहल उत्पन्न करने के अतिरिक्त और कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं करतीं। आँखों के सामने दृश्य खड़ा करने भर की ही बात हो तो उसे अदूरदर्शिता का निर्माण ही कहा जाना चाहिये। इससे तो पहाड़ टीले जैसे प्रकृति के सामान्य निर्माण ही अधिक दिन स्थिर रहते हैं। उनके बनाने में कम से कम मानवी श्रम, धन और कौशल का नियोजन तो नहीं हुआ होता। कोई चाहे तो किसी पर्वत बीहड़, रेत, रेगिस्तान को अपना स्मारक मानकर मन बहला सकता है। इस मन समुझावन में कम से कम इतना तो लाभ होगा कि कोई योजना न बनानी पड़ेगी। कोई राशि खर्च न करनी पड़ेगी।

स्मारकों के अतिरिक्त दूसरी ललक दान-पुण्य के पीछे यह रहती है कि किसी प्रकार किसी देवी-देवता का दर्शन अनुग्रह प्राप्त हो, कोई सिद्धि वरदान हाथ लगे। स्वर्ग मुक्ति जैसी परोक्ष उपलब्धियों की वर्षा बरसे।

ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि अदृश्य जगत की भावनात्मक उपलब्धियाँ पैसे या पदार्थ के आधार पर नहीं खरीदी जा सकतीं। उनके लिये भावपरक मूल्य ही चुकाना पड़ता है। हर देश के अपने-अपने सिक्के होते हैं। वे ही वहाँ चलते हैं। दूसरे देशों में दूसरे देश के सिक्के बाजार में नहीं चलते, इसी प्रकार भौतिक क्षेत्र की साधन सामग्री देव तत्वों के भावनात्मक स्तर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की होने पर पहुँच पाती हैं, उसी को पाकर वे सन्तुष्ट प्रसन्न होते हैं। जिन अनुदानों के पीछे संकीर्ण स्वार्थपरता लिपटी होती है, उनका मूल्यांकन दिग्भ्रमित लोग भले ही किसी मात्रा में कर पाते हों, विवेक तो उन्हें नकारता ही रहता है।

तर्क की दृष्टि से तो अनौचित्य को भी किसी न किसी बहाने उचित ठहराया जा सकता है, पर वह कानों के रास्ते मस्तिष्क तक पहुँचकर ही कुछ उथल-पुथल कर पाता है। उसका प्रवेश अन्तराल की गहराई तक नहीं हो पाता। उसे कोई न तो गम्भीरतापूर्वक स्वीकारता हो और न हृदयंगम कर पाता है। तर्क की दृष्टि से तो दाम्पत्य जीवन में एक-दूसरे पर अपार अहसान करने का आरोपण करते रह सकते हैं। वैश्या और व्यभिचारी भी अपने-अपने पक्ष को बताकर दूसरों की सेवा-सहायता करने का गर्व जताते रह सकते हैं। बधिक भी अनेकों को स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध कराने की डींग हाँकते रह सकते हैं। फिजूलखर्ची में निरत लोग भी कितनों को ही रोजी-रोटी देने का ढोंग करते रह सकते हैं। हत्यारे धरती का भार हल्का करने, जनसंख्या का दबाव कम करने की बात कहकर अपने को उपकारी बता सकते हैं। "दुर्बलों के शोषण पर सबलों का अभिवर्धन निर्भर है" इसे कोई चाहे तो नीति वाक्य की तरह प्रयुक्त कर सकता है। प्रकृति का नियम बता सकता है और अपने अनाचार को प्रकृति परम्परा कहकर अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिये अड़ सकता है। दरबारियों को, चाटुकारों को कुछ देकर वाहवाही लूटने वाले भी अपने को दानी होने का दावा कर सकते हैं। चोर भी कह सकता है कि मैंने दूसरों को अपरिग्रह अपनाने का अभ्यास कराना शुरू किया है। इस प्रकार संसार का कोई भी बुरे से बुरा काम ऐसा नहीं है, जिसको उपयोगी सिद्ध करने के लिये कोई तर्क न गढ़ा जा सके। दूसरों का विवेक उसे भले ही स्वीकार न करे पर उनकी अपनी निज की आत्म-प्रवंचना तो हो सकती है। अपने कृत्य को उचित ठहराने के लिये वह कुछ न कुछ आधार तो हस्तगत कर ही सकता है। मन की इस उल्टी-सीधी चाल को देखते हुये यह प्रतीत होता है कि किसी अनीति अपनाने वाले को भी पूरी तरह निरुत्तर किया जा सके।

इन परिस्थितियों से किन्हीं कुपात्रों को दुष्प्रयोजनों के लिये अनुदान देने एवं सहयोग करने वालों को भी यह बाधित किया जा सकता है कि वह अपने पक्ष की दलीलें देना बन्द कर दे और अनौचित्य से विरत होकर अपनी गतिविधियाँ उलट दें।

यह कार्य तर्कों के आधार पर नहीं हो सकता है। विवादों से भी गुत्थी नहीं सुलझ सकती। पूर्वाग्रहों के रहते यह सम्भव नहीं कि कोई अपनी हार मान ले, भले ही उसके प्रतिपादन कितने ही मूर्खतापूर्ण क्यों न हों। हार मान लेने पर भी यह कहाँ देखा जाता कि द्वेष और प्रतिशोध को भी मन से बाहर निकाल फेंकें। वह तो उसके प्रति और भी उग्र हो उठता है, जो हराकर विवेक की मुद्रा में लौटा है।

ऐसी दशा में उपयुक्त तरीका एक ही है कि व्यक्ति को अपने कार्यों की स्वयं समीक्षा करने का अवसर दिया जाये। विकल्प प्रस्तुत किये जायें और उदाहरण सामने लाये जायें। जितना धन, जितना समय, जितना कौशल, मनोयोग अनुपयुक्त कार्य में व्यय किया जा रहा है, उसके सामयिक और दूरगामी परिणाम क्या हो रहे हैं ? क्या होने वाले हैं ? यह बताया जाये और साथ ही अन्यान्य विवेकवानों ने उतनी सामर्थ्य किसी अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य में खर्च करके क्या लाभ उठाया और कितनों का कितना हित साधन किया ? इस संदर्भ में भी विस्तारपूर्वक विचार करने का अवसर दिया जाये। सहक सामने भूल सुधारने के लिये न कहा जाये। ऐसा करने पर वह उसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बनायेगा और मूँछें नीची करने के लिये तैयार न होगा। विवादों में यही होता है। शास्त्रों के परिणाम अनिर्णीत ही रहते हैं। प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाने पर कोई अपनी हार मानने को तैयार नहीं होता। उल्टा, विग्रह, विद्वेष और प्रतिशोध के नये उपद्रव खड़े होने की ही सम्भावना चरितार्थ होती है। अच्छा यही है कि वर्तमान क्रिया-कलाप की तुलना में अधिक विवेक संगत मार्ग अपनाने के लिये तर्क, तथ्य, प्रमाणों के उदाहरण प्रस्तुत किये जायें और उन पर स्वयं बारीकी से विचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने के लिये चिन्तन और मन्थन के लिये अवसर दिया जाये। निष्कर्ष निकालने की उचित लगने पर आवश्यक परिवर्तन की सराहनीय दूरदर्शिता अपनाने के लिये आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार की जाये।

जीवन परिवर्तन, दिशा परिवर्तन प्रायः इसी आधार पर होते हैं। दानशीलता की, उदार सहकारिता की मानव अन्तराल के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई प्रवृत्ति के सम्बन्ध में भी यही बात है। उसकी कोई भी सर्वथा उपेक्षा नहीं कर सकता। यह प्रकृति क्रम भी है और मानवी गरिमा के साथ जुड़ने वाला शाश्वत धर्म भी। माता बच्चे के साथ अनायास ही इस प्रकृति धर्म का निर्वाह करती है। यह प्रचलन न केवल मनुष्यों में पाया जाता है वरन् पशु, पक्षी कीट-पतंग भी इसी विद्या को अपनाकर सृष्टि-क्रम में वंश परम्परा को बनाये रखने के लिये अपने चिन्तन एवं उपक्रम को तदनुरूप ढालते हैं। यदि मातृभाव की उत्कण्ठा को प्राणियों के मन में से निकाल दिया जाये तो फिर कोई मादा गर्भ धारण, प्रसव कष्ट और शिशु-पोषण को अपनी सुविधा में भारी विघ्न उत्पन्न करने वाली मानकर जिम्मेदारी को वहन करने के लिये तैयार न हो। इस प्रकार कोई विचारशील मादा को सहधर्मिणी बनाकर उसकी सुरक्षा सहायता का झंझट सिर पर लादने के लिये तैयार न हो। तब प्रसव प्रजनन का उपक्रम ही समाप्त हो जाये और धरती एक शताब्दी से भी कम समय में जीवधारियों से रहित दृष्टिगोचर होने लगे। मातृत्व और दम्पत्ति मिलन में प्रकृति ने इसीलिये इतनी भावनात्मक सरसता संजोकर रखी है कि सृष्टि क्रम चलने के साथ-साथ उदार सेवा सहायता करने में बढ़-चढ़कर अनुदान प्रस्तुत किये जाते रहें।

वृक्ष फल देते हैं, गायें दूध देती हैं, बैल श्रम करते हैं, भेड़ें ऊन देती हैं, घोड़े-गधे लदते हैं, बादल बरसते हैं, हवा प्राण चेतना का अनुदान बिखेरती है। सूर्य से ऊर्जा, चन्द्रमा से शीतलता, तारागणों से रात्रि की शोभा का सरंजाम जुटता है। पर्वत शिखरों पर जमी बरफ पिघलकर महानदी के रूप में धरती की प्यास बुझाती है। धरती आहार उगाती है। वनस्पतियाँ प्रायः सभी प्राणियों के लिये आहार का निमित्त कारण बनती हैं। यह समूची श्रृंखला सहकारी उदार अनुदानों से भरी पूरी है। यदि इस उपक्रम को निरस्त कर दिया जाये तो फिर यहाँ अराजकता और आपाधापी के अतिरिक्त और कुछ शेष न रहेगा।

आवश्यकता इस बात की है कि इस दान प्रवृत्ति का सदुपयोग हो। उसे मूर्खता, उद्दण्डता और भ्रम जंजाल में फँसकर अस्त-व्यस्त न होने दिया जाये। लोग इस उदारता को, उमंग को अपव्यय में खर्च न करें। गाढ़ी कमाई को फुलझड़ी जलाकर खत्म न करें। कुपात्रों के सहयोगी बनकर, उन्हें समाज के सम्मुख नये संकट खड़े करने के लिये समर्थ एवं प्रोत्साहित न करें।

अनावश्यक संचय कभी टिकता नहीं

ग्रहण करने के लिये मनुष्य को स्वयं पुरुषार्थ करना पड़ता है, तब कहीं अभीष्ट और आवश्यक वस्तुयें मिलती हैं। इस व्यवस्था को बनाने में सभी प्राणी अपनी स्थिति और योग्यता के अनुरूप जुटे रहते हैं। इतने पर भी प्रकृति और समाज व्यवस्था का रुख इस प्रकार का है कि किसी के पास अनावश्यक संचय न रहे, तात्कालिक उपयोगिता की कसौटी पर जितना कुछ सही होता है उतना ही रहता है, रहने दिया जाता है, रहना चाहिये। अनावश्यक संचय न तो ठहरता है और न ठहरने दिया जाना चाहिये।

भोजन पेट में उतना ही ठहरता है जितनी देर वह पचता है और रस बनता है, जब वह उस प्रयोजन को पूरा कर लेता है तो आँतें उसे बाहर धकेलती हैं और मलद्वार से बाहर फेंक देती हैं। पानी की शरीर को निरन्तर आवश्यकता पड़ती है, वह पीया भी जाता है, किन्तु साथ ही यह क्रम भी चलता है कि उसके पोषक तत्व खींच लिये जाने के उपरान्त अनावश्यक भाग को ठहरने न दिया जाये, उसे निकाल बाहर किया जाये। गुर्दे इस प्रयोजन में निरन्तर निरत रहते हैं, वे छानते और मूत्राशय की ओर बढ़ा देते हैं, वहाँ भी वह थोड़ी मात्रा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में ही जमा रहता है। मूत्र त्याग की इच्छा होती है और वह बाहर निकल जाता है। पसीने और साँस द्वारा उसकी एक बड़ी मात्रा निकलती रहे ऐसा क्रम जारी रहता है। कोशिकायें जब तक सशक्त रहती हैं, तब तक क्रियाशील रहती हैं, दुर्बल पड़ने पर मर जाती हैं और उनका स्थान नवोदित कोशिकायें ग्रहण कर लेती हैं। बाल एक सीमा तक आगे बढ़कर आगे विस्तार करना बन्द कर देते हैं। कद और भार उतना ही बढ़ता है जितना क्रियाशीलता बनाये रहने के लिये अभीष्ट है। यदि उसकी अभिवृद्धि असन्तुलित ढंग से होने लगे तो जीवन निर्वाह कठिन हो सकता है, यह नियति का एक सुनिश्चित सिलसिला है।

पेड़ों के पत्ते एक सीमा तक बढ़ने के उपरान्त स्थिर हो जाते हैं। उत्कर्ष पूरे हो जाने पर वे कड़े होते हैं और ऋतु प्रभाव का थोड़ा-सा दबाव पड़ते ही जमीन पर झड़ जाते हैं, उनका स्थान नई कोपलें ले लेती हैं। ग्रह नक्षत्र यों आगे आने की दिशा में गतिशील रहते हैं, पर नियति उन्हें निरन्तर आगे नहीं बढ़ने देती, गोलाई में घुमा देती है फलतः वे एक नियत कक्षा में घूमने लगते है। सीधी रेखा में निरन्तर आगे बढ़ सकना उनके लिए सम्भव नहीं होता। समुद्र का पानी भाप बनकर ऊपर उठता है, पर बादल उतनी ही ऊँचाई या दूरी तक उड़ पाते हैं जितनी उनकी मर्यादा है। इसके बाद वे नीचे गिरते, बरसते और जल-प्रवाह की निम्नगामी गति उस जलराशि को पुनः समुद्र में पहुँचा देती है। जन्म, अभिवर्धन, परिवर्तन और मरण का क्रम भी ऐसा ही है, यदि ऐसा न होता तो संकट खड़ा हो जाता। जो विद्यमान हैं वे यथावत् बने रहते तो दो ही समाधान निकलते—या तो प्रजनन बन्द हो जाता अथवा धरती पर खड़े रहने की जगह न रहने पर एक-दूसरे के पैरों तले कुचलकर मर जाते। ऐसी स्थिति उत्पन्न न होने पाये, इसलिए व्यवस्था यही बनी है कि प्राणी उतने ही समय तक जिए, जितने समय तक उनकी क्षमता और उपयोगिता सही स्थिति तक बनी रहे—उतार आने पर समापन के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रह जाता।

वृक्ष-वनस्पतियों का भी यही नियम है। खेतों में उगने वाली फसल एवं उद्यानों में सजने वाले गुल्म एवं वृक्ष रोपे जाते हैं, बढ़ते हैं, फलते हैं और अन्ततः सूखकर ठूँठ हो जाते हैं—यही अग्रगमन है, इसी को परिवर्तन कहते हैं। विसर्जन या मरण भी यही है, वंश परम्परा इसी आधार पर चलती है। वयोवृद्ध अपना बिस्तर गोल करते हैं और उनका स्थान नई पीढ़ी वाले ग्रहण कर लेते हैं। वस्त्र पुराने पड़ते हैं, उनकी उपयोगिता समाप्त होते ही नये सिलाने पड़ते हैं। मकान भी एक नियम समय तक जीवित रहते हैं, इसके उपरान्त वे गलने-गिरने लगते हैं। सुस्थिर तो इस प्रकृति का एक कण भी नहीं है, गति ही नियति है। अणु-परमाणुओं से लेकर ग्रह-नक्षत्रों तक सर्वत्र यही विधा काम करती देखी जा सकती है।

धन इस सन्दर्भ में अपवाद नहीं हो सकता है, वह किसी के पास नितान्त उपयोगी आवश्यकता से अधिक मात्रा में जमा नहीं रह सकता। जनसाधारण की लिप्सा, ललक, लालसा अति संचय के लिए आतुर रहती है। तृष्णा हर किसी पर हावी देखी जाती है। अधिकाधिक संग्रह और अभिवर्धन में मन रमता है। अधिक साधन सम्पन्न बनने के लिए इतनी अधिक आतुरता होती है कि कम समय में अत्यधिक जमा करने की हवस पूरी करने के लिए शोषण, अपहरण, अनाचार, अपराध जैसे कुमार्ग अपनाने और कुकर्म करने पड़ते हैं। एक सीमा तक इस अनाचार मार्ग से सम्पदा जमा भी हो जाती है, पर फिर वह अपने निकलने का रास्ता भी खोज लेती है। घनघोर वर्षा होने पर खेत पानी से लबालब भर जाते हैं। इसके उपरान्त वह पानी बाहर निकलने का मार्ग खोजता है, यदि मेड़ बढ़ी हुई हो तो उसे तोड़ता है। अनावश्यक संचय किसी न किसी तरह बाहर दौड़ पड़ता है, खेत में उतना ही टिकता है, जितना कि उसको मिट्टी सोख सकती है। अनुपयुक्त संचय को धूप और हवा उड़ा ले जाती है, नमी उतनी ही टिकती है, जितने से भूमि का सुनियोजित सन्तुलन बना रहे। धन के सम्बन्ध में भी यही बात है, उसे समेटा-बटोरा तो कितनी ही मात्रा में जा सकता है, किन्तु रोक सकना संभव नहीं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण कि धन की आवश्यकता अन्यत्र भी है। यदि उसे कुछ लोग अवरुद्ध करके रखें तो फिर अन्यान्यों को अभाव-ग्रस्त रहना पड़ेगा। साधनरहित स्थिति में कष्टसाध्य जीवन जीना पड़ेगा। एक ओर असाधारण अमीरी बढ़ेगी, दूसरी ओर अवांछनीय निर्धनता का दौर होगा। समता की मर्यादा टूट जायेगी, विषमता फैलेगी और अराजकता स्तर की अव्यवस्था का दौर चल पड़ेगा।

अनावश्यक मात्रा में जमा हुआ धन बाहर निकलने के लिए अनेक मार्ग खोजता है और वैसी परिस्थितियाँ बनती हैं, जिससे संग्रह को वितरण की विकेन्द्रीकरण की राह मिल जाये। राज्य कर उसी अनुपात में देना पड़ता है। सगे-सम्बन्धी, मित्र-परिचित उधार या अनुदान माँगते हैं। परिवार वाले अपनी शौक-मौज बढ़ाते हैं और बढ़े हुए खर्चे द्वारा संचय को ठिकाने लगाते हैं। नौकरों एवं पड़ोसियों को ईर्ष्या होती है। समानता ही स्वाभाविक और सहज है और जब असमानता, की खाई टीले जैसी बन जाती है तो उसे मात्र कौतूहल भरी दृष्टि से नहीं देखा जा सकता, भीतर ही भीतर उथल-पुथल होती है। अपने को उतना ऊँचा उठा लेने का कोई उपाय-आधार नहीं दीखता, तब यही सूझ पड़ता है कि बढ़े हुए पड़ोसी को गिराकर अपने समतुल्य बनाया जाय। इसी मानसिक कुचक्र का नाम ईर्ष्या है, ईर्ष्या षडयन्त्र रचती है और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आक्रामक रवैया अपनाती है। शत्रुओं में ही ईर्ष्यालुओं की भी गणना होती है, यों शत्रुता सकारण होती है और ईर्ष्या अकारण उपजी प्रतीत होती है फिर भी गम्भीर चिन्तन करने पर यह तथ्य उभरकर आता है कि बढ़ा हुआ वैभव निकटवर्ती लोगों से भी सहन नहीं होता। उसके बँटवारे की माँग चारों ओर से उठने लगती है। परिवार वाले शाही जीवन जीना चाहते हैं, अपनी माँगें निरन्तर बढ़ाते जाते हैं। पूरी करने में आनाकानी होने पर अपना क्रोध प्रकट करते हैं और असहयोग का रुख अपनाकर कई प्रकार की हानियाँ पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। नौकर चोरी करते हैं या चोरों से मिलकर माल उड़ाने और उसमें हिस्सेदारी पाने का जोड़-तोड़ बिठाते हैं। कई बार तो सीधे स्वयं ही अपहरण करने की दुरभिसंधि अवसर पाते ही पूरी कर लेते हैं, चन्दा बटोरने वाले ऐसे ही लोगों पर दाँत लगाये रहते हैं। ठगों की चित्र-विचित्र दुरभिसंधियाँ भी वहीं केन्द्रित होती हैं, जहाँ कुछ माल-मत्ता जमा दिखाई देता है—बाबा, वेशधारी, ज्योतिषी, भविष्य वक्ता, तांत्रिक प्रायः उन्हीं लोगों की घेराबन्दी करते हैं, जिनके पास फालतू पैसा जमा होता है। वे किसी न किसी बहाने अपहरण का मनोरथ पूरा करने की घात लगाये रहते हैं और तब तक पकड़ मजबूत किये रहते हैं, जब तक कि अपना मनोरथ पूरा नहीं कर लेते।

अनावश्यक धन विलास और प्रदेर्शन के दो उपाय और भी अपने बाहर निकलने के लिए अपनाता है। निर्वाह तो औसत नागरिक स्तर अपनाने से भी हो सकता है, पर विलासिता की पूर्ति इतने भरे से नहीं होती। उसके लिए भोग सामग्री का स्तर भी ऊँचा होना चाहिए और इच्छित बहुलता भी बनी रहनी चाहिए। ऐसे लोग भूख बुझाने के लिए भोजन नहीं करते वरन् चटोरेपन की पूर्ति करते और कोई अनेकानेक स्वादों वाली दाल से कटोरियों को सजाते हैं। खर्च के लिए आखिर तो मार्ग चाहिए, अन्य इन्द्रियाँ भी अपने-अपने विलास चाहती हैं। उनकी बहुलता और विचित्रता रहने के लिए मचलती हैं, व्यभिचारी तौर-तरीके इसी निमित्त बनते हैं। उत्तेजक दृश्य देखने, मधुर संगीत सुनने तथा कवित्त सौन्दर्य के साथ निपटने की अनेकानेक विधियाँ हैं, इन्हें विलासिता की संज्ञा दी जाती है, वह उत्तेजक भी होती हैं और खर्चीली भी। दूसरे अभावग्रस्तों के सामने अपने सौभाग्य का प्रदर्शन करने के लिए भी ऐसी फिजूलखर्ची आवश्यक होती है। महँगे वस्त्र, कीमती जेवर, शृंगार प्रसाधन, श्रम से छुटकारा, नौकरों पर निर्भरता जैसे अनेकानेक प्रयोजन ऐसे हैं, जिन्हें दुर्व्यसनों की श्रेणी में गिना जा सकता है। प्रकृति क्रम और समाज निर्धारण ऐसा है कि किसी को भी देर तक सम्पन्न नहीं रहने देना चाहता। उसके वितरण का यदि सही मार्ग नहीं निकलता तो निश्चित रूप में अनेकों छिद्र फूटेंगे जिनमें होकर संचय निष्कासित होने लगे और स्थिति स्तर पर पहुँच जाये, जिसमें समता का माहौल बन सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनावश्यक संचय को नियति सहन नहीं कर सकती। पेड़ों पर लदे फलों को तोड़ने कुतरने वाले कहीं न कहीं से आ ही जाते हैं। मधुमक्खियों द्वारा जमा किया हुआ शहद वे स्वयं भले ही न खायें, पर अन्य कोई उसका निश्चित रूप से अपहरण करेगा। वानर, गिद्ध, मनुष्य कोई न कोई उस संचय पर छापा मारेगा ही, भले ही मधुमक्खियों ने अपने निमित्त जमा किया हो। धरती की भीतरी परतों में जमा किए हुए खनिज, आखिर दूसरों द्वारा खोज और खोद ही लिए जाते हैं। वैभव यथावत् देर तक जमा नहीं रहने दिया जाता। इसलिए बुद्धिमत्ता उसी में है कि दौलत बढ़ाते रहने की अपेक्षा, उसका सदुपयोग साथ ही साथ रहने की उपयुक्त योजना बनाई जाये। दुरुपयोगों के दुष्परिणामों से बचने का एक ही उपाय है कि समय रहते उपलब्धियों का श्रेष्ठतम उपयोग करने की योजना बनाई और कार्यान्वित की जाये।

साधनों का सदुपयोग कैसे बन पड़े ?

समतल भूमि पर ठीक तरह की खेती होती है। वैसे ही धरातल पर मकान कारखाने बनते हैं। खाई-खड्डों वाली, टीलों वाली जमीन पर कोई उपयुक्त आधार खड़ा नहीं हो सकता है। कोई किसी कारगर निर्माण का ढाँचा नहीं बना सकता। समता एक शाश्वत् सिद्धान्त है। विषमता एक प्रकार की अव्यवस्था अराजकता है। वह अपनी उत्पत्ति के साथ ही समाप्ति के संरजाम भी विनिर्मित करती है। पूँजीवादियों के बीच भयानक स्पर्धा ठनी रहती है। सिंह, बाघ जैसे क्रूर प्राणी कभी संगठित नहीं हो सकते, वे आपस में ही लड़ते रहते हैं। जिन पर वैभव की, संचय की, आधिपत्य की, अहंकार की सनक सवार रहती है, वे न खुद चैन से रहते हैं और न दूसरों को चैन से रहने देते हैं। शान्ति और सुव्यवस्था समता के साथ जुड़ी हुई है। विषमता किसी भी स्तर की क्यों न हो विग्रह खड़े करेगी। टीले और खंदक दोनों ही निरुपयोगी होते हैं। खाइयाँ पटती रहती हैं और टीले ढहते हैं। यह प्रकृतिगत विधि व्यवस्था है, जो हर पदार्थ और प्राणी को समता के अनुशासन में बँधने के लिए भी प्रेरित करती है और उन्हें धकेलती भी है।

सदुपयोग को दूरदर्शिता और दुरुपयोग को मूर्खता कहते हैं। यही मनुष्य के परिष्कृत और अनगढ़ दृष्टिकोण का परिचायक है। अदूरदर्शी अपनी क्षमता का, प्रतिभा का दुरुपयोग करते हैं। इसके दुष्परिणाम भी समायानुसार भुगतते हैं। तात्कालिक लाभ के लिए आतुर-उतावले लोग कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। उस कृत्य के परिणाम पर विचार नहीं कर पाते। उतावली में तत्काल का अनुचित लाभ पीछे अत्यन्त कष्टकारक होता है। स्वाद-स्वाद में अधिक भोजन करते समय तो अच्छा लगता है, पर कुछ ही देर बाद जब पेट में दर्द होना, उल्टी-दस्त लगना आरम्भ होता है तो पता चलता है कि आतुरता का असंयम कितना महँगा सिद्ध हुआ ? कामुकता का अतिवाद थोड़े समय तो क्षणिक उत्तेजना उत्पन्न करता है, पर जब शरीर और मस्तिष्क दोनों खोखले हो जाते हैं, यौन रोग आ घेरते हैं, दुर्बलता के साथ अकाल मृत्यु भी आ जुड़ती है। चिड़ियाँ दाने के लोभ में, मछलियाँ आटे के लोभ में बहेलिये के जाल में फँसती और प्राण गँवाती देखी गयी हैं। यह तात्कालिक लाभ के लिए सुदूर भविष्य की ओर से आँखें मींच लेना है। साधन, सामर्थ्य, हर किसी के पास होती हैं। भगवान ने उससे वंचित किसी को भी नहीं रखा है। उनका जो सदुपयोग करते हैं, वे अधिक सक्षम एव समुन्नत बनते जाते हैं। तदनुरूप लाभ भी उठाते हैं, प्रगति के पथ पर आगे भी बढ़ते हैं। जो उन्हें निरर्थक पड़ी रहने देते हैं, वे उपलब्धियों को गँवाते जाते हैं और अन्ततः छूँछ हो जाते हैं। जिनने दुरुपयोग शुरू किया, वे विकृतियों और विसंगतियों के जाल में फँसते जाते हैं। पतन के गर्त में गिरते हुए वहाँ जा पहुँचते हैं, जहाँ से दुबारा उबर सकना कठिन पड़ता है। सामर्थ्य का हस्तगत होना बड़ी बात नहीं है। वह तो पैतृक अनुदान के रूप में भी मिल सकते हैं। भाग्य फलने जैसे सुयोगों द्वारा कोई धन सम्पदा का, साधन-वैभव का अधिपति बन सकता है। चोर उचक्के भी कई बार अनाचारी आक्रामक रीति-नीति अपनाकर समर्थ सम्पन्न बन सकते हैं। लाटरी आदि में किसी को अनायास ही बड़ा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धन मिल सकता है, पर महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसका सदुपयोग बन पड़ा या नहीं। कुसंग में पड़कर कोई भी कुमार्ग अपना सकता है और अपनी, अपने सहायकों की धन-सम्पदा को दुरुपयोग की दिशा में अग्रसर कर सकता है। जन्म-जन्मान्तरों को संचित पशु-प्रवृत्तियाँ भी अवसर-मिलने पर सहज ही उभर सकती हैं। समाजगत कुप्रचलनों का प्रभाव वातवारण पर छाया रहता है और सामान्यजनों का रुझान उसी प्रवाह में बहने लगता है। ऐसे अनेक कारण और अवसर रहते हैं, जो दुश्चिंतन में, अनाचार में और दुश्प्रवृत्तियों में जकड़ दें। सामान्य जन इन्हीं कुचक्रों में फँसकर अनायास ही कुमार्ग अपनाते हैं। कुकर्म करते और हेय दिशा का वरण करते देखे गये हैं। पानी ढलान की ओर बहता है। ऊपर से गिरी वस्तु नीचे आ पड़ती है। इसमें कोई अनहोनी बात नहीं है। साहस और विवेक का उभार वहाँ समझा जा सकता है, जहाँ उत्थान की दिशा में रुझान हो। आदर्श अपनाने के लिए अन्तस उमंगें। वह उत्साह क्रिया रूप में परिणित होने के लिए चल पड़े, इसी आन्तरिक उत्कर्ष का नाम शक्तियों का सदुपयोग है।

समय, श्रम, चिन्तन, कौशल नियोजन यही प्रकारान्तर से प्रमुख शक्तियाँ हैं। इन्हीं के सदुपयोग से उत्थान के अनेकानेक प्रयोजन सधते हैं। यह कार्य साधारण समझ के आधार पर नहीं बन पड़ता। वह तो इतना ही कर पाता है कि जो इर्द-गिर्द घटित होते हुए देख, उसका अनुकरण करने लगे। उत्कृष्टता अपनाने के लिए दूरदर्शी विवेकशीलता को उभारना होता है। वह तात्कालिक लाभों की अपेक्षा करके यह देखता है कि किसी क्रिया के दूरगामी परिणाम क्या होंगे ?. उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करने के लिए जो आज की क्षुद्र लिप्सा-लालसाओं को त्याग सकता है, सच्चे अर्थों में उसी को बुद्धिमान कहना चाहिए। इस अवलम्बन को जो भी अपनाने को तत्पर होता है, उसे बीज की तरह गलने और विशाल वृक्ष के रूप में सुविकसित होने की बात जँच जाती है। फलतः वह उसी रीति-नीति को अपनाता है। वह उस मक्खी का उदाहरण नहीं बनता है जो चासनी का भरा कढ़ाव देखकर सभी को तत्काल निगल जाने की ललक में होश-हवाश भूल जाती है और कढ़ाव में गिरकर प्राण गँवाती है। उसकी समस्त गतिविधियाँ समझदार माली जैसी होती हैं। जो उद्यान लगाता है और कुछ दिन परिश्रम करने के उपरान्त चिरकाल तक फल-फूलों का लाभ लेता है, इसमें आरम्भिक दिनों में कुछ घाटा जैसा प्रतीत होता है, पर कुछ ही दिनों में सिद्ध हो जाता है कि यह कम पूँजी में अधिक लाभ उठाने की स्वयं सिद्ध प्रक्रिया है। बुद्धिमत्ता की उत्कृष्टता, सदुपयोग करने की क्षमता को देखकर ही जानी जाती है।

यदा-कदा क्षमताओं के उच्चस्तरीय उपयोग के अवसर भी आते रहते हैं। उन्हें विशिष्ट सहयोग भी कहा जा सकता है। युद्ध काल के कौशल इसी प्रकार के हैं। वे जीवन में यदा-कदा ही आते हैं, जिनके सामने वैसी परीक्षा की घड़ी आई ही नहीं, वे बखान किसी भी रूप में करते रह सकते हैं, पर जिसे हर घड़ी में जाँचा परखा जा सकता है, वह यह है कि अपने शरीर और चिन्तन को किन प्रयोजनों में लगाये रखा गया ? इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए हर घड़ी सतर्कता की आवश्यकता है। समय को सुनियोजित किये रहने की दिनचर्या बनाई जाना और उसमें स्वार्थ और परमार्थ का सन्तुलित समावेश किए रखा जाना ही बुद्धिसंगत कहा जा सकता है। ईश्वर प्रदत्त सम्पत्ति एक ही है—समय। उसे तत्परता और तन्मयता के साथ उच्चस्तरीय प्रयोजनों में लगाया जा सके तो जीवन का स्वरूप निखरता जायेगा। वह अधिकाधिक प्रामाणिक प्रखर, प्रतिभावान एवं प्रगतिशील बनता जायेगा। व्यक्तित्व का निखार इसी आधार पर होता है। संसार के प्रगतिशील महामानवों ने अपने आपे का निर्माण किया है और उसके लिए समय को सुनियोजित करते रहने की क्रिया-प्रक्रिया, संभालने-संजोने पर ध्यान दिया है, हेय कृत्यों से अपने को बचाया है और उन आकर्षणों से अपने को दूर रखा है, जो ललचाकर बुलाते और अन्ततः उदरस्थ करके रहते हैं। समय के साथ चिन्तन और कृत्य की दो दिशा धारायें जुड़ती हैं। कोई पूर्णतः खाली तो किसी भी समय नहीं रहता। शरीरगत हलचलें और मनोगत विचारणायें किसी दिशा में क्रियाशील रहती हैं। कभी वे चुस्ती कमाती देखी गयी हैं, कभी फुर्ती या मस्ती के साथ उनका लगाव होता है। जागरूक कोई-कोई कभी-कभी ही रहते देखे जाते हैं। यही है वह प्रथम चरण जिसके सम्बन्ध में विवेकशीलों को जागरूक रहना पड़ता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीर यात्रा और परिवारगत कर्तव्य-दायित्वों को संतुलित रीति से निवाहते रहना विवेकशीलता की प्रथम कसौटी पर खरा उतरना है। निर्वाह के साथ यदि औसत भारतीय स्तर को औचित्य का मापदण्ड मान लिया जाय तो उसकी पूर्ति स्वल्प समय में होती रह सकती है। पशु-पक्षी अपना, अपने बच्चों का गुजारा कर लेते हैं तो कोई कारण नहीं कि अनेकानेक विशेषताओं से सम्पन्न मनुष्य उसे सरलतापूर्वक सम्पन्न न कर सकें। यही ब्राह्मण वृत्ति है। इसी को अपरिग्रह या सन्तोष कहते हैं। इस स्तर का निर्वाह इतनी सरलतापूर्वक किया जा सकता है कि उसे थोड़े श्रम, समय में सम्पन्न किया जा सके और बची हुई क्षमता को उन पुण्य प्रयोजनों में लगाया जा सके, जिसे व्यक्तित्व का श्रेष्ठतम उपयोग कहा जा सकता है। जिनसे इतना बन पड़ा समझना चाहिए कि उनके लिए महानता का द्वार खुल गया। ऐसे व्यक्ति पुण्य परमार्थ जैसे महान प्रयोजनों के लिए बहुत कुछ सोच और बहुत कुछ कर सकते हैं।

ईश्वर प्रदत्त सम्पदा है—समय। स्व-उपार्जित वैभव है—साधन। धन इसी को कहते हैं। यह समय का स्थूल स्वरूप है। इसे सूक्ष्म-स्थूल उपादान कह सकते हैं। समय और धन यही दो वस्तुयें ऐसी हैं, जिनका सदुपयोग करके अपना और दूसरों का ऐसा भला किया जा सकता है, जिसे अविस्मरणीय और अभिनन्दनीय कहा जा सके।

शरीर और परिवार जीवन यात्रा के साथ जुड़े हुए उपकरण मात्र हैं। इनको ठीक तरह चलाते रहना ऐसा कार्य है, जिसे सीमित शक्ति व्यय करके सहज रूप से संचालित किया जा सकता है, इसके बाद जो बच जाता है, वह हर किसी के पास इतना अधिक होता है कि उसका सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन में उपयोग किया जा सके तो कर्त्ता और गृहीता दोनों ही धन्य बनते हैं।

आत्म-परिष्कार उच्चस्तरीय स्वार्थ साधना है। जन्म-जन्मान्तरों तक सुसंस्कारों के रूप में यही सम्पदा साथ जाती है। सम्पदा कोई साथ नहीं ले जा सकता और उसके कारण परलोक में, अगले जन्म में कोई सहायता सुविधा मिलती है। वह शरीर के साथ जुड़ती है और उसी के साथ छूट भी जाती है। आत्मा के साथ जो चेतन तत्व परिष्कृत रूप में जुड़ता है, वह सुसंस्कारों का वैभव ही है। इसी को निजी कमाई कह सकते।

धन के सहारे पिछड़ों को बढ़ाने, गिरों को उठाने, उठों को उछालने का कार्य किया जा सकता है। कमाई को मात्र अपने विलास-वैभव में ही खर्च नहीं कर डालना चाहिए वरन् उसका जितना अधिक सम्भव हो उतना ही भाग परमार्थ के लिए—लोकमंगल के लिए खर्च करना चाहिए। यही धन का श्रेष्ठतम सदुपयोग है।

दान विवेक सम्मत तथ्यों पर आधारित हों

दान करना उतना ही आवश्यक है, जितना ग्रहण करना। भोजन करने के उपरान्त मल त्याग करना, पानी पीने के बाद पेशाब जाना अनिवार्य रूप से आवश्यक है। इसमें व्यवधान उत्पन्न करना अपने लिए संकट खड़ा करना है। उपार्जन आवश्यक है, उपभोग भी स्वाभाविक है, पर इससे भी अधिक स्मरण रखने योग्य बात यह है कि जिस समाज से अनेकानेक अनुदान पाकर अपने को सभ्य और सम्पन्न बनाया गया है, उसके ऋणों को चुकाना न भूला जाय। यह कार्य सेवा, साधना, परमार्थ परायणता, अपनाने और दान का सदाशयतापूर्ण उपक्रम जारी रहने से ही संभव हो सकता है।

सृष्टि के सभी प्राणी मात्र कुछ दिन माता की सहायता प्राप्त करके स्वावलम्बी बन जाते हैं, अपने बलबूते जीवन यापन करने लगते हैं फिर उन्हें किसी का सहारा नहीं ताकना पड़ता। पर मनुष्य की स्थिति इससे सर्वथा भिन्न है। जन्मने के उपरान्त बालक यह भी नहीं जानता कि उसकी सफाई कौन करे, दूध कौन पिलाये ? वस्त्रों, सोने की व्यवस्था कौन करे ? यह सब माता को ही करना पड़ता है। पिता उसके लिए आवश्यक साधन जुटाता है। परिवार वाले उसकी तरह-तरह से सहायता करते हैं, पग-पग पर सुरक्षा का ध्यान रखना पड़ता है अन्यथा अनजान बालक कहीं भी गिर सकता है, कुछ भी खा सकता है, किसी भी जोखिम में फँस सकता है। मनोरंजन के साधन तो दूसरे ही जुटाते हैं। बोलना दूसरों की वाणी सुनकर ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आरम्भ होता है। बड़े होने पर भोजन, वस्त्र, स्कूल फीस, किताब, जेब खर्चा, चिकित्सा आदि की व्यवस्था अभिभावक ही करते हैं। इन साधनों के अभाव में किसी का जीवित रहना या विकसित होना सम्भव नहीं। मनुष्य बचपन में तो पूरी तरह अनुदानों के सहारे ही जीता है। बड़े होने पर भी यह उपक्रम टूटता नहीं। विवाह में किसी परिवार की अनुकम्पा से ही समर्थ पत्नी आजीवन सेवा करने के लिए मिलती है, माता, भाई, भावज, ताई, बुआ, दादी आदि का स्नेह, सहयोग एवं सद्भाव तो कम नहीं होता। बदला तो इनका भी चुकाना चाहिए। मुफ्त में यहाँ किसी को कुछ नहीं मिलता। हर वस्तु ऋण के रूप में प्राप्त होती है। लेकर न देना नैतिक रूप में बेईमानी तो है ही, साथ ही प्रावधान यह भी है कि कर्ज मारने वाले को दण्ड का भागी भी बनना पड़ता है।

जीवन की अवधि पूरी करने में पग-पग पर दूसरों की सहायता पर आश्रित रहना पड़ता है। वस्त्र अपने हाथ से कातकर, बुनकर सीकर पहनता कौन ? इन्हें धारण करने तक उनके निर्माण में असंख्यों का श्रम, समय, कौशल लग चुका होता है। अन्न अपने हाथों बोता, काटता, पीसता कौन है ? रोटी की स्थिति तक पहुँचने में उनमें कितनों का कितने प्रकार का सहयोग लग चुका होता है। ग्राहक न मिले तो दुकान कैसे चले ? मालिक न रखे तो नौकरी कहाँ मिले ? चिकित्सा के अभाव में लगे हुए रोगों से छुटकारा कैसे मिले ? मनोरंजन के अनेकानेक साधन मिलते रहते हैं, ज्ञान वृद्धि का सिलसिला चलता ही रहता है यह सब कुछ अपना निज उपार्जन नहीं होता। शासन और समाज की व्यवस्था न बनी होती तो कोई भी अपने को सुरक्षित अनुभव न करता। वाहनों की, पत्र व्यवहार की, पुस्तकों की, अनेकानेक सुविधा साधनों की व्यवस्था अपने आप कौन किस प्रकार कर सकता है ? यह सभी तन्त्र दूसरों के सहयोग से चलते हैं। कुछ वस्तुयें ही ऐसी हैं, जिनका तात्कालिक मूल्य चुकाया जा सकता है, पर वह ऋण कैसे चुके जो उन साधनों के आविष्कारकों द्वारा समाज को अविज्ञात रूप से दिया गया यहाँ तक कि नमक, साबुन, से लेकर दियासलाई तक की दैनिक आवश्यकतायें दूसरों के प्रयास से ही अपने हाथों तक पहुँचने की स्थिति में आती हैं। जिन मकानों में हम रहते हैं, वे अनेकों श्रमिकों एवं वस्तु उत्पादकों के माध्यम से ही अपने उपयोग में आ सकी हैं। दृष्टि दौड़ाने पर प्रतीत होता है कि अपना पुरुषार्थ और वैभव भी सब कुछ नहीं है। सुविधा साधनों के निर्माण में असंख्यों, अविज्ञातों का कौशल नियोजित हुआ है। इन सबको भुलाया कैसे जा सकता है ? माता के स्नेह का, पत्नी के समर्पण का, पिता के सरंक्षण का, परिवार के सहयोग-सद्भाव का बदला धन्यवाद देकर या कुछ पैसे थमाकर नहीं चुकाया जा सकता। यह ऋण ऐसे हैं, जो आजीवन लदे रहते हैं और चाहते हैं कि आदान-प्रदान की पुण्य परम्परा बन्द न हो। सहयोग का बदला सहयोग देकर और सेवा लेने का बदला सेवा देकर ही चुकाया जा सकता है।

हर ईमानदार मनुष्य को इतना विवेकवान, इतना भावनाशील तो होना ही चाहिए कि मात्र अपनी सुविधा, खुशहाली, अभिलाषा को ही ध्यान में न रखे, कुछ इससे आगे बढ़कर भी सोचे। पेट और प्रजनन जैसी शरीरिक आवश्यकतायें तो पशु-पक्षी, कीट-पतंग तक पूरी करते और किसी प्रकार मौत के दिन पूरे करते रहते हैं। यदि मनुष्य भी इसी सीमा तक सीमित रहा तो समझना चाहिए कि भगवान का दिया अलभ्य अवसर कौड़ी मोल गँवा दिया। सृष्टा के भण्डार में यदि प्राणी को देने योग्य सर्वोपरि उपहार है, तो वह एक मात्र मनुष्य जीवन ही है। इससे बड़ी विभूति प्राणी जगत में, इस विश्व वसुधा में और किसी को नहीं प्राप्त हुई। देवताओं को भी मनुष्य जैसे पुरुषार्थ करने, कर्म की स्वतन्त्रता का लाभ लेने जैसा अवसर नहीं मिला है, जबकि मनुष्य पुण्य-परमार्थ पर्याप्त संचय कर सकता है और भविष्य को अधिकाधिक उज्ज्वल बनाने वाली भूमिका सम्पादित कर सकता है। यह उसे विशेष सुयोग-सौभाग्य से प्राप्त है, पर उसकी सार्थकता तभी है, जब वह लेकर नहीं देकर मरे।

लेने में लाभ समझने वाली बुद्धि तो हेय स्तर के प्राणियों में भी होती है। हर किसी की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लेने की पड़ी रहती है। उसी को लाभ समझा जाता है। गर्व भी ऐसे ही संयोगों पर किया जाता है। भाग्य की सराहना भी ऐसे ही अवसरों पर होती है। पर दूरदर्शी, विवेकशीलता कुछ दूसरी ही बात कहती है। उसके अनुसार देने में दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है। माँ जो अधिक दूध उतारने और बच्चे को अधिक मात्रा में पिलाते समय प्रसन्नता भरी पुलकन अनुभव करती है, उसका कारण और अनुपात उसी से पूछा जा सकता है। किसी जीवन-मरण की सन्धि बेला में जूझते हुए को रक्तदान देकर प्राण बचा लेने पर जो अनुभूति दाता को होती है, उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। फाँसी के फन्दे पर झूलते हुए देशभक्त बलिदानी किस मनःस्थिति में प्राण त्याग रहे थे, इसे कोई समझ सके तो जाने कि लेने में नहीं, देने में अपना ढंग का अनोखा स्वाद है।

अकाल पीड़ितों, दुर्घटनाग्रस्त, अपंग, असह्यों की सेवा सहायता करने के लिए अपनी सामर्थ्य को खपा देने वाले व्यक्ति प्रत्यक्षतः समय गँवाते, कष्ट सहते और घाटा उठाते समझे जा सकते हैं। पर ऐसे क्षणों में उन्हें सहायता पाने वालों के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रही आँखों से जो हस्तगत होता है, वह ऐसा बहुमूल्य होता है कि वैसा बहुत कीमत देने पर भी नहीं पाया जा सकता। आखिर आत्मिक आह्लाद भी तो कोई चीज है। भले ही उसे साधारण जन समझ पाते या न देख पाते हों।

दान में उपयोगिता का समावेश हो !

भारतीय धर्म संस्कृति में दान को पुण्य माना गया है, उसे आवश्यक धर्म कर्तव्य माना गया है। उपार्जन, उपभोग की तरह दान को भी जीवनचर्या के साथ जुड़ा रखने की व्यवस्था है। जो बिना दिये खाता है, उसे चोर की संज्ञा दी गई है। मिल-बाँटकर खाना ही देव परम्परा है, इसलिए यहाँ क्षमता का, सम्पदा का उपयोग मात्र विलास संग्रह के लिए ही नहीं, सत्पात्रों को दान देने के लिए जन-जन को प्रोत्साहित किया गया है।

यह आवश्यकता इसलिए समझी गई है कि पशु प्रवृत्तियों से घिरे मनुष्य और दुष्प्रवृत्तियों से घिरे समाज को आदर्शवादी उत्कृष्टता के साथ जुड़े रहने वाले ऐसे लोकसेवियों के निर्वाह की व्यवस्था की जाये जो जनजीवन को सुसंस्कृत बनाये रहने के लिए समर्पित भाव से सेवा-साधना में निरत रहें। इस वर्ग को साधु-ब्राह्मण कहा जाता था। गृहस्थ ब्रह्मण—विरक्त साधु इस वर्ग का जब जितना बाहुल्य रहा है, तब उसी अनुपात से सर्वतोमुखी प्रगति का पथ प्रशस्त हुआ है। विचारवान् विद्वान और चरित्रवान् लोक-सेवी ही जनमानस को समुन्नत स्थिति में रख पाते हैं, उन्हीं के द्वारा दुष्प्रवृत्तियों का निराकरण और सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन बन पड़ता है। इनकी संख्या जितनी अधिक होगी, उनका स्तर जितना ऊँचा रहेगा उतना ही लोकमानस विचारशील एवं समुन्नत बनेगा। यह सेवा देखने में किसी स्मारक जैसी भव्य न दीखे, पर उसका प्रभाव इतना महत्वपूर्ण होता है जिसे जल और वायु के समतुल्य माना जाये तो कुछ अत्युक्ति न होगी। प्रकट है कि चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में भरी निकृष्टता ही सर्वतोमुखी अधःपतन का एकमात्र कारण है। हेय स्तर का मनुष्य पशुओं से भी गया-बीता समझा जाता है, उसकी गणना प्रेत-पिशाचों में होती है, वह न चैन से बैठता और न किसी को शांति से बैठने देता है। अनेक प्रकार के उपद्रव खड़े करता है और अनेकानेक संकटों-विग्रहों को जन्म देता है। इस प्रकार के विभिन्न उत्पादन की रोकथाम के लिए विवेकवान्-चरित्रवान् व्यक्तियों का परामर्श-उद्बोधन असाधारण रूप से काम करता है। तद्नुसार प्रगति एवं समृद्धि की उभयपक्षीय संभावनायें बढ़ती हैं। इस स्तर के पुरोहितों के निर्वाह की, मार्ग व्यय की व्यवस्था जन-साधारण को ही करनी पड़ती है। उनका स्वयं का समूचा चिंतन और पराक्रम तो जन-जागरण में ही लग जाता है। स्वयं आजीविका उपार्जन का कोई व्यवसाय आरम्भ करें तो फिर उन्हें उसी में फँसकर रह जाना पड़ेगा, तब वे उस उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर सकेंगे। जिन्हें मानवी गरिमा का मेरुदण्ड कहा जा सकता है, उन्हें आजीविका की चिन्ता से मुक्त ही रहना चाहिए, रखा भी जाना चाहिये। इसी प्रयोजन को प्रमुख मानकर साधु-ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देते रहने का प्रावधान है। अतिथि को देव माना गया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है और उसके सत्कार को देव पूजन के समतुल्य माना गया है। यहाँ अतिथि से तात्पर्य उन धर्म प्रचारकों से है, जो जन सम्पर्क के लिए निरन्तर परिभ्रमण करते रहते हैं—छोटे देहातों में बिखरे हुए अधिकांश जन समुदाय के घरों पर जाकर सम्पर्क साधना पड़ता है। उनमें इतनी चेतना नहीं होती कि ज्ञानवानों से सामयिक परिस्थितियों के अनुरूप मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। इस जन-समुदाय की उतनी उत्कण्ठा भी नहीं होती, फिर आजीविका की व्यस्तता में से समय निकालकर विद्वज्जनों से सम्पर्क साधने के लिए दूर देशों में जा सकना उनके लिए साधनों के अभाव में कठिन भी पड़ता है। सामान्यजन प्रेरणाप्रद वातावरण में पहुँचकर अपनी समस्याओं के निराकरण और अभ्युदय के आयोजन का मार्ग खोजने के लिए यदा-कदा तीर्थ सेवन के लिए ही जा पाते हैं। वहाँ भी पर्व पर भीड़ हो जाती है, यात्री भी पर्व का लोभ नहीं छोड़ना चाहते—ऐसी दशा में तीर्थयात्रायें तभी फलित होती हैं, जब वहाँ रहने वाले संचालक आवश्यक मार्गदर्शन के लिए हर आगन्तुक के साथ समुचित विचार-विनिमय कर सकें—ऐसा उन्हीं दिनों हो सकता है, जिन दिनों पर्व स्नान आदि न हों। ऐसा सुयोग्य बन सके कि जन-साधारण को तीर्थयात्रा का उद्देश्य समझाते हुए वहाँ का लाभ उठा सकने की मनःस्थिति हो तभी यह सम्भव है कि लोक-शिक्षण का उद्देश्य तीर्थ सेवन द्वारा सम्भव हो सके। प्राचीनकाल में ऐसा कुछ बन भी पड़ता था, पर पीछे तीर्थ पर्यटन के केन्द्र बन पड़ने के उपरान्त अपनी उच्चस्तरीय आदान-प्रदान की क्षमता ही गँवा बैठे।

तीर्थ प्रशिक्षण धूमिल पड़ जाने के उपरान्त भी जनसम्पर्क को पदयात्रा का महत्व यथावत् बना हुआ है। जहाँ कहीं वह जीवित रह गया है, वहाँ अभी भी परिव्राजक वानप्रस्थ नवजीवन का अलख जगाते हुए पहुँचते हैं और अपनी ओर से गृहस्थों की समस्यायें पूछकर उनके समाधान बताते हैं। बताने के अतिरिक्त उपायों को क्रियान्वित करने के लिए भी यथासम्भव सलाह देते हैं। यों यह कार्य परिव्राजक ही नहीं, गृहस्थ-ब्राह्मण भी अपने स्थान को देवालय बनाकर जरूरतमन्दों को अपने यहाँ बुलाते और उनको प्रकाश—प्रेरणाओं से अनुप्राणित कर करते रहे हैं। यही है साधु-ब्राह्मणों की कार्य पद्धति, जिसे पुरातन काल की सतयुगी परम्परा का आधारभूत कारण माना गया है। इन्हीं वर्गों के भरण-पोषण के लिए दान दक्षिणा का प्रावधान विनिर्मित किया गया था। सच्चे अर्थों में अतिथि यही वर्ग है, उसे सम्मानपूर्वक निर्वाह साधन मिलने चाहिए, इसमें कहीं कोई व्यवधान न पड़े—इसलिए हर उपार्जनकर्त्ता को अपनी आजीविका का एक अंश इस सद्ज्ञान—संवर्धन के लिए निकालते रहने का शास्त्रीय निर्धारण है। इसी आधार पर अतिथि देव की पूजा-अभ्यर्थना बन पड़ती है।

दान के दो ही प्रमुख प्रयोजन बताये गये हैं—एक 'यज्ञार्थ' दूसरा 'विपदवारणाय।' (९) यज्ञ यों अग्निहोत्र को भी कहते हैं, पर वह मात्र इतने तक ही सीमित नहीं है। उसकी परिधि में सत्प्रवृत्ति संवर्धन का विशालतम क्षेत्र आता है, उसका प्रत्यक्ष कलेवर साधु-ब्राह्मण परिकर से आच्छादित होता है, वे वाणी से भी समाज सेवा करते हैं और युग साहित्य सृजेता के रूप में लेखनी से भी। प्रत्यक्ष क्रिया-कलाप के रूप में वे तीर्थों एवं देवालयों का संचालन भी करते हैं। इस स्तर के ज्ञान यज्ञ में निरत अध्वर्यु अपनी आवश्यकतायें जन-साधारण पर प्रकट नहीं करते, इन दिनों तो यह और भी अधिक आवश्यक हो गया है। भिक्षुकों का सम्प्रदाय इतना बढ़ गया है, इनकी याचनायें इतने अधिक छल-प्रपंच से भरी होती हैं कि सच्चे-झूठे की परख कर सकना किसी असाधारण तीक्ष्ण बुद्धि वाले के लिए ही सम्भव रह गया है। इस भयानक भीड़ के बीच अधिकारी सत्पात्रों को ढूँढ़ निकालने और उनकी सहायता करने के लिए सत्पात्रों की खोज करना भी अब दानदाताओं का ही उत्तरदायित्व बन गया है। इस संदर्भ में उपेक्षा बरतने पर कुपात्र भी दानी की उदारता का शोषण करते रहते हैं। अनर्थ न होने पाये, व्यर्थ भी न जाने पाये। उसका उपयोग मात्र सार्थक प्रयोजनों में ही हो—इसकी खोजनबीन करना भी अब उन्हीं उदारचेताओं के जिम्मे आया है जो दान का प्रमोद या विज्ञापन में खर्च नहीं होने देना चाहते। चापलूसी या प्रशंसा से जब काटते रहने में जिन्हें सजगता अपनाने की आवश्यकता अनुभव होती है, उन्हें यह भी देखना पड़ता है कि कुपात्रों की भीड़ से खीझकर कहीं उनकी श्रद्धा का ही अन्त न हो जाये। यह तो और भी अधिक बुरी बात होगी। उदारता को समाप्त कर बैठना तो और भी बड़ा घाटा है। वैसी स्थिति न बन पाये—इसके लिए एक सीधा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मार्ग यही रह जाता है कि सत्यप्रयोजनों में लगे हुए ब्रह्मकर्मी ढूँढ़ निकाले जायें और उन्हें निर्वाह के लिए ही नहीं, उन कामों के लिए भी साधन जुटाने की व्यवस्था की जाये जिनके द्वारा लोकमंगल के भावनात्मक पक्ष का पारिपोषण होता है।

दान का दूसरा उपयुक्त पक्ष—'विपरीत वारणाय।' अनेक बार कई व्यक्तियों को आकस्मिक दुर्घटनाओं का शिकार बनना पड़ता है, बाढ़, सूखा, भूकम्प, दुर्भिक्ष, महामारी आदि जैसी परिस्थितियों में ऐसी विपत्ति सिर पर आ टूटती है कि उन क्षणों में अपने बलबूते सँभल सकना सम्भव नहीं होता। बिना दूसरों की सहायता के काम नहीं चलता, रोगी और अपंग भी प्रायः ऐसी स्थिति में होते हैं कि उन्हें दूसरों का सहारा चाहिए। ऐसे अवसरों पर उदारचेता स्वयं ही दौड़कर पहुँचते हैं, वे यह प्रतीक्षा नहीं करते कि विपत्तिग्रस्त अर्जी लेकर सामने आयें और देर तक याचना करने के उपरान्त कुछ सहायता पाये, ऐसे अवसरों पर सेवाभावी स्वयं ही दौड़कर पहुँचते हैं। अग्निकाण्ड होने पर कोई बुझाने के लिए निमंत्रण देने नहीं पहुँचता, जिनके मन में भावना होती है, वे स्वयं ही दौड़ पड़ते हैं। रेल, मोटर आदि वाहनों से टकरा जाने पर भी दुर्घनायें होती हैं और उनमें सवार आहतों की तात्कालिक सहायता का प्रबन्ध करना पड़ता है। एम्बुलैंस गाड़ियाँ वहाँ उपलब्ध नहीं हो तो सेवाभावी स्वयं ही अपने साधनों से उन्हें अस्पतालों तक पहुँचाते हैं। ऐसी ही कठिनाइयाँ प्रसव क्रम में उलट हो जाने पर महिलाओं के साथ भी हो सकती हैं। अन्यत्र भी अनेक प्रकार की दुर्घटनायें हो सकती हैं। उनकी विपत्ति में सहायता करने के लिए दौड़ पड़ना और सही तरीके से सही रास्ता ढूँढ़ निकालना भी एक बड़ा काम है, पर वैसे अवसर सदा नहीं आते। दुर्घटनायें यदा-कदा ही होती हैं, उनके लिए प्रतीक्षा में नहीं बैठा रहा जा सकता। अग्नि शामक दल और फायर बिग्रेड की बात दूसरी है, वे आपत्तिकाल की प्रतीक्षा में बैठे भी रह सकते हैं, किन्तु सेवाभावियों को तो उदार परमार्थ अपनी दिनचर्या में जोड़कर रखना होता है। अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति के लिए आये दिन कुछ न कुछ करते रहना पड़ता है—यह किस प्रकार सम्भव हो ?

इसका उपाय यह है कि प्रतिदिन जितना समय सेवा साधनों में लगाने का संकल्प हो, उतना समय आजीविका—उपार्जन में लगा रहा जाये और उससे जो उलब्ध हो, उसे दान पेटी में जमा कर रहा जाये। समय आने पर आवश्यकतानुसार उस धन को उपयुक्त प्रयोजन में लगा दिया जाये। यह भी हो सकता है कि उस धन के बदले किन्हीं उपयुक्त व्यक्तियों का श्रम खरीदकर उपस्थित आवश्यकता की पूर्ति में लगा दिये जाये। श्रम से धन कमाया जाता है तो धन से श्रम खरीदकर उसे उन कार्यों में भी लगाया जा सकता है, जिसमें कई व्यक्तियों का कई प्रकार का श्रम अपेक्षित है।

निर्धन भी दानवीर हो सकते हैं

अनेक व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जिनके लिए अपना, परिवार का भरण-पोषण ही कठिन पड़ता है। उनके लिए बड़ी मात्रा में धन दान दे सकना कठिन सम्भव नहीं होता। ऐसी परिस्थितियों वालों के श्रमदान—समयदान के रूप में दान का महत्त्व कम नहीं है वरन् उनकी उत्कृष्टता और भी अधिक है। संग्रहीत धन यदि अधिक मात्रा में जमा हो तो उसे कोई धनिक उपेक्षापूर्वक भी बड़ी राशि देकर अपना मन हलका कर सकता है। कई धनवान् आयकर की बचत हेतु भी किसी मान्यता प्राप्त संस्था को देते रहते हैं। इससे जहाँ उन्हें टैक्स की बचत होती है, वहाँ प्रशंसा—प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। इसी प्रकार चन्दा माँगने वालों का दबाव, कुटुम्बी-सम्बन्धियों का आग्रह भी ऐसा होता है जिसे टाला नहीं जा सकता। लड़कियों के विवाह में खर्च होने वाली राशि को भी लोग दान-पुण्य में ही गिन लेते हैं। तीर्थयात्रा के बहाने पर्यटन का आनन्द लूटने वाले, पर्व-स्नान के मेले देखने का खर्च भी लोग दानखाते में ही डालते देखे जाते हैं। इस प्रकार धनिकों के लिए ऐसी कितनी ही मदें निकलती रहती हैं, उन्हें वे दान-पुण्य में ही गिन लेते हैं। मन्दिर, धर्मशाला, बगीचे जिनमें अपने विनोद-मनोरंजन की व्यवस्था अधिक और जनता को लाभ उठाने का अवसर कम ही रहता है, पुण्य-दान खाते में लिख लिया जाता है। देखना यह है कि इन सबके पीछे वह भावना रही या नहीं जिसको सच्चे अर्थों में दान समझा और माना जा सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इससे भिन्न स्थिति तब आती है, जब किसी के पास गुजारे से कम पड़ता है ? ऐसी स्थिति में कुछ धन दान कैसे करें ? करें तो वह राशि इतनी स्वल्प होती है कि बड़े-बड़ों के द्वारा किये गये खर्च की तुलना में उसका वजन नगण्य ही ठहरता है, जिनमें देने वाले और लेने वाले दोनों को ही संकोच पड़े। ऐसी दशा में जो देने का मन होता है उससे भी हाथ सिकोड़ लिए जाते हैं।

जिसके पास खर्च चलाने जैसी व्यवस्था पहले से ही मौजूद है, जो ब्याज-भाड़े आदि के सहारे अपना गुजारा कर सकते हैं, उनके लिए यही उचित है कि निर्वाह चलाने की यदि उन्हें चिन्ता नहीं तो अधिक धन संचय के लिए जीवन की बहुमूल्य सम्पदा का अपव्यय न करें। वह समय दूर नहीं जब अनावश्यक धन राज्यकोष में जमा हुआ करेगा। जब लोग सामर्थ्य भर काम करने और आवश्यकता भर लेने के लिए बाध्य किये जाया करेंगे। अभी तो अनावश्यक धन दुर्व्यसन बढ़ाने, चोर-उचक्कों को उकसाने और अहंकार प्रदर्शन करने में ही खर्च होता है, पर अगले दिनों में ऐसी सुविधा न रहेगी। न कोई धनी रहेगा न निर्धन, सभी को औसत दर्जे के गुजारे पर सन्तोष करना पड़ेगा। जो कमायेगा सो खायेगा। श्रम की मुफ्तखोरी की आजीविका की सुविधा किसी को न रहेगी। ऐसी दशा में फालतू धन न रहने पर दान देना किसी के लिए सम्भव न होगा। उक्त परिस्थितियों में उदारता केवल श्रमदान ही अवलम्बित हो जायेगी। पुण्य प्रयोजनों के लिए समय लगाने वाले ही सच्चे अर्थों में दानी माने जायेंगे। अनावश्यक धन को दबा कर देना तो संचय का प्रायश्चित्य मात्र है।

उदारता की उदात्त भाव संवेदना हर दान के पीछे जुड़ी ही हो यह आवश्यक नहीं। कितने ही लोग परम्पराओं की लकीर पीटने में ढेरों खर्च कर डालते हैं, देवी-देवताओं की मनौती मन में उन्हें प्रसन्न करने के लिए विशाल कर्मकाण्ड करवाने में उनमें ढेरों खर्च कर डालने वाले अनेकों देखे जाते हैं। किसी के बहकाने-फुसलाने और बाद में उससे कई दुष्योजन सिद्ध करने के लिए भी दान जैसा ढकोसला बनाया जा सकता है। कई धूर्त जिस-तिस युवती के साथ बहिन के रिश्ते गढ़ते और उसे उपहार देते रहकर धीरे-धीरे अपने कुदृष्टि जाल के शिकंजे में कसते हैं। तोड़-फोड़ में, लूट-फसाद में, अनुचित समर्थन पाने में, अनैतिक कार्य में भी पक्षधर बनाने में कई बार ढेरों पैसा खर्च किया जाता है। ऊपर से वह दान मालूम होता है, पर वस्तुतः उसके पीछे दुरभिसंधियाँ ही काम करती हैं। चुनाव के समय वोट खरीदने के लिए दी जाने वाली छोटी-बड़ी रिश्वतों को क्या दान कहा जायेगा ?

दानों में सर्वोपरि ज्ञान-दान को कहा गया है, क्योंकि विचारणा के परिशोधन से समस्त उलझी हुई समस्याओं का समाधन निकलता है, पर इसके लिए यह आवश्यक है कि ज्ञानदाता स्वयं प्रज्ञावान् मेधावी और सामयिक परिस्थितियों के अनुरूप व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते रहने में समर्थ हो। स्वयं विनम्र रहकर दूसरों को सम्मान दे सकने में समर्थ हों। मृदुता, ऋजुता एवं आत्मीयता उसके स्वभाव में सम्मिलित हो, ऐसों के ही परामर्श-प्रशिक्षण सफल एवं सार्थक होते हैं। अनगढ़ लोग परामर्शदाता बनते हैं तो यह उनकी अनाधिकार चेष्टा ही मानी जाती है। सत्परामर्शों को सत्संग भी कहते हैं, उसकी महिमा गाते हुए शास्त्र भी थकते नहीं।

दूसरा दान श्रमदान है। श्रमदान अर्थात् समयदान। शारीरिक और मानसिक क्षमता के समन्वय से ही उद्देश्यपूर्ण भाव भरा श्रमदान सम्भव होता है, उसके पीछे लोकमंगल की भावना जुड़ी होती है। बदले की भावना का लेशमात्र भी नहीं होता, अधिक से अधिक इतना प्रतिदान लिया जा सकता है कि पेट भरने और शरीर ढकने की न्यूनतम आवश्यकता प्राप्त करने के लिए अपनी जरूरतें साथियों को बता दी जायें और उन्हें बिना अहंकार या दीनभव के दिखाये सहज रूप से स्वीकार कर लिया जाय। साधु और ब्राह्मण न केवल प्रवचन-परामर्श देते थे वरन् सत्प्रवृत्ति संवर्धन के रचनात्मक कार्यों में सहयोगियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर स्वयं भी श्रम करते थे। करनी और कथनी का सम्मिश्रण होने पर ही एक पूरी बात बनती है।

बिहार प्रान्त के हजारी किसान की कथा प्रसिद्ध है, उसने सामाजिक कार्यों के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैकल्पिक व्यवस्था बना ली थी और स्वयं गाँव-गाँव आम के बगीचे लगवाने के लिए निकल पड़ता था। इसके लिए परामर्श ही नहीं देता वरन् सहमत लोगों के साथ श्रम करके उस योजना को कार्यान्वित भी करता था। इस प्रकार जीवन भर एक ही प्रयोजन में कार्य में संलग्न रहकर उसने अन्त समय तक एक हजार आम्र-उद्यान लगवाने में सफलता पाई थी। इसलिए उसका नाम 'हजारी' पड़ा और वह क्षेत्र हजारी बाग जिले के नाम से प्रख्यात हुआ।

अपने देश में श्रम के प्रति उपेक्षा भाव ने ही गरीबी को सिर पर लादा है। श्रमिकों को हेय दृष्टि से देखा और उन्हें शूद्र कहा गया है। आरामतलब लोग बड़े आदमी, अमीर, भाग्यवान् आदि माने जाते हैं—यह बुरी बात है। श्रम की उपेक्षा करना सीधे ही अयोग्यता और दरिद्रता को आमन्त्रण देना है। जापान के अणुबमों से देश का सर्वनाश हो जाने पर भी श्रम के बलबूते उसे पहले जैसा बना लिया। एक ओर हम भारतवासी हैं जो मन्दगति से श्रम करने तथा ढेरों समय बेकार गँवाने के कारण दरिद्रता की सीमा से ऊपर ही नहीं उठ पाते। इस असमंजस को दूर करने के लिए विचारशीलों को श्रमशीलता के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए। स्वयं श्रम करना चाहिए और प्रभाव क्षेत्र में सभी को वैसा उत्साह भरना चाहिए। गाँवों की, गली-मुहल्लों की सफाई, सड़कों-रास्तों की मरम्मत, तालाबों को गहरा करना जैसे अनेकों सेवा-कार्य हैं, जिनमें आगे बढ़कर मोर्चा सँभाला जा सकता है और अनेकों में श्रम सेवा की प्रवृत्ति का नये सिरे से जागरण किया जा सकता है। सामूहिक श्रम से ऐसे अनेकों उपयोगी काम हो सकते हैं, जिनके द्वारा बिना पैसा खर्च किये सर्वजनीय अभ्युदय की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य हो सकें।

धन दान की आवश्यकता एवं महत्ता भी कम नहीं, पर उसके लिए आवश्यक शर्त यह है कि मात्र सत्प्रयोजनों के लिए ही उस राशि को सौंपा जाय अथवा उस धन का उपयोग अपने हाथों सही कार्यों के लिए कर लिया जाय। कुपात्रों के हाथ में वह इस प्रकार किसी भी प्रकार नहीं जाना चाहिए, जिससे निठल्ले लोग उसे मुफ्त की लूट समझकर दुर्व्यसनों में खर्च करें। साँप को दूध पिलाने पर जिस प्रकार दुष्परिणाम उत्पन्न होता है, ठीक वही बात कुपात्रों के हाथ पहुँचे धन के द्वारा भी अवांछनीय परिणति होती है।

धनदान को दैनिक जीव का एक नियमित और निरन्तर चलने वाला कार्य माना जाना चाहिए, इसका नित्यकर्मों में महत्त्वपूर्ण स्थान रहना चाहिए। हर व्यक्ति अपनी आमदनी का एक अंश पुण्य प्रयोजनों के अभिवर्धन हेतु निकालें, भले ही वह राशि कितनी ही छोटी क्यों न हो। किसानों के घरों से एक मुट्ठी अन्न निकालते रहने के लिए 'धर्मघट' में रखे जा सकते हैं, जिनके यहाँ नकद पैसे का व्यवहार होता है, उनके यहाँ एक डिब्बे में आमद का एक अंश जमा किया जा सकता है। गायत्री परिवार के लिए इस प्रकार का दान ज्ञानघटों में जमा किया जाता है, इसका महीने में या जब भी आवश्यकता हो तब उसका उपयोग किया जा सकता है। यह परम्परा चल पड़े तो इतने भरा से अनेकों महत्त्वपूर्ण कार्य इस अंशदान के आधार पर चलते रह सकते हैं। देने वालों की उदारता को नियममित रूप से चरितार्थ करने का अवसर मिलता रह सकता है।

स्काउटिंग शिक्षण, प्रौढ़ शिक्षा आन्दोलन, बाल संस्कारशालाओं का संचालन नारी जागरण, वृक्षारोपण, कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण, स्वच्छता अभियान, जैसे अनेक कार्यक्रम हर जगह अपने किए जाने की प्रतीक्षा में बैठे रहते हैं, पर उनके क्रियान्वयन का अवसर कभी आता ही नहीं क्योंकि श्रमदान की—अंशदान की व्यवस्था बन ही नहीं पाती। साधनों के अभाव में कितने ही योजना मनोरथी कल्पना क्षेत्र तक ही सीमित रह जाते हैं, उनका क्रियान्वयन कभी होने नहीं पाता। यदि जन-साधारण में उदार भाग जगे और समय-साधनों के अंशदान का सूखा निर्झर फिर से प्रवाहमान हो चले तो उसका प्रतिफल ऐसा हो सकता है, जिसे आश्चर्यजनक और आशातीत कहा जा सके।

दान का उदारता का परिचायक माना जाता है, पर वह वस्तुतः विशुद्ध कर्त्तव्य है। इससे दूसरों का जितना हित साधन होता है उससे कहीं अधिक अपना होता है। उदारचेता दान प्रवृत्ति का अभ्यासी अपने आप में असाधारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्म-सन्तोष अनुभव करता है। समाज के अनेक मार्गों से अपने-अपने ऊपर लदते रहने वाले ऋणों को चुकाने का अवसर मिलता है। दूसरों की दृष्टि में ऐसे व्यक्ति की प्रामाणिकता एवं गरिमा बढ़ती है, रुके हुए अनेकों उपयोगी काम गति पकड़ते हैं। समाज में पारस्परिक स्नेह की परम्परा चल पड़ती है। ऐसे कर्म जिस दानशीलता के आधार पर बनते और चलते हैं वह कर्त्ता के लिए प्रत्यक्ष और परोक्ष दृष्टि से लाभदायक ही सिद्ध होते हैं।

दान की परम्परा चलती रहे

अपने पास धन हो तो उसमें से किसी निर्धन की सहायता कर देना कोई उदार-हृदय व्यक्ति का ही कार्य हो सकता है। यह भी समाज सेवा का एक रूप है। इसे परोपकार भी कह सकते हैं पर हो वह उदार वृत्ति से ही। भिखारी को दरवाजे से एक मुट्ठी अनाज देकर भगा देना महत्त्वपूर्ण नहीं, पर किसी को ऐसी आर्थिक सहायता कर देना, जिससे उसकी आजीविका की समस्या हल हो जाय, यह पुण्य, की परमार्थ की बात है।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने एक भिखारी बालक को एक रुपया देकर रोजगार में लगाया था, कुछ दिन में वही व्यक्ति वर्दवान का एक बड़ा साहूकार बना। भिक्षा-जीवन यापन करने से बचाकर विद्यासागर ने उस व्यक्ति को जो नई राह दी उसके लिये वह जीवन भर उनका कृतज्ञ बना रहा। साथ उसके हृदय में भी परोपकार की भावना क्रियाशील रही।

शीत से सिहरते हुए व्यक्ति को थोड़े से कपड़े देकर कष्ट से बचा देना, भूखे को भोजन करा देना, अन्धे को घर तक पहुँचा आना, रोगी की सेवा यह सब मनुष्यता के परिचायक चिन्ह हैं। सहृदय व्यक्तियों द्वारा इस तरह से दान की पुण्य परम्परा चलती रहती है और उससे समाज का कुछ भला हो जाता है। यह क्रम सदैव चलते रहना चाहिए, इससे मनुष्य, मनुष्य के बीच आत्मीयता के बन्धन प्रगाढ़ होते हैं। सत्कर्म की प्रेरणायें जागृत होती हैं।

विक्टर ह्यूगो का कथन है—"धन देकर अपनी थैली खाली कर दीजिये, आपका दिल भर जायेगा।" धन उन सब वस्तुओं का बोधक है, जिससे किसी के अभाव की पूर्ति हो। जिस वस्तु के न मिलने से एक व्यक्ति दुःख पा रहा है वह वस्तु उसे बिना मूल्य के देना दान कहलाता है। इससे मनुष्य में विनम्रता आती है, सद्गुणों का विकास होता है। दान कोई विवेक-विहीन क्रिया नहीं है। वेद की आज्ञा है—

"शत हस्त समाहर–सहस्त्र हस्त संकिर।"

अर्थात्—हे मनुष्यो! सैकड़ों हाथ से कमाओ और हजार हाथों से उसे दान कर दो।

"आदानं हि विसर्गाय सतां वारि सुचामिव।" जिस तरह बादल पृथ्वी से जल लेकर फिर उसी में बरसा देते हैं, सज्जनों को भी उसी तरह दान करते रहना चाहिए। भावनापूर्वक दान की हुई वस्तु यज्ञ के समान होती है, उसका सैकड़ों गुना लाभ कालान्तर में मिलता है और दाता के अन्तःकरण में तृप्ति की वृष्टि करता है।

धार्मिक कृत्यों की पूर्णाहुति पर सत्पात्रों को दक्षिणा देने का विधान है। शास्त्रकार का यहाँ कोई ऐसा भाव नहीं रहा कि दान किसी व्यवसाय का रूप धारण कर ले या वह कोई अन्धपरम्परा बने वरन् यह क्रिया धर्म की सजावट उसकी पूर्णता की दृष्टि से सम्बद्ध की गई है। लोगों की धार्मिक वृत्तियाँ संकुचित न रहें इस दृष्टि से सब कुछ होम देने के बाद भी और त्याग करने की भावना विद्यमान रहनी चाहिए। दान, दक्षिणा इसी भावना का प्रतीक है।

साधनों की बहुतायता का लाभ दूसरों को देना मनुष्य की श्रेष्ठता का लक्षण है। अपने स्वार्थों तक ही सीमित रहने का भाव छोटेपन की निशानी है। सज्जन पुरुष अपनी सुविधाओं का एक अंश उदारतापूर्वक दूसरों को देकर अपना बड़प्पन स्थिर रखते हैं। समाज की सुव्यवस्था और प्रगतिशील साम्यवाद की दृष्टि से ऐसी प्रक्रियायें समाज में चलती रहनी चाहिए। सन्त कबीर की कहावत प्रसिद्ध है—

जो जल बाढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिये यही सयानो काम।।

"दान से दुर्गति का नाश होता है।" यह शब्द यों सार्थक होते हैं कि जब भी किसी को कुछ देने की बात मन में आती है तो उसके साथ ही दया और करुणा के, आत्मीयता और सहानुभूति के भाव भी जागृत होते हैं। भावनाओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का यह परिष्कार आत्म-विकास की आवश्यक शर्त है, जो दान की परम्परा के साथ बड़ी सजीवता से जागृत होती है। दान से दोनों पक्षों को समोन सुख मिलता है और आत्म-भाव का आदान-प्रदान होता है। सद्भावनायें अन्तःकरण को शीतल रखती हैं और उस पर दुष्प्रवृत्तियों का सहसा आक्रमण नहीं होता। दान देना यह इंगित करता है कि हमारे अन्दर का देव भाग प्रचुर मात्रा में क्रियाशील है, इस स्थिति में पाप और पतन से घबड़ाने की आवश्यकता नहीं होती। मनुष्य निर्भय रहता है।

मनुष्य के जीवन में आत्म-दर्शन का एक पहलू होता है अपनी बुराइयों से संघर्ष करना। यह ध्वंसात्मक स्थिति है इसलिये कुविचारों पर विजय हो जाने पर भी शक्ति का एक अंश अनावश्यक व्यय हो जाता है। प्रायश्चित में शक्ति और चेष्टायें दोनों प्रयुक्त होते हैं। दान इसका रचनात्मक पहलू है और उससे मनोविकारों से सहज ही निवृत्ति हो जाती है।

मनुष्य जीवन को सार्थक करने में दान का असाधारण महत्त्व है, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। जब तक समाज जीवित है, तब तक यह प्रक्रिया किसी न किसी रूप में अवश्य जीवित रहेगी, पर अब दान देने और लेने की प्रवृत्तियाँ कुछ दूषित हो चली हैं इसलिये न तो देने वालों को ही कुछ आत्म-सन्तोष होता है और न पाने वालों का उपकार होता है। कारण एक ही है पात्रता का अभाव। न देने वाले ही भावनापूर्वक देते हैं और न पाने वाले ही उसके अधिकारी रह गये। दान का अर्थ अब भावनात्मक परिष्कार न रहकर स्वर्ग और मुक्ति की प्राप्ति अथवा प्रदर्शन की भावना मात्र रह गई है। दान लेने का अधिकार समाज सेवी या अशक्त व्यक्तियों को रहा है पर अब यह क्षेत्र भी पवित्र नहीं रहा। दान ने अब भीख माँगने का रूप ले लिया। शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, पर अकर्मण्य और आलसी व्यक्ति ही दान ले रहे हैं। इस तरह दुष्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलता है। तात्पर्य यह है कि दान का सात्विक उद्देश्य इन दिनों किसी भी क्षेत्र में पूरा होता नहीं जान पड़ता। सब तरफ विकृति दिखाई दे रही है।

पूर्वकाल में समाज सेवी व्यक्ति धर्म शिक्षण का कार्य करते थे। उन्हें ब्राह्मण कहते थे। ये लोग तपश्चर्या की अग्नि में तपकर अनुभव सिद्ध, गुणी, चरित्रवान् और ज्ञानी होते थे। समाज विकारग्रस्त न होने पाये इसलिये सन्मार्ग का उपदेश देना ही उनका लक्ष्य होता है। यह लोग निरन्तर ज्ञान दान करते थे और उसका प्रभाव यह होता है कि समाज बुराइयों से बचा रहता था और उसमें सतोगुणी प्रवृत्तियाँ चलती रहती थीं। यह दान मनुष्य का वास्तविक कल्याण करने वाला होता था इसलिये इन व्यक्तियों को समाज में अधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था और उनके जीवन यापन का भार लोग खुशी-खुशी वहन कर लेते थे।

इस युग में ज्ञान की बड़ी आवश्यकता है। स्थूल दान का महत्त्व अब इसलिये कम हो गया है कि उसमें पात्र-कुपात्र का अन्दाज नहीं होता, पर ज्ञान की आवश्यकता अच्छे-बुरे हर व्यक्ति के लिये है। उससे किसी का अहित नहीं हो सकता और न ही उसे दान का दुरुपयोग किया जा सकता है।

ज्ञान मनुष्य के सर्वतोमुखी विकास का साधन है। समाज में ज्ञानवान् व्यक्ति अधिक सुखी और सन्तुष्ट समझे जाते हैं। समाज का एक वर्ग इस तरह का हो और दूसरा मूढ़ताग्रस्त हो तो वह समाज दुःखी समाज होगा। ज्ञान का उद्देश्य मानव मात्र को एक स्तर पर लाना है। यह कार्य निःसन्देह कुछ कठिन है, पर इसका महत्व अत्यधिक है। आज की स्थिति में सर्वोच्च दान "ज्ञान" को माने तो वह सर्वथा उपयुक्त ही है।

मनुष्यों पर ऋषियों का भी एक ऋण है। ऋषि का अर्थ है वेद। वेद अर्थात् ज्ञान। आज तक हमारा जो विकास हुआ है, उसका श्रेय ज्ञान को है, ऋषियों को है। जिस तरह हम ज्ञान दूसरों से ग्रहण कर विकसित हुये हैं उसी तरह अपने ज्ञान का लाभ औरों को भी देना चाहिये। यह हर विचारशील व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वे समाज में अपने ज्ञान का जितना अंशदान कर सकते हों अवश्य करना चाहिए।

ज्ञान-दान मनुष्य को सन्मार्ग की ओर ले जाने के लिए किया जाता है इसलिए यह अन्य दानों की अपेक्षा अधिक सार्थक होता है।

जो प्रत्यक्ष या परोक्ष, विचार, वाणी या सत्साहित्य पढ़ाकर दूसरों को ऊँचे उठाने का प्रयत्न करते हैं, वे सच्चे अर्थों में ब्राह्मण हैं, उन्हीं के दान को सर्वश्रेष्ठ दान कहेंगे। आज इसी दान की विश्व को आवश्यकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शिक्षा ही नहीं 'विद्या' भी परिष्कृत की जाय

भौतिक जीवन को समर्थ और सुविकसित बनाने का पथ प्रशस्त करना स्कूली शिक्षा पद्धति का प्रयोजन होना चाहिए। छात्रों के मस्तिष्क पर अनावश्यक 'भार बने रहने का उसका वर्तमान स्वरूप बदला जाना चाहिए। किसी विषय के विशेषज्ञ बनने वाले के लिए विशेष शिक्षा का प्रबन्ध रहना उचित है, पर सर्वसाधारण को ऐसी पढ़ाई के लिए विवश नहीं करना चाहिए—जिसका व्यावहारिक जीवन में कभी कोई उपयोग नहीं होता। इन दिनों जो पढ़ाया जाता है, उसे सामान्य ज्ञान की पुस्तकों में संग्रहीत किया जा सकता है। बहुमुखी जानकारी के लिए सामान्य ज्ञान के विषय को थोड़ा विस्तृत किया जा सकता है और उसमें विविध विषयों की काम चलाऊ जानकारी को स्थान दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पूरा शिक्षण वह होना चाहिए, जिससे छात्र को सुयोग्य एवं स्वालम्बी नागरिक बनने का न केवल किताबी वरन् व्यवहारिक ज्ञान भी मिल जाय।

संसार के सभी विकासोन्मुख राष्ट्रों ने राष्ट्रीय उत्कर्ष को—वैयक्तिक विकास को ध्यान में रखते हुए ऐसी ही शिक्षा प्रणाली विकसित की। हम इस दिशा में कुछ मौलिक चिन्तन न कर सके। अँग्रेजों के समय से चले आ रहे ढर्रे को ही चलाते रहे। स्वतन्त्रता के इतने वर्षों बाद भी हम आगे बढ़ नहीं पाये, इसका कम से कम आधा दोष तो वर्तमान निरुद्देश्य शिक्षा पद्धति को दिया ही जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा प्रक्रिया में क्रान्तिकारी सुधार होना चाहिए। सरकार इस आवश्यकता को अनुभव न करे तो जनता को—बुद्धजीवियों को इसके लिए ऐसे प्रबल प्रयत्न करने चाहिए, जिससे अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति हो सके।

जन स्तर पर अनेक विद्यालय चलते हैं। कितने ही दानी मानी—उदारतावश अथवा यश कामना से नये विद्यालयों का आरम्भ कराते हैं।

उदारशीलता विवेकसम्मत हो

जो समर्थ हैं उन्हें सहायता देना उचित है ताकि साधनों के अभाव में जो प्रगति रुकी पड़ी थी उसका पथ-प्रशस्त हो सके। समुन्नत व्यक्तियों का कर्त्तव्य है कि वे दूसरे पिछड़े हुए व्यक्तियों को ऊँचा उठाने के लिए साधन उपलब्ध करें और वह प्रकाश भरी प्रेरणा प्रदान करें जिससे निराशा और अवसाद की मन स्थिति को साहस एवं उत्साह का जन-जीवन मिल सके। ऐसी सहायता करना किसी समर्थ व्यक्ति की उदारता का चिन्ह है, दूसरे शब्दों में इसे महानता की प्रतीति भी कह सकते हैं। यह उदार सहकारिता समाज को स्वस्थ्य परम्परा प्रस्तुत करती है और हर सामर्थ्यवान को यह उद्बोधन करती है कि सफलताओं का लाभ अपने तक ही सीमित न रखा जाय वरन् उसे उन्हें भी लाभान्वित होने दिया जाय जो उचित मार्ग-दर्शन एवं सहकार के अभाव में गई-गुजरी स्थिति में पड़े हुए दिन काट रहे हैं। यह उदारता की सद्भावना का उज्ज्वल पक्ष हुआ।

दान वृत्ति का एक अंधेरा पक्ष भी है। वह यह कोई व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा होने की स्थिति में रहने पर भी—श्रम और मनोयोग का उपयोग करने में आलस्य, प्रमाद बरते, काम से जी चुराये, मेहनत से कतराये और दूसरों के कन्धों पर लदकर सुविधाएँ प्राप्त करते रहने का प्रयास करें। यह बुरी बात है। इसे भिक्षावृत्ति के हेय नाम से पुकारा जाता है। किसी समर्थ व्यक्ति के लिए इससे अधिक अपमान की बात दूसरी नहीं हो सकती कि वह स्वयं निर्वाह कर सकने की क्षमता उत्पन्न होते हुए भी गुजारे के लिए दूसरों के सामने हाथ पसारे, ऐसा परावलम्बन उन्हें ही स्वीकार हो सकता है जो आत्म-सम्मान खो चुके हों।

अहर्निशि परमार्थ प्रायोजनों में संलग्न व्यक्तियों की सम्मानपूर्वक निर्वाह व्यवस्था करना विज्ञ समाज का कर्त्तव्य है सो किया भी जाता है। लोकसेवी साधु, ब्राह्मणों को सम्मानपूर्वक ब्रह्मभोज एवं दान दक्षिणा की व्यवस्था जनता चिरकाल से करती रही है, किन्तु वह लाभ जब वैसा ही वेष बनाकर व्यक्तिवादी जीवन जीने वाले मुफ्तखोर लोग प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते हैं तो इससे भ्रष्टाचार पनपता है। जो बिना उचित बदला चुकाये प्राप्त किया गया है वह स्पष्टतः अनाधिकार—अग्राह्य है। मुफ्तखोरी की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चारित्रिक भ्रष्टता का पापाचार माना जाना चाहिए। भले ही उसे अपनाने वाले किसी भी वेष या वंश के लोग क्यों न हों।

मुफ्तखोरी को प्रोत्साहन देना उस उद्देश्य से सर्वथा विपरीत है जो उदार दानवृत्ति के साथ जुड़ा हुआ है। सहायता इसलिए दी जानी चाहिए कि प्रगति पथ पर आगे बढ़ने के लिए उन साधनों की उपलब्धि हो सके, जिसके बिना पिछड़े हुए व्यक्ति को विकास की दिशा में कदम उठा सकना शक्य नहीं हो रहा था। दान का उपयोग बीज बोने की तरह किया जाना चाहिए जिसका प्रतिफल बहुमुखी प्रगति एवं समृद्धि के रूप में देखा जा सके।

जो सर्वथा अपङ्ग हैं जिनकी समस्त उपार्जन क्षमताएँ समाप्त हो गईं उन्हें जीवित रहने के लिए समाज की उदारता पर निर्भर रहने का अधिकार है। उस असमर्थ व्यक्ति को करुणापूर्वक निर्वाह मिलना चाहिए। किन्तु इससे आगे बढ़ने वाली भिक्षावृत्ति को सर्वथा निरुत्साहित किया जाना चाहिए। प्रकृति ने जिन्हें बाधित बनाया—मनुष्य का कर्त्तव्य है कि उस बाधा पर विजय प्राप्त करने के लिए उन्हें पुरुषार्थ का अवसर दे। अपङ्गों को, अविकसितों को, पिछड़े हुओं को ऐसा सहकार मिलना चाहिए जिसकें आधार पर वे काम करके उपार्जन की क्षमता एवं सुविधा प्राप्त कर सकें। इसके लिए श्रम संस्थाएँ एवं उद्योग ग्रहों की स्थापना होनी चाहिए।

सस्ती भावुकता के साथ प्रदर्शित की गई दानशीलता कई बार पुण्य के बदले भयङ्कर पाप जैसा दुष्परिणाम उत्पन्न करती है। अपने को लोगों की दृष्टि में पुण्यात्मा प्रदर्शित करने के लिए कितने ही दानशीलता के पाखण्ड रचते हुए अनेक व्यक्ति देखे जाते हैं। दंभ, प्रदर्शन और अहङ्कार की पूर्ति के सस्ते विज्ञापनबाजी जैसी भ्रष्ट दानशीलता का ही आज बाहुल्य है। धर्म के नाम पर ऐसी ही विडम्बनाएँ चलती रहती हैं। इसका परिणाम एक ही होता है—अकर्मण्यता और परावलम्बन का अभिवर्धन। प्रकारान्तर से यह प्रवृत्ति समाज और व्यक्ति के लिए अभिशाप ही सिद्ध होती है। भिक्षुक ने निर्वाह के लिए कुछ प्राप्त करके जो लाभ उठाया उसकी तुलना में आत्मगौरव खोने तथा परोपजीवी निष्क्रियता जैसे दुष्प्रवृत्तियाँ ओढ़ लेने की हानि भी तो उठानी पड़ी। वस्तुतः यह हानि इतनी बड़ी है जिसकी तुलना में भिक्षा से मिला लाभ नगण्य ही समझा जाना चाहिए।

वातावारण ऐसा बनाया जाना चाहिए जिसमें भिक्षावृत्ति को प्रोत्साहन न मिले। आज के भिक्षुकों में अधिकाँश ऐसे हैं जो यदि चाहें तो प्रसन्नतापूर्वक उपार्जन कर सकते और स्वावलम्बी सम्मानित जीवन जी सकते हैं। उन्हें भिक्षा माँगने की आदत इसलिए हो जाती है कि उथली भावुकता, दम्भी, अहङ्कारिता और धर्मध्वजी बनने की प्रदर्शन प्रियता कहीं न कहीं अपना पैसा बखेरेगी ही। उसे कोई तो लेगा ही। अतः आलसी उस दान वृत्ति के लिए बढ़कर आगे आ जाते हैं और हाथ पसार कर उन धर्म दम्भियों की मनोकामनापूर्ण करते हैं जो कुछ ही पैसे देकर सस्ती स्वर्ग की टिकट खरीदने के लिए आतुर फिरते रहते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि जिन्हें दान दिया जा रहा है उन्हें मुफ्तखोरी की बुरी आदत लगाने और स्वाभिमान बेचकर आत्मिक पतन के गर्त में धकेलने का कितना बड़ा उपहास उनके साथ किया जा रहा है। उथली दानशीलता यदि दूरदर्शी विवेक में रहती और इन समर्थ भिक्षुओं को निराश रहना पड़ता तो सम्भवतः इनमें तीन चौथाई लोग अपने स्वावलम्बी उपार्जन की समस्या हल कर चुके होते। ऐसा नहीं बन पड़ा इसका एक कारण जहाँ भिक्षुकों की आत्म-हीनता को कारण माना जायेगा वहाँ इन सस्ते दानवीरों को भी कम दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

अहंकारवश या उदारता का बड़प्पन सिद्ध करने वालों की तरह बिना सोचेसमझे दान देने वालों का वर्ग अन्ध श्रद्धालू कहा जा सकता है। दान-पुण्य करना धर्म है, दरवाजे आये भिखारी को खाली हाथ लौटने देना पाप है, आदि की मान्यता रखने वाला कम पढ़ा-लिखा और अशिक्षित आदमी धर्म मानकर भी देश काल पात्र का विचार किये बिना दानी बनने लगता है। भगवद्गीता में प्रत्युपकार की भावना सें रहित होने के साथ देश काल पात्र का विचार कर दान देने की बात कही गयी है। किस समय मैं कैसे व्यक्ति को किस स्थान पर दान देना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चाहिए, दान को धर्मस्तर का बनाये रखने के लिए यह जानना भी आवश्यक है कि यदि कुपात्र को, हर कहीं और हर कभी देता रहा जाय तो दाता को गौरव और धन तो घटता ही है, जिसे दिया जाता है उसका भी पतन होता है। जैसे कोई व्यक्ति मदिरालय के सामने खड़ा है, भिक्षा पात्र को इसलिए फैलाये खड़ा है कि इसमें कुछ दिया जाय और जो पैसा मिले उससे मद्यपान का व्यसन पूरा हो। अहंकार को तुष्ट करने अथवा अन्ध श्रद्धा से प्रेरित होकर ऐसी स्थिति में देने वाले का दान कभी सत्प्रयोजनों में नहीं लगता। समाज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना ही यदि दान का अर्थ है तो यह कैसी कृतज्ञता जो समाज के दूसरे सदस्य को पतन की ओर धकेल दे।

भीख माँगने वाला दी गयी भीख का उपयोग किन कार्यों में करता है—यह जाने बिना, केवल अहङ्कार की पूर्ति के लिए ही कुछ दिया जाता है तो वह तामसी दान या निकष्ट स्तर का कृत्य सिद्ध होता है। असहायावस्था में सचमुच इसी आधार पर अपना निर्वाह करने के लिए विवश लोगों को कुछ दिया जाय—वहाँ तक तो बात समझ में आती है। लेकिन आजकल भिक्षा का एक व्यवसाय सा ही चल पड़ा है और उसमें पात्र को पहचान पाना भी एक कठिन समस्या है। मानवी स्वाभिमान की प्रेरणा यह है कि हर व्यक्ति अपनी जीविका स्वयं कमाये। जो विवश हैं उनकी बात को जाने दें, तो भी भिक्षा को निर्वाह का एक आसान उद्योग मानकर चलने वालों की संख्या बहुत बड़ी है।

भिक्षाजीवियों में सर्वप्रथम तो साधु बाबा आते हैं, जिनके रूप में आबादी का एक बड़ा हिस्सा भिक्षाजीवी है, सब के सब कोई उपयोगी श्रम किये बिना सर्वसाधारण की अन्धश्रद्धा का लाभ उठा कर ही शक्कर खाते हैं। समाज का यदि कुछ काम कर रहा होता तो यह वर्ग—अपना सारा समय और श्रमजन हित में लगाता। यदि सभी साधु बाबा ऐसा करते तो उनके निर्वाह का दायित्व समाज द्वारा उठाना भी उचित था, पर कहीं मन्दिर में तो कहीं मठ में, कहीं आश्रम में तो कहीं अखाड़े में अपने चेले और भक्तों की संख्या बढ़ाने में लगे साधु बाबा समाज पर भार ही हैं और चेलों की संख्या बढ़ाने के लिए भी इतनी आतुरता इसलिए है कि अधिक मौज मजे का जीवन व्यतीत किया जा सके।

उनहत्तर करोड़ की आबादी वाले अपने देश में ५५० लाख भिक्षुक हैं। इतनी बड़ी जनसंख्या यदि किसी उत्पादक कार्य में लगे तो अपने देश का नया कायाकल्प हो सकता है। उत्पादन बढ़ने से लेकर कृषि के उन्नत होने की सम्भावनायें बन सकती हैं। कुछेक लोग सचमुच विकलांग हो सकते हैं जिनका जीवन समाज के अन्य सदस्यों की उदारता पर निर्भर है। पर वैसे लोगों की संख्या नगण्य है। कोई उस स्थिति में होता भी है तो स्वाभिमान के विरुद्ध मानकर भिक्षावृत्ति को अपनाने के लिए तुरन्त निश्चय नहीं कर लेता, इस आधार पर करीब-करीब दिखाई देने वाले सभी भिक्षुकों को भिक्षा व्यवसायी कहा जा सकता है।

महानगरों में तो कई ऐसे गिरोह भी पकड़े गये हैं जिनका काम केवल बच्चे उड़ाना और उन्हें लूले लंगड़े बना कर उनसे भिक्षा मँगवाना है। कितने ही अपराधी और असामाजिक व्यक्ति भी अपने आपको छुपाने के लिए इस भीड़ का सहारा लेते हैं। इस प्रकार भिक्षा व्यवसाय कोई साधारण समस्या न रहकर विकट प्रश्न बन गया है। इस व्यवसाय में लगे व्यक्तियों से कुछ कहने की उतनी गंजायश नहीं है जितनी कि उन्हें प्रोत्साहन देने वालों से। चोर, डाकू, तो अपने कामों में लगे ही रहते हैं, जन स्तर पर उन्हें परास्त करने, सीधी राह पर लाने की व्यवस्था भी बनायी जा सकती है। जो लोग अवांछनीय क्रिया-कलापों द्वारा फायदा उठाने की प्रवृत्ति अपना चुके होते हैं और उन्हें इस रास्ते पर जितना निर्वाध लाभ दीखता है, यह वृत्ति इतनी गहरी जड़ें जमा चुकी होती हैं कि उन परिस्थितियों में समझाने बुझाने से ही सही रास्ते पर आ जाने की आशा पूरी होना मुश्किल है। उससे अधिक आसान यह है कि उन द्वारों को ही बन्द किया जाय जिनसे उन्हें प्रोत्साहन मिलता है। उन रास्तों की नाकेबन्दी करना अधिक सहज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है जिन पर बेधड़क चले जाते हैं। और भिक्षा व्यवसाय को तो लोग इतना अधिक अवांछनीय समझते भी नहीं हैं, फिर भी इतनी विराट् जनशक्ति का निष्क्रिय, लुंज पुंज और निर्जीव ही बने रहना वस्तुत. एक विकट समस्या है।

कहा और समझाया जाना उन्हीं लोगों को चाहिए जो दानी और पुण्यात्मा बनने के फेर में भिखारियों की संख्या बढ़ाते रहते हैं। इस व्यवसाय में लगे लोगों को जब तक अपना धन्धा लाभदायक और आसान प्रतीत होता रहेगा तब तक उनकी संख्या में कमी नहीं आ सकती। दो चार लोग मान भी जायें तो उससे क्या होता है ? इस धन्धे में प्रवेश करने वाले नये लोग संख्या को पूरा कर देंगे। अतः दानी और उदार बनने से पहले यह विचार करना चाहिए कि जो हम दे रहे हैं वह सार्थक हो रहा, है क्या ? गम्भीरता पूर्वक विचार के बाद अधिक सम्भावना इसी निष्कर्ष पर पहुँचने की होगी कि निरर्थक ही नहीं अनर्थक भी जा रहा है।

अतः बेहतर यह है कि भिक्षा देना ही बन्द कर दिया जाय। सचमुच जो लोग सहायावस्था में हैं उन्हें भी सहायता व्यक्ति माध्यम से नहीं समाज के माध्यम से मिले। गाँव में जितने घर अपने द्वार आये भिखारियों को भिक्षा देते हैं उसे तत्काल रोक दें और किसी मन्दिर या किसी मस्जिद में ऐसी व्यवस्था बना दें कि अपात्र या कुपात्र व्यक्ति उससे जरा भी अनुचित लाभ न उठा सके और सही अर्थों में जरुरतमन्दों को उनका उचित भाग मिलता रहे।

दान का श्रेष्ठतम स्वरूप तो यह है कि स्थूल सहायता की अपेक्षा व्यक्ति को अपने पैरों के बल कठिनाइयों को पार करने का रास्ता दिखाया जाय इसे सत्परामर्श या ज्ञान दान भी कहा जा सकता है। जहाँ आवश्यकता हो वहाँ स्थूल सहायता का स्वरूप समाज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन की मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए ही बनाया जाय। दान को सही अर्थों में ग्रहण करने समझने की आवश्यकता है। यह तो धर्म का एक अंग है पर अति और अन्ध श्रद्धा मिल कर उसका स्वरूप विकृत कर देते हैं। आवश्यकता है उसे परिष्कृत करने की।

पूजा, उपासना करते हुए स्वर्ग मुक्तिका लाभ उठाने की प्रक्रिया विशुद्ध व्यक्तिवादी है। अपने लिए लाभ उठाने में निरत लोग अपने निर्वाह के लिए दूसरों पर निर्भर करे यह बड़ी अजीब बात है। जब किसान, दुकानदार, शिल्पी अपने उपार्जन भर निर्वाह करते हैं तो कोई भजनानन्दी ही भिक्षा पर निर्भर क्यों रहे ? प्राचीन काल के साधु, ब्राह्मण की परम्परा अलग थी वे भजन करते थे, पर साथ ही लोक-मङ्गल के लिए इतना अथक श्रम करते थे जिसका मूल्य उन्हें दी गई भिक्षा से हजारों गुना अधिक होता था, पर आज तो वैसा कुछ नहीं होता। ऐसी दशा में केवल वेष या वंश के आधार पर भिक्षा माँगने या देने की बात किसी भी दृष्टि से औचित्यपूर्ण नहीं रह जाती।

उदारता की सत्प्रवृत्ति जीवित रहनी चाहिए। सेवा, सहकार और दान परम्परा को पूरा प्रोत्साहन मिलना चाहिए ताकि समर्थता को गौरवान्वित होने का अवसर मिले—पिछड़े लोग ऊँचे उठें और मानवीय सहयोग की पुण्य परम्परा का अधिकाधिक पोषण सम्भव हो सके। समाज से पिछड़ापन दूर करने के लिए भौतिक एवं आत्मिक प्रगति के विविध विध क्रिया-कलापों का अभिवर्धन होना चाहिए और उसमें धनी एवं निर्धन हर व्यक्ति को सहयोग देना चाहिए। यह सब विवेकशीलता और दूरदर्शिता के साथ होना चाहिए। दान का परिणाम मानवी सद्गुणों और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन के रूप में आना चाहिए। असमर्थता को सकरुण सहयोग मिलना चाहिए। तभी यह कहा जा सकेगा कि हम अविवेकी भावुकता से ऊपर उठकर उदार दानशीलता का महत्व समझ सकने योग्य बन सके।

दानशीलता में गरीबी बाधक नहीं

अपने सुखों को बाँट देना, यह उदार हो और सहृदय लोगों से ही बन पड़ता है। निर्वाह की न्यूनतम आवयकताएँ पूरी करन के उपरान्त जो कुछ श्रम, समय, मनोयोग, कौशल एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चिन्तन बच जाता है, उस पर समाज का अधिकार स्वीकार किया जाना ही न्यायोचित है। जो हम पाते हैं, वह वस्तुतः असंख्य लोगों के श्रम, सहयोग का ही परिणाम होता है। कृतज्ञता उच्च दृष्टि जब ऋण भार से उऋण होने की बात सोचती है तो उसका समाधान पुण्य परमार्थ की उदार सेवा-साधना में ही सन्निहित दीखता है। दान के पीछे यदि अन्धविश्वासों की मूढ़ मान्यता, विवशता और कुटिलता छिपी न पड़ी हो तो निश्चित रूप से उसके सहारे मनुष्य अपनी महानता विकसित कर सकता है और आत्म-शान्ति पा सकता है।

आमतौर से धन देना ही दान की परिधि में आता है, पर वस्तुतः बात ऐसी नहीं है। संसार में ऐसे लोग बहुत हैं, जो अपना एवं परिवार का अनिवार्य निर्वाह ही कठिनता पूवर्क जुटा पाते हैं प्रतीत रूप से दैनिक अभ्यास में दान-प्रवृत्ति को जीवित रखने के लिए वे कुछ पैसे सत्प्रयोजन के लिए देते भी रह सकते हैं, पर बड़ी मात्रा में कुछ कर सकना उनके लिए सम्भव नहीं हो सकता है। निश्चित रूप से धानिकों की तुलना तो वे कर ही नहीं सकते। ऐसी दशा में वे अपनी निर्धनता को दान का आनन्द लेने में प्रधान बाधा मानने लगते हैं और दुखी होते हैं।

पर वस्तुतः बात ऐसी नहीं है। दान अकेले धन का नहीं होता, बचा हुआ समय, श्रम, चिन्तन और मनोयोग लोक-मंगल के लिए, विश्व-मानव की सेवा, साधना के लिए किसी मात्रा में लगा रहना हर किसी के लिए सम्भव हो सकता है। विचार-पूर्वक आत्म-निरीक्षण किया जाय तो अपने पास समय का बहुत-सा अंश ऐसा होता है, जो आलस्य, प्रमाद, गपशप अथवा दूसरे ऐसे निरर्थक कामों में खर्च होता. रहता है, जिसे यदि चाहे तो आसानी से बचाया जा सकता है समय के अपव्यय को तीखी दृष्टि से देखा-परखा जाय तो प्रतीत होगा कि अपना ढेरों समय ऐसी बर्बादी में नष्ट होता है, जिसका न अपने लिए कोई प्रयोजन है और न दूसरे अन्य किसी के लिए। समय काटने के लिए हमारे कितने ही निरर्थक काम होते रहते हैं और जो करते हैं, उनमें इतनी सभ्य मानसिकता एवं शिथिलता बरतते हैं जिनके कारण कम समय हो सकने वाला काम दूना-चौगुना समय खा जाता है। यदि इस अस्त-व्यस्तता को हटाकर मुस्तैदी की आदत डाली जाय तो सहज ही ढेरों समय ऐसा बच सकता है, जो पहले फालतू नष्ट होता रहता था। समय की यह बचत परमार्थ प्रयोजनों में लगाई जाने लगे तो निर्धन व्यक्ति भी दानवीर धनिकों की तुलना में अधिक परमार्थ साधन कर सकता है, उसे श्रमदान का ऐसा पुण्य-फल मिल सकता है, जो धन-दान से हलका नहीं वरन् भारी आँका जायेगा।

विचारों की क्षमता भी सांसारिक सम्पदा की तुलना में अधिक होती है। यदि हम मस्तिष्क में आदर्शवादी उत्कृष्ट विचारधारा भरे रहें। अपने में महानता के साथ जुड़ी रहने वाली सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों को भर लेने की योजना बनाते रहें तो विश्व-मानव के पुनरुत्थान में अपना क्या योगदान हो सकता है ? इसका ताना-बाना बुनते रहें तो हमारा वह चिन्तन अपने व्यक्तित्व को महान बनाने और सामाजिक सुख-शान्ति का पथ प्रशस्त करने में आश्चर्यजनक रीति से सहायक हो सकता है।

हमारे मस्तिष्क में अनावश्यक और अवांछनीय विचारों की घटाएँ घुमड़ती रहती हैं और वह महत्त्वपूर्ण संस्थान ऐसे सोच-विचार में उलझा रहता है, जिसका कोई अर्थ नहीं। ऐसी महत्वाकांक्षाएँ जिनका आज की परिस्थितियों के साथ कोई ताल-मेल नहीं, यदि मस्तिष्क में घुमड़ती रहती हैं तो उन्हें शेखचिल्ली जैसे बेपर की उड़ानें ही कहा जा सकता है। वर्तमान परिस्थितियों के साथ जिन कार्यों का सीधा सम्बन्ध है, यदि उतना ही सोचें और अधिक उपयुक्त समय आने पर आगे की योजनाएँ बनाने की व्यवहारवादी नीति अपनाऐं तो हमारी मस्तिष्कीय-क्षमता का एक बहुत बड़ा भाग उस निरर्थक चिन्तन में नष्ट होने से बच सकता है।

इसी प्रकार चिन्ताओं, आशंकाओं और भविष्य में घटित हो सकने वाली दुर्घटनाओं की डरावनी कल्पनाएँ हमारे स्वभाव अभ्यास में समाविष्ट होकर चिन्तन की बर्बादी करती रहंती हैं। इतना सोच-विचार यदि आशंकाओं के निराकरण का उपाय सोचने में लगता तो भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक बात थी, पर वैसा होता नहीं। अशुभ सम्भावनाओं को बढ़ा-चढ़ा कर देखने से केवल मानसिक-सन्तुलन ही बिगड़ सकता है और हड़बड़ी ही पैदा हो सकती है। द्वेष और प्रतिशोध से प्रेरित होकर विपक्षी को नीचा दिखाने की बात हम सोचते भर हैं। साहस और साधन के अभाव में वैसा कुछ नहीं कर पाते। अस्तु उस असफलता पर खीजते, हाथ मलते भर रह जाते हैं। इन उलझनों में उलझे रहने के साथ यदि समस्याओं का स्वस्थ और सम्भव समाधान भर ढूँढ़ने तक मस्तिष्क को सीमाबद्ध रखें तो उपयोगी निष्कर्ष भी निकल सकते हैं और चिन्ता का अनावश्यक अपव्यय भी रुक सकता है। समय की ही भाँति चिन्तन की बर्बादी को भी रोका जा सके तो आत्मोत्कर्ष और लोक-मंगल के अनेक आधार ढूँढ़ निकालने और उन्हें कार्यान्वित करने की रीति-नीति ढूँढ़ी और अपनाई जा सकती है। उस बचत को परमार्थ-प्रयोजनों में लगाकर हम दानवीरों जैसी प्रसन्नता प्राप्त करने के अधिकारी बन सकते हैं।

शरीर और मस्तिष्क के उपरान्त तीसरी ईश्वर-प्रदत्त विभूति है—सद्भावना। इसे अपने लिए दूसरों के लिए ठीक तरह प्रयुक्त किया जा सके तो उसका प्रतिफल भलाई का निर्झर बनकर प्रवाहित हो सकता है। अपने प्रति करुणा प्रदर्शित कर सकना यदि हमारे लिए सम्भव हो सके तो निसन्देह आत्म-सुधार और आत्म-निर्माण की सर्वप्रथम और सर्वोपरि आवश्यकता सामने आ खड़ी होगी और प्रतीत होगा कि आहार-बिहार में, विचार-व्यवहार में, क्रान्तिकारी परिवर्तन करने की आवश्यकता है। पतनोन्मुख प्रवृत्तियों को अपनाने से जीवन का निकृष्टस्वरूप बनता है। यदि विवेक और दूरदर्शिता का आश्रय लेकर गुण, कर्म, स्वभाव को परिष्कृत बना लिया जाय तो उसका परिणाम निखरे हुए व्यक्तित्व के रूप में सामने आ सकता है और हम क्षुद्र से महान् बन सकते हैं।

आमतौर से नर-पशु स्तर के लोग पेट और प्रजनन भर की बात सोचते हैं। वासनाओं और तृष्णाओं के अतिरिक्त उन्हें और कुछ सूझता ही नहीं। लोभ और मोह के इर्द-गिर्द ही सारी अभिलाषाएँ चक्कर काटती रहती हैं। ममता की परिधि-परिवार के थोड़े-से सदस्यों के आगे बढ़ ही नहीं पाती। इन सङ्कीर्ण स्वार्थों की परिधि में जकड़ा हुआ मायाबद्ध जीवधारी आदि से अन्त तक सड़ी कीचड़ में बुजबुजाते रहने वाले कीड़ों से बढ़कर कोई अच्छी स्थिति में सामने आने नहीं देते। भजन भी मनोकामना की पूर्ति अथवा स्वर्ग, मुक्ति की शौक-मौज में उलझा रहकर निकृष्ट स्तर का ही बना रहता है और उस पर कभी भी आत्म-कल्याण अथवा आत्म-शान्ति का फल नहीं लगता।

इस दयनीय भाव-भूमिका को यदि ऊपर उठाया जा सके तो उसका परिणाम आत्मीयता के असीम विस्तार के रूप में सामने आवेगा। स्वर्ग इस परिष्कृत दृष्टिकोण का ही नाम है। सङ्कीर्णता के तुच्छ सीमा-बन्धनों को तोड़ फेंकना ही जीवन-मुक्ति है। इन दिव्य विभूतियों से लाभान्वित होने के लिए हमें सहानुभूति का विकास करना होता है। दूसरों के सुख-दुःख में साझीदार होना पड़ता है। अन्न, वस्त्र, औषधि जैसे भौतिक साधनों का निर्धनों को दान करना यह धनिकों के लिए सम्भव है। भौतिक वस्तुएँ खरीदना और देना धनवानों के ही बस की बात है। ब्रह्म-भोज, तीर्थ-यात्रा अथवा व्ययसाध्य धर्मानुष्ठानों को भी वे ही लोग कर सकते हैं। मन्दिर, धर्मशाला, कुआँ, तालाब बनाना बिना पूँजी के कैसे हो सकता है ? किन्तु इससे किसी निर्धन को दुखी होने की आवश्यकता नहीं। गरीबी अभिशाप नहीं, लानत की कंगाली है। कंगाली वे हैं, जिन्हें कृपणता, संकीर्णता ने घेर रक्खा है। ऐसे लोग अमीर होते हुए भी कंगले ही कहलायेंगे। जिनकी अपनी हविस पूरी नहीं होती, जिनके पास सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं, उन्हीं दीन-दरिद्र के अतिरिक्त और क्या कहा जायेगा ? इसके विपरीत उदार-हृदय निर्धन भी भाव-सम्पन्न होते हुए हजार गुना अधिक सराहनीय है। धन से न सही, उदार भावनाओं से हम असंख्य लोगों के घावों पर मरहम लगा सकते हैं और उनके आसू पोंछ सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुखियों को सान्त्वना दी जा सकती है। निराशों में आशा की ज्योति जगाई जा सकती। गिरे हुओं को उठाया जा सकता है और पिछड़े हुओं को आगे बढ़ाने में सहयोग दिया जा सकता है। स्वयं हम कोई महत्त्वपूर्ण कार्य आरम्भ न कर सकें। संस्थापक-संचालक का श्रेय न ले सकें तो हर्ज नहीं। संसार में इतनी सत्प्रवृत्तियाँ चल रही हैं कि उनमें योगदान देकर श्रेष्ठ सत्कार्यों को सोचने का अति महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं।

संसार में हर मनुष्य स्नेह और सहानुभूति का प्यासा है। मैत्री और सदाशयता की ऐसी निर्झरिणी की हर किसी को तलाश है, जिसमें स्नान करके वह अपनी व्यथा-वेदनाओं के भार को उतार सके और अतृप्ति का, तृषा का समाधान कर सके। इस आवश्यकता को निस्वार्थ, उदार और स्नेह सिक्त व्यक्तित्व ही पूर्ण कर सकते हैं। यदि हम अपनी करुणा और कोमलता की भाव भूमिका को विकसित कर सकें तो उससे अगणित व्यक्ति लाभान्वित हो सकते हैं। धन दान की तुलना में यह भाव-दान किसी भी प्रकार कम मूल्यवान नहीं है।

उच्चस्तरीय सद्भाव सम्पन्न अन्तःकरण का विकास कर सकना प्रचुर धन-सम्पदा एकत्रित कर लेने की अपेक्षा कहीं अधिक सौभाग्य है। धन देकर किसी का जितना भला किया जा सकता है, उसकी तुलना में भावनात्मक प्रेरणाएँ देकर दूसरों को ऊँचा उठा सकना, आगे बढ़ा सकना और समुन्नत स्तर तक पहुँचा सकना, कहीं अधिक उपयोगी गिना जायगा।

अपना उज्ज्वल चरित्र विनिर्मित कर लेना न केवल आत्म-कल्याण के लिए वरन् सामाजिक अनुदान की दृष्टि से भी अति महत्त्वपूर्ण है। चन्दन अपने समीपवर्ती गुल्म पादपों को सुगन्धित करता है। चरित्रवान् व्यक्ति चन्दन का वृक्ष है, जिससे अनेकों को प्रेरणा मिलती है और सदाचरण की रीति-नीति अपनाने का साहस मिलता है। चरित्रवान् व्यक्ति अपना आदर्श उपस्थित करके कितनों को अनुगमन के लिए कितना साहस देता है, इसका लेखा-जोखा नहीं रखा जा सकता, पर यह निश्चित है कि बहुत दान-पुण्य कर सकने पर भी आचारनिष्ठ व्यक्ति समाज को असाधारण अनुदान प्रदान करता है।

मधुर भाषण, प्रशंसा भरा प्रोत्साहन, सत् परामर्श का कार्य किसी की भी वाणी यदि परिष्कृत हो तो निरन्तर कर सकती है। अपना सामान्य काम-काज करते हुए भी यह क्रम सहज ही चलता रह सकता है और मनुष्य सहज ही उच्चकोटि का पुण्य लाभ कर सकता है।

सद्व्यवहार, नम्र, विनीत, सौम्य सरलस्वभाव अपने आप में किसी भी सम्पत्ति से बढ़े-चढ़े गुण हैं। स्नेह सद्भाव और उदारता भरा व्यवहार समीपर्ती लोगों को कितना प्रभावित करता है और कितनी राहत देता है, इसे हम समझ नहीं पाते। सेवा और सहयोग की भावना रहे, दूसरों को ऊँच उठाने के लिए यथासम्भव प्रयास किया जाता रहे तो इस प्रवृत्ति के फलस्वरूप बूँद-बूँद करके इतना पुण्य संचित हो सकता है, जो बड़े-बड़े दानवीरों को भी पीछे छोड़कर अग्रगामी पंक्ति में खड़ा हो सके।

मरने के बाद शरीर के अङ्ग आमतौर से मिट्टी में, आग में, जल में जला-बहाकर नष्ट कर दिये जाते हैं। इससे मरने वाले का या दूसरों का कुछ लाभ नहीं होता, पर अब ऐसे तरीके निकल आये हैं, जिनसे पूर्णतया घोषित मृत्यु हो जाने के कुछ घण्टे उपरान्त भी अगं निकाले जा सकते और उन्हें दूसरे जरूरतमन्द लोगों के लिए दान किया जा सकता है। नेत्र दान इसी श्रेणी में आता है जिसे देकर दानी को कोई घाटा नहीं पड़ता किन्तु ग्रहीता की जिन्दगी में नवीन उल्लास भर उठने की बात बन जाती है। क्या यह धन दान से कम स्तर का पुण्य परमार्थ है ?

भारत में प्रायः ७ लाख अन्धे ऐसे हैं, जिन्हें कार्नियाँ के धब्बों ने अन्धा बना रखा है। इन लोगों को यदि किसी दूसरे की जीवित परतें मिल सकें तो उनकी अँधेरी दुनिया फिर रोशन हो सकती है।

देश में नेत्र बैंकों की संख्या बहुत कम है, जहाँ है वहाँ नेत्र दानी नहीं मिलते। इस प्रकार अन्धों को मिल सकने वाली सम्भव सहायता का द्वार अवरुद्ध ही बना रहता है। वस्तुतः मृतक के लिए इसमें कोई कंजूसी करने की बात नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है कि मरने के बाद भी उसका अवयव जला गला भले ही दिया जाय, पर किसी के काम न आने पाये। मरने के बाद मृतात्मा के लिए उस आँख की कुछ भी उपयोगिता नहीं रह जाती जो किसी दूसरे के लिए नव जीवन संचार कर सकती है। यों जीवित व्यक्ति भी नेत्रदान कर सकते हैं, पर यहाँ चर्चा उनके दुस्साहस की नहीं हो रही है। बात इतनी भर है कि मरने वाले की या उसके परिवार की निरर्थक बनी हुई मृत काया से यदि दूसरों का भला होता है तो उसे देने में क्यों कंजूसी करनी चाहिए ? यदि ऐसी समझदारी लोगों में उठ खड़ी हो और मरने के बाद अपने नेत्रों की वसीयत नेत्र बैंकों के नाम करने लगें तो निस्सन्देह इससे इन मृतकों को पुण्य और अन्धों को नव जीवन मिल सकता है। नेत्र दान के सम्बन्ध में अनुत्साह का एक बड़ा कारण वह भ्रम है, जिसके कारण तरह-तरह की आशङ्काएँ सामने आती हैं, समझा जाता है कि मरने से बहुत पहले जीवित अवस्था में आँखें निकाल ली जाती होंगी। यदि मरने के बाद निकलती तो वे बेकार हो जातीं, पर बात ऐसी नहीं है नेत्र आरोपण केवल कार्निया की खराबी की स्थिति में ही किया जा सकता है अन्य रोगों में नहीं। कार्निया पुतली के ऊपर चढ़ी हुए झिल्ली है, जो किसी बजह से खराब हो जाने पर दीखना बन्द हो जाता है, यह झिल्ली ही एक की आँख से निकालकर दूसरों की आँख में फिट की जा सकती है। यह झिल्ली ऐसी है जैसे घड़ी की सुइयों की रक्षा के लिए काँच लगा रहता है। बदल-उदल इसी की होती है और यह ऐसा अङ्ग है, जो मरने के बाद छः घन्टे तक खराब नहीं होता। पूर्ण मृत्यु की घोषणा होने के पश्चात् ही इसे निकालने की कार्यवाही की जाती है। इसलिए किसी नेत्र दानी को यह डर करने की जरूरत नहीं होती कि उसके शरीर की जिन्दा स्थिति में फाड़-चीड़ की जायेगी और उसे कष्ट सहना पड़ेगा।

इस प्रकार यह सोचना भी व्यर्थ है कि हमारे नेत्र पुराने हो गये या रोशनी घट गई, इसलिए वे काम न आ सकेंगे। दृष्टि मन्दता या वृद्धता होने पर भी यह कार्निया' झिल्ली प्रायः निरोग ही रहती है और उसका उपयोग भी नई उम्र वाले की आँखों की तरह ही हो सकता है।

कुछ समय पूर्व इटली की एक महिला ने अपने अन्धे बच्चे के नेत्रों में पुनः ज्योति दिलाने के लिए अपने नेत्रों की वसीयत की थी, चूँकि नेत्र मरने के बाद ही लिए जा सकते थे, इसलिए उसने स्वेच्छा मरण का तरीका अपनाया और आत्महत्या करली। इस सनसनी खेज समाचार ने जहाँ अन्य पक्षों पर विचार करने के लिए उत्तेजना दी, वहाँ यह भी सोचा गया कि अन्धों की आँखों में रोशनी लाने के लिए नेत्रवान् किस हद तक सम्वेदनशील हो सकते हैं।

इस घटना के बाद श्रीलङ्का के नेत्र कोष ने गहरा दुःख व्यक्त किया और कहा कि जहाँ आवश्यकता हो वहाँ श्री लङ्का नेत्र कोष बैंक अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता करने के लिए तत्पर है। यह प्रस्ताव उसने इटली सरकार के पास भी भेजा।

चूँकि श्री लङ्का के गर्वनर और प्रधानमन्त्री ने अपने नेत्र दान की वसीयत करके जनता में उत्साह उत्पन्न किया था इसलिए हजारों लोगों ने उनका अनुकरण किया और मृतकों के नेत्र से उस बैंक का भण्डार भरा पूरा हो गया।

मनुष्य को देने के लिए ऐसे अनेकों चीजें हैं, जो धन की तुलना में कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। बुद्धि के रूप में, शरीर बल के रूप में, समय के रूप में कितनी विभूतियाँ हैं, जिनके द्वारा समाज की सेवा की जा सकती है तथा धनवान से भी कई गुना अधिक आन्तरिक आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। वस्तुतः दान के लिए, सेवा के लिए, गरीबी धन की नहीं, उदारवादी दृष्टिकोण की होती है, जिसके कारण अपनी सामर्थ्य को सत्प्रयोजन में लगाते नहीं बनता और ऐसा संकीर्ण मनुष्य अपने को दीन-हीन असमर्थ मानता रहता है। उदारता की दृष्टि विकसित हो सके तो मालूम होगा कि हमें जो शरीर बुद्धि, भावना एवं समय के रूप में अनेकों विशेषताएँ मिली हैं, उनसे भी समाज की महती सेवा की जा सकती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दान में विवेक की आवश्यकता

भिक्षा-वृत्ति एक प्रकार का महान् उत्तरदायित्व है, जिसका भार उठाने के लिए बिरले ही व्यक्तियों का साहस होना चाहिए। शास्त्रकारों ने भिक्षा को अग्नि से उपमा दी है, जैसे अग्नि को बड़ी सावधानी से स्पर्श करने, पूर्ण सतर्कता के साथ यथोचित स्थान में रखने की और विवेकपूर्वक प्रयोग में लाने की आवश्यकता होती है, वैसे ही भिक्षा को ग्रहण करना; ग्रहण करके उसे रखना और फिर उसे उपयोग में लाना बहुत ही सावधानी का काम है। जिस प्रकार थोड़ी-सी असावधानी बरतने पर अग्नि की एक छोटी-सी चिनगारी बड़े भयंकर, घातक परिणाम उपस्थित कर देती है, वही हाल भिक्षा का है, यदि इस "अग्नि-वृत्ति" का थोड़ा भी गलत उपयोग किया जाय तो बड़े व्यापक पैमाने पर भयानक अनिष्ट उत्पन्न हुए बिना नहीं रहते।

(१) यज्ञार्थाय और (२) विपद् वारणाय, इन दो कार्यों के लिए ही शास्त्रकारों ने भिक्षा का विधान किया है। इन दो कार्यों के लिए ही भिक्षा दी जानी चाहिए। यज्ञ का अर्थ पुण्य, परोपकार, सत्कार्य, लोक-कल्याण, सुख-शान्ति की वृद्धि, सात्विकता का उन्नयन। जिन कार्यों से समिष्टि की, जनता की, संसार में श्रेय और अभ्युदय की, अभिवृद्धि होती हो, उन लोकोपयोगी कार्यों के लिए भिक्षा ली जानी चाहिए। शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, सहयोग, सुख, सुविधा बढ़ाने के कार्यों के लिए जो प्रयत्न किये जाते हैं, वे तथा मानवीय स्वभाव में सत्-तत्व को, प्रेम-त्याग, उदारता, क्षमा, विवेक, धर्मपरायणता, ईश्वर, प्राणधान, दया, उत्साह, श्रम, सेवा, संयम आदि सद्गुणों को बढ़ाने के लिए प्रयत्न किये जाते हैं, इन दोनों ही प्रकार के कार्यों को, अनुष्ठान को यज्ञ कहा जाता है। आजकल अनेक संस्थाएँ इस प्रकार के कार्य कर रही हैं। प्राचीन समय में कुछ व्यक्ति ही जीवित संस्था के रूप में जीवन भर एक निष्ठा से काम करते थे। स्वर्गीय श्री गणेशशंकर विद्यार्थी की मृत्यु पर महात्मा गांधी ने कहा था कि "विद्यार्थी जी एक संस्था थे।" जिसका जीवन एक निष्ठापूर्वक, सब प्रकार के प्रलोभनों और भयों से विमुक्त होकर यज्ञार्थ-लोक सेवा के लिए लगा रहता है, वे व्यक्ति भी संस्था ही हैं। प्राचीन समय में ऐसे यज्ञ रूप, ब्रह्म परायण व्यक्तियों को ऋषि, मुनि, ब्राह्मण, प्रोहित, आचार्य, योगी, संन्यासी आदि नामों से पुकारते थे। जैसे संस्था की स्थापना के लिए आजकल दफ्तर कायम किये जाते हैं और इन दफ्तरों का मकान भाड़ा खर्च करना होता है, उसी प्रकार उन 'संस्था व्यक्तियों' ऋषियों की, आत्मा के रहने के मकान, उनके शरीर, का मकान भाड़ा, भोजन, वस्त्र आदि का निर्वाह व्यय, खर्च करना पड़ता था। जैसे मकान भाड़े के लिए और संस्थाओं के अन्य कार्यों के लिए धन जमा किया जाता है, वैसे ही दान, पुण्य, भिक्षा आदि द्वारा उन ऋषि संस्थाओं को पैसा दिया जाता था। उन ऋषियों का व्यक्तित्व, उच्च, अधिक उच्च, इतना उच्च, होता था जिसके सम्बन्ध में किसी प्रकार के संदेह की कल्पना तक उठने की गुंजायश न होती थी, इसलिये जनता उन्हें पैसा देकर उस पैसे के सदुपयोग के सम्बन्ध में पूर्णतया निश्चिन्त रहती थी, उसका हिसाब जाँचने की आवश्यकता न थी। ऋषि लोग भिक्षा द्वारा प्राप्त धन का उत्तम सदुपयोग स्वयं ही कर लेते थे।

देव पूजन, दान दक्षिणा आदि के नाम पर लोग स्वयमेव समय-समय पर कई बहानों से संस्कार, पर्व, कथा, तीर्थ, पूजा, अनुष्ठान, व्रत, उद्यापन आदि के समय ब्राह्मणों को दान देते थे। उन ब्रह्म परायण संस्था व्यक्ति-ब्राह्मणों के द्वारा होने वाले लोकोपयोगी कार्यों से जनता पूरी तरह प्रभावित रहती थी और उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उनके लिए समुचित साधन जुटाने के लिए धन व्यवस्था करने में कोई कमी न रहने देती थी।

व्यक्तिगत रूप से ब्राह्मणों की आवश्यकताएँ बहुत ही स्वल्प होती थीं, पीपल के छोटे-छोटे फल, पिपली-खाकर निर्वाह करने वाले पिप्पलाद ऋषि थे। खेत काटने पर जो अन्न के दाने खेतों में फैले रह जाते थे उन्हें बीनकर वे गुजारा कर लेते थे। रहने की फूँस की झोंपड़ी, पहनने को कटिवस्त्र, भोजन में कंदमूल, इस निर्वाह को जुटा लेना कुछ खर्चीला न था। दान-दक्षिणा में प्राप्त धन वे लोग प्रायः लोकोपकारी कार्यों के लिये ही लगा देते थे। तक्षशिला जैसी युनीवर्सिटियाँ, जिनमें तीस-तीस हजार छात्र पढ़ते थे, और एक-एक हजार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आचार्य पढ़ाते थे एक-दो नहीं सैकड़ों की संख्या में थीं, जहाँ छात्रों और गुरुजनों का भोजन व्यय उन युनिवर्सिटियों की ओर से उठाया जाता था, यह धन-दान द्वारा ही प्राप्त होता था। सर्जरी और चिकित्सा के सर्वोत्तम साधनों से सम्पन्न वृहत्तम अस्पताल इन ऋषियों द्वारा चलते थे। ज्योतिष, मनोविज्ञान, योग, धर्म, शिक्षा नीति, कृषि वाणिज्य, पशुपालन, शिल्प, राजनीति आदि के सम्बन्ध में उन ऋषियों की विचार सभाएँ बैठती थीं और महत्त्वपूर्ण अनुसंधान करके तत्सम्बन्धी खोजों को ग्रन्थों के रूप में, उपदेशों के रूप में, अनुभव शालाओं के रूप में जनता के सामने उपस्थित करते थे। वायुयान, जलयान, रेडियो, युद्ध अस्त्र, रसायन आदि नाना प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधानों के करने के लिए ऋषियों के आश्रमों में ही प्रयोगशालाएँ रहती थीं। उनमें सदैव वैज्ञानिक अनुसंधान होते रहते थे। इस प्रकार के कार्यों का व्यय इस दान पर ही निर्भर रहता था।

वे प्रातः स्मरणीय ब्राह्मण लोग केवल जनता के द्वारा दिये जाने वाले दान पर ही निर्भर न रहते थे, वरन् उनके घरों पर जाकर द्वार-द्वार पर भिक्षा माँगते थे। इस भिक्षाटन में बड़ा भारी रहस्य, महत्त्व और लाभ सन्निहित होता था। भिक्षा प्रयोजन को लेकर महात्मा लोग उन व्यक्तियों के घर भी स्वयमेव पहुँचते थे, जो सत्संग के लिए ऋषि के आश्रमों में पहुँचने का समय नहीं निकाल पाते थे। इन घरों में जाकर वे अधिक से अधिक पाँच ग्रास तक भिक्षा ग्रहण करते थे, इससे अधिक इसलिए नहीं लेते थे कि देने वाले पर अधिक भार न पड़े, उसकी आर्थिक स्थिति को आघात न पहुँचे। भिक्षा लेकर वे चम्पत न हो जाते थे वरन् दाता के घर की स्थिति मालूम करते थे और उसकी कठिनाइयों को हल करके महत्त्वपूर्ण पथ प्रदर्शन करते थे। कहना न होगा कि इस प्रकार का भिक्षाटन उन लोगों का स्वर्ण सौभाग्य होता था जिनके घर पर ऐसे भिक्षुक जा पहुँचते थे। दो चार ग्रास अन्न देना या लेना कुछ महत्त्व नहीं रखता, पर इस बहाने थोड़े समय के लिए भी जिन्हें उन महात्माओं को अपने दरवाजे पर पधारने का सौभाग्य मिल जाता था, वे उनके बहुमूल्य उपदेशों से कृत्य-कृत्य हो जाते थे। बीमारी गरीबी, क्लेश, कलह, अनीति, भीति, भ्रान्ति आदि की दारुण कठिनाइयों से वह सत्सङ्ग, गृहस्थों को अनायास ही पार लगा देता था। आज वकील, डाक्टर, वैज्ञानिक, प्रोफेसर आदि की सलाह या सेवा लेनी हो तो उसके बदले उनकी खुशामद के साथ मोटी रकम अदा करनी पड़ती है, परन्तु उस समय इन सब योग्यताओं के भंडार ऋषि लोग पाँच ग्रास माँगने के लिए जनता जनार्दन के द्वार-द्वार पर पहुँचते थे और इस बहाने से जनता को अपनी अमूल्य सम्मतियों से उपकृत करते थे।

इसके अतिरिक्त भिक्षा के दो और भी प्रयोजन हैं एक तो यह कि दान देने से देने वाले को त्याग का, परोपकार का, पुण्य का, आत्म-संतोष प्राप्त होता था, दूसरा यह कि उन ऋषि कल्प ब्राह्मणों को अपने अभिमान एवं अहंकार के परिमार्जन करते रहने का अवसर मिलता था। भीख माँगकर जीविका ग्रहण करने से विनय, नम्रता, निरभिमानता, कृतज्ञता एवं ऋणी होने का भाव उनके मन में जागृत बना रहता था। वे अपने में लोक सेवक, परोपकारी तथा महात्मापन की अहम्मन्यता उत्पन्न न होने देने के लिए भिक्षुक की तुच्छ स्थिति ग्रहण करते थे। ऐसे भिक्षुकों को दान देते हुए देने वाले अपना मान अनुभव करते थे और लेने वाले निरभिमान बनते थे। इससे उन दोनों के बीच सुदृढ़ सौहार्द उत्पन्न होता था। भिक्षावृत्ति करने वाले की अपेक्षा, देने वाले को ही अधिक लाभ रहता था। इस परमार्थ और परमार्थ की भावना से ब्रह्म-जीवी महात्माओं के लिए भिक्षा का विधान किया गया था।

इस प्रकार यज्ञार्थ भिक्षा ब्राह्मणों द्वारा ग्रहण की जाती थी, वे इस प्राप्त हुए धन को लोक-कल्याण के, जनता की सुखसमृद्धि की वृद्धि के कार्यों में व्यय करते थे, अपना शरीर और मन उन्होंने परमार्थ में लगा रखा होता था, इन शरीरों को क्षुधा, तृषा, शीत, धूप निवारण से रक्षा के लिए भी कुछ व्यय हो जाता था तो वह भी यज्ञ की आहुति के समान ही फलदायक होता था। ब्राह्मणों को दान दक्षिणा या भिक्षा देने का यही वास्तविक तात्पर्य था, ब्राह्मण इसीलिए भिक्षा जीवी होते थे। जो व्यक्ति या जो संस्था, लोकहित के कार्यों में लगे हैं, वह ब्राह्मण हैं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसे भिक्षा माँगने या प्राप्त करने का अधिकार है। यज्ञार्थ के लिए भिक्षा उचित है, शास्त्र सम्मत है, ब्रह्म कार्यों के लिए या ब्रह्म जीवी व्यक्तियों के लिये भिक्षा का प्रयोजन धर्म सम्मत है।

इसके अतिरिक्त दूसरी श्रेणी विषद् वारणाय' है। संकट ग्रस्तों का संकट दूर करने के लिए, सहायता देना मानवीय अन्तःकरण का दैवी तत्व को सुरिक्षत रखने एवं विकसित करने के लिए आवश्यक है। इससे मनुष्य में दया उत्पन्न होती है। दुःखियों का दुःख देखकर हर एक सच्चे मनुष्य का हृदय करुणा से पूरित हो जाता है और आँखें छलक पड़ती हैं। इस दैवी प्रेरणा को तृप्त करने से ही मनुष्य परमात्मा के निकट पहुँचता है। दूसरों को कष्ट में देखकर जो लोग अपने कलेजा पत्थर का कर लेते हैं, निष्ठुरता धारण कर लेते हैं, अनुदारता एवं स्वार्थपरता में निमग्न होकर उनकी ओर उपेक्षा प्रकट करते हैं ऐसे मनुष्य असुरता को प्राप्त होकर नर-पिशाच का जीवन बिताते हैं। पीड़ितों की सहायता करना, दुःखियों को दुःख से छुड़ाना, आवश्यक है, इसके लिए शरीर से बुद्धि से, धन से जैसे भी बन पड़े सहायता करनी चाहिए। विषद् भिक्षा देनी चाहिए।

अग्निकांड, जल प्रवाह, अकाल, चोरी, आक्रमण, अन्याय, दुर्दैव आदि किसी आकस्मिक कारण से जो लोग असहाय हो गए हों, जिनकी अपनी सामर्थ्य नष्ट हो गयी हो, गिर पड़े हों, अपने पैर पर आप खड़े न हो सकते हों, उनको सहायता देने की आवश्यकता है। जिनका शरीर एवं मस्तिष्क उपार्जन शक्ति के लिए बिलकुल अनुपयुक्त हो गया हो, उनको सहायता की जरूरत है। इस प्रकार व्यक्तियों को पैसे की सहायता जरूरी होती है। परन्तु अन्य अनेक प्रकार के पीड़ित ऐसे हैं, जिन्हें पैसे की नहीं, शरीर एवं बुद्धि की सहायता आवश्यकता होती है। शोक, चिन्ता, उद्विग्नता, क्लेश, कलह, निराशा, भय, ईर्ष्या, क्रोध, लोभ, तृष्णा, अहंकार, द्वेष, भ्रम अज्ञान आदि मानसिक संकटों से अनेक मनुष्य ग्रसित होते हैं, वे उतना ही कष्ट पाते हैं, जितना कि कठिन रोगों के रोगियों को कष्ट होता है। ऐसे लोगों की पैसे से सहायता हो जाय तो कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, उनके लिए बुद्धि द्वारा, विवेक द्वारा, जो सहायता पहुँचाई जाती है, वही सच्ची सहायता है। जिनके पास पैसा है, जो आसानी से अपने स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त पैसा खर्च कर सकते हैं, उन्हें मुफ्त दवा बाँटना निरर्थक है। उन्हें उपयोगी चिकित्सा विधि का मार्ग बताना एवं उस मार्ग तक पहुँचने में क्रियात्मक सहायता देना पर्याप्त है। किसी करोड़पति अमीर को तपैदिक हो जाय तो उसे मुफ्त दवा की आवश्यकता नहीं, उत्तम चिकित्सक तथा उत्तम चिकित्सा स्थान के परिचय की आवश्यकता है। इस प्रकार की सहायता देना और उपयुक्त साधन से मिला देना पर्याप्त है।

गरीब आदमी को पैसा देने मात्र से काम नहीं चलता। उसे गरीबी से छुड़ाने के लिए किसी कारोबार से लगा देना होगा बहुत से गरीब ऐसे हैं, जिनकी शारीरिक योग्यताएँ कुछ काम करने योग्य हैं, बहुत से अंग-भंग मनुष्य, अंधे, असमर्थ, भी ऐसे होते हैं, जो शरीर के अन्य अंगों से काम लेकर जीविका उपार्जन कर सकते हैं। जैसे—लंगड़े आदमी, हाथ से हो सकने वाले धंधे कर सकते हैं, अंधे, गूँगे, बहरे कुबड़े भी किसी न किसी प्रकार की मजदूरी कर सकते हैं, जिनके शारीरिक अंग असमर्थ हैं उन्हें यदि पढ़ा-लिखा दिया जाय तो वे वाणी, विचार और बुद्धि से हो सकने वाले अध्यापकी आदि कार्य कर सकते हैं। गरीबों या असमर्थों को तात्कालिक आरंभिक कुछ सहायता की आवश्यकता अवश्य होती है, पर उनकी सच्ची सहायता यह है कि उन्हें समझा-बुझाकर काम करने, स्वतन्त्र जीविका उपार्जन के लिए तैयार किया जाय और उनके उपयुक्त काम ढूँढ़ देने की व्यवस्था बनाई जाय। इसी प्रकार अग्निकाण्ड, जल प्रवाह, अकाल, आक्रमण चोरी आदि से पीड़ित व्यक्तियों को आरम्भ में तात्कालिक सहायता पहुँचाने के बाद अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाने में मदद करनी चाहिए। विपत्ति में पड़े हुए व्यक्तियों को आरम्भ में कुछ धन की सहायता होती है। परन्तु वस्तुतः उन्हें उठाकर खड़े कर देने के लायक साधन और मनोबल देने की अधिक जरूरत रहती है।

स्थायी रूप से उन विपद्ग्रस्तों की भिक्षावृत्ति ग्रहण करने का अधिकार है, जो शरीर और बुद्धि की दृष्टि से बिलकुल असमर्थ हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिनको निकट कुटुम्बियों से सहायता प्राप्त करने की भी सुविधा नहीं है। अनाथ, बालक, गरीब, रोगी, पागल, अतिवृद्ध, अपाहिज तथा कोढ़ आदि अस्पर्श्य रोगों वाले व्यक्ति स्थायी रूप से दान के अन्न से अपना निर्वाह कर सकते हैं। ऐसों की जीवन रक्षा करने के लिए जीवनोपयोगी अन्न, वस्त्र एवं निवास स्थान आदि की सुविधाएँ देना समाज का कर्तव्य है।

यहाँ स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि विपद्ग्रस्तों को दूसरों की वही सहायता लेनी चाहिए जो वे अपनी शेष शक्तियों से नहीं कर सकते। वह सहायता उन्हें उतने ही समय तक एवं उतनी ही मात्रा में लेनी चाहिए, जिससे वे अपने पैरों पर खड़े हो जावें। फिर जो सहायता लें उसे कर्ज रूप से ग्रहण करें और मन में दृढ़ संकल्प रखे कि समर्थ होते ही उस सहायता को दूसरे पीड़ितों को ब्याज समेत चुका देंगे। असहाय या असमर्थ व्यक्तियों को भिक्षा अन्न के बदले लोककल्याण की शुभ कामनाएँ, आशीर्वादात्मक सद्भावनाएँ देते रहना चाहिए और मन में ध्यान रखना चाहिए, इस जन्म में या अगले जन्म में समर्थ होने पर इस ऋण को समाज के लिए पुनः लौटा देंगे। इस प्रकार विवेकपूर्वक लिया हुआ और दिया हुआ दान ही सार्थक होता है। उसी को वास्तविक दान कह सकते हैं।

★ ★

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२
(सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६.ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे—

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवन: एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

❑❑❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org